॥ श्रीः ॥

शालिग्रामनिघण्टुभूषणम् ।

अर्थात्

बृहन्निघण्टुरत्नाकरान्तर्गतौ

सप्तमाष्टमभागौ ७—८

(वैद्यकोपयुक्तसमस्तपदार्थनामगुणकोशः)

श्रीमाथुरवैश्यवंशोद्भवमुरादाबादस्थकविकुलकुमुद-
कलानिधिश्रीशालिग्रामवैद्यवर्यविरचितौ ।

सोऽयम् ग्रंथः

क्षेमराज—श्रीकृष्णदासश्रेष्ठिना

मुम्बय्यां

स्वकीये "श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-यन्त्रालये

मुद्रयित्वा प्रकाशितः ।

संवत् १९८०, शके १८४५

लाला शालिग्रामजी वैश्य.



हरानन्दादवाप्तव्यः कृष्णात्तत्पादन्तरः ।
आयुर्वेदसमुद्धर्ता शालिग्रामो जयत्वयम् ॥ १ ॥

खेमराज श्रीकृष्णदास "श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम् प्रेस—बम्बई.

यह पुस्तक खेमराज श्रीकृष्णदासने बम्बई खेतवाडी ७ वीं गली खम्बाटा लेन निज "श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम् प्रेसमें अपने लिये छापकर प्रकाशित किया।

धन्यवादाः ।

भवन्तु भूयांसो भव्यभूतये विश्वकर्त्रे महीयसे परमेश्वराय प्रणामाः । येन भगवता विविध जगत्सिसृक्षता प्रथमतः सृष्टिक्रमानुसारेण महदादिपृथिव्यन्तो महान्सर्गः स्वात्मनि विकाशमानीयत ।

अस्मिंश्च सर्गे तत्तद्भौतिकनिकाया सर्वे प्राणिनस्तस्यैव परमेशितुः संकेतमनुवर्तमाना यथावत्कल्पितवृत्तयो विचरन्तीति स्वाभाविकं सृष्टिसौन्दर्यमेतत् । तत्रापि सृष्टिक्रमपराकाष्ठाभूतायां पृथिव्यामस्मदादिजीवानां पुरोक्तपरमेश्वरेणैव पृथिवीनिकायजनमाकलयता विशेषतः कौतुकेनेव विविधवृक्ष–लता–सस्य–जल–रत्न–धातु–प्रभृतयः पदार्था असृज्यन्त तदनु प्राणिनः । इति सृष्ट्युपक्रमे पुराणेषु शोश्रूयते सर्वतः । अथ च प्रकृतं तत्र विमृश्यते ।

इह पृथिव्यां जन्यमानानां नानाजीवानां निजपारम्पराकीनन्तजन्मोपार्जितविविधदुष्कृतपरिणतानेकव्याधिपरिपीडितकलेवराणां परित्राणैकार्थसमुद्भवानां नानाविधवृक्ष–लता–सस्य–जल–रत्न–धातु–प्रभृतीनां पदार्थानां यथोचितोपयोगार्थं परमकारुणिकैरात्रेय–दक्ष–शक्र–धन्वंतरि–दिवोदास–सुश्रुत–चरक–वाग्भट–प्रभृतिभिर्महानुभावैरायुर्वेदशास्त्रं स्वस्वानुभवानुगमानुसारेणोपबृंहितमासीत् । यतः परावरदृशां महर्षीणां बुद्धिवैभवेन प्रसिद्धिं गतेभ्य आयुर्वेदग्रन्थेभ्य औषधीनां गुणदोषान्विज्ञाय वैद्यजना रोगिणां रोगान्यथोचितौषधप्रयोगेण निर्मूल्योपकुर्वन्ति समन्ततः । तथापि तत्तन्महर्षिस्वस्वबुद्धिविनिर्मितानामनेकग्रन्थानामध्ययनाध्यापने कालातिक्रममन्वीक्षमाणे परमकारुणिकैः श्रीमन्मुरादाबादनगरनिवासिभिः श्रीमन्माथुरवैश्यवंशावतंसश्रीलालाशालिग्रामसुगृहीतनामधेयैरस्मत्परममित्रैः केवलं परोपकाराय निजमतिमन्थानेनायुर्वेदमहोदधिं विनिर्मथ्य सकलौषधिगुणगणप्रतिमण्डितोऽयं "शालिग्रामनिघण्टुभूषण" नामा नवीनो ग्रन्थो विनिर्मितः ।

अस्मिन् "शालिग्रामनिघण्टुभूषण" ग्रन्थे प्रोक्तमहाशयैर्विविधदेशभाषाप्रचारिततत्तदौषधीनां नामानि–तत्तदौषधीनां गुणाश्च सविस्तरं प्रत्यपाद्यन्त । येन च कृत्वा प्रायश्चैष ग्रन्थः –संस्कृत–हिन्दी–बांगी–महाराष्ट्री–गौर्जरी–कार्णाटकी–द्राविडी–तामिली–अंकली–इंगिलिश्–लैटिन्–फारसी–आरबी–भाषाविशिष्टौषधीनामतया सर्वतः सञ्चरतां सर्वदेशीयानां जनानां परमोपयोगीति को नानुमन्येतनाम सहृदयः सारासारविवेकनिपुणो जनः ।

अथ ग्रन्थश्च तैरुदारबुद्ध्या सर्वलोकोपकृत्यर्थं प्रकाशनार्थं मत्समीपे प्राहीयत । स च मया तेभ्यः सादरं स्वीकृत्य स्वकीये "श्रीवेङ्कटेश्वर" मुद्रालये मुद्रयित्वा प्रकाशमानीयत । तथैव तृतीयावृत्तिर्भूयसा परिश्रमेण सम्यक्संशोध्य विदुषां मुदे पुनर्मुद्रिता ।

अत एतादृग्ग्रन्थनिर्माणपरिश्रमपरिक्लिष्टबुद्धिवैभवानां नानाविधग्रन्थनिर्माणजन्यातिनिर्मलयशोभासुरीकृतविबुधजनमनसां श्रीमतां श्रीलालाशालिग्रामनामधेयानां यावन्तो धन्यवादा देयास्ते सर्वथा स्वेदीपदानमितेति मन्ये ।

विबुधगणप्रेमाभिलाषी–

क्षेमराज–श्रीकृष्णदासः

"श्रीवेङ्कटेश्वर" (स्टीम्) यन्त्रालयाध्यक्षः–मुंबई.

भूमिका।



देखो इस असारससारमे उस निराकार निर्विकार परब्रह्म परमेश्वरने साकार रूप धारण कर चार वेद, षट् शास्त्र और अष्टादश पुराण अपने हृदयसे प्रगट किये, उनमेंसे अथर्वणवेदका सार लेकर अत्यन्त अनुपम और अद्वितीय, प्राणियोंके कष्टका हरनेवाला और दीर्घायु करनेवाला आयुर्वेद निकाला, जिसमे एक लक्ष श्लोक और सहस्रअध्यायमे नियत करके आयुर्वेदसंहिता नाम रक्खा और प्रजाके रचनेसे पहिले ब्रह्माके हृदयमे उसका प्रकाश किया ब्रह्माने उसके आठ भाग किये, फिरभी कठिन समझ कर कोप और निघण्टुको मुख्य रक्खा, और सम्पूर्ण कर्म्मोमे चतुर बुद्धिविशारद और अग्रगामी जानकर दक्षप्रजापतिको सर्वांगसहित आयुर्वेदका उपदेश किया, दक्षने स्वर्गीय वैद्य, मार्तण्डके समान प्रचण्ड शक्तिवाले महाविद्वान् देवताओंमे श्रेष्ठ अश्विनीकुमारोंको आयुर्वेदसंहिता विस्तारपूर्वक पढाई, जिसके प्रभावसे अश्विनीकुमार तेतीसकोटि देवताओंके पूर्ण वैद्य हुए, ब्रह्माका मस्तक जोडा, देवताओंको अंग जोड व्रणरहित किया, इन्द्रकी भुजाका कष्ट हरा, चन्द्रमाको सुखी करा, इन्द्र अश्विनीकुमारोंके इन अद्भुत कर्मोको देख उत्साहपूर्वक आयुर्वेद पढनेके लिये अश्विनीकुमारोंसे प्रार्थना करनेलगा जब सत्यसिन्धु इन्द्रने इसप्रकार प्रार्थना की तब वैद्यशिरोमणि अश्विनीकुमारोंने जिसप्रकार आप पढाथा उसीप्रकार आयुर्वेदसंहिता विस्तारसहित देवराज इन्द्रको पढाई, इन्द्रने ऋषियोंमें प्रधान आत्रेयको पढाया उस समय लोग उत्तमरीतिसे आहार विहार करतेथे, इसलिये उनको कोई रोग नहीं होताथा, उनकी आयुभी पूर्ण होतीथी, और शरीरमे बलभी अधिक होताथा, पश्चात् कुछ कालोपरान्त समयके हेरफेरसे मनुष्योकी बुद्धिभी विपरीत हो गई, उससे रोग और क्लेशादिक अधिक बढनेलगे, उस समय करुणानिधान परोपकारी बडे बडे ऋषि मनुष्योको रोगासे दुःखी देखमनमें अत्यन्त दुःखी हो हिमालयपर्वतकी ओरको चले, वहां दैवयोगसे बहुतसे ऋषिलोग एकत्र थे, भारद्वाज, अंगिरा, मरीचि, भृगु, भार्गव, पुलस्त्य, अगस्त्य, असित, वसिष्ठ, पराशर, हारीत, गौतम, सांख्य, मैत्रेय, च्यवन, जमदग्नि, गर्ग, काश्यप, कश्यप, नारद, मार्कण्डेय,

कपिञ्जल, वामदेव, कौण्डिन्य, शाण्डिल्य, शाकुनेय, शौनक, आश्वलायन, साकृत्य, विश्वामित्र, परीक्षक, देवल, गालव, धौम्य, काम्य, कात्यायन, कांकायन, बैजवाप, कुशिक, बादरायण, हिरण्याक्ष, लौगाक्षी, शरलोमा, गोभिल, वैखानस और वालखिल्यादिक अनेक महर्षिलोग थे, यह ब्रह्मऋषि, ब्रह्मज्ञानी, यमनियमके समुद्र और होमाग्निके समान प्रकाशमान, तपस्तेजःपुंज, आनन्दपूर्वक सब मुनिपुगव यह चर्चा कर रहेथे कि मनुष्यका धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष इस चतुर्वर्गके साधनका मूल यह शरीर है यदि यह शरीर अच्छाहै तो यह चतुर्वर्ग साधसक्ताहै और जो यह शरीरही रोगग्रसित रहे तो कदापि नहीं साधसक्ता।

रोगा· कार्श्यकरा बलक्षयकरा देहस्य चेष्टाहरा· ।
दृष्ट्यादीन्द्रियशक्तिसक्षयकरा· सर्वाङ्गपीडाकराः ॥
धर्मार्थाखिलकाममुक्तिषु महाविघ्नस्वरूपा बलात् ।
प्राणानाशु हरन्तिसन्ति यदि ते सौख्यकुतः प्राणिनाम् ॥
तत्तेषां प्रशमाय कश्चन विधिश्चिन्त्यो भवद्भिर्बुधैः ।
योग्यैरित्यभिधाय ससदि भरद्वाज मुनिं तेऽब्रुवन् ॥

अर्थ–रोग मनुष्योके देहको दुर्बल करतेहै, बलका क्षय करतेहैं, शरीरकी चेष्टाको विनाश करते है, नेत्रादिक इन्द्रियोकी शक्तिको हरण करतेहै, सब अंगोमे पीडाको उत्पन्न करतेहै, धर्म, अर्थ, अखिल काम और मोक्षके लिये तो महाविघ्नकारी है; अधिक बढनेपर बलात्कार शीघ्रही प्राणोंको हरलेतेहै जब इसप्रकारके रोग शरीरमे सदा विद्यमान हैं तो फिर प्राणियोके प्राणोंकी कुशल कहां? इसकारण तुम सब रोगोके प्रयत्नमें तत्पर और पूर्ण विद्वान् एकत्रित हुए हो तो रोगोके दूर करनेका कोई उपाय विचारो। इसप्रकार भारद्वाजके वचनोंको सुनकर सब ऋषि अत्यन्त हर्षित होकर उच्चस्वरसे जयजय शब्दकर, तालध्वनि करने लगे और भारद्वाजजीसे बोले कि, हे भगवन्! आपही इस कार्य करनेके योग्यहै, इसकारण तुम परिश्रम करके इन्द्रके पास जाकर प्रार्थना करो, और विधिपूर्वक आयुर्वेदको पढो, जिससे प्रजाके लोग रोगरहितहो, भयसे छूटें इसप्रकार जब सब मुनियोने विनययुक्त प्रार्थना की, तब उनकी आज्ञानुसार मुनिपुङ्गव भारद्वाज इन्द्रलोकको गये, इन्द्रको आशीर्वाद दे स्तुति करी, और सब ऋषि-

योके वचन देवराजसे कहे, फिर कहा हे इन्द्र ! सब प्राणियोंके प्राण रहनेके लिये महा भयानक रोग संसारमें उत्पन्न हुयेहैं, उनके दूर होनेका कोई उपाय बताओ, इन्द्रने परम चतुर भारद्वाजको आयुर्वेद पढाया, जिसके प्रभावसे रोगरहित हो प्राणी एक सहस्रवर्ष जीये, भारद्वाजने थोडेही दिनमें आयुर्वेद पढ उसके आशयको जानलिया, इसी आयुर्वेदके प्रभावसे भारद्वाज मुनि रोगोंसे छूट दीर्घायु हुए, और अनेक मुनियोंको रोगरहित कर पूर्णायु किया, पश्चात् आत्रेय मुनिनेभी इन्द्रहीसे आयुर्वेद पढा और अपने नामकी आत्रेय संहिता रच अग्निवेश, भेड, जातूकर्ण्य, पराशर, क्षीरपाणि, और हारीतको पढाई, इन छहोंने अपने अपने नामकी संहिता निर्माण की, और अग्निवेशादिक छहों शिष्योंने अत्रिनन्दनको अपनी अपनी संहिता सुनाई, और आत्रेयने अत्यन्त आनन्दित होकर आशीर्वाद दिया, वह छहों संहिता आजतक संसारमें प्रसिद्ध हैं, और अत्यन्त उपयोगी हैं परन्तु इनमें सबसे प्रधान अग्निवेशकृत तंत्र उत्कृष्टतासे सबके मनको आकर्षण करनेवाला हुआ, किसी समय चरकमुनिने उन सब तंत्रोंको एकत्र करके संस्कार किया और अपने नामसे नवीन संहिता रचकर प्रचार की, जो आजतक चरकके नामसे विख्यातहै, अग्निवेशकृत तंत्र जो कि चरकका संस्कार किया हुआ है उसमें शल्यादिक अष्टांगमयी नवीन संहिता आठ भागोंमें विभाग कीगई, उस संहितामें खनिज, उद्भिज्ज, प्राणिवाची द्रव्योंको तीनभागोंमें विभाग करके, फिर प्राणियोंके जरायुजादिकोंको चारभागोंमें विभाग करके उद्भिज्जोंको वनस्पति वृक्षवीरुध ओषधियोंको चारभागोंमें विभाग किया, फिर उन उद्भिद द्रव्योंको जीवनादिक पंचांशगणोंमें विभाग किया, इसकी भाषा प्राकृत नहीं है, प्राचीन होनेसे विषयरचनाप्रणालीशोधन नहीं की गई है, इसलिये अत्यन्त गडबड है, इसके सिद्धकल्प दो स्थान सत्रह अध्यायोंसे संयोजना करके पञ्चनदपुरवासी दृढबलने सम्पूर्ण किया इस संहिताके सिद्धस्थानकी पहिली समाप्तिमें लिखा हैः-

"अखण्डार्थं दृढबलो जातः पञ्चनदे पुरे ।
कृत्वा बहुभ्यस्तन्त्रेभ्यो विशेषाच्च बलोच्चयम् ॥
सप्तदशौषधाध्यायैः सिद्धकल्पैरपूरयत् ।"

अर्थ-इस संहिताके सम्पूर्ण करनेके लिये दृढबल पञ्चनदपुरमें उत्पन्न हुआ उसने अनेक ग्रन्थोंका अनुसन्धान करके सत्रह अध्या-

कपिञ्जल,वामदेव, कौण्डिन्य,शाण्डिल्य, शाकुनेय, शौनक, आश्वलायन, साकृत्य, विश्वामित्र, परीक्षक, देवल,गालव, धौम्य,काम्य, कात्यायन, कांकायन, बैजवाप, कुशिक, बादरायण, हिरण्याक्ष, लौगाक्षी, शरलोमा, गोभिल, वैखानस और वालखिल्यादिक अनेक महर्षिलोग थे, यह ब्रह्मऋषि, ब्रह्मज्ञानी, यमनियमके समुद्र और होमाग्निके समान प्रकाशमान, तपस्तेजःपुंज, आनन्दपूर्वक सब मुनिपुंगव यह चर्चा कर रहेथे कि मनुष्यका धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष इस चतुर्वर्गके साधनका मूल यह शरीर है यदि यह शरीर अच्छाहै तो यह चतुर्वर्ग साधसकाहै और जो यह शरीरही रोगग्रसित रहै तो कदापि नहीं साधसक्ता।

रोगाः कार्श्यकरा बलक्षयकरा देहस्य चेष्टाहराः।
दृष्टयादीन्द्रियशक्तिसक्षयकराः सर्वाङ्गपीडाकराः॥
धर्मार्थाखिलकाममुक्तिषु महाविघ्नस्वरूपा बलात्।
प्राणानाशु हरन्तिसन्ति यदि ते सौख्यकुतः प्राणिनाम्॥
तत्तेषां प्रशमाय कश्चन विधिश्चिन्त्यो भवद्भिर्बुधैः।
योग्यैरित्यभिधाय ससदि भरद्वाज मुनिं तेऽब्रुवन्॥

अर्थ–रोग मनुष्योंके देहको दुर्बल करतेहै, बलका क्षय करतेहै, शरीरकी चेष्टाको विनाश करते है, नेत्रादिक इन्द्रियोंकी शक्तिको हरण करतेहै, सब अगोंमे पीडाको उत्पन्न करतेहै, धर्म,अर्थ, अखिल काम और मोक्षके लिये तो महाविघ्नकारी है, अधिक बढनेपर बलात्कार शीघ्रही प्राणोंको हरलेतेहै जब इसप्रकारके रोग शरीरमें सदा विद्यमान हैं तो फिर प्राणियोंके प्राणोंकी कुशल कहां ! इसकारण तुम सब रोगोंके प्रयत्नमें तत्पर और पूर्ण विद्वान् एकत्रित हुए हो तो रोगोंके दूर करनेका कोई उपाय विचारो। इसप्रकार भारद्वाजके वचनोंको सुनकर सब ऋषि अत्यन्त हर्षित होकर उच्चस्वरसे जयजय शब्दकर, तालध्वनि करने लगे और भारद्वाजजीसे बोले कि, हे भगवन्! आपही इस कार्य करनेके योग्यहै, इसकारण तुम परिश्रम करके इन्द्रके पास जाकर प्रार्थना करो,और विधिपूर्वक आयुर्वेदको पढो, जिससे प्रजाके लोग रोगरहितहो, भयसे छूटे इसप्रकार जब सब मुनियोंने विनययुक्त प्रार्थना की, तब उनकी आज्ञानुसार मुनिपुङ्गव भारद्वाज इन्द्रलोकको गये, इन्द्रको आशीर्वाद दे स्तुति करी, और सब ऋषि-

योके वचन देवराजसे कहे, फिर कहा हे इन्द्र ! सब प्राणियोंके प्राण रहनेके लिये महा भयानक रोग संसारमें उत्पन्न हुयेहैं, उनके दूर होनेका कोई उपाय बताओ, इन्द्रने परम चतुर भारद्वाजको आयुर्वेद पढाया, जिसके प्रभावसे रोगरहित हो प्राणी एक सहस्रवर्ष जीये, भारद्वाजने थोडेही दिनमे आयुर्वेद पढ उसके आशयको जानलिया, इसी आयुर्वेदके प्रभावसे भारद्वाज मुनि रोगोसे छूट दीर्घायु हुए,और अनेक मुनियोंको रोगरहित कर पूर्णायु किया, पश्चात् आत्रेय मुनिनेभी इन्द्रहीसे आयुर्वेद पढा और अपने नामकी आत्रेय संहिता रच अग्निवेश, भेड,जातूकर्ण्य, पराशर, क्षीरपाणि, और हारीतको पढाई, इन छहोने अपने अपने नामकी संहिता निर्माण की. और अग्निवेशादिक छहो शिष्योने अत्रिनन्दनको अपनी अपनी संहिता सुनाई, और आत्रेयने अत्यन्त आनन्दित होकर आशीर्वाद दिया, वह छहो संहिता आजतक संसारमे प्रसिद्ध है, और अत्यन्त उपयोगी हे परन्तु इनमे सबसे प्रधान अग्निवेशकृत तंत्र उत्कृष्टतासे सबके मनको आकर्षण करनेवाला हुआ.. किसी समय चरकमुनिने उन सब तंत्रोको एकत्र करके संस्कार किया और अपने नामसे नवीन संहिता रचकर प्रचार की, जो आजतक चरकके नामसे विख्यातहै, अग्निवेशकृत तंत्र जो कि चरकका संस्कार किया हुआ है उसमें शल्यादिक अष्टागमयी नवीन संहिता आठ भागोमे विभाग कीगई,उस संहितामे खानिज, उद्भिज्ज, प्राणिजाची द्रव्योको तीनभागोमे विभाग करके,फिर प्राणियोके जरायुजादिकोंको चारभागोंमें विभाग करके उद्भिजोको वनस्पति वृक्षवीरुध औषधियोको चारभागोमे विभाग किया, फिर उन उद्भिद द्रव्योको जीवनादिक पंचाशगणोमें विभाग किया,इसकी भाषा प्राकृत नहीं है, प्राचीन होनेसे विषयरचनाप्रणालीशोधन नही की गई है, इसलिये अत्यन्त गडबड है, इसके सिद्धकल्प दो स्थान सत्रह अध्यायोंसे संयोजना करके पञ्चनदपुरवासी दृढवलने सम्पूर्ण किया इस संहिताके सिद्धस्थानकी पहिली समाप्तिमे लिखा है:-

"अखण्डार्थं दृढवलो जातः पञ्चनदे पुरे ।
कृत्वा बहुभ्यस्तन्त्रेभ्यो विशेषाच्च बलोञ्चयम् ॥
सप्तदशौषधाध्यायैः सिद्धकल्पैरपूरयत् ।"

अर्थ-इस संहिताके सम्पूर्ण करनेके लिये दृढबल पञ्चनदपुरमे उत्पन्न हुआ उसने अनेक ग्रन्थोका अनुसन्धान करके सत्रह अध्या-

योमे सिद्धकल्पको पूर्ण किया । सुश्रुतसंहिता-इसीप्रकार सुश्रुतसंहिता शल्यतंत्रके उपदेशसे प्रधान अष्टांगमयी धन्वन्तरिसम्प्रदायकी पहिली और चरकसंहितासे पिछली है इसमे काशीराजरूप धारण किये हुए भगवान् धन्वन्तरि वक्ता, और विश्वामित्र महर्षिपुत्रसुश्रुत श्रोता, और परमरासायनिक सिद्धनागार्जुन सत्कारकर्ता हैं, सूत्रादिपञ्चस्थानात्मक पूर्व तंत्रमे चिकित्सा किये हुए रोग, रसायन, वाजीकरणतंत्रोंके साथ चिकित्सक शल्यतत्रको प्रधानतासे वर्णन कियाहै । कल्पमे चिकित्सक विषतंत्रको चिकित्सा स्थानमें रसायन, वाजीकरणतंत्र वर्णन किये हैं, उत्तरतंत्रमे शालाक्यकायचिकित्सा; कौमार, भृत्य, भूतविद्या वर्णन की है ।

एक समय सुश्रुताचार्य पिता विश्वामित्रकी आज्ञा पाकर अपने सहगामी मुनिकुमारोंके साथ काशीको गये, जहा वानप्रस्थ आश्रमने स्थित देवताओंमे श्रेष्ठ,अनेक मुनि जिनकीस्तुतिकररहे,उन सर्वानन्ददायक धन्वतरि काशीनरेश दिवोदासका विनयपूर्वक सुश्रुतादिक सब ऋषिपुत्रोंने नमस्कार किया, अनन्तकीर्त्तिस्वरूपद्रव्यवाल दिवोदास उन ऋषिपुत्रोंको समीप खडा देखकर बोले कि,हे ऋषियो! तुम कुशलपूर्वक हो ? किसकारण आगमन हुआ, तब उन सब ऋषिकुमारोंने सुश्रुतद्वारा उत्तर दिया,कि हे भगवन्! रोगोसे भयभीत हाहाकार करते और मरतेहुए प्राणियोंको देखकर हमारेचित्तमे अत्यन्त खेद उत्पन्न हुआ है, इसलिये आपके पास रोगोंको दूर करनेका उपाय पूछनेको हम आये हैं,सो आप कृपा करके हम सबको आयुर्वेद अध्ययन कराओ,तब काशीनरेश सुश्रुतादि ऋषिपुत्रोंके वचन स्वीकार कर उनको आयुर्वेद पढाना आरम्भ किया,उस व्याख्याको वह मुनिनन्दन परमानन्दपूर्वक पढने लगे अपने कार्यको सिद्ध करके चलते समय काशीराजको आशीर्वाद दिया कि, जयहो, जयहो आपकी सदा जयहो यह कहसब अपने अपने आश्रमपर आये और उन मुनिपुत्रादिकोंमें प्रथम सुश्रुतने अपना ऐसा स्फुट तन्त्र रचा,जोकि एकसौ बीस १२० अध्यायमे सम्पूर्ण हुआ, और ऋषिपुत्रोंनेभी पृथक् पृथक् अपने तन्त्र रचे, सुश्रुतके रचे हुए तन्त्रको बहुत लोगोने सुना, इसीकारण उसका नाम सुश्रुत ससारमे प्रसिद्ध हुआ, परन्तु हमको यह बडा भारी सन्देहहै कि सुश्रुत नामके दो आचार्य्य हुए हैं एक सुश्रुत, दूसरा वृद्धसुश्रुत, इनमे यह निश्चय नहीं होसक्ता कि प्रसिद्ध सुश्रुतसहिताका कर्त्ता कौनहै ? जब बौद्धोंने प्रबल होकर वाद विवादसे पण्डितोका तिरस्कार करके वैदिक क्रियाका लोप

करनेका आरम्भ किया,उस बौद्धसंग्राम समयमेही (विक्रमके संवत्से एक हजार १००० वर्ष पहिले) संसारमे प्रसिद्ध परम रासायनिक बौद्धपालक सिद्धनागार्ज्जुन सुश्रुतनाम तंत्रको संस्कारमुखसे सूत्रादिपञ्चकस्थानोंमे अर्थवशसे विभाग करके विस्तारपूर्वक स्पष्ट व्याख्या कर शेष उत्तर तंत्रमें शेष अर्थोंको प्रगट करके एक नवीन संहिताको रचा। वह सुश्रुतसंहिता संसारमे प्रचलित है, यह डल्वणाचार्य्यका मतहै. इसकी भाषा प्राचीन है,रचनारीति यथाभागानुकूलहै, इसमें शरीरास्थिमालाकी प्रगटता, रोगोंका निश्चय, और व्रणचिकित्सादिके ज्ञानका वर्णन है, इस लिये श्रेष्ठकोटिकी अधिरूढताका अतिनिर्विकल्प स्वीकार करना चाहिये इसका मूढगर्भ अश्मरी प्रकरण अत्यन्त प्रशंसा करने योग्य है,अधिक क्या ? बडे बडे विदेशीय वैद्योंने मूढ गर्भादिक प्रकरणकी समालोचना करके विस्मयपूर्वक प्रशंसा की है

वाग्भटसंहिता–कुछ कालोपरान्त चिकित्सकोंमे परमोत्तम धन्वन्तरिके समान भूमण्डलमे वाग्भट भिषक् उत्पन्न हुआ, यह महाराजाधिपति सत्यसिन्धु परमज्ञानी राजा युधिष्ठिर पाण्डुकुलभूषणकी सभामे सर्व रोगनाशक महाश्रेष्ठ एक वैद्य था, उसने जगत्के उपकारार्थ आयुर्वेदके अनेक ग्रन्थ निर्माण किये, उनमे अष्टांगहृदयसंहिता सब संसारमे प्रसिद्ध हुई और वही वाग्भटाभिधानसे भूमण्डलमे सूर्यके समान प्रकाशमान है। चरकसुश्रुतादि अनेक ग्रन्थोंको मथकर ससारके हितार्थ बडे प्रयत्नसे इस सुखसञ्चारिणी संहिताका संग्रह किया। इस संहितामे और इसकी औषधियोंमे उन्होंने ऐसी अपूर्व चातुर्य्यता प्रगट की है, वह और ग्रन्थोंमें नही दिखाई देती, जो बात चरकसुश्रुतमे बीस पच्चिस श्लोकोंसे वर्णन की है वह बात इस संहिताके तीनही चार श्लोकोमे दर्शा दीहै, सत्य तो यह है कि, इन्होने सब संसारके उपकारके लिये आयुर्वेदका उद्धार किया इसीलिये इस वाग्भटसंहिताकी बृहत्त्रयीमे वैद्योने गणना कर रक्खी है। यथा–

सुश्रुतो न श्रुतो येन वाग्भटो नैव वाग्भटः।
नाधीतश्चरको येन स वद्यो यमकिङ्करः॥

अर्थ–जिस वैद्यने सुश्रत सुना नही, वाग्भट कण्ठाग्र किया नही और चरक पढा नही वह वैद्य नही है, वह साक्षात् यमका दूत है। इसीलिये बृहत्त्रयीपाठक वैद्योंका अत्यन्त गौरव और सत्कार होताहै; और जो अठाराह १८ संहिता है वह औरही और युगोंके

निमित्त है परन्तु अष्टांगहृदयसंहिता केवल कलियुगहीके लिये निर्मित हुईहै । यथा-

अत्रि कृतयुगे चैव त्रेतायां चरको मत ।
द्वापरे सुश्रुतः प्रोक्तः कलौ वाग्भटसंहिता ॥

अर्थ-सत्ययुगके लिये अत्रिसंहिता रचीगई थी, त्रेताके लिये चरकसंहिता निर्माण कीगई, द्वापरके लिये सुश्रुत, और कलियुगके लिये वाग्भटसंहिता बनीहै । और जो किसीके चित्तमें सन्देह हो कि, वह अठारह संहिता कौनसी है जो और और युगोंके लिये निर्माण की गई है,इसलिये उनके नामभी लिखे देताहूं वह अठारह संहिताओंके नाम हारीतसंहितामे इसप्रकार हैः-

हारीतसुश्रुतपराशरभोजभेडभृग्वग्निवेशचरकाश्च्यवनोऽप्यगस्ति । वाराहवाग्भटनरायणनारसिंहा आत्रेयकात्रिशशिनः शिवभास्करौ च॥सन्त्यष्टादशशिक्षा धन्वन्तरेर्वाग्भट वहिष्कृत्य ॥

अर्थ-हारीत, सुश्रुत, पराशर, भोज, भेड, भृगु, अग्निवेश, चरक, च्यवन, अगस्ति, वाराह, वाग्भट, नारायण, नारसिंह, आत्रेय, अत्रि, चन्द्रमा, शिव और सूर्य इनमेसे वाग्भटको छोडकर अठारह संहिता आयुर्वेदकी वर्णन की हैं । इस संहिताका जिसप्रकार प्रचार हुआ सो विस्तारसहित लिखताहू, अत्रिसंहिता पञ्चनदादि प्रदेशमे प्रसिद्धहै, अत्रिमुनिकृत चरकादिकके समान प्राचीनहै, यह संहिता न बहुत संक्षिप्त है न बहुत विस्तृत है, यही आदिमे प्रामाणिक और स्मृतिसंहिताकार थी, वाग्भटसंहिताका वृत्तान्त वाग्भटसंहितामे इसप्रकार लिखा है कि, वाग्भटसंहितादि आत्रेयसम्प्रदाय और धन्वन्तरिसम्प्रदायके अनेक चिकित्सातंत्रोंसे आदिमेंही स्वयसगृहीत अष्टांगहृदयसग्रहसे लेकर वाग्भटाचार्यने रचीहै । जैसा उसमें लिखाहै-

अष्टांगवैद्यकमहोदधिमन्थनेन
योऽष्टांगसग्रहमहामृतराशिराप्तः ।
तस्मादनल्पफलमल्पसमुद्यमानां
प्रीत्यर्थमेतदुदितं पृथगेव तन्त्रम् ॥ वा उ ४० अ.

अर्थ-अष्टागवैद्यक समुद्रके मथनेसे जो अष्टांगसग्रह बडे अमृतकी राशि प्राप्त हुई, उससे अल्प उद्यम करनेवालोंके लिये यह अन-

रूप फल तत्र पृथक् ही कहा है, इसीप्रकार यह अलंकारादि सहित अपने नामसे अनेक शास्त्रोंको रचता हुआ ऐसासुना जाताहै कि, यह आदिमे ब्राह्मणधर्मावलम्बी निरन्तर वैदिकाचारका अनुष्ठान करताथा,उसके उपरान्त किसीसमय इसने बौद्धधर्म्मके तत्वको जाननेके लिये किसी बौद्धाचार्य्यको गुरु किया,इसप्रकार बहुतकाल तक निश्चलचित्त होकर उसके अनुसार वर्त्तता रहा और उस धर्मके परम रहस्यको प्राप्तकरके उसमे बडी श्रद्धा करतारहा, फिर वह अपने गुरुकेपास आया उस धर्म्मके अनुरागको धारणकरता हुआ उसके गुरुने देखकर उसे उसी धर्म्मके अवलम्बनके लिये उपदेश दिया,इसप्रकार दक्षिणके पण्डितोका कथनहै. और बहुतलोग इस वाग्भटको अमरसिंहकृत कहतेहै, परन्तु काश्मीरराजतरंगिणीकी समालोचनासे यही विदित होताहै कि, सिंहगुप्तसुत पर बौद्ध वाग्भटाचार्य्य काश्मीर नरपति जयसिंहके प्रजापालन समयमे (संवत् विक्रम१२५३ शके११९८)मे वर्त्तमान था,तथा विजयनगराधिपति बुक्कराजके समयमे माधवने अपने ग्रन्थमे वाग्भटका उद्धार कियाहै इसकोभी९०० नौसो वर्ष बीते, इसके उपरान्त उसी समयमे वाग्भटने अपनी संहिता रची बहुतसे वैद्योका यह मत है, कोई वैद्यलोग यह कहते है वाग्भटसंहिता बहुत प्राचीनहै चरक,सुश्रुतसे पछिकी रची अनुमान कीजातीहै, उसमे सब प्रकारकी चिकित्साओंके अंग समान है, इसके मुष्टियोग रोगलक्षणादिक और इसकीभाषाप्रणाली अत्यन्तशुद्ध और परम प्रशंसनीयहै, वाग्भटका जन्म लोग कईप्रकारसे कहते है, कोई उसको धन्वन्तरि बतलातेहै, कोई उसको समुद्रके मथनेसे उत्पन्न हुआ एक रत्न कहतेहै, कोई उसको कलियुगका प्रधान बुद्ध गौतमऋषि कहतेहै, अपने रचेहुए अष्टांगहृदयसंग्रहमे उसने सिन्धुदेशमे अपना उत्पन्न होना लिखाहै । जैसे कि-

"भिषग्वरोवाग्भटइत्यभून्मेपितामहोनामधरोऽस्मियस्य ।
सुतोऽभवत्तस्य चसिंहगुप्तस्तस्याप्यहंसिन्धुषुजातजन्मा ॥"

अर्थ-मेरे पितामह वाग्भट वैद्यवर हुए जिनका मे नाम धारण कररहाहू (मैनेभी वही वाग्भट नाम अपना रक्खाहै) उनके पुत्र सिंहगुप्त हुए और मैभी उसी अनुपम विद्यालयसिन्धुमे उत्पन्न हुआ.

अरुणदत्त वैद्यवर मृगांकदत्तका पुत्र वैद्यवंशमे उत्पन्नहुआ, उसने सुप्रसिद्ध वाग्भटसंहिताकी सर्वाङ्गसुन्दरी नाम टीका निर्माण की।

हेमाद्रि बडा प्रसिद्ध ग्रन्थकारहै,उसने वाग्भटसंहिताके सूत्रस्था-

नकी आयुर्वेदरसायनटीका रची, चतुर्वर्गचिन्तामणिनामक स्मृतिसग्रहभी उसीका कहते है।

भावप्रकाश–वैद्यवर लटकमिश्रके पुत्र श्रीमान् भावमिश्रकृतहै, यह बहुत विस्तारयुक्त, रोगोका निश्चय करनेवाला, चिकित्साका सग्रह है, अनेक प्राचीन संहितासग्रहकोष, निघण्टुकी समालोचना और अपनी कल्पनासे रोगोके लक्षण, चिकित्सा, पथ्य, द्रव्यगुण, रसवीर्यविपाक, जारण, मारण, शोधनादिकोका सग्रह करके लिखाहै, इन भावमिश्रने वैदेशिक पूर्टगीज व ईरानसे लायेहुए उपदंशरोग विशेष अन्तर लक्षण सम्पन्न फिरंग रोगको अपने प्रथम चिकित्सासहित वर्णन कियाहै और नवीन चोबचीनी, छुहारे इत्यादि बहुत वैदेशिक द्रव्य गुणसहित उसमे मिलाये है उसमे उपदंशनाशक चोपचीनी मूल चीनदेशसे और भारतखण्डके गोवा प्रदेशमें तीन सौ३०० वर्षसे अधिक पहिले सवत् १५९६ मे लाया, यह बुइलसन साहेबका मत है।

भावमिश्रका प्रादुर्भाव उस कालमे वा उसके उपरान्त हुआ, इस भावप्रकाशसग्रहको वैद्यलोग सब देशोमे अधिक मानतेहै, और इसीको आयुर्वेदका मुख्य ग्रन्थ जानतेहै, इसीसे यह भावप्रकाश सब ससारमे प्रसिद्ध है।

माधवनिदान–माधवकरका रचाहुआहै, इसमें माधवकरने अनेक प्रकारके प्राचीन तन्त्र, वैद्यकसंहितादिकोसे, कही आदर्शके उद्धारसे, कही अपनी रचीहुई भाषासे, कही सारसंग्रहसे और कही पर्य्यायके अनुक्रमसे संग्रह करके अनेक रोगोके निदानका लक्षण लिखकर भारतवासी चिकित्सकोके पढनेके लिये बडा उपकार सिद्ध कियाहै यह ग्रन्थ माधवाचार्य्यकृत है, ऐसा बहुत विद्वानोको मतहै परंतु वह ठीक नहीं जानपडता, क्योंकि माधवकर ऐसी उपाधिवाला अत्यन्त प्राचीन वैद्यजातीय ग्रन्थकार था, संसारमें ऐसी प्रसिद्धि है, दूसरा चक्रपाणिदत्तने माधवनिदानके रोगोकी अनुक्रमणिकाके अनुसार अपने ग्रन्थको निर्माणकिया यह माधवकर चक्रपाणिसे पहिले था ऐसा ज्ञान होताहै, और यह चक्रपाणि बारहसौ १२०० सवत्मे गौड राज्यकी पाठशालाके अध्यक्षहोनेको अपने ग्रन्थमे लिखताहै और यहभी है कि माधवकर अपने ग्रन्थके उपसंहारमें जो वृद्ध भोज गोविन्द पातञ्जलि वृत्तिकारके समयमे सातवी शताब्दीमे वर्तमान था, उसके रचेहुए सूक्तिकरुणामृत नामक ग्रन्थके मुक्तावलिकार गोविन्दसे पीछे गुरुको स्वीकार करके अपने आपको उसके समान समयानुसार, वा उसके पीछे इस रसग्रन्थको अनुपम

प्रतिपादन करताहै, उसका निदान आठवी शताब्दीमे अरबी भाषामे अनुवाद हुआ और "एदान" नाम रक्खा, यह ग्रन्थ अरबी भाषामे प्रसिद्धहै यह पहिले तत्त्वविद् उइल्सनसाहेबका मत है।

व्याख्यामधुकोष-माधवनिदानकी टीका-वैद्यवर श्रीविजयरक्षित श्रीकण्ठ दत्तने रचाहै (श्रीकण्ठवृन्दकृत सिद्धयोगका टीकाकारभीहै, वह टीका कुसुमावली नामसे प्रसिद्धहै) इसकी भाषा पं० दत्तराम चौबेने अच्छी कीहै।

शार्ङ्गधरसंग्रह-प्रसिद्ध शार्ङ्गधरपद्धतिकार शार्ङ्गधरवैद्यकृतहै, यह ग्रन्थ न अति संक्षित न अति विस्तृत है, हमारे देशके विद्यार्थी लोग इस ग्रथको अधिक पढतेहै, यह ग्रन्थकार विश्वप्रकाशकृत महेश्वरसे पीछे हुआ, इसकी प्रसिद्ध संस्कृतव्याख्या आढमल्लीहै और उसीके अनुसार इसका भाषानुवाद पण्डित दत्तराम चौबेने कियाहै।

रसेन्द्रसारसंग्रह-प्रामाणिक रसग्रंथ गोपालभट्टने रचाहै, इसमे रसोंका जारण मारण शोधनादिसहित रोगोके सम्पूर्ण प्रकारके रसघटित योग संग्रह कियेहै, इस ग्रंथको देखकर हमारे देशके अनेक वैद्य अपने अपने ग्रंथोमे संग्रह करतेहै यह ग्रंथकार विक्रमकी तेरहवी शताब्दीमे वर्त्तमान था, इसकी भाषाटीका मुरादाबादनिवासी शंकरलाल जैनने कीहै।

रसेन्द्रचिन्तामणि-राधाविनोदकाव्यके रचयिता रामचन्द्र कविवरका निर्माण किया हुआ यह रसग्रन्थ है, परन्तु यह ग्रन्थ सब रसग्रन्थोंसे प्राचीन है, ऐसा वैद्योके मुखसे सुननेमे आयाहै, इस ग्रन्थमें रसोका जारण मारणादिक विधिपूर्वक वर्णन किया है, रसपारिजात ग्रन्थभी रामचन्द्रकाही रचा हुआ है। और एक रसेन्द्रचितामणी ढुण्ढनाथकृतभी है, उसमे भी रसोके बनानेकी क्रिया अच्छी रीतिसे लिखी है, और प्राचीन भी है, परन्तु इस देशमे उसका प्रचार नही, वङ्गदेशमे अधिक प्रचार है।

चक्रदत्तसंग्रह-चक्रपाणिदत्तविरचित रोगोकी चिकित्साका संग्रह है, इसमे माधवकरप्रणीत रोगोका निदान, ग्रन्थानुसार रोगोका अनुक्रम और ज्वरादिक रोगोंकी चिकित्सा कही है, उसमे रोगोके तत्प्रणीत सिद्ध योग है, वह परम दृष्ट फल है, इसप्रकार यह संग्रह सर्वत्र सत्कारपूर्वक ग्रहण कियाहुआ संसारके हितको सिद्ध करनेवाला है, चक्रपाणि वीरभूमि देशवासी प्रसिद्ध रोध्रवलनाम दत्तकुलमे उत्पन्न नारायणदत्तका पुत्र, और नरदत्तका शिष्यथा वह विद्याकुलसम्पन्न. वैद्यभानुदत्तके अन्तरंगभावसे उसके पीछे गौडराज्यकी

पाकशालाका अध्यक्ष हुआ, उसका प्रादुर्भाव सातसौ पचास ७५० वर्षका अनुमान जान पडता है, यह भी सुननेमे आया कि, उसकी जन्मभूमिमे उसका स्थापन किया हुआ चक्रपाणीश्वर शिवालय है, इस कार्य्यसे उसका धर्म्म शैव जान पडता है ।

"गौडाधिनाथरसवत्यधिकारिपात्रं
नारायणस्य तनय सुनयोऽन्तरङ्गात् ॥
भानोरनुप्रथितरोध्रवली कुलीनः
श्रीचक्रपाणिरिह कर्तृपदाधिकारी ॥
यः सिद्धयोगलिखिताधिकसिद्धयोगान्
तत्रैव निक्षिपति केवलमुद्धरेद्धा ॥

अर्थ–गौडाधिनाथकी रसोईके अधिकारियोमे पात्र नारायणका पुत्र नीतिमान् भानुदत्तके अन्तरंगसे प्रसिद्ध रोध्रवली कुलीन श्री चक्रपाणि कर्त्तापदका अधिकारी जो सिद्धयोग लिखित अधिक सिद्धि योगोको उसमेंही केवल उद्धार कर्त्ता है

सिद्धयोग–वृन्दकुण्डकृत अत्यन्त प्रमाणिक चिकित्सा ग्रन्थ है, उसकी कुसुमावली नाम टीका श्रीकण्ठकृत है, जिसे चक्रपाणिने अपने ग्रन्थमे इस ग्रन्थका समुल्लेखन किया है, इससे यह चक्रपाणिसे पहिला समझना चाहिये ।

रसकौमुदी–वैद्य माधवकृत है, माधवने इसमें रसघटिक इष्ट फल औषधियोको अनेक रस ग्रन्थोसे लेकर अपने रचे हुये ग्रन्थमें समायोजना करके चिकित्सा औषधसंग्रह किया, और बहुत रोगोमे अनेक योग स्वयमेव स्थापना किये, यह ग्रन्थकार निदानका कर्त्ता माधवकर नाम वृद्धपरम्परासे सुनाजाता है परन्तु इस ग्रन्थको किसी और माधव नाम वैद्यने प्रसिद्ध किया यदि यह बात सत्यभी हो तो भी इसको कोई शीघ्र सिद्ध नही कर सक्ता, क्योंकि माधवकरके समयमे अहिफेन प्रयोग, रसादिकोंका जारण मारण आदिका प्रथम प्रचार न था ।

रसरत्नाकर–नित्यनाथकृत बडा रसोका संग्रह है, उसने रसोका जारण मारणादिक इस ग्रन्थमे विस्तारपूर्वक दर्शाकर अपने रचे हुए और संग्रह कियेहुए तैल औषधादिक बहुत सन्निवेश किये है, नित्यनाथ बङ्गदेशवासी न था, परन्तु पश्चिम देशमे उत्पन्न हुआ, ऐसा अनुमान किया जाता है,

अलौकिक देखकर मैने इसकी हिन्दीभाषामे टीका की जो जगत्मे सर्वसाधारण मनुष्योंके लिये उपयोगी हो।

योगचिन्तामणि-श्रीहर्षसूरिकृत है, इसमे सिद्ध चिकित्सा उपयोगी बहुतसे योग है उसका समय ग्यारहसौ ११०० अथवा साढे ग्यारहसौ ११५० संवत् विक्रममे रचा गया, यह राजतरंगिणीमें लिखा है, और इसकी भाषाटीका माथुरीमंजूषा नाम पण्डित दत्तराम चौबेने निर्माण की है।

योगतरंगिणी-वैद्यक रसोका ग्रन्थ अत्यन्त प्रामाणिक त्रिमल्लभट्टकृत. यह ग्रन्थ हमारे देशमे अधिक प्रचलित है, इसका भाषानुवाद पण्डित ज्वालाप्रसादमिश्र मुरादाबादनिवासीने किया है, इनही त्रिमल्लभट्टके बनाये हुए वैद्यचन्द्रोदय, रसदर्पण,योगचन्द्रिका, द्रव्यगुणशतकादि और भी ग्रन्थ है, इसी द्रव्यगुणशतककी भाषाटीका मैने लिखी है।

वैद्यामृत और वैद्यवृन्द-भिषक् नारायणकृत रसग्रन्थ है, यह ग्रन्थ नवीन होनेके कारण अधिक प्रचलित नही है, यह ग्रन्थकार संवत् १८५० मे विद्यमान था।

वैद्यजीवन-वैद्यवर लोलिम्बराजकृत है, परन्तु बहुत प्राचीन नही है, इसने इसमें काव्यकरणके छलसे चिकित्साके उपकारी औषध अनुपानादिका उपदेश किया है।

सारकौमुदी-आनन्दवर्म्मकृत अर्वाचीन वैद्यकसंग्रह एक सौ पचाश १५० वर्षके लगभगमे रचागया है इस ग्रन्थका बङ्गदेशमे अधिक प्रचार है।

भैषज्यरत्नावली-१०० सौ वर्षसे अधिक पहिले गोविन्ददाससेनने रची है, हमारे देशमे इस ग्रन्थकी अधिक प्रतिष्ठा नहीं है

वैद्यरहस्य-वैद्यवर विद्यापतिप्रणीत. यह ग्रन्थ आजकलके सब नवीन ग्रन्थोंसे उत्तम है, इसमें अत्युत्तम प्रयोग है, इस कविके बनाये और भी चिकित्साञ्जनादि अच्छे अच्छे ग्रन्थ है।

चिकित्सासारसंग्रह-भिषग्वर क्षेमशर्म्माआचार्यकृत सर्वोपयोगी है,इन्होंने सब रोगोका उपाय बहुत अच्छी रीतिसे लिखा है।

हारीतसंहिता-महर्षि आत्रेय और हारीत मुनिके संवादमे रची गई है, ऐसा प्राचीन वैद्योने लिखाहै, परन्तु हमको यह वह ग्रन्थ निश्चय नहीं होता,क्योंकि इसमें बहुतसे प्रयोग और श्लोक अशुद्ध दिखाई देतेहैं,हमारी समझमें तो किसी वैद्यने नवीन कल्पनाकीहै।

प्रयोगामृत-यह अत्यन्त विस्तृत चिकित्साग्रन्थ नृसिंहधन्वन्तरिशिष्य वैद्य चिन्तामणिकृत है, यह ग्रन्थकार श्रीखण्डसमाजके अन्तर्गत नारोल ग्राममे १०० वर्षसे अधिक पहिले उत्पन्न हुआ।

नाडीप्रकाश-नाडीके जाननेका ग्रन्थ क्षत्रियगोत्रज आनन्दसेनके वंशमे उत्पन्न शङ्करसेनने रचाहै, वैद्यविनोद और रसशङ्कर ग्रन्थभी उसी कविकृत है।

अर्कप्रकाश-यह चिकित्सासंग्रह रावणकृतहै, परन्तु हमको रावणकृत होनेमे सन्देह है क्योकि, इस ग्रन्थमे नवीन औषधि बहुत लिखी है जैसे कि, गुलदाउदी, गुलाब, इससे रावणकृत नही जान पडता, किसी नवीन वैद्यने अपना नाम रावण रखलिया अथवा रावणके नामसे रचदिया है,इसका भाषानुवाद मैने कियाहै।

चिकित्साक्रमवल्ली-यह अर्वाचीन ग्रन्थ काशीनाथद्विवेदीप्रणीतहै, अभीतक विशेष प्रसिद्धि नहीं पाई,कविता,प्रयोग अत्यन्त उत्तम है।

निघण्टुरत्नाकर-यह नवीन ग्रंथ विष्णु वासुदेव गोडबोलेकृत है, परन्तु गणेश रामचन्द्रशास्त्री दातार,भास्करानन्दशास्त्री तामनकर कृष्णशास्त्री महाबल, तथा विश्वनाथ विनायक पाटीलकी सहायतासे रचागयाहै और यह ग्रन्थ एक लाख श्लोकोंमे समाप्त हुवा है. अकारादिकोष, द्रव्यगुणदोष, शारिरक अष्टविध परीक्षा,निदानसहित चिकित्सा, धातुशोधनमारणविधि, यंत्राध्याय, पुटविधि और अजीर्णमञ्जरी इत्यादि विषयोंसे परिपूर्णहै, इसमे अनेक औषधि द्वीपान्तरकी लाई हुई लिखीगईहै, तथा यूनानी औषधियोंका नाम गुणदोष, संस्कृत और मराठी भाषामे लिखे है, इसमें नाना प्रकारके विषय अंग्रेजी और फारसीसे लेकर सन्निवेशित कियेहै, आज कल इस ग्रंथके समान दूसरा ग्रन्थ विदित नहीं होता, किसी ग्रंथमे केवल चिकित्साही है, किसीमें रोगोके लक्षण, किसीमे निदानसहित चिकित्सा, किसीमें धातुशोधन मारण, किसीमे परिभाषा,किसीमें निघण्टु,किसीमें मानपरिभाषा, किसीमें नाडीविज्ञान, किसीमें कोष, किसीमें पाकप्रणाली, किसीमें पथ्यापथ्य, किसीमें चर्य्या और किसीमे धात्रीचिकित्साहै परन्तु इसको तो सम्पूर्ण विषयोंसे विभूषित करदियाहै, जो विषय कहीं नहीं पाये जाते वह सब इस ग्रन्थमे विद्यमानहै इसलिये विष्णु वासुदेव गोडबोलेको हम बारवार धन्यवाद देतेहै कि, जिसने अनेक ग्रन्थोको संग्रह करके यह निघण्टुरत्नाकर निर्माण किया, अब हम सूर्य्यवंशीय श्रीरघुराजभूषण रामचन्द्रसूनु लववंशचूडामणि सेठ हंसराज करमसीको धन्यवाद देतेहै कि, जिन्होंने अपनी

सहायतासे इस ग्रन्थको प्रकाशित किया, ग्रन्थकारने यह निघण्टुरत्नाकर संवत् १९२४में रचाथा यह विष्णु वासुदेव गोडबोले पावसग्रामनिवासी जिले रत्नागिरिके थे।

अमरकोष-अमरसिंहकृतहै, अमरसिंह वा अमरदेव विक्रमादित्यके समयमें हुवा, ऐसा निश्चय होताहै, परन्तु विक्रमादित्य तीन हुए, न जानिये यह अमरसिंह किसके समयमें हुवा, इसमे अनेक मत दिखाई देतेहैं, उइल् फोर्ड साहिबके मतसे नौ ९ विक्रमादित्यहैउन सबने शालिवाहनादिकसे युद्ध किया, (विद्याकल्पद्रुममें) पर आधुनिक ऐतिहासिक रहस्यकी अनुसन्धि करनेवालोने कारण प्रदर्शनपूर्वक किसी समय यह सन् ५६ ई० प्रथम विक्रमादित्य नरपतिकी सभामें नवरत्न थे।

धन्वंतरिः क्षपणकामरसिंहशंकुवेतालभट्टघटकर्परकालिदासाः। ख्यातो वराहमिहिरो नृपतेः सभायां रत्नानि वै वररुचिर्नव विक्रमस्य॥ (काव्य संग्रह)

अर्थ-धन्वन्तरि, क्षपणक, अमरसिंह, शंकु, वेतालभट्ट, घटकर्पर, कालिदास, वराहमिहिर और वररुचि राजा विक्रमकी सभामे यह नवरत्न थे।

धारानगराधिपति दूसरे वृद्ध भोजकी सभामे किसी समय सन् १००५ ई० में अन्यतम भोजकी सभामे उसी प्रकारके रत्नोमे अन्यतम होनेसे स्थापन किया, परन्तु इन तीनो कल्पोमे कौनसा कल्प मुख्यहै, यह निश्चय नहीं होसका, हमे तो संवत् प्रवृत्तकरनेवाले विक्रमादित्यके संवत् तिनमें था, ऐसा विश्वास है, अमरसिंह बौद्धमतावलम्बी था, यह बात सब संसारमें प्रसिद्धहै, उसका कोष प्राचीन रीतिसे छन्दोबद्ध सब कोषोंमे श्रेष्ठ होनेसे सब जगत्में आदर किया गयाहै, वह इसको स्वर्गादिक वर्गोंमे विभाग करके बीच बीचमे वर्णानुक्रमकी रीतिसे रचताहुआ।

अमरकोषके प्रचलित टीकाकारोंमे-

मथुरेश प्राचीनहै, शाकेशालिवाहनके ६०० वर्षमे उत्पन्न हुआ, वह किसी मुसलमान वीरकी सहायतासे सदा शास्त्रका आन्दोलन करताथा, यह उइल्सन्साहिबका मत है, वही कवि शब्दरत्नावलीका रचनेवाला था।

क्षीरस्वामी-काश्मीरपति ललितादित्यके राज्यसमयमे उत्पन्न हुआथा, जयापीडनाम कोई राजा इसीसे शब्दविद्याको पढकर

अन्तमे ललितादित्य पण्डित ऐसी प्रसिद्धिको प्राप्त हुआ सन् ७०५ । ७३१ राजतरंगिणी ।

रायमुकुट-(सन १४३०) मे हुआथा, राजतरंगिणी ।

गौरांगमल्लिका पुत्र भरतमल्लिक बहुत प्राचीन ग्रन्थकार और टीकाकार है यह वर्द्धमान देशके पातिल पल्लिग्राममें कुलीन वैश्यवंशमे एकसौ पचाश१५०वर्षके लगभग पाहेले उत्पन्न हुआथा, यह कवि प्रसिद्ध शाब्दिककार कोल्लासका रचनेवाला और रघुवंश आदि काव्य कुमारसंभवादिकोंका टीकाकार है, उसकी रची हुई अमरकोषकी टीकासे उसकी कीर्त्ति भारतमें चिरकालतक स्थित रहेगी

धन्वन्तरिनिघण्टुभी-अमरसिंहकृत अमरकोषके सदृश प्रमाणोंसे वैसाही पायाजाताहै, यह ६०० छःसौ वर्ष पहिला है ।

हेमचन्द्राभिधान-अभिधानचिन्तामणिके नामसे प्रसिद्ध है, उसरीतिसे विशेष करके दो भागोमें विभाग करके हेमचन्द्राचार्य्यने रचा है उसमे पहिला स्वर्गादिक छः भागोंमे विभाग किया है, शब्दोंकी श्रेणीका विभाग अन्ततक क्रमसे किया है, दूसरा नानार्थघटित है, परन्तु हेमचद्र अवतरणिकामे अपने अभिधानके केवल प्रथमभागकी शब्दरचनाप्रणालीको वर्णन करके दूसरेका कुछ वृत्तान्त नही लिखा और पहिलेके समान दूसरे भागकी टीका भी नहीं जान पडती, इससे दूसरे भागको हेमचन्द्रकृत होनेमे वैद्य लोग सन्देह करतेहै कि,महेश्वरकृतनानार्थवर्ग इसमें मिलादियाहै,"विद्वान् लोग ऐसी तर्कना करते है"

हेमचन्द्र वा हेमाचार्य्ययति-प्राचीन जैनग्रन्थलेखक और जैनधर्म्मावलम्बी था, यह संवत् १०३० में हुवा और पाटलीपुत्र नगरनिवासी था,इसने अपने जीवनके पहिलेभागको नानाशास्त्रकीरचनासे व्यतीतकरके अन्तिमअवस्थामे गुजरातदेशकी ओर जाकर वहां जैनधर्म्मकी समालोचनासे बडी प्रतिष्ठा पाई और वहां प्रकृति सहित राजत्व और जैनधर्म्मको ग्रहण किया सुनाजाताहै कि जैनधर्म्मावलम्बी हेमाचार्य्य यतिने उसीसमयमें राजपूत नरपति गुणमरपालकोभी जैनधर्म्ममेंही दीक्षित करलिया, इस प्रकार प्रसिद्धिहै जैसा कि यह हलायुध गुरु लक्ष्मणसेनकी सभामे था(संवत १२३०)ऐसा उइलसन् साहियका मत है ।

शब्दमाला-रामेश्वरशर्म्माकृत अतिसंक्षिप्त अभिधानसंग्रहहै, अमरकोषकी शेषभूत वंगभाषामें कहीगईहै;यह मेदिनीकोषसे पहिलीहै यह उइल्सन् साहबका मत है ।

नाममाला-धनञ्जयकृत है, उसमे श्रेणीविभागके असद्भाव होनेसे यह प्राचीन अनुमान कीजातीहै, महर्षि जैनधर्म्मावलम्बी मानतुंगाचार्य्यका शिष्य धनञ्जय विक्रमकी दशवीं शताब्दीमे वर्त्तमान था, वैद्यलोगोंने ऐसा लिखाहै।

भूरिप्रयोग-दामोदरदत्तके पुत्र प्रसिद्ध सुपद्म व्याकरणकार पद्मनाभदत्तने रची है और तीनभागोमें विभाग की है, पद्मनाभ मेदिनीकारके पीछे हुआ, स्वयं अपने ग्रन्थमे मेदिनीके उल्लेखसे प्रमाण किया है।

शब्दरत्नावली-मूसेखाँ नाम किसी मुसलमान वीरके आश्रयसे अमरटीकाकार मथुरेशने अमरकोषकी प्रणालीसे रची है, उसमे शब्दोके भिन्न रूप पाठ किये गये है।

जटाधरकोष-चट्टग्रामनिवासी जटाधरने रचा है, जटाधरने अमरको विना देखे जटाधरकोष निर्माण किया, यह बहुत प्राचीन अनुमान नहीं कियाजाता।

अभिधानरत्नमाला-हलायुधकृत है, यह संक्षिप्त कोष स्वर्ग, भू, नरक, वारि, मिश्र नाम पाँचभागोंमे विभाग की गई है, हलायुध भट्ट भास्करका शिष्य केरलदेशीय ब्राह्मण अति प्राचीन बौद्ध धर्म्मका अवलम्बन करनेवाला विक्रमकी द्वादश शताब्दीमे वर्त्तमानथा, उसके कोषमे उद्भिज्ज द्रव्य खनिजद्रव्योंकी मनोरमसूची बंग भाषासे व्याख्यान कीगई,ऐसा सुना जाताहै कि,हलायुध लक्ष्मणनरेशकी सभामे पण्डित था।

शब्दचान्द्रिका-नाम, द्रव्य, गुणादिके कोष यह चक्रपाणिदत्तका रचाहुआ प्रसिद्ध है यह उद्भिज्ज, खनिज, प्राणी, पथ्यापथ्यादिकोंके कार्य्योपयोगी होनेके संग्रहसे सर्वत्र प्रशंसनीय है, इसके द्रव्योंके नाम बंग भाषामें कहे हैं, यह बंगदेशहीके रहनेवाले थे।

विश्वप्रकाश-यह कोष बहुत प्राचीन है, जब कान्यकुब्जमे विद्याके उत्साहका अत्यन्त समादर था, तब महेश्वरने संवत्१०६६मे संग्रह किया, उस समय शाके १०३३ थे महेश्वर गाधिपुरनिवासी साहसांक नरपति चिकित्साधिकारी श्रीकृष्णके वंशमें उत्पन्न हुआ, ऐसा पहिले तत्त्वके जाननेवाले, उइलसन् साहबका मत है।

अजयपालकृतसंग्रह-संक्षिप्तहै, परन्तु बहुत प्रमाणोंसे बडा है, अजयपाल मेदिनीकरसे पीछे हुआ और जैनमतावलम्बी था, यह भी उइलसन् साहबका मतहै।

धरणीकोष-कान्यकुब्जदेशके ब्राह्मण धरणीधरने निर्माण किया है, यह मल्लिनाथसे पहिले हुआ, यह उइलसन् साहबका मत है।

त्रिकाण्डशेष-परम जैन पुरुषोत्तम देवकृत तीन अध्यायमें है यह ग्रन्थ अमरादिकोष परिशिष्टमात्र प्रसिद्ध शब्दोंसे पूर्ण है।

हारावलिकोष-संक्षिप्त प्रसिद्ध सामान्यशब्दोंसे प्रथित दोभागों मे विभाग किया हुआहै उनमे पहिला भाग नामपर्यायसंग्रह, दूसरा भाग नानार्थसंग्रहहै, यह ग्रन्थकार नववीं वा दशवीं शताब्दीमे हुआ, ऐसा डइलुसन् साहबका मत है।

मेदिनीकोष-प्राणकरके पुत्र मेदिनिकरका रचाहुआ है,और यह अभिधान रत्नमालाके नामसे संसारमे प्रसिद्ध है, मेदिनीकर महेश्वरसे पीछे चौदहवींशताब्दीके अन्तमे और महेश्वर, रायमुकुट इन दोनोके मध्यवर्ती समयमे हुआ, यह कोष अन्त्यादि क्रमसे सुलभ समझने योग्य और प्रशंसनीय है "कर" उपाधिसे अनुमान किया जाता है कि, यह वैद्य बङ्गवासी है।

इत्यादि अनेक कोष देखनेमे आये और वनस्पतियो सम्बन्धक बहुधा प्राचीन ग्रन्थकारोने अपने अपने ग्रन्थोंमे वर्णन किये है, इसके अतिरिक्त निघण्टु नामक स्वतंत्र ग्रन्थभी है, निघण्टु शब्दका अर्थ कोष वा संग्रह है, निघण्टु और निघण्ट इन दोनों शब्दोंका अर्थ एकही है, प्राचीन निघण्टुओंकी पुस्तकोंमें वनस्पतियोंके नाम, गुण, दोष, उपयोग, किस रोगपर कौन औषधि देनीचाहिये इत्यादि बाते लिखी है।

आत्रेय, हारीत, चरक, सुश्रुत, वाग्भट और भावप्रकाशादि अनेक ग्रन्थकारोने अपने २ ग्रन्थोमे निघण्टुका वर्णन लिखाहै,परन्तु ज्यों ज्यों शास्त्रका विचार बढतागया त्यो त्यो एक२विषयपर अनेक अनेक ग्रन्थ बनने लगे, और इसी वनस्पतिशास्त्रपर बहुतसे निघण्टु नामक ग्रन्थ बनगये, जितने निघण्टु आजतक निर्माण हुए है, उनमे कुछ कुछ मतभेद है, एक गुडूच्यादि निघण्टु है इसीको बहुत लोग धन्वन्तरिनिघण्टु मानते है, परन्तु यह बात निश्चय नहीं है, गुडूच्यादिनिघण्टु व धन्वन्तरिनिघण्टु दोनो धन्वन्तरिजीके बनाये है, गुडूच्यादिनिघण्टु बहुत दिन हुए कि, छपगया, परन्तु वह दूसरा धन्वन्तरिनिघण्टु कहीं नहीं मिलता जहांतक मुझसे बनपडा मैने बहुत अनुसन्धान किया।

एक राजनिघण्टु नरहरि पण्डितप्रणीत है, जिसको छपे बहुत दिनहुए, इस निघण्टुका दूसरा नाम "चूडामणि" है, बहुतसे लोग कहतेहै कि, राजनिघण्टु एकही है, परन्तु काशीराजप्रणीत भी एक निघण्टुहै काशिराजका नाम दिवोदासभी था, इसकोही धन्वन्तरिका अवतार मानतेहै इसमे यह संशय होता है

कि, पहिला कहाहुआ धन्वंतरिनिघण्टुही कदाचित् काशीराजकृत 'राजनिघण्टु' हो, "धन्वंतरिः क्षपणकामरसिंहशंकु" इस श्लोकके आधारसे ज्ञात होताहै कि, विक्रमादित्यकी सभामें जो नव रत्नथे उनहीमे एक धन्वंतरिजी भी थे आश्चर्य नहीं कि जो इन्होंनेही धन्वंतरि नामक निघण्टु रचाहो विक्रमकी सभाके नौओं रत्न महाविद्वान् थे उनके रचे हुएग्रन्थोंका आजतक अधिक प्रचार है, इसलिये यहभी कहाजासक्ता है कि, धन्वन्तरिनिघण्टु इनहीं धन्वन्तरिजीका रचाहुआ है ।

धन्वंतरिके बनाये दो निघण्टु, तीसरा नरहरिपंडितकृत निघण्टुचूडामणि कि, जिसको राजनिघण्टु भी कहते हैं, चौथा काशीराज (कि जिनको धन्वंतरिका अवतार कहते हैं) कृत राजनिघण्टु है, नरहरिरचित निघण्टुको लोग अबतक नहीं जानते, पंडित शङ्करदास शास्त्रीने लिखा है कि,एक जगह उसका भी पता लगता है परन्तु राजनिघण्टु नाम राजनिघण्टु नहीं है इस निघण्टुका कर्त्ता अपने मंगलाचरणमे लिखता है ।

प्रारम्भि भेषजहिताय निघण्टुराजः ।

और समाप्तिमे भी ऐसा लिखा है ।

इति काश्मीरमण्डलप्रसिद्धवसातिश्रीमठसिद्धगुहाक्षास्थानस्थितश्रीनंदिस्फोटाप्रसिद्धमहिमानन्दश्रीसोमानन्दाचार्य्यवंशोद्भवचतुर्देशविद्याविनोदपरिणतसमागमद्विजवैराग्ययोग्यश्रीपरमहंसजगद्विज्ञानतिमिरमार्तण्डश्रीचण्डेश्वरापरनामधेयश्रीराजराजेन्द्रगिरिश्रीपादपद्मसर्वशास्त्रमकरन्दामोदमुदितसद्वैद्यविद्याविशारददासविशारदमानसहतारिधुरन्धरनानाधनाद्रहणसत्त्वगुणसहजश्रीमदीश्वरसूरिसूनुश्रीमदमृतेशानन्दचरणारविन्दमकरन्दानन्दोदितश्रीनरहरिपण्डिताविरचिते निघण्टुराजापरपर्यायवत्यभिधानचूडामणौ चैकार्थाद्यभिधानस्त्रयोविंशो वर्गः ।

इससे ज्ञात हुआ कि,ग्रन्थकर्त्ताने इस निघण्टुके दो नाम रक्खे हैं, एक निघण्टुराज, और दूसरा चूडामणि,दो वास्तविक नामोंके रहते हुएभी न जानिये कि, फिर किसने इसका तीसरा नाम राजनिघण्टु रखदिया ? ।

इसप्रकार चार निघण्टु हुए पाँचवाँ नाम निघण्टु ज्ञातहोताहै निघण्टुप्रकाशमे लिखा है कि,चन्द चन्दनकृत गणनिघण्टुहै जिसको मदनादिनिघण्टु भी कहते है,यह अभी कहीं छपा नहीं है, और मदननिघण्टु मदनपाल राजाका बनाया हुआ छपगया है, इसका दूसरा नाम मदनादिनिघण्टुभी है, परन्तु गणनिघण्टु भोजराज-

निघण्टु और शेषराजनिघण्टु दशवीं शताब्दीमे वर्त्तमानथे यह प्रमाण पायाजाता है इन तीनों निघण्टुओंका आजतक कहीं पता नहीं लगता, और मदनपालनिघण्टु तो सर्वत्र प्रसिद्ध विस्तृत और प्रशंसनीय है,यह निघण्टु मदनपालनरेशके विनोदार्थ किसी वैद्यने निर्माण किया था ऐसा निश्चय होता है,विद्यार्थियोंमे इसका अधिक प्रचार है,क्योंकि इसमे नाम,द्रव्य,गुण विस्तारपूर्वक वर्णन कियेहैं।

इसप्रकार सात निघण्टु प्रमाणित हुए आठवां बोपदेवकृत "हृदय-दीप" निघण्टु है, नवां मुद्गलकृत "द्रव्यरत्नाकर" दशवा कैयदेवकृत "कैयदेवरत्नाकर निघण्टु" ग्यारहवा "केशवकृत सिद्धमन्त्र" यह चारों निघण्टु अभी कहीं छपेनहीं है, केवल विश्वनाथसेनकृत पथ्यापथ्यानिघण्टु छपाहै, और बडे खोजसे एक त्रिमल्लभट्टविरचित "द्रव्यगुणशतश्लोकी" निघण्टु मुझको मिला मैंने वैद्यजनोंके हितार्थ उसका भाषानुवाद कियाहै ।

राजवल्लभीयद्रव्यगुण-यह परमोत्तम ग्रन्थ वैद्यवर राजवल्लभकृत है, परन्तु श्रीनारायणदास कविराजने विस्तारपूर्वक व्याख्या करके इस ग्रन्थका संस्कार कियाहै, राजवल्लभ वैद्यपरम्परासे सुनते आते है कि,सम्वत्१७६०सत्रहसे साठमें वर्त्तमानथा,यह ग्रन्थ छ परिच्छेदोंमे अत्यन्त श्रेष्ठ श्रेणीसे विभाग किया हुआ वैद्योंको उपयोगीहै,इस ग्रन्थका नामही सुनाजाताथा परन्तु कहीं देखनेमे नहीं आताथा, मैंने अपने मित्रोंके पास देशदेशांतरोंमे राजवल्लभके लिये पत्र भेजे परंतु कहींसे प्राप्त न हुआ बहुतदिन पश्चात् कलकत्तेसे एक मेरे मित्रने भलीभाँति खोज करके इसग्रन्थकी एक प्रति मेरे पास भेजी वास्तवमे यह संक्षिप्त ग्रन्थ जैसा सुनाथा वैसाही निकला, मैंने अत्यत हर्षसहित भाषानुवाद करके वैश्यवंशअवतंस श्रेष्ठी खेमराज श्रीकृष्णदासको समर्पण किया ।

निघण्टुसंग्रह-जूनागढ निवासी वैद्यशिरोमणि रघुनाथजी इन्द्रजी उपनामकतामटरचितहै,अनेक ग्रन्थोंका संग्रह कियाहुआ तो है परन्तु आज कलके समयमे यह निघण्टु सब निघण्टुओंका शिरमौरहै इसकीप्रणालीधन्वन्तरिनिघण्टुकीसदृशहै,यहशाके१८१५मेंरचागयाहै।

वैद्यकशब्दसिंधु-बाबू उमेशचन्द्रकृत नवीन कोषोंमे बहुत उत्तमहै ।

जब इन प्राचीन ग्रन्थोंको मैंने देखा,तो विचार किया कि, देखो पृथ्वीपर कैसे कैसे विद्वान् और बुद्धिमान् हुए, कि जिन्होंने यह अनुपम ग्रन्थ निर्माण कियेहैं, परन्तु सब वैद्योंने वैद्यकमे कोष और निघण्टुहीको मुख्य समझा, कि वैद्यककी मूल यही दोहैं, उन वैद्योंको सर्वज्ञ और गुणज्ञ जानकर

वारम्वार धन्यवाद देताहूं, जो महादुस्तर रोगरूपी समुद्रसे तारनेके लिये यह अद्भुत नौका बनागये, परन्तु आजकल विद्याकी न्यूनतासे पठन पाठन कठिन होगया, लोगोंने भाषानुवाद कियाभी परन्तु उससे किसीका कार्य ठीक ठीक सिद्ध न हुआ; और ठीक ठीक औषधियोंके नाम भी समझने दुर्लभ होगये, और संस्कृतनामोंका चालचलन छूट गया पंसारियोकी दूकानपर जो वह औषधि होतीभीहै तोभी कहदेतेहैं कि हमारी दूकानपर नहीं है, क्योंकि वह लोग उनकी भाषा तो जानतेही नहीं, लोग हार मान, यूनानी और अंग्रेजी औषधि करने लगे, उनकी यह दशा देख मेरे चित्तमे अत्यन्त खेद उत्पन्न हुआ कि, ऐसी ऐसी भारी नौका वृथा आलस्यरूपी वारिधिमें डूबीजाती है इनके बचानेका कोई उपाय होना चाहिये । यह विचार मैंने उसीसमय ऊपर लिखे हुए ग्रन्थोकी सहायतासे और अपनी बुद्धिसे "शालिग्रामौषधशब्दसागरनाम अकारादिक्रमसे एक नवीन कोष रचा" जिसमें प्रथम संस्कृत नाम, उसके आगे हिन्दीभाषाका नाम, जब यह पूर्ण होगया, तो फिर चित्तमे विचार किया कि, कोषका प्रचार तो होगया, परन्तु संसारके उपकारके लिये एक निघण्टु और निर्माण करना चाहिये, क्योंकि विना निघण्टु औषधियोंके नाम, गुण, दोष, नहीं जाने जाते यथा–

निघण्टुना विना वैद्यो विद्वान्व्याकरणं विना ।
अनभ्यासेन धानुष्कस्त्रयो हास्यस्य भाजनम् ॥ १ ॥
वैद्येन पूर्वं ज्ञातव्या द्रव्यनामगुणागुणाः ।
तदायत्तं हि भैषज्यं यज्ज्ञाने स्यात्क्रियाक्रमः ॥ २ ॥

अर्थ–विना निघण्टुके वैद्य, विना व्याकरण विद्वान् (पण्डित) और विना अभ्यास धनुष चलानेवाला (तीरन्दाज) यह तीनों मनुष्य अपनी हँसी करानेवाले है॥ १॥ इसलिये प्रथम वैद्यको औषधियोंका गुण अवगुण विचारना चाहिये, क्योंकि उनही द्रव्योके आधीन सब औषधादिकका बनाना है, और बुद्धिके आश्रयसे सम्पूर्ण क्रिया कर्म जानेजाते है ॥ २ ॥

ऐसा विचार करके मैंने यह "शालिग्रामनिघण्टुभूषण" नाम नवीन निघण्टु निर्माण किया है, इस निघण्टुमें सब निघण्टुओंका सार और नवीन नवीन औषधि जिनका आजकल अधिक प्रचार है, जैसे कि, अकरकरा, शोरा, सत्वगिलोय, सनाय, कालादाना,

चाय, सालममिश्री, कलमीआम, नासपाती, अनन्नास, पिस्ता, बादाम, छुहारा, आलुबुखारा, माजु, ब्रह्मदण्डी, रेवटचीनी, तमाखू, ईसफलगोल, भिण्डी, फूट, अंडखरबूजा, शकरकन्दी, घुँइयाँ, सलजम, बेला, चँबेली, मोतिया, हारसिगार, गुलाब, महँदी, समुद्रसोख, पोदीना, सफरी, विहारीनिम्बू, मक्का, बाजरा, महुआ और कालाजीरी इत्यादि अनुसन्धान करके उसमें लिखे। फिर उनके नाम गुणागुणका विचार और लक्षण लिखे, पचीस वर्गोंमे यह ग्रन्थ पूर्ण किया है, प्रथम कर्पूरादि वर्गमे ओषधियोंके नाम और ब्राकट (कोष्ठ) मे अनेक कोष निघण्टुओंसे उनके पर्य्याय, फिर प्रत्येक ओषधिका प्रसिद्ध संस्कृतनाम, पश्चात् हिन्दी, बंगला, महाराष्ट्री, गुजराती, कर्णाटकी, तैलङ्गी, अंग्रेजी लैटिन, फारसी अरबी, और कहीं कहीं ओत्कली, द्राविडी, लुसाई, ब्रह्मी, पंजाबी, तुरकी, फरङ्गी, और यूनानी आदि भाषाओंमे नाम लिखेहै, फिर अनेक ग्रन्थोसे उसके गुण, दोष, लक्षण, भेद, परीक्षा, स्वरूप और विवरण लिखाहै, किसी किसी ओषधिकी मात्रा, व्यवहार, अनुपान, उत्पत्ति, शोधन और सेवन करनेकीभी विधि लिखीहै।

प्रथम कर्पूरादिवर्गमे सम्पूर्ण सुगन्धित द्रव्योंका विस्तारपूर्वक वर्णन ॥ १ ॥

दूसरे हरीतक्यादिवर्गमे, हरडसे आदि लेकर चूकपर्यंत औषधियोंका वर्णन ॥ २ ॥

तीसरे गुडूच्यादिवर्गमे नागवल्ली, बिल्व, गम्भारी, पाटला, शालिपर्णी आदिका वर्णन ॥ ३ ॥

चौथे पुष्पवर्गमे चम्पा, चँबेली, मालती, माधवी और केतकी, इत्यादि पुष्पोंका धारण, सुगन्ध, शोभाका वर्णन ॥ ४ ॥

पञ्चम फलवर्गमे आम, जामुनप्रभृति फलोंका वर्णन ॥ ५ ॥

छठे वटादिवर्गमे वड, पीपल, पाकर इत्यादि बडे बडे शाखी-वृक्षोंका विस्तारसहित वर्णन ॥ ६ ॥

सातवे धातूपधातुवर्गमे सुवर्ण, चांदी, ताँबे इत्यादिसे लेकर शिलाजीतपर्य्यंतका वर्णन ॥ ७ ॥

आठवे रत्नोपरत्नवर्गमे वज्र, विद्रुम, वैदूर्य्य, नीलमणि आदिका वर्णन ॥ ८ ॥

नवम विषवर्गमे सबप्रकारके विषोंका विस्तारयुक्त वर्णन ॥ ९ ॥

दशवेंधान्यवर्ग में शालिआदि अनेक प्रकारके उत्तमोत्तम धान्योका वर्णन ॥ १० ॥

ग्यारहवें शाकवर्गमे बथुवा, कुल्फा, चूका, मरसा, चौलाई, पालक आदिका वर्णन ॥ ११ ॥

बारहवे वारिवर्गमें नदी, कूप, तडाग, वर्षा आदि सब प्रकारके पानीका वर्णन ॥ १२ ॥

तेरहवें दुग्धवर्गमें गाय, भैस, बकरी इत्यादि सब प्रकारके दूधका वर्णन ॥ १३ ॥

चौदहवे दधिवर्गमें सब प्रकारके दधिका सविस्तर वर्णन ॥ १४ ॥

पन्द्रहवें तक्रवर्गमें सब प्रकारकी छाँछ, मट्ठेका सम्पूर्ण वर्णन ॥ १५ ॥

सोलहवें नवनीतवर्गमें मक्खन (नैनीघी) का भलीभाँति वर्णन ॥ १६ ॥

सत्रहवे घृतवर्गमें सबप्रकारके घृतोका भिन्न २ वर्णन कियाहै १७

अठारहवे मूत्रवर्गमें, मनुष्य, हाथी, घोडा, बकरी आदिके मूत्रोका सम्पूर्ण वर्णन ॥ १८ ॥

उन्नीसवे तैलवर्गमें तिल, सरसों, लाही, इत्यादिके तेलका वर्णन १९

बीसवें अर्कवर्गमे सब ओषधियोंके अर्कोंके गुण दोष ॥ २० ॥

इक्कीसवे इक्षुवर्गमे सब प्रकारकी ईखोका वर्णन ॥ २१ ॥

बाईसवे सन्धानवर्गमें सबप्रकारकी काँजी, अचार, सिरका, मदिरा (शराब), आसवप्रभृतिका वर्णन ॥ २२ ॥

तेईसवें संख्यावर्गमे त्रिफला, त्रिकुटा, पञ्चवर्गादि औषधियोंका वर्णन ॥ २३ ॥

॥ इति पूर्वार्द्ध ॥

अथ उत्तरार्द्ध ।

चौवीसवे (प्रथम अनूपादि वर्ग) मे अनूपदेश जांगल देश और साधारण देशके लक्षण, ब्राह्मणक्षेत्र, क्षत्रियक्षेत्र, वैश्यक्षेत्र, शूद्रक्षेत्र इन चार क्षेत्रोंमें उत्पन्न होनेवाली औषधियोके गुण, उन चारो क्षेत्रोके देवता, फिर पार्थिव, आप्य, तैजस, वायव्य, आन्तरिक्ष यह पांच प्रकारके क्षेत्रोका वर्णन करके फिर उन पांचोक्षेत्रोंमे उत्पन्न होनेवाले द्रव्योके गुण, फिर उन क्षेत्रोके देवता, फिर वृक्षोकी उत्पत्ति, और ब्राह्मणादिक भेद उनके देनेकी विधि, चारप्रकारसे औषधियोका निर्णय, जंगम, पार्थिव, औद्भिज्ज द्रव्योके पांच भेद वृक्षोकी स्त्री, पुरुष, नपुंसक जाति और उनके गुण, फिर वृक्षोकी क्षुधा, पिपासा और निद्राका वर्णन, वृक्षादिकोंमे पञ्चमहाभूतात्मकत्व फिर उन वृक्षोके उपकारका वर्णन फिर उनके गर्भ और सन्तान होनेका वर्णन करके अश्विन्यादि सत्ताईस २७ नक्षत्रवाले वृक्ष और जन्मनक्षत्रके वृक्षका औषधमे त्यागना, फिर विन्ध्याचल और हिमालयकी औषधियोंके गुण, औषधियोंके लानेमे मुहूर्त्तका विचार, उनके उखाडनेकी विधि, मंत्र, और समय, दुष्ट औषधियोंका त्यागना; और श्रेष्ठ औषधियोके रखनेकी विधि, स्वभावसे हितकारी औषधियोका वर्णन, उनकी परीक्षा, उपयोगविरुद्ध औषधि लेनेमे संकेत, प्रतिनिधि द्रव्यान्तर्गत पदार्थ, फिर मधुरादि रसोका वर्णन, वीर्य, विपाक, प्रभाव, शक्ति इत्यादिका वर्णन ।

पचीसवे(दूसरे मिश्रवर्गमे)उत्थानकालनिर्णयादि-हाथ पाव और मल मार्गको स्वच्छ रखनेके गुण,सूर्योदयसे पहले जलपीनेके गुण, नासिकासे जल पीनेके गुण, दतौन करनेकी विधि,दतौनमे वृक्षोका निषेध, दतौन करनेके समय दिशाका निर्णय,किन किन रोगियोको दतौनका निषेध, जिह्वाको घिसनेके गुण,चक्षुधावनविधि,गण्डूष (कुल्ला) करनेका गुण,मुखप्रक्षालनगुण,अञ्जन लगानेका गुण,किस किस रोगीको अञ्जन न लगाना चाहिये, कंघीसे बाल स्वच्छ करनेका गुण, पगडी शिरपर बांधनेके गुण, श्मश्रु (दाढी मूछ क्षौरकर्म और नख) कटवानेके गुण, नाकके बाल उखाडनेके दोष,प्रातःकाल उठकर क्या देखना चाहिये, अग्निसे तापनेके गुण, धुएं और हिमको सेवनके गुण, ओसके गुण, कुहरके गुण, छत्री

लगानेके गुण,दृष्टिके गुण,आतपके गुण,छायाके गुण,लाठी धारणके गुण, व्यायाम(कसरत)करनेके गुण, अंगमर्दनके गुण,शरीर घिसनेके गुण, मार्ग चलनेके गुण, अत्यन्त भ्रमण करनेके गुण, पादुका धारण करनेके गुण, नंगे पांव फिरनेके दोष, हाथी इत्यादिपर बैठनेके गुण, पॉव धोनेके गुण, पूर्व दिशाकी पवन (पुर्वाई) के गुण, अग्निकोणकी पवनके गुण, दक्षिण दिशाकी (दक्षिणी) पवनके गुण, नैर्ऋत कोणकी पवनके गुण, पश्चिम दिशाकी (पछाहियां) पवनके गुण, वायव्यकोणकी पवनके गुण,उत्तर दिशाकी (पहाडी) पवनके गुण, ईशानकोणकी पवनके गुण, नीहारादि संयुक्त पवनके गुण, बबूलेके गुण, खजूरके पंखेकी पवनके गुण, ताड, केला, बांस, खस, मोरपंख, वाल, वस्त्र, और फूलोंके पंखेकी पवनके गुण, ऋतुविशेषसे वायुके गुण, अभ्यंग (पांवोंमें तेल) मलनेके गुण, अभ्यंग वर्जित मनुष्य अवगाहनयुक्त तेलके गुण, तैलमर्दनकी विधि, शिरसे तेल मलनेके गुण, कानमे तेल डालनेके गुण, उबटन करनेके गुण, मुखमलेपके गुण, स्नानके गुण, गरमजलसे स्नान करनेके गुण, आंवले आदि शरीरसे मलकर स्नानकरनेके गुण,स्नानवर्जित रोगी,किसरोगमे स्नान करना नही चाहिये, शरीरमार्जनके गुण, वस्त्र धारण करनेकी विधि, रत्नाभरण धारण करनेके गुण, गुरु और देवतादिकके पूजनकी विधि दर्पण देखनेके गुण, अनुलेपनके गुण,पुष्पादिधारण गुण,भोजनकी आदिमे लवणादि पदार्थ भक्षणके गुण,क्रमसे अन्नादिकोंके गुणोंकी विशेषता, आहार करनेके गुण, आहार करनेके समय दिशाका निर्णय,भोजनादि करनेका परिमाण,आचमनके गुण,भोजनके अन्तमे कर्त्तव्यता,भोजनके अन्तमे शयनादिकके गुण, पान, सुपारी, इलायची आदि खानेके गुण, अध्ययनादिकके गुण, बुद्धिके गुण, तत्काल प्राणकारक षट्क, तत्काल प्राणहारक षट्क आयुके भेदसे स्त्रियोंकी बाल्यादि संज्ञा, वालास्त्रीससर्गगुण, मैथुनकालनिर्णय,सन्तानोत्पत्तिनिर्णय, सुखपूर्वक सोने और उत्तम भोजनके गुण,पृथ्वी और खाटपर सोनेके गुण,चांदनीके गुण,अन्धकारके गुण, मैथुनके गुण, निद्राके गुण,रात्रिमे जागने और दिनमे सोनेके गुण, हेमन्त, शिशिरकृत्य, वसंतकृत्य, ग्रीष्मकृत्य, वर्षाकृत्य,शरदकृत्य॥

॥ इति उत्तरार्द्ध समाप्त ॥

पारिशिष्टमे, माजूफल, समुद्रफल, रेवटचीनीसे आदि लेकर अण्ड-खरबूजेतक नवीन नवीन औषधियोंका विस्तारपूर्वक वर्णन लिखाहै

जिन जिन ग्रन्थोसे यह निघण्टुभूषण संग्रह कियागयाहै उनके चिह्न एक एक अक्षरसे लिखेहैं, अब वैद्यजनोंके जाननेके लिये उन ग्रन्थोंके पूरे नामभी लिखताहूं।

नि० र०	निघण्टुरत्नाकर	भा० प्र०	भावप्रकाश
रा० नि०	राजनिघण्टु	वै० नि०	वैद्यकनिघण्टु
म० नि०	मदनपालनिघण्टु	ध० नि०	धन्वंतरिनिघण्टु
म० वि०	मदनविनोद	वि०ति०भा०	विकारतिमिरभास्कर
रा० व०	राजवल्लभ	कै० दे०	कैयदेव
ग० नि०	गणनिघण्टु	नि० चू०	निघण्टुचूडामणि
सो० नि०	सोढलनिघण्टु	लंकेश०	अर्थप्रकाश
आ० सं०	आत्रेयसंहिता	ड० मि०	डल्लनमिश्र
च० नि०	चंद्रिकानिघण्टु	र० चं०	रसचन्द्रिका
भै० चि०	भैषज्यचिन्तामणि	र० सं०	रसेंद्रसारसंग्रह
सु० सं०	सुश्रुतसंहिता	नि० सं०	निघण्टुसंग्रह
च० सं०	चरकसंहिता		

और जिस परिश्रमसे वृक्षोंके चित्र एकत्र किये मेराही जी जानताहै, मेरी इच्छा तो यह थी कि, जिस जिस पृष्ठमे द्रव्योंके नाम गुणहैं, वही २ वृक्षोंके चित्रभी होने चाहिये, परन्तु चित्रोंके बनानेमे विलम्बहोनेके कारण चित्र एकही जगह लगाये गये हैं।

अब सब आयुर्वेदरसरसिकोसे मेरी यह प्रार्थनाहै कि इस परिश्रमका ध्यान करें कि, मैंने इस ग्रन्थके लिये कितना परिश्रम किया, इस बातका वद्यलोगही पहिंचानेगे, सैकडो पुस्तकें देश देशान्तरोसे संस्कृत, अंग्रेजी, अरबी, फारसी, गुजराती, महाराष्ट्री, बंगला इत्यादिकी मँगाई, उनमेंसे एक एक शब्द ढूँढ ढूँढकर निकाला तब यह ग्रंथ रचागया, जब यह ग्रन्थ पूर्ण हुआ तो "शालिग्रामनिघण्टुभूषण" इसका नाम रक्खा और वैद्यजनोंके हितार्थ इस निघण्टुको श्रीमान् वैश्यकुलदिवाकर, सकलगुणभाण्डागार, परमोदार, गोब्राह्मणहितकारी, सत्यव्रतधारी, सर्वविद्याविभूषित, श्रीमद्रत्ना-

कर सन्निकट मुम्बईपत्तननिवासी श्रीयुतश्रेष्ठि खेमराज श्रीकृष्णदास-जीको पूर्णप्रतापी जानकर मैने यह "शालग्रामनिघण्टुभूषण" उनको समर्पण किया, और उनको कोटिशः धन्यवाद है कि, जिन्होंने अपना धन व्यय करके इस "शालिग्रामनिघण्टुभूषण" को अपने जगद्विख्यात "श्रीवेंकटेश्वर" (स्टीम्) यंत्रालयमे मुद्रितकरके मेरा नाम प्रसिद्ध किया, मेरे परिश्रमको देखकर गुणीजन अवश्य मेरे गुणकी श्लाघा करेंगे, यह मुझको पूर्ण विश्वास है, और दुष्टजन अपना नीचपना प्रगट करेंहींगे, यहभी मुझे दृढ आशा है, जब सज्जनोंकी कृपादृष्टि मेरे ऊपर है तो दुर्जन मेरा क्या करसक्ते ।

इति प्रथमावृत्ति भूमिका ।

वि० सम्वत् १९६२
आषाढपूर्णिमायां भृगौ ।

आपका कृपाभिलाषी-
आयुर्वेदोद्धारक--शालिग्रामवैश्य,
मुरादाबाद.

श्रीः ।

द्वितीयवारकी भूमिका.

औषधिशास्त्र आयुर्वेदका मुख्य अंग और वैद्यकका प्रथम आवश्यकीय विषय है क्योंकि सम्पूर्ण क्रियारूपोंकी मूल चिकित्साहै और चिकित्साकी मूल औषधिशास्त्र अर्थात् निघण्टु इसी कारण सर्वत्र लिखाहै कि-"विना निघण्टुके वैद्य नहीं होता है" जो वैद्य केवल रोगकेही ज्ञानको जानतेहैं औषधिकल्पको नहीं जानते उनकी संसारमें कदापि प्रतिष्ठा नहीं होती। और न वह वैद्यके योग्यही कहे जासक्ते है। हमारे पूर्वज महर्षियोंने संसारके उपकारके लिये अनेक प्रकारके औषधिशास्त्रके ग्रन्थ निर्म्माण किये। अनुमान आठसौ वर्ष पूर्व उन समस्त आर्षग्रन्थोंके पढनेका इस देशमे अधिकतासे प्रचार था पश्चात् वारंवार मुसलमानबादशाहोंके चढनेपर सब विद्याओंकी अवनतिके साथ आयुर्वेदीय चिकित्साकी भी अवनति होतीगई और आयुर्वेदीय चिकित्साकी अवनति होनेसे सम्पूर्ण औषधिशास्त्रके ग्रन्थोंके पठन पाठन और औषधिशिक्षाका एकसाथ प्रचार उठसागया। यहांतक आयुर्वेदीय चिकित्साकी दुर्दशा हुई कि,आजतक भी हमारे देशकी उत्पन्न हुई और हमारी प्रकृतिके अनुकूल सुलभ औषधियें भी हमको ठीक ठीक प्राप्त नहीं होती। बडे कष्टका विषय है कि-यूनानी और डाक्टरी विदेशी औषधि होनेपर भी भारतके प्रत्येक प्रदेश, जिले, कसबे और गावोंमे सुगमतासे प्राप्त होजातीहै और आयुर्वेदीय औषधियें हमारी कहलानेपर भी हमको ठीकठकिसी स्थानपरभी नहीं मिलती।यदि किसी पसारीसे पूछते है कि,तुम्हारे पास अमुक औषधि है? तब प्रथम तो वह नाहीं कहदेताहै और जो कहीं विशेष खोज करनेसे एक दो मिल भी गई तो गली, सडी बर्षोकी पडीहुई होगी।

इत्यादि उपर्युक्त आयुर्वेदीय चिकित्साकी जो दुर्दशा हुई उसको वारंवारलिखनेकी यहां आवश्यकता नहींहै किंतु इतनाअवश्य कहेंगे कि, आयुर्वेदीय चिकित्साकी इसप्रकार अवनति रहनेपर तुम्हारी कदापि उन्नति नहीं होगी। क्योंकि यह बात अच्छे प्रकारसे सिद्ध होचुकी है कि,हमारे लिये हमारेही देशकी औषधि सात्म्य होसक्तीहै

उपर्युक्त सम्पूर्ण दुर्दशाका केवल अविद्याका प्रभाव देखपडताहै यद्यपि इस नवीन शताब्दीके आविष्कारमें कुछ कुछ आयुर्वेदीय चिकित्सा और औषधिशास्त्रकी

उन्नति हुई है किन्तु जितनी उन्नतिकी आवश्यकताहै उसका सोलहवां भाग नहींहै। यद्यपि अनेक स्थानोंमें चरक, सुश्रुत, वाग्भट्ट, भावप्रकाश, हारीत, अत्रि, धन्वन्तरि आदि ग्रन्थोंमें निघण्टुखंड छपचुकाहै तथा मदनपाल, राजनिघंटु, धन्वंतरीनि० शोढलनि० निघण्टुशिरोमणि आदि कितनेकनिघंटुक स्वतंत्र ग्रन्थ भी छपचुकेहै किन्तु ऐसा ग्रंथ कहीं भी नहीं छपा कि, जिस एकही ग्रन्थसे सम्पूर्ण औषधियोंके गुण दोष लक्षण परीक्षा विवरणादि पूरी पहचान मालूम होजाय। इसी अभावको दूर करनेके लिये प्रायः सम्पूर्ण अर्वाचीन और प्राचीन द्रव्य गुण, कोष और निघण्टुओंका सार लेकर लाला शालिग्रामजीने यह "शालिग्रामनिघण्टुभूषण" निर्माण कराहै। इस इकले ग्रन्थसेही समस्त आयुर्वेदीय औषधियोंका अच्छे प्रकारसे अनुभाव हो सक्ताहै। यद्यपि लालाजीने इस ग्रन्थको सर्वांगसुन्दर और सम्पूर्ण विषयोंसे परिपूर्ण लिखाहै किन्तु उनकी इच्छानुसार इसमे कितनी एक त्रुटि रहगईथी सो अबकीवार लालाजीकी आज्ञानुसार वह सब त्रुटियां पूर्ण करदी गई है।

इस आवृत्तिमे बनप्सा, आलू, गोभी, फूलगोभी, पत्रगोभी, गांठगोभी, गुलेबनप्सा, झाऊ, झिल्ल, देशीबादाम आदि अनुमान २०-२५ अर्वाचीन औषधियोंके गुण दोष विवरण आदि संस्कृत श्लोक और भाषा बनाकर लिखदी गई है। पहली बारमे सम्पूर्ण औषधियोंके विवरण विस्तारपूर्वक नही लिखेगये थे सो अबकीवार अनुमान ३००-४०० औषधियोंके विशेष विवरण परिवर्द्धित करदिये गयेहै। इसके अतिरिक्त २०० चित्र औषधियोंके बढादिये है। तथा अकारादि क्रमकी बंगला, मराठी और गुजराती यह तीन अनुक्रमणिका पाठकोंके सुभीतेके लिये विशेष लगादीगई है। इसमे प्रमादके वश अथवा अल्पज्ञतासे जो त्रुटि रहगई हो उनको पाठक महाशय क्षमा करें अथवा पत्रद्वारा लिखकर भेजदेंगे तो आगामी आवृत्तिमें ठीक करदी जायँगी।

इति द्वितीयावृत्तिभूमिका।

तारीख-४-४-१९०४, | भवदीय-छपाकर्ता-
वैद्य-शंकरलाल हरिशंकर,
"आयुर्वेदोद्धारक-कार्यालय"

॥ श्रीः ॥

तीसरीवारकी भूमिका.

पाठक महाशयोंकी गुणग्राहकतासे इसका तीसरा संस्करणभी शीघ्र होगया। शीघ्रताके कारण अबकीवार कोई विशेष परिवर्त्तन नहीं किया जासका, तथापि ग्राहकोंके संतोषार्थ इस बार भी कुछ न कुछ अवश्य नवीन संशोधन कियागयाहै। पहले और दूसरे संस्करणोंमे वनौषधियोंके सब चित्र ग्रन्थकी आदिमें एकत्र लगाये गयेथे, प्रत्येक औषधिके चित्रको अलग अलग ढूंढनेमे तब बहुत देरलगतीथी। अबकीवार इसी दिक्कतको दूर करनेके लिये प्रत्येक औषधिका चित्र उसके विवरणके साथ यथास्थानमें लगा दियागयाहै तथा दूसरे संस्करणकी अशुद्धियोंकाभी यथासाध्य संशोधन कियागयाहै।

तारीख १ मई सन् १९१२

भवदीय-कृपाकांक्षी-
वैद्य-शंकरलाल हरिशंकर
"आयुर्वेदोद्धारक-कार्य्यालय"
मुरादाबाद. U.P.

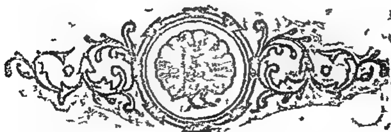
श्रीः ।

शालिग्रामनिघण्टुकी-

विषयानुक्रमणिका ।

वटादिवर्गः । ६५१.

इति



श्रीः ।

शालिग्रामनिघण्टुभूषणकी अकारादिक्रमसे हिन्दी-अनुक्रमणिका ।

इति शालिग्रामनिघण्टुकी अकारादि हिन्दी अनुक्रमाणिका समाप्ता।

॥ श्रीः ॥

शालिग्रामनिघण्टुभूषणान्तर्गत--वंगभाषाकेशब्दोंकीअकारादि-अनुक्रमणिका.


इति

श्रीः ।

शालिग्रामनिघण्टुभूषणांतील मराठीशब्दांची

अकारादि अनुक्रमणिका ।



इति ।



शालिग्रामनिघण्टुभूषणने-गुजरातीशब्दोनीअकारादि-अनुक्रमणिका ।

इति ।

A

B

T

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥

शालिग्रामनिघण्टुभूषण ।

सप्तमअष्टमभाग ।

नत्वा सिद्धिविनायकं च विविधा भाषाः समालोच्य ता
आयुर्वेदमहोदधिं विमलया बुद्ध्या विनिर्मथ्य वै ॥
शालिग्रामबुधेन केवलमिदं लोकोपकृत्यै कृतं
शालिग्रामनिघण्टुभूषणगतं सप्ताष्टमांशद्वयम् ॥ १ ॥

कर्पूरादिवर्गः ।

कर्पूरनामानि ।

ओषधीशश्च कर्पूरं सोमसंज्ञं सिताभ्रकम् ।
शिला हिमांशु· शीतांशुश्चंद्रभस्म निशापतिः ॥

अर्थ–ओषधीश, कर्पूर, सोमसंज्ञ, सिताभ्रक, शिला, हिमांशु, शीतांशु, चद्रभस्म, निशापति, (तरुसार, भस्माह्वय, रेणुसार, इन्दु, हिमाह्वय, वेधक, रेणुसारक, शीतमरीचि, भस्मवेधक, विधु, शीतमयूख, घनसार, चन्द्रसंज्ञ, जैवातृक, ग्लौ, कुमुदबान्धव, सिताभ्र, हिमवालुका, इन्दु, द्विजराज, नक्षत्रेश, निशीथिनीनाथ, यामिनीपति, शशधर, सोम, क्षपाकर, हिमाह्व, क्षपापति, सिताभ, शीत, घनसारक, शीतकर, शशाङ्क, हिमवालुक, हिमकर, शीतप्रभ, शाम्भव, शुभ्रांशु, स्फटिकाभ्र, कारमिहिका, ताराभ्र, चन्द्रार्द्रक, चंद्र, नाकलुषार, गौर, कुमुद, शीतलरज, सिताह्व, स्फटिक, शशि और हिमोपल) ॥

हिन्दीभाषामें	कपूर
वंगभाषामें	कर्पूर.
महाराष्ट्रभाषामे	कापूर.
गुर्जरभाषामे	कपुर, कपूर
कर्णाटकीभाषामे	कर्पूर.

तैलङ्गीभाषामें	कर्पूरामु
अंग्रेजीभाषामें	केम्फर Camphor
लैटिन्भाषामें	केम्फोरा Camphora
फारसीभाषामें	कापूर
अरबीभाषामें	काफूर कहते हैं

कर्पूरभेद।

पोतास, भीमसेन, सितकर, शङ्करावासकसज्ञ, पांशु, पिञ्ज, अब्द सार, हिमवालुक, जूतिका, तुषार, हिम, शीतल, पत्रिकाख्य यह १३ भेद हैं।

कर्पूरगुणाः।

स तिक्तः सुरभिः शीतः कर्पूरो लघुलेखनः।
तृष्णायां मुखशोषे च वैरस्ये चापि पूजितः॥ (सुश्रुत)

अर्थ-कर्पूर-कडुवा, सुगंधि, शीतल, हलका, लेखन तथा तृषा, मुखशोष और विरसताको दूर करनेवाला है।

अन्यच्च।

कर्पूरः शीतलो वृष्यश्चक्षुष्यो लेखनो लघुः।
सुरभिर्मधुरस्तिक्तः कफपित्तविषापहः॥
दाहतृष्णास्यवैरस्यमेदोदौर्गन्ध्यनाशनः।
आक्षेपशमनो निद्राजननो धर्मवर्द्धनः।
वेदनाहारकः कामशान्तिकृच्छुक्रमेहकृत्॥
कर्पूरो द्विविधः प्रोक्तःपक्वापक्वप्रभेदतः॥
पक्वात्कर्पूरतः प्राहुरपक्वं गुणवत्तरम्॥ (भावप्रकाश)

अर्थ- कपूर-शीतल, वीर्यजनक, नेत्रोंको हितकारी, लेखन, हलका, सुगंधि, मधुर और कडुवा है तथा कफ, पित्त, विष, दाह, तृष्णा, मुखकी विरसता (स्वाद बिगड जाना), मेदरोग और दुर्गन्धिका नाश करेहै॥ पक्व और अपक्व इन भेदोसे कपूर दो प्रकारका है। पक्व कपूरसे अपक्व (कच्चे) कपूरके अधिक गुण हैं॥

अपिच।

कर्पूरो मधुरस्तिक्तः शीतलः सुरभिर्लघुः।
नेत्र्यो लेखनकृद्वृष्यः कटुः प्रीतिकरो मृदुः॥

मदकारी च संप्रोक्तः कफदाहतृषापहः।
रक्तपित्तं कण्ठरोगं नेत्ररोगं विष तथा ॥
पित्त च मुखवैरस्य दौर्गन्ध्यमुदरं तथा।
मूत्रकृच्छ्रं प्रमेहञ्च मलगन्धं च नाशयेत् ॥
स एव नूतनः स्निग्धस्तिक्तश्चोष्णश्च दाहकृत्।
सोपि जीर्णो दाहशोषनाशनः परिकीर्त्तितः ॥
सोपि धौतो गुणैः श्रेष्ठः प्रोक्तो वैद्यैः पुरातनैः ॥
(निघण्टुरत्नाकर)

अर्थ-गुण। कपूर-मधुर, कडुवा, शीतल, सुगन्धि, हलका, नेत्रोंको हितकारी, लेखन, शुक्रको उत्पन्न करनेवाला, चरपरा, प्रीतिकारक, मृदु और मद (नसा) करनेवाला है तथा कफ, दाह, पियास, रक्तपित्त, कण्ठरोग, नेत्ररोग, विष, पित्त, मुखकी विरसता, दुर्गंध, उदररोग, मूत्रकृच्छ्र, प्रमेह और मलकी दुर्गंधको दूर करेहै वही नवीन कपूर स्निग्ध, कडुवा, गरम और दाहजनक है। वही पुराना कपूर दाह और शोषनाशक है और धुलाहुआ कपूर गुणोमे श्रेष्ठ है॥

कर्पूरलक्षणम्।

शिरो मध्यं तलं चेति कर्पूरस्त्रिविधः स्मृतः।
शिरःस्तम्भाग्रजं मध्ये मध्य पर्णतले तलम् ॥
भास्वद्विदशंपुलक शिरो जातं तु मध्यमम् ।
सामान्यपुलक स्वच्छं तले चूर्णं तु गौरवम् ॥
स्तम्भगर्भस्थितं श्रेष्ठं स्तम्भबाह्ये च मध्यमः।
स्वच्छमीपद्धरिद्राभ शुभं तन्मध्यज स्मृतम्॥
सदृढ शुभ्ररूक्षश्च पुलक बाह्यजं वदेत् ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ-शिर, मध्य और तल इन भेदोसे कपूर तीन प्रकारके है. स्तम्भके अग्रभागमें होनेवाला कर्पूर शिरसंज्ञक है; मध्यमे होनेवाला मध्यम है और पत्तोंके तले होनेवाला तलसंज्ञक कहलाताहै. प्रकाशवान् निर्मल फूलाहुआ शिर है, सामान्य फूलाहुआ स्वच्छ

मध्यम है और तलेमे होनेवाला चूर्णस्वरूप भारी है स्तम्भके गर्भ मे स्थित कर्पूर श्रेष्ठ है, स्तम्भके बाहर होनेवाला मध्यम है, निर्मल और कुछ हलदीके रगके सदृश रंगवाला श्रेष्ठ कपूर मध्यमे होनेवाला है; कडा, सपेद, रूक्ष और फूलाहुआ बाह्य कपूर कहलाता है ॥

अपिच ।

स्वच्छ भृङ्गारपत्रं लघुतरविशद तोलनं सिक्तक चेत्-
स्वादे शैत्य सुहृद्यं बहलपरिमलामोदसौम्यत्वदायि ।
निःस्नेह दार्ढ्यपत्र शुभतरमिति चेद्राजयोग्यं प्रशस्तं
कर्पूरं चान्यथा चेद्बहुतरसमलस्फोटदायि व्रणाय ॥

(रा० नि०)

अर्थ-स्वच्छ भांगरेके पत्तोके समान, छोटे २ टुकडे बहुत हलके और तोलमे बहुत चढे, स्वादमे तिक्त हो, ठण्डा, हृदयको प्रिय, जो अत्यन्त सुगन्धिका प्रवाह देनेवाला, तैलरहित, दृढ पत्रवाला ऐसा कपूर अत्यन्त उत्तम राजाओके योग्य है । इससे दूसरे प्रकारका कपूर विशेष करके फोडे और घावको उत्पन्न करनेवाला है ॥

पोतास-भीमसेनी बरास-कर्पूरगुणाः ।

पोताश्रय॰ स्वादु शीतो वृष्यस्तिक्तः कटुः स्मृतः ।
तृड्दाहरक्तपित्तानां कफस्य च विनाशक॰ ॥
त्रयोप्येते तु कर्पूरा॰ पक्वापक्वविभेदतः ।
द्विप्रकारः स उद्दिष्टः पक्वोतिगुणद॰ स्मृत॰ ॥

(नि० र०)

अर्थ-(पोतास,भीमसेनी और बरास,कपूर,) स्वादिष्ठ, शीतल, शुक्रजनक, तिक्त, कटु तथा तृषा, दाह, रक्तपित्त और कफका नाश करेहै यह तीनो कपूर पक्व और अपक्व इन भेदोसे दो प्रकारके है इनमे पक्व कपूर गुणोमे अधिक है ॥

शङ्करावासकपूरगुणा ।

ईशावासश्च कर्पूरो भेदीवृष्यो मदापहः ।
अतिशुभ्रोन्मादतृपाश्रमकासकृमिक्षयान् ।
स्वेद चैवागदाहश्च नाशयेदिति कीर्त्तित॰ ॥ (नि० र०)

अर्थ-शंकरावास कपूर-दस्तावर, वृष्य, मदनाशक और अत्यन्त शुभ्र है तथा उन्माद, पियास, श्रम, खाँसी, कृमि,क्षई-रोग, पसीना और अंगके दाहको दूर करेहै ॥

हिमकर्पूरगुणा ।

हिमकर्पूरकः शुभ्रो वृष्यः शीतो रसे कटुः ।
तृड्दाहमोहस्वेदानां नाशकः परमो मतः॥ (नि० र०)

अर्थ-हिमकपूर-शुभ्र, वीर्यजनक, शीतल, रसमें चरपरा, तथा तृषा, दाह, मोह और पसीनेको दूर करेहै ॥

कर्पूरोदयभास्करो निगदितः पीतः सरः स्वच्छकः
स प्रोक्तः कठिनः कटुः समुदितः स्याद्दीपकोग्नेर्लघुः ॥
श्रीदः पित्तकरः कफक्रिमिविषान्वातश्च नासास्रुति
लालास्रावगलग्रहौ च शमयेज्जिह्वाजडत्वापहः॥ (नि०र०)

उदयभास्करकर्पूरगुणा ।

अर्थ-उदयभास्कर कपूर-(पक्क सदल निर्दल दोनों प्रकारका) पीत, दस्तावर, निर्मल, कठिन, चरपरा, अग्निको दीपन करनेवाला, हलका, लक्ष्मीदायक, पित्तकारक तथा कफ, कृमि, विष, वात, नाकसे पानी गिरना, मुखसे लार गिरनी, गलग्रह और जिह्वाकी जडता इनको दूर करेहै ।

पर्णकर्पूरगुणा ।

पर्णकर्पूरकस्तिक्तः शुद्धउन्मादकरो मतः ।
मूत्रकृत्पीनस दाह नाशयेदिति कीर्त्तितः ॥ (नि० र०)

अर्थ-पानकपूर-कडवा, शोधक, उन्माद करनेवाला तथा मूत्ररोग, पीनस और दाहनिवारक है ॥

चीनकर्पूरनामानि ।

चीनकश्चीनकर्पूरः कृत्रिमो धवलः कटुः
मेघसारस्तुषारश्च द्वीपकर्पूरजः स्मृतः ॥

अर्थ-चीनक चीनकपूर, कृत्रिम धवल,कटु,मेघसार,तुषार,द्वीपकर्पूरज ॥

चीनकर्पूरगुणा ।

चीनकः कटुतिक्तोष्ण ईषच्छीतः कफापहः ।
कण्ठदोषहरो मेध्यः पाचन कृमिनाशनः॥ (रा०नि०)

अर्थ-चीनियाकपूर-चरपरा, कड़वा, गरम, किंचित् शीतल कफनाशक, कठरोगनिवारक, मेधाजनक, पाचक और कृमिनाशक है

अपिच।

चीनाकसंज्ञः कर्पूरः कफक्षयकरः स्मृतः ।
कुष्ठकण्डूवमिहरस्तथा तिक्तरसश्च सः ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-चीनियाकपूर कफ, कोढ, कण्डू और वमनको हरनेवाला है तथा तिक्तरसान्वित है ॥

विवरण।

कपूरके वृक्ष चीन और जापानदेशमें होतेहैं, यह वृक्ष तजकी जातिमेही गिनेजाते हैं। इनकी शाखाओंकी छाल ऊपरसे खरदरी और भीतरसे चिकनी होतीहै, इस वृक्षके ऊपर मोर आताहै, फल मटरकी समान होतेहैं फलके बीजोमे कपूरकी समान सुगंधी आतीहै और इस वृक्षकी छाल गोंदनेसे दूध निकलताहै उस दूधका कपूर बनताहै। कपूरकी अनेक जाति हैं, जैसे भीमसेनी, पिञ्ज, पोतास, हिम, सित, पांशु, शङ्करावाससञ्ज, अब्दसार, जूतिका, तुषार, पत्रिकारूप, शीतल और पर्णकपूर इत्यादि। दूसरे चिनिया कपूर और कृत्रिम कपूर होतेहै उत्तम कर्पूर केलेके अन्दरसे निकलता है, कपूर के वृक्ष भारतमेभी बहुत है केलेके पेड़से कपूरके पेडसे, वरासवृक्षसे, कपूरलतासे ऐसे कइ जातिके पेडोसे कपूर बनता और निकलता है।

कस्तूरीनामानि ।

गन्धधूलिश्च कस्तूरी मदाह्वा मृगनाभिजा ।
कस्तूरिकाण्डजा नाभिर्मिश्रा योजनगन्धिका ॥ (रा० नि०)

अर्थ-गन्धधूलि, कस्तूरी, मदाह्वा, मृगनाभिजा, कस्तूरिका, अण्डजा, नाभि, मिश्रा, योजनगन्धिका,(गन्धशेखर, मृगनाभि, मृगमद, मृग, मृगी, नाभि, मदलता, योजनगन्धा, मार्ग, गन्धबोधिका, कालाङ्गी, धूपसञ्चारी, गन्धपिशाचिका, वातामोद, मदनी, गन्धकेलिका, वेधमुख्या, मार्जारी, सुभगा, बहुगन्धदा, सहस्रवेधी, श्यामा, कामान्धा, मृगाण्डजा, कुरङ्गनाभि, ललिता, श्यामला, मोदिनीसहस्रभित्) ॥

हिन्दीभाषामे	कस्तूरी
बङ्गभाषामे	मृगनाभी
महाराष्ट्रभाषामे	कस्तूरी
गुर्जरभाषामे	कस्तूरी
कर्णाटकीभाषामे	कस्तूरी
तैलङ्गभाषामे	कास्तूरी
अँग्रेजीभाषामे	मस्क Musk
लैटिन्भाषामे	मोस्कस् Moscus
फारसीभाषामे	मुश्क
अरबीभाषामे	मिस्क

कस्तूरीभेदाः ।

कपिला पिङ्गला कृष्णा कस्तूरी त्रिविधा क्रमात् ।
नेपालिका च काश्मीरे कामरूपे च जायते॥ (रा० नि०)
कामरूपोद्भवा श्रेष्ठा नैपाली मध्यमा भवेत् ।
काश्मीरदेशसम्भूताकस्तूरी ह्यधमा भवेत्॥ (भा० प्र०)

अर्थ–कस्तूरी वर्णके भेदकरके तीनप्रकारकी है । जैसे कपिलवर्ण, पिङ्गलवर्ण और कृष्णवर्ण तहां नेपालमे उत्पन्न होनेवाली कपिलवर्ण अर्थात् भूरेरंगकी होतीहै; काश्मीरमे उत्पन्न होनेवाली पिङ्गलवर्णकी होतीहै और कामरूदेशमे उत्पन्न होनेवाली काले रंगकी होतीहै; किन्तु भावमिश्रने नेपालदेशकी कस्तूरी नीले रंगकी और काश्मीरकी कपिलरंगकी लिखी है । कामरूदेशमे उत्पन्न होनेवाली श्रेष्ठ है, नेपालदेशमे उत्पन्न होनेवाली मध्यम है और काश्मीरमे उत्पन्न होनेवाली कस्तूरी अधम होती है ॥

कस्तूरीपञ्चभेदाः ।

साप्येका खरिका ततश्च तिलका ज्ञेया कुलित्थापरा
पिंडान्यापि च नायिकेति च परा या पंचभेदाभिधा ॥
(रा० नि०)

अर्थ–खरिका, तिलका, कुलित्था, पिण्डा और नायिका इस भांति पांच प्रकारकी कस्तूरी है ॥

चूर्णाकृतिस्तु खरिका तिलका तिलाभा
कौलित्थबीजसदृशा च कुलत्थका च।
स्थूला ततः कियदिय किल पिण्डकाख्या
तस्याश्च किंचिदधिका यदि नायिकाख्या ॥
(रा० नि०)

अर्थ-चूर्णके सदृश खरिका, तिलके सदृश तिलका, कुलथीके बीजोंके समान कुलथा; कुलथाकस्तूरीसे कुछ मोटी पिण्डिका और पिण्डिकासे किंचित् अधिक स्थूल नायिका कस्तूरी होती है ॥

१/ कस्तूरीपरीक्षा।

स्वादे तिक्ता पिञ्जरा केतकीना गन्ध धत्ते लाघव तोलनेन ।
याप्सुन्यस्तानैववैवर्ण्यमीयात्कस्तूरीसाराजभोग्याप्रशस्ता ॥
(रा० नि०)

अर्थ-स्वादमें कडवी, पीतवर्ण, केतकीके फूलकी समान सुगधिवाली, तोलमें हलकी और पानीमे गेरनेसे जिसका रग न बदले, वह कस्तूरी राजाओंके सेवने योग्य है ॥

अपिच।

या गन्ध केतकीनां हरति परिमलैर्वर्णत· पिञ्जराभा
स्वादे तिक्ता कटुर्वालघुरथतुलितामर्दिताचिक्कणास्यात् ॥
दाह या नैति वह्नौ चिमिचिमिकुरुते चर्मगन्धा हुताशे
सा कस्तूरी प्रशस्ता वरमृगतनुजा राजते राजभोग्या॥
(रा० नि०)

अर्थ-जो केतकीके फूलकी सदृश गन्धवाली हो, रगमे हाथियोके मदको हरे, स्वादमे कडवी तथा चरपरी हो, तोलमे हलकी, मलनेसे चिकनी होजाय, आगमें डालनेसे नहीं जले, परन्तु बहुत कालतक चिमचिम शब्द करे और चमडा चलनेके समान गध आवे, वो मृगके तनसे उत्पन्न हुई कस्तूरी राजाओंके भोगने योग्य है ॥

कस्तूरिकागन्धभेदलक्षणम्।

बाले जरति च हरिणे क्षीणे रोगिणि च मदगन्धयुता।

कामातुरे च तरुणे कस्तूरी वहलपरिमला भवति ॥
(रा० नि०)

दुष्टकस्तूरीलक्षणानि ।

या स्निग्धा धूमगंधा वहति विनिहिता पीततां या वसोंत-
र्निःशेषं या निविष्टा भवतिहुतवहे भस्मसादेव सद्यः ।
या च न्यस्ता तुलायां कलयति गुरुतां मर्दिता रूक्षणं च
ज्ञेया कस्तूरिकेय खलकृतमतिभिः कृत्रिमा नैव सेव्या ॥
(रा० नि०

अपिच ।

शुद्धो वा मलिनोस्तु वा मृगमदः किं जातमेतावता
कोप्यस्याऽनवधिश्चमत्कृतिनिधिः सौरभ्य एको गुणः ।
येनासौ स्मरमण्डनैकवसतिर्भाले कपोले गले
दोर्मूले कुचमण्डले च कुरुते सग कुरङ्गीदृशाम् ॥
(रा० नि०)

दुष्टकस्तूरीपरीक्षा ।

करतलजलमध्ये स्थापनीया महद्भिः
पुनरपि तदवस्थं चिंतनीय मुहूर्त्तम् ।
यदि भवति च रक्त तज्जल पीतवर्ण
न भवति मृगनाभि· कृत्रिमोऽय विकार· ॥(का०)

अर्थ-बालक, वृद्ध, क्षीण और रोगी मृगकी कस्तूरी मद गंधवाली होतीहै । कामातुर और तरुण मृगकी कस्तूरी बहुत उज्ज्वल और अत्यन्त सुगंधिवाली होतीहै । जो कस्तूरी छूनेमे चिकनी हो और धुयेकेसी गंध आवे, वस्त्रमे रखनेसे वस्त्र पीतवर्ण होजाय, आगमे रखतेही तत्काल भस्म होजाय, तराजूमे रक्खी हुई भारी हो, अर्थात् कम चढे और मलनेसे रूखी होजाय, उस कस्तूरीको बनावटी समझकर सेवन करना नही चाहिये शुद्ध व मालिन जातिका कस्तूरी नपुसक मृग और मृगीकी होतीहै, इसके अतिरिक्त और कोई दूसरीकी पहिचान नही इसमे केवल एक सुगंधही बडा

चमत्कृत गुण है। जो कि यह कामका शृंगार मस्तक, कपोल कण्ठ, भुजा और कुचमण्डलमें स्त्रियोंके लगाई जातीहै, हथेलीमें जल रखकर एक मुहूर्त्तमात्रतक उसमें कस्तूरी पडी रहनेदे यदि उसका जल लाल व पीला होजाय तो वोह कस्तूरी असल नहीं है कृत्रिम अर्थात् बनावटी विकार है॥

कस्तूरीगुणा।

कस्तूरी छर्दिदौर्गन्ध्यरक्तपित्तकफापहा॥ (रा० व०)

अर्थ-कस्तूरी- छर्दि,दुर्गन्ध, रक्तपित्त और कफरोगको नाशक है॥

अपिच।

कस्तूरिका कटुस्तिक्ता क्षारोष्णा शुक्रला गुरुः।
कफवातविषच्छर्दिशीतदौर्गन्ध्यशोषहृत्॥ (भा० प्र०)

अर्थ-कस्तूरी-चरपरी, कडवी, खारयुक्त, गरम, शुक्रकारक, भारी तथा कफ, वात, विष, छर्दि, शीत, दुर्गन्धता और शोषनाशक है॥

अन्यच्च।

कस्तूरिका तु चक्षुष्या कट्वी तिक्ता सुगंधिका।
उष्णा शुक्रप्रदा गुर्वी वृष्या क्षारा रसायनी॥
किलासकुष्ठमुखरुक्कफदौर्गन्ध्यनाशिनी।
अलक्ष्मीमलवाततृट्छर्दिशोषविषापहा॥
शीतञ्च कासरोगञ्च नाशयेदिति कीर्तिता॥ (नि० रत्ना०)

अर्थ-कस्तूरी-नेत्रोंको हितकारी, चरपरी, कडवी, सुगंधित, गरम, शुक्रजनक, भारी, वृष्य, क्षार, रसायन तथा किलास, कोढ, मुखरोग, कफ, दुर्गन्ध, अलक्ष्मी, मल, वात, तृषा, छर्दि शोष, विष, खांसी और शीतका नाश करेहै॥

विवरण। कस्तूरी हिरनकी नाभिमें होती है उस हिरनको मारकर उसकी नाभिको काट लेते हैं, उसको कस्तूरीका नाभा कहते हैं वह नाभा तोलमें तीन ३ तथा चार ४ तोलेका होताहै और उसका आकार गोल होताहै उसके ऊपर छोटे छोटे बाल होते हैं रग भरा होताहै, एक ओरसे कटेहुएका चिह्न होताहै देखनेमे आडूकी बराबर होताहै, उस नाभेको चीरकर कस्तूरी निकालते हैं किसीमें मक्काके चूनकी समान निकलतीहै, किसीमें तिलके समान निकलती है किसीमें कुलथीके बीजके समान निकलतीहै किसीमे

मटरके दानेके समान निकलतीहै, जिन हिरनोंकी नाभिसे कस्तूरी निकलती है, वह हिरन काश्मीर नेपाल और कामरूदेशमे होतेहैं ।

गंधमार्जारवीर्य (जवादिकस्तूरी अर्थात् गौरासार व वेदअजीर)

माजारी वान्तिमाद्यन्ते चक्षुष्या कफवातजित् ॥

(मदनपालनि०)

अर्थ-गंधमार्जारवीर्य-वान्तिको उत्पन्न करे है,नेत्रोंको हितकारी है और कफ वातको जीतेहै ॥

अपिच ।

गन्धमार्जारवीर्यं तु वीर्यकृत्कफवातहृत् ।
कण्डूकुष्ठहर नेत्र्य सुगन्धिस्वेदगंधनुत् ॥

(भा० प्र०)

अर्थ-गंधमार्जारवीर्य-वीर्यको उत्पन्न करेहै,कफवातनाशक तथा कण्डू और कोढको दूर करेहैं, नेत्रोंको हितकारी, सुगंधित और पसीनेकी वासको हरहै ॥

अन्यच्च ।

ओतूद्भवा कस्तुरिका चक्षुष्योष्णा सुखावहा ॥
सुगंधिका च सुस्निग्धा वाते शस्ता च वान्तिदा ॥
शुक्रवृद्धिकरी वृष्या अङ्गकांतिकरी मता ॥
कण्डूकिटिभकुष्ठश्च घर्मं गधं विष तथा ॥
कण्ठरोगश्च कुष्ठश्च नाशयेदिति कीर्तिता ॥

(निघण्टुरत्नाकर)

अर्थ-गन्धमार्जारवीर्य-नेत्रोंको हितकारी, गरम, सुखजनक,सुगन्धित, वात रोगमे हितकारी, वान्तिदायक, वीर्यवर्धक, वृष्य, शरीरकी कान्ति बढानेवाली, तथा कण्डू, किटिभ, कुष्ठ, पसीना, दुर्गंध, विष, कण्ठरोग और कोढ़का नाश करनेवाली है ।

लताकस्तूरीगुणा ।

लता कस्तूरिका स्वादुर्वृष्या शीता लघुः स्मृता ॥
नेत्र्या तिक्ता छेदनी च तीक्ष्णा वस्तिविशोधिनी ॥
वस्तिरोग कफतृष्णां मुखरोगश्च नाशयेत् ।

लालास्रावं वमि वात दौर्गंध्यं च मद जयेत् ॥
अलक्ष्मीनाशिनीप्रोक्ताभवेद्देशेचदक्षिणे ॥ नि० र०)

अर्थ-लताकस्तूरी (मुष्कदाना) स्वादिष्ठ, वीर्यजनक, शीतल, हलकी, नेत्राको हितकारी, कडवी, छेदक, तीक्ष्ण, बस्तिशुद्धि करनेवाली तथा वस्तिरोग, कफ, तृषा, मुखरोग, लालास्राव, वान्ति, वात, दुर्गंध, मद और अलक्ष्मीका नाश करनेवाली है ॥

अपिच ।

लता कस्तूरिका तिक्ता हृद्या शीतास्यरोगनुत् ॥ (राजवल्लभ)

अर्थ-लताकस्तूरी-(मुष्कदाना) कडवी, हृदयको हितकारी, शीतल और मुखरोगनाशक है ॥

विवरण । लताकस्तूरीकी बेल दक्षिणदेशमें होतीहै, ऐसा निघण्टुरत्नाकरमें लिखा है । किन्तु कहीं देखनेमें नहीं आती, संस्कृतमें लताकस्तूरी और दक्षिणदेशजा कहते हैं । हिंदी भाषामें लताकस्तूरी और मुष्कदाना कहते हैं । वङ्ग, गुर्जर, महाराष्ट्र, कर्णाटकादि देशोंमें लताकस्तूरीही नामसे प्रसिद्ध है । तैलङ्ग देशमें तकोल कलनु कहतेहैं । तामिलदेशमें कठेकस्तूरी कहते हैं । द्राविडदेशमें कस्तूरवेण्ड कहते हैं ।

व्यवहार-बीज मात्रा सात मासेकी ।



कुङ्कुमनामानि ।

काश्मीरजं कुङ्कुमञ्च बाह्लिकं शोणिताह्वयम् ॥
कुसुमात्मकसंकोच पीतन रक्तचंदनम् ॥ (केचित्

अर्थ-काश्मीरज, कुङ्कुम, बाह्लीक, शोणिताह्वय, कुसुमात्मक, सङ्कोच, पीतन, रक्तचन्दन, (पीतक, घस्र, रक्तसंज्ञ, सङ्कोचपिशुन, हरिचंदन, खल, रज, दीपक, लोहित, सौभर, चन्दन, कश्मीरजन्म, अग्निशिख, वर, रक्त, पिशुन, वीर, लोहित, चंदन, चारु, कश्मीरजन्म, बाल्हीक, वरबाल्हीक, अग्निशेखर, असृक्, काश्मीर, रुचिर, शठ,

शोणित, घुसृण, वरेण्य, अरुण, कालेयक, जागुड, कान्त, वह्नि-शिख, केसर, गौर, केशर, धीर, अस्र, रुधिर) ॥

हिन्दीभाषामे	केसर.	
वङ्गभाषामे	कुङ्कुम-केशर.	
मराठीमे	केशर.	
गुजरातीमे	केसर.	
कर्णाटकीमे	कुंकुम	
तलङ्गीमे	कुंकुमपुवु	
अंग्रेजीमे	सेफ्रन्	Saffron.
लेटिनमें	क्रोकस्सेटिवस्	Crocusssivut.
द्राविडीमे	कुंकुमपूव	Crocistimat
फारसीमे	लरकीमास	
अरबीमे	जाफरान.	

कुङ्कुमभेदाः ।

काश्मीरदेशजक्षेत्रे कुंकुमं यद्भवेद्धि तत् ।
सूक्ष्मकेशरमारक्तं पद्मगन्धि तदुत्तमम् ॥
बाह्लीकदेशसञ्जात कुकुम पाण्डुर भवेत् ।
केतकीगन्धयुक्तं तन्मध्यमं सूक्ष्मकेशरम् ॥
कुंकुमं पारसीकेयं मधुगंधि तदीरितम् ।
ईषत्पाण्डुरवर्णं तदधमं स्थूलकेशरम् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-केशर तीन प्रकारकी है, काश्मीर देशमे उत्पन्न होनेवाली, बाल्हीक (बुखारा) देशमे उत्पन्न होनेवाली और पारस (ईरान) देशमे उत्पन्न होनेवाली । जो केशर काश्मीरके खेतोमे उत्पन्न होती है, वह सूक्ष्म केशरसे युक्त कुछेक ललाई लिये और कमलकी सदृश सुगन्धियुक्त होतीह, यह सब केशरोमे श्रेष्ठ है ॥ जो केशर बाल्हीक (बुखारा) देशमे उत्पन्न होतीह, वह पीली और केतकीके पुष्पकी समान सुगंधियुक्त होतीहै, और सूक्ष्मभी होतीहै यह मध्यम है ॥ जो केशर पारस (ईरान) देशमे उत्पन्न होतीहै, वह मधुकी गन्ध-युक्त, कुछेक पीली और बडे केशवाली होतीहै, उसको अधम केशर जानना ।

कुङ्कुमलक्षणम् ।

अव्यक्तरक्तिमामोदि मर्दनात्कर्णिकात्मकम् ।
स्थिरराग करे लग्न भग्नं कुङ्कुममुत्तमम् ॥
हीनमेवाग्निकाश्मीर गर पाण्डुरकेशरम्॥ (द्रव्यचिह्न)

अर्थ-जिसमे अप्रगट लाली हो, और सुगधवाली हो, तथा मल-नेसे कर्णिकाकी समान हाथमे लगकर उसका रंग स्थिर रहै, वह केशर उत्तम है और जो केशर अग्निके रगकी समान, विषयुक्त, पीले रगकी केशरसे युक्त हो, वह हीन केशर समझनी ॥

कुङ्कुमगुणा ।

कुङ्कुम सुरभि तिक्तकटूष्ण कासवातकफकण्ठरुजाघ्नम् ।
मूर्द्धशूलविषदोषनाशन रोचनं च तनुकांतिकारकम् ॥
(राजनिघण्टु)

अर्थ-केशर-सुगधित, कडवी, चरपरी, गरम, रोचक, शरीरकी शोभा बढानेवाली, तथा कास, वात, कठरोग, मस्तकपीडा, और विषके विकारोका नाश करे है ॥

अपिच ।

कुकुम कटुक स्निग्धं शिरोरुग्व्रणजन्तुजित् ।
तिक्त वमिहर वर्ण्यं व्यङ्गदोपत्रयापहम् ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-केशर-चरपरी है, स्निग्ध है, तथा शिरोरोग, व्रण और कृमिनाशक है, कडवी है, वमनको हरेहै, शरीरके रंगको सुन्दर करेहै, व्यङ्ग अर्थात झांई और त्रिदोषका नाश करेहै ॥

अन्यच्च ।

कुकुम रेचक प्रोक्त कण्डूवैवर्ण्यनाशनम् ॥ (रा० व०)

अर्थ-केशर-रेचक अर्थात् दस्त करानेवाली है, तथा खुजली और विवर्णताको दूर करे है ॥

अपिच ।

कुंकुमं कटुक सिध्मशिरोरुग्व्रणजन्तुजित् ।
उष्ण हास्यकर वर्ण्य व्यङ्गदोपत्रयापहम् ॥ (मदनविनोद)

अर्थ-केशर-चरपरी, गरम, हँसीको करनेवाली, बलको उत्पन्न करनेवाली तथा सिध्मरोग, शिरोरोग, व्रण, कृमि, व्यंग और त्रिदोषनाशक है ।

अन्यच्च ।

कुंकुमं तीक्ष्णमुष्णञ्च प्रियं वर्ण्यंसुगन्धिकम् ।
कटूष्ण कफवातघ्न त्वग्दोपस्वेदपित्तजित् ॥ (केचित्)

अर्थ-केशर-तीक्ष्ण, गरम, प्रिय, वर्णको उज्ज्वल करनेवाली, चरपरी, कफवातनाशक, त्वचाके रोग, पसीना और पित्तको दूर करे है ॥

सूखीहुई सुगन्धियुक्त गर्म केशर, देशी वद्यक चिकित्साकी अपेक्षा ईरानी चिकित्सामे अधिक वर्त्तावमे आती है ।

तैलादि सुगन्ध और रगके लिये अधिकतासे काममे लीजाती है । ईरान देशमे इसका व्यवहार अनेकप्रकारसे होताहै, आनन्द-पूर्वक प्रसव करनेके लिये और प्रसवके उपरान्त जरायुकी पीडाके लिये ईरानदेशकी स्त्री केशरकी गोलिये अंचलमे बॉध रखतीहै ।

होमियोपैथिकके मतसे रजसबधीय रोगोमे इसका प्रयोग देखा जाता ह ।

मात्रा चार रत्तीकी ।

तृणकुङ्कुमनामानि ।

तृणकुंकुमं तृणाख्र गन्धितृणं शोणितञ्च तृणपुष्पम् ।
गन्धाधिक तृणोत्थ तृणगौरं लोहितञ्च नवसंज्ञम् ॥

अर्थ- तृणकुंकुम, तृणास्र, गन्धितृण, शोणित, तृणपुष्प, गन्धाधिक, तृणोत्थ, तृणगौर और लोहित ॥

अस्य गुणा ।

तृणकुकुम कटूष्णं कफमारुतशोफनुत् ।
कण्डूतिपामाकुष्ठामदोषघ्नं भास्करं परम्॥ (राजनिघण्टुः)

अर्थ-तृणकेशर-चरपरी, गरम, तथा कफ, वात, सूजन, कण्डू, पामा, कोढ और आमको दूर करेहै और दीप्ति करेहै ॥

चन्दननामानि ।

श्रीखंडं चन्द्रकान्तञ्च गोशीर्षं भोगिवल्लभम् ।
भद्रसारं मलयजं गन्धसारञ्च चन्दनम् ॥

अर्थ-श्रीखण्ड, चन्द्रकान्त, गोशीर्ष, भोगिवल्लभ, भद्रसार, मलयज, गन्धसार, चन्दन, (भद्रश्री, एकाग, पटीर, वर्णक, भद्राश्रय, सेव्य, रौहिण, ग्राम्य, सर्पेष्ट, पीतसार, महार्ह, श्वेतचन्दन, तिलपर्ण, मंगल्य, मलयोद्भव, गन्धराज, सुगन्ध, सर्पावास, शीतल, गन्धाढ्य, पावन, शीतगन्ध, तैलपर्णिक, चन्द्रद्युति, भद्रश्रिय, सितहिम, सर्वप्रिय, राजयोग्य) ॥

(क) 

चदन

(ख) 

लालचंदन.

हिन्दीभाषामे द्राविडमे	चदन	
बगला-मराठी-तैलङ्गीमे	चन्दन	
कर्णाटकीभाषामे	गन्ध	
गुजरातीभाषामे	सुखड	
अंग्रेजीभाषामे	सेडल वुड्	Sandal wood
लेटिन्भाषामे	सेन्टेलम्-आलबम	Santalum album
फारसीभाषामे	सदल सुफेद	
अरबीभाषामे	सदले अबीयद	

चन्दनलक्षणम् ।

स्वादे तिक्त कषे पीत छेदे रक्तं तनौ सितम् ।
ग्रंथिकोटरसयुक्त चन्दन श्रेष्ठमुच्यते॥ (भा० प्र०)

अर्थ-स्वादमे कडवा हो, घिसनेमे पीला हो, तोडनेमे लाल हो, देखनेमे श्वेत हो, और गाठ तथा कोटर करके संयुक्त हो, ऐसा चन्दन श्रेष्ठ होता है ॥

चन्दनगुणाः ।

चन्दनं शीतलं रूक्षं तिक्तमाह्लादनं लघु ।
हृद्यं वर्ण्यं विषश्लेष्मतृष्णापित्तास्रदाहजित् ॥
(मदनपालनिघण्टु)

अर्थ-चंदन-शीतल, रूक्ष, कडुवा, आनन्दजनक, हलका, हृदयको हितकारी, वर्णको उज्ज्वल करनेवाला तथा विष, कफ, तृषा, पित्तरक्त और दाहको दूर करे है ॥

अपिच ।

श्रीखण्डोयं द्वितीयः स्यादतिशीतश्च तिक्तकः ।
दाहपित्तज्वरच्छर्दिमोहतृष्णाविनाशनः ॥
रक्तरुङ्मूत्रकृच्छ्रघ्नः कासांश्चैव विनाशयेत् ॥
(गणनिघण्टु)

अर्थ-दूसरे प्रकारका श्रीखण्ड चंदन-अत्यन्तशीतल, कडुवा, तथा दाह, पित्त, ज्वर, छर्दि, मोह और तृषाको दूर करेहै ॥ तथा रक्तरोग, मूत्रकृच्छ्र और खांसीका विनाश करेहै ॥



चंदन (सफेद)

अन्यच्च।

श्रीखण्डः कटुकस्तिक्तो वृष्यः शीतकषायकः।
कान्तिकृत्कामजनको हृद्यश्च सुरभिर्मतः॥
आह्लादनो लघू रूक्षः पित्तभ्रान्तिज्वरापहः।
छर्दितृट्कृमिसन्तापदाहश्रमविनाशनः॥
मुखरोगरक्तदोषशोषश्चैव विनाशयेत्॥ (निघण्टुरत्नाकर)

अर्थ--श्रीखण्ड चंदन-चरपरा, कडवा, वीर्यजनक, शीतल, कषेला, कान्तिदायक, कामको उत्पन्न करनेवाला, हृदयको हितकारी, सुगन्धि, आल्हादजनक, हलका, रूखा तथा पित्त, भ्रम, ज्वर, वान्ति पियास, कृमि, सन्ताप, दाह, श्रम, मुखरोग, रुधिरविकार और शोषका नाश करे है॥

चन्दनभेदाः।

चन्दनं द्विविधं प्रोक्तं वेट्टसुक्कडिसंज्ञिकम्।
वेट्टन्तु सार्द्रविस्फोटं स्वयं शुष्कंतु सुक्कडि॥

अर्थ--चंदन, वेट्ट और सुकडि इन भेदोंसे दो प्रकारका है, तहां गीला और छिद्ररहित वेट्ट चंदन है और स्वयं शुष्क सुकडि है।

मलयाद्रिसमीपस्थाः पर्वता वेट्टसंज्ञिकाः।
तज्जातं चंदनं यत्तु वेट्टवाच्यं क्वचिन्मतम्॥ (नि० र०)

अर्थ--मलयाचल पर्वतके निकट जो पर्वत है, उनको वेट्ट कहते हैं उन वेट्ट नामवाले पहाडोंमे चंदन उत्पन्न होता है, इसी कारण किसीके मतसे वह चंदन वेट्ट नामवाला कहलाता है।

(नि० र०)

वेट्टचंदनगुणाः।

वेट्टचंदनमतीव शीतलं दाहपित्तशमनं ज्वरापहम्।
छर्दिमोहतृपिकुष्ठतैमिरोत्कासरक्तशमनं च तिक्तकम्॥
(नि० र०)

अर्थ-वेट्ट चंदन-अत्यन्त शीतल है, तथा दाह, पित्त, ज्वर, वमन मोह, तृषा, कुष्ठ, तिमिररोग, खांसी और रक्त रोगको दूर करैहै, और कडवा है।

सुखडिचन्दनगुणा ।

सुक्कडिश्चंदन तिक्तं कृच्छ्रपित्तास्रदाहनुत् ।
शैत्य सुगंधिदं चार्द्रंशुष्कलेपे तदन्यथा ॥ (नि० र०)

अर्थ--सुकडि चंदन-कडवा तथा मूत्रकृच्छ्र, पित्तरक्त और दाहको दूरकरे है शीतल और सुगंधिदायक है । यह गुण गीले चदनके है और सूखे चदनके गुण और प्रकारके है ।

शम्बरचन्दननामानि ।

कैरात वहलं गन्धं वल्य शम्बरचन्दनम् ॥

अर्थ-कैरात, बहलगन्ध, वल्य, शम्बर, चंदन, (सुगंधकाष्ठ, कैरातक शैलगन्ध) ।

शम्बरचन्दनगुणा ।

कैरातकशीतलतिक्तकचश्लेष्मानिलघ्नंश्रमपित्तहारि ।
विस्फोटपामादिकनाशनचतृपापहन्तापविमोहनाशनम् ॥
(रा० नि०)

अर्थ--शम्बरचंदन शीतल, कडवा, तथा कफ, वात, श्रम, पित्त, विस्फोटक, पामा, तृषा, ताप और मोहका नाश करे है ।

पीतचन्दननामानि ।

नारायणप्रिय पीतं पीताभं हरिचन्दनम्
कालीयक पीतकाष्ठं जायकं कांतिदायकम् ॥

अर्थ-नारायणप्रिय, पीत, पीताभ, हरिचन्दन, कालीयक, पीतकाष्ठ, जायक, कान्तिदायक, (कालानुसार्य, जावक, कालेय, वर्णद, पीतगन्ध, पीतक, माधवप्रिय, कालेयक, कर्पूर, कालीय, हरिप्रिय, कालसार) हि० कलम्बक, पीलाचन्दन । बं० कलम्बा । लैटिन्में० सेन्टेलम् ल्बं ।

अस्य गुणा ।

पीतश्च चंदनःशीतस्तिक्तःकांतिकरोमतः ।
विचर्चिकाकुष्ठकण्डूकफदद्रुविषापहः ॥ (नि० र०)

अर्थ-पीलाचंदन -शीतल, कडवा, कान्तिकारक तथा विचर्चिका कुष्ठ, कण्डू, कफ, दद्रु विष, रक्तपित्त, कृमि, व्यङ्ग, पित्त, तृषा, ज्वर

रक्तचन्दननामानि।

ताम्राभंताम्रसारंचरञ्जनरक्तचन्दनम् ।
रक्तसारताम्रसाररक्तबीजकुचन्दनम् (नि० र०)

अर्थ-ताम्राभ, ताम्रसार, रञ्जन, रक्तचन्दन, रक्तसार ताम्रसार, रक्तबीज, कुचन्दन, (क्षुद्रचन्दन, तिलपर्णी, पत्राङ्ग, कुमोद, रक्ताक्त, ताम्रवृक्ष, चदन, लोहित. लोहितचन्दन, ताम्रसारक, रक्ताङ्ग, अर्क, तिलपर्णिका, पत्तङ्ग पत्रङ्ग, प्रवालफल, भास्करप्रिय, तिलपर्ण)

हिन्दीभाषामे	लालचदन
वंगभाषामे	रक्तचदन,
मराठीभाषामे	रक्तचन्दन
गुजरातीभाषामे	रताजली.
कर्णाटीभाषामे	रक्तचन्दन
तैलङ्गीभाषामे	एर्रगन्धपुचेक रक्तचन्दनम्
तामिलीभाषामे	सेन् शाण्डनम्
अंग्रेजीभाषामे	रेडसडलवुड् Redsandal wood
लेटिनभाषामे	टेरकार्पससेन्टेलम् Terocarpus Santalum
फारसीभाषामे	सदले सुर्ख
अरबीभाषामे	सदले अहमर

अस्यगुणाः ।

रक्तचन्दनमतीवशीतलंतिक्तलक्षणगदास्रदोषनुत् ।
वातपित्तकफकासंसज्वरभ्रातिजन्तुवमथुतृपापहम्॥ (रा० नि०)

अर्थ-लालचन्दन अत्यन्त शीतल, कडवा, रक्तरोगनाशक, वात. पित्त, कफ. कासज्वर, भ्रान्ति कृमि, वमन और तृपाको शान्त करेहै ।

अपिच ।

रक्तपित्तहरंबल्यंचक्षुष्यरक्तचन्दनम् (राजनिघण्टु)

अर्थ- लालचन्दन-रक्तपित्तनाशक, बलकारक और नत्राको हितकारी है ।

अन्यच्च।

रक्तंशीतंगुरुस्वादुच्छर्दितृष्णास्रपित्तहृत् ।
तिक्तंनेत्रहितवृष्यंज्वरव्रणविषापहम् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ- लाल चंदन--शीतल, भारी, स्वादिष्ठ, रक्तपित्तनाशक, वमन निवारक, तृष्णाको शान्त करनेवाला, कडवा नेत्रोंको. हितकारी वीर्यजनक तथा ज्वर, व्रण और विषको दूर करे है ।

पतङ्गनामानि ।

पतङ्गं रक्तसारश्च सुरङ्गं रञ्जनं तथा ।
पट्टरञ्जकमाख्यातं पत्तूरञ्च कुचन्दनम् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ- पतङ्ग, रक्तसार, सुरङ्ग, रञ्जन, पट्टरञ्जक, पत्तूर कुचन्दन (पत्राङ्ग, रक्तकाष्ठ, सुरंगद, पत्राण्य, पट्टरग, भार्यावृक्ष, रक्तक, लोहितरंग-काष्ठ, रोगकाष्ठ, पट्टरञ्जनक)

हिन्दी, कर्णाटकी, गुजराती, मराठी,-पतग, पतंगवृक्ष ।

बंगला-	बकम् काष्ठ ।
तैलंगीमे-	ओंकतु कट्टु ।
तामिलीमे-	वट्टगी ।
इंग्रेजीमे-	सेप्पनवुड्ड । Sappan wood
लैटिन्मे-	सिसालपिनियासेप्पन् (Coesalpinia Sappan
फारसी--अरबीमे--	बकम् ।

पतङ्गगुणा ।

पत्राङ्गं कटुकं रूक्षं माल शीत तु गौल्यकम् ।
वातपित्तज्वरघ्नं च विस्फोटोन्मादभूतहृत् ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ-पतग-चरपरा, रूखा, खट्टा, शीतल, गौल्य, तथा वात, पित्त, ज्वर, विस्फोटक, उन्माद और भूतनाशक है ॥

अपिच ।

पत्राङ्गस्तिक्तक शीतो रूक्षोम्लो मधुरः कटुः ।
व्रणशुद्धिकरो वर्ण्यः सुगन्धिर्वातपित्तहृत् ॥
उन्मादज्वरविस्फोटमूत्रकृच्छ्रव्रणाञ्जयेत् ।
कफाश्मरीरक्तदोषभूतबाधानिवारण· ॥ (निघण्टुरत्नाकर)

अर्थ--पतग -कडवा, शीतल, रूक्ष, अम्ल, मधुर, चरपरा, व्रण-शोधक, वर्णकारक, सुगन्धि, तथा वात, पित्त, उन्माद, ज्वर, विस्फोट, मूत्रकृच्छ्र, व्रण, कफ, पथरी, रुधिरविकार और भूतबाधाको दूर करे है ॥

रक्तचन्दननामानि।

ताम्राभंताम्रसारचरञ्जनंरक्तचन्दनम् ।
रक्तसारताम्रसाररक्तबीजकुचन्दनम् (नि० र०)

अर्थ-ताम्राभ, ताम्रसार, रञ्जन, रक्तचन्दन, रक्तसार ताम्रसार, रक्तबीज, कुचन्दन, (क्षुद्रचन्दन, तिलपर्णी, पत्राङ्ग, कुमोद, रक्ताक्त, ताम्रवृक्ष, चदन, लोहित, लोहितचन्दन, ताम्रसारक, रक्ताङ्ग, अर्क, तिलपर्णिका, पत्तङ्ग पत्रङ्ग, प्रवालफल, भास्करप्रिय, तिलपर्ण)

हिन्दीभाषामे	लालचदन
वगभाषामे	रक्तचंदन,
मराठीभाषामे	रक्तचन्दन
गुजरातीभाषामे	रताजली.
कर्णाटीभाषामे	रक्तचन्दन
तिलङ्गीभाषामे	एर्रगन्धपुचेक रक्तचन्दनम्
तामिलीभाषामे	सेन् शाण्डनम्
अँग्रेजीभाषामे	रेडसंडलवुड् Redsandal wood
लैटिनभाषामे	टेरकार्पससेन्टेलम् Teracarpus Santalum
फारसीभाषामे	सद्‌ले सुर्ख
अरबीभाषामे	सद्‌ले अहमर

अस्यगुणा ।

रक्तचन्दनमतीवशीतलतिक्तलक्षणगदास्रदोषनुत् ।
वातपित्तकफकाससज्वरभ्रातिजन्तुवमथुतृषापहम्॥ (रा० नि०)

अर्थ-लालचन्दन -अत्यन्त शीतल ,कडवा, रक्तरोगनाशक,वात, पित्त,कफ, कासज्वर,भ्रान्ति कृमि, वमन और तृषाको शान्त करेहै ।

अपिच ।

रक्तपित्तहरंबल्यंचक्षुष्यंरक्तचन्दनम् (राजनिघण्टु)

अर्थ- लालचन्दन-रक्तपित्तनाशक, बलकारक और नेत्राको हितकारी है ।

अन्यच्च।

रक्तंशीतंगुरुस्वादुच्छर्दितृष्णास्रपित्तहृत् ।
तिक्तनेत्रहितवृष्यज्वरव्रणविषापहम् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ- लाल चदन--शीतल, भारी, स्वादिष्ट, रक्तपित्तनाशक, वमन निवारक, तृष्णाको शान्त करनेवाला, कडवा नेत्रोको, हितकारी वीर्यजनक तथा ज्वर, व्रण और विषको दूर करे है ।

पतङ्गनामानि ।

पतङ्गं रक्तसारञ्च सुरङ्ग रञ्जनं तथा ।

पट्टरञ्जकमाख्यातं पत्तूरञ्च कुचन्दनम् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ- पतङ्ग, रक्तसार, सुरङ्ग, रञ्जन, पट्टरञ्जक, पत्तूर, कुचन्दन (पत्राङ्ग, रक्तकाष्ठ, सुरंगद, पत्राण्य, पट्टरग, भार्यावृक्ष, रक्तक, लोहितरग-काष्ठ, रागकाष्ठ, पट्टरञ्जनक)

हिन्दी, कर्णाटकी, गुजराती, मराठी,-पतग, पतंगवृक्ष ।

बगला-	बकम् काष्ठ ।
तेलगीमे-	ओकत्तु कट्टु ।
तामिलीमे-	वट्टगी ।
इंग्रेजीमे-	सेप्पनवुड । Sappan wood
लेटिनमे-	सिसालपिनियासेप्पन् । Coesalpinia Sappan
फारसी-अरबीमे-	बकम् ।

पतङ्गगुणाः ।

पत्राङ्गं कटुकं रूक्षं माल शीत तु गौल्यकम् ।

वातपित्तज्वरघ्नं च विस्फोटोन्मादभूतहृत् ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ-पतग-चरपरा, रूखा, खट्टा, शीतल, गौल्य, तथा वात, पित्त, ज्वर, विस्फोटक, उन्माद और भूतनाशक है ॥

अपिच ।

पत्राङ्गस्तिक्तकः शीतो रूक्षोम्लो मधुरः कटुः ।

व्रणशुद्धिकरो वर्ण्यः सुगन्धिर्वातपित्तहृत ॥

उन्मादज्वरविस्फोटमूत्रकृच्छ्रव्रणाञ्जयेत् ।

कफाश्मरीरक्तदोषभूतबाधानिवारण. ॥ (निघण्टुरत्नाकर)

अर्थ-पतग -कडवा, शीतल, रूक्ष, अम्ल, मधुर, चरपरा, व्रण-शोधक, वर्णकारक, सुगन्धि, तथा वात, पित्त, उन्माद, ज्वर, विस्फोट, मूत्रकृच्छ्र, व्रण, कफ, पथरी, रुधिरविकार और भूतबाधाको दूर करे है ॥

अपिच।

हरिचन्दनवद्वेद्य विशेषाद्दाहनाशनम् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-पतंगके गुण और पीले चन्दनके गुण समान जानने किन्तु विशेष करके दाहको दूर करे है।

बर्बरचन्दननामानि।

बर्बरोत्थ बर्बरक श्वेतबर्बरकन्तथा।
शीत सुगंधि पित्तारि सुरभिश्चेति सप्तधा ॥

अर्थ बर्बरोत्थ, बर्बरक, श्वेतबर्बरक, शीत, सुगन्धि, पित्तारि, सुरभि (बबरोद्भव)

बर्बरगुणाः।

बर्बर शीतल तिक्तं कफमारुतपित्तजित्।
कुष्ठकण्डूव्रणान्हन्ति विशेषाद्रक्तदोषजित्। (राजनिघण्टु)

अर्थ-बर्बरचन्दन-शीतल, कडवा, तथा कफ, वात, पित्त, कुष्ठ, कण्डू और व्रणनाशक है। विशेषकरके रुधिर विकारको दूर करेहै।

हरिचन्दननामानि।

हरिचन्दन सुरार्ह हरिगन्ध चन्द्रचदन दिव्यम्।
दिविज च महागन्ध नन्दनजं लोहितज नवसञ्ज्ञम् ॥

अर्थ-हरिचन्दन-सुरार्ह, हरिगन्ध, चन्द्रचन्दन, दिव्य, दिविज, महागन्ध, नन्दनज, लोहितज।

हरिचंदनगुणाः।

हरिचन्दन तु दिव्य तिक्तहिम तदिह दुर्लभं मनुजैः।
पित्ताटोपविलेपि चन्दनवच्छ्रमहर च शोषहरम् ॥
(रा० नि०)

अर्थ- हरिचन्दन- दिव्य, कडवा, शीतल तथा पित्त, आटोप, भ्रम [वमन, मन्दाग्नि, मेदोदोष] नाशक है ॥ और सामान्य चंदनकी समान, श्रम तथा शोषको दूर करे है। यह चन्दन मनुष्योको मिलना दुर्लभ है।

चन्दनानि समानानि रसतो वीर्यतस्तथा।
भिद्यन्ते किन्तु गन्धेन तत्राद्यं गुणवत्तरम् ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ–सर्वप्रकारके चन्दन रस और वीर्यमे समान है । किन्तु आदिका अर्थात् श्रीखण्ड चन्दन सब चन्दनोकी अपेक्षा सुगन्धिमे अधिक गुणवाला है

विवरण–चन्दनकी अनेक जाति है सफेतचंदन १ पीलाचन्दन २ शबरचन्दन ३ लालचन्दन ४ पतंगचन्दन ५ बर्बरचन्दन ६ और हरिचन्दन७इन सात जातिके चन्दनोमे सफेद चन्दन सर्वोत्कृष्ट है ।

अगरुनामानि।



अगरु क्रिमिज लोह राजार्हं वशिक लघु ।
लोहाख्यजोङ्गकञ्चापिकृष्णवर्णप्रसादनम् ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ–अगरु, क्रमिज, लोह, राजार्ह, वशिक, लघु, लोहाख्य, जोङ्गक, कृष्ण, वर्णप्रसादन, (क्रमिज, अगरु, वंशक, पिच्छिल, भृङ्गज, पातक, अनार्यक, अनार्यज,असार,अग्निकाष्ठ, क्रमिगन्ध, काष्ठक, प्रवर, योगज) हिन्दी, बंगला, मराठी, गुजराती, कर्णाटकी,तामिली इत्यादि सब भाषाओमे "अगर" नामसेही प्रसिद्ध है ।

तैलङ्गीभाषामे हरुगुहचेट्टु ।

इंग्रजीभाषामे इगलवुड । Eagle wood

लैटिन्भाषामें एकीलेरिया। एगेलोका। Aquilaria Agallocha
अरबीभाषामें उदगरकी।
फारसीभाषामें कशावबेवा।

अगुरुगुणाः।

अगुरूष्णं कटु त्वच्यं तिक्तं तीक्ष्णं च पित्तलम्।
लघु कर्णाक्षिरोगघ्नं शीतवातकफप्रणुत् ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-अगर-गरम, चरपरी, त्वचाको हितकारक, कडवी, तीक्ष्ण, पित्तजनक, हलकी तथा कर्णरोग, नेत्ररोग, शीत, वात और कफनाशक है।

अपिच।

अगुरुस्तु सुगंधिः स्यादुष्णस्तिक्तः कटुः स्मृतः।
स्निग्धो मंगलदो रुच्यो धूपयोग्यश्च पित्तलः॥
तीक्ष्णो वातकफौ हन्ति कर्णनेत्ररुजापहः॥
कुष्ठनाशकरः प्रोक्तो लेपे चोद्वर्त्तने शुभः॥ (नि० र०)

अर्थ-अगर-सुगंधि, गरम, तिक्त, कटु, स्निग्ध, मंगलदायक, रुचिकारी, धूपके योग्य, पित्तजनक, तीक्ष्ण तथा वात, कफ, कर्णरोग और कोढका नाश करेहै। लेपमें और लगानेमें श्रेष्ठ है।

अगरुप्रभवः स्नेहः कृष्णागरुसमः स्मृतः।

अर्थ-अगरका तेल कृष्णागरुके समान गुणवाला है।

कृष्णागरुनामानि।

कृष्णागरु स्याद्वसुकं मंगल्यं विश्वरूपकम् ॥

अर्थ-कृष्णागरु-वसुक, मंगल्य, विश्वरूपक, (काकतुण्ड, अगरु शृङ्गारशीर्ष, कालागरु, केश्य, कृशाकाष्ठ, धूपार्ह, वल्लर, मिश्रवर्ण, गन्ध, राजार्ह, शीतमलिन, जोंगक, कृमिजग्ध और अलक्तक)

कृष्णागरुगुणाः।

कृष्णागरु कटूष्णं च तिक्तं लेपे च शीतलम्।
पाने पित्तहरं केऽप्याहुस्त्रिदोषघ्नमुदाहृतम् ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ-कालागरु-कटु, उष्ण, कडवी, लेपमें शीतल, पीनेमें पित्तनाशक और किसीके मतसे त्रिदोषनाशक है।

काष्ठागरुगुणा।

काष्ठागरु कटूष्णञ्च लेपे रूक्षं कफापहम् ॥ (रा० नि०)

अर्थ-काष्ठागरु-चरपरी, गरम, लेपमे रूखी और कफनाशक है।

दाहागरुनामानि।

दाहागरु दहनागरु दाहककाष्ठञ्च वह्निकाष्ठञ्च।
धूपागरु तैलागरु पुरञ्च पुरमथनवल्लभं चैव ॥

अर्थ-दाहागरु, दहनागरु, दाहककाष्ठ, वह्निकाष्ठ, धूपागरु, तैलागरु पुर और पुरमथनवल्लभ।

दाहागरुगुणा।

दाहागरु कटुकोष्ण केशानां वर्द्धनञ्च वर्ण्यञ्च।
अपनयति केशदोषानातनुतेसंततञ्च सौगन्ध्यम् ॥
(राजनिघण्टु)

अर्थ-दाहागरु-चरपरी गरम, केशवर्द्धक, वर्णको उज्ज्वल करने वाली, केशोंक दोषोको हरनेवाली और निरन्तर सुगधिदायक है।

मङ्गल्यागरुनामानि।

मङ्गल्या मल्लिका गन्धमङ्गलागरुवाचका ॥

अर्थ--मङ्गल्या, मल्लिका, गन्धमङ्गला और जितन अगरके नाम है, सब इसके भी जानने।

मङ्गलागरुगुणा।

मङ्गल्यागुरुशिशिरागन्धाढ्यायोगवाहिका ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ--मङ्गलागरु- शीतल, गन्धवाली और योगवाही है।

विवरण-आसामके पहाडी जगल और मशाल सागरके टापुओमे इसका वृक्ष होता है शाखा कभी साथ उत्पन्न नही होती।

अगर अनेक प्रकारकी होतीहै, उनमें काली अगरही उत्तम और वैद्यकमे कहीहुई औषधियोके साथ व्यावहार कीजाती है, यह भारी होनेके कारण जलमे डूबजातीहै, और नरम ऐसी होतीहै कि दातोमे रखकर खानेसे चिपट जाती है, इसको पीसकर जलानेसे सुगन्धि निकलतीहै, काली अगरकी समान और अगरोमे ऐसी सुगन्धि नही आती ॥

व्यवहार। इसका शादरा अनेक प्रकारके तेलोमे व्यवहार किया जाताहै और इसके वृक्षका गोद वातरोगमे लेप करनेके लिये विलायतके मनुष्य काम मे लातेहै।

देवदारुनामानि ।

सुरदारु द्रुकिलिमं भद्रदारु सुराह्वयम् ।
देवकाष्ठञ्च पित्तद्रुदेवदारु च भद्रवत् ॥

अर्थ-सुरदारु, द्रुकिलिम, भद्रदारु, सुराह्वय, देवकाष्ठ, पित्तद्रु, देवदारु भद्रवत.(शतपादप,पारिभद्रक,पीतदारु, दारु,पूतिकाष्ठ, कल्पपादप,किलिम,अमरदारु,दारुक,स्निग्धदारु,शिवदारु,शाम्भव, भूतहारि, भवदारु, शक्रद्रुम, इन्द्रवृक्ष, सुराह्वय,दारुभद्र इन्द्रदारु, मस्तदारु, सुरभूरुह स्नेहवृक्ष, सुरद्रुम, सुरदारु और सुरकाष्ठ)

हिन्दीभाषामे	देवदारु ।
बङ्गभाषाम	देवदारु ।
मराठीभाषाम	तेल्यादेवदारु ।
गुजरातीभाषामे	देवदार ।
कर्णाटकीभाषामे	चोपडादेवदारु, काष्ठदेवदारु
तैलङ्गी भाषामे	देवदारुचेका
लेटिनभाषामे	सिड्रसडवडा Cedrus Deodara
फारसीभाषामे	दवदार ।
इंग्रजीभाषामे	पाइन्सडीपोदर।

देवदारुगुणा ।

देवदारु लघुस्निग्धं तिक्तोष्णं कटुपाकि च ।
विबन्धाध्मानशोथामतन्द्राहिक्काज्वरास्रजित् ॥
प्रमेहपीनसश्लेष्मकासकण्डूसमीरनुत्॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-देवदारु-हलका, स्निग्ध, कडवा,गरम,पचनमे चरपरा, तथा विबन्ध, अफारा, शोथ, आम तन्द्रा, हुचकी, ज्वर, रक्तविकार, प्रमेह, पीनस, कफ खांसी कण्डू और वातनाश करनेवाला है ।

देवदारुभेदा ।

देवदारु द्विधा ज्ञेयंतत्राद्य स्निग्धदारुकम् ।
द्वितीयकाष्ठदारुस्याद्द्वयोर्नामान्यभेदतः॥(निरुक्तरत्नाकर)

अर्थ-देवदारु दो प्रकारका है पहिला स्निग्धदारु और दूसरा काष्ठदारु ।

स्निग्धदारुगुणा ।

स्निग्धदारु कटु पाके स्निग्धोष्णस्तिक्तको लघु ।

कफवातप्रमेहार्शोमलस्तम्भामदोषहा ॥
ज्वराध्मानश्वासकासशोथकण्डुविनाशकः ।
हिक्कातंद्रांरक्तदोषपीनसचैवनाशयेत् ॥ (निघण्टुरत्नाकर)

अर्थ- स्निग्धदेवदारु-पचनेमे चरपरा, चिकना, गरम, कडवा, हलका तथा कफ, वात, प्रमेह, बवासीर, मलस्तम्भ, आमदोष, ज्वर, अफारा, श्वास, खांसी, सूजन, खुजली, हिचकी, तन्द्रा, रुधिर विकार और पीनसको दूर करेहै ।

काष्ठदारुगुणा ।

देवकाष्ठ मतं चोष्णं तिक्तं रूक्षं कफापहम् ।
वात च भूतबाधां च लेपाद्व्यङ्गविनाशनम् ॥ (रा०नि०)

अर्थ--काष्ठदारु-गरम, कडवा, रूखा, तथा कफ, वातरोग और भूतबाधाको दूर करेहै । इसका लेप करनेसे व्यंग (झांई) दोष दूर होताहै ।

विवरणः--बडा वृक्ष होताहै, इसकी दो जाति हैं एकमे तेलके समान चिकनाईसी होतीहै, दूसरेमे रूखापन होताहै ॥ (व्यवहारपचांग) दोनो प्रकारके देवदारु शिमला पहाड पर होते हैं केलो और केल नामसे प्रसिद्ध है ।

चीडानामानि ।

चीडा च दारुगन्धा गन्धवधूर्गंधमादिनी तरुणी ।
तारा च भूतमारी मङ्गल्याख्या कपाटिनी ग्रहजित् ॥
(राजनिघण्टु)

अर्थ-चीडा-दारुगन्धा, गन्धवधू, गन्धमादनी, तरुणी, तारा, भूतमारी, मङ्गल्या, कपाटिनी, ग्रहजित ।

चीडागुणा ।

चीडा कटूष्णा कासघ्नी कफजिद्दीपनी परा ।
अत्यन्तसेवितासा तु पित्तदोषश्रमापहा ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ-चीड-गरम, कासनाशक, चरपरी, कफको दूर करे, अग्निको दीपन करे, इसका अत्यन्त सेवन करनेसे पित्त और श्रम दूर होता है। चीढ (चील्ह) के वृक्ष कसौली पहाड पर बहुत हैं चील्ह नामसे प्रसिद्ध है इसका गोंद बिरोजा होता है इस बिरोजेकाही तारपीन तेल होताहै ॥

सरलनामानि।

सरलः पूतिकाष्ठश्च मनोज्ञो धूपवृक्षकः।

अर्थ-सरल, पूतिकाष्ठ मनोज, धूपवृक्षक, (पीतद्रु, धूपवृक्षक, पीतदारु, भद्रदारु, धूपवृक्ष, पीत, स्निग्धदारुसंज्ञक, स्निग्ध, मरिचपत्रक, पीतवृक्ष (सुरभिदारुक)

हिन्दीभाषामे	धूपसरल।
वङ्गभाषामे	सरलगाछ, सरलकाष्ठ।
कर्णाटकीभाषामे	सरलीदेवदारुविशेष।
तैलङ्गीभाषामे	सरलदेवदारि चेट्टु।
तामिलभाषामे	सरलदेवदारी।
गुजरातीभाषामे	सरलदेवदार।
मराठीभाषामे	सरलदेवदार।
इंग्रेजीभाषामे	लॉग लीवड् पाईन। Long leaved pine
लॅटिनभाषामे	पाईनस्-लोंगि फोलिया। Pinus longifolia

सरलगुणाः।

सरलो मधुरस्तिक्तः कटुपाकरसो लघुः।
स्निग्धोष्णः कर्णकण्ठाक्षिरोगरक्षोहरः स्मृतः॥
कफानिलस्वेददाहकासमूर्च्छाव्रणापहः॥ (भा०प्र०)

अर्थ-सरल-मधुर, तिक्त, पाक और रसमे कटु, हलका, स्निग्ध, उष्ण तथा कर्णरोग, कण्ठरोग, नेत्ररोग, कफ वात, पसीना, दाह, कास, मूर्च्छा और व्रणको दूर करेहै।

अपिच।

सरलः कटुतिक्तोष्णः कफवातविनाशनः।
त्वग्दोषशोफकण्डूतिव्रणघ्नः कोष्ठशुद्धिदः॥ (रा० नि०)

अर्थ-सरल-चरपरा, कडवा, गरम, कफ वात नाशक, तथा त्वचाके रोग, सूजन, कण्डू और व्रणका नाश करेहै। और कोठेको शुद्ध करेहै।

अन्यच्च।

सरलः कटुतिक्तोष्णो रूक्षः श्लेष्मानिलापहः।
भूतदोषापहो रक्तो लिप्तोङ्गेषु सुखातिदः॥ (क्वचित्)

अर्थ-सरल-चरपरा, कडवा, गरम, रूक्ष तथा कफ, वात भूतबाधा और रक्तविकारको दूर करेहै। इसका शरीरमे लेप करनेसे कान्ति बढतीहै।

अपिच ।

सरलो मधुरस्तिक्तो रसे पाके कटुर्लघुः ।
स्निग्धश्चोष्णः कर्णनेत्रकण्ठरोगविनाशनः ॥
कफं वातञ्च यूकाञ्च कास स्वेदं व्रण तथा
रक्षोबाधामलक्ष्मीं च नाशयेदिति कीर्तित.॥(रा० नि०)

अर्थ-सरल मधुर, कडवा, रसमे तथा पाकमे चरपरा,हलका,स्निग्ध, गरम तथा कर्णरोग, नेत्ररोग, कण्ठरोग, कफ, वात, जूएं, खांसी, पसीना, घाव, राक्षसबाधा और अलक्ष्मीका नाश करेहै।

विवरण। इसका बडा वृक्ष हिमालयमे होताहै उसके भीतरसे गोंदकी समान रस निकलताहै उसको चढ्रस और सुदरस कहतेहै।

तगरनामानि ।

कालानुसार्यं तगरं कुटिलं लघप नतम् ।
अपरं पिण्डतगरं दण्डहस्ति च बर्हिणम् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-कालानुसार्य. तगर, कुटिल, लघुप, नत । (जिह्म, दीपन, कालानुसारिवा, वक्र, कुञ्चित, चक्र, शठ महोरग, दीपन, तगर, पार्थिक, विनम्र, नहुषाख्य, दीन) दूसरा पिण्डतगर होताहै, उसके नाम यह है। पिण्डतगर, दण्ड, हस्ति, बर्हण, (दण्डहस्त, पिण्डीतगरक, पार्थिव, राजहर्षण, कालानुसारक, क्षत्र)

हिन्दीभाषामे	तगर।
वङ्गभाषामे	तगरपादुका।
मराठीभाषामे	गोंडतगर।
गुजरातीभाषामे	तगर।
कर्णाटकीभाषामे	तगर।
तैलङ्गीभाषामे	गन्धितगरपु चेट्टु, नादिवर्द्धनचेट्टु।
उत	पाणिफलरा।
नेपालीभाषामे	चम्पा।

लैटिनभाषामें वेलिरीयाना हार्डविसिट्राई
Vreleriana Hardwicitrii

अरबीभाषामें अशारुन ।

तगरगुणाः ।

तगरद्वयमुष्णं स्यात्स्वादु स्निग्धं लघु स्मृतम् ।
विषापस्मारमूर्द्धाक्षिरोगदोषत्रयापहम् ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-दोनो प्रकारकी तगर-गरम, स्वादिष्ट, स्निग्ध, हलकी तथा विष, अपस्मार, शिरोरोग, नेत्ररोग और त्रिदोषको दूर करेहै ।

अपिच ।

तगरं शीतलं तिक्तं दृष्टिदोषविनाशनम् ।
विषार्तिशमनं पथ्यं भूतोन्मादभयापहम् ॥ (रा० नि०)

अर्थ-तगर-शीतल, कडवी, दृष्टिके विकारको दूर करे । विषके विकारको शान्ति करे, पथ्य तथा भूतोन्माद और भयनाशक है।

अन्यच्च ।

तगरं कुष्ठजित्प्रोक्तं दृक्छीर्षंघ्यापि विजिल्लघु ॥ (शो० नि०)

अर्थ-तगर-कोढ, नेत्ररोग और मस्तकरोगको दूर करे, तथा हलकी है ।

अपिच ।

तगरं शीतलं पथ्यं तिक्तं मधु लघु स्मृतम् ।
स्निग्धं पाके च कटुकं तुवरं विषनाशकम् ॥
नेत्रमस्तकरोगं च रक्तदोषं त्रिदोषकम् ।
भूतोन्मादमपस्मारं भूतबाधां च नाशयेत् ॥ (निघण्टुरत्नाकर)

अर्थ-तगर-शीतल, पथ्य, कडवी, मधुर, हलकी, स्निग्ध, पाकमें चरपरी, कषेली, विषनाशक, तथा नेत्ररोग, मस्तकरोग, रुधिर-विकार, त्रिदोष, भूतोन्माद, मृगी और भूतबाधाको दुर करे है ।

पद्मकनामानि ।

पद्मकं मलयश्चारुः पीतरक्तश्च सुप्रभः । (मदनपालनिघण्टु)

अर्थ-पद्मक, मलय, चारु, पीतरक्त, सुप्रभ, (पीत, पतिक, मालेय, शीतल, हिम, शुभ, केदारज, रक्त, पाटलापुत्रसन्निभ, पद्मवृक्ष, पद्मगन्धि, पद्माह्वय, पद्मकाष्ठ, केदार, शीतवीर्य,

पाटलापुष्पवर्णक)

हिन्दीभाषामें	पद्माक (ख)
बंगभाषामें	पद्मकाष्ठ।
मराठीभाषामें	पद्मकाष्ठ।
गुजरातीभाषामें	पद्मकलुलाकड्ड।
कर्णाटकीभाषामें	पद्मक।
तैलङ्गीभाषामें	पद्मपुत्रेका। (प्युगुसहदेवि)
लेटिनभाषामें	प्रनसपद्मम्। (Prunus Padum)

पद्मकगुणाः।

पद्मकं शीतलं तिक्तं रक्तपित्तविनाशनम्।
मोहदाहज्वरभ्रांतिकुष्ठविस्फोटशांतिकृत्॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ-पद्मक-शीतल, कडवा, रक्तपित्तनाशक तथा मोह, दाह, ज्वर, भ्रान्ति कोढ और विस्फोटकको दूर करे है॥

अपिच।

पद्मकं तुवरं तिक्तं शीतलं वातलं लघु।
विसर्पदाहविस्फोटकुष्ठश्लेष्मास्रपित्तहृत्।
गर्भसंस्थापनं रुच्यं वमिव्रणतृषाप्रणुत्॥

अर्थ-पद्मक-कषेला, कडवा, शीतल, वादी, हलका, तथा विसर्प, दाह, विस्फोट, कुष्ठ, कफ और रक्तपित्तका नाश करेहै, गर्भको स्थापन करे है, रुचिको उत्पन्न करेहै, वमन, घाव और पियासको दूर करे है।

विवरण। इसका साधारण वृक्ष केदार और शिमला आदि पर्वतों पर उत्पन्न होताहै इसकी लकडी औषधीमें लीजातीहै इसको घिसकर पीनेसे गर्भ न रहता हो तो गर्भ रहजाता है। और गर्भ गिरता हो तो स्थिर होजाता है शिमला पहाडमें पाजा नामसे प्रसिद्ध है।

गुग्गुलुनामानि।

गुग्गुलुः कालनिर्यासो महिषाक्षः पलङ्कषः।
जटायुःकौशिकोधूर्तोदेवधूपःशिवःपुरः॥ (मदनविनोद)

अर्थ-गुग्गुलु, कालनिर्यास, महिषाक्ष, पलंकष, जटायु, कौशिक धूर्त, देवधूप, शिव, पुर, (कुम्भ, उलूखलक, कुम्भोल, कुम्भोलूख-

लक, गुग्गुलु, सर्वसह, उष,उलूखलक, कुम्भी, कुन्ती,उदीत, पवनद्विष्ट, भवाभीष्ट, निशाटक, जटाल, पुट, भूतहर, शाम्भव, दुर्ग) वायुघ्न, महिषाक्षक, देवेष्ट, मरुद्विष्ट, रक्षोहा, पलकषा, रूक्षगन्धक, दिव्य ।

हिन्दीभाषामे	गूगल (र) भैसागूगल ।
बगभाषामे	गुग्गुलु ।
गुजरातीभाषामे	गुगुल । भैसो गुगुल ।
मराठीभाषामे	म्हशागुगुळ गुगुळ ।
कर्णाटकीभाषामे	ट्टढचोल ।
तैलङ्गीभाषामे	गुग्गिलमुचेट्टुमहिषाक्षी ।
इंग्रेजीभाषामे	इंडियन् डेलियम् । Indian Dellum

लैटिनभाषामे बालसमेडिन्ड्न ग्वस बुर्धिआई। बालस मोंडइनमुकुल Walsams Raxburghu B Makl ul

फारसीभाषामे	बोग्जहुदान ।
अरबीभाषामे	मुष्किलेअर्जक

गुग्गुलप्रकारभेदलक्षणगुणा ।

महिषाक्षो महानील कुमुद· पद्म इत्यपि ।
हिरण्य· पञ्चमो ज्ञेयो गुग्गुलोः पञ्च जातय· ॥
भृङ्गाञ्जनसवर्णस्तु महिषाक्ष इति स्मृत· ।
महानीलस्तु विज्ञेयः स्वनामसमलक्षण ।
कुमुदः कुमुदाभ स्यात्पद्मो माणिक्यसन्निभः ।
हिरण्याक्षस्तु हेमाभ· पचाना लिंगमीरितम् ॥
महिषाक्षो महानीलो गजेन्द्राणां हिताबुभौ ।
हयानां कुमुद· पद्म स्वस्त्यारोग्यकरौ परौ ॥
विशेषेण मनुष्याणां कनकः परिकीर्तित· ।
कदाचिन्महिषाक्षश्चमत·कश्चिन्नृणामपि ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ–महिषाक्ष, महानील, कुमुद, पद्म, और हिरण्य इन भेदोसे गूगल पाच प्रकारका है । उनमे महिषाक्ष गूगल–भौरेके रगकी

समान कोयले और अञ्जनके सदृश वर्णवाला होताहै । महानील-गूगल-अत्यन्त नीले रंगका होता है । कुमुदगूगल-कुमुदके फूलकी समान वर्णवाला होता है । पद्मगूगल-माणिकरत्नके समान लाल रंगका होताहै । हिरण्याक्षगूगल-हेमके समान रंगवाला होता है । महिपाक्ष और महानील गूगल हाथियोंके लिये हितकारी हैं, घोडोंको आरोग्य करनेवाला कुमुद और पद्मगूगल है और मनुष्यो-के लिये हिरण्याक्षगूगल अत्यन्त उपकारी है । कोई कोई ऐसाभी कहते हैं कि, मनुष्योंके लिये कहीं कहीं माहिपाक्षगूगलभी हितकारी है ।

गुग्गुलुगुणा ।

गुग्गुलुर्विंशदस्तिक्तो वीर्योष्णः पित्तलः सरः ।
कषायः कटुकः पाके कटू रूक्षो लघुः परः ॥
भग्नसन्धानकृद्वृष्यः सूक्ष्मः स्वर्यो रसायनः ।
दीपनः पिच्छिलो बल्यः कफवातव्रणापचीः ॥
मेदोमेहाश्मवातांश्च क्लेदकुष्ठाममारुतान् ।
पिण्डकाग्रन्थिशोफार्शोगण्डमालाकृमीञ्जयेत् ॥
माधुर्याच्छमयेद्वात कषायत्वाच्च पित्तहा ।
तिक्तत्वात्कफजित्त्वेन गुग्गुलुः सर्वदोषहा ॥
स नवो बृंहणो वृष्यः पुराणस्त्वतिलेखनः ।
स्निग्धः काञ्चनसंकाशः पक्वजम्बूफलोपमः ॥
नूतनो गुग्गुलुः प्रोक्तः सुगन्धिर्यस्तु पिच्छिलः ।
शुष्को दुर्गन्धकश्चैव त्यक्तः प्रकृतिवर्णकः ॥
पुराणः स तु विज्ञेयो गुग्गुलुर्वीर्य्यवर्जितः ।
अम्लं तीक्ष्णाम्लजीर्णञ्च व्यवायं श्रममातपम् ॥
मद्य रोषं त्यजेत्सम्यग्गुणार्थी पुरसेवकः ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-गूगल-विशद, कडवा, उष्णवीर्य्य, पित्तजनक, दस्तावर, कषेला, पाकमें चरपरा, चरपरा, रूखा, हलका, भग्नास्थिसंयोजक, वीर्य्य उत्पन्न करनेवाला, सूक्ष्म, स्वरको शुद्ध करनेवाला, उत्तम रसायन, अग्नि-

दीपक, पिच्छिल, बलकारक तथा कफ, वात, व्रण, अपची, मेदरोग, प्रमेह, पथरी, वातव्याधि, क्लेद, कोढ, आमवात, पिंडका, ग्रन्थिरोग, सूजन, बवासीर, गण्डमाला और कृमिरोगका नाश करेहै।

यह मधुररसयुक्त होनेसे वातको, कषायरसान्वित होनेसे पित्तको और तिक्तरसयुक्त होनेसे कफको नष्ट करे है। इसकारण गूगल त्रिदोषनाशक है।

नवीनगूगल-वीर्य्यजनक और बलकारक है। पुराना गूगल शरीरको अत्यन्त दुर्बलतादायक है जो गूगल चिकना हो, सुवर्णके समान निर्मल हो, सुगन्धित हो पकी जामुनके समान स्वरूपवाला हो और पीला हो, ऐसा गूगल नवीन होता है। पुराना गूगल, सूखा, दुर्गन्धवाला, स्वाभाविक वर्णहीन और वीर्यवर्जित होता है। गुणाभिलाषी गूगलको सेवन करनेवाले मनुष्य अम्ल (खटाई) तीक्ष्ण (मिरचादि) अजीर्ण-(कच्चे पदार्थ) मैथुन करना, परिश्रम करना, धूपमें फिरना, मदिरा पीना और क्रोधका करना इनको छोड दे।

अस्योत्पत्तिः ।

जायन्ते पुरपादपा मरुभुवि ग्रीष्मेऽर्कसंतापिताः
शीतर्त्तौ शिशिरेपि गुग्गुलरसं मुञ्चन्ति ते पञ्चधा ।
हेमाभं महिषाक्षितुल्यमपरं सत्पद्मरागोपमं
भृङ्गाभं कुमुदद्युतिं च विधिना ग्राह्या परीक्षा ततः (रा०नि०)

अर्थ-गूगलके वृक्ष मारवाडकी भूमिमें उत्पन्न होतेहैं। ग्रीष्मऋतुमें सूर्यकी गरमीसे संतापित हो, शीतऋतुमें सरदी पाकर उन वृक्षोंमेंसे पांच प्रकारका रस निकलता है, १ सुवर्णवर्णवाला, दूसरा भैंसके नेत्रोंकी समान, तीसरा पद्मरागकी समान, चौथा भौंरेकी सदृश काला और पांचवाँ कुमुदके फूलके कान्तिके समान होता है, इसी रसका नाम गूगल है। इसको लेकर उत्तम विधिसे परीक्षा करनी।

अस्य परीक्षा।

वह्नौज्वलति तपने विलयं प्रयान्ति क्लिद्यति कोष्णसलिले पयसः समानाः ॥ ग्राह्याः शुभाः परिहरेच्चिरकालजातान्सक्षारवर्णसमपूयविगन्धवर्णान् ॥ (प्रयोगामृत)

अर्थ-जो आगमे गिरनेसे जलजाय गरमीमे रखनेसे पिघलजाय उष्ण जलमे डालनेसे गलकर जलके समान होजाय, ऐसा गूगल श्रेष्ठ होता है, इसीको औषधीके काममे लेना और जो क्षारके समान रंगवाला हो, तथा जिसमे राधके समान गन्ध आती हो, पुराना हो, ऐसा गूगल कभी भी ग्रहण नहीं करना, इसका पूर्ण वीर्य्य तीन मासपर्यन्त रहताहै ।

अस्य शोधनविधिर्यथा।

गुडूचीत्रिफलाक्काथे क्षीरे चैव विशेषतः ।
पक्का च खण्डशः शुद्धं गृह्णीयान्मृदुगुग्गुलुम् ॥

अर्थ--गिलोय और त्रिफलेके काढेमें और विशेष करके दूधमे टुकडे करके पकाना चाहिये वह गूगल मृदु और शुद्ध होताहै, उसे ग्रहण करना चाहिये ।

अपिच।

क्काथे हि दशमूलस्य कोष्णे प्रक्षिप्य गुग्गुलुम् ।
आलोड्य वस्त्रपूतं तं चण्डातपविशोषितम् ॥
घृताक्तपिण्डितं कुर्य्याच्छुद्धिमायाति गुग्गुलुः। (आ० सं०)

अर्थ-किंचित् उष्ण दशमूलके काढेमे गूगल डालकर वस्त्रसे छान कर उसे मिलाकर तेज धूपमे सुखावे फिर घीमें मिलाकर गोली करले तो गूगल शुद्ध होजाताहै ।

अन्यच्च ।

अमृतायाः कषायेण शोषयित्वाऽथ गुग्गुलुम् ।
गृह्णीयादातपे शुष्कं तथाऽवकरवर्जितम् ॥(आत्रेयसंहिता)

अर्थ-गिलोयके रसमे गूगलको मिलाय धूपमे सुखाकर ग्रहण करले और धूलादिकसे रहित रक्खे ।

अन्यच्च।

दुग्धे वा त्रिफलाक्काथे दोलायन्त्रे विपाचितः ।
वाससागालितो ग्राह्यःसर्वकर्म्मसुगुग्गुलुः॥(आत्रेयसंहिता)

अर्थ-दूधमे अथवा त्रिफलाके काढेमे रखकर दोलायन्त्रमें पचावे फिर कपडेसे छानकर ग्रहण करले, सर्व काममे इसप्रकार शोध कर लेवे ।

विवरण-इसका वृक्ष रेतली और पर्वतीभूमिमे होताहै पत्ते अनीरहित छोटे छोटे नीमके पत्तोंके समान होतेहै फूल लालरंगका अतिसूक्ष्म पांच पखडीवाला मंजरीके बीचमे निकलताहै फल छोटे बेरकी समान और तीनधारवाला होताहै, इसके फलोंको गूगलिया कहतेहैं, यह फल उदरकी पीडाको दूर करते है। इस वृक्षके गोंदकोही गूगल कहतेहैं। व्यवहारमे शुद्ध किया हुआ गूगल लेना।

गन्धराजगुग्गुलुनामानि।

गन्धराजः स्वर्णकणः सुवर्णः कणगुग्गुलुः।
कनको वंशपीतश्च सुरभिश्च पलङ्कपः॥

अर्थ-गन्धराज, स्वर्णकण, सुवर्ण, कणगुग्गुलु, कनक, वंशपीत, सुरभि और पलङ्कप।

गन्धराजगुग्गुलुगुणाः।

कणगुग्गुलुः कटूष्णः सुरभिर्वातनाशनः।
शूलगुल्मोदराध्मानकफघ्नश्च रसायनः॥

अर्थ-कणगूगल-चरपरा, गरम, सुगन्धि, वातनाशक तथा शुल्म, उदररोग, आध्मान और कफको दूर करेहै और रसायन है।

भूमिजगुग्गुलुनामानि।

गुग्गुलुश्च तृतीयोन्यो भूमिजो दैत्यमेदजः।
दुर्गाह्वोदाइडाजात आशादिपुरसम्भवः।
मज्जाजो मेदजश्चैव महिषासुरसम्भवः॥

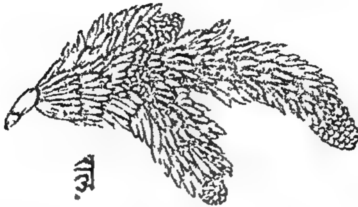
अर्थ-भूमिज गुग्गुलु, दैत्यमेदज, दुर्गाह्व, दाइडाजात, आशादिपुरसम्भव, मज्जाज, मेदज, महिषासुरसम्भव।

अस्य गुणाः।

गुग्गुलुर्भूमिजस्तिक्तः कटूष्णः कफवातजित्।
उमाप्रियश्च भूतघ्नो मेध्यः सौरभ्यदः सदा॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ-भूमिजगूगल-कडवा, चरपरा, गरम, कफवातनाशक, उमाको प्यारा, भूतका नाश करे, मेधाजनक और सदा सुगंधिदायक है।

राळनामानि ।



शलस्तु सालनिर्यासस्तथा सर्ज्जरसः स्मृतः ।
देवधूपो यक्षधूपो विरूपो वह्निवल्लभः ॥

अर्थ-राल-सालनिर्यास, सर्जरस, देवधूप, यक्षधूप,विरूप, वह्निवल्लभ, (कलकल, काल, कलयज, सर्वरस, बहुरूप,धूपन, सालज; शालनिर्यास, सर्ज्य धूनक, शालसार, शाल, शालवेष्ट, सालवेष्ट, अग्निवल्लभ, सर्ज्जमणि, साल, कलकलोद्भव, ललत, देवेष्टशीलल, सालरस, सुरभि, सर्जनिर्यासक, सुरधूप, कलकललज, महारूप, क्षण और शालरस)

हिन्दीभाषामे	राल ।	
वङ्गभाषामे	धूना धूनो ।	
मराठीभाषामे	राळ पिवळी ।	
गुजरातीभाषामे	राल ।	
कर्णाटकीभाषामे	सर्ज्जरस ।	
तैलिङ्गभाषामे	सर्ज्जरसमु-सर्ज्ज ।	
पंजाबीभाषामे	रालअर्लु ।	
इंग्रेजीभाषामे	यल्लेरिझिन् ।	Yellow Risin
लैटिन्भाषामे	रिझिनाल्कीना	Risina Flena
फिरङ्गीभाषामे	नारुस ।	
फारसीभाषामे	रालमगरेवी ।	
अरबीभाषामे	किकहर	

रालगुणाः ।

रालो हिमो गुरुस्तिक्तः कषायो ग्राहको हरेत् ।
दोषास्रस्वेदवीसर्पज्वरव्रणविपादिकाः ।
ग्रहभग्नाग्निदग्धांश्च शूलातीसारनाशनः ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-राल-शीतल, भारी, कडवा, कषैली, ग्राही तथा रुधिरदोष, पसीना, विसर्परोग, ज्वर, व्रण, विपादिका, ग्रह, भग्नरोग, अग्निदग्ध, शूल और अतिसारको दूर करैहै ।

अपिच ।

रालस्तु शिशिरः स्निग्धः कषायस्तिक्तसंग्रहः ।
वातपित्तहरः स्फोटकण्डूतिव्रणनाशनः ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ-राल-शीतल, स्निग्ध, कषैली, कडवी, संग्राही तथा वात, पित्त, स्फोट, कण्डू और व्रणनाशक है ।

अन्यच्च ।

सर्जनिर्यासकः शीतः स्निग्धश्च तुवरो गुरुः ।
ग्राहकः स्तम्भनस्तिक्तः स्वादुश्च व्रणरोपणः ॥
भग्नसन्धानकरणो मधुरो वातपित्तहा ।
त्रिदोषरक्तरुक्कण्डूविस्फोटव्रणशूलनुत् ॥
स्वेदज्वरविसर्पाणां ग्रहबाधाविनाशनः ।
विपादिकाग्निदग्धस्य भूतबाधाविषस्य च ।
अतिसारस्य शमनः ऋषिभिः परिकीर्तितः ॥

(निघण्टुरत्नाकर)

अर्थ-राल-शीतल, चिकनी, कषैली, भारी, मलरोधक, स्तम्भन, कडवी, स्वादिष्ठ, व्रणरोपण, टूटी अस्थिको जोडनेवाली, मधुर तथा वातपित्त, त्रिदोष, रुधिरविकार, खुजली, विस्फोट, घाव, शूल, पसीना, ज्वर, विसर्प, ग्रहबाधा, विपादिका, अग्निदग्ध, भूतबाधा, विष और अतिसारको दूर करे है।

विवरण-रालका-वृक्ष देहरादूनमे होताहै, शालवृक्ष नामसे प्रसिद्ध है, उसके गोंदको राल कहतेहै, उसमे मिश्री मिलाकर खानेसे

अतिसार दूर होताहै, इसके लेपसे और इसको पीनेसे प्रदररोग दूर होताहै । मात्रा सात रत्तीकी है ।

राळतैलगुणा ।

तैलं सर्जरसोद्भूतं विस्फोटव्रणनाशनम् ।
कुष्ठपामाक्रिमिहरंवातश्लेष्मामयापहम् ॥ (आत्रेयसंहिता)

अर्थ-रालका तेल-(तार्पिनतेल) विस्फोट, घाव, कोढ, पामा, क्रिमि, वात और कफका नाश करे है ।

कुन्दुरुनामानि ।

पालङ्क्या कुन्दुरुः कुन्दुः सौराष्ट्रीशिखरी वली ।

अर्थ-पालंक्या, कुन्दुरु, कुन्दु, सौराष्ट्री शिखरी वली, (मुकुन्द, पालकी, मुकुंद, कुन्दु, कुन्दुर, तीक्ष्णगन्ध, कुन्दुरुक, कुन्दक, तीक्ष्ण गोपुरक, बहुगन्ध, पालिन्द, भीषण, सुगन्ध, कुन्दारु, बिडालाक्ष, पालक, खपुर, स्वाक्ष, नागवधूप्रिय और शल्लकीनिर्य्यास)

हिन्दीभाषामे	कुन्दुरु । गुदबरोसा ।
बङ्गभाषामें	कुन्दुरुखोटी ।
मराठीभाषामे	अवलगुन्दर । सालईडीक ।
गुजरातीभाषामे	किन्दुरु, शेषगुन्दर ।
कर्णाटकीभाषामे	इडवोल ।
इंग्रेजीभाषामे	ऑलिबेनम् । Olibanum
लाटिनभाषामे	बोझवेलिया, थेरीफेरा, विस्टेशिया, टेरेबिंथस् ।
फारसीभाषामे	कन्दुररुमी । खोटीमस्तकी ।
अरबीभाषामे	कुन्दुरेजकर । बिस्तज ।
तैलिङ्गीभाषामे	कुन्दुरुमु ।

कुन्दुरुगुणा ।

कुन्दुरुर्मधुरस्तिक्तस्तीक्ष्णस्त्वच्यः कटुर्हरेत् ।
ज्वरस्वेदग्रहालक्ष्मीमुखरोगकफानिलान् ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-कुन्दुरु-मधुर, कडवा, तीक्ष्ण, त्वचाको हितकारी, चरपरा तथा ज्वर, पसीना, ग्रहबाधा, अलक्ष्मी, मुखरोग, कफ और वातको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

कुंदुरुर्मधुरस्तीक्ष्णस्तिक्तो रुच्यः कटुः स्मतः ।
स्निग्धस्त्वच्यस्तथा चोष्णो ज्वरस्वेदकफापहः ॥
रक्तरुक्प्रदरवातमलक्ष्मीग्रहपीडनम् ।
रक्तातिसारं यूकाश्चनाशयेदिति कीर्तितः ॥ (नि० र०)

अर्थ-कुन्दुरु-मधुर, तीक्ष्ण, कडवा, रुचिकारक, चरपरा, स्निग्ध, त्वचाको हितकारक, गरम तथा ज्वर, पसीना, कफ, रक्तविकार, प्रदर, वायु, अलक्ष्मी, ग्रहबाधा, रक्तातिसार और जूओंको दूर करेहै ।

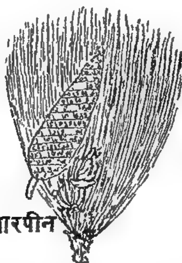
अन्यच्च ।

शर्करासहित मेह वृषणस्य व्यथां हरेत्। (शोढलनिघण्टु)

अर्थ-कुन्दुरु-शर्करायुक्त प्रमेहरोग और अण्डकोषोकी पीडाको दूर करेहै ।

विवरण-शल्लकीके गोंदको कुन्दुरु कहतेहैं । इसका रंग सफेद और कुछ सुगन्धियुक्त होताहै । कुन्दुरुको घिसकर बदपै लगानेसे बद बैठ जातीहै, इसके मरहमसे घावको आराम होताहै ।

श्रीवासनामानि ।



तारपीन

श्रीवासः सरलस्रावः श्रीवेष्टो वृक्षधूपकः ।
वेष्टसारो रमावेष्ट· श्रीपिष्ट· पद्मदर्शनः ॥

अर्थ-श्रीवास-सरलस्राव, श्रीवेष्ट, वृक्षधूपक, वेष्टसार, रसावेष्ट, श्रीपिष्ट, पद्मदर्शन (पायस, वृकधूप, सरलद्रव, रक्तशीर्षक, रसाह्व, यास, यवास, घृताह्वय, दध्याह्वय, क्षीराह्वय, क्षीरश्री, वायस, (वृक्षधूप, चितागन्ध, रसायक, श्रीरस, वेष्ट, लक्ष्मीवेष्ट, वष्टक क्षीरशीर्ष, सुधूपक, धूपाग तिलपर्ण, सरलांग, तैलपर्णी)

हिन्दीभाषामे-	सरलका गोंद, सरलका रस, चन्द्रस गन्धविरोजा
वङ्गभाषामे	टार्पिनतेल नवनीत, खोटी गन्ध विरुजा ।
मराठीभाषामे	सरलाडीक चन्द्रुस ।
गुजरातीभाषामे	चन्द्रस । जनार्दन । गन्धवेरीजो ।
कर्णाटकीभाषामे	श्रीवेष्टक ।
तामिलिभाषामे	पिनैमारु ।
इंग्रेजीभाषामे	गमकोपल । सडरेक Gomcopal Sandarack
लैटिनभाषामे	ट्रेकिलोविअमहोर्निमेनिएनमूकोलिट्रिस-क्केड्रिवालविस् । Trachıloam Hornıman monamIoColutris Quadriawalvis
फारसीभाषामे	संदरुस । काहरुवा ।
अरबीभाषामे	सदरुस ।

श्रीवासगुणाः ।

श्रीवासो मधुरस्तिक्तः स्निग्धोष्णस्तुवरःसरः ।
पित्तलो वातमूर्द्धाक्षिस्वररोगकफापहः ॥
रक्षोघ्नः स्वेददौर्गन्ध्ययूकाकण्डूव्रणप्रणुत् ॥(भा०प्र०)

अर्थ-मधुर-कडवा, स्निग्ध, गरम, कषैला, दस्तावर, पित्तजनक तथा वायु, मस्तकरोग, नेत्ररोग, स्वरभंग,कफ, राक्षसबाधा, पसीना दुर्गंध, जूए, खुजली और घावको दूर करे है ।

अपिच ।

श्रीवेष्टः कटुतिक्तश्च कषायः श्लेष्मपित्तजित् ।
योनिदोषरुजाजीर्णव्रणाध्मानप्रदोषजित्॥(रा० नि०)

अर्थ-कटु, तिक्त, कषाय, कफ पित्तनाशक तथा योनिरोग, अजीर्ण, व्रण और आध्मान रोगका नाश करे है ।

अपि च।

चन्द्रसः कटुकः स्वादुः स्निग्धश्चोष्णश्च शुक्रलः।
लघुवृष्यः कांतिकरः कंडुस्वेदज्वरापहः॥
ग्रहपीडाकुष्ठदाहान्नोशयेदिति कीर्तितः। (नि० र०)

अथ-चंद्रस-चरपरा, स्वादिष्ठ, स्निग्ध, उष्ण, शुक्रकारक, हलका वृष्य, कान्तिको करनेवाला तथा खुजली, पसीना, ज्वर, ग्रहकी पीडा, कोढ और दाहको दूर करे है।

श्रीवाससारगुणा।

श्रीवाससारः कफनुन्मूत्रलो ज्वरसहरः।
शोफविम्लापनो लपात्क्रिमिहृद्वेदनापहः॥ (आत्रेयस)

अर्थ-श्रीवाससार अर्थात् गन्धविरोजा-कफनाशक, मूत्रवर्द्धक, ज्वरसंहारक और शोफको दूर करे है, इसका लेप करनेसे कृमिरोग और वेदनाकी शान्ति होती है। *

सिह्लकनामानि।

कपिनामा कपितैल कृत्रिम कपिशश्चलः।
तुरुष्को मुक्तिमुक्तश्च पिण्डितः सैहिकारसः॥

अर्थ-कपिनामा, कपितैल, कृत्रिम, कपिश, चल, तुरुष्क, मुक्तिमुक्त, पिण्डित, सैहिकारस (कपि, तैल, कपिल, चला, पिण्डातवर सिह्लपिण्डक, सिद्ध, पावन, पवन, धम्र, धूम्रवर्ण, सुगन्धिक, सिह्लक, सिह्लसार, पीतसार, कपि, पिण्याक, कपिज, कल्क, पिण्डितैलक, करेवर, कृत्रिमक, लेपन, शल्लकीद्रव, पिष्टक, तैलपर्णी, वृकधूप, कपिचञ्चल, यावल, तैलाख्य, पिण्डक, याव, यावन जाव, शाज, यवनदे, अश्मपुष्प और चञ्चलतैलक)

हिन्दीभाषामें	शिलारस।
वङ्गभाषामें	शिलारस।
मराठीभाषामें	शिलारस।
गुजरातीभाषामें	शेलारस।
कर्णाटकीभाषामें	पिण्डतैल।

* -चीड वृक्षके गोंदको विराजो और श्रीवासके गोंदको सुदरस कहते हैं तारपीनका तेल दोनोंसे बन सकताहै प्राय ठंडे पहाडों पर इसके वृक्ष होतेहैं।

इंग्रेजीभाषामें	लिक्विड्एम्बर। Liquidamber
लैटिनभाषामें	लिक्विडेम्बर ओरिएन्टेलिस Liquidamber Orientalis
फारसीभाषामें	सलारस।
अरबीभाषामें	उसारेकामिया, मिथास, साइला।
दक्षिणीभाषामें	कपितैल।

अस्य गुणाः।

तुरुष्कः सुरभिस्तिक्तः कटुः स्निग्धश्च कुष्ठजित्।
कफपित्ताश्मरीमूत्रघातभूतज्वरार्त्तिजित्॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ-शिलारस सुगन्धि, कडवा, चरपरा, स्निग्ध तथा कोढ, कफ, पित्त, पथरी, मूत्राघात, भूत और ज्वरका नाश करे है।

अपि च।

सिह्लकः कटुकः स्वादुः स्निग्धोष्णः शुक्रकान्तिकृत्
वृष्यः कंडूस्वेदकुष्ठज्वरदाहग्रहापहः॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-शिलारस-स्वादु, चरपरा, स्निग्ध, गरम, शुक्रजनक, कान्तिकारक, वृष्य तथा कण्डू, पसीना, कोढ, ज्वर, दाह और ग्रहकी पीडाको दूर करेहै

अन्यच्च।

तुरुष्करः कान्तिकरो वृष्योष्णः स्वादु शुक्रलः।
वर्ण्यः सुगन्धिः कटुकस्तिक्तः स्निग्धश्च कुष्ठहा॥
कफपित्ताश्मरीभूतबाधाज्वरविनाशनः।
मूत्राघातस्वेदकण्डूदाहहा च त्रिदोषजित्॥ (निघ० र०)

अर्थ-शिलारस-कान्तिकारक, वीर्य्यवर्द्धक, स्वादिष्ठ, शुक्रजनक, वर्णको सुंदरतादायक, सुगन्धि, चरपरा, कडवा, चिकना तथा कोढ, कफ, पित्त, पथरी, भूतबाधा, ज्वर, मूत्राघात, पसीना, खुजली, दाह और त्रिदोषका नाश करेहै.

लवङ्गनामानि ।



लवङ्ग देवकुसुम श्रीसञ्ज्ञ कलिकोत्तमम् ।
भृङ्गार सुषिर तीक्ष्ण वारिज शेखर लवम् ॥

अर्थ-लवङ्ग, देवकुसुम, श्रीसञ्ज्ञ, कालकोत्तम, भृङ्गार, सुषिर, तीक्ष्ण, वारिज, लव (प्रसून, लवङ्गक, लवङ्गकलिका, दिव्य, श्रीपुष्प, रुचिर, ग्रहणीहर, तोयाधिप्रिय, वारिपुष्प, तीक्ष्णपुष्प, गीर्वाणकुसुम, चदनपुष्प, दिव्यगन्ध, श्रीप्रसूनक)

हिन्दीभाषामें	लौंग ।	
वङ्गभाषामें	लवङ्ग ।	
मराठीभाषामें	लवंग ।	
गुजरातीभाषामें	लवींग ।	
कर्णाटकीभाषामें	'लवङ्गकलिका ।	
तैलिङ्गीभाषामें	लवङ्गलु ।	
तामिलीभाषामें	किरम् बेर ।	
टा०	लवङ् ।	
इंग्रेजीभाषामें	क्लोवस् ।	Cloves
लेटिन्भाषामें-केरियो फाइलस,ऐरोमेटिकस् ।		Caroisphyllus Arramatices
फारसीभाषामें	मेहक् ।	
अरबीभाषामें	करनफूल (फूल)	

अस्यगुणाः ।

लवङ्गं कटुकं तिक्तं लघुनेत्रहितं हिमम् ।
दीपनं पाचनं रुच्यं कफपित्तास्रनाशकृत् ॥
तृष्णां छर्दिं तथाध्मानं शूलमाशु विनाशयेत् ।
कासं श्वासं च हिक्कां च क्षयं क्षपयति ध्रुवम् ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-लौंग-चरपरी, कडवी, नेत्रोंको हितकारी, शीतल, दीपन, पाचन, रुचिकारक तथा कफ, पित्त, रक्तरोग, तृषा, छर्दि, आध्मान, शूल, कास, श्वास हुचकी और क्षयरोगका नाश करे है ।

अन्यच्च ।

आनाहवातशूलघ्नं मुखदौर्गन्ध्यनाशनम् ।

अर्थ-आनाह, वायु, शूल और मुखकी विरसताको दूर करेहै ।

अपिच ।

लवङ्गं शीतलं तिक्तं चक्षुष्यं भुक्तरोचनम् ।
वातपित्तकफघ्नं च तीक्ष्णं मूर्द्धरुजापहम् ॥ (क्वचित्)

अर्थ-लौंग-शीतल, तिक्त, नेत्रोंको हितकारी, भुक्तरोचन, तथा वात, पित्त, कफनाशक, तीक्ष्ण और मस्तकरोगको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

लवङ्गं सोष्णकं तीक्ष्णं विपाके मधुरं हिमम् ।
वातपित्तकफामघ्नं क्षयकासस्तु दोषनुत् ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ-लौंग-गरम, तीक्ष्ण, पाकके समय मधुर, शीतवीर्य्य, तथा त्रिदोष (वात, पित्त, कफ) आम, क्षय और कासरोगका नाश कर

अन्यच्च ।

लवङ्गं विशदं तीक्ष्णं चक्षुष्यं भुक्तपाचनम् ।
वातपित्तहरं हृद्यं स्निग्धं मूर्द्धरुजापहम् ॥ (गणनिघंटु)

अर्थ-लौंग-विशद, तीक्ष्ण, नेत्रोंको हितकारी, भुक्तपाचक, वातपित्तनाशक, हृदयको हितकारी, स्निग्ध और शिरोरोगको हरे है ।

लवङ्गतैलगुणाः ।

देवपुष्पोद्भवं तैलमग्निकृद्वातनाशनम् ।
दन्तवेष्टकफार्तिघ्नं गर्भिण्या वमनापहम् ॥ (आत्रेयसंहिता)

अर्थ-लौंगका तेल-अग्निजनक, वातनाशक तथा दन्तवेष्ट, कफ और गर्भिणीकी वमननाशक है ।

विवरण-इसके वृक्ष जंगवारमे अधिक उत्पन्न होते है, देखनेमे सुदर और इसके पत्तोमे अत्यन्त सुगन्ध आता है इसके फूलकी कली लौग है लाग मलवारमेभी होतीहै, यह मुखकी दुर्गन्धको दूर करतीहै और मसालेमेभी पडतीहै। मात्रा तीन ३ मासेकी है।

जातिफलनामानि।



जातीफल फल जातिः कोपकं सुमनःफलम्।

अर्थ-जातीफल, फलजाती, कोपक, सुमनःफल, (जातीकोप, फल, जाती, कोश, कोप, जातिकोप, राजभोग्य, जातिकोश, जातिफल, जातिशस्य, शाल्लूक, मालतीफल, मज्जसार, जातिसार पुट और मदशौड)

हिन्दीभाषामे	जायफल।
वङ्गभाषामे	जायफल।
मराठीभाषामे	जायफळ।
गुजरातीभाषामे	जाईफल।
कर्णाटकीभाषामे	जाईफल।
तैलङ्गीभाषामे	जाजिकाया।
तामिलीभाषामे	जोदिकराय।
ब्रह्मीभाषामे	जादिक्षु।
इंग्रजीभाषामे	नट्मेग। Nutmeg
लेटिन्भाषामे	मिरिस्टिका-ऑफिसिनेलिस मिरिस्टिकामास्केटा Myristica officinalis M Maschata

फारसीभाषामे जोभोवुवा ।
अरबीभाषामे जोझउतलीव ।

जातिफललक्षणम् ।

जातीफलं सशब्दं च स्निग्धं गुरु च शस्यते ।
लघुकं शब्दहीनं च रूक्षांगमतिनिंदितम् ॥ (भैषज्यचिकित्सा)

अर्थ-जातिफल-जिसमें शब्द होताहो, चिकना हो और भारी हो, ऐसा जायफल उत्तम होता है और जो तोलमे हलका हो, शब्द-हीन हो रूखे अगवला हो, ऐसा जायफल निंदनीय है ।

जातिफलगुणा ।

जातीफलं रसं तिक्तं तीक्ष्णोष्णं रोचनं लघु ।
कटुकं दीपनं ग्राहि स्वर्यं श्लेष्मानिलापहम् ॥
निहन्ति मुखवैरस्य मलदौर्गन्ध्यकृष्णताम् ।
कृमिकासवमिश्वासशोषपीनसहृद्रुजः ।(भावप्रकाश)

अर्थ-जायफल-रसमे कडवा, तीक्ष्ण, गरम, रोचक, हलका, चरपरा, अग्निको दीपन करनेवाला, मलरोधक, स्वरको सँभालनेवाला तथा कफ, वात, मुखकी विरसता, मलकी दुर्गन्ध और कालापन, कृमि, खांसी, वमन, शोष, पीनस और हृदयरोगका नाश करेहै ।

अपिच ।

जातीफलं जातिकोशं तृष्णाशूलविनाशनम् । (केचित्)

अर्थ-जायफल-तृषा और शूलका नाश करेहै ।

अन्यच्च ।

जातीफलं कषायोष्णं कटुकण्ठामयार्तिहृत् ।
वातातीसारमेहघ्नं वृष्यं दीपनदं लघु ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ-जायफल-कषेला, गरम, चरपरा, कण्ठरोगहारक, वातातिसारनिवारक, प्रमेहनाशक, वीर्य्यजनक, जठराग्निको दीपन करनेवाला और हलका है ।

अस्य तैलगुणा ।

तैलं जातीफलोद्भूतं समुत्तेजनमग्निदम् ।
जीर्णातिसारशमनमाध्मानाक्षेपशूलहृत् ॥
आमवातहरं बल्यं दन्त्वेष्टव्रणार्तिनुत् । (आत्रेयसंहिता)

अर्थ-जायफलका तेल-उत्तेजक,अग्निजनक,जीर्णातिसारनिवारक आध्मानहर्त्ता, आक्षेपनाशकर्त्ता, शूलनाशक, आमवातहारक बलकारक तथा दन्तचेष्ट और व्रण रोगको दू   रते हैं।

विवरण-गुल्म होताहै, फल जामुनके समान होता है, इसकी छालके भीतर लाल गुच्छा होताहै। इसको जावित्री कहते हैं कुछ कालमें इसका वर्ण पीला पडजाताहै, उसके भीतर कठिन वल्कल, का बीज होताहै, तोडनेसे जायफल कहते हैं, इसकी उत्पत्ति जावा बताविया और पिनाङ्गके टापुओंमें होतीहै इसका चित्र ऊपर दिखलाया है।

जातीपत्री नामानि।

जातीकोपा जातिपत्री सुमनःपत्रिकापि च।

अर्थ-जातीकोपा, जातिपत्री, सुमनः पत्रिका (जातीकोपी, सुरमनःपत्री, मलाती, पत्रिका, सौमनसायिनी और जातीफलत्वक्)

हिन्दीभाषामें	जावित्री।
बंगभाषामें	जैत्री, जायित्री।
मराठीभाषामें	जायपत्री।
गुजरातीभाषामें	जावत्री।
कर्णाटकीभाषामें	जायपत्री।
तैलङ्गीभाषामें	जाजिपत्री।
इंग्रेजीभाषामें	मेस Mace
लैटिन्‌भाषामें	मिरिष्टिका फेग्रन्स् Myristica Fragrans
फारसी भाषामें	जवित्री। बजवार।
अरबी भाषामें	बिसबासा।

अस्या गुणा।

जातीफलस्य त्वक्प्रोक्ता जातीपत्री भिषग्वरैः।
जातीपत्री लघुः स्वादुः कटूष्णा रुचिवर्णकृत्॥
कफकासवमिश्वासतृष्णाकृमिविषापहा॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-वैद्यलोक जायफलकी त्वचाको जावित्री कहतेहैं।

गुण। जावित्री-हलकी, स्वादिष्ट, चरपरी, रुचिजनक, वर्णकारक तथा कफ, खासी, वमन, श्वास, तृष्णा, कृमि और विषनाशक है।

अपिच।

जातिपत्री कटुस्तिक्ता सुरभिः कफनाशिनी।
वक्त्रवैशद्यजननी जाड्यदोषनिकृन्तनी॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ–जावित्री, चरपरी, कडवी, सुगन्धि, कफनाशक वक्त्रवैशद्य-जनक अर्थात् मुखको स्वच्छ करनेवाली और जडताको दूर करे है।

अन्यच्च।

जातिपत्री कटुः स्निग्धाग्निकृद्दुर्गन्धनाशिनी। (केचित्)

अर्थ–जावित्री, चरपरी, स्निग्ध, अग्निजनक और दुर्गंधनाशक है।

विवरण–जावित्री जायफल एकही वृक्षसे होतेहैं। सुमात्रा सिंहल, पिनाङ्गआदि देश और हिन्दोस्तानी महासमुद्रके टापुओंमें जायफल अधिकतासे होताहै। देखनेमें सुंदर हरे रंगका होताहै। आजकल दक्षिण देशमें भी इसकी कापन् होती है, जायफलके ऊपरकी छाल फटकर जो कुछ लाल लाल नाजसा निकलताहै, उसीको जावित्री कहते हैं। इस फलके बीजको जायफल कहते हैं। सुगन्धवाली होनेसे जावित्री पानके साथ खाई जातीहै। बीजसे तेल निकलताहै।

जायफलको पकाकर अर्क निकाल लियाजाताहै इस अर्कसे हैजेकी पियास दूर होतीहै।

जावित्रीकी मात्रा साढेतीन ३॥ मासेकी है।

स्थूलैलानामानि।



एला स्थूलैला बहुला मालेया ताडकीफलम्।

अर्थ–एला, स्थूलैला, बहुला, मालेया, ताडकीफल, (स्थूला, बृहदेला, त्रिपुटा, त्रिदिवोद्भवा, सुरभित्वक्, महिला, कन्या–कुमारी कुमारिका, पृथ्वी, गोपुटा, कायस्था, कान्ता, घृताची, भद्रैला, गर्भसम्भवा, इन्द्राणी, ऐन्द्री, दिव्यगन्धा, निष्कुटी, निष्काटि, चर्म-

सम्भवा, बाला, बलवती, एलाकी सागरगामिनी, गन्धालीगर्भ और महैला)

हिन्दीभाषामें	बडीइलायची, इलायची, पूर्वी इलायची। लालइलायची।
बंगभाषामें	एलाइच। बड इलाइच।
मराठीभाषामें	थोरवेला। वेलदोडे।
गुजरातीभाषामें	मोठी एलची। एलचा।
कर्णाटकीभाषामें	परडूलकी।
तैलिङ्गभाषामें	पेद्द एलक्कुलु। एलुकवेट्टु।
तामिलीभाषामें	एलम्।
इंग्रेजीभाषामें	लार्ज-कोर्डामोम्। Large Cardamom
लैटिन्भाषामें	एमोमं सुव्युलेटम्। Amomum Subulatum
फारसीभाषामें	हलें कला।
अरबीभाषामें	काकले किवार।

स्थूलैलागुणाः।

स्थूलैला रक्तपित्तघ्नी वमिशुक्राश्मजिद्धिमा।
तृष्णा हृल्लासकण्डूघ्नी पित्तश्लेष्मामयापहा॥ (ग०नि०)

अर्थ-बडीइलायची-रक्तपित्तनाशक, वमननिवारक, शुक्रनाशक है, पथरीको दूर करनेवाली, शीतल तथा तृषा, हृल्लास, कण्डू, पित्त और कफरोगको हरनेवाली है।

अन्यच्च।

स्थूलैला रोचनी तीक्ष्णा लघूष्णा कफवातजित्।
सुगंधि पाचिका शीता चाग्निदीप्तिकरी मता॥

अर्थ-बडी इलायची-रुचिकारक, तीक्ष्ण, हलकी, गरम, कफवातनाशक, सुगन्धित, पाचक, शीतल और अग्निदीपन करनेवाली है।

अपिच।

स्थूलैला कटुका पाके रसे चानलकृल्लघुः।
रूक्षोष्णा श्लेष्मपित्तास्रकण्डूश्वासतृषापहा॥
हृल्लासविषवस्त्यास्यशिरोरुग्वमिकासनुत्॥ (भा०)

अर्थ-बडीइलायची-पाक और रसमे चरपरी है । अग्निजनक है, हलकी है, रूखी और गरम है तथा कफ, रक्त, पित्त, कण्डू, श्वास, तृपा, हल्लास, विप, वस्तिरोग, मुखरोग, शिरोरोग, वमन और कासका नाश करे है ॥

अन्यच्च ।

स्थूलैला कटुका रूक्षा कोष्ठबन्धतृट्शूलनुत् । (क्वचित्)

अर्थ-बडी इलायची-चरपरी, रूखी तथा कोष्ठबद्धता, पियास और शूलको निर्मल करे है ।

सूक्ष्मैलानामानि ।



वयःस्था तीक्ष्णगंधा च सूक्ष्मैला द्राविडिस्त्रुटिः ।

अर्थ-वयःस्था, तीक्ष्णगन्धा, सूक्ष्मैला, द्राविडि, त्रुटि, (उपकुञ्चिका, कोरगी, भृंगपर्णिका, उपकुञ्चिका, तुत्या, त्रिपुटा, क्षुद्रैला, त्रिपुटी, छर्दिकारिपु, त्वचिसुगन्धा, पुटिका, चन्द्रसम्भवा, कपोतवर्णी, दिवोद्भवा, चन्द्रवाला, बहुला, निष्कुटि, कुनटी, गौरागी, गर्भारा, गन्धफलिका, सुगन्धि, चान्द्रिका, और श्वेतैला)

हिन्दीभाषामे	छोटी इलायची, गुजराती इलायची, सफेद इलायची ।
वंगभाषामे	छोटएलाच-गुजराती एलाइच ।
मराठीभाषामे	वेलची ।

गुजरातीभाषामे	एलची कागदी ।
तैलिंगीभाषामे	एलाकु, चिल्लयालक्कुलु-एल्लकप ।
द्राविडीभाषामे	एलोकुल्लकापु ।
इंग्रेजीभाषामे	शिलिसर, कार्डामोम् Sheleser, Cardamom
लैटिन्भा०	इलेटिरिया कार्डामाम् Eleteria, Cardamom
फारसीभाषामे	हैल, हिल, हाल ।
अरबीभाषामे	काकिलेसिगार ।

अस्य गुणाः ।

एला सूक्ष्मा कफश्वासकासार्शोमूत्रकृच्छ्रहृत् ।
रसे तु कटुका शीता लघ्वी वातहरा मता॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-छोटी इलायची-कफ, कास, श्वास, बवासीर और मूत्रकृच्छ्र रोगका नाशकरे है, रसमे चरपरी है, शीतल है, हलकी है और वातविनाशकहै ।

अन्यच्च ।

त्रुटिस्तिक्ता च शीता च रसे कटी लघुःस्मृता ।
सुगंधिःपित्तला चैव मुखमस्तकशोधिनी ॥
गर्भपातकरी रूक्षा वातश्वासकफापहा ।
कासार्शःक्षयविषरुग्वस्तिकंठरुजं हरेत् ।
मूत्राश्मरी व्रण कण्डू नाशयेदिति कीर्तिता॥ (नि०र०)

अर्थ-गुजराती इलायची-कडवी, शीतल, रसमे चरपरी, हलकी सुगन्धी, पित्तजनक, मुख और मस्तकको शोधनेवाली है, गर्भको गिरानेवाली है, रूखी है तथा वात, श्वास, खासी, बवासीर, क्षयरोग, विषविकार, वस्तिरोग, कण्ठरोग, मूत्रकृच्छ्र, पथरी, घाव, और खुजलीका नाशकरे है ।

द्विविधा एलागुणाः ।

एलाद्वयं शीतलतिक्तमुष्णं सुगंधिपित्तार्त्तिकफापहारी ।
करोति हृद्रोगमलार्तिवस्तिपुंस्त्वघ्नमत्र स्थविरो गुणाढ्यः॥
(रा० नि०)

अर्थ-दोनो प्रकारकी इलायची-शीतल, चरपरी, गरम, सुगंधि पित्तरोगको शांतिकरे, कफका नाशकरे, हृदयरोगको उत्पन्नकरे, तथा मल, वस्तिरोग, पुंस्त्व (पुरुषता) नाशक है । इन दोनोमे बड़ी इलायची अधिक गुणवाली है ।

विवरण-छोटी इलायचीका क्षुप अदरखकी समान होताहै,फूल सफेद, और लाल इलायचीके सुगन्धकी समान होते हैं । इसके बीज काले और रसभरे होतेहैं ।

मात्रा बड़ी इलायचीकी १॥ मासे, छोटी इलायचीकी ½ मासे ।

कङ्कोलनामानि।



कङ्कोलकं कोषफलं कोलकं तैलसाधनम् ।

अर्थ-कङ्कोलक, कोषफल, कोलक, तैलसाधन, (कङ्कोल, कोषफल, फल, कोरक, काकोल गन्धव्याकुल, कृतफल, कटुकफल, द्रेप्प, स्थूलमरिच, ककोल, माधवोचित, कटुफल, काल, मरिच, कटुक, काल, मारिच, मागधोपित, कृतफल, द्वीपसम्भव और सुगन्धिफल)

हिन्दीभाषामे	शीतलचीनी-कवावचीनी,चिनीकवाव,कंकोला।
वंगभाषामे	कांकला ।
मराठीभाषामे	ककोळ, कापुरचीनी।
गुजरातीभाषामे	चणकवाव ।
कर्णाटकीभाषामे	ककोलद्वय ।
तैलङ्गीभाषामे	कवाकचीनी ।
अंग्रेजीभाषामे	क्युबेव पीपर । Cubeb Pepper
लैटिन्भाषामे	क्यूबेवा ऑफिसिनेलिस। Cubeba, Officinalis

त्वचगुडत्वचनामानि ।



भृङ्ग वरांग रामेष्ट विज्जुल त्वचमुत्कटम् ।
चोलं गुडत्वच पत्र चोच सुरभिवल्कलम् ॥

अर्थ-भृंग, वराङ्ग, रामेष्ट, विज्जुल,त्वच,उत्कट, चोल, गुडत्वच, पत्र, चोच, सुरभिवल्कल (सूतकट, त्वक्पत्र, वरांगक, त्वचा, हृद्य त्वक्, वल्कल, मुखशोधन, शकल, सिंहल, बल्य, सुरस, कामवल्लभ, बहुगन्ध, वनप्रिय, लटपर्ण, गन्धवल्कल, वर, शीत, त्वक्पत्र, सैंहल, रामवल्लभ, तनुत्वक् दारुसिता)

हिन्दीभाषामें	तज-दालचीनी ।
बंगभाषामें	दारुचिनी ।
मराठीभाषामें	दालचिनी ।
गुजरातीभाषामें	तज ।
कर्णाटकीभाषामें	तज ।
तैलिङ्गीभाषामें	सनलिंगु । डालचीनी, सनाल लीगपुता।
तामिलीभाषामें	कारुवा, करु, उपट्टाई ।
इंग्रेजीभाषामें	सिन्नामन वार्क Cinnamon Bark
लेटिन्भाषामें	सिन्नामोमी कोर्टेक्स । [छाल] सिन्नामोम । ओफि सिलिस । [वृक्ष]

Cinnamomi Cortex C officinalis Cinnomomuw Cylnmcuw

फारसीभाषामे	दार्चिनी ।
अरबीभाषामे	सालीखा ।
ब्रह्मीभाषामे	मिट्ठयावो ।
लुसाईभाषामे	थ्वाक, थ्विन ।

दारुसितागुणा ।

उक्ता दारुसिता स्वाद्वी तिक्ता चानिलपित्तहृत् ।
सुरभिः शुक्रलावण्या मुखशोषतृषापहा ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-दालचीनी स्वादिष्ठ, कडवी, वात पित्तनाशक, सुगन्धि, शुक्रजनक, शरीरको सुंदर करनेवाली तथा मुखशोष और तृषाको हरनेवाली है ।

अपि च ।

त्वचं तु कटुकं शीत कफकासविनाशनम् ।
शुक्रामशमन चैव कण्ठशुद्धिकरं लघु ॥ (राजनि०)

अर्थ-तज-चरपरी, शीतल, तथा कफ और खांसीको दूर करें, शुक्र और आमको शान्ति करे और हलकी है ।

अपिच ।

त्वच लघूष्ण कटुकं स्वादु तिक्तं च रूक्षकम् ।
पित्तल कफवातघ्न कण्डूामरुचिनाशनम् ॥
हृद्वस्तिरोगवातार्शःकृमिपीनसशुक्रहृत् । (भा०प्र०)

अर्थ-तज-हलकी, गरम, चरपरी, स्वादिष्ठ, कडवी, रूखी, पित्तवर्द्धक, कफवातनाशक, तथा कण्डू, आम, अरुचि, वस्तिरोग, हृद्रोग, वातार्श, कृमि, पीनस और शुक्रको हरे है ।

अन्यच्च ।

त्वक्कट्वी पित्तला स्वाद्वी कण्ठशुद्धिकरी लघुः ।
रूक्षा तिक्ता वस्तिशुद्धिकारिणी चोष्णदा मता ॥
कफहिक्कावातकासकण्डूहृद्रोगनाशिनी ।
आम च वस्तिरोग च पीनसं च विषं तथा ॥
शुक्र चार्श कृमीश्चैव नाशयेदिति कीर्तिता ।
तनुत्वक्सुरभिस्तिक्ता स्वाद्वी वलकरी मता ॥
धातुवृद्धिकरी वातपित्ततृण्मुखदोषनुत् ।

अर्थ-तज-चरपरी, पित्तको उत्पन्न करनेवाली, स्वादिष्ठ, कण्ठकी शुद्धि करनेवाली, हलकी, रूखी, कडवी, वस्तिशोधक, गरम तथा कफ, हुचकी, वात, खासी, खुजली, हृदयरोग, आम, वस्तिरोग, पीनस, विष, शुक्र, बवासीर और कृमिरोगका नाश करे है । दालचीनी-सुगन्धि, कडवी, स्वादिष्ठ, बलकारक, धातुवर्धक, तथा वात पित्त, तृषा और मुखरोगको दूर करे है ।

त्वचतैलगुणा ।

वह्निमान्द्यानिलहरमाध्मानाक्षेपनाशनम् ।
वान्त्युत्क्लेशप्रशमनं संग्राहि दशनार्तिहृत् ॥
त्वाच तैल रज स्रावि तोये क्षिप्तं निमज्जति।(आ०स०)

अर्थ-तजका तेल-मदाग्नि, वात, अफरा और आक्षेपका विनाशक है, तथा वान्ति और उत्क्लेशका शान्ति करे है, संग्राहीहै, दन्तरोगको दूर करे है, रक्तस्राव अर्थात् रुधिरके गिरनेसे इसको पानीमे डालकर लगाना चाहिये ।

विवरण-छोटा पेड होता है । सिंहल, मलाबार, कोचीन, चीन, सुमात्रा, बजाभा आदि देशोमे अधिकतासे होती है, इसके पत्ते तमालपत्रकी समान होते है, पत्तोको सुखानेपर उनमेसे लौंगकी समान सुगन्धि आतीहै। वृक्षकी डंडीके ऊपर सफेद फूल आता है, फूलमे गुलाबकी समान सुगन्धि आती है । फल करोदके समान होते है, इनमेसे तेल निकलता है, इसके फूलोका अर्क और इत्र बनाते है । सिंहलद्वीपकी दालचीनी बहुत उत्तम होती है। वृक्षकी पतली छालकोही दालचीनी कहते है ।

तेजपत्रनामानि ।

तेजपत्रं गन्धजातं पत्रकं पाकरञ्जनम् ।

अर्थ-तेजपत्र, गन्धजात, पत्रक, पाकरञ्जन, (पत्र, दलाह्वय, राम, गोमेद, वसनाह्वय, गोमेदक, पत्राख्य, छदन, दल, पालाश, अकुश, वास, तापस, सुकुमारक, वस्त्र, तमालक, गोपन, वसन तमाल, सुरनिर्गन्ध, तमालपत्र, इष्टगन्ध, शीतरस, सुरस और रोमश)

हिन्दी भाषामे	तेजपात ।
वङ्गभाषामे	तेजपाता । तेजपत्र ।
मराठी भाषाम	तमालपत्र । संभारपान ।
गुजराती भाषामे	तमालपत्र ।

कर्णाटकी भाषामे पत्रक ।

तैलिङ्गी भाषामे आकुपत्री ।

इंग्रेजी भाषाम फोलिया मालाबाथी । Folia Malabathy

लैटिन् भाषामे सिनामोमं टमाला । CunamodmauTamala

फारसी भाषामे सादरस् ।

अरबी भाषामे साजिज ।

अस्य गुणाः ।

पत्रमुष्णं लघुश्लेष्महल्लासार्शोनिलापहम् ।
हृद्रोग पीनस चापि त्रिदोप चैवनाशयेत् ॥ (नि०र०)

अर्थ-तेजपात-गरम, हलका तथा कफ, उबकाई, बवासीर, वात, हृदयरोग, पीनस और त्रिदोपनाशक है ॥

अपिच ।

पत्रक लघुतिक्तोष्णं कफवातविपापहम् ।
वस्तिकण्डूत्रिदोपघ्नं मुखमस्तकशोधनम् ॥ (राजनि०)

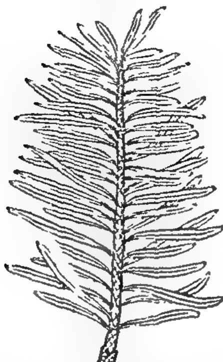
अर्थ-तेजपात-हलका, कडवा, गरम, वात, विप, वस्तिरोग, खुजली और त्रिदोपनाशक है, मुख और मस्तकशोधक है ॥

अन्यच्च ।

पत्रक मधुरं किञ्चित्तीक्ष्णोष्ण पिच्छिल लघु ।
निहंति कफवातार्शोहल्लासारुचिपीनसान् ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-तमालपत्र (तेजपात)-मधुर, कुछेक तीक्ष्ण, गरम, पिच्छिल, हलका, तथा कफ वात, बवासीर, हल्लास, अरुचि और पीनस रोगका नाशक है । तेजपत्र तजके पत्तोकी समान होतेहै, सुगन्धिके लिये मसालेमें डाले जातेहै । मात्रा तीन ३ मासेकी है ।

तालीसपत्रनामानि ।



तालीसपत्र तालीस धात्रीपत्र शुकोदरम् ।
अपरं ग्रथिकापत्र पत्राढ्य तुलसीछदम् (मदन विनोद)

अर्थ-तालीसपत्र-तालीस, धात्रीपत्र, शुकोदर, ग्रथिकापत्र, पत्राढ्य, तुलसीछद, (पत्राढ्य, अर्कवध, करिपत्र, करिच्छद, नील, नीलाम्बर, ताल, तालीपत्र, तमाह्वय, तालीसपत्रक, तामलकीदल, मुखरोगहर, हृद्य, सुपत्र, अर्कवाह, करीपत्र, आमलकीपत्र और घनच्छद)

हिन्दीभाषामे	तालीसपत्र-तालिशपत्र ।
वंगभाषामे	तालीशपत्र ।
मराठीभाषामे	लघुतालीसपत्र।
कर्णाटकीभाषामे	तालीसपत्र ।
तैलङ्गीभाषामे	तालीशपत्री ।
गुजरातीभाषामे	तालीसपत्र ।
वम्०	ताम्बठ।
द्राविडीभाषामे	पनिअल ।
लैटिनभाषामे	टेकसस् बेकेटा । Taxus bacata
फारसीभाषामे	जरनव ।
अरबीभाषामे	तालीसफर ।

तालीसपत्रगुणाः ।

तालीसं लघु तीक्ष्णोष्णं श्वासकासकफानिलान् ।
निहंत्यरुचिगुल्मामवह्निमांद्यक्षयामयान् ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-तालीसपत्र-लघु, तीक्ष्ण गरम तथा श्वास, खाँसी, कफ, वात अ रुचि, गुल्म, आम मंदाग्नि और क्षयरोगका नाश करेहै ।

अपिच ।

तालीसपत्रं तिक्तोष्णं मधुरं कफवातनुत् ।
कासहिक्काक्षयश्वासच्छर्दिदोपविनाशकृत् ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ-तालीसपत्र-कडवे, गरम, मधुर, कफवातनाशक तथा खांसी हुचकी क्षयरोग, श्वास और वमनरोगको दूर करेहै ।

अन्यच्च ।

तालीसपत्र मधुरं तिक्तं चोष्ण लघु स्मृतम् ॥
तीक्ष्ण स्वर्यं च हृद्यं च अग्निदीप्तिकर मतम् ॥
श्वास कासं कफ वात क्षयेगुल्मारुचीस्तथा ।
रक्तदोप वमि चाममग्निमांद्य च नाशयेत् ।
मुखरोग च पित्त च नाशयेदिति कीर्तितम् ॥ (नि० र०)

अर्थ-तालीसपत्र-मधुर, कडवे, गरम, हलके, तीक्ष्ण, स्वरको सँभालनेवाले, हृदयको हितकारी, अग्नि दीपन करनेवाले तथा श्वास, खांसी, कफ, वात, क्षय, गुल्म, अरुचि, रुधिरविकार, वान्ति, आमदोष, अग्निमान्द्य, मुखरोग और पित्तका नाश करे है।

विवरण-वृक्ष अत्यन्त बडा होताहै देखनेमे अधिक तरफाऊसे मिलजाता है, इसके लट्ठेके तखते चीरकर चैकी बक्तोमे लगाये जातेहैं । व्यवहारपत्र ।

जटामांसीनामानि ।

जटामांसी जटी पेपी लोमशा जटिला मिसिः ।
मासी तपस्विनी हिस्रा मिषिका चक्रवर्तिनी ॥

अर्थ-जटामांसी, जटी, पेषी, लोमशा, जटिला, मिसि, मासी, तपस्विनी, हिस्रा, मिषिका, चक्रवर्तिनी, (नलद, वह्निनी, कृष्ण-जटा, किरातिनी, भूतजटा, क्रव्यादी, पिशिता, पिशी, पेशी, पेशिनी, जटा, मासिनी, जटाला, नलदा, मेषी, तामसी, माता, अमृतजटा, जननी, जटावती, मृगभक्षा, जडामासी, मिसि, मिसी, मिसिका, मिषि)

गन्धमासीनामानि ।

द्वितीया गन्धमांसी च केशी भूतजटा स्मृता ।
पिशाची पूतनाचैव भूतकेशी च लोमशा ।
जटाला लघुमांसी च ख्याता अंकाभिधाह्वया ।

अर्थ-गन्धमासी, केशी, भूतजटा, पिशाची, पूतना, भूतकेशी, लोमशा, जटाला, लघुमासी, (पिशाचिका और श्वेतकेशी)

आकाशमासीनामानि ।



आकाशमांसी सूक्ष्मान्या निगलम्बा खसम्भवा ।
सेवाली सूक्ष्मपत्री च गौरी पर्वतवासिनी॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ-आकाशमासी, सूक्ष्मजटामासी, निरालम्बा, खसम्भवा, सेवाली सूक्ष्मपत्री, गौरी, पर्वतवासिनी ।

हिन्दीभाषामे	जटामासी, बालछड, कलुचर ।
वंगभाषामे	जटामांसी ।
मराठीभाषामे	जटामांसी ।
गुजरातीभाषामे	वालछड ।
कर्नाटकीभाषामे	बहुलगन्धजटामासी आकाशजटामासी।

तैलङ्गीभाषामे	जटामांसी ।
इंग्रेजीभाषामे	स्पाइकनार्ड Spikenard
लैटिन्भाषामे	नार्डोस्टेकिस् जटामांसी। Nordostachys
फारसीभाषामे	सुबूल् ।
अरबीभाषामे	सुबलुत्तीव ।

जटामांसीगुणा ।

मांसी तिक्ता कषाय च मेध्या कांतिबलप्रदा ।
स्वाद्वी हिमा त्रिदोषास्रदाहवीसर्पकुष्ठनुत् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-बालछड, कडवी, कषेली, मेधाजनक, कान्तिकारक, बलदायक, स्वादिष्ठ, शीतल, तथा त्रिदोष, रुधिरविकार, दाह विसर्प और कुष्ठरोगको नष्ट करे है ।

अपिच ।

सुरभिस्तु जटामांसी कषाया कटुशीतला ।
कफहृद्भूतदाहघ्नी पित्तघ्नी मोदकांतिकृत् ॥ (रा० नि०)

अर्थ-जटामांसी (बालछड)-कषेली, चरपरी, शीतल, कफनाशक, भूतदाह और पित्तका नाशक, आनन्दको उत्पन्न करे, और कांतिको बढानेवाली है ।

अन्यच्च ।

अनुलेपनज्वरहृद्रूक्षतां चैव नाशयेत् । (राजवल्लभ)

अर्थ-इसका लेप करनेसे ज्वर और रूक्षता दूर होती है ।

गन्धमांसीगुणा ।

गन्धमांसी तिक्तशीता कफकण्ठामयापहा ।
रक्तपित्तहरा वर्ण्या विषभूतज्वरपहा ॥

अर्थ-गन्धमांसी,कडवी, शीतल तथा कफ, कण्ठरोग, रक्त,पित्त, विष भूत और ज्वरको दूर करेहै तथा वर्णको उज्ज्वल करे है ॥

आकाशमांसीगुण, ।

अभ्रमांसी हिमा शोफव्रणनाडीरुजापहा ।
लूतागर्दभजालादिहारिणीवर्णकारिणी ॥ (राजनि०)

अर्थ-आकाशमांसी-शीतल तथा सूजन और नाडीरोगनाशक है, लूता, गर्दभक, जालादिनिवारक और शरीरके रंगको उज्ज्वल करेहै ।

तत्फलं मधुरं रूक्षं कषायं शीतलं गुरु ॥
विबन्धाध्मानबलकृत्सग्राही कफपित्तजित् । (भा० प्र०)

अर्थ-प्रियंगु-शीतल, कडवा, कषेला तथा वात, पित्त, रक्तातिसार, दुर्गन्ध, पसीना, दाह, ज्वर, गुल्म, तृषा और प्रमेहको दूर करेहै इसीके सदृश गन्धप्रियंगुके गुण हैं।

प्रियंगुका फल-मधुर, कषाय, भारी, शीतल तथा विबन्ध आध्मान और बलकारक है, मलरोधक तथा कफपित्तनाशक है।

अपिच ।

प्रियंगुः शीतलो वांतिदाहपित्तज्वरास्रजित् ।
मुखकांतिप्रजननो गात्रदौर्गन्ध्यनाशनः ॥ (मदनविनोद)

अर्थ-प्रियंगु-शीतल है वान्ति, दाह, पित्त ज्वर और रुधिरविकारको दूर करेहै तथा मुखकी शोभाको बढावेहै और शरीरकी दुर्गन्धको हरेहै ।

अन्यच्च ।

गन्धप्रियंगुस्तुवरस्तिक्तो वृष्यश्च शीतलः ।
केश्यो वांतिभ्रांतिदाहपित्तरक्तरुजस्तथा ॥
ज्वरमोहस्वेदकुष्ठमुखजाड्यतृषो हरेत् ।
वातं गुल्मं विषं मोहं मेदं चैव विनाशयेत् ।
रक्तपित्तं नाशयति बीजमस्य कषायम् ।
मधुरं शीतलं रूक्षं तुवरं ग्राहकं गुरु ॥
मलस्तम्भकरं बल्यं पित्तघ्नं कफनाशकनम् ।
आध्मानकारकं चैव मुनिभिः परिकीर्तितम् ॥

अथ सुगन्धयक्तु

सुगन्धफलिनी शीता सुगन्धिः कुष्ठदाहनुत् ।
ज्वररक्तविकारञ्च नाशयेदिति कीर्तिता ॥ (रा० नि०)

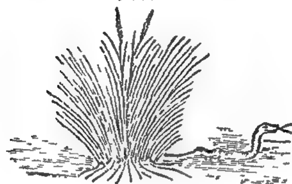
अर्थ-प्रियंगु-कषेला, कडवा, वीर्यजनक, शीतल, केशोंको उज्ज्वल करनेवाला तथा वमन, वान्ति, दाह, पित्त, रक्तरोग, ज्वर, मोह, पसीना, कोढ, मुखकी जडता, पियास, वात, गुल्म, विष, प्रमेह, मेदरोग और रक्तपित्तका नाश करेहै ।

इसके बीज-कषेले, मधुर, शीतल, रूखे, ग्राही, मलको स्तम्भन करनेवाले, बलकारक, पित्तका नाश करनेवाले, कफको दूर करनेवाले और अफारेको करनेवाले हैं ।

सुगधप्रियंगु-(दूसरे प्रकारका प्रियंगु अर्थात् फूलप्रियगु) शीतल सुगन्धित तथा कोढ, दाह, ज्वर और रुधिरके विकारोंको दूर करेहै।

उशीरनामानि ।

खस



वीरणस्य तु मूलं स्यादुशीरं नलदं च तत् ।
अमृणालं च सेव्यं च समगन्धिकमित्यपि ॥

अथ-वीरण (गाडरघासकी जडको उशीर अर्थात् खस कहतेहैं। सं० उशीर नलद, अमृणाल, सेव्य, समगन्धिक, (अभय, अवदाह, जलाशय, लामज्जक, लघुमय, अवदाह, इष्टकापथ, उशीर, मृणाल, लघुलय, अवदात, अवदाहेष्टकापत्र, इन्द्रगुप्त-उशीरक, जलवास, हरिप्रिय, वीर, वीरण, रणप्रिय, वीरतरु, शिशिर, शीतमूलक, वितानमूलक, दाहहरण, जलामोद, गन्धाढ्य, सुगन्धिक, सुगन्धिमूलक, सुगन्धिमूल, कम्बु, वीरण, कटायन, वीरतर, वीरभद्र, वीर और बहुमूलक)

हिन्दीभाषामें	खस, वारन, गाँडर ।
बंगभाषामें	व्याणारमूल, वेणारमूल, वीरणमूल-खस ।
मराठीभाषामें	कालावाला ।
गुजरातीभाषामें	कालोवालो-मोथ्यसावालाजिनांगीणमूल
कर्णाटकीभाषामें	वालेखस ।
तैलिंगीभाषामें	अवरुगट्टि, नल्ल वट्टिवेल्लु ।

[१] प्रियंगु महदी महदीको कहतेहै गंध प्रियंगु गुलमहदी कहतेहैं धान्य प्रियंगु कांगुनी धान्यको कहतेहैं, उना प्रियंगु मालकांगुनी होती, यह प्रियगु महदी

तामिलीभाषामें वेत्तेवर।
बम्० खसखस।
उत्० खणा गन्दविणा, वाधिवेरु।
लेटिनभाषामें अन्ड्रोपागन म्यूरिकटम्। Andropogon Muricatum

उशीरगुणाः।

उशीरं शीतलं तिक्तं दाहश्रमहरं परम्।
पित्तज्वरार्तिशमनं जलसौगंध्यदायकम्॥ (रा० नि०)

अर्थ-खस-शीतल, कडवी तथा दाह, परिश्रम और पित्तज्वरको शान्ति करे तथा जलको सुगन्धि करेहै॥

अपिच।

उशीरं स्वेददौर्गन्ध्यदाहपित्तास्ररोगजित्। (रा० व०)

अर्थ-खस-पसीना, दुर्गन्ध, दाह और रक्तपित्तको हरेहै।

अन्यच्च।

उशीरं स्वेदपित्तास्रदाहदौर्गन्ध्यनाशनम्।
क्लमतृष्णाविषध्वंसि सतिक्तं मधुरं हिमम्॥

अर्थ-खस-स्वेद, पित्त रक्तविकार, दाह, दुर्गन्ध, क्लम, तृष्णा और विषको दूर करे तथा कडवी, मधुर और शीतल है।

अपिच।

उशीरं पाचनं शीतं स्तम्भनं लघुतिक्तकम्।
मधुरं ज्वरहृद्वान्तिमदनुत्कफपित्तहृत्॥
तृष्णास्रविषवीसर्पदाहकृच्छ्रव्रणापहम्। (भावप्रकाश)

अर्थ-खस-पाचक, शीतल स्तम्भन, हलकी, कडवी, मीठी तथा ज्वर, वमन, मद, कफ, पित्त, तृषा रुधिरदोष, विष, वीसर्प, दाह, मूत्रकृच्छ्र और व्रणरोगका नाश करेहै।

गाडरके भी गुण इसीके समान हैं।

विवरण-यह गाडर घासकी जड है।

गोरोचनानामानि।

गोरोचना तु गोपित्तं वन्दनीया मनोरमा।

अर्थ-गोरोचना-गोपित्त, वन्दनीया, मनोरमा (वन्द्या, रोचना रुचि, शोभा, रुचिरा, शोभना, शुभा, गौरी, रोचनी, पिङ्गा, मङ्गल्या, मङ्गला, (पिङ्गला) पीता, श्रीमती, गव्या, चन्दनाया, काञ्चनी, मेध्या, श्यामा रामा, भूतनिग्राहिणी, गोपित्तसम्भवा, पिंगला, नन्दिनी, पावनी, गोरोचि)

हिन्दीभाषामे	गोरोचन, गोलोचन ।
वंगभाषामे	गोरोचना ।
मराठीभाषामे	गोरोचन ।
गुजरातीभाषामे	गोरोचन्दन, गोरोचन ।
कर्णाटकीभाषामे	गोरोचन ।
तैलिङ्गीभाषामे	गोरोचनमु ।
इंग्रेजीभाषामे	गोलस्टोन बिझोर B jour Gollstone
लैटिनभाषामे	बोस्टोरस । Bıstırou
फारसीभाषामे	गयरोहन ।
अरबीभाषामे	हजरुलवक्कर ।

गोरोचनागुणाः ।

गोरोचना हिमा तिक्ता वश्या मङ्गलकांतिदा ।
विषा लक्ष्मी ग्रहोन्मादगर्भस्रावक्षतास्रहृत् ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-गोरोचना-शीतल, कडवी, वशीकरण . मङ्गलजनक, कान्तिदायक तथा विष, अलक्ष्मी, ग्रह, उन्माद, गर्भस्राव, क्षत और रक्तदोपनाशक है ।

अपिच ।

गोरोचना च शिशिरा विषदोपहन्त्री रुच्या च पाचन-
करी कृमिकुष्ठहन्त्री । भूतग्रहोपशमनं कुरुते च पथ्या
शृङ्गारमङ्गलकरी जनमोहिनी च ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ-गोरोचन-शीतल, विषदोषनाशक, रुचिकारी, पाचक, कृमि और कुष्ठको नष्ट करनेवाला, भूतग्रहको शान्ति करनेवाला पथ्य, शृंगार और मंगलको करनेवाला तथा मनुष्योको मोह करनेवाला है ।

अपिच ।

गोरोचनं चातिशीतं रुच्यं मंगलदायकम् ।
वशीकरं कांतिकरं वृष्यं तिक्तं समीरितम् ॥
पिशाचग्रहपीडां च विषं कुष्ठं कृमीस्तथा ।
अलक्ष्म्युन्मादशमनं गर्भस्रावहरं परम् ।
क्षतरक्तविकारं च नेत्ररोगं च नाशयेत् । (निघण्टुरत्नाकर)

अर्थ-गोरोचन-अत्यन्त शीतल, रुचिकारक, मंगलदायक, वश करनेवाला, कान्तिकारक, वीर्यजनक, कडवा तथा पिशाचबाधा, ग्रहकी पीडा, विष-विकार, कोढ, कृमि, अलक्ष्मी, उन्माद, गर्भस्राव, क्षत, रक्तविकार और नेत्ररोगका नाश करहै।

गोरोचन-गायके मस्तकका पित्त होताहै, इसका रंग पीला होताहै यह अधिक व्यवहारमें आताहै, औषधिप्रयोगमें भी अधिकतासे लिया जाताहै इसका मस्तकमें तिलक लगानेसे वशीकरण होताहै। मात्रा दो रत्तीकी।

नखनामानि।

नखं व्याघ्रनखं व्याघ्रायुधं तच्चक्रकारकम्।
नखं स्वल्पं नखी प्रोक्ताहनुर्हट्टविलासिनी॥ (भावप्र०)

अर्थ-नख, व्याघ्रनख, व्याघ्रयुध, चक्रकारक, (व्याडायुध, करजकूटस्थ, नखाक, नख्य, व्याघ्रनखी, चक्रनायक, चक्री, चक्रनख, त्र्यस्त्रफल, द्वीपिनख, खपुर, व्यालपाणिज, व्यालायुध, व्यालबल, व्यालखड्ग दूसरा छोटा नख जिसको नखी कहतहै उसके पर्य्याय यह है। हनु, हट्टविलासिनी [शुक्ति, शंख, खुर, कोलदल, व्यालायुध, शखनख, नखरी, करजारय, अपचखुर, नख, व्याघ्रनख, कररुह, शिम्बी, शफ, चलकाशी, करज, हनु, नागहनु, पाणिज, बदरीवच, रूप्य, पण्यविलासिनी, गन्धनाल, पाणिरुह] यह नाम साधारण नखके हैं।

हिन्दीभाषामें	दोनों नख, नख, नखी।
बंगभाषामें	नखी, गन्धद्रव्य, छोटनखा।
मराठीभाषामें	नखला, वाघनख।
गुजरातीभाषामें	नखला सावजना नख।
कर्णाटकीभाषामें	नख, वाघनख।
तैलं०	नख, वाघनख।
इंग्रेजीभाषामें	शेल। Shell
लैटिनभाषामें	हेलिकासस्पेरा।
फारसीभाषामें	नाखुनपर्या, आहकसर।
अरबीभाषामें	अजफारुतिब, इकॉलिलुल्मुलुक।

नखपञ्चभेदा।

नखी पञ्चविधा ज्ञेया गन्धार्था गन्धवत्परैः।
क्वचिद्बदरपत्राभा तथोत्पलदला मता॥

काचिदश्वखुराकारगजकर्णसमा परा ।
वराहकर्णसंकाशा पञ्चमे परिकीर्तिता ॥ (च० चि०)

अर्थ-गन्ध अथवाली और गन्धयुक्त नखी पांच प्रकारकी होती है, कोई बेरीके पत्तोंके समान, कोई कमलके पत्तेके समान, कोई घोडेके खुरकी आकारवाली, कोई हाथीके कानके समान और पांचवीं सुअरके कानके समान होतीहै ।

अस्य शुद्धिर्यथा ।

पञ्चपल्लवतोयेन गन्धानां क्षालनं तथा ।
शोधनं चापि संस्कारो विशेषश्चात्र वक्ष्यते ॥
चण्डीगोमयतोयेन यदि वा तिन्तिडीजलैः ।
नखं संस्कारयेदेभिरलाभे मृण्मयेन तु ॥
पुनरुद्धृत्य प्रक्षाल्य भर्जयित्वा निपेचयेत् ।
गुडपथ्याम्बुना ह्येवं शुध्यते नात्र संशयः ॥ (च०)

अर्थ-पञ्चपल्लव (आमके पत्ते, जामुनके पत्ते, बेजोरेके पत्ते, कैथके पत्ते और बेलके पत्ते) के जलसे तथा गन्धोंके पुटसे इसका शोधन और संस्कारविशेष यहाँ कहते हैं भैंसके गोबरके जलसे अथवा इमलीके पानीमें नख औषधीका संस्कार करे और यदि उपरोक्त द्रव्य न मिले तो मट्टीसेही शोधे, फिर निकालकर धो कर गुड और हरडके जलसे सींचे इसप्रकार शुद्ध होजायगा, इसमें संशय नहीं है ।

द्विविधनखगुणाः ।

नखद्वयं ग्रहश्लेष्मवातास्रज्वरकुष्ठहृत् ।
लघूष्णं शुक्रलं वर्ण्यं स्वादु व्रणविषापहम् ॥
अलक्ष्मीमुखदौर्गन्ध्यहृत्पाकरसयोः कटु । (भा०प्र०)

अर्थ- दोनों प्रकारके नख-ग्रहकी पीडाको दूर करे हैं तथा कफ, वातरक्त, ज्वर कोढ, व्रण, विष, अलक्ष्मी और मुखकी दुर्गन्धताको नाश करेहै, हलके, गरम, शुक्रजनक, वर्णको उज्ज्वल करनेवाले, स्वादिष्ठ तथा पाकमें और रसमें चरपरी है ।

नखगुणाः ।

नखः स्वादूष्णकटुको विषं हन्ति प्रयोजितः ।
कुष्ठकण्डूव्रणघ्नश्च भूतविद्रावणः परः ॥

अर्थ-नख-स्वादिष्ट, गरम, चरपरा तथा कोढ, कण्डू और व्रणको दूर करे है, तथा भूतविद्रावक है ।

व्याघ्रनखगुणाः ।

व्याघ्रनखस्तु तिक्तोष्ण कषायः कफवातजित् ।
कुष्ठकण्डूव्रणघ्नश्च वर्ण्यः सौगन्ध्यदः परः ॥ (रा० नि०)

अर्थ-व्याघ्रनख-कडवा, गरम, कषैला, कफ, वातनाशक तथा कोढ, खुजली और घावको दूर करेहै शरीरके रंगको उज्ज्वल करे है और सुगन्धिदायक है ।

अपिच-द्विविधनखगुणाः ।

नख सुगन्धि चोष्ण च कटु मेध्य च शुक्रलम् ।
लघु वर्ण्यं स्वादु हृद्य कफवातविषप्रणुत् ॥
दौर्गन्ध्यस्वेदकुष्ठादिज्वरालक्ष्मीव्रणापहम् ।
मुखदौर्गन्ध्यकण्डूघ्न भूतग्रहनिवारणम् ॥
व्याघ्रस्य च नखस्तिक्तो वर्ण्यश्चोष्ण कषायकः ।
सुगन्धि· कुष्ठकण्डूतिकफवातग्रहाञ्जयेत् ॥
गुणास्त्वन्ये तु नखवन्मुनिभिः परिकीर्तिता· । (नि०र०)

अर्थ-नख-गरम,सुगन्धि चरपरा, मेधाकारक,शुक्रजनक,हलका, वर्णकारक, स्वादिष्ठ, हृदयको हितकारी तथा कफ, बादी, विष, दुर्गन्ध पसीना, कोढ, ज्वर, अलक्ष्मी,घाव,मुखकी दुर्गन्धि,खुजली, भूतबाधा, ग्रहकी पीडा, वातरक्त और पित्तका नाश करेहै । व्याघ्रनख-कडवा, वर्णको सुंदर करनेवाला, उष्ण, कषेला, सुगन्धि तथा कोढ, खुजली, कफ, वात और ग्रहकी पीडाको दूर करेहै । शेष गुण नखके समान जानने ।

विवरण-नखद्रव्य नदीके जीवोंका नख होताहै, यह सुगंधि पदार्थ है धूपमें और सुगन्धि तैलादिकके बनानेमें पडता है । घोडे हाथियोंके नख अनेक औषधियोंके प्रयोगमें लिये जातेहैं ऐसा चरकाचार्यने लिखा है ।

वालकनामानि ।

वालक वारिद वाल ह्रीवेरं केशनामकम् ।
कचामोदवर पिङ्ग कुन्तलो वारिनामकम् ॥

अर्थ-वालक, वारिद, वाल, ह्रीबेर, केशनामक, कचामोद, वर्हिष्ठ, कुन्तल, वारिनामक, (बर्हिष्ठ, उदीच्य, केशनामा. अम्बुनामक, ह्रीबेर, वर्हिष्ठ, केश, केश्य, वज्र. ललनाप्रिय, कुन्तलोशीर, ह्रीवेरक, वारि, तोय, जल) और जितने नाम पानीके तथा केशोंके हैं सो सब इसके भी जानने।

हिन्दीभाषामें	सुगन्धवाला।
बंगभाषामें	वाल्य. गन्धवाला।
मराठीभाषामें	वाळा।
गुजरातीभाषामें	वालो।
कर्णाटकीभाषामें	वालदबरु, खसनुष्टिवाल।
तैलिङ्गीभाषामें	वाट्टिवेळु।
द्राविणीभाषामें	करवाल।
बम्०	वाला।
लैटिन्भाषामें	एन्ड्रोपेगन। Andropagon
	म्यूरिकेटस्। Muricatus
फार्सीभाषामें	असारुं।

वालकगुणाः।

वालकं शीतलं रूक्षं लघु दीपनपाचनम्।
हृल्लासारुचिवीसर्पहृद्रोगामातिसारजित्॥ (भा० प्र०)

अर्थ-सुगन्धवाला-शीतल, रूखा, हलका, दीपन और पाचक है तथा हृल्लास (उबकाई) अरुचि, वीसर्प, हृदयरोग और आमातिसारको दूर करे है।

अपि च।

वालकः शीतलस्तिक्तः केश्यः पाचनकृन्मधुः।
दीपनो लघुरूक्षश्च कफपित्तवमीहरः॥
तृषाकुष्ठातिसारघ्नो ज्वरश्वासारुचीहरः।
व्रणवीसर्पहृद्रोगलालास्रावहरो मतः॥
रक्तदोषं रक्तपित्तं कण्डूदाहं च नाशयेत्॥ (नि०रत्ना०)

अर्थ-सुगन्धवाला-शीतल कडवा, केशोंका सुन्दर करनेवाला, पाचक, मधुर, दीपन, हलका, रूखा तथा कफ, पित्त, वान्ति, तृषा, कोढ,

कफपित्तज्वरकृमिवाय्वतीसारनाशिनी ।
रक्तरुग्व्रणदाहघ्नी कण्डूामशूलघर्महा॥ (निघण्टुरत्नाकर)

अर्थ-मोथा-चरपरा, मेध्य, कान्तिदायक, शीतल, सुगन्धि, कषला तथा रुधिरविकार, कफ, पित्तज्वर, कृमि, वात, अतिसार, रक्तरोग, व्रण, दाह, कण्डू, आम, शूल और पसीनेको दूर करे है।

नागरमुस्तकगुणा ।

तिक्ता नागरमुस्ता कटु· कषाया च शीतला कफनुत् ॥
पित्तज्वरातिसारा रुचितृष्णादाहनाशिनी श्रमहृत ॥
(राजनिघण्टु)

अर्थ-नागरमोथा-चरपरा, कषला, शीतल, कफनाशक तथा पित्त, ज्वर, अतिसार, अरुचि, तृषा, दाह और श्रमका नाश करे है ।

अपिच भद्रमुस्तागुणा ।

भद्रमुस्ता तु तुवरा शीता तिक्ता च पाचका ।
कट्वग्निदीपनी ग्राही चाम्लपित्तकफापहा
अतिसार रक्तदोष ज्वर चैव विनाशयेत् ।
अरुचि च तृषां चैव कृमीनपि विनाशयेत्॥ (नि० र०)

अर्थ-भद्रमोथा-कषला, शीतल, कडवा, पाचक, चरपरा, अग्नि दीपक, ग्राही, अम्ल तथा पित्त, कफ, अतिसार, रुधिरदोष, ज्वर, अरुचि, पियास और कृमिरोगका नाश करे है ।

मोथेकी अनेक जाति है, नागरमोथा वर्षातमे सामान्य खेतोंमे उत्पन्न होताहै पञ्जाबमे डीला नामसे प्रसिद्ध है । और भद्रमोथा सजल भूमिमे होताहै कोई पानामहोताहै, कोई मोटीडण्डीवाला और कोई छोटी डण्डाका होता है । किन्तु सर्वप्रकारके मोथोमे नागरमोथा उत्तम होताहै ।

व्यवहार-जड । मात्रा साढेतीन ३॥ मासेकी ।

कैवर्तमुस्तकनामानि ।

कैवर्ती मुस्तक वन्य कुटं नट कुटन्नटम् ।
सित पुष्पदासपूर वालेय परिपेलवम् ॥

अर्थ-कैवर्तीमुस्तक, वन्य, कुट, नट, कुटन्नट, सितपुष्प, दासपूर, वालेय, परिपेलव, (कैवर्तमस्त, दशपूर, प्लव, गोपुर, गोनर्द, कैवर्त्ती, दाशपूर, दशपुर, पारपल, पारिपेल, कैवर्त्तिमुस्तक, कैवर्त्तमुस्तक, वनसम्भव, धान्य, शीतपुष्प, जीर्णबुध्नक)

अस्य गुणाः।

वितुन्नकं हिमं तिक्तं कषायं कटु कांतिदम्।
कफपित्तास्रवीसर्पकुष्ठकण्डूविषप्रणुत् ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-केवटीमोथा-शीतल, कडुवा, कषेला, चरपरा, कान्तिदायक तथा कफ, रक्त, पित्त, वीसर्प, कोढ, खुजली और विषविकारको दूर करेहै।

अपि च।

परिपेलं कटूष्णं च कफमारुतनाशनम्।
व्रणदाहामशूलघ्नं रक्तदोषहरं परम् ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ-केवटीमोथा-चरपरा, गरम कफवातनाशक तथा व्रण, दाह, आम, शूल और रक्तविकारको हरेहै।

विवरण-इसकी तृणजाति है, इसकी जडमें सुगन्धि आतीहै, संस्कृतमें इसको कवर्त्तीमुस्तक कहते है, हिन्दीमे केवटीमोथा, बंगलेमे केउटमुथा, केशुरीआमुथा, मराठीमे कवडीमोथा, गुजरातीमे कवर्त्तमोथा कहतेहै।

व्यवहार-जड। मात्रा एक मासेकी।

शैलेयनामानि।

शैलाख्यं शैलेयं वृद्धं सुभगं गिरिपुष्पकम्।

अर्थ-शैलाख्य, शैलेय, वृद्ध, सुभग, गिरिपुष्पक (शीतशिव, शिलासन शैलज, शीतल, शैल, कालानुसार्य, शिलेय, शैलक, कालानुसारिवा, अश्मपुष्प, गृह, शिलाभव, शिलापुष्प, शिलोद्भव, स्थविर, पलित, जीर्ण, कालानुसार्यक, शिलोत्थ, शिलादद्रु, शिलाप्रसून, शिलापुष्प)

हिन्दीभाषामें	भूरिछरीला, पत्थरका फूल।
बङ्गभाषामें	शैलज।
मराठीभाषामें	दगडफूल।
गुजरातीभाषामें	पत्थरफूल।
कर्णाटकीभाषामें	कल्हू, कलटू।
तैलङ्गीभाषामें	शैलेयमन द्रव्यमु।
लाटिन्भाषामें	पारमेलिया परलटा। परमेलिया परफोरेटा P. melia perlata P. Perforata
फारसीभाषामें	दहाल।
अरबीभाषामें	आशीना।

अस्य गुणाः ।

शैलेयं शीतलं हृद्यं कफपित्तहरं लघु ।
कण्डूकुष्ठाश्मरीदाहविषहृद्गुदरक्तहृत् ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-छरीला-शीतल, हृदयको हितकारी, कफपित्तनाशक, हलका तथा कण्डू (खुजली), कुष्ठ, पथरी, दाह, विष और गुदासे रक्त, गिरनेको दूर करे है ।

अपिच ।

शैलेयं शिशिरं तिक्तं सुगन्धि कफपित्तजित् ।
दाहतृष्णावमिश्वासव्रणदोषविनाशनम् । (रा० नि०)

अर्थ-छरीला-शीतल, कडवा, सुगन्धि तथा कफ, पित्त, तृषा, वमन, श्वास और व्रणदोषनाशक है ।

अन्यच्च ।

शैलेयं कटुकं शीतं सुगंधि लघु हृद्यकम् ।
रुच्यं च कफपित्तघ्नं दाहतृष्णावमिप्रणुत् ॥
श्वासं व्रणं च कण्डूं च कुष्ठाश्मरीविषज्वरान् ।
रक्तदोषं वातरोगं रक्तार्शं चैव नाशयेत् ॥ (निघण्टुरत्नाकर)

अर्थ-भूरिछरीला-चरपरा, शीतल, सुगन्धि, हलका, हृदयको हितकारी, रुचिकारी तथा कफ, दाह, तृषा, वमन, श्वास, घाव, खुजली, कोढ, पथरी, विष, ज्वर, रुधिरविकार, वातरोग, और रक्तबवासीरका नाश करे है ।

मात्रा छे मासे को ।

रेणुका कपिला कौन्ती हरेणुर्भस्मगन्धिका ।
कृतान्ता राजपुत्री च नन्दिनी खरनादिनी ॥

अर्थ-रेणुका, कपिला, कौन्ती, हरेणु, भस्मगन्धिका, कृतान्ता, राजपुत्री, नन्दिनी, खरनादिनी, (द्विजा, अमोघा, वरत्करी, वरमुखी, वरा, कान्ता, महिला, हिमा, रेणु, हरेणुका, सुपर्णिका, पाण्डुपुत्री, शिशिरा, शान्ता, वृत्ता, हेमगन्धिनी, धर्मिणी, कपिलोमा, हैमवती, पाण्डुपत्नी)

हिन्दीभाषामें	संभालूके बीज, रेणुका ।
बंगभाषामें	रेणुक ।
मराठीभाषामें	रेणुकबीज ।

गुजरातीभाषामे	हरेणु ।
कर्णाटकीभाषामे	रेणुका ।
तामिलीभाषामे	येटी ।
लैटिन्‌भाषामे	वाइटैक्स स्पीशिओसा। Vitex Speciosa

अस्य गुणा ।

रेणुका कटुका पाके तिक्ताऽनुष्णा कटुर्लघुः ।
पित्तला दीपनी मेध्या पाचनी गर्भपातिनी ॥
बलासवातवैक्लव्यतृट्कण्डूविषदाहनुत् । (भा० प्र०)

अर्थ-रेणुका पचनेमे चरपरी, कडवी, किञ्चित् उष्ण, चरपरी, हलकी, पित्तवर्धक, अग्निप्रदीपक, मेधाजनक, पाचक, गर्भको गिरा, नेवाली तथा कफ, वात, विकलता तथा कण्डू, विष और दाहका नाश करे है ।

अपिच ।

रेणुका तु कटुः शीता खर्जूकण्डूतिहारिणी ।
तृष्णा दाहविषघ्नी च मुखवैमल्यकारिणी ॥(रा० नि०)

अर्थ-रेणुका-चरपरी, शीतल तथा खर्जू, कण्डू, तृषा, दाह और विषनाशक है और मुखको विमल करेहै ।

अन्यच्च ।

रेणुका कटुका शीता मुखवैमल्यकारका ।
तिक्ताच पित्तला लघ्वी चाग्निमेधाकरी मता ॥
पाचनी गर्भपातस्य कारिणी दद्रुकण्डुहा ।
तृष्णा दाहविषक्लैव्यकफवातविनाशिनी ॥ (नि० रा०)

अर्थ-रेणुका-चरपरी, शीतले,मुखको स्वच्छ करनेवाली, कडवी, हलकी, पित्तजनक तथा अग्नि और मेधा इनको उत्पन्न करनेवाली, पाचक, गर्भको पतन करनेवाली तथा दाद, खुजली, तृषा, दाह, विष, नपुसकता, कफ और वातका विनाश करनेवाली है ।

अन्यच्च ।

रेणुका कफवातघ्नी दीपनी पित्तला लघुः । (रा० व०)

अर्थ-रेणुका-कफ वातनाशक, अग्निप्रदीपक, पित्तकारक और हलकी है। रेणुकाको कोई वैद्य निगुण्डी अर्थात् सभालूके बीज कहते है, और कोई मेहदीके बीज कहते है । सो मेहदीके बीजोंसे रेणुकामें बहुत अतर है ।

अस्य गुणाः ।

शैलेयं शीतलं हृद्यं कफपित्तहरं लघु ।

कण्डूकुष्ठाश्मरीदाहविषहृद्धृदग्रक्तहृत् ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-छरीला-शीतल, हृदयको हितकारी, कफपित्तनाशक, हलका तथा कण्डू (खुजली), कुष्ठ, पथरी, दाह, विष और गुदासे रक्त गिरनेको दूर करे है ।

अपिच ।

शैलेयं शिशिरं तिक्तं सुगन्धि कफपित्तजित् ।

दाहतृष्णावमिश्वासव्रणदोषविनाशनम् । (रा० नि०)

अर्थ-छरीला-शीतल, कडवा, सुगन्धि तथा कफ, पित्त, तृषा, वमन, श्वास और व्रणदोषनाशक है ।

अन्यच्च ।

शैलेयं कटुकं शीतं सुगंधि लघु हृद्यकम् ।

रुच्यं च कफपित्तघ्नं दाहतृष्णावमिप्रणुत् ॥

श्वासं व्रणं च कण्डूं च कुष्ठाश्मरीविषज्वरान् ।

रक्तदोषं वातरोगं रक्तार्शं चैव नाशयेत् ॥ (निघण्टुरत्नाकर)

अर्थ-भूरिछरीला-चरपरा, शीतल, सुगन्धि, हलका, हृदयको हितकारी, रुचिकारी तथा कफ, दाह, तृषा, वमन, श्वास, घाव, खुजली, कोढ, पथरी, विष, ज्वर, रुधिरविकार, वातरोग, और रक्त बवासीरका नाश करे है ।

मात्रा छै मासे की ।

रेणुका कपिला कौन्ती हरेणुर्भस्मगन्धिका ।

कृतान्ता राजपुत्री च नन्दिनी खरनादिनी ॥

अर्थ-रेणुका, कपिला, कौन्ती, हरेणु, भस्मगन्धिका, कृतान्ता, राजपुत्री, नन्दिनी, खरनादिनी, (द्विजा, अमोघा, वरत्करी, वरमुखी, वरा, कान्ता, महिला, हिमा, रेणु, हरेणुका, सुपर्णिका, पाण्डुपुत्री, शिशिरा, शान्ता, वृत्ता, हेमगन्धिनी, धर्मिणी, कपिलोमा, हैमवती, पाण्डुपत्नी)

हिन्दीभाषामें	संभालूक बीज, रेणुका ।
बंगभाषामें	रेणुक ।
मराठीभाषामें	रेणुकबीज ।

गुजरातीभाषामें हरेणु ।
कर्णाटकीभाषामें रेणुका ।
तामिलीभाषामें येटी ।
लेटिन्भाषामें वाइटेक्स स्पीशिओसा। Vitex Speciosa

अस्य गुणाः ।

रेणुका कटुका पाके तिक्ताऽनुष्णा कटुर्लघुः ।
पित्तला दीपनी मेध्या पाचनी गर्भपातिनी ॥
बलासवातवैक्लव्यतृट्कण्डूविषदाहनुत् । (भा॰ प्र॰)

अर्थ-रेणुका पचनेमें चरपरी, कडवी, किञ्चित उष्ण, चरपरी, हलकी, पित्तवर्धक, अग्निप्रदीपक, मेधाजनक, पाचक, गर्भको गिरा, नेवाली तथा कफ, वात, विकलता तथा कण्डू, विष और दाहका नाश करे है ।

अपिच ।

रेणुका तु कटुः शीता खर्जूकण्डूतिहारिणी ।
तृष्णा दाहविषघ्नी च मुखवैमल्यकारिणी ॥(रा॰ नि॰)

अर्थ-रेणुका-चरपरी, शीतल तथा खर्जू, कण्डू, तृषा, दाह और विषनाशक है और मुखको विमल करेहै ।

अन्यच्च ।

रेणुका कटुका शीता मुखवैमल्यकारका ।
तिक्ताच पित्तला लघ्वी चाग्निमेधाकरी मता ॥
पाचनी गर्भपातस्य कारिणी दद्रुकण्डुहा ।
तृष्णा दाहविषक्लैब्यकफवातविनाशिनी ॥ (नि॰ रा॰)

अर्थ-रेणुका-चरपरी, शीतल, मुखको स्वच्छ करनेवाली, कडवी, हलकी, पित्तजनक तथा अग्नि और मेधा इनको उत्पन्न करनेवाली, पाचक, गर्भको पतन करनेवाली तथा दाद, खुजली, तृषा, दाह, विष, नपुंसकता, कफ और वातका विनाश करनेवाली है ।

अन्यच्च ।

रेणुका कफवातघ्नी दीपनी पित्तला लघुः । (रा॰ व॰)

अर्थ-रेणुका-कफ वातनाशक, अग्निप्रदीपक, पित्तकारक और हलकी है। रेणुकाको कोई वैद्य निगुण्डी अर्थात् सभालुके बीज कहते हैं, और कोई मेंहदीके बीज कहते है । सो मेंहदीके बीजोंसे रेणुकामें बहुत अंतर है ।

ग्रन्थिपर्णनामानि ।

ग्रन्थिपर्णं बाहंपुष्पं स्थौणेयं ग्रन्थिपर्णकम् ।

अर्थ-ग्रन्थिपर्ण, बर्हिपुष्प, स्थौणेय, ग्रन्थिपर्णक (शुक, कुकुर, बर्हिपुष्प, बर्ह, शुकबर्ह, विशीर्णाख्य, स्वारामगुच्छक, बर्हि, शुकपुच्छ, शुकच्छद, गुत्थक, बर्हिकुसुम, ग्रन्थिक, काकपुष्प, गुच्छक, नीलपुष्प, सुगन्ध, तैलपर्णक)

ग्रन्थिपर्णलक्षणम् ।

ग्रथिकः पाण्डुरः किञ्चित्कनिष्ठः सर्वसम्मतः ।
उत्तमः कृष्णवर्णोऽयं स्थलोऽतीव च निन्दितः॥ (इ० मि०)

अर्थ-कुछ पाण्डुरंगका गठिवन कनिष्ठ होता है, काले रंगका उत्तम होता है और स्थूल अत्यन्त निन्दित है।

ग्रन्थिपर्णगुणाः ।

ग्रंथिपर्णं तिक्ततीक्ष्णं कटूष्णं दीपनं लघु ।
कफवातविषश्वासकण्डूदौर्गन्ध्यनाशनम् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ गठिवन-कडवा, तीक्ष्ण, चरपरा, गरम, अग्निको दीपन करनेवाला, हलका तथा कफ, वात, विष, श्वास, कण्डु और दुर्गन्धका नाश करेहै। यह सुगन्धिपदार्थ है, यह शरीरपर लेप करनेसे रूक्षता उत्पन्न करे है, तथा अलक्ष्मी, ज्वर और राक्षसबाधाका हरे है इसको हिन्दीभाषामें गठिवन कहते हैं, वंगभाषामें गेटेला, मराठीभाषामें गठोना और कर्णाटकीभाषामें गाठिवन कहते हैं।

स्थौणेयकनामानि ।

स्थौणेयं विकीर्णसंज्ञं हरितं शुकपुच्छकम् ।

अर्थ-स्थौणेय, विकीर्णसंज्ञ हरित शुकपुच्छक, (स्थौणेयक, बर्हिशिख, शुकच्छद, मयूरचूड, विकीर्णरोम, कौरवर्णक, बर्हिचूड, शुकपिच्छ, शुकबर्ह, विकच, शीर्णरोमक, बर्हिपर्ण, कुक्कुर, शीर्णरोम)

स्थौणेयकगुणाः ।

स्थौणेयं कफपित्तघ्नं सुगन्धि कटु तिक्तकम् ।
पित्तप्रकोपशमनं बलपुष्टिविवर्द्धनम् ॥ (रा० नि०)

अर्थ-थुनेर-कफपित्तनाशक, सुगन्धि, चरपरा, कडवा, पित्तके कोपको शान्त करनेवाला तथा बल और पुष्टिवर्द्धक है।

अपिच।

स्थौणेयकं कटु स्वादु तिक्तं स्निग्धं त्रिदोषनुत्।
मेधाशुक्रकरं रुच्यं रक्षोघ्नं ज्वरजन्तुजित्॥
हंतिकुष्ठास्रतृड्दाहदौर्गन्ध्यतिलकालकान्। (भा० प्र०)

अर्थ–थुनेर–चरपरा, स्वादिष्ठ, कडवा, स्निग्ध, त्रिदोषनाशक, मेधाजनक, शुक्रकारक, रुचिकारी तथा राक्षसबाधा, ज्वर, कृमि, कोढ, रुधिरविकार, पियास, दाह, दुर्गन्ध और शरीरके तिलोको दूर करनेवाला है।

इसके अधिक गुण देखनेकी अभिलाषा हो तो भारतभैषज्यभास्करमे देखो। यह सुगन्धि द्रव्य है, इसको हिन्दीभाषामे थुनेर कहते है, वंगभाषामे ग्रन्थिपर्णभेद कहते हैं, मराठीभाषामे थुणोर, कर्णाटकी भाषामे स्थौज और लैटिन्भाषामे क्लेरोडेन्ड्रूम् कहते है।

चोरकनामानि।

तस्करश्चोरकश्चण्डा कितवः क्रोधमूर्च्छितः।

अर्थ–तस्कर, चोरक, चण्डा, कितव, क्रोधमूर्च्छित (दुष्कुलीन, विरोध, कोरक, धनहरी, क्षेम, राक्षसी, गणहासक, शङ्कित, खड्ग, दुष्पत्र, क्षेमक, रिपु, चपल, धूर्त, पटु, नीच, निशाचर, गणहास, कोपनक, चोर, फलचोरक, दुष्कुल, ग्रंथिक, सुगन्धि, पर्णचोरक, ग्रन्थिपर्ण, ग्रन्थिदल, ग्रन्थिपत्र, धनहर)

अस्य गुणाः।

चोरकस्तीव्रगन्धोष्णस्तिक्तो वातकफावहः।
नासामुखरुजाजीर्णकृमिदोषविनाशनः॥

अर्थ–चोरक–सुगन्धद्रव्य, तीव्रगन्ध, कडवा तथा वात, कफ, नासारोग, मुखरोग, अजीर्ण और कृमिदोषनाशक है।

अपि च।

चोरको मधुरस्तिक्तः कटुः पाके कटुर्लघुः।
तीक्ष्णो हृद्यो हिमो हंति कुष्ठकण्डूकफानिलान्॥
रक्षोश्रीस्वेदमदोऽस्रज्वरगन्धविषव्रणान्। (भा० प्र०)

अर्थ–चोरक, मधुर, तिक्तरसयुक्त, पचनेमे चरपरा, हलका, तीक्ष्ण, हृदयको, हितकारी, शीतल, तथा कोढ, खुजली, कफ, वात, राक्षस, अलक्ष्मी, पसीना, रुधिरविकार, मेदरोग, ज्वर, गन्ध, विष और व्रणका नाश करे है।

अन्यच्च

चोरकस्तीव्रगन्धोष्णो मधुरस्तिक्तो लघुः स्मृतः ।
पाके कटुश्च तीक्ष्णश्च हृद्यो वातविकारहा ॥
कण्डूकुष्ठकफस्वेदत्वग्दोषविषनाशनः ।
व्रण मेदं रक्तदोषं मुखनासारुज जयेत् ॥
कृमीनजीर्णं दौर्गन्ध्यमलक्ष्मीनाशनं विदुः ।
क्रव्यादबाधांशमयेदिति वैद्यैर्निरूपितः ॥ (नि० र०)

अर्थ-चोरक-तीव्रगन्ध, उष्ण, मधुर, तिक्त, लघु, पाकके समय चरपरा, तीक्ष्ण, हृदयको हितकारी तथा वात, कण्डू, कोढ, कफ, मेद त्वचाके विकार, विष, घाव, रुधिरविकार, मुखरोग, नासारोग कृमि, अजीर्ण, दुर्गन्ध, अलक्ष्मी और राक्षसबाधाको दूर करे है ।
यह सुगन्धित द्रव्य गठिवनहीका भेद है । इसको नैपाल देशमे भेटडर और पार्वती देशादिकोमे चोरा कहतेह । मात्रा २ मासेकी ।

कुष्ठनामानि

कुष्ठं व्याधिः पारिभाव्य व्याप्यं पाकलमुत्पलम् ।

अर्थ-कुष्ठ,-व्याधि, पारिभाव्य, व्याप्य, पाकल,उत्पल (कदाख्य, दुष्ट, व्याप्य, गदाख्य, आप्य, जरण, कौबेर, भासुर, गदाह्व,गदाह्वय, कुठिक, काकल, नीरुज, आमय, रुजा,गद, वाणीराज,पारिभद्रक,राम,कुत्सित,पावन,पद्मक,रोग,रोगाह्वय,किंजल्क,हरिभद्रक)

हिन्दी भाषामे	कूठ
बंग भाषामे	कुड
मराठी भाषामे	कोष्ठ
गुजराती भाषामे	कुठ, उपलेट ।
कर्णाटकी भाषामे	कोष्ठ ।
तैलङ्गी भाषामे	चगल कुष्ठ । चेगलिकोष्ठ ।
इंग्रेजी भाषामे	कोस्टसरूट Costusroot
लैटिन् भाषामे	सौसुरीआलेप्पा Sausurealappa ओकलेंडियाकोस्टस्
फारसी भाषामे	कोश्तह ।
अरबी भाषामे	कुस्तबेहेरी

कुष्ठं कटूष्णतिक्तं स्यात्कफमारुतकुष्ठजित् ।
विसर्पविषकण्डूतिखर्जूदद्रुघ्नकान्तिकृत् ॥ (रा० नि०)

अन्य गुणाः ।

अर्थ-कूठ-चरपरा, गरम, कडवा तथा कफ, वात, कोढ विसर्प, विष, खुजली, खर्ज और दादोंको दूर करे है और कान्ति करे है ।

अपिच ।

कुष्ठ श्वासं कासकुष्ठं ज्वरं हिक्कां च नाशयेत् ।

अर्थ-कूठ गरम, चरपरा, स्वादिष्ठ, शुक्रजनक, कडवा, हलका तथा वातरक्त, वीसर्प, खासी कोढ और वात, कफका नाश करे है ।

अपिच।

कोष्ठमुष्णं कटुस्तिक्तं स्वादु वृष्यं च शुक्रलम् ।
रसायनं कान्तिकरं लघुवातकफापहम् ॥
कुष्ठं विषं विसर्पञ्च कण्डू दद्रू त्रिदोषकम् ।
पामारक्तविकारं च कासं वान्ति तृषां तथा ॥
नाशयेदिति च प्रोक्तंलेपनाद्वातव्याधिजित् ।(नि०रा०)

अर्थ-कूठ-उष्ण, कटु तिक्त, स्वादु, वृष्य, शुक्रजनक, रसायन, कान्तिजनक, लघु, वातकफनाशक तथा कुष्ठ, विसर्प, कण्डू, दद्रु, त्रिदोष, पामा, रुधिरदोष खाँसी और वान्तिको दूर करेहै, इसका लेप करनेसे वातव्याधि दूर होतीहै, यह वृक्षकी सुगन्धियुक्त जड है, इसकी उत्पत्ति सिन्धु नदीके तीरपै है मात्रा ६ रत्तीकी ।

कर्चूरनामानि।

कर्चूरो वेधमुख्यश्च द्राविडः कल्पकः शठी ।

अर्थ-कर्चूर-वेध्य, मुख्य, द्राविड, कल्पक, शठी, (कार्श्य, दुर्लभ, गन्धमूलक, गन्धसार, जटाल)

हिन्दीभाषामें	कचूर, काली हलदी ।
बंग भाषामें	एकाङ्गी ।
मराठी भाषामें	कचोरा । नरकचोरा । काचरी ।
गुजराती भाषामें	कचूरी ।
कर्णाटकी भाषामें	कचोरा ।
तैलिङ्गी भाषामें	काचोरालु । ओकातो कचेट्टा ।
इंग्रेजीभाषामें	लॉग झेडोआरो Longzedoaro

लैटिन् भाषामें — कर्क्यूमाझरंबेट् Curcumazerumbat
फारसी भाषामें — जरबाद।
अरबी भाषामें — ग्रतुलकाफुर।

कचूरगुणाः।

कर्चूरो दीपनो रुच्यः कटुकस्तिक्त एव च।
सुगन्धिः कटुपाकः स्यात्कुष्ठार्शोव्रणकासनुत् ॥
उष्णो लघुर्हरेच्छ्वासं गुल्मवातकफक्रिमीन्। (भा०प्र०)

अर्थ-कचूर-अग्निको दीपन करनेवाला, रुचिको उत्पन्न करनेवाला, चरपरा, कडवा, सुगन्धि, कटुपाकी तथा कोढ, बवासीर, घाव और खासीको दूर करेहै। गरम, हलका और श्वास, गुल्म, वात कफ तथा कृमिरोगका नाश करेहै।

अपिच।

कर्चूरः कटुतिक्तोष्णः कफकासविनाशनः।
मुखवैशद्यजननो गलगण्डादिदोषनुत्॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ-कचूर-चरपरा, कडवा गरम मुखको स्वच्छ करनेवाला तथा, कफ, खासी और गलगण्डादि रोगोंको नाश करे है।

अन्यच्च।

शठी तिक्ता च कटुका चोष्णा तीक्ष्णाग्निदीपनी।
सुगन्धिरुचिरा लघ्वी मुखस्वच्छकरी मता ॥
कोपनी रक्तपित्तस्य गलगण्डादिरोगहा।
कुष्ठार्शोव्रणकासघ्नी श्वासगुल्मकफापहा ॥
त्रिदोषक्रिमिवातानांज्वरप्लीहादिनाशकृत्। (नि०र०)

अर्थ-कचूर-कडवा, चरपरा, गरम, तीक्ष्ण, अग्निमे प्रदीपक, सुगन्धि रुचिकारक हलका, मुखको स्वच्छ करनेवाला, रक्तपित्तको कुपित करनेवाला तथा गलगण्ड, मण्डलादिकोढ, बवासीर, घाव, खासी, श्वास, गोला, कफ, त्रिदोष, कृमि, वात ज्वर और प्लीहा इत्यादि रोगोंका नाश करनेवाला है।

अपिच।

"कर्चूरो मरुदामघ्नो दीपनो रक्तपित्तकृत्।
अजीर्णजरणश्वासेष्वपस्मारेपि पूजितः ॥"

अर्थ-कचूर-वात तथा आमनाशक है, दीपन है, रक्तपित्त, रागका उत्पन्न करनेवाला है, अजीर्ण रोगको दूर करनेवाला है तथा मृगीरोगमें और श्वास रोगमेंभी इसको प्रयोगमें लेतेहैं।

विवरण-कचूरका क्षुप होताहै, पत्ते हलदीके समान होते हैं, इसके तले आंबिया हलदीके समान गांठ होतीहै हलदीके खेतोंमें कचूर स्वयं उत्पन्न होताहै कचूर सफेद होताहै हलदी पीली होती है उस गांठको सुखालेतेहैं, और उसी गांठको कचूर कहतेहैं, मात्रा ४ मासेकी।

गन्धपलाशीनामानि।

शठी पलाशीषड्ग्रन्था सुव्रता गंधमूलिका।
गन्धारिका गन्धवधूर्वधूः पृथुपलाशिका॥ (भा० प्र०)

अर्थ-शठी, पलाशी, षड्ग्रंथा, सुव्रता, गन्धमूलिका गन्धारिका, गन्धवधू, वधू, पृथुपलाशिका, (गन्धमूली, ग्रंथिका, कर्पूर, पलाशसटी, शठी, षटी, गन्धशटी, कर्चुर, कर्चुर, सुगन्धासटी, गन्धमूला, गन्धोलि, गन्धमूलक, सुगन्धा, गन्धसटी, गन्धमूल, गन्धपलाशी, जीमूतमूल, कच्छोरा, हिमजा, हेमी, षड्ग्रन्थि, गन्धोलि, पलाशा, हिमाग्रन्था, अम्लनिशा, सुगन्धमूला, गन्धोरी, शठिका, पलाशिका, ससुब्रा, तूणी, दूर्वा, गन्धा, पृथुपलाशिका, सठी, अम्लहरिद्र, सौम्या, हिमोद्भवा, गन्धवधू)

हिन्दीभाषामें	गन्धपलाशी, कचूरभेद, कपूरकचरी।
वङ्गभाषामें	शटी, आम, आदा, गन्धशठी।
मराठीभाषामें	कापूरकचरी।
गुजरातीभाषामें	कपूरकाचरी।
कर्णाटकीभाषामें	गन्धशटी।
तैलङ्गभाषामें	किचलिरागड्डल।
लैटिनभाषामें	हिडिक्यम् स्पिकेटम्। Hedychum Specatum-
अरबीभाषामें	जरंवाद।
बम्०	आबेहलद।

अस्य गुणाः।

भवेद्गन्धपलाशी तु कषाया ग्राहिणी लघुः।
तिक्ता तीक्ष्णा च कटुकानुष्णास्यमलनाशिनी॥
शोथकासव्रणश्वासशूलहिध्मग्रहापहा। (भा० ०)

अर्थगन्धपलाशी-कषेली, ग्राही, हलकी, कडवी, तीक्ष्ण, चरपरी, किञ्चित् उष्णा, मुखके मलका नाश करनेवाली तथा सूजन, खांसी, घाव, श्वास, शूल, हिध्म और ग्रहनाशक है।

अपिच ।

ससुगन्धः कर्चुरकस्तीक्ष्णो दाही कटुःस्मृतः ।
तिक्तश्च तुवरश्चैव शीतवीर्यो लघुः स्मृतः ॥
किञ्चित्पित्त कोपयति कासश्वासज्वरापहः ।
शूलहिक्कागुल्मरक्तरुजं वातं त्रिदोषकम् ॥
मुखवैरस्यदौर्गन्ध्यव्रणामच्छर्दिहिध्महा । (नि० र०)

अर्थ-कपूरकचरी-(छोटाकचूर), तीक्ष्ण, दाहजनक, चरपरी, कडवी, कपेली, शीतवीर्य्य, हलकी, किंचित् पित्तकारक तथा खासी, श्वास, ज्वर, शूल, हुचकी, गोला, रुधिररोग, बादि, त्रिदोष, मुखकी विरसता, दुर्गन्ध, घाव, आम, वमन और हिध्मरोगको नष्ट करेहै ।

विवरण । बेल होतीहै, इसकी जड सुगन्धियुक्त कन्दकी समान होतीहै, उसके टुकडे कर सुखालेतेहै, उसीको गन्धपलाशी अर्थात् कपूरकचरी कहतेहै

मुरानामानि ।

गंधिनी तालपर्णी तु दैत्या गन्धकुटी मुरा ।

अर्थ-गान्धिनी, तालपर्णी, दैत्या गन्धकुटी, मुरा, (पुरागन्धवती, दिव्या, गन्धाढचा, गन्धमादिनी, सुरभि, भूरिगन्धा, कुटी, गन्धिनी, भूतगन्धा, तालपर्णिका और मुरामासी)

हिन्दीभाषाम	एकांगी मुरा ।
वंगभाषाम	मरामासी ।
मराठीभाषामे	एकांगीमुरा । मोरमासी ।
कर्णाटकी भाषामे	मुरे ।
गुजराती भाषामे	मोरमासी ।

अस्यगुणाः ।

मुरा तिक्ता हिमा स्वाद्वी लघ्वी पित्तानिलापहा ।
ज्वरासृग्भूतरक्षोघ्नी कुष्ठकासविनाशिनी॥(भावप्रकाश)

अर्थ-एकाङ्गी-कडवी, शीतल, स्वादिष्ठ, लघु तथा पित्त, वात, ज्वर, रुधिरदोष, भूत, राक्षस, कोढ और कासरोगका नाश करेहै ।

अपिच ।

एकांगी कटुका तिक्ता तुवरा शीतला मता ।
लघुस्वादुसुगन्धा स्यार्दिद्रियाणां च हर्षदा ॥

कफपित्तश्वासवातरक्तदोषविषापहा ।
दाहभ्रमतृषामूर्च्छाज्वरकुष्ठविनाशिनी ॥
पिशाचराक्षसालक्ष्मीबाधानाशकरी मता । (नि० र०)

अर्थ-एकाङ्गी-चरपरी, कडवी, कषेली, शीतल, हलकी, स्वादिष्ट, सुगन्धि, इंद्रियोंको तृप्त करनेवाली तथा कफ, पित्त, श्वास, वात, रुधिरविकार, विषविकार, दाह, भ्रम, तृषा, मूर्च्छा, ज्वर, कोढ, पिशाचबाधा, राक्षसबाधा और अलक्ष्मीका नाश करेहै ।

लामज्जकनामानि।

लामज्जकं सुनालं स्यादमृणाल लयं लघु ।
इष्टकापथिकं सेव्यं नलदं चावदातकम् ॥

अर्थ-लामज्जक, सुनाल, अमृणाल, लय, लघु, इष्टकापथिक, सेव्य, नलद, अवदातक, (सुनील, शीघ्र, दीर्घमूल, जलाशय और अवदाहक)

हिन्दी भाषामे	लामज्जक ।
बंगभाषामे	गन्धवेणा ।
मराठीभाषामे	लावज, पिंवळावाळा ।
गुजराती भाषामे	सुगंधिपीलु, खडजल, जलवालो ।
तैलंगी भाषामे	तेल्लवट्टिवेरु ।

श्रेष्ठलामज्जकनामानि ।

दीर्घमूलं दृढं सूक्ष्ममुत्तमं गन्धसंयुतम् ।
देशे साधारणे जातं लामज्ज भद्रकं भवेत् ॥ (भै० चि०)

अर्थ-जिसकी बडी जड हो, दृढ हो, सूक्ष्म हो, सुगन्धियुक्त हो, साधारण देशमे उत्पन्न हुआ हो, ऐसा लामज्जक श्रेष्ठ होताहै ।

अस्य गुणा ।

लामज्जकं हिमं तिक्तं लघुदोषत्रयास्रजित् ।
त्वगामयस्वेदकृच्छ्रदाहपित्तास्ररोगनुत् ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-लामज्जक-शीतल, कडवा, हलका, त्रिदोषनाशक तथा रक्तदोष, त्वचाके रोग, पसीना, मूत्रकृच्छ्र, दाह और रक्तपित्त रोगको दूर करे है ।

अपि च ।

लामज्जकं हिमं तिक्तं मधुरं वातपित्तजित् ।
तृड्दाहश्रममूर्च्छार्तिरक्तपित्तज्वरापहम् ॥(रा०नि०)

अर्थ-लामज्जक-शीतल, कडवा, मधुर, वातपित्तनाशक तथा तृषा, दाह, श्रम, मूर्च्छा, रक्तपित्त और ज्वरको नष्ट करे है ।

अन्यच्च ।

लामज्जकन्तु मधुरं तिक्तं शीतञ्च पाचकम् ॥
स्तम्भनं लघु पित्तघ्नं वाततृड्दाहनाशनम् ॥
त्रिदोषश्रममूर्च्छास्रशूलवांतिविनाशनम् ।
ज्वरञ्च रक्तदोषञ्च स्वेदकृच्छ्रं मदं कफम् ॥
व्रणं विषं विसर्पञ्च नाशयेदितिकीर्त्तितम् (नि० र०)

अर्थ-लामज्जक-मधुर, तिक्त (कडवा), शीतल, पाचन, स्तम्भन, हलका, पित्तनाशक तथा वात, तृषा, दाह, त्रिदोष, श्रम, मूर्च्छा, रक्त, शूल, वमन, ज्वर, रुधिरविकार, पसीना, मूत्रकृच्छ्र, मद, कफ, घाव, विष और विसर्प इनको दूर करे है ।

यह एक प्रकारका सुगन्धि तृण नदीके तीर वंगदेशमें होताहै । मात्रा २ मासेकी ।

स्पृक्कानामानि ।

स्पृक्का लता कोटिवर्षा मरुन्माला लतामरुत् ।
लंकारिका समुद्रान्ता कुटिला देवपुत्रिका ॥

अर्थ-स्पृक्का, लता, कोटिवर्षा, मरुन्माला, लतामरुत, लङ्कारिका, समुद्रान्ता, कुटिला, देवपुत्रिका, (देवपुत्री, देवी, पृक्का, पिशुना, लघु, वधू, लङ्कायिका, लकापिका, ब्राह्मणी, मनु, मालालिका, मालानी, लघ्वी, पञ्चगुप्तिरसा, समुद्रकान्ता, मरुत, माला, कोटी, वर्षा, लंकोपिका, वर्षालकायिका, तस्कर, चोरक, चण्ड, अस्टक,)

हिन्दीभाषामें	असवरग, अस्परकपुरी ।
वङ्गभाषामें	पिडिङ् शाक ।
मराठीभाषामें	स्पृक्का, गगौना कापूरी, शाक ।
कर्णाटकीभाषामें	हिक्के ।

तैलिङ्गीभाषामें स्पृक्कुथनेड्डुद्रव्यम् ।
उत् फिरिकिशाक ।

अस्या गुणाः ।

स्पृक्का स्वाद्वी हिमा वृष्या तिक्ता निखिलदोषनुत् ।
कुष्ठकण्डूविषस्वेददाहास्रज्वररक्तहृत् ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-असवरग-स्वादिष्ठ, शीतल, वीर्यजनक, कडवा, संपूर्ण दोषनाशक तथा कोढ, खुजली, विष, पसीना, दाह, रक्तज्वर और रक्तविकारको हरेहै ।

अपिच ।

स्पृक्का कटुः कषाया च तिक्ता श्लेष्मार्तिकासजित् ।
श्लेष्ममेहाश्मरीकृच्छ्रनाशिनी च सुगंधिदा॥(रा०नि०)

अर्थ-असवरग-चरपरा, कषेला, कडवा तथा कफसे उत्पन्न हुई पीडा, खांसी, कफ, प्रमेह, पथरी और मूत्रकृच्छ्ररोगको दूर करे है और सुगन्धिदायक है ।

अन्यच्च ।

स्पृक्का तु मधुरा पाके हृद्या च कफपित्तनुत् । (रा०व०)

अर्थ-असवरग-पचनेमें मधुर, हृदयको हितकारी, और कफपित्तनाशक है ।

अपिच ।

गगौना कटुका तिक्ता तुवरा स्वादु शीतला ।
वृष्या चैव सुगंधिश्च कासतृण्मेहनाशिनी ॥
कण्डू त्रिदोषकुष्ठं च विषदोष ज्वर कफम् ।
स्वेदं दाह रक्तदोषं दौर्गन्ध्यञ्च तथाश्मरीम् ॥
मूत्रकृच्छ्रं च शूलञ्च नाशयेदिति कीर्तिता ।(नि० रा०)

अर्थ-असवरग-चरपरा, कडवा, कषेला, स्वादिष्ठ, शीतल, वीर्यजनक, सुगन्धि तथा, खांसी, पियास, प्रमेह, खुजली, त्रिदोष (वात, पित्त, कफ, कोढ, विषविकार, ज्वर, कफ, पसीना, दाह, रुधिरविकार, दुर्गन्ध, पथरी, मूत्रकृच्छ्र और शूलको निर्मूल करेहै ।

एलावालुकनामानि ।

एलावालुकमैलेय सुगंधि हरिवालुकम् ।

अथ-एलावालुक-ऐलेय, सुगन्धि, हरिवालुक, (वालु, वालुक, एलवालुक, एलवालु, आलुक, एलवालुक, कपित्थत्वक्, गन्धत्वक्, कुष्ठगन्धी, कपित्थ, गन्धात्वक्, एलालु, एलवालु)

अस्य गुणाः

एलालु कटुकं पाके कषायं शीतलं लघु ।
हन्ति कण्डूव्रणच्छर्दितृट्कासारुचिहृद्रुजः ॥
बलासविषपित्तास्रकुष्ठमूत्रगुदक्रिमीन् । (भा० १०)

अर्थ-एलुआ-पचनेमे चरपरा, कषेला, शीतल, हलका तथा खुजली, घाव, छर्दि, श्वास, खासी, अरुचि, हृदयरोग, कफ, विष, रक्तपित्त, कोढ, मूत्ररोग और कृमिरोगको नष्ट करेहै ।

अपिच ।

एलावालुकमत्युग्रं कषाय कफवातनुत् ।
मूर्च्छार्तिज्वरदाहांश्चनाशयेद्रोचनं परम् ॥ (राजनिघंटु)

अर्थ-एलुआ-अतिउग्र, कषेला, कफवातनाशक तथा मूर्च्छा, ज्वर और दाहको दूर करेहै. और अत्यन्त रुचिको उत्पन्न करेहै ।

अन्यच्च ।

ऐलेयं तुवरं रुच्यमत्युग्रं शीतलं लघु ।
पाके कटु सुगंधि स्यात्तिक्तं शुद्धिकरं मतम् ॥
कफमूर्च्छावातदाहज्वरकण्डूविषव्रणान् ।
छर्दितृट्कासहृद्रोगपित्तरक्तरुजस्तथा ॥
वध्मरुक्कृमिकुष्ठानिह्यरुचिंच विनाशयेत् । (नि० र०)

अर्थ-एलुआ-कषेला, रुचिकारक, अति उग्र, शीतल, हलका, पाकमें चरपरा, सुगन्धि, कड़वा, शुद्धिकारक तथा कफ, मूर्च्छा, वात, दाह, ज्वर, खुजली, विष, व्रण, वमन, तृषा, खासी, हृद्रोग, रक्तपित्त रोग, वध्मरोग, कृमि, कोढ और अरुचिको दूर करेहै ।

एलुआ-सुगन्धि पदार्थ है, इसमे कूठकी समानसुगन्धि आतीहै

संस्कृतमे	एलावालुक ।
हिन्दीमें	एलुवा ।
बङ्गलेमें	एलवालुका ।
तैलङ्गीमें	कुतुखुडम ।
मराठीमें	वेलची ।

प्रपौण्डरीकनामानि ।

श्रीपुष्पं पुडरी शीतं पौण्डर्यं पुण्डरीयकम् ।
प्रपौण्डरीकं चक्षुष्यं पुण्डर्यं पौण्डरीयकम् ॥

अर्थ-श्रीपुष्प-पुण्डरी, शीत, पौण्डर्य, पुण्डरीयक प्रपौण्डरीक चक्षुष्य पुण्डर्य, पौण्डरीयक, (पुण्डरीक, पौण्डरीक, पौडर्य्य, तालपुष्पक, सालपुष्प, द्राष्ट्रिकृत, स्थलपद्म, सुपुष्प, सानुज, अनुज)

अस्यगुणा ।

प्रपौण्डरीकं चक्षुष्यं मधुरं तिक्तशीतलम् ।
पित्तरक्तव्रणान्हन्ति ज्वरदाहतृपापहम् ॥ (रा० नि०)

अर्थ-पुण्डरिया-नेत्रोको हितकारी, मधुर, तिक्त, शीतल तथा रक्त, पित्त, व्रण, ज्वर दाह और तृष्णाकी शान्ति करेहै ।

अपिच ।

पौण्डर्यं मधुरं तिक्तं कषायं शुक्रलं हिमम् ।
चक्षुष्यं मधुरं पाके व्रण्यं पित्तकफास्रनुत् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-पुण्डरिया-मीठा, कडवा, कषेला, वीर्यवर्द्धक, शीतल, नेत्रोको हितकारी, पचनेमे भी मीठा, शरीरके वर्णको सुन्दर करनेवाला, तथा पित्त कफ और रक्तदोषनिवारक है ।

प्रपौण्डरीक सुगधि वृक्ष है, इसके रसको आंखम लगानेसे आखके रोग दूर होते है, इसका हिन्दीभाषामे पुण्डेरी, पुण्डरिया, बंगभाषामे पुण्डरिया । मराठीमे पुण्डरीक वृक्ष । तैलिङ्गीमे पुंडरीक मनुगे विध्मानमु । गुजरातीमे पाडेरवा । कर्नाटकी भाषामे पुंडरीक कहते है । शिमला प्रांतम कालकाके समीप इसके वृक्ष होते है पंडयारा नामसे प्रसिद्ध है ।

पर्पटिनामानि।



जतुका रञ्जनी कृष्णा पर्पटी चक्रवातनी ।
जतुकृज्जनि संस्पर्शा जनेष्टा जननी तथा ॥

अर्थ-जतुका, रञ्जनी, कृष्णा, पर्पटी, चक्रवर्त्तिनी, जतुकृत, जनि, संस्पर्शा, जनेष्टा, जननी, (जतुकारी, तिर्यक्फला, निशान्धा, सुपत्रिका, बहुपुत्री, राजवृक्षा, कपिकच्छु, फलोपमा, सूक्ष्मवल्ली, भ्रमरी, कृष्णवल्लिका, विज्जुलिका, कृष्णरुहा, ग्रन्थिपर्णा, सुवर्च्चिका, तरुवल्ली, दीर्घफला, रजनी, जतुका, जनिजन्तुका)

अस्या गुणाः ।

पर्पटी तुवरा तिक्ता शिशिरा वर्णकृल्लघुः ।
विषव्रणहरी कण्डूकफपित्तास्रकुष्ठनुत् ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-पर्पटी-कपेली, कडवी, शीतल, वर्णकारक, लघु तथा विष, घाव, खुजली, कफ और कुष्ठको नष्ट करे है ।

अपिच ।

जन्तुका शिशिरा तिक्ता रक्तपित्तकफापहा ।
दाहतृष्णावमिघ्नी च रुचिकृद्दीपनी परा ॥ (रा० नि०)

अर्थ-जनी-शीतल, कडवी तथा रक्तपित्त, कफ, दाह, तृषा और वमननिवारक है तथा रुचिकारक और अग्निदीपक है ।

अपिच ।

पर्पटी शीतला वर्ण्या तुवरा तिक्तका लघुः ।
अग्निदीप्तिकरी रुच्या रक्तपित्तकफाञ्जयेत् ॥
पित्तं च रक्तदोषं च कुष्ठं दाहं वमिं तृषाम् ।
कुष्ठरोगं कण्डुरोगं व्रणं चैव विनाशयेत् ॥ (निघण्टुरत्नाकर)

अर्थ–पर्पटी–शीतल, वर्णकारक, कषेली, कडवी, हलकी, अग्निदीपक, रुचिकारक तथा रक्तपित्त, कफ, पित्त, रुधिरविकार, कोढ, दाह, वमन, तृषा, कोढ, विष, खुजली और व्रणका विनाश करे है। यह मालवदेशमें प्रसिद्ध है ।

नलिकानामानि ।

नलिका विद्रुमलता कपोतचरणा नटी ।
धमन्यंजनकेशी च निर्मध्या शुषिरा नली ।

अर्थ–नलिका–विद्रुमलता, कपोतचरणा, नटी, धमनी, अञ्जनकेशी निर्मध्या शुषिरा नली (कपोतांघ्रि, विद्रुमलतिका, कपोतबाणा, नलिनी, अध्मानी, स्तुत्या, रक्तदला, नर्त्तकी)

अस्याशुणा ।

नलिका शीतला लघ्वी चक्षुष्या कफपित्तहृत् ।
कृच्छ्राश्मवाततृष्णास्रकुष्ठकण्डूज्वरापहा ॥

अर्थ–नलिका–शीतल, हलकी, नेत्रोंको हितकारी तथा कफ, पित्त, मूत्रकृच्छ्र, पथरी, पियास, रुधिरविकार, कोढ, कण्डू और ज्वरको नष्ट करे है ।

अपिच ।

नलिका कटुका तिक्ता तीक्ष्णा च मधुरा सरा ।
लघ्वी शीता च संप्रोक्ता चक्षुष्या वातपित्तहा ॥
रक्तपित्तक्रिमिविषकफवातोदरापहा ।
शूलाश्मरीमूत्रकृच्छ्ररक्तदोषतृषाहरा ॥
कण्डूकुष्ठज्वरव्रणदुर्नामानं च नाशयेत् (नि० र०)

अर्थ–नलिका–चरपरी कडवी, तीक्ष्ण, मधुर, दस्तावर, हलकी, शीतल, नेत्रोंको हितकारी तथा, वातपित्त, रक्तपित्त कृमि, विष, कफ, वातोदर शूल, पथरी, मूत्रकृच्छ्र, रुधिरविकार, तृषा, खुजली, कोढ, ज्वर, घाव और बवासीरको दूर करे है ।

यह सुगंधिद्रव्य उत्तरखण्डमे नलीनामसे प्रसिद्ध है इसका स्वरूप मूँगेके समान होता है, कहीं कहीं पवारी और प्रवाली, नामसे प्रसिद्ध है कर्णाटकमे वेसनालिके कहते है। और तैलिङ्ग देशमे पकेमुक सुगंधि द्रव्यमु कहते है ।

पुदिनानामानि।

व्यञ्जनो वान्तिहारी च रुचिश्यः शाकशोभनः ।

अर्थ-व्यञ्जन-वान्तिहारा, रुचिश्य, शाकशोभन, (सुगंधिपत्र, अजीर्णहर)

हिन्दीभाषामे	पोदीना ।	
वङ्गभाषामे	पुदिना ।	
मराठीभाषामे	पुदिना ।	
गुजरातीभाषाम	फोदिनो ।	
इंग्रेजीभाषाम	टोल् रेडमिट्	Tallred mint
लैटिन्भाषाम	मेन्थमेन्था सिल्वेस्ट्रिसिल्वेसट्रिस् ।	Mentha Sylvestris
फिरङ्गीभाषामे	ओड टोलाव ।	
फारसीभाषाम	नोअना ।	
अरबीभाषामे	हवा ।	

अस्यगुणाः ।

पुदिनस्तु गुरुः स्वादू रुच्यो हृद्यः सुखावहः ।
मलमूत्रस्तम्भकरः कफकासमदापहः ॥
अग्निमांद्यविसूचिघ्नः सग्रहण्यतिसारहा ।
जीर्णज्वरंकृमींश्चैव नाशयेदितिकीर्तितम् ॥ (नि० र०)

अर्थ-पोदीना-भारी, स्वादिष्ठ, रुचिकारक, हृदयको हितकारी, सुखावह-(सुखका देनेवाला), मल और मूत्रको रोकनेवाला तथा कफ, खासी, मदाग्नि, विसूचिका, संग्रहणी, अतिसार जीर्णज्वर और कृमिरोगका नाश करे है ।

विवरण-इसका छोटा क्षुप होताहै, मनुष्य घर और वागोमे लगालेते है पोदीना प्राचीन नहीं है, कारण यह है कि, अतिरिक्त निघण्टुरत्नाकरके (जो कि थोडे दिनोंसे बनाहै) और किसी ग्रंथमे नहीं देखा जाता, पोदीनेका अर्क निकालते है, वह अर्क वमनादिक अनेक रोगोको दूर करताहै, पोदीनेकी चटनी खानेसे अत्यन्त भूख लगती है।

इति श्रीशालिग्रामनिघण्टुभूषणे कर्पूरादिवर्गः ।

हरीतक्यादिवर्गः ।



दक्ष प्रजापति स्वस्थमश्विनौ वाक्यमूचतुः ।
कुतो हरीतकी जाता तस्यास्तु कति जातयः ॥
रसाः कति समाख्याताः कति चोपरसाः स्मृताः ।
नामानि कति चोक्तानि किं वा तासां च लक्षणम् ॥
के च वर्णगुणाः के च का च कुत्र प्रयुच्यते ।
केन द्रव्येण संयुक्ता कांश्च रोगान्व्यपोहति ॥
प्रश्नमेतद्यथा पृष्टं भगवन्वक्तुमर्हसि ।
अश्विनोर्वचनं श्रुत्वा दक्षो वचनमब्रवीत् ॥
पपात बिंदुर्मेदिन्यां शक्रस्य पिबतोऽमृतम् ।
ततो दिव्यात्समुत्पन्ना सप्तजातिर्हरीतकी ॥

अर्थ–प्रसन्नचित्त बैठेहुए दक्षप्रजापतिसे अश्विनीकुमारोने पूछा कि, हे भगवन्! हमारे प्रश्नके अनुसार आप विधिपूर्वक कहिये कि, हरीतकी कहा उत्पन्न हुई? किस प्रकारसे इसका जन्म हुआ? कितने प्रकारकी है? इसमे कितने रस और उपरस रहतेहै, सर्व प्रकारकी हरीतकीके नाम क्या है? उनके लक्षण क्या है? उनके रग और गुण क्या क्या है? और कौनसी हरीतकी किसकिस प्रयोगमे आसकतीहै? और हरीतकी किसकिस द्रव्यके योगसे कौन कौनसे रोगोका नाश करतीहै; इसप्रकार दोनो अश्विनीकुमारोका वचन सुनकर दक्षप्रजापतिने उत्तर दिया कि, जिस समय देवराज इन्द्रने अमृतपान किया, तब उसमेसे एक बूंद पृथ्वीपर गिरपडी, उस अमृतकी बूंदसे सातप्रकारसे हरीतकी उत्पन्न हुई ।

हरीतकीनामानि ।

हरीतक्यभया पथ्या कायस्था पूतनामृता ।
हैमवत्यव्यथा चापि चेतकी श्रेयसी शिवा ॥
वयस्था विजया चापि जीवन्ती रोहिणीति च ।

अथ-हरीतिकी-अभया, पथ्या, कायस्था, पूतना, अमृता, हैमवती, अव्यथा, चेतकी, श्रेयसी, शिवा, वयस्था, विजया, जीवन्ती, रोहिणी, (सुधा, बल्या, रसायनफला, पाचनी, प्रमथा, शाका, रुद्रप्रिया, वनतिक्ता, शक्रसृष्टा, सुधोद्भवा, जया, चेतनकी, प्रपथ्या, जीवप्रिया, जीवनिका, भिषग्वरा, भिषक्प्रिया, जीवन्ती, प्राणदा, जीव्या देवी, दिव्या, हिमजा, गिरिजा)



संस्कृतभाषामें	हरीतकी, बालहरीतकी।
हिन्दीभाषामें	हरड, हर्र, हर्ड।
बंगभाषामें	हरीतकी।
मराठीभाषामें	हर्तकी। बाळहरडी।
गुजरातीभाषामें	हरडे। हिमज।
कर्णाटकीभाषामें	अणिलेय, प्रशसे।
तैलिङ्गीभाषामें	करक्कायि, करकचेट्टु।
तामिलीभाषामें	कडके।
उत्	हरिडा। करेडा।
द्रा०	कलूरा।
इंग्रेजीभाषामें	मेरोबेलेन्स्। Myrobaslon (हिमजा)
	ब्लाकमाइरोनेलन्स्। Black Myronelans
लैटिन्भाषामें	टरामिनेलिया, केबुला। Terminalia dhebula

फारसीभाषामे हलैले कलाजीरेजवी अस्फर हलैले जर्द ।
अरबीभाषामे एहलीलज, काबली, अहलीजअस्फर, अहलीज असवद् ।

हरीतकी सप्तधा यथा ।

विजया रोहिणी चैव पूतना चामृताभया ।
जीवन्ती चेतकी चेति विज्ञेयाः सप्त जातयः ॥

अर्थ-विजया, रोहिणी, पूतना, अमृता, अभया, जीवन्ती और चेतकी, इन भेदोंसे हर्ड सात जातिकी है ।

सातोंके पृथक् २ लक्षण ।

अलाबुवृत्ता विजया वृत्ता सा रोहिणी स्मृता ।
पूतनास्थिमती सूक्ष्मा कथिता मांसलाऽमृता ॥
पञ्चरेखाभया प्रोक्ता जीवन्ती स्वर्णवर्णिनी ।
त्रिरेखा चेतकी ज्ञेया सप्तानामियमाकृतिः ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-विजयाहरड-तोमडीके समान गोल और लम्बी होतीहै, रोहिणी हरड गोल होतीहै, पूतना हरड छोटी गुठलीवाली होती है, अमृतानामवाली हरड मोटी होती है, पांचरेखावाली अभया हरड होतीहै, जीवन्ती हरड स्वर्णके समान पीलेरंगकी होती है, और चेतकी हरड तीनरेखावाली होती है ।

जन्मस्थानम् ।

विंध्याद्रौ विजया हिमाचलभवा स्याच्चेतकी पूतना
सिंधौ स्यादथ रोहिणी तु विजया जाता प्रतिस्थानके ।
चम्पायाममृताभया च जनिता देशे सुराष्ट्राह्वये
जीवन्तीति हरीतकी निगदिता सप्तप्रभेदा बुधैः ॥

(नि० र०)

अर्थ-विजयाहरड विंध्याचल पर्वतमे उत्पन्न होतीहै । पूतना और चेतकी हरड हिमालय पर्वतपे होती है । रोहिणी हरड सिंधु नदीके तीरपे होती है । और विजया हरड प्रतिस्थानमें होतीहै, अमृता और अभया हरड चम्पादेशमे अत्यन्त होतीहै । और जीवन्ती हरड सौराष्ट्रदेशमे उत्पन्न होतीहै ।

सप्तानां प्रयोगभेदाः ।

विजया सर्वरोगेषु रोहिणी व्रणरोहिणी ।

प्रलेपे पूतना योज्या शोधनार्थेऽमृता हिता ॥
अक्षिरोगेऽभयाशस्ता जीवन्ती सर्वरोगहृत् ।
चूर्णार्थे चेतकी शस्ता यथायुक्तं प्रयोजयेत् ॥

अर्थ-सर्व प्रकारके रोगोमे विजया हरड देनी चाहिये, व्रणको भरनेके लिये रोहिणी हरड उत्तम है, लेपमे पूतना लेनी चाहिये, विरेचनके अर्थ अमृता हरड हितकारी है, नेत्ररोगमे अभया हरड श्रेष्ठ है, जीवन्ती हरड सर्व रोगोको हरनेवाली है और चूर्णमे चेतकी हरड डालनी चाहिये ।

दोप्रकारकी चेतकी हरडका स्वरूप।

चेतकी द्विविधा प्रोक्ता सिता कृष्णा च वर्णतः ।
षडङ्गुलायता शुक्ला कृष्णा त्वेकांगुला स्मृता ॥

अर्थ-चेतकी हरड-सफेद और काली इन भेदोसे दोप्रकारकी है, तहां सफेद रंगकी हरड छे अंगुल परिमाण लंबी होती है और काले रंगकी चेतकी हरड एक अंगुलै परिमाण लम्बी होतीहै ।

सर्वप्रकारकी हरडोंके रेचनगुण।

काचिदास्वादमात्रेण काचिद्गन्धेन भेदयेत् ।
काचित्स्पर्शेन दृष्टान्या चतुर्धा भेदयेच्छिवा ।

अर्थ-कोई हरड खानेसे, कोई सूंघनेसे, कोई स्पर्श करनेसे,और कोई दर्शनमात्रसेही दस्त लाती है, ऐसे चार प्रकारकी होती है ।

चेतकी हरडके रेचनगुण।

चेतकी पादपच्छायामुपसर्पन्ति ये नराः ।
भिद्यन्ते तत्क्षणादेव पशुपक्षिमृगादयः ॥
चेतकी तु धृता हस्ते यावत्तिष्ठति देहिनः ।
तावद्भिद्येत वेगैस्तु प्रभावान्नात्र संशयः ॥
न धार्यं सुकुमाराणां कृशानां भेषजद्विषाम् ।
चेतकी परमा शस्ता हिता सुखविरेचनी ॥

अर्थ-चेतकी हरडके वृक्षकी छायामे जो मनुष्य, पशुपक्षी, मृगादिकगमनकरतेहै, उन जीवोको उसीसमयदस्त हानेलगतेहै जवतक जो प्राणी

चेतकी हरडको हाथमे धारण किये रहेगा, तबतक उस प्राणीको उस हरडके प्रभावसे निश्चय दस्त होते रहेंगे, चेतकी हरडको सुकुमार दुर्बल और जो मनुष्य ओपधिसे शत्रुता रखतेहै, उनको कभीभी धारण नही करना चाहिये। चेतकी हरड अत्यन्त उत्कृष्ट हितकारी और सुखसहित दस्त करानेवाली है ।

विजयाहरडकी प्रशंसा।

सप्तानामपि जातीनां प्रधाना विजया स्मृता ।
सुखप्रयोगा सुलभा सर्वरोगेषु शस्यते ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-सातप्रकारकी हरडोमे विजया नामवाली हरड सबमे प्रधान है, प्रयोगभी सुखकारक है । सुलभ अर्थात् सब स्थानोमे मिलती है और सर्व रोगोमे दी जातीहै ।

हरीतकीगुणा ।

कपायाम्ला च मधुरा तिक्ता कटुरसान्विता ।
इति पंचरसा पथ्या लवणेन विवर्जिता ॥

अर्थ-कषाय, अम्ल, मधुर, तिक्त और कटु इस प्रकार हरड लवणरसके अतिरिक्त पांच रसवाली है ।

रूक्षोष्णा दीपनी मेध्या स्वादुपाका रसायनी ।
चक्षुष्या लघुरायुष्या बृंहणी चानुलोमिनी ॥
श्वासकासप्रमेहार्शःकुष्ठशोथोदरक्रिमीन् ।
वैस्वर्यग्रहणीरोगविबन्धविषमज्वरान् ॥
गुल्माध्मानतृषाच्छर्दिहिक्काकण्डूहृदामयान् ।
कामलां शूलमानाहं प्लीहानं च यकृत्तथा ॥
अश्मरीं मूत्रकृच्छ्रं च मूत्राघातं च नाशयेत् ॥

अर्थ-हरड-रूखी, उष्णवीर्य्य, अग्निको दीपन करनेवाली, मेधाजनक, पाकमे स्वादिष्ठ, नेत्रोको हितकारी, हलकी आयुर्वर्धक, बृंहण, (बलकारक) और वायुको अनुलोमन करनेवाली है तथा श्वास, खांसी, प्रमेह, बवासीर, कोढ, सूजन, उदररोग, कृमी, स्वरभंग, संग्रहणी, विबन्ध, विषमज्वर, गुल्म, आध्मान (अफरा),

तृषा, वमन, हुचकी, कण्डू, हृदयरोग, कामला, शूल, आनाह, यकृत, अश्मरी, मूत्रकृच्छ्र और मूत्राघातका नाश करे है।

अम्लभावाज्जयेद्वात पित्तं मधुरतिक्ततः।
कफ रूक्षकषायत्वात्त्रिदोषघ्नी ततोऽभया॥

अर्थ-हरड-अम्लरससयुक्त होनेसे वातका नाश करतीहै, मधुर और तिक्तरसयुक्त होनेसे पित्तका नाश करतीहै और कषाय तथा रूक्षतासे कफका नाश करतीहै, इसप्रकार हरड त्रिदोषनाशक है।

अन्यच्च।

स्वादुतिक्तकषायत्वात्पित्तहृत्कफहृच्च सा।
कटुतिक्तकषायत्वादम्लत्वाद्वातहृच्छिवा॥

अर्थ-हरड-स्वादु, तिक्त, कषैलेपनसे पित्तको हरतीहै, कटु, तिक्त और कषैलेपनसे कफको हरतीहै और अम्लपनसे वातका नाश करतीहै।

अन्यच्च।

हरीतकी तु सम्प्रोक्ता पंचभिस्तु रसैर्युता।
लवणेन च सा हीना योगवाही रसायनी॥
अग्निदीप्तिकरी लघ्वी सरा मेध्या च लेखना।
वातानुलोमनी हृद्या चक्षुष्या स्मृतिकारका॥
वयसःस्थापनी बल्या बुद्धिदा कुष्ठनाशिनी।
विवर्णता नाशिनी वै चेन्द्रियाणां प्रसादनी॥
शिरोरोगं नेत्ररोगं वैस्वर्यं विषमज्वरम्।
पुराण च ज्वर पाण्डु हृद्रोगं कामलां तथा॥
शोषं शोथ मूत्रघातं ग्रहणी चातिसारकम्।
अश्मरी च ज्वर मेह कृमि श्वास विषोदरम्॥
कास घर्मं मलस्तम्भयानाहं कर्णरोगकम्।
अर्श· प्लीहां त्रिदोषञ्च गुल्मं हिक्कां व्रण तथा॥
ऊरुस्तम्भश्च शूलञ्च नाशयेदरुचिं तथा॥ (निघण्टुरत्नाकर)

अर्थ-हरड-पांच रसोसे युक्त है और लवणरसकरके वर्जित है। योगवाही,रसायन,अग्निप्रदीपक,हलकी,दस्तावर,मेधाजनक,लेखन, वातको अनुलोमन करनेवाली, हृदयको हितकारी, नेत्रोंको हितकारी,स्मृतिकारक,अवस्थास्थापक, बलकारक,कोढका नाश करनेवाली विवर्णतानाशक इन्द्रियोंको प्रसन्न करनेवाली तथा मस्तकरोग, नेत्ररोग, स्वरभग, विषमज्वर,पुराना ज्वर,पाण्डु,हृदयरोग,कामला, शोप, सूजन, मूत्रा घात, संग्रहणी, अतिसार, पथरी, वमन,प्रमेह, कृमि, श्वास, विष, उदररोग, खांसी, पसीना, मलस्तम्भ, आनाह, कर्णरोग, बवासीर,प्लीहा,त्रिदोष, गुल्म, हुचकी,व्रण,ऊरुस्तम्भ,शूल और अरुचिका नाश करे है।

हरीतक्या पञ्चरसावस्थितिनिर्णय ।

पथ्याया मज्जनि स्वादुः स्नाय्वामम्लो व्यवस्थितः ।
वृन्ते तिक्तस्त्वचि कटुरस्थिस्थस्तुवरो रसः ॥

अर्थ-हरडकी मज्जामें मधुर रस, नसोंमे अम्लरस, डंठलमे तिक्तरस, छालमे कटुरस और अस्थियोंमे कषैला रस रहताहै।

श्रेष्ठहरीतकीलक्षणम् ।

नवा स्निग्धा घना वृत्ता गुर्वी क्षिप्ता च यांभसि ।
निमज्जेत्सा प्रशस्ता च कथितातिगुणप्रदा ॥
नवादिगुणयुक्तत्वं तथैकत्रद्विकर्षता ।
हरीतक्याः फले यत्र द्वयं तच्छ्रेष्ठमुच्यते ॥

अर्थ-जो हरड नूतन, स्निग्ध, घन, गोल, भारी और पानीमे डालनेसे डूबजावे, तो हरड अत्यन्त गुणवाली और श्रेष्ठ होतीहै अथवा जो हरड पूर्वोक्त गुणयुक्त हो और चार तोले परिमाण भारी हो, उसको सर्वगुणवाली जानना।

चर्वितादिहरीतकीगुणा ।

चर्विता वर्द्धयत्यग्निं पेषिता मलशोधिनी ।
स्विन्ना संग्राहिणी पथ्या भृष्टा प्रोक्ता त्रिदोषनुत् ।

अर्थ-हरड दांतोसे चबाकर खानेसे अग्निको बढातीहै पीसकर खानेसे मलको शोधन करेहै, अर्थात् मलको निकालकर उदरकी शुद्धि करती है,पकाईहुई खानेसे मलको रोकती है और भुनी हुई हरड त्रिदोषको नाश करे है।

भक्तान्वितहरीतकीगुणा ।

उन्मीलिनी बुद्धिबलेन्द्रियाणांनिर्मूलिनी पित्तकफानिलानाम्।
विस्रंसिनी मूत्रशकृन्मलानां हरीतकी स्यात्सह भोजनेन ॥

अर्थ-हरड भोजनके साथ भक्षण कीहुई बुद्धि और बलको बढाती है तथा इन्द्रियोंको प्रकाशित करती है और पित्त, कफ, वातका नाश करतीहै तथा मल, मूत्र, और मलोंको निकालतीहै ।

भुक्तोपरिसेवितहरीतकीगुणा ।

अन्नपानशतान्दोषान्वातपित्तकफोद्भवान् ।
हरीतकी हरत्याशु भुक्तस्योपरि योजिता ॥

अर्थ-भोजनके पीछे भक्षण कीहुई हरड अन्नपानके दोष और वात, पित्त, कफसे उत्पन्न हुये दोषोंको दूर करती है ।

हरीतक्या विशेषगुणा ।

लवणेन कफं हन्ति पित्तं हन्ति सशर्करा ।
घृतेन वातजान्रोगान्सर्वरोगान्गुडान्विता ॥

अर्थ-हरड-लवणके साथ कफको, मिश्रीके साथ पित्तको, घीके साथ वातसे उत्पन्न हुए रोगोंको और गुडके साथ खानेसे सपूर्ण रोगोंको नाश करती है ।

ऋतुहरीतकीगुणा ।

सिन्धूत्थशर्कराशुण्ठीकणामधुगुडैः क्रमात् ।
वर्षादिष्वभया प्राश्या रसायनगुणैषिणा॥(भावप्रकाश)

अर्थ-हरड-वर्षाऋतुमे सैन्धव लवणके साथ, शरदऋतुमे पीपलके साथ वसन्तऋतुमे मधुके साथ और ग्रीष्मऋतुमे गुडके साथ रसायन गुणोंकी चाहनावालोंको सेवन करनी चाहिये ।

हरीतक्या श्रेष्ठगुणत्वम् ।

हरीतकीं मनुष्याणां मातेव हितकारिणी ।
कदाचित्कुप्यते माता नोदरस्था हरीतकी[१]॥ (राजवल्लभ)

---

१ चैत्र वैशाख-वसन्तऋतु ॥ ज्येष्ठ आषाढ-ग्रीष्मऋतु ॥ श्रावण भाद्रपद-वर्षाऋतु॥ आश्विन कार्तिक-शरदृतु ॥ मार्गशिर पौष-हेमन्तऋतु ॥ माघ फाल्गुन-शिशिरऋतु ॥

अर्थ-हरड मनुष्योंको माताकी समान हित करनेवाली है,माता तो कभी २ कुपितभी होजातीहै, परंतु उदरमें स्थित अर्थात् खाई-हुई हरड कभी भी अपकारी नहीं होती ।

अन्यद्रव्ययुक्तहरीतकीगुणा ।

द्राक्षां नियोज्य विधिना द्विगुण शिवायाः
संचूर्ण्य चाक्षफलमानमितां प्रभाते ।
कल्याणिकाञ्च सुकृतां गुटिकामिमां यः
संसेवते भवति तस्य हि पित्तनाशः ॥
हृद्रोगरक्तविषमज्वरपाण्डुवान्ति-
कुष्ठानि कासकमलारुचिमेहमुख्याः ।
आनाहगुल्मपिटिकाप्रभवा विकाराः
सर्वे च ते विलयमाशु सुखेन यान्ति ॥

अर्थ-हरडसे दूनी दाख लेकर विधिपूर्वक चूर्ण करके बहेडेके फलकी समान गोली बनावे उस कल्याणकारी-गोलीका प्रात काल-लमे जो मनुष्य सेवन करताहै,उसके पित्त, हृदयरोग, रक्तदोष,विषमज्वर, पाण्डुरोग, वमन, कुष्ठ, खांसी, कामला, अरुचि, प्रमेह, आनाह, गुल्म और पिडिका इत्यादि रोग नाश होते है ।

भुक्ते पथ्याऽभुक्ते पथ्याभक्ताभुक्ते पथ्यापथ्या ॥
जीर्णे पथ्याऽजीर्णे पथ्या जीर्णाजीर्णे पथ्यापथ्या ॥

अर्थ-हरड भोजनके उपरान्त और भोजनसे प्रथम दोनो समयमे पथ्य है, तथा जीर्णमे और अजीर्णमे भी पथ्य है ।

हरीतकी सेवननिषेध ।

"अध्वातिखिन्नो बलवर्जितश्च रूक्षः कृशो लंघनकर्पितश्च ।
पित्ताधिको गर्भवती च नारी विमुक्तरक्तस्त्वभयां न खादेत्"॥

अर्थ-मार्गमे चलनेसे थकाहुआ, बलहीन, रूक्ष, कृश, लंघन करनेसे दुर्बल हुआ, अधिक पित्तवाला, गर्भवती स्त्री और जिसका रुधिर निकालागया हो अर्थात् फस्त खुलीहोय, नवीनज्वरवाला, हनुस्तम्भरोगवाला और शोषयुक इत्यादि कहेहुये मनुष्यको हरड खानी निषेध है ।

हरीतकीशब्दस्य निरुक्ति ।

हरस्य भवने जाता हरिता च स्वभावतः ।
हरेत्तु सर्वरोगांश्च तेन प्रोक्ता हरीतकी ॥ (मदनपालनिघण्टु)

अर्थ-हर (महादेव) के भवनमे उत्पन्न हुई स्वभावसे हरे रंगवाली और सर्व रोगोको हरतीहै, इसीकारण इसका नाम हरीतकी है ।

अस्य बीजगुणा ।

हरीतक्याः स्मृतं बीजं चक्षुष्यं गुरु वातनुत् ।
पित्तनाशकरं चैव मुनिभिः परिकीर्तितम् ॥ (नि० र०)

अर्थ-हरडके बीज नेत्रोको हितकारी, भारी तथा वातपित्तहारी है।

विवरण-इसका बडा वृक्ष होताहै, पञ्जाब, शरद और काबुल देशमे अधिकतासे उत्पन्न होताहै । इसके पत्ते अडूसेकी समान होतेहै, इसका फूल महीन आमके मौरकी समान होताहै, इस वृक्षको संस्कृतमे "नाभक" कहतेहै । हरडकी अनेक जाति है ।

व्यवहार-हरडके फलकी छाल । मात्रा ६ मासेकी ।

विभीतकीनामानि । (बहेडेके नाम)



कलिद्रुम' कल्पवृक्षः सत्रतांक्षो विभीतकी ।

अर्थ-कलिद्रुम, कल्पवृक्ष, संवर्त, अक्ष, विभीतकी, (विभीतक, विभीत, तुष, कर्षफल, भूतवास, कालि, कुशिक, बहुवीर्य्य, तैलफल, भूतावास, संवर्त्तक, वासन्त, कलिवृक्ष, बहेडुक, हार्य, विषघ्न, कालिन्द, अनिलघ्नक, कासघ्न, कलियुगालय, तोलफल और तिलपुष्पक)

संस्कृतभाषामे	विभीतक ।
हिन्दी भाषामे	बहेडा ।
बंग भाषामे	बयडा-बहेडा ।
मराठी भाषामे	बेहेडा-धाटिगवृक्ष ।
गुजराती भाषामे	बडा ।
कर्नाटकीभाषामे	तोरे ।
तैलिङ्गी भाषामे	वल्ला-ताडेचेट्टु ।
तामिली भाषामे	तनि, तण्डि, तोअण्डि ।
इंग्रेजीभाषामे	मेरोवेलन्-बेलिरिक Myrovallan Bellirica
लाटेन भाषामे	टरामिनेलिया-बेलिरिका Terumalia Bellirica
फ़ारसीभाषामे	बलेले ।
अरबी भाषामे	बलेलज ।

अस्य गुणाः ।

विभीतकः कटुस्तिक्तो कषायोष्णः कफापहः ।
चक्षुष्यः पलितघ्नश्च विपाके मधुरो लघुः ॥ (रा०नि०)

अर्थ-बहेडा-कटु, तिक्त, कषेला, कफनाशक, नेत्रोको हितकारी, पलितरोगविनाशक, पाकमे मधुर और हलका है ।

अपि च ।

विभीतकं स्वादुपाकं कषायं कफपित्तनुत् ।
उष्णवीर्य्यं हिमस्पर्शं भेदनं कासनाशनम् ।
रूक्षं नेत्रहितं केश्यं कृमिवैस्वर्यनाशनम् ।
विभीतमज्जा तृट्छर्दिकफवातहरो लघु ॥
कषायो मदकृच्चाथ धात्रीमज्जापि तद्गुणः । (भावप्रकाश)

अर्थ-बहेडा-स्वादुपाकी, कषेला, कफपित्तनाशक, उष्णवीर्य्य,

स्पर्शमे शीतल, भेदक, कासनाशक, रूखा, नेत्रोंको हितकारी, केशोंको सुदरतादायक, कृमि और स्वरभगको नष्ट करेहै ।

बहेडेकी मींग तृषा, वमन, कफ और वातनाशक है। हलकी, कषेली और मदकारक है। आमलेकी मज्जाके गुण भी इसकी समान जानने,

अन्यच्च ।

विभीतकः कटुस्तिक्तस्तुवरोष्णो लघुः सरः ।
पाके च मधुरो रूक्षश्चक्षुष्यः केशवृद्धिकृत् ॥
हिमस्पर्शो भेदकश्च पलितस्वरभगजित् ।
नासारोगं रक्तदोष कण्ठरोगं च नेत्ररुक् ॥
जन्तूनां कासहृद्रोगनाशको मुनिभिः स्मृतः । (नि० र०)

अर्थ-बहेडा-चरपरा, कडवा, कषेला, हलका, दस्तावर, पाकके समय मधुर, रूखा, नेत्रोंको हितकारी, केशवर्द्धक, शीतस्पर्श, भेदक तथा पलित, स्वरभंग, नासारोग, रुधिरदोष, कण्ठरोग, नेत्ररोग, खासी, हृदयरोग और कृमिका नाश करेहै ।

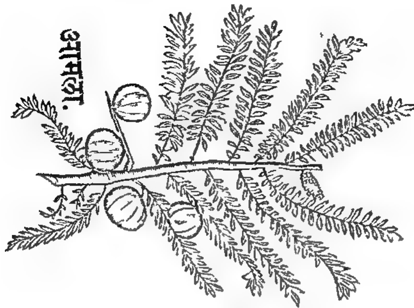
अपिच ।

"विभीतको लघुः शीतः पाके स्वादुः कफास्रजित् ।
कासहृत्क्षयकुष्ठघ्नः केशवृद्धिकरः परः ॥
परं केश्यस्तु तन्मज्जा नेत्रपुष्पहरोऽजनात् ।
नासारोगनेत्ररोगकृमिशुक्रहरो लघुः ॥
अक्षवृक्षभवः कल्कश्चित्रपाण्डुगदापहः ।"

अर्थ-बहेडा-हलका, शीतल, तथा पाकमे स्वादिष्ठ, कफ रुधिरविकार, खासी, क्षयीरोग और कुष्ठको नष्ट करेहै, केशवर्द्धक, नासारोग, नेत्ररोग, कृमि, शुक्रको हरेहै, हलका और केशोको हितकारी है, इसकी मींग नेत्रके फूलेको दूर करेहै, इसके वृक्षकी छालका काढा, चित्रकोढ और पाण्डुरोगको दूर करेहै ।

विवरण-इसका बडा वृक्ष जगल और पर्वतोंमे उत्पन्न होताहै, पत्ते बडके पत्तोके समान होतेहै, फूल अत्यन्त सूक्ष्म होता है, फल वरनाके फलकी समान और झुमकोंमे आतेहै । व्यवहार-फलकी छाल । मात्रा ३ मासेकी ।

आमलक्कीनामानि ।



आमलकी पचरसा श्रीफली धात्रिका शिवा ।
अकरामृता वयस्था च वृष्या तिष्यफला तथा ॥

अर्थ-आमलकी, पंचरसा, श्रीफली, धात्रिका, शिवा, अकरा, अमृता वयस्था, वृष्या, तिष्यफला,(वयःस्था, कायस्था, बहुफली, शान्ता, धात्री, अमृतफला, वृत्तफला, रोचनी, कर्षफला, तिष्या, धात्रीफल, श्रीफल, अमृतफल, शिव, आमलक, जातफिल)

संस्कृतभाषामे	आमलकी ।
हिन्दीभाषामे	आमला ।
बंगभाषामे	आम्ला ।
मराठीभाषामे	आवळा ।
गुजरातीभाषामे	आवला ।
कर्णाटकीभाषामे	नेल्लि ।
तैलङ्गीभाषामे	उसर काय
उत्त्	अंडा ।
इंग्रेजीभाषामे	एंब्लि कमिरो बेलन । Emt myrobalan
लैटिनभाषामे	फिलखस एंबलका Phylakhus Ambl ca
फारसीभाषामे	आम्लज ।
अरबीभाषामे	अमूलज् ।

अस्या गुणा ।

आमलं च कषायाम्लं मधुरं शिशिरं लघु ।
दाहपित्तवमीमेहशोषघ्नं च रसायनम् ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ-आमला-कषेला, अम्ल, मधुर, शीतल, हलका तथा दाह, पित्त, वमन, प्रमेह और शोषका नाश करे है और रसायन है ।

आमलक्याः फलं किंचित्कटुकं स्वादु तिक्तकम् ।
अम्लं च तुवरं शीतं जराव्याधिविनाशनम् ॥
वृष्यं केश्यं सारकञ्च हितं चारुचिनाशकम् ।
रक्तपित्तं प्रमेहञ्च विषं ज्वरं वमिं तथा ॥
आध्मानं बद्धविट्कत्वं शोथं शोषं तृषां तथा ।
रक्तस्य विकृतिं चैव त्रिदोषं चैव नाशयेत् ॥
अम्लत्वाद्वातहं प्रोक्तं माधुर्याच्चैव शीततः ।
पित्तनाशकरं चोक्तं रूक्षत्वाच्च कषायतः ॥
कफनाशकरं प्रोक्तं पूर्वैर्विद्याविशारदैः ।

अर्थ-आमला-किञ्चित् कटु, स्वादिष्ठ, कडवा, अम्ल, कषेला, शीतल, जरा व्याधिनाशक, वीर्यजनक, केशोंको हितकारी, दस्तावर, हितकारक, अरुचिनाशक, तथा रक्तपित्त, प्रमेह, विष, ज्वर, वमन, आध्मान (अफारा) मलबद्धता, सूजन, शोष, पियास, रक्तविकार और त्रिदोषका नाश करेहै ।

आमला-खट्टेपनसे वातका, मधुरपन और शीतलतासे पित्तका और कषेलेपनसे तथा रूक्षतासे कफका नाश करे है, इसप्रकार आमला त्रिदोषनाशक है ।

शुष्कामलकगुणा ।

आमलस्य फलं शुष्कं तिक्तमम्लं कटु स्मृतम् ।
मधुरं तुवरं केश्यं भग्नसन्धानकारकम् ॥
धातुवृद्धिकरं नेत्र्यं लेपनात्कांतिकारकम् ।
पित्तं कफं तृषां घर्मं मेदोरोगं विषं तथा ॥
त्रिदोषं नाशयत्येव पूर्वाचार्यैर्निरूपितम् । (नि० र०)

अर्थ-सूखा आमला-कडवा, खट्टा, चरपरा, मीठा, कषेला, कशोको हितकारी, भग्नसन्धानकारक, धातुवर्द्धक, और नत्राका हितकारी है। इसका लेप करनेसे देहकी कांति बढती है, तथा पित्त, कफ, तृपा, पसीना, मेद, विष और त्रिदोषनाशक है।

अस्य मज्जागुणा ।

तन्मज्जा प्रदरच्छर्दिवातपित्तज्वरापहा ।
कषाया मधुरा वृष्या श्वासकासनिबर्हणा ॥

अर्थ-इसकी मींग प्रदररोग, वमन, वात, पित्त और ज्वरको दूर करेहै। तथा कषेली, मधुर, वीर्यजनक, श्वास और खासीको नष्ट करेहै।

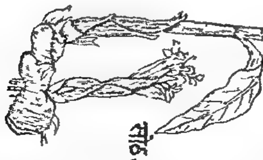
यस्य यस्य फलस्येह वीर्यं भवति यादृशम् ।
तस्य तस्यैव वीर्य्येण मज्जानमपि निर्दिशेत् ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-जिस जिस वृक्षके फलमें जैसा जैसा वीर्य होताहै, वैसाही उसकी मींगमेभी जानना।

विवरण-इसका बडा वृक्ष बाग और जंगलमे होताहै, पत्ते छोटे छोटे इमलीके समान होतेहै,इसकी शाखाओंपै छोटी छोटी लाईके दानेकी समान पीले फूल होतेह, फल तेंदूकी समान गोल और झुमकोमे लगते है। फलके ऊपर छः रेखा अत्यन्त सूक्ष्म होती है।

व्यवहार-फलकी छाल। मात्रा ४ मासेकी।

शुण्ठीनामानि ।



सोंठ

शुण्ठी महौषधी विश्वा शुष्कार्द्रं विश्वभेषजम् ।
भेषजं शृङ्गवेरञ्च विश्व कफारि नागरम् ॥

अर्थ-शुण्ठी, महौषधी, विश्वा, शुष्कार्द्र, विश्वभेजष, भेषज शृंगबेर,

विश्व, कफारि, नागर (महौषध, शुण्ठि, इन्द्रभेषज, विश्वौषध, कटुग्रन्थि, कटुभद्र, शुण्ठच, कटूत्कटक, कटूपण, सौवर्ण, आर्द्रक, शोपण, नागराह्व, आर्द्रज, औषध)

संस्कृत भाषामें	शुंठी।
हिन्दी भाषामें	सोंठ, शुंठी।
बङ्गभाषामें	शुट-ठ।
मराठीभाषामें	सुंठ।
गुजरातीभाषामें	शुण्ठच
कर्णाटकीभाषामें	शुंठि।
तैलिङ्गीभाषामें	शोंठी।
इंग्रेजीमें	ड्राइजञ्जर। Dryginger
फारसीभाषामें	जंजबील।

अस्या गुणा।

शुण्ठी रुच्यामवातघ्नी पाचनी कटुका लघुः।
स्निग्धोष्णा मधुरा पाके कफवातविबन्धनुत्॥
वृष्या सर्पावमिश्वासशूलकासहृदामयान्।
हन्ति श्लीपदशीतार्शआनाहोदरमारुतान्॥
आग्नेयगुणभूयिष्ठतोयांशपरिशोषि यत्।
संगृह्णाति मलं तत्तु ग्राहि शुण्ठ्यादयो यथा॥
विबन्धभेदनी या तु सा कथं ग्राहिणी भवेत्।
शक्तिर्विबन्धभेदे स्याद्यतो न मलपातने॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-सोंठ-रुचिकारी, अग्निवातनाशक, पाचक, चरपरी, हलकी स्निग्ध, उष्णवीर्य्य, पाकमें मधुर, कफ, वात और विबन्धको दूर करेहै। वीर्य्यवर्द्धक, सारक तथा वमन, श्वास, शूल, खांसी, हृद्यरोग, श्लीपद, शोक, बवासीर, अफारा, उदररोग, और वातके रोगोंका नाश करेहै। जो द्रव्य आग्नेयगुणविशिष्ट है और जलांशशोषक है, मलका ग्रहण करताहै जिसप्रकार सोंठ आदि पदार्थ ग्राही है, कोई कहै कि जो विबन्धको भेदन करनेवाली है वह कैसे ग्राही होसकती है तो कहतेहैं कि सोंठमें विबन्धभेदकी शक्ति है, परन्तु मलपातकी नहीं।

अन्यच्च।

नागरं कफवातघ्नं विपाके मधुरं कटु।
वृष्योष्णं रोचनं हृद्यं सस्नेहं लघुदीपनम्॥
पाण्डुं सग्रहणीं पित्तं नाशयेदिति कीर्त्तितम्।

अर्थ-सोंठ-कफवातनाशक, पचनेमें मधुर, चरपरी, वीर्यवर्द्धक, गरम, रोचक, हृदयको हितकारी, स्नेहयुक्त, हलकी और दीपन है तथा पाण्डुरोग सग्रहणी और पित्तका नाश करे है।

आर्द्रकनामानि।

अदरख.



आर्द्रकं शृङ्गबेरं स्यात्कटुभद्रं कटूत्कटम्।

अर्थ-आर्द्रक, शृङ्गबेर, कटुभद्र, कटूत्कट, (गुल्ममूल, मूलज, कन्दर, वर, महीज, सैकतेष्ट, अनूपम, अपाकृष्णक, चन्द्राख्य, राहुच्छत्र, सुशाकक, शार्ङ्ग, आर्द्रशाक, मच्छाक, आर्द्रिका)

संस्कृतभाषामें	आर्द्रक।
हिन्दीभाषामें	अदरख-क।
वंगभाषामें	आदा।
मराठीभाषामें	आले।
गुजरातीभाषामें	आदु।
कर्णाटकीभाषामें	अल्ल।
तैलिङ्गीभाषामें	अल्ल।
इंग्रेजीभाषामें	जिंजिरुट्। Gingerroot
अरबीभाषामें	जिंजिबिलतर।

लैटिन्भाषामें जिंजिबर ओफिसिनेली । Gingiber Officinale

फारसीभाषामें जिंजिबिलरत्तब ।

अस्य गुणाः ।

आर्द्रिका भेदनी गुर्वी तीक्ष्णोष्णा दीपनीमता ।
कटुका मधुरा पाके रूक्षा वातकफापहा ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-अदरख-भेदक, भारी, तीक्ष्ण, उष्ण, दीपन, चरपरा, पाकमें मधुर, रूक्ष, वात और कफनाशक है ।

अपिच ।

शृङ्गबेर रसे पाके शीतलं मधुरं लघु ।
कटुकोष्णश्च हृद्यं च भेदकं चाग्निदीपकम् ॥
रूक्षं रुचिप्रदं वृष्यं पाचकं सारकं मतम् ।
कण्ठ्यमग्नेर्मान्द्यहरं शोथारुचिकफापहम् ॥
वातं कण्ठरुजं कासं श्वासमानाहवातकम् ॥
मलबंधं वमिं शूलं नाशयेदिति कीर्तितम् ॥
तस्यांकुरा रसाभावात्कफवातकरा मताः ।
रक्तदोषस्य शमनास्ते वृद्धाः कफनाशकाः ॥
काञ्जिका सैन्धवं चार्द्रं पाचकं चाग्निदीपनम् ।
मलबाधामवातानां कफवातविनाशकम् ॥
केवलं लवणेनाथ मिश्रितं चाग्निदीपनम् ।
रुच्यं प्रियं सरं प्रोक्तं शोथवातकफापहम् ॥
भोजनात्पूर्वपश्चात्तुकण्ठजिह्वाविशोधकम् ।
जम्बीरसैन्धवयुतं रुचिदं तुखशुद्धिकृत् ॥
मूत्रकृच्छ्रं पाण्डुरोगं रक्तपित्तं व्रणं तथा ।
मूत्राश्मरी ज्वरं दाहं पित्तं ग्रीष्मे शरद्यपि ॥
नाशयेदिति च प्रोक्तं शेषा विश्वासमा गुणाः ।

अर्थ-अदरख रसमें और पाकमें शीतल, मधुर, चरपरा गरम हृदयको

हितकारी, भेदक (दस्तावर), अग्निको दीपन करनेवाला, रूखा, रुचिको उत्पन्न करनेवाला, वीर्य्यजनक, पाचक, सारक, कण्ठको हितकारक तथा मंदाग्नि, सूजन, अरुचि, कफ, वात, कण्ठरोग, खाँसी, श्वास, आनाह, वात, मलबन्ध, वमन और शूलका नाश करेहै ।

कांजी-और सैन्धवलवणयुक्त अदरख-पाचक, अग्निप्रदीपक तथा मलबन्ध और आमवातका नाश करेहै ।

केवल लवणमिश्रित अदरख-अग्निको दीपन करे, रुचिको उत्पन्न करे, प्रिय, सारक तथा सूजन, वात और कफका नाशक है ।

भोजनके प्रथम भक्षण कियाहुआ अदरख-कण्ठ और जिह्वाको शुद्ध करेहै । जंभीरी नींबू और सैंधानोनके साथ अदरख मुखकी शुद्धि करेहै तथा मूत्रकृच्छ्र, पाण्डुरोग, रक्तपित्त, घाव, मूत्ररोग, पथरी, ज्वर, दाह और पित्तको शरदृऋतुमे तथा ग्रीष्मऋतुमे नष्ट करे है, शेष गुण सोठकी समान जानने ।

द्रव्यगुणा ।

वातपित्तकफेभानां शरीरवनचारिणाम् ।
एक एव निहंत्यत्र लवणार्द्रककेसरी ॥

अर्थ-वात, पित्त, कफरूपी हाथी जो वनरूपी शरीरमे विचरण करते है उनके मारनेको एकही महापराक्रमी लवण और अदरखरूपी सिंह है ।

भोजनाग्रे सदा पथ्यं लवणार्द्रकभक्षणम् ॥

अर्थ-भोजनके आदिमे अर्थात् प्रथम लवणसहित अदरखका सेवन करना सदा पथ्य है ।

निषेध ।

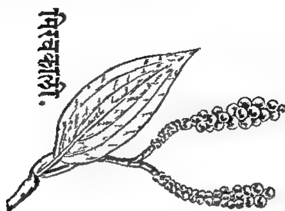
कुष्ठपांड्वामये कृच्छ्रे रक्तपित्तव्रणज्वरे ।
दाहे निदाघे शरदि नैव पूजितमार्द्रकम् ॥

अर्थ-अदरख-कोढमे, पाण्डुरोगमे, मूत्रकृच्छ्रमे, रक्तपित्तमे, व्रणरोगमे, ज्वरमे, दाहरोगमे, ग्रीष्मऋतुमे और शरदृऋतुमे अपथ्य है। ऐसा भावमिश्रने लिखा है ।

विवरण। अदरखका गुल्म होताहै, रेतली भूमि और सजल स्थानमें अधिकतासे उत्पन्न होताहै, पत्ते छोटी इलायचीके समान

होते है, इसके कन्दकोही अदरख कहते है। उसी कन्दको सुखाकर सोठ बनाते है, सोठकी अनेक जातिह ।

मरिचनामानि ।



मरिच पवितं श्याम वेणुज यवनप्रियम् ॥
वल्लीज वेल्लज शुद्धं कोलक धर्मपत्तनम् ॥

अर्थ-मरिच-पवित, श्याम, वेणुज, यवनप्रिय, वल्लीज, वेल्लज, शुद्ध, कोलक, धर्मपत्तन, (कोल, ऊपण, वरिष्ठ, यवनेष्ट, वृत्तफल, शाकाङ्ग, वेणुक, कटुक, शिरोवृत्त, वार, कफविरोधि, मृष्ट, सर्वहित, कृष्ण)

सितमरिचनामानि ।

सितमरिच शीतोत्थ सितवल्लीज च वालक बहुलम् ।
धवल चन्द्रकमेतन्मुनिनामगुणाधिक च वश्यकरम् ॥

अर्थ-सितमिरच, शीतोत्थ, सितवल्लीज, वालक, बहुल, धवल, चन्द्रक, (सिताख्य)

संस्कृतभापामे	मरिच, सितमरिच ।
हिन्दीभापामे	कालीमिरच, सफेद मिरच। दक्षिणी मिरच।
वंगभापामे	मरिच, गोलमरिच, सादामरिच ।
मराठीभापामे	मिरे-पाढरे, मिरी ।
गुजरातीभापामे	मरी, तीखा, धोलामरी ।
कर्णाटकीभापामे	मेणसु, विलेयमेणसु ।
तैलिङ्गीभापामे	मरिया, मिरियन ॥
तामिलीभापामे	मिलगु, मिलाओ ।

अँग्रेजीभाषामें	ब्लाकपेपर	Black Papper
लैटिनभाषामें	पाईपर नाइग्रम ।	Piper Nigrum
फारसीभाषामें	पिल पिले अस्वद हल पिलेगिर्द ।	
अरबीभाषामें	फिल फिलेअबीद ।	

अस्य गुणा ।

मरिचं कटुक तीक्ष्णं दीपनं कफवातजित् ।
उष्ण पित्तकरं रूक्षं श्वास शूलकृमीन्हरेत् ॥
तथार्द्रं मधुर पाके नात्युष्ण कटुक गुरु ।
किञ्चित्तीक्ष्णगुणं श्लेष्मप्रसेकि स्यादपित्तलम् ॥ (भा० प्र०)

अन्यच्च ।

अर्थ-कालीमिरच-चरपरी, तीक्ष्ण, अग्निको दीपन करनेवाली, कफ वातनाशक, गरम, पित्तजनक, रूखी तथा श्वास, शूल और कृमिको नष्ट करेहै । कच्ची कालीमिरच-पाकमें मधुर, किंचित् उष्ण, चरपरी, भारी, ईषत् तीक्ष्ण, कफको निकालनेवाली और पित्तकारक नहीं है ।

सितमरिचगुणा ।

कटूष्णं लघु तच्छुष्कमवृष्य कफवातजित् ।
नात्युष्ण नातिशीतञ्च वीर्यतो मरिच सितम् ॥
गुणवन्मरिचेभ्यश्च चक्षुष्यश्च विशेषतः ॥ (सुश्रुतसंहिता)

अर्थ-सफेद मिरच-चरपरी, गरम, हलकी, अवृष्य, कफ वातनाशक इसका वीर्य न अत्यन्त गरम है और न अत्यन्त शीतल है, इसके गुण काली मिरचके समान है, परन्तु विशेषकरके नेत्रोंको हितकारी है ।

अपिच ।

कटूष्ण श्वेतमरिचं विषघ्न भूतनाशनम् ।
अवृष्यं दृष्टिरोगघ्न युक्त चैव रसायनम् ॥ (रा० नि०)

अर्थ-सफेद मिरच-चरपरी, गरम, विषनाशक, भूतनाशक, अवृष्य, दृष्टिरोगविनाशक और किसीके साथ रसायन है ।

अन्यच्च-मरिचगुणा ।

मरिच कटुक तिक्तं लघु चोष्ण रुचिप्रदम् ।
अग्निदीप्तिकर तीक्ष्णमवृष्य छेदि शोषकम् ॥

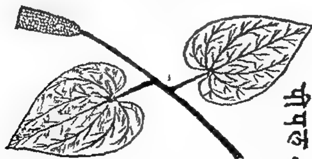
रूक्षं पित्तकरञ्चैव कफवातं कृमीञ्जयेत् ।
श्वासं कासञ्च हृद्रोग शूलं चैव विनाशयेत् ॥
प्रमेहं चार्शरोगञ्च पथ्य प्रोक्त पुराविदैः । (निघण्टुरत्नाकर)

अर्थ-कालीमिरच-कडवी, चरपरी, हलकी, गरम, रुचिदायक, अग्निप्रदीपक, तीक्ष्ण, अवृष्य, छेदक, शोषक, रूक्ष, पित्तकारक, तथा कफ, वात, कृमि, श्वास, खांसी, हृदयरोग, शूल, प्रमेह और बवासीरका नाश करेहै ।

कच्चीमिरचका सेक करनेसे सूजन दूर होतीहै, गायके घीके साथ पिसीहुई मिरचका व्यवहार करनेसे अर्शरोगका वियोग होता है । एक मिरचको सुईके नोकपर वेधकर उसको अग्नि अथवा दीपक लोहपै जलावे, उसका धुआँ सूँघनेसे हिचकी और शिरकी पीडा शान्त होतीहै । मिरचमे घी मिश्रितकर खानेसे अनेक प्रकारके नेत्ररोग विध्वस होतेहै ।

विवरण । मिरच लता दक्षिणदेशके त्रिवांकुर मलवारादिकी खादर उपजाऊ भूमिमे अधिकतासे उत्पन्न होतीहै, वहाँके रहनेवाले इसलताके छोटे छोटे टुकडे करके बडे बडे वृक्षोकी जडमे लगादेते है तीनवर्षमे लतापै फल आताहै फल पककर लाल होजाते है, परन्तु सूखजाने पर कालारग आजाताहै । शाक इत्यादिमे कालीमिरच मसाला होगईहै । लाल मिरचके पर्याय आगे लिखेहै ।

पिप्पलीनामानि ।



पिप्पली मागधी कृष्णा चपला चञ्चला कणा ।
उपकुल्या च कोल्या च वैदेही तिक्ततण्डुला ॥

अर्थ-पिप्पली, मागधी, कृष्णा, चपला, चञ्चला, कणा, उपकुल्या, कोल्या, वैदेही, तिक्ततण्डुला (उष्णा, शौण्डी, कोला, कटी, एरडा, मगधा,

ऊपणा, पिप्पली, कृकला, कटुबीजा, कोरङ्गी, तिक्ततण्डुला, श्यामा, सूक्ष्मतण्डुला, दन्तकफा, मगधोद्भवा)

संस्कृतभाषामें	पिप्पली
हिन्दीभाषामें	पीपल (र)
बंगभाषामें	पिपुल।
मराठीभाषामें	पिपळी।
गुजरातीभाषामें	लिंडिपीपल।
कर्णाटकीभाषामें	हिप्पली।
तैलिंगीभाषामें	पिप्पलु।
तामिलीभाषामें	पिपाल।
बर्म्	बङ्गालिपिम्परि।
इंग्रेजीभाषामें	लांगपाप्पर। Long pepper
लैटिनभाषामें	पाइपर लॉग। Piper Longum
फारसीभाषामें	पिलपिल दराज।
अरबीभाषामें	डारफिल, फिल्।

अस्या गुणाः।

पिप्पली दीपनी वृष्या स्वादुपाका रसायनी।
अनुष्णा कटुका स्निग्धा वातश्लेष्महरी लघुः॥
पिप्पली रेचनी हन्ति श्वासकासोदरज्वरान्।
कुष्ठप्रमेहगुल्मार्शःप्लीहशूलाममारुतान्॥
आर्द्रा कफप्रदा स्निग्धा शीतला मधुरा गुरुः।
पित्तप्रशमनी सा तु शुष्का पित्तप्रकोपिनी॥
पिप्पलीमधुसंयुक्ता मेदःकफविनाशिनी।
श्वासकासज्वरहरा वृष्या मेध्याग्निवर्धिनी॥
जीर्णे ज्वरेऽग्निमान्द्ये च शस्यते गुडपिप्पली।
कासाजीर्णारुचिश्वासहृत्पाण्डुकृमिरोगनुत्॥
द्विगुणः पिप्पलीचूर्णाद्गुडोऽत्रभिषजांमतः। (भा० प्र०)

अर्थ-पीपल अग्निको दीपन करनेवाली,वीर्यको उत्पन्न करनेवाली, पाकमे स्वादिष्ठ, रसायन, किञ्चित् उष्ण, चरपरी,स्निग्ध, वात-कफ नाशक, हलकी, दस्त लानेवाली तथा श्वास, कास, उदररोग,ज्वर, कुष्ठ, प्रमेह, गुल्म, (क्षयरोग) बवासीर, प्लीहा, शूल और आम वातका नाश करेहे ।

कच्ची पीपल-कफको उत्पन्न करनेवाली, स्निग्ध, शीतल, मधुर, भारी, पित्तको शान्त करनेवाली,और सूखी पीपल, पित्तको कुपित करनेवाली हे ।

मधुयुक्त पीपल-मेदरोग, कफ, श्वास, खॉसी और ज्वरनाशकहे, वीर्यवर्द्धक, मेधाजनक और अग्निवर्द्धक हे, गुडमिश्रित पीपल जीर्ण ज्वर, हृदयरोग, मदाग्नि, खॉसी, अजीर्ण, अरुचि श्वास, पाण्डुरोग और कृमिरोगका नाश करेहे ।

पीपलका चूर्ण और सोठका चूर्ण गुड मिलाकर खानेसे आम, शूल अजीर्ण और सूजन दूर होती हे ।

पीपलको नीमके रसमे उबालकर नास देनेसे अपस्माररोग दूर होताहे ।

पीपलके काढेमे सहत मिलाकर खानेसे वातज्वर और कफज्वर दूर होताहे ।

सहतमे पीपलका चूर्ण मिलाकर चाटनेसे मूर्च्छारोग दूर होताहे,

विवरण-पीपलकी बेल जगवार और मगधदेशमे अधिकतासे उत्पन्न होतीहे, इसके पत्ते नागवल्ली अर्थात् पानके समान होतेहे ।

पिप्पलीमूलनामानि।

मूलं तु पिप्पलीमूलं ग्रन्थिक चटका शिरः ।
कणामूलं कोलमूल चटिकासर्वग्रन्थिकम् ॥

अर्थ-मूल, पिप्पलीमूल, ग्रन्थिक, चटकाशिर,कणामूल, कोलमूल चटिका, सर्वग्रन्थिक, (ग्रथीक, षड्ग्रन्थि, शिर, कटुग्रन्थि, कटुमूल। कटूपण, सर्वग्रन्थि, पत्राढ्य, विरूप, शोषसम्भव, सुगन्धि, ग्रथिल, ऊषण, मागध, मागधी, जटा)

सस्कृतभाषामे	पिप्पली ।
हिन्दीभाषामे	पीपरा (ला) मूल ।
वङ्गभाषामे	पिपुलमूल ।
मराठीभाषामे	पिपळमूळ ।

गुजरातीभाषामें	पीपरीमूलना गंठोडा।
कर्णाटकीभाषामें	पिप्पलियवेरु।
तैलिङ्गीभाषामें	पिप्पली वेरुपिप्पलीदुम्प।
इङ्गरेजी भाषामें	पाईं पररूट Piper root
लैटिन्‌भाषामें	पाइपर ओफिसिनेरं Piper officinarum
फारसभाषामें	फिल्‌फिल् मोया।
आरबीभाषामें	असलुल् फिलफिल।

अस्य गुणाः।

दीपन पिप्पलीमूलं कटूष्णं पाचनं लघु।
रूक्षं पित्तकरं भेदि कफवातोदरापहम्॥
आनाहप्लीहगुल्मघ्नं कृमिश्वासक्षयापहम् (भा० प्र०)

अर्थ–पीपरामूल–जठराग्निको दीपन करे, चरपरा, गरम, पाचक, हलका, रूखा, पित्तकारक, भेदक तथा कफ, वात, उदररोग, आनाह, प्लीहा, गुल्म, कृमि, श्वास और क्षयरोगका नाश करे है।

अपिच।

भेदन पिप्पलीमूलं कासामशूलनाशनम्।
पित्तप्रकोपि तीक्ष्णोष्णं रूक्ष पाचनरोचनम्॥

अर्थ–पीपरामूल–दस्तावर, खांसी, आम और शूलनाशक है। पित्तको कुपित करे, तीक्ष्ण, उष्ण, रूक्ष, पाचक और रोचक है।

चविकानामानि।

चव्यं चवणमुच्छिष्टं चविकाकोलवल्लिका।

अर्थ–चव्य, चवण, उच्छिष्ट, चविका, कोलवल्लिका, (चव्या, चविक चवी, चवि, पुरन्दर, तेजोवती, कोला, नाकुली, उपणा, चव्यक, वशिर, गन्धनाकुली, वल्ली, कोलवल्लि, कोल कुक्कुटमस्तक, तीक्ष्णकरिकणावल्ली, कृकर, कुटिलसतक, कटुका, कटुपाकिनी)

संस्कृतभाषामें	चविका, चव्य।
हिन्दीभाषामें	चव्य।

बंगभाषामे	चंई गाच्छ।
मराठीभाषामे	मिरवेलीचे मूळ, चावळ।
गुजरातीभाषामे	चवक।
कर्णाटकीभाषामे	चव्य
तैलिंगीभाषामे	सेवासु, चैकाणं।
लटिन्भा०	चाविका, एक्स वर्धी आई पाइपरचव। Chavica Exwhrdhi Aye Piper Chava

अस्य गुणाः।

चव्य स्यादुष्णकटुकं लघुरोचनदीपनम्।
जन्तूद्रेकापहं कासश्वासशूलार्तिकृन्तनम्॥(राजनि०)

अर्थ-चव्य-गरम, चरपरी, हलकी, रोचक, जठराग्निप्रदीपक तथा कृमि, खासी, श्वास और शूलविनाशक है।

अपिच।

पिप्पलीमूलवत्तस्या विशेषाद्गुदजापहम्।
चव्यपुष्पं गरश्वासकासक्षयविनाशनम्॥ (म० नि०)

अर्थ-चव्यके गुण पिपलामूलके समान हैं, विशेषकरके गुदाके रोगोंको दूर करे है।

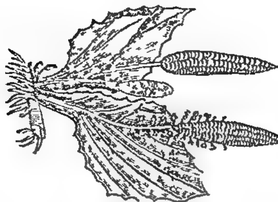
इसका मूल-विष, श्वास, खासी और क्षयरोगनाशक है।

अन्यच्च।

चवकं कटुकं चोष्णं रुच्यं चाग्नेश्च दीपनम्।
लघूक्तं च कृमिश्वासकासवातकफापहम्॥
ज्वरार्शःशूलशमनमृषिभिः परिकीर्तितम्।
अन्ये गुणास्तु विज्ञेयाः पिप्पलीमूलवद्बुधैः॥

अर्थ-चव्य-चरपरी, गरम, रुचिकारक, जठराग्निदीपक, हलकी तथा कृमि, श्वास, खाँसी, वादी, कफ, ज्वर, बवासीर और शूलका नाश करे है। शेष गुण पीपलामूलकी समान जानने चव्यकी वेल मलबारमें होतीहै, इसके फलको गजपीपर कहते हैं।

गजपिप्पलीनामानि ।



चविकायाः फलं प्राज्ञैः कथिता गजपिप्पली ।
कपिवल्ली कोलवल्ली श्रेयसी वशिरश्च सा ॥

अर्थ–चव्यके फलकोही भिषक् लोक गजपीपल कहते हैं। कपिवल्ली, कोलवल्ली, श्रेयसी, वशिर, गजकृष्णा, (करिपिप्पली, इभकणा, कपिवल्ली, कपिल्लिका, कपिवल्लिका, वसिर, गजाह्वा, इभोषणा, कुञ्जरपिप्पली, गजोषणा, चव्यफल, चव्यजा, छिद्रवैदेही, दीर्घग्रन्थि, तेजसी, वर्त्तुली स्थूलवैदेही)

संस्कृतभाषामे	गजपिप्पली ।
हिन्दीभाषामे	गजपीपल ।
वङ्गभाषामे	गजपिपुल ।
मराठीभाषामे	मोरवेलीला पिपळ्या यतात ती !
कर्णाटकीभाषामे	गजाहिप्पली ।
गुजरातीभाषामे	गजपीपर ।
तैलङ्गीभाषामे	पेद्दापिप्पलु ।
लैटिन्भाषामे	प्लेटेगोऍम्प्लक्सिकोलिस् सिन्डाप्सस् ऑफिसीनेलिस् Plantago Amplexicanlis Scindapsus Officinalis

अस्यागुणा ।

गजकृष्णा कटुर्वातश्लेष्महृद्वह्निवर्द्धिनी ।
उष्णा निहंत्यतीसारं श्वासकण्ठामयक्रिमीन् ॥

अर्थ–गजपीपल–चरपरी वातकफनाशक, अग्निवर्द्धक, गरम तथा अतिसार, श्वास, कण्ठरोग और कृमीका नाश करेहै ।

बंगभाषामें	चंई गाच्छ।
मराठीभाषामें	मिरवेलीचे मूळ, चावळ ।
गुजरातीभाषामें	चवक।
कर्णाटकीभाषामें	चव्य
तैलिंगीभाषामें	सेवामु, चेकार्ण।
लेटिन्भा०	चाविका, एक्स वर्धी आई पाइपरचव ! Chavica Exwhrdhi Aye Piper Chava

अस्य गुणाः ।

चव्यं स्यादुष्णकटुकं लघुरोचनदीपनम् ।
जन्तूद्रेकापहं कासश्वासशूलार्तिकृन्तनम् ॥(राजनि०)

अर्थ-चव्य-गरम, चरपरी, हलकी, रोचक, जठराग्निप्रदीपक तथा कृमि, खांसी, श्वास और शूलविनाशक है।

अपिच ।

पिप्पलीमूलवत्तस्या विशेषाद्गुदजापहम् ।
चव्यपुष्पं गरश्वासकासक्षयविनाशनम् ॥ (म० नि०)

अर्थ-चव्यके गुण पिपलामूलके समान हैं, विशेषकरके गुदाके रोगोंको दूर करे है।

इसका मूल-विष, श्वास, खांसी और क्षयरोगनाशक है।

अन्यच्च ।

चवकं कटुकं चोष्णं रुच्यं चाग्नेश्च दीपनम् ।
लघूक्तं च कृमिश्वासकासवातकफापहम् ॥
ज्वरार्शःशूलशमनमृषिभिः परिकीर्तितम् ।
अन्ये गुणास्तु विज्ञेयाः पिप्पलीमूलवद्बुधैः ॥

अर्थ-चव्य-चरपरी, गरम, रुचिकारक, जठराग्निदीपक, हलकी तथा कृमि, श्वास, खाँसी, वादी, कफ, ज्वर, बवासीर और शूलका नाश करे है। शेष गुण पीपलामूलकी समान जानने चव्यकी वेल मलबारमें होनीहै, इसके फलको गजपीपर कहते हैं।

गजपिप्पलीनामानि ।



चविकायाः फलं प्राज्ञैः कथिता गजपिप्पली ।
कपिवल्ली कोलवल्ली श्रेयसी वशिरश्च सा ॥

अर्थ–चव्यके फलकोही भिषक् लोक गजपीपल कहते हैं। कपिवल्ली, कोलवल्ली, श्रेयसी, वशिर, गजकृष्णा, (करिपिप्पली, इभकृष्णा, कपिवल्ली, कपिल्लिका, कपिवल्लिका, वसिर, गजाह्वा, इभोषणा, कुञ्जरपिप्पली, गजोषणा, चव्यफल, चव्यजा, छिद्रवैदेही, दीर्घग्रन्थि, तेजसी, वर्तुली स्थूलवैदेही)

संस्कृतभाषामें	गजपिप्पली ।
हिन्दीभाषामें	गजपीपल ।
बङ्गभाषामें	गजपिपुल ।
मराठीभाषामें	मोरवेलीला पिपळ्या यतात ती ।
कर्णाटकीभाषामें	गजाहिप्पली ।
गुजरातीभाषामें	गजपीपर ।
तैलङ्गीभाषामें	पेद्दापिप्पलु ।
लैटिन्भाषामें	प्लेंटेगोॲम्प्लक्सिकोलिस् सिन्डाप्सस् जौफिसोनेलिस् Plantago Amplexicaulis Scandapsus Officinalis

अस्यागुणा ।

गजकृष्णा कटुर्वातश्लेष्महृद्वह्निवर्द्धिनी ।
उष्णा निहंत्यतीसार श्वासकण्ठामयक्रिमीन् ॥

अर्थ–गजपीपल–चरपरी वातकफनाशक, अग्निवर्द्धक, गरम तथा अतिसार, श्वास, कण्ठरोग और कृमीका नाश करेहै ।

अपिच ।

गजोषणा कटूष्णा च रूक्षा मलविशोधिनी ।
वलासवातहन्त्री च स्तनकर्णविवर्द्धिनी ॥ (राजनि०)

अर्थ-गजपीपल-चरपरी, गरम, रूखी, मलशोधक, कफ वात नाशक, स्तन और कर्णवर्द्धक है ।

अन्यच्च ।

गजोषणा कटूष्णा च तीक्ष्णा मलविशोषिणी ।
वलासवातहंत्री च स्तनलिंगविवर्द्धिनी ॥

अर्थ-गजपीपर-चरपरी, गरम, तीक्ष्ण, मलशोषक तथा कफ, वातनाशक स्तन और लिङ्गवर्द्धक है ।

सैंहलीपिप्पलीनामानि ।

सैंहली सर्पदण्डा च सर्पाङ्गी ब्रह्मभूमिजा ।
पार्वती शैजामूलं लम्बवीजा तथोत्कटा ॥
अद्रिजा सिंहलस्था च लम्बदन्ता च जीवला ।
जीवाला जीवनेत्रा च कुरवी षोडशाह्वया ॥

अर्थ-सैंहली, सर्पदण्डा, सर्पाङ्गी, ब्रह्मभूमिजा, पार्वती, शैलजामूल, लम्बबीजा, उत्कटा, अद्रिजा, सिंहलस्था, लम्बदन्ता, जीवला, जीवाला, जीवनेत्रा, कुरवी ।

अस्या गुणाः ।

सैंहली कटुरुष्णा च जन्तुघ्नी दीपनी परा ।
कफश्वाससमीरार्त्तिशमनी कोष्ठशोधिनी॥(रा० नि०)

अर्थ-सिंहलीपीपल-चरपरी, गरम, कृमिनाशक, जठराग्निको दीपन करनेवाली तथा कफ, श्वास और वातकी पीडाकी शान्ति करनेवाली और कोठेको शुद्ध करे है ।

वनपिप्पलीनामानि ।

वनादिपिप्पल्यभिधानयुक्तं सूक्ष्मादिपिपल्यभिधानमेतत् ।
क्षुद्राचपिप्पल्यभिधानयोग्यं वनाभिधापूर्वकणाभिधानम्॥

अर्थ-वनपिप्पली, सूक्ष्मपिप्पली, क्षुद्रपिप्पली, वनकणा ।

अस्या गुणाः ।

वनपिप्पलिका चोष्णा तीक्ष्णा रुच्या च दीपनी ।
आमा भवेद्गुणाढ्या तु शुष्का स्वल्पगुणा स्मृता ॥ (रा०नि०)

अर्थ-वनपीपल-गरम, तीक्ष्ण, रुचिकारक और अग्निप्रदीपक है, कच्ची वनपीपल अधिक गुणवाली है और सूखी स्वल्पगुणवाली है।

मर्कटीपिप्पलीगुणाः ।

मर्कटीपिप्पली तिक्तातुवरासुरसा स्मृता ।
मूत्रकृच्छ्राश्मरीयोनिशूलविस्फोटकाञ्जयेत् ॥ (नि० र०)

अर्थ-वानरीपीपल-कडवी, कषेली, स्वादिष्ठ तथा मूत्रकृच्छ्र, पथरी, योनिशूल और विस्फोटकका नाश करेहै ।

चित्रकनामानि ।



चित्रकोऽनलनामा च पाठी व्यालस्तथोषणः ।

अर्थ-चित्रक, अनलनामा, पाठी, व्याल, ऊषण, (कृष्णवर्त्मा, जातवेदा, बर्हि, विभाकर, विभावसु, बृहद्भानु, वैश्वानर, शिखावान्, शुचि, शुष्मा, सप्तार्चि, हिमाराति, हिरण्यरेता, अग्नि, शार्दूल, चित्र, पाठी, कुट, शिखी, कृशानु, दहन, व्याल, ज्योतिष्क, पालक, अनल, दारुण, वह्नि, पावक, शम्बर, द्वीपी, चित्राङ्ग, दाहक, शूर, पाठीन, दारुण, अग्निक, वल्लरी, पाली, कुट, शिखी, लोहिताङ्ग, हुतभुक्, माली, वह्नि, पाची, वह्निनामा)

रक्तचित्रकनामानि ।

कालो व्यालःकालमूलोतिदीप्योमार्जारोग्निर्दाहकःपावकश्च ।
चित्राङ्गोयरक्तचित्रोमहाङ्गःस्याद्रुद्राह्वश्चित्रकोन्यो गुणाढ्यः ॥

अर्थ-काल, व्याल, कालमूल, अतिदीप्य, मार्जार, अग्नि, दाहक, पावक, चित्राङ्ग, रक्तचित्र, महाङ्ग (रक्तचित्रक, उपर्बुधाह्वय, द्वयाग्नि, पाठी, ह्रस्वाग्नि)

संस्कृतभाषामें	चित्रक रक्तचित्रक ।
हिन्दीभाषामें	चीता, लालचीता ।
बंगभाषामें	चितेगाछ, रक्त चिते, चिता ।
मराठीभाषामें	चित्रक, रक्तचित्रक ।
कर्णाटकीभाषामें	चित्रमूल केंपिनचित्रमूल ।
तैलिंगीभाषामें	चित्रमूलमु, एर्रचित्र ।
तामिलीभाषामें	शिवपु, चित्तिर ।
उर्दू	सुर्खचिता, रक्तचिता ।
गुजरातीभाषामें	चित्रो ।
लेटिन्भाषामें	प्लंबेगोरोझिया-प्लंबेगोझिलेनिका । Plumbago rosea Plumbago Zeylanica
फारसीभाषामें	बेरावरदा ।
अरबीभाषामें	शितरज्ञ ।
इंग्रेजीभाषामें	पलविगोकोरुलेप्सो ।

अस्य गुणाः ।

चित्रकः कटुकः पाके वह्निकृत्पाचनो लघुः ।
रूक्षोष्णो ग्रहणीकुष्ठशोफार्शःकृमिकासनुत् ॥
वातश्लेष्महरो ग्राही वातार्शश्लेष्मपित्तहृत् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-चीता-पाकमें चरपराहै, अग्निकारक, पाचक, हलका, रूखा, गरम तथा संग्रहणी, कोढ, सूजन, बवासीर, कृमि, खाँसी और वात कफका नाश करेहै । ग्राही है तथा वादीकी बवासीर, और कफपित्तको दूर करेहै ।

अन्यच्च ।

चित्रकः पाचको रूक्षो लघुश्चाग्निप्रदीपनः ।
पाके कटुर्ग्राहकश्च तिक्तोष्णो रुचिदो मतः ॥
रसायनोग्निसदृशः शोथकुष्ठार्शकासहा ।
कृमीन्वातोदर कण्डू यकृतं ग्रहणी तथा ॥

आमं क्षयं चोदरं च नाशयेदिति कीर्तितः।
कटुत्वात्कफहा प्रोक्तस्तिक्तत्वात्पित्तनाशकः॥
उष्णत्वाद्वातहा प्रोक्तो मुनिभिस्तत्त्वदर्शिभिः॥(नि० र०)

अर्थ–चीता–पाचक, रूखा, हलका, अग्निदीपक, पाकके समय चरपरा, ग्राही, कडुवा, गरम, रुचिदायक, रसायन, अग्निकी समान पराक्रमी तथा सूजन कोढ, ववासीर, खांसी, कृमि, वातोदर, कण्डू, यकृत, संग्रहणी, आम, क्षय और उदररोगका नाश करेहै।

यह चरपरेपनसे कफका, कडवेपनसे पित्तका और उष्णतासे वातका नाश करेहै, इसप्रकार चीता त्रिदोषनाशक है।

रक्तचित्रकगुणा।

स्थूलकायकरो रुच्यः कुष्ठघ्नो रक्तचित्रकः।
रसे नियामको लोहे वेधकश्च रसायनः॥(रा० नि०)

अर्थ–लालचीता–देहको स्थूल करनेवाला, रुचिकारी, कुष्ठनाशक, पारेको बांधनेवाला, लोहेमे वेध करनेवाला, रसायन और शरीरको नूतन करेहै।

कृष्णचित्रकगुणा।

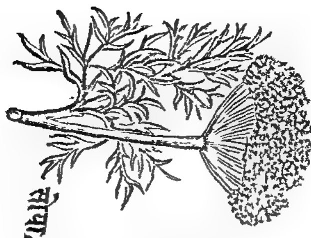
केशाः कृष्णाः प्रजायन्ते कृष्णचित्रकभक्षणात्।
कृष्णकृष्णं समुत्पाट्य गोभिराघ्रातमेव वा॥
क्षीरमध्ये क्षिपेद्वापि क्षीरं कृष्णं प्रजायते।

अर्थ–कालेचीतेको भक्षण करनेसे केशकाले होजातेहैं, गायके सूंघे हुए काले चीतेको लाकर दूधमे डालनेसे दूध काला होजाता है।

विवरण। क्षुप होताहै, चीतेकी अनेक जातीहै, सफेद फूलका, लाल फूलका, काले फूलका, पीले फूलका, इनमे सफेद फूलका सर्वस्थानोमे होताहै और लालफूलवाले तथा और फूलके चीते देखनेमे बहुत कम आतेहै।

व्यवहार–मूल, मूलकी छाल, छाल मात्रा ४ रत्तीकी।

शतपुष्पानामानि ।



शताह्वा शतपुष्पा च शताक्षी शतपुष्पिका ।
कारवी तालपर्णी च माधवी शोफका मिसिः ॥

अर्थ-शताह्वा, शतपुष्पा, शताक्षी, शतपुष्पिका, कारवी, तालपर्णी, माधवी, शोफका, मिसि (घोषा, शिफा, अतिच्छत्रा, अवाक्पुष्पी, छत्रा, सघातपत्रिका, वज्रपुष्पी, सुपुष्पिका, शतप्रसूना, बहला, पुष्पाह्वा, शतपत्रिका, शालेय, मिशी, सालेय, मिशी, पोति, अहिच्छत्रा, सघातपत्रिका, छत्रा, तालपर्णी, मिषी, शालेया, शीतशिवा, शालीना, वजना और अतिच्छत्रा)

संस्कृतभाषामें	शतपुष्पा ।
हिन्दीभाषामें	सोया-सोयेके बीज ।
बंगभाषामें	शुलुफा ।
मराठीभाषामें	बाळतशोप ।
गुजरातीभाषामें	शुवानी भाजी-शवादाणा ।
कर्णाटकीभाषामें	सब्बसिगे ।
तैलिङ्गीभाषामें	पेद्दसदापचेट्टु-सद्दापा ।
इंग्रेजीभाषामें	डिलसीड् । Dillse_d
लेटिनभाषामें	एनिथ ग्रेवीयोलेन्स Anithum Gaveolens
फारसीभाषामें	शुत-तुख्मेशूत ।
अरबीभाषामें	शीतव्वत वजरुल सीव्वत ।

शतपुष्पागुणा ।

शतपुष्पालघु स्तीक्ष्णा पित्तकृद्दीपनी कटुः ।
उष्णा ज्वरानिलश्लेष्म व्रणशूलाक्षिरोगहृत् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-सोया हलका, तीक्ष्ण, पित्तजनक, जठराग्निको दीपन करनेवाला, चरपरा, गरम तथा ज्वर, वात, कफ, व्रण, शूल और नेत्ररोगोको हरेहै ।

अपिच ।

शतपुष्पा कटुस्तिक्ता तीक्ष्णोष्णा दीपनी लघुः ।
पित्तला कफवातघ्नी विशेषाद्योनिशूलनुत् ॥ (रा० नि०)

अर्थ-सोया-चरपरा, कडवा,तीक्ष्ण, गरम, अग्निप्रदीपक,हलका, पित्तकारक कफ वातनाशक और विशेष करके योनिशूलका नाश करेहै ।

अन्यच्च ।

शताह्वा पित्तला लघ्वी तिक्ता कट्वग्निदीपनी ।
उष्णा मेध्या वस्तिकर्मप्रशस्ता कफनाशिनी ॥
वातं ज्वरञ्चशूलञ्च योनिशूलञ्चनाशयेत् ।
आध्मानं च क्षुरोगञ्च व्रण चैव विनाशयेत् ॥

अर्थ-सोया-पित्तजनक, हलका, कडवा, चरपरा, अग्निदीपक, गरम, मेधाजनक, वस्तिकर्ममे प्रशस्त तथा कफ, वात, ज्वर, शूल, योनिशूल, आध्मान, नेत्ररोग, व्रण और कृमिका नाश करेहै ।

अस्या आकृति ।

शतपुष्पा सूक्ष्मपत्रापीतपुष्पातिछत्रका ।
प्रसिद्धा क्षेत्रविख्याता दीपनोक्ता महर्षिभिः ॥

अर्थ-सोयेके पत्ते सूक्ष्म होतेहै, फूल पीला होताहै, छत्र बहुत होतेहै, खेतमे उत्पन्न होतीहै और प्रसिद्धहै तथा दीपनहै ।

मधुरिकानामानि ।

सिता मधुरिका चापि माधुरी तापसप्रिया ।
गन्धाधिका घोषवती सुगन्धा च तृपाहरा ॥

अर्थ-सिता-मधुरिका, माधुरी, तापसप्रिया, गन्धाधिका, घोषवती, सुगन्धा, तृपाहरा, (छत्रा, शालेय, शालीन, मिश्रेया, मधुरा, मिसी, शीतशिवा, सुपुष्पिका, शतप्रसूना, पुष्पाह्वा, मिशी, घोषा,

पोतिका, अहिच्छत्रा, माधवी, कारवी, सघातपत्रिका, अवाक्पुष्पी, तालपर्णी, मङ्गल्या, शतपत्रिका, वनपुष्पा, भूरिपुष्पा, मधुरी और शतपुष्पा)

संस्कृतभाषामे	मधुरिका, शतपुष्पा, मिश्रेया।	
हिन्दीभाषामे	सौंफ।	
वगभाषामे	मौरी।	
मराठीभाषामे	बडीशोफ।	
गुजरातीभाषामे	वरियाली।	
कर्णाटकीभाषामे	कासछासिगे।	
तैलिङ्गीभाषामे	पेद्दाजिल कुरह सौंफ।	
तामिलीभाषामे	सोंहि किरे।	
इंग्रेजीभाषामे	फेनल्सीड।	Fennel Seed
लैटिन्भाषामे	फिनिक्युलमवल्गेरे।	Fæniculum Vulgare
फारसीभाषामे	बादियान।	
अरबी भाषामे	एजियानज, असलुल एजियासज।	

अस्या गुणा।

शतपुष्पा तु मधुरा वातपित्तहरा गुरुः। (राजवल्लभ)

अर्थ-सौंफ-मधुर, वात-पित्तनाशक और भारीहै।

अपिच।

शतपुष्पा त्रिदोषघ्नी मेध्या पथ्या रुचिप्रदा।(आत्रेयसंहिता)

अर्थ-सौंफ-त्रिदोषनाशक, मेधाजनक, पथ्य और रुचिको उत्पन्न करे है।

अन्यच्च।

माधुरी कटुका पाके स्त्रीणा गर्भप्रदा सरा।
तिक्ता कट्वी च मधुरा वृष्या चाग्निप्रदीपनी॥
वातं ज्वर च शूल च दाह नेत्ररुज तृषाम्।
व्रणं वान्तिमतीसारमामं चैव विनाशयेत्॥((वै० नि०)

अर्थ-मधुरिका अर्थात् सौंफ पचनेमे चरपरी, गर्भदायक, सारक, कडवी, चरपरी, मधुर, वीर्य्यजनक, अग्निप्रदीपक तथा वात, ज्वर, शूल, दाह, नेत्ररोग, पियास, घाव, अतिसार और आमका नाश करे है।

अन्यच्च।

मिश्रेया मधुरा स्निग्धा कटुः कफहरा परा।
वातपित्तोत्थदोषघ्नी प्लीहजन्तुविनाशिनी ॥(राजनिघंटु)

अर्थ-सौंफ-मधुर, स्निग्ध, चरपरी, कफनाशक तथा वातपित्तके दोष, प्लीहा और कृमिको दूर करेहै।

अपि च।

मिश्रेया रोचनी वृष्या दाहपित्तास्रनाशिका।

अर्थ-सौंफ-रुचिकारी, वीर्यजनक, तथा दाह और रक्तपित्तका नाशकरे है।



अस्या जलगुणा।

तज्जलं शीतलं रुच्यं कटुदीपनपाचनम्।
मधुरं तृड्डृद्भ्रान्तिपित्तदाहं च नाशयेत् ॥ (वि० ति० भा०)

अर्थ-सौंफका अर्क-शीतल, रुचिकारक, चरपरा, अग्निको दीपन करनेवाला, पाचक, मधुर तथा तृष्णा, वमन, पित्त और दाहको दूर करे है। इसके क्षुप सोयेकी समान खेत और बागोमे होते है।

मेथिकानामानि।

मेथिका मेथिनी मेथी दीपनी बहुपत्रिका।
वेधनी गन्धबीजा च ज्योतिर्गन्धफला तथा ॥
वल्लरी चन्द्रिका मन्था मिश्रपुष्पा च कैरवी।
कुञ्चिका बहुपर्णी च पीतबीजा मुनीन्द्रिका ॥

अर्थ-मेथिका, मेथिनी, मेथी, दीपनी, बहुपत्रिका, वेधनी, गन्ध-

बीजा, ज्योति, गन्धफला, वल्लरी, चन्द्रिका, मन्था, मिश्रपुष्पा, कैरवी, कुञ्चिका, बहुपर्णी, पीतबीजा, मुनीन्द्रिका ।



संस्कृतभाषामें	मेथिका ।
हिन्दी भाषामें	मेथी ।
वङ्गभाषामें	मेथी ।
मराठी भाषामें	मेथी ।
गुजराती भाषामें	मेथी ।
कर्णाटकीभाषामें	मेथपक ।
तैलङ्गीभाषामें	मेन्तु ।
तामिलीभाषामें	वेन्डयम् ।
इङ्ग्रेजीभाषामें	फेनुग्रीक । Fenugreek
लेटिन्भाषामें	ट्राइगोनेला फेनग्रिकम् Trigonella Faln um greccum
फारसीभाषामें	तुख्मे शमलीत ।
अरबीभाषामें	बजरुल् हुल्वा ।

अस्या गुणाः ।

मेथिका वातशमनी श्लेष्मघ्नी ज्वरनाशिनी ।
ततः स्वल्पगुणा वन्या वाजिनां सा तु पूजिता ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-मेथी-वातको शांति करे, कफ और ज्वरका नाश करेहै, वनमेथी इसकी अपेक्षा स्वल्प गुणवाली है और घोडोंकेलिये अत्यन्त हितकारक है ।

अपिच ।

मेथिका कटुरुष्णा च रक्तपित्तप्रकोपिनी ।
अरोचकहरा दीप्तिकरी वातप्रदीपिनी ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ-मेथी-चरपरी, गरम, रक्तपित्तनाशक, अरुचिहारक, दीप्ति-कारक, वातविनाशक और अग्निको दीपन करे है।

अन्यच्च।

मेथिका कटुका चोष्णा रक्तपित्तप्रकोपनी।
दीपनी च रसे तिक्ता मलावष्टम्भिका लघुः॥
रूक्षा हृद्या बलकरी ज्वरारोचकवान्तिहा।
वातरक्त कफ कासं वातमर्शं कृमीन्क्षयम्॥
शुक्रं च नाशयत्येषा प्रोक्ता पूर्वचिकित्सकैः। नि.र.

अर्थ-मेथी-चरपरी, गरम, रक्तपित्तको कुपित करनेवाली, दीपन, रसमे कडवी, मलावष्टम्भक, हलकी, रूखी, हृदयको हितकारी, बलकारक तथा ज्वर, अरोचक, वमन, वातरक्त, कफ, खाँसी, वादी, बवासीर, कृमि और शुक्रका नाश करेहै।

अन्यच्च।

मेथिका वातशमनी वेजिका वातला मता।

अर्थ-मेथी-वातको शान्त करेहै और वनमेथी वातको उत्पन्न करेहै मेथी खेतोमे बोईजाती है, फूल पीला होताहै और कली आती है।

चन्द्रशूरनामानि।

चन्द्रिका चर्महन्त्री च पशुमेहनकारिका।
नन्दिनी कारवी भद्रा वासुपुष्पा सुवासरा॥

अर्थ-चन्द्रिका, चर्महन्त्री, पशुमेहनकारिका, नन्दिनी, कारवी, भद्रा, वासुपुष्पा, सुवासरा, (अशालिक, कालमेषा, दरकृष्ण, दीर्घ-बीज, रक्तराजी, सिद्धमयोजना)

संस्कृतभाषामे	चन्द्रशूर, अशालिम।	
हिन्दीभाषामे	हालो हालिम।	
मराठी भाषामे	आहाळीव।	
गुजराती भाषामे	अशेलियो।	
बंग भाषामे	हालिम।	
इंग्रेजीभाषामे	कामन् क्रेस्।	Common cress
लैटिनभाषामे	लेपिडियं, सेटाइवम्।	Lepidium Sativum

फारसी भाषामे हालमतुख्मतरातेजक।
अरबीभाषामे हवुररशाद, हाकम, वजरुलजिरजिर।

अस्या गुणा ।

चन्द्रशूरं हितं हिक्कावातश्लेष्मातिसारिणाम् ॥
असृग्वातगदद्वेपि बलपुष्टिविवर्द्धनम् ॥(भावप्रकाश)

अर्थ-हालो-वात, कफ, अतिसार और वातरोगका नाश करेहै, तथा बल और पुष्टिवर्द्धक है ।

अपिच ।

दरकृष्णो वातशूलगुलमघ्न· स्तन्यपुष्टिकृत् ।
बल्यो वाजीकरः पानाल्लेपाच्छोणितशूलनुत्॥ (शो॰नि॰)

अर्थ-हालो-वात, शूल और गुल्मनाशक हैं, स्तनोमे दूध बढानेवाला है, बलकारक, वाजीकरणकारक, इसको पानीमे पीसकर पीनेसे तथा इसका लेपकरनेसे रुधिरविकार और शूल नष्ट होता है।

अन्यच्च ।

अहालिम मत चोष्णं तिक्त त्वग्दोषनाशनम् ।
वातं गुल्मं नाशयतीत्येव प्रोक्तं चिकित्सकैः॥ (नि॰र॰)

अर्थ-हालो-गरम, कडवा, त्वचाके दोषोका नाश करै तथा वात और गुल्मनाशक है ।

अपिच।

अभिघातरुजं हन्ति सदुग्धो हरकृष्णकः ।
त्वग्दोषान्वातरोगांश्च नेत्ररोगान्सशोणितान्॥(वै॰ नि॰)

अर्थ-दुग्धयुक्तहालो-अभिघातरोग, त्वचाके रोग, वातरोग, नेत्ररोग और रुधिरविकारोको दूर करै है इसका सरसोकी समान क्षुप होताहै, फूल नीले रगका होताहै । मात्रा ६ मासेकी ।

यवानीनामानि ।



यवानी दीप्यको दीप्यो भूतिकश्च यवानिका ।
यवाग्रजोग्रगन्धा च यवाह्वा भूकदंबकः ॥

अर्थ- यवानी, दीप्यक, दीप्य, भूतिक, यवानिका, यवाग्रज, उग्रगन्धा, यवाह्वा, भूकदम्बक (ब्रह्मदर्भा, क्षेत्रयवानिका, यवसाह्व, दीपनी, दीपिनी, वातारि, यवजदीपनीय, शूलहंत्री, यमानिका, उग्रा, तीव्रगन्धा, अजमोदिका, तीक्ष्णगन्धा, हृद्या, अग्निवर्धिनी, भूमिकदम्बक और अजमोदा)

संस्कृतभाषामे	यवानी ।
हिन्दीभाषामे	अजवाइन । अजमान ।
वंगभाषामे	यमानी योयान् ।
मराठीभाषामे	ओवा ।
गुजरातीभाषामे	अजमा ।
कर्णाटकीभाषामे	ओड, उंडु ।
तैलिङ्गीभाषामे	वामु । ओममी ।
तामिलीभाषामे	अमन ।
इंग्रेजीभाषामे	बिशप्स विडसीड Bishops Weed Seed
लैटिन्भाषामे	केरं कोपटिकम् टेकोटिस्अजवान् । Carum Copticum Ptychotis
फारसीभाषामे	नानुखा ।
अरबीभाषामे	कमूनमुलूकी ।

यमानीगुणा ।

यवानी पाचनी रुच्या तीक्ष्णोष्णा कटुका लघुः ।
दीपनी च तथा तिक्ता पित्तला शुक्रशूलहृत् ॥
वातश्लेष्मोदरानाहगुल्मप्लीहकृमिप्रणुत् । (भावप्रकाश)

अर्थ-अजवायन- पाचक, रुचिकारक, तीक्ष्ण, उष्ण, चरपरी, हलकी, दीपन, कडवी, पित्तवर्धक तथा शुक्र, शूल, वात, कफ, उदररोग, आनाह, गुल्म, प्लीहा और कृमिका नाश करेहै ।

अपिच ।

यवानी कटुतिक्तोष्णा वातार्शःश्लेष्मनाशिनी ।
शूलाध्मानकृमिच्छर्दिमर्दिनी दीपनी परा ॥ (रा० नि०)

अर्थ-अजवायन-चरपरी, कडवी, गरम तथा वातकी ववासीर, कफ, शूल, आध्मान, कृमि और वमनको दूर करेहै और परम दीपन है।

अन्यच्च

यवानी कुष्ठशूलघ्नी हृद्या पित्ताग्निवर्द्धिनी ।

अर्थ-अजवायन-कोढ और शूलनाशक है, हृदयको हितकारी है, पित्त तथा अग्निवर्द्धक है।

अपिच।

यवानी कटुका तिक्ता रुच्या चोष्णाग्निदीपनी ।
पाचनी पित्तला तीक्ष्णा लघुहृद्या च सारिका ॥
वृष्या वाताशकफरुक्शूलाध्मानवमिक्रुमीन् ।
शुक्रदोषोदरानाहहृद्रोगप्लीहगुल्मकान् ॥
द्वंद्वरोगामवातांश्च नाशयेदिति कीर्तिता । (नि० र०)

अर्थ-अजवायन-चरपरी, कडवी, रुचिकारक, गरम अग्निदीपक, पाचक, पित्तजनक, तीक्ष्ण, हलकी, हृदयको हितकारी, सारक, वीर्यजनक तथा बादीकी ववासीर, कफ, शूल, अफारा, वमन, कृमि, शुक्रदोष, उदररोग, आनाह, हृदयरोग, प्लीहा, गुल्म, द्वन्द्वजरोग और आमवातका नाश करेहै।

अजमोदानामानि ।

अजमोदा खराश्वा च मयूरो दीप्यकस्तथा ।
तथा ब्रह्मकुशा प्रोक्ता कारवी लोचमस्तकः ॥

अर्थ-अजमोदा, खराश्वा, मयूर, दीप्यक, ब्रह्मकुशा, कारवी, लोचमस्तक, (खराह्वा, वस्तमोदा, उग्रगन्धा, मर्कटी, मोदा, गन्धदला, हस्तिकावरी, अन्धपात्रिका, मायूरी, शिखिमोदा, मोदाढ्या, वह्निदीपिका, ब्रह्मकोशी, विशाली, हयगन्धा, उग्रगंधिका, मोदिनी, फलमुख्या और विशल्या)

संस्कृतभाषामें	अजमोदा ।
हिन्दीभाषामें	अजमोद ।
वंगभाषामें	वनयमानी, वनयुयान, वनयोयान्, वनजैन ।
मराठीभाषामें	अजमोदा ।

गुजरातीभाषामे	वोडीअजमोद।
कर्णाटकीभाषामे	अजमोदा।
तैलिङ्गीभाषामें	आजमोदा, वामं।
लैटिन्‌भाषामें	एप्यंग्रेवियोलेन्स Apium Graveolens
इंग्रजीभाषामे	सेलेरीसीड Celery seed
फारसीभाषामे	करपस।
अरवीभाषामे	हवुलकर्जुकेरफस।

अस्या गुणाः।

अजमोदा कटुस्तीक्ष्णा दीपनी कफवातनुत्।
उष्णा विदाहिनी हृद्या वृष्या वलकरी लघुः॥
नेत्रामयकफच्छर्दिहिक्कावस्तिरुजो हरेत् (भा० प्र०)

अर्थ—अजमोद—चरपरा, तीक्ष्ण, जठराग्निप्रदीपक, कफवातनाशक, गरम, दाहजनक, हृदयको हितकारी, वीर्यवर्द्धक, वलकारक, हलका तथा नेत्ररोग, कफ, वमन, हिचकी और वस्तिरोगका नाश करेहै।

अपिच।

अजमोदा कटुरुष्णा रूक्षा कफवातहारिणी रुचिकृत्।
शूलाध्मानारोचकजठरामयनाशिनी चैव॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ—अजमोद—चरपरा, गरम, रूखा, कफवातनाशक, रुचिकारक तथा शूल, अफारा, अरोचक और उदररोगका नाश करेहै।

अन्यच्च।

अजमोदो रुचिकरो दीपकः कटुरूक्षकः।
उष्णो विदाही हृद्यश्च वृष्यो वलकरो लघुः॥
तिक्तो मलस्तम्भकरो ग्राहकः पाचकः स्मृतः।
आध्मानशूलकफहृद्वातो रोचकनाशनः॥
उदराणि कृमींश्चैव वान्ति नेत्ररुजं जयेत्।
वस्तिशूलं दन्तरोगं गुल्मशुक्ररुज तथा॥ (नि० र०)

अर्थ—अजमोद—रुचिकारक, दीपन, चरपरा, रूखा, कडवा, मल-

स्तम्भक, उदरके रोग, कृमि, वमन, नेत्ररोग, वस्ति,शूल, दन्तरोग, गुल्म और (वीर्यके विकारको दूर करेहै ।)

पारसीकाजमोदानामानि ।

यवानीया यवानी स्याच्चोहारो जन्तुनाशनः ।
पारसी यावनी गन्धा छारश्च खरपुष्पिका ॥

अर्थ-यवानीया, यवानी, चोहार,जन्तुनाशन, पारसी, यावनी, गन्धा, छार, खुरपुष्पिका ।

संस्कृतभाषामे	पारसी ।
हिन्दीभाषामे	छुहरी अजवाइन, छुहारी अजमोद ।
मराठीभाषाभे	किरमाणीओवा, खुरवदींचे फूल।
गुजरातीभाषामे	छुवारी अजमोद, करमाणी दनेची ।
लैटिन्भाषामे'	आर्टिमिस्या,मेरिटिमा Artimisia maritema
फारसीभाषामे	तुख्मइप्स।

अस्या गुणा ।

पारसीकयवानी तु तिक्तोष्णा कटुतीक्ष्णा ।
अग्निदीप्तिकरी वृष्या लघ्वी चैव प्रकीर्त्तिता ॥
त्रिदोषाजीर्णकृमिनुच्छूलामस्य च नाशिनी ।
विशेषात्तु गुणास्त्वन्ये यवानीव प्रकीर्तिताः ॥ (नि० र०)

अर्थ-छुहारी अजवायन-कडवी, गरम,चरपरी,तीक्ष्ण,अग्निको दीपन करनेवाली, वीर्य्यजनक, हलकी तथा त्रिदोष,अजीर्ण,कृमि, शूल और आमको नष्ट करे है, शेष गुण अजवानयकी समान है इसका वृक्ष होताहै । पत्ते गुलदाउदीकी समान होतेहै । फूल बारीक होताहै ।

खुरासानी यवानीनामानि ।

यवानी यावनी तीव्रा तुरुष्का मदकारिणी ।
दीप्य श्यामः कुबेराख्यो मादको मदकारकः ॥

अर्थ-यवानी, यावनी,तीव्रा,तुरुष्का,मदकारिणी, दीप्य, श्याम कुबेराख्य, मादक, मदकारक ।



संस्कृतभाषामें	खुरसानी, पारसीक यवानी
हिन्दीभाषामें	खुरासानी, अजवायन ।
वङ्गभाषामें	खुराशानी, योयान् (यमानी)
मराठीभाषामें	खुरासाणी, ओवा, खुरसाण ।
गुजरातीभाषामें	खुरसाणी, अजमा ।
तैलिङ्गीभाषामें	खुरसाण वामु ।
वों०	खोरसनी, उभा ।
तामिलीभाषामें	खोरसनी, ओनाम शिह्रासुट्टि ।
अँग्रेजीभाषामें	हेनबेन । Henbane
लैटिन्भाषामें	हायो श्यामस् नाईजर HyoscyamusNiger
फारसीभाषामें	बंज, तुख्मबंजे ।
अरबीभाषामें	बजरुल बज, अबीद शीकरान् ।

अस्या गुणाः ।

खुरासानी यवानी तु यवानीसदृशा गुणैः ।
विशेषात्पाचनी रुच्या ग्राहिणी मादिनी गुरुः ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-खुरासानी अजवायनके गुण अजवायनके समान हैं, किन्तु विशेष करके पाचक है, रुचिकारी है, ग्राही, मदकारक और भारी है।

अपिच ।

खुरासानी यवानी तु कटुरूक्षा च पाचिका ।
ग्राहिकोष्णा मादिका च गुर्वी वातकरी मता ॥
कफनाशकरी प्रोक्ता गुणास्त्वन्ये यवानिवत् ।

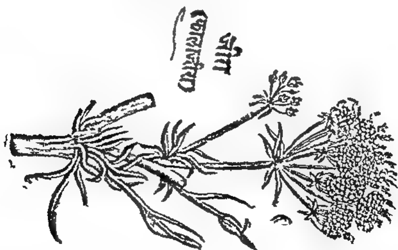
अर्थ-खुरासानी अजवायन-चरपरी, रूखी, पाचक, ग्राही, गरम, नशा करनेवाली, भारी, वातकारक और कफनाशक है, शेष गुण अजवायनके समान है ।

विवरण । इसका क्षुप यूरोप और ऐशियाके महाद्देशोंमें उत्पन्न होता है आजकल सहारनपुरकी ओर अधिकतासे इसकी खेती होतीहै पत्ते पहिले होतेहैं । व्यवहार- पत्ते और बीज ।

यह बीज ½ ड्राम १ ड्राम पोस्त, मधु और जलके साथ मिलाकर शरदी वातादि रोगोंमें दिये जाते हैं। काबुलमें इसके बीज घोडी के दूधके साथ पीसकर भैंसके चमडेमें लगाकर पेटके उपर बांधले तो गर्भ पट होजाता है, यह कहावत यहांपर बराबर चली आतीहै ।

इसके पत्तोंका अर्क जौके आटेमें मिलायकर उसकी पुटली करे तो छाला तथा उसकी पीडा दूर होजायगी । एक बूंद इसको आंखमें लगानेसे आँखकी पीडा जातीरहतीहै ।

साधारणजीरकनामानि ।



अजाजी जीरको जीरो दीप्यको जरणा कणा ।

अर्थ-अजाजी, जीरक, जीर, दीप्यक, जरणा, कणा (जीर्ण, दीप्य, जीरण, अजाजिका, वह्निसख, मागध, दीपक)

गौरजीरकनामानि ।

शुक्लाजाजी कणा ख्याता दीर्घकः कणजीरकः ।

अर्थ-शुक्लाजाजी, कणा, दीर्घक, कणजीरक, (अजाजी, गौरजीरक, श्वेतजीरक, कणाह्वा, कणजीर, मितदीप्य,दीर्घकणा,मिताजाजी, गौराजाजी)

संस्कृतभाषामे	जीरक, सितजीरक ।
हिन्दीभाषामे	जीरा, सफेदजीरा ।
वंगभाषामे	जीरे, सादाजीरे ।
मराठीभाषामे	जिरे, पांढरे जिरे ।
गुजराती भाषामे	शाकनु जीरुं । सादुजीरु ।
कर्नाटकीभाषामें	जिरिगे, विलियजीरिगे ।
तैलिङ्गीभाषामे	जिलकारा, जीलकरर ।
	क्युम्मिन्, सीड । Cummin seed
	क्युमिनमसे मिनम् Cumminum Cpminum
	जीरा ।
	कमुन् ।
	रवामुन् ।

सामान्यजीरकगुणा ।

गश्च वातहृद्दीपनः परः ।
ारघ्नोग्रहणीकृमिहृत्परः ॥(रा० नि० व०)

ा-चरपरा, गरम, वातनाशक, दीपन तथा अतिसार, संग्रहणी और कृमिको दूर करे है ।

श्वेतजीरकगुणा ।

राजाजी हिमा रुच्या कटुर्मधुरदीपनी ।
कृमिघ्नी विषहन्त्री च चक्षुष्या धातुनाशिनी॥(नि०र०)

अर्थ-सफेदजीरा-शीतल, रुचिकारक, चरपरा, मधुर, अग्निको दीपन करनेवाला, विषनाशक, नेत्रोंको हितकारी और अफारेको दूर करे है । -

अपिच ।

शुभ्रजीर कटु ग्राहि पाचनं दीपनं लघु ।
किञ्चिदुष्णं च मधुरं चक्षुष्यं रुचिकृन्मतम् ॥
गर्भाशयशुद्धिकर रूक्षं बल्यं सुगन्धिकम् ।

तिक्तं त्रमिक्षयाध्मानवात कुष्ठ विषं ज्वरम् ॥
अरोचक रक्तदोषमतीसार कृमीस्तथा ।
पित्तञ्च गुल्मरोगञ्च नाशयेदिति कीर्तितम् ॥(नि०र०)

अर्थ-सफेदजीरा-चरपरा, मलरोधक, पाचक, जठराग्निका दीपन करनेवाला, हलका, किञ्चित् उष्ण, मधुर, नेत्रोंको हितकारक,रुचिकारी, गर्भाशयको शुद्धि करनेवाला, रूखा, बलकारक, सुगन्ध, कडवा तथा छर्दि, क्षय, आध्मान, वात, कोढ, विषविकार, ज्वर, अरुचि, रक्तविकार, अतिसार, कृमि, पित्त और गुल्मरोगका नाश करे है ।

कृष्णजीरकनामानि ।



कृष्णाजाजी तु जरणा सुगन्धा कालजीरकः ।
वर्षाकाली च हृद्या च तथा चोद्गारशोधिनी॥(धन्वंतरि)

अर्थ-कृष्णाजाजी, जरणा, सुगन्धा, कालजीरक, वर्षाकाली, हृद्या, उद्गारशोधिनी, (कृष्णा, जरणा, बहुगन्धा, भेदिनी, पटु, भेदनिका, रुच्या, नीला, नीलकणा, काश्मीरजीरका, वान्तिशोधिनी, कालमेषी, सुगन्धा, सुगन्ध, कृष्णजीर कृष्णजीरक और उद्गारशोधक)

संस्कृतभाषामें	कृष्णजीरक ।
हिन्दीभाषामें	कालाजीरा
बंगभाषामें	कालजीरे ।

मराठीभाषामें	शहाजिरें ।
गुजरातीभाषामें	शाजीरु ।
कर्णाटकीभाषामें	करिजीरके ।
तैलङ्गीभाषामें	नल्लजीर ।
इंग्रेजीभाषामें	ब्लाककारावे सीड्स Black Caraway seed
लैटिन्भाषामें	करम नाईग्रम । Carum Nigrum
फारसीभाषामें	जीरेश्याह ।
अरबीभाषामें	कमुन् किरमानी ।

अस्य गुणाः ।

जरणा कटुरुष्णा च कफशोफनिकृन्तनी ।
रुच्याजीर्णज्वरघ्नी च चक्षुष्या ग्रहणी परा॥ (रा०नि०)

अर्थ-कालाजीरा- चरपरा, गरम, कफ और शोफनाशक, रुचिकारक, जीर्णज्वरहारक, नेत्रोंको हितकारक और ग्राहक है।

अपिच

कृष्णजीरश्च चक्षुष्यं रुच्यं सोष्ण सुगन्धिकम् ।
ग्राहक कटुक रूक्षं दीपक जीर्णज्वर्तिनुत् ॥
कफं शोथं शिरोरोग कुष्ठं चैव विनाशयेत् । (नि० र०)

अर्थ-कालाजीरा-नेत्रोंको हितकारी, रुचिकारी, गरम, सुगन्धि, ग्राही (भारी), चरपरा, रूखा, दीपन तथा जीर्णज्वर, कफ, सूजन, मस्तकरोग और कुष्टको दूर करेहै।

पीतजीरकगुणाः ।

पीताजाजी दीपनी च कट्वी चोष्णातिसारहा ।
आध्मानवातगुल्मं च ग्रहणी च कृमीञ्जयेत्॥ (नि० र०)

अर्थ-पीलाजीरा-जठराग्निको दीपन करै, चरपरा, गरम तथा अतिसार, आध्मान, वायु, गुल्म, सग्रहणी और कृमिको नाश करेहै।

द्विविधजीरकगुणाः ।

तीक्ष्णोष्णं कटुक पाके रुच्य पित्ताग्निवर्धनम् ।
कटु श्लेष्मानिलहरं गन्धाढ्य जीरकद्वयम् ॥ (सुश्रुतसंहिता)

अर्थ-दोनों प्रकारके जीरे-तीक्ष्णोष्ण, पचनेमे चरपरे, रुचिको उत्पन्न करनेवाले, पित्त तथा जठराग्निको बढानेवाले, चरपरे, कफ, वातनाशक और अत्यन्त गन्धवाले है ।

स्थूलजीरकनामानि ।

कालाजाजी पृथिवी च पृथ्वी च पृथुका पृथु-
कुञ्चिका कुञ्चिका कुञ्चि कारवी स्थूलजीरकः ॥

अर्थ-कालाजाजी, पृथिवी, पृथ्वी, पृथुका, पृथु, कुञ्चिका कुञ्चिका, कुञ्ची, कारवी, स्थूलजीरक, (दिध्या, उपकुञ्चिका, काला, स्थूलकणा, मनोज्ञा, जारिणी, जीर्णा, तरुणी, सुषवी, पृथ्वीका, पातिवरा, सुषवा, उपकुञ्ची, सुषवी, भेषज, कृष्णा, जरणा शाली, बहुगन्धा, कालिका, उपकालिका, उपकुञ्ची, बृहज्जीरक)

संस्कृतभाषामे	स्थूलजीरक, कालाजाजी ।
हिन्दीभाषामे	कलोंजी, मगरेला ।
बंगभाषामे	मोटाकेलेजीरे ।
मराठीभाषामे	कलोंजीजिरे ।
गुजरातीभाषामे	कलौंजी जीरु ।
कर्णाटकीभाषामे	करिदोड्डजीरिगे ।
तैलङ्गीभाषामे	नल्लाजीरा कारा ।
इंग्रेजीभाषामे	स्मॉल फेनल, फ्लॉवर । Small Fenel Flower
लैटिन्भाषामे	नाईजेल्ला, सेटाइवा । Nigella Satva
फारसीभाषामे	शोनिझ, श्यादाने ।
अरबीभाषामे	हबतुस्सोदा ।

अस्या गुणा ।

उक्तोपकुञ्चिका तिक्ता कटी चोष्णा च दीपनी ।
वृष्या चाजीर्णशमनी गर्भाशयविशोधिनी ॥
आध्मानवातगुल्मञ्च रक्तपित्त कृमींस्तथा ।
कफ पित्त चामदोषं वात शूलञ्च नाशयेत् ॥

अर्थ-कलौंजी-कडवी, चरपरी, गरम, जठराग्निदीपक, वीर्यवर्धक,

अजीर्णनाशक,गर्भाशयको शुद्ध करनेवाली तथा आध्मान,वात गुल्म रक्तपित्त, कृमि, कफ,पित्त, आमदोष,बादी और शूलको नष्ट करेहै ।

त्रिविधजीरकगुणा ।

जीरकत्रितयं रूक्षं कटूष्णं दीपन लघु ।
संग्राहि पित्तलं मेध्यं गर्भाशयविशुद्धिकृत् ॥
ज्वरघ्नं पाचनं बल्यं वृष्यं रुच्य कफापहम् ।
चक्षुष्यं पवनाध्मानगुल्मच्छर्द्यतिसारजित् ॥ (भा॰ प्र॰)

अर्थ-तीनोप्रकारके जीरे-(सफेद जीरा, काला जीरा, कलौंजी) रूखे, चरपरे, गरम, दीपन, हलके,मलरोधक,पित्तजनक, मेधाजनक, गर्भाशयशोधक, ज्वरनाशक, पाचक, बलकारक, वीर्यवर्द्धक,रुचि· कारक, कफनाशक, नेत्रोको हितकारी तथा वात, आध्मान,गुल्म, वमन और अतिसारका नाश करे हैं ।

अरण्यजीरकनामानि ।

बृहन्याली क्षुद्रपत्रोऽरण्यजीरकणौ तथा ।

अर्थ-बृहन्याली-क्षुद्रपत्र, अरण्यजीर, कण ।

संस्कृतभाषामें	वनजीरक ।
हिन्दीभाषामे	कालाजीरी ।
वंगभाषामे	वनजीरे ।
मराठीभाषामे	कडूजिरे ।
कर्णाटकीभाषामे	काजीरिगे ।
गुजरातीभाषामे	कालीजिरी । कडवीजीरी ।
इंग्रेजीभाषामे	परपल फ्लीबेन । Purple Fleabane
लैटिन्‌भाषामे	वरनोनिया एंथेल मेंटिका । Vernonia Anthelmentica
अरबीभाषामे	कमून वहरी कमून रुमी ।

अस्या गुणा ।

वनजीरः कटुः शीतो व्रणहा पञ्चनामकः ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ-कालाजीरी-चरपरी, शीतल और व्रणनाशक है ।

अपिच ।

आरण्यजीरकं चोष्णं तुवरं कटुकं मतम् ।

जन्तुघ्न, सूपधूपन (हिंगुक,रामठ,वाह्लीक,पिण्याक,बाह्ली, गृहिणी, मधुरा, केसर, जातुक, रमठध्वनि, शूलहृत्, उग्रगन्ध, भूतारि, जन्तुनाशन,रक्षोघ्न,उग्रवीर्य,अगूढगन्ध, जरण,भेदन, दीप्त,शूलनाशक)।



संस्कृतभाषामें	हिंगु ।
हिन्दीभाषामें	हींग ।
वंगभाषामें	हिंगु ।
मराठीभाषामें	हिंग ।
गुजरातीभाषामें	वधारणी ।
कर्णाटकीभाषामें	लेंसु ।
तेलिङ्गीभाषामें	इंगुरा ।
लैटिनभाषामें	फेरुलानार्थिक्स,नार्थेक्स,आस्सा,फिटिडा। Ferula Narthex, Narthex rssafoetida
फारसीभाषामें	अंगुज्ञ दर्खते अंगज्ञु खालीस ।
इंग्रेजीभाषामें	अस्साफेटीडा ।
अरबीभाषामें	हिलसीत ।

हिंगुगुणाः ।

लघूष्णं पाचनं हिंगु दीपनं कफवातजित् ।
कटु स्निग्धं सरं तीक्ष्णं शूलाजीर्णविबन्धनुत् (सु०स०)

अर्थ-हींग-हलकी, गरम, पाचक, दीपन, कफवातनाशक, चरपरी, स्निग्ध, सारक, तीक्ष्ण तथा शूल, अजीर्ण और विबन्धको दूर करे है।

अपिच।

हृद्यं हिंगु कटूष्णं च क्रिमिवातकफापहम् ।
विबन्धाध्मानशूलघ्नं चक्षुष्यं गुल्मनाशनम् ॥ (रा०नि०)

अर्थ-हींग-हृदयको हितकारी, चरपरी, गरम तथा क्रिमि, वात, कफ, विबन्ध, आध्मान, शूल और गुल्मका नाश करैहै और नेत्रोंको हितकारी है।

अन्यच्च।

हिंगूष्णं पाचनं रुच्यं तीक्ष्ण वातबलासहृत्।
शूलगुल्मोदरानाहकृमिघ्नं पित्तवर्द्धनम्॥ (भा॰ प्र॰)

अर्थ-हींग-गरम, रुचिकारी, तीक्ष्ण, वात कफनाशक तथा शूल, गुल्म, उदररोग, आनाह (अफारा) और कृमिको दूर करे है तथा पित्तवर्धक है।

अपिच।

हिंगूष्णं वह्निमांद्यघ्नं पाचनं कफवातजित्।
कटु स्निग्धं रसं तीक्ष्णं भूतघ्नं पित्तकोपनम्॥

अर्थ-हींग-गरम, मंदाग्निनाशक, पाचक, कफवातविनाशक, चरपरी, स्निग्ध, तीक्ष्णरसवाली, भूतको दूर करे है और पित्तको कुपित करे है।

अन्यच्च।

बाह्लिकं पित्तल चोष्ण हृद्यं तिक्तं परं कटु।
लघु तीक्ष्णं रुचिकरं पाचकं चाग्निदीपकम्॥
स्निग्ध मलस्तम्भकरं श्वासकासकफापहम्।
आनाहाध्मानगुल्मघ्नं शूलहृद्रोगनाशनम्॥
वातश्चाजीर्णकं जन्तूनुदरं चैव नाशयेत्॥ (नि॰ र॰)

अर्थ-हिंग-पित्तजनक, गरम, हृदयको हितकारी, कडवी, सारक, चरपरी, हलकी, तीक्ष्ण, रुचिकारक, पाचक, अग्निदीपन, स्निग्ध, मलस्तम्भक तथा श्वास, खांसी, कफ, आनाह, अर्थात् (अफारा) आध्मान, गुल्म, शूल, हृदयरोग, बादी, अजीर्ण, कृमि और उदर-रोगका नाश करे है।

हींग इरान तथा पंजाबमें होतीहै।

अस्यशोधनविधि।

अङ्गारस्थे लोहपात्रे सघृते रामठं क्षिपेत्।
चालयेत्किञ्चिदारक्तवर्णं योगेषु योजयेत्॥ (आत्रेयसंहिता)

अर्थ-घृतसहित हींगको लोहेके पात्रमें कर अंगारेके ऊपर रखदे; फिर चलावे, जब कुछेक लाल होजाय तब उतारकर औषधोंके काममें लावै

जन्तुघ्न, सूपधूपन (हिंगुक,रामठ,वाह्लीक,पिण्याक,वाह्ली, गृहिणी, मधुरा, केसर, जातुक, रमठध्वनि, शूलहृत्, उग्रगन्ध, भूतारि, जन्तुनाशन,रक्षोघ्न,उग्रवीर्य,अगूढगन्ध, जरण,भेदन, दीप्त,शूलनाशक)।



संस्कृतभाषामें	हिंगु ।
हिन्दीभाषामें	हींगु ।
बंगभाषामें	हिंगु ।
मराठीभाषामें	हिंग ।
गुजरातीभाषामें	वघारणी ।
कर्णाटकीभाषामें	लेसु ।
तैलिङ्गीभाषामें	इंगुरा ।
लैटिनभाषामें	फेरुलानार्थेक्स,नार्थेक्स,आस्सा,फिटिडा। Ferula Narthex, Narthex rssafoetida
फारसीभाषामें	अगुझ दर्खते अगझु खालीस ।
इंग्रेजीभाषामें	अस्साफेटीडा ।
अरबीभाषामें	हिलसीत ।

हिंगुगुणाः ।

लघूष्णं पाचनं हिंगु दीपनं कफवातजित् ।
कटु स्निग्धं सरं तीक्ष्णं शूलाजीर्णविबन्धनुत् (सु०सं०)

अर्थ-हींग-हलकी, गरम, पाचक, दीपन, कफवातनाशक, चरपरी, स्निग्ध, सारक, तीक्ष्ण तथा शूल, अजीर्ण और विबन्धको दूर करे है।

अपिच।

हृद्यं हिंगु कटूष्णं च क्रिमिवातकफापहम् ।
विबन्धाध्मानशूलघ्नं चक्षुष्यं गुल्मनाशनम् ॥ (रा०नि०)

अर्थ-हीग-हृदयको हितकारी,चरपरी, गरम तथा क्रिमि, वात, कफ, विबन्ध, आध्मान, शूल और गुल्मका नाश करैहै और नेत्रोको हितकारी है ।

अन्यच्च ।

हिंगूष्णं पाचनं रुच्यं तीक्ष्णं वातबलासहृत् ।
शूलगुल्मोदरानाहकृमिघ्नं पित्तवर्द्धनम् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-हीग-गरम, रुचिकारी, तीक्ष्ण,वात कफनाशक तथा शूल, गुल्म, उदररोग, आनाह (अफारा) और कृमिको दूर करे है तथा पित्तवर्धक है ।

अपिच ।

हिंगूष्णं वह्निमांद्यघ्न पाचनं कफवातजित् ।
कटु स्निग्ध रसं तीक्ष्णं भूतघ्नं पित्तकोपनम् ॥

अर्थ-हीग-गरम, मदाग्निनाशक, पाचक, कफवातविनाशक, चरपरी, स्निग्ध, तीक्ष्णरसवाली, भूतको दूर करे है और पित्तको कुपित करे है ।

अन्यच्च ।

बाह्लिकं पित्तल चोष्ण हृद्यं तिक्तं पर कटु ।
लघु तीक्ष्णं रुचिकरं पाचकं चाग्निदीपकम् ॥
स्निग्ध मलस्तम्भकरं श्वासकासकफापहम् ।
आनाहाध्मानगुल्मघ्नं शूलहृद्रोगनाशनम् ॥
वातश्चाजीर्णकं जन्तूनुदरं चैव नाशयेत् ।(नि० र०)

अर्थ-हिंग-पित्तजनक, गरम, हृदयको हितकारी,कडवी, सारक, चरपरी, हलकी, तीक्ष्ण, रुचिकारक, पाचक, अग्निदीपन, स्निग्ध, मलस्तम्भक तथा श्वास, खांसी, कफ, आनाह, अर्थात् (अफारा) आध्मान, गुल्म, शूल, हृदयरोग, बादी, अजीर्ण, कृमि और उदर-रोगका नाश करे है ।

हीग इरान तथा पंजाबमे होतीहै ।

अस्यशोधनविधि ।

अङ्गारस्थे लोहपात्रे सघृते रामठ क्षिपेत् ।
चालयेत्किञ्चिदारक्तवर्णं योगेषु योजयेत्॥(आत्रेयसंहिता)

अर्थ-घृतसहित हीगको लोहेके पात्रमे कर अंगारेके ऊपर रखदे; फिर चलावे,जब कुछेक लाल होजाय तब उतारकर औषधोके काममे लावै

हिंगुपत्रीनामानि ।

त्वक्पत्री हिंगुपत्री च कर्वरी पृथुला पृथुः ।
वाष्पीका वाष्पिका वाष्पी दीर्घिका दारुपत्रिका ॥

अर्थ-त्वक्पत्री, हिंगुपत्री, कर्वरी, पृथुला, पृथु, वाष्पीका, बाष्पिका, बाष्पी, दीर्घिका, दारुपत्रिका, (कारवी, करवी, पृथ्वी, पृथ्वीका, बाष्पका, बाष्पा, पत्री, तन्वी, दारुपत्री, बिल्वा और पृथुका)

अस्या गुणाः ।

हिंगुपत्री भवेद्रुच्या तीक्ष्णोष्णा पाचनी कटुः ।
हृद्वस्तिरुग्विबन्धार्शःश्लेष्मगुल्मानिलापहा ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-हिंगुपत्री-रुचिकारक, तीक्ष्ण, गरम, पाचक, चरपरी, तथा हृदयरोग, वस्तिरोग, विबन्ध, बवासीर, कफ, गुल्म और वातका नाश करे है ।

अपिच ।

हिंगुपत्री कटुस्तीक्ष्णा तिक्तोष्णा पाचिका मता ।
रुच्या पथ्या दीपनी च हृद्या सौगन्धकारिणी ॥
तुवरा कफवातामवस्तिपीडां च नाशयेत् ।
बद्धविट्कार्शगुल्मादिप्लीहामेदोपचीविषान् ॥ (नि० र०)

अर्थ-हिंगुपत्री-चरपरी, तीक्ष्ण, कड़वी, गरम, पाचक, रुचिकारक, पथ्य, दीपन, हृदयका हितकारी, सुगंधि, कषैली तथा कफ, वात, आमदोष, वस्तिकी पीडा, मलबद्धता, बवासीर, गुल्म, प्लीहा, मेद, अपची और विषका नाश करेहै ।

इसके पत्तोके गुण और नाम हींगके पत्तोसे मिलतेहै । जैसे हिंगुके पत्तोको संस्कृतमे कवरी और कर्वरी कहतेहै, सो इसकोभी कर्वरी कवरी कहतेहै और गुणभी हींगसे मिलतेहै । निघण्टुरत्नाकरकी मराठी भाषामे "वाफली" लिखी है सो "वाफली" अक्कलकरके शाकक्रू कहते है ।

नाडीहिंगुनामानि ।

नाडीहिंगु पलाशाख्या जन्तुका रामठी च सा ।
वंशपत्री च पिण्डाह्वा सुवीर्या हिंगुनाडिका ॥

अर्थ-नाडीहिंगु, पलाशाख्य, जतुका, रामठी, वंशपत्री, पिण्डाह्वा, सुवीर्य्या, हिंगुनाडिका (वेणुपत्री, पिण्डा, हिंगु, शिवाटिका)।

संस्कृतभाषामे	नाडीहिङ्गु ।
हिन्दीभाषामे	कलः पतिहीङ्ग, डिकामाली ।
वंगभाषामे	हिङ्गुविशेष ।
मराठीभाषामे	डिकेमाली ।
गुजरातीभाषामे	डिकामाली ।
कर्णाटकीभाषामे	कलहन्ती ।
तैलिङ्गीभाषामे	चिभाहिंगवा कारु इंगवा ।
इंग्रेजीभाषामे	डिकेमालीगम, गम्मीगार्डीनिया । Dika mallegum Gummy Gardinia
लैटिन्भाषामें	गार्डीनियासीडा गार्धिन्यागम्मिफेरा। Gardinia Ceeda Gardinua Gunimefera
अरबीभाषामे	कनखाभ ।

अस्या गुणा ।

नाडीहिङ्गुः कटूष्णा च कफवातार्तिशान्तिकृत् ।
विष्ठाविबन्धदोषघ्नी चानाहामापहारिणी । (रा०नि०)

अर्थ-नाडीहिङ्गु-चरपरी, गरम, कफ और वातकी वेदनाको शान्ति करनेवाली तथा विष्ठा, विबन्ध और आनाह रोगनाशक है।

अन्यच्च ।

नाडीहिङ्गुस्तु कटुकस्तीक्ष्णश्चोष्णश्च दीपकः ।
कफवातमलस्तम्भमनोमोहामनाशनः ॥ (निघण्टुरत्नाकर)

अर्थ-नाडीहिङ्गु-चरपरी, तीक्ष्ण, उष्ण, अग्निप्रदीपक तथा कफ, वात, मलबन्ध, मनका मोह और आमको दूर करेहै ।

विवरण । बडा वृक्ष होताहै, फूल सफेद होताहै, फल पोसतके डोंरेकी समान होतेहैं, पत्ते बटमोगराके समान. होतेहैं इसको नाडीहिङ्गु कहतेहैं ।

वचानामानि ।

वचोग्रगन्धा षड्ग्रन्था गोलोमी शतपर्विका ।
मङ्गल्या जटिला तीक्ष्णा गालिनी लोमशा तथा ॥

अर्थ-वचा, उग्रगन्धा, षड्ग्रन्था, गोलोमी, शतपर्विका, मङ्गल्या, जटिला, तीक्ष्णा, [illegible] लोमशा (विजया, उग्रा, रक्षोघ्नी,

वच्या, कान्ता, भद्रा, क्षुद्रपत्री, इक्षुपर्णी, स्मारणी, बोधनीया, भूतनाशिनी, श्लेष्मघ्नी, तीक्ष्णपत्रा, जलजा, इक्षुपत्रिका)

पारसीकवचानामानि ।

पारसीकवचा शुक्ला प्रोक्ता हैमवतीति सा ।

अर्थ-खुरासानी वच सफेद होतीहै, उसको संस्कृतमे हैमवती (शतपर्वा, मेध्या, शुक्ला, भोगवती, दीर्घपत्रा, कर्षिणी) कहतेहै ।

संस्कृतभाषामे	वचा, पारसीकवचा, श्वेतवचा ।
हिन्दीभाषामे	वच, खुरासानीवच, सफेदवच ।
वंगभाषामें	वच, खोरासानी वच, श्वेतवच ।
मराठीभाषामे	वेखंड, पाढरे वेखण्ड ।
गुजरातीभाषामें	घोडावज, खुरसाणीवच, बालावज ।
कर्णाटकीभाषामे	वच, बिलीयवजे ।
तैलङ्गीभाषामे	वासा, वडज, नल्लवस ।
तामिलीभाषामे	वशम्बु ।
इंग्रेजीभाषामे	स्वीटफ्लागरूट् । Sweet Flogroot
लैटिन्भाषामे	एकोररा, केलेमस् । Achoras Calamus
पारसीभाषामे	सोसन जर्द अगर तुरकी ।
अरबीभाषामे	उदलयुज ।

वाशुणा ।

वचोग्रगन्धा कटुका तिक्तोष्णा वान्तिवह्निकृत् ।
दीपनी वाक्प्रदा कण्ठ्या शकृन्मूत्रविशोधिनी ॥
विबन्धाध्मानशूलघ्नी शोफवातज्वरापहा ।
अपस्मारकफोन्मादभूतजन्त्वनिलान्हरेत्॥(ग० नि०)

अर्थ-वच-उग्रगन्धयुक्त, चरपरी, कडवी, गरम, वमनकारक, अग्निजनक, दीपन, वाणीदायक, कण्ठको हितकारी, मलमूत्रशोधक तथा विबन्ध, आध्मान, शूल, शोफ, वातज्वर, अपस्मार, कफ, उन्माद, भूत, कृमि और वातका नाश करेहै ।

अपिच ।

वाता तीक्ष्णा कटूष्णा च कफामग्रन्थिशोफनुत् ।

वातज्वरातिसारघ्नी वान्तिकृन्मादभूतहृत् ॥

अर्थ-वच-तीक्ष्ण, चरपरी, गरम तथा कफ, आम, ग्रन्थि, सूजन, वातज्वर और अतिसारको हरे है। वमनकारक, उन्माद और भूतनाशक है।

अन्यच्च।

वचायुष्या वातकफतृष्णाघ्नी स्मृतिवर्द्धिनी। (रा०व०)

अर्थ-वच-अवस्थास्थापक, वातकफनाशक, तृष्णानिवारक और स्मरणशक्तिवर्द्धक है।

शुक्लवचागुणाः।

वचा श्वेता मतिर्मेधा चाग्निदीप्तिकरी मता।
आयुष्यदा गुणाढ्या च वृष्या कफविनाशिनी ॥
वातभूतकृमिहरा त्वितरे पूर्ववद्गुणाः।

अर्थ-सफेदवच-मति और मेधादायक है, जठराग्निप्रदीपक है, आयुर्वर्द्धक, अधिकगुणवाली, वीर्यजनक तथा कफ, वादी, भूतबाधा और कृमिको दूर करेहै। शेषगुण वचाकी समान जानने।

महाभरीवचागुणाः।

सुगन्धाप्युग्रगन्धा च विशेषात्कफकासनुत्।
सुस्वरत्वकरी रुच्या हृत्कण्ठमुखशोधिनी ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-महाभरीवच-सुगन्ध और उग्रगन्धयुक्त है। विशेषकरके कफ तथा खासीको दूर करे है, स्वरको उत्तम करनेवाली, रुचिको उत्पन्न करनेवाली तथा हृदय, कण्ठ और मुखको शुद्ध करनेवाली है।

वचाद्भुतगुणाः।

अद्भिर्वा पयसाज्येन मासमेकन्तु सेविता।
वचा कुर्य्यान्नरं प्राज्ञं श्रुतिधारणसंयुतम् ॥
चन्द्रसूर्यग्रहे पीतं पलमेकं पयोन्वितम्।
वचायास्तत्क्षणं कुर्य्यान्महाप्रज्ञान्वितं नरम् ॥

अर्थ-वचके चूर्णको जलके साथ अथवा दूधके साथ एक मासपर्यन्त सेवन करनेसे मनुष्य बुद्धिमान् और ज्ञानी होताहै तथा

चन्द्रग्रहणके समय अथवा सूर्यग्रहणके समय एक पल वचके चूर्णको दूधके साथ भक्षण करनेसे उसी समय मनुष्यको अत्यन्त बुद्धियुक्त करतीहै। वच सजल स्थान और रेतली भूमिमें उत्पन्न होतीहै।

कुलिञ्जननामानि।

कुलञ्जो गन्धमूलश्च तीक्ष्णमूलः कुलञ्जनः।

अर्थ-कुलञ्ज, गन्धमूल, तीक्ष्णमूल, कुलञ्जन।

संस्कृतभाषामें	कुलञ्जन।
हिन्दीभाषामें	कुलीजन।
वंगभाषामें	कुलञ्जन।
मराठीभाषामें	कोळिञ्जन। थोर कोळिञ्जन।
गुजरातीभाषामें	कुलिञ्जन नानु। कुलिञ्जन मोटे।
इंग्रेजीभाषामें	ग्रेटर गेल गाल। Greater Galangal
लैटिन्भाषामें	आल्पिनिया,आफिसिनेरम्। Alpinia officinarum
फारसीभाषामें	खिरद्दारु।
अरबीभाषामें	ईर्क खोलिञ्जान्।

अस्य गुणाः।

कुलञ्ज: कटुतिक्तोष्णो दीपनो मुखदोषनुत्।(रा०नि०)

अर्थ-कुलीजन-चरपरा, कडवा, गरम, दीपन और मुखदोषनाशक है।

अन्यच्च।

कुलिञ्जन कटुस्तिक्तमुष्णं चाग्निप्रदीपनम्।
रुच्यं स्वर्यं च हृद्यं च मुखकण्ठविशुद्धिकृत्॥
मुखदोषं कफं चैव कासं वातं कफं हरेत्।(नि० र०)

अर्थ-कुलीजन-चरपरा, कडवा, गरम, अग्निदीपक, रुचिकारक, स्वरको सुधारनेवाला, हृदयको हितकारी, मुख और कण्ठको शुद्ध करनेवाला तथा मुखदोष, कफ, खांसी, वात और कफको नष्ट करैहै।

बडे कुलीजनका बडा वृक्ष होताहै, देखनेमे दाखकी वेलके सदृश होताहै, इसकी जडको कुलीजन कहतेहै। कितनेही मनुष्य पानकी जडको कुलीजन कहतेहै, सो पानकी जड नहीं है।

चोपचीन्युत्पत्तिलक्षणम्।



फिरंगदेशसम्भूता चीनदेशेथ विश्रुता।
नामतश्चोपचीनी स्यादश्वगन्धसमा भवेत्। (शि० प्र०)

अर्थ-फिरंग देशमे उत्पन्न होतीहै,चीनदेशसे आती है और इसका नाम चोपचीनी है और असगन्धकी समान होतीहै।

संस्कृतभाषामे	द्वीपान्तरवचा, अमृतोपाहिता।
हिन्दीभाषामें	चोवचीनी।
वङ्गभाषामे	तोपचीनी।
मराठीभाषामे	चोपचीनी।
गुजरातीभाषामे	चोपचीनी।
इंग्रेजीभाषामे	चाईनारूट्। China root
लैटिन्भाषामे	स्माइलैक्स चाइना। Smilax China
फारसीभाषामे	एवन।
अरबीभाषामे	एवन।
फिरंगीभाषामे	चक्का।
यूनानीभाषामे	खासिलियर आशसिनी।

अस्या गुणाः ।

द्वीपान्तरवचा कट्वी तिक्तोष्णा वह्निदीप्तिकृत् ।
विबन्धाध्मानशूलघ्नी शकृन्मूत्रविशोधिनी ॥
वातव्याधीनपस्मारमुन्माद तनुवेदनाम् ।
व्यपोहति विशेषेण फिरंगामयनाशिनी ॥ (भावप्रकाश

अर्थ-द्वीपान्तरवचा अर्थात् चोबचीनी-चरपरी, (मधुर)कडवी गरम, मलमूत्रकी शोधन करनेवाली तथा विबन्ध, आध्मान, शूल वातव्याधि, अपस्मार,उन्माद और अगकी वेदनाको दूर करेहै औ विशेष करके फिरंगरोगका नाश करनेवाली है ।

अपि च ।

द्वीपान्तरवचा तिक्ता चोष्णा चाग्निप्रदीपिनी ।
धातुवृद्धिकरी बल्या मलमूत्रविशोधिनी ॥
तारुण्यदा पौष्टिकी च वृष्या चैव रसायनी ।
गर्भप्रदा बद्धविट्कमाध्मानोन्मादनाशिनी ॥
वातं शूलमपस्मारधातुक्षयविनाशिनी ॥
अङ्गग्रहं फिरंगोपदंश मांद्यं कटिग्रहम् ॥
पक्षाघातमुरुस्तम्भं राजयक्ष्मव्रणौ तथा ।
गण्डमालां नेत्ररोगं शुक्रशोणितदोषकम् ॥
सर्वांगकम्पवातञ्च कुब्जवातञ्च नाशयेत् । (नि० र०)

अर्थ-चोपचीनी कडवी,गरम,अग्निप्रदीपक,धातुवर्धक,बलकार मल और मूत्रकी शोधन करनेवाली,तारुण्यदायक,पुष्टिकारक,वीर्य जनक, रसायन, गर्भदायक तथा बद्धविट्क, आध्मान, उन्माद वात, शूल, अपस्मार, धातुक्षय, अगग्रह, फिरंग, उपदंश, मांद कटिग्रह, पक्षाघात, ऊरुस्तम्भ, क्षय, व्रण, गण्डमाला, नेत्ररोग शुक्रदोष, रक्तविकार, सर्वांगवात,कम्पवात और कुब्जवातका ना करेहै ।

अपि च ।

फिरंगरोगान्कुष्ठांश्च विसर्पांश्च विनाशयेत् ।

क्षीणानां पुष्टिकरिणी चाग्निमान्द्यं नियच्छति ॥ (द्र०नि०)

अर्थ-चोपचीनी-फिरंगरोग, कोढ और विसर्परोगका नाश करेहै क्षीण मनुष्योको पुष्ट करनेवाली और मंदाग्निका नाश करनेवाली है।

निषेध।

मद्यं त्यजेत्तथा तैलं काञ्जिकं शाकमेव च ।
क्षारमम्लरसं चैव लवणं तिक्तभोजनम् ॥ (अनं भा.)

अर्थ-चोवचीनीके सेवन करनेवाले मनुष्य मदिरा, तेल, कांजी शाक, क्षाररसवाले पदार्थ, अम्लरसवाले पदार्थ, लवण और तिक्त भोजन त्यागदे ।

अस्या लक्षणम् ।

अश्वगन्धासमं पत्रमौषधी ग्रन्थिसंयुता ।
वर्णतः पाटलाभा च दृढा च मधुरा रसे ॥ (शिवनिघण्टु)

अर्थ-इसके पत्ते असगन्धकी समान होतेहै, औषधी गांठे युक्त होती है, इसका रंग किञ्चित् पीला और सफेद होताहै, दृढ होतीहै और रस मीठा होताहै ।

प्राचीन वैद्यकके ग्रंथोमे इसका प्रयोग नहीं देखनेमे आता,सबसे प्रथम महात्मा भावमिश्रने अपने ग्रन्थमे इसका वृत्तांत लिखा और इसका द्वीपान्तरीय नाम रक्खा । ऐसा अनुमान होताहै कि विदेशीय लताका मूलविशेष समझकर इसका चोपचीनी नाम रक्खा गया है । व्यवहार-मूल ।

आकारकरभनामानि ।

आकारकरभश्चैवाकल्लकोथ ह्यकल्लकः ।

अर्थ-आकारकरभ, आकल्लक, अकल्लक (आकरकरा)

संस्कृतभाषामे	आकारकरभ ।
हिन्दीभाषामे	अकरकरा ।
बंगभाषामे	अकोरकोरा ।
मराठीभाषामे	अक्कलकरा ।
गुजरातीभाषामे	अक्कलकरो ।
कर्णाटकीभाषामे	अक्कलकरा ।
इंग्रेजीभाषामे	पॅलेटरी रूट् । Pallatory root
लॅटिनभाषामे	एनेसाई क्लसपेरे थ्रम्। Anacy cluspere thrum
अरबीभाषामे	आकरकरहा ।

अस्या गुणा ।

अक्कलकरोष्णो वीर्येण बलकृत्कटुको मतः ।
प्रतिश्यायश्च शोथश्च वातश्चैव विनाशयेत् ॥

अर्थ-अकरकरा-उष्णवीर्य, बलकारक, चरपरा, प्रतिश्याय, सूजन और वातका विनाश करेहै ।

हपुषानामानि ।

हपुषा वपुषा विसा पराश्वत्थफला स्मृता ।
मत्स्यगन्धा प्लीहहन्त्री विषघ्नी ध्मांक्षनाशिनी ॥

अर्थ-हपुषा, वपुषा, विसा, (हवुषा, विस्नगगा, विगन्धिका, यह नाम प्रथम प्रकारके हाउबेरके हैं) अश्वत्थफला, मत्स्यगन्धा, प्लीहहन्त्री, विषघ्नी, ध्मांक्षनाशिनी, (स्वल्पफला, कच्छुघ्ना, प्लीहशत्रु, कफघ्नी, अपराजिता)

संस्कृतभाषामें	हपुषा ।
हिन्दीभाषामें	हाऊबेर ।
बङ्गभाषामें	हवुषा ।
मराठीभाषामें	होश ।
कर्णाटकीभाषामें	परडुहव्वे ।
लैटिनभाषामें	थेवेटियानेरिफोलिया । Thevetia nerifolia

हाऊबेर दो प्रकारका है, तिसमें प्रथम फल मछलीके समान और आमकी सदृश गन्धवाला होताहै ।

हपुषागुणाः ।

हपुषा कटुका तिक्ता गुरूष्णा दीपनी मता ।
तुवरा ग्रहणीशूलगुल्मार्शोवातनाशिनी ॥
गुल्मोदरकफामाग्निमांद्यकृमिकपीनसान् ।
मलावष्टम्भकं चैव प्रदरं चैव नाशयेत् ॥

अर्थ-हाऊबेर-चरपरा, कडवा, भारी, गरम, दीपन, कपेला तथा संग्रहणी, शूल, गुल्म, बवासीर, वात, उदररोग, कफ, आम, मन्दाग्नि, कृमि, पीनस, मलावष्टंभ और प्रदररोगका नाश करेहै ।

स्वल्पहपुषागुणाः ।

स्वल्पफला मूत्रकृच्छ्रप्लीहाविषकफाञ्जयेत् ।

गुणा ह्यस्याः पूर्ववच्च ज्ञेयाः सुज्ञैश्चिकित्सकैः ॥ (नि०र०)

अर्थ-दूसरेप्रकारका हाऊवेर मूत्रकृच्छ्र,प्लीहा, विष और [illegible] नष्ट करेहै। शेष गुण प्रथमकी समान जानने।

विडंगनामानि।

क्रिमिघ्न भस्मकं मोघा विडगं कृमिकण्टकम्।
केराल केवल वेल्लं तण्डुलं चित्रतण्डुला ॥

अर्थ-क्रिमिघ्न, भस्मक, मोघा, विडङ्ग, कृमिकण्टक, केराल केवल, वेल्ल, तण्डुल, चित्रतण्डुला (विडङ्गा, अमोघा, तंडुला, जन्तु नाशक, क्रिमिकंटक, रसायन, पावक, तंडुल, क्रिमिरिपु, [illegible] चित्रतण्डुल, क्रिमिशत्रु, गर्दभ, कृमिहा, चित्रा, तण्डुला, तण्डुलीयका, वातारि, जन्तुघ्नी, मृगगामिनी, केराली, गहरा, [illegible] वरा, सुचित्रबीजा, वृषणाशन, जन्तुहन्त्री, कृष्णतन्डुला, [illegible] चित्रबीजा और घोषा)

संस्कृत भाषामे	विडङ्ग।
हिन्दीभाषामे	वायविडङ्ग।
बंग भाषामे	विडङ्ग।
मराठी भाषामे	वावाडिंग।
गुजराती भाषामे	वावडीग।
कर्णाटकी भाषामे	वायुविडङ्ग
तैलङ्गी भाषामे	वायुविडंगमु।
तामिलीभाषामे	वायविलं।
इंग्रेजीभाषामे	बेब्रेग्। Babre[illegible]
लैटिन् भाषामे	एंब्रेलिया रिबीस्
फारसीभाषामे	बरंगकावली।
अरबी भाषामे	बरंज कावली।

अस्या गुणाः।

विडगं कटु तिक्तोष्णं रूक्षं वह्निकृल्लघु।
गुल्माध्मानोदरश्लेमकृमिवातविबन्धनुत् ॥ (मद०नि०)

अर्थ-वायविडङ्ग-चरपरी, कडवी, [illegible], अग्निकर्ता हलकी तथा गुल्म, आध्मान, उदररोग, कफ, कृमि, वात विबन्धको दूर करे है।

अपिच।

विडगं कटुक पाके लघुवातकफापहम्।
तिक्तमीषद्विष हन्ति रूक्षोष्ण कृमिनाशनम्।(शो०नि०)

अर्थ-वायविडग-पाकमे चरपरी,हलकी,वात कफनाशक,किंचित् कडवी, विषनाशक, रूखी, गरम और कृमिको दूर करे है।

अन्यच्च।

विडग कटुक तिक्तमुष्णं रुच्यं लघु स्मृतम्।
दीपन वातकफहृदग्निमाद्यारुचीर्जयेत्॥
भ्रान्ति कृमिश्च शूल च आध्मानमुदर तथा।
प्लीहाजीर्णं श्वासकासौ हृद्रोग विषदोषकम्॥
आम मलावष्टम्भश्च मेदो मेहश्च नाशयेत्।(नि०र०)

अर्थ-वायविडंग-चरपरी, कडवी, गरम, रुचिकारी, हलकी, जठराग्निको दीपन करनेवाली तथा वात, कफ, मंदाग्नि, अरुचि, भ्रान्ति, कृमि, फल, अफारा, उदररोग, प्लीहा, अजीर्ण, श्वास, खाँसी, हृदयरोग, विषविकार, आम, मलस्तम्भ, मेदरोग और प्रमेह रोगको दूर करेहै। मात्रा २ मासेकी।

तुम्बुरुनामानि।

तुम्बुरुः सौरभः सौरवनजः सानुजो द्विजः।
तीक्ष्णवल्कस्तीक्ष्णफलस्तीक्ष्णपत्रो महामुनिः॥

अर्थ-तुम्बरु, सौरभ, सौरवनज, सानुज, द्विज, तीक्ष्णवल्क, तीक्ष्णफल, तीक्ष्णपत्र, महामुनि, (स्फुटल, सुगन्धि, शूलघ्न, सौरज, अन्धक, गन्धालु, स्फुटितफल)

अस्या गुणाः।

तुम्बुरुर्मधुरस्तिक्तः कटूष्ण कफवातनुत्।
शूलगुल्मोदराध्मानकृमिघ्नो वह्निदीपनः॥ (राजनि०)

अर्थ-तुम्बरु-मधुर, कडवा, चरपरा, गरम, कफ वात नाशक तथा शूल, गुल्म, उदररोग, अफारा और कृमिका नाश करे है तथा अग्निको दीपन करे है।

अपिच।

तुम्बुरु ग्रथितं तिक्त कटु पाकेपि तत्कटु।

रूक्षोष्णं दीपनं तीक्ष्णं रुच्यं लघु विदाहि च ॥
वातश्लेष्माक्षिकर्णोष्ठशिरोरुग्गुरुताक्रिमीन् ।
कुष्ठशूलारुचिश्वासप्लीहकृच्छ्राणि नाशयेत् ॥

अर्थ-तुम्बुरु-कडवा, पाकमे चरपरा, रूखा, गरम, दीपन, तीक्ष्ण, रुचिकारक, हलका, विदाही तथा वात, कफ, नेत्ररोग, कर्णरोग, ओष्ठरोग, शिरोरोग, शरीरका भारीपन, कृमि, कुष्ठ, शूल, अरुचि, श्वास, प्लीहा और मूत्रकृच्छ्र रोगका नाश करैहैं ।

संस्कृतभाषामे	तुम्बुरु ।
हिन्दीभाषामे	तुम्बुरू ।
वंगभाषामे	नेपालिधने, तुम्बुरु ।
मराठीभाषामे	चिरफळ ।
कोकणीभाषामे	तिरफळ ।

वंशलोचननामानि ।

तुगाक्षीरी शुभा वांशी त्वक्क्षीरी वंशलोचना ।

अर्थ-तुगाक्षीरी, शुभा, वांशी, त्वक्क्षीरी, वंशलोचना, (त्वक्क्षीरा, वंशज, क्षीरिका, तुगा, शुभ्रा, वंशक्षीरी, वैणवी, त्वक्सारा, कर्मरी, श्वेता, कर्परोचना, तुङ्गा, रोचनिका, पिङ्गा, वंशशर्करा, वंशरोचना, वंशकर्पूर)

संस्कृतभाषामे	वंशलोचना ।
हिन्दीभाषामे	वंशलोचन ।
वङ्गभाषामें	वंशलोचन, वॉशकावर ।
मराठीभाषामे	वंशलोचन ।
गुजरातीभाषामे	वंशलोचन, वंशकपूर ।
कर्णाटकीभाषामे	वंशलोचना ।
तैलिङ्गीभाषामे	वंशलोचना ।
इंग्रेजीभाषामे	थीसिलिस्यस् कंक्रिशन् । Thesiliceous Conretion
लैटिन्भाषामे	वंबुणाए रॉडिनेश्या । Bambunaarundinacea
फारसीभाषामे	तवाशीर ।
अरबीभाषामे	तवाशीर ।

अपिच ।

विडङ्गं कटुकं पाके लघुवातकफापहम् ।
तिक्तमीषद्विषं हन्ति रूक्षोष्णं कृमिनाशनम् ।(शो०नि०)

अर्थ-वायविडंग-पाकमें चरपरी, हलकी, वात कफनाशक, किंचित् कडवी, विषनाशक, रूखी, गरम और कृमिको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

विडंगं कटुकं तिक्तमुष्णं रुच्यं लघु स्मृतम् ।
दीपनं वातकफहृदग्निमांद्यारुचीर्जयेत् ॥
भ्रान्तिं कृमिश्च शूलं च आध्मानमुदरं तथा ।
प्लीहाजीर्णे श्वासकासौ हृद्रोगं विषदोषकम् ॥
आमं मलावष्टम्भश्च मेदो मेहश्च नाशयेत् ।(नि०र०)

अर्थ-वायविडंग-चरपरी, कडवी, गरम, रुचिकारी, हलकी, जठराग्निको दीपन करनेवाली तथा वात, कफ, मंदाग्नि, अरुचि, भ्रान्ति, कृमि, फल, अफारा, उदररोग, प्लीहा, अजीर्ण, श्वास, खाँसी, हृदयरोग, विषविकार, आम, मलस्तम्भ, मेदरोग और प्रमेह रोगको दूर करेहै । मात्रा २ मासेकी ।

तुम्बुरुनामानि ।

तुम्बुरुः सौरभः सौरवनजः सानुजो द्विजः ।
तीक्ष्णवल्कस्तीक्ष्णफलस्तीक्ष्णपत्रो महामुनिः ॥

अर्थ-तुम्बरु, सौरभ, सौरवनज, सानुज, द्विज, तीक्ष्णवल्क, तीक्ष्णफल, तीक्ष्णपत्र, महामुनि, (स्फुटल, सुगन्धि, शूलघ्न, सौरज, अन्धक, गन्धाढ्य, स्फुटितफल)

अस्या गुणाः ।

तुम्बुरुर्मधुरस्तिक्तः कटूष्णः कफवातनुत् ।
शूलगुल्मोदराध्मानकृमिघ्नो वह्निदीपनः ॥ (राजनि०)

अर्थ-तुम्बरु-मधुर, कडवा, चरपरा, गरम, कफ वात नाशक तथा शूल, गुल्म, उदररोग, अफारा और कृमिका नाश करे है तथा अग्निको दीपन करे है ।

अपिच ।

तुम्बुरु प्रथितं तिक्तं कटु पाकेपि तत्कटु ।

रूक्षोष्णं दीपनं तीक्ष्णं रुच्यं लघु विदाहि च ॥
वातश्लेष्माक्षिकर्णौष्ठशिरोरुग्गुरुताक्रिमीन् ।
कुष्ठशूलारुचिश्वासप्लीहकृच्छ्राणि नाशयेत् ॥

अर्थ-तुम्बुरु-कडवा, पाकमें चरपरा, रूखा, गरम, दीपन, तीक्ष्ण, रुचिकारक, हलका, विदाही तथा वात, कफ, नेत्ररोग, कर्णरोग, ओष्ठरोग, शिरोरोग, शरीरका भारीपन, कृमि, कुष्ठ, शूल, अरुचि, श्वास, प्लीहा और मूत्रकृच्छ्र रोगका नाश करेहै ।

संस्कृतभाषामें	तुम्बुरु ।
हिन्दीभाषामें	तुम्बुरू ।
वंगभाषामें	नेपालिधने, तुम्बुरु ।
मराठीभाषामें	चिरफळ ।
कोंकणीभाषामें	तिरफळ ।

वंशलोचननामानि ।

तुगाक्षीरी शुभा वांशी त्वक्क्षीरी वंशलोचना ।

अर्थ-तुगाक्षीरी, शुभा, वांशी, त्वक्क्षीरी, वंशलोचना, (त्वक्क्षीरा, वंशज, क्षीरिका, तुगा, शुभ्रा, वंशक्षीरी, वैणवी, त्वक्सारा, कर्मरी, श्वेता, कर्पूरलोचना, तुङ्गा, रोचानिका, पिङ्गा, वंशशर्करा, वंशरोचना, वंशकर्पूर)

संस्कृतभाषामें	वंशलोचना ।
हिन्दीभाषामें	वंशलोचन ।
वङ्गभाषामें	वंशलोचन, वाँशकावर ।
मराठीभाषामें	वंशलोचन ।
गुजरातीभाषामें	वंशलोचन, वंशकपूर ।
कर्णाटकीभाषामें	वंशलोचना ।
तैलिङ्गीभाषामें	वंशलोचना ।
इंग्रेजीभाषामें	थीसिलिस्यस् कंक्रिशन् । Thesiliceous Conretion
लैटिन्भाषामें	वंम्बुनाए रांडिनेश्या । Bambunaarundinacea
फारसीभाषामें	तवाशीर ।
अरबीभाषामें	तवाशीर ।

अस्या गुणाः ।

वंशजा बृंहणी वृष्या बल्या स्वाद्वी च शीतला ।
तृष्णाकासज्वरश्वासक्षयपित्तास्रकामलाः ॥
हरेत्कुष्ठं व्रणं पाण्डुं कषाया वातकृच्छ्रजित् । (भा० प्र०)

अर्थ-वंशलोचन-पुष्टिकारक, वीर्य्यवर्द्धक, बलकारी, स्वादिष्ठ, शीतल तथा तृषा, खाँसी, ज्वर, श्वास, क्षय, रक्तपित्त, कामला, कुष्ठ और पाण्डुरोगको दूर करेहै, कषायरसयुक्त है, वात तथा मूत्रकृच्छ्र रोगका नाश करेहै ।

अपि च ।

वांशी स्वादुर्हिमा रूक्षा शोषकासक्षयापहा ।
भ्रमश्वासहरा चैव तवक्षीरञ्च तद्गुणम् ॥ (शोढलनिघण्टु)

अर्थ-वंशलोचन-स्वादिष्ठ, शीतल, रूखा तथा शोष, खाँसी, क्षय, भ्रम और श्वासको दूर करेहै । तवक्षीरके भी इसीके समान गुण, जानने ।

अन्यच्च ।

तुगा रूक्षा तु तुवरा मधुरा रक्तशुद्धिकृत् ।
शीता शुभावहा ग्राही वृष्या धातुविवर्धिनी ॥
बल्या क्षयश्वासकासरक्तदोषारुचिप्रणुत् ।
रक्तपित्तं ज्वरं कुष्ठं कामलां पाण्डुरोगकम् ॥
दाहं तृषां व्रणं मूत्रकृच्छ्रं दाहञ्च नाशयेत् ।
वातघ्नी चैव विज्ञेया वैद्यशास्त्रविशारदैः ॥ (निघण्टुरत्नाकर)

अर्थ-वंशलोचन-रूखा, कषेला, मधुर, रक्तको शुद्ध करनेवाला, शीतल, शुभावह, ग्राही, वीर्य्यवर्द्धक, धातुवर्द्धक, बलकारक, क्षय, श्वास, खाँसी, रुधिरविकार, अरुची, रक्तपित्त, ज्वर, कुष्ठ, कामला, पाण्डुरोग, दाह, तृषा, व्रण, मूत्रकृच्छ्र, दाह और वातका विनाश, करेहै ।

तवक्षीरनामानि ।

तवक्षीरं पयःक्षीरं यवजं गवयोद्भवम् ।
अन्यद्गोधूमजं चान्यत्पिष्टिकातण्डुलोद्भवम् ॥
अन्यच्च तालसम्भूतं तालक्षीरादिनामकम् ।

अर्थ-तवक्षीर, पयःक्षीर, यवज, गवयोद्भव, गोधूमज, पिष्टिका, तण्डुलोद्भव, तालसम्भूत, तालक्षीर ।



संस्कृतभाषामे	तवक्षीर ।
हिन्दीभाषामे	तवाखीर ।
वंगभाषामे	तवक्षीर ।
मराठीभाषामें	तवकील ।
गुजरातीभाषामें	तवखार ।
इंग्रेजीभाषामे	ऐरोरूट । Arrow roy
कर्णाटकीभाषामें	तवक्षीर ।
लैटिनभाषामे	कर्क्यूमा ऐंगास्टिफोलिया । Curcuma-angustifolia
फारसीभाषामे	तवाशीर ।

अस्य गुणाः ।

तवक्षीरन्तु मधुरं शिशिरं दाहपित्तनुत् ।
क्षयकासकफश्वासनाशनं चास्रदोषनुत् ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ-तवाखीर-मधुर, शीतल तथा दाह, पित्त, क्षय, रुधिरविकार, खांसी, कफ और श्वासको दूर करेहै ।

अपिच ।

तवक्षीरन्तु मधुरं शुभं शीत सुगन्धिकम् ।
बल्यं वृष्य पौष्टिकञ्च धातुवृद्धिकरं लघु ॥
सुस्निग्धक्षयपित्तास्रपित्तदाहारुचीहरम् ।
कासश्वासज्वरतृष्णाकामलापाण्डुकुष्टहम् ॥

मूत्राश्मरीमूत्रकृच्छ्रमेहव्रणकफापहम् ।
रक्तदोषहरं चान्य जातं स्वल्पगुणं मतम्॥ (निघण्टुरत्नाकर)

अर्थ-तवाखीर-मधुर, शुभ्र, शीतल, सुगन्धि, बलकारक, वीर्यवर्द्धक, पुष्टिकारक, धातुवर्द्धक, हलकी, स्निग्ध, तथा क्षय, पित्त, रक्तपित्त, दाह, अरुचि, खांसी, श्वास, ज्वर, तृषा, कामला, पाण्डु, कोढ, मूत्राश्मरी, मूत्रकृच्छ्र, प्रमेह, व्रण, कफ और रक्तविकारको दूर करे है ।

तवाखीर पांच प्रकारकी होतीहै, जौ, गेहूं, चावल, तालवृक्ष और वनगायके दूधकी, इसप्रकार तवाखीर अनेक जातिकी होतीहै। सिंगाडिके चूनकी भी बनतीहै, इन सबमें वनगायके दूधकी और जौकी उत्तम होतीहै ।

समुद्रफेननामानि ।

समुद्रफेनः फेनश्च डिण्डिरोऽब्धिकफस्तथा ।

अर्थ-समुद्रफेन, फेन, डिण्डिर, अब्धिकफ, (अर्णवजमल, अर्णवज, सिन्धुकफ, डिण्डिर, डिण्डीर, समुद्रकफ, जलहास, फेनक, उदधिमल, श्वेतधामा, लवणोदधिसम्भव, वार्द्धिफेन, पयोधिजसुफेन, अब्धिडिण्डीर, सामुद्र, शुष्काशुष्क, विष्याह्व, दधिफेन, सारमल)

संस्कृतभाषामें	समुद्रफेन ।	
हिन्दीभाषामें	समुद्रफेन ।	
बंगभाषामें	समुद्रफेना ।	
मराठीभाषामें	समुद्रफेण ।	
गुजरातीभाषामें	समदरफीण ।	
कर्णाटकीभाषामें	कडल नागले ।	
तैलिंगीभाषामें	सामुद्रनालिके।	
इंग्रेजीभाषामें	कटल फीशबोन ।	Cattlefishbone
लैटिन् भाषामें	सेपिया ऑफिसिनेलिस	Sepia officinalis
फारशीभाषामें	कफेदरिया	
अरबीभाषामें	जुबदुलेहर ।	

अथ गुणा ।

समुद्रफेनश्चक्षुष्यो लेखनः शीतलस्तथा ।
कषायो विषपित्तघ्नः कर्णरुक्कफहृल्लघुः ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-समुद्रफेन-नेत्रोंको हितकारी, लेखन, शीतल, कषेले तथा विष, पित्त, कर्णरोग और कफको दूर करेहै और हलका है ।

अपिच ।

समुद्रफेन शिशिरं कषायं नेत्ररोगनुत् ।
कफकण्ठामयघ्नं च रुचिकृत् कर्णरोगहृत्॥ (राजनि०)

अर्थ-समुद्रफेन-शीतल, कषेला तथा नेत्ररोग, कफ, कण्ठरोग, और कर्णरोगका नाश करेहै और रुचिको उत्पन्न करे है ।

अन्यच्च ।

अब्धिफेनो रुचिकरो लेखनस्तुवरो लघुः ।
चक्षुष्यः शीतलश्चैव पटलादिरुजाहरः ॥
सारश्च विषदोषघ्नः कर्णशूलहरः परः ।
कफं च कण्ठरोगं च पित्तं चैव विनाशयेत् । (नि०र०)

अर्थ-समुद्रफेन-रुचिकारक, लेखन, कषेले, हलके, नेत्रोंको हितकारी, शीतल, पटलादिरोगनाशक, सारक, विषनाशक तथा कर्णशूल, कफ, कण्ठरोग और पित्तको दूर करेहै ।

अन्यच्च ।

समुद्रफेनं शिशिरं तुवरं वान्तिकृत्परम् ।

अर्थ-समुद्रफेन-शीतल, कषेला और अत्यन्त वान्तिकारक है । मात्रा २ मासेकी ।

इति श्रीशालिग्रामनिघण्टुभूषणे हरीतक्यादिवर्गः ॥ २ ॥

अथ अष्टवर्गः ।

जीवकनामानि ।

जीवकः क्ष्वेडह्रस्वाङ्गो दीर्घायुः शृङ्गकः प्रियः ।

अर्थ-जीवक, क्ष्वेड, ह्रस्वाङ्ग, दीर्घायु, शृङ्गक, प्रिय, (शृङ्गकूर्च, शीर्ष, मधुरक, मधुर, कूर्चशीर्षक चिरजीवक, जीवन, प्राणद, जीव्य, भृङ्गाह्व, चिरंजीव, मधुर, मङ्गल्य, वृद्धिद, आयुष्मान्, जीवद, बलद)

अस्य गुणाः ।

जीवको मधुरः शीतो रक्तपित्तानिलार्तिजित् ।

क्षयदाहज्वरान् हन्ति शुक्रश्लेष्मविवर्द्धनः॥ (गणनिघण्टु)

अर्थ-जीवक-मधुर, शीतल तथा रक्त, पित्त, वात, क्षय, दाह और ज्वरको दूर करे है। शुक्र (वीर्य) और कफको बढावेहै।

अपिच।

जीवको मधुरः शीतः शुक्रलः कफकृन्मतः।
रक्तपित्तहरो बल्यो वातपित्तज्वरापहः॥
कृशताक्षयदाहानां रक्तदोषस्य नाशकः। (नि०र०)

अर्थ-जीवक-मधुर, शीतल, शुक्रजनक, कफकारक, रक्तपित्तनाशक, बलकारक तथा वात, पित्त, ज्वर, कृशता, क्षय, दाह और रुधिरविकारको दूर करे है।

अस्य स्वरूप यथा।

जीवन्तीसदृशैः पत्रैर्जीवको गुल्मकः स्मृतः।
कण्टी क्षीरी तथानूपे भवतीत्यब्रवीन्मुनिः॥ (इति कैयदेव)

अर्थ-जीवक औषधीका गुल्म अनूप देशमें उत्पन्न होताहै, पत्ते जीवन्तीके समान होते है, कांटे सूक्ष्म होते है और इसमें दूध होताहै।

अपिच।

जीवको ह्रस्वविटपः कूर्चशीर्षश्च दक्षिणे।
देशे सजायते कन्दो निःसारः सूक्ष्मपत्रकः॥ (शिवनिघण्टु)

अर्थ-विटप छोटा है, इसका आकार कुरारीके समान होता है, इस कन्दकी उत्पत्ति दक्षिण देशमें होती है। पत्ते सूक्ष्म सारहीन होते है। व्यवहार-कन्द।

ऋषभकनामानि।

ऋषभो दुर्द्धरो द्राक्षा मातृको वल्लुरो नृपः॥

अर्थ-ऋषभ, दुर्द्धर, द्राक्षा, मातृक, वल्लुर, नृप, (ऋषभक, वृषभ, वृष, वीर, पृथिवीपति, गोपति, धीर, विषाणी, ककुद्मान्, पुङ्गव, बोढी, शृङ्गी, धुर्य, भूपति, कामी, रुक्षप्रिय, उक्षा, लाङ्गली, गौ, बन्धुर, बन्धूर, गोरक्ष, वनवासी, ऋषिप्रिय, मधुर, शीतल, कामद)

अस्य गुणा।

ऋषभको मधुः शीतो गर्भसन्धानकारकः।

शुक्रधातुकफानां च कारको बलदायकः ॥
वृष्यः पुष्टिकरः प्रोक्तः पित्तरक्तातिसारजित् ।
रक्तरुक्कृशतावातज्वरदाहक्षयापहः ॥ (नि० र०)

अर्थ-ऋषभक-मधुर, शीतल, गर्भसन्धानकारक,शुक्रवर्द्धक,कफकारक, बलदायक, वीर्यजनक, पुष्टिकारक तथा पित्त, रक्तातिसार, रक्तरोग, कृशता, वातज्वर, दाह और क्षयका नाश करे है ।

जीवकर्षभकगुणा ।

जीवकर्षभकौ बल्यौ शीतौ शुक्रकफप्रदौ ।
मधुरौ पित्तदाहास्रकार्श्यवातक्षयापहौ ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-जीवक और ऋषभक-बलकारक, शीतल, वीर्यवर्द्धक,कफकारक, मधुर, पित्त, दाह,रुधिरविकार,वायु और क्षयरोगको नाश करेहै ।

ऋषभो जीवकगुणो कामदः स विशेषतः ।(शोडलनिघण्टु)

अर्थ-ऋषभक औषधीके गुण जीवककेही समान है । विशेषतः यह कामको उत्पन्न करे है ।

जीवकर्षभकस्वरूपम् ।

जीवकर्षभकौ ज्ञेयौ हिमाद्रिशिखरोद्भवौ ।
रसोनकन्दवत्कन्दौ निःसारौ सूक्ष्मपत्रकौ ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-जीवक और ऋषभक यह दोनो औषधि हिमालय पर्वतके शिखरपर उत्पन्न होतीहैं,इनका कंद लहसनके कदकी समान होता है साररहित बारीक पत्ते होते है ।

जीवक कुहरीके आकार और ऋषभक वृषभ (बैल) के सिंगके आकार होताहै।

मेदानामानि ।

मेदा धीरा मणिच्छिद्रा मधुरा जीवनी रसा ।

अर्थ-मेदा, धीरा, मणिच्छिद्रा, मधुरा,जीवनी,रसा (मेदोद्भवा, श्रेष्ठा, विभावरी, वसा, शल्यपर्णिका, मेदसारा, स्नेहवती, मेदिनी, स्निग्धा, मेदा, द्रवा, साध्वी, शल्यदा, बहुरन्ध्रिका, मेदोवती,पुरुषदन्तिका, शल्यपर्णी छिद्रबहुला, भव्या, जीवनिका, अध्वरा, स्वल्पपर्णी)

मेदागुणा ।

मेदा तु मधुरा शीता पित्तदाहार्त्तिकासनुत् ।

राजयक्ष्मज्वरहरा वातदोषकरी च सा॥(निघण्टुचूडामणि)

अर्थ-मेदा-मधुर, शीतल तथा पित्त, दाह, खांसी, राजयक्ष्मा और ज्वरको नाश करेहै और वातको उत्पन्न करे है ।

अपि च।

मेदा तु मधुरा शीता वृष्या स्वाद्वी गुरुः स्मृता ।
शुक्रवृद्धिकरी स्तन्या स्निग्धा च श्लेष्मला स्मृता ॥
वात पित्तं रक्तदोष क्षय चैव विनाशयेत् ।
ज्वरं दाह च कास च नाशयेदिति कीर्तितम् ॥ (नि० र०)

अर्थ-मेदा-मधुर,शीतल, वीर्यजनक, स्वादु, भारी, धातुवर्द्धक, स्तनोमे दूध उत्पन्न करनेवाली, स्निग्ध,कफकारक तथा वात, पित्त, रक्तविकार, क्षय, ज्वर, दाह और खांसीको दूर करे है ।

मेदालक्षणम् ।

शुभ्रकन्दो नखच्छेद्यो मेदधातुरिव स्रवेत् ।
यः स मेदेति विज्ञेयो जिज्ञासातत्परैर्जनैः ॥

अर्थ-जिसका सफेद कन्द हो और जिसमे नखसे छेदनेमे मेदा धातुकी समान एकप्रकारका रस टपके, उसको मेदा जानना ।

महामेदानामानि।

महामेदा देवमणिर्वसुच्छिद्रा विपाण्डुरा ।

अर्थ-महामेदा, देवमणी, वसुच्छिद्रा, विपाण्डुरा(जीवनी,पांशुरोगिणी,महामेद,पुरोद्भवा, देवेष्ट,सुरमेदा,दिव्या,देवगन्धा,वृक्षार्हा, त्रिदन्ती, देवतामणि, सोमा,देवष्टा, सुरामेदा और मेदोद्भवा)।

महामेदागुणाः ।

महामेदा हिमा रुच्या कफशुक्रप्रवृद्धिकृत् ।
हन्ति दाहास्रपित्तानि क्षय वात ज्वर च सा॥(राजनिघण्टु)

अर्थ-महामेदा-शीतल, रुचिकारक, कफ और शुक्रको बढाने-वाली तथा दाह, रक्तपित्त, क्षय, वात और ज्वरका नाश करने-वाली है ।

महामेदा-मेदागुणाः ।

मेदायुग्मं पर स्निग्धं शुक्रमेदःप्रवर्द्धनम् ।
मधुर रसपाकाभ्या जीवन वातपित्तजित् ॥

अर्थ-मेदा और महामेदा-स्निग्ध, शुक्रजनक, मेदोवर्द्धक, रस और पाकमे मधुर, जीवन तथा वातपित्तको दूर करे है ।

महामेदालक्षणम् ।

महामेदाभिधः कन्दो मोरगादौ प्रजायते ।
शुभार्द्रकनिभः कन्दो लताजातः सुपाण्डुरः ॥

अर्थ-महामेदा-नामवाला कन्द मौरंगादि देशोमे उत्पन्न होताहै यह कन्द देखनेमे सफेद अदरखकी समान होताहै, इसकी बेल चलती है और पाण्डुरंगका होता है ।

ऋद्धिनामानि ।

ऋद्धिः प्राणप्रिया वृष्या प्राणदा सम्पदाह्वया ।

अर्थ-ऋद्धि, प्राणप्रिया, वृष्या, प्राणदा, सम्पदाह्वया, (योग्य सिद्धि, लक्ष्मी, प्राणप्रदा, जीवदात्री, सिद्धा, योग्या, चेतनीया, रथाङ्गी, मङ्गल्या, लोककान्ता, जीवश्रेष्ठा, यशस्या)

अस्या गुणाः ।

ऋद्धिर्बल्या त्रिदोषघ्नी शुक्रला मधुरा गुरुः ।
प्राणैश्वर्यकरी मूर्च्छारक्तपित्तविनाशिनी॥ (भा० प्र०)

अर्थ-ऋद्धि-बलकारक, त्रिदोषनाशक, शुक्रजनक, मधुर, भारी, प्राणप्रद, ऐश्वर्यजनक तथा मूर्च्छा और रक्तपित्तनाशक है ।

अन्यच्च ।

ऋद्धिस्तु मधुरा स्निग्धा मेधाकृच्छीतला स्मृता ।
कफं शुक्रं वर्धयन्ती प्राणैश्वर्यबलप्रदा ॥
रक्तशुद्धिकरी रुच्या गुर्वी कुष्ठापहा मता ।
कृमित्रिदोषमूर्च्छास्रपित्ततृट्क्षयपित्तहा ॥
वातरक्तरुजं जूर्तिं नाशयेदिति कीर्तिता ॥ (नि० र०)

अर्थ-ऋद्धि, मधुर, स्निग्ध, मेधाजनक, शीतल, कफकारक, शुक्रवर्द्धक, प्राणदायक, ऐश्वर्यजनक, बलकारक, रक्तशोधक, रुचिकारक, भारी तथा कोढ, कृमिदोष, मूर्च्छा, रक्तपित्त, तृषा, क्षय, पित्त, वातरक्त और ज्वरका नाश करे है ।

वृद्धिनामानि ।

वृद्धिर्बोधनिका चैव प्रिया सिद्धिः सुरोत्तमा ।

अर्थ-वृद्धि, बोधनिका, प्रिया, सिद्धि, सुरोत्तमा, (योग्या, ऋद्धि, लक्ष्मी, पुष्टिदा, वृद्धिदात्री, मङ्गल्या, श्री, सम्पत, आशी, जनेष्टा, भूति, सुत, सुख, जीवभद्रा)

वृद्धिगुणा ।

वृद्धिर्गर्भप्रदा शीता बृंहणी मधुरा स्मृता ।
वृष्या पित्तास्रशमनी क्षतकासक्षयापहा ॥

अर्थ-वृद्धि-गर्भजनक, शीतल, पुष्टिकारक, मधुर, वीर्य्यवर्द्धक रक्तपित्तकी शान्ति करनेवाली तथा उरःक्षत, खासी और क्षयरोग का नाश करहै ।

ऋद्धिवृद्ध्युत्पत्तिलक्षणम् ।

ऋद्धिर्वृद्धिश्च कन्दौ च भवतः कोशलेऽचले ।
श्वेतलोमान्वितः कन्दो लताजातः सरन्ध्रकः ॥
स एव ऋद्धिर्वृद्धिश्च भेदमप्येतयोर्ब्रुवे ।
तुलग्रंथिसमा ऋद्धिर्वामावर्तफला च सा ॥
वृद्धिस्तु दक्षिणावर्त्तफला प्रोक्ता महर्षिभिः ।

अर्थ-ऋद्धि और वृद्धि दोनो कन्द कोशलपर्वतमे उत्पन्न होतेहै, यह दोनोही कन्द लताजातिके होतेहै और इनके ऊपर सफेद रोम होतेहै और छिद्रयुक्त होतहै ।

ऋद्धि और वृद्धिमे केवल इतनीही अतर है कि, ऋद्धि कपासकी गाठके समान आकृतिवाली बॉए भागमे आवर्तशील फलयुक्त होती है, वृद्धि दक्षिणभागमे आवर्तमय फलसहित होतीहै ।

काकोलीनामानि ।

काकोली शीतपाकी च पयस्या वायसोलिका ।

अर्थ-काकोली, शीतपाकी, पयस्या, वायसोलिका, (वायसोली क्षीरा, वीरा, धीरा, शुक्ला मेदुरा, ध्माक्षोली, ध्माक्षिका, स्वादुमांसी, वयस्था, जीवंती, मधुरा, शुक्लक्षीरा, पयस्विनी कायस्थिका जीवनीया)

काकोलीगुणा ।

काकोली मधुरा स्निग्धा क्षयपित्तानिलार्तिनुत् ।

रक्तदाहज्वरघ्नी च कफशुक्रविवर्द्धिनी ॥ (रा० नि०)

अर्थ-काकोली-मधुर, स्निग्ध तथा क्षय, पित्त, वातकी पीडा, रक्तदोष, दाह और ज्वरको नाशकरे है, कफ और शुक्रको बढावे है।

अन्यच्च।

काकोली शीतला वृष्या मधुरा शुक्रकारिणी ।
तिक्ता कफकरी गुर्वी क्षयपित्ततृषाहरा ॥
रक्तदोष रक्तपित्तं पित्तं दाह ज्वर विषम् ।
वातपित्तरुज चैव नाशयेदिति कीर्तिता ॥

अर्थ-काकोली-शीतल, वीर्य्यवर्द्धक, मधुर, धातुवर्द्धक, कडवी, कफकारक, भारी तथा क्षय, पित्त, तृषा, रुधिरविकार, रक्तपित्त, दाह, ज्वर, विषवायु और पित्तरोगको दूर करेहै ।

क्षीरकाकोलीनामानि ।

पयस्या क्षीरकाकोली महावीरा पयस्विनी ।

अर्थ-पयस्या, क्षीरकाकोली, महावीरा, पयस्विनी (क्षीरकाकोलिका, क्षीरशुक्ला, सुकोली, अष्टमी, क्षीरविषाणिका, जीववल्ली, जीवशुक्ला, क्षीरा, क्षीरवल्ली, वयस्था, क्षीरमधुरा, दुग्धाढ्या)

क्षीरकाकोलीगुणा ।

क्षीरकाकोलिका वृष्या स्तन्यवृद्धिकरी लघुः ।
रसवीर्य्यविपाकेषु काकोली सदृशा च सा॥(ग०नि०)

अर्थ-क्षीरकाकोली-वीर्य्यजनक, स्तनोमे दूधबढानेवाली, हलकी और रस, वीर्य्य और विपाकमे काकोलीकी समानहै ।

द्विविधकाकोलीगुणाः ।

काकोलीयुगलं शीतं शुक्रलं मधुरं गुरु ।
बृंहणं वातदाहास्रपित्तशोषज्वरापहम् ॥

अर्थ-काकोली और क्षीरकाकोली-शीतल, वीर्यजनक, मधुर, भारी, पुष्टिकारक तथा वात, दाह, रक्तपित्त, शोष औरज्वरको दूरकरेहै।

अन्यच्च ।

काकोलिकाद्वय वृष्यमवस्थास्थापनं परम् ।
स्वादुपाकरसं बल्यं शीतवीर्य्यश्च जीवनम् ॥(शो०नि०)

अर्थ-काकोली और क्षीरकाकोली-वृष्य, अवस्थास्थापक, पाक और रसमे स्वादिष्ठ, बलकारक, शीतवीर्य्य और जीवन है।

काकोलीक्षीरकाकोल्योरुत्पत्तिलक्षणम्।

जायते क्षीरकाकोली महामेदोद्भवस्थले।
यत्र स्यात्क्षीरकाकोली काकोली तत्र जायते॥
पीवरीसदृश· कन्दः क्षीरं स्रवति गन्धवान्।
स प्रोक्त क्षीरकाकोली काकोलीलिङ्गमुच्यते॥
यथा स्यात्क्षीरकाकोली काकोल्यपि तथा भवेत्।
एपा काचिद्भवेत्कृष्णा भेदोऽयमुभयोरपि॥

अर्थ-जिस स्थानमे महामेदा उत्पन्न होतीहै, उसीस्थानमे काकोली और क्षीरकाकोली उत्पन्न होतीहै। क्षीरकाकोलीका कन्द सतावरके समान होता है और इसमे एक प्रकारका सुगन्धियुक्त दूध निकलताहै। जैसी क्षीरकाकोली होतीहै, वैसेही काकोली होतीहै, इन दोनोमे केवल इतनाही अतर है कि क्षीरकाकोलीकी अपेक्षा काकोली किंचित कृष्णवर्ण होतीहै।

अष्टवर्गनामानि।

जीवकर्षभकौ मेदे काकोल्यौ वृद्धिऋद्धिके।
अष्टवर्गोऽष्टभिर्द्रव्यैः कथितश्चरकादिभि·॥

अर्थ-जीवक, ऋषभक, मेदा, महामेदा, वृद्धि, ऋद्धि, काकोली और क्षीरकाकोली इन एकत्र मिलेहुए आठ द्रव्योंको अष्टवर्ग कहतेहै।

अष्टवर्गगुणा।

अष्टवर्गो हिमः स्वादुर्बृंहण शुक्रलो गुरु·।
भग्नसन्धानकृद्बल्य·शरीरकफवर्द्धन·॥
वातपित्तास्रतृड्दाहज्वरमेहक्षयप्रणुत्।

अर्थ-अष्टवर्ग-शीतल, स्वादिष्ठ, पुष्टिजनक, बलकारी, शरीर और कफवर्द्धक है। वीर्यजनक, भारी, भग्नसन्धानकारक तथा वात, पित्त, रक्त, तृषा, दाह, ज्वर, प्रमेह और क्षयरोगका नाश करे है।

राज्ञामप्यष्टवर्गस्तु यतोऽयमतिदुर्लभ।
तस्मादस्य प्रतिनिधिं गृह्णीयात्तद्गुणं भिषक्॥

अर्थ–यह अष्टवर्ग राजाओंकोभी अत्यन्त दुर्लभ है इसकारण अष्टवर्गके बदले इन्हींके सदृश गुणवाली औषधी लेनी ।

एतस्य प्रतिनिधीनाह ।

मेदा जीवककाकोली ऋद्धिद्वन्द्वेपि चासति ।
वरी विदार्यश्वगन्धा वाराहीश्च क्रमात्क्षिपेत ।

अर्थ–मेदा और महामेदाके अभावमे सतावर लेनी, जीवक और ऋषभकके अभावमे विदारीकन्द लेना, काकोली और क्षीरकाकोलीके अभावमे असगन्ध लेनी,ऋद्धि और वृद्धिके अभावमे वाराहीकद लेना चाहिये ।

जीवक १ ऋषभक २ काकोली ३ क्षीरकाकोली ४ मेदा ५ महामेदा ६ ऋद्धि ७ और वृद्धि ८ यह आठ कन्द है । इनके नाम, गुण, उत्पत्ति और लक्षण प्राचीन ग्रन्थोमे लिखेहै, परन्तु उनका ठीक निश्चय नही होता कि, उनका कैसा रूप है वह कैसी है सो ' भावमिश्र ' के लिखे अनुसार हम प्रथमही लिख चुकेहै कि "यह अष्टवर्ग राजाओंकोभी दुर्लभ है,इनके नाम सस्कृतके अतिरिक्त और किसी भाषामे आजपर्यन्त नही सुने, किन्तु किसी किसी ग्रन्थकारने बंगला, कर्णाटकी, तलङ्गी, तामिली और लैटिन्भाषामे इनके नाम लिखे है, सो उन देशोमे प्रचलित न होनेके कारण अशुद्धसे जान पडते है" । परन्तु अष्टवर्गके विषयमे भावमिश्रका लेख सदिग्धसा प्रतीत होताहै, उनके लिखे आकारके हमारे पहाडोपर अनेक कंद होते है जो अमृतके और विषके समान कोई श्रेष्ठ कोई हानि कारक होते है । आजकल कुछ वैद्य ऋद्धि वृद्धिके स्थानमे तराडियां, दोनो काकोलीके स्थानमे दोनो प्रकारकी सकाकल, जीवक ऋषभकके स्थानमे दोनो प्रकारकी सालब, मेदाके स्थानमे दियाकंद, डालतेहै जो शिमला प्रान्तमे सब होते है ।

मधुयष्टिनामानि ।



मधुयष्टी यष्टिमधुर्यष्ट्याह्वा क्लीतका स्मृता ।
मधुकं यष्टिमधुकं यष्टिका मधुयष्टिका ॥

अर्थ-मधुयष्टी, यष्टिमधु, यष्ट्याह्वा, क्लीतका, मधुक, यष्टिमधुक, यष्टिका, मधुयष्टिका, (यष्टिमधु, यष्टिमधुका, यष्टीक, यष्टिमधुका, यष्ट्याह्व, यष्ट्याह्वक, क्लीतक, यष्टि, मधुस्रवा, मधुयष्टिक)

(क्लीतन, क्लीतनीयक, मधुम, मधुवली, मधूली, मधुररसा, अतिरसा, मधुरनाम, शोषापहा, सौम्या)

संस्कृतभाषामें	यष्टीमधु, जलयष्टि, स्थलयष्टि, यष्टिरसक्रिया ।
हिन्दीभाषामें	मुलहटी, मीठीलकरी, मुलैठिका ।
बंगभाषामें	यष्टीमधु ।
मराठीभाषामें	ज्येष्ठमध ।
गुजरातीभाषामें	जेठीमधनो मूल, जेठीमधनो शीरो ।
कर्णाटकीभाषामें	याष्टिमधु, वल्लियष्टिमधु ।
तैलिङ्गीभाषामें	यष्टीमधुकमु ।
इंग्रेजीभाषामें	लिकरिसरूट् । Liquorice root कामन् लिकरिस् Liquorice Extract
लैटिन्भाषामें	ग्लिसिरिझारोदिक्स ग्लिसिरिझाग्लेब्रा । Glycyrrhiza glabra
फारसीभाषामें	बखमहेकमझु
अरबीभाषामें	असलुस्सूसमुकस्सरख्येसूल ।

अस्या गुणाः ।

मधुरं यष्टिमधुकं किञ्चित्तिक्तं च शीतलम् ।
चक्षुष्यं पित्तहृद्रुच्यं शोषतृष्णाव्रणापहम् ॥ (रा०नि०)

अर्थ-मुलैठी-मधुर, किंचित् कडवी, शीतल, नेत्रोंको हितकारी, पित्तनाशक, रुचिकारी तथा शोष, तृषा और व्रणको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

यष्टीहिमा गुरुः स्वाद्वी चक्षुष्या बलवर्णकृत् ।
सुस्निग्धा शुक्रला केश्या स्वर्या पित्तानिलास्रजित् ।
व्रणशोथविषच्छर्दितृष्णाग्लानिक्षयापहा ।
तस्या रसक्रिया स्वाद्वी यष्टेः सा तु गुणाधिका ॥

अर्थ-मुलेठी-शीतल, भारी, मधुर, नेत्रोंको हितकारी, बलकारक, वर्णको सुन्दर करनेवाली, स्निग्ध, वीर्यजनक, केशोंको सुशोभित करनेवाली, स्वरको सुधारनेवाली तथा पित्त, वात, रक्त, घाव, सूजन, विष, वमन, तृषा, ग्लानि और क्षयरोगका नाश करे है। इसका सत्त (रुब्बसूस) मीठा है और मुलेठीकी अपेक्षा अधिक गुणवाला है ।

अन्यच्च ।

मधुवल्ली द्विप्रकारा जलजा च स्थलोद्भवा ।
सा वृष्या मधुरा रुच्या बल्या गुर्वी च शीतला ॥
चक्षुष्या वर्णदा स्वर्य्या स्निग्धा केशहितामता ।
शुक्रला रक्तपित्तघ्नी व्रणशुद्धिकरी मता ॥
शोथं विषं वातरक्त व्रणं वान्ति तृषां तथा ।
ग्लानिं क्षय रक्तदोष रक्तपित्तं च पित्तकम् ॥
सद्योव्रण वातपित्त नाशयेदिति कीर्तितम् । (नि० र०)

अर्थ-दोनो प्रकारकी मुलेठी-[एक जलमे उत्पन्न होनेवाली, दूसरी स्थलमे उत्पन्न होनेवाली]वीर्यवर्द्धक, मधुर, रुचिकारी,बलकारक, भारी, शीतल,नेत्रोंको हितकारी,वर्णको सुदर करनेवाली, स्वरको निर्मल करनेवाली,स्निग्ध, केशोंको हितकारी, शुक्रजनक, [पुष्टिकारक, गौल्य, मूत्रवर्द्धक]रक्तपित्तनाशक, व्रणको शुद्धि करनेवाली तथा सूजन, विष, वातरक्त, घाव, वमन, तृषा, ग्लानि, क्षई, रक्तविकार, रक्तपित्त, पित्त, सद्योव्रण और वातपित्तको दूर करेहै ।

जलयष्टयर्कगुणा ।

वार्यष्टयर्को विषच्छार्दितृष्णाग्लानिक्षयापहः । (लकेश)

अर्थ-जलमे उत्पन्न होनेवाली मुलेठीका अर्क-विष, वमन, तृषा, ग्लानि और क्षई रोगको दूर करेहै ।

विवरण-मुलेठीका क्षुप होताहै,इसके पत्ते छोटे छोटे गोल होतेहै इसमे छोटी और बारीक फली लगतीहै, फूल लाल आताहै, इसकी जड प्रयोगमे लीजातीहै । दूसरी वेलवाली मुलेठी होतीहै ।

कम्पिल्लनामानि ।

कम्पिल्लः कर्कशश्चन्द्रो रक्ताङ्गो रोचनोऽपि च ।

अर्थ-कम्पिल्ल, कर्कश, चन्द्र, रक्ताङ्ग,रोचन, (काम्पिल्लक,कपिल्ल, काम्पील, काम्पिल्य, कम्पिल्य,रेचनी,काम्पिल्लका,रेचना, पिकाक्ष,

रोचनी, लघुपत्रक, कम्पीलक,रेची, रेचन, रञ्जक, लोहिताङ्ग, रक्तचूर्णक, रक्तफल, नदीवास, बहुपुष्प और बहुफल)

संस्कृतभाषामें	काम्पिल्ल, काम्पिल्लक।
हिन्दीभाषामें	कबी (म्बी) ला।
बंगभाषामें	कमलागुडि, गुण्डारोचनी।
मराठीभाषामें	कपिला।
गुजरातीभाषामें	कपीलो।
कर्णाटकीभाषामें	कम्पिल्लक।
इंग्रजीभाषामें	केमिला राटलीरा। Kamila Rottlera
लैटिन्‌भाषामें	मल्लोटस्‌फिलिपाइनासिस् (वृक्ष) रोटलीर टिक्टोरिया Mellotusphilippinesis Rottlertinctoria
फारसीभाषामें	कम्बिलाय।
अरबीभाषामें	किन्बीर।

अस्य गुणाः।

कम्पिल्लको विरेची स्यात् कटूष्णो व्रणनाशनः।
कफकासार्तिहारी च जन्तुकृमिहरो लघुः॥(राजनिघण्टु)

अर्थ-कबीला-दस्तावर, चरपरा, गरम, व्रणनाशक तथा कफ, खांसी, जन्तु और कृमिको दूर करे है। और हलका है।

अपिच।

कम्पिल्लः कफपित्तास्रकृमिगुल्मोदरव्रणान्।
हन्ति रेची कटूष्ण च मेहानाहविषाश्मनुत्॥

अर्थ-कबीला-कफ, रक्तपित्त, कृमि, गुल्म,उदररोग और घावको दूर करे है,दस्त करानेवाला है,चरपरा है,गरम है और अनाह,विष तथा पथरीका नाशकरे है।

अन्यच्च।

कम्पिल्लकः सरश्चाग्निदीपकः कटुकः स्मृतः।
व्रणस्य रोपणश्चोष्णो लघुर्भेदी कफापहः॥
व्रणगुल्मोदराध्मानकासपित्तप्रमेहहा।
आनाहं च विषं चैव मूत्राश्मरिरुजापहः॥

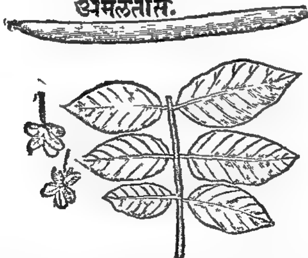
कृमिं च रक्तदोषं च नाशयेदिति कीर्तितः ।
तच्छाक शीतलं तिक्तं वातलं ग्राहि दीपनम् ॥

अर्थ–कबीला–सारक, अग्निदीपक, चरपरा, व्रणको भरनेवाला, गरम, हलका, दस्तावर, कफनाशक तथा व्रण, गुल्म, उदररोग, आध्मान, खांसी, पित्तप्रमेह, आनाह, विष, मूत्राश्मरी, कृमि और रक्तविकारको नाश करेहै ।

इसके पत्तोका शाक शीतल, कडवा, वादी, मलरोधक और जठराग्निको दीपन करेहैं ।

विवरण । इसके वृक्ष पर्वतोपर अधिकतासे उत्पन्न होतेहैं पत्ते गूलरकी समानहैं, इसके फल छोटेबेरकी समान होतेहैं।उनके ऊपर लाल लाल रजसी जमी होती है, पहाडी लोग उन फलोको तोड टोकरियोमे डाल पैरोसे मलतेहै, जो रज छूटकर नीचे झड जाती है उसीको कबीला कहतेहैं। मात्रा ८ रत्तीकी।पेटके कृमि दूर करनेको दही मे डालकर छे मासे कमीला पीनेसे रेचन होकर कृमी निकलजाते है।

आरग्वधनामानि ।



आरग्वधो राजवृक्षो व्याधिघातो जठरनुत् ।

अर्थ–आरग्वध, राजवृक्ष, व्याधिघात, जठरनुत (चक्रपरिव्याध, सम्यक्, चतुरगुल, शम्याक, आरेवत, कृतमाल, सुवर्णक, मन्थान, रोचन, दीर्घफल, नृपद्रुम, प्रमेह, हिमपुष्प, राजतरु, कण्डूघ्न, महाकर्णिकार, ज्वरान्तक, अरुज, स्वर्णपुष्प स्वर्णद्रु, कुष्ठसूदन, कर्णाभरणक, महाराजद्रुम, कर्णिकार, स्वर्णाङ्ग, दीर्घफल, स्वर्णभूषण,

आरोग्यशिम्बी, शम्याक, व्यथान्तक, आमहा, स्वर्णस्थाली, रेचन कुण्डली, हेमपुष्प, शेफालिका, नक्तमाल,स्वर्णवृक्ष, सारफल, कुष्ठघ्न, द्रुमोत्पल)

संस्कृतभाषामे	आरग्वध ।
हिन्दीभाषामे	अमलतास, घनवहेडा ।
वङ्गभाषामे	सोनालु,शोंदाल,एखालनडी,वानरनाडी
मराठीभाषामे	बाहवा, बाव्याच्याशेंगातील गर ।
गुजरातीभाषामे	गरमालो । गरमालोनो गोल ।
कर्णाटकीभाषामे	हेगाके ।
तैलिङ्गीभाषामे	रेल्लकाया ।
अँग्रेजीभाषामे	पुडिंगपाईपट्री, पार्जिङ्गकाश्या, काश्यापल्प Pudding pipetree, Purgingcassia Cassia pulp
लैटिन्भाषामे	केश्याफिसचुला । Cassiafistula
अरबीभाषामे	ख्यारेशम्बर ।

आरग्वध गुणा ।

आरग्वधो गुरुः स्वादुः शीतलो मृदुरेचनः ।
ज्वरहृद्रोगपित्तास्रवातोदावर्तशूलनुत् ॥

अर्थ-अमलतास-भारी, स्वादिष्ट, शीतल, मृदु, रेची तथा ज्वर, हृदयरोग, रक्तपित्त, वात उदावर्त और शूलको निर्मूल करे है ।

एतत्फलगुणा ।

तत्फलं स्रंसनं रुच्यं कुष्ठपित्तकफापहम् ।
ज्वरे तु सततं पथ्यं कोष्ठशुद्धिकरं परम् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-अमलतासकी कली-स्रंसन, रुचिकारक, कुष्ठनाशक, पित्तनिवारक,कफघ्न,ज्वरमे सर्वदा पथ्यहै और कोठेको अतीव शोधे है ।

एतत्पत्रगुणा ।

पत्रमारग्वधस्यापि कफमेदोविशोषणम् ।
ज्वरे च सततं पथ्यं मलदोषसमन्विते ॥

अर्थ-अमलतासके पत्ते-कफ और मेदाशोषक है, ज्वरमे सदा पथ्य है और मलको ढीला करे है ।

एतत्पुष्पगुणा ।

पुष्पाणि स्वादुशीतानि तिक्तानि ग्राहकाणि च ।

तुवराणि वातलानि कफपित्तहराणि च ॥

अर्थ-अमलतासके फूल-स्वादिष्ठ, शीतल, कडुवे, ग्राहक, कषेले, वातवर्द्धक, कफ और पित्तको दूर करे है।

एतन्मज्जागुणा।

मज्जा तु मधुरा पाके स्निग्धा चाग्निविवर्द्धिनी।
रेचिका पित्तवातानां नाशिका समुदाहृता ॥

अर्थ-अमलतासकी मज्जा-पाकमे मधुर, स्निग्ध, जठराग्निको वर्द्धक, रेचक तथा पित्त और बादीका नाश करे है।

एतन्मूलगुणा।

कृतमालस्य मूलं तु दुग्धेन सह पाचयेत्।
वातरक्तं निहत्याशु दद्रुमण्डलकान्यपि ॥

अर्थ-अमलतासकी जड-दूधमे औटाई हुई-वातरक्तनाशक, दाह और मण्डलकुष्ठको नष्ट करे है।

कर्णिकारगुणा।

कर्णिकारः सरस्तिक्तः कटूष्णः कफशूलहा।
उदरक्रिमिमेहघ्नो व्रणगुल्महरो नृप ॥ (नि० र०)

अर्थ-कर्णिकार-(दूसरे प्रकारका अमलतास) सारक, कडवा, चरपरा, गरम तथा कफ, शूल, उदररोग, क्रिमि, प्रमेह, व्रण और गुल्मका नाश करे है।

गजकर्ण, कुष्ठ, दद्रु, खुजली, विचर्चिकादि रोगोपर अमलतासके पत्तोको पीस उसमें काजी मिलाकर लेप करते हैं।

गण्डमाला रोगमे अमलतासकी जडको चावलोके पानीमें पीसकर नास (नाकके द्वारा पीना) देते हैं।

विवरण। इसका बडा वृक्ष होता है, पत्ते लाल चंदनके पत्तोकी समान होते हैं फूल पीले, तरवट, आमलेकी सदृश होते है। फली गोल और १-१॥ हाथ लम्बी होती है, उसमेंसे गूदा निकलता है, उस गूदेका जुलाब लगता है। व्यवहार-गूदा, पत्ते, फूल, मूल। मात्रा गूदेकी ३ मासेसे लेकर १॥ तोलेतक है। इसके पेड सर्वदेशोंमे, बागोंमे और कालका शिमलेकी सडकपर बहुत है. लोग गुल्वलकडी या अमलतास नामसे जानते हैं ॥

कटुकानामानि।

तिक्ता काण्डरुहारिष्टा चक्राङ्गी-शकुलादनी।

तिक्तरोहणिका चैव कटुका कटुरोहिणी ॥

अर्थ-तिक्ता, काण्डेरुहा, अरिष्टा, चक्राङ्गी, शकुलादनी, तिक्तरोहणिका, कटुका, कटुरोहिणी, (जननी, तिक्ता, तिक्तरोहिणी, मत्स्यपित्ता, नकुलासादनी, शतपर्वा, द्विजाङ्गी, मलभेदिनी, अशोकरोहिणी, कृष्णा, कृष्णभेदा, कृष्णभेदी, महौषधी, कट्वी, अंजनी, कटु, केदारकटुका, वामनी, धन्वन्तरिग्रया, वान्तिदा, कटंभरा, कटुम्भरा, अशोका, काण्डरुहा, तिक्तिका, चित्राङ्गी, मत्स्यशकला)



संस्कृतभाषामें	कटुका ।
हिन्दीभाषामें	कुटकी ।
वङ्गभाषामें	कट्की ।
मराठीभाषामें	कुटकी, काळी कुटकी ।
गुजरातीभाषामें	कडु ।
कर्णाटकीभाषामें	केदार कट्की ।
तैलङ्गीभाषामें	काटकरोहिणी, नल्लकोलकर ।
इंग्रेजीभाषामें	ब्लाकहल्लीबोर । Black Hellebore
लैटिनभाषामें	हेल्लोवोरी नेग्रोरे दिक्स पिक्रोर्हिजा कुरोआ। Picrorrhi Za Kurroa
फारसीभाषामें	खर्बके सियाह ।
अरबीभाषामें	खर्बके अस्वद खर्बके अवीयद ।

अस्या गुणाः ।

कट्वी तु कटुका पाके तिक्ता रूक्षा हिमा लघुः ।
भेदिनी दीपनी हृद्या कफपित्तज्वरापहा ॥
प्रमेहश्वासकासास्रदाहकुष्ठक्रिमिप्रणुत् । (भावप्रकाश)

अर्थ-कुटकी-पाकमे कटु, तिक्त, रूक्ष, शीतल, हलकी, भेदन, दीपन, हृदयको हितकारी तथा कफ, पित्त, ज्वर, प्रमेह, श्वास, कास, रुधिरदोष, दाह, कोढ और क्रिमिका नाश करेहै ।

अन्यच्च ।

कटुकी शीतला तिक्ता कट्वी चाग्निप्रदीपनी ।
भेदिका च सरा रूक्षा लघ्वी रक्तरुजापहा ॥
शीतपित्तश्वासकफदाहारुचिज्वराञ्जयेत् ।
प्रमेहकुष्ठविषमज्वरकासक्षयापहा ॥
कामलाविषहृद्रोगनाशिनीति प्रकाशिता ।

अर्थ-कुटकी-शीतल, तीखी, कडवी, अग्निदीपक, भेदक, (दस्तावर) सारक, रूखी, हलकी तथा रक्तरोग, शीतपित्त, श्वास, कफ, दाह, अरुचि, ज्वर, प्रमेह, कोढ, विषमज्वर, खाँसी, क्षई, कामला, विष और हृदयरोगको दूर करे है ।

अस्या शोधनविधि ।

कटुकीमुष्णदुग्धेन प्रक्षाल्य ग्राहयेदपि ।

अर्थ-कुटकीको गरम दूधसे धोकर औषधिके काममे लावै ।

विवरण। बडी जडवाली गुल्म है, झाड़रा छोटा, पत्ते अण्डेके समान आकारवाले, जिनके नीचेका भाग बडा और बगल खण्डित होतीहै, फूल नीला और गुच्छोंमे होताहै, हिमालयके निकट पर्वतोंके जंगलमे उत्पन्न होतीहै । कुटकी कृष्णा और पीत इन भेदोंसे दो प्रकारकी है, इनमे पीले रंगकी कुटकी नेत्ररोगोंको दूर करतीहै । व्यवहार-मूल । मात्रा ६ रत्तीसे लेकर ७ मासेतक है ।

चिरतिक्तनामानि ।

चिरतिक्तश्च भूनिम्बः किरातं रामसेनकः ।

अर्थ-चिरातिक्त, भूनिम्ब, किरान्त, रामसेनक (अनार्यतिक्त, किरातक, चिरातिक्त, तिक्तक, सुतिक्तक, चिराटिका, कटुतिक्ता कैरात, काण्डीतिक्तक, हैम, काण्डातिक्त)

ये पाए निम्बनामानि ।

नेपालनिम्बो नैपालस्तृणनिम्बो ज्वरान्तकः ।
नाडीतिक्तोऽर्धतिक्तश्च निद्रारिः सन्निपातहा ॥

अर्थ-नेपालनिम्ब, नेपाल, तृणनिम्ब, ज्वरान्तक, नाडीतिक्त, अर्धतिक्त, निद्रारी, सन्निपातहा ।

संस्कृतभाषामे	चिरातिक्त ।
हिन्दीभाषामे	चिरायता ।
वंगभाषामे	चिरता, चिराता, नेपाले निम्ब ।
मराठीभाषामें	किराईत, काडेकिराईत, फूलकिराईत,
गुजरातीभाषामे	करियातु ।
कर्णाटकीभाषामे	नेलवरचु ।
तैलङ्गीभाषामे	नेलानिमु ।
लैटिन्भाषामे	स्विर्टियाचिरेटा एफीलिया चिरेटा । Sovertia Chirata Aphelia Chirata
इंग्रेजीभाषामे	चिरेटा ।
फारसीभाषामे	नैनिहाद
अरबीभाषामे	करसुझ, झारिरा ।

भूनिम्बगुणाः ।

भूनिम्बो वातलस्तिक्तो व्रणरोपणकारकः ॥
सरः शीतः पथ्यकरो लघू रूक्षस्तृपापहः ।
कफ पित्त ज्वर कुष्ठ कण्डू शोथ कृमींस्तथा ॥
सन्निपातज्वर दाह शूल मेह व्रण तथा ।
श्वास कासं च प्रदर शोष चार्शोरुचिं जयेत॥ (नि०र०)

अर्थ-चिरायता- वातकारक, कडवा, व्रणरोपक, दस्तावर, शीतल, पथ्य, हलका, रूखा तथा तृषा, कफ, पित्त, ज्वर, कोढ, कण्डु, सूजन, कृमि, सन्निपातज्वर, दाह, शूल, प्रमेह, व्रण, श्वास, खाँसी, प्रदर, शोष, बवासीर और अरुचिको दूरकरे है ।

नैपालनिम्बगुणा ।

नेपालतिक्तं किञ्चिच्च उष्णयोगवहं लघु ।
तिक्तं पित्त कफ शोथं रक्तरुक्तृड्ज्वराञ्जयेत् ॥

अर्थ-नेपालीनीम-किंचित् गरम, योगवाही, हलका, कडवा, तथा पित्त, कफ, सूजन, रुधिररोग, पियास और ज्वरका नाश करे है । शेष गुण चिरायतेके समान जानने ।

अपिच ।

नैपालः सन्निपातारिर्ज्वरनिद्रापहस्तथा । (शो० नि०)

अर्थ-नेपालीनीम-सन्निपात, ज्वर और निद्राको दूर करे है । चिरायतेका क्षुप होताहै । मात्रा २ मासेकी ।

कुटजनामानि ।

कुटजः शक्रपर्य्यायो वत्सको गिरिमल्लिका ॥

अर्थ-कुटज, शक्रपर्य्याय, वत्सक, गिरिमल्लिका, (शक्र, वरतिक्त, पाण्डुर, कटुक, कुटक, शक्राशन, कौटज, तिक्तक, रक्तनाशक, वृक्षक, शक्राह्वय, कूटज, काही, कालिङ्ग, मल्लिकापुष्प, प्रावृष्य, शक्रपादप, यवफल, सग्राही, पांडुरद्रुम, प्रावृषेण्य, महागन्ध, इन्द्रद्रु, कौट, शक्रशाखी, इन्द्रयवफल)

संस्कृतभाषामे	कुटज, श्वेतकुटज ।
हिन्दीभाषामे	कुडा, कौरैया ।
वंगभाषामे	कुडाचिगाछ, कुटराज ।
मराठीभाषामे	काळा कुडा, सफेद कुडा ।
गुजरातीभाषामे	कडी-दुधला ।
कर्णाटकीभाषामे	कोडासिगेयमरनु ।
तैलिङ्गीभाषामे	अंकुडुचेट्ट अगिशचेट्ट, तुम्मिकचेट्ट, अकेलु, चराल कुष्ठ ।
औत्क०भाषामे	कुडिया ।
इंग्रेजीभाषामे	ओवलुलिवडरोझबे । Oval leaved Rose Bay
लेटिन्भाषामे	राइटियाएंडिसेनटेरिका । Wrightia antidysenterica
अरबी भाषामे	तिवाज ।

कुटजगुणाः ।

कुटजः कटुको रूक्षो दीपनस्तुवरो हिमः ।
अर्शोऽतिसारपित्तास्रकफतृष्णामकुष्ठनुत् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-कुडा-कटु, रूक्ष, दीपन, कषाय, शीतल तथा बवासीर, अतिसार, रक्तपित्त, कफ, तृषा, आम और कुष्ठको नष्ट करे है ।

अपिच ।

कुटजः कटुकः प्लीहकफपित्तातिसारनुत् ॥ (शो० नि०)

अर्थ-कुडा-कटु, प्लीहा, कफ, पित्त और अतिसारका नाशकरे है।

अन्यच्च ।

कुटजः कटुतिक्तोष्णः कषायश्चातिसारजित् ।
तत्रासितश्च पित्तघ्नस्त्वग्दोषार्शनिकृन्तनः ॥ (रा० नि०)

अर्थ-कुडा-कटु, तिक्त, गरम, कषाय और अतिसारनाशक है, और काला कुडा पित्त, त्वचाके दोष और बवासीरको दूर करे है ।

श्वेतकुटजगुणाः ।

श्वेतस्तु कुटजस्तिक्तः कटुश्चोष्णोऽग्निदीपकः ।
पाचकस्तुवरो रूक्षो ग्राहको रक्तदोषहा ॥
कुष्ठातिसारपित्तार्शःकफतृट्कृमिहा मतः ।
ज्वरं चामं च दाहं च नाशयेदिति कीर्तितः ॥ (नि० र०)

अर्थ-सफेद कुडा-कडवा, तीखा, गरम, अग्निदीपक, पाचक, कषेला, रूखा, मलरोधक तथा रक्तविकार, कोढ, अतिसार, पित्त, बवासीर, कफ, तृषा, कृमि, ज्वर, आम और दाहको दूर करे हैं ।

अस्य पुष्पगुणाः ।

पुष्पं तु वत्सकस्योक्तं तुवरं चाग्निदीपकम् ।
तिक्तं शीतं वातलं च लघु पित्तातिसारनुत् ॥
रक्तदोषं कफं पित्तं कुष्ठं चैवातिसारकम् ।
कृमींश्चैव हरेदेतदुक्तं पूर्वैश्च सूरिभिः ॥ (नि० र०)

अर्थ-कुडेके फूल-कषेले, जठराग्निको दीपन करनेवाले, कडवे, शीतल, वातकारक, हलके तथा पित्तातिसार, रुधिरविकार, कफ, पित्त, कुष्ठ, अतिसार और कृमिका नाश करे है ।

अर्थ-इन्द्रजौ, कटु, तिक्त, शीतल तथा कफ, वात, रक्तपित्त, दाह, अतिसार, नाना प्रकारके त्वचाविकार और शूलको निर्मूल करेहै ।

अपिच ।

वत्सकस्य तु बीजं च कटु तिक्तं च शीतलम् ।
ग्राहकं पाचनं चोष्णं चाग्निदीप्तिकरं परम् ॥
वातरक्तं कफं दाहं पित्तं नानाज्वरांस्तथा ।
शूलमर्शश्चातिसारं त्रिदोषं गुदकीलकम् ॥
कुष्ठं कृमिविसर्पामरक्तार्शोस्रुग्भ्रमान् ।
श्रमं चैव निहंत्याशु कथितं मुनिपुंगवैः ॥ (नि० र०)

अर्थ-इन्द्रजौ-तीखे, कडवे, शीतल, मलरोधक, पाचक, गरम, अग्निप्रदीपक तथा वातरक्त, कफ, दाह, पित्तज अनेक प्रकारके ज्वर, शूल, बवासीर, अतिसार, त्रिदोष, गुदकील, कोढ, कृमि, विसर्प, आम, रक्तार्श, रक्तरोग, भ्रम और श्रमको दूर करेहै ।

विवरण । कुडेके बीजोको इन्द्रजौ कहतेहै । इन्द्रजौ दोप्रकारके होतेहै, एक मीठे दूसरे कडवे, इसमे सफेद कुडेके इन्द्रजौ मीठे होते है और काले कुडेके इन्द्रजौ कडवे होतेहै । मात्रा २ मासेकी ।

मदनफलनामानि ।



मदनश्छर्दनः पिण्डीतकः पिण्डीतकस्तथा ।
करहाटो मरुवकः शल्यको विषपुष्पकः ॥

अथ-मदन, छर्दन, पिण्डीतट, पिण्डीतक, करहाट, मरुबक, शल्यक, विषपुष्पक,(पिचुक, मुचुकुन्द,) कण्टकी, करहाटक, शल्य, कण्ठ, रामच्छर्दनक, रामाच्छर्दनक, कैटर्य, धाराफल, तगर, राठ, गाल्ल, ग्रन्थिफल, घण्टाल, बस्तिशोधन)

संस्कृतभाषामे	मदन ।	
हिन्दीभाषामे	मैनफल, करहर ।	
वंगभाषामे	मयनाकांटा ।	
मराठीभाषामे	गेळ ।	
गुजरातीभाषामे	ढोल ।	
कर्णाटकीभाषामे	बोनगरे रणय बोनगरे एरङ्ग ।	
तैलिङ्गीभाषामे	वसन्तकाडिमिचेट्टु ।	
तामिलीभाषामे	मङ्कक्कूरय ।	
औत्क०	पातर ।	
नेपालीभाषाम	मैदल ।	
प०	मिण्डकोल्ल ।	
दक्षिणीभाषामे	मणाहल ।	
इंग्रेजीभाषामे	बशीगार्डिनीया ।	Bushy gardenia
लैटिन्भाषामे	रैनाडियाडचुमेटोरम् ।	Randiadume'orum
अरबीभाषामे	जोजुल्कै ।	

अस्य गुणा' ।

मदनो मधुरस्तिक्तो वीर्योष्णो लेखनो लघुः ।
वान्तिकृद्विद्रधिहरः प्रतिश्यायव्रणान्तकः ॥
रूक्षकुष्ठकफानाहशोथगुल्मव्रणापहः । (भावप्रकाश)

अर्थ-मैनफल-मधुर, कडवा, उष्णवीर्य, लेखन, हलका, वमनकारक, विद्रधिहारक, प्रतिश्याय (जुकाम) और व्रणविनाशक है, रूखा तथा कफ, आनाह, सूजन,गुल्म और घावको दूर करे है।

अपिच ।

राठो वमनकृद्भेदी पक्वामाशयशुद्धिकृत् ।
त्वग्दोषमारुतश्लेष्मविषप्रशमनः स्मृतः ॥ (शो०नि०)

अर्थ-मैनफल-वमनकारक, भेदक, पक्वाशय और आमाशयशोधक तथा त्वचाके रोग, वात, कफ और विषविकारको दूर करेहै।

अपिच।

मदन कटुकस्तिक्तो मधुरश्चोष्णश्च लेखनः।
लघू रूक्षो वान्तिकारी वस्तिकर्म्मणि चोत्तमः॥
कफ वातं व्रण शोथमानाहं विद्रधींस्तथा।
गुल्म कुष्ठं प्रतिश्यायं विष चाशोज्वरं जयेत्॥

अर्थ-मैनफल-कटुरसयुक्त, तिक्तरसान्वित, मधुर, उष्ण, लेखन, रूक्ष, वमनकारक, वस्तिकर्ममे उत्तम तथा कफ, वात, घाव, सूजन, आनाह, विद्रधि, गुलम, प्रतिश्याय (जुकाम), विष, ववासीर और ज्वरको हरे है।

कृष्णः श्वेतश्च मदनः शीतलो मधुरः स्मृतः।
कटुस्तिक्तश्च तुवरो वान्तिकृत्कफनाशनः॥
पक्वामाशयशुद्धेश्च कारकः पित्तनाशक।
हृद्रोगनाशकश्चैव पूर्वस्मादुत्तमो गुणः॥ (नि० र०)

अर्थ-दूसरे प्रकारके दोनो मैनफल-(एक काले रगका दूसरा सफेद रगका) शीतल, मधुर, कटु, तिक्त, कषेल, वान्तिकारक, कफ नाशक, पक्वाशय, और आमाशयको शोधनेवाले तथा पित्त और हृदयरोगका नाश करनेवाले है। यह पहले मैनफलकी अपेक्षा अधिक गुणवाले है।

विवरण। मैनफलका वृक्ष होताहे, पित्ते चिरचिटेकी समान होते हैं, फूल सफेद पांच पखडीके कुछेक पीलापन लिये होतेहै, फल अखरोटके आकार होते हैं, यह वमन करानेमे एकही ओषधी है।

रास्नानामानि।

नाकुली सुरसा रास्ना सर्पगन्धा पलङ्कपा।

अर्थ-नाकुली, सुरसा, रास्ना, सर्पगन्धा, पलकपा (द्रोणगन्धिका, सुगन्धा, गन्धनाकुली, नकुलेष्टा, भुजंगाक्षी, छत्राकी, सुवहा, रस्या, श्रेयसी, रसना, एलापर्णी, रसा, सुगन्धिमूला, रसाढ्या, अतिरसा, सुकरसा, युक्तरसा)



संस्कृतभाषामे	रास्ना ।
हिन्दीभाषामे	रासन, रायसन, रइसनी, रास्ना ।
वङ्गभाषामे	रास्ना ।
मराठीभाषामे	नावळीच्या मुळया ।
गुजरातीभाषामे	रासना
कर्णाटकीभाषामे	रसनाकेदारे प्रसिद्धा ।
तैलिङ्गीभाषामे	रासनापुडका,किरम्मिचक्क अन्तर दामर।
लैटिन्भाषामे	वेंडा रोक्स वरगी आई। Vanda roxburghio
इंग्रेजीभाषामे	प्लुचियालेन्सिओलेटा। Pluchialanceolata
फारसीभाषामे	रासुन ।
अरबीभाषामे	जजवील शामी ।

रास्नाभेदा ।

रास्ना तु त्रिविधा प्रोक्ता मूल पत्र तृणं तथा ।
ज्ञेयौ मूलदलौ श्रेष्ठौ तृणरास्ना तु मध्यमा ॥ (रा० नि०)

अर्थ-रास्ना-जड,पत्ते और तृण इन भेदोसे तीन प्रकारकी है। तिनमे जडरास्ना और पत्ररास्ना श्रेष्ठ होती है और तृणरास्ना अधम गिनी जाती है ।

रास्नागुणा ।

रास्नाऽऽमपाचिनी तिक्ता गुरूष्णा कफवातजित् ।
शोथश्वाससमीरास्रवातशूलोदरापहा ॥
कासज्वरविषाशीतिवातिकामयहिध्मजित् ।(भा०प्र०)

अर्थ-रास्ना-आमपाचक, कडवी, भारी, गरम, कफ-वातनाशक, तथा सूजन, रक्तवात, वातशूल, उदररोग, खासी, ज्वर, विषविकार, ८० अस्सी प्रकारके वातरोग और हिध्मको दूर करे है ।

अपिच ।

रास्नोष्णा वातशोथामवातवातामयाञ्जयेत् ॥ (शोडलनि०)

अर्थ-रास्ना-गरम है, वात, सूजन, आमवात और वातरोगोंको नष्ट करेहै ।

अन्यच्च ।

रास्ना तिक्ता गुरुश्चोष्णा पाचन्यामविनाशिनी ।
वातरक्तं विषं श्वासं कासं च विषमज्वरम् ॥
शोथं हिक्कां चामवातं कफं शूलं विनाशयेत् ।
ज्वरं कम्पं चोदरं च सर्वान्वाताश्च नाशयेत् ॥

अर्थ-रास्ना-कडवी, भारी, गरम, पाचक, आमनाशक तथा वात, रक्त, विष, श्वास, खांसी, विषमज्वर, सूजन, हिचकी, आमवात, कफ, शूल, ज्वर, कम्प, उदररोग और सर्व प्रकारके वातका विनाश करे है।

विवरण। बंगदेशके प्राचीन आम्रादि वृक्षोंपर उत्पन्न होती है, इसकी जड वृक्षकी छालके ऊपर जमीरहती है, फूल पीला बेगनी छींटेदार होता है, जड सहित रास्नाका क्षुप लायकर सुन्दरी काष्ठके ऊपर नारियलकी टट्टीकी छायामें रखकर पानी दे वृक्ष बढेगा और फूलेगा। व्यवहार-जड । मात्रा २ तोलेकी । परन्तु पञ्जाबमें रायसनके छोटे २पेड होतेहैं इसकी फलियोंमें मोठके समान बीज होतेहैं, उनकोही रास्नाके स्थानमें वर्तते हैं यह वातनाशक द्रव्य है, पञ्जाबी लोग इसीको रास्ना कहते हैं । इसीके मूल पत्रादिभी प्रयोगमें आतेहैं ।

नाकुलीनामानि।

नाकुली सुरसा नागसुगन्धा गन्धनाकुली ।
नकुलेष्टा भुजङ्गाक्षी सर्पाङ्गी विषनाशिनी ॥

अर्थ-नाकुली, सुरसा, नागसुगन्धा, गन्धनाकुली, नकुलेष्टा, भुजंगाक्षी, सर्पांगी, विषनाशिनी, (सर्वगन्धा, सुगन्धा, रक्तपत्रिका, ईश्वरी, नागगन्धा, अहिभुक्, सुरसा, सर्पादिनी, व्यालगन्धा)

गन्धनाकुलीनामानि।

अन्या महासुगन्धा च सुवहा गन्धनाकुली ।
सर्पाक्षी फणिहन्त्री च नकुलाढ्याऽहिभुक्च सा ॥
विषमर्दनिका चाहिमर्दनी विषमर्दनी ।
महाहिगन्धाऽहिलता ज्ञेया स्याद्वादशाह्वया ॥

अर्थ-महासुगन्धा, सुवहा, गन्धनाकुली, सर्पाक्षी, फणिहंत्री' नकुलाढ्या, अहिभुक्, विषमर्दनिका, अहिमर्दनी, विषमर्दनी, महाहिगन्धा, अहिलता।

संस्कृतभाषामे	नाकुली, गन्धनाकुकी।
हिन्दीभाषामे	नाई, नाकुलीकन्द नकुलकन्द, हरकाईचन्दा।
बंगभाषामे	नाकुली, सुगन्धनाकुली।
मराठीभाषामे	मुंगुसवेल, नाई सापसंद।
कर्णाटकीभाषामे	विषमुंगरीद्दय।
तैलङ्गीभाषामें	पञ्चपुचेट्टु।
लैटिन्भाषामे	रौवोलफिया सर्पेन्टाइना Rauwolfia Serpentina
फारसीभाषामें	छोटा चांदा।

नाकुलीगुणा।

नाकुली कटुका तिक्ता तथोष्णा कृमिरोगहृत्।
वृश्चिकोन्दुरसर्पादिविषं नाशयति क्षणात्॥
तुवरा च त्रिदोषघ्नी कन्देप्येते गुणाः स्मृताः।(रा०नि०)

अर्थ-नाकुली- चरपरी, कडवी, गरम, कृमिरोगनाशक, बिच्छु, मूषा और सर्पादिके विषको तत्क्षण दूर करनेवाली, कषेली और त्रिदोषनाशक है, इसके कन्दके गुणभी इसीके समान जानने।

अन्यच्च।

नाकुली तुवरा तिक्ता कटुकोष्णा विनाशयेत्॥
भोगिलूतावृश्चिकाखुविषज्वरकृमिव्रणान्।(भा० प्र०)

अर्थ-नाकुली-कषेली, कडवी, चरपरी, गरम तथा साँप, मकरी, बिच्छु और मूषा इनका विष, ज्वर, कृमि और व्रणको दूर करे है।

अन्यच्च।

नाकुलीयुगलं तिक्तं कटूष्णं च त्रिदोषनुत्।
अनेकविषविध्वंसि किञ्चिच्छ्रेष्ठ द्वितीयकम्॥ (रा०नि०)

अर्थ-दोनो प्रकारकी नाकुली-(नाकुली, सुगन्धनाकुली) कडवी, चरपरी, गरम, त्रिदोषनाशक, अनेक प्रकारके विषविनाशक और गन्धनाकुली नाकुलीकी अपेक्षा किंचित् श्रेष्ठ है।

नाकुलीकंद, सूरणकंदके समान होताहै वर्षात मे इस कंद पर सापके आकारका गंदल निकलता है, सिमला प्रान्तमे बहुत होता है टकसालमे इसको 'गोहका आदा' कहते है।

माचिकानामानि।

माचिका प्रस्थिकाम्बष्ठा तथा चाम्बालिकाऽम्बिका।
मयूरविदला केशी सहस्रावातमूलिका॥(भावप्रकाश)

अर्थ-माचिका, प्रस्थिका, अम्बष्ठा, अम्बालिका, अम्बिका, मयूरविदला, केशी, सहस्रवातमूलिका, (वालिका, वाला, शटाम्बा, अम्बा, दृढवल्का, मयूरिका, गन्धपत्री, चित्रपुष्पी, श्रेयसी, मुखवाचिका, छिन्नपर्णी, भूरिमल्ली)

अस्या गुणा।

अम्बष्ठा सा कषायाम्ला कफकृच्च रुजापहा।
वातामयबलासघ्नी रुचिकृद्दीपनी परा॥(रा० नि०)

अर्थ-मोईया-कषेला, खट्टा तथा कफरोग, कर्णरोग, वातरोग और कफनाशक है, रुचिको उत्पन्न करैहै और जठराग्निदीपक है।

अन्यच्च।

माचिकाम्ला रसे पाके कषाया शीतला लघुः।
पक्वातिसारपित्तास्रकफकण्ठामयापहा। (भा० प्र०)

अर्थ-मोईया-अम्लरसान्वित, पचनेमें कषेला, शीतल, हलका तथा पक्वातिसार, रक्त, पित्त, कफ और कण्ठ रोगका नाश करैहै। झाँइ वृक्षपर लगनेवाले द्रव्यको माचिका (माइ) कहते हैं पंजाबमें झाँइ वृक्ष बहुत होते हैं।

तेजोवतीनामानि।

तेजस्विनी तेजवती तेजन्या लघुवल्कला।
महौजसी पारिजाता शीतातिक्ताऽतितेजनी॥

अर्थ-तेजस्विनी, तेजवती, तेजन्या, लघुवल्कला, महौजसी, पारिजाता, शीता, तिक्ता, अतितेजनी (तेजोह्वा, तेजनी, अश्वघ्ना, वल्कली, सुवर्णनाकुली, बिडालघ्नी, सुतेजसी)

संस्कृतभाषामें	तेजोवती।
हिन्दीभाषामें	तेजबल।
बंगभाषामें	तेजबल।
मराठीभाषामें	[illegible]बल
[illegible]	
दक्षिणीभाषामें	[illegible]

इंग्रेजीभाषाम टुथएकट्री । Toothachetree
लेटिन् भाषाम झेथोकूझाइलोन होसटिली । zanthoxylon Hostile

अस्या गुणाः ।

तेजनी कफहृद्रोगमुखदंतादिरोगजित् ।
हिक्काग्निमांद्यमर्शांसि कण्ठरोगस्य नाशिनी॥ (शो०नि०)

अर्थ-तेजबल-कफ, हृदयरोग, मुखरोग, दन्तादिरोग, हिचकी, मदाग्नि, बवासीर और कण्ठरोगका नाशकरनेवाला है ।

अन्यच्च ।

तेजस्विनी कफश्वासकासशूलामवातजित् ।
पाचन्युष्णाकटुस्तिक्ता रुचिवह्निप्रदीपनी ॥ (म०नि०)

अर्थ-तेजबल-कफ, श्वास, खॉसी, शूल और आमवातविनाशक है । पाचक, गरम, चरपरा, कडवा, रुचि और जठराग्निको दीपन करे है ।

अन्यच्च ।

तेजोवती कटूष्णा च तिक्ता चाग्निप्रदीपनी ।
पाचका रुचिदा कण्ठ्या कफवातविनाशिनी ॥
कण्ठशुद्धिकरी पित्तकासश्वासविषापहा ।
हिक्काग्निमांद्यमर्शांसि मुखरोगस्य नाशिनी॥ (नि०र०)

अर्थ-तेजबल-चरपरा, गरम, कडवा, अग्निप्रदीपक, पाचक, रुचिकारक, कण्ठको हितकारी, कफ वात नाशक, कठशोधक, तथा पित्त, खॉसी, श्वास, विष, हिचकी, मदाग्नि, बवासीर, और मुखरोगका नाशकरे है ।

विवरण । तेजबलके वृक्ष हरिद्वार बद्रीनाथके ओर बनोमे उत्पन्न होते है, इस वृक्षकी छाल लालमिर्चकी समान चरपरीहै, इसमे गोल मिर्चके समान फल होते है । व्यवहार छाल, मूल । मात्रा २ मासेकी ।

ज्योतिष्मतीनामानि ।

ज्योतिष्मती पूतितला लगणा स्फुटबन्धनी ।
पारावतपदी पिण्या पीततैला च कंगुणी ॥

अर्थ-ज्योतिष्मती, पूतितला, लगणा, स्फुटबन्धनी, पारावतपदी, पिण्या, पीततैला कंगुणी(पारावतांघ्रि, कटभी, ज्योतिष्का, निष्फला

माचिकानामानि ।

माचिका प्रस्थिकाम्बष्ठा तथा चाम्बालिकाऽम्बिका ।
मयूरविदला केशी सहस्रावातमूलिका॥(भावप्रकाश)

अर्थ-माचिका, प्रस्थिका, अम्बष्ठा, अम्बालिका, आम्बिका, मयूरविदला, केशी, सहस्रवातमूलिका, (वाल्हिका, वाला, शठाम्बा, अम्बा, दृढवल्का, मयूरिका, गन्धपत्री, चित्रपुष्पी, श्रेयसी, सुखवाचिका , छिन्नपत्री, भूरिमल्ली)

अस्या गुणाः ।

अम्बष्ठा सा कषायाम्ला कफकृच्च रुजापहा ।
वातामयबलासघ्नी रुचिकृद्दीपनी परा ॥(रा० नि०)

अर्थ-मोईया-कषेला, खट्टा तथा कफरोग, कर्णरोग, वातरोग और कफनाशक है, रुचिको उत्पन्न करेहै और जठराग्निप्रदीपक है।

अपच्च ।

माचिकाम्ला रसे पाके कषाया शीतला लघुः ।
पक्वातिसारपित्तास्रकफकण्ठामयापहा । (भा० प्र०)

अर्थ-मोईया-अम्लरसान्वित, पचनेमे कषेला, शीतल, हलका तथा पक्वातिसार, रक्त, पित्त, कफ और कण्ठ रोगका नाश करे है। फ्राह वृक्षपर लगनेवाले द्रव्यको माचिका (माइ) कहते है पजाबमे फ्रांह वृक्ष बहुत होते है ।

तेजोवतीनामानि ।

तेजस्विनी तेजवती तेजन्या लघुवल्कला ।
महौजसी पारिजाता शीतातिक्ताऽतितेजनी ॥

अर्थ-तेजस्विनी, तेजवती, तेजन्या, लघुवल्कला, महौजसी, पारिजाता, शीता, तिक्ता, अतितेजनी (तेजोह्वा, तेजनी, अश्वघ्रा, वल्कली, सुवर्णनाकुली, बिडालघ्नी, सुतेजसी)

संस्कृतभाषामे	तेजोवती ।
हिन्दीभाषामे	तेजबल ।
वंगभाषामे	तेजबल ।
मराठीभाषामे	तेजबल, तिर्फानी ।
गुजरातीभाषामे	तजबल ।
दक्षिणीभाषामे	जलधरी ।

इंग्रेजीभाषाम टुथएकट्री । Toothachetree
लैटिन् भाषाम झेथोक्झाइलोन होसटिली । zanthoxylon Hostile

अस्या गुणा ।

तेजनी कफहृद्रोगमुखदंतादिरोगजित् ।
हिक्काग्निमांद्यमर्शांसि कण्ठरोगस्य नाशिनी॥(शो०नि०)

अर्थ–तजवल–कफ, हृद्यरोग, मुखरोग, दन्तादिरोग, हिचकी, मंदाग्नि, बवासीर और कण्ठरोगका नाशकरनेवाला है।

अन्यच्च ।

तेजस्विनी कफश्वासकासशूलामवातजित् ।
पाचन्युष्णाकटुस्तिक्ता रुचिवह्निप्रदीपनी ॥ (म०नि०)

अर्थ–तेजबल–कफ, श्वास, खाँसी, शूल और आमवातविनाशक है। पाचक, गरम, चरपरा, कडवा, रुचि और जठराग्निको दीपन करे है।

अन्यच्च ।

तेजोवती कटूष्णा च तिक्ता चाग्निप्रदीपनी ।
पाचका रुचिदा कण्ठ्या कफवातविनाशिनी ॥
कण्ठशुद्धिकरी पित्तकासश्वासविषापहा ।
हिक्काग्निमांद्यमर्शांसि मुखरोगस्य नाशिनी॥ (नि०र०)

अर्थ–तेजबल–चरपरा, गरम, कडवा, अग्निप्रदीपक, पाचक, रुचिकारक, कण्ठको हितकारी, कफ वात नाशक, कठशोधक, तथा पित्त, खाँसी, श्वास, विष, हिचकी, मंदाग्नि, बवासीर, और मुखरोगका नाशकरे है।

विवरण । तेजबलके वृक्ष हरिद्वार बद्रीनाथके ओर बनोमे उत्पन्न होते है, इस वृक्षकी छाल लालमिर्चकी समान चरपरीहै, इसमे गोल मिर्चके समान फल होते है। व्यवहार छाल, मूल। मात्रा २ मासेकी।

ज्योतिष्मतीनामानि ।

ज्योतिष्मती पूतितला लगणा स्फुटबन्धनी ।
पारावतपदी पिण्या पीततैला च कंगुणी ॥

अर्थ–ज्योतिष्मती, पूतितला, लगणा, स्फुटबन्धनी, पारावतपदी, पिण्या, पीततैला कंगुणी (पारावताघ्रि, कटभी, ज्योतिष्का, निष्फला

इंगुदी, स्वर्णलता, अनलप्रभा, ज्योतिर्लता सुपिङ्गला, दीप्ता, मेध्या, गतिदा, दुर्जरा, सरस्वती, अमृता, कगुनी, सुवर्णलतिका, अग्निमार्षा, दुर्मदा, लवणा, किंशुका, आवेगा, काकाण्डी, त्रिपर्णी, पीढ्या)

महाज्योतिष्मतीनामानि ।



महाज्योतिष्मती तीक्ष्णा कङ्गुनी बृहत्कंगुनी ।

अर्थ-महाज्योतिष्मती, तीक्ष्णा, कंगुनी, बृहत्कंगुनी (तेजोवती बहुरसा, कनकप्रभा, सुवर्णनकुली, लवणा, अग्निदीप्ता, तेजस्विनी, सुरलता, अग्निफला, अग्निगर्भा, शैलसुता, सुतैला, सुवेगा, वायसी, तीव्रा, काकाण्डी, वायसादनी, गीर्लता, श्रलिता, सौम्या, ब्राह्मी, लवणकिंशुका, पारावतपदी, पीता, पीततैला, यशस्विनी, मेध्या, मेधावती, धीरा)

संस्कृतभाषामें	ज्योतिष्मती, महाज्योतिष्मती ।
हिन्दीभाषामें	मालकागुनी, बडीमालकांगुनीडमिजिनी
वंगभाषामें	लताफटकी, बडलताफटकी ।
गुजरातीभाषामें	मालकागणी ।
मराठीभाषामें	मालकागोणी (को०) पिगवी ।
कर्णाटकीभाषामें	कोंगुएरडु ।
तैलिङ्गीभाषामें	बावजी (वेकुडुतोगे)
इंग्रेजीभाषामें	स्टाफट्री । Staftree
लैटिनभाषामें	सिलेस्ट्रसपेनिक्युलेटा । Celastrusp aniculata
फारसीभाषामें	काल ।

ज्योतिष्मतीगुणाः ।

ज्योतिष्मती तिक्तरसा च रूक्षा किञ्चित्सरा दुर्वातकफापहा च ।

दाहप्रदादीपनकृच्च मेध्या प्रज्ञां च पुष्णाति तथा द्वितीया(रा नि)

अर्थ–मालकांगुनी–चरपरी, कडवी, रूखी, किंचित् चरपरी, वातकफनाशक, दाहजनक, अग्निप्रदीपक और मेधा तथा प्रज्ञाकारक है, दूसरीके भी इसीके समान गुण जानने ।

अपिच ।

ज्योतिष्मती कटुस्तिक्ता सरा कफसमीरजित् ।
अत्युष्णा वामनी तीक्ष्णा वह्निबुद्धिस्मृतिप्रदा(भा नि)

अर्थ–मालकांगुनी–चरपरी, कडवी, सारक, कफवातनाशक, अत्यन्त गरम, वमनजनक, तीक्ष्ण तथा जठराग्नि,बुद्धि और स्मरणशक्तिको देनेवाली है ।

अन्यच्च ।

ज्योतिष्मती तु कटुका तिक्ता चाग्निप्रदीपनी ।
अत्युष्णा दाहका मेध्या प्रज्ञापुष्टिकरी मता ॥
वृष्या वान्तिकरी तीक्ष्णा वर्ण्या च तुवरा मता ।
उदरस्य हरेत्पीडां व्रणपाण्डुविसर्पहा ॥(गणनि०)

अर्थ–मालकांगुनी–चरपरी, कडवी, अग्निदीपक, अत्यन्त उष्ण, दाहकारक, मेधाजनक, प्रज्ञाकारक, पुष्टिदायक, वीर्यवर्धक, वमनकारक, तीक्ष्ण, शरीरके रंगको उज्ज्वल करनेवाली, कषेली तथा उदरकी पीडाको हरतीहै, घाव, पाण्डुरोग और विसर्प रोगको दूर करेहै ।

विवरण । इसकी वेल होतीहै, पत्ते गोल कुछ अनीदार होतेहैं। फलोका झुमका होताहै, कच्चे फल नीले होतेहै और पकनेपर पीले पडजातेहै उनमेसे लाल बीज निलकताहै, उन बीजोंमेसे पीला तेल निकलताहै, वह तेल अनेकप्रकारके वातरोगोको और खुजलीको दूर करताह ।

पुष्करमूलनामानि ।

पौष्करं पुष्करमूलं पुष्करं पद्मवर्णकम् ॥

अर्थ–पौष्कर, पुष्करमूल, पुष्कर, पद्मवर्णक.(पद्मकर्ण, पद्मपत्रमूल, पद्मपर्णक, पुष्करिणी, वीरपुष्कराह्वया,काश्मीर,ब्रह्मतीर्थ, श्वासारि, मूलपुष्कर, पुष्करजटा, पुष्करशिका,वीर, पद्मपत्रक, पद्मपुष्प,सागर, शूर, वृक्षरुह, सुमूलक, शूलघ्न, कुष्ठभेद)

संस्कृतभाषामे पुष्करमूल ।

हिन्दी भाषामे	पोहकरमूल ।
बंग भाषामे	कुष्ठविशेष, पुष्करमूल ।
गुजराती भाषामे	पोकरमूल ।
मराठी भाषामे	पुष्करमूल ।
कर्णाटकी भाषामे	पुष्करमूल ।

अस्या गुणाः ।

पुष्करं कटुतिक्तोष्णं कफवातज्वरापहम् ।
श्वासारोचककासघ्नं शोफघ्नं पाण्डुनाशनम् ॥ (रा० नि०)

अर्थ-पोहकरमूल-चरपरा, कडवा तथा कफ, वात, ज्वर, श्वास, अरोचक, खांसी, सूजन और पाण्डुरोगका नाश करे है ।

अपिच ।

पुष्करं पार्श्वरुग्वातकासशोथज्वरापहम् ।
श्वासोर्ध्ववातपाण्डुघ्नं हिक्कादोषनिवारणम् ॥

अर्थ-पोहकरमूल-पार्श्ववेदना, वात, खासी, सूजन, ज्वर, श्वास, ऊर्ध्व वात, पाण्डुरोग और हिक्कारोगनिवारक है ।

पोहकरमूल उत्तम कहीं नहीं मिलता, इसलिये इसके बदलेमे कूट लेना ।

स्वर्णक्षीरी नामानि ।



स्वर्णक्षीरी हेमशिखा पट्टपर्णी हिमावती ।
हेमवती पीतपुष्पा तन्मूलं चोक उच्यते ॥

अर्थ-स्वर्णक्षीरी, हेमशिखा, पट्टपर्णी, हिमावती, हेमवती, पीतपुष्पा,

(स्वर्णदुग्धा, स्वर्णाह्वा, रुक्मिणी, सुवर्णा, हेमदुग्धा, हेमक्षीरी, काञ्चनी, कटुपर्णी, हेमाह्वा, क्षीरिणी, काञ्चनक्षीरी, कर्चिगी, तिक्तदुग्धा, हिमाद्रिजा, यवचिचा, हिमोद्भवा, हेमी, हिमजा) इसकी जडको चोक कहते हैं।

संस्कृतभाषामें	कटुपर्णी, स्वर्णक्षीरी, क्षीरिणी ।
हिन्दीभाषामें	सत्यानासी, कटेरी(चोक)भरेबद पिसोला।
वंगभाषामें	स्वर्णक्षीरी, शोणाखिरुई-(चोक) ।
मराठीभाषामें	काटेधोत्रा, फिरंगीधोत्रा ।
गुजरातीभाषामें	दारुडी ।
कर्णाटकीभाषामें	चिक्कणिकेयभेद ।
तामिलभाषामें	ब्रह्मदण्डुविरइ ।
इंग्रेजीभाषामें	गेंबोझ, थिसल । Gamboge Thistle
	मेकसिकन्,आर्गिमोन् । Mexican Argemon
लॅटिन्भाषामें	आर्गिमनी मेक्सी केना ।

अस्या गुणाः ।

हेमाह्वा रेचनी तिक्ता भेदिन्युत्क्लेशकारणी ।
कृमिकण्डूविषानाहकफपित्तास्रकुष्ठनुत् । (भा० प्र०)

अर्थ-स्वर्णक्षीरी-रेचक, कडवी, भेदक, उत्क्लेशकारक तथा कृमि, कण्डू, विष, आनाह, कफ, रक्तपित्त और कुठको नष्ट करे है।

अन्यच्च ।

क्षीरिणी कटुका तिक्ता रेचनी शोफतापनुत् ।
कृमिदोषकफघ्नी च पित्तज्वरहरा च सा ॥

अर्थ-काञ्चनक्षीरी-चरपरी, कडवी, रेचक तथा सूजन, ताप, कृमि, कफ और पित्तज्वरविनाशक है।

अपि च ।

स्वर्णक्षीरी हिमा तिक्ता कृमिपित्तकफापहा ।
मूत्रकृच्छ्राश्मरीशोफदाहज्वरहरा परा ॥ (रा०नि०)

अर्थ-स्वर्णक्षीरी-शीतल है और कृमि, पित्त, कफ, मूत्रकृच्छ्र, पथरी, सूजन तथा दाहज्वरको दूर करे है।

अन्यच्च ।

स्वर्णक्षीरी हिमा तिक्ता सरा कण्डूविनाशिका ।

वात रक्तं कृमीन्पित्तं कफं कृच्छ्रञ्च नाशयेत् ॥
जूर्त्यश्मरीशोफदाहज्वरकुष्ठविनाशिनी ।
मूल चास्य चोक इतिगुणाःपूर्वोक्तवत्स्मृताः॥(रा०नि०)

अर्थ-स्वर्णक्षीरी-शीतल, कडवी, दस्तावर तथा खुजली, वात, रक्त, कृमि, पित्त, कफ, मूत्रकृच्छ्र, ज्वर, अश्मरी (पथरी) सूजन, दाह, ज्वर और कोढ इनका नाश करेहै, इसकी जडको चोक कहते है, इसके गुणभी इसकी समान जानने ।

अपि च।

तस्याः क्षीर बिन्दुमात्र नेत्रे क्षिप्त घृतप्लुतम् ।
शुक्रञ्च ह्यधिमांस च नेत्रांध्यश्चैव नाशयेत्॥ (ग० नि०)

अर्थ-इसके दूधकी एक बूद घीके साथ आखमे लगानेसे शुक्रनेत्ररोग, अधिमांसनेत्ररोग और नेत्रांध्यरोग दूर होते है ।

अस्या स्वरूपम् ।

कण्टकी कण्टपत्रा च पीतपुष्पा क्षुपा भवेत् ।
स्वर्णक्षीरी कण्टफला कृष्णबीजा च सुस्थिरा ॥
(शिवनि०)

अर्थ-इसका क्षुप काटोवाला होताहै, पत्तोके ऊपर काटे होते है, फूल पीला होताहै, दूधका रग सुवर्णके समान वर्णवाला होताहै, फलोपर काटे होतेहै, उनमेसे काले रंगके बीज निकलते है । उन बीजोका तेल निकलताहै, वह तेल अनेक प्रकारके त्वचा रोगोको हरताहै ।

कर्कटशृङ्गिनामानि ।



(काकडासिंगी)

कर्कटशृङ्गिका शृङ्गी कुलिङ्गी कासनाशिनी ।
महाघोषा च चक्राङ्गी कर्कटी वनमूर्द्धजा ॥

अर्थ-कर्कटशृङ्गिका, शृङ्गी, कासविनाशिनी, कुलिङ्गी, महाघोषा, चक्रांगी, कर्कटी, वनमूर्द्धजा (कर्कटाख्या, कुलीरशृंगी, घोषा, चक्रा, शिखरी, कर्कटाख्या, कोलिरा, विषाणिका, चन्द्रास्पदा, नवांगा, कुलीराविषाणिका, नतांगी, वक्रा, अजशृंगी, कर्कटशृंगी)

संस्कृतभाषामे	कर्कटशृङ्गी ।
हिन्दीभाषामे	काकडाशिंगी ।
वङ्गभाषामे	काकडाशृङ्गी ।
मराठीभाषामे	कांकडाशिंगी ।
गुजरातीभाषामे	काडकाशिंगा ।
कर्णाटकीभाषामे	कर्कटिशृङ्गी ।
तैलिङ्गीभाषामे	कर्कटाशृङ्गा ।
लैटिन्भाषामे	पिस्टेशिया इंटिग्रेरिवा lpistaciaintagi 'rriwa

अस्या गुणा ।

कर्कटशृङ्गिका तिक्ता चोष्णा च तुवरा गुरुः ।
वातहिकातिसारघ्नी बालानां च हितावहा ।
कासं श्वासं रक्तदोषं पित्त ज्वर्ति कफं क्षयम् ।
वान्ति हिध्मां चोर्ध्ववातं कृमितृष्णाक्षतक्षयान् ॥
अरुचि नाशयत्येव ऋषिभिः परिकीर्त्तिता । (निघण्टु०)

अर्थ-काकडासिंगी-कडवी, गरम, कषेली, भारी तथा वात, हुचकी और अतिसारको हरे है, बालकको हितकारी और खासी, श्वास, रुधिरविकार, पित्त, ज्वर, कफ, क्षय, वमन, हिध्म, ऊर्ध्ववात, कृमि, तृषा, क्षतक्षय तथा अरुचिको दूर करे है । शिमला प्रान्तमे ककडो नामक वृक्षपर वर्षांतमे सींगकी समान टहनीमें ककडसिंगी लगतीहै ।

कट्फलनामानि ।

कट्फलं त्वक्फल कुम्भी कुमुदिका श्रीपर्णिका ॥

अर्थ-कट्फल, त्वक्फल, कुम्भी, कुमुदिका, श्रीपर्णिका, (कैटर्य, काफल, कुम्भिपाकी, पुरुष, कुमुदी, सोमवृक्ष, रोहिणी, नासालु,

अरण्य, कृष्णगर्भ, प्रचेतसी, भद्रावती, महाकुम्भी, रामसेनक, कुमुदा, उग्रगन्ध, भद्राञ्जनक, लघुकाश्मर्य्य, श्रीपर्णी, भद्रा, कायफल)

संस्कृतभाषामे	कट्फल ।
हिन्दीभाषामे	कायफल ।
वंगभाषामे	कायफल, कायशाल ।
मराठीभाषामे	कुम्याची साल, वा फळ ।
गुजरातीभाषामे	कायफल ।
कर्णाटकीभाषामे	किरुसिवात्रि ।
तैलिङ्गीभाषामे	पापर वुडम ।
लैटिन्भाषामे	मिरिका सापिडा, (छाल) । केरिया आर्बोरिया Creya arboria 'मारिस्टिका मलबोरिका (फल) Myristica Myricasapida Malbarica
अरबीभाषामे	दार शीशवान ।
फारसीभाषामे	उदुलवर्क ।

अस्या गुणा ।

कट्फलं तुवरं तिक्तं कटुवातकफज्वरान् ।
हन्ति श्वास प्रमेहार्श·कासकण्ठामयारुचीः ॥
उग्रदाहहरं रुच्यं मुखरोगशमप्रदम् ।
तीक्ष्णं क्षुतकरं चोष्णं हन्ति गुल्मामयानपि ॥

अर्थ-कायफल-कषेला, कडवा, चरपरा तथा वात, कफ, ज्वर, श्वास, प्रमेह, बवासीर, खासी, कण्ठरोग, अरुचि और उग्रदाहको दूर करे है, रुचिकारक, मुखरोगको शमन करे, तीक्ष्ण, छीक लानेवाला, गरम और गुल्मरोगविनाशक है ।

अन्यच्च ।

कट्फलं रुचिदं चोष्णं तुवरं कटु तिक्तकम् ।
कासश्वासं चोग्रदाहं मुखरोगं ज्वरं तथा ॥
कफवातप्रमेहार्शोरुचिगुल्मगलामयान् ।
अग्निमांद्यं पाण्डुरोगं ग्रहणीं चैव नाशयेत् ॥

अर्थ-कायफल रुचिदायक, गरम, कषैला, चरपरा, कडवा तथा खांसी, श्वास, उग्रदाह, मुखरोग, ज्वर, कफ,वात, प्रमेह, बवासीर गुल्म, कण्ठरोग, अग्निमांद्य, पाण्डुरोग और संग्रहणी इनका नाश करे है। व्यवहार-छाल। मात्रा १ मासेकी शिमला प्रान्तमे सोलन छावनीके समीपवर्ती पहाडोपर कायफलके वृक्ष होतेहै,जेठ महीनेमें इसके फल पकते है, जो कायफल नामसे प्रसिद्ध है, स्वादमे खट्टे मीठे होते हैं, इसका वृक्ष कायफल नामसे प्रसिद्ध है।

भार्ङ्गीनामानि।

भारङ्गी ब्राह्मणी पद्मा भृङ्गजाङ्गारवल्लरी।
मुखधौता दूर्वा फञ्जी भार्ङ्गी ब्राह्मणयष्टिका॥

अर्थ-भारङ्गी, ब्राह्मणी, पद्मा, भृङ्गजा, अङ्गारवल्लरी, मुखधौता, दूर्वा, फञ्जी, भार्ङ्गी, ब्राह्मणयष्टिका, (गर्दभशाक, गर्दभशाका, फञ्जिका, बर्ब्बर, वालेयशाक, वर्द्धक, ब्रह्मयष्टि, यष्टि, ब्रह्मयष्टिका, शाकवालेय, अङ्गारवल्लि, वालेय, ब्राह्मिका, गर्दभशाखी, ब्राह्मी, ब्राह्मणयष्टी, वान्तारि, वातारि, कासजित, स्वरूपा, भ्रमरेष्टा, शक्रमाता, भृगुभवा, खरशाका, हञ्जिका, कासघ्नी, भृगुजा, भार्गवी, कालिंगवल्ली)

संस्कृतभाषाम	भार्ङ्गी।
हिन्दीभाषामे	भारङ्गी, ब्रह्मनेटी।
वंगभाषामे	वामुनहाटी।
मराठीभाषामे	भारंगी।
गुजरातीभाषामे	भारंगी
कर्णाटकीभाषामे	किर्हदेगु।
तैलिङ्गीभाषामे	भण्टभारङ्गी।
नेपालीभाषामे	चूया।
लैटिन्भाषामे	क्लेरोडेण्ड्रान्सिरेटम् Clero deudronserratum

क्लेरोडेण्ड्रन् सिफोन्याथस्। Clerodendronsiphonauthus

भार्ङ्गीगुणा।

भार्ङ्गी रूक्षा कटुस्तिक्ता रुच्योष्णा पाचनी लघुः।
दीपनी तुवरा गुल्मरक्तमुन्नाशयेद्ध्रुवम्।
शोथकासकफश्वासपीनसज्वरमारुतान्।

अर्थ-भारंगी-रूखी, चरपरी, कडवी, रुचिकारी, गरम, पाचक, हलकी, अग्निको दीपन करनेवाली, कपेली तथा रक्त, गुल्म, सूजन, खांसी, श्वास, पीनस, ज्वर और वातको नाश करेहै।

अन्यच्च ।

भार्ङ्गी तु कटुतिक्तोष्णा कासश्वासविनाशिनी ।
शोफव्रणक्रिमिघ्ना च दाहज्वरनिवारिणी॥ (रा०नि०)

अर्थ-भारगी-चरपरी, कडवी, गरम तथा खासी, श्वास, सूजन घाव, क्रिमि दाह और ज्वरको दूर करेहै ।

अपिच ।

वातज्वरप्रहन्त्री च गुणे हिक्काविनाशिनी ।
गुल्मज्वरासृग्वातघ्नी क्षयपीनसनाशिनी ॥

अर्थ-भारगी-वातज्वर, हिक्का, गुल्म, ज्वर, वातरक्त, क्षय और पीनसरोग नाशकरे है ।

अस्या पत्रगुणाः ।

पर्णमस्य ज्वर दाहं हिक्का दोपत्रयं हरेत् ॥ (नि० र०)

अर्थ-इसकेपत्ते ज्वर, दाह, हुचकी और त्रिदोपनाशक है । इसका वृक्ष मनुष्यके समान ऊँचा होताहै, पत्ते महुवेके पत्तोकी समान होतेहै, फूल सफेद होताहै, इसके कोमलपत्तोका शाक बनाते है । व्यवहार-मूल, पत्ते । मात्रा १॥ मासेकी । यह पजाबमे वह्लणेठी नामसे प्रसिद्ध है ।

पाषाणभेदनामानि ।

पाषाणभेदकोऽश्मघ्नः शिलाभेदोऽश्मभेदकः ।
स चैवोपलभेदश्च नगभिच्छैलगर्भजः ॥

अर्थ-पाषाणभेद-अश्मघ्न शिलाभेद, अश्मभेदक, उपलभेद, नगभिद, शैलगर्भज,(अश्मभिद,अश्मभेदक, पाषाणभेदक, पाषाणभेदन, पाषाणभेदी (न) श्वेता, उपलभेदी, उपलभिद, शिलागर्भज, गिरिभिद, भिन्नयोजनी)

संस्कृतभाषामे	पाषाणभेद ।
हिन्दीभाषामे	पाखानभेद ।
वंगभाषामे	पाथरचुरी, हिमसागर, पाथरकुचा ।
मराठीभाषामे	पाषाणभेद ।
गुजरातीभाषामे	पाखाणभेद ।
कर्णाटकीभाषामे	आलेलगया, पापणभेदी ।
तैलिङ्गीभाषामे	तेलनुरुपिण्डी ।
इंग्रेजीभाषामे	आइरिसप । Irissp

लैटिन्भाषामें कोसियम् एरोमेटिकम् Cocius aromaticum
फारसीभाषामें गोशाद् ।
अरबीभाषामें जितियाना ।

पाषाणभेदगुणाः ।

अश्मभिद्वस्तिरुङ्मूत्रकृच्छ्रतोदाहवातनुत् ।
शीतवीर्यो गुरुः स्निग्धस्तथाऽतीसारनाशनः ॥
(शा० नि०)

अर्थ-पाखानभेद-बस्तिरोग, मूत्रकृच्छ्र, दाह, वात और अतिसारको दूरकरे है, शीतवीर्य है, भारी और चिकना है ।

अन्यच्च ।

अश्मभेदो हिमस्तिक्तः कषायो वस्तिशोधनः ।
भेद हन्ति त्रिदोषार्शोगुल्मकृच्छ्राश्महृद्रुजः ।
योनिरोगान् प्रमेहांश्च प्लीहशूलव्रणानि च ॥

अर्थ- पाखानभेद-शीतल, कडवा, कषेला, वास्तिशोधक, भेदक तथा त्रिदोष, बवासीर, गुल्म, मूत्रकृच्छ्र, पथरी, हृदयरोग, प्रमेह, प्लीहा, शूल और व्रणरोगका विनाश करे है ।

क्षुद्रपाषाणभेदगुणा ।

क्षुद्रपाषाणभेदश्च व्रणकृच्छ्राश्मरीहरः ॥ (रा० नि०)

अर्थ-क्षुद्रपाषाणभेद-व्रण, मूत्रकृच्छ्र और पथरीको दूरकरे है । पाखानभेदवाली लकडी परदेशसे आती है, वह क्या है यह कोई नहीं जानता । इसको सर्वप्रकारके प्रमेह मूत्रकृच्छ्रादि रोगी लेते है और देशी पाषाणभेदके गुण इस पाषाणभेदसे सब मिलतेहैं। मात्रा १ मासेकी ।

धातकीनामानि ।

धातकी ताम्रपुष्पी च धात्री च धातृपुष्पिका ॥

अर्थ-धातकी, ताम्रपुष्पी, धात्री, धातृपुष्पिका, (धातृपुष्पी, धातुपुष्पी, धातुपुष्पिका, वह्निपुष्पी, धावनी, अग्निज्वाला, सुभिक्षा, पार्वती, बहुपुष्पिका, कुमुदा, सीधुपुष्पी, कुञ्जरा, मद्यवासिनी, गुच्छपुष्पी, संघपुष्पी, रोध्रपुष्पिणी, तीव्रज्वाला, वह्निशिखा, मद्यपुष्पा)



संस्कृतभाषामें	धातकी।
हिन्दीभाषामें	धायके फूल, धवईके फूल ।
बंगभाषामें	धाइफूल।
मराठीभाषामें	धायटी।
गुजरातीभाषामें	धावणी।
कर्णाटकीभाषामें	धायिफूल।
तैलिंगीभाषामें	धातुकी पुड, और पुञ्जु, जार्गि।
उ०	जातिको।
लेटिन्भाषामें	वुडफोर्डिया, फ्लोरिबंडा। Woodfordia floribunda
इंग्रेजीभाषामें	गीसलीआटोमेण्ठोजा।

धातकीगुणाः।

धातकी कटुका शीता मदकृत्तुवरा लघुः।
तृष्णातिसारपित्तास्रविषक्रिमिविसर्पजित् ॥(भा० प्र०)

अर्थ-धातकी-चरपरी, शीतल, मदकारक, कषेली, हलकी, तथा तृषा, अतिसार, रक्तपित्त, विष, कृमि और विसर्परोगोंको जीते है,

अन्यच्च।

धातकी कटुका शीता तुवरा मदकारिणी।
तिक्ता लघ्वी च संप्रोक्ता गर्भस्थापनकारिणी॥

रक्तप्रवाहिकापित्ततृड्विसर्पव्रणापहा ।
कृम्यतीसारहननी रक्तदोषरुजापहा ॥
पुष्पमस्याः स्वादु रूक्ष रक्तपित्तातिसारजित् ।
विषनाशकरं चोक्त मुनिभिस्तत्त्वदर्शिभिः॥ (नि०र०)

अर्थ-धातकी-चरपरी, शीतल, कषेली, मदकारक, कडवी, हलकी, गर्भस्थापक तथा रक्तप्रवाहिका, पित्त, तृषा, विसर्प, व्रण, कृमि, अतिसार और रुधिरदोषको दूर करेहै।

धायके फूल-स्वादिष्ठ, रूखे, तथा रक्तपित्त, अतिसार और विषका विनाश करेहै। धायके वृक्षकी अपेक्षा धायके फूलोके अधिक गुण है।

विवरण। इसका वृक्ष होताहै, पत्ते अनारके समान होतेहै, अनारके पत्ते अधिक नीले होतेह, धायके पत्ते कुछ पिलाई लिये खरखरे होतेहै। फूल लाल होतेहै, इस फूलमे कली नहीं होती। धायके फूलोका काढा तीन दिन देनेसे प्रदररोग दूर होताहै। शिमला प्रान्तमे धांवी नामसे प्रसिद्ध ह

दन्तरोगोमे धायके फूल अत्यन्त हितकारी है। व्यवहार-फूल, छाल। मात्रा २ मासेकी ॥

मञ्जिष्ठानामानि।



मञ्जिष्ठा विकसा जिङ्गी समङ्गा कालमेषिका ।
मण्डूकपर्णी भण्डीरी कालयोजनवल्लिका ॥
योजनवल्ली मण्डूकी काण्डीरा वस्त्ररञ्जनी ।
रक्तांगी रक्तयष्टिश्च रक्ता योजनपर्णिका ॥

अर्थ-मञ्जिष्ठा, विकसा, जिंगी, समगा, कालमेषिका, मण्डूक-

पर्णी, भण्डीरी, काला, योजनवल्लिका, योजनवल्ली, मण्डूकी, काण्डीरा, वस्त्ररञ्जनी, रक्ताङ्गी, रक्तयष्टि, रक्ता, योजनपर्णिका, (मण्डी, लतायष्टि, हेमपुष्पी, भिण्डीरी, काण्डीरी, जिङ्गी, भण्डिल, मण्डीरी, भाण्डिका, भण्डि, भण्डितकी, रसायनी, गण्डीरी, हरिणी, गौरी, यमा, रोहिणी, चित्रलता, चित्रा, चित्राङ्गी, जननी, विजया, मञ्जूषा, रक्तयष्टिका, छात्रिणी, रागाढ्या, कालमण्डिका, अरुणा, ज्वरहन्त्री, छत्रा, नागरकुमारिका, भण्डीरलतिका, रागांगी, वस्त्रभूषणा, क्षेत्रिणी, ताम्रमूली, ताम्रिका, लोहितलता और ताम्रवल्ली)

संस्कृतभाषामें	मञ्जिष्ठा ।
हिन्दीभाषामें	मजीठ ।
बंगभाषामें	मञ्जिष्ठा ।
मराठीभाषामें	मञ्जिष्ठ ।
गुजरातीभाषामें	मजीठ ।
कर्णाटकीभाषामें	मजिष्ठा ।
तैलङ्गीभाषामें	मंजिष्टतीठी, ताम्रवल्ली ।
तामिलीभाषामें	मञ्जिट्टी ।
इंग्रेजीभाषामें	मेडररूट । Madder root
लेटिन्‌भाषामें	रुबिआ कोर्डि फोलिया। Rubia-cordifolia
फारसीभाषामें	रुनास ।
अरबीभाषामें	फुव्वहतु सिवग वरु कुश्तु यागीन ।

मञ्जिष्ठागुणाः ।

मञ्जिष्ठा मधुरा तिक्ता कषाया स्वरवर्णकृत् ।
गुर्वी चोष्णा विषश्लेष्मशोथयोन्यक्षिकर्णरुक् ॥
रक्तातिसारकुष्ठास्रविसर्पव्रणमेहनुत् । (भा० म०)

अर्थ-मजीठ-मधुर, कडवा, कषेला, स्वरको श्रेष्ठ करनेवाला, वर्णको उज्ज्वल करनेवाला, भारी, गरम तथा विष, कफ, सूजन, योनिरोग, नेत्ररोग, कर्णरोग, रक्तातिसार, कुष्ठ, रुधिरविकार, विसर्प, व्रण और प्रमेहरोगका नाश करनेवाली है ।

अन्यच्च ।

मञ्जिष्ठा तुवरा चोष्णा वर्ण्या स्वर्या गुरुः स्मृता ॥
तिक्ता लघ्वी च मधुरा व्रणमेहकफापहा ।

विष नेत्ररुजं शोफ योनिदोषं ज्वर तथा ॥
शूल कर्णरुजं चैव कुष्ठं चार्शः कृमीञ्जयेत् ।
रक्तातिसारवीसर्पनाशिनी च प्रकीर्तिता ॥

अर्थ-मजीठ-कषेला, गरम, वर्णको सुन्दर करनेवाला, स्वरको उत्तम करनेवाला, भारी, कडवा, हलका, मधुर तथा घाव, प्रमेह, कफ, विष, नेत्ररोग, सूजन, योनिदोष, ज्वर, (कामला पक्षाघात) शूल, कर्णरोग, कुष्ठ, बवासीर, कृमि, रक्तातिसार और विसर्परोगको नष्ट करे है। मजीठकी वेले पहाडी जंगलोमे होतीहै इसकी जडे मजीठ नामसे विकती है ॥

अस्याः शाकगुणाः ।

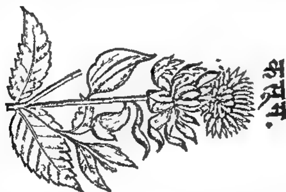
शाके स्यान्मधुरा लघ्वी स्निग्धा दीप्तिकरी मता ।
वातपित्तहरी चोक्ता ऋषिभिः सत्यवादिभिः॥ (नि०र०)

अर्थ-मजीठके पत्तोका शाक-मधुर, हलका, स्निग्ध, जठराग्निको दीपन करनेवाला, तथा वात और पित्तको हरनेवाला है ।

फलंयकृद्दोषहरमूलचर्म्मविवर्णताहरतिलकालकघ्नच (का०नि०)

अर्थ-मजीठका फल-प्लीहाको नाशे करनेवाला है, मजीठकी जड चर्मरोग और तिलकालक (शरीरके तिल) को दूरकरे है ।

कुसुम्भनामानि ।



स्यात्कुसुम्भ वह्निशिखं लोहित ग्राम्यकुकुमम् ॥

अर्थ-कुसुम्भ, वह्निशिख, लोहित, ग्राम्यकुकुम (कमलोत्तम, महारजन, कुक्कुटशिख, पापक, पीत, पद्मोत्तर, रक्त, वस्त्ररञ्जन, अग्निशिख)

संस्कृतभाषामें	कुसुम्भ, कुसुम्भबीज ।
हिन्दीभाषामें	कसुम (कर्र)

बगलामें	कुसुमफूल। कुसुमफल।
मराठीभाषामें	कर्डीचे फळ, कडया।
गुजरातीभाषामें	कुसुम्बो, करड, कुसुंबाना बी।
कर्णाटकीभाषामें	कुसुम्भ।
तैलिंगीभाषामें	लत्तुक, लक वेंगारमु।
इंग्रेजीभाषामें	ऑफिसिनल कार्थेमस। Officinal Carthamus
लैटिनभाषामें	कार्थेमस टिङ्क्टोरियस। Carthamustinctorious
फारसीभाषामें	गुलेमास्कर। (तुरमकायशा)
अरबीभाषामें	अशरीज, हब्बुलअस्फर।

कुसुम्भगुणाः।

कुसुम्भं वातलं कृच्छ्ररक्तपित्तकफापहम् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-कसूम-वातकारक, तथा मूत्रकृच्छ्र, रक्तपित्त और कफनाशक है।

कुसुम्भपुष्पगुणाः।

कुसुम्भपुष्पं सुस्वादु त्रिदोषघ्नं च भेदकम्।
रूक्षमुष्णं पित्तलं च केशरञ्जनकारकम् ॥
कफनाशकरं चैव लघु प्रोक्तं मनीषिभिः।

अर्थ-कसूमके फूल-स्वादिष्ठ, त्रिदोषनाशक, भेदक, रूखे, गरम, पित्तजनक, केशरञ्जक, कफनाशक और हलके हैं।

कुसुम्भपत्रशाकगुणाः।

कुसुम्भपत्रं मधुरं नेत्रयमुष्णं कटु स्मृतम्।
अग्निदीप्तिकरं चातिरुच्यं रूक्षं गुरु स्मृतम् ॥
सरं पित्तकरं चाम्लं गुदरोगकरं मतम्।
कफविण्मूत्रमेदानां नाशकं परमं मतम् ॥ (नि० र०)

अर्थ-कसूमके पत्तोंका शाक-मधुर,नेत्रोंको हितकारी,गरम,चरपरा,अग्निदीपक,अत्यन्त रुचिकारक,रूखा,भारी,सारक,पित्तजनक, अम्ल, गुदाके रोगोंको उत्पन्न करनेवाला, तथा कफ,मल, मूत्र और मेदाको दूर करनेवाला है।

इसके शाकके अधिक गुण शाकवर्गमें देखो।

कुसुम्भबीजगुणा ।

कुसुम्भबीजं मधुरं स्निग्धं शीतं कषायकम् ।
अवृष्यं गुरु च प्रोक्तं कफवातास्रपित्तनुत् ॥

अर्थ-कसूमके बीज-(करं) मधुर, स्निग्ध, शीतल, कषैले, भारी तथा कफ, वात और रक्तपित्त इनका नाश करेहैं ।

इसके अधिकगुण धान्यवर्गमे देखो ।

कुसुम्भतैलगुणाः ।

कुसुंभतैलमुष्णं तु विपाके कटुकं गुरु ।
विदाहकं विशेषेण सर्वदोषप्रकोपनम् ॥ (आत्रेयसंहिता)

अर्थ-कसूमका तैल-गरम, पाकमे चरपरा, भारी, दाहजनक और विशेष करके त्रिदोषको कुपित करेहै ।

इसके अधिक गुण तैलवर्गमे देखो ।

विवरण । कसूमका क्षुप होताहै, इसके कांटे कटाईके कांटोंकी समान होतेहैं, पत्तेभी कटाईके समान होते हैं, इसके फूलोंकोही कसूम कहते हैं । व्यवहार-पत्ते फूल, बीज, तेल, झांदरा ।

लाक्षानामानि ।

लाक्षा तु कीटजा राक्षा क्षतघ्नी रक्तमातृका ।

अर्थ-लाक्षा कीटजा, राक्षा, क्षतघ्नी, रक्तमातृका (जतु, याव, अलक्त, द्रुमामय, गराषिका, खदिरका, रक्ता, रङ्गमाता, पलङ्कषा, क्रिमिहा, द्रुमव्याधि, अलक्तक, पलाशा, मुद्रिणी, दीप्ति, जन्तुका, गन्धमादिनी, नीला, द्रवरसा, पित्तारि, क्रमिजा, क्रिमिजा, जतुका, क्रमिजा, गर्णधका, क्षतघ्नी)

संस्कृतभाषामे	लाक्षा ।
हिन्दीभाषामे	लाख, लाही ।
बंगभाषामे	लाहा ।
मराठीभाषामे	लाख ।
गुजरातीभाषामे	लाख ।
कर्णाटकीभाषामे	अरगु ।
तैलङ्गीभाषामे	लाका ।
इंग्रेजीभाषामे	शेललाक । Shell lac
लैटिनभाषामे	कोकसलाका । Cocuslacca

फारसीभाषामें लाक।
अरबीभाषामें लुक् थोग्ल लाखलुकमघुल।

लाक्षागुणा।

लाक्षा वर्ण्या हिमा बल्या स्निग्धा च तुवरा लघुः।
अनुष्णा कफपित्तास्रहिक्काकासज्वरप्रणुत्॥
व्रणोरःक्षतवीसर्पक्रिमिकुष्ठगदापहा।
विषरक्तप्रशमनी विषमज्वरनाशिनी॥ (निघण्टुसंग्रह)

अर्थ-लाख-शरीरके वर्णको उज्ज्वल करनेवाली, शीतल, बलकारक, स्निग्ध, कषेली, हलकी, अनुष्ण तथा कफ, रक्तपित्त, हिचकी, खासी, ज्वर, व्रण, उरःक्षत, विसर्प, क्रिमि, कुष्ठ, विष, रक्तदोष और विषमज्वरको हरनेवाली है।

अन्यच्च।

लाक्षा तु तिक्ता तुवरा भग्नसन्धानकारिका।
स्निग्धा लघ्वी च बल्या च शीता वर्णप्रदा मता॥
कफं पित्तं च शोषं च विषं रक्तविकारकम्।
हिक्कां कासं ज्वरं चैव विषमं च विनाशयेत्॥
उरःक्षतं च वीसर्पनासारोगक्रमींस्तथा।
कुष्ठं व्रणं च त्वग्दोषं दाहं चैव विनाशयेत्॥ (नि० र०)

अर्थ-लाख-कड़वी, कषेली, भग्नसन्धानकारक, स्निग्ध, हलकी, बलकारक, शीतल, वर्णकारक तथा कफ, पित्त, शोष, विष, रक्तविकार, हिचकी, खासी, ज्वर, विषमज्वर, उरःक्षत, विसर्प, नासारोग, कृमि, कोढ, व्रण, त्वग्दोष और दाहको दूर करनेवाली है।

अलक्तकगुणा।

अलक्तको रजोरोधी रक्तपित्तक्षयापहः।
प्रदरं चाप्यतीसारं सरक्तं क्षपयेद्ध्रुवम्॥ (आत्रेयसंहिता)

अर्थ-महावर-रजोरोधक, रक्तपित्त क्षय, प्रदर और रक्तातिसारको दूर करनेवाली है, इसके अधिक गुण आगे लिखे हैं। पीपल, बेरी, सीसम इत्यादि अनेक वृक्षोमे होतीहै, सबमे श्रेष्ठ पीपलकी लाख गिनीजाती है।

हरिद्रानामानि ।



हरिद्रा निशाह्वा पीना युवती हेमरागिणी ।
काञ्चनी क्षणदा गौरी मेहघ्नी वरवर्णिनी ॥

अर्थ-हरिद्रा, निशाह्वा, पीना, युवती, हेमरागिणी, काञ्चनी, क्षणदा, गौरी, मेहघ्नी, वरवर्णिनी, (यामिनी, क्षपा, तमसिनी, गन्धपलाशिका, सुवर्णवर्णा, युवती, मङ्गलप्रदा, कावेरी, उमा, वर्णवती, पिञ्जा, पीतवालुका, हेमरागी, रभङ्गवासा, घर्षणी, पीतिका, रंजनी, निशा, बहुला, वर्णिनी, रात्रिनामिका, हरित, रञ्जनी, सुवर्णवर्णा, सुवर्णा, शिवा, दीर्घरागा, हलदी, वराङ्गी, अनेष्टा, वरा, वर्णदात्री, पवित्रा, हरिता, विषघ्नी, पिङ्गा, मङ्गल्या, मङ्गला, लक्ष्मी, भद्रा, शिफा, शोभा, शोभना, सुभगाह्वया, श्यामा, ज्वरान्तिका, योषित्प्रिया, कृमिघ्नी, हट्टविलासिनी, निशाख्या, जयन्ती, दीर्घरागा, वर्णविलासिनी और हलदी)

संस्कृतभाषामें	हरिद्रा ।
हिन्दीभाषामें	हलदी ।
बंगभाषामें	हलुद ।
मराठीभाषामें	हळद ।
गुजरातीभाषामें	हलदर ।
कर्णाटकीभाषामें	अर्शिना ।
तैलिङ्गीभाषामें	पसुपु ।
द्रा०	हलद् ।
अंग्रेजीभाषामें	टर्मेरिक । Turmeric
लैटिन्भाषामें	करक्युमालोंगा । Curcamalonga
फारसीभाषामें	जरद्चोव ।
अरबीभाषामें	उरुकुस्सुफर ।

अस्या गुणाः ।

हरिद्रा कटुका तिक्ता रूक्षोष्णकफवातनुत् ।
वर्ण्या त्वग्दोषमेहास्रशोथपाण्डुव्रणापहा॥ (भा॰ प्र॰)

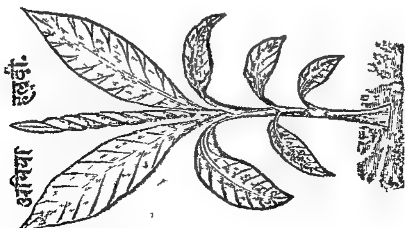
अर्थ-हलदी-चरपरी, कडवी, रूखी, गरम, कफ, वातनाशक, वर्णको सुंदरतादायक, तथा त्वचाके रोग, प्रमेह, रक्तदोष, सूजन, पाण्डुरोग और व्रणको नाश करे है ।

अन्यच्च ।

हरिद्रा कटुका तिक्ता देहवर्णविधायिका ।
उष्णा रूक्षा शोधनी च स्त्रीणां वै भूषणं मता ॥
कफ वात रक्तदोष कुष्ठ कण्डू प्रमेहकम् ।
त्वग्दोष च व्रण शोफं पाण्डुरोग कृमीन्विषम् ॥
पीनस चारुचिं पित्तमपची चैव नाशयेत् । (नि॰र॰)

अर्थ-हलदी-चरपरी, कडवी, देहके रंगको करनेवाली, उष्ण, रूखी, शोधक और स्त्रियोंका भूषण है, तथा कफ, वात, रुधिरदोष, कोढ, खुजली, प्रमेह, त्वचाके दोष, घाव, सूजन, पाण्डुरोग कृमि, विष, पीनस, अरुचि, पित्त और अपचीका नाश करनेवाली है ।

कपूरहरिद्रानामानि ।



दार्वीमेदाभ्रगन्धा च सुरभीदारु दारु च ।
कर्पूरा पद्मपत्रास्यात्सुरभिः सुरनायिका ॥

अर्थ-दार्वीभिद, आम्रगन्धा, सुरभीदारु, दारु, कर्पूरा, पद्मपत्रा, सुरभी, सुरनायिका ।

संस्कृतभाषामे	कर्पूरहरिद्रा, आम्रगन्धहरिद्रा ।
हिन्दीभाषामे	कपरहलदी, आम्बीयाहलदी ।
बगलामे	आमआदा ।
मराठीभाषामे	आंबेहळद ।
गुजरातीभाषामे	आंबाहलदर ।
कर्णाटकीभाषामे	हुलीअंशिना ।
तैलिंगीभाषामे	कारुपसुपु ।
इंग्रेजीमे	मेंगोजिंजर । Mangojinger
लैटिन्मे	कर्क्यूमाएरोमेटिका । Curcuma aromatica

अस्या गुणाः ।

आम्रगन्धिहरिद्रा या सा शीता वातला मता ।
पित्तहृन्मधुरा तिक्ता सर्वकण्डुविनाशिनी ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-आम्बियाहलदी-(कपरहलदी) शीतल, वातकारक, पित्तनाशक, मधुर, कडवी और सर्वप्रकारके कण्डुका नाशक है ।

अपि च ।

अम्ला रुचिप्रदा लघ्वी दीपनी च वग सरा ।
कफ चोग्रव्रण कास श्वास हिक्कां ज्वर जयेत् ।
अभिघातभव शोथ लेपाच्छीघ्र विनाशयेत् ॥ (क्वचित्)

अर्थ-कपरहलदी-(अम्बिया हलदी) वात रक्त और, विषनाशक है, वीर्यवर्द्धक, सन्निपातनाशक, अम्ल, रुचिदायक, हलकी, अग्निको दीपन करनेवाली, सारक तथा कफ, उग्रव्रण, खाँसी, श्वास, हुचकी, ज्वर और अभिघातसे उत्पन्न हुई सूजनको दूर करैहै ।

वनहरिद्रानामानि ।

शोली वनहरिद्रा स्याद्वनारिष्टा च शोलिका ।

अर्थ-शोली, वनहरिद्रा, वनारिष्टा, शोलिका (अरण्यहरिद्रा, वनहलदी)

संस्कृतभाषामे	वनहरिद्रा ।
हिन्दीभाषामे	वनहलदी, जंगलीहलदी ।

वंगभाषामे	वनहलुद।
मराठीभाषामे	शोली, रानहळद।
गुजरातीभाषामे	वनहलदर।
तैलिङ्गीमे	अडविपसुपु।
तामिलीमे	कस्तूरि मजल।
इंग्रेजी भाषामे	W
लेटिन्भाषामे	C

अस्या गुणाः।

शोलिका कटुका गौल्या रुच्या तिक्ताग्निदीपिनी॥(रा नि)

अर्थ-वनहलदी-गोल्य,रुचिकारक,कडवी और जठराग्निदीपकहै।

अपिच।

अरण्यहलदीकन्दः कुष्ठवातास्रनाशन॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-जंगली हलदी-कोढ और रक्तवातनाशक है।

दारु हरिद्रानामानि।

दार्वी दारुहरिद्रा च द्विनीयाभा कपीनकम्।

अर्थ-दार्वी, दारुहरिद्रा, द्विनीयाभा,कपीतक,(पीतद्रु,कालियक, हरिद्र, पचम्पचा, पर्जनी, हरिद्रा, काष्ठा, मर्म्मरी, पीतिका,पीतदारु, स्थिरराग़ा, कामिनी, कटङ्कटेरी, पर्जन्या, पीता,दारुनिशा,कालीयक, कामवती, दारुपीता,कर्कटिनी,हेमकान्ती,पीतत्वक्,पीतचंदन, निर्दिष्टा, काष्ठरजनी, हेमवती, हेमकान्ता)

संस्कृतभाषामे	दारुहरिद्रा।
हिन्दीभाषामे	दारुहलदी।
वंगभाषामे	दारुहरिद्रा।
मराठीभाषामें	दारुहळद।
गुजरातीभाषामें	दारुहलदर।
कर्णाटकीभाषामे	मरदार्शना।
तैलिङ्गीभाषामे	मानिपसुपु।
तमिलीभाषामे	मरमाञ्जल।
लेटिन्भाषामे	बरबेरीस एरीस्टेटा। Berberisaristata

फारसीभाषामे दारचोव ।
अरबीभाषामे दारहलद् ।

अस्य गुणाः ।

तिक्ता दारुहरिद्रा तु कटूष्णा व्रणमेहनुत् ।
कण्डूविसर्पत्वग्दोषविषकर्णाक्षदोषहा ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ-दारुहलदी- कडवी, चरपरी, गरम तथा व्रण, प्रमेह, कण्डू, विसर्प, त्वचाके दोष, विष, कर्णरोग और नेत्ररोगको दूर करेहै ।

अपिच ।

दार्वी तद्वद्विशेषेण कफाभिष्यन्दनाशिनी ॥ (रा०व०)

अर्थ-दारुहलदीके गुण हलदीके समान है विशेषकरके कफ और अभिष्यन्दको हरनेवाली है ।

अन्यच्च ।

दार्वी निशागुणा किन्तु नेत्रकर्णास्यरोगनुत्॥ (भा० प्र०)

अर्थ-दारुहलदीके गुण हलदीकेही समान है, तोभी विशेषकरके, नेत्ररोग, कर्णरोग और मुखरोगनाशक है, शिमला प्रान्तमे कालका कसोलीके समीप इसके बहुत पेड होते है इसका झाड कांटेदार होता है फल काले रंगके छोटे छोटे होते है कश्मल नामसे प्रसिद्ध है ॥

दार्विकाथोद्भवरसाञ्जननामानि ।

रसाञ्जनं तार्क्ष्यशैलं रसगर्भं च तार्क्ष्यजम् ।

अर्थ-रसाञ्जन, तार्क्ष्यशैल, रसगर्भ, तार्क्ष्यज (दार्विकाथोद्भव, बालभैषज्य, तार्क्ष्य, रसोद्भूत, रसाग्रज, कृतक, रसराज वीर्य्याञ्जन, रसनागर्भ, अग्निसार)

संस्कृतभाषामे रसाञ्जन ।
हिन्दीभाषामे रसोत ।
मराठीभाषामे रसाजन ।
वंगभाषामे रसवत ।
गुजरातीभाषाम रसवती ।
कर्णाटकीभाषामे रसांजन ।
तैलङ्गीभाषामे रसाञ्जनमु ।
इंग्रेजीभाषामे एक्स्ट्राक्ट आफ इंडियन बर्बेरि ।
Extract of Indian Perbery
लैटिनभाषामे रिस्
अरबीभाषामे ी ।

अस्या कषाय ।

दार्वीक्वाथसमं क्षीरं पादं पक्त्वा यथाघनम् ।
तदा रसाञ्जनाख्यं तन्नेत्रयोः परमं हितम् ॥

अर्थ- दारुहलदीका काढा बनाकर उस काढेमें उसकी बराबर दूध मिलाकर ओटावे, जब ओटकर काढा होजावे तो उतारले, उसको रसोत कहते हैं । और वह रसोत नेत्रोंको अत्यन्त हितकारी है ।

अस्या गुणा ।

रसाञ्जनं कटुश्लेष्मविषनेत्रविकारनुत् ।
उष्णं रसायनं तिक्तं छेदनं व्रणदोषहृत् ॥ (भावप्र०)

अर्थ-रसोत-चरपरा, गरम, रसायन, कडवा, छेदक तथा कफ, विष, नेत्रविकार और व्रणको दूर करेहै ।

अन्यच्च ।

रसाञ्जनं हिमं तिक्तं हिक्काशोंविषनाशनम् ।
कर्णनेत्रभवान्रोगान्योजितं साधु साधयेत् (रा० नि०)

अर्थ-रसोत-शीतल, कडवा तथा हुचकी, ववासीर, विष, कर्णरोग और नेत्ररोगोको हरेहै ।

अपिच ।

दार्वीक्वाथोद्भवं तीक्ष्णं कटुकं च रसायनम् ।
छेदनं च रसे चोष्णं चक्षुष्यं कफनाशनम् ॥
वृष्यं विषं रक्तपित्तच्छर्दिहिक्काविनाशनम् ।
श्वासघ्नं मुखरोगघ्नं पूर्वाचार्यैर्निरूपितम् ॥ (नि० र०)

अर्थ-रसोत-तीक्ष्ण, कटु, रसायन, छेदक, रसमें गरम, नेत्रोंको हितकारी, कफनाशक, वीर्यजनक तथा रक्तपित्त, वमन, हुचकी, श्वास और मुखरोगका नाश करेहै ।

अस्य शोधनविधि ।

तोयेत्युष्णे परिक्षिप्य द्रवीकुर्याद्रसांजनम् ।
वाससा स्रावयित्वा च शोधनं भानुरश्मिना ॥
एवं विशोधितं सर्वकर्मसु परियोजयेत् ।

विशुद्धं नाशयेद्व्याधीन्नाविशुद्धं कदाचन ॥

अर्थ–रसोतको अत्यन्त उष्ण जलमे घोलदे, फिर वस्त्रमे छानकर धूपमे सुखादे, इस प्रकार शोधाहुआ रसोत सर्वकामोमे ले। शोधन कियाहुआ रसोत व्याधिको नाश करताहै और अशुद्ध रसोत कदापि नहीं। मात्रा १॥ मासेकी।

वाकुचीनामानि।



सोमराजी कृष्णफला वाकुची कुष्ठनाशिनी।
सोमवल्ली पूतिफली वेजानी कालमेषिका ॥

अर्थ–सोमराजी, कृष्णफला, वाकुची, कुष्ठनाशिनी, सोमवल्ली, पूतिफली, वेजानी, कालमेषिका (अवल्गुज, सुवल्ली, सोमवल्लिका, कालमेषी, चन्द्रलेखा, कृष्णा, पूतिफला, सुवल्ली, कालमेषी, वाकुजी वाकुजी, सोमराजिका, ऐन्दवी, शूलोत्खा, क्रिमिघ्नी, सुवल्लिका, सिता, सिनावरी, चन्द्री, सुप्रभा, कुष्ठहन्त्री, काम्बोजी, पूतिगंधा, वल्गुजा, चन्द्रराजी, कालमेषी, त्वग्दोषापहा, कान्तिदा, अवल्गुजा चन्द्रप्रभा, पूतिगंधिका, सुपर्णिका, शशिलेखा, सोमा, कुष्ठघ्नी, कण्डूघ्नी और असितत्वचा)।

संस्कृतभाषामे	वाकुची, सोमराजी।
हिन्दीभाषामे	वायची, बावची, बकुची, (वाकुचीके दाने)
वंगभाषामे	हाकुच, सोमराल (ज)।
मराठीभाषामे	बावची।
गुजरातीभाषामे	बावची, बावचीनावी।
कर्णाटकीभाषामे	बाउच्चिगे।
तैलिङ्गीभाषामे	तिप्पतोगे, नेलवयलिये।
तामिलीभाषामे	वोगिविट्टुलु।
इंग्रेजीभाषामे	एसक्यूलंटफ्लाकुर्शा। Esculent Flacourtia

लेटिनमें सोरेलिया-कोरेलिफोलिया, सोरेलिया स्पाईकेटा। Corylifolia P Spicata

वाकुचीगुणा ।

वाकुची मधुरा तिक्ता कटुपाका रसायनी ।
विष्टम्भहृद्धिमा रुच्या सरा श्लेष्मास्रपित्तनुत् ॥
रूक्षा हृद्या श्वासकुष्ठमेहज्वरक्रिमिप्रणुत् ।
तत्फलं पित्तलं कुष्ठकफानिलहरं कटु ॥
केश्यं त्वच्यं कृमिश्वासकासशोथामपाण्डुहृत् ॥ (भा० म०)

अर्थ-बावची-मधुर, कडवी, पचनेमें चरपरी, रसायन, विष्टम्भको दूर करनेवाली, शीतल, रुचिकारक, सारक, कफ और रक्तपित्तका नाश करनेवाली, रूखी, हृदयको हितकारी तथा श्वास, कोढ, प्रमेह, ज्वर और क्रिमिका, विनाश करेहै ।

बावचीका फल-पित्तजनक, कुष्ठनाशक, कफघ्न, वातविनाशक, कटु, केशोंको, उत्तम करनेवाला, त्वचाको सुंदरतादायक तथा वमन, श्वास, मूत्रकृच्छ्र, बवासीर, खांसी, सूजन, आम और पाण्डुरोगका नाश करेहै।

अन्यच्च ।

वाकुची कटुका पाके तिक्ता शीता रसायनी ।
मधुरा रुचिदा रूक्षा हृद्या ग्राह्यग्निदीपनी ॥
बल्या च तुवरा लघ्वी मेध्या वै रक्तपित्तजित् ।
कफकुष्ठकृमिश्वासकासमेहज्वरव्रणान् ॥
त्रिदोषवातत्वग्दोषविषकण्डूश्च नाशयेत् ॥

अर्थ-बावची-पाकमें चरपरी, कडवी, शीतल, रसायन, मधुर, रुचिदायक, रूखी, हृदयको हितकारी, ग्राही, अग्निप्रदीपक, बलकारक कषेली, हलकी, मेधाजनक तथा रक्त, पित्त, कफ, कोढ, कृमि, श्वास, खांसी, प्रमेह, ज्वर, व्रण, त्रिदोष, वात, त्वचाके विकार, विष, कण्डू और खर्ज्जू अर्थात् खुजलीका नाश करेहै ।

वाकुचीभेदवाकुचीगुणा ।

श्वित्रारिर्वाकुचीभेदः कुष्ठदोषत्रयास्रजित् ।
वातरक्तहरो लेपात्सिध्मश्वित्रविनाशनः ॥ (आ० सं०)

अर्थ-श्वित्रारि यह बाकुचीका भेद है-यह कोढ,त्रिदोष,रक्तविकार वातरक्त सिध्मरोग और श्वित्र कोढको दूर करेहै ।

बाकुचीस्वरूपम् ।

क्षुपो बाकुचिकायाश्च गोवारीसदृशो भवेत् ।
कृष्णपुष्पो गुच्छफलो दुर्गंधः कृष्णबीजकः ॥(शो०नि०)

अर्थ-बाकुचीका क्षुप होताहै, पत्ते ग्वारकी समान होते हैं, फूल काला होताहै, फल गुच्छोंमे आतेहै, उनमेसे काले बीज निकलते है और इसमे दुर्गन्ध आतीहै।व्यवहार-बीज,लकडी।मात्रा१॥मासेकी.

चक्रमर्दनामानि ।

चक्रमर्द्दः प्रपुन्नाटो दद्रुघ्नो मेषलोचनः ।
पद्माटः स्यादेडगजश्चक्री पुन्नाट इत्यपि ॥

अर्थ-चक्रमर्द,प्रपुन्नाट,दद्रुघ्न,मेषलोचन,पद्माट,एडगज,चक्री पुन्नाट, (तार्किण,तर्क्लि, प्रपुन्नड, मेषाक्षि, कुसुम,प्रपुन्नाल, अडगज,गजाख्य मेषाह्वय, एडहस्ती, व्यावर्त्तक,चक्रगज,पुन्नाड,विमर्दक,नर्वट,चक्राह्व, शुकनाशन,दृढबीज,प्रपुन्नाड,खर्ज्जूघ्न, चक्रमर्दक, उरणाख्यक,प्रपुन्नड, प्रपुन्नाड, उरणाक्ष, उरणाक्षक, चक्रपद्माड, दृढबीज)

संस्कृतभाषामे	चक्रमर्द ।
हिन्दीभाषामे	चकवड, पवाड, पमाड (र) ।
बगभाषामें	चाकुन्दा, एडाचि ।
मराठीभाषामें	टाकाला, तरोटा ।
गुजरातीभाषामे	कुवाधियो ।
कर्णाटकीभाषामे	चमच
तैलिंगीभाषामे	तांटचसु ।
इंग्रेजीभाषामे	ओवललीव्ड केशिया । Ovalleaved Cassia
लैटिन्भाषामे	केशिया टोरा । Cassia Tora
फारसीभाषामे	सजीस बोया ।

अस्य गुणाः ।

चक्रमर्दो लघुः स्वादू रूक्षः पित्तानिलापहः ।
हृद्यो हिमः कफश्वासकुष्ठदद्रुकृमीन्हरेत् ॥

हन्त्युष्णं तत्फल कुष्ठकण्डूदद्रुविषानिलान् ।
गुल्मकासकृमिश्वासनाशनं कटुक स्मृतम् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-चकवड हलका, स्वादिष्ठ, रूखा, पित्तवातनाशक, हृदयको हित कारी, शीतलतथाकफ, श्वास, कुष्ठ, दद्रु और कृमिकोनाशकरनेवालाहै। चकवडका फल-गरम है और कुष्ठ, कण्डू, दाद, विष, वात, गुल्म, खासी, कृमि तथा श्वासको दूर करनेवालाहै और कटु-रसान्वित है।

अन्यच्च ।

प्रपुन्नाटः स्वादु रूक्षो लघुस्तिक्तः कटुः स्मृतः ।
हृद्यः शीतः पटुश्चैव वातपित्तकफापहः ॥
दद्रुकुष्ठकृमिश्वासशिरोरुग्व्रणनाशनः ।
मेदोरोग च पामांच त्रिदोषं चारुचिं ज्वरम् ॥
मलमूत्रस्तम्भनश्च मेह कासञ्च नाशयेत् ।
प्रपुन्नाटस्य बीजं तु ग्राहि चोष्णं कटु स्मृतम् ॥
कफकुष्ठश्वासकासदद्रुकण्डुविषापहम् ।
शोथ गुल्म वातरक्त नाशयेदिति कीर्त्तितम् ॥
चक्रमर्दकपर्णानां शाका लघ्वी च पित्तला ।
अम्लोष्णा कफवातघ्नी दद्रुकुष्ठापहा मता ॥
पामां कण्डू च कासं च श्वासश्चैव विनाशयेत्। (नि र.)

अर्थ-पमार-(चकवड), स्वादिष्ठ, रूखा, हलका, कडवा, चरपरा, हृदयको हितकारी, शीतल, खारी तथा वात, पित्त, कफ, दाद, कोढ, कृमि, श्वास, शिरोरोग(बवासीर) घाव, मेदोरोग, पामा, त्रिदोष, अरुचि, ज्वर, मल और मूत्रका रुकजाना, प्रमेह और खासीको दूर करेहै। पमाडके बीज-मलरोधक, गरम, चरपरे तथा कफ, कोढ, श्वास, खांसी, दाह, खुजली, विष, सूजन, गुल्म और वातरक्तका नाश करनेवाले है।
पमाड(चकवड) के पत्तोंका शाक-हलका, पित्तजनक, अम्ल, गरम तथाकफ, वात, दाद, कोढ, पामा, कण्डू, खांसीऔरश्वासकोहरनेवालाहै। इस शाकके अधिक गुण शाकवर्गमें देखो।

पमाडकी फली टूटकर पृथ्वीमे गिर पडतीहै जो
लतेहै ।

विवरण। पमाडका क्षुप होता है, पत्ते गोल
पांच पांच होते है, फूल पीला होताहै,
व्यवहार–बीज, मूल, छाल, पत्ते ।

अतिविषानामानि

काश्मीरातिविषा श्वेता विषा

अर्थ–काश्मीरा, अतिविषा, श्वेता, ...) सिङ्गोको-
उपविषा, घुणवल्लभा, शृङ्गीका, विश्वा, ...)
विरूपा, श्यामकन्दा, विषरूपा, ... Cratic goides
कन्द, भगुरा, मृदी, शिशुभैषज्य,

संस्कृतभाषामे	अ...
हिन्दीभाषामे	अतीस
वंगभाषामे	आतइ
मराठीभाषामे	अ...
गुजरातीभाषामे	
कर्णाटकीभाषामे	
तैलिङ्गीभाषामे	
लैटिन्भाषामे	

...पित्तनुत् ।
...त ॥ (भा० प्र०)
... हितकारी, कफपि-
, रक्तातिसार और

...फाम्रनुत् ।
...करोभ्र कः ॥ (रा०नि०)

विषा सोण्णा

शीतल, वातकफनाशक,
नत्रोको हितकारी, विषके
...नी लोध श्रेष्ठ है ।

अर्थ–
करनेवाला तथा
और ...

शीतल लघु ।
...फपित्तनुत् ॥

विषात्रयं ... विनाशयत् ।
बालानां ... कटु स्मृतम् ॥
...हक मतम् ।
...मः ... (नि०र०)

अपिच ।

त्रिप्रकारं चातिविषं किञ्चिदुष्णं च तिक्तकम् ।
अग्निदीप्तिकरं ग्राहि त्रिदोषघ्नं च पाचकम् ॥
कफपित्तज्वरामातिसारकासविषापहम् ।
यकृद्वान्तितृषां चैव कृमीनर्शांश्च पीनसम् ॥
पित्तोदरं चातिसारं सर्वव्याधिहरं मतम्। (निघण्टुरत्नाकर)

अर्थ-तीनों प्रकारके अतीस-कुछेक उष्ण, कडवे, अग्निप्रदीपक, ग्राही, त्रिदोषनाशक तथा कफ,पित्त,ज्वर,आमातिसार,कास,विष, यकृत्, वमन, तृषा, कृमि, बवासीर, पीनस, पित्तोदर और सर्व प्रकारकी व्याधिविनाशक है ।

अतिविषाभेदाः ।

अतिविषा त्रिधा ज्ञेया शुक्ला कृष्णा तथारुणा ।
रसवीर्यविपाकेषु निर्विशेषा गुणाधिका ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ-अतीस-श्वेत, कृष्ण और रक्त इन भेदोंसे तीन प्रकारका है यह तीनो रस वीर्य और विपाकमें समान है, किन्तु सफेद गुणोंमें अधिक है । मात्रा ३ मासकी ।

लोध्रनामानि ।

लोध्रस्तिरीटकं चैव शाबरो गालवस्तथा ।
द्वितीयः पट्टिकालोध्रः क्रमुकः स्थूलवल्कलः ॥
जीर्णपत्रो बृहत्पत्रः पट्टी लाक्षाप्रसादनः ।

अर्थ-लोध, तिरीटक, शाबर, गालव, (लोध्र, लोध्रक, लोध्रवृक्ष, मार्जन, तिल्वक, लक्तकर्म्मा,शुक,शबरलोध्र,महालोध,मार्जन, बलिप्रिय, वानराघात, बलभद्र रोध्र, भिल्लतरु, तिल्लक, काण्डकीलक, शम्बर, हस्तिलोध्रक, तिलक, काण्डनील, हेमपुष्पक, भिल्ली, शाबरक, तिरीट,यह नाम साधारण लोधके है।दूसरा पठानी लोध होताहै, उसकी पर्य्याय यह है-पट्टिकालोध,क्रमुक, स्थूलवल्कल, जीर्णपत्र, बृहत्पत्र, पट्टी,लाक्षाप्रसादन,पट्टिकाख्य,पट्टिका, पट्टिलोध्र पट्टिलोध्रक, वल्कलोध, बृहद्दल, जीर्णबुध्न,बृहद्वल्क, शीर्णपत्र,अक्षिभेषज, शाबर, श्वेतलोध्र, गालव, बहुलत्वच, लाक्षाप्रसाद, वल्क)

संस्कृतभाषामे	लोध्र, पट्टिकालोध्र ।
हिन्दीभाषामे	लोध, पठानीलोध ।
वंगभाषामे	लोधकाष्ठ, पाटियालोध ।
मराठीभाषामे	लोध ।
गुजरातीभाषामे	लोदर, पठाणीलोदर ।
कर्णाटकीभाषामे	लोध ।
तैलङ्गीभाषामे	तेल्ललोदुगचेट्टुग
लैटिन्भाषामे	सिम्प्लोकोसरेसिमोसा (वृक्ष) सिंप्लोको-सक्रेटिक गोइडिस् (छाल) Symplocosracemosa, S Cratic goides
अरबीभाषामे	मुगाम् ।

लोध्रगुणा ।

लोध्रो ग्राही लघुः शीतश्चक्षुष्यः कफपित्तनुत् ।
कषायो रक्तपित्तासृग्ज्वरातीसारशोथहृत् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ–लोध–मलरोधक,हलका,शीतल नेत्रोको हितकारी,कफपित्तनाशक, कषेला तथा रक्तपित्त, रुधिरविकार, रक्तातिसार और शोथ (सूजन) को दूर करैहै ।

अन्यच्च ।

रोध्रद्वयं कषायं स्याच्छीतं वातकफास्रनुत् ।
चक्षुष्यं विषहृत्तत्र विशिष्टो वल्करोध्रकः ॥ (रा०नि०)

अर्थ–दोनोप्रकारके लोध–कषेले, शीतल, वातकफनाशक, रुधिरके विकारको दूर करनेवाले, नेत्रोको हितकारी, विषके विकारोंके हरनेवाले, इन दोनोंमे पठानी लोध श्रेष्ठ है ।

अन्यच्च ।

लोध्रद्वयं तु तुवरं चक्षुष्यं शीतलं लघु ।
ग्राहकं वातकफनुद्रक्तरुक्छोफपित्तनुत् ॥
अतिसारारुचिविषप्रदराणि विनाशयेत् ।
रक्तपित्तहरं प्रोक्तं पुष्पं पाके कटु स्मृतम् ॥
तुवरं मधुरं शीतं तिक्तञ्च ग्राहकं मतम् ।
कफपित्तहरं चैव ऋषिभिः परिकीर्तितम् ॥ (नि०र०)

अपिच ।

त्रिप्रकारं चातिविष किञ्चिदुष्णं च तिक्तकम् ।
अग्निदीप्तिकर ग्राहि त्रिदोषाणा च पाचकम् ॥
कफपित्तज्वरामातिसारकासविषापहम् ।
यकृद्वान्तितृषा चैव कृमीनर्शांश्च पीनसम् ॥
पित्तोदर चातिसारं सर्वव्याधिहर मतम्। (निघण्टुरत्नाकर)

अर्थ-तीनों प्रकारके अतीस-कुछेक उष्ण, कडवे, अग्निदीपक, ग्राही, त्रिदोषपाचक तथा कफ,पित्त,ज्वर,आमातिसार,कास,विष, यकृत्, वमन, तृषा, कृमि, बवासीर, पीनस, पित्तोदर और सर्व प्रकारकी व्याधिविनाशक है ।

अतिविषाभेदा ।

अतिविषा त्रिधा ज्ञेया शुक्का कृष्णा तथारुणा ।
रसवीर्यविपाकेषु निर्विशेषा गुणाधिका ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ-अतीस-श्वेत, कृष्ण और रक्त इन भेदोंसे तीन प्रकारका है यह तीनों रस वीर्य और विपाकमें समान है, किन्तु सफेद गुणोंमें अधिक है । मात्रा ३ मासेकी ।

लोध्रनामानि ।

लोध्रस्तिरीटक चैव शाबरो गालवस्तथा ।
द्वितीयः पट्टिकालोध्रः क्रमुकः स्थूलवल्कलः ॥
जीर्णपत्रो बृहत्पत्रः पट्टी लाक्षाप्रसादनः ।

अर्थ-लोध्र, तिरीटक, शाबर, गालव, (लोध्र, लोध्रक, लोध्रवृक्ष, मार्जन, तिन्दुक, लक्तकर्म्मा,शुक,शबरलोध्र,महालोध्र,मार्जन, बलिप्रिय, वानराघात, बलभद्र, रोध्र, भिल्लतरु, तिलक, काण्डकीलक, शम्बर, हस्तिलोध्रक, तिलक, काण्डनील, हेमपुष्पक, भिल्ली, शावरक, तिरीट,यह नाम साधारण लोधके है।दूसरा पठानी लोध होताहै, उसको पर्याय यह है-पट्टिकालोध्र,क्रमुक, स्थूलवल्कल, जीर्णपत्र, बृहत्पत्र, पट्टी,लाक्षाप्रसादन,पट्टिकाख्य,पट्टिका, पट्टिलोध्र पट्टिलोध्रक, वल्कलोध्र, बृहद्दल, जीर्णबुध्न,बृहद्वल्क, शीर्णपत्र,आक्षिभेषज, शाबर, श्वेतलोध्र, गालव, बहुलत्वच, लाक्षाप्रसाद, वल्क)

संस्कृतभाषामे	लोध, पट्टिकालोध्र ।
हिन्दीभाषामे	लोध, पठानीलोध ।
वंगभाषामे	लोधकाष्ठ, पाटियालोध ।
मराठीभाषामे	लोध ।
गुजरातीभाषामे	लोद्र, पठाणीलोद्र ।
कर्णाटकीभाषामे	लोध ।
तैलङ्गीभाषामे	तेल्ललोद्दुगचेट्टु
लैटिन्भाषामें	सिम्प्लोकोसरेसिमोसा (वृक्ष) सिंप्लोकोसक्रेटिक गोइडिस् (छाल) Symplocosracemosa, S Cratic goides
अरबीभाषामे	मुगाम् ।

लोध्रगुणा ।

लोध्रो ग्राही लघुः शीतश्चक्षुष्यः कफपित्तनुत ।
कषायो रक्तपित्तासृग्रक्तातीसारशोथहृत ॥ (भा० प्र०)

अर्थ–लोध–मलरोधक, हलका, शीतल नेत्रोको हितकारी, कफपित्तनाशक, कषेला तथा रक्तपित्त, रुधिरविकार, रक्तातिसार और शोथ (सूजन) को दूर करेहै ।

अन्यच्च ।

रोध्रद्वयं कषाय स्याच्छीत वातकफास्रनुत् ।
चक्षुष्य विषहृत्तत्र विशिष्टो वल्करोध्रकः ॥ (रा०नि०)

अर्थ–दोनोप्रकारके लोध–कषेले, शीतल, वातकफनाशक, रुधिरके विकारको दूर करनेवाले, नेत्रोको हितकारी, विषके विकारोके हरनेवाले, इन दोनोमे पठानी लोध श्रेष्ठ है ।

अन्यच्च ।

लोध्रद्वयं तु तुवर चक्षुष्य शीतल लघु ।
ग्राहकं वातकफनुद्रक्तरुक्छोफपित्तनुत् ॥
अतिसारारुचिविषप्रदराणि विनाशयत् ।
रक्तपित्तहर प्रोक्त पुष्प पाके कटु स्मृतम् ॥
तुवर मधुर शीतं तिक्तञ्च ग्राहक मतम् ।
कफपित्तहर चैव ऋषिभिः परिकीर्तितम् ॥ (नि०र०)

अर्थ-दोनोप्रकारके लोध-कपेले, नेत्रोंको हितकारी, शीतल, हलके, ग्राही तथा वात, कफ, रक्तदोष, शोफ, पित्त, अतिसार, अरुचि, विष, प्रदर और रक्तपित्तका नाश करनेवाले है ।

लोधका फल- पचनेमे चरपरा, कपेला, मधुर, शीतल, कडवा, ग्राहक और कफपित्तनाशक है ।

भल्लातकनामानि ।

भल्लातकोऽरुष्करश्च भल्लातः शोथहृत्तथा ।
वह्निनामा वीरतरुर्व्रणकृद्भूतनाशनः ॥

अर्थ- भल्लातक, अरुष्कर, भल्लात, शोथहृत, वह्निनामा, वीरतरु, व्रणकृत, भूतनाशन, (भल्लातकी, अग्निमुखी, वीरवृक्ष, अह्लला, अन्तःसत्त्वा, भल्लिका, अशोहिता, भल्ली, निर्दहन, तपन, अनल, कृमिघ्न, शैलबीज, वातारि, स्फोटबीजक, पृथग्बीज, धनुर्वृक्ष, बीजपादप, वह्नि, महातीक्ष्णा, अग्निक, स्फोटहेतु, शोफकृत, ग्रहबीज, रक्तहर)

संस्कृतभाषामे	भल्लातक ।
हिन्दीभाषामे	भिलावा ।
वंगभाषामे	भेला ।
मराठीभाषामे	बिबवा, बिब्बा, बिब्बे ।
गुजरातीभाषामे	भिलामा ।
कर्णाटकीभाषामे	केरबीज ।
तैलङ्गीभाषामे	नाल्लाजीडी, जीडीविट्टलु ।
औत्कलीभाषामे	भाल्लिप ।
तामिलीभाषामें	शनकोट्टइ ।
द्रा०	भिलवना ।
इंग्रेजीभाषामे	मार्किंगनट्। Marking-nut मलाकाबिन Mala ccabean
लेटिन्भाषामे	सेमिकार्पसएनेकार्डियम् । Semecarpus anacardium
फारसीभाषामे	बिलादुर ।
अरबीभाषामे	हबुल्कल्ब ।

भल्लातकगुणा ।

भल्लातकः कषायोष्णः शुक्लो मधुरो लघुः ।

वातश्लेष्मोदरानाहकुष्ठार्शोग्रहणीगदान् ॥
हन्ति गुल्मज्वरश्वित्रवह्निमांद्यक्रिमिव्रणान्।(भावप्रकाश)

अर्थ-भिलावा-कषेला, गरम, शुक्रजनक, मधुर, हलका तथा वात, कफ, उदररोग, आनाह, कुष्ठ, बवासीर, संग्रहणी, गुल्म, ज्वर, श्वित्रकुष्ठ, अग्निमाद्य (प्रमेह) कृमि और व्रणरोगका नाश करे है।

भल्लातकफलगुणा।

भल्लातकफलं स्निग्धं क्रिमिदुर्नामनाशनम्।
दन्तस्थैर्यकरं ग्राहि कषायं मधुरश्च तत् ॥ (राजवल्लभ)

अर्थ-भिलावेका फल-स्निग्ध क्रिमि तथा बवासीरका नाश करनेवाला, दांतोंको स्थिर करनेवाला, ग्राही, कषेला और मधुर है।

पक्वभल्लातकगुणा।

भल्लातकफल पक्व स्वादु पाकरस लघु।
कषाय पाचनं स्निग्धं तीक्ष्णोष्णं छेदि भेदनम् ॥
मेध्यं वह्निकरं हति कफवातव्रणोदरम्।
कुष्ठार्शोग्रहणीगुल्मशोफानाहज्वरक्रिमीन् (भावप्रकाश)

अर्थ-भिलावेका पका फल-मधुर, पाकमे मधुर, हलका, कषेला, पाचक, स्निग्ध, तीक्ष्ण, गरम, छेदन, भेदक, मेधाजनक, अग्निदीपक, तथा कफ, वात, व्रण, उदररोग, कुष्ठ, अर्श, संग्रहणी, गुल्म, सूजन, आनाह, ज्वर और कृमिरोगोको दूर करे है।

अपिच।

भल्लातस्य फलं कषायमधुरं कोष्णं कफार्तिभ्रम--
श्वासानाहविबन्धशूलजठराध्मानक्रिमिध्वंसनम्।। (रा नि.)

अर्थ-भिलावेका फल-कषेला, मधुर, गरम तथा कफ, भ्रम, श्वास, आनाह, विबंध, शूल, उदररोग, आध्मान और क्रिमिको नाश करनेवाला है।

अस्य फलत्वग्गुणा।

फलत्वचा सुमधुरा स्निग्धा लघु कषायका।
रसे कटी पाचिका च लघु तीक्ष्णा च भेदिका ॥
उष्णा छेदनकर्त्री च दीपनी कफनाशिनी।

तीक्ष्णोष्णा पित्तला मोहमदवाग्वह्निवर्द्धिनी॥ (भा प्र)

अर्थ-भग-कफनाशक, कडवी, ग्राहक, पाचक, हलकी, तीक्ष्ण, गरम, पित्तजनक तथा मोह, मद, वाणी और अग्निको बढानेवाली है।

अन्यच्च।

शक्राशनं तु तीक्ष्णोष्णं मोहकृत्कुष्ठनाशनम्।
बलमेधाग्निकृच्छ्लेष्मदोषहारि रसायनम्॥

अर्थ-भांग-तीक्ष्ण, उष्ण, मोहकारक, कुष्ठनाशक, बलवर्द्धक, मेधाजनक, अग्निकारक, कफनाशक, और रसायन है।

अपिच।

भृंगी तु दीपनी रुच्या ग्राहिणी पाचनी लघुः।
निद्रापित्तप्रदोष्णा च कामदा कफवातजित्॥

अर्थ-भग-अग्निको दीपन करनेवाली, रुचिको उत्पन्न करनेवाली, मलको रोकनेवाली, पाचक, हलकी, निद्राजनक, पित्तकारक, कामजनक और कफ तथा वातको जीतनेवाली है।

गञ्जागुणाः।

आग्नेयी तर्पिणी बल्या मन्मथोद्दीपनी चला।
निद्रासंजननी गर्भपातिनी च विकाशिनी॥
वेदनाक्षेपहारिणी ज्ञेया च मदकारिणी।(अत्रसंहिता)

अर्थ-गांजा-पाचक, तृष्णाकारक, बलकारक, मन्मथोद्दीपक, चित्तको चलायमान करनेवाला, निद्राजनक, गर्भको गिरानेवाला, विकाशी, वेदनाको हरनेवाला, आक्षेपको दूर करनेवाला और मदकारक है।

भंगोत्पत्ति।

जाता मन्दरमन्थनाज्जलनिधौ पीयूषरूपा पुरा
त्रैलोक्ये विजयप्रदेति विजया श्रीदेवराजप्रिया॥
लोकानां हितकाम्यया क्षितितले प्राप्ता नरैः कामदा
सर्वातङ्कविनाशहर्षजननी यैः सेविता सर्वदा॥

अर्थ-पहिले समयमे जब मदराचल पर्वतसे समुद्र मथागयाथा, तब उससमय अमृतरूपसे भंगकी उत्पत्ति हुई। त्रिलोककी विजय देनेवाली होनेसे इसका नाम विजया हुआ, यह देवराज इन्द्रको प्यारी है। हितकी

अभिलाप करनेसे पृथ्वीपर मनुष्योंको प्राप्त होनी है, इसको जलके साथ मिलाकर पीनेसे काम अत्यन्त प्रबल होताहै, सर्व प्रकारके रोग शोक दूर होतेहैं और अतुल आनन्द प्राप्त होता है ।

विवरण-यह एक प्रकारका क्षुप है, इसके फूल हरे गुच्छेदार होते है,इसके पत्ते नीमके पत्ते समान लम्बे और कगूरदार होते है, परन्तु नीमके पत्तोसे कुछ छोटे होते हैं, प्रति दंडीपर तीन पाच अथवा सात पत्ते होते हैं, पुरुष और स्त्रीके नामसे भग दो प्रकारकी होती है, पुरुष जातिके क्षुपसे पत्ते लिये जाते है और स्त्री जातिके क्षुपसे गाजेकी उत्पत्ति होती है, वंगदेशके राजशाही जिलेमे गाजे की खेती होती है । दोनो जातिके क्षुप एक जगह रहनेसे जटा नही बाधी जासकती, वह यही कारण है कि भगकी खेती हरेक स्थानमे नही होती । वहा पर जो पुरुष जातिके वृक्ष उत्पन्न होते है, उन सबको बहुत छोटेपनसे उखाड डालते हैं मुगेर पञ्जाब और रामपुरके जिलेकी भग उत्तम होती है । क्षुप छैः फुटसे ऊंचा नही होता पत्ते एक इञ्च लम्बे होते है ।

हिन्दुओंको भग अत्यन्त प्यारी है विना विघ्नके कार्य सिद्ध करनेको सब उत्सवोंमे यह प्रथमही पीजाती है । पश्चिमोत्तर देशमे इसका अधिक व्यवहार है ।

हमारे देशके कोई कोई भगेडी कहते है,कि भगही इस संसारमे मनभावन और परमपावन है इसी कारण भगवान् भूतनाथने इसको ग्रहण किया कोई यह भी कहते है कि-

सवैया ।

भोजन ही सब रीझन है जब घोय धरी शिवके मनमानी ।
मिर्च मसालो मिलाय दियो नव घोटकरी चाको रस धानी॥
साफी सुरपतिरायबनी यह ब्रह्म कमण्डलुके जल छानी ।
गगते दूनी तरङ्ग उठै जब अगमे आवत भग भवानी ॥ १ ॥

कोई बोला यह ठीक नहीं वरन यों है-

साधुनके अरु सिद्धनके अरु भट्ट सुभट्टनके मनमानी ।
कामिनिके अरु दूतनके रजपूतन घोटम घोटके छानी ॥
याहिके बीच अनेकन तीरथ याहिमे गग तरगके पानी ।
कोटिन रग दिखावति है जब अगमे आवति भग भवानी॥२॥

एकने कहा भाई यह भी नही ऐसे है।

खायेते ज्ञानकि खान खुले बिन खाये गमन नही होतहै चानी।
चाहत है सब योगी यती अरु देवनमे महादेवहु मानी ॥
याके समान न और कछू हमे जान परी यह मुक्तिनिसानी।
कोटिन रग दिखावतिहै जब अगमे आवति भग भवानी॥३॥

किसीने कहा भाई ऐसे कहो। कवित्त।

देखत हरी है गुण अमित भरी है सिद्ध साधन धरी है ज्ञान भरी सम शेषकी। ध्यानकी पुरी है कवितान ईश्वरी है मति देवत खरी है बुद्धि करन गणेशकी ॥ जिन्होने गही है ताय प्रभुता करी है कविलाल वरणी है ये निकाई परदेशकी। सुरईश्वरी है नरनागधीश्वरी है जल थलमे भरी है यह लाडिली महेशकी ॥ ४ ॥

मिरच मसाला सौफ कासनी मिलाये भग खायेते अनेकरग अगको उबारती। जारती जलोदर कठोदर भगदरको सन्निपात बवासीर बावन विदारती ॥ सुकवि शिवराम दाद खाजको खराब करै क्षयी छीक छजन मसूरको निकारती। पीनस प्रमेह बीस बावन तरहकी पीर कमर दरदको गरद करडारती॥ ५ ॥इत्यादि.

व्यवहार-वैद्यक शास्त्रोमे भग और भगके बीजोके अतिरिक्त इसके और किसी अशका व्यवहार नही देखा जाता,परतु गांजाभी किसी किसी प्रयोगमे किया जाता है।

समुद्र मथनेके समय अमृतके साथ यह उत्पन्न हुई थी, देवेद्र चतुरताके साथ इसका सेवन करता है। सग्राममे जानेके समय सपूर्ण देवसेना इसको पी निडरहो दैत्योके साथ युद्ध करती। बस इसी कारणसे इसका नाम विजया हुआहै। फिर देवराजने अत्यन्त प्रसन्न होकर मनुष्योका शोक दु ख दूर करनेके लिये इसे मृत्युलोकमे भेजा।

आयुर्वेद शास्त्रमे दोप्रकारके रोगोकी औषधियोमे इसका व्यवहार किया जाताहै। उदरामय परिपाक और रतिशक्ति बढानेके लिये जो औषधी बनाई जाती है उनमे भग अधिक डाली जाती है। आजकलभी परीक्षा करनेसे भगका एक अद्भुत गुण प्रगट हुआहै, धनुस्तम्भ रोगमे इसका धुआ पिलानसे शनैः शनै आक्षेप कम हो जाता है। और रोगीको भी अधिक दुर्बलता नही होती, बार बार भगका धुआ पीनेसे रोग छूट जाता है।

जिसप्रकार डाक्तर कारतगिरने भगका धुआ पिलाकर धनुस्तम्भके

कई रोगियोंको आरोग्य कियाहै उसका वृत्तान्त नीचेलिखतेहैं,उन्होने छै रोगियोंको धुंआ पिलाकर आराम किया।सात रत्ती भंग तमाखूके साधारण पत्तोंमें एक नई चिलम तमाखूके समान सजाकर हुकेके द्वारा रोगीको पिलाया था आक्षेप होनेका पहला लक्षण देखतेही रोगीको धूमपान करायागया । धुंआ पीतेही रोगी आक्षेपसे छूट नेत्र बंदकर साधारण रीतिसे सोगया।आक्षेपहोनेका ध्यान होतेही इसप्रकारसे वारवार धुंआ पिलाकर उन सब रोगोंको आराम किया गया ।

बम्बई देशके डाक्टर जि सि (G C) लूकसने परीक्षा करके देखा है कि धुआ पीनेसे (१) आक्षेप थोडी देरतक ठहरता है(२) धीरे धीरे आक्षेप बहुत समयके पीछे हुआ करताहै (३) आक्षेपका तेजभी धीरे धीरे कम होजाता है (४) आक्षेपके किये रोगीको अत्यन्त कृश (दुबला) होना नहीं पडता (५) वारंवार व्यवहार करनेसे फिर आक्षेप एक साथ उडजाताहै ।

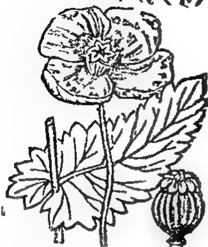
डाक्टर ओसागनसीने अनेक प्रकारके रोगोंमे भंगका प्रयोग कर परीक्षा की थी । उनकी राय है । धनुःस्तम्भ, जलान्तक, वातरस, तडका और विषूचिका रोगकी यह औषधी है, उनके पीछे अंगरेज डाक्टर लोग भंगको धनुस्तम्भ और विषूचिकाकी श्रेष्ठ औषधी समझतेहैं ।

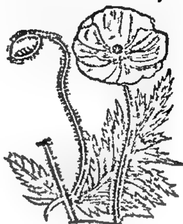
डाक्टर डाईमक (Dymac) ने धनुःस्तम्भके बहुतरोगियोंको केवल भंगसे आराम किया और निश्चय करदियाहै कि धनुःस्तम्भके लिये उत्तम औषधी है यह विषूचिका रोगमें अफीमके समान काम करनेवाली है रोगकी सम्प्राप्तिके समय काममें लानेसे अत्यन्त लाभ होताहै।इन रोगोंके अतिरिक्त यूनानी मतसे प्रमेह और अन्त्रवृद्धिके रोगमे भंगका प्रयोग होताहै । दूधमें भंग पीसकर लेप करनेसे बवासीरीको आराम होताहै । भुनीहुई भंगका चूर्ण सहतके साथ खानेसे अतिसार, सग्रहणी और मन्दाग्नि दूर होतीहै । भंगका पूरा क्षुप पीसकर नवीन घावमें लगानेसे शीघ्र आराम होताहै । और चोटकी पीडा निवारण करनेको लेप देनेसे विशेष उपकार होताहै ।

मात्रा २-४ रत्ती । व्यवहार-बीज, पत्ते, जड ।

खाखसफलनामानि ।

खसफलेखाखसफलमुह्रुस्तफलमित्यपि ।





संस्कृतभाषामें	खसफल, खाखसफल, उल्लसत्फल।
हिन्दीभाषामें	पोस्त, खसखसका फल, पोस्तके डोरे।
वङ्गभाषामें	पोस्तदानारगाच्छ, पोस्तटेंडि, खाकसी।
मराठीभाषामें	पोस्त, अफूची बोंडे।
गुजरातीभाषामें	अफीणना डोडवां।
इंग्रेजीभाषामें	पोपिकाप्स्युलस् । Poppycapaules
लैटिनभाषामें	पापावरीस् कैपस्यूली। Papaveris Capsulae
फारसीभाषामें	कोकनार।
अरबीभाषामें	अबुनास।

अस्य गुणाः।

स्याद्वा खसफलोद्भूतवल्कलं शीतलं लघु।
ग्राहि तिक्तं कषायं च वातकृत्कफकासहृत् ॥
धातूनां शोषकं रूक्षं मदकृद्वाग्विवर्द्धनम्।
मुहुर्मोहकरं रुच्यं सेवनात्पुंस्त्वनाशनम् ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-पोस्तका डोरा-शीतल, मलरोधक, कडवा, कषेला, वातकारक, कफनाशक, कासनिवारक, धातुशोषक, रूखा, मदको करनेवाला, वाणीको बढानेवाला, वारवार मोहको उत्पन्न करनेवाला, रुचिको करनेवाला और इसको बहुत सेवन करनेसे पुरुषता नाश होतीहै।

अपिच।

खसखसं ग्राहकं वल्यं गुरु वृष्यं कफप्रदम्।
पाके च मधुरं वीर्य्यं कान्तिदं वलदं मतम्॥
वातपित्तं नाशयति फलं रूक्षं च ग्राहकम्।
रक्तशोषकरं प्रोक्तं मुनिभिस्तत्त्वदर्शिभिः (नि०र०)

अर्थ-पास्तका वृक्ष-ग्राही, बलकारक, भारी, वृष्य, कफकारक, पाकमें मधुर, वीर्यदायक, कान्तिजनक, बलदायक, वातपित्तको शमन करनेवाला, इसका फल रूखा, ग्राही, रक्तशोषक है।

अफननामानि।

अफेनं खसखसरसं निफेनं चाहिफेनकम्॥

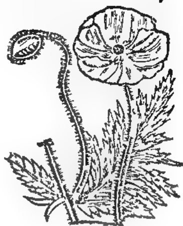
अर्थ-अफेन, खसखसरस, निफेन, अहिफेनक (खसफलक्षीर, आफूक, नागफेन, पोस्तोद्भव, पोस्तरस, भुजंगफेन)

संस्कृतभाषामें	अहिफेन।
हिन्दीभाषामें	अफीम।
वंगभाषामें	आफिंग।
मराठीभाषामें	अफू, अपू, कडवी।
गुजरातीभाषामें	अफेण।
कर्णाटकीभाषामें	अफेन।
तैलिङ्गभाषामें	नाल्लामद्दु।
इंग्रेजीभाषामें	ओपियम् Opium
लैटिन्भाषामें	ओपियम्। Opium
फारसीभाषामें	अफयून तिर्य्याक।
अरबीभाषामें	लवतुल खसखास।

अस्य गुणाः।

जारणो मारणश्चैव धारणः सारणस्तथा।
अहिफेनश्चतुर्धोक्तो गुणांस्तस्य ब्रवीमि ते।
वृष्यो बलकरो ग्राही सप्तधातुविशोषकः॥
वातपित्तकृदानदकारको नेत्रमादकः।
वीर्य्यस्तम्भकरस्तिक्तोमधुरश्च प्रकीर्तितः॥
सन्निपातकृमिकफपाण्डुक्षयविनाशकः।





संस्कृतभाषामे	खसफल, खाखसफल, वल्लसत्फल ।
हिन्दीभाषामे	पोस्त, खसखसका फल, पोस्तके डोरे ।
वङ्गभाषामे	पोस्तदानारगाच्छ, पोस्तटेडि, खाकसी ।
मराठीभाषामे	पोस्त, अफूची वोंडे ।
गुजरातीभाषामे	अफीणना डोडवा ।
इंग्रेजीभाषामे	पोपिकाप्स्युलस् । Poppycapsules
लैटिनभाषामे	पापावरीस् कैपस्यूली । Papaveris Capsulae
फारसीभाषामे	कोकनार ।
अरवीभाषामे	अवुनास ।

अस्य गुणाः ।

स्याद्वा खसफलोद्भूतवल्कलं शीतलं लघु ।
ग्राहि तिक्तं कषायं च वातकृत्कफकासहृत् ॥
धातूनां शोषकं रूक्षं मदकृद्वाग्विवर्द्धनम् ।
मुहुर्मोहकरं रुच्यं सेवनात्पुंस्त्वनाशनम् ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-पोस्तका डोरा-शीतल, मलरोधक, कडवा, कषेला, वातकारक, कफनाशक, कासनिवारक, धातुशोषक, रूखा, मदको करनेवाला, वाणीको वढानेवाला, वारवार मोहको उत्पन्न करनेवाला, रुचिको करनेवाला और इसको वहुत सेवन करनेसे पुरुषता नाश होताहै ।

अपिच।

खसखस ग्राहकं बल्यं गुरु वृष्यं कफप्रदम्।
पाके च मधुरं वीर्य्यं कान्तिदं बलद मतम्॥
वातपित्त नाशयति फल रूक्षं च ग्राहकम्।
रक्तशोषकर प्रोक्तं मुनिभिस्तत्त्वदर्शिभिः (नि०र०)

अर्थ–पोस्तका वृक्ष–ग्राही, बलकारक, भारी, वृष्य, कफकारक, पाकमे मधुर, वीर्यदायक, कान्तिजनक, बलदायक, वातपित्तको शमन करनेवाला, इसका फल रूखा, ग्राही, रक्तशोषक है।

अफेननामानि।

अफेनं खसखसरस निफेनं चाहिफेनकम्॥

अर्थ–अफेन, खसखसरस, निफेन, अहिफेनक (खसफलक्षीर, आफूक, नागफेन, पोस्तोद्भव, पोस्तरस, भुजंगफेन)

संस्कृतभाषामे	अहिफेन।
हिन्दीभाषामे	अफीम।
वंगभाषाम	आफिंग।
मराठीभाषामे	अफू, अपू, कडवी।
गुजरातीभाषामे	अफेण।
कर्णाटकीभाषामे	अफेन।
तैलिङ्गभाषामे	नाल्लामडु।
इंग्रेजीभाषामे	ओपियम् Opium
लैटिन्भाषामे	ओपियम्। Opium
फारसीभाषामे	अफयून तिर्य्याक।
अरबीभाषामे	लवनुल खसखास।

अस्य गुणाः।

जारणो मारणश्चैव धारणः सारणस्तथा।
अहिफेनश्चतुर्धोक्तो गुणांस्तस्य ब्रवीमि ते।
वृष्यो बलकरो ग्राही सप्तधातुविशोषकः॥
वातपित्तकृदानदकारको नेत्रमादकः।
वीर्य्यस्तम्भकरस्तिक्तोमधुरश्च प्रकीर्तितः॥
सन्निपातकृमिकफपाण्डुक्षयविनाशकः।

मेहादीञ्छ्वासकासौ च प्लीहां धातुक्षयं तथा ॥
नाशयेदिति च प्रोक्तो विशेषस्तस्य कथ्यते ।
श्वेतवर्णो जारणः स्याद्भुक्तमन्नं च जारयेत् ॥
मृतिप्रदः कृष्णवर्णो मारणस्तु प्रकीर्तितः ।
जरानाशकरः पीतो धारणः सम्प्रकीर्तितः ॥
चित्रवर्णः सारणः स्यान्मलसारणकार्यतः । (नि०र०)

अर्थ-अफीम-जारण, मारण, धारण और सारण, इन भेदोंसे चार प्रकारकी है ।

गुण-वीर्य्यवर्द्धक, बलकारक, ग्राही, सप्तधातुशोषक, वातपित्तकारक, आनन्दकारक, नशेको करनेवाली, वीर्यको स्तम्भन करनेवाली, कडवी, मधुर तथा सन्निपात, कृमि, कफ, पाण्डुरोग, क्षय, प्रमेह, श्वास, खांसी, प्लीहा और धातुक्षयको क्षय करेहै । सफेद्रंगकी अफीम अन्नको जारण (जीर्ण) करे है,इसकारणइसको जारण कहते हैं।काले रंगकी अफीम मृत्युकारक है इसकारण इसको मारण कहते हैं । पीले रंगकी जरानाशक है इसको धारण कहते हैं । चित्र वर्णकी अफीम मलको सारण करतीहै, इसको सारण कहते हैं ।

खसखसनामानि ।

उच्यन्ते खसबीजानि ते खाखसतिला अपि ॥

अर्थ-खसबीज, खाखसतिल, (सूक्ष्मतण्डुल, सूक्ष्मबीज, सुबीज, तिलभेद, खसतिल)

संस्कृतभाषामें	खसबीज, खसतिल ।
हिन्दीभाषामें	खसखस, खसखसके दाने ।
बंगभाषामें	पास्तदाना ।
ते० ता०	गसगस ।
मराठीभाषामें	खसखस ।
गुजरातीभाषामें	खसखस ।
इंग्रेजीभाषामें	पोपीसीड्स् Poppy seeds
लैटिन्भाषामें	पापावरसोम्निफरम् । Papavar somniferum
तु०	कसकसे ।

मला०	कशकश।
फारसीभाषामे	तुख्मेकोकनार ।
अरबीभाषामे	हबुलकोकनार ।

अस्य गुणाः ।

खसबीजानि बल्यानि वृष्याणि मधुराणि च ।
जनयन्ति कफं तानि शमयन्ति समीरणम् ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-खसखस-बलकारक, वीर्य्यवर्द्धक, भारी, मधुर, ग्राहक, और वातविनाशक है ।

विवरण । पोस्तकी खेती पूर्व, दक्षिण और रुहेलखण्डमें अधिकतासे होतीहै । इसका क्षुप चार फूटका होताहै, फूल सफेद, लाल और काले रंगके अतीव सुन्दर गुल्लालेकी समान आते है, उसपे डोडे लगतेहैं उन डोडोको छुरीकी नोकसे गोद देतेहैं, उनमेंसे जो दूध निकलताहै, उस दूधको इकट्ठा करलेते है उसको पकाकर अफीम बनातेहै और डोडेके भीतर जो बीज होतेहै उनको खसखस कहते है।

यवक्षारनामा

पाक्यं क्षारो यावशूको यवक्षारो यवाग्रजः ।

अर्थ-पाक्य, क्षार, यावशूक, यवक्षार, यवाग्रज, (यवलास, यवशूक, सारक, रेचक, यवनालक, तिर्य्य, तीक्ष्णरस, यवनालज, यवज, यवशूकज, यवाह्व, यवापत्य)

संस्कृतभाषामे	यवक्षार ।
हिन्दीभाषामे	जवाखार ।
बंगभाषामे	यवक्षार, सोरा ।
मराठीभाषामे	जवखार ।
गुजरातीभाषामे	जवखार ।
कर्णाटकीभाषामे	यवक्षार ।
तैलिङ्गीभाषामे	यवखारं ।
इंग्रेजीभाषामे	कार्बोनेट ऑफ् पोटाश । Carbonate of Potash
लैटिन्भाषामे	पोटाश्यं कार्बोनास् । Potassium Carbonass
अरबीभाषामे	नुतरुन् ।

अस्य गुणाः ।

यवक्षारो लघुः स्निग्धः स सूक्ष्मो वह्निदीपनः ।
निहन्ति शूलवातामश्लेष्मश्वासगलामयान् ॥
पाण्ड्वर्शोग्रहणीगुल्मानाहप्लीहहृदामयान् । (भा०प्र०)

अर्थ-जवाखार-हलका, स्निग्ध, सूक्ष्म, अग्निप्रदीपक तथा शूल, वात, आम, कफ, श्वास, गलरोग, पाण्डुरोग, बवासीर, सग्रहणी, गुल्म, आनाह, प्लीहा और हृदयरोगको हरे है ।

अन्यच्च ।

यवक्षारो हिमः श्रेष्ठः शर्कराश्मरिकृच्छ्रजित् ।
निहन्तिशूलवातामपुंस्त्वगुल्मादिजन्तुजित ॥ (गणनि)

अर्थ-जवाखार-शीतल, श्रेष्ठ तथा शर्करा, अश्मरीरोग, शूल, वात, आम, पुरुषता, गुल्मादिरोग और क्रिमिको दूर करेहै ।

अपिच ।

यवक्षारः सरश्चोष्णः कटुरग्निप्रदीपकः ।
सूक्ष्मो लघुर्वातकफशूलाश्मरिरुजापहः ॥
वातरोग कण्ठरोगमामशूलाश्मरीहरः ।
यकृत्प्लीहामूत्रकृच्छ्रगुल्मश्वासार्शनाशनः ॥
आनाहवार्त हृद्रोगमामं पाण्डुरुज तथा ।
ग्रहणी नाशयत्येव पूर्वाचार्यनिरूपितम् ॥ (नि०र०)

अर्थ-जवाखार-सारक, उष्ण, चरपरा, अग्निदीपक, सूक्ष्म, लघु, तथा वात, कफ, शूल, अश्मरी, वातरोग, कण्ठरोग आमशूल, यकृत्, प्लीहा, मूत्रकृच्छ्र, गुल्म, श्वास, अर्श, आनाह, वात, हृदयरोग आम, पाण्डुरोग और सग्रहणीका नाश करनेवाला है ।

विवरण । कच्चे जौओंके पञ्चांगको अग्निमे जलाकर राख करलेवे फिर उस राखकी कशमकी भांति रैनी टपकालेवे फिर उसको अग्निपर कढाईमे चढाकर उसका पानी जलादेवे जब वह जमजाय तो उसको कढाईमेसे खुरचकर एक कांचके पात्रमे रखदेवे इसको जवाखार कहते है ।

स्वर्जिकाक्षारनामानि ।

कपोता स्वर्जिका स्वर्जिः शूलघ्नी सुखवर्चकः ॥

अर्थ-कपोत, स्वार्जिका, स्वार्जी, शूलघ्नी, सुखवर्चक (सौवर्चल, रुचक, सृज्जिकाक्षार, सार्जिका, क्षार, सुवर्चिक, सृघ्नी, योगवाही, स्वर्जिका, सुरवर्चक, सुघ्निका, सज्जि, सज्जिक्षार, स्वार्जिक, सुखोर्जिक, सुवर्जिक, स्वार्जिक्षार, सुवार्चि, सुवर्चा, स्वर्जिकाक्षार)

संस्कृत भाषामे	स्वार्जिक्षार ।
हिन्दीभाषामे	सज्जी ।
वंगभाषामे	साजिखार, साजिमाटि ।
मराठा भाषामे	सज्जीखार ।
गुजराथी भाषामे	साजीखार ।
कर्णाटकी भाषामे	साजखारु ।
इंग्रेजी भाषामे	कार्बोनेट आफ् सोडा । Carbonate of soda
लैटिन्भाषामे	आर्थोक्नेममृइडिकम्, केरोक्सीलन्फिटिडं Arthrocnemem Indicum Caroxylon foetidum
फारसीभाषामे	संजारकलीया ।
अरबीभाषामे	कलीवशव्वुलअसफर ।

अस्य गुणाः ।

स्वर्जिक्षारः कटुश्चोष्णस्तीक्ष्णो गुल्मविनाशकः ।
शूलं वातं कफं चैव कृमीनाध्मानवातकम् ॥
उदरस्य च वातं च नाशयेदिति कीर्त्तितः ।(नि०र०)

अर्थ-सज्जी-चरपरी, गरम, तीक्ष्ण, गुल्मनाशक तथा शूल, वात, कफ, कृमि, आध्मान, वायु और उदरकी वातको दूर करनेवाली है।

विवरण। वृक्षोंके पञ्चाङ्गके टुकडेकरके मलवार प्रांतकी ओर बडी बडी खाई बनाकर उनमे भरदेतेहैं और उसमे आग लगातेहैं पीछे वह अपने आप जलकर जमजाते हैं इसको खारी कहते हैं । यह खारी जमीनमे बनाई जातीहै ।

टङ्कणक्षारनामानि ।

लोहद्रावी टङ्कणश्च सुभगो धातुवल्लभः ॥

अर्थ-लोहद्रावी, टङ्कण, सुभग, धातुवल्लभ, (पाचनक, मालतीतीरज, लोहश्लेषण, रसशोधन, रसाधिक, लोहद्रावी, रसघ्न, वर्त्तुल, कनकक्षार, मालिन, टङ्कण, मालतीतीरसम्भव, द्रावक, लोहशुद्धिकारक, रङ्गद, स्वर्णपाचक, टङ्ग, धातुसन्धिकर, सौभाग्य, श्वेतटङ्कण)

संस्कृतभाषामें	टङ्कणक्षार ।
हिन्दीभाषामें	सुहागा ।
वंगभाषामें	सोहागा ।
मराठीभाषामें	स्वागीखार, टाकणखार ।
गुजरातीभाषामें	टंकणपाढियो, टकणफूलियो ।
कर्णाटकीभाषामें	टकणखारु, विलीयटकणु ।
तैलङ्गीभाषामें	एलिगारम् ।
इंग्रेजीभाषामें	बोराक्स, बायबोरेट ऑफ् सोडा । Borax Biborate of soda
लेटिन्भाषामें	सोडासूबाइबोरास् । Sodas Bidoras
फारसीभाषामें	तीगार ।
अरबीभाषामें	वरग ।

अस्य गुणाः ।

कथितष्टंकणक्षारः कटूष्ण कफनाशनः ।
स्थावरादिविषघ्नश्च कासश्वासापहारकः ॥ (रा० नि०)

अर्थ-सुहागा-कटु, उष्ण तथा कफ, स्थावरादि विष, खांसी और श्वासको हरनेवाला है ।

अपिच ।

टकण वह्निकृद्रूक्ष कफहृद्वातपित्तकृत् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-सुहागा-अग्निजनक, रूखा, कफनाशक और वातपित्तको करनेवाला है ।

अन्यच्च ।

टङ्कणो द्रावणो भेदी विषहारी ज्वरापहः ।
गुल्मामशूलशमनो वातश्लेष्महरः परः ॥ (ग० नि०)

अर्थ-सुहागा-द्रावण, धातुको पतला करनेवाला, भेदक तथा विष, ज्वर, गुल्म, आम, शूल,वात और कफका नाश करे है ।

अपिच ।

मालतीतीरजः क्षारस्तीक्ष्णो वह्निप्रदीपकृत् ।
विरूक्षणोनिलकरः श्लेष्मघ्नः पित्तदूषकः ॥

अर्थ-सुहागा-तीक्ष्ण, जठराग्निको दीपन करनेवाला, विरूक्ष, वातकारक, कफनाशक और पित्तको दूषित करे है ।

अन्यच्च ।

टंकणोऽग्निकरो रूक्षःकफघ्नोरोचनोलघुः॥(रसचन्द्रिका)

अर्थ-सुहागा-अग्निकारक, कफनाशक, रोचक और हलका है ।

अपिच ।

टकणो भेदको रूक्षः कटुश्चाग्निप्रदीपनः ।
पित्तलोष्णो वातकरस्तिक्तस्तीक्ष्णः पटुः स्मृतः ॥
धातुद्रावी ज्वर वात कफ जगमजं विषम् ।
स्थावर च विषं वांतिं वातरक्तं च नाशयेत् ॥
कासं श्वासं नाशयतीत्येवमाहुर्मनीषिणः ।

अर्थ-सुहागा-भेदक, रूक्ष, कटु, अग्निदीपक, पित्तजनक, उष्ण, वातवर्द्धक, तिक्त, तीक्ष्ण, खारी, धातुको पतला करनेवाला तथा ज्वर, वात, कफ, जगमविष, स्थावरविष, वमन, वातरक्त, खासी और श्वासको हरनेवाला है ।

अन्यच्च ।

लोहद्रावी तीक्ष्णोष्णश्च बलवह्निविवर्द्धनः ॥(शोढलनि०)

अर्थ-सुहागा-तीक्ष्ण, गरम और बल तथा जठराग्निको बढाने-वाला है ।

श्वेतटकणगुणा ।

सुश्वेत टकण स्निग्ध कटूष्णं कफवातनुत् ।
आमक्षयापहृच्छ्वासविषकासमलापहम् ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ-सफेद सुहागा-स्निग्ध, कटु, उष्ण, कफवातनाशक तथा आम, क्षय, श्वास, विष, खासी और मलको हरनेवाला है ।

टकणशोधनविधि ।

आदौ टंकणमादाय काञ्जिकाम्ले विनिक्षिपेत् ।
एकरात्रात्समुद्धृत्य रौद्रयन्त्रे विभावयेत् ॥
नरमूत्रगत टक गवां मूत्रगतं तथा ।
दिनान्ते तत्समुद्धृत्य जम्बीराम्लगत कुरु ॥
जम्बीराम्लात् समुद्धृत्य नारिकेलस्य पात्रके ।

मरीचचूर्णसंयुक्तं क्षालयेच्छीतलाम्बुना ॥
एवं टङ्कणमादाय सर्वरोगेषु योजयेत् ।

अन्यच्च ।

टङ्कणं वह्नियोगेन स्फुटितं शुद्धतां व्रजेत् ॥ (रसेंद्रसारस०)

अर्थ-प्रथम सुहागेको लेकर काजीमें छोड दे, एक रात्रि पीछे निकालकर रौद्रयन्त्रमें पचावे, फिर मनुष्यके मूत्रमें डालकर गोमूत्रमें डाले फिर सायंकालको निकालकर जम्भीरीनीबूके रसमें डाले, उसमेंसे निकालकर नारियलके पात्रमें रखकर कालीमिर्चके चूर्णयुक्त शीतल जलसे धोवे, इस प्रकार सुहागेको शोधकर सर्व रोगोंमें दे । सुहागा अग्निके संयोगसे खिलकर शुद्ध होताहै ।

विवरण । सुहागेकी खान विशेष करके उत्तराखण्डमें पाई जाती है प्रायः भोटानदेशसे भोटिये लोग इसको खोद खोदकर बकरोंमें भरलातेहैं । इसको कहीं कहीं पकातेहैं ।

सैन्धवनामानि ।

सिन्धूद्भवं माणिमन्थं नादेयं लवणोत्तमम् ॥

अर्थ-सिन्धूद्भव, माणिमन्थ, नादेय, लवणोत्तम (सितशिव, सितसिव शितशिव, शीतशिव, सिन्धूत्थ, सिन्धूत्थल, वशिर, सिन्धुलवण, माणिबन्ध, सिन्धुमन्थज, सिंधुलवण सिंधुभव, सिन्धुसम्भव, नादेय, शिव, सिद्ध, शिवात्मज, पथ्य, माणिमन्थ, शुद्ध, शीतशिव)

संस्कृतभाषामें	सैन्धव ।
हिन्दीभाषामें	सैंधानोंन ।
वङ्गभाषामें	सैन्धवलवण ।
मरठीभाषामें	सैंधलोण ।
गुजरातीभाषामें	सिंधालुण ।
कर्णाटकीभाषामें	सैंधव ।
तैलिङ्गीभाषामें	सिंधुउपु ।
इंग्र-	क्लोराइड्ऑफ्सोडियम Chloride of sodium
लैटि०	सोडियाइक्लोराइडम् । Sodii Chloridum
फारसीभाषामें	नमकेसंग, चिलोरी, नमकेसेग ।
अरबीभाषामें	मिलहेहिन्दी ।

अस्य गुणाः।

सैन्धवं लवणं स्वादु दीपनं पाचनं लघु ।

स्निग्धं रुच्यं हिमं वृष्यं सूक्ष्मं नेत्र्यं त्रिदोषहृत्॥ भा०प्र०

अर्थ-सैंधानोन-स्वादिष्ठ, दीपन, पाचक, हलका, स्निग्ध, रुचिकारक, शीतल, वीर्य्यवर्द्धक, सूक्ष्म, नेत्रोंका हितकारी और त्रिदोषनाशक है ।

अन्यच्च ।

सैन्धवं रुचिदं वृष्यं चक्षुष्यं चाग्निदीपनम् ।
शुद्धं स्वादु लघु स्निग्धं पाचनं शीतलं मतम् ॥
अविदाहि तु सूक्ष्मं च हृद्यं चैव त्रिदोषहम् ।
व्रणदोषं मलस्तम्भं हृद्रोगं चैव नाशयेत्॥ (नि० र०)

अर्थ-सैंधानोन-रुचिदायक, वीर्य्यवर्द्धक, नेत्रोंको हितकारी, अग्निदीपक, शुद्ध, स्वादिष्ठ, हलका, स्निग्ध,पाचक.शीतल,अविदाही, सूक्ष्म, हृदयको हितकारी, त्रिदोषनाशक तथा व्रणदोष, मलस्तम्भ और हृदयरोगका नाश करैहै ।

सैंधानोन-सिंधकी ओरसे आताहै, सैंधानोन आंखके लिये अत्यन्त हितकारी है, जिस मनुष्यका मल सूखगया हो और दस्त न आताहो,उसको घीके साथ सैंधानोन देनेसे तुरन्त दस्त आवेगा, सैंधानोन तेलके साथ लगानेसे अनेकप्रकारके त्वचाके रोगोंको दूर करताहै हाथमें धारण करनेसे बंधीहुई नसोंको छुडादेता है। सब प्रकारके नमकोंमें श्रेष्ठ है ।

शाकम्भरीलवणनामानि ।

शाकम्भरीयं वसुकं रौमलवणं रौमकम् ॥

अर्थ-शाकम्भरीय, वसुक, रौमलवण, रौमक, (रोमक, गडोत्थ, गडलवण, शुभ्र, पृथ्वीज, गडदेशज, गडोत्थ, महारम्भ, साम्भर, सम्बरोद्भव)

संस्कृतभाषामें	शाकम्भरीय ।
हिन्दीभाषामें	सॉभरनोन ।
वंगभाषामें	सामलुग ।
मराठीभाषामें	साम्भरलोण, साम्भरमीठ ।
गुजरातीभाषामें	वडागरुमीठ ।
कर्णाटकीभाषामें	गाढलवण, सम्भरदेशज ।
फारसीभाषामें	मिलहेअवकीर ।

अस्य गुणाः ।

शाम्भरं दीपनं चोष्णं कोष्ठशुद्धिकरं लघु
किञ्चिदम्लमभिष्यदि पाके च कटुक मतम् ॥
तीक्ष्ण पित्तकर भेदि व्यवायि कफनाशकम् ।
सूक्ष्म चार्श·कफानाहमलवाताश्च नाशयेत् ॥ (रा० नि०)

अर्थ-सामर-दीपन, गरम, कोष्ठशोधक, हलकी, किंचित् अम्ल, अभिष्यन्दि, पाकमे कटु, तीक्ष्ण, पित्तकारक, भेदक, व्यवायि, कफनाशक, सूक्ष्म तथा बवासीर, कफ, आनाह, मल और वातको दूर करेहै । सामरनमक मारवाड देशके प्रसिद्ध सामर सरोवरमे उत्पन्न होताहै ।

समुद्रलवणनामानि ।

सामुद्रिकं त्रिकूटं च वशिरं लवणाब्धिजम् ।

अर्थ-सामुद्रिक त्रिकूट, वशिर, लवणाब्धिज (वासर, कडक, शिव, सागरज, अक्षीर, सामुद्रज, लवणोदधिसम्भव, सामुद्रिक)

संस्कृतभाषामे	समुद्रलवण ।
हिन्दीभाषामे	समुद्रनोन, पागा ।
वंगभाषामे	करकचनुन ।
मराठीभाषामे	मीठ ।
गुजरातीभाषामे	मीठू ।
कर्णाटकीभाषामे	सडागर लवण ।
तैलिङ्गीभाषामें	उपु ।
इंग्रेजीभाषामे	साल्ट । Salt
लैटिन्भाषामे	सोडिआ इम्युरास् । Sodi Muras
फारसीभाषामे	नमक ।
अरबीभाषामे	मिलह शारा ।

अस्य गुणाः ।

सामुद्र लवणं पाके नात्युष्णमविदाहि च ।
भेदन मधुर स्निग्ध शूलघ्नं नातिपित्तलम् ॥ (रा० नि०)

अर्थ-समुद्रनोन-किंचित् उष्ण, अविदाहि, भेदक, मधुर, स्निग्ध, शूलनाशक और अत्यन्त पित्तकारक नही है ।

अन्यच्च।

सामुद्रं मधुरं पाके सतिक्तं मधुरं गुरु।
नात्युष्णं दीपनं भेदि सक्षारमविदाहि च॥
श्लेष्मलं वातनुत्तिक्तं सरूक्षं नातिशीतलम्। (भा प्र)

अर्थ-समुद्रनोन-पचनेमें मधुर, तिक्त, मधुर, भारी, किंचित् उष्ण, दीपन, भेदक, क्षाररसयुक्त, अविदाही, कफकारक, वातनाशक, कडवा, रूखा और अत्यन्त शीतलभी नहीं है।

अन्यच्च।

सामुद्रं रुचिदं हृद्यमग्निदीप्तिकरं मतम्।
केशशौक्ल्यकरं भेदि ह्यविदाहि बलासकृत्॥
पाके तु मधुरं प्रोक्तं कटु तिक्तं गुरु स्मृतम्।
किञ्चिदुष्णं पित्तलं च क्षारं स्निग्धं च शूलनुत्॥
वातनाशकरं स्वादु ऋषिभिः परिकीर्त्तितम्।

अर्थ-समुद्रनोन-रुचिदायक, हृदयको हितकारी, बालोको धवल करनेवाला, भेदक, अविदाहि, कफकारक, पचनेमें मधुर, कटु, तिक्त, भारी, किंचित् उष्ण, पित्तजनक, खारी, स्निग्ध, शूलनाशक वातविनाशक और स्वादिष्ठ है।

विवरण। समुद्रके जलको जमाकर समुद्रनोन बनाते हैं।

विड्लवणनामानि।

विडं विड्लवणं धूर्तं विड्गन्धं कृतकं तथा॥

अर्थ-विड्, विड्लवण, धूर्त, विड्गन्ध, कृतक, (कालालवण, द्राविडक, खण्ड, क्षार, आसुर, सुपाक्य, खण्डलवण, कृत्रिमक, द्राविडक, पाक्य, विट)।

संस्कृतभाषामें	विड्लवण।
हिन्दीभाषामें	विरियासंचरनोन, कटीलानोन।
बंगलाभाषामें	विट्नुन।
मराठीभाषामें	विड्लोण।
गुजरातीभाषामें	विड्लवण।

अस्य गुणाः ।

विडं लवणमुत्क्लेदि वह्नेर्बलविवर्द्धनम् ।
मलवातमविष्टम्भशूलाटोपविबन्धनुत् ॥ (राजवल्लभ

अर्थ-विरियासंचरनोन-उत्क्लेदक, जठराग्निवर्द्धक, बलवर्द्धक तथ मल, वात, आम, विष्टम्भ, शूल, आटोप और विबन्धको दूर करेहै

अन्यच्च ।

विडं क्षारो लघुश्चोष्णो रुच्यस्तीक्ष्णोऽग्निदीपनः ।
वातानुलोमनो रूक्षो व्यवायी शूलनाशनः ॥
वातनाशकरो मेहगुल्माजीर्णविनाशनः ।
मलावष्टम्भकानाहवातहृद्रोगनाशनः ॥
जाड्यं कफं च दद्रूं च नाशयेदिति कीर्तितम् । (नि०र०)

अर्थ-विरियासंचर-हलका, गरम, रुचिकारक, तीक्ष्ण, अग्निदीपक, वातानुलोमन, रूक्ष, व्यवायि तथा शूल, वात, प्रमेह, गुल्म, अजीर्ण, मलावष्टम्भ, आनाह, वात, हृदयरोग, जडता, कफ और दादको दूर करनेवालाहै ।

विवरण । विड्लवण मसारणीके क्षारका बनाया जाताहै ।

सौवर्चललवणनामानि ।

अक्षं सौवर्चलं रुच्यं दुर्गन्धं शूलनाशनम् ॥

अर्थ-अक्ष, सौवर्चल, रुच्य, दुर्गन्ध, शूलनाशन, (रुचक, कृष्णलवण, तिलक, हृद्यगन्ध, कोद्रविक, पाक्य, मेचक और मन्थपाक)

संस्कृतभाषामें	सौवर्चल ।
हिन्दीभाषामें	कालानोन, चौहारकाडा, सोचरनोन ।
बंगलाभाषामें	सचल लवण ।
मराठीभाषामें	पादेलोण ।
गुजरातीभाषामें	सचल ।
कर्णाटकीभाषामें	साञ्चल ।
तैलिंगभाषामें	नालुउपु ।
इंग्रेजीभाषामें अनाकासोडि अक्लोराईड।	Unaqua Sodium Chloride
लैटिनभाषामें अनाक्वा सोडिआई क्लोरेइडम्	Unaqua sodii Chloridum
फारसीभाषामें	नमक शियाह ।
अरबीभाषामें	मला अस्वद ।

अस्य गुणाः ।

कृष्णलवण वीर्योष्णं रुचिदं निर्मलं कटु ।
गुलमशूलविबन्धघ्नं किंचित्पित्तकरं लघु॥ (वि०ति०भा०)

अर्थ-कालानोन-उष्णवीर्य्य, रुचिदायक, निर्मल, कटु तथा गुल्म, शूल और विबन्धका नाश करे है किञ्चित पित्तजनक और हेलका है।

अन्यच्च ।

सौवर्चल कटु क्षारं वीर्य्योष्णं विशदं लघु ।
गुलमशूलविबन्धघ्नं हृद्य सुरभि रेचनम् ॥
आनाहारोचक जन्तूनूर्द्ध्ववात च नाशयेत् । (ध०नि०)

अर्थ-कालानोन-कटुरसयुक्त, क्षाररसान्वित, उष्णवीर्य, विशद, हलका, हृदयको हितकारी, सुगान्धित, दस्तावर तथा गुल्म, शूल, विबन्ध, अफारा, अरुचि, कृमि और ऊर्ध्ववातका नाश करे है

अन्यच्च ।

रुचिकं रोचनं भेदि दीपन पाचन परम् ।
सस्नेह वातनुन्नातिपित्तल विशद लघु ॥
उद्गारशुद्धिद सूक्ष्मं विबन्धानाहशूलहृत् । (भा० प्र०)

कालानोन-रोचक, भेदक, दीपन, पाचक, स्नेहयुक्त, वातनाशक, अत्यन्त पित्तजनक, विशद, हलका, डकारको शुद्ध करनेवाला, सूक्ष्म तथा विबन्ध, आनाह और शूलको निर्मूल करे है ।

विवरण । यह सज्जी और मीठे नोनसे बनाया जाताहै ।

काचलवणनामानि ।

काच त्रिकूटं पाक्याह्व लवण काचसम्भवम् ॥

अर्थ-काच, त्रिकूट, पाक्याह्व, लवण, काचसभव (काचलवण, नील, काचोद्भव, काचसौवर्चल, नीलक, कृष्णलवण, पाकजकाचोत्थ, हयगन्ध, काललवण, कुरुविन्दकाचमल, कृत्रिम, नीककाचोद्भव)

संस्कृतभाषामे	काचलवण ।
हिन्दीभाषामे	कचियानोंन ।
वंगभाषामे	कालालोण ।
मराठीभाषामे	बांगडखार ।
गुजरातीभाषामे	वगडीखार ।

अस्य गुणा ।

काचं दीपनमत्युष्णं रक्तपित्तविवर्द्धनम् ॥

अर्थ-काचियानोन-अग्निको दीपन करनेवाला, अत्यन्त उष्ण और रक्तपित्तवर्द्धक है ।

अन्यच्च ।

काचादिलवण रुच्य किञ्चित्क्षार च पित्तलम् ।
दाहकं कफवातघ्न दीपन गुल्मशूलहृत् ॥ (राजनि०)

अर्थ-काचियानोन-रुचिकारी, कुछेक खारी, पित्तजनक तथा दाह, कफ, वात, गुल्म और शूलका नाश करेहै और दीपनहै ।

विवरण । काचलवण कॉचसे बनायाजाताहै ।

औद्भिदनामानि ।

औद्भिदं पांशुलवणं यज्जात भूमितः स्वयम् ।

अर्थ-औद्भिद, पांशुलवण यह उसके नाम है, जो स्वय (आपही) पृथ्वीमे उत्पन्न होताहै ।

हिन्दीभाषामे रेहगवानोन ।

अस्य गुणा ।

क्षार गुरु कटु स्निग्धं शीतलं वातनाशनम् ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-रेहगवानोन-खारी, भारी, कटु, स्निग्ध, शीतल और वातनाशक है ।

अन्यच्च ।

औद्भिदं तीक्ष्णमुत्क्लेदि सक्षार कटु तिक्तकम्॥ (रा०व०)

अर्थ-रेहगवा-तीक्ष्ण, उत्क्लेदी, क्षारगुणयुक्त, चरपरा और कडवा है ।

विवरण ।रेहगवा नमक प्रायः जगलदेशकी खारी जमीनमे उत्पन्न होताहै इसको रेह भी कहते है ।

औषरलवणनामानि ।

औषरक सार्वगुण सार्वससर्गलवणमूषरजम् ।
साम्भार बहुलगुण च मिश्रकं नवधा (?) ॥

अर्थ-औषरक, सार्वगुण, सार्वससर्गलवण, ऊषरज, साम्भार, बहुलगुण, मिश्रक।

संस्कृतभाषामें औषरलवण ।-
हिन्दीभाषामे खारीनोन ।

वंगभाषामे	खारीनुन ।
मराठीभाषामे	खारादिमीठ, उषर भूमीवर पिकते तें ।
इंग्रजीभाषामे	कार्बोनेट आफ् सोडा । Carbonate of soda
लेटिन्भाषामे	सोडीयकाबानास् Sodium carbon
फारसीभाषामे	बोरे अर्मनी ।
अरबीभाषामे	बोदकवहलोज ।

अस्य गुणा ।

औषरं तु पटु क्षारं तिक्तं वातकफापहम् ।
विदाहि पित्तकृद्ग्राहि मूत्रसंशोषकारि च ॥ (रा० नि०)

अर्थ–खारीनोन–पटु, क्षार, कडवा, वातकफनाशक, दाहजनक, पित्तकारक, ग्राही और मूत्रको सुखावे हैं ।

विवरण । खारी नमक स्वयं खारी पृथ्वीमे उत्पन्न होताहै ।

रोमकलवणगुणा ।

रोमकं तीक्ष्णमत्युष्णं पटु तिक्तं च दीपनम् ।
दाहशोषकरं ग्राहि पित्तकोपकरं परम् ॥

अर्थ–रोमकलवण–तीक्ष्ण, अत्यन्त उष्ण, पटु, कडवा, दीपन, दाहजनक, शोषकारक, ग्राही और पित्तको कुपित करे हैं ।

द्रोणीलवणनामानि ।

द्रौणेयं वार्द्धेयं द्रोणीजं वारिजं च वार्द्धिभवम् ।
द्रौणीलवणं द्रौणं त्रिकटुलवणं च वसुसंज्ञम् ॥

अर्थ–द्रौणेय, वार्द्धेय, द्रोणीज, वारिज, वार्द्धिभव, द्रौणीलवण, द्रौण, त्रिकटु लवण ।

अस्य गुणाः ।

द्रौणेयं लवणं पाके नात्युष्णमविदाहि च ।
भेदनं स्निग्धमीषच्च शूलघ्नं चाल्पपित्तलम् ॥ (रा०नि०)

अर्थ–द्रोणीलवण–पचनेमे किञ्चित् उष्ण, अविदाही, भेदक, कुछेक स्निग्ध, शूलनाशक और अल्पपित्तजनक हैं ।

नरसारनामानि ।

क्षारश्रेष्ठोऽमृतक्षारश्चूलिकालवणाभिधः ।

अर्थ-क्षारश्रेष्ठ, अमृतक्षार, चूलिकालवण, सादर, नरसार, वज्रक्षार, विदारण ।

संस्कृतभाषामें	नरसार ।
हिन्दीभाषामें	नवसादर ।
वंगभाषामें	निशादल ।
मराठीभाषामें	नवसागर ।
गुजरातीभाषामें	नवसार ।
इंग्रेजभाषामें	आमोन्य, क्लोरिडम्। Ammonium Chloridum
लेटिन्भाषामें	आमोन्यम्मूरिआस । Ammonium Muriaus
अरबीभाषामें	नवसादर शुराशानी ।

अस्य गुणाः ।

पटुप्रवृत्तिशालीनां (?) स्रावण शोथहृद्धिमः ।
यकृद्दोषे ज्वरे प्लीहे शिरःशूलेऽर्बुदादिषु ॥
स्तनरोगे रक्तपित्ते कासे भग्नामये तथा ।
योनिव्यापत्सु च ज्ञेयो नरसारः सुखावहः ॥

अर्थ-नवासादर-शोथनाशक, शीतल तथा यकृत् रोगमे, प्लीहारोगमे, ज्वरमे, शिरके शूलमे, अर्बुदादिकमें, स्तनरोगमें, रक्तपित्तमें, खांसीमें, भग्नरोगमें और योनिव्यापद्रोगमें सुखदायक है ।

अन्यच्च ।

नरसागरकस्तीक्ष्णः सरो व्रणविदारणः ।
रसजारणकारी स्यादतिचोष्णश्चगुल्मनुत् ॥
मलस्तम्भचोदरचशूलप्लीहाञ्च नाशयेत् ।

अर्थ-नवसादर-तीक्ष्ण, सारक, व्रणविदारक, रसजारणकारक, अत्यन्त उष्ण, गुल्मनाशक तथा मलस्तम्भ, उदररोग, शूल और प्लीहाका नाश करनेवाला है ।

अस्य प्रस्तुतकरण यथा ।

औष्ट्रं वा माहिषं गव्यं पुरीषं भस्मतां गतम् ।
क्षारपाकविधानेन नृसारः सिद्ध उच्यते (भा० प्र०)

अर्थ-ऊंट, भैंस और गायके गोवरकी क्षार पाकविधिसे भस्म करने पर नरसार सिद्ध होताहै ।

अस्य शोधनविधिर्यथा ।

नरसारो भवेच्छुष्कश्चूर्णतोये विपाचितः ।
दोलायन्त्रेण यत्नेन भिषग्भिर्योगसिद्धये ॥ (अत्रियसंहिता)

अर्थ–सूखे नौसादरका चूर्ण दोलायन्त्र करके जलमे पचावे, इस प्रकार वैद्योंने इसकी शुद्धि कही है ।"

विवरण–नवसादर कृत्रिम और अकृत्रिम इन भेदोंसे दोप्रकारका है जो मनुष्यके मूत्र,पुरीष अथवा पशुओंके पुरीषके क्षारका बनाया जाताहै उसको अकृत्रिम कहते है, दूसरा नकली खारोंसे बनाया जाताहै उसको कृत्रिम कहते हैं ।

सूर्यक्षारनामानि ।

सुर्यक्षारोऽर्कक्षारश्च तार्क्ष्यस्तीक्ष्णरसस्तथा ।
सुवर्चिचकासर्वसहो ह्यौरिणश्च शिलाजतुः ॥

अर्थ–सूर्यक्षार, अर्कक्षार, तार्क्ष्य, तीक्ष्णरस, सुवर्चिका, सर्वसह, औरिण, शिलाजतु ।

संस्कृतभाषामे	सूर्यक्षार ।
हिन्दीभाषामे	सोरा, सूर्याखार, वाजी ।
मराठीभाषामे	सोरा ।
गुजरातीभाषामे	सुरोखार ।
तैलिङ्गीभाषामे	चिट्लुभस्मनु ।
इंग्रेजीभाषामे	नाइटर Nitre साल्ट पिटर Salrpeter
लैटिन्भाषामे	पॉटेश्यनैट्रास Potassinm Nitras
फारसीभाषामे	शोरा ।
अरबीभाषामे	अवकेर ।

अस्या गुणा ।

औद्भिदं लवणं तीक्ष्णमत्युष्ण रेचकं कटु ।
तिक्तमग्नेर्दीप्तिकरं सूक्ष्मं क्षार लघु स्मृतम् ॥
दाहकृच्छोपकृद्ग्राहि वातनुत्पित्तकोपनम् ।
प्लीहमूर्च्छामूत्रकृच्छ्रनेत्ररुग्वातरक्तनुत् ॥

कुम्भकामलवुत्कासनासापाकं च पीटिकान् ।
शिरःपाकं च शूलं च आध्मानं चैव नाशयेत्॥ (नि०र०)

अर्थ-सूर्यक्षार-तीक्ष्ण, अत्यन्त उष्ण, रेचक, कटु, अग्निमदीपक, सूक्ष्म, क्षार, लघु, दाहजनक, शोषक, ग्राहक, वातनाशक, पित्तकारक तथा प्लीहा, मूर्च्छा, मूत्रकृच्छ्र, नेत्ररोग, वातरक्त, कुम्भकामला, श्वास, नासापाक, पिटिका, शिरःपाक, शूल और आध्मानको दूर करेहै।

विवरण । सोराक्षार सज्जीका बनाया जाताहै ।

सर्वक्षारगुणा ।

सर्वक्षारो वस्तिशुद्धिकारको मलशोधनः ।
वस्त्रशुद्धिकरश्चैव चक्षुष्यः कृमिनाशकः ॥
उदावर्त्तहरश्चैव मुनिभिः परिकीर्त्तितः ॥ (नि० र०)

अर्थ-सर्वक्षार-(साबुन) वस्तिशोधक, मलशोधक, वस्त्रोंको निर्मल करनेवाला, नेत्रोंको हितकारी, कृमिनाशक और उदावर्त्तरोगका नाश करेहै । साबुन समस्त संसारमे प्रसिद्ध है ।

लवणक्षारगुणाः ।

लोणारक्षारमत्युष्णं तीक्ष्णं पित्तप्रवृद्धिदम् ।
क्षारलवणमीषच्च वातगुल्मादिदोषनुत् ॥ (रा० नि०)

अर्थ-लोणाक्षार-अत्यन्त गरम, तीक्ष्ण, पित्तवर्द्धक, क्षारसंयुक्त, किंचित् लवणरससयुक्त तथा वात और गुल्मादि दोषविनाशक है।

चणकाम्लगुणा ।

चणकाम्लकमत्यम्लं दीपनं दन्तहर्षणम् ।
लवणानुरसं रुच्यं शूलाजीर्णविबन्धनुत् ॥ (रा० नि०)

अर्थ-चनाखार-अत्यन्त अम्लरसान्वित, दीपन, दन्तहर्षक, कुछ लवणरसयुक्त, रुचिकारी तथा शूल, अजीर्ण और विबन्धको दूर करेहै।

विवरण । चनेखारके बनानेकी विधि सब ग्रथोंमे लिखी है ।

चुक्रगुणा ।

चुक्रमत्यम्लमुष्णं च दीपनं पाचनं परम् ।
शूलगुल्मविबन्धामवातश्लेष्महरं परम् ॥
वमितृष्णास्यवैरस्यहृत्पीडावह्निमांद्यहृत् ।

अर्थ-चूक-अत्यन्त खट्टा, गरम, दीपन, पाचक,तथा शूल,गुल्म, विबन्ध, आम, वात, कफ, वमन, तृषा, मुखकी विरसता, हृदयकी पीडा और मंदाग्निको दूर करैहै। चूक-खट्टे अनार, नीबु, इमली, आमले आदि कितनेक पदार्थोंके रसका बनाया जाताहै।

इति श्रीआयुर्वेदोद्धारकशालिग्रामवैश्यकृतशालिग्रामनिघण्टुभूषणे भाषानुवादविभूषिते अष्टवर्ग समाप्त ॥ ३ ॥

अथ गुडूच्यादिवर्गः।

अथ गुडूच्या उत्पत्तिः।

अथ लंकेश्वरो मानी रावणो राक्षसाधिपः।
रामपत्नीं बलात्सीतां जहार मदनातुरः॥
ततस्त बलवान्रामो रिपु जायापहारिणम्।
युतो वानरसैन्येन जघान रणमूर्द्धनि॥
हते तस्मिन् सुराराती रावणे बलगर्विते।
देवराजः सहस्राक्षः परितुष्टस्तु राघवे॥
तत्र ये वानराः केचिद्राक्षसैर्निहता रणे।
तानिन्द्रो जीवयामास सिंचित्वाऽमृतवृष्टिभिः॥
ततो येषु प्रदेशेषु कपिगात्रात् परिच्युताः।
पीयूषविन्दवः पेतुस्तेभ्यो जाता गुडूचिका॥

अर्थ-एक समय राक्षसाधिप लंकेश्वर अभिमानी मदोन्मत्त रावण रामचन्द्रकी पत्नी सीताको बलात्कारसे हर लेगया तब बलवान् रामचन्द्रजी निज स्त्रीके हरनेवाले अपने रिपु रावणको वानरोंके सेनाके द्वारा रणस्थलमे जीतते भये जब वह बलगर्वित देवताओंका वैरी रावण मारागया, तब देवराज इन्द्र अत्यन्त परितुष्ट हुए और उस रणस्थलमें जो वन्दर असुरोंके हाथसे मारेगयेथे उनको अमृत वर्षाकर, जिलाया, उस समय उन वानरोंके शरीरसे उछलकर अमृत जिसजिस स्थानमे गिरा, वही वही यह गिलोय उत्पन्न हुई। इस कारण इसका नाम अमृता हुआ।

गुडूचीनामानि।



गुडूच्यमृतवल्ली च कुण्डली चक्रलक्षणा।
मधुपर्णी सोमवल्ली विशल्या तंत्रिनिर्जरा॥

अर्थ-गुडूची, अमृतवल्ली, कुण्डली, चक्रलक्षणा, मधुपर्णी, सोमवल्ली, विशल्या, तन्त्री, निर्जरा (वत्सादनी, छिन्नरुहा, तन्त्रिका, अमृता, जीवन्तिका, गुडूची, वातरक्तारि, पामरोद्धारा, पित्तघ्नी, उद्धारा, गुडूची, वारा, ज्वरारि, श्यामा, सुरकृता, मधुपर्णिका, छिन्नोद्भवा, अमृतलता, रसायनी, छिन्ना, सोमलतिका, भिपक्प्रिया, कुण्डलिनी, वयस्था, नागकुमारिका, छिन्निका, चन्द्रहासा, अमृतसम्भवा, अमृतवल्लरी, जीवन्ती, सोमा, चक्रलक्षणिका, धीरा, नागकन्या, देवनिर्मिता, चक्राङ्गी)

संस्कृतभाषामे	गुडूची।
हिन्दीभाषामे	गिलोय।
बंगलाभाषामे	गुलच।
मराठीभाषामे	गुळवेल।
गुजरातीभाषामे	गलो।
कर्णाटकीभाषामे	अमरद्वल्ली।
तैलिङ्गीभाषामे	तिप्पातिगा, तियातिज, गोधूचि।
तामिलीभाषामे	सिन्दी लकोदि।
बो०	गिरुली।
मा०	गलवे।
प०	गलाह्व।
कान्यकुब्ज	गुरुंची।
इग्रेजीभाषामे	गुलाचा।

लैटिन्भाषामें कोकुलस कार्डिफोलियस Coculuscor-difolious टिनोस्पोरा कार्डि फोलिया। T snospora Cardifolia

फारसीभाषामे गिलाई ।

अरबीभाषामे गिलोई ।

कन्दगुडूचीनामानि ।

अन्या कन्दोद्भवा कन्दामृता पिण्डगुडूचिका।
बहुच्छिन्ना बहुरुहा पिण्डालुः कन्दरोहिणी ॥

अर्थ-कन्दोद्भवा, कन्दामृता, पिण्डगुडूचिका, बहुच्छिन्ना, बहुरुहा और कन्दरोहिणी ।

गुडूचीगुणा ।

ज्ञेया गुडूची गुरुरुष्णवीर्य्या तिक्ता कषाया ज्वरनाशिनी च।
दाहार्त्तितृष्णावमिरक्तवातप्रमेहपाण्डुभ्रमहारिणी च॥(रा नि)

अर्थ-गिलोय-भारी, उष्णवीर्य्य,कडवी, कषेली तथा ज्वर,दाह, तृषा, वमन, रक्त, वात, प्रमेह, पाण्डु, और भ्रमको हरनेवाली है ।

अन्यच्च ।

गुडूची ग्राहिणी बल्या त्रिदोषघ्नी रसायनी ।
दीपनी ज्वरतृट्छर्दिकामलावातपित्तनुत् ॥

अर्थ-गिलोय-मलरोधक, बलकारक, त्रिदोषनाशक, रसायन, अग्निदीपक तथा ज्वर, तृष्णा, वमन, कामला और वातपित्तका नाश करे है ।

अन्यच्च।

गुडूची तुवरा तिक्ता वीर्ये चोष्णा च ऊषणा ।
ग्राही रसायनी बल्या मधुरा चाग्निदीपनी ॥
लघ्वी हृद्यायुःप्रदा च ज्वरदाहतृषाहरी ।
रक्तदोषं वमिं वातं भ्रमं पाण्डुं प्रमेहकम् ॥
त्रिदोषं कामलां चामं कासं कुष्ठं तथा कृमीन् ।
रक्तार्शं वातरक्तं च कण्डूं मेदं विसर्पकम् ॥
पित्तं कफं नाशयति घृतेन सह वातहा ।
गुडेन बद्धविट्कत्वं सितया पित्तनाशिका ॥

मधुना कफहा प्रोक्ता वातवातारितैलके ।
शुठ्यामवातशमनी मुनिभिः परिकीर्तिता ॥

अर्थ-गिलोय-कषेली, कडवी, उष्णवीर्य्य, उष्ण, मलरोधक रसायन, बलकारक, मधुर, अग्निप्रदीपक, हलकी, हृदयको हित कारी, आयुप्रद तथा ज्वर, दाह, तृषा, रक्तदोष, वमन, वात, भ्रम पाण्डुरोग, प्रमेह, त्रिदोष, कामला, आम, खासी, कोढ, कृमि रक्तार्श (खूनीबवासीर), वातरक्त, कण्डू, मेद, विसर्प, पित्त, और कफको दूर करेहै । गिलोय घृतके साथ वातको, गुडके साथ मल बद्धताको, खाडके साथ पित्तको, मधुके साथ कफको, अण्डीके तेल के साथ वायुको और सोठके साथ आमवातको दूर करेहै ।

अपिच।

गुडूची मधुरा तिक्ता कृच्छ्रहृद्रोगवातनुत् ॥

अर्थ-गिलोय-मधुर, कडवी, मूत्रकृच्छ्र, हृदयरोग और वातवि नाशक है ।

अस्या पत्रशाकगुणाः ।

गुडूची पर्णशाका तु तुवरोष्णा लघुः स्मृता ।
कटुस्तिक्ता पाककाले मधुरा च रसायनी ॥
अग्निदीप्तिकरी बल्या ग्राहिणी च त्रिदोषहा ।
वातरक्तं तृषां दाहं मेहं कुष्ठं च कामलाम् ।
पांडुरोगं नाशयतीत्येवमाचार्यभाषितम् ।(नि० र०)

अर्थ-गिलोयके पत्तोका शाक-कषेला, गरम, हलका, चरपरा कडवा, पचनेके समय मीठा, रसायन, अग्निको दीपन करनेवाला बलकारक, मलरोधक, त्रिदोषनाशक तथा वातरक्त, तृषा, दाह प्रमेह, कुष्ठ, कामला और पाण्डुरोगका नाश करनेवाला है ऐसा आचार्योंने कहाहै, इसके अधिक गुण शाकवर्गमें देखो ।

गुडचीसत्त्वगुणाः ।

गुडूचिसत्त्वं सुस्वादु पथ्यं लघु च दीपनम् ।
चक्षुष्यं धातुकृन्मेध्यं वयःस्थापनकारकम् ॥
वातरक्तं त्रिदोषं च पाण्डुं तीव्रज्वरं तथा ।
वमिं जीर्णज्वरं पित्तं कामलां च प्रमेहकम् ॥

अरुचिं श्वासकासौ च हिक्कां चार्शं क्षयं तथा ।
सदाहं मुत्रकृच्छ्रञ्च प्रदरं सामरोगकम् ॥
नाशयेदिति संप्रोक्तं पित्तं मेह सशर्करम् । (रा० र०)

अर्थ-गिलोयका सत्त्व-स्वादिष्ठ, पथ्य, हलका, दीपन, नेत्रोंको हितकारी, धातुवर्द्धक, मेधाजनक, अवस्थास्थापक तथा वातरक्त, त्रिदोष, पाण्डुरोग, तीव्रज्वर, वमन, जीर्णज्वर, पित्त, कामला, प्रमेह, अरुचि, श्वास, खासी, हिचकी, ववासीर, क्षय, दाह, मूत्रकृच्छ्र, प्रदर, सोमरोग, पित्त, प्रमेह और शर्करारोगको दूर करेहै ।

कन्दगुडूचीगुणाः ।

कन्दोद्भवा गुडूची च कटूष्णा सन्निपातहा ।
विषघ्नी ज्वरभूतघ्नी वलीपलितनाशिनी ॥

अर्थ-कन्दगिलोय-कटु, उष्ण, सन्निपातनाशक तथा विष, ज्वर, भूत और वलीपलितविनाशक है ।

गिलोयके सत्त्व बनानेकी विधि ।

गिलोयके छोटे छोटे टुकडे करके कूट डाले और पानीमे दोदिनतक भिजोये रक्खे फिर चलनीसे छानले । दूसरे दिन उसके ऊपरका पानी सावधानीके साथ नितारदे फिर नीचेका जो गाढा जल रहजाय, उसको धूपमे सुखाले । वह सत्त्व बनजायगा ।

विवरण-गिलोयकी वेल होतीहै और वृक्षोपर फैलजाती है । गाठोसे दो दो भाग निकलतेहै । धीरेधीरे उनकी झादरी और उनकीही जडहोजातीहै । पत्ते कुछ कुछ पानकी समान और अधिक नीले होते है, फूल छोटा गुच्छोमे आता है, फल मटरकी समान होतेहै और पकनेके समय लाल पड जातेहै । व्यवहार वेल पत्ते, झादरा । मात्रा २ तोले ।

नागवल्लीनामानि ।

ताम्बूली नागवल्ली च नागिनी नागवल्लिका ।
दिवाभीष्टा पर्णलता ताम्बूलिर्नागवल्लरी ॥

अर्थ-ताम्बूली, नागवल्ली, नागिनी, नागवल्लिका, दिवाभीष्टा, पर्णलता, ताम्बूलि, नागवल्लरी, (नागवल्ली, ताम्बूलवल्ली, सप्तशिरा, सप्तलता, फणिवल्ली, भुजगलता, भक्ष्यपत्रा, ताम्बूलवल्लिका, पर्णगृहाशया, मुखभूषण, ताम्बूल)

संस्कृतभाषामे	ताम्बूलवल्ली, ताम्बूल ।
हिन्दीभाषामे	नागरवेल, पान ।
बंगभाषामे	पान ।
मराठीभाषामे	नागवेल ।
कोकणीभाषामे	पानवेल ।
गुजरातीभाषामे	नागरवेल्य, पान ।
कर्णाटकीभाषामे	नागरवल्ली, पर्ण ।
तैलिङ्गीभाषामे	तामलपाकु ।
तामिलीमे	वेट्टिली ।
इंग्रेजीभाषामे	बिटल्लीफ् । Betel leaf
लैटिन्भाषामे	पाईपराबिटल् । Piper Betel
फारसीभाषामे	वर्गतबोल ।
अरबीभाषामे	तान ।

ताम्बूलगुणाः ।

ताम्बूलं कटु तिक्तमुष्णमधुरं क्षारं कषायान्वितं
वातघ्नं कृमिनाशनं कफहरं दुःखस्य विच्छेदनम् ।
स्त्रीसंभाषणभूषणं धृतिकरं कामाग्निसंदीपनं
ताम्बूले निहितास्त्रयोदश गुणाः स्वर्गेऽपि ते दुर्लभाः ॥

अर्थ-पान-चरपरा, कडवा, गरम, मधुर, क्षारगुणयुक्त, कषायरसान्वित तथा वात, कृमि, कफ और दुःखको हरनेवालाहै । स्त्रीसम्भाषणके विषयमे अलंकारकी समानहै तथा धारणाशक्ति और कामाग्निवर्द्धकहै। पानमे यह जो तेरह गुण विद्यमानहै, सोस्वर्गमे भी दुर्लभहै।

अन्यच्च ।

ताम्बूलं विशदं रुच्यं तीक्ष्णोष्णं तुवरं सरम् ।
वश्यं तिक्तं कटु क्षारं रक्तपित्तकरं लघु ॥
बल्यं श्लेष्मास्यदौर्गन्ध्यमलवातश्रमापहम् । (भा०प्र०)

अर्थ-पान-विशद, रुचिकारी, तीक्ष्ण, गरम, कपेला, सारक, वशीकरण, चरपरा, क्षार, रक्तपित्तकारक, हलका, बलकारक तथा कफ, मुखकी दुर्गन्ध, मल वात और श्रमको दूर करैहै ।

अन्यच्च ।

नागवल्ली कटुस्तीक्ष्णा तिक्ता पीनसवातजित् ।
कफकासहरा रुच्या दाहकृद्दीपनी परा ॥ (रा०नि०)

अर्थ-पान-चरपरा, तीक्ष्ण, कडवा तथा पीनस, वात, कफ और खासीको दूर करेहै, रुचिकारक दाहजनक और अग्निप्रदीपक है ।

श्रीवाटीपर्णगुणा ।

श्रीवाटी मधुरा तीक्ष्णा वातपित्तकफापहा ।
रसाढ्या सुरसा रुच्या विपाके शिशिरा स्मृता ॥

अर्थ-श्रीवाटीपान-मधुर, तीक्ष्ण, वातपित्तकफनाशक, रसाढ्य, सुरसयुक्त, रुचिकारक और पचनेके समय शीतल है ।

अम्लवाटीपर्णगुणा ।

स्यादम्लवाटीकटुकाम्लतिक्तातीक्ष्णातथोष्णामुखपाककर्त्री ।
विदाहपित्तास्रविकोपनी च विष्टम्भदा वातनिबर्हिणी च ॥

अर्थ-अम्लवाटीपान-चरपरा, खट्टा, कडवा, तीक्ष्ण, गरम, मुखको पकानेवाला, दाहको उत्पन्न करनेवाला, विष्टम्भदायक और वातनिवारकहै ।

सातसीपर्णगुणा ।

सातसी मधुरा तीक्ष्णा कटुरुष्णा च पाचनी ।
गुल्मोदराध्मानहरा रुचिकृद्दीपनी परा ॥

अर्थ-सातसीपान-मधुर, तीक्ष्ण, कटु, उष्ण, पाचक तथा गुल्म, उदररोग और आध्मानको दूर करनेवाला है, रुचिकारक और जठराग्निको दीपन करनेवाला है ।

जीर्णपर्णगुणा ।

तत्पर्णजूर्णाऽतिरसाऽतिरुच्या सुगन्धितीक्ष्णा मधुराऽतिहृद्या।
संदीपना पुंस्त्वकरातिबल्या विरेचनी वक्त्रसुगन्धिकारिणी।

अर्थ-पुरानापान-अत्यन्त रसपूरित, रुचिकारक, सुगन्धित, तीक्ष्ण, मधुर, हृदयको हितकारी, जठराग्निको दीपन करनेवाला, पुंस्त्वदायक, बलकारक, दस्तावर और मुखको शुद्ध करनेवाला है,

मालवोद्भवानरापर्णगुणा ।

नाम्रा न्याम्लसरा सुतीक्ष्णमधुरा रुच्या हिमा दाहनुत् ।
पित्तोद्रेकहरा सुदीपनकरी बल्या मुखामोदिनी ।

स्त्रीसौभाग्यविवर्द्धनी मदकरी राज्ञां सदा वल्लभा
गुल्माध्मानविबन्धजिच्च कथिता सा मालवे तु स्थिता ॥

अर्थ-मालवेका अंगरापान-अम्ल, सारक, तीक्ष्ण, मधुर, रुचिकारक, शीतल, दाहनाशक, पित्तनाशक, अग्निको दीपन करनेवाला, बलको देनेवाला, मुखमे सुगन्ध करनेवाला, स्त्रियोंके सौभाग्यको बढानेवाला, नशा करनेवाला, राजाओंको सदा वल्लभ तथा गुल्म, आध्मान और विबन्धको दूर करनेवाला है।

अन्ध्रदेशोद्भवपोटकुलीपर्णगुणाः ।

अन्ध्रे पट्टलिकानाम कषायोष्णा कटुस्तथा ।
मलापकर्षा कण्ठस्य पित्तकृद्वातनाशिनी ॥

अर्थ-अन्ध्रदेशका पोटकुली पान-कषैला, गरम, चरपरा, कण्ठके मलको निकालनेवाला, पित्तकारक और वातनाशक है।

ह्वेसणीयापर्णगुणाः ।

ह्वेसणीया कटुस्तीक्ष्णा हृद्या दीर्घदला च सा ।
कफवातहरा रुच्या कटुर्दीपनपाचनी ॥

समुद्रदेशका पान-चरपरा, तीक्ष्ण, हृदयको हितकारी, दीर्घ पत्तोवाला, कफवातनाशक, रुचिकारक, चरपरा, दीपन और पाचक है।

नवीनप्राचीनपर्णगुणाः

सद्यस्त्रोटितभक्षितं मुखरुजाजाड्यापहं दोषकृ-
द्दाहारोचकरक्तदायि मलकृद्विष्टम्भि वान्तिप्रदम् ।
यद्भूयो जलपानपोषितरसं तच्चेच्चिरात्त्रोटितं
ताम्बूलीदलमुत्तमं च रुचिकृद्वर्ण्यं त्रिदोषार्तिनुत् ॥

अर्थ-तत्कालके तोडेहुए पानका भक्षण करना मुखरोग और जडताको दूर करे है, त्रिदोषकारक, दाहजनक, अरुचिकारक, रक्तरोगको उत्पन्न करनेवाला, मलकारक, विष्टम्भ और वमनदायक है, वही पान बहुत दिनोतक जलसे सींचाहुआ श्रेष्ठ है, रुचिको उत्पन्न करनेवाला है, शरीरके वर्णको सुंदर करनेवाला है और त्रिदोषनाशक है।

कृष्णशुभ्रपर्णगुणाः ।

कृष्णं पर्णं तिक्तमुष्णं कषायं धत्ते दाहं वक्त्रजाड्यं मलं च ।
शुभ्रं पर्णं श्लेष्मवातामयघ्नं पथ्यं रुच्यं दीपनं पाचनं च ॥

अर्थ-काला पान-कडवा, गरम, कषेला, दाह, मुखकी जडता और मलको दूरकरनेवाला है। सफेद पान-कफ, वात रोगनाशक, पथ्य, रुचिकारक, जठराग्निप्रदीपक और पाचक है।

पर्णशिरादिगुणा ।

शिरापर्णस्य शैथिल्य कुर्य्यात्तस्यास्त्वद्रसः ।
शीर्णं त्वग्दोषदंतास्यरोगकृत्तु सितासितम् ॥

अर्थ-पानकी शिरा-(नस) शिथिलताकारक और उन शिराओंका रस रुधिरको हरनेवालाहै। गले और सूखे पान-त्वचाके रोगोको दन्तरोगोको और मुखरोगोको उत्पन्न करे है।

पर्णमूले भवेद्व्याधिः पर्णाग्रे पापसञ्चयः ।
चूर्णपर्णं हरेदायुः शिरा बुद्धिविनाशिनी ॥
आयुरग्रे यशो मूले मध्ये लक्ष्मीर्व्यवस्थिता ।
तस्मादग्रं च मूलं च मध्यं पर्णस्य वर्जयेत् ॥
चूर्णाधिकं हरति गन्धमथादिपूग पूगं तथाधिकद-
लं च सुगन्धिकारि। ताम्बूलमुत्तममिदं रसनाग्रभिन्न-
पर्णं निशास्वधिकखण्डितपर्णमह्नि॥ (वि॰ति॰ भा॰)

भावार्थ-पानकी जडके भक्षण करनेसे अनेक प्रकारकी व्याधि उत्पन्न होतीहै, पानका अग्रभाग भक्षण करनेसे पाप सञ्चय होताहै, पानका चूर्ण आयुको हरताहै, और पानकी शिरा (नस) बुद्धिको भ्रष्ट करती है, अधिक चूना सुगंधिको हरताहै, अधिक सुपारी रागको उत्पन्न करती है और अधिक पान सुगन्धि करनेवाला है, चोंच टूटा हुआ पान रात्रिमे और अधिक टूटा पान दिनमे भक्षण करना उत्तम है।

अस्य फलगुणा ।

नागवल्लीफलं हृद्यं सुगन्धि कफवातजित् ॥ (आ॰ सं॰)

अर्थ-नागरवेलका फल हृदयको हितकारी, सुगन्धि, कफ और वातविनाशक है।

पर्णरहितपूगगुणा ।

अनिधाय मुखे पर्णं यः पूगं खादते नरः ।

मतिभ्रंशो दरिद्री स्यादन्ते न स्मरते हरिम् ॥

अर्थ-जो मनुष्य विनापान सुपारी खाते हैं, उनकी बुद्धि बिगड जातीहै और दरिद्री होजाते हैं तथा अन्तमें हरिका स्मरण नहीं करते

अन्यच्च ।

विना पर्णं मुखे दत्त्वा गुवाकं भक्षयेद्यदि ।
तावद्भवति चाण्डालो यावद्गङ्गां न गच्छति ॥

अर्थ-जो मनुष्य विना पानके सुपारी खातेहैं, वो मनुष्य जबतक गंगाजीमें स्नान नहीं करते, तबतक चाण्डाल गिने जाते हैं ।

पर्णभक्षणनिषेध ।

न नेत्ररोगे न च रक्तपित्ते क्षते न वाते न विषे न शोषे ।
मदात्यये नापि च मोहमूर्च्छाश्वासेषुताम्बूलमुशन्ति वैद्याः
(सुषेणदेव)

अर्थ-नेत्ररोग, रक्तपित्त, उरःक्षतरोग, वातरोग, विषरोग, शोष, मद्यपानजनितरोग,मोह मूर्च्छारोग और श्वासरोगमें पानका भक्षण करना निषेध है ।

अन्यच्च ।

ताम्बूलमहितं प्रोक्तं शरीरे रूक्षदुर्बले ।
ज्वरास्यशोषपित्तास्रमदमूर्च्छाक्षिरोगिषु ॥

अर्थ-ताम्बूल-रूखे दुर्बल शरीर, ज्वररोग, मुखशोष, रक्तपित्त रोग, मदरोग मूर्च्छा और नेत्ररोगवालेको अहितकारी कहाहै ।

अन्यच्च ।

ताम्बूल विधवास्त्रीणां यतीनां ब्रह्मचारिणाम् ।
तपस्विनां च विप्रेन्द्र गोमांससदृशं ध्रुवम् ॥ (ब्रह्मवैवर्त्तपुराणे)

अर्थ-पान-विधवा स्त्री, यती, ब्रह्मचारी और तपस्वीको गोमांसकी समान है ।

विवरण-पानकी वेल अत्यन्त शोभायमान और मनोहर होती है इसकी कईक जातीहैं जैसे बंगला, महोवा,महाराजपुर, बिलौआ, कपूरी, कुलवा इत्यादि। उपरोक्त महोवा आदि देशोंमें पान अधिकतासे होतेहैं । इसकी वेली कोटहीओपर तथा अगस्तियाके वृक्षोंपर चढादेतेहैं ।

बिल्वनामानि ।



बिल्वो महाकपित्थाख्यः श्रीफलो गोहरीतकी ।
पूतिवातोऽथ मङ्गल्यो मालूरस्त्रिशिखावपि ॥

अर्थ-बिल्व, महाकपित्थाख्य, श्रीफल, गोहरीतकी, पूतिवात, मंगल्य, मालूर, त्रिशिख, (शाण्डिल्य, शैलुष, मालुर, कपीतन, महाकपित्थ, अतिमंगल्य, महाफल, शल्य, हृद्यगन्ध, शलाटु, कर्कटाह्व, शैलपत्र, शिवेष्ट, पत्रश्रेष्ठ, त्रिपत्र, गन्धपत्र, लक्ष्मीफल, गन्धफल, दुरारुह, त्रिशाखपत्र, शिवद्रुम, सदाफल, सत्यफल, सुनीतिक, समीरसार, सत्यधर्म, अधरारुह, कण्टकाढ्य, सितानन, नीलमल्लिक, पीतफल, सोमहरीतकी)

संस्कृतभाषामे	बिल्व ।
हिन्दीभाषामे	बेल ।
बंगलामे	बेल, बिल्व ।
मराठीभाषामे	बेल, बेलफळ ।
गुजरातीभाषामे	बिलीबिलु ।
कर्णाटकीभाषामे	बेलतु ।
तैलिङ्गीभाषामे	मारेडीपंडुबिल्व ।
तामिलीभाषामे	बिल्वपाझाम ।
इंग्रेजीभाषामे	बेंगालकिन्स् । Bengal kins
लेटिन्भाषामे	इगलमारमेलाझ । Eagle Marmelos

अस्य गुणाः ।

श्रीफलस्तुवरस्तिक्तो ग्राही रूक्षोऽग्निपित्तकृत् ।

वातश्लेष्महरो बल्यो लघुरुष्णश्च पाचनः ॥(भा०प्र०)

अर्थ-बेल-कषेला, कडवा, मलरोधक, रूखा, अग्निवर्द्धक, पित्तजनक, वातकफनाशक, बलकारक, हलका, गरम और पाचक है।

अन्यच्च।

बिल्वस्तु मधुरो हृद्यः कषायोष्णो रुचिप्रदः ।
दीपनो ग्राहको रूक्षः पित्तलस्तिक्तकः कटुः ॥
गुरुः पाचनकर्त्ता च वातातीसारजूर्त्तिहा ।
बालं बिल्वफलं स्निग्धं गुरु रुच्यं च दीपनम् ॥
ग्राहकं पाचकं तिक्तं लघु चोष्णं च तूवरम् ।
शूलामवातग्रहणीकफातीसारनाशनम् ॥
तरुणं तु फलं बैल्वं ग्राहि तूवरमम्लकम् ॥
स्निग्धं च कटु तीक्ष्णं च उष्णं च लघु दीपनम् ।
पाचकं कफवाय्वोश्च नाशकं हृदयप्रियम् ॥
पक्वं बैल्वं दाहकरं मधुरं गुरु तूवरम् ।
विष्टम्भकारि तिक्तोष्णं ग्राहकं कटु दोपलम् ॥
दुर्जरं वातलं चाग्निमांद्यकृद्दपिभिर्मतम् ।
बिल्वमूलं तु मधुरं त्रिदोषच्छर्दिशूलनुत् ।
लघुकृच्छ्रहरं वातकफपित्तस्य नाशकम् ।
पर्णानि ग्राहकाणि स्युर्वातनाशकराणि च ॥(नि०र०

अर्थ-बेल-मधुर, हृदयको हितकारी, कषेला, गरम, रुचिकारक, दीपन, ग्राही, रूखा, पित्तकारक, कडवा, चरपरा, भारी, पाचक, तथा वातातिसार, और ज्वरनाशक है। बेलका कचाफल स्निग्ध, भारी, रुचिकारी, जठराग्निको दीपन करनेवाला, मलरोधक, पाचक, कडवा, हलका, गरम, कषेला तथा शूल, आमवात, संग्रहणी, और कफातिसारका नाशक है। बेलका तरुणफल-ग्राही, कषेला, खट्टा, स्निग्ध, चरपरा, तीक्ष्ण, गरम, हलका, दीपन, पाचक, हृदयको हितकारी, कफ और वातविनाशक है। बेलका पका फल-दाहजनक, मधुर, भारी, कषेला, विष्टम्भकारक, कडवा, गरम, ग्राही,

कटु, त्रिदोपकारक, दुर्जर, वातकारक और मंदाग्निको उत्पन्न करनेवाला है। बेलकी जड-मधुर तथा त्रिदोष, वमन, शूल इनको नाश करनेवाली, हलकी तथा मूत्रकृच्छ्र, वायु, कफ और पित्तका नाश करनेवाली है। इसके पत्ते ग्राही और वातनाशक है।

अन्ये च पत्रगुणा ।

तत्पत्रं कफवातामशूलघ्नं ग्राहि रोचनम् ॥

अर्थ-बेलके पत्ते-कफ, वात, आम और शूलनाशक है, ग्राही और रोचक है।

अस्य पुष्पगुणा ।

निहन्याद्बिल्वजं पुष्पमतिसार तृषां वमिम् ॥

अर्थ-बेलके फूल-अतिसार, तृषा और वमननिवारक है।

बिल्वमज्जाभवतैलगुणा ।

बिल्वमज्जाभव तैलमुष्णं वातहरं परम् ॥

अर्थ-बेलका तेल-गरम और वातविनाशक है इसके अधिक गुण तैलवर्गमे देखो।

बिल्वपेषिकागुणा ।

कफवातामशूलघ्नी ग्राहिणी बिल्वपेषिका ॥

अर्थ-बिल्वपेशिका-(बेलका सूखा गूदा) कफ,वात, आम और शूलनाशक है तथा मलरोधक है। ॥ ६४ ॥

काञ्जिकस्थितबिल्वगुणा ।

काञ्जिके सस्थितं बिल्वमग्निसंदीपनं परम् ।
हृद्यं रुचिकर प्रोक्तमामवातविनाशनम् ॥

अर्थ-काञ्जीमे रक्खा हुआ बेल-अग्निको दीपन करेहै, हृदयको हितकारी है, रुचिकारी है और आमवातनाशक है।

पक्वबिल्वस्य दोषोक्ति ।

फलेपु परिपक्वेपु ये गुणाः समुदाहृताः ।
बिल्वादन्यत्र विज्ञेया बिल्वमाम गुणोत्तरम् ॥ (रा० व०)

अर्थ-सर्वप्रकारके पकेहुएही फल गुणवाले होते है, किन्तु बेल तो कच्चाही गुणवाला होता है और पक्का बेल अनेक प्रकारके दोषोको उत्पन्न करनेवाला है।

विवरण-बेलका वृक्ष बडा होता है, शाखाओंमे कांटे होते है।पत्ते त्रिदल एक डंडीमे तीन (त्रिशूलाकार)होते है।फूल सफेद और सुगंधित होते हैं।फल गोल स्वादिष्ट और कडे छिलकेसे ढका होताहै, फलमें बहुतसे बीज होतेहैं।बीजोंमे गोंद होता है ।ग्रीष्म ऋतुके आरम्भमे इसके पुराने पत्ते गिरकर नवीन निकल आते हैं। और इसकी लकडी बहुत पवित्र होती है, चदनकी समान मानीजातीहै और मूलकी छाल दशमूलके काढेमे एक प्रधान औषधी है, इसके पत्तोको पीसकर आंखमें लगानेसे नेत्ररोग आराम होता है। जलमें पकाकर अरिष्ट पीनेसे ज्वरादिका नाश होता है। पत्तोंका अर्क बालकोंके लिये दस्तावर और कफका नाश करनेवाला है, बहुत औषधियोके अनुपानमे इसका व्यवहार होता है । हिन्दोस्थानके प्रत्येक खण्डमे बेलका वृक्ष पायाजाताहै।और इसमे एक बडा भारी गुण है कि,जो कोई इन पत्तोको शिवके ऊपर चढाता है,उससे शिव अत्यन्त प्रसन्न होते है इसके अधिक गुण आगे फलवर्गमे देखो।

गम्भारीनामानि।

गम्भारी सर्वतोभद्रा काश्मरी मधुपर्णिका।
श्रीपर्णी भद्रपर्णी च भद्रा च गोपभद्रिका॥

अर्थ-गम्भारी, सर्वतोभद्रा, काश्मरी, मधुपर्णिका, श्रीपर्णी, भद्रपर्णी, भद्रा, गोपभद्रिका(काश्मर्य, काश्मरी,काश्वरी,कम्भारिका, कुमुदा,सदाभद्रा,कृष्णफला,कटफला,कृष्णवृन्तिका,हीरा, सर्वतोभद्रिका,स्निग्धपर्णी,सुभद्रा,कम्भारी, गोपभद्रा, क्षीरिणी, विदारिणी, महाभद्रा,मधुभद्रा,स्वरुभद्रा,कृष्णा, अश्वेता,रोहिणी, गृष्टि, स्थूलत्वचा, मधुमती,सुफला,मोदिनी, महाकुमुदा, सुदृढत्वचा, काश्मीरी पीतरोहिणी, मधुरसा, महाकुमुदिका, पीतफला और वातहा)

संस्कृतभाषामें	-कम्भारी, गंभारी।
हिन्दीभाषामें	कुम्भेर, खम्भारी।
बंगभाषामें	गाम्भारी, गाभार।
मराठीभाषामें	शिवणगम्भारी।
गुजरातीभाषामें	शवन्य।
लाटन् भाषामें	मीलाइनाआर्बोरिया । Gmelina arboria
	ट्रीबिया अन्डिलफोरा । Trebia undiflora

कर्णाटकीभाषामे सीवनी ।
तैलिंगीभाषामे साल्लागुबुटीचेट्टु ।

अस्या गुणा ।

काश्मरी तुवरा तिक्ता वीर्योष्णा मधुरा गुरुः ।
दीपनी पाचनी मेध्या भेदिनी भ्रमशोषजित् ॥
दोषतृष्णामशूलार्शोविषदाहज्वरापहा ।

कुम्भेर–कषेली, कडवी, उष्णवीर्य, मधुर, भारी, अग्निको दीपन करनेवाली, पाचक, मेधाजनक, दस्त लानेवाली तथा भ्रम, शोष, त्रिदोष, तृषा, आमशूल, बवासीर, विष, दाह, और ज्वरको दूर करनेवाली है ।

अस्या फलगुणा ।

तत्फलं बृंहणं वृष्यं गुरु केश्यं रसायनम् ।
वातपित्ततृषारक्तक्षयमूत्रविबन्धहृत् ॥
स्वादु पाके हिमं स्निग्धं तुवराम्लं विशुद्धिकृत् ।
हन्याद्दाहतृषावातरक्तपित्तक्षतक्षयान् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ–कुम्भेरका फल–पुष्टिकारक, वीर्यवर्द्धक, भारी, केशोको हितकारी, रसायन तथा वात, पित्त, तृषा, रक्तक्षय, मूत्र और विबन्धनाशक है, पचनेमे स्वादिष्ठ, शीतल, स्निग्ध, कषेला, खट्टा, शुद्धिकारक और दाह, तृषा, वात, रक्तपित्त, क्षत और क्षयरोगको नष्ट करेहै ।

अन्यच्च ।

गाम्भारिकाफलं ग्राहि सतिक्तमधुरं गुरु ।
केश्यं रसायनं मेध्यं शीतलं दाहपित्तजित् ॥ (रा०व०)

कुम्भेरका फल–मलरोधक, कडवा, मधुर, भारी, केशोको हितकारी, रसायन, मेधाजनक, शीतल, दाह और पित्तनाशक है।

गम्भारीगुणा ।

श्रीपर्णी मारुतश्लेष्मशोफमेहकृमीञ्जयेत् ।

अर्थ–कुम्भेर–वात, कफ, शोफ, प्रमेह और कृमिनाशक है ।

अस्या पुष्पगुणा ।

तत्पुष्पं मधुरं शीतं तिक्तं संग्राहि वातलम् ॥

विवरण-बेलका वृक्ष बडा होता है, शाखाओमे कांटे होते हैं।पत्ते त्रिदल एक डंडीमें तीन (त्रिशूलाकार)होते हैं।फूल सफेद और सुगंधित होते हैं।फल गोल स्वादिष्ट और कडे छिलकेसे ढका होताहै, फलमें बहुतसे बीज होतेहैं। बीजोंमे गोंद होता है । ग्रीष्म ऋतुके आरम्भमे इसके पुराने पत्ते गिरकर नवीन निकल आते हैं । और इसकी लकडी बहुत पवित्र होती है, चंदनकी समान मानीजातीहै और मूलकी छाल दशमूलके काढेमे एक प्रधान औषधी है, इसके पत्तोंको पीसकर आंखमे लगानेसे नेत्ररोग आराम होता है । जलमें पकाकर अरिष्ट पीनेसे ज्वरादिका नाश होता है । पत्तोंका अर्क बालकोंके लिये दस्तावर और कफका नाश करनेवाला है, बहुत औषधियोंके अनुपानमे इसका व्यवहार होता है । हिन्दोस्थानके प्रत्येक खण्डमे बेलका वृक्ष पायाजाताहै।और इसमे एक बडा भारी गुण है कि,जो कोई इन पत्तोको शिवके ऊपर चढाता है,उससे शिव अत्यन्त प्रसन्न होते हैं इसके अधिक गुण आगे फलवर्गमे देखो ।

गम्भारीनामानि ।

गम्भारी सर्वतोभद्रा काश्मरी मधुपर्णिका ।
श्रीपर्णी भद्रपर्णी च भद्रा च गोपभद्रिका ॥

अर्थ-गम्भारी, सर्वतोभद्रा, काश्मरी, मधुपर्णिका, श्रीपर्णी, भद्रपर्णी, भद्रा, गोपभद्रिका(कार्श्मर्य, काश्मरी,काश्वरी,कम्भारिका, कुमुदा,सदाभद्रा,कृष्णफला,कटूफला,कृष्णवृन्तिका,हीरा, सर्वतोभद्रिका,स्निग्धपर्णी,सुभद्रा,कम्भारी, गोपभद्रा, क्षीरिणी, विदारिणी, महाभद्रा,मधुभद्रा,स्वरुभद्रा,कृष्णा, अश्वेता,रोहिणी, गृष्टि, स्थूलत्वचा, मधुमती,सुफला,मोदिनी, महाकुमुदा, सुदृढत्वचा, काश्मीरी पीतरोहिणी, मधुरसा, महाकुमुदिका, पीतफला और वातहा)

संस्कृतभाषामे	कम्भारी, गंभारी ।
हिन्दीभाषामे	कुम्भेर, खम्भारी ।
बंगभाषामे	गाम्भारी, गाभार ।
मराठीभाषामे	शिवणगम्भारी ।
गुजरातीभाषामे	शवन्य ।
लाटन् भाषामे	मीलाइनाआर्बारिया । Gmelina arboria
	ट्रीबिया अन्डिफ्लोरा । Trebia undiflora

क्षय, वात, रक्तपित्त, क्षतक्षय और प्रदरोगका नाश करनेवालाहै । कुम्भेरके फलकी मज्जा शीतल, मधुर, ग्राही, कडवी, वातकारक, कषेली, बलकारक, वीर्य्यवर्द्धक तथा रक्तविकार, कफ, पित्त और प्रदररोगको दूर करनेवाली है ।

विवरण-कुम्भेरका वृक्ष बडा होता है, पत्ते समुद्रशोष और पीपलके पत्तोंसे कुछ, कवडे २ होतेहैं, फूल पीले रंगके और फलभी पीले होतेहैं । छाल सुफेद होती है कुम्हार वृक्ष नामसे प्रसिद्ध है, कालकाके समीप कौशिल्या नदीमे होता है ।

पाटलानामानि ।

पाटला कर्बुरामोघा फलेरुहाम्बुवासिनी ।
कृष्णवृन्ता कालवृन्ता कुम्भी तोयाधिवासिनी ॥

अर्थ-पाटला, कर्बुरा, अमोघा, फलेरुहा, अम्बुवासिनी, कृष्णवृन्ता, कालवृन्ता, कुम्भी, तोयाधिवासिनी (पाटली काचस्थाली, कुबेराक्षी, ताम्रपुष्पी, ताम्रपुष्पी,कुम्भीका, सुपुष्पिका, वसन्तदूती,स्थाली, स्थिरगन्धा, अम्बुवासी, कालवृन्ती, कामदूती, अभिप्रिया, मधुदूती, अलिवल्लभा, वसन्तदूती, कोकिला)

श्वेतपाटला-काष्ठपाटलानामानि ।

द्वितीया पाटला श्वेता निर्दिष्टा काष्ठपाटला ॥

अर्थ-श्वेतपाटला, काष्ठपाटला (श्वेतकुम्भी,श्वेतकुबेराक्षी,श्वेतफलेरुहा, काष्ठकुबेराक्षी, काष्ठफलेरुहा, काष्ठपाटलि, मुष्कक, मोक्षक, घण्टापाटलि)

संस्कृतभाषामे	पाटला, श्वेतपाटला ।
हिन्दीभाषामे	पाडरि, पाढल, सफेदपाडर, कटपाडर ।
बंगलाभाषामे	पारुल, घण्टापारुल ।
मराठीभाषामे	रक्तपाडल ।
गुजरातीभाषामे	२ ताफूलना पाडल, श्वेतपाडर,काकच ।
कर्णाटकीभाषामे	हादरी, विलियहादरी ।
तैलिंगीभाषामे	कलगोरु, कालिगोट्टुचेट्टु ।
तामिलीभाषामे	पट्टि ।
उत्०	पाटुडि ।
लैटिन्‌म	विगनोनिया सुवियोलेन्स् Vignonia suaviolens सीरियोस्पर्मम केलोनोइडीज Seriospermum Chelonoides

कषाय मधुर पाके पित्तास्रासृग्गदापहम् ॥ (शो० नि०)

अर्थ-कुम्भेरका फूल-मधुर, शीतल, कडवा, ग्राही, वातकारक, कपेला, पचनेमे भी मधुर तथा रक्तपित्त और रक्तरोगको दूर करे है।

अस्या मूलगुणा ।

गाम्भारीमूलमत्युष्णमहित मानुषेषु तत् ॥ (रा० व०)

अर्थ-कुम्भेरकी जड-अत्यन्त गरम और मनुष्योंका अहित करनेवाली है।

अन्यच्च ।

काश्मरी कटुका तिक्ता स्वाद्वयुष्णा तुवरा गुरुः ।
मधुरा दीपनी मेध्या पाचनी भेदिका मता ॥
हृद्या तृषामशूलघ्नी कफशोफत्रिदोषहा ।
विषदाहज्वरारक्तदोषार्शोभ्रमनाशिनी ॥
शोषनाशकरी प्रोक्ता फल वृष्य गुरु स्मृतम् ।
धातुवृद्धिकरं केश्य स्वादु शीतं रसायनम् ॥
स्निग्धं बुद्धिप्रद चाम्लं तुवर मूत्रल गुरु ।
मूत्रकृच्छ्र रक्तपित्त रक्तदोषामवातकम् ॥
तृषां दाहं क्षयं वात रक्तपित्तं क्षतक्षयम् ।
प्रदर नाशयत्येव फलमज्जा तु शीतला ॥
मधुरा ग्राहिणी तिक्ता वातला तुवरा मता ।
बल्या वृष्या रक्तदोषकफपित्तहरा मता ॥
प्रदर नाशयत्येवमृषिभिः परिकीर्तिता । (नि०र०)

अर्थ-कुम्भेर-चरपरी, कडवी, स्वादिष्ठ, गरम, कपेली, भारी, मधुर, दीपन, मेधाजनक, पाचक, भेदक, हृदयको हितकारी तथा तृषा, आमशूल, कफ, सूजन, त्रिदोष, विष, दाह, ज्वर, रक्तविकार, बवासीर, भ्रम और शोषको दूर करनेवाली है। इसका फल वीर्यजनक, भारी, धातुवर्धक, केशोंको हितकारी, स्वादिष्ठ शीतल, रसायन, स्निग्ध, बुद्धिप्रद, अम्ल, कपेला, मूत्रजनक, गुरु तथा मूत्रकृच्छ्र रक्तपित्त, रक्तदोष, आमवात, तृषा, दाह,

(त्रिदोष) वमन, सूजन और अफारेको दूर करे है,पाडलके फूल-स्वादिष्ठ, कषेले, हृदयको हितकारी,शीतवीर्य्य तथा रक्तदोष,दाह, कफ, पित्तरोग और पित्तातिसारको हरनेवाले हैं। पाडलके फल-शीतल, भारी, कषेले, कडवे, मधुर तथा मूत्रकृच्छ्र,रक्तपित्त,हिचकी और वातके नाश करनेवाले हैं।

श्वेतपाटलागुणा।

सितपाटलिका तिक्ता गुर्व्युष्णा वातदोषजित्।
वमिहिक्काकफघ्नी च श्रमशोषापहारिका॥ (ध०नि०)

अर्थ-सफेदपाडर-कडवी, भारी,वातनाशक तथा वमन,हिचकी, कफ, श्रम और शोषको दूर करे है।

अन्यच्च।

श्वेता तु पाटला चोष्णा तिक्ता गुर्वी सुगन्धिका।
रक्तदोषारुचिशोफश्वासतृड्वान्तिनाशिनी॥
हिक्कां कफं च वातञ्च नाशयेदिति कीर्तितम्।(नि०र०)

अर्थ-सफेदपाडर-गरम, कडवी, भारी, सुगन्धि तथा रक्तविकार, अरुचि, सूजन, श्वास, तृषा, वमन, हिचकी, कफ और वातका नाश करे है।

भूमिपाटलागुणा।

भूपाटला कटूष्णा च बल्या वीर्य्यविवर्द्धनी।

अर्थ-भुईपाडर-चरपरी, गरम, बलजनक, और वीर्य्यवर्द्धक है।

क्षुद्रपाटलागुणा।

क्षुद्रा तु पाटला श्वेता स्निग्धा च व्रणशोधिनी।
कफमेद·कुष्ठविषमण्डलानि विनाशयेत्॥

अर्थ-क्षुद्रपाडर-सफेद, स्निग्ध, व्रणशोधक तथा कफ, मेद, कुष्ठ, विष और मण्डलकुष्ठको नष्ट करे हैं।

वल्लीपाटलागुणा।

वल्ली पाटलिका चोष्णा वातारोचकपित्तहा।
रक्तदोषं च शोफं च नाशयेदिति कीर्तितम्।

अर्थ-वल्लीपाडर-गरम, वात, अरोचक, पित्त, रक्तविकार और सूजनको दूर करे है।

पाटलागुणाः ।

पाटला तु रसे तिक्ता कटूष्णा कफवातजित् ।
शोफाध्मानवमिश्वासशमनी सन्निपातनुत्॥ (रा नि०)

अर्थ-पाढल-तिक्तरसान्वित, कटरसयुक्त, उष्ण, कफवातनाशक तथा सूजन, अफरा, वमन श्वास और सन्निपातनिवारक है ।

अपच्च ।

पाटलाऽरुचिशोथास्रश्वासतृट्छर्दिनाशिनी ।
नात्युष्ण तुवरं स्वादु तत्पुष्प कफवातनुत् ॥
पित्तातिसारदाहघ्न फल हिक्कास्रपित्तनुत् । (ध० नि०)

अर्थ-पाढल-अरुचि, सूजन, रुधिरविकार, श्वास, तृषा और वमननिवारक है किंचित् उष्ण, कषाय, स्वादिष्ठ, इसका फूल कफ, वात,पित्तातिसार और दाहनाशक है, इसका फल हिचकी और रक्तपित्तको दूर करे हैं।

अन्यच्च ।

पाटला कफपित्तास्रच्छर्दितृण्मारुतापहा ।
पुष्प कषायमधुर शीत पित्तकफास्रजित् ॥ (शो०नि०)

अर्थ-पाढर-कफ, रक्तपित्त, वमन, तृषा और वातको हरनेवाली है । इसका फूल-कषेला, मधुर, शीतल तथा पित्त,कफ और रुधिर-विकारको हरे हैं।

अपिच ।

रक्तपाटलिका तिक्ता कट्वी चोष्णा कफापहा ।
सन्निपातश्वासवमिशोफाध्मानानि नाशयेत् ॥
पुष्पाणि पाटलायास्तु स्वादूनि तुवराणि च ।
हृद्यानि शीतवीर्य्याणि रक्तदोषहराणि च ॥
दाह कफं पित्तरोग पित्तातीसारहानि च ।
फलानि पाटलायास्तु शीतलानि गुरूणि च ॥
तुवराणि च तिक्तानि मधुराणि बुधा जगुः ।
मूत्रकृच्छ्र रक्तपित्त हिक्कावातहराणि च ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ-पाढल-कडवी,चरपरी,गरम,कफनाशक तथा सन्निपात,श्वास

मराठीभाषामे	थोरऐरण, लघुऐरण, टहांकळी, नरबेल्य
गुजरातीभाषामे	अरणी, ऐरण ।
कर्णाटकीभाषामे	नरुवल ।
तैलङ्गीभाषामे	नेलिचेट्ट ।
उत्कलीभाषामे	अगिवथ ।
लैटिन्भाषामे	क्लोरोडेड्रनफ्लोमाईडिस Clorodendron Phlomides

अग्निमन्थगुणा ।

तर्कारी कटुका तिक्ता तथोष्णानिलपाण्डुजित् ।
शोथश्लेष्माग्निमांद्यार्शोविड्बन्धामविनाशिनी॥ (ध०नि०)

अर्थ-अरणी-कटु, तिक्त, उष्ण तथा वात, पाण्डुरोग, शोथ, कफ, अग्निमांद्य, अर्श, मलबद्धता और आम इत्यादि अनेक प्रकारके रोगोको दूर करनेवाली है।

अन्यच्च ।

अग्निमन्थो गुरुस्तिक्तो वातशोफामजित्सरः॥ (शो०नि०)

अर्थ-अरणी-भारी, कडवी तथा वायु, सूजन और आमको जीतेहै, तथा सारक है।

अपिच ।

अग्निमन्थो बृहत्प्रोक्तः कटुश्चोष्णो मधुः स्मृतः ।
तिक्तस्तु तुवरश्चाग्निदीपको वातनाशनः॥
प्रतिश्यायं कफं शोथमर्शश्चैवामवातकम् ।
मलरोधं चाग्निमांद्य पाण्डुरोग विष तथा ॥
आमं च मेदोरोग च नाशयेदिति कीर्तितम्। (नि०र०)

अर्थ-अरणी-कटु, उष्ण, मधुर, तिक्त, कषाय, अग्निप्रदीपक, वातनाशक तथा प्रतिश्याय (जुकाम) कफ, सूजन, बवासीर, आमवात, मलरोध, मदाग्नि, पाण्डुरोग, विष, आम और मेदोरोगको नाश करनेवाली है।

क्षुद्राग्निमन्थगुणाः।

लघ्वग्निमन्थस्य गुणाः प्रोक्ता वृद्धाग्निमन्थवत् ।
विशेषाल्लेपने चोपनाहे शोफे च कीर्तिताः॥ (नि०र०)

(प्र०)-पाडरके पत्तोका रस निकालकर उसमे छः मासे सो
और दो तोले खाड मिलाकर देनेसे अम्लपित्त दूर होताहै।

विवरण। पाडरका फूल लाल होताहै और दूसरी पाडरका फूल
सफेद होताहै। पत्ते वेलकी समान होतेहैं। पाटलके वृक्ष दोप्रका
के होतेहैं तीसरी पाटला लता होतीहै, जो वटीवेकी वेल कहीं
जातीहै।

अग्निमन्थनामानि।

अग्निमन्थो हविर्मन्थः कर्णिका गिरिकर्णिका।
जया जयन्ती तर्कारी नादेयी वैजयन्तिका॥

अर्थ-अग्निमन्थ, हविर्मन्थ, कर्णिका, गिरिकर्णिका, जया, जय
न्ती, तर्कारी, नादेयी और वैजयन्तिका (श्रीपर्ण, तेजोमन्थ
ज्योतिष्क, पावक, अराणि, वह्निमन्थ, मथन, जय, पावकारणि
आग्निमथन, तर्कारी, अरणीकेतु, श्रीपर्णी, विजया, अनन्ता, नदीजा
तनुत्वक्, पित्तमाता, वह्निमूल, अग्निबीजक)

क्षुद्राग्निमन्थनामानि।



क्षुद्राग्निमन्थो विजया नादेयी चाग्निमथिनी।
जया च गन्धपत्रा च गन्धपुष्पा कृशानुगा॥

अर्थ-क्षुद्राग्निमन्थ, विजया, नादेयी, अग्निमन्थिनी, जया, गन्ध
पत्रा, गन्धपुष्पा, कृशानुगा (तपन, गणिकारिका, अरणि, लघु
मन्थ, तेजोवृक्ष, तनुत्वचा)

संस्कृतभाषामें	अग्निमन्थ, अरणी, गणिकारिका, क्षुद्राग्निमन्थ
हिन्दीभाषामें	अरणी, अगेथु, गणिवारी, छोटअरणी
वंगभाषामें	गणिर, आगगन्त, छोटीगणिरी।

कर्णाटकीभाषामें	शोणा, शोडिलमर ।
तैलिङ्गीभाषामे	पेद्दामानु ।
औत्कलीमे	फणफणा ।
पञ्जाबीमे	मुलिन ।
नेपालीमे	करुमकन्द ।
तामिलीमे	पन ।
लैटिन्भाषामे	ओरोक्‌सिलं इंडिकम् । Orocylum indicum

श्योनाकगुणा ।

श्योनाकस्तुवरस्तिक्तः कटुश्चाग्निप्रदीपनः ।
ग्राहकः शीतलो वृष्यो बलदो वातपित्तहा ॥
सन्निपातज्वरकफत्रिदोषारुचिनाशनः ।
आमवातकृमिवमीकासातीसरनाशनः ॥
तृष्णां कुष्ठं नाशयतीत्येवमाहुर्मनीषिणः ।

अर्थ-शोनापाठा-कपेला, कडवा, चरपरा, जठराग्निको दीपन करनेवाला, मलरोधक, शीतल, वीर्य्यवर्द्धक, बलदायक, तथा वात पित्त, सन्निपातज्वर, कफ, त्रिदोष, अरुचि, आमवात, कृमि, वमन, खासी, अतिसार, तृषा और कुष्ठको नष्ट करेहै ।

अन्यच्च ।

टिण्टुको वातजिद्रूक्षः शोफहाऽग्निबलप्रदः ।
तुवरः शीतलस्तिक्तो बस्तिरोगहरः परः ॥
पित्तश्लेष्मामवातारिः श्वासकासारुचीर्जयेत् ।

अर्थ-टेंटु-वातविनाशक, रूक्ष, शोफनिवारक, जठराग्निवर्द्धक, बलदायक, कषाय, शीतल, तिक्त, बस्तिरोगनाशक, पित्त, कफ, वातनाशक, श्वास, कास और अरुचिनिवारक है ।

अस्य कोमलफलगुणा ।

कोमलं तु फलं चास्य तुवरं मधुरं लघु ।
हृद्यं रुच्यं पाचकं च कण्ठ्यं चाग्निप्रदीपकम् ॥

अर्थ-छोटी अरणीके गुण अरणीके समान हैं, किन्तु विशेष करे इसका लेप उपनाहके विषय हितकारक है और यह सूजनके दूर करनेवाली है ।

तेजोमन्थगुणाः ।

तेजोमंथगुणाः प्रोक्ताश्चाग्निमंथसमा बुधैः ।
विशेषाद्वातशोफे च प्रोक्ताः पूर्वैश्चसूरिभिः ॥ (नि०र०

अर्थ-तेजोमन्थ-(अरणीका भेद) इसके गुण अरणीकी समान हैं, परन्तु विशेष करके यह वातशोफका नाश करैहै ।

विवरण-इसका वृक्ष होताहै, पत्ते गोल और सूक्ष्म करकरयुत होतेहैं फूल सफेद होताहै, फल छोटे करोंदेकी समान होते हैं यज्ञमें इसकी लकडीसे आग पैदा की जाती है ।

श्योनाकनामानि ।

श्योनाकः शुकनासश्च कटुङ्गोऽथ कटम्भरः ।
मयूरजघोऽरलुकः प्रियजीवी कुटन्नटः ॥

अर्थ-श्योनाक-शुकनास, कटुङ्ग, कटम्भर, मयूरजघ, अरलुक, प्रियजीवी, कुटन्नट (मण्डूकपर्ण, पत्रोर्ण, नट, कटाङ्ग, टुण्टक, ऋक्ष, दीर्घवृन्त, शोनक, अरल, स्योनाक, विपतुत, अध्वान्तशात्रव, पूतिवृक्ष, मण्टुक, मण्डूक, भूतपुष्प, शोण, अरलु, दीर्घवृन्तक, वटु, ध्वान्तशात्रव, स्वर्णवल्कल, पृथुशिम्ब, शल्लक, शोषण, प्रियजीव, कुर्कट, भल्लूक, कन्दर्प, पादवृक्ष, भृताटक, पारिपादप)

श्योनाकभेदनामानि ।

टुण्टुको दीर्घवृन्तश्च टिण्टुको कीरनाशनः ।
पूतिवृक्षो पूतिनागो भूतिपुष्पो मुनिद्रुमः ॥

अर्थ-टुण्टुक, दीर्घवृन्त, टिण्टुक कीरनाशन, पूतिवृक्ष, पूतिनाग, भूतिपुष्प और मुनिद्रुम (श्योनाक, पृथुशिम्ब, भल्लूक, टेण्टुक, पीतवृक्ष, भूतसार, निःसार, फलवृन्ताक, पूतिपत्र, वसन्तक, मण्डूकपर्ण, पीताङ्ग, जम्बूक, पीतपादप, वातारि, पीतक, शोण, कुनट, विरोचन, भ्रमरेष्ट, जंघनेत्र)

संस्कृतभाषामें	श्योनाक, अरलु, टुण्टुक ।
हिन्दीभाषामें	सोनापाठा, अरलु, टेटु ।
बंगभाषामें	सोना, सोनालु ।
मराठीभाषामें	टेटु ।
गुजरातीभाषामें	अरडूशो, मरमटच ।

र, सुरूपा, शुभपत्रिका, सुपर्णी, शालिपत्री,
, सालपर्णी, एकमूला, अस्तमती, शालानी
ए कीटविनाशिनी)

शालिपर्णी ।
सरिवन ।
शालपान, शालपानी ।
सालवण ।
शालपर्णी ।
मे सुरुलुवोने ।
शयाकुपना, सप्पाकुपोवा ।
मे शारपाणि ।
डेस्मोडियंगेजेटिकम् । Desmodium Gangeticum
डेस्मोडियम् ट्रायलफोरम् ।

अस्या गुणाः ।

पर्णी गरच्छार्दिज्वरश्वासातिसारजित् ।
षत्रयहरी बृंहण्युक्ता रसायनी ॥
विषहरी स्वाद्वी क्षतकासकृमिप्रणुत् ।

न-विष, वमन, ज्वर, श्वास, अतिसार, शोष और तथा पुष्टिजनक, रसायन, कड़वी, विषनाशक, स्वादिष्ट और कृमिरोगको हरनेवाली है ।

अन्यच्च ।

लेपर्णी रसे तिक्ता गुर्व्युष्णा धातुवर्धिका ।
यनी स्वादुवृष्या विषमज्वरवातहा ॥
शः शोथसन्तापज्वरश्वासविषकृमीन् ।
दोषशोषच्छर्दिघ्नी क्षतकासातिसारहा ॥ (नि० र०)

रिवन-तिक्तरसान्वित, भारी, गरम, रसायन, धातुवर्द्धक, र्यजनक तथा विषमज्वर, वात, प्रमेह, बवासीर, सूजन, र, श्वास, कृमि, त्रिदोष, शोष, वमन, क्षत, खांसी और को दूर करेहै ।

ा क्षुप होताहै, एक एक दंडीमें तीन २ पत्ते छोटी २ फलियें होतीहैं । शालिपर्णी और

उष्णं च कटुकं क्षार गुल्मवातकफार्शनुत् ।
अरुचिं च कृमींश्चैव नाशयेदिति कीर्त्तितम् ॥

अर्थ-इसका कच्चा फल कषेला, मधुर, हलका, हृदयको हितकारी, रुचिकारी, पाचक, कण्ठको हितकारक, अग्निप्रदीपक, गरम, कटु, क्षार तथा गुल्म, वात, कफ, बवासीर, अरुचि और कृमिरोगनाशक है ।

अस्य तरुणफलगुणाः ।

दीर्घवृन्तफलं चामं गुरुवातप्रकोपनम् ॥ (नि० र०)

अर्थ-इसका तरुण फल-भारी और वातको कुपित करनेवाला है ।

अ पत्र

पुटपाकविधानेन रसो निष्कास्य भक्षितः ।
चिरंतनमतीसारं नाशयेदिति कीर्त्तितम् ॥ (रा० नि०)

अर्थ-श्योनाकका रस पुटपाककी विधिसे निकालकर उस रसको पीनेसे बहुत दिनोका पुराना अतिसार दूर होता है ।

द्विविधश्योनाकगुणाः ।

श्योनाकयुगलं तिक्तं शीतलं च त्रिदोषजित् ।
पित्तश्लेष्मातिसारघ्नं सन्निपातज्वरापहम् ॥ (रा० नि०)

अर्थ-दोनो प्रकारके श्योनाक-कडवे, शीतल, त्रिदोषनाशक तथा पित्त, कफ, अतिसार, सन्निपात और ज्वरको हरने वाले है ।

विवरण-श्योनाकका वृक्ष बहुत ऊंचा होताहै, फली लम्बी लम्बी तलवारकी समान दो दो फुटकी होतीहै, फलीके भीतर रुई और दाने निकलतेहै एक दूसरे प्रकारका श्योनाक होताहै। उसका फूल लाली लिये समुद्रशोषकी समान होताहै ।शिमला प्रान्तमे इसको " टाटमडगा" कहतेहै ।

शालिपर्णीनामानि ।

शालिपर्णी स्थिरा सौम्या त्रिपर्णी पीवरी गुहा ।
विदारिगन्धा दीर्घाङ्घ्रिर्दीर्घपत्राशुमत्यपि ॥

अर्थ-शालिपर्णी, स्थिरा, सौम्या, त्रिपर्णी, पीवरी, गुहा, विदारिगन्धा, दीर्घाङ्घ्रि, दीर्घपत्रा, अंशुमती (सुदला, सुपत्री, कुमुदा, ध्रुवा, सुपर्णिका, दीर्घमूला, दीर्घपत्रिका, वातघ्नी, पातिनी, तन्वी, सुधा, सर्वानुकारिणी, शोफघ्नी, सुभगा, देवी, शोथघ्नी, निश्चला,

व्रीहिपर्णिका, सुमूला, सुरूपा, शुभपत्रिका, सुपर्णी, शालिपत्री, शालिदला, विदारी, सालपर्णी, एकमूला, अस्तमती, शालानी, शालिका, तन्वी और कीटविनाशिनी)

संस्कृतभाषामे	शालिपर्णी ।
हिन्दीभाषामे	सरिवन ।
बंगभाषामे	शालपान, शालपानी ।
मराठीभाषामे	सालवण ।
गुजरातीभाषामे	शालपर्णी ।
कर्णाटकीभाषामे	सुरुलुवोने ।
तैलिङ्गीभाषामे	शैयाकुपना, सप्पाकुपोवा ।
औत्कलीभाषामे	शारपाणि ।
लैटिन्भाषामे	डेस्मोडियंगेजेटिकम् । Desmodium Gangeticum डेस्मोडियम् ट्रायल्फोरम् ।

अस्या गुणा ।

शालिपर्णी गरच्छर्दिज्वरश्वासातिसारजित् ।
शोषदोषत्रयहरी बृंहण्युक्ता रसायनी ॥
तिक्ता विषहरी स्वाद्वी क्षतकासकृमिप्रणुत् ।

अर्थ-सरिवन-विष, वमन, ज्वर, श्वास, अतिसार, शोष और त्रिदोषनाशक ,तथा पुष्टिजनक,रसायन,कडवी,विषनाशक,स्वादिष्ट क्षत, कास और कृमिरोगको हरनेवाली है ।

अन्यच्च ।

शालिपर्णी रसे तिक्ता गुर्व्युष्णा धातुवर्धिका ।
रसायनी स्वादुवृष्या विषमज्वरवातहा ॥
मेहार्शःशोथसन्तापज्वरश्वासविषकृमीन् ।
त्रिदोषशोषच्छर्दिघ्नी क्षतकासातिसारहा ॥ (नि० र०)

अर्थ-सरिवन-तिक्तरसान्वित, भारी, गरम, रसायन,धातुवर्द्धक, स्वादिष्ठ,वीर्यजनक तथा विषमज्वर, वात, प्रमेह,बवासीर, सूजन, सन्तापज्वर, श्वास, कृमि, त्रिदोष, शोष, वमन, क्षत, खांसी और अतिसारको दूर करेहैं ।

विवरण-शालिपर्णीका क्षुप होताहै, एक एक दडीमे तीन २ पत्ते होतेहैं और उसमे बहुत छोटी २ फलियें होतीहै । शालिपर्णी और

पृष्ठपर्णी तीन २ और एक २ पत्रवाली दोनो प्रकारकी होती है कालकाके समीप टकसालमे दोनो प्रकारकी बहुत है ।

पृश्निपर्णीनामानि ।



पृश्निपर्णी पृथक्पर्णी तन्वी क्रोष्टुकपुच्छिका ।
त्रिपर्णी पूर्णपर्णी च कलसी सिंहलांगुली ॥

अर्थ-पृश्निपर्णी, पृथक्पर्णी, तन्वी, क्रोष्टुकपुच्छिका, त्रिपर्णी, पूर्णपर्णी, कलसी और सिंहलांगुली (चित्रपर्णी, अंघ्रिवल्लिका, क्रोष्टुविन्ना, सिंहपुच्छी, कलशी, धावनी, गुहा, पिष्टपर्णी, लाङ्गली, क्रोष्टुपुच्छिका, कलशी, क्रोष्टुकमेखला, दीर्घा, शृगालवृन्ता, सिंहपुच्छिका, दीर्घपत्रा, अतिगुहा, घाष्टिला, चित्रपर्णिका, कलसि, क्रोष्टुपुच्छी, कदला, कंकशत्रु चक्रकुल्या, चक्रपर्णी, शीर्णमाला, महागुहा, शृगालविन्ना, धमनी, मेखला, लांगुलिका, ब्रह्मपर्णी, दीर्घपर्णी, सिंहपुष्पी, पृष्टिपर्णी, अंघ्रिपर्णी, धावनी, विष्णुपर्णी)

संस्कृतभाषामे	पृश्निपर्णी, पृष्टिपर्णी ।
हिन्दीभाषामे	पिठवन, पिठौनी, डावडा, दोला, पृश्निपर्णी ।
वंगभाषामे	चाकुले, चाकुलिया ।
मराठीभाषामे	पीठवण ।
गुजरातीभाषामे	पृष्टिपर्णी ।
कर्णाटकीभाषामे	तोरमोड, नरियलवोने ।
तैलिङ्गीभाषामे	कोलाकुपन्न ।
ओत्कलीमे	क्रष्टपर्णी ।
लेटिनभाषामे	उरेरिया लेगोपोईडिस् । उरेरियापिक्टा । Uraria lagopoides Uraria picta

पृश्निपर्णीगुणाः।

पृश्निपर्णी त्रिदोषघ्नी वृष्योष्णा मधुरा सरा ।
हन्ति दाहज्वरश्वासरक्तातीसारतृड्वमीन् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-पिठवन-त्रिदोषनाशक, वीर्यजनक, गरम, मधुर, सारक, तथा दाह, ज्वर, श्वास, रक्तातिसार, तृषा और वमननिवारक है ।

अन्यच्च ।

पृष्टिपर्णी कटूष्णा च तिक्तातीसारकासनुत् ।
वातरक्तज्वरोन्मादव्रणदाहविनाशिनी ॥ (ग० नि०)

अर्थ-पिठवन-कटु, उष्ण, तिक्त तथा अतिसार, खांसी, वातरक्त, ज्वर, उन्माद, व्रण और दाहनाशक है ।

शालपर्णीपृश्निपर्ण्योर्गुणाः ।

शालपर्णी पृश्निपर्णी ग्राहिणी कफवातजित् ॥ (रा० व०)

अर्थ-शालपर्णी और पृश्निपर्णी, ग्राही और कफपित्तनाशक है ।

विवरण । पिठवन पश्चिम और बंगदेशमे अधिकतासे उत्पन्न होती है, दक्षिणदेशमे दिखाई नही देती । पत्ते गोल वेलदार होते है,फूल गोल सपेद कुछ नीले जटायुक्त होते है । मात्रा तीन आनेभरि ।

व्यवहार-जड । परन्तु अल्पमूल्य होनेसे सर्वदेशान्तरोंमे इसके वेलकाही व्यवहार होताहै ।

बृहतीनामानि ।

बृहती महती सिंही प्रसहा हिंगुली कुली ॥
अक्रान्ता क्षुद्रवार्ताकी रक्ता पाकी लता तथा ।

अर्थ-बृहती, महती, सिंही, प्रसहा, हिंगुली, कुली, अक्रान्ता, क्षुद्रवार्ताकी, रक्तपाकी, लता (बृहतिका,क्रान्ता,वार्त्ताकी,सिंहिका, राष्ट्रिका, स्थूलकण्ठा, क्षुद्रभण्टा, भण्टाकी, महोटिका, बहुपत्री, कण्ठतनु,कण्ठालु,कटुफला,डोवडी,वनवृन्ताकी,बृहतिका,पारावेदी)

संस्कृत भाषामे	बृहती, वार्त्ताकी ।
हिन्दीभाषामे	कटाई, वरहंटा ।
बंगभाषामे	व्याकुड, तिव्वेगुन ।
मराठीभाषामे	थोरडोरली ।
गुजराती भाषामे	उभीभोरिंगणी ।

पृष्ठपर्णी तीन २ और एक २ पत्रवाली दोनो प्रकारकी होती हैं कालकाके समीप टकसालमे दोनो प्रकारकी वहुत है ।,

पृश्निपर्णीनामानि ।



पृश्निपर्णी पृथक्पर्णी तन्वी क्रोष्टुकपुच्छिका ।
त्रिपर्णी पूर्णपर्णी च कलसी सिंहलांगुली ॥

अर्थ–पृश्निपर्णी, पृथक्पर्णी, तन्वी, क्रोष्टुकपुच्छिका, त्रिपर्णी, पूर्णपर्णी, कलसी और सिंहलांगुली (चित्रपर्णी, अंघ्रिवल्लिका, क्रोष्टुविन्ना, सिंहपुच्छी, कलशी, धावनी, गुहा, पिष्टपर्णी, लाङ्गली, क्रोष्टुपुच्छिका, कलशी, क्रोष्टुकमेखला, दीर्घा, शृगालवृन्ता, सिंहपुच्छिका, दीर्घपत्रा, अतिगुहा, घाष्टिला, चित्रपर्णिका, कलसि, क्रोष्टुपुच्छी, कदला, ककशत्रु चक्रकुल्या, चक्रपर्णी, शीर्णमाला, महागुहा, शृगालविन्ना, धमनी, मेखला, लाङ्गलिका, ब्रह्मपर्णी, दीर्घपर्णी, सिंहपुष्पी, पृष्टिपर्णी, अंघ्रिपर्णी, धावनी, विष्णुपर्णी)

संस्कृतभाषामे	पृश्निपर्णी, पृष्टिपर्णी ।
हिन्दीभाषामे	पिठवन, पिठौनी, डावडा, दौला, पृश्निपर्णी।
वंगभाषामे	चाकुले, चाकुलिया ।
मराठीभाषामे	पीठवण ।
गुजरातीभाषामे	पृष्टिपर्णी ।
कर्णाटकीभाषामे	तोरेमोड, नरियलवोनें ।
तैलिङ्गीभाषामे	कोलाकुपन्न ।
ओत्कलीमे	कृष्टपर्णी ।
लेटिनभाषामे	उरेरिया लेगोपोइंडिस्। उरेरियापिक्टा ।

Uraria lagopoides Uraria picta

मुखकी विरसता, हृल्लास, कण्डू, शूल, आमदोष, हृदयरोग और अग्निमांद्यका नाश करे ।

अस्याः फलगुणाः ।

फलानि बृहतीनां च कटुतिक्तलघूनि च ।
कण्डूकुष्ठकृमिघ्नानि कफवातहराणि च ॥

अर्थ-बृहतीके फल-कटु, तिक्त, लघु, कण्डू, कुष्ठ, कृमि, कफ और वातनाशक हैं ।

क्षुद्रबृहतिकागुणाः ।

लघ्वी बृहतिका वातश्वासशूलकफापहा ।
अग्निमांद्यं ज्वरं छर्दिं हृद्रुगामं च नाशयेत् ॥

अर्थ-क्षुद्रबृहती-वात, श्वास, शूल, कफ, मंदाग्नि, ज्वर, वमन, हृदयरोग और आमनाशक है ।

श्वेतबृहतिकागुणाः ।

श्वेता बृहतिका रुच्या कफवातविनाशिनी ।
अंजनान्नेत्ररोगघ्नी गुणास्त्वन्ये तु पूर्ववत् ॥

अर्थ-सफेदबृहती-रुचिकारक, कफवातविनाशक और अंजनके योगसे अनेक प्रकारके नेत्ररोगोंको नाश करतीहै । शेष गुण बृहतीकी समान जानने ।

बृहतीभेदगुणाः ।

अन्या बृहतिका तिक्ता कटी चोष्णा च पित्तला ।
रूक्षा रुच्या भेदिका च पाचिन्यग्निप्रदीपनी ॥
कफवातहरा प्रोक्ता पूर्ववैद्यैर्मनीषिभिः । (नि० र०)

अर्थ-दूसरे प्रकारकी खटाई-कडवी, चरपरी, गरम, पित्तजनक, रूखी, रुचिकारी, भेदक, पाचक, अग्निप्रदीपक, कफवातनाशक है ।

विवरण । बृहतीका क्षुप जङ्गलमें होता है इसमें कांटे बहुत कम होते हैं, इसके पत्ते वैंगुनकेसे होते हैं, फल बडे बडे आमलेकी समान चितले और पीले होते हैं ।

कण्टकारीनामानि ।

कण्टकारी कुली क्षुद्रा कासघ्नी कण्टकारिका ।
स्पृही धावनिका व्याघ्री दुःस्पर्शा दुष्प्रधर्षिणी ॥

कर्णाटकी भाषामे	हेग्गुलु ।
तैलिंगीभाषामे	पेद्दामुलंगा, कुकमाची ।
तामिलीभाषामे	चेरुचुण्ट ।
लैटिन्भाषामे	सोलेनमजेकीनीआई । Solanumjequinu
	सोलेनम् इंडिकम् । Solanum Indicum
फारसीभाषामे	उस्तरगार, बादंजान्जंगली ।
अरबीभाषामे	बालुंजान्जंगली ।

बृहतीगुणा ।

बृहती ग्राहिणी हृद्या पाचनी कफवातहृत् ।
कटुतिक्तास्यवैरस्यमलारोचकनाशिनी ॥
उष्णा कुष्ठज्वरश्वासशूलकासाग्निमांद्यजित् (भा० प्र०)

अर्थ-खटाई-मलरोधक, हृदयको हितकारी, पाचक, कफवातनाशक, कटु, तिक्त तथा मुखकी विरसता, मल और अरुचिनाशक है, गरम है और कोढ, ज्वर, श्वास, शूल, खांसी और मंदाग्निको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

बृहती कटुतिक्तोष्णा वातजिज्ज्वरहारिणी ।
अरोचकामकासघ्नी श्वासहृद्रोगनाशिनी॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ-कटाई-कटु, तिक्त, गरम, तथा वात, ज्वर, अरुचि, आम, खांसी, श्वास और हृदयरोगका नाश करनेवाली है ।

अपिच ।

बृहती कटुका चोष्णा तिक्ता हृद्या च पाचिका ।
ग्राहिण्यग्नेर्दीप्तिकरी कफवातज्वरापहा ॥
कुष्ठं चारोचकं छर्दिं श्वास कास कृमींस्तथा ।
मुखवैरस्यहृल्लासं कण्डूशूलामदोषहा ॥
हृद्रोगं चाग्निमांद्यं च नाशयेदिति कीर्तिता ।

अर्थ-कटाई-कटु, उष्ण, तिक्त, हृद्य, पाचक, मलरोधक, अग्निप्रदीपक तथा कफ, वात, ज्वर, कुष्ठ, अरोचक, वमन, श्वास, कास, कृमि,

पाचक तथा खांसी, श्वास, ज्वर, कफ, वात, पीनस, पार्श्वपीडा और हृदयरोगका नाश करेहै । अन्यच्च ।

कण्टकारी कटूष्णा च दीपनी श्वासकासजित् ।
प्रतिश्यायार्तिदोषघ्नी कफवातज्वरार्तिनुत् ॥ (रा० नि०)

अर्थ-कटेरी- चरपरी, गरम, अग्निप्रदीपक तथा श्वास, खांसी, प्रतिश्याय, कफ, वात और ज्वर नाशक है ।

अपिच ।

कटेरी कटुका चोष्णा दीपन्यग्नेश्च भेदिका ।
कट्वी रूक्षा पाचनी च लघ्वी तिक्ता च सारिका ॥
श्वासं कासं कफं वातं पीनसं च ज्वरं जयेत् ।
हृद्रोगारुचिकृच्छ्रघ्नी पार्श्वशूलस्य नाशिनी ॥
आमं कृमींश्च शूलं च नाशयेदिति कीर्तितम् । (नि० र०)

अर्थ-कटेरी-चरपरी, गरम, अग्निप्रदीपक, भेदक, कडवी, रूखी, पाचक, हलकी, तिक्त, सारक, तथा श्वास, खासी, कफ, वात, पीनस, ज्वर, हृदयरोग, अरुचि, मूत्रकृच्छ्र, पार्श्वशूल, आम, कृमि और शूलका नाश करनेवाली है ।

फलं तस्याः कटुः पाके रसे च कटुकं भवेत् ।
शुक्रस्य रेचनं भेदि तिक्तं पित्ताग्निकृल्लघु ॥

अर्थ-कटेरीके फल-पचनेमे चरपरे और रसमे भी चरपरे है, शुक्रको दूर करनेवाले, भेदक, कडवे, पित्तजनक, अग्निवर्द्धक और हलके है ।

अन्यच्च ।

कण्टकारीफलं तिक्तं कटुकं भेदि पित्तलम् ।
हृद्यं चाग्नेर्दीप्तिकरं लघु वातकफापहम् ॥
कण्डूश्वासज्वरकृमिमेहशुक्रविनाशनम् ॥

अर्थ-कटेरीके फल-कडवे, चरपरे, भेदक, पित्तकारक, हृदयको हितकारी, अग्निदीपक, हलके, वातकफनाशक तथा कण्डू, श्वास, ज्वर, कृमि, प्रमेह और वीर्यविनाशक है ।

कटेरी.



अर्थ-कण्टकारी, कुली, क्षुद्रा, कासघ्नी, कण्टकारिका, स्पृही, धावनिका, व्याघ्री, दुःस्पर्शा, दुष्प्रधर्षिणी (कण्टश्रेणी, निदिग्धिका, बृहती, प्रचोदिनी, राष्ट्रिका, अनाक्रान्ता, भण्टाकी, सिंही, कुल, कण्टकिनी, निदिग्धा, धावनी, क्षुद्रकण्टिका, बहुकण्टा, क्षुद्रफला, कण्टालिका, चित्रफला)

संस्कृतभाषामे	कण्टकारी ।
हिन्दीभाषामे	कटेरी, लघुकटाई, भटकटैया, रेगनी ।
बंगलाभाषामे	कण्टकारी ।
मराठीभाषामे	रिंगणी, भुईरिंगणी, लघुरिंगणी ।
गुजरातीभाषामे	बेठीभोरिंगणी ।
कर्णाटकीभाषामे	नेल्लगुल्लु ।
तैलिङ्गीभाषामे	रेवटीमुलगा, व्राकुडिचेट्टु ।
औत्कलीभाषामे	कण्टमारिषं ।
लैटिन्भाषामे	सोलेनझेंथोकार्प Solanum Xanthocarpum

कण्टकारीगुणा ।

कण्टकारी सरा तिक्ता कटुका दीपनी लघुः ।
रूक्षोष्णा पाचनी कासश्वासज्वरकफानिलान् ॥
निहन्ति पीनस रोग पार्श्वपीडाहृदामयान् । (भा० प्र०)

अर्थ-कटेरी-सारक, कडवी, चरपरी, अग्निदीपक, हलकी, रुखी, गरम,

क्षुद्रगोक्षुरनामानि ।

क्षुद्रोपरोगो क्षुरकस्त्रिकण्टकः कण्टी षडङ्गो बहुकण्टकःक्षुरः।
गोकण्टकः कण्टफलः पलकषाक्षुद्रक्षुरो भक्षटकश्चणद्रुमः ॥
स्थलशृङ्गाटकश्चैव वनशृङ्गाटकस्तथा ।
इक्षुगन्धः स्वादुकण्टः पर्य्यायाः षोडश स्मृताः ॥

अर्थ-क्षुद्रगोक्षुर, त्रिकण्ट,कण्टी, षडङ्ग,बहुकण्टक, क्षुर,गोकण्टक, कण्टफल, पलकषा, क्षुद्रक्षुर, भक्षटक, चणद्रुम, स्थलशृङ्गाटक, वनशृङ्गाटक, इक्षुगन्ध, स्वादुकण्ट, यह सोलह नाम क्षुद्रगोखुरुके हैं।

संस्कृतभाषामे	गोक्षुर, क्षुद्रगोक्षुर ।
हिन्दीभाषामे	गोखुरु, छोटे गोखरु ।
बंगभाषामे	गोखरि ।
मराठीभाषामे	सराटे, लहान गोखरु ।
गुजरातीभाषामे	गोखरु, उभो बेठो बेजातनो छे ।
कर्णाटकी भाषामे	बेडितीसराटीदोड्डुनेग्गिलु ।
तैलिङ्गीभाषामे	पालरु ।
औत्कलीभाषामे	गोखरा ।
लैटिन्भाषामे	पेडेल्यंम्युरेक्स(बड़ा)ट्रिब्युलसटेरेसट्रीस (छोटा) Pedalum Murx Tribulus Terrestris
	ट्रिब्युलसऐलटस (सिन्धुकागोखरू) Tribulas alatus
फारसीभाषामे	तुख्मेखार खस्क ।
अरबीभाषामे	वजरुल खस्क, वकलतलखार, खसक ।

द्विविधगोक्षुरगुणा ।

स्यातामुभौ गोक्षुरकौ सुशीतलौ बलप्रदौ तौमधुरौ चबृंहणौ।
कृच्छ्राश्मरीमेहविदाहनाशनौ रसायनौ तत्र बृहद्गुणोत्तरः ॥
(राजनिघण्टु)

अर्थ-दोनाप्रकारके गोखुरु-शीतल, बलकारक, मधुर,बृंहण तथा मूत्रकृच्छ्र, पथरी, प्रमेह और दाहनाशक हैं, रसायन है,इनमे बड़ा गोखुरु अधिक गुणवाला है।

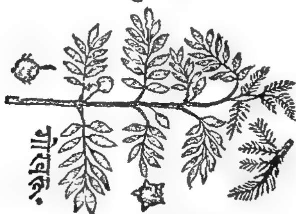
श्वेतकण्टकारीगुणाः।

लक्ष्मणा कटुका चोष्णा चक्षुष्या चाग्निदीपनी।
गर्भस्थापनकर्त्री च पारदस्य नियामिका ॥
रुचिकृत्कफवातानां नाशिनी परमा मता।
शेषाश्चास्या गुणाः प्रोक्ताः फलस्यापि च पूर्ववत् ॥

अर्थ-सफेद कटेरी-चरपरी, गरम, नेत्रोंको हितकारी, अग्निप्रदीपक, गर्भस्थापक, पारेको बाधनेवाली, रुचिकारक तथा कफ और वातका विनाश करनेवालीहै इसके शेष गुण औरइसके फलके शेष गुण कटेरीके समान जानने।व्यवहार-मूल,फल।मात्रा १ मासेकी।श्वेत कटेली रविवार पुष्यनक्षत्रमें उखाडकर खाने या नस्य लेनेसे गर्भाधान होताहै और पुंसवनमें भी काम देता है

विवरण। कटेरीके क्षुप छत्तेसे पृथ्वीपर सर्वत्र होतेहैं। फूल बैजनी और केशर पीले रंगकी होती है। पत्ते चितले और अत्यन्त कांटेदार होते है। फल चितले कच्ची अवस्थामें हरे और पकने पर पीले पडजातेहैं। दूसरी सुफेद फूलकी कटेरीभी इसीमाफिक होती है।

गोक्षुरनामानि



पलङ्कषा त्विक्षुगन्धा श्वदंष्ट्रा स्वादुकण्टका।
गोकण्टको गोक्षुरको वनशृङ्गाट इत्यपि ॥

अर्थ-पलंकषा, इक्षुगन्धा, श्वदंष्ट्रा, स्वादुकण्टका, गोकण्टक, गोक्षुरक वनशृङ्गाट, (त्रिकण्ट, स्थलशृङ्गाट, गोकण्ट, त्रिकण्टक, त्रिपुट, कण्टकफल, क्षुर, गोक्षुर, गोखुरि, विकण्टक, गोखुर, त्रिकट, त्रिक, इक्षुर, क्षुरक, भक्ष्यकण्ट, इक्षुगन्धिका, क्षुराङ्ग, श्वदंष्ट्रक, कण्टकी, भद्रकण्ट, व्यालदंष्ट्र, षडङ्ग, कण्ठी)

विवरण । गोक्षुर दो जातिके होतेहैं, एक पहाडी दूसरा देशी पहाडी गोखरुका क्षुप होताहै, फूल पीला और सफेद होता है, पत्तेभी किंचित् सफेद होते है, फलके चार कोनोंके ऊपर एक काटा होता है। देशी गोखरुका पृथ्वीके ऊपर छत्ता होता है, पत्ते चनेकी समान होते है, फूल पीला होताहै, इसके फलमे छः कांटे होते हैं। मात्रा ६ मासेकी।

पञ्चमूलगुणा ।

पञ्चमूलमिद ह्रस्वं बृंहण बलवर्द्धनम् ।
कषाय तिक्तक नातिशीतोष्णं सर्वदोषजित् ॥

अर्थ-ह्रस्वपञ्चमूल-पुष्टिकारक, बलवर्द्धक, कषायरसान्वित, तिक्तरससंयुक्त, न अत्यन्त शीतल, न अत्यन्त गरम और त्रिदोषनाशक है।

बृहत्पञ्चमूलगुणा ।

पचमूलं महत्तिक्त कषाय कफवातनुत् ।
मधुरं श्वासकासघ्नमुष्ण लघ्वग्निदीपनम् ॥

अर्थ-बृहत्पंचमूल-तिक्त, कषाय, कफवातनाशक, मधुर, श्वास निवारक, कासनाशक, उष्ण, लघु और अग्निदीपक है।

दशमूलगुणा ।

दशमूलं त्रिदोषघ्नं श्वासकासशिरोरुजः ।
तन्द्राशोथज्वरानाहपार्श्वपीडारुचीर्हरेत् ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-दशमूल-त्रिदोष, श्वास, खांसी, शिरोरोग, तन्द्रा, सूजन, ज्वर, आनाह, पार्श्वपीडा और अरुचिको हरनेवालाहै । अधिक दशमूलके गुण मिश्रवर्गमे देखो।

जीवन्तीनामानि ।

जीवन्ती जीवनी जीवा जीवदा च सुखकरी ।
रक्ताङ्गी प्राणदा भद्रा मङ्गल्या मृगराटिका ॥

अर्थ-जीवन्ती, जीवनी, जीवा, जीवदा, सुखङ्करी, रक्ताङ्गी, प्राणदा, भद्रा, मङ्गल्या, मृगराटिका (जीवनीया, स्रवा, मधुस्रवा, मङ्गल्यनामधेया, पयस्विनी, जीव्या, जीवदात्री, शाकश्रेष्ठा, जीवभद्रा, क्षुद्रजीवा, यशस्या, शृङ्गाटी, जीवपृष्ठा, काञ्जिका, शशशिम्बिका, सुपिंगला, पुत्रभद्रा, मधुश्वासा, जीवदृषा, जीवपत्री, जीवपुष्पी, जीववर्द्धिनी, यशस्करी)

अन्यच्च ।

गोक्षुरः शीतलो बल्यो मधुरो बृंहणो मतः ।
बस्तिशुद्धिकरो वृष्यः पौष्टिकश्च रसायनः ॥
अग्निदीप्तिकरः स्वादुर्मूत्रकृच्छ्राश्मरीहरः ।
दाहमेहश्वासकासहृद्रोगार्शविनाशनः ॥
बस्तिवातं त्रिदोषं च कुष्ठ शूलं च नाशयेत् ।

अर्थ-गोखरु-शीतल,बलकारक,मधुर,बृंहण,बास्तिशोधक,वीर्य्यवर्द्धक, पुष्टिकारक, रसायन, अग्निदीपक, स्वादिष्ठ, तथा मूत्रकृच्छ्र, पथरी, दाह, प्रमेह, श्वास, खासी, हृदयरोग, बवासीर, बास्तिवात, त्रिदोष, कुष्ठ और शूलको नष्ट करे है ।

अपिच ।

गोक्षुरो मूत्रकृच्छ्रघ्नो बल्यो वृष्योऽनिलापहः ॥ (राजवल्लभ)

अर्थ-गोखुरु-मूत्रकृच्छरोगनाशक, बलकारक, वीर्य्यजनक और वातविनाशक है ।

अस्य शाकगुणा ।

तिक्त गोक्षुरकं वृष्य शाकस्रोतोविशोधनम् ॥ (रा० व०)

अर्थ-गोखरुके पत्तोका शाक-तिक्तरसान्वित, वीर्यजनक और स्रोतविशोधक है ।

अस्य बीजगुणा ।

बीजं गोक्षुरक शीतं मूत्रल शोथवारणम् ।
वृष्यमायुष्करं शुक्रमेहनुत्कृच्छ्रनाशनम् ॥(आत्रेयसंहिता)

गोक्षुरके बीज-शीतल,मूत्रजनक,शोथनिवारक,वृष्य, आयुवर्द्धक तथा शुक्र, प्रमेह और मूत्रकृच्छ्रको दूर करनेवाले है ।

अस्य क्षारगुणा ।

क्षारस्तु गोक्षुराणां तु मधुरः शीतलो मत. ।
स्रोतोविशोधनश्चैव वातघ्नो वृष्य एव च (नि० र०)

अर्थ-गोखुरुओका खार-मधुर,शीतल, स्रोतोविशोधन,वातनाशक और वीर्य्यवर्द्धक है ।

विवरण। गोक्षुर दो जातिके होतेहै, एक पहाडी दूसरा देशी पहाडी गोखरुका क्षुप होताहै, फूल पीला और सफेद होता है, पत्तेभी किंचित् सफेद होते है, फलके चार कोनोके ऊपर एक काटा होता है। देशी गोखरुका पृथ्वीके ऊपर छत्ता होता है,पत्ते चनेकी समान होते है, फूल पीला होताहै, इसके फलमे छः काटे होते है। मात्रा ६ मासेकी।

पञ्चमूलगुणा।

पञ्चमूलमिदं ह्रस्वं बृंहणं बलवर्द्धनम्।
कषायं तिक्तकं नातिशीतोष्णं सर्वदोषजित्॥

अर्थ-ह्रस्वपञ्चमूल-पुष्टिकारक, बलवर्द्धक,कषायरसान्वित,तिक्तरससंयुक्त,न अत्यन्त शीतल,न अत्यन्त गरम और त्रिदोषनाशक है।

बृहत्पंचमूलगुणा।

पचमूलं महत्तिक्तं कषायं कफवातनुत्।
मधुरं श्वासकासघ्नमुष्णं लघ्वग्निदीपनम्॥

अर्थ-बृहत्पंचमूल-तिक्त, कषाय, कफवातनाशक, मधुर, श्वास निवारक, कासनाशक, उष्ण, लघु और अग्निदीपक है।

दशमूलगुणा।

दशमूलं त्रिदोषघ्नं श्वासकासशिरोरुजः।
तन्द्राशोथज्वरानाहपार्श्वपीडारुचीर्हरेत्॥ (भा०प्र०)

अर्थ-दशमूल-त्रिदोष, श्वास, खांसी, शिरोरोग, तन्द्रा, सूजन, ज्वर, आनाह, पार्श्वपीडा और अरुचिको हरनेवालाहै। अधिक दशमूलके गुण मिश्रवर्गमे देखो।

जीवन्तीनामानि।

जीवन्ती जीवनी जीवा जीवदा च सुखंकरी।
रक्ताङ्गी प्राणदा भद्रा मङ्गल्या मृगराटिका॥

अर्थ-जीवन्ती, जीवनी, जीवा, जीवदा, सुखङ्करी, रक्ताङ्गी, प्राणदा, भद्रा, मङ्गल्या, मृगराटिका (जीवनीया, स्रवा,मधुस्रवा, मङ्गल्यनामधेया, पयस्विनी, जीव्या, जीवदात्री, शाकश्रेष्ठा,जीवभद्रा, क्षुद्रजीवा, यशस्या, शृङ्गाटी, जीवपुष्ठा, काञ्जिका, शशशिम्बिका, सुपिंगला, पुत्रभद्रा, मधुश्वासा, जीववृपा, जीवपत्री, जीवपुष्पी, जीववर्द्धिनी, यशस्करी)

संस्कृतभाषामें	जीवन्ती ।
हिन्दीभाषामें	जीवन्ती (डोडी)
बंगभाषामें	जीवई, जीयाती, जीवन्ती ।
मराठीभाषामें	जीवंती ।
गुजरातीभाषामें	राडारुडी, वाडंटी ।
कर्णाटकीभाषामें	हिरियाहालि ।

अस्या गुणाः ।

जीवन्ती मधुरा शीता रक्तपित्तानिलापहा ।
क्षयदाहज्वरान्हन्ति कफवीर्य्यविवर्द्धिनी॥(रा०नि०)

अर्थ-जीवन्ती-मधुर, शीतल तथा रक्त, पित्त, वात, क्षय, दाह और ज्वरका नाश करनेवाली है तथा कफ और वीर्य्यको बढाने-वाली है ।

अन्यच्च ।

चक्षुष्या सर्वदोषघ्नी जीवन्ती मधुरा हिमा॥(आ०सं०)

अर्थ-जीवन्ती-नेत्रोंको हितकारी, त्रिदोषनाशक, मधुर और शीतल है ।

अपिच ।

जीवन्ती श्वासकासघ्नी स्वर्य्या च क्षयनाशिनी॥(रा०नि०)

अर्थ-जीवन्ती-श्वास और खांसीको दूर करनेवाली है, स्वरको श्रेष्ठ करनेवाली है और क्षयरोगका क्षयकरनेवाली है ।

अन्यच्च ।

जीवन्ती शीतला माध्वी स्निग्धा स्वाद्वी रसायनी ।
चक्षुष्या ग्राहका बल्या लघ्वी धातुविवर्द्धिनी ॥
वृष्या कफकरी सूतबंधिनी रक्तपित्तहा ।
वात क्षय ज्वर दाह नेत्ररोग त्रिदोषकृत् ॥
रक्तदोष भूतबाधां पित्तं चैव विनाशयेत् ।
फलं चास्या धातुवृद्धिकारकं मधुरं गुरु ॥

अर्थ-जीवन्ती-शीतल, मधुर, स्निग्ध,स्वादिष्ठ, रसायन,नेत्रोंको हितकारी, मलरोधक, बलकारक, हलकी, धातुवर्द्धक, वीर्यवर्द्धक, कफकारक, पारेको बांधनेवाली तथा रक्तपित्त, वात, क्षय, ज्वर,

दाह, नेत्ररोग, त्रिदोष, रक्तविकार, भूतबाधा और पित्तका नाशकरे इसका फल-धातुवर्धक मधुर और भारी है ।

बृहज्जीवन्तीनामानि ।

जीवन्त्यन्या बृहत्पूर्वा पुत्रभद्रा प्रियंकरी ।
मधुरा जीवपुष्पा च बृहज्जीवा यशस्करी ॥

अर्थ-बृहज्जीवन्ती, पुत्रभद्रा, प्रियंकरी, मधुरा, जीवपुष्पा, बृहज्जीवा, यशस्करी ।

संस्कृतभाषामे	बृहज्जीवन्ती ।
हिन्दीभाषामें	बडीजीवन्ती ।
वंगभाषामे	भडजीवइ ।
गुजरातीभाषामे	मोटीखरखोडी तृणधारनी ।
कर्णाटकीभाषामे	किरियहाले।
इंग्रेजीभाषामे	शार्शाभरला । Sasapraila

अस्या गुणा ।

एवमेव बृहत्पूर्वा रसवीर्य्यबलान्विता ।
भूतविद्राविणी ज्ञेया वेगाद्रसनियामका ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ-बडी जीवन्ती-रसवीर्य्य और बलमे जीवन्तीके समान है भूतविद्रावक और पारेको बाधनेवाली है ।

स्वर्णजीवन्तीनामानि ।

हेमपूर्णा स्वर्णलता स्वर्णजीवन्तिका च सा ।
हेमवल्ली हेमलता हेमक्षीरी सुमङ्गला ॥

हेमपूर्णा, स्वर्णलता, स्वर्णजीवन्तिका, हेमवल्ली, हेमलता, हेमक्षीरी, सुमङ्गला (हेमाह्वा, स्वर्णजीवन्ती, स्वर्णजीवा, हेमजीवन्ती, तृणग्रन्थि, हिमाश्रया, स्वर्णपर्णा, सुजीवन्ती, सुपर्णिका, हेमपुष्पी, हेमा, हेमवती, सौम्या)

संस्कृतभाषामे	स्वर्णजीवती ।
हिन्दीभाषामे	पीलीजीवन्ती, सुनहरी जीवन्ती ।
वंगभाषामे	स्वर्णजीवन्ती ।
मराठी भाषामे	हरणवेल, हेमहरणवेल ।
गुजराती भाषामें	खरखोडी, मीठीखरखोडी ।

कर्णाटकीभाषामे	होणहाले।
लैटिन्भाषामे	ड्रेजिआवोल्युविलिस्।

अस्या गुणाः।

स्वर्णजीवन्तिका वृष्या चक्षुष्या मधुरा तथा।
शिशिरा वातपित्तासृग्दाहजिद्बलवर्द्धिनी ॥ (रा० नि०)

अर्थ-स्वर्णजीवन्ती-वीर्य्यवर्द्धक,नेत्रोंको हितकारी, मधुर,शीतल तथा वात,रक्त,पित्त और दाहको दूर करनेवालीहै और बलवर्द्धक है।

तिक्तजीवन्तीनामानि।

तिक्तजीवन्तिका तिक्ता भद्रा तिक्तप्रियङ्करी।

अर्थ-तिक्तजीवन्तिका, तिक्तभद्रा, तिक्तप्रियङ्करी (विषमुष्टि, केशमुष्टि, सुमुष्टि, रणमुष्टिक, डोडीक्षुप)

संस्कृतभाषामे	विषमुष्टि, तिक्तजीवन्ती।
हिन्दीभाषमे	डोडी।
मराठीभाषामे	विषदोडी।
गुजरातीभाषामे	कडवोखरखोडो।
कर्णाटकीभाषामे	दोडीकर्गसगे।

अस्या गुणाः।

तिक्तजीवन्तिका वातकफाजीर्णज्वरापहा।
शोफघ्नी विषहन्त्री च लेपादाखुविषापहा ॥

अर्थ-तिक्तजीवन्ती-वात, कफ, अजीर्ण, ज्वर, सूजन और विषविनाशक है। इसका लेप करनेसे मूषेका विष दूर होता है।

अन्यच्च।

विषडोडी भवेत्तिक्ता कट्वी चाग्निप्रदीपनी।
मलस्तम्भकरी ग्राही पित्तलोष्णास्रपित्तजित् ॥
लघ्वी वृष्या च रुच्या च दाहकारी कफापहा।
कण्ठरुग्वातगुल्मार्शःकृमिकुष्ठविषापहा ॥
श्वासप्रमेहाखुविषनाशिनी परिकीर्तिता।

अर्थ-डोडी-तिक्त,कटु,अग्निप्रदीपक,मलस्तम्भक,ग्राही,पित्तजनक, गरम,रक्तपित्तनाशक, हलकी, वीर्य्यजनक, रुचिकारक,दाहकारक,

नाशक तथा कण्ठरोग, वात, गुल्म, बवासीर, कृमि, कुष्ठ, विष, श्वास, प्रमेह और मूषेक विषको दूर करनेवाली है।

विषमुष्टिगुणा ।

विषमुष्टिः कटुस्तिक्तो दीपनः कफवातनुत् ।
कण्ठामयहरो रुच्यो रक्तपितार्तिदाहनुत् ॥

अर्थ-विषमुष्टि-चरपरी, कडवी, दीपन, कफवातविनाशक, कण्ठरोगनाशक, रुचिकारी तथा रक्तपित्त और दाहको दूर करे है। कही विषमुष्टि विषहिन्दुक (कुचले) कोभी कहते हैं परंतु यहां यह विषडोडीकाही वाचक है

विवरण। जीवन्ती अनेक जातिकी होतीह, इसकी बल चलतीहै, फल डोडोमे आते हे इसमे आककी समान दूध निकलताहै।

मुद्गपर्णीनामानि ।

मुद्गपर्णी काकमुद्गा सहा च शिम्बिपर्णिका ।
शिम्बिपर्णी क्षुद्रसहा शिम्बी मार्ज्जारगन्धिका ॥

अर्थ-मुद्गपर्णी, काकमुद्गा, सहा, शिम्बिपर्णिका, शिम्बिपर्णी, क्षुद्रसहा, शिम्बी, मार्ज्जारगन्धिका (वनजा रिङ्गिणी, ह्रस्वा, शूर्पपर्णी, कुरङ्गिका, कौशिला, वनोद्भवा, वनमुद्गा, आरण्यमुद्गा, वन्या, करञ्जिका)

संस्कृतभाषामे	मुद्गपर्णी ।
हिन्दीभाषामे	मुगवन ।
बंगलाभाषामे	मुगानि ।
मराठीभाषामे	रानमूग ।
गुजरातीभाषामे	अडवाड मगवल्य ।
कर्णाटकीभाषामें	कोहसरु ।
तैलिङ्गीभाषाम	कारूपेसारा ।
लैटिन्भाषामे	फेजियोलस ट्रायला बेटस् । Phasiolons Trilobetus

अस्या गुणाः ।

मुद्गपर्णी हिमा रूक्षा तिक्ता स्वाद्वी च शुक्रला ।
चक्षुष्या क्षयशोथघ्नी ग्राहिणी ज्वरदाहनुत् ॥
दोषत्रयहरी लघ्वी ग्रहण्यर्शोतिसारजित् । (भा० प्र०)

अर्थ-मुगवन-शीतल, रूखी, कडवी, स्वादिष्ठ, शुक्रजनक, नेत्रोको हितकारी क्षयघ्न, शोथनाशक, मलरोधक, तथा ज्वर, दाह और

त्रिदोषनाशक, हलकी और संग्रहणी, बवासीर और अतिसारको दूर करनेवाली है ।

अन्यच्च ।

मुद्गपर्णी हिमा कासवातरक्तक्षयापहा ।
पित्तदाहज्वरान्हन्ति चक्षुष्या शुक्रवृद्धिकृत् ॥ (रा नि)

अर्थ-मुगवन-शीतल तथा खासी, वातरक्त, क्षय, पित्त, दाह और ज्वरको दूर करनेवाली है, नेत्रोंको हितकारी और वीर्य्यवर्द्धक है ।

अपिच ।

मुद्गपर्णी हिम कासवातरक्तज्वराञ्जयेत् ।
स्वाद्वी लघ्वी त्रिदोषघ्नी ग्रहणी कृमिनाशिनी ॥
अतिसारकफार्शोघ्नी पित्तनाशकरी मता ॥
रक्तस्तम्भकरा रूक्षा चोक्ता वैद्यैर्निघण्टुके ॥

अर्थ- मुगवन-शीतल तथा खासी, वात, रक्त और ज्वरका नाश करे है । स्वादिष्ठ, हलकी, त्रिदोषनाशक तथा संग्रहणी, कृमि, अतिसार, कफ, बवासीर और पित्तको दूर करेहै । रक्तस्तम्भक और रूखा है ।

विवरण । मुद्गपर्णी मूगकी समान वेल होतीहै, । पत्ते मूगकी समान हरे होतेहैं, फूल पीले रंगके होते है और फलीभी मूगकी समान आती है ।

माषपर्णीनामानि ।

माषपर्णी कृष्णवृन्ता पर्णिनी पाण्डुलोमशा ।
ऋषिप्रोक्ता हयपुच्छी काम्बोजी सिंहपुच्छिका ॥

अर्थ-माषपर्णी, कृष्णवृन्ता, पर्णिनी, पाण्डुलोमशा, ऋषिप्रोक्ता, हयपुच्छी, काम्बोजी, सिंहपुच्छिका (महासहा, सिंहपुच्छी, पाण्डुलोमशपर्णिनी, पाण्डुलोमा, आर्द्रमाषा, मांसमाषा, मङ्गल्या, हयपुच्छिका, हंसमाषा, अश्वपुच्छी, माषपर्णिका, कल्याणी, वज्रमूली, शालिपर्णी, विसारणी, आत्मोद्भवा, बहुफला, स्वयम्भू, सुलभा, घना, सिंहविन्ना, विशम्बिका, सूर्यपर्णी, पाण्डुरा)

संस्कृतभाषामें	माषपर्णी ।
हिन्दीभाषामें	मषवन, बनउर्दी, जंगलीउडद ।
बंगभाषामें	माषाणी ।

मराठीभाषामे रानउडीद।
गुजरातीभाषामे अडवाड, अडदवेल।
कर्णाटकीभाषामे रानोडिड्डुका उद्दु।
तैलिङ्गभाषामे कारुमीनुरु।
लैटिन्‌भाषामे ग्रेंजिआमड्रासपटना। Grangemadrass Patanu

अस्या गुणाः।

माषपर्णी हिमा तिक्ता रूक्षा शुक्रबलासकृत्।
मधुरा ग्राहिणी शोथवातपित्तज्वरास्रजित्॥ (भावप्रकाश)

अर्थ–मषवन–शीतल, कडवी, रूखी, शुक्रजनक, कफकारक, मधुर, ग्राही तथा सूजन, वात, पित्त, ज्वर और रुधिरविकारको दूर करे है।

अन्यच्च।

माषपर्णी रसे तिक्ता वृष्या दाहज्वरापहा।
शुक्रवृद्धिकरी बल्या शीतला पुष्टिवर्द्धिनी॥ (रा० नि०)

अर्थ–मषवन–तिक्तरसान्वित, वृष्य, दाह, ज्वरनाशक, शुक्रवर्द्धक, बलकारक, शीतल और पुष्टिवर्द्धक है।

अपिच।

माषपर्णी महावृष्या बृंहणी बलवर्णकृत्।
स्तन्यकेशहिता स्निग्धा वातपित्तापहा हिमा॥ (शो० नि०)

अर्थ–मषवन–महावृष्य, पुष्टिकारक, बलकारक, बलवर्द्धक, वर्णको सुन्दरतादायक, स्तनोमे दूध उत्पन्न करनेवाली, केशोको उत्पन्न करनेवाली, स्निग्ध, वातपित्तनाशक और शीतल है।

अन्यच्च।

माषपर्णी शुक्रवृद्धिकरा वृष्या च तिक्तका।
बलदा पौष्टिका शीता रूक्षा कफकरी मता॥
रक्तरुड्नाशिनी ग्राही त्रिदोषज्वरपित्तहा।
रक्तपित्त क्षयं कास वात शोष च दाहकम्॥
वातपित्तं रक्तदोष नाशयेदिति कीर्त्तितम्।

अर्थ–मषवन–शुक्रवर्द्धक, वृष्य, कडवी, बलदायक, पुष्टिकारक, शीतल, रूखी, कफकारक, रक्तरोगनाशक, मलरोधक तथा त्रिदोषज्वर, पित्त, रक्तपित्त, क्षय, खांसी, वात, शोष, दाह, वातपित्त और रुधिरविकारको हरनेवाली है। माषपर्णीकी वेल उडदकी समान होतीहै। व्यवहार–सर्वांग। मात्रा २ मासेकी। माषपर्णी और मुद्गपर्णी जो समतल देशमे लीजाती है उसके नीचे साधारण जड होती है परन्तु वर्फानी

पहाडोपर होनेवाली मापपर्णी और मुद्गपर्णीके नीचे सफ़ेद मूली-सी होती है वह स्वादमे मीठी आकारमे छोटी मूलीके समान होती है पत्र आदि सब माप और मूंगके समानही होतेहै ।

एरण्डनामानि ।



एरण्डो व्याघ्रपुच्छः स्याच्चित्रकस्त्रिपुटीफलः ।
पञ्चांगुल' शूलशत्रुर्वातारिर्दीर्घदन्तकः ॥

अर्थ-एरण्ड, व्याघ्रपुच्छ, चित्रक, त्रिपुटीफल, पञ्चांगुल, शूलशत्रु, वातारि, दीर्घदन्तक (रुवूक, गन्धर्वहस्तक, उरुवुक, रुवुक, चञ्चुक, मण्ड, वर्द्धमान, व्यडम्बक, एरण्डक, हस्त, अमण्डल, तुच्छद्रु, व्रणहा, त्रिपुटी, व्याघ्रदल, उरुवूक, रुवूक, रुवुक, रूवक, वुक, अमण्ड, आमण्ड, व्यडम्बन, कान्त, तरुण, शुक्ल, दीर्घपत्रक (दीर्घदण्डक) चित्रबीज और स्नेहमद्र)

रक्तैरण्डनामानि ।



रक्तो परो हस्तिकर्णो व्याघ्रो व्याघ्रकरो रुवुः।
त्रिबीजश्च रुवूकश्च चारुरुत्तानपत्रकः॥

अर्थ-रक्तैरण्ड, हस्तिकर्ण, व्याघ्र, व्याघ्रकर, रुवु, त्रिबीज, रुवूक, उत्तानपत्रक, (उरुबुक, नागकर्ण, चंचु, करपर्ण, पाचन, स्निग्ध, व्याघ्रबल, रक्तक, चिरवीर्य्य, ह्रस्वैरण्ड और व्याघ्रपुच्छ)

स्थूलैरण्डनामानि।

स्थूलैरण्डो महैरण्डो महापञ्चाङ्गुलादिकः॥

अर्थ-स्थूलैरण्ड, महैरण्ड और महापञ्चाङ्गुल।

हिन्दीभाषामे	अण्ड,सफेद अण्ड,लाल अण्ड,बडा अण्ड।
वंगलाभाषामे	भेराण्डा,शादारेडी,लालभेण्डा,वडभेराण्डा।
मराठीभाषामे	एरंड, एरण्डोली।
गुजरातीभाषामें	धोलोएरडो, रातोएरंडो।
कर्णाटकीभाषामे	एरंडुआंडलके।
तैलिङ्गीभाषामे	आमुडामु, आमिदपुचेट्टु।
इङ्ग्रेजीभाषामे	कास्टर ओईल प्लांट Casteroil Plant Castor seed कास्टरसीड्
लैटिन्भाषामे	रिसिनसंकॉम्युनिस् Ricinus Communis
फारसीभाषामे	वेदजीर, सुर्खवेदजीर।
अरबीभाषामे	खिरवा, हबुलखिरुवा।
तुरकीमे	करचक।

द्विविधैरण्डगुणा।

ऐरण्डयुग्मं मधुरमुष्णं गुरु विनाशयेत्।
शूलशोथकटीवस्तिशिरःपीडोदरज्वरान्॥
वध्मश्वासकफानाहकासकुष्ठाममारुतान्।

अर्थ-दोनोप्रकारके अण्ड-मधुर, उष्ण, भारी तथा शूल, सूजन, कमर, वस्ति (पेडू) और शिरोरोग, उदर, ज्वर, बद, श्वास, कफ, अफारा, कास, कुष्ठ और आमवातनाशक है।

अस्य पत्रगुणाः।

एरंडपत्रं वातघ्नं कफक्रिमिविनाशनम्।
मूत्रकृच्छ्रहर चापि पित्तरक्तप्रकोपनम्॥

वातार्यग्रदलं गुल्मवस्तिशूलहरं परम् ।
कफवातक्रमीन् हन्ति वृद्धिं सप्तविधामपि ।

अर्थ-अण्डके पत्ते-वातनाशक, कफघ्न, क्रिमिविनाशक, मूत्रकृच्छ्र रोगको हरनेवाले और पित्तरोगको, कुपित करनेवाले हैं । अण्डके आगेके दल अर्थात् कोमल पत्ते-वात, गुल्म, वस्ति, शूल, कफ, वात, क्रामि और सातप्रकारकी अण्डवृद्धिको दूर करे हैं ।

अस्य फलगुणाः ।

एरण्डफलमत्युष्णं गुल्मशूलानिलापहम् ।
यकृत्प्लीहोदरार्शोघ्नं कटुकं दीपनं परम् ॥

अर्थ-अण्डके फल-अत्यन्त उष्ण, चरपरे, अग्निको दीपन करनेवाले तथा गुल्म, शूल, वात, यकृत, प्लीहा, उदररोग और बवासीरको दूर करे हैं ।

अस्य मज्जागुणाः ।

एतन्मज्जा च विड्भेदी वातश्लेष्मोदरापहा ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-इसकी मींग-मलभेदक तथा वात, कफ और उदररोगका नाश करे हैं ।

अस्य मूलगुणाः ।

एरण्डमूलं शूलघ्नं वृष्यं वातकफापहम् ॥ (शो० नि०)

अर्थ-इसकी जड-शूल, वात और कफको निर्मूल करे हैं, तथा वीर्य्यजनक है ।

अस्य पुष्पगुणाः ।-

पुष्पं हन्त्यस्य वर्ध्मानिलकफगुदजान् गुल्मशूलोर्ध्ववातान् ।

अर्थ-इसका फूल-वर्ध्म (बद), वात, कफ, गुदजरोग, गुल्म, शूल और ऊर्ध्ववातको दूर करे है ।

श्वेतैरण्डगुणाः ।

श्वेतोरुवूकस्तु कटुस्तीक्ष्णश्चोष्णो गुरुः स्मृतः ।
मधुरस्तिक्तको वृष्यो गुरुः स्वादुः सरः स्मृतः ॥
वातोदावर्तकफहृज्ज्वरकासोदरापहः ।
शोथशूलकटीवस्तिशिरोरुङ्नाशनः स्मृतः ॥

श्वासानाहकुष्ठवर्ध्मगुल्मप्लीहामपित्तहा ।
प्रमेहोष्मावातरक्तमेदान्त्रादधनप्रणुत् ॥
अस्य भेदो बृहत्स्थूलो रसे पाके गुणाधिकः

अर्थ-सफेद अण्ड-कटु, तीक्ष्ण, गरम, भारी, मधुर, कडवा, वृष्य, भारी, स्वादिष्ठ और दस्तावर है। तथा वात, उदावर्त्त, कफ, ज्वर, कास, उदर, सूजन, शूल और कमर, वस्ति, मस्तकशूल, श्वास, अफारा, कोढ, वध्मरोग (बद), गोला, प्लीहा, आमपित्त, प्रमेह, उष्णता, वातरक्त, मेद और अंत्रवृद्धिरोगका नाश करेहै । इसका भेद-स्थूल एरण्ड है और वह इसकी अपेक्षा रसमे और पाकमे अधिक गुणवाला है।

रक्तैरण्डगुणा ।

रक्तोरुबूकस्तुवरो रसे कटुर्लघुः स्मृतः ।
तिक्तो वातकफश्वासकासकृम्यशवर्ध्महा ॥
रक्तदोषं पाण्डुरुजं भ्रांत्यरोचकनाशनः ।
प्रायस्त्वन्ये गुणाश्चास्य श्वेतवच्च समीरिताः ॥
पर्णद्वयोस्तु सप्रोक्तं वातपित्तस्य वर्धकम् ।
मूत्रकृच्छ्रं वातकफं कृमींश्चैव विनाशयेत् ॥
एतयोश्चांकुरो गुल्मवस्तिशूलकफक्रिमीन् ।
वातं सप्तप्रकारं तु वृद्धिरोग विनाशयेत् ॥
पुष्पं तु वातकफहृत्पित्तमूत्ररुजापहम् ।
रक्तपित्त वर्धयति फलमज्जाग्निदीपनी ॥
अत्युष्णा कटुका स्वादुः पटुः स्निग्धा सरा स्मृता ।
मलभेदकरा लघ्वी गुल्मशूलकफापहा ॥
यकृद्वातोदरप्लीहावातार्शानां विनाशिनी ।

अर्थ-लाल अण्ड-कषेला, रसमे चरपरा, हलका, कडवा, वात, कफ, श्वास, कास, कृमि, बवासीर, बद, रुधिरविकार, पाण्डुरोग, भ्रान्ति और अरुचिको दूर करे है। शेष गुण सफेद अण्डकी समान जानने। इन दोनोके पत्ते-वातपित्तकारक तथा मूत्रकृच्छ्र, वायु, कफ,

और कृमिरोगका नाश करे हैं। इसके कोमल अंकुर-गुल्म, वस्ति, शूल, कफ, कृमि, वायु और सात प्रकारके वृद्धिरोगको दूर करेहैं। इसके फूल-वात, कफ, पित्त आर मूत्रकृच्छ्रादिरोगोको दूर करे हैं तथा रक्तपित्तको बढावे हैं। इसकी मींग-अग्निदीपक, अत्यन्त उष्ण, कटु, स्वादिष्ठ, खारी, स्निग्ध, सारक, मलभेदक, लघु तथा गुल्म, शूल, कफ, यकृत, वात, उदररोग, प्लीहा और वादीकी ववासीरको दूर करे है।

अस्य तैलगुणा।

एरण्डतैलं मधुरं गुरु श्लेष्माभिवर्द्धनम्।
वातासृग्गुल्महृद्रोगजीर्णज्वरहरं परम् ॥ (राजवल्लभ)

अर्थ-अण्डीका तेल-मधुर, भारी, कफवर्द्धक तथा वातरक्त, गुल्म, हृद्रोग और जीर्णज्वरका नाश करे है।

अपिच।

एरण्डतैल मधुर सरं चोष्णं गुरु स्मृतम्।
अरुच्यं च स्मृत स्निग्धं तिक्त वध्मोंदरापहम् ॥
गुल्मवातकफांश्चैव शोथञ्च विषमज्वरम्।
कटिपृष्ठकोष्ठगुह्यशूलनाशकर परम् ॥

अर्थ-अण्डीका तेल-मधुर, दस्तावर, गरम, भारी, अरुचिकारक, स्निग्ध, तिक्त तथा बद, उदर, गुल्म, वात, कफ, सूजन, विषमज्वर और कमर, पीठ, कोष्ठ और गुदा आदिके शूलको निर्मूल करे है।

अन्यच्च।

एरण्डतैलं मधुरमुष्ण तीक्ष्णञ्च दीपनम्।
रसे कटु कषायञ्च सूक्ष्मं स्रोतोविशोधनम् ॥
योनिशूलविशोधनमारोग्यमेधाकान्तिकृत्।
स्मृतिस्थैर्य्यं बलकरं वृष्य मधुरमेव च ॥
वयःस्थापनकं हृद्यं वातश्लेष्महर परम्।

अर्थ-अण्डीका तेल-मधुर, उष्ण, तीक्ष्ण और जठराग्निप्रदीपक है। कटुरसान्वित, कषेला, सूक्ष्म और स्रोतविशोधक है। योनि(वीर्य्य)

शूलको शोधनेवाला है। आरोग्यता, मेधा और कान्ति करनेवाला है। स्मरणशक्ति बढानेवाला, स्थिरताकारक, बलजनक, मधुर और वीर्यको उत्पन्न करैहै । अवस्थाको स्थापन करनेवाला है, हृदयको हितकारी तथा वात और कफको दूर करैहै ।

अपिच ।

एरण्डतैलं कृमिदोषनाशनं वातामयघ्नं सकलाङ्गशूलहृत् ।
कुष्ठापहं स्वादु रसायनोत्तम पित्तप्रकोपं कुरुतेऽतिदीपनम् ।

अर्थ-अण्डीका तेल-कृमिरोगनाशक, वातरोगनिवारक, सर्व प्रकारके शूलको निर्मूल करनेवाला, कुष्ठघ्न, स्वादिष्ठ, रसायनमे श्रेष्ठ, पित्तको कुपित करनेवाला और अग्निको दीपन करनेवाला है। आगे इसके गुण तैलवर्गमे देखो ।

विवरण-इसके वृक्ष प्रायः खेतीकी वाडपर लगाये जाते है, इसकी लाल और सफेद दो जाती है, इसके फलपर कोमल काटे होते है, फलमेसे तीन बीज निकलतेहै, यह फल ऊपर चित्रित होतेहै और बीजके भीतर मीग सफेद निकलतीहै उस मीगके भीतर तेल होता है उस मीग अथवा तेलको खानेसे जुल्लाब होता है । इसके पत्तोको मस्तकपर बांधनेसे माथेका शीत दूर होताहै । व्यवहार-मूल, पत्ते, छाल, मूलकीछाल, फल, फूल, मीग और तैल ।

अर्कनामानि ।





क्षीरदलं शुकफलं तूलार्कश्च सदासुमः ॥

अर्थ-क्षीरदल, शुकफल, तूलफल, अर्क, सदासुम, (प्रताप, क्षीरकाण्डक, विक्षीर, भास्कर, हरिदश्व, विवस्वान्, अहर्मणि, अहर्बान्धव, अर्यमा, अहर्पति, उष्णरश्मि, भानु, विकर्त्तन, गणरूप, मन्दार, प्रभाकर, विभाकर, दिवाकर, विभावसु, विवस्वान्, सप्ताश्व, सविता, सूतु, आस्फोत, वसुक, हिमाराति, पुच्छी, प्रताप, क्षीरी, खर्ज्जूघ्न, शीतपुष्पक, जम्भल, क्षीरपर्णी, विकीरण, सदापुष्प, सूर्याह्व, आस्फोतक, भास्कर, आस्फोटक, रवि, कीरतनुफल और क्षीराङ्ग)

श्वेतार्कनामानि ।

श्वेतार्कोऽलर्कराजाऽर्कौ मन्दारो गणरूपकः ॥

अर्थ-श्वेतार्क, अलर्क, राजार्क, मन्दार, गणरूपक, (तपन, श्वेत, दीर्घपुष्प, शिवाह्वय, प्रताप, शीतार्कक, शर्करापुष्प, काष्ठील, वसुक, सदापुष्प, वृत्तमल्लिका, वेधा, शम्भु, गणरूपी, रक्तार्क, बिम्बोर, सदापुष्पी, रूपिका, आदित्यपुष्पिका, दिव्यपुष्पिका, अर्क, रक्तपुष्प और शुक्रफल)

हिन्दीभाषामे	लाल आक, सफेद आक, मंदार ।
बंगभाषामे	आकन्द श्वेतआकंद ।
मराठीभाषामें	रुई, पांढरीरुई ।
कर्णाटकीमें	पक्के, मंदारपक्के ।
तैलङ्गीभाषामे	नीलजिल्लेडेघोली, तेलाजिल्लीडे, जिल्लेट्टचेट्टु,
गुजरातीभाषामे	आकडो, भोलोआकडो ।
इंग्रेजीभाषामे	जाइजेंटिक स्वेलोवर्ट। Gigantic Swallow wort
लैटिन्भाषामे	कैलोट्रोपिस जाइजैंटिका। Calotropis Gigantica
	कैलोट्रोपिस प्रोसीरा । Calotopis procera
फारसीभाषामे	खुर्क, दुध ।
अरबीभाषामे	उषर ।

अर्कगुणाः ।

अर्कः क्रमिहरस्तीक्ष्णः सरोर्शःकफनाशनः ।
तत्पुष्पं क्रिमिदोषघ्न हन्ति शूलोदराणि च ॥(धन्व०नि०)

अर्थ-आक-क्रमिनाशक, तीक्ष्ण, दस्तावर, बवासीर और कफनाशक है। इसके फूल क्रमिदोष, शूल और उदररोगका नाशकरे है

रक्तार्कपुष्पं मधुरं सतिक्त कुष्ठक्रिमिघ्नं कफनाशनं च ।
आखोर्विषं हंति च रक्तपित्तं सग्राहि गुल्मे श्वयथौ हितं तत् ॥
अर्थ-लाल आकका फूल-मधुर, तिक्त, ग्राही तथा कुष्ठ, कृमि, कफ, मूषेका विष, रक्तपित्त, गुल्म और सूजनको दूर करे है।

अर्कक्षीरगुणा ।

क्षीरमर्कस्य तिक्तोष्णं स्निग्धं सलवण लघु ।
कुष्ठगुल्मोदरहर श्रेष्ठमेतद्विरेचनम् ॥ (भा० प्र०)
अर्थ-आकका दूध-तिक्त, उष्ण, स्निग्ध,लवणरससंयुक्त, हलका, कोढ, गुल्म तथा उदररोगको दूर करे, इसका विरेचन देना श्रेष्ठ है, अर्थात् इसके द्वारा दस्त उत्तम प्रकारसे होते है ।

अर्कमूलस्य त्वग्गुणा ।

अर्कमूलत्वचा स्वेदकरी श्वासनिबर्हणी ।
उष्णा च वामिका चैव ह्युपदंशविनाशिनी ॥
अर्थ-आकके जडकी छाल-पसीनेको उत्पन्न करे, श्वासको दूर करे, गरम है और उपदंशरोगका नाश करे है।

अर्कस्तु कटुरुष्णश्च वातजिद्वह्निदीपकः ।
शोफव्रणहरः कण्डूकुष्ठक्रिमिविनाशनः ॥ (रा० नि०)
अर्थ-आक-कटु, उष्ण, वातनाशक, अग्निदीपक तथा शोफ, व्रण, कण्डू, कुष्ठ और कृमिरोगका नाश करे है ।

द्विविधार्कगुणा ।

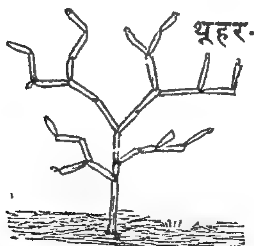
अर्कद्वयं सरं वातकुष्ठकण्डूविषव्रणान् ।
निहंति प्लीहगुल्मार्शःश्लेष्मोदरयकृत्कृमीन् ॥
अलर्ककुसुम वृष्य लघुदीपनपाचनम् ।
अरोचकप्रसेकार्शःकासश्वासनिवारणम् ॥
अर्थ-दोनो प्रकारके आक-रेचक तथा वात,कोढ,कण्डू,विष,व्रण, प्लीहा, गुल्म, बवासीर, श्लेष्म, उदररोग, यकृत् और कृमि रोगको दूर करे है। सफेद आकका फूल-बलकारक, हलका, अग्निको दीपन करे, पाचक, अरुचि, प्रसेक (मुखसे लारका गिरना),बवासीर कास और श्वासको दूर करे है ।

श्वेतमन्दारकोऽत्युष्णस्तिक्तो मलविशोधनः ।
मूत्रकृच्छ्रव्रणान् हन्ति कृमीनत्यन्तदारुणान् ॥
राजार्कः कटुतिक्तोष्णः कफमेदोविषापहः ।
वातकुष्ठव्रणान् हंति शोफकण्डूविसर्पनुत् ॥

अर्थ-सफेद मन्दार-अत्यन्त उष्ण, तिक्त, मलशोधक तथा मूत्रकृच्छ्र, व्रण और अत्यन्त दारुण क्रिमिरोगको दूर करेहै। राजार्क कटु, तिक्त, उष्ण तथा कफ, मेद, विष, वातकुष्ठ, व्रण, शोफ, कण्डू और विसर्परोगका नाश करे है ।

विवरण । आकके वृक्ष जंगल और भूडोमे अधिकतासे होतेहै । लकडी निःसार होतीहै, पत्ते वडके समान होतेहै, फल तोतेकी समान । उसके भीतर तीन रुई निकलती है, आकके पंच अङ्गका क्षार करतेहैं, वो क्षार कफको दूर करेहै । इसके पत्तोको गरम कर पेटपर बाधनेसे पेटका दर्द दूर होताहै ।

स्नुहीनामानि ।



स्नुही समन्तदुग्धा च नागद्रुबहुदुग्धिका ॥
महावृक्ष सुधा वज्रा शीहुण्डो दण्डवृक्षकः ॥(शो०नि०)

अर्थ-स्नुही, समन्तदुग्धा, नागद्रु, बहुदुग्धिका, महावृक्ष, सुधा, वज्रा शीहुण्डा, दण्डवृक्षक, (सीहुण्ड, सिहुण्ड, स्नुक्, स्नुषा, स्नुहा, स्नुही,

वज्र, वज्रद्रु, वज्रद्रुम, वज्रकण्टक, गुड, गुडा, गुडि, गुला, बहुशाल, कृष्णखार, निस्त्रिंशपत्रिका, नेत्रारि, शाखाकण्ट, सेहुण्ड, सिहतुण्ड वज्री, काण्डशाख, कुलिशद्रुम, काण्डरोहक)

हिन्दीभाषामे	थूहर सेहुंड ।
बंगलाभाषामे	मनसागाछ, सिजवृक्ष ।
मराठीभाषामे	निवडुंग, काँटेनिवडुंग, फणींचे निवडुंग, विकाडी, वईनिवडुंग ।
गुजरातीभाषामे	थोर दांडलियो, कटाली, कंटालोथोर । हाथलो तरधारी, नानो परदेशी ।
कर्णाटकीभाषामे	निवडिगु, कालि, मुंडुकालि ।
तैलिंगीभाषामे	चेमुडु ।
देशान्तरीभाषामे	सावर ।
इंग्रेजीभाषामे	मिल्कहेज्ज । प्रिक्लीपीयर । Milk hedge Prickly pear
लैटि०	यूफोर्बिया टरक्युलाई Euphorbia Tircall युफोर्बियानिरिफोलीया । Euphorbia Nirifolia युफोर्बिया रायलाआना Euphorbia Royleana
फारसीभाषामे	लादनाम्
अरबीभाषामे	जकुम, फर्युन ।
लैटिन्भाषामे	युफोर्बिया टिरुकालाइ । युफोर्बिया पेण्टागोना ।
तु०	कोडकालि। ता०कालि।मला० तिरुकल्लि।

स्नुहिगुणा ।

स्नुहिरुष्णः पित्तदाहकुष्ठवातप्रमेहनुत् ।
क्षीरं वातविषाध्मानगुल्मोदरहरं परम् ॥ (रा० नि०)

अर्थ-थूहर-गरम, पित्त, दाह, कुष्ठ, वात, और प्रमेहनाशक है । थूहरका दूध-वायु, विष, आध्मान, गुल्म और उदररोगनिवारक है ।

अपिच ।

सेहुण्डो रेचनस्तीक्ष्णो दीपनः कटुको गुरुः ।
शूलमष्ठीलिकाध्मानकफगुल्मोदरानिलान् ॥

उन्मादमोहकुष्ठाशशोथमेदोश्मपाण्डुहा ।
व्रणशोथज्वरप्लीहविषदूषीविष हरेत् ॥

अर्थ-सेहुण्ड-रेचक, तीक्ष्ण, अग्निको दीपन करनेवाला, कटु, भारी तथा शूल, अष्ठीलिका, आध्मान, कफ,गुल्म,उदररोग, वायु, उन्माद, मूर्च्छा, कोढ, बवासीर, सूजन, मेदोरोग, पथरी, पाण्डुराग, व्रण, शोथ, ज्वर, प्लीहा, दूषीविष और विषको दूर करे है।

अस्य दुग्धगुणा ।

उष्णवीर्य्यं स्नुहिक्षीरं स्निग्ध च कटुक लघु ।
गुल्मिनां कुष्ठिनां चापि तथैवोदररोगिणाम् ॥
हितमेतद्विरेकार्थे ये चान्ये दीर्घरोगिण· ॥

अर्थ-सहुण्डका दूध उष्णवीर्य,स्निग्ध,चरपरा और हलकाहै तथा गुल्म, कुष्ठ, (उपदशरोग) उदर इन रोगवालोको और बहुत कालके रोगियोकोभी इसका जुलाब हितकारी ह ।

अस्य पत्रगुणा ।

सेहुण्डस्य दल तीक्ष्ण दीपन रोचन भवेत् ।
आध्मानाष्ठीलिकागुल्मशूलशोथोदराणि च ॥

अर्थ-सेहुण्डक पत्त तीक्ष्ण, अग्निको दीपन करनेवाले, अत्यन्त रुचिकारक तथा आध्मान, अष्ठीलिका, गुल्म, शूल, शोथ और उदररोगको दूर करे है ।

अपिच ।

सेहुण्डः कटुकस्तिक्तश्चोष्णस्तीक्ष्णः प्रदीपनः ।
सरो गुरुर्वान्तिकरः कुष्ठोदरविनाशकः ॥
प्लीहवातप्रमेहघ्नः शूलामकफशोथनुत् ।
गुल्माष्ठीलाध्मानपाण्डुकफोदरव्रणज्वरान् ॥
उन्मादवातं मेद च वृश्चिकस्य विप हरेत् ।
दूषीविषार्शोश्मरीघ्नो मुनिभिः परिकीर्त्तितः ॥

अर्थ-थूहर वा सेहुण्ड-कटु, तिक्त, उष्ण,तीक्ष्ण, जठराग्निदीपक, दस्तावर, भारी, वान्तिकारक तथा कुष्ठ, उदर, प्लीहा,वात, प्रमह, शूल, आम, कफ, सूजन, गोला, अष्ठीला, आध्मान, पाण्डुरोग, कफ, उदरव्रण, ज्वर, उन्माद, वायु, मेद, विच्छूका विष,दूषीविप, बवासीर, और पथरीको दूर करे ह।

विवरण। थूहर और सेहुंड दोनो एकही जातिके वृक्ष हैं, सेहुंडकी डंडी कांटेदार और मोटी होतीहै, पत्ते कोमल पत्थरचटेकी समान होते हैं, परन्तु दूध इसकी प्रत्येकशाखा और प्रत्येक पत्तेमे होताहै थूहरकी शाखा पतली और पत्तेभी छोटे छोटे हरीमिर्चकी समान लम्बे होते हैं, इसके सब अगोमे दूध निकलताहै। थूहरकी अनेक जातहैं। जैसे काटेवाला थूहर, तिधारा थूहर, चौधारा थूहर, नागफनी थूहर, खुरासानी थूहर, विलायती थूहर इत्यादि। खुरासानी थूहरका दूध विषैला होताहै। इसके दूधको बादीके रोगमे तथा सन्धियोकी पीडामे चुपडनेसे तुरंत पीडा दूर होती है। थूहरके दूधकी बाजरेके चूनके साथ गोली बनाकर खानेसे जुल्लाब होकर उदरका रोग दूरहोता है और थूहरके दूधमे चनेकी दालको भिगोकर उसको पीसकर झडबेरकी समान गोली बनाकर खानेसे जुल्लाब होकर उपदंश तथा फिरंगरोग दूरहोता है। थूहरकी राख कर उसका खार निकाल अनेक औषधियोमे डालतेहैं। काटेवाले थूहरके पत्तोका शाक बनाकर खाते हैं। उससे उदरके रोग दूर होतेहैं। इसके डंडोकी भस्मारक नामवाली औषधि बनती है। नागफनी थूहरके लाल पके हुए फल खानेसे श्वास और खांसी दूर होती है।

सातलानामानि।



शातला-

सातला सप्तला सारा विमला विदुला च सा।
तथा निगदिता भूरिफेना चर्म्मकषेत्यपि॥

अर्थ-सातला, सप्तला, सारा, विमला, विदुला, भूरिफेना, चर्मकषा, (अमला, बहुफेना, फेना, दीप्ता, विषाणिका, स्वर्णपुष्पी, पुत्रघना)

हिन्दीभाषामें	सातला।
बंगभाषामें	सिजाविशेष।
मराठीभाषामें	निवडुंगाचा भेद।
गुजरातीभाषामें	साथेर।
लैटिन्भाषामें	ओरिगेनं वल्गेरिस् Origanum Vulgaris
कर्णाटकीभाषामें	षडीलसोतुली, हिरीयचट, कनख।
फारसीभाषामें	एशन्।
अरबीभाषामें	सातर।

सातलागुणाः।

सातला कटुका पाके वातला शीतला लघुः।
तिक्ता शोफकफानाहपित्तोदावर्त्तरक्तनुत् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-सातला-पचनेमें कटु, वातजनक, शीतल, हलका, तिक्त तथा शोफ, कफ, आनाह, पित्त, उदावर्त और रक्तदोषको दूर करेहै।

अपिच।

सातला कफपित्तघ्नी लघ्वी तिक्ता कषायिका।
विसर्पकुष्ठविस्फोटव्रणशोफनिकृन्तनी ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ-सातला-कफपित्तनाशक, लघु, तिक्त, कषाय तथा विसर्प, कुष्ठ, विस्फोट, व्रण और शोफनाशक है।

अन्यच्च।

सातला मुखपाकघ्नी जठरव्रणहृत्सरा ॥ (शो० नि०)

अर्थ-सातला-मुखपाक, उदर और व्रणरोगनाशक है।

अपिच।

सातला तु विसर्पघ्नी रेचनी वातशोफनुत् ॥ (ग नि.)

अर्थ-सातला-विसर्परोगनाशक, दस्त करानेवाला, वात तथा सूजनको दूर करे है।

अन्यच्च।

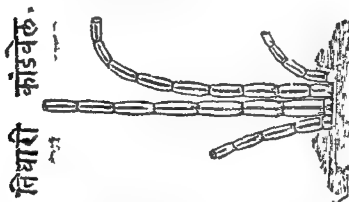
सातला शीतला तिक्ता तीक्ष्णा पाके कटुर्लघुः।
हृद्यानिल प्रकुरुते हरते हृद्रुजं कफम् ॥

पित्तोदावर्तकुष्ठार्शोगुल्मोदरगतं विषम् ।
आनाहकृमिशोफामं नाशयेदिति कीर्त्तितम् ॥

अर्थ-सातला-शीतल, तिक्त, तीक्ष्ण, पचनेमें कटु,लघु, हृदयको हितकारी,अग्निजनक तथा हृदयरोग,कफ,पित्त,उदावर्त, कुष्ठ,बवासीर, गुल्म,उदरविष,आनाह,कृमि,शोफ और आमको दूर करैहै ।

विवरण । सातनेकी वेल जगल और वनोंमे होतीहै, पत्ते खैरके पत्तोकी समान छोटे छोटे होते है । फूल पीला होता है । उसमे पतली तथा चपटी फली लगतीहै । उसमे काले बीज निकलते ह । इसमे पीले रगका दूध निकलताहै ।

अस्थिसंहारिनामानि ।



वज्रवल्ल्यस्थिसंहारी कुलिशं च शिरालकः ॥

अर्थ-वज्रवल्ली, अस्थिसंहारी, कुलिश, शिरालक (ग्रन्थिमान्, अमर, वज्राङ्गी, अस्थिशृंखला, अस्थिसहारक, क्रोष्टुघण्टिका)

हिन्दीभाषामे	हडसंहारी, हडजोड, हडसंकरी ।
वंगभाषामे	हाडभाङ्गा ।
गुजरातीभाषामे	हाडसांकला, वेधारी,तरधारी,चोधारी ।
मराठीभाषामे	कांडवेल, त्रिधारी, चौधारी ।
तैलिङ्गीभाषामे	नालेद्द ।
लॅटिन् भाषामे	विटिसक्वोड्रेंग्युलारिस् । Vitisquodron gularis साइसस् काड्रेंग्युलारिस् ।

अस्थिसहारिगुणा ।

अस्थिसंहारकः प्रोक्तो वातश्लेष्महरोऽस्थियुक् ।

उष्णः सरः कृमिघ्नश्च दुर्नामघ्नोऽक्षिरोगजित् ॥
रूक्षः स्वादुर्लघुर्वृष्यः पाचनः पित्तलः स्मृतः ।
कांडत्वग्विरहितमस्ति शृंखलाया
मापार्द्रद्विदलमकचुकं तदर्द्धम् ।
सपिष्ट सुतनु ततस्तिलस्य तैले
संपक्व वटकमतीव वातहारि ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-हडसहारी-वातकफनाशक,टूटी हड्डीको जोडनेवाली,उष्ण, सारक, कृमिघ्न, बवासीरको दूर करनेवाली, आंखके रोगका नाश करनेवाली,रुखी, स्वादिष्ठ, हलकी,वीर्य्यजनक, पाचक और पित्त-कारक है। हडसहारीकी लकडीका एक टुकडा लेकर उसकी छाल छीलकर चूर्ण करले, पश्चात् उस चूर्णमे गीले उडदोकी छिलकारहित दाल चूर्णसे आधी मिलावे दोनोको सिलपर महीन पीस तिलके तेलमे वडी बनावे, यह वडी अत्यन्त वातका नाश करेहै ।

अन्यच्च ।

वज्रवल्ली सरा रूक्षा कृमिदुर्नामनाशिनी ।
दीपन्युष्णा विपाकेम्ला स्वाद्वी वृष्या बलप्रदा ॥
अर्शसां तु विशेषेण हिता चैवाग्निदीपनी ।
चतुर्धारा काण्डवल्ली भूतोपद्रवशूलहा ॥
अत्युष्णाध्मानवातांश्च तिमिरं वातरक्तकम् ।
अपस्मारं वातरोग नाशयेदिति कीर्त्तितम् ॥
त्रिधारा काण्डवल्ली तु सरा लघ्व्यग्निदीपनी ।
रूक्षोष्णा मधुरा वातकृम्यर्श-कफनाशिनी ॥
काण्डवल्ली तु कटुका तिक्ता चोष्णा सरा मता ।
पित्तला च कफ गुल्मं लूतां दुष्टव्रणं तथा ॥
प्लीहोदराग्निमांद्यानि शूल वात च नाशयेत् ।
मलस्तम्भहरा चैव कीर्त्तिता मुनिभिः पुरा ॥(नि०र०)

अर्थ-वज्रवल्ली-दस्तावर, रूखी, कृमि, बवासीरनाशक पचनेमे अम्ल, स्वादिष्ठ, वीर्य्यजनक, बलदायक, विशेषकरके बवासीरके लिये अधिक हितकारी है और अग्निदीपक है। चौधारा काण्डवेल-भूतोपद्रवको दूर करनेवाली, शूलनाशक, अत्यन्त उष्ण तथा आध्मान, वात, तिमिर, वातरक्त, अपस्मार और वातरोगविनाशक है। त्रिधारी काण्डवेल-दस्तावर, हलकी, अग्निदीपक, रूखी, उष्ण, मधुर तथा वात, कृमि, बवासीर और कफनाशक है। काण्डवल्ली-कटु, तिक्त, उष्ण, दस्तावर, पित्तजनक तथा कफ, गुल्म, लूता, दुष्टव्रण, प्लीहा, उदर, मदाग्नि, शूल, वात और मलस्तम्भको दूर करे है।

विवरण। इसकी वेल थूहरकी जाति होती है, इस वेलमे चार छे अंगुलपे गाठ होतीहै, यह द्विधार, तिधार, चारधार इनमेसे एक हडसंधारीकी जाति होती है। काण्डवेलके भिन्नभिन्न भागमे काण्ड होतीहै इसकारण सस्कृतमे इसको काण्डवल्ली कहतेहैं, यह शंकलके समान होतीहै, इसलिये इसको हडशंकरी कहते हैं।

कलिकारीनामानि।

कलिकारी लाङ्गलिकी दीप्ता च गर्भघातिनी।
अग्निजिह्वा वह्निशिखा वह्निवक्त्रा च लांगुली॥

कलिकारी, लाङ्गलिकी, दीप्ता, गर्भघातिनी, अग्निजिह्वा, वह्निशिखा, वह्निवक्त्रा, लांगुली, (हलिनी, गर्भपातिनी, विशल्या, अग्निमुखी, हली, नक्ता, इन्द्रपुष्पिका, विद्युज्ज्वाला, व्रणहृत, पुष्पसौरभा, स्वर्णपुष्पा, इन्द्रपुष्पिका, शक्रपुष्पी, अनन्ता, कलिकारिका लांगलिका, गर्भनुत)

सस्कृतभाषामे	कलिकारी।
हिन्दीभाषामे	कलिहारी, कलियारी।
वंगभाषामे	विषलाङ्गला, ईशलाङ्गला।
मराठीभाषामे	खडयानाग, चगमोडचा, कळलावी।
गुजरातीभाषामे	डाधियो, बछनाग, कलगारी।
को०	कलई।
कर्णाटकीभाषामे	राडागारी।
मला०	मेहोन्नि, काडल।
इंग्रेजीभाषामे	वल्फसबेन Wolfs bane
लेटिन्भाषामें	ग्लोरीओझासुपर्बा। Gloriosa superba
	एकोनाइटम्नेपिलम्। Aconitum napellum

अस्या गुणाः।

कलिकारी सरा तीक्ष्णा कुष्ठदुष्टव्रणापहा॥(वि०ति०भा०)

अर्थ-कलिहारी, सारक, तीक्ष्ण और कुष्ठ तथा दुष्ट व्रणको नष्ट करनेवाली है।

अपिच।

कलिकारी सरा कुष्ठशोफार्शोव्रणशूलजित्।
सक्षारा श्लेष्मजित्तिक्ता कटुका तुवराऽपि च॥
तीक्ष्णोष्णा कृमिहृल्लघ्वी पित्तला गर्भपातिनी॥(भा०प्र०)

अर्थ-कलिहारी-सारक, कुष्ठ, शोफ, बवासीर, व्रण, और शूलका नाश करे है। क्षाररसयुक्त, कफनाशक, कडवी, चरपरी, कषेली, तीक्ष्ण, गरम, कृमिहारक, हलकी, पित्तजनक और गर्भको गिराने वाली है।

अन्यच्च।

कलिकारी सरा तीक्ष्णा गर्भशल्यव्रणापहा।
शुष्कगर्भं च गर्भं च पातयेल्लेपमात्रतः॥ (शो० नि०)

अर्थ-कलिहारी-सारक, तीक्ष्ण तथा गर्भशल्य और व्रणनाशक है। शुष्कगर्भ और गर्भको केवल लेपसेही गिरानेवाली है।

अपिच।

कालिकारी सरा तिक्ता कट्वी पट्वी च पित्तला।
तीक्ष्णोष्णा तुवरा लघ्वी कफवातकृमिप्रणुत्॥
वस्तिशूलं विषं चार्शः कुष्ठं कण्डूं व्रणं तथा।
शोथं शोषं च शूलं च नाशयेदिति कीर्तिता॥
शुष्कगर्भं च गर्भं च पातयेदिति कीर्तिता। (नि०र०

अर्थ-कलिहारी-सारक, कडवी, चरपरी, खारी, पित्तकारी, तीक्ष्ण, गरम, कषेली, हलकी तथा कफ, वात, कृमि, वस्तिशूल, विष और कोढ, बवासीर, कण्डू, व्रण, सूजन, शोष, शूल, शुष्कगर्भ और गर्भको दूर करनेवाली है।

कलिहारी लागली कंदको कहते हैं, इसके नीचे हलदीके समान मोटी२गाठ निकलती है, ऊपर लगरकी पूछके समान एकही लगरसी निकलतीहै उसमें कचूरकेसे पत्र होतेहैं ऊपर लाल और पीला अग्निकी लाटके ... न फूल होता है इसको लागलीकंद या कालिहारी कहते ... सुखपर्वक प्रसव होनेके लिये इसका कंद

स्त्रीके हाथेमे बाध देते है । शिमला प्रान्तमे कालकाके समीप टकसालमे यह वहुत होता है ॥

कारवीरनामानि ।



करवीरः श्वेतपुष्पः शतकुम्भोऽश्वमारकः ।
द्वितीयो रक्तपुष्पश्च चण्डालो लगुडस्तथा ॥

अर्थ-करवीर, श्वेतपुष्प, शतकुम्भ, अश्वमारक, (प्रतिहास, शतप्रास, चण्डात, हयमारक, अश्वमार, अश्वघ्न, हयारि, शीतकुम्भ, तुरङ्गारि, रङ्गारि, शातकुम्भ, प्रचण्ड, अश्वहा, वीर, हयमार, हयघ्न, शतकुन्द, अश्वरोधक, वीरक, कुन्द, शकुन्द्र, तुङ्गारी, श्वेतपुष्पक, अश्वान्तक, नखराह्व, अश्वनाशक, स्थलकुमुद, दिव्यपुष्प, हरिप्रिय, गौरिपुष्प और सिद्धपुष्प,) यह नाम श्वेतकरवीरके है । रक्तपुष्प, चण्डात, लगुड, (रक्तप्रसव, गणेशकुसुम, चण्डीकुसुम, क्रूर, भूतद्रावी, रविप्रिय)

संस्कृतभाषामे	करवीर, श्वेतकरवीर, रक्तकरवीर ।
हिन्दीभाषामे	सफेदकनेर, लालकनेर, पीलीकनेर । काले फूलकी कनेर ।
बंगलाभाषामे	करवी, लालकरवी ।
मराठीभाषामे	कण्हेर, पाढरी, ताबडी, पिवळी ।
गुजरातीभाषामे	कणेर, धोलाफूलनी, रातांफूलनी, गुलाबीफूलनी, पीला फूलनी ।
कर्णाटकीभाषामे	वाकणलिगे, केंगणलिगे ।

तैलिङ्गीभाषामे कानेरचेट्टु ।
इंग्रेजभाषामे स्वीट्सेन्टेड् ओलियंडर Sweet Scented oleander
लैटिन्भाषामे नीरीयं ओडोरम् Nirium odorum नीरीयम् ओलीयंडर Nerirum oliander सर्वेराथिविटिया Cerbera Thevetia
फारसीभाषामे खरजेहरा ।
अरबीभाषामे सुमुल, हिमारदखली ।

श्वेतादिकरवीरगुणा ।

हयारिः पञ्चधा प्रोक्तः श्वेतो रक्तश्च पाटलः ।
पीतः कृष्णः समुद्दिष्टः श्वेतस्यैतान्गुणाञ्छृणु ॥
कटुस्तिक्तश्च तुवरस्तीक्ष्णो वीर्येण चोष्णदः ।
ग्राही मेहकृमीन्कुष्ठव्रणार्शोवातनुत्परः ॥
भक्षितो विषवज्ज्ञेयो नेत्र्यो लघुविषापहः ।
विस्फोटकुष्ठकृमिनुत्कण्डूव्रणकफापहः ॥
ज्वरं नेत्ररुज चैव हयप्राणाश्च नाशयेत् ।

अर्थ-कनेर-सफेद, लाल, गुलाबी, पीली और काली इसप्रकार फूलोके भेदसे पाच प्रकारकी है । इनमे सफेद कनेर कटु, तिक्त, कषेली, तीक्ष्ण, उष्णवीर्य, ग्राही तथा प्रमेह, कृमि, कोढ, घाव, बवासीर और वातनाशक है । यह भक्षण करनेमे विषके समान है, और नेत्रोको हितकारी, हलकी तथा विस्फोट, कुष्ठ, कृमि, कण्डू व्रण, कफ, ज्वर, नेत्ररोग और घोडेके प्राणोको हरनेवाली है ।

रक्तकरवीरगुणा ।

रक्तवर्णः शोधकः स्यात्कटुः पाके च तिक्तकः ।
कुष्ठादिनाशको लेपादथ पाटलवर्णकः ॥
शीर्षपीडां कफ वात नाशयेदिति कीर्तितः ।
रक्तादिचतुरो भेदा गुणाः श्वेतहयारिवत् ॥ (नि०र०)

अर्थ-लाल कनेर-शोधक, चरपरी, पचनेकेसमय कडवी और इसका लेप करनेसे कोढ दूर होताहै । गुलाबी कनेर-मस्तकशूल, कफ, वात,

इनका नाश करेहै, इसके और गुण तथा पीली, काली कनेरोंके गुण सफेद कनेरकी समान जानने ।

विवरण। कनेरके वृक्ष वन उपवन और पुष्पवाटिकामे लगाये जातेहै । इसपर लाल, गुलाबी, सफेद, पीले और काले फूल आते है लाल, पीले और सुफेद फूलकी कनेर सर्वत्र होतीहै ।

कनेरमे विष होता है । इसको विना विचारे खानेसे मनुष्य मृत्युको प्राप्त होते है इसकारण इसको विना विचारे कभी भक्षण करना नही चाहिये। इसका घी बनाते है, वह घी अत्यन्त नसीला होताहै। मात्रा दो रत्तीसे लेकर चार रत्तीतककी ।

धुस्तूरनामानि।





धुस्तूरो मदनोन्मत्तः कितवः कनकाह्वयः ।
शिवप्रियो महामोही देविका खरदूषणः ॥

अर्थ–धुस्तूर, मदन, उन्मत्त, कितव, कनकाह्वय, शिवप्रिय, महामोही, देविका, खरदूषण, (धूर्त, मातुल, पुरीमोह, धूर्तकृत, धत्तूर, घाण्टिक, शठ, मातुलक, श्याम, शिवशेखर, खर्ज्जूघ्न, काहलापुष्प, खल, कण्टफल, मोहन, कलम, मत्त, शैव, तरी, धुतुर, धुस्तुर, उन्मत्तक, मदनक, हरवल्लभ, कण्टफल, कनक, सविप, मोहन, मद-

कर, घण्टापुष्प, महाशठ और जितने सुवर्णके नाम हैं वो सब इसके भी जानने)

हिन्दीभाषामें	धतूरा ।
बंगलाभाषामें	धुतूरा ।
मराठीभाषामें	धोत्रा, धोतरा ।
गुजरातीभाषामें	धतुरो ।
कर्णाटकीभाषामें	मदकुणिके ।
तैलिङ्गीभाषामें	नाह्याउम्मीते, उम्मेत्तचेट्टु ।
तामिलीभाषामें	उमत्तताई, कारुउमते ।
पाह्लवीभाषामें	सतुल्या, तातरईसफेदा ।
इंग्रेजीभाषामें	थोर्नएप्पल स्ट्रामोनिय Thorn apple Stramonium
लेटिन्भाषामें	डाटुरा स्ट्रामोनिय डाटुराआल्बा, डा० फेस्टुओसा Datura Stramonium D alba D Fostunosa
अरबीभाषामें	जोजमासील जोजनसी तातूरा ।

अस्य गुणाः ।

धत्तूरो मदवर्णाग्निवातकृज्ज्वरकुष्ठनुत् ।
कषायो मधुरस्तिक्तो यूकालिक्षाविनाशनः ॥
उष्णो गुरुर्व्रणश्लेष्मकण्डूकृमिविषापहः । (भा० प्र०)

अर्थ-धतूरा-मद, वर्ण, अग्नि और वात इनको करनेवाला, ज्वरको दूर करनेवाला, कोढका नाश करनेवाला, कषेला, मीठा, कडवा, जुये और लीखोंको दूर करनेवाला, गरम, भारी तथा व्रण, कफ, कण्डू, कृमि और विषनाशक है ।

अपिच ।

धत्तूरः कटुरुष्णश्च कांतिकारी व्रणार्तिनुत् ।
त्वग्दोषखर्जूकण्डूतिज्वरहारी भ्रमप्रदः । (रा० नि०)

अर्थ-धतूरा-कटु, उष्ण, कान्तिकारी तथा व्रण, त्वचाके रोग, खर्ज, कण्डू और ज्वरको दूर करे तथा भ्रमदायक है ।

अन्यच्च ।

धत्तूरो दुष्टरक्तघ्नो व्रणहा विषपित्तकृत् ॥ (शोढलनिघण्टु)

अर्थ-धतूरा-दुष्टरक्तनाशक, व्रणको दूर करनेवाला, विष और पित्तको दूर करे है ।

अपिच ।

धत्तूरकौ च सविषौ तिक्तोग्रौ मोहकारकौ ।
कुष्ठदुष्टव्रणहरौ कामलार्शोविषापहौ ॥ (ग० नि०)

अर्थ–दोनोप्रकारके धत्तूरे(काला और सफेद)विषयुक्त,कडवे, उग्र मोहकारक तथा कुष्ठ, दुष्टव्रण, कामला, बवासीर और विषको नष्टकरेहै ।

अपिच ।

धत्तूरः कांतिकृच्चोष्णः कटुकश्चाग्निदीपकः ।
तुवरो मधुरस्तिक्तो मदकृद्वातिकृद्गुरुः ॥
वर्ण्यः कुष्ठव्रणश्लेष्मज्वरकण्डूकृमीञ्जयेत् ।
यूकालिक्षाश्रमविषपामात्वग्दोषनाशनः ॥
एष कृष्णो गुणैः श्रेष्ठो मुनिभिः परिकीर्तितः (नि० र०)

अर्थ–धत्तूरा–कान्तिकारक, गरम, चरपरा, अग्निदीपक, कषेला मधुर, कडवा, मदकारक, वान्ति करनेवाला, भारी, वर्णकर्त्ता तथा कुष्ठ, व्रण, कफज्वर, कण्डू, कृमि, जुआ, लीख, आम, विष, पामा और त्वचाके रोगोंका नाश करेहै इन सबप्रकारके धतूरोंमे काला गुणोंमे श्रेष्ठ है ।

अपिच ।

धत्तूरो मूर्च्छाजनको वह्निपित्तं च नाशयेत् (रा० व०)

अर्थ–धतूरा–मूर्च्छाकारक अग्नि और पित्तका नाश करेहै ।

कृष्णधत्तूरकनामानि ।

कृष्णधत्तूरकः सिद्धः कनकः सचिवः शिवः ।
कृष्णपुष्पो विषारातिः क्रूरधूर्त्तश्च कीर्त्तितः ॥ (रा० व०)

अर्थ–कृष्णधत्तूरक–सिद्ध,कनक,सचिव,शिव,कृष्णपुष्प,विषाराति, क्रूरधूर्त्त ।

हिन्दीभाषामे	कालाधतरा ।
बंगलाभाषामे	धुत्तुरा, कनकधुत्तुरा ।
कर्णाटकीभाषामे	करीयमदगणिके ।

राजधत्तूरनामानि ।

राजधत्तूरकश्चान्यो राजधूर्त्तो महाशठः ।

निःश्रेणिपुष्पको भ्रान्तो राजस्वर्णः पडाह्वयः ॥

अर्थ-राजधत्तूरक, राजधूर्त्त, महाशठ, निःश्रेणिपुष्पक, भ्रान्त, राजस्वर्ण और षडाह्वय।

सितनीलकृष्णलोहितपीतप्रसवाश्च संति धत्तूराः ।
सामान्यगुणोपेतास्तेषु गुणाढ्यस्तु कृष्णकुसुमः स्यात् ॥

अर्थ-धत्तूरे-सफेद, नीले, काले, लाल और पीले फूलके होतेहैं, इन सबोमे सामान्यही गुण है, किन्तु काले फूलका धतूरा अधिक गुणवाला है।

प्रयोग।

श्वासके रोगमे बढेहुए श्वासको रोकनेके लिये इसके सूखे डंठल और पत्तोका धुआं पिलावे। वातादिरोग और चोटलगीहुई दर्दकी जगहमे धतूरेका रस गायका घी और सेंधानोन मिलाकर दर्दके स्थानमे लगावे। धतूरेके बीजसे वातजनित शिरोरोग आराम होताहै।

विवरण। धतूरा फूलोंके भेदसे काला, नीला, सफेद, पीला ४-५ प्रकारका होताहै। प्रायः जंगलमे उत्पन्न होताहै। काले और सुनहरी फूलका धतूरा बागादिमे होताहै, पत्ते मध्यमाकार होतेहैं, फूल घंटेके आकार होताहै। फूलका रंग बीचमे सफेद और ऊपर सफेद, नीला, काला, पीला होताहै, जिसके पांच भाग होतेहै, फूलकी बाहिरी पांच पखडियॉ नीलेरंगकी होती है। फल-गोल, कांटेदार और भीतर बहुत बीजवाला होताहै। जिस धतूरेका रंग अत्यन्त काला और दण्डी, पत्ते, फल, फूल तथा सर्वांग काला हो उस धतूरेमे विष अधिक होताहै और उसके गुणभी अधिकहै, फल सूखनेपर कठोर होजाते है इसके बीजोमे विष अधिक होताहै, उन बीजोको मात्रासे अधिक खानेसे मृत्यु होतीहै, वधेजादिक धातुपुष्टिकी औषधिमे इसके बीजो का व्यवहार ग्रन्थोमे लिखा है, इसके बीज प्रमेहको दूर करनेवालेहै, काले धतूरेके पचांगकी धूपसे खांसी दूर होतीहै। धतूरेके मदको दूर करनेके लिये धतूरेकी भांगका नास लेना चाहिये, धतूरेका नास धतूरेके विषको दूर करनेवाला है। अथवा धतूरेके विषमे उसको पीसकर पिलावे, तथा तत्कालका दुहा हुआ दूध और घी मिलाकर पीजाय।

व्यवहार-मूल, पत्ते, बीज। मात्रा आधी रत्तीसे एक रत्तीतक ।

वासकनामानि ।





वासको वासिका वासा सिहिका रामरूपकः ।
मातृसिही वैद्यमाता कसनोत्पाटनो वृषः ॥

अर्थ–वासक, वासिका, वासा, सिहिका, रामरूपक, मातृसिंही वैद्यमाता, कसनोत्पाटन, वृष, (अटरुष, सिंही, वृष, सिंहास्य, वाजिदन्तक, आमलक, वाशा, बाशिका, अटरूप, वासक, वास, वाजी, वैद्यसिंही, सिंहपर्णी, भिषड् माता, रसदानी, सिहमुखी,

कण्ठीरवी, सितकर्णी, वाजिदन्ती, नासा, पञ्चमुखी, सिंहपर्णी, मृगेन्द्राणी, आटरूष, अटरूष, सिंहाननं)

संस्कृतभाषामें	वासक, आटरूष।
हिन्दीभाषामें	वासा, अडूसा घिनोटा।
बंगभाषामें	वाकस, बाटा वाकस।
मराठीभाषामें	अडूळसा।
गुजरातीभाषामें	अरडूसो।
कर्णाटकीभाषामें	आडसोग।
तैलिङ्गीभाषामें	आडासार, आडापाकु।
तामिलीभाषामें	आधडोडै।
लैटिन्भाषामें	आधाटोडा वासीका। Adhatoda vasica

अथ गुण।

वासको वातकृत्स्वर्य्यः कफपित्तास्रनाशनः।
तिक्तस्तुवरको हृद्यो लघुः शीतस्तृड़ार्तिहृत्॥
श्वासकासज्वरच्छर्दिमेहकुष्ठक्षयापहः। (भा. प्र.)

अर्थ-अडूसा-वातकारक, स्वरको उत्तम करनेवाला, कफनाशक, रक्तपित्त नाशक, कडवा, कषेला, हृदयको हितकारी, हलका, शीतल तथा तृषा, श्वास, खासी, ज्वर, वमन, मोह कोढ और क्षयरोगको दूर करेहै।

अन्यच्च।

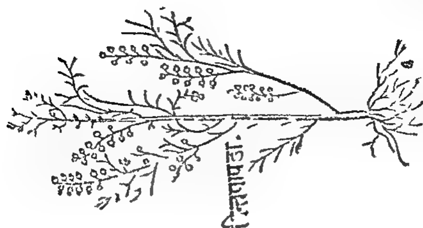
वासा तिक्ता कटुः शीता कासघ्नी रक्तपित्तजित्।
कामलाकफवैकल्यज्वरश्वासक्षयापहा॥ (राजनि)

अर्थ-अडूसा-तिक्त, कटु, शीतल तथा खासी, रक्तपित्त, कामला, कफ विकलता, ज्वर, श्वास और क्षयरोगनाशक है।

अडूसेका क्षुप होताहै, पत्ते लम्बे, अनीदार, अमरूदकी समान होतेहैं, फूल सफेद लगताहै, दूसरा एक और लाल फूलका अडूसा होता है, अडूसा सर्वत्र प्रसिद्ध है चैत्रमें इसके फूल होते हैं उन सफेद फूलोंकी जडमें मधुकी एक बूंद रहती है उसको लडके और बंदर चूसते हैं कालकाके समीप बहुत होता है, वासा, वसूटा अडूसा इन नामोसे प्रसिद्ध है औषध प्रयोगमें प्रायः सफेद फूलकाही लेते हैं।

पर्पटनामानि।

पर्पटो वरतिक्तश्च स्मृतः पर्पटकश्च सः।
कथितः पांशुपर्य्यायस्तथा कवचनामकः॥



अर्थ-पर्पट, वरातिक्त, पर्पटक, पांशुपर्य्याय, कवचनामक, (त्रियष्टि, तिक्त, चरक, वरक, अरक, रेणु तृष्णारि, शीत, शीतप्रिय, पांशु, कलपाङ्ग, वर्म्मकण्टक, कृष्णशाख, प्रगन्ध, सुतिक्त, रक्तपुष्पक, पित्तारि, कटुपत्र, नक्र, शीतवल्लभ)

संस्कृतभाषामे	पर्पट ।
हिन्दीभाषामे	पित्तपापडा, दवनपापरा।
वंगभाषामे	क्षेत् पापडा ।
मराठीभाषामे	सिरपठी, पित्तपापडा, को०-थरमरे ।
वम्०	पित्तपापडा ।
गुजरातीभाषामे	पित्तपापडो, खडसलीयो ।
	क्षेत्रपर्पट, धातो ।
कर्णाटकीभाषामे	पर्पाटक ।
तैलिङ्गीभाषामे	पापार्टकनु ।
औत्कलीभाषामे	जडपॉपुडा ।
इंग्रेजीभाषामे	जस्टिसयाप्रोकंबेन्स । Justicia Procumbens
लैटिन्भाषामे	फुमेरियापार्वीफ्लोरा । Fumeria Parviflora
	फुमेरियाओफिसिनेलीस। Fumeria officinalis
फारसीभाषामे	शातरा ।
अरबीभाषामे	बकलतल मलीक ।

अस्य गुणाः ।

पर्पटः शीतलस्तिक्तः संग्राही वातकोपनः ।
लघुः पाके च कटुको हरेत्पित्तकफज्वरान् ॥

रक्तदोषारुचिर्दाहग्लानिभ्रममदाञ्जयेत् ।
प्रमेहवान्तितृड्रक्तपित्तानां च विनाशकः ।
अस्य शाका तु सग्राही शीता वातकरा लघुः ।
तिक्ता रक्तरुज पित्त ज्वरं तृष्णां च नाशयेत् ।
कफ भ्रमं च दाहं च नाशयेदिति कीर्तितम् ।(नि०र०)

अर्थ-पित्तपापडा-शीतल, कडवा, मलरोधक, वातप्रकोपक, हलका, पचनेमे चरपरा तथा पित्त, कफ, ज्वर, रुधिरविकार, अरुचि, दाह, ग्लानि, भ्रम, मद, प्रमेह, वान्ति, तृषा और रक्त पित्तका नाश करनेवाला है । इसका शाक-मलरोधक, शीतल, वातकारक, हलका, कडवा, रक्तरोग, पित्तज्वर, तृषा, कफ, भ्रम और दाहको दूर करे है ।

विवरण । इसका क्षुप होताहै, इसकी दो जाति है एकमे नीला और दूसरेमे लाल फूल आताहै, इन दोनोमे लालफूलका अधिक गुणवाला है ।

निम्बनामानि ।



निम्बो नियमनो नेता पिचुमर्दः सतिक्तकः ।
अरिष्टः सर्वतोभद्रः सुभद्रः पारिभद्रकः ॥
शुकप्रियः शीर्षपर्णो यवनेष्टो वरत्वचः ।
छर्दनो हिंगुनिर्यासः पीतसारो रविप्रियः ॥

अर्थ-निम्ब, नियमन, नेता, पिचुमंद, सातिक्तक, अरिष्ट, सर्वतोभद्र, सुभद्र, पारिभद्रक, शुकप्रिय, शीर्षपर्ण, यवनेष्ट, वरत्वच, छर्दन, हिंगु, निर्यास, पीतसार, रविप्रिय, (मालक, पिचुमंद, पक्ककृत, पूयारि, अर्कपादप, वृकमालक, कीटक, विबन्ध, निम्बक, कैटर्य्य, छर्दिघ्न, प्रभद्र, काकफल, कीरेष्ट, सुमना, विशीर्णपर्ण, पीतसारक, शीत, राजभद्रक)

संस्कृतभाषामें	निम्ब ।
हिन्दीभाषामें	नीम ।
बंगलाभाषामें	निमगाछ ।
मराठीभाषामें	कडुनिंब ।
गुजरातीभाषामें	लिंबडो ।
कर्णाटकीभाषामें	बड वेवु ।
तैलिङ्गीभाषामें	वेपा, टोयवेट्टु ।
तामिलीभाषामें	वेपुम्मरम ।
इंग्रजीभाषामें	निंबट्री । Nimb ree
लेटिन्भाषामें	एकाडिरेकटा इंडिका । Acadiracta Indica मेलियाएकाडिरेकटा । MeliAcadiracta
फारसीभाषामें	नेनवूनीम दरख्तहक ।

अस्य गुणाः ।

प्रभद्रकः प्रभवति शीततिक्तकः कफव्रणक्रिमिवमिशोफशांतये ।
बलासभिद्बहुविधपित्तदोपजिद्विशेपतो हृदयविदाहशांतिकृत् ।

अर्थ-प्रभद्रक-(नीम) शीतल, कडवा तथा कफ, व्रण, कृमि, वमन, सूजन, बलास, बहुविध पित्तदोष और विशेषकरके हृदयकी दाहको शान्त करे हैं ।

अन्यच्च ।

निम्बवृक्षो लघुः शीतस्तिक्तो ग्राही कटुः स्मृतः ।
अग्निमांद्यकरश्चैव व्रणशोधनकारकः ॥
शोथपाककरो बाले हितो रुच्यो मतो बुधैः ।
कृमिवान्तिव्रणकफशोफपित्तविषापहः ॥
वातं कुष्ठश्च हृद्दाह श्रमं कास ज्वर तृषाम् ।
अरुचिं रक्तदोपश्च मेहश्चैव विनाशयेत् ॥

अर्थ-नीम-हलका, शीतल, कडवा, ग्राही, कटु, मन्दाग्निकारक, व्रणशोधक, शोफको पकानेवाला, बालकोंको हितकारक तथा कृमि, वमन, व्रण, कफ, शोथ, पित्त, विष, वात, कुष्ठ, हृदयकी दाह, श्रम, खासी, ज्वर, तृषा, अरुचि, रुधिरविकार और प्रमेहका नाश करेहै।

अथ कोमलपल्लवगुणाः ।

कोमलः पल्लवश्चास्य ग्राहको वातकारकः ।
रक्तपित्तं नेत्ररोगं कुष्ठं चैव विनाशयेत् ॥ (नि० र०)

अर्थ-इसके कोमल पत्ते-ग्राही, वातकारक तथा रक्तपित्त, नेत्ररोग और कुष्ठनाशक है।

अस्य सामान्यपत्रगुणाः ।

निम्बपत्रं स्मृतं नेत्र्यं कृमिपित्तविषप्रणुत् ।
वातलं कटुपाकं च सर्वारोचककुष्ठनुत् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-नीमके पत्ते-नेत्रोंको हितकारी, कृमि, पित्त और विषविनाशक है। बादी, पचनेमें कटु, तथा सर्वप्रकारकी अरुचि और कुष्ठनाशक है।

अस्य जीर्णपत्रगुणाः ।

जीर्णपर्णं विशेषेण व्रणनाशकरं मतम् ॥ (नि० र०)

अर्थ-इसके पुराने पत्ते-विशेष करके व्रणको दूर करनेवाले है।

अस्य पुष्पगुणाः ।

निम्बवृक्षस्य पुष्पाणि पित्तघ्नानि विशेषतः ।
तिक्तानि च कृमिघ्नानि तथा कफहराणि च ॥

अर्थ-नीमके फूल-पित्तनाशक, कडवे तथा कृमि और कफको हरनेवाले है।

अस्य सूक्ष्मशाखादिगुणाः ।

निम्बस्य सूक्ष्मशाखा तु कासश्वासार्शगुल्महा ।
कृमिमेहहरा प्रोक्ता फलं चाम लघु स्मृतम् ॥
स्निग्धं च भेदकं चोष्णं मेहकुष्ठविनाशकम् ।

अर्थ-इसकी सूक्ष्मशाखे-खासी, श्वास, बवासीर, गुल्म, कृमि और प्रमेहको दूर करनेवाली है, इसके अपक्व फल (कच्ची निबोली) लघु, स्निग्ध, भेदक, गरम, प्रमेह और कुष्ठको नष्ट करे है।

अन्यच्च ।

आमं फलं रसे तिक्तं पाके तु कटुकं मतम् ।
स्निग्धं लघूष्णं कुष्ठघ्नं गुल्मार्शःक्रिमिमेहनुत् ॥

अर्थ-कच्ची निबोली-रसमे कडवी, पचनेमे चरपरी, स्निग्ध, हलकी, गरम तथा कोढ, गुल्म और बवासीर, कृमि और प्रमेहको हरनेवाली है ।

अस्य पक्वफलगुणाः ।

निम्बस्य पक्वं मधुरं सुतिक्तं स्निग्धं फलं शोणितपित्तरोगे।
कफे प्रशस्तं नयनामयघ्नं क्षतक्षयघ्नं गुरु पिच्छलं च ॥

अर्थ-पक्की निबोली-मधुर, कडवी, स्निग्ध तथा रक्तपित्त, कफ, नेत्ररोग, क्षत और क्षयरोगनाशक है तथा भारी और पिच्छल है ।

अस्य बीजस्य मज्जागुणाः ।

निम्बबीजस्य मज्जा तु कुष्ठघ्नी क्रिमिनाशिनी ।

अर्थ-निबोलीकी मींग-कुष्ठ और कृमिनाशक है ॥

अस्य तैलगुणाः ।

निम्बतैलं तु कुष्ठघ्नं तिक्तं क्रिमिहरं परम् ॥

अर्थ-नीमके बीजोका तेल-कडवा, कुष्ठ और कृमिनाशक है ।

अस्य पञ्चाङ्गगुणाः ।

निम्बवृक्षस्य पञ्चांगं रक्तदोषहरं मतम् ।
पित्तं कण्डूं व्रणं दाहं कुष्ठं चैव विनाशयेत् ॥

अर्थ-नीमका पंचांग-(छाल, पत्ते, फूल, फल, जड) रुधिरविकार, पित्त, कण्डू, व्रण, दाह और कुष्ठको दूर करे है ।

विवरण । नीमका वृक्ष बडा होताहै, हिन्दोस्थानके सर्व स्थानोमे । अधिकतासे पाया जाताहै । वसंतऋतुके आरम्भमे, नये पत्ते और अन्तमे फूल आतेहै । वमिरोगमे पत्तोको पानीमे पकाके रोगीको पिलावे तो वमन और कुष्ठरोग बंदहोजायगा । मसूरिका रोगके लेपादिमे इसका व्यवहार होता है । मसूरकी दालको इसके पत्तोमे मिलाकर चैत्रमहीनेमे देनेसे अत्यन्त विषैले सांपकाभी विष नहीं चढताहै । व्यवहार-छाल, पत्ते, फूल, तेल, जड । मात्रा १ पल ।

महानिम्बनामानि।

महानिम्बः स्मृतो द्रेका कार्मुको विषमुष्टिकः ।
केशमुष्टिर्निम्बकश्च रम्यकः क्षीर इत्यपि ॥

अर्थ-महानिम्ब, द्रेका, कार्मुक, विषमुष्टिक, केशमुष्टि, निम्बक, रम्यक, क्षीर,(काकण्ड, बृहन्निम्ब, महातिक्त, महाद्रोण्क, हिमद्रुम, पार्वत, गैरिक,शुक्रसारक, सकालेयक,गिरिपत्र, पवनेष्ट, कैटर्य)

संस्कृतभाषामे	महानिम्ब ।
हिन्दीभाषामे	बकायन ।
बंगभाषामे	बोडानिम, महानिम ।
मराठीभाषामे	बकाणीनिब, कडुनिब ।
गुजरातीभाषामे	बकान्य ।
कर्णाटकीभाषामे	महाबेड ।
तैलिङ्गीभाषाम	पेद्वेया,गंगराबिचेट्टु,तुरकवयक,काण्डवेय ।
तामिलीभाषामे	मालाइवेतुवाथप्पम ।
लैटिन्भाषामे	मेलिया एझेडेरक । Melia Azedarach
फारसीभाषामे	आजाददरख्त ।
अरबीभाषामे	बान (वृक्ष) हबुल, (बीज)

अस्य गुणाः।

महानिम्बो हिमो रूक्षस्तिक्तो ग्राही कषायकः ।
कफपित्तकृमिच्छर्दिकुष्ठहृल्लासरक्तजित् (ध०नि०)

अर्थ-बकायन-शीतल,रूक्ष, कडवी, मलरोधक, कषेली, तथा कफ, पित्त, क्रिमि, वमन, कोढ, हृल्लास (उबकाई) और रुधिर-विकारको दूर करेहै ।

अन्यच्च ।

महानिम्बः कटुस्तिक्तः शीतश्च तुवरो मतः ।
रूक्षो ग्राही कफं दाहं व्रणं रक्तरुजं तथा ।
पित्तं कृमींश्च विषमज्वरं च हृदयव्यथाम् ।
सर्वकुष्ठानि छर्दिं च प्रमेहं च विसूचिकाम् ॥
मूषिकाया विषं गुल्मं शीतपित्तं च नाशयेत् ।
कोष्ठरोगं चार्शरोगं श्वासं च विनिवारयेत् ॥

अर्थ-बकायन-कटु, तिक्त, शीतल,कषाय,रूक्ष,ग्राही तथा कफ, दाह, व्रण, रक्तरोग, पित्त, कृमि, विषमज्वर, हृदयव्यथा, सर्वप्रकार के कुष्ठ,वमन, प्रमेह, विषूचिका,मूषका विष,गुल्म, शीतपित्त,कोढ-रोग, अर्शरोग, और श्वासरोगको निवारण करनेवाली है।

विवरण-बकायनके वृक्ष नीमकी समान अधिक लम्बे होतेहै, पत्ते किंचित् बडे होतेहैं, बकायनके फूल भी नीमकी समान होतेहैं परन्तु कुछ नीले रंगके होते हैं,फल गोल गोल होतेहैं।

केडर्य्यनामानि।

कैडर्य्योऽन्यो महानिम्बो रामणो रमणस्तथा।
गिरिनिम्बो महारिष्टः शुक्रसारोऽलकाह्वयः॥

अर्थ-कैडर्य्य, महानिम्ब, रामण, रमण, गिरिनिम्ब, महारिष्ट, शुक्रसार, अलकाह्वय (छर्दिघ्न, प्रियसाल, शुक्रसार, वरतिक्त)

संस्कृतभाषामें	कैडर्य।
हिन्दीभाषामें	मीठानीम, कृष्णनिम्ब, वरसंग।
बंगलाभाषामें	घोडानिम्बविशेष।
मराठीभाषामें	कढयानिंब, घाणेरा निंब।
गुजरातीभाषामें	मोठोलीबडो।
कर्णाटकीभाषामें	कयाहेबेव।
तैलिङ्गीभाषामें	कारीवेया।
लैटिन्भाषामें	मारेयाकोर्निजिआई। Murya Korinjı
इंग्रेजीभाषामें	सजंदकरवी कुनाह।

अस्य गुणाः।

कडर्यः कटुकस्तिक्तः कषायः शीतलो लघुः।
सन्तापशोषकुष्ठास्रकृमिभूतविषापहः॥ (रा० नि०)

अर्थ-मीठा नीम-कटु, तिक्त, कषाय, शीतल,लघु तथा सन्ताप, शोष,कुष्ठ, रुधिरविकार, कृमि, भूत और विषविनाशक है।

अन्यच्च।

कैडर्यः शीतलस्तिक्तः कटुश्च तुवरो लघुः।
दाहार्शःकृमिशूलघ्नः सन्तापविषनाशनः॥
शोफकण्डूभूतबाधा नाशयेदिति कीर्तितः। (नि० र०)

अर्थ-मीठानीम-शीतल, कडवा, चरपरा, कषेला, हलका तथा दाह, ववासीर, कृमि, शूल, संताप, विषनाशक, सूजन, कण्डू, और भूतबाधाको हरनेवाला है ।

विवरण । मीठेनीमका वृक्ष होताहै, नीमकी समान किन्तु कोरे रहित होतेहै, निंबोली झुमखेमें आतीहै और पकनेके समय निंबोली का रंग लाल पड जाता है कालकाके समीप यह बहुत होताहै गधीला नामसे प्रसिद्ध है लोग प्रायःइसकी दातन भी करते है ।

पारिभद्रनामानि ।

पारिभद्रश्च पालाशो रक्तपुष्पः प्रभद्रकः ।
कण्टकी पारिजातः स्यान्मन्दारःकण्टकिंशुकः ॥

अर्थ-पारिभद्र, पालश, रक्तपुष्प, प्रभद्रक, कण्टकी, पारिजात, मन्दार, कण्टकिंशुक (पारिजात, निम्बतरु, रक्तपुष्पक, क्रिमिशत्रु, रक्तकुसुम, कृमिघ्न, बहुपुष्प, रक्तकेशर)

संस्कृतभाषामे	पारिभद्र ।
हिन्दीभाषामे	फरहद ।
बंगभाषामे	पालतेमान्दार ।
मराठीभाषामे	पानरो (को०) पारिंगा ।
गुजरातीभाषामे	पांडेरवा ।
कर्णाटकीभाषामे	हारिवाल । (भरुकमरम)
तैलिङ्गभाषामे	मुल्लमोतिचेट्टु मोदुगु, वारिदेचेट्टु ।
द्राविडीभाषामे	पंजीर ।
तामिलीभाषामे	मुराक ।
लैटिनभाषामे	एरिथिनाइंडिका Erythrina indica
	एरीथ्रिना सुबरोझा Erythrina Subrosa

अस्य गुणाः ।

पारिभद्रः कृमिश्लेष्ममेदःकफानिलापहः ॥ (म० नि०)

अर्थ-फरहद-कृमि, कफ, मेद और कफवातविनाशक है ।

अपिच ।

पारिभद्रः कटूष्णः स्यात्कफवातनिकृन्तनः ।
अरोचकहरः पथ्यो दीपनश्चापि कीर्त्तितः ॥ (रा० नि०)

अर्थ-फरहद-कटु, उष्ण, कफवातनाशक, अरुचिहारक, पथ्य और दीपन है ।

अन्यच्च ।

पारिभद्रः कटूष्णश्च पथ्यश्चाग्निप्रदीपकः ।
अरोचकः कफकृमिमेहशोफहरः स्मृतः ॥
पुष्पं पित्तरुजं हन्ति कर्णव्याधि विनाशयेत् ।

अर्थ-फरहद-कटु, उष्ण, पथ्य, अग्निप्रदीपक तथा अरुचि, कफ, कृमि, प्रमेह और सूजनको दूर करे है, इसके फूल पित्तरोग और कर्णरोगनाशक है ।

विवरण । इसके वृक्ष जंगल और सडकोपर होतेहै, पत्ते ढाककी समान एक डालीमे तीन तीन होते है, सफेदीयुक्त फूल लाल और सुन्दर होताहै, इसपर फली आतीहै, इसकी शाखाओमे सूक्ष्म काटे होते है । व्यवहार छाल, पत्ते, फूल । मात्रा २ मासेकी ।

काञ्चनारनामानि ।



काञ्चनो रक्तपुष्पश्च कान्तारः कनकप्रभः ।
सुवर्णारोऽथ गिरिजः करकः काञ्चनारकः ॥

अर्थ-काञ्चन, रक्तपुष्प, कान्तार, कनकप्रभ, सुवर्णार, गिरिज, करक, काञ्चनारक, (युग्मपत्र, महापुष्प, गण्डारि, यमलच्छद, काञ्चनार, काञ्चनक, शोणपुष्पक, चमरिक, कुद्दाल, युगपत्रक, युगपत्र, काञ्चनाल, ताम्रपुष्प, कुद्दार, रक्तकाञ्चन, चम्पविदल, यमलच्छद)

कोविदारनामानि ।

कोविदारोऽथ कुद्दालः कुदारः कुण्डली कुली ।
आस्फोतोद्दालकः स्वल्पकेसरश्चमरी मतः ॥

अर्थ-कोविदार, कुद्दाल, युद्दार, कुण्डली, कुली, आस्फोत उद्दालक, स्वल्पकेसर, चमरी, (काञ्चनाल, कर्बुदार, पाकारी, आश्मन्तक)

संस्कृतभाषामें	काञ्चनार (ल), कोविदार ।
हिन्दीभाषामें	कचनार, सफेदकचनार ।
बंगभाषामें	काञ्चन, सफेद्काञ्चन ।
मराठीभाषामें	कोरल, काञ्चनवृक्ष ।
गुजरातीभाषा	चम्पाकाटी, चम्पोकांचनार जेना पादडाने चम्पाभाजी कहे छे ।
कर्णाटकीभाषामें	कोचाले कचनार ।
तैलिङ्गीभाषामें	देवकाञ्चन ।
लैटिन्भाषामें	बोहिनिया, वेरिएगेटा। Bohenia Variagata बोहिनिया परपुरिआ B Purpuria

काञ्चनारगुणाः ।

काञ्चनारो हिमो ग्राही तुवरः श्लेष्मपित्तनुत् ।
कृमिकुष्ठगुदभ्रंशगण्डमालाव्रणापहः ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-कचनार-शीतल, मलरोधक, कपेला, पित्त, कफनाशक तथा कृमि, कोढ, गुदभ्रंश, गण्डमाला और व्रणका नाश करे है ।

अन्यच्च ।

रक्तस्तु काञ्चनः शीतः सरो ह्यग्निप्रदीपनः ।
सप्रोक्तस्तुवरो ग्राही कफपित्तव्रणक्रिमीन् ॥
गण्डमालारक्तपित्तकुष्ठवातांश्च नाशयेत् ।
गुदभ्रंश रक्तपित्त नाशयेत्पुष्पमस्य च ॥
शीतलं तुवरं रूक्षं सग्राहि मधुरं लघु ।
पित्त क्षय च प्रदर कास रक्तरुज हरेत् ॥ (नि० र०)

अर्थ-लालकचनार-शीतल, सारक, अग्निप्रदीपक, कपेला, ग्राही तथा कफ, पित्त, व्रण, कृमि, गण्डमाला, रक्तपित्त, कुष्ठ, वात, गुदभ्रंश और रक्तपित्तको दूर करे है । इसके फूल-शीतल, कषेले, रूखे, ग्राही, मधुर, हलके तथा पित्त, क्षय, प्रदर, खासी और रक्तरोगको दूर करे है ।

श्वेतकाञ्चनगुणा ।

श्वेतस्तु काञ्चनो ग्राही तुवरो मधुरः स्मृतः ।
रुच्यो रूक्षः श्वासकासपित्तरक्तविकारहा ॥
क्षतप्रदरनुत्प्रोक्तो गुणाश्चान्ये तु रक्तवत् ।

अर्थ-सफेदकचनार-ग्राही, कषेला, मधुर, रुचिकारक, रूक्ष, श्वास, खासी, पित्त, रक्तविकार,क्षत और प्रदररोगनाशक है। शेष गुण लाल कचनारकी समान जानने ।

कोविदारगुणा ।

कोविदारो दीपनः स्यात्कषायो व्रणरोपणः ।
सग्राही सारकः स्वादुः पर्णशाकेषु चोत्तमः ॥
मूत्रकृच्छ्रं त्रिदोषं च शोषं दाहं कफं तथा ।
वातं हरेत्पुष्पगुणा रक्ता काञ्चनपुष्पवत् ॥

अर्थ-कोविदार-(सफेद कचनार) अग्निप्रदीपक, कषेला,व्रणको भरनेवाला, मलरोधक, सारक, स्वादिष्ठ यह पत्रशाकोमे उत्तम है। तथा मूत्रकृच्छ्र, त्रिदोष, शोष, दाह, कफ और वातनाशक है। इसके फूलोंके गुण लालकचनारके समान जानने ।

पीतकाञ्चनारगुणा ।

पीतस्तु काञ्चनो ग्राही दीपनो व्रणरोपणः ।
तुवरो मूत्रकृच्छ्रस्य कफवाय्वोश्च नाशनः ॥

अर्थ-पीला कचनार-ग्राही, दीपन, व्रणरोपण,कषेला, मूत्रकृच्छ्र, कफ और वातनाशक है ।

काञ्चनीगुणा ।

काञ्चन्युक्ता शीर्षरुजं त्रिदोषं च विनाशयेत् ।
स्तन्यस्य वर्द्धनकरी ऋषिभिः सूक्ष्मदर्शिभिः ॥ (नि०र०)

अर्थ-काञ्चनी-(छोटा कचनार)शिरोरोग और त्रिदोषनाशक है। तथा स्तनोमे दूध बढानेवालीहै ।

विवरण । कचनार लाल और सुफेद इन भेदोंसे दोप्रकारका होता है । यह वृक्ष जगल और पहाडोमे अधिक होतेहै । पत्ते एक एक शाखामे बराबर दोदो होते है, सुफेद फूल आतेहै,और फलियें लगतीहै, दूसरी प्रकारका कचनारभी ऐसाही होताहै परन्तु फूल लाल रंगके होतेहै ।

शोभाञ्जनः शिग्रुतीक्ष्णान्धकाक्षीवसुभाञ्जनाः ॥

अर्थ-शोभाञ्जन, शिग्रु, तीक्ष्णान्धक, अक्षीव, सुभाञ्जन,(तीक्ष्णान्धक, अक्षीव, सोभाञ्जन, सौभाञ्जन, विद्राधिनाशन, मधुगुञ्जन, हरीतशाक, शाकपत्र, शिग्रुक, सुपत्रक, उपदंश, क्षमादंश, कोमलपत्रक, बहुमूल, दशमूल, तीक्ष्णमूल, उग्र, कामिनीश, शोभतक, शौभाञ्जन, मोचक, तीक्ष्णगन्ध, सुतीक्ष्ण, वनपल्लव, श्वेतमरिच, कटुकन्द, गन्ध, गन्धक, कालीवक, मेचक, आक्षीव, शुभाञ्जन, स्त्रीचित्तहारी, द्रविणनाशन, कृष्णगन्धा, मूलकपर्णी, मोच, तिलशिग्रु, जलप्रिय, मुखमोद, कृष्णशिग्रु, चक्षुष्य, रुचिराञ्जन)

श्वेतशिग्रुनामानि।

श्वेतशिग्रुः सुतीक्ष्णश्च मुखभङ्गः सिताह्वयः ॥

अर्थ-श्वेतशिग्रु, सुतीक्ष्ण, मुखभङ्ग, सिताह्वय, (श्वेतमरिच, रोचन, सुमूल, मधुशिग्रुक)

रक्तशिग्रुनामानि।

रक्तोऽसौ मधुशिग्रुः स्यात्सुरंगी च शुभाञ्जना ॥

अर्थ-रक्तशिग्रु, मधुशिग्रु, सुरंगी, शुभाञ्जना, (कृष्णबीज, गर्भपातक, रक्तक, मधुर, बहुलद, सुगन्ध, केसरी, सिंह, मृगारी)

संस्कृतभाषामें	शोभाञ्जन, श्वेतशिग्रु। रक्तशिग्रु।
हिन्दीभाषामें	सौंजिना, सफेदसैंजिना, लालसैंजिना।
बंगभाषामें	सजिने, सादासजिने, लालसजडो।
मराठीभाषामें	शेगट, शेवगा।
गुजरातीभाषामें	शरगवो।
कर्णाटकीभाषामें	विलिपतुगि, कंपनेयतुगि।
तैलिङ्गीभाषामें	मुलगा।
तामिलीभाषामें	मोरंग।
दक्षिणीभाषामें	सेगत।
इंग्रेजीभाषामें	हॉर्सरेडीशट्रि HorseRadishTres
लेटिन्भाषामें	मोरिंगा टेरिगोस्परमा Moringapterygosperma

शोभाञ्जनगुणाः।

शिग्रुः कटुः कटुः पाके तीक्ष्णोष्णो मधुरो लघुः।

दीपनो रोचनो रूक्षः क्षारतिक्तो विदाहकृत् ॥
सग्राही शुक्रलो हृद्यः पित्तरक्तप्रकोपनः।
चक्षुष्यः कफवातघ्नो विद्रधिश्वयथुक्रिमीन् ॥
मेदोऽपचीविषप्लीहगुल्मगण्डव्रणान्हरेत् ॥ (भा०प्र०

अर्थ-सेंजिना-चरपरा, पचनेमभी चरपरा, तीक्ष्ण, गरम, मधुर, हलका, अग्निको दीपनकरनेवाला, रुचिकारक, रूखा, क्षारयुक्त, कडव दाहजनक, मलरोधक, शुक्रवर्द्धक हृदयको हितकारी, पित्तको कुपि करनेवाला, रुधिरको दूषित करनेवाला नेत्रोको हितकारी त कफ, वात, विद्रधि, सूजन, कृमि, मेदोरोग, अपची, विष, प्लीह गुल्म, गण्डमाला और व्रणको दूर करनेवाला है।

अन्यच्च।

शोभाञ्जनस्तीक्ष्णकटुः स्वादूष्णः पिच्छिलस्तथा।
जन्तुवातार्त्तिशूलघ्नश्चक्षुष्यो रोचनः परः ॥ (रा० नि०)

अर्थ-सेंजिना-तीक्ष्ण, चरपरा, स्वादिष्ठ, गरम, पिच्छिल तथ कृमि, वातकी वेदना और शूलको निर्मूल करेहै नेत्रोको हितका और परम रोचनहै।

श्वेतशिग्रुगुणाः।

श्वेतः प्रोक्तगुणो ज्ञेयो विशेषाद्दाहकृद्भवेत्।
प्लीहानं विद्रधिं हन्ति व्रणघ्नः पित्तरक्तकृत् ॥ (भा० प्र०

अर्थ-सफेदसेंजिनेके गुणभी सांजनेकी समान है, विशेषकरके दा उत्पन्न करेहै। तथा प्लीहा, विद्रधि और व्रणको दूर करेहै तथा पि रक्तकारक है।

अन्यच्च।

श्वेतशि॒ग्रुः कटुस्तीक्ष्णः शोफ निलनिकृन्तनः।
अङ्गव्यथाहरो रुच्यो दीपनो मुखजाड्यनुत् ॥ (रा नि.

अर्थ-सफेदसेंजिना-चरपरा, तीक्ष्ण, शोफनाशक, वातविनाशक अंगव्यथानिवारक, रुचिकारक, अग्निको दीपन करनेवाला औ मुखकी जडताको दूरकरनेवाला है।

रक्तशिग्रुगुणाः।

रक्तशिग्रुर्महावीर्यो मधुरश्च रसायनः।

शोथं वातं च पित्तं च आध्मानं च कफं जयेत् ॥

अर्थ-लालसैंजिना-महावीर्य्यवाला, मधुर,रसायन तथा, सूजन, वात, पित्त, आध्मान और कफको हरनेवालाहै ।

अन्यच्च ।

मधुशिग्रुः प्रोक्तगुणो विशेषाद्दीपनः सरः ॥

अर्थ-मधुशिग्रु-(लालसैंजिना)विशेष करके दीपन और सारकहै ।

शिग्रुवल्कलपत्राणां स्वरसः परमार्तिहृत् ॥

अर्थ-सैंजिनेकी छाल और पत्तोंका स्वरस अत्यन्त पीडाको दूर करेहै ।

शीग्रुबीजगुणाः ।

चक्षुष्यं शिग्रुबीजं च तीक्ष्णोष्णं विषनाशनम् ।
अवृष्यं कफवातघ्नं तन्नस्येन शिरोर्त्तिनुत् ॥

अर्थ-सैंजिनेके बीज-नेत्रोंको हितकारी, तीक्ष्ण, गरम, विषविनाशक, अवृष्य,कफघ्न,वातनाशक और इसके नास लेनेसे शिरकी पीडा दूर होतीहै ।

शिग्रुशाकगुणाः ।

शिग्रुशाकं हिमं स्वादु चक्षुष्यं वातपित्तहृत् ।
बृंहणं शुक्रकृत्स्निग्धं रुच्यं मदकृमिप्रणुत् ॥

अर्थ-सैंजिनेका शाक-शीतल,स्वादिष्ठ,नेत्रोंको हितकारी,वातपित्तनाशक, बृंहण, तेजवर्द्धक, शुक्रजनक,स्निग्ध, रुचिकारक तथा मद और कृमिनाशक है ।

शिग्रुपुष्पगुणाः ।

शिग्रोः पुष्पं तु कटुकं तीक्ष्णोष्णं स्नायुशोथनुत् ।
कृमिकृत्कफवातघ्नं विद्रधिप्लीहगुल्मजित् ॥

अर्थ-सैंजिनेके फूल-चरपरे,तीक्ष्ण, गरम, स्नायुरोग और शोथनाशक है, कृमिजनक, कफवातनाशक तथा विद्रधि, प्लीहा और गुल्मका नाशकरे है ।

शिग्रुफलगुणाः ।

शोभाञ्जनफलं स्वादु कषायं कफपित्तनुत् ।
शूलकुष्ठक्षयश्वासगुल्महृद्दीपनं परम् ॥

अर्थ-सैंजिनेकी फली-स्वादिष्ठ,कषैली,कफपित्तनाशक तथा शूल

कोढ, क्षय, श्वास और गुल्म (गोला) का नाश करेंहै तथा दीपनहै ।

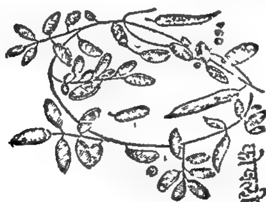
विवरण । सैंजिनेके वृक्ष बाग, वन और जंगलमे होतेहे । इसकी फूलोके लौटफेरसे तीन जातीहै, फूल सफेद, नीले और लाल आते है, इनमेसे सफेद फूलका सैंजिना अधिकतासे होता है, इसकी फलियोको दालमे डालकर खाते है सैंजिनेका तेल अनेक प्रकारकी खुजलीको दूर करता है ।

अपराजितानामानि ।

आस्फोता गिरिकर्णी स्याद्भूमिलग्नपराजिता ।
नगपर्य्यायकर्णी च गवाक्षी गिरिशालिनी ॥

अर्थ–आस्फोता, गिरिकर्णी, भूमिलग्ना, अपराजिता, नागपर्य्यायकर्णी, गवाक्षी, गिरिशालिनी (अश्वक्षुरादिकर्णी, कटभी, दधिपुष्पिका, गर्दभी; सितपुष्पा, श्वेतस्यदा, किणिही, श्वेता, भद्रा, सुपुष्पी विषहंत्री, सुपुत्री, सिंहपुष्पी, श्वेतवराटा, गवादिनी)

नीलापराजितानामानि ।



नीलपुष्पी महानीला, स्यान्नीला गिरिकर्णिका ।
गवादिनी व्यक्तगन्धा विष्णुक्रान्ता विभाण्डिका ॥

अर्थ–नीलपुष्पी, महानीला, नीला, गिरिकर्णिका, गवादिनी, व्यक्तगन्धा, विष्णुक्रान्ता, विभाण्डिका ।

संस्कृत भाषामे	अपराजिता, नीलापराजिता ।
हिन्दीभाषामे	सफेदकोयल, नीलीकोयल ।
बंगलाभाषामे	अपराजिता, नीलापराजिता ।
मराठीभाषामें	गोकर्णी काळी, पाढरी ।

गुजराती भाषामें	गरणी ।
कर्णाटकीभाषामे	विलीयगिरिकर्णिके, नीलगिरिकर्णिके
तैलिङ्गीभाषामे	नीलगंटुना ।
लैटिन्‌भाषामे	क्लीटोरिआ टरनेटिया Cletorea Ternatea
लै०	मेजोरिअन् Megorian
अं०	मजीरयुतपर्णहिंदी ।

अपराजितागुणा ।

श्वेता गोकर्णिका कट्वी शीता तिक्ता च बुद्धिदा ।
चक्षुष्या तुवरा चैव सरा विषविनाशिनी ॥
त्रिदोषं शीर्षशूलं च दाहं कुष्ठं च शूलकम् ।
आम पित्तरुज चैव शोथं जन्तून् व्रणं कफम् ॥
ग्रहपीडांशीर्षरोगं विषं सर्पस्य नाशयेत् ।

अर्थ-सफेद कोयल-चरपरी, शीतल, कडवी, बुद्धिदायक, नेत्रोको हितकारी, कपेली, सरा (दस्तावर), विषविनाशक तथा त्रिदोष, मस्तक शूल, दाह, कोढ, शूल, आम, पित्तरोग, सूजन, कृमि, व्रण, (घाव) कफ, ग्रहपीडा, मस्तकरोग और सर्पके विषको दूर करेहे ।

कृष्णगोकर्णिकागुणा ।

कृष्णगोकार्णिका तिक्ता रसे स्निग्धा त्रिदोषहा ।
शीतवीर्य्या वातपित्तज्वरदाहभ्रमापहा ॥
पिशाचबाधारक्तातिसारोन्माद मदापहा ।
अतिकासश्वासकफकुष्ठजंतुक्षयापहा ॥
अन्ये गुणास्तु सुश्वेतगोकर्णीसदृशा मताः ॥

अर्थ-नीलीकोयल-कडवी, स्निग्ध, त्रिदोषनाशक, शीतवीर्य्य तथा वात, पित्त, ज्वर, दाह, भ्रम, पिशाचबाधा, रक्तातिसार, उन्माद, मद, अत्यन्त खांसी, श्वास, कफ, कोढ, जन्तु, और क्षयरोगको दूर करेहे । शेष गुण सफेद अपराजिताके समान जानने ।

विवरण-कोयल सफेद और नीले फूलोंके भेदसे दो प्रकारकी है यह खेत बाग और उपवनोमे होतीहै पत्ते छोटे गुलाबकी समान हात हैइस पर फली लम्बी आती है ।

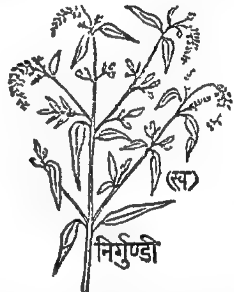
सिन्दुवारनामानि ।

इन्द्राणिकेन्द्रसुरसो निर्गुण्डी सिन्धुवारकः ॥

अर्थ-इन्द्राणिका, इन्द्रसुरस, निर्गुण्डी, सिन्धुवारक, (सिन्धुवार, सिन्धुवारक, सिन्धुक, इन्द्रसुरिप, सिन्दुवारित, इन्द्राणी, शुक्राणी, काशनाशिनी, सुरसा, सिन्धु, शुक्रपृष्ठक, विसुगन्धक, सुरस, श्वेतपुष्प, स्थिरसाधनक, अनन्त, सिद्धक, अर्थसिद्धक, सिन्दुवारिका)

नीलसिन्धुवारनामानि ।





नीलिका नीलनिर्गुण्डी सिन्दुको नीलसिन्दुकः ॥

अर्थ-नीलिका, नीलनिर्गुण्डी, सिन्दुक, नीलसिन्दुक, (नीलसिन्दुवार, पीतसहा, निर्गुण्डी, भूतकेशी, इन्द्राणी, नीलिका, कपिका, शेफालिका, शीतभीरु, नीलिका, नीलमञ्जरी, कर्तरीपत्र, भूतकेशी, वनजा, मरुत्पत्री, वनेंद्राणी)

संस्कृतभाषामें	सिन्दुवार, नीलसिन्दुवार, निर्गुण्डी, निर्गुण्डीभेद ।
हिन्दीभाषामें	सम्हालु, निर्गुण्डी, मेउडी, नीलसम्हालु, सिहरु, सम्हालुके बीज ।
बंगभाषामें	निशिन्दा, नीलनिगिन्दा ।
मराठीभाषामें	निर्गुण्डी-पांढऱ्याफुलाची, काळ्याफुलांची, लिंगुर, निर्गुण्डीचे बीज ।
गुजरातीभाषामें	नागडच, नागडचनाबी ।

कर्णाटकीभाषामें	करियल्लाकिमेउडी विलीयलोके ।
तामिलीभाषामें	नोक्चि, निर्नोचि, मनजाप ।
बम्०	निर्गुण्डी, काट्रि, कल अडलुसा ।
द्रा०	सान्वालि, कालिसुम्भालि ।
पञ्जाबीभाषामें	वणा, लहरी ।
कोंकणीभाषामें	नगूड, सेन्दुवार ।
इंग्रेजीभाषामें	फाइवलिव्ड चेस्ट्री । Fivelcaved Chastetie
लैटिन्भाषामें	वाईटक्सनिगण्डु । Vitex Negunda
तैलिङ्गीभाषामें	तेलावाविली,नाषिलिचेट्टु, तेल्लब,नल्लवविले वविल्ली
फारसीभाषामें	परंगुष्ट,तुख्मेपञ्जगुष्ट-मिसवान ।
अरबीभाषामें	असलुक, हडुलफुक्का, बजरुल, असलुक् ।

सिन्दुवारगुणा ।

सिन्दुकः स्मृतिदस्तिक्त' कपाय· कटुको लघुः ।
केश्यो नेत्रहितो हति शूलशोथाममारुतान् ॥
कृमिकुष्ठारुचिश्लेष्मज्वरान्नीला सिता द्विधा ।
सिन्दुवारदलं जन्तुवातश्लेष्महरं लघु ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-सम्हालु-और नीलम्हालु दोनो स्मरणशक्तिदायक, कपैले, चरपरे,हलके, बालोको सुन्दरतादायक, नेत्रोंको हितकारी तथा शूल,सूजन,आमवात,कृमि,कोढ,अरुचि,कफ और ज्वरको दूर करेहैं। सम्हालुके पत्ते-कृमि वात और कफनाशक है तथा हलकेहै ।

कटूष्णा नीलनिर्गुण्डी तिक्ता रूक्षा च कासजित् ।
श्लेष्मशोफसमीरार्तिप्रदराध्मानहारिणी ॥(रा नि)

अर्थ-नीलनिर्गुण्डी-कटु(चर्परी)उष्ण (गरम) तिक्त (कडवी) रूक्ष(रूखी) तथा कास (खांसी)कफ,शोफ(सूजन),वातकी वेदना, प्रदररोग और आध्मान(अफारा)को दूर करे है ।

अन्यच्च ।

निर्गुण्डी कटुका तिक्ता रूक्षोष्णा च कषायका ।
स्मृतिप्रदा नेत्रहिता केश्या लघ्वग्निदीपनी ॥
मेध्या वण्या च संप्रोक्ता गुदवातक्षयापहा ।

सन्धिवातं च वातं च शोफ वामं कृमीस्तथा ॥
कुष्ठं कफं व्रण प्लीहां गुल्मं कण्ठरुजं तथा ।
विषशूल चारुचिं च ज्वरमेदोरुज तथा ॥
गृध्रसीं च प्रतिश्यायं कासं श्वासं च नाशयेत् ।
पित्तनाशकरी प्रोक्ता पर्णमस्या लघुस्मृतम् ॥
कृमिनाशकर प्रोक्तं पूर्ववैद्यैः कृपालुभिः ।

अर्थ-निर्गुण्डी-चरपरी, कडवी, रूखी, गरम, कषेली, स्मरणशक्तिदायक, नेत्रोंको हितकारी, केशोंको सुन्दरतादायक, हलकी अग्निको दीपन करनेवाली, मेधाजनक, वर्णकारक तथा शुदवात, क्षय, सन्धिवात, सूजन, आम, कृमि, कोढ, कफ, घाव, प्लीहा, गोला, कण्ठरोग, विष, शूल, अरुचि, ज्वर, मेदोरोग, गृध्रसीवात, प्रतिश्याय, (नाकसे पानीगिरना) खासी, श्वास और पित्तको दूर करेहै। इसके पत्ते-हलके और कृमिरोगनाशक हैं ।

कर्त्तरीनिर्गुण्डीगुणा ।

निर्गुण्डी कर्त्तरी युक्ता कटी तिक्ता कफापहा ।
वात क्षयञ्च शूलञ्च कण्डूं कुष्ठं च नाशयेत् ॥

अर्थ-कर्तरी निर्गुण्डी-चरपरी, कडवी, कफनाशक तथा वात, क्षय, शूल, कण्डू और कुष्ठको नष्ट करेहै ।

अरण्यनिर्गुण्डीगुणा ।

प्रोक्ता चारण्यनिर्गुण्डी पथ्या पित्तज्वरं हरेत् ।
विषं च गृध्रसीवात नाशयेद्वर्णकारिणी ॥
पर्णं चास्यास्तु कटुकं चाग्निदीप्तिकरं लघ ।
कृमीन् कफ च वात च नाशयेदिति कीर्तितम् ॥
कटु चोष्णं पुष्पमस्यास्तिक्त कृमिकफापहम् ।
प्लीहां गुल्म च वातं च कुष्टं शोथ च नाशयेत् ॥
अरुचेर्नाशक प्रोक्त कण्डू चैव विनाशयेत् ।(नि०र०)

अर्थ-वननिर्गुण्डी-पथ्य तथा पित्तज्वर, विष और गृध्रसीवातनाशक है और वर्णकारक है । इसके पत्ते-चरपरें, अग्निको दीपन कर-

नेवाले, हलके तथा कृमि, कफ और वातनाशक है। इसके फूल-चरपरे, गरम, कडवे, तथा कृमि, कफ, प्लीहा, गोला, वात, कोढ, सूजन, अरुचि और कण्डू तथा खुजलीका नाश करेहै।

विवरण। निर्गुण्डीके वृक्ष बाग और वनोंमें होते है। पत्ते अरहर की समान होते है। एक डंडीपे पांच पांच होते है। पत्ते नीले और नीचे सपेद होतेहै। निर्गुण्डी अनेक जातिकी होतीहै किसीपे काले और किसीपे सपेद फूल आते है। फल आमके मौरकी समान गुच्छे दार और केशरी रंगके होते है। व्यवहार-मूल। मात्रा ३ ।

कुटजनामानि।



कुटजो मल्लिकापुष्पः शक्राशो वरतिक्तकः ॥

अर्थ-कुटज, मल्लिकापुष्प, शक्राश, वरतिक्त, (शक्र, वत्सक, गिरिमल्लिका, पाण्डुर, कटुक, कुटक, कौटज, तिक्तक, रक्तनाशक वृक्षक, शक्राह्वय, शक्रपर्याय, कूटज, काही, कालिङ्ग, मल्लिका, पुष्प, प्रावृष्य, शक्रपादप, यवफल, सग्राही, पाण्डुद्रुम, प्रावृषेण्य, महागन्ध, इन्द्रद्रु, शक्रशाखी)

संस्कृतभाषामें	कुटज।
हिन्दीभाषामें	कुडा, कौरैया
वंगभाषामें	कुडाचि, कुराचि।
मराठीभाषामें	कुडा।
गुजरातीभाषामें	कडो।

कर्णाटकीभाषामे	कोडसिगेयमहत्तु ।
तैलिङ्गभाषामे	अंकेलु चगलकुष्ठ ।
तामिलीभाषामे	वेप्पाले
तु०	कोडजि ।
इंग्रेजीभाषामे	आवललिव्ड रोझबे। Ovalleaved RoseBay
लैटिन्भाषामे	राइटियाएंटिडिसेन्टरिका । Wrightia antidicen terica
अरबीभाषामे	तिवाज ।

अस्य गुणा ।

कुटजः कटुको रूक्षो दीपनस्तुवरो लघुः ।
अर्शोऽतिसारपित्तास्रकफतृष्णामपित्तनुत् ॥
तत्पुष्पं शीतलं तिक्तं कषायं लघु दीपनम् ।
वातलं कफपित्तास्रकुष्ठातीसारजन्तुजित् ॥
तस्य शिम्बीभवं शाकं व्यंजनं चामवातजित् ।
रुच्यं कफघ्नं रक्तातीसारकुष्ठक्रिमीञ्जयेत् ॥ (भ० वि०)

अर्थ–कुडा–चरपरा, रूखा, दीपन, कषैला, हलका तथा बवासीर अतिसार, रक्तपित्त, कफ, तृषा, आम और पित्तको दूर करे है। कुडेके फूल शीतल, कडवे, कषैले, दीपन, हलके, वातकारक तथा कफ, रक्तपित्त, कुष्ठ, अतिसार और कृमिको दूर करेहै। इसकी फलियोका शाक–व्यञ्जन, आमवातनाशक, रुचिकारक, कफनाशक तथा रक्तातिसार, कुष्ठ और कृमिको दूर करेहै, इसकी विशेष पर्याय और गुण एवं विवरणादिक सब हरीतक्यादिवर्गमे देखो।

करजनामानि।



करज

करञ्जो नक्तमालश्च पूतिकः पूतिपत्रकः ।
पूतीकरञ्ज कैडर्यः कलिमार उदाहृतः ॥

अर्थ-करञ्ज,नक्तमाल,पूतिक,पूतिपत्रक,पूतिकरञ्ज, कैडर्य्य कालिमार, (पूतिपर्ण, वद्धफल, रोचन, करज, करञ्जक, उदकीर्य)

अपिच ।

चिरबिल्वः करञ्जोन्यः प्रकीर्यो गौर एव च ।
उदकीर्योऽथ षड्ग्रन्थो वृत्तपर्णः प्रकीर्तितः ॥

अर्थ-चिरविल्व, प्रकीर्य, गौर, उदकीर्य, षड्ग्रन्थ, और वृत्तपर्ण ।

अन्यच्च ।

करञ्जो नक्तमालश्च पूतिकश्चिरबिल्वकः ।
पूतिपर्णो वृत्तफलो रोचनो गुच्छपुष्पकः ॥

अर्थ-करञ्ज, नक्तमाल, पूतिक, चिरबिल्वक, पूतिपर्ण, वृत्तफल, रोचन, गुच्छपुष्पक (स्निग्धपत्र, तपस्वी, विषारि, घृतपर्णक)

तथाच ।

उदकीर्यस्तृतीयोऽन्यः षड्ग्रन्था हस्तिवारुणी ।
अगारवल्ली शार्ङ्गेष्ठा काकघ्नी करभण्डिका ॥

अर्थ-उदकीर्य, षड्ग्रन्था, हस्तिवारुणी, अगारवल्ली, शार्ङ्गेष्टा, काकघ्नी, करभण्डिका ।

महाकरञ्जिका चैव मदहस्तिनिका च सा ॥

अर्थ- महाकरञ्जिका, मदहस्तिनिका (काकघ्नी, मदहस्तिनी)

संस्कृतभाषामें	करञ्ज, पूतिकरञ्ज, घृतकरञ्ज, षड्ग्रन्थ, महाकरञ्ज ।
हिन्दीभाषामें	करञ्ज, करञ्जभेद ।
बंगभाषामें	डहरकरञ्ज, नाटाकरञ्ज इत्यादि ।
मराठीभाषामें	चापडाकरञ्ज, घाणेराकरञ्ज, वावळा ।
गुजरातीभाषामें	करञ्ज, चरेलकणसे ।
कर्णाटकीभाषामें	नापसीयमरनु, वारुबहुलिगिलु ।
तैलिङ्गीभाषामें	कालुगचेट्टु, कज ।
मला०	पोन्नं ।
तामिलीभाषामें	पुगममार ।

इंग्रेजीभाषामे स्मूथ्लिव्ड पोनगोमिया। Smooth leaved,Pongamia
लैटिन्भाषामे पोनगोमियाग्लेबा । Pongamia Glabra अलमस
इन्टेग्रेफोलिया । Almus Integrefolie

करञ्जगुणाः ।

करञ्जः कटुकः पाके नेत्र्योष्णस्तिक्तको रसे ।
कषायोदावर्त्तवातानां योनिदोषापहः स्मृतः ॥
वातगुल्मार्शव्रणहृत् कण्डूकफविषापहः ।
विचर्चिकापित्तकृमित्वग्दोषोदरमेहहा ॥
प्लीहाहरश्च संप्रोक्तः फलमुष्णं लघु स्मृतम् ।
शिरोरुग्वातकफहृत्कृमिकुष्ठार्शमेहनुत् ॥
पर्णं पाके कटूष्ण स्याद्भेदक पित्तल लघु ॥
कफवातार्शकृमिनुद्व्रणं शोथं च नाशयेत् ॥
पुष्पमुक्त चोष्णवीर्य्यं पित्तवातकफापहम् ।
अस्यांकुरा रसे पाके कटुकाश्चाग्निदीपकाः ॥
पाचकाः कफवातार्शःकुष्ठकृमिविषापहाः ।
शोथनाशकरा प्रोक्ता ऋषिभि सूक्ष्मदर्शिभिः॥ (नि र)

अर्थ–करज–पचनेमे चरपरी, नेत्रोको हितकारी, गरम, कडवी, कषैली तथा उदावर्त, वात, योनिदोष, वातगुल्म, बवासीर, घाव, कण्डू, कफ, विष, विचर्चिका, पित्त, कृमि, त्वचाके विकार, उदररोग, प्रमेह और प्लीहाको दूर करनेवाली है । करजके फल–गरम, हलके तथा शिरोरोग, वात, कफ, कृमि, कोढ, बवासीर और प्रमेहको दूर करै है ।

इसके पत्ते–पचनेमे चरपरे, गरम, भेदक, (दस्तावर) पित्तजनक, हलके तथा कफ, वात, बवासीर, कृमि, घाव और सूजनको दूर करैं हैं । इसके फूल–उष्णवीर्य्य तथा पित्त, वात और कफका नाश करैं हैं । इसके अंकुर–रसमे और पचनेमे चरपरे, अग्निदीपन करनेवाले पाचक, तथा कफ, वात, बवासीर, कुष्ठ, कृमि, विष और सूजन को दूर करनेवाले हैं ।

अपिच।

करञ्जो ज्वरत्वग्दोषनाशनो दंतदार्ढ्यकृत्।
कटुको भेदनस्तस्य फलं नयनपुष्पहृत्॥
पित्तश्लेष्मण्युदासीनं विष्टम्भनविबन्धकृत्॥(शो॰नि॰)

अर्थ-करज-ज्वर और त्वचाके दोषको दूर करैहै, दाँतोको दृढ करै है, चरपरी और दस्तावर है। इसके फल-आंखके फूलेको दूर करै है।तथा पित्त और कफको हरै है,विष्टम्भ और विबन्धकारक है।

करञ्जतैलगुणाः।

करञ्जतैलं तीक्ष्णोष्णं कृमिहृद्रक्तपित्तकृत्।
नयनामयवातार्त्तिकुष्टकण्डूव्रणप्रणुत्॥
वातनुत्पित्तकृत्किञ्चिल्लेपनाच्चर्मदोषनुत्। (आ॰ सं॰)

अर्थ-करञ्जका तेल-तीक्ष्ण, गरम, कृमिनाशक, रक्तपित्तकारक तथा नेत्ररोग, वातकी वेदना, कोढ, कण्डू (खुजली) घाव और वातका नाश करैहै, किञ्चित् पित्तकारक और इसका लेप करनेसे त्वचाके विकार दूर होते हैं।

महाकरञ्जगुणाः।

महाकरजकस्तीक्ष्णः कटुश्चोष्णश्च तिक्तकः।
कण्डूविचर्चिकाकुष्टत्वग्रुग्विषव्रणापहा॥

अर्थ-महाकरज-तीक्ष्ण, चरपरी, गरम, कडवी तथा कण्डू, विचर्चिका, कुष्ठ, त्वचाके रोग विष और व्रणनाशक है।

घृतकरञ्जगुणाः।

प्रोक्तो घृतकरजस्तु कटूष्णो व्रणापहः।
वातं च सर्वत्वग्दोषं विषं चार्शो विनाशयेत्।
करञ्ज इव सम्प्रोक्ता गुणास्त्वन्ये भिषग्वरैः।

अर्थ-घृतकरञ्ज-चरपरी, गरम, तथा व्रण(घाव) वात, सर्वप्रकारके त्वचाके रोग, विषरोग और अर्श (बवासीर) को दूर करैहै। शेष गुण करजकी समान जानने।

गुच्छकरञ्जगुणाः।

गुच्छनामा करजः स्यादुष्णस्तिक्तः कटुः स्मृतः।
विचर्चिकावातविषकण्डूकुष्ठार्शनाशनः॥

त्वग्दोषनाशकश्चैव ऋषिभिः परिकीर्तितः।

अर्थ—गुच्छकरज-गरम, कडवी, चरपरी तथा विचर्चिका, वात,विष,कण्डू,कुष्ठ,ववासीर और त्वचाके रोगोका नाश करे है।

पूतिकरजगुणा ।

पूतिकरञ्जकः प्रोक्तो गुच्छपूर्वकरंजवत् ॥ (नि॰ र॰)

अर्थ--पूतिकरञ्जके गुण गुच्छकरंजकी समान हैं।

पूतिकरञ्जपत्रगुणा ।

पूतिकरजजं पत्र लघु वातकफापहम्।

भेदन कटुक पाके वीर्य्योष्ण शोफनाशनम् ॥

अर्थ-पूतिकरजके पत्ते-हलके, वातकफनाशक, भेदक (दस्तावर), पचनेमे चरपरे, उष्णवीर्य्य और शोफ (सूजन) नाशक है।

विवरण। करंजके बहुत बडे २ वृक्ष वनमे होते है, पत्ते-पाखरके पत्तोकी समान गोल और ऊपरके भागमे चमकदार होते है। इसमे फूल आसमानी रगके आतेहै और फलभी नलि २ झुमकेदार लगते है, पत्तोमे दुर्गन्ध आतीहै। करज छे सात प्रकारकी होती है।

कण्टकरजनामानि।



लताकरंज.

कुबेराक्षी ककचिका करञ्जा तिणगच्छिका।

वारिणी तीरिणी वल्ली ज्ञेया कण्टकिनीति च ॥

अर्थ-कुबेराक्षी, क्रकचिका, करञ्जा, तिणगच्छिका, वारिणी, तीरिणी, वल्ली, कण्टकिनी।

संस्कृतभाषामे	कण्टकरज ।
हिन्दीभाषामे	करंजा, करञ्जुवा ।
बंगलाभाषामे	कॉटाकरंज ।
मराठीभाषामे	सागरगोटा ।
गुजरातीभाषामे	कांकच, तेनाफल-कांकचिया ।
कर्णाटकीभाषामे	करञ्जभेदु ।
तैलिङ्गीभाषामे	कचकाई, गुच्चेपिक्का ।
इंग्रेजीभाषामे	बोण्डकनट Banducnut
लैटिन्भाषामे	सिसालपिनिया बाण्डुसेला Caesalpinia Bondacella
फारसीभाषामे	खाय, इबलीस ।
अरबीभाषामे	अक्तमक्त ।

कण्टकरजगुणाः ।

कण्टयुक्तः करञ्जस्तु पाके च तुवरः कटुः ।
ग्राहकश्चोष्णवीर्य्यः स्यात्तिक्तः प्रोक्तश्च मेहहा ॥
कुष्ठार्शोव्रणवातानां कृमीणां नाशनः परः ।
पुष्प तु चोष्णवीर्यं स्यात्तिक्त वातकफापहम् ॥

अर्थ-कञ्जा-पाकके समय चरपरा, कषैला, ग्राही (मलरोधक) उष्णवीर्य्य, कडवा तथा प्रमेह, कोढ, बवासीर, घाव, वात और कृमिनाशक है । इसके फूल उष्णवीर्य्य, कडवे तथा वात और कफनाशक हैं ।

विवरण । कंटककरज अर्थात् करञ्जवेके वृक्ष मालीलोग पुष्पवाटिकाओकी वाडोपर रक्षाके लिये लगादेते है । और जंगलोमे भी हो जाते है । परन्तु वह पेड लताकी सदृश होतेहैं और परस्पर गठ जाते हैं । उन झाड झाकडोमे काटे अधिक होतेहैं पत्ते-सिरसकी समान डालीमे आमने सामने लगे होतेहैं । फल-कचौरीके समान लगतेहैं परन्तु कांटोसे ऐसे परिपूर्ण होतेहैं कि, तिल रखनेको ठौर नहीं होता उसमेसे चार पाच बडी कौडीकी बराबर दाने निकलते है। उनको करजवा कहतेहै ऊपरसे उनकी छाल राखके रगके समान होतीहै भीतरसे सपेद गिरी निकलती है ।

गुञ्जानामानि ।

रक्तिका गुञ्जिका गुञ्जा काकजघा शिखण्डिनी ।

कृष्णला काकिनी कक्षा कनीचिः काकणन्तिका ॥

अर्थ-रत्तिका, गुञ्जिका, गुञ्जा, काकजंघा, शिखंडिनी, कृष्णला, काकिनी, कक्षा, कनीची, काकणन्तिका(काकाचिची, शांगुष्ठा, काकादनी, काकातिक्ता, काकतुण्डिका, काका, काकिणी, कार्ष्णी, चूडामणी, सौम्या, शिखण्डी, अरुणा, ताम्रिका, शीतपाकी, उच्चटा, कृष्णचूडिका, रक्ता, काम्बोजी, भीलभूषणा, वन्या, श्यामलचूडा, काकचिञ्चिका, काकपीलु, काकणन्ती, काकवल्लरी, काकशिम्बी, रक्तला, वक्त्रशल्या, ध्वांक्षनखा, दुर्मोंघा, वायसादनी, चटकी, तुलाबीजा, अंगारवल्लरी)

श्वेतगुञ्जानामानि ।

द्वितीया श्वेतकाम्बोजी श्वेतगुञ्जा मिरिण्टिका ।
श्वेतोच्चटा श्वेतबीजा श्वेतपूर्वा च सा स्मृता ॥

अर्थ-श्वेतकाम्बोजी, श्वेतगुञ्जा, मिरिण्टिका, श्वेतोच्चटा, श्वेतबीजा, श्वेतरक्तिका और श्वेतगुञ्जिका इत्यादि (चक्रशल्या, चूडाला)

संस्कृतभाषामें	गुञ्जा, श्वेतगुञ्जा ।
हिन्दीभाषामें	घूंघुची, चोटली, चिरमिटी, सफेद घुंघची ।
बंगभाषामें	कुँच, सादाकुँच ।
मराठीभाषामें	गुंजा, को०-माडलवेल ।
गुजरातीभाषामें	चणोठी राती, चणोठीधोली ।
कर्णाटकीभाषामें	गुलगुंजे, एरडु ।
तैलङ्गीभाषामें	गुलुविंदे ।
तामिलीभाषामें	करिन ।
द्रु०	गोजी ।
म०	कुन्त्रि गुंजा ।
उत्	रुज ।
इंग्रेजीभाषामें	बीडट्री । Bead tree
लैटिन्भाषामें	एब्रस प्रिकेटोरियस् । Abrus Precatorius
फारसीभाषामें	चश्मेखरूस् ।
अरबीभाषामें	हब सुर्ख, हब सुफेद् ।

गुञ्जागुणा ।

गुञ्जाऽनुष्णा रसे तिक्ता कषाया कफपित्तहा ।

चक्षुष्या शुक्रला केश्या त्वच्या रुच्या बलप्रदा ॥
इन्द्रलुप्तहरी तीव्रा सविषा मदमोहकृत् ।
यक्षग्रहविषं हन्ति कण्डूकुष्ठव्रणान्क्रिमीन् ॥

अर्थ-घूँघची-अनुष्णा(गरम नहीं) कडवी, कषैली,कफघ्न, पित्तनाशक, नेत्रोंको हितकारी, शुक्रजनक, केशोंको सुंदरतादायक, त्वचाको हितकारक, रुचिकारक, बलवर्द्धक, इन्द्रलुप्त (गंज)रोगनाशक, तीव्रविषयुक्त, मदकारक, मोहजनक तथा यक्ष, ग्रह, विष, कण्डू (खुजली) कोढ, घाव और कृमिरोगको नष्ट करेहै ।

द्विविधगुञ्जागुणा ।

गुञ्जाद्वयं स्वादु तिक्तं बल्यं चोष्णं कषायकम् ।
त्वच्यं केश्यं च रुच्यं च शीतं वृष्यं मतं बुधैः ॥
नेत्ररोगं विषं पित्तमिन्द्रलुप्तं व्रणं कृमीन् ।
राक्षसग्रहपीडां च कण्डूं कुष्ठं कफं ज्वरम् ॥
मुखशीर्षरुजं वातं श्रमं श्वासं तृषं तथा ।
मोहं मदं नाशयति बीजं वान्तिकरं मतम् ॥
शूलनाशकरं मूलं पर्णं च विषनाशकम् ।
श्वेतगुञ्जा विशेषेण वशीकरणकृन्मता ॥

अर्थ-दोनोंप्रकारकी (लाल और सफेद) घूँघची, स्वादिष्ठ, कडवी, बलकारक, गरम, कषैली,त्वचाको उत्तम करनेवाली,केशोंको हितकारी, रुचिकारी,शीतल,वीर्य्यवर्द्धक तथा नेत्ररोग,विष,पित्त, इन्द्रलुप्त, व्रण, कृमि, राक्षस, ग्रहपीडा,कण्डू,कुष्ठ,कफ,ज्वर,मुखरोग, शीर्षरोग, वात, श्रम, श्वास, तृषा, मोह और मदका नाशकरे है । इसके बीज वान्तिकारक और शूलहारक है । इसकी जड और पत्ते विषनाशकहै । सफेद घूँघची-विशेषकरके वशीकरण है ।

विवरण। घूँघचीकी वेल जगलमे अधिकतासे होतीहै । पत्ते इमलीके समान होते है। औरखानेमे मीठे लगतेहै । फूल सेमकी समान होते है । और फली भी सेमकी सदृश गुच्छेवाली होतीहै । उन फलियोमे घूँघची (चोटली) होतीहै इनमे लाल रंगकी चोटलीके

मुखपै कुछ कालापन होताहै और सफेद रंगकी चोटली सम्पूर्ण सफेद होतीहै। सफेद रंगकी चोटलीके छुलके उतारकर उसका चून पीसले उस चूनको दूधमे मिलाकर खडी करले वह खडी धातुको बढ़ाने वाली है। चोटलीका तेल, त्वचाके रोगोको हरनेवाला, केशोको बढानेवाला और अनेकप्रकारके रोगोको हरनेवाला है। व्यवहार-मूल और बीज। मात्रा १ रत्तीसे २॥ रत्तीपर्य्यन्त है।

कपिकच्छूनामानि ।



कपिकच्छूरात्मगुप्ता शुकशिम्बा कपिप्रभा ।
शुकपिण्डी स्वयंगुप्ता कण्डूरा शूकशिम्बिका ॥

अर्थ-कपिकच्छू, आत्मगुप्ता, शुकशिम्बा, कपिप्रभा, शुकपिण्डी, स्वयगुप्ता, कण्डूरा, शूकशिम्बिका (जडा, अव्यण्डा, प्रावृषायणी, शुकशिम्बि, ऋष्यप्रोक्ता, शूकशिम्बि, मर्कटी, सद्यःशोथा, शूका, शूकवती, गात्रभंगा, कच्छूमती कच्छुरा, ऋषभी, कपिकच्छुरा, ऋषभजटा स्वगुप्ता, अजाह्वा, कण्डुरा, प्रावृषा, शूकशिम्बा, अजहा, वानरी, कपिकच्छू, कपीकच्छू, शूकपिण्डी, शूकपिण्डि, शूकशिम्बी, व्याघ्रा, सुगुप्ता, महर्षभी लाङ्गली, कुण्डली, चण्डा, दुरभिग्रहा, कपिरोमफला, गुप्ता दुःस्पर्शा, अजडा, प्रावृषण्या, बदरी, गुरु, आर्षभी, शिम्बी, वराहिका, तीक्ष्णा, रोमालु, वनशूकरी, काशीरोमा, रोमवल्ली, व्यङ्गा, वृष्या)

संस्कृतभाषामे	कपिकच्छु ।
हिन्दीभाषामे	कौंछ, किवाँच ।
वंगभाषामे	आलकुशि, धुनारगुंड; दया, शुयाशिम्बी, ।
मराठी भाषामे	कुहिलीचे बीज ।
गुजरातीभाषामे	कउचो, भेरवनी शीगना बी ।

कर्णाटकीभाषामे	नसुगुन्नी ।
तैलिङ्गीभाषामे	पिल्लअडुगु ।
तामिलीभाषामे	पुनाइक, कालि ।
मद्रासीभाषामे	नायिकरुणा, चोरिवाल्लि ।
गोमतकी	खवल्यावालि ।
वम्०	कुहिला ।
इंग्रेजीभाषामे	कौहेज् Cowdaqe
लैटिन्भाषामे	म्युक्युना प्रुरियेस । Muctda Pruriens

कपिकच्छुगुणाः

कपिकच्छुः स्वादुरसा वृष्या वातक्षयापहा ।
शीतपित्तास्रहन्त्री च विकृता गुणनाशिनी ॥ (रा० नि०)

अर्थ-कौंछ-स्वादु, वीर्य्यवर्द्धक तथा वात, क्षय,शीतपित्त,रुधिरविकार, और दुष्टव्रणको नष्ट करेहै ।

अन्यच्च ।

कपिकच्छुर्भृशं वृष्या मधुरा बृंहणी गुरुः ।
तिक्ता वातहरी बल्या कफपित्तास्रनाशिनी॥ (भा० प्र०)

अर्थ-कौंछ-अत्यन्त वीर्य्यवर्द्धक तथा मधुर,बृंहण (पुष्टिजनक) भारी,कडवी, वातनाशक, बलकारक तथा कफ और रक्तपित्त नाशक है ।

कपिकच्छुबीजगुणाः ।

तद्बीजं वातशमनं स्मृतं वाजीकरं परम् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-कौंछके बीज-वातनिवारक और वाजीकरण करनेवालेहै ।

लघुकपिकच्छुगुणाः ।

कपिकच्छुर्लघुः शीता वृष्या पित्तानिलापहा ।
सिध्मातिसारहन्त्री च वंध्यानां चाप्यपत्यदा॥ (शो०नि०)

अर्थ-छोटीकौंछ-शीतल, वीर्य्यवर्द्धक तथा पित्त, वात, सिध्म और अतिसारको दूर करे है । तथा वंध्या स्त्रियोंको संतान उत्पन्न करनेवाली है ।

अन्यच्च ।

कच्छुरा तुवरा तिक्ता योनिदोषापहा मता ।
कुष्ठं व्रणं रक्तकोपं नाशयेदिति कीर्तिता ॥ (नि०र०)

अर्थ-छोटीकौंछ-कषैली, कडवी तथा योनिदोष, कोढ,व्रण और रक्तके रोगको दूर करेहै ।

विवरण कौंछकी वेल होतीहै, फूल सेमकी समान होतेहै और फलिये भी सेमकी समान होतीहै, और फलियोके ऊपर सूक्ष्म रुँआ अधिक होताहै, इसका रुँआ शरीरमे लगनेसे अत्यन्त खुजली होनेलगतीहै। फलियोके भीतरसे सेमके बीजोकी समान बीज निकलतेहै छोटी कौंछका क्षुप होताहै ।

मांसरोहिणीनामानि ।

मांसरोहिण्यतिरुहा वृत्ता चर्मकषा वसा ।
प्रहारवल्ली विकशा वीरवत्यपि कथ्यते ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-मांसरोहिणी, अतिरुहा, वृत्ता, चर्मकषा, वसा,प्रहारवल्ली, विकशा, वीरवती, (अग्निरुहा, मांसरोही कशामांसी,महामांसी, मांसरोहा, रसायनी, सुलोमा, लोमकरणी, रोहिणी, चन्द्रवल्लभा)

संस्कृतभाषामे	रोहिणी, मांसरोहिणी ।
हिन्दीभाषामे	मांसरोहिणी, रोहिणी ।
मराठीभाषामे	रोहिणी, मांसरोहिणी ।
गुजरातीभाषामे	रोण्य ।
कर्णाटकीभाषामें	रोहिणी, मांसरोहिणी ।
इंग्रेजीभाषामे	रेड्वुडट्री । Redw ood Tre
लेटिन्भाषामें	सोयमीडा फेब्रीफ्युगा। SoymidaFebrihiga

मांसरोहिणीगुणा ।



स्यान्मांसरोहिणी वृष्या सरा दोषत्रयापहा॥ (भा०प्र०)

अर्थ-मांसरोहिणी-वीर्य्यवर्द्धक सारक (दस्तावर)और त्रिदोषनाशक है ।

अपिच ।

मांसरोहिणिका व्रण्या चोष्णा च रक्तपित्तजित् ।
सर्वां संग्रहणी इति नात्र कार्या विचारणा ॥ (नि०र०)

अर्थ-मांसरोहिणी-व्रणको हितकारी, उष्ण, तथा रक्तपित्त और सर्व प्रकारकी संग्रहणी दूर करह ।

रोहिणीगुणा ।

रोहिणी वातहृत्कासश्वासशोणितनाशिनी॥(अ भा०नि०)

अर्थ-रोहिणी-वातनाशक, कासनिवारक, श्वासहारक और रुधिरविकारविनाशक है ।

द्विविधरोहिणी गुणा ।

रोहिणीयुगलं शीतं कषाय कृमिनाशनम् ।
कण्ठशुद्धिकरं रुच्यं वातदोषनिषूदनम् ॥(रा०नि०)

अर्थ-दोनोंप्रकारकी रोहिणी-शीतल,कषेली, कृमिनाशक, कण्ठशोधक, रुचिकारक और वातनिवारक हैं ।

विवरण । रोहिणीके वृक्ष जंगलमें अधिक होते हैं पत्ते खिरनीके समान होते हैं और एक २ डालीमें सात २ आते हैं, फल अत्यन्त बारीक होते हैं ।

चिह्लकगुणा ।

चिह्लको वातनिर्हारः श्लेष्मघ्नो धातुपुष्टिकृत् ।
आग्नेयो विषवद्यस्य फलं मत्स्यनिषूदनम् ॥

अर्थ-चिह्लक-वातनाशक,कफघ्न,धातुपुष्टिकारक,आग्नेय,(अत्यन्त गरम) और इसका फल विषकी समान गुणकारक है तथा मछलीको नष्ट करेहै ।

विवरण । चिह्लकके वृक्ष-छोटे २ होतेहैं, विशेषकरके पर्वत अथवा पथरीली भूमिमें उत्पन्न होतेहैं । पत्ते-हरे और फूल नीले रंगके होते है । इसके फल-रीठेके समान गोल २ होतेहै ।

टकारीगुणा ।

टकारी वातजित्तिक्ता श्लेष्मघ्नी दीपनी लघुः ।
शोथोदरव्यथाहन्त्री हिना पीठविसर्पिणोः ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-टकारी-वातनाशक, कडवी, कफनाशक, अग्निको दीपन

हलकी तथा सूजन और उदररोगको हरनेवाली है। और पीठ तथा विसर्प रोगवालोको हितकारी है।

विवरण। टंकारीके क्षुप वन और जंगलमे अधिक होतेहैं। पत्ते लम्बे और गोल आतेहैं, फूल-लाल, गुलाबी, कईप्रकारके आतेहैं। फल-छोटे २ झुमकेदार लगते हैं।

वेतसनामानि।

वेतसो निचुल प्रोक्तो वञ्जुलो दीर्घपत्रकः।
कलनो मजरीनम्रो वानीरो विदुलस्तथा॥

अर्थ-वेतस, निचुल, बंजुल, दीर्घपत्रक, कलन, मञ्जरीनम्र, वानीर ,विदुल, (रथ, अभ्रपुष्प, शीत, वञ्जुलप्रिय,गन्धपुष्प,रथाभ्र, वेतसी, मञ्जरीनम्र, सुषेण, गन्धपुष्पक)

जलवेतसनामानि।

निकुञ्चकः परिव्याधो नादेयो जलवेतसः॥

अर्थ-निकुञ्चक, परिव्याध, नादेय, जलवेतस, (शाखालु, मेघपुष्प, तोयकाम, अभ्रपुष्पक, नदीकूलप्रिय, नीरप्रिय, सुशीतल, परिव्याध, व्याधिघात)

संस्कृतभाषामे	वेतस, जलवेतस।
हिन्दीभाषामे	वेत, जलवेत।
बंगलाभाषामे	वेत, वयसा, जलवेत।
मराठीभाषामे	थोरवेत, वेत।
गुजरातीभाषामे	नेतर।
कर्णाटकीभाषामे	वोडिसु, वेतसु।
तैलिंगीभाषामे	पीपारुवा, जीतयुरलुकी।
इंग्रेजीभाषामे	[illegible]न। Roto cane
लॅटिन्भाषाम	केलेमस रोटन्। Calanus rotan
फारसीभाषामे	वेत।
अरबीभाषामे	खलाफ।

वेतसगुणाः।

वेतसः शीतलो दाहशोफार्शोयोनिरुग्व्रणान्।
हन्ति वीसर्पकृच्छ्रास्रपित्ताश्मरिकफानिलान्॥ (भा०प्र०)

अर्थ-वेत-शीतल तथा शोफ (सूजन) अर्श(बवासीर) योनिरोग, व्रण (घाव) विसर्प, मूत्रकृच्छ्र,रक्तपित्त, अश्मरी (पथरी)कफ, और वातका नाश करेहै।

अपरञ्च ।

वेतसः कटुकः स्वादुः शीतो भूतविनाशनः ।
वातप्रकोपनो रुच्यो विज्ञेयो दीपनः परः ॥
रक्तपित्तोद्भवं रोग कुष्ट दोषं च नाशयेत् । (राजनिघण्टु)

अर्थ-वेत—चरपरा, स्वादिष्ठ, शीतल, भूतनाशक, वातको कुपित, करनेवाला, रुचिकारक, अग्निको दीपन करनेवाला तथा रक्तपित्त और कोढको दूर करे है ॥

अपिच ।

वेत्रस्तु तुवरः शीतस्तिक्तः कटु कफापहः ।
वात पित्त च दाह च शोफार्शोश्मरिकृच्छ्रकान् ॥
विसर्पातिसतं रक्त योनिरोगं तृषां जयेत् ।
रक्तदोषं व्रण मेह रक्तपित्तं च कुष्टकम् ॥
विष वै नाशयत्येत्रांकुरः क्षारो लघुः स्मृत ।
कटूष्णः कफवातघ्न पर्णं भेदकर मतम् ॥
तुवर लघु शीतं च तिक्तं कटु च वातलम् ।
रक्तदोषं कफ पित्त नाशयेदिति कीर्तितम् ॥
वेत्रवीज तु तुवर स्वाद्वम्ल रूक्षपित्तलम् ।
रक्तदोष कफ चैव नाशयेदिति कीर्तितम् (नि० र०)

अर्थ-वेत-कषेला, शीतल, कडवा, चरपरा, कफ, वात, पित्त, दाह, सूजन, बवासीर, पथरी, मूत्रकृच्छ्र, विसर्प, अतिसार, रुधिर विकार, योनिरोग, तृषा, रक्तकोप, व्रण, प्रमेह, रक्तपित्त, कुष्ठ और विषका नाश करनेवाला है । इसके अकुर-खारी, हलके, चरपरे, गरम तथा कफवातनाशक है । इसके पत्ते-भेदक (दस्तावर), कषेले, हलके, शीतल, कडवे, चरपरे, वातकारक, तथा रुधिरविकार, कफ और पित्तको हरेहै । इसके बीज कषेले, स्वादिष्ठ, खट्टे, रूखे, पित्तजनक तथा रक्तविकार और कफका नाश करे है । वेतसका बडा वृक्ष होताहै, जो पहाडी नदियोंके किनारे या सजल भूमिमे उत्पन्न होता है । व्यूंस नामसे शिमला प्रांतमे प्रसिद्ध है, इसी वृक्षकी दो छोटी जातिया मजनु और गुलमजनु नामसे प्रसिद्ध है जो पेड बडे २ बागोमे होते है, वेत्र-वेत नामसे प्रसिद्ध है, जिसकी छडिये आदि होती है, और जिससे कुर्सी आदि बुने जाते है यह दोनो अलग२ जातिकी चीजें है वेतस बडा वृक्ष होता है उसकी दो २ जातिये है। वेत्र और

बृहद्वेत्र अलग वस्तु है जो वेत नाम से प्रसिद्ध है ॥

जलवेतसगुणा ।

जलजो वेतसः शीतः सग्राही वातकोपनः ॥(भा प्र)

अर्थ-जलवेत-शीतल, मलरोधक और वातको कुपित करेहै ।

अन्यच्च ।

वानीरः शीतलस्तिक्तो व्रणशुद्धिकरो मतः ।
तुवरो वातकृद् ग्राही रूक्षः पित्तहरो मतः ॥
रक्तदोषव्रणकफक्रव्यादग्रहनाशनः । (नि० र०)

अर्थ-जलवेत-शीतल, कडवा, व्रणशोधक, कपेला, वातकारक, मलरोधक, रूखा, पित्तनाशक तथा रुधिरदोष, व्रण, कफ, राक्षस-बाधा और ग्रहकी पीडाको दूर करेहै ।

द्विविधवेतसगुणा ।

वेतसस्य द्वय शीत रूक्ष च व्रणशोधनम् ।
रक्तपित्तहरं तिक्त सकषायं कफापहम् ॥ (ध० नि०)

अर्थ-दोनों प्रकारके बेत-शीतल, रूखे, व्रणशोधक, रक्तपित्तनाशक, कडवे, कपेले और कफनाशक है ।

बृहद्वेत्रगुणा ।

बृहद्वेत्रस्तु शीतः स्याद्भूतपित्तामकंपहा ।
अन्ये गुणाः पूर्ववेत्रसदृशाः समुदाहृताः ॥

अर्थ-बडा वेत-शीतल तथा भूतबाधा, पित्त आम और कम्पको दूर करे है । शेप गुण वेतकी समान जानने ।

बृहज्जलवेत्रगुणा ।

स्थूलवानीरकः शीतो रूक्षो व्रणविशोधनः ।
तिक्तस्तु तुवरो रक्तदोषपित्तकफाञ्जयेत् ॥(नि० र०)

अर्थ-बडा जलवेत- शीतल, रूखा, व्रणशोधक, कडवा, कपेला, तथा रक्तविकार, पित्त और कफको दूर करे है।

विवरण । वेत और जलवेत इसकी दो जाति है;यह वेत जलके निकटकी भूमिमे उत्पन्न होतेहै । इसके पेडभी लताके आकार होतेहै, पत्ते-बांसके समान, फल फूल आतेही नहीं, वेतकी जड बहुत

लम्बी २ होतीहै। वेतके ऊपरका वक्कल बहुत पकाहोताहै। कुर्सी विच इत्यादि इसीसे बुनी जातीहै, वेत जलमेभी उत्पन्न होताहै। उसके गुण वेतहीके समान होतेहै।

हिज्जलनामगुणा।

इज्जलो हिज्जलश्चापि निचुलश्चाम्बुजस्तथा।
जलवेतसवद्वेद्यो हिज्जलोऽथ विपापहः॥

अर्थ-इज्जल, हिज्जल, निचुल, अम्बुज, यह समुद्रफल (शोप)के नाम है। इसके गुण जलवेतकी समान हैं, विशेषता यह है कि विषविनाशक है।

अङ्कोटनामानि।

अङ्कोटः कोलको रेची विषघ्नो दीर्घकीलकः।
पीतसारस्ताम्रफलो गन्धपुष्पो निकोचकः॥

अर्थ-अकोट, कोलक, रेची, विषघ्न, दीर्घकीलक, पीतसार, ताम्रफल, गन्धपुष्प, निकोचक, (अङ्कोटक, अकोठ, अंकोल, निकोठक, अकोलक, बोध, नेदिष्ठ, दीर्घकीलक, रामठ, ककरोल, चलन्त, दृढकण्टक, कोठर, गूढपत्र, मदन, गुप्तस्नेह, गूढवल्लिका, पीत, दीर्घकील, गुणाढ्यक, लम्बकर्ण, रोचन, विशालतैलगर्भ, निकोठक, कठोर, वामक, लम्बपर्णक, भूपित)

संस्कृतभाषामे	अंकोट (ठ)।
हिन्दीभाषामे	ढेरा, टेरा।
बंगभाषामे	आकड, धला आंकड, ऑकोड।
मराठीभाषामे	आकोली वृक्ष।
गुजरातीभाषामे	अकोल्थ।
कर्णाटकीभाषामे	अकुले।
तैलिङ्गीभाषामे	उडोके।
इंग्रेजीभाषामे	ट्रीलीव्ड सल्युरिटीस्।
लैटिन्भाषामे	एलेन्जेयं लेमार्कि आई। Alangium Iamarchu
	एलेन्जियम् हेक्सापेटेलम्। Alangium Hexadtalome

अङ्कोटगुणाः।

अङ्कोटस्तुवरस्तिक्तो रसशुद्धिकरो लघुः।
किंचित्कटुः सरः स्निग्धस्तीक्ष्णश्चोष्णश्च रूक्षक॥
रसो वान्तिकरश्चास्य विषदोषकफापहः।

वातशूलशोथकृमिग्रहपीडामपित्तहा ॥
रक्तदोपविसर्पघ्नः श्वानाखुविपनाशनः ।
ओतोर्विपकटीशूलमतिसार च नाशयेत् ॥
पिशाचपीडाशमनो वीज चास्य तु शीलतम् ।
धातुवृद्धिकर स्वादु चाग्निमांद्यकर गुरु ॥
रसे पाके तु मधुर बलकृत्कफकृत्सरम् ।
स्निग्धं वृष्यं च दाहघ्न वातपित्तक्षयापहम्॥
रक्तदोप कफं पित्त विसर्प चैव नाशयेत् । (नि०र०)

अर्थ-ढेरा-कपेला, कडवा, पारेको शुद्ध करनेवाला, हलका, किञ्चित् चरपरा, सर (दस्तावर), स्निग्ध, तीक्ष्ण, गरम और रूखा हे । इसका रस-वान्तिजनक तथा विपविकार, कफ, वात, शूल, कृमि, सूजन, ग्रहपीडा, आम, पित्त, रुधिरविकार, विसर्प, कुत्तेका विष, मूसेका विष, बिलावका विप, कटिशूल आतिसार और पिशाचपीडा इनका नाश करेहे । इसके बीज शीतल, धातुवर्द्धक, स्वादिष्ठ, मंदाग्निकारक, भारी, रसमे और पाकमे मधुर, बलकारक, कफकारी, सारक, स्निग्ध, वृष्य (वीर्यवर्द्धक) तथा दाह, वात, पित्त, क्षय, रक्तविकार, कफ, पित्त और विसर्प इनको दूर करेहै ।

अन्यच्च ।

अङ्कोटकः कटुस्तीक्ष्णः स्निग्धोष्णस्तुवरो लघुः ।
रेचनः कृमिशूलामशोफग्रहविपापहः ॥
विसर्पकफपित्तास्रमूपकाहिविपापहः ।
तत्फलं शीतलं स्वादु श्लेश्मघ्न बृंहणं गुरु ॥
बल्य विरेचन वातपित्तदाहक्षयास्रजित् ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-ढेरा-चरपरा, तीक्ष्ण, स्निग्ध, गरम, कपेला, हलका, दस्तावर तथा कृमि, शूल, आम, सूजन, ग्रहपीडा, विप, विसर्प, कफ, पित्त, रुधिरविकार, मूषेके विष और सापके विपको दूर करे हैं । इसका फल-शीतल, स्वादिष्ठ, कफनाशक, बृंहण (वाजकिरण), भारी, बलकारक, दस्तावर तथा वात, पित्त, दाह, क्षय और रक्तविकारको दूर करेहै ।

विवरण। ढेरेके वृक्ष वनमे अधिकतासे होतेहैं। इसके पत्ते-एक अंगुल चौडे और पांच छे अंगुल लम्बे होतेहैं, फूल-सफेद होताहै, फल कच्ची अवस्थामे नाल और पकनेपर लाल होजातेहैं। उनके ऊपर कालापन झलकता रहताहै। इस वृक्षपर काटे होतेहैं।

बलानामानि।

वाट्यपुष्पी समांशा च विलला वलिनी बला।

अर्थ-वाट्यपुष्पी, समांशा, विलला, वलिनी, बला (वाट्यालक, ओदनी, समंगा, ओदनिका, भद्रा, भद्रोदनी, खरककाष्ठिका, कल्या, णिनी, भद्रबला, मोटापाटी, बलाढ्या, शीतपाकी, वाट्यवाटी। निलया, वाट्याली, वाटिका, वाट्यालिका, खरयष्टिका, ओदनाह्वा, वातघ्नी, कनका, रक्ततन्दुला, क्रूरा, महासा, वारिगा, फणिजिह्विका जयन्ती, कठोरयष्टिका, बलाढ्या)

संस्कृतभाषामे	बला।
हिन्दीभाषामे	खिरैटी, वरियारा (ला), बीजबन्द।
बंगभाषामे	बेडेला।
मराठीभाषामे	लघुचिकणा, खिरहटी, थोरचिकणा।
गुजरातीभाषामे	बलदाण, खरेटी।
कर्णाटकीभाषामे	बेणगरग।
तैलिङ्गीभाषामे	मुर्पिडी।

इंग्रेजीभाषामे होर्न बिमलीव्हडसिडा। हार्टलिव्हडसिडा। Hornbeam Leaved Side heart leavedside

लेटिन भाषामे	सिडा कार्पिनीफोलिया। Side carpinifolia
	सिडाकोर्डिफोलिया। Sepa sideCardifolia

बलागुणाः।

स्निग्धा रुच्या वला वृष्या ग्राहिणी वातपित्तजित्। (रा० व०)

अर्थ-खिरैटी-स्निग्ध, रुचिकारक, वृष्य (वीर्यवर्द्धक), ग्राही तथा वात और पित्तको दूर करे हैं।

अपरञ्च।

बला तिक्ताऽतिमधुरा पित्तातीसारनाशिनी।
बलवीर्यपुष्टिदात्री कफरोधविशोधनी॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ-खिरेंटी-कडवी, मधुर, पित्तातिसारनाशक, बलवीर्य्यवर्द्धक, पुष्टिकारक और कफरोधविशोधक है ।

अपिच ।

बला मूलत्वचश्चूर्णं पीतं सक्षीरशर्करम् ।
मूत्रातिसारं हरति दृष्टमेतन्न संशयः ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-खिरेंटीकी जडकी छालका चूर्ण मिश्री मिले हुए दूधमे मिलाकर पीनेसे मूत्रातिसार रोग दूर होता है ।

बलाबीजगुणा ।

बलाफल स्वादु पाके कषायमधुर रसे ।
हिमवीर्य गुरुगुणं स्तम्भनं लेखन भृशम् ॥
विबन्धाध्मानपवनकारि पित्तकफास्रनुत् । (वै० नि०)

अर्थ-खिरेंटीका फल-पचनेमे स्वादिष्ठ, कषेला, मधुर, शीतवीर्य, भारी, स्तम्भन, लेखन, विबन्धकारक, आध्मानजनक, वातवर्द्धक तथा पित्त, कफ और रुधिरविकारको दूर करेहै ।

महाबलानामानि ।

महाबला पीतपुष्पी सहदेवी च सा स्मृता ॥

अर्थ-महाबला, पीतपुष्पी, सहदेवी, (ज्येष्ठबला, करम्भरा, केशरुहा, केसरिका, मृगादनी, वर्षपुष्पा, केशवर्द्धिनी, प्रसादनी, देवबला, सारिणी, पीतपुष्पा, देवाह्वा, गन्धवल्लरी, मृगा, मृगरसा, वर्षपुष्पी, वाट्या, वाट्यायनी, सहदेवा, देवसहा, बृहद्बला, गन्धावल्ली, महागन्धा, मङ्गलार्थप्रसादनी)

संस्कृतभाषामे	महाबला, सहदेवी ।
हिन्दीभाषामे	सहदेई ।
वंगभाषामे	पीतपुष्प, बेडेला ।
मराठीभाषामे	भांबुर्डी ।
गुजरातीभाषामे	सहदेवी ।
तामिलीभाषामे	नेचिट्टी ।
म०	पिरिना ।
कर्णाटकीभाषामे	वेल्लुदुरुवे ।
लेटिन् भाषामे	सिडारोंफिफोलिया । Side rhomfifolia

महाबलागुणाः ।

हरेन्महाबला कृच्छ्रं भवेद्वातानुलोमनी ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-सहदेई-मूत्रकृच्छ्ररोगनाशक है और वातानुलोमक है ।

अन्यच्च ।

महाबला तु मधुरा धातुवृद्धिकरी मता ।
बल्या वृष्यात्रिदोषघ्नी ज्वरहृद्रोगदाहनुत् ॥
वातार्शःशोफविषमज्वरान्मेहगणं तथा ।
बहुमूत्रं नाशयतीत्येवमाचार्यभाषितम् ॥

अर्थ-सहदेई-मधुर, धातुवर्द्धक, बलकारक, वीर्य्यवर्द्धक, त्रिदोषनाशक तथा ज्वर, हृदयरोग, दाह, वादीकी बवासीर, सूजन, विषम ज्वर, सर्वप्रकारके प्रमेह और मूत्रातिसारनिवारक है ।

अतिबलानामानि ।



कंघी-

बलिकाऽतिबला बल्या विकङ्कता वाट्यपुष्पिका घण्टा ।
शीता च शीतपुष्पा भूरिबला वृष्यगन्धिका दशधा ॥

अर्थ-बलिका, अतिबला, बल्या, विककता, वाट्यपुष्पिका, घटा, शीता, शीतपुष्पा, भूरिबला, वृष्यगन्धिका (ककती, ऋषिप्रोक्ता, वृष्यगन्धा)

संस्कृतभाषामें	अतिबला ।
हिन्दीभाषामें	कगही, कघी, ककहिया ।
मराठीभाषामें	विककती, आककई, कासुली ।

गुजरातीभाषामे खपाट्य ।
कर्णाटकीभाषामे मुल्लुदुरुवे ।
इंग्रेजीभाषामे इण्डियनमेलो । Indian Malon
लैटिन्भाषामे एब्युटिलन्इंडिकम् । Abutilon indicum

अतिबलागुणा ।

तिक्ता कटुश्चातिबला वातघ्नी कृमिनाशिनी ।
दाहतृष्णाविषच्छर्दिक्लेदोपशमनी परा ॥

अर्थ–कघई–कडवी, चरपरी तथा वात, कृमि, दाह, तृषा, विष वमन और क्लेदको शान्त करे है ।

अन्यच्च ।

बलिका मधुरा चाम्ला हिता दोषत्रयप्रणुत् ।
युक्त्या बुद्ध्या प्रयोक्तव्या ज्वरदाहविनाशिनी ॥ (रा० नि०

अर्थ–कघी (ककहिया) मधुर, अम्ल(खट्टी), हितकारक, त्रिदोषनाशक और किसीके साथ युक्तिपूर्वक देनेसे ज्वरको हरनेवाली है

अन्यच्च ।

हन्यादतिबला मेहं पयसा सितया सह ॥ (भा० प्र०)

अर्थ–कंघीको दूध और मिश्रीके साथ सेवन करनेसे प्रमेह रोगका नाश होता है ।

त्रिविधबलागुणा ।

बलात्रयं स्वादु शीतं स्निग्धं वृष्यं बलप्रदम् ।
आयुष्यं वातपित्तघ्नं ग्राहि मूत्रग्रहापहम् ॥

अर्थ–खिरैटी, सहदेई और कंघी यह तीनों स्वादिष्ठ, शीतल स्निग्ध, वीर्यवर्द्धक, बलकारक, अवस्थास्थापक, वातपित्तनाशक मलरोधक,मूत्ररोगनिवारक और ग्रहकी पीडाको दूर करेहै । मात्र २ मासेकी ।

नागबलानामानि ।

गाङ्गेरुकी नागबला झषा ह्रस्वगवेधुका ॥

अर्थ–गागेरुकी, नागबला, झषा, ह्रस्वगवेधुका, (खरगन्धिनी गोरक्षतण्डुला, भद्रौदनी, खरगन्धा, चतुःपला, महोदया, महापत्रा महाशाखा, महाफला, विश्वदेवा, अरिष्टा, देवदण्डा, महागन्धा घण्टा, खरयष्टिका, विश्वदेवी)

संस्कृतभाषामें	नागबला।
हिन्दीभाषामे	गंगेरन, गुलसकरी।
बंगलाभाषामे	गोरख, चाकुले, ,पानसांडा।
मराठीभाषामे	गागेटी, गाडे धामण।
कोकणीभाषामें	तुपकडी।
कर्णाटकीभाषामे	बट्टगर्रुके।
लैटि०	सिडास्फमोझा। Siaa spamosa

अस्या गुणा।

मधुराम्ला नागबला कषायोष्णा गुरुस्तथा।
कटूष्णा कफवातघ्नी व्रण०पित्तविनाशिनी॥ (रा० नि०)

अर्थ-गगेरन-मधुर, अम्ल, कषेली, गरम, भारी, चरपरी, कफ-वातनाशक, व्रणनिवारक और पित्तहारक है।

अन्यच्च।

तद्वन्नागबलाऽत्यर्थं कृच्छ्रे क्षीणक्षते हिता॥ (राजवल्लभ)

अर्थ-गगेरनके गुणभी खिरैटीकी समान है, विशेषकरके मूत्रकृच्छ्र, क्षत और क्षीणरोगमें हितकारी है।

अन्यच्च।

ज्ञेया नागबला चाम्ला मधुरा तुवरा गुरु।
कटूत्युष्णा व्रण वात पित्त कुष्ठ च नाशयेत्॥
कण्डूं च नाशयत्येवं मुनिभिः परिकीर्तिताः। (निघण्टुर०)

अर्थ-गगेरन-अम्ल, मधुर, कषेली, भारी, चरपरी, गरम तथा व्रण, वात, पित्त, कुष्ठ और कण्डूको हरनेवाली है।

अस्या फलगुणा।

गागेरुकीफल रूक्ष कषाय स्वादु वातलम्।
लेखन स्तम्भनं शीत विबन्धाध्मानकृद्गुरु॥ (शो० नि०)

अर्थ-गुलशकरीके फल-रूखे, कषेले, स्वादु, बादी, लेखन, स्तम्भन, शीतल, विबन्ध और आध्मानकारक तथा भारी है।

बृहन्नागबलागुणा।

बृहन्नागबला चाम्ला मधुरा च त्रिदोषहा।

दाहज्वरहरा प्रोक्ता पूर्ववैद्यैर्मनीषिभिः (नि० र०)

अर्थ–चडीगगेरन–अम्ल, मधुर, त्रिदोषनाशक, तथा दाह और ज्वर निवारक है ।

चतुर्विधबलागुणाः ।

बलाचतुष्टयं शीतं मधुरं बलकान्तिकृत् ।
स्निग्धं ग्राहि समीरास्रपित्तास्रक्षतनाशनम् ॥

अर्थ–चारोप्रकारकी खिरैटी (खिरैटी, सहदेई, कंघी, गंगेरन) शीतल, मधुर, बलवर्द्धक, कान्तिकारक, स्निग्ध, मलरोधक, तथा वातरक्त, रक्तपित्त और क्षतनाशक है । चारोप्रकारकी बला कालकाके समीप टकसालमे भी होतीहै प्रायःबागोमेभी होती है आश्विनमासमे यह सब स्थानोमे विशेष मिलती है

विवरण । बला अनेक प्रकारकी होती है जैसे खिरैटी, कघी, गगेरन, गंगेटी, सहदेई, दण्डोत्पल इत्यादि । इनमे खिरैटीके भी कई भेद है । एक प्रकारकी खिरैटी वह होतीहै कि, जिसके वृक्ष डेढहाथ ऊंचे होते है । इसके पत्ते–तुलसीके पत्तोकी समान होतेहै । फूल पीला आता है । फल छोटे २ आते है और इसमे बहुतसे बीज निकलतेहै । इसके पत्तोका शाक बनाते है ।

२ दूसरे प्रकारकी खिरैटीका वृक्ष पुरुषकी बराबर ऊंचा होता है। इसके पत्ते–अनीदार होते है । फूल–सफेद रंगके आते है,फल बारीक और गोल आते है । उनमेसे जो बीज निकलता है उनको बलाबीज अथवा बीजबंद कहते है ।

३ कंघीके वृक्षभी दोढाई हाथ ऊंचे होतेहै । फूल–पीला, फल–चक्रकी समान और गोल होते है । उनको प्रायः बालक छापाकरते है । इसके बीजभी खिरैटीकी समान होते है ।

४ गगेरनका वृक्ष सहदेईके वृक्षकी सदृश होता है किन्तु, इसके पत्ते–कुछ अधिक मोटे और दो अनिवाले होते है । फूल–गुलाबी रंगका होताहै, फलभी सहदेईसे बडे होते है, और फलके सूखनेपर उसके अपने आप पांच भाग होजाते है ।

५ सहदेईके वृक्ष छोटे और बडे दो प्रकारके होते है, इसके पत्ते पतले और खरखरे होते है । इसका फल, फूल पीलेरंगका आताहै, फल छोटे २ गोल आते है और इसमे कांटे होते है ।

लक्ष्मणानामानि ।

लक्ष्मणा पुत्रजननी नागपत्री च पुत्रदा ।

अर्थ-लक्ष्मणा, पुत्रजननी, नागपुत्री, पुत्रदा (पुत्रकन्दा, पुच्छदा, नागिनी, नागाह्वा, नागपुत्री, तूलिनी, मञ्जिका, अस्रबिन्दुच्छदा)

लक्ष्मणा गुणाः ।

लक्ष्मणाकन्दकः शीतो मधुरश्च रसायनः ।
गर्भप्रदश्चवृष्यश्च त्रिदोषव्रणनाशहा॥ (निघण्टुरत्नाकर)

अर्थ-लक्ष्मणाकन्द-शीतल, मधुर, रसायन, गर्भप्रद, वीर्य्यवर्द्धक त्रिदोषनाशक और व्रणविनाशक हैं ।

विवरण । लक्ष्मणा ओषधि बहुत कम मिलती है । यह कहीं २ पर्वत इत्यादिमें उत्पन्न होतीहै । इसके पत्ते-चौडे होते हैं उनपर लाल २ चन्दनकी समान बूँदेसी होती है । इसके नीचे सफेद रंगका कंद निकलता है ।

स्वर्णवल्लीनामानि ।

स्वर्णवल्ली रक्तफला काकायुः काकवल्लरी ।

अर्थ-स्वर्णवल्ली, रक्तफला, काकायु, काकवल्लरी (हरणीपीतिका)

अस्य गुणाः ।

स्वर्णवल्ली शिरःपीडां त्रिदोषान्हन्ति दुग्धदा ॥

अर्थ-स्वर्णवल्ली-शिरपीडा और त्रिदोषनाशक है, तथा स्तनोमे दूध बढानेवाली है ।

विवरण । स्वर्णवल्ली अर्थात् सोनवेल प्रायः पर्वत, बाग, और वनोमे अधिक होतीहै । पत्ते-गोल अनीदार होते हैं, फल-लाल लगते हैं इस लताका रंग सम्पूर्ण पीला होताहै इसी कारण इसका नाम स्वर्णलताहै ।

हिन्दीभाषामे	स्वर्णवल्ली ।
मराठीभाषामे	सोनवेल ।
गुजरातीभाषामे	स्वर्णवल्ली ।

कार्पासीनामानि ।

कार्पासी तुण्डिकेरी च समुद्रान्ता च कथ्यते ॥

अर्थ-कार्पासी,तुण्डिकेरी, समुद्रान्ता, (बदरा, पटद, बादरा, सूत्रपुष्पा, बदरी, कार्पासिका, कर्पासी,कर्पाससारिणी,चव्पा,तुला, गुड, तुण्डकेरिका, मरूद्भवा, पिचु, बादर, कार्पास, पटलुन,छादन)



कपास

वनकार्पासनामानि।

त्रिपर्णा वनकार्पासी भारद्वाजी यशस्विनी ॥

अर्थ-त्रिपर्णा,वनकार्पासी भारद्वाजी,यशस्विनी (वनसरोजिनी, वहुमूर्ति, वनकार्पासिका,वनजा, वनोद्भवा, वनोद्भवकार्पास, अरण्यकार्पासिका, अरण्यकार्पासी)

कालाञ्जनीनामानि।

कालाञ्जनी च कृष्णाभा कृष्णाञ्जनी शिलाञ्जनी ॥

अर्थ-कालाञ्जनी, कृष्णाभा, कृष्णाञ्जनी, शिलाञ्जनी, (अञ्जनी, रचनी, नीलाञ्जनी, काली)

संस्कृतभाषामे	कार्पासी,वनकार्पासी,कालाञ्जनी।
हिन्दीभाषामे	कपास,वनकपास,नरमावाडी, कापच्छी, [विनोले] कालीकपास, [रुई]
वंगभाषामे	कार्पास,वनकार्पास,कालिकर्पासिकिनी [तुला]
मराठीभाषामे	कापशी,कापूस,सरकी,काळी कापशी ।
गुजरातीभाषामे	वणरु कपास, हिरवणी कपाशिया।
कर्णाटकीभाषामें	हत्ति काडहत्ति।
तैलिङ्गीभाषामे	पत्तिचेट्टु।

इङ्ग्रेजीभाषामे	काटनूप्लाट ।	Cottenn plant
लैटिन्भाषामे	गासपाय अरपेरयं ।	Gossypium heurpcem
फारसीभाषामे	कुतुन, पुवेदना ।	
अरबीभाषामे	कुतन, हुवुल कुतन ।	

कार्पासीगुणा ।

कार्पासी मधुरा शीता स्तन्या पित्तकफापहा ।
तृष्णादाहभ्रमभ्रान्तिमूर्च्छाहृद्बलकारिणी ॥ (रा० नि०)

अर्थ-कपास-मधुर, शीतल, स्तनोमे दूध बढानेवाली, बलकारक तथा पित्त, कफ, तृषा, दाह, भ्रम, भ्रांति और मूर्च्छाको दूर करनेवाली है।

अन्यच्च ।

कार्पासकी लघुश्चोष्णा मधुरा वातनाशिनी ।
तत्पलाश समीरघ्न रक्तकृन्मूत्रवर्द्धनम् ॥
तत्कर्णपिडिकानादपूयास्रावविनाशनम् ।
तद्बीजं स्तन्यदं वृष्यं स्निग्धं कफहर गुरु ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-कपास-हलकी, गरम, मधुर, और वातविनाशक है। कपासके पत्ते-वातनाशक, रक्तवर्द्धक, मूत्रको बढानेवाले, तथा कानकी पीडा, कर्णनाद और कानसे राधके बहनेको दूर करनेवाले है । कपासके बीज स्तनोमे दूध बढानेवाले, वीर्य्यवर्द्धक, स्निग्ध, कफकारी और भारी है ।

वनकार्पासीगुणा ।

भारद्वाजी हिमा रुच्या व्रणशस्त्रक्षतापहा ॥

अर्थ-वनकपास-शीतल, रुचिकारक, तथा घाव और शस्त्रके घावको दूर करे है ।

कालाजनीगुणा ।

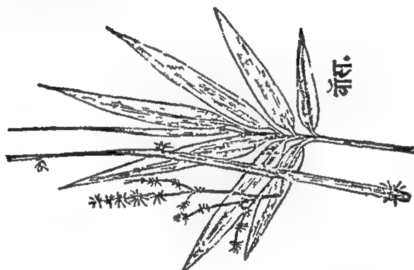
कालाञ्जनी कटूष्णा स्यादम्लामकृमिशोधिनी ।
अपानावर्तशमनी जठरामयहारिणी ॥ (रा० नि०)

अर्थ-कालीकपास-चर्परी, गरम, खट्टी, आमनाशक, कृमिशोधक, अपानावर्त्तशामक, और उदररोगको हरनेवाली है ।

विवरण । कपासके पेड सब हिन्दोस्तानमे बहुत होते है । इसकी बडी खेती होतीहै, इसका बहुत बडा व्यापार होताहै, उत्तम २

वस्त्रादिक कपासहीके बनते हैं । कपासके फूल पीले और बीचमे लाल होतेहैं । उसमे गूलरकी समान तिकोने फूल आते है । उसके भीतर कपास निकलतीहै,वह कपास चरखीमे ओटी जातीहै उसमे-से जो बीज निकलतेहै उनको बिनौल कहते है । इसके पत्तेभे पाच अनी होतीहै जेसे एरण्डके पत्तोमे । परन्तु उनसे बहुत छोटे होतेहै। एक काली कपास होतीहै जिसके फूल काले और बिनौले भी काले होतेहै । एक नरयावाडी होतीहै जिसके पेड बडे २ होते है, फल फूल बारह महीने आते है, रुइ नरम होतीहै, बिनौले हरे होते है, यह सब कपासहीके भेद है ।

वंशनामानि ।



वंशत्वक्सारकर्म्मारत्वचिसारतृणध्वजाः ।
शतपर्वा यवफलो वेणुमस्करतेजनाः ॥

अर्थ-वंश, त्वक्सार, कर्म्मार, त्वचिसार, तृणध्वज, शतपर्वा,यवफल, वेणु, मस्कर, तजन, (किलाटी,पुष्पघातक,बृहत्तृण, किष्कुपर्वा, वन्य, सुपर्वा,तृणकेतुक, कण्टालु,कण्टकी, महाबल,दृढग्रन्थि,दृढपत्र, धनुर्द्रुम, वातुष्य, दृढकाण्ड, कीचक, कुक्षिरन्ध्र, षट्पदालय, कमठ, मृत्युबीज,वादनीय, फलान्तक तृणकेतु,पर्वयोनि, सुपर्वन्,तृणराजक, बहुपर्वन्, दुरारुह)

संस्कृतभाषामे	वंश ।
हिन्दीभाषामे	बांस ।
बंगभाषामे	बाँस ।

मराठीभाषामे	वेळू, पोकळवेळु, भरीव वेळू।
गुजरातीभाषामे	बांश।
कर्णाटकीभाषामे	यरडुबिदीरु।
तैलिङ्गीभाषामे	कच्चिकई यदुरु, वेत्रेमुक, बेन्नुर्शाणि, वेत्तु।
तामिलीभाषामे	मनगिल।
बम्०	माण्डगय।
इङ्ग्रेजीभाषामे	बेबूकेन। Bamboo cane
लैटिन् भाषामे	बेंबुसावलगेरिस् Bambusa Vulgares
फारसीभाषामे	कसव।

वंशगुणा।

वंशोम्लस्तुवरस्तिक्तः शीतलः सारको मतः।
वस्तिशुद्धिकरः स्वादुश्छेदनो भेदको मतः॥
कफं रक्तरुजं पित्तं कुष्ठं शोथं व्रणं तथा॥
मूत्रकृच्छ्रप्रमेहार्शान् दाहं चैव विनाशयेत्॥ (नि०र०)

बाँस-खट्टा, कषेला, कडवा, शीतल, सारक, वस्तिशोधक, स्वादिष्ठ, छेदक भेदक, तथा कफ, रक्तविकार, पित्त, कोढ, सूजन, घाव, मूत्रकृच्छ्र, प्रमेह बवासीर, और दाहको दूरकरे है।

अस्य करीरगुणा।

तत्करीरः कटुः पाके रसे रूक्षो गुरुः सरः।
कषायः कफकृत्स्वादुर्विदाही वातपित्तलः॥(भा०प्र०)

अर्थ-बाँसके अकुर-पचनेमे चरपरे, रुखे, भारी सारक (दस्तावर), कषेले, कफकारक, स्वादु, दाहजनक और वातपित्तकारक है।

अपिच।

करीरं कटु तिक्ताम्लं कषायं लघु शीतलम्।
पित्तास्रदाहकृच्छ्रघ्नं रुचिकृत्पर्वनिर्गुणम्॥ (रा० नि०)

अर्थ-बासके अकुर-चरपरे, कडवे, खट्टे कषेले, हलके, शीतल तथा रक्तपित्त, दाह और मूत्रकृच्छ्र रोगको हरेंहे। इसके पर्व (गांठे निर्गुण) है।

वंशयवगुणा।

वेणोर्यवस्तु तुवरो रूक्षश्च मधुरो मतः।

पुष्टिकृद्वीर्यकृद्बल्यः कफपित्तहरो मतः ।
विषप्रमेहशमनो मुनिभिः परिकीर्तितः ॥ (नि० र०)

अर्थ–बाँसके चावल–कषैले, मधुर, पुष्टिकारक, बलवर्द्धक, तथा कफ, पित्त, विष और प्रमेहको दूर करेहे ।

अपि च ।

तद्यवास्तु सरा रूक्षाः कषायाः कटुपाकिनः ।
वातपित्तकरा उष्णा बद्धमूत्राः कफापहाः ॥ (भा०प्र०)

अर्थ–बाँसके चावल–सारक,(दस्तावर), रूखे, कषैले, पचनेमे कटु, वातपित्तकारक, गरम, तथा मूत्ररोध और कफनाशक है ।

द्विविधवंशगुणा ।

वंशौ त्वम्लौ कषायौ च किञ्चित्तिक्तौ सुशीतलौ ।
मूत्रकृच्छ्रप्रमेहार्शःपित्तदाहास्रनाशनौ ॥
विशेषाद्रन्ध्रवंशस्तु दीपनोऽजीर्णनाशनः ।
रुचिकृत्पाचनो हृद्यः शूलघ्नो गुल्मनाशनः॥(राजनिघण्टु)

अर्थ–दोनोप्रकारके बाँस–(बाँस और रन्ध्रवास) खट्टे, कषैले, किञ्चित् कडवे, शीतल, तथा मूत्रकृच्छ्र,प्रमेह, बवासीर, पित्त,दाह और रक्तविकारोको हरे है । रन्ध्रवंश–विशेषकरके अग्निको दीपन करनेवाला, अजीर्णनाशक, रुचिकारक,पाचक, हृदयको हितकारी, तथा शूल और गुल्मनाशक है।

विवरण । बाँस वन जंगल और पर्वतोकी तलेटियोमे उत्पन्न होते है, फूल सफेद आता है, बाँसमे वंशलोचन निकलता है कभी २ बाँसपै जो आते है उन जोओमेसे चावल निकलते हैं उनका भात करते है ।

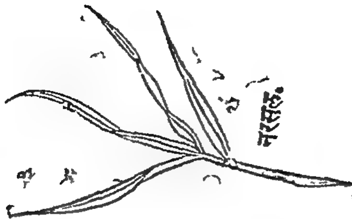
नलनामानि ।

नलः पोटगलः शून्यमध्यश्च धमनस्तथा ॥

अर्थ–नल, पोटगल, शून्यमध्य, धमन (नाल, नड, कुक्षिरन्ध्र, कीचक, दीर्घवंश, विभीषण, छिद्रान्त, मृदुपत्र, वंशपत्र, मृदूच्छद, लालवंश, नट, नटी, नड, नर्त्तक, मृत्युपुष्प)

देवनलनामानि ।

अन्यो महानलो वन्यो देवनालो नलोत्तमः ।
स्थूलनालः स्थूलदण्ड· सुरनाल· सुरद्रुमः ॥



अर्थ-महानल, वन्य, देवनाल, नलोत्तम, स्थूलनाल, स्थूलदण्ड सुरनाल, सुरद्रुम ।

संस्कृतभाषामें	नल, महानल ।
हिन्दीभाषामें	नरसल, नल, बडा नरसल ।
वंगभाषामें	नल, बडनल ।
मराठीभाषामें	नळ, देवनळ, थोरदेवनळ ।
गुजरातीभाषामें	नाली ।
कर्णाटकीभाषामें	देवनाल, कर्ररियदेवनाल ।
तैलिङ्गीभाषामें	भुंगुण्डुरु, किरिशगाड्डि ।
इंग्रेजीभाषामें	इण्डियन रोबेका । Indian robaca
लैटिन्‌भाषामें	लोबिलीया, निकोटिया, निफोलिया । Lobolia Nicotia naefolia
कच्छीभाषामें	आंची ।

नळगुणा ।

नलस्तु मधुरस्तिक्त कषाय· कफरक्तजित् ।
उष्णो हृद्वस्तियोन्यार्तिदाहपित्तविसर्पहृत् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-नल-मधुर, कडवा, कषेला, कफनाशक, रक्तविकारविनाशक, गरम, तथा हृदयरोग, वस्तिकी पीडा, योनिरोग, दाह, पित्त और विसर्पका नाश करे है ।

अन्यच्च ।

ज्ञेयो विभीषण शीतो रुच्यश्च तुवरो मधु· ।
वीर्य्यवृद्धिकरस्तिक्तो दीपनो मूत्रशोधनः ॥

विसर्पकृच्छ्रदाहास्रदोषपित्तकफान् हरेत्।
हृद्रोगबस्तिशूलौ च योनिरुग्रक्तपित्तहा ॥ (नि० र०)

अर्थ-नल (नरसल)-शीतल, रुचिकारक, कषेला, मधुर, वीर्य्यवर्द्धक, कडवा, अग्निको दीपन करनेवाला, मूत्रशोधक, तथा विसर्प, मूत्रकृच्छ्र, दाह, रुधिरविकार, पित्त, कफ, हृदयरोग, वस्तिशूल, योनिरोग, और रक्तपित्तका नाश करे है)

देवनलगुणा।

देवनलोऽतिमधुरो वृष्य ईषत्कषायकः।
नलाधिकश्च वीर्य्ये तु शस्यते रसकर्मणि ॥

अर्थ-बडा नरसल-अत्यन्त मधुर, वीर्य्यवर्द्धक, किञ्चित्कषेला, और नलकी अपेक्षा वीर्य्यमे अधिक है तथा रसकर्ममे उत्तम है।

विवरण-नरसल अर्थात् नल बांसके समान जलाशयके निकट जगलोमे उत्पन्न होतेहैं। पत्ते-ईखके पत्तोके समान होतेहै इसकी आकृतिभी ईखकेही सदृश होतीहै। जिसप्रकार गन्नेके ऊपर अगोला होताहै उसीप्रकार इसके ऊपरभी होताहै परन्तु ऊचावमे ईखसे तिगुना ऊचा होताहै यह भीतरसे पोला होताहै।

भद्रमुञ्जनामानि।

भद्रमुञ्जः शरो बाणस्तेजनश्चक्षुवेष्टनः।
मुञ्जो मुञ्जातको बाणः स्थूलदर्भः सुमेखलः ॥

अर्थ-भद्रमुञ्ज,,-शर, बाण, तेजन, और चक्षुवेष्टन यह नाम रामशरके है। मुञ्ज, मुञ्जात, बाण, स्थूलदर्भ, सुमेखल (इक्षुकाण्ड, मौञ्जी, तृणाख्य, ब्रह्मण्य, तेजनाह्वय, वानीरक, मुञ्जनक, शरी, दर्भाह्वय, दुमूल, दृढतृण, दृढमूल, बहुप्रज, रञ्जन, शक्रभंग) यह नाम मूँज अर्थात् सेंटेके है।

संस्कृतभाषामे	भद्रमुञ्ज, मुञ्ज।
हिन्दीभाषामे	रामसर, मूंज।
मराठीभाषामे	मोळ।
बगभाषामे	मुच, रामशर, सरपत।
तैलिङ्गीभाषामे	मुंजगड्डि आनिस्फुलिंग।

द्विविधमुञ्जगुणा।

मुञ्जद्वयन्तु मधुरं तुवरं शिशिरं तथा।

दाहतृष्णाविसर्पास्रमूत्रवस्त्यक्षिरोगजित् ॥
दोषत्रयहरं वृष्यं मखलासूपयुज्यते ।(भा० प्र०)

अर्थ-दोनो प्रकारकी मूँज (मुञ्ज और रामशर) मधुर, कषेली, शीतल तथा दाह, तृषा, विसर्प, रुधिरविकार, मूत्ररोग, नेत्ररोग और त्रिदोषनाशक हैं । तथा वीर्य्यवर्द्धक है ।

अन्यच्च मुञ्जगुणा ।

मुञ्जस्तु मधुरः शीतः कफपित्तजदोषजित् ।
ग्रहरक्षासु दीक्षासु पावनो भूतनाशनः ॥

अर्थ-मूज-मधुर, शीतल, कफपित्तजदोषनाशक, ग्रहरक्षा और दीक्षामे पवित्र तथा भूतनाशक है ।

विवरण-मुज और भद्रमुजके झुण्डभी नलके समान जलाशयके समीप या रेतेमे बहुत होतेहै इसको बीणभी कहतेहे,यह वास्तवमे वीरण शब्द था अब बिगडकर बीण होगया इसके वक्कलको मूंज कहतेहैं । फूल फल लम्बे २ सफेद रगके होतेहै ।

काशनामानि ।

काशः सुकाण्डः कासेक्षुर्नादेयो नीरजस्तथा ।
काकेक्षुर्वायसक्षुश्च सस्यादिक्षुरसः शिरिः ॥

अर्थ-काश, सुकाण्ड, कासेक्षु, नादेय, नीरज, काकेक्षु, वायसेक्षु, इक्षुरस, शिरि, (इक्षुगन्धा, पोटगल, काश, कर्म्ममूल, इक्षुरम्लिका, इषीका,अश्ववाल, चामरपुष्प,चामरपुष्पक, काशी,काशा,काण्डेक्षु, अमरपुष्पक, काशक,वनहासक, इक्षारि, इक्षुर, इक्षुकाण्ड, शारद, सितपुष्पक,दर्भपत्रक,लेखन,काण्ड, काण्डक, कच्छलकारक, दर्भपत्र)

संस्कृतभाषामे	काश ।
हिन्दीभाषामे	कास ।
वगभाषामे	केशेवास ।
मराठीभाषामे	कसई, लघुकसई, थोर कसई ।
कोकणीभाषामे	कसाड ।
गुजरातीभाषामे	कासडो ।
कर्णाटकीभाषामे	किरीयकागछु, काडछु, काजलु ।

तैलिङ्गीभाषामे	रेलु ।
लैटिन्भाषामे	कौक्स वारबेटा ।Covbarbata

काशगुणा ।

काशस्तु तर्पणः शीतो गौल्यो रुचिकरो मतः ।
बलकृन्मधुरो वृष्यस्तिक्तः पाके मधुः स्मृतः ॥
सरः स्निग्ध. पित्तदाहमूत्रकृच्छ्रक्षयापहः ।
मूत्राश्मरीं रक्तदोषं रक्तपित्तं क्षतक्षयम् ॥
पित्तरोगं नाशयतीत्येव पूर्वैर्निवेदितम् ।

अर्थ–कास–तृप्तिकारक, शीतल, गौल्य, रुचिकारी, बलकारक, मधुर, वीर्यवर्द्धक, कडवा, पचनेमेभी मधुर, सर (दस्तावर), स्निग्ध तथा पित्त, दाह, मूत्रकृच्छ्र, क्षय, मूत्राश्मरी, रुधिरविकार, रक्तपित्त, क्षतक्षय और पित्तरोगको दूर करे है ।

विवरण । कास–नदियोके किनारे कीचडमे उत्पन्न होतीहै, पत्ते वाभरके समान, बरन् एकप्रकारकी देशी वाभरभी होतीहै, फूल सफेद अधिक शोभायमान मञ्जरीके समान आतेहै ।

गुन्द्रनामानि।

गुन्द्रः पटेरको रच्छ. शृङ्गवेराभमूलकः ॥

अर्थ–गुन्द्र, पटेरक, रच्छ, शृङ्गवेराभमूलक, ।

संस्कृतभाषामे	गुन्द्र ।
हिन्दीभाषामे	गोंदपटेर ।
मराठीभाषाम	पाणगवत, लव्हा ।
गुजरातीभाषामे	पान्यवाडाडी ।
इंग्रेजीभाषामे	एलिफटग्रास । Elaphant grass
लैटिन् भाषामे	टाइफा एलिफण्टाइना ।Typha Elephantina

अस्य गुणः ।

गुन्द्रः कषायो मधुर शिशिरः पित्तरक्तजित् ।
स्तन्यशुक्ररजोमूत्रशोधनो मूत्रकृच्छ्रहृत् ॥

अर्थ–पटेर–कषेली, मधुर, शीतल, रक्तपित्तनाशक, स्तनोके दूधको तथा शुक्र, रज, मूत्रको शुद्ध करेहै। एव मूत्रकृच्छ्ररोगविनाशक है ।

विवरण। गुन्द्रपटेर-अर्थात् गोंद्पटेर पानीमे होतीहै, पत्ते-बहुत लम्बे चार पांच फुटके और एक इंच चौडे होतेहैं, पत्तेमे पत्ते निकलतेहैं पत्ते मोटे बहुत होतेहै, वरन् बीचसे चिरजातेहैं, उनके ऊपर एक वाल बाजरेके समान होतीहै,वाल ऊपर एक पतलीसी लकडी होती है, । इनकी चटाई इत्यादि अनेक पदार्थ वनते हैं ।

एरकानामानि ।

एरका गुन्द्रमूला च शिम्बिगुन्द्रा शरीति च ॥

अर्थ-एरका, गुन्द्रमूला, शिम्बि, गुन्द्रा, शरी यह नाम है ।

हिन्दीभाषामे	मोथीतृण ।
बगलाभाषामे	होगला ।
मराठीभाषामे	एरका, पाणलव्हाळा ।
गुजरातीभाषामे	एरका ।

अस्य गुणा ।

एरका शिशिरा वृष्या चक्षुष्या वातकोपनी ।
मूत्रकृच्छ्राश्मरीदाहपित्तशोणितनाशिनी ॥

अर्थ-एरका-(मोथीतृण)शीतल, वीर्य्यवर्द्धक,नेत्रोको हितकारी, वातको कुपित करनेवाली,तथा मूत्रकृच्छ्र,पथरी,दाह और रक्तपित्त-नाशक है ।

विवरण। मोथीतृण-जलमे उत्पन्न होताहै,पत्ते-बडे२लम्बे होते है

कुशनामानि ।

कुशो दर्भस्तथा बर्हिः सूच्यग्रो यज्ञभूषणः ।
ततोऽन्यो दीर्घपत्रः स्यात्क्षुरपत्रस्तथैव च ॥

अर्थ-कुश,दर्भ, बर्हि, सूच्यग्र,यज्ञभूषण (कुरव, पवित्र, याज्ञिक, ह्रस्व गर्भ, कुतुप) यह नाम कुशाके है। दीर्घपत्र और क्षुरपत्र यह दूसरे प्रकारके कुशाके हैं।

संस्कृतभाषामें	कुश, दर्भ ।
हिन्दीभाषामे	कुशा,दाभ, डाभ ।
वगभाषामे	कुश ।
मराठीभाषामे	लघुदर्भ, थोरदर्भ
कोंकणीभाषामे	दाभ
गुजरातीभाषामे	दरभ, डाभ ।

कर्णाटकीभाषामें — विलीप बुदकुशी उद्वाकुशि ।
तैलिङ्गीभाषामें — कुशदर्वालु दुभ ।
लैटिन्भाषामें — एंड्रोपोगन नारडे इडिस् ।
Audropogon nordaides

द्विविधदर्भगुणा ।

दर्भद्वयं त्रिदोषघ्नं मधुरं तुवरं हिमम् ।
मूत्रकृच्छ्राश्मरीतृष्णावस्तिरुक्प्रदरास्रजित् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ–दोनो प्रकारकी दाभ त्रिदोषनाशक, मधुर, कषेली, शीतल, तथा मूत्रकृच्छ्र, पथरी, तृषा, वस्तिरोग, प्रदररोग और रक्तविकारको दूर करनेवाली है।

अन्यच्च ।

दर्भस्तु मधुरः शीतो गर्भस्थापनकारकः ।
पित्तदाहश्रमरजोदोषं चैव विनाशयेत् ॥ (ध० नि०)

अर्थ–डाभ–मधुर, शीतल, गर्भस्थापक, तथा पित्त, दाह, श्रम, और रजोदोषनाशक हैं।

अपिच ।

दर्भः शीतो रुचिकरो मधुरस्तुवरो मतः ।
स्निग्धः कफकरः शुक्ररक्तशुद्धिकरो मतः ॥
कफं रक्तं रक्तपित्तं पित्तं श्वासं तृषां तथा ।
मूत्रकृच्छ्रं वस्तिशूलं कामलां प्रदरं तथा ॥
रक्तदोषं विसर्पं च छर्दिं मूर्च्छां तथाश्मरीम् ।
नाशयेदिति च प्रोक्तो मूलं तस्य तु शीतलम् ॥
रुच्यं च मधुरं रक्तज्वरतृट्श्वासकामलाम् ।
पित्तं च नाशयत्येवं मुनिभिः परिकीर्त्तितम् ॥ (नि० रा०)

अर्थ–कुशा तथा दाभ–शीतल, रुचिकारक, मधुर, कषेली, स्निग्ध, कफकारक, शुक्र और रक्तशोधक तथा कफ, रक्त, रक्तपित्त, पित्त, श्वास, तृषा, मूत्रकृच्छ्र, वस्तिशूल, कामला, प्रदर, रक्तविकार, विसर्प, वमन, मूर्च्छा और अश्मरी (पथरी) रोगको नष्ट करे हैं। इसकी जड शीतल, रुचिकारक, मधुर, रक्त, ज्वर, तृषा, श्वास, कामला और पित्तको दूर करे है।

दर्भौ द्वौ च गुणैस्तुल्यौ तथापि च सितोऽधिकः।
यदि श्वेतकुशाभावस्त्वपरं योजयेद्भिषक्॥

अर्थ-यद्यपि कुशा और दाभमे गुण समानही हैं तथापि कुशा अधिक गुणवाली है। जो कुशा न मिले तो उसके अभावमे दाभ लेनी।

विवरण। कुशा और दर्भ-दोनो एकही जातिके तृण हैं यह रेतली भूमिमे भृडो और जगलोमे उत्पन्न होतीहैं। पत्ते-इसके कासहीके समान होते हैं।

कत्तृणनामानि।

कत्तृण रौहिष देवजग्धं सौगन्धिक तथा।
भूतिक ध्यामपौरञ्च श्यामक धूपगन्धिकम्॥

अर्थ-कत्तृण, रौहिष, देवजग्ध (क) सौगन्धिक, भूतिक, ध्याम, पौर, श्यामक, धूपगन्धिक, (सुगन्ध तृणशीत, सुशीतल, रौहिषतृण, कातृण, भूति, ध्यामक, पूतिमुद्गल)

संस्कृतभाषामे	कत्तृण, रौहिषतृण।
हिन्दीभाषामे	रोहिष सोधिया, गधेजवास, मिरचियागन्ध, रसवास।
वंगभाषामे	रामकर्पूर।
मराठीभाषामे	रोहिष, सुगन्धरोहिषतृण।
कर्णाटकीभाषामे	किरुगजणी।
तैलिङ्गीभाषामे	कामचिगड्डि, तुरिकूर।
औत्कलीभाषामे	पालखरि।
फारसीभाषामे	खवालमामून।
अरबीभाषामे	अजख्र।

कत्तृणगुणा।

रौहिषं तुवर तिक्त कटु पाके व्यपोहति।
हृत्कण्ठव्याधिपित्तास्रशूलकासकफज्वरान्॥ (भा प्र)

अर्थ-कत्तृण-कषैले, कडवे, पचनेमे चरपरे तथा हृदयरोग, कण्ठरोग, रक्तपित्त, शूल, खासी, कफ और ज्वरको हरे है।

अन्यच्च।

कत्तृणं दरानामाढ्य कटुतिक्तकफापहम्।
शस्त्रशल्यादिदोषघ्न बालग्रहविनाशनम्॥

अर्थ-कत्तृण-(रोहिषतृण) चरपरे, कडवे, कफनाशक तथा शस्त्र-शल्यादि दोष और बालग्रहनिवारक है ।

दीर्घरोहिषनामानि ।

अन्यद्रौहिषकं दीर्घं दृढकाण्डो दृढच्छदम् ।
यज्ञेष्टं दीर्घनालश्च तिक्तसारश्च कुत्सितम् ॥

अर्थ-दीर्घरोहिषक, दृढकाण्ड, दृढच्छद, यज्ञेष्ट, दीर्घनाल, तिक्तसार, कुत्सित ।

अस्य गुणाः ।

दीर्घरोहिषकं तिक्तं कटूष्णं कफवातजित् ।
भूतग्रहविषघ्नं च व्रणक्षतविरोपणम् ॥

अर्थ-दीर्घरोहिषतृण-कडवे, चरपरे, गरम तथा कफवात, भूत, ग्रह और विषनाशक है । तथा व्रण और क्षतको भरनेवाले है ।

विवरण । रोहिष तृण-लम्बे और सुगन्धित मालवे और राजपूतानेके जंगलमें बहुत होते हैं । पत्ते-छोटे २ और हरे हरे अत्यन्त शोभायमान होतेहैं, इसके सर्वांगमें बहुत सुगन्धि आतीहै । दूसरे रोहिषतृणके कुछ बडे क्षुप होते हैं । इसका तेल निकलता है, उसमें बहुत सुगन्धि होतीहै ।

भूतृणनामानि ।

गुह्यबीजन्तु भूतीकं सुगन्धं जम्बुकप्रियम् ।
भूतृणन्तु भवेच्छत्रा मालातृणकमित्यपि ॥

अर्थ-गुह्यबीज, भूतीक, सुगन्ध, जम्बुकप्रिय, भूतृण, छत्रा, मालातृणक (रोहिष, भूति, भूतिक, कुटुम्बक, मालातृण, समालम्बी, छत्र, अहिच्छत्रक, गुच्छाल, पुस्त्वविग्रह, बधिर, अतिगन्ध, शृङ्गरोह, गुण्डरोह, करेन्दुक, गोच्छालक, पूतिगन्ध, बधिरध्वनिबोधन)

संस्कृतभाषामें	भूतृण ।
हिन्दीभाषामें	भूतृण ।
गुजरातीभाषामें	भूत्रण ।
कर्णाटकीभाषामें	परिमलद्गजीण ।
लैटिन्भाषामें	ॲंड्रोपोगन, साईट्रेटस । Andropogon Citratus

अस्य गुणाः ।

भूतृणं कटुकं तिक्तं तीक्ष्णोष्णं रेचनं लघु ।

विदाहि दीपन रूक्षमनेत्र्यं मुखशोधनम् ॥
अवृष्य बहुविट्क च पित्तरक्तप्रदूषणम् । (भा० प्र०)

अर्थ-भूतृण-चरपरे, कडवे, तीक्ष्ण, गरम, दस्तावर, हलके, दाहजनक, अग्निको दीपन करनेवाले, रूखे, नेत्रोंको अहितकारी, मुखशोधक, अवृष्य, बहुमलवर्धक और रक्तपित्तको दूषित करे है ।

अन्यच्च ।

भूतृण कटुतिक्त च वातसन्तापनाशनम् ।
हन्ति भूतग्रहावेशान्विषदोषांश्च दारुणान्॥ (राजनि०)

अर्थ-भूतृण-चरपरे, कडवे, वातसन्तापनाशक, भूत,ग्रह आवेशनिवारक और विषके दारुण विकारोंको हरे है ।

अपि च।

भूतृणः कटुतिक्तोष्णः पुंस्त्वघ्नोव वक्त्रशोधनः ।
कृमिकासानिलश्वासश्लेष्मदद्रुविनाशनः॥ (शो०नि०)

अर्थ-भूतृण-चरपरे, कडवे, गरम, पुरुषत्वनाशक, मुखशोधक, तथा कृमि, खांसी, वात, श्वास, कफ,और दादोंको दूरकरे है ।

सुगन्धभूतृणनामानि ।

रौहिषं सुगन्धभूतृण भूतृणं गोमयप्रियम् ॥

अर्थ-रौहिष, सुगन्धभूतृण, भूतृण, गोमयप्रिय, (गन्धवीरण, सुरस, सुरभि, सुगन्धि, मुखवास ।

हिन्दीभाषामें	सुगन्धभूतृण ।
मराठीभाषामें	पुदनी गवत, सुगन्ध गवत ।
कर्णाटकीभाषामें	सुगन्ध तृण ।
गुजरातीभाषामें	सुगन्धतृण ।

अस्य गुणाः ।

गन्धतृण सुगन्धिः स्यादीषत्तिक्त रसायनम् ।
स्निग्ध मधुरशीत च कफपित्तभ्रमापहम् ॥

अर्थ-सुगन्धभूतृण-सुगन्धित, किंचित् कडवे, रसायन, स्निग्ध, मधुर, शीतल तथा कफ, पित्त और भ्रमनाशक है ।

विवरण-भूतृण-जङ्गल और वागादि स्थानोमें अधिक उत्पन्न होते हैं, इसने गुच्छेले लगतेहैं और बीज बहुत छोटे २ होते हैं ।

वल्वजातृणनामानि ।

वल्वजा दृढपत्री च तृणेक्षुस्तृणवल्वजा ।
मौञ्जीपत्रा दृढतृणा पानीयाश्रा दृढक्षुरा ॥

अर्थ-वल्वजा, दृढपत्री, तृणेक्षु, तृणवल्वजा, मौञ्जीपत्रा, दृढतृणा, पानीयाश्रा, दृढक्षुरा ।

अस्या गुणाः ।

वल्वजा मधुरा शीता पित्तदाहतृषापहा ।
वातप्रकोपनी रुच्या कंठशुद्धिकरी परा ॥

अर्थ-वल्वजातृण-मधुर, शीतल, पित्तनिवारक, दाहकारक, तृषानाशक, वातको कुपित करनेवाले, रुचिकारक, और कण्ठकी शुद्धि करे है ।

ऊपलतृणनामानि ।

ऊपलो भूरिपत्रश्च सुतृणश्च तृणोत्तमः ॥

अर्थ-ऊपल, भूरिपत्र, सुतृण और तृणोत्तम ।

अस्य गुणाः ।

ऊपलो बलदो रुच्यः पशूनां सर्वदा हितः ॥

अर्थ-ऊपलतृण-बलकारक, रुचिकारी और पशुओंको सर्वदा हितकारी है ।

इक्षुदर्भानामानि ।

इक्षुदर्भा सुदर्भा च पत्रालुस्तृणपत्रिका ॥

अर्थ-इक्षुदर्भा, सुदर्भा, पत्रालु, तृणपत्रिका ।

अस्याः गुणाः ।

इक्षुदर्भा सुमधुरा स्निग्धा ईषत्कषायिका ।
कफपित्तहरा रुच्या लघुः सन्तर्पणी स्मृता ॥

अर्थ-इक्षुदर्भ-मधुर, स्निग्ध, किञ्चित्कषैला, कफपित्तनाशक, रुचिकारक, हलका और सन्तर्पण है ।

गोमूत्रिकातृणनामानि ।

गोमूत्रिका रक्ततृणा क्षेत्रजा कृष्णभूमिजा ।

अर्थ-गोमूत्रिका, रक्ततृणा, क्षेत्रजा, कृष्णभूमिजा ।

अस्या गुणाः ।

गोमूत्रिका तु मधुरा वृष्या गोदुग्धदायिनी ॥

अर्थ-गोमूत्रतृण-मधुर, वीर्य्यवर्द्धक और गौओंके दूध बढाने-वाला है ।

शिलिपकातृणनामानि ।

शिलिपका शिलिपनी शीता क्षेत्रजा व मृदुच्छदा ॥

अर्थ-शिलिपका, शिलिपनी, शीता, क्षेत्रजा, मृदुच्छदा ।

अस्या गुणा ।

शिलिपका मधुरा शीता तद्बीजं बलवृष्यदम् ॥

अर्थ-शिलिपकातृण-मधुर और शीतल है । इसके बीज, बल और वीर्य्यवर्द्धक हैं ।

निःश्रेणिकानामानि ।

निःश्रेणिका श्रेणिवला नीरसा वनवल्लरी ॥

अर्थ-निःश्रेणिका, श्रेणिबला, नीरसा, वनवल्लरी ।

अस्या गुणा ।

निःश्रेणिका नीरसोष्णा पशूनामबलप्रदा ॥

अर्थ-निःश्रेणिकातृण-नीरस अर्थात् रसहीन, गरम, और पशु-ओंको निर्बलतादायक है ।

जडीतृणनामानि ।

गरमोटिका सुनीला च जरडी च जलाश्रया ।

अर्थ-गरमोटिका, सुनीला, जरडी, जलाश्रया ।

अस्या गुणा ।

जरडी मधुरा शीता सारिणी दाहहारिणी ।
रक्तदोषहरा रुच्या पशूनां दुग्धदायिनी ॥

अर्थ-जरडीतृण-मधुर शीतल, सारक, दाहहारक, रक्तविकारवि-नाशक, रुचिकारक तथा पशुओंके दूध बढानेवाले हैं ।

मज्जरतृणनामानि ।

मज्जरः पवनः प्रोक्त सुतृणः स्निग्धपत्रकः ॥

अर्थ-मज्जर, पवन, सुतृण, स्निग्धपत्रक, (मृदुग्रन्थि) ।

अस्य गुणा ।

मृदुग्रन्थिश्च मधुरो धेनुदुग्धकरश्च सः ॥

अर्थ-मज्जरतृण-मधुर, और गौओंके दूध बढानेवाले हैं ।

तृणाख्यनामानि ।

तृणाख्यं च पर्वतृणं पत्राढ्यं च मृगप्रियम् ॥

अर्थ-तृणाख्य, पर्वतृण, पत्राढ्य, मृगप्रिय ।

अस्य गुणा ।

बलपुष्टिकरं रुच्यं पशूनां सर्वदा हितम् ॥

अर्थ-पर्वतृण-बल, पुष्टि और रुचिको उत्पन्न करनेवाला है तथा पशुओंको सर्वदा हितकारी है ।

वंशपत्रीतृणनामानि ।

वंशपत्री वंशदला जीरिका जीर्णपत्रिका ॥

अर्थ-वंशपत्री, वंशदला, जीरिका, जीर्णपत्रिका ।

अस्या गुणा ।

वंशपत्री सुमधुरा शिशिरा पित्तनाशिनी ।
रक्तदोषहरी रुच्या पशूनां दुग्धदायिनी ॥

अर्थ-वंशपत्रीतृण-मधुर, शीतल, पित्तनाशक, रक्तदोषनिवारक, रुचिकारक और पशुओंके स्तनोंमे दूध बढानेवाले हैं ।

मन्थानकतृणनामानि ।

मन्थानकस्तु हरितो दृढमूलस्तृणाधिपः ॥

अर्थ-मन्थानक, हरित, दृढमूल, तृणाधिप ।

मन्थानकतृणगुणा ।

स्निग्धो धेनुप्रियो दोग्धा मधुरो बहुवीर्य्यकः ॥

अर्थ-मन्थानकतृण-स्निग्ध, गायोंको प्रिय, दुग्धदायक, मधुर और बहुवीर्य्यदायक है ।

पल्लिवाहतृणनामगुणाश्च ।

पल्लिवाहो दीर्घतृणः सुपत्रस्ताम्रवर्णकः ।
अदृढः शाकपत्रादिपशूनामबलप्रदः ॥

अर्थ-पल्लिवाह-दीर्घतृण, सुपत्र, ताम्रवर्ण, अदृढ, शाकपत्रादि पल्लिवाह तृण-पशुओंको निर्बल करनेवाले हैं ।

लवणतृणनामानि ।

लवणतृणं लोणतृणं तृणाम्लं पट्टतृण च अम्लकाण्डं च ॥

अर्थ-लवणतृण, लोणतृण, तृणाम्ल, पट्टतृण, अम्लकाण्ड ।

अस्य गुणा ।

पट्टतृणकं क्षाराम्लं कषायस्तन्यवृद्धिकम् ॥

अर्थ-लवणतृण-खारी, अम्ल, कषेला, और दूधनाशक है ।

पण्यन्धातृणनामानि ।

पण्यन्धा कंगुणीपत्रा पण्यध्वा पणधा च सा ॥

अर्थ-पण्यन्धा, कगुणीपत्रा, पण्यध्वा, पणधा ।

अस्या गुणा ।

पण्यन्धा समवीर्य्या स्यात्तिक्ता क्षारा च सारिणी
तत्कालशस्त्रघातस्य व्रणसंरोपणी परा ॥
दीर्घा मध्या तथा ह्रस्वा पण्यन्धा त्रिविधा स्मृता ।
रसवीर्य्यविपाकेषु मध्यमा गुणदायिका ॥

अर्थ-पण्यन्धातृण-समवीर्य्य, तिक्त, क्षार और सारक है तथा तत्काल शस्त्रके घातसे उत्पन्न हुए घावको भरेहै पण्यन्धा तृण दीर्घ मध्य और ह्रस्व इन भेदोसे तीन प्रकारके है । इन तीनोमे रस वीर्य्य और विपाकमे मध्यम गुणदायक है ।

गुण्डतृणनामानि ।

गुडः सुकांडो गुण्डः स्याद्दीर्घकाण्डस्त्रिकोणकः ।
छत्रगुच्छोऽसिपत्रश्च नीलपत्रस्त्रिधारकः ॥

अर्थ-गुड, सुकाण्ड, गुण्ड, दीर्घकाण्ड, त्रिकोणक, छत्रगुच्छ, असिपत्र-नीलपत्र, त्रिधारक ।

वृत्तगुण्डनामानि ।

वृत्तगुण्डो परो वृत्तो दीर्घनालो जलाश्रयः ।
तत्र स्थूलो लघुश्चान्यस्त्रिधाऽयं द्वादशाभिधः ॥

अर्थ-वृत्तगुण्ड, दीर्घनाल, जलाशय । यह लघु और स्थूल इनभेदोसे दो प्रकारके है ।

अस्य गुणा ।

गुण्डस्तु मधुरः शीतः कफपित्तातिसारहा ।
दाहरक्तहरस्तस्य मन्ये स्थूलांतराधिका ॥

अर्थ-गुण्डतृण-मधुर,शीतल, तथा कफ, पित्त, अतिसार, दाह और रुधिरविकारको दूर करेहैं । इन दोनोमे स्थूल गुण्डतृण अधिक गुणवाला है ।

चणिकातृणनामानि ।

चणिका दुग्धदा गौल्या सुनाला क्षेत्रजा हिमा ॥

अर्थ-चणिका, दुग्धा, गौल्या, सुनाला, क्षेत्रजा, हिमा ।

अस्या गुणा ।

वृष्या बल्यातिमधुरा बीजैः पशुहिता तृणैः ॥

अर्थ-इसके बीज-वीर्य्यवर्द्धक, बलकारक, अत्यन्त मधुर और तृण, पशुओको हितकारी है ।

गुण्डासिनीतृणनामानि ।

गुण्डासिनी तु गुण्डाला गुडाला गुच्छमूलिका चिपिटा ।
तृणपत्री जलवासा पृथुला सुविष्टरा च नवाह्वा ॥

अर्थ-गुण्डासिनी, गुण्डाला, गुडाला, गुच्छमूलिका, चिपिटा, तृणपत्री, जलवासा, पृथुला, सुविष्टरा ।

अस्या गुणा ।

गुण्डासिनी कटुः स्वादुः पित्तदाहश्रमापहा ।
तिक्तोष्णा च पशुघ्नी च व्रणदोषनिवर्हणी ॥

अर्थ-गुण्डासिनीतृण-चरपरे,स्वादु,पित्तनाशक दाहको दूर करने वाले श्रमको हरनेवाले, कडवे, गरम, पशुनाशक और व्रणदोष-निवारक है ।

शूलीतृणनामानि ।

शूली तु शूलपत्री स्यादशाखा धूम्रमूलिका ।
जलाश्रया मृदुलता पिच्छिला महिषीप्रिया ॥

अर्थ-शूली,शूलपत्री, अशाखा, धूम्रमूलिका,जलाश्रया, मृदुलता पिच्छिला, महिषीप्रिया ।

अस्या गुणाः ।

शूली तु पिच्छिला कोष्णा गुरुर्गौल्या बलप्रदा ।
पित्तदाहहरा रुच्या दुग्धवृद्धिप्रदायिका ॥ (नि० रा०)

अर्थ-शूलीतृण-पिच्छिल, गरम, भारी, गौल्य, बलकारक, पित्त-नाशक, दाहनिवारक, रुचिकारक और दुग्धवर्द्धक है ।

नीलदूर्वानामानि।



नीलदूर्वा स्मृता शष्पं शाद्वलं हरितं तथा।
शतपर्वा शीतकुम्भी शीतला वामिनी तथा॥

अर्थ-नीलदूर्वा, शष्प, शाद्वल, हरित, शतपर्वा, शीतकुम्भी, शीतला, वामिनी (हरिता, शाम्भवी, श्यामा, शीता, शतपर्विका, अमृता, धूर्ता, शतग्रन्थि, अनुवल्लिका, शिवा, शिवेष्टा, मङ्गला, जया, भूतहन्त्री, शतमूला, महौषधी, विजया, गौरी, शान्ता, रुहा, अनन्ता, भार्गवी, सहस्रवीर्य्या, शतवल्ली, गुणा, नन्दा, महावरी, हरतालिका, तिक्तपर्वा, दुर्मरा, बहुवीर्य्या, हरिता, हरितालो, कच्छरुहा, अमरी, सौम्या, शीतली, अमरा, असितालता)

श्वेतदूर्वानामानि।

श्वेतदूर्वा शतवीर्य्या गण्डाली शकुलाक्षक·।
गोलोमी सितदूर्वा च शतपर्वा सितालता॥

अर्थ-श्वेतदूर्वा, शतवीर्य्या, गण्डाली, शकुलाक्षक, गोलोमी, सितदूर्वा, शतपर्वा, सितालता, (सिता, श्वेता, सिताख्या, चण्डा, भद्रा, भार्गवी, दुर्मरा, गौरी, विघ्नेशानकान्ता, अनन्ता, विद्या, श्वेतकाण्डा, प्रचण्डा, सहस्रवीर्य्या, सहस्रकाण्डा, सहस्रपर्वा, सुरवल्लभा, शुभा, सुपर्वा, सितच्छदा, स्वच्छा, कच्छान्तरुहा)

गण्डदूर्वानामानि।

गण्डदूर्वा तु गण्डाली तीव्रा मत्स्याक्षिकापि च।
जलस्था ग्रन्थिपर्णी च वाल्ही च शकुलादनी॥

अर्थ-गण्डदूर्वा, गण्डाली, तीव्रा, मत्स्याक्षिका, जलस्था, ग्रन्थिपर्णी, वाही, शकुलादनी, (अतितीव्रा, मत्स्याली, ग्रन्थिला, ग्रन्थिपर्णी, वारुणी, मतिनेत्रा, श्यामग्रन्थि, सूचिपत्रा, श्यामकाण्डा, कलाया, शकुलाक्षी, चित्रा, और शकुलाक्षक)

संस्कृतभाषामे	दूर्वा, नीलदूर्वा, श्वेतदूर्वा, गण्डदूर्वा ।
हिन्दीभाषामे	दूब, हरीदूब, सफेददूब, गांडरदूब ।
वंगभाषामे	दूर्वा, नीलदूर्वा, सादादूर्वा, गेटेदूर्वा ।
मराठीभाषामे	दूर्वा, नील श्वेत हरळी, गण्डूरदूर्वा, गाठीहरळी
गुजरातीभाषामे	ध्रो, लीलीध्रो, धोलीध्रो, गण्डूरध्रो ।
कर्णाटकीभाषामे	हसुगरुके, बिलिपकरुके, मीनगत्ते, होन्नगुंदे ।
तैलिङ्गीभाषामे	दूर्वाल्लु, गरिकेगड्डि, गरिककसुवु, पोन्नगंडी
तामिलीभाषामे	अरुगम् पुल्लु ।
औत्कलीभाषामे	दुव् ।
इंग्रेजीभाषामे	क्रोपिंग् साई नोडन् । Creeping Cynodon
लैटिन्भाषामें	साई नोडन् डेक् टिलन् । Cynodon Dactylon

सामान्यदूर्वागुणा ।

दूर्वा कषाया मधुरा च शीता पित्त तृपारोचकवान्तिहन्त्री ।
सदाहमूर्च्छाग्रहभूतशान्तिश्लेष्मश्रमध्वंसनतृप्तिदा च।(रा नि)

दूब-कषेली, मधुर, शीतल, तथा पित्त, तृपा, अरुचि, वान्ति, दाह, मूर्च्छा, ग्रहकी पीडा, भूतबाधा, कफ और श्रमनाशक है तथा तृप्तिदायक है ।

नीलदूर्वागुणा ।

दूर्वा तु रक्तपित्तघ्नी कण्डूत्वग्दोषनाशिनी ॥ (रा० व०)

अर्थ-हरीदूब-रक्तपित्त, खुजली और त्वचाके रोगोंको हरे है ।

अन्यच्च ।

नीलदूर्वा तु मधुरा तिक्ता शीता रुचिप्रदा ।
संजीवनी च तुवरा रक्तशुद्धिकरी मता ॥
रक्तपित्तातिसारघ्नी ज्वरपित्तवमीहरा ।
कफं रक्तरुजं तृष्णां विसर्पं च विनाशयेत् ॥
दाहं च चर्मदोषं च नाशयेदिति कीर्त्तिता ।

अर्थ-हरीदूब-मधुर, कडवी, शीतल, रुचिकारक, सजीवन, कषेली, रक्तशोधक तथा रक्तपित्त, अतिसार, ज्वर, पित्त, वमन, कफ, रक्तरोग, तृषा, विसर्प, दाद और त्वचाके विकारोंको दूर करे है।

श्वेतदूर्वागुणाः।

श्वेता तु दूर्वा मधुरा रुच्या च तुवरा मता।
तिक्तातिशीतला वान्तिविसर्पतृट्कफापहा॥
पित्तदाहामातिसृतिरक्तपित्तहरी मता।
कासं च नाशयत्येवं पूर्ववैद्यैर्निरूपिता॥ (रा० नि०)

अर्थ-सफेद दूब-मधुर, रुचिकारक, कषेली, कडवी, शीतल तथा वमन, विसर्प, तृषा, कफ, पित्त, दाह, आमातिसार, रक्तपित्त और खाँसीको दूर करे है।

गण्डदूर्वागुणाः।

गण्डदूर्वा तु मधुरा वातपित्तज्वरापहा।
शिशिरा द्वन्द्वदोषघ्नी भ्रमतृष्णाश्रमापहा॥ (राजनि०)

अर्थ-गाडरदूब-मधुर, शीतल तथा वात, पित्त, ज्वर, द्वन्द्वदोष भ्रम, तृषा और श्रमको हरनेवाली है।

अन्यच्च।

गण्डदूर्वा हिमा लोहद्राविणी ग्राहिणी लघुः।
तिक्ता कषाया मधुरा वातकृत्कटुपाकिनी॥
दाहतृष्णाबलासास्रकुष्ठपित्तज्वरापहा (भावप्रकाश)

अर्थ-गाडरदूब शीतल, लोहको पिघलानेवाली, मलको रोकनेवाली, हलकी, कडवी, कषेली, मधुर, वातकारक, पचनेमें चरपरी तथा-दाह, तृषा, कफ, रुधिरविकार, कुष्ठ, पित्त और ज्वरको दूर करनेवाली है।

विवरण। नीलीदूब जङ्गलमें बहुत होती है भूमिहीमें दूबकी बेलसी चलती है और गाठपर जडभी पकडती जातीहै उसको दूबके नाल कहतेहै, ऊपरको नहीं उठती और पृथ्वीपरही छत्तेसी फैल जाती है। पत्ते नालोंपर छोटे २ और लम्बे २ लगे होते है और इसके नाल लम्बे २ फैलते चले जाते है विशेषकरके दूब पशुओंके भक्षणके लिये है, इसकारण यह सम्पूर्ण भारतवर्षमें प्रसिद्ध है।

२ सपेद दूबभी नीलीदूब अर्थात हरीदूबहीकी जगह कहीं कहीं कोई छत्ता होजाता है वह बहुत सफेद होती है, परन्तु सब आकृति हरीही दूबकेसी होतीहै ।

३ गांडर एकप्रकारकी घास होती है इसके क्षुप दो दो तीन २ फुट ऊँचे होजातेहैं जलाशयके स्थानमे कासोतक लगातार इसके खेत होते हैं इसके तृण कांसके समान लम्बे होतेहैं, घरोंके छप्पर आदि इसीके तृणोसे छाये जातेहैं, इसीकी जड खस होतीहै ।

विदारीनामानि ।

विदारी वृष्यकन्दा च क्षीरशुक्ला सिता स्मृता ।
इक्षुगन्धा त्रिपर्णा च शुक्ला गजवाजिप्रिया ॥

अर्थ-विदारी, वृष्यकन्दा, क्षीरशुक्ला, सिता, इक्षुगन्धा, त्रिपर्णा, शुक्ला, गजवाजिप्रिया, (क्रोष्ट्री, विदारिका, स्वादुकन्दा, शृगालिका, वृष्यवर्द्धिनी, बिडाली, वृष्यवल्लिका, भूकूष्माण्डी, स्वादुलता, गजेष्टा, वाजिवल्लभा, गन्धफला, क्षीरवल्ली, पयस्विनी, वृक्षवल्ली और भूमिकूष्माण्ड)

क्षीरविदारीनामानि ।

अन्या क्षीरविदारी स्यादिक्षुगन्धेक्षुवल्ल्यपि ।
क्षीरकन्दा क्षीरवल्ली क्षीरशुक्ला पयस्विनी ॥

अर्थ-क्षीरविदारी, इक्षुगधा, इक्षुवल्ली, क्षीरकदा, क्षीरवल्ली, क्षीरशुक्ला, पयस्विनी, (महाश्वेता, ऋक्षगन्धिका, ऋष्यगन्धिका, ऋष्यगन्धा, इक्षुवल्लरी, क्षीरकन्द, क्षीरलता, पयःकन्दा, पयोलता, पयोविदारिका और दुग्धविदारी ।

संस्कृतभाषामे	विदारी, क्षीरविदारी ।
हिन्दीभाषामे	बिलैयाकन्द,बिलाई कन्द, विदारीकन्द, बिलारी कन्द, दूधबिदारी ।
वंगभाषामे	भूईकुमडा (ड), श्वेतभूईकुमड,कालभूईकुमड।
मराठीभाषामे	भूईकोहळा, बेन्ड्रीचा वेल ।
गुजरातीभाषामे	फगवेलानो कन्द, भोकोलु ।
कर्णाटकीभाषामे	नेलकुंबल ।
तैलिङ्गीभाषामे	नेलगुंबुड, मट्टमलातिग ।
औत्कलिभाषामे	भूइकरवारु ।

लैटिन्भाषामे　　आईपोमिया डिजिटेटा । Iprmoeadıjıtıta
　　प्युरेरियाटयूबरोझा Purania tuberosa
　　बटाटास पेनिक्युलेटा Batataspeniculata

विदारीकन्दगुणा ।

विदारी मधुरा शीता गुरुः स्निग्धास्रपित्तजित् ।
ज्ञेया च कफकृत्पुष्टिबल्या वीर्यविवर्धिनी ॥ (रा०नि०)

अर्थ-विदारीकन्द-मधुर, शीतल, भारी, स्निग्ध, रक्तपित्तनाशक, कफकारक, तथा पुष्टि, बल और वीर्यवर्धक है ।

अन्यच्च ।

विदारी मधुरा स्निग्धा बृंहणी स्तन्यशुक्रदा ।
शीता स्वर्य्या मूत्रला च जीवनी बलवर्णदा ॥
गुरुः पित्तास्रपवनदाहान् हन्ति रसायनी ।(भावप्रकाश)

अर्थ-विदारीकन्द, मधुर, स्निग्ध, बृंहण, स्तनोमे दूध बढाने-वाला, वीर्यजनक, शीतल, स्वरको शुद्ध करनेवाला, मूत्रवर्धक, सजीवन, बलकारक, वर्णको सुंदर करनेवाला, रसायन, भारी तथा रक्तपित्त, वात और दाहको दूर करनेवाला है ।

अपि च ।

विदारी वातपित्तघ्नी वृष्या बल्या रसायनी ॥ (रा०व०)

अर्थ-विदारीकन्द-वातपित्तनाशक, वीर्यवर्द्धक, बलकारक और रसायन है ।

अन्यच्च ।

विदारी मधुरा शीता वृष्या स्निग्धा च पौष्टिका ।
धातुवृद्धिकरी बल्या कफदुग्धप्रदा गुरुः ॥
रसायनी मूत्रला च स्वर्य्या रूक्षा च गर्भदा ।
पित्तवातहरा स्वादू रक्तरुग्दाहवान्तिहा ॥
ज्ञेया ह्येते गुणा कन्दे पुष्प वृष्यश्च शीतलम् ।
रसे पाके च मधुर कफकृद्वातल गुरु ॥
पित्तनाशकर ह्येतदुक्तं मुनिवरैः पुरा ।

अर्थ-विदारीकन्द-मधुर, शीतल, वीर्यवर्द्धक, स्निग्ध, पुष्टिकारक,

वर्धक, बलकारक, कफजनक, दुग्धवर्धक, भारी, रसायन, मूत्रजनक, स्वरको सुन्दर करनेवाला, रूखा, गर्भदायक, स्वादिष्ठ तथा पित्त, वात, रुधिरविकार, दाह और वमनको दूर करे है। इसके फूल-वीर्यवर्धक, शीतल, रस और पाकमें मधुर, कफकारक, वातवर्धक, भारी और पित्तनाशक है ।

क्षीरविदारीगुणाः।

प्रोक्ता क्षीरविदारी तु मधुराम्ला कषायका ।
वृष्या च शुक्रजननी पुष्टिदुग्धप्रदा कटुः ॥
रसायनी च बल्या च शीता मूत्रकफप्रदा ।
स्निग्धा वर्ण्या गुरुः स्वर्य्या पित्तरुग्रक्तदोषहा ॥
पित्तशूलहरा वातदाहजिन्मूत्रमेहजित् ।
ज्ञेया कन्दगुणा ह्यस्याः सदृशा वल्लिजैर्गुणैः ॥

अर्थ-दूधविदारी-मधुर, अम्ल, कषेला, वीर्य्यवर्द्धक, शुक्रजनक, पुष्टिकारक, दूधवर्धक, चरपरा, रसायन, बलकारक, शीतल, मूत्रजनक, कफकारक, स्निग्ध, वर्णको सुंदर करनेवाला, भारी, स्वरको उत्तम करनेवाला तथा पित्तरोग, रुधिरविकार, पित्तशूल, वात, दाह और मूत्रमेहको दूर करनेवाला है, इसके कन्दके गुण बेलकी समान जानने ।

अन्यच्च ।

कन्दः क्षीरविदार्यास्तु स्वादुर्वृष्यो रसायनः ।
मधुरो बृंहणो हृद्यः शीतवीर्यो हि मूत्रलः ॥

अर्थ-क्षीरविदारीकन्द-स्वादिष्ठ, वीर्य्यवर्द्धक, रसायन, मधुर, बृंहण, हृदयको हितकारी, शीतल और मूत्रवर्द्धक है ।

अपिच ।

क्षीरकन्दो द्विधा प्रोक्तो विनालस्तु सनालकः ।
विनालो रोगहर्त्ता स्याद्वय-स्तम्भी सनालकः ॥

अर्थ-क्षीरकन्द-नालरहित और नालयुक्त इन भेदोंसे दो प्रकार काहै, तहां विनानालका रोगोंको हरनेवाला है और नालवाला अवस्थाको स्थापन करनेवाला है ।

विवरण-विदारीकन्दकी वेल-अनूप देशके जंगलोमे होतीहै कोई२ उसको चर्मकारालुकभी कहते है, यह कन्द वराहके समान रोमयुक्त उत्पन्न होताहै,पत्ते-बडे बडे घुइयाके समान होतेहै,इसके नीचे जडमे बहुत बडा कन्द निकलताहै, उसका रंग लालीलिये होताहै दूसरे क्षीरविदारी कन्दकी भी वेलही चलती है इसका कन्द भी मूलीके समान होताहै,पत्ते-एक एक शाखामे सात २ आठ २ होते है, कन्दका रंग लाल और सफेद होता है।

मुसलीनामानि।

मुसली तालमूली च खलनी तालमूलिका ॥

अर्थ-मुसली, तालमूली, खलनी, तालमूलिका, (तालिका, अर्शोघ्नी, ताली, सुवहा,तालपत्रिका,गोधापदी,हेमपुष्पी, भूताली, दीर्घकन्दिका, मुशली, तालपत्री, काञ्चनपुष्पिका, महावृष्या, वृष्यकन्दा, खर्जूरी)

संस्कृतभाषामें	मुसली, तालमूली।
हिन्दीभाषामें	कालीमुसली,सफेदमुसली।(श्याममुसली)
वंगभाषामें	तालमूली।
मराठीभाषामें	काळी मुसळी, पांढरी मुसळी।
गुजरातीभाषामें	काली मुसली, धोली मुसली।
कर्णाटकीभाषामें	नेलताडी।
तैलिङ्गीभाषामें	निलयत्तलि,गड्डु, नेल्तारु।
लैटिनभाषामें	हाइपोक्सिस् आर्चिओइडिस् Hypoxis Orchioides
,,	एस्परेगस् सारमेंटोसस Asparagus Sarmentosus

अस्या गुणा।

मुसली मधुरा वृष्या वीर्योष्णा बृंहणी गुरुः।
तिक्ता रसायनी हन्ति गुदजन्यानिलांस्तथा ॥

अर्थ-मुसली-मधुर, वीर्य्यवर्द्धक,उष्णवीर्य्य,बृंहण,भारी, कडवी, रसायन तथा बवासीर और वातनिवारक है।

अपिच।

मुसली रसपाकाभ्यां स्वादुः शीताग्निवर्द्धिनी।
वातपित्तहरा वृष्या स्थैर्यमार्दवदायिनी ॥ (शा० नि०)

अर्थ-मुसली-रस और पाकमे मधुर,शीतल,अग्निवर्द्धक, वातनाशक,पित्तनिवारक,वीर्य्यवर्द्धक तथा स्थिरता,और मृदुतादायक है।

अन्यच्च ।

मुसली मधुरा वृष्या धातुवृद्धिकरी गुरुः ।
तिक्ता पुष्टा बलकरी पिच्छिला श्लेष्मला मता ॥
रसायना शीतला च पित्तदाहहरी मता ।
रक्तदोषं श्रमश्चैव नाशयेदिति कीर्तितम् ॥
कृष्णाधिकगुणा प्रोक्ता श्वेता चाल्पगुणा मता ॥

अर्थ-मुसली-मधुर, वीर्य्यवर्द्धक, धातुवृद्धिकारक, भारी, कडवी, पुष्टिकारक, बलवर्द्धक, पिच्छिल, कफजनक, रसायन, शीतल, तथा पित्त, दाह, रुधिरविकार और श्रमको हरनेवाली है ।

विवरण । काली मुसली और सफेदमुसली इन भेदोंसे मुसली दो प्रकारकी है, इनमे सफेद मुसलीकी अपेक्षा काली मुसलीके अधिक गुणहै, काली मुसलीके क्षुपका ऐसा स्वरूप होताहै जैसा ४-५ पत्तो वाला खजूरका नवीन वृक्ष होताहै, इसमे बहुत छोटे २ पीले फूल आतेहै, क्षुपके नीचे उँगलीके समान मूल होताहै उसके ऊपरकी छाल भूरे रंगकी होतीहै भीतरका गर्भ सफेद रंगका होताहै ।

शतावरीमहाशतावरीनामानि ।



शतमूली महाशीता भीरुपत्री शतावरी ।
महाशतावरी त्वन्या शतवीर्य्या महोदरी ॥

अर्थ-शतमूली, महाशीता, भीरुपत्री, शतावरी, (बहुसुता, भीरु, इन्दीवरी, वरी, ऋष्यप्रोक्ता, नारायणी, अहेरु, अभीरु, अभी-

रुपवी,महापुरुपदन्ता,राङ्गिणी,द्वीपिशत्रु, ऋषगता, काञ्चनकारिणी मदभञ्जिनी, शतपदी,पीवरी पीवरा, वृष्या,दिव्या, द्वीपिका,दरक पिटका,सूक्ष्मपत्रा,सूक्ष्मपत्रिका,सुपत्रा, बहुमूला, शताह्वया,द्वीपशत्रु, स्वादुरसा, शताह्वा, लघुपर्णिका,आत्मगुप्ता,जटा मूला,शतवीर्य्या, महौषधी, मधुरा, केशिका, शतपत्रिका, बिन्वहया, वैष्णवी,कार्ष्णी, वासुदेवप्रियकरी, दुर्मना, तैलवल्ली, अनेककण्टका सुपत्रिका और शतवीर्य्या) महाशतावरी, शतवीर्य्यामहोदरी, (सहस्रवीर्य्या, सुरसा, महापुरुषदन्तिका, वीरा, तुराङ्गिणी, बहुपत्रिका,ऊर्ध्वकण्ठा, महावीर्य्या, फणिजिह्वा, महाशता,सुवीर्य्या, महती,अर्द्धकण्टिका, शतमूली, अभीरु, बहुपुत्रिका, स्वादुरस्या) ।

संस्कृतभाषामे	शतावरी, महाशतावरी ।
हिन्दीभाषामे	सतावर, बडीसतावर ।
बंगलाभाषामे	शतमूली ।
मराठीभाषामे	लघुशतावरी, शतमूली आसवली, बडीशतावरी, सहस्रमूली ।
गुजरातीभाषामे	शतावरी,एकलकण्टो, शापनाशुवा ।
कर्णाटकीभाषामे	किरिपआसडी, परडुआसडी ।
तैलिङ्गीभाषामे	एदुमहीटेडाचल, चल्लगड्डु ।
इंग्रेजीभाषामे	एस्पेरेगस रेसिमोसस् ।A racemosus
लैटिन्भाषामे	एस्पेरेगस्, सतवर वा एडसेंडेस् Asparagus sat ıı ır or A Adscendens
फारसीभाषामे	शुर्जडरिन ।
अरबीभाषामे	शकाकुलामिश्री ।

शतावरीगुणा ।

शतावरी गुरुः सीता तिक्ता स्वाद्री रसायनी ।
मेधाऽग्निपुष्टिदा स्निग्धा नेत्र्या गुल्मातिसारजित् ॥
शुक्रस्तन्यकरी बल्या वातपित्तास्रशोथजित्॥(भा प्र)

अर्थ-सतावर-भारी, शीतल,कडवी,मधुर,रसायन, मेधाकारक, जठराग्निवर्द्धक, पुष्टिदायक, स्निग्ध, नेत्रोंको हितकारी,गुल्मनाशक, अतिसारनिवारक, शुक्रजनक, स्तनोंमे दूधवर्धक, बलकारी तथा वात, रक्तपित्त और सूजनको दूर करे है ।

अन्यच्च।

शतावर्यां हिमे तिक्ते मधुरे पित्तजित्परे।
कफवातहरे वृष्ये महाश्रेष्ठे रसायने॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ-सतावर-शीतल,कडवी, मधुर, पित्तनाशक, कफवात-नाशक, वीर्य्यवर्द्धक और रसायनकर्ममें श्रेष्ठ है।

अन्यच्च।

शतावरी तु मधुरा शीता वृष्या च तिक्तका।
रसायनी गुरुः स्वादुः स्निग्धा दुग्धप्रदा मता॥
अग्निदीप्तिकरी बल्या मेध्या शुक्रकरी मता।
चक्षुष्या पुष्टिकृत्पित्तकफवातक्षयापहा॥
रक्तदोषगुल्महंत्री शोथातीसारनाशिनी।
तैले घृते प्रयोगार्थं प्रशस्ता मुनिभिर्मता॥ (नि० र०)

अर्थ-शतावर-मधुर, शीतल, वीर्य्यवर्द्धक, कडवी, रसायन, भारी, स्वादिष्ठ, स्निग्ध, दुग्धप्रद, अग्निप्रदीपक, बलकारक, मेधाजनक, शुक्रजनक, नेत्रोंको हितकारी, पुष्टिकारक तथा पित्त, कफ, वात,क्षय,रुधिरविकार,गुल्म,सूजन और अतिसारको हरनेवाली है।

महाशतावरीगुणाः।

महाशतावरी हृद्या मेध्या चाग्निप्रदीपनी।
शुक्रला शीतवीर्य्या च बल्या वृष्या रसायनी॥
अर्शस्संग्रहणीरोगनेत्ररोगविनाशिनी।
गुणा ह्यस्यास्तु विज्ञेयाः पूर्वोयाः सदृशा गुणैः॥(नि०र०)

अर्थ-बडीशतावर-हृदयको हितकारी, मेधाजनक,अग्निप्रदीपक, शुक्रजनक, शीतवीर्य्यबल,कारक, वीर्य्यवर्धक,रसायन तथा बवासीर, सग्रहणी और नेत्ररोगको हरेहै। शेष गुण उसके शतावरकी समान जानने।

अन्यच्च।

महती कफवातघ्नी तिक्ता श्रेष्ठा रसायने॥ (रा० नि०)

अर्थ-बडीशतावर कफ वातनाशक,कडवी और रसायनकार्यमें श्रेष्ठ है।

द्विविधशतावरीगुणा ।

शतावरीद्वयं वृष्यं मधुरं पित्तजिद्धिमम् ॥

अर्थ-दोनोप्रकारकी शतावर-वीर्य्यवर्द्धक, मधुर, पित्तनाशक और शीतल है ।

शतावर्यङ्कुरगुणा ।

शतावर्या ह्यङ्कुरस्तु तिक्तो वृष्यो लघुः स्मृतः ।
हृद्यस्त्रिदोषपित्तघ्नो वातरक्तार्शसां हरः ॥
क्षयसग्रहणीरोगनाशनस्तिक्तको लघु ॥ (नि० र०)

अर्थ-शतावरके अंकुर-कडवे, वीर्य्यवर्द्धक, हलके, हृदयको हितकारी तथा त्रिदोष, पित्त, वातरक्त, बवासीर, क्षय और संग्रहणीरोगका नाश करे है ।

विवरण । शतावरकी बेल जङ्गलोमे होती है, बेलका रङ्ग सफेदी लिये होता है, पत्ते अत्यन्त छोटे २ सोयेके पत्तोके समान होते है; उसकी बेलको कोई २ वैद्यलोग एकलकण्ठी कहते है; इसमे कांटे बहुत होते है; फूल सफेद छोटे होते है; बडी शतावरीभी इसी प्रकारकी होती है, इससे कुछ अधिक बडी होती है, और इसकी अनन्त मूल होती है और शतावर और इसमे कुछ भेद नही होता । शतावरी वर्षाके आरम्भमे हरी होती है और फूल आतेहै; एक वृक्षके नीचे सैकडों जड होतीहै उसेही शतावरी कहते है ।

अश्वगन्धानामानि ।

अश्वगन्धा वाजिगन्धा कटुकाश्वावरोहकः ।
वाराहकर्णी तुरगी बल्या वाजिकरी हया ॥

अर्थ-अश्वगन्धा, वाजिगन्धा, कटुका, अश्वावरोहक, वाराहकर्णी, तुरगी, बल्या, वाजिकरी, हया (अश्वकन्दिका, काम्बुका, अश्वारोहा, अश्वगन्धिका, तुरगगन्धा, कम्बुका, अश्वावरोहिका, बलजा, वाजिनी, अवरोहिका, वराहकर्णी, पुष्टिदा, बलदा, पुष्टिपविरा, पलाशपर्णी, वातघ्नी, श्यामला, कामरूपिणी, काला, प्रियकरी, गन्धपत्री, हयप्रिया, वाराहपत्री, बलदा, वरदा, कुष्ठगन्धिनी, वरगात्रकरी, पुण्या, कुष्ठगन्धा) ।

संस्कृतभाषामे अश्वगन्धा ।
हिन्दीभाषामे असगन्ध ।

वंगभाषामे	अश्वगन्धा ।
मराठीभाषामे	आसकंद, असगन्ध ।
गुजरातीभाषामे	आखसंध ।
कर्णाटकीभाषामे	आसादु, अडूगुर ।
तैलिङ्गीभाषामे	पिल्लिआगा ।
इंग्रेजीभाषामे	विंटरचेरी । Wintercherry
लैटिन् भाषामे	फाइसेलिस् सोम्निफेरा । Physalis Somnifera
	विथानीआ सोम्निफेरा । Withania Somnifea
फारसीभाषामे	मेहेमन् बररी ।

अस्या गुणाः ।

अश्वगन्धानिलश्लेष्मशोफश्वित्रक्षयापहा ।
बल्या रसायनी तिक्ता कषायोष्णाऽतिशुक्रला ॥(भा०प्र०)

अर्थ-असगन्ध-वात, कफ, सूजन, श्वित्रकुष्ठ और कफरोगनाशक है, तथा बलकारक, रसायन, कडवी, कषेली, गरम और अत्यन्त वीर्य्यवर्द्धक है ।

अन्यच्च ।

अश्वगन्धा कटूष्णा स्यात्तिक्ता च मदगन्धिका ।
बल्या वातहरा हन्ति कासश्वासक्षयव्रणान् ॥ (रा०नि०)

अर्थ-असगन्ध-चरपरी, गरम, कडवी, मदगन्धियुक्त, बलकारक, वातनाशक तथा खाँसी, श्वास, क्षय और व्रण (घाव) दूर करे है।

अन्यच्च ।

अश्वगन्धो जराव्याधिनाशकस्तुवरः स्मृतः ।
धातुवृद्धिकरः किञ्चित्कटुको बलदः स्मृतः ॥
कान्तिप्रदश्च सम्प्रोक्तस्तथा च मधुगन्धिकः ॥
शरीरपुष्टिकारी च वृष्यश्चोष्णो लघुः स्मृतः ॥
वातं क्षयं श्वासकासौ व्रणं श्वेतञ्च कुष्ठकम् ।
कफं विषकृमीञ्छोथं तथा चैव क्षतक्षयम् ॥
कण्डूं नाशयतीत्येव पूर्वाचार्यैर्निरूपितम् । (नि० र०)

अर्थ-असगन्ध-रसायन अर्थात् जराव्याधिनाशक, कषेली, धातु-

वर्द्धक, किञ्चित् चरपरी, बलवर्द्धक, कान्तिजनक, मधुगन्धियुक्त, शरीरको पुष्टिकरनेवाली, वीर्यवर्द्धक, गरम, हलकी तथा श्वास, खासी, घाव, श्वेतकुष्ठ, कफ, विष, कृमि, सूजन, क्षतक्षय और कण्डू (खुजली) को दूर करे है ।

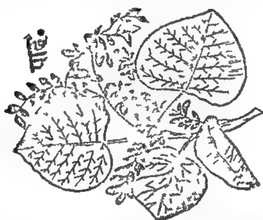
अपिच ।

अश्वगन्धापत्रलेपो ग्रन्थिगण्डापचीं हरेत् ॥ (शा०नि०)

अर्थ-असगन्धके पत्तोका लेप-ग्रन्थि, गण्डमाला और अपचीको दूर करनेवाला है ।

विवरण-असगन्धका क्षुप होता है । फल पनसोखाकी समान गोल होते है । इस क्षुपके नीचे छोटी मूलीकी समान कद होताहै, उस कंदको निकाल कर सुखा लेते है, उसको असगन्ध कहते है ।

पाठानामानि।



पाठाम्बष्ठा पापचेली कुचेला छिन्नवेशिका ॥

अर्थ-पाठा, अम्बष्ठा, पापचेली, कुचेला, छिन्नवेशिका (अम्बष्ठिका, प्राचीना, पापचेलिका, यूथिका, स्थापनी, श्रेयसी, विद्धकर्णिका, एकाष्ठीला, कुचेली, दीपनी वनतिक्तिका, तिक्तपुष्पा, बृहत्तिक्ता, शिशिरा, वृकी, मालती, वरा, देवी, वृत्तपर्णी, तिक्ता, विद्धकर्णी, रसा, अविद्धकर्णी, पाटिका, अविद्धकर्णा, पाठिका, सुस्थिरा, प्रतानिनी, वत्सादनी, मालवी, त्रिशिरा, त्रिवृत, वृत्तपर्णी, रक्तघ्नी विषहन्त्री, महौजसी, रुचिष्या, दीपनी, वीरा, वल्लिका)

संस्कृतभाषामें	पाठा ।
हिन्दीभाषामें	पाढ ।
बंगभाषामें	आकनादी, निमुक, आरर्ॉदि ।

मराठीभाषामे	पहाडमूल ।
गुजरातीभाषामे	कालीपाट, करेटीमूल ।
कर्णाटकीभाषामे	पाठा ।
तैलङ्गीभाषामे	पाढचेट्टु ।
औत्कलिभाषामे	पाकन् बिन्धि ।
इग्रेजीभाषामे	परेरारूट् ।
लैटिनभाषामे	सिसांपिलोस्, परिरा । Cissampelos pareira

अस्या गुणा ।

पाठोष्णा कटुका तिक्ता वातश्लेष्महरी लघुः ।
हन्ति शूलज्वरच्छर्दिकुष्ठातीसारहृद्रुजः ॥
दाहकण्डूविषश्वासकृमिगुल्मोदरव्रणान् । (भा० प्र०)

अर्थ-पाठ-गरम, चरपरा, कडवा, वातघ्न, कफनाशक, हलका तथा शूल, ज्वर, वमन, कोढ, अतिसार, हृदयरोग, दाह, कण्डू, विष, श्वास, कृमि, गुल्म, उदररोग, और व्रणको दूर करनेवाला है ।

अन्यच्च ।

पाठा तिक्ता कटूष्णा च भग्नसन्धानकारका ।
तीक्ष्णा लघ्वी पित्तदाहशूलातीसारनाशिनी ॥
वातपित्तज्वरच्छर्दिविषाजीर्णत्रिदोषकान् ।
हृद्रोगरक्तकुष्ठातिकण्डूश्वासकृमीञ्जयेत् ॥
गुल्मोदरव्रणकफवातनाशकरी मता । (नि० रा०)

अर्थ-पाठ-कडवा, चरपरा, गरम, भग्नसन्धानकारक, (टूटे हुये स्थानको जोडनेवाला), तीक्ष्ण, हलका तथा पित्त, दाह, शूल, अतिसार, वातपित्त, ज्वर, वमन, विष, अजीर्ण, त्रिदोष, हृदयरोग, रक्तकुष्ठ, कण्डू, श्वास, कृमी, गुल्म, उदररोग, व्रण और कफवातको हरनेवाला है ।

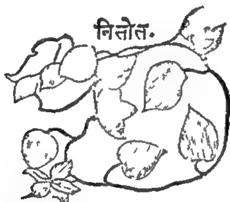
लघुपाठागुणा ।

लघुपाठा तिक्तरसा विषघ्नी कुष्टकण्डुनुत् ।
छर्दिहृद्रोगगरजित्त्रिदोषशमनी मता ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ-लघुपाठ-कडवा तथा विष, कोढ, खुजली, वमन, हृदयरोग और त्रिदोषनाशक है ।

विवरण। पाढकी बेल होतीहै, पत्ते कुछ गोल होते हैं, उसके कोनोंमेसे श्वेत और सूक्ष्म मौरकी समान फूल निकलता है। फलम-कोयकी समान लालरंगके होते हैं और वागकी जडको लघुपाठा कहते हैं तथा वांगकी भी बेल होतीहै, पत्ते-फजीकी समान होते हैं फजीके पत्ते ऊपर नीले और नीचे सफेद होते हैं. किन्तु वागके ऐसे नहीं होते, आकार गोफलश्रीकी समान और कुछेक पिलाई लिये होता है, फूल सूक्ष्म और सफेद होते हैं, फल पीलुकी सदृश होते हैं कालकाके समीप टकसालमें इसको वटोवकी वेल या पिण्डीकी दवा कहते हैं।

त्रिवृन्नामानि।



त्रिवृत्सुवहा त्रिपुटा त्रिभण्डी रेचनी सरा ॥

अर्थ-त्रिवृत सुवहा, त्रिपुटा, त्रिभण्डी, रेचनी, सरा(सर्वानुभूति, त्रिवृता, सरसा, सरणा, सहा, रोचनी, मालविका, श्यामा, मसूरी, अर्द्धचन्द्रा, विदला, सुपेणी, कालिङ्गिका, कालमेषी, काली, त्रिवेला, त्रिवृत्तिका, सारा)

संस्कृतभाषामें	त्रिवृत्।
हिन्दीभाषामें	निसोत, पानिलर।
बंगभाषामें	तेड़ी।
मराठीभाषामें	निशोत्तर, तेड।
गुजरातीभाषामें	नसोतर।
कर्णाटकीभाषामें	तिगडे।
तैलिङ्गीभाषामें	आलतेगड्डा।
तामिलीभाषामें	शिवदइ।
इंग्रेजीभाषामें	टरबीथरूट Turbith root

लैटिन्भाषामे आईपोमिया टरपीथम् । Ipomoeaturpethum
फारसीभाषामे निसोथ ।
अरबीभाषामे तुरबुद ।

कृष्णत्रिवृन्नामानि ।

श्यामा त्रिवृन्मालविका मसूरविदला च सा ।
कालार्द्धचन्द्रपालदी सुषेणी कालमेषिका ॥

अर्थ-श्यामा-त्रिवृत्, मालविका, मसूरविदला, काला, अर्द्धचन्द्रा, पालंदी, सुषेणी, कालमेषिका (पालिन्धी, कालमाशिका)

हिन्दीभाषामे काला निसोथ, श्याम निलर ।
बंगभाषाम कालतेउडी ।
कर्णाटकीभाषामे केप्पनेयतिगडे ।

श्वेतत्रिवृन्नामानि ।

शुक्लभण्डी त्रिभण्डी स्यात्काकाक्षी सरला त्रिवृत् ।
सर्वानुभूतिस्त्रिपुटा त्र्यस्रा कोटरवाहिनी ॥

अर्थ-शुक्लभण्डी, त्रिभण्डी, काकाक्षी, सरला, त्रिवृत, सर्वानुभूति, त्रिपुटा, त्र्यस्रा, कोटरवाहिनी, (व्याघ्रपादी, त्रिसूत्रा, वृकाक्षी, चोरनासिका, सुवहा, निशोत्रा, रेचनी, सर्वानुभूति और त्रिवृता)

हिन्दीभाषामे सफेद निसोत ।
बंगभाषामे श्वेत तउडी ।
मराठीभाषाम पाढऱ्या फुलांचा निशोत्तर ।
गुजरातीभाषामे धालाफुलतुं नसोतर ।

रक्तत्रिवृन्नामानि ।

रक्तपुष्पा रक्तमूला कलिङ्गा परिपाकिनी ।
त्रिवृता निःसृतारुणा सूत्रमध्या च सा स्मृता ॥

अर्थ-रक्तपुष्पा, रक्तमूला, कलिंगा, परिपाकिनी, त्रिवृता । निःसृता, अरुणा सूत्रमध्या, (व्याघ्रादनी, कुटरुणा कालिन्दी, त्रिपुरा, ताम्रपुष्पिका, कुलवर्णा, मसूरी, अमृता, कफनासिका और रक्तत्रिवृत)

सामान्यत्रिवृद्गुणाः ।

त्रिवृत्तिक्ता कटूष्णा च कृमिश्लेष्मोदरार्त्तिजित् ।

कुष्ठकण्डूव्रणान्हन्ति प्रशस्ता च विरेचनी॥ (रा०नि०)

अर्थ-निसोत-कडवा, चरपरा, गरम, तथा क्रिमि, कफ, उदर रोग,कुष्ठ,कण्डू और व्रणको दूर करेहै,इसका जुल्लाब प्रशंसायोग्य है

अन्यच्च।

त्रिवृत्तु मधुरं रूक्षं तीक्ष्णं वातकरं मतम्।
तुवरं च रसे तिक्तं कटुपाकञ्च रेचकम्॥
हितकृन्मलस्तम्भञ्च ग्रहणीञ्च कफोदरम्।
शोथं पाण्डुं कृमीन् प्लीहां ज्वरं पित्तं कफं तथा॥
वातरक्तमुदावर्त्तं हृद्रोगञ्च विनाशयेत्। (रा० नि०)

अर्थ-निसोत-मधुर, रूखा, तीक्ष्ण, वातजनक, कषेला, तिक्त रसान्वित, कटुपाकी, इसका रेचक (जुलाब) हितकारी तथा मलस्तम्भ, सग्रहणी, कफोदर, सूजन, पाण्डुरोग,कृमि, प्लीहा,ज्वर, पित्त, कफ, वातरक्त, उदावर्त और हृदयरोगको हरनेवाला है।

श्यामत्रिवृद्गुणाः।

श्यामा त्रिवृत्ततो हीनगुणा तीव्रविरेचनी।
मूर्च्छादाहमदभ्रान्तिकण्ठोत्कर्षणकारिणी॥

अर्थ-श्यामपनिलर (काला निसोथ)-सफेद निसोथकी अपेक्षा हीनगुणवला है, किन्तु विरेचन गुण इसमे तीव्र है, तथा मूर्च्छा,दाह, मद, भ्रान्ति और कण्ठको उत्कर्षण करनेवाला है।

श्वेतत्रिवृद्गुणाः।

श्वेता त्रिवृद्रेचनी स्यात्स्वादुरुष्णा समीरहृत्।
रूक्षा पित्तज्वरश्लेष्मपित्तशोथोदरापहा (भा० प्र०)

अर्थ-सफेद निसोथ-रेचक, स्वादिष्ठ, गरम, वातनाशक, रूखा, तथा पित्तज्वर, कफ, पित्त, सूजन और उदररोगको दूर करे है।

रक्तत्रिवृद्गुणाः।

अरुणा त्रिवृता स्वादुः कषाया मृदुरेचनी।
रूक्षा च कटुका चैव पाके तिक्ता कफापहा॥(राजवल्लभ)

अर्थ-लाल निसोथ-मधुर, कषेला, मृदुरेची, रूखा, चरपरा, पचनेमे कडवा और कफनाशक है।

अन्यच्च ।

रक्ता त्रिवृत्कटुस्तिक्ता कटूष्णा रेचनी च सा ।
ग्रहणीमलविष्टम्भहारिणी हितकारिणी ॥ (रा० नि०).

अर्थ–लालनिसोथ–कडवा, चरपरा, गरम, रेचक तथा संग्रहणी, एव मलविष्टम्भहारक और हितकारक है ।

विवरण । सफेद निशोथकी बेल जंगलमे होतीहै, सफेद फूल आतेहै, गाल २ फल आतेहै, उनमे चार २ बीज हातेह, पत्ते–नोकदार गोल होतेहै, इसकी बेलकी लकडीमे तीन धारे होतीहै, निसोथ तीन प्रकारका होताहै, परन्तु सफेद सबसे उत्तम है ।

२ काले निसोथकीभी लता होती है, फूल कालापनलिये बैजनी से होतेहै, पत्ते–गोल २ नोकदार उसीप्रकार होतेहै; परन्तु सफेदसे कुछ छोटे और फलभी कुछ छोटे होतेहै और सब आकार इकसार होताहै, परन्तु वैद्योने सफेदकी अधिक प्रशंसा करी है ।

मात्रा सफेद निसोथकी २ मासेसे लेकर ४॥ मासे पर्य्यन्त है । मात्रा काले निसोथकी १ मासेसे लेकर ३ मासे पर्य्यन्त है । मात्रा लाल निसोथकी ३ मासेसे ६ मासेतककी है ।

दन्तीनामानि ।

उदुम्बरपर्णी दन्ती प्रत्यक्पर्णी च दन्तिका ।
श्वेतघण्टा निकुम्भी च निःशल्या निष्कुम्भस्तथा ॥

अर्थ–उदुम्बरपर्णी, दन्ती, प्रत्यक्पर्णी, दन्तिका, श्वेतघण्टा, निकुम्भी, नि शल्या, निष्कुम्भ (निकुम्ब, शीघ्रा, नागस्फोता, दन्तिनी, उपाचित्रा, भद्रा, रूक्षा, रेचनी, अनुकूला, रक्तदन्ती, विशल्या, मधुपुष्पा, एरण्डफला, तरुणी, एरण्डपत्रिका, एरण्डपत्री, अणुरेवती, विशोधनी, कुम्भी, उदुम्बरदला, विशल्या, उदुम्बरपर्णी, शीघ्रा, श्येनघण्टा, गुणप्रिया, वराहाङ्गी, निकुम्भ और मकूनक यह नाम छोटी दन्तीके है) (द्रवन्ती, सावरी, चित्रा, प्रत्यक्पर्णी, अर्कपर्णी, चित्रोपचित्रा, न्यग्रोधी, प्रत्यक्श्रेणी, आखुकर्णी)

संस्कृतभाषामे	दन्ती ।
हिन्दीभाषामे	दन्ती, तिरिफल ।
बगभाषामे	दन्तीगाछ ।
मराठीभाषामे	लघुदन्ती ।

गुजरातीभाषामें	द्रातण्टले नेपालनां मूल ।
कर्णाटकीभाषामें	दन्ती ।
तैलिङ्गीभाषामें	दन्तीचेट्टु, कोण्ड अमुदुम् ।
इंग्रेजीभाषामें	क्रोटन् सीड्स् । Crotenseeds
लैटिनभाषामें	क्रोटनटिग्लियम् । Crotontiglium
फारसीभाषामें	दंद ।
अरबीभाषामें	ह्बुल सुलुक ।

दन्तीगुणाः ।

दन्ती वह्निसमा पाके शोफदद्रुविनाशिनी ।
कण्डूपामाहरा कुष्ठध्वंसिनी कृमिहृत्सरा ॥ (ग० नि०)

अर्थ-दन्ती-पाकमें अग्निकी समान है, दस्तावर है तथा शोफ, बवासीर, कण्डू, पामा, कोढ और कृमिरोगको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

दन्ती कटूष्णा शूलामत्वग्दोषशमनी च सा ।
अर्शोव्रणाश्मरीशल्यशोधनी दीपनी परा ॥ (रा० नि०)

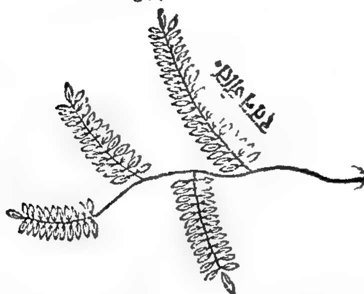
अर्थ दन्ती-चरपरी, गरम, शोधक, दीपन, तथा शूल, आम, त्वचाके दोष, बवासीर, घाव,पथरी और शल्यनिवारक है ।

अपिच ।

दन्तीद्वय सर पाके रसे च कटु दीपनम् ।
गुदांकुराश्मशूलार्शःकण्डूकुष्ठविदाहनुत ॥
तीक्ष्णोष्ण हन्ति पित्तास्रकफशोफोदरकृमीन् ।
क्षुद्रदन्तीफल तु स्यान्मधुर रसपाकयोः ॥
शीतल सृष्टविण्मूत्र गरशोथकफापहम् । (भा० प्र०)

अर्थ-दोनोंप्रकारकी दन्ती-दस्तावर, रस और पाकमें चरपरी, जठराग्निको दीपन करनेवाली,तीक्ष्ण, गरम, तथा गुदाकुर, पथरी, शूल,बवासीर, कण्डू, कोढ, दाह, पित्तकारक,कफ, सूजन, उदररोग और कृमि रोगका नाश करे है, छोटी दन्तीका फल रस और पाकमें मधुर, शीतल, मल तथा मूत्रको निकालनेवाला, विष, शोथ और कफनाशक है ।

बृहद्दन्तीनामानि ।



बृहद्दन्ती गुच्छफला दुग्धगर्भा विरेचनी ।
विषभद्रा भद्रदन्ती ज्योतिष्का च जयावहा ॥

अर्थ–बृहद्दन्ती, गुच्छफला, दुग्धगर्भा, विरेचनी, विषभद्रा, भद्रदन्ती, ज्योतिष्का, जयावहा ।

संस्कृतभाषामें	बृहद्दन्ती ।	
हिन्दीभाषामें	मुगलाई अण्ड ।	
मराठी भाषामें	थोरदन्ती ।	
गुजरातीभाषामें	रतनजोत ।	
कर्णाटकीभाषामें	एरण्डनेदन्ती ।	
इंग्रेजीभाषामें	दिफिझिकनट् ।	The physicnut
लेटिन्भाषामें	करकस मल्टीफीडस् ।	CurcusMultifidus
	जेट्रोफापरगन्स्,	Jatrophapurgans
फारसीभाषामें	शकारदुजुवा ।	
अरबीभाषामें	अबुखलसा ।	

बृहद्दन्तीगुणा ।

बृहद्दन्ती कटूष्णा च जठरामयशोधिनी ।
अर्शोव्रणाश्मरीशूलत्वग्दोषशमनी च सा ॥

अर्थ–बृहद्दन्ती–चरपरी, गरम, जठरामयशोधक तथा बवासीर, घाव, पथरी, शूल और त्वचाके दोषोंको दूर करे है ।

बृहद्दन्तीबीजगुणाः ।

तिक्तैरण्डस्य बीजं तु रसपाके गुरु मधु ।
स्निग्धं च रेचकं वृष्यं बृंहणञ्च बलप्रदम् ॥
कफपित्तप्रदं चैव वामकं वातदाहकृत् ।
न विषं विषमित्याहुर्जैपालो विषमुच्यते ॥
शोधितश्च विरेकेषु चमत्कृतिकरः परः ॥

अर्थ-बृहद्दन्तीका बीज-रस और पाकमें भारी, मधुर, स्निग्ध, रेचक, वीर्यवर्द्धक, बृंहण, बलदायक, कफपित्तकारक, वमनजनक, वात और दाहकारकहै। जो विष है वह विष नहीं है, परन्तु यह विष है अर्थात् जमालगोटा विष है। यह शोधा हुआ विरेचनके विषय शरीरमे चमत्कार करता है।

भद्रदन्तीनामानि ।

भद्रदन्ती केशरुहा भिषग्भद्रा जयावहा ॥

अर्थ-भद्रदन्ती, केशरुहा, भिषग्भद्रा, जयावहा (आवर्त्तकी, ज्वराङ्गी, जयाह्वा, भद्रदन्तिका)

अस्या गुणाः ।

भद्रदन्ती कटूष्णा च रेचनी कृमिहा परा ।
शूलकुष्ठामदोषघ्नी तुदामयविनाशिनी ॥

अर्थ-भद्रदन्ती-चरपरी, गरम, दस्तावर, कृमिनाशक तथा शूल, कोढ, आमदोष और उदररोगनाशक है।

जयपालनामानि ।



जयपालश्च जैपाल· सारकस्तिन्तिडीफलम् ॥

अर्थ-जयपाल,जैपाल,सारक,तिन्तिडीफल,(दन्तीबीज,मलद्रावि, निकुम्भाख्यबीज; रेचक, बीजरेचन,कुम्भीबीज,कुभिनीबीज,घण्टा-बीज, घण्टिनीबीज, शोधनीबीज, चक्रदन्तीबीज)

संस्कृतभाषामे	जयपाल।
हिंदीभाषामे	जमालगोटा।
वंगभाषामे	जैपाल।
मराठीभाषामे	जेपाळ।
गुजरातीभाषामे	नेपालो।
कर्णाटकीभाषामे	जेपाल।
इंग्रेजीभाषामे	पार्जिंगक्रोटन। Parging Broton
लैटिन्भाषामे	ओलियम, कोटोनिस।
अरबीभाषामे	हबुससलातीन।
फारसीभाषामे	तुखमेबेद् जीरखताई।

अस्य गुणाः।

जयपालः कटुरुष्णः कृमिहारी विरेचकः।
दीपनः कफवातघ्नो जठरामयशोधनः॥ (रा० नि०)

अर्थ-जमालगोटा-चरपरा, गरम, कृमिनाशक, रेचक, दीपन, कफवातनाशक और उदरामयशोधक है।

अन्यच्च।

जयपालो गुरुः स्निग्धो रेची पित्तकफापहः॥ (भा०प्र०)

अर्थ-जमालगोटा-भारी, स्निग्ध, दस्तावर और पित्त, कफना-शक है।

अन्यच्च।

सारकं कफनुत्क्लेदि तीक्ष्णमुष्णं विरेचनम्॥ (रा० नि०)

अर्थ-जमालगोटा-कफनाशक, क्लेदकारक, तीक्ष्ण, गरम और दस्त लानेवाला है।

अस्य बीजशोधनविधि।

निस्तुषं जयपालञ्च द्विधा कृत्वा विचक्षणः।
एतद्बीजस्य मध्ये तु पत्रवत्परिवर्ज्जयेत्॥

अष्टमांशेन चूर्णेन टङ्कणस्य तु मेलयेत् ।
केशयन्त्रेण तद्भाव्य पाच्य दुग्धेन सम्प्लुतम् ॥
त्रिवार शुद्धिमायाति जयपालोऽमृतोपमम् । (इतिरसच०

अर्थ-बुद्धिमान वैद्य बकलरहित जमालगोटेके दो भाग करके इसके बीजके मध्यमे पत्तेकी समान जो वस्तु है उसको निकाल डाले और जमालगोटेकी दालमे अष्टमाश सुहागेका चूर्ण करके मिलावे केशयन्त्रके द्वारा भावना दे, फिर दूधमे भिजोकर मिलावे, इसप्रकार तीन वार करनेसे जमालगोटा अमृतकी सदृश होजाता है ।

अन्यच्च ।

स्विन्न गोमयतोये वा दुग्धे वा जयपालकम् ।
खर्परीमृदुभृष्ट तन्निःस्नेह शुद्धिमृच्छति ॥ (आत्रेयसहिता)

अर्थ-जमालगोटेको गोवरके जलमे तथा दूधमे भिजोकर फिर कोमल खीपडेमें भूनलेवे जब उसमे चिकनाई न रहे तब शुद्ध होजाता है

अस्य बीजतैलगुणा ।

तैल निकुम्भबीजोत्थमत्युग्र रेचन परम् ।
आनाहमुदर हन्ति संन्यास च शिरोगदम् ॥
धनुस्तम्भ ज्वरोन्माद गदमेकाङ्गसंज्ञकम् ।
आमवात च शोथ च मर्दनात्कासनाशनम् (आत्रेयसहिता)

अर्थ-जमालगोटेका तेल-अत्युग्र रेचक, तथा आनाह(अफारा)उदररोग, संन्यास, शिरोरोग, धनुःस्तम्भ, ज्वर, उन्माद, एकाङ्गसज्ञक रोग, आमवात और शोथको मर्दन करनेसे तथा खाँसीको दूर करे है।

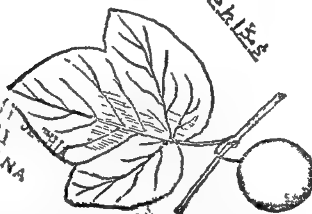
विवरण-दन्तीका क्षुप होताहै, पत्ते-गूलरकी समान होते हैं, फूल महुवेकी समान होता है इसका फल जमालगोटा है। बडी दन्तीका बडा वृक्ष होता है, फल-अण्डकी समान होते हैं, उसमेसे अडीकी समान बीज निकलते है, उन बीजोका जुल्लाव होता है, तथा इसके दूधकाभी थूहरके दूधकी समान जुल्लाव दियाजाता है । इसका पेड कालकाके समीप टकसालमे बुल्लबुला नामसे प्रसिद्ध है

इन्द्रवारुणीनामानि।

इन्द्रवारुणिका चित्रा विशाला गजचिर्भिटा ।
मृगेर्वारु क्षुद्रमहा चित्रफलेन्द्रवारुणी ॥

अर्थ–इन्द्रावारुणिका, चित्रा, विशाला, गर्जचिर्भिटा, मृगेर्वारु, क्षुद्रसहा, चित्रफला, इन्द्रवारुणी, (ऐन्द्री, गवाक्षी, भरा, पिटङ्कोकी, मृगादनी, इन्द्रा, अरुणा, गवादनी, इन्द्रचिर्भिटी, सूर्य्या, विषघ्नी, गणकर्णिका, माता, सुकर्णिका, तारका, वृषभाक्षी, पीतपुष्पा, इन्द्रवल्लरी, हेमपुष्पा, क्षुद्रफला, वारुणी, बालकप्रिया, रक्तेर्वारु, विषलता, शक्रवल्ली, विषापहा, अमृता, विषवल्ली, चित्रवल्ली, बहुफला कपिलाक्षी, मृगेक्षणा मृगेर्वणा)

महेन्द्रवारुणीनामानि ।



महेन्द्रवारुणी काया विशाला च महाफला ।
आत्मरक्षा चित्रफला तुवसी त्रपुसी च सा ॥

अर्थ–महेन्द्रवारुणी, काया, विशाला, महाफला, आत्मरक्षा, चित्रफला, तुवसी, त्रपुसी (रम्या, महेन्द्री त्रपुसा, चित्रवल्ली, दीर्घवल्ली, बृहत्फला, बृहद्वारुणी, सौम्या, श्वेतपुष्पा, मृगाक्षी, मृगेर्वारु, मृगादिनी, हस्तिदन्ती, कटुरसा, कपिलाक्षी, कुम्भसी, उरुप्रिया, चित्रला, देवी और गजचिर्भिटा)

संस्कृतभाषामें	इन्द्रवारुणी, महेन्द्रवारुणी ।
हिन्दीभाषामें	इन्द्रायण, फरफेंदु, बडीइन्द्रायण, बडीइन्द्रफला ।
वंगभाषामें	राखालशशा, राखालताडु, कुंदरुकी, बडमाकाल ।
मराठीभाषामें	लघुइन्द्रवण, कावडळ, थोरकावडळ ।
गुजरातीभाषामें	ईंदरवाणीयुं, गावसुकणु ।
रा०	तसुतुम्बो, गडतुम्बो ।
दे०	घोडइन्द्रावण, धुलेइन्द्रावण ।
कर्णाटकीभाषामें	हामेके, हिरियाहामेके ।

अष्टमांशेन चूर्णेन टङ्कणस्य तु मेलयेत् ।
केशयन्त्रेण तद्भाव्य पाच्य दुग्धेन सप्लुतम् ॥
त्रिवार शुद्धिमायाति जयपालोऽमृतोपमम् । (इतिरमच०)

अर्थ-बुद्धिमान् वैद्य बक्कलरहित जमालगोटेके दो भाग करके इसके बीजके मध्यमे पत्तेकी समान जो वस्तु है उसको निकाल डाले और जमालगोटेकी दालमे अष्टमांश सुहागेका चूर्ण करके मिलावे। केशयन्त्रके द्वारा भावना दे,फिर दूधमे भिजोकर मिलावे;इसप्रकार तीन वार करनेसे जमालगोटा अमृतकी सदृश होजाता है ।

अन्यच्च ।

स्विन्न गोमयतोये वा दुग्धे वा जयपालकम् ।
खर्परीमृदुभृष्ट तन्नि:स्नेह शुद्धिमृच्छति ॥ (आत्रेयसहिता)

अर्थ-जमालगोटेको गोबरके जलमे तथा दूधमे भिजोकर फिर कोमल खीपडेमे भूनलेवे जब उसमे चिकनाई न रहे तब शुद्ध होजाता है ।

अस्य बीजतैलगुणा ।

तैल निकुम्भबीजोत्थमत्युग्र रेचन परम् ।
आनाहमुदर हन्ति संन्यासं च शिरोगदम् ॥
धनुस्तम्भ ज्वरोन्माद गदमेकाङ्गसंज्ञकम् ।
आमवातं च शोथं च मर्द्दनात्कासनाशनम् (आत्रेयसहिता)

अर्थ-जमालगोटेका तेल-अत्युग्र रेचक,तथा आनाह(अफारा)उदररोग,संन्यास, शिरोरोग, धनुःस्तम्भ, ज्वर, उन्माद, एकाङ्गसंज्ञक रोग,आमवात और शोथको मर्दन करनेसे तथा खाँसीको दूर करे है।

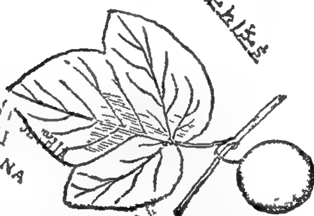
विवरण-दन्तीका क्षुप होताहै,पत्ते-गूलरकी समान होते हैं,फूल महुवेकी समान होता है इसका फल जमालगोटा है।बडी दन्तीका बडा वृक्ष होता है, फल-अण्डकी समान होते है, उसमेसे अडीकी समान बीज निकलते है, उन बीजोका जुल्लाब होता है, तथा इसके दूधकाभी थूहरके दूधकी समान जुल्लाब दियाजाता है । इसका पेड कालकाके समीप टकसालमें बुलहवुला नामसे प्रसिद्ध है

इन्द्रवारुणीनामानि।

इन्द्रवारुणिका चित्रा विशाला गजचिर्भिटा ।
मृगेर्वारु क्षुद्रमहा चित्रफलेन्द्रवारुणी ॥

अर्थ-इन्द्रावारुणिका, चित्रा, विशाला, गजचिर्भिटा, मृगेर्वारु, क्षुद्रसहा, चित्रफला, इन्द्रवारुणी, (ऐन्द्री, गवाक्षी, भरा, पिटङ्कोकी, मृगादनी, इन्द्रा, अरुणा, गवादनी, इन्द्रचिर्भिटी, सूर्य्या, विषघ्नी, गणकर्णिका, माता, सुकर्णिका, तारका, वृषभाक्षी, पीतपुष्पा, इन्द्रवल्लरी, हेमपुष्पा, क्षुद्रफला, वारुणी, बालकप्रिया, रक्तेर्वारु, विषलता, शक्रवल्ली, विषापहा, अमृता, विषवल्ली, चित्रवल्ली, बहुफला कपिलाक्षी, मृगेक्षणा मृगेक्षणा)

महेन्द्रवारुणीनामानि।



महेन्द्रवारुणी काया विशाला च महाफला।
आत्मरक्षा चित्रफला तुवसी त्रपुसी च सा॥

अर्थ-महेन्द्रवारुणी, काया, विशाला, महाफला, आत्मरक्षा, चित्रफला, तुवसी, त्रपुसी (रम्या, महेन्द्री त्रपुसा, चित्रवल्ली, दीर्घवल्ली, बृहत्फला, बृहद्वारुणी, सौम्या, श्वेतपुष्पा, मृगाक्षी, मृगेर्वारु, मृगादिनी, हस्तिदन्ती, कटुरसा, कपिलाक्षी, कुम्भसी, उरुप्रिया, चित्रला, देवी और गजचिर्भिरा)

संस्कृतभाषामें	इन्द्रवारुणी, महेन्द्रवारुणी।
हिन्दीभाषामें	इन्द्रायण, फरफेंदु, बडीइन्द्रायण, बडीइन्द्रफला।
बंगभाषामें	राखालशशा, राखालताडु, कुदरुकी, बडमाकाल।
मराठीभाषामें	लघुइन्द्रवण, कावडळ, थोरकावंडळ।
गुजरातीभाषामें	इंदरवाणीयुं, गायसुकणु।
रा०	तस्तुतुम्बो, गडतुम्बो।
दे०	घोडइन्द्रावण, धुलेइन्द्रावण।
कर्णाटकीभाषामें	हामेकै, हिरियाहामेके।

तैलिङ्गीभाषामें पतिपुच्छा ।
इंग्रेजीभाषामें कोलोसिंथ । Colocynth
लेटिन् भाषामें सिट्रलस् कोलोसिंथिस् । Citrullus Colocynthis
क्युक्युमिस् स्युडोकोलो सिंथिस् । Cucumispsuds colocynthis
फारसीभाषामें हुर्थजातलख ।
अरबीभाषामें हजल ।

इन्द्रवारुणीगुणाः ।

इन्द्रवारुणिका तिक्ता कटुः शीता च रेचनी ।
गुल्मपित्तोदरश्लेष्मकृमिकुष्ठज्वरापहा ॥ (रा० नि०)

अर्थ-इन्द्रायण-कडवी, चरपरी, शीतल, रेचक तथा गुल्म, पित्त, उदररोग, कफ, कृमि, कोढ, और ज्वरको हरनेवाली है ।

अपरञ्च ।

लघ्वीन्द्रवारुणी प्रोक्ता पाके कट्वी च तिक्तका ।
शीता सरोष्णवीर्या च लघ्वी चैव प्रकीर्तिता ॥
गुल्मपित्तोदरकफकृमिकुष्ठज्वरव्रणान् ।
श्वासकासग्रन्थिमेहमूढगर्भककामलाः ॥
प्लीहानं शुष्कगर्भं च गलगण्डं विषं तथा ॥
आनाहं वातमपि च चामं दुष्टोदरं तथा ॥
सर्वोदराणि पाण्डुं च नाशयेदिति कीर्तिता । (नि० र०)

अर्थ-इन्द्रायण-पचनेमें चरपरी, कडवी, शीतल, सारक, उष्णवीर्य, हलकी तथा गुल्म, पित्त, उदररोग, कफ, कृमि, कुष्ठ, ज्वर, व्रण, श्वास, खाँसी, ग्रन्थि, प्रमेह, मूढगर्भ, कामला, प्लीहा, शुष्कगर्भ, गलगण्ड, विष, आनाह, वात, अपची, आम, दुष्टोदर, सर्वप्रकारके उदररोग और पाण्डुरोगका नाश करनेवाली है ।

महेन्द्रवारुणीगुणाः ।

अन्येन्द्रवारुणी कण्ठरुजं च श्लीपदं तथा ।
नाशयेदिति सम्प्रोक्ता गुणाश्चान्ये तु पूर्ववत् ॥
रसे वीर्ये [illegible] प्रोक्ता गुणैरियम् ।(नि०र०)

[अर्थ-[illegible] श्लीपद रोगको दूर करनेवालीहै,

रस, वीर्य्य और विपाकमे इन्द्रायणकी अपेक्षा यह अधिक गुणवालीहै, शेप गुण इन्द्रायणकी समान जानने।

विवरण। इसकी बेल अधिकतर खारी भूमिमे उत्पन्न होतीहै, फल सुक्ष्म काटेयुक्त लालरंगका होताहै, फूल पीलेरंगका होताहै। पत्ते लम्बे बीचबीचमे कटेहुवे होतेहै, दूसरी रेतीली भूमिमे होती है, उसका फल पीलेरंगका होताहै। इन दोनो जातिकी इन्द्रायणके फल तथा मूलके द्वारा जुल्लाव दियाजाताहै। पंजाबमे कौडतूम्बा या बसलूबा नामसे प्रसिद्ध है।

स्वर्णक्षीरीनामानि ।

कल्याणी हेमपत्री च रेचनी स्वर्णपत्रिका ।

अर्थ-कल्याणी, हेमपत्री, रेचनी, स्वर्णपत्रिका, (स्वर्णपत्री, स्वर्णमुखी, हेमपत्रिका, रेचिका, स्वर्णिनी, और मलझारिणी-)

संस्कृतभापामे	स्वर्णपत्री ।
हिन्दीभापामे	सनाय ।
मराठीभापामे	सोनामुखी।
बंगभापामे	सोनामुखी,सोनापाता ।
इंग्रेजीभाषामे	टिनेवेलीसिना ।
लेटिन्भापामे	सिनाइडिका ।

अस्या गुणा ।

विट्बन्धं वह्निमान्द्यञ्च यकृदाद्युदरं तथा ।
प्लीहोदरं बद्धगुदमजीर्णं विषमज्वरम् ॥
कामलां पाण्डुरोगं च कल्याणी क्षपयेद्ध्रुवम् । (आ० सं०)

अर्थ-सनाय-मलबद्ध, मदाग्नि, यकृत, उदररोग, प्लीहोदर, बद्धगुद, अजीर्ण, विपमज्वर, कामला और पाण्डुरोगका नाश करेहै ।

कृष्णबीजनामानि ।



कृष्णबीजं श्यामबीजं स्मृतं श्यामलबीजकम् ॥

अर्थ-कृष्णबीज, श्यामबीज, श्यामलबीजक ।

संस्कृतभाषामें	कृष्णबीज ।
हिन्दीभाषामें	कालादाना ।
बंगलाभाषामें	नीलकलमी ।
इंग्रेजीभाषामें	पेलब्लुइपोमिया ।
लेटिन्भाषामें	फारबटिसनील ।

अस्या गुणाः ।

कृष्णबीज सरं स्निग्धं शोथोदरहरं परम् ।
ज्वरविष्टम्भहारी च मस्तकामयनाशनम् ॥
उदावर्त्ते कफनाहे प्रयोज्यं बुद्धिमत्तरैः ।

अर्थ-कालादाना-दस्तावर, चिकना तथा सूजन, उदररोग, ज्वर, विष्टम्भ, मस्तकरोग, उदावर्त, कफ, और आनाह रोगको दूर करेहै।

विवरण । जमालगोटेके अभावमें इसका व्यवहार किया जाता है, क्योंकि जमालगोटेकी समान यह इतना भयंकर दस्तावर नहीहै । आजकल बहुतसे आलोपैथिकडाक्तर सरकारी सफाखानेमें इसका व्यवहार करतेहैं । व्यवहारबीज । मात्रा ६ मासेकी । पञ्जाबमें इसकी बेलें होती हैं इसके बीज काला दाना होता हैं काहलियाकी बेल नामसे प्रसिद्ध हैं ।

नीलिकानामानि ।

नीली तु नीलिनी नीला मेघवर्णा च कुत्सला ।
दूली क्लीतकिका काला नीलिका नीलपुष्पिका ॥

अर्थ-नीली, नीलिनी, नीला, मेघवर्णा, कुत्सला, दूली, क्लीतकिका, काला, नीलिका, नीलपुष्पिका, (ग्रामीणा, मधुपर्णिका, रञ्जनी, श्रीफली, तुत्था, तृणी, दोला, दूलिका, द्रोणिका, आह्विका, ग्रामणी, ग्रामिणी, तूली, द्रोणी, भेला, तुच्छा, नीलपत्री, राज्ञी, नीलपुष्पी, काली, श्यामा, शोधिनी, श्रीफला, ग्राम्या, भद्रा, भारवाही, मोचा, कृष्णा, व्यञ्जनकेशी, महाफला, असिता, क्लीतनी, केशी, चारटिका, गन्धपुष्पा, श्यामलिका, रङ्गपत्री, महाबला, स्थिररंगा, रंगपुष्पी, भ्रान्तिका, अञ्जनकेशिका, चारटी, विजया, गन्धपुष्पी, और स्थिररागा)

संस्कृतभाषामें	नीली ।
हिन्दीभाषामें	नील, लील ।

वंगभाषामे नीलगच्छी नीलगाछ ।
मराठीभाषामे गुळी, लघुनीळी ।
गुजरातीभाषामे गळी ।
कर्णाटकीभाषामे हिरीपनीली ।
तैलिङ्गीभाषामे निलोजेट्टु ।
इंग्रेजीभाषामे इंडिगो । Indigocera
लैटिन् भाषामे इंडिगोफेरा कोर्डिफोलिआ । tinctoria Indigofera

अस्य गुणा ।

नीली तु कटुका तिक्ता केश्या चोष्णा सरा मता ।
व्यंग श्लेष्मोदरं मोहं हृद्रोग च भ्रमं तथा ॥
वातरक्तमुदावर्त्तमामवात कफञ्जयेत् ।
मदं कासं विपं चाम वातं गुल्मं ज्वरं तथा ॥
कुष्ठं कृमींश्चोदरञ्च प्लीहाश्चैव विनाशयेत्। (नि ०र ०)

अर्थ-नील-चरपरा, कडवा, केशोंको हितकारी, गरम, सारक तथा व्यंग, श्लेष्म, उदररोग, मोह, हृदयरोग, भ्रम, वातरक्त, उदावर्त्त, आमवात, कफ, मद, खाँसी, विष, आम, वात, गुल्म, ज्वर, कोढ, कृमि, उदर और प्लीहाका नाश करे है ।

अन्यच्च ।

नीली केश्या शिरोरोगव्रणकुष्ठापहा सरा ॥(शो० नि ०)

अर्थ-नील-केशोंको सुंदर करनेवाला तथा मस्तकरोग,घाव और कोढको दूर करेहै, तथा दस्तावर है ।

विवरण । नीलके क्षुप छोटे २ किसानलोग खेतीमे बोतेहैं, पत्ते सरफोकके समान नीले और कुछेक कालापन लिये होतेहैं । इसकी फली-टेढी और गोल होतीहै,इसकी डाली और पत्तोकी कुट्टी कर कुण्डोमे पानीभर उसमे गलातेहै, तब इसका नील बनाते है वह नीले रंगके काममे आताहै, दूसरा इसीका भेद बडा नील है ।

महानीलीनामानि ।

अन्या चैव महानीली अमरा राजनीलिका ।
तुत्था श्रीफलिका मेला केशार्हा भर्त्संपत्रिका ॥

अर्थ-महानीली, अमरा,राजनीलिका,तुल्था,श्रीफलिका, मेला, केशार्हा, भर्त्सपत्रिका ।

हिन्दीभाषामें	बडानील ।
बंगभाषामें	बडनील ।
मराठीभाषामें	थोरनीली ।
गुजरातीभाषामें	मोटीगली ।
कर्णाटकीभाषामें	हिरीयनील ।
लैटिन्भाषामें	इंडिगोफेरा टिंकटोरिया । cordifolia

अस्या गुणाः ।

महानीली गुणाढ्या स्याद्रंगश्रेष्ठा सुवीर्य्यदा ।
पूर्वोक्तनीलिकादेषा सगुणा सर्वकर्मसु ॥

अर्थ-बडानील-गुणाढ्य, उत्तमरंगवाला, वीर्य्यजनक, नीलकी अपेक्षा यह सर्व गुणोंमें उत्तम है । इसीका भेद एक जंगली नीलभी होती है जो वर्षातमें पहाडकी तलेटीमें पैदा होती है ।

शरपुंखानामानि ।



शरपुंखा कालशाक प्लीहारिः कालिका मता ॥

अर्थ-शरपुंखा,कालशाक,प्लीहारि,कालिका (प्लीहशत्रु,नीलवृक्षाकृति,काण्डपुंखा,बाणपुंखा,इषुपुंखिका,सायकपुंखा,इषुपुंख,शरपुंखा)

श्वेतशरपुंखानामानि ।

शराभिधा च पुंखा स्याच्छ्वेताद्या सितसायका ।
सितपुंखा श्वेतपुंखा शुभ्रपुंखा च पञ्चधा ॥

अर्थ-श्वेतशरपुंखा, सितसायका, सितपुंखा, श्वेतपुंखा,शुभ्रपुंखा।

कठपुंखानामानि ।

अन्या तु कठपुंखा स्यात्कंठालु· कठपुंखिका ॥

अर्थ-कण्ठपुखा, कंठाल्ड, कण्ठपुंखिका ।

संस्कृतभाषामे	शरपुखा,श्वेतशरपुखा, कण्ठपुंखा ।
हिन्दीभाषामे	सरफोका,सफेद सरफोका, कण्ठपुंखा ।
वंगभाषामे	बननील, सादबननील ।
मराठीभाषामे	उन्हाळी ।
कर्णाटकीभाषामें	येरडुकोग्गि, मल्लुकोग्गि ।
तैलिङ्गीभाषामे	प्रांपोराचेट्टु, तेल्लवेपल्लिचेट्टु ।
तामिलीभाषामे	कोल्लुकवकेल्लापि ।
दा०	जलिकुलाथि ।
इंग्रेजीभाषामे	परपलटेफ्रोझिया । Purpletephrosia
लैटिन्भाषामे	टेफ्रोझियापरपूरिया । Tephrosia Purpurea

शरपुखागुणा ।

शरपुखा यकृत्प्लीहगुल्मव्रणविषापहा ।
तिक्तः कषायः कासास्रश्वासज्वरहरो लघुः ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-सरफोका-यकृत,प्लीहा, गुल्म, व्रण और विषविनाशक है। तथा कडवा, कषेला, हलका, और खासी,रुधिरविकार,श्वासतथा ज्वरको दूर करनेवाला है ।

अपि च ।

शरपुंखा कटूष्णा च कृमिवातरुजापहा ।
श्वेता त्वेषा गुणाढ्या स्यात्प्रशस्ता च रसायने॥(रा नि)

अर्थ-सरफोका-चरपरा,गरम, कृमि और वातनाशक है, सफेद सरफोका सरफोकेकी अपेक्षा अधिक गुणवाला और रसायनकार्य्यमे उत्तम है ।

अन्यच्च ।

शरपुखा तु कटुका तिक्तोष्णा तुवरा लघुः ।
यकृत्कृमिप्लीहगुल्मव्रणकासविषापहा ॥
श्वासार्शरक्तदोषघ्नी हृद्रोगकफजार्त्तिहा ।
वातं कफोदरं व्यंगं गलत्कुष्ठं च नाशयेत् ॥
श्वेतायाःशरपुंखाया रक्तातो ह्यधिका गुणाः । (नि० र०)

अर्थ-सरफोका-चरपरा,कडवा,गरम, कषेला, हलका तथा यकृत, कृमि,प्लीहा, गुल्म,व्रण,खासी,विष, श्वास, बवासीर, रुधिरविकार, हृदयरोग, कफ, ज्वर,वात,कफोदर,व्यङ्ग (झॉई) और गलत्कुष्ठको नष्ट करे है। रक्त शरफोकेसे सफेद अधिक गुणवाला है।

कठपुखागुणा।

कंठपुखा कटूष्णा च कृमिशूलविनाशिनी ॥(रा० नि०)

अर्थ-कठपुखा-चरपरा, गरम, तथा कृमि और शूलविनाशकहै। विवरण। सरफोकेका क्षुप होता है, पत्ते-नीलके समान होतेहै, फूल-लाल और बारीक होते है, फलियोके ऊपर रुँआ होता है, दूसरे प्रकारकी फलियोपे रुँआ नही होता। सफेद सरफोकेका क्षुप, पृथ्वीपर फैलाहुआ होता है, पत्ते-लाल सरफोकेसे कुछेक छोटे होते है, फूल-सफेद होताहै। शरफोकेकी जड-चिलममे रखकर पीनेसे खासी और श्वास दूर होता है। सरफोकेकी मात्रा ४ मासे। कंठपुखेकी मात्रा ५ मासे। यह पटियालामे बहुत होता है

दुरालभानामानि।

दुरालभा दुरालम्भा समुद्रान्ता च रोदिनी।
गान्धारी कच्छुराऽनन्ता कषाया दुरभिग्रहा ॥

अर्थ-दुरालभा,-दुरालभा, समुद्रान्ता, रोदिनी,गांधारी,कच्छुरा, अनन्ता,कषाया, दुरभिग्रहा(दुःस्पर्शा, कुनाशक,रोदनी,धनुर्यास, यवस कच्छुरा,धन्वयवास,विकण्टक,आत्ममूली,पद्ममुखी,इदंकार्य्या, धन्वयास,ताम्रमूला, कच्छुरा,धन्वी, धन्वयवासक,प्रबोधिनी,सूक्ष्मदला, विरूपा, दुर्लभा, दुष्प्रधर्षा,ताम्रमूली, मरुज्जन्मा, उष्ट्रभक्ष्या, मृदुपर्णी,कषायका,प्राह्लादनी,विरूपा,फणिहारी,विशारदा,रविग्रहा, अजाभक्ष्या, ग्राहिणी, सूक्ष्मदला)

संस्कृतभाषामे	दुरालभा।
हिन्दीभाषामे	धमासा,हिगुणा।
वगभाषामे	दुरालभा।
मराठीभाषामे	धमासा।
गुजरातीभाषामे	धमासो।
कर्णाटकीभाषामे	वह्लिदुरुवे।
तैलिङ्गीभाषामे	पिलरेगटि, दुलगोंडि।

लेटिन्भाषामे फगोनियाएरेबिका । Fogonia arabica
फारसीभाषामे बादावर्द ।
अरबीभाषामे शुकाई ।

अस्या गुणा ।

उष्ट्रभक्ष्यामरुच्छ्वासविषघ्नी बोधकृत्परा ।
कषाया ज्वरहृच्छीता तथाऽतीसारनाशिनी ॥ (ध० नि०)

अर्थ–धमासा–बोधकारक, कषेला, शीतल, तथा वात, श्वास, विष, ज्वर और अतिसारनाशक है।

अन्यच्च ।

दुरालम्भा कटुस्तिक्ता सोष्णा क्षाराम्लिका तथा ।
मधुरा वातपित्तघ्नी ज्वरगुल्मप्रमेहजित् ॥ (रा० नि०)

अर्थ–धमासा–चरपरा, कडवा, गरम, खारी, खट्टा, मीठा तथा वात, पित्त, ज्वर, गुल्म और प्रमेहको हरेहै।

अपिच ।

दुरालभा कटुस्तिक्ता मधुरा रक्तशुद्धिकृत् ।
शीता चोष्णा विसर्पघ्नी विषमज्वरनाशिनी ॥
तृट्च्छर्दिमेहगुल्मघ्नी मोहरक्तरुजापहा ।
वात पित्त कफं कुष्ठं ज्वर चैवविनाशयेत् ॥ (नि० र०)

अर्थ–धमासा–चरपरा, कडवा, मीठा, रक्तशोधक, शीतल, गरम तथा विसर्प, विषमज्वर, तृषा, वमन, प्रमेह, गुल्म, मोह, रुधिरविकार, वातपित्त, कफ, कोढ और ज्वरको दूर करे है।

विवरण। धमासेका रेतली भूमिमे छत्ता होता है, काटे बारीक होते है, पत्ते-सूक्ष्म और फलभी बहुत छोटे २ होते है। मात्रा ६ मासेकी।

यवासनामानि ।

यासो यवासकोऽनन्ता बालपत्रोऽधिकंटकः ।
दूरमूल. समुद्रान्तो दीर्घमूलो मरूद्भवः ॥

अर्थ–यास, यवासक, अनन्ता, बालपत्र, अधिकण्टक, दूरमूल, समुद्रान्त, दीर्घमूल, मरूद्भव (यवास, कण्टकी, बहुकण्टक, क्षुद्रगुदी,

दनिका, विषघ्न, कण्टकालुक, त्रिपर्णिका, गन्धारी, वासन्त, नदर्भ, विवर्णक, तीक्ष्णकण्टक सूक्ष्मपत्र)





संस्कृतभाषामे	यवास।
हिन्दीभाषामे	जवासा दुलाह।
बंगभाषामे	यवासा।
मराठीभाषामे	कांटेचुबुक, तावडा धमासा।
गुजरातीभाषामे	जवासो।
कर्णाटकीभाषामे	तोरे इगलु।
लैटिन्भाषामे	अल्हेजाई मरोरम। Alhagimaurorum
फारसीभाषामे	फराक्तुन।
अरबीभाषामे	अलग़ुल हाज।

अस्य गुणाः।

यासः स्वादू रसस्तिक्तस्तुवरः शीतलो लघुः।
कफमेदोमदभ्रान्तिपित्तासृक्कुष्ठकासजित्॥
तृष्णाविसर्पवातास्रवमिज्वरहरः स्मृतः।(धन्वन्तरिनि०)

अर्थ-जवासा-स्वादिष्ट, कडवा, कषेला, शीतल हलका, तथा कफ, मेद, मद, भ्रांन्ति, रक्तपित्त, कोढ, खाँसी, तृषा, विसर्प, वात रक्त, वमि और ज्वरको दूर करेहै।

अन्यच्च।

यासस्तु मधुरस्तिक्तो बल्यश्चाग्निप्रदीपकः।
सरः शीतो लघुश्चैव तुवरः कफपित्तजित्॥

रक्तरुक्कुष्ठवीसर्पमेदभ्रममदापहः ।
वातरक्तं तृषां छर्दिं कासं दाहं ज्वरं हरेत् ॥ (नि० र०)

अर्थ- जवासा-मधुर, कडवा, बलकारक, अग्निको दीपन करनेवाला, सारक, शीतल, हलका, कषेला तथा कफ, पित्त, रक्तविकार, कोढ, विसर्प, मेद, भ्रम, मद, वातरक्त, पियास, वमन, खाँसी, दाह और ज्वरका नाश करे हैं ।

विवरण । जवासा-धमासेकी समान होता है, और यह भी जलाशयके समीपकी भूमिमे अधिक उत्पन्न होताहै । इसके काँटे धमासेसे कुछेक बडे होते है, और पत्ते भी किञ्चित बडे होते है । प्रायः जवासेके गुण धमासेसे मिलते है । वर्षाऋतुके आदि अन्तमे यह फलता फूलता है, और वर्षाऋतुमे तो आपसे आपही जलजाता है । अबाले पटियालेमे बहुत होताहै । इसीमे लगनेवाली शर्कराको जवासशर्करा या तरजवान कहते है ।

मुण्डीनामानि ।

श्रावणी श्रवणा मुण्डी भूतघ्नी च पलङ्कषा ॥

अर्थ-श्रावणी, श्रवणा, मुण्डी, भूतघ्नी, पलङ्कषा, (कदम्बपुष्पा, अरुणा, मुण्डीरिका, कुम्भला, भिक्षु, श्रवणशीर्षिका, प्रव्रजिता, परिव्राजि, तपोधना)

महामुण्डीनामानि ।

महाश्रावणिकाऽन्या तु सा स्मृता भूकदम्बिका ।
कदम्बपुष्पिका च स्यादव्यथाऽतितपस्विनी ॥

अर्थ-महाश्रावणिका, भूकदम्बिका, कदम्बपुष्पिका, अव्यथा, तपस्विनी, (महामुण्डी, लोचनी, कदम्बपुष्पी, विकचा, क्रोडचूडा, पलङ्कषा, नदीकदम्बा मुण्डाख्या, महामुण्डनिका, माता, स्थविरा, लोतनी, भृकन्द, अलम्बुषा, वृद्धा, छिन्नग्रन्थिका, नीलकदम्बिकाबोडा)

संस्कृतभाषामे	मुण्डी, महामुण्डी, महाश्रावणिका ।
हिन्दीभाषामे	मुण्डी, छोटीमुण्डी, गोरखमुण्डी, बडीमुण्डी
बंगभाषामे	मुडिरी, मुण्डी, थुलकुडी, बडथुलकुडी ।
मराठीभाषामे	बरसबोंडी, बोंडथरा ।
गुजरातीभाषामे	मुडी, गोरखमुडी, बोडियोक्लार ।
कर्णाटकीभाषामे	कीपोबोडतर, हिरीपबोडतर ।
तैलिङ्गीभाषामे	बोडसरपुचेट्टु ।

ता० वम्० कोट्टक ।
लैटिन्भाषामे स्फिरेंथस इंडिकस (Sphoeranthus indicus)
अरबीभाषामे कमादर युस ।

मुण्डीगुणा ।

मुण्डी तिक्ता कटुः पाके वीर्य्योष्णा मधुरा लघुः ।
मेध्या गंडापचीकृच्छ्रकृमिपित्तार्तिपाण्डुनुत् ॥
श्लीपदारुच्यपस्मारप्लीहमेदोगुदार्त्तिनुत् ।-(ग० नि०)

अर्थ-मुण्डी-कडवी, पचनेमे चरपरी, उष्णवीर्या, मधुर,हलकी, [मेधा]जनक तथा गलगंड, अपची, मूत्रकृच्छ्र, कृमि, पित्तकी पीडा, [पा]ण्डुरोग, श्लीपद, अरुचि, अपस्मार, प्लीहा, मेद और गुदाकी [पीडा]नाको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

[श्रा]वणी तु कपायोष्णा पाके तिक्ता च तीक्ष्णका । मधुरा [रे]चका लघ्वी मेध्या बल्या रसायना ॥ गलगंड गडमा-[ला]मपची कफवातकम्॥प्लीहामेदमथोन्माद श्लीपद पाण्डु-[रो]गकम् ॥ अरुचि योनिशूल च कासमर्श च कृच्छ्रकम् । पित्त चाममपस्मार कृमिं श्वास च कुष्ठकम् ॥ विपदोष [वा]तिसार छर्दि चैव विनाशयेत् ।

अर्थ-गोरखमुण्डी-(मुण्डी) कषैली, गरम, पचनेमे चरपरी, [ती]क्ष्ण, मधुर, दस्तावर, हलकी, मेधाजनक, बलकारक, रसायन, [तथ]ा गलगण्ड, गण्डमाला, अपची, कफ, वात, प्लीहा, मेदोरोग, [उन्]मादरोग, श्लीपद, पाण्डुरोग,अरुचि, योनिशूल,खाँसी,बवासीर, [मूत्]रकृच्छ्र, पित्त, आमदोष, मृगी, कृमि, श्वास, कोढ, विषविकार, [अ]तिसार और वमनको दूर करनेवाली है ।

महाश्रावणिकागुणा ।

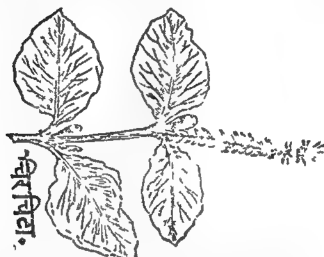
महामुण्डी तु मधुरा तिक्ता चोष्णा रसायनी ।
रुच्या स्वर्या प्रमेहघ्नी वातनाशकरी मता ॥
अन्ये गुणास्तु मुण्डीवज्ज्ञेया वैद्यैश्च सूरिभि ।(नि० र०)

अर्थ महामुण्डी-मधुर,कडवी,गरम,रसायन,रुचिकारक, स्वरको

शुद्ध करनेवाली, प्रमेहनाशक और वातविनाशक है। शेष गुण मुण्डीकी समान जानने।

विवरण। मुण्डी और महामुण्डी तृणके समान प्रसर जातिकी वनस्पति है, फल गोल घुण्डीसदृश होतेहैं। अम्बाला जिलाके रानीके रायपुर ग्राममे यह बहुत होती है गोरखमुण्डी घण्डी, मुडली, नामसे प्रसिद्ध है, जिला मुंगेरमे अमावा राज्यमे बहुत होती है।

अपामार्गनामानि।



अपामार्गः शैखरिको धामार्गवमयूरकौ।
प्रत्यक्पर्णी कीशपर्णी किणिही खरमञ्जरी॥

अर्थ-अपामार्ग, शैखरिक, धामार्गव, मयूरक, प्रत्यक्पर्णी, कीशपर्णी, खरमञ्जरी, (अपाङ्क, किणी, कीशपर्णी, चमत्कार, शैखरेय, अधामार्गव, केशपर्णी, स्थलमञ्जरी, प्रत्यक्पुष्पी, क्षारमध्य अधोघण्टा, शिखरी, दुर्ग्रह, अध्वशल्य, कान्तरिक, मर्कटी, दुरभिग्रह, वासिर, परावपुष्पी, कण्टी, कर्कटपिप्पली, कटुमञ्जरिका, अघाट, क्षुरक, पाण्डुकण्टक, तालाकंट, कुब्ज, मालाकण्ट, अघाट)

संस्कृतभाषामे	अपामार्ग।
हिन्दीभाषामे	चिरचिटा, लटजीरा, ओंगा।
बंगभाषामे	आपाङ्ग।
मराठीभाषामे	अघाडा।
गुजरातीभाषामे	अघेडो।
कर्णाटकीभाषामे	उत्तरणे, चिचिरा।
तैलिङ्गीभाषामे	दुर्चीणिके।

इंग्रेजीभाषामें रफचेफट्री । Pough Caffi tree
लेटिन् भाषामें एकिरेंथिस् एस्पिरा । Achyranthes aspera
ओकरेंथस् आल्टर निफोलिया । A Alternifolia
फारसीभाषामें खारवासगोता ।
अरबीभाषामें अत्कम ।

अपामार्गगुणाः ।

अपामार्गः सरस्तीक्ष्णो दीपनस्तिक्तकः कटुः ।
पाचनो रोचनश्छर्दिकफमेदोनिलापहः ॥
निहन्ति हृद्रुजाध्मार्शः कण्डूशूलोदरापचीः । (भा०प्र०)

अर्थ-चिरचिरा-सारक (दस्तावर) तीक्ष्ण, दीपन, कडवा, चरपरा, पाचक, रुचिकारक, तथा वमन, कफ, मेदोरोग, वात हृदयरोग, आध्मान, ववासीर, कण्डू, शूल, उदररोग और अपचीको दूर करेहै ।

अन्यच्च ।

अपामार्गस्तु तिक्तोष्णः कटुश्च कफनाशनः ।
अर्शःकण्डूदरामघ्नो रक्तहृद्ग्राहिवान्तिकृत् ॥ (रा० नि०)

अर्थ-चिरचिरा-कडवा, गरम, चरपरा, कफनाशक तथा कण्डू, उदररोग, आम और रुधिरविकारको दूर करे है, तथा मलरोधक और वमनकारक है ।

अपिच ।

अपामार्गोऽग्निवत्तीक्ष्णः क्लेदनः स्रंसनः सरः ॥ (रा० व०)

अर्थ-चिरचिरा-अग्निकी समान तीक्ष्ण, क्लेदक, स्रंसन और सारक है ।

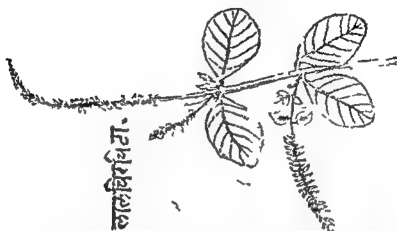
अन्यच्च ।

अपामार्गोऽग्निकृत्तीक्ष्णो नस्याच्छीर्षकृमीञ्जयेत् ।
वामको रक्तसंग्राही रक्तातीसारनाशनः ॥
नस्ये वान्तौ प्रशस्तः स्याद्दद्रुकण्डूकफापहः । (शो० नि०)

अर्थ-चिरचिरा-अग्निकारक, तीक्ष्ण और इसका नास-शिरके कीडोको दूर करे है । वमनकारक, रक्तविकारनाशक और रक्तातिसारनिवारक है, चिरचिरा-नास और वमनकर्म्ममें प्रशंसायोग्य है तथा दाद, खुजली और कफनाशक है ।

विवरण- । चिरचिटेका क्षुप होताहै, पत्ते-गोल होते है, पत्तोंके बीचमेंसे एक बाल निकलती है, उस बालमें सूक्ष्म और मृदु कॉटेयुक्त बीज होते है उन बीजोको पीसकर पीनेसे बवासीर दूर होती है। चिरचिटेके क्षारके गुण क्षारवर्गमे देखो।

रक्तापामार्गनामानि।



रक्तोऽन्यो वशिरो वृत्तफलो धामार्गवोऽपि च।
प्रत्यक्पर्णी केशपर्णी कथिता कपिपिप्पली॥

अर्थ-रक्तापामार्ग, वशिर, वृत्तफल, धामार्गव, प्रत्यक्पर्णी, केशपर्णी, कपिपिप्पली, (क्षुद्रापामार्ग, आघट्टक, दुग्धनिका, रक्तबिंट, कल्पपत्रिका, क्षव, अधामार्गव, प्रत्यक्श्रेणी, खरच्छद, कूट, मर्कटपिप्पली, कुब्ज और दुरभिग्रह)

संस्कृतभाषामें	रक्तापामार्ग।
हिन्दीभाषामें	लालचिरचिरा।
बंगभाषामें	रांगाआपाग।
मराठीभाषामें	लालअघाडा।
गुजरातीभाषामें	झिपटो।
कच्छीभाषामें	केपिशुत्तरणे।
तैलिङ्गीभाषामें	उतरायणी-केपिशुत्तरणे।
लै०	एकिरेंथिसलेपेरिया।

अस्य गुणाः।

रक्तापामार्गकः किञ्चित्कटुकः शीतलः स्मृतः। मलावष्टम्भवमिकृद्वातविष्टम्भकारकः॥ रूक्षो व्रण विष वात कफं कण्डूं

च नाशयेत् । बीजमस्य रसे पाके दुर्जरं स्वादु शीतलम् ॥
मलावष्टम्भकं रूक्षं वान्तिकृद्रक्तपित्तजित् । कासनाशकरं
प्रोक्तं मुनिभिस्तत्त्वदर्शिभिः ॥ (नि० र०)

अर्थ-लाल चिरचिरा-किंचित् चरपरा, शीतल, मलावष्टभक, वमनजनक, वात, और विष्टम्भकारक, रूखा तथा व्रण, विष, वात, कफ और खुजलीको दूर करनेवाला है। इसके बीज-रस और पाकमें दुर्जर, स्वादिष्ठ, शीतल, मलावष्टम्भक, रूखे, वमनकारक, रक्तपित्तनाशक और खासीको हरनेवाले हैं।

द्विविधापामार्गगुणा ।

अपामार्गद्वयं तिक्तं तीक्ष्णोष्णं कफवातनुत् ।
सिध्मोदरापचीदद्रुकण्डूर्शोहन्ति वान्तिकृत् ॥ (म०नि०)

अर्थ-दोनोंप्रकारके चिरचिरे-कडवे, तीक्ष्ण, गरम, कफ, वातनाशक तथा सिध्म, उदररोग, अपची, दाद, खुजली और बवासीरको दूर करे हैं और वमनजनक हैं।

अपि च ।

अपामार्गद्वयं तिक्तं कृमिशीर्षविशोधनम् ।
वातकं रक्तसंग्राहि रक्तातीसारनाशनम् ॥

अर्थ-दोनोंप्रकारके चिरचिरे-कडवे, कृमि और शीर्षशोधक, वमनकारक, रक्तरोध और रक्तातिसारनाशक हैं।

विवरण। लाल चिरचिटाभी उसीप्रकार होता है, इसके पत्ते-कुछ २ गोल और लाल होतेहैं, फूल-पीले और फल-लाल २ बालपर लगे होतेहैं परन्तु उनके ऊपर काटेभी होतेहैं, इसप्रकार लाल और सफेद दो जातिका चिरचिटा होताहै। अपामार्ग पुठकंडा आधाझारा आदिनामसे सबदेशोंमें मिलताहै पंजाबमें, प्रायः सर्वत्र होताहै।

कोकिलाक्षनामानि ।

कोकिलाक्षस्तु काकेक्षुरिक्षुरः क्षुरकः क्षुरः ।
भिक्षुकाण्डेक्षुरप्युक्त इक्षुगन्धेक्षुवालिका ॥

अर्थ-कोकिलाक्ष, काकेक्षु, इक्षुर, क्षुरक, क्षुर, भिक्षु, काण्डेक्षु, इक्षुगन्धा, इक्षुवालिका, (कोकिलाक्षक, कोकिलनयन, शृगाली,

शृखलि, शूरक, शृगालघण्टी, वज्रास्थि, शृंखला, वज्रकण्टक वज्र, शृंखलिका, पिकेक्षणा, पिच्छिला) (वीरतरु, त्रिक्षुर, क्षुरक, शुक्लपुष्प और कुलाहक यह नाम सफेद कोकिलाक्षके है) (छत्रक और अतिच्छत्र यह दो नाम लाल कोकिलाक्षके हैं)



संस्कृतभाषामे कोकिलाक्ष ।
हिन्दीभाषामे तालमखाना-कैलया ।
वंगभाषामे कुलियाखाडा, कुलेकाँटा, कुलक, शूलमर्दनइत्यादि
मराठीभाषामे विखरा ।
कोंकणीभाषामे कोलस्ता ।
गुजरातीभाषाम एखरो ।
कर्णाटकीभाषामे कुलुगोलिके ।
तैलिङ्गीभाषामें गोवी । गोलिमिडिचेट्टु ।
औत्कलिभाषामे कुइलिरखा, माखुरेण ।
इग्रेजीभाषामे लांगलिव्ड बार्लेरिया । Longleaved Barlaria
लैटिन्भाषामे एष्ट्रकैंथा लोंजिफोलिया । AStercantha Longifolia

अस्य गुणाः ।

कोकिलाक्षो मधुः शीतो रुच्यो बल्यो गुरुः स्मृतः ।वृष्योऽम्लस्तर्पणस्तिक्तः स्वादुः स्निग्धश्च विकणः ॥ आमवातामवातातिसारतृष्णाश्मरीरुज· । वातास्रमेहशोथाम्रक्तरुङ्नाशनो मतः ॥ पित्तं च दृष्टिरोगं च नाशयेदिति कीर्त्तितः ।

अस्य पत्रगुणा ।

पर्णञ्च स्वादु तिक्तं स्याच्छोथशूलविषापहम् । आनाहवात-मुदरं पाण्डुरोगञ्च नाशयेत् ॥ बन्धञ्च मलमूत्राणां वातमेवं च नाशयेत् । वृद्धस्य कोकिलाक्षस्य गुणास्त्वस्य समा मताः ॥

अर्थ-तालमखाना-मधुर, शीतल, रुचिकारक, बलकारक, भारी, वीर्य्यवर्द्धक, खट्टा, तर्पण (तृप्तिकारक), कडवा, स्वादिष्ठ, स्निग्ध, चिक्कण तथा आमवात, आम, वातातिसार तृषा, पथरीरोग, वात-रक्त, प्रमेह, सूजन, आमरक्त, पित्त और दृष्टिरोगको दूर करे हैं। तालमखानेके पत्ते-स्वादिष्ठ, कडवे तथा सूजन, शूल, विष, आनाहवात, उदररोग, पाण्डुरोग, मलरोध मूत्ररोध और वाता-वष्टंभको हरनेवाले हैं, बडे तालमखानेके गुण इसीकी समान जानने।

अस्या बीजगुणा ।

कोकिलाक्षस्य बीजन्तु शीतं स्वादु कषायकम् । तिक्तं वृष्यं गुरुर्बल्यं ग्राहकं गर्भस्थापनम् ॥ कफवातकरञ्चैव मलस्त-म्भकरं तथा । रक्तदोषं च दाहं च पित्तं चैव विनाशयेत् ॥

अर्थ-तालमखानेके बीज-शीतल, स्वादिष्ठ, कषैला, कडवा, वीर्य्यवर्द्धक, भारी, बलकारी, गर्भस्थापक, कफवातकारक, मल-स्तंभक तथा रुधिरविकार दाह और पित्तको हरनेवाले हैं।

विवरण । कोकिलाक्ष अर्थात् कैलयाके क्षुप माय जलके निकट तथा चौमासेकी ताल, और तलैयोमे उत्पन्न होजाते हैं, पत्ते-लम्बे होते हैं क्षुपपै कांटे होते हैं गूमकी समान गाठे होती हैं, उन गाठोमेसे बीज निकलता है उसको तालमखाना कहते हैं।

घृतकुमारीनामानि ।

सहा घृतकुमारी च कुमारी दीर्घपत्रिका ।
अफला सुरसा कन्या मृदुर्घृतकुमारिका ॥

अर्थ-सहा, घृतकुमारी, दीर्घपत्रिका, अफला, सुरसा, कन्या, मृदु-घृतकुमारिका, (तरणि, सुवहा, बहुपत्री, कन्या, स्थलेरुहा, बहुपत्री, अमरा, अजरा, कण्टकप्रावृता, विपुलस्रवा, ब्रह्मघ्नी, वीरा, भृङ्गेष्टा,

तरुणी, रामा, कपिला, अम्बुधिस्रवा, सुकण्टका, स्थूलदला, गृहकन्या, अदला, मण्डला, माता, अतिपिच्छिला, रसायनी, कण्टकिनी)

संस्कृतभाषामे	घृतकुमारी।
हिन्दीभाषामे	घिगुवार, ग्वारपाठा, कुवारपाठा।
बंगभाषामे	घृतकुमारी।
मराठीभाषामे	कोरफड, कोरफाटा।
गुजरातीभाषामे	कुवार।
कर्णाटकीभाषामे	लोयिसर।
तैलिङ्गीभाषामे	पित्रगोरिण्टकलवन्द, विरजाजितोगे।
इंग्रेजीभाषामे	वार्बडोझ्आलोझ्। Barbadoesaloes
लैटिन्भाषामे	आलाइबार्बडेन्स। Aloebarbadense
फारसीभाषामे	दरखतेसिब्र।
अरबीभाषामे	मुसवर।

अस्या गुणाः।

कुमारी भेदिनी शीता तिक्ता नेत्र्या रसायनी । मधुरा बृंहणी बल्या वृष्या वातविषप्रणुत् ॥ गुल्मप्लीहयकृच्छर्दिकफज्वरहरी भवेत् ।ग्रन्थ्यग्निदग्धविस्फोटरक्तपित्तत्वगामयान्॥(भा प्र)

अर्थ-घीकुवार-भेदक (दस्तावर) शीतल, कडवा, नेत्रोको हितकारी, रसायन, मधुर, बृंहण, बलकारक, वीर्यवर्द्धक, तथा वात, विष, गुल्म, प्लीहा, यकृत, वमन, कफज्वर, ग्रन्थि, अग्निदग्ध, विस्फोट, रक्तपित्त और त्वचाके रोगोको दूर करे है।

अन्यच्च।

गृहकन्या हिमा तिक्ता मदगन्धिः कफापहा।
पित्तकासविषश्वासकुष्ठघ्नी च रसायनी ॥ (रा० नि०)

अर्थ-घीकुवार-शीतल, कडवा, मदगन्धियुक्त, कफनाशक तथा पित्त, खासी, विष, श्वास और कुष्ठको नष्ट करे है और रसायन है।

अस्य दण्डादिगुणाः।

तन्मध्यदण्डो मधुरः कुमारीसदृशो गुणैः।
विशेषात्कृमिपित्तघ्नः पुष्पमस्य गुरु स्मृतम् ॥
वात पित्त कृमींश्चैव नाशयेदिति कीर्तितम्।

अर्थ-इसके बीचका डंडा-घीकुवारकी समान गुणवाला है विशेषकरके मधुर तथा कृमि और पित्तनाशक है। इसके फूल भारी तथा वात, पित्त और कृमिको दूर करनेवाले है।

विवरण। घीकुवारका क्षुप-खारी पृथ्वी, रेतली भूमि तथा नदीके तटके निकट अधिकतासे उत्पन्न होते हैं, पत्ते-लम्बे और मोटे होते हैं। पत्तोकी दोनो ओर काटे होते है, इनके भीतर घीके समान गूदा निकलता है; पत्तोके छोर अनीदार होते हैं, घीकुवारके बीचसे डडा निकलता है, उसमे लाल फूल आता है। घीकुवारके रससे एलुआ बनाया जाता है।

एलीयकनामानि।

एलीयकः कृष्णबोलः कुमारी सारतोद्भवः॥

अर्थ-एलीयक, कृष्णबोल, कुमारी, सारतोद्भव।

संस्कृतभाषामे	एलीयक।
हिन्दीभाषामे	एलवा।
मराठीभाषामे	काळाबोळ, एल्याबोळ।
गुजरातीभाषामे	एलियो, शिकातरी एलियो।
तैलङ्गीभाषामे	भोल।
इंग्रेजीभाषामे	सोकोट्राइन आलोझ। Socotrine aloes
लैटिन्भाषामे	आलोसोकोट्रीना। Aloe socotrina
फारसीभाषामे	मुसब्बीर।
यु०	फेकरा।
अरबीभाषामे	सीबरसुकुतरे।

अस्य गुणाः।

कृष्णबोलः कटु शीतो भेदको रसशोधनः।
शूलाध्मानकफान्वात कृमिगुल्मौ च नाशयेत्॥ (र० नि०)

अर्थ-एलुवा-चरपरा, शीतल, दस्तावर, पारेको शोधनेवाला तथा शूल, अफारा, कफ, वात, कृमि और गुल्मको दूर करनेवाला है।

क्षुद्रकेतकीनामानि।

काककेतकिका क्षुद्रकेतकी तृणकेतकी।
रज्जुदात्री ... च सा स्मृता॥

अर्थ-काककेतकी, क्षुद्रकेतकी, तृणकेतकी, रज्जुदात्री, मध्य तुण्डा, पृथक्पुष्पा ।

हिन्दीभाषामे रामबॉस (न)
गुजरातीभाषामे केतकी ।
लेटिन्भाषामे एलोअमेरिकाना । Aloe Americana

विवरण-रामबॉसके वृक्ष प्रायः बाग और खेतोकी बाडोपर अधिकतासे होतेहै; यह घीकुवारकी समान होते है, परन्तु घीकुआरसे कुछ कालापन लिये और बडे तथा पतले होते है, इसपर लाल और सफेद रगके गुच्छेदार फूल आते है । पजाबमे रामवाण नामसे प्रसिद्ध है केतकी (केवडे) पत्रोकेसे लम्बे पत्र होते है ।

अस्या गुणा ।

श्वेता तु केतकी कट्वी स्वाद्वी तिक्ता लघुः स्मृता । विषकफ नाशयति पुष्पमस्या लघु स्मृतम् ॥ कटु तिक्त कान्तिकरमुष्णं वातकफापहम् । केशदुर्गन्धितापघ्नं केसरः सिध्मकण्डुहा ॥ किञ्चिदुष्णं फल स्वादु वातमेहकफापहम् ॥ (नि ० र ०)

अर्थ-रामबॉस-चरपरा, स्वादु, कडवा, हलका तथा विष और कफनाशक है । इसका फूल-हलका, चरपरा, कडवा, कान्तिजनक, गरम, वातकफनाशक, केशोकी दुर्गन्धताको दूर करनेवाला और तापनाशक है । इसके फूलका जीरा-सिध्म और कण्डूनाशक है । इसका फल किञ्चित् उष्ण, स्वादिष्ठ तथा वात, प्रमेह और कफनाशक है ।

पाण्डुफलीनामानि ।

पाटली स्यात्पाण्डुफलीधूसरा वृत्तबीजका ।
पाण्डुफला भूरिफला तथा सप्ताह्वयाभिधा ॥

अर्थ-पाटली, पाण्डुफली, धूसरा, वृत्तबीजका, पाण्डुफला, भूरिफला ।

हिन्दीभाषामे पाटली ।
मराठीभाषामे पाढरफली ।
गुजरातीभाषामे शोणवी ।
कर्णाटकीभाषामे पाटरफल मणमंडं ।
लै० फ्लुजिया ल्युकोपाईरस Flujia leucopyrus

अस्या गुणा ।

पाण्डुफली तु मधुरा बल्या वृष्या च शीतला ।
मूत्राघातं पित्तरोग मूत्रकृच्छ्रास्ररुग्जयेत् ॥ (नि० र०)

अर्थ-पाण्डुफला-मधुर, बलकारक, वीर्य्यवर्द्धक, शीतल तथा मूत्राघात, पित्तरोग, मूत्रकृच्छ्र,और रुधिरके विकारोको दूर करेहै ।

अन्यच्च ।

शिशिरा पाण्डुरफली गौल्याकृच्छ्र त्रिदोषहा
बल्या पित्तहरा वृष्या मूत्राघातनिवारणी ॥ (रा०नि०)

अर्थ-पाण्डुफली-शीतल,गौल्य, मूत्रकृच्छ्ररोगनाशक, बलवर्द्धक, पित्तनाशक, वीर्य्यवर्द्धक, और मूत्राघातनिवारक है ।

पनसीनामानि ।

पनस्यां रोपणी चोक्ता तथा च कपिकच्छुकः ॥

अर्थ-पनसी, रोपणी, कपिकच्छुक ।

अस्या गुणा ।

पनसीकाभवं मूलं व्रणरोपणभेदनम् ॥

अर्थ-पनसीकी जड-व्रणको भरनेवाली और दस्तावर है ।

गङ्गाटीनामानि ।

गंगाटचा गगटी चैव पित्तव्रणप्रसादनी ॥

अर्थ-गगाटी, गंगटी, पित्तव्रणप्रसादनी ।

अस्या गुणा ।

गगेटी बहुविण्मूत्रा कषाया शीतला गुरुः ॥ (शो०नि०)

अर्थ-गंगेटी-मलमूत्रवर्द्धक,कषेली, शीतल और भारी है । तथा व्रण और पित्तनाशक है ।

श्वेतपुनर्नवानामानि ।



श्वेतपुनर्नवा.

पुनर्नवा-श्वेतमूला कठिल्लश्च चिराटिका ।

अर्थ-पुनर्नवा, श्वेतमूला, कठिल्ल, चिराटिका, (वृश्चीरा, श्वेतपुनर्नवा, सितवर्षाभू, वर्षाङ्गी, वर्षाही, विशाख,शशिवाटिका,पृथ्वी, धनपत्र, कठिल्लक, शोथघ्नी, दीर्घपत्रिका ।

रक्तपुनर्नवानामानि ।



रक्तपुनर्नवाप्युक्ता शोथघ्नी रक्तपत्रिका ।
रक्तकाण्डा वर्षकेतुर्वर्षाभूः प्रावृषायणी ॥

अर्थ-रक्तपुनर्नवा, शोथघ्नी, रक्तपत्रिका, रक्तकाण्डा, वर्षकेतु, वर्षाभू, प्रावृषायणी (कठिल्लक, रक्तपुष्पा, शिलाटिका, वर्षकेतु, क्रूरा, मण्डलपत्रिका, लोहिता, वैशाखी, रक्तवर्षाभू शोफघ्नी, रक्तपुष्पिका, विकस्वरा, विषघ्नी, प्रावृषेण्या, सारिणी, वर्षाभव, शोणपत्र, भौम, पुनर्भव, नव, नव्य)

नीलपुनर्नवानामानि ।



नील पुनर्नवा नीला श्यामा नीलपुनर्नवा ।
कृष्णाख्या नीलवर्षाभूर्नीलिनी स्वाभिधान्विता ॥

अर्थ-नीलापुनर्नवा, नीला, श्यामा, नीलपुनर्नवा, कृष्णाख्या, नीलवर्षाभू, नीलिनी ।

संस्कृतभाषामें	पुनर्नवा,श्वेतपुनर्नवा,रक्तपुनर्नवा,नीलपुनर्नवा ।
हिन्दीभाषामें	बिषखपरा,साँठ, गदहपूर्णा, नीलीसांठ, गदहपुरेना इत्यादि ।
बंगभाषामें	श्वेतगोंदाबन्ने,श्वेतपुण्या, गदापुण्या,नीलगाँदाबन्ने, राङ्गागाँदाबन्ने ।
मराठीभाषामें	घेटुली पांढरी, खापऱ्या, रक्तवसु ।
गुजरातीभाषामें	साटोडीश्वेत गेनरी लांबा पाननी राता फूलने निंब धोलाकर डोला पानने चोमासानी ।
कर्णाटकीभाषामें	बिलीयदुबेलडूकिलु केपिनबेलड किलु करीयवेलडकिलु ।
तैलिङ्गीभाषामें	गालजेरु, अतिकममेदि ।
तामिलीभाषामें	मुकरत्तेकिर ।
बम्०	पुनर्नरा ।
इंग्रेजीभाषामें	स्प्रेडिंग् होगूनीड् । Spreading Hognee I
लेटिनभाषामें	बोरहावियाडिफ् युद्या । Boerhavia Diffusa बोरहेवियाप्रोकेयन्स । B procumbens ट्रिरोथेमा ओब्कार्डाटा । Trironthema Obcardata
अरबीभाषामें	हदकूकी ।

श्वेतपुनर्नवागुणाः ।

श्वेता पुनर्नवा सोष्णा तिक्ता कफविषापहा ।
कासहृद्रोगशूलास्रपाण्डुशोफानिलार्तिनुत् ॥ (रा०नि०)

अर्थ-श्वेतपुनर्नवा (विषखपरा)-गरम, कडवा, तथा कफ, विष, खाँसी, हृदयरोग, शूल, रुधिरविकार, पाण्डुरोग, सूजन और वातकी वेदनाको दूर करेहै ।

अन्यच्च ।

कटुः कषायारुच्यर्शः पाण्डुहृद्दीपनी परा ।
शोफानिलगरश्लेष्महरी ब्रध्नोदरप्रणुत् (भा० प्र०)

अर्थ-श्वेतपुनर्नवा-चरपरा,कषेला, रुचिकारी, अग्निदीपक तथा पाण्डुरोग, बवासीर, सूजन, वात, विष,कफ, ब्रध्न और, उदररोगको हरनेवाला है ।

अन्यच्च ।

पुनर्नवा तु वीर्य्योष्णा भेदिनी च रसायनी ।
कफानिलामदुर्नामब्रध्नशोथोदरापहा ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ–श्वेतपुनर्नवा–उष्णवीर्य्य, दस्तावर, रसायन तथा कफ,वात, बवासीर, ब्रध्न, सूजन और उदररोगको दूरकरे है ।

अन्यच्च ।

वर्षाभूर्मधुरा तिक्ता कषाया कटुका सरा ।
क्षारोष्णा दीपनी रूक्षा शोफानिलकफापहा ॥
हृद्या रुच्या जयेदर्शोव्रणपाण्डुगरोदरम् । (ग० नि०)

अर्थ–श्वेतपुनर्नवा–मधुर, कडवा, कषेला, चरपरा, सारक, क्षारयुक्त, गरम, दीपन, रूखा, शोफघ्न, वातविनाशक, कफनाशक, हृदयको हितकारी, रुचिकारी तथा बवासीर, घाव, पाण्डु, विष और उदररोगको दूर करेहै । अपिच ।

श्वेता पुनर्नवा तिक्ता चोष्णा कट्वी च तूवरा । रुच्याग्निदीपनी रूक्षा मधुरा पटुसारका ॥ हृद्या शोफ कफ वात कासमर्शो व्रणं जयेत् । पाण्डून्विषोदरं शूलं हृद्रोगोरःक्षतापहा ॥ घृतेन मूलकं चास्या ह्यंजितं हन्ति पुष्पकम् । मधुना सह मूल तु ह्यजित स्रावनाशकम् ॥ अंजित मार्कवरसैर्नेत्रकण्डूनिवारणम् । केवलेन जलेनैव ह्यजित तिमिरापहम् । जलेन गोशकृता च पिप्पल्या चांजित यदा ॥ राञ्याध्यं नश्यते तेन चोष्णः पर्णरसः स्मृतः ॥ (नि०र०)

अर्थ–श्वेतपुनर्नवा–कडवा, गरम, चरपरा, कषेला, रुचिकारक, अग्निप्रदीपक, रूखा, मधुर, खारी, दस्तावर, हृदयको हितकारी तथा सूजन, कफ, वात, खाँसी, बवासीर, घाव, पाण्डुरोग, विष, उदर, शूल, हृदयरोग और उरःक्षत रोगको दूर करे है । इसकी जडको पीसकर घीमे मिलाकर अंजन करे, वह अंजन आँखोंके फूलेको दूर करता है । इसकी जडमे मधु मिलाकर अंजन करे वह अंजन रक्तस्रावनाशक है । इसकी जडको भांगरेके रसके साथ नेत्रोंमे लगानेसे नेत्रोकी खुजली दूर होती है । इसकी जडको केवल जलके

साथ आंखोंमे लगानेसे तिमिररोग दूर होता है। गायके गोवरके रसमे इसकी जड और पीपल उबालकर अंजन करलेवे वह अंजन रतोंधेको दूर करनेवाला है, इसके पत्तोका रस गरम है।

रक्तपुनर्नवागुणा ।

पुनर्नवारुणा तिक्ता कटुपाका हिमा लघुः ।
वातला ग्राहिणी श्लेष्मपित्तरक्तविनाशिनी (भा० प्र०)

अर्थ-रक्तपुनर्नवा (गदहपूर्ना) कडवा, पचनेमे चरपरा, शीतल, हलका, वातकरक, मलरोधक, तथा कफ, पित्त और रक्तविकारोंको दूर करेहै ।

अन्यच्च।

रक्तपुनर्नवा तिक्ता सारिणी शोफनाशिनी ।
रक्तप्रदरदोपघ्नी पाण्डुपित्तप्रमर्दिनी ॥ (रा० नि०)

अर्थ-रक्तपुनर्नवा (गदहपूर्ना साँठ) कडवा, सारक, शोथनाशक तथा रक्त, प्रदररोग, पाण्डुरोग और पित्तको दूर करनेवाला है ।

नीलपुनर्नवागुणा ।

नीला पुनर्नवा तिक्ता कटूष्णा च रसायनी ।
हृद्रोगपाण्डुश्वयथुश्वासवातकफापहा ॥ (रा० नि०)

अर्थ-नीलपुनर्नवा-कडवा, चरपरा, गरम, रसायन तथा हृदयरोग, पाण्डुरोग, सूजन, श्वास, वात और कफनाशक है ।

अस्य पत्रशाकगुणा ।

पौनर्नवी पर्णशाका चातिरूक्षा कफापहा ।
वाताग्निमांद्यगुल्मघ्नी प्लीहा शूलविनाशिका । (नि० र०

अर्थ-पुनर्नवेके पत्तोका शाक-अत्यन्त रूक्ष, तथा वात, मंदाग्नि गुल्म, प्लीहा और शूलको दूर करेहै ।

विवरण । साँठ-तीन चार जातिकी होतीहै, फूल-लाल सफेद जुदे २ रगके होते है। इनमे सफेद रगके फूलका विपखपरा है और लाल रगकी सॉठ अर्थात गदपुरेना जानना। १-विषखपरेका क्षुप पृथ्वीपर फैलाहुआ होता है । पत्ते-गोल और लाल किनारेदार होतेहै, फूल सपेद होताहै । २-साँठ-ककरीली पृथ्वीमे अधिकतासे होतीहै, पत्ते-चौलाईकी समान होते है, फूल-लाल होता है पजाबमे सट्टी, विषखपरा नामसे प्रसिद्ध है, कालकामे प्रायः बहुत होती है ।

प्रसारणीनामानि ।



प्रसारणी राजबला गन्धाली च कटम्भरा ।
गन्धाढ्या गन्धभद्रा च सारणी सरणी तथा ॥

अर्थ-प्रसारणी, राजबला, गन्धाली, कटम्भरा, गन्धाढ्या, गन्धभद्रा, सारणी, सरणी, (भद्रपर्णी, शरणा, शरणी, गन्धोली, सारणी, भद्रबला, भद्रपर्णी, प्रतानिनी, सरणी, सुप्रसरा, सारिणी, प्रसरा, सरा, चारुपर्णी, प्रतानिका, प्रबला, राजपर्णी, चन्द्रपर्णी, चन्द्रवल्ली, प्रभद्रा, प्रसारिणी, बल्या)

संस्कृतभाषामे	प्रसारणी ।
हिन्दीभाषामे	गन्धप्रसारणी, पसरन, प्रसारनी ।
बङ्गभाषामे	गन्धभादला, गॉधाली, गन्धभाडुलिया।
मराठीभाषामे	प्रसारणी, चाद्वेल ।
गुजरातीभाषामे	प्रसारणवेल्य (नारी)
कर्णाटकीभाषामें	हेसरणे ।
तैलिङ्गीभाषामे	गोन्तेमगोरुचेट्टु, सविरेलचेट्टु ।
लैटिन्भाषामे	पिडेरिया फिटीडा Paederia foetida
	मेकारेगा टोमेटोसा Macaranga tomentosa

अस्या गुणाः ।

प्रसारिणी गुरुर्वृष्या बलसन्धानकृत्सरा ।
वीर्य्योष्णा वातहृत्तिक्ता वातरक्तकफापहा॥(भा० प्र०)

अर्थ-गन्धप्रसारणी-भारी, वीर्य्यवर्द्धक, बलकारी, सन्धानकारक, उष्णवीर्य्य, वातनाशक, कडवी तथा वातरक्त और कफको हरने वाली है ।

अन्यच्च ।

प्रसारिणी गुरूष्णा च तिक्ता वातविनाशिनी ।
अर्शःश्वयथुहन्त्री च मलविष्टम्भहारिणी॥ (रा० नि०)

अर्थ-पसरन-भारी, गरम, कडवी तथा वात, सूजन, बवासीर, और मलकी विष्टम्भताको हरनेवाली है ।

अन्यच्च।

वातपित्तहरा सोष्णा बल्या वृष्या प्रसारिणी॥ (राजवल्लभ)

अर्थ-गन्धप्रसारिणी वातपित्तनाशक, गरम, बलकारक और वीर्यवर्द्धक है ।

अपिच ।

सारणी वातरक्तघ्नी सोष्णा वृष्या बलप्रदा ।
कट्वी च लघु चक्षुष्या स्वर्या ज्वरनिशान्ध्यहृत्॥(शो नि

अर्थ-गन्धप्रसारणी-वातरक्तनाशक, गरम, वीर्यवर्द्धक, बलवर्द्धक, चरपरी, हलकी, नेत्रोंको हितकारी, स्वरको उत्तम करनेवाली तथा ज्वर और रतोंधेको दूर करेहै ।

अन्यच्च ।

प्रसारिणी गुरुश्चोष्णा तिक्ता बल्या सरा मता। भग्नास्थिसन्धानकरी कान्तिकृद्धातुवर्द्धका॥ वातार्शःशोफकफहा मलस्तम्भकरी मता । वातरक्तं त्रिदोषञ्च नाशयेदिति कीर्तिता॥ (नि र)

अर्थ-गन्धप्रसारणी-भारी, गरम, कडवी, बलकारक, सारक, टूटे हुये हाडको जोडनेवाली, कान्तिजनक, धातुवर्द्धक तथा वादीकी बवासीर, सूजन और कफको दूर करनेवाली है, मलस्तम्भकारक और वातरक्त तथा त्रिदोषनाशक है ।

प्रसारणीको संस्कृतमें राजबला कहते हैं, परन्तु अभीतक यह किसीने निश्चय नहीं किया कि, प्रसारणी क्याहै, इसको कोई कोई ग्रन्थकार मराठीमें चाद्वेल और गुजरातीमें नारी कहतेहैं, लैटिन्में चाद्वेलके और प्रसारणीके नाम, लक्षण और गुण अलगरहैं, सो वह नाम, लक्षण और गुण इससे कुछभी मिलते नहीं, क्योंकि चाद्वेल मलरोधक है, और प्रसारणी मलको निकालनेवाली अर्थात् दस्तावर है इसमें बडा अन्तर है । पंजाबमें खीव नामसे प्रसिद्ध है ।

शारिवानामानि ।

सारिवा शारिवानन्ता गोपी चोत्पलशारिवा ।
भद्रवल्ली नागजिह्वा कराला भद्रवल्लिका ॥

अर्थ-सारिवा, शारिवा, अनन्ता, गोपी, उत्पलशारिवा, भद्रवल्ली, नागजिह्वा, कराला, भद्रवल्लिका, (गोपवल्ली, सुगन्धा, भद्रा, श्यामा, शारदा, गोपकन्या, गोपा, प्रतानिका, लता, आस्फोता, काष्ठशारिवा, गोपवधू, धवलशारिवा, कुशोदरी)

कृष्णशारिवानामानि ।

श्यामलता च पालिन्दी गोपिनी कृष्णशारिवा ॥

अर्थ-श्यामलता, पालिन्दी, गोपिनी कृष्णशारिवा, (चिन्हधारिणी, दृढबन्धिनी, गोपी, गोपल्ली, गोपा, सारिवा, उत्पलसारिवा, अनन्ता, शारिवा, श्यामा, कालपेषी, महाश्यामा, सुभद्रा, दीर्घमूला, मसूरविदला, कलघण्टिका, गोपवधू, कृष्णमूली, कृष्णा, चन्दनसारिवा, भद्रा, चन्दनगोपा, चन्दना, कृष्णवल्ली)

संस्कृतभाषामें	सारिवा, कृष्णसारिवा ।
हिन्दीभाषामें	गोरीसर, कालीसर, करियासाऊ, गोरियासाऊ, सालसा, सारिवन इत्यादि ।
बंगभाषामें	अनन्तमूल, श्यामालता, कलघण्टि इत्यादि ।
मराठीभाषामें	श्वेतउपलसरी, कृष्णउपलसरी, सुगन्धउपलसरी।
गुजरातीभाषामें	कपरी, कालीवेलय ।
कर्णाटकीभाषामें	सारिवा ।
तैलङ्गीभाषामें	नीलतिग ।
औत्कालिभाषामें	गुपापानमूल ।
इंग्रेजीभाषामें	इंडियन् सारसापरिला। Indian sarsaparilla.
लेटिन् भाषामें	हेमिडेस्मेस् इण्डिकस्। Hesmid-esmus indicus

श्वेतसारिवागुणाः ।

श्वेता तु सारिवा शीता मधुरा शुक्रला गुरुः । स्निग्धा तिक्ता सुगन्धिश्च कुष्ठकण्डूज्वरापहा ॥ देहदौर्गन्ध्याग्निमांद्यश्वास-

कासारुचीहरा। आमत्रिदोषविषहृद्रक्तरुक्प्रदरापहा ॥ कफातिसारतृड्दाहरक्तपित्तहरापरा। वातनाशकरी प्रोक्ता ऋषिभिस्तत्त्वदर्शिभिः ॥ (नि० र०)

अर्थ-गौरियासाउ-शीतल,मधुर,शुक्रजनक,भारी,स्निग्ध,कडवी, सुगन्धि तथा कोढ,कण्डू,ज्वर,देहकी दुर्गन्धता,मंदाग्नि,श्वास,खासी, अरुचि,आम,त्रिदोष,विष,रुधिरविकार, प्रदररोग,कफ, अतिसार, तृषा, दाह, रक्तपित्त और वातको हरनेवाली है।

अन्यच्च।

अनन्ता ग्राहिणी रक्तपित्तप्रशमनी हिमा ॥

अर्थ-गौरीसर-मलरोधक, रक्तपित्तनाशक और शीतल है।

कृष्णशारिवागुणाः।

शारिवा वातपित्तास्रतृट्च्छर्दिज्वरनाशिनी॥ (राजवल्लभ)

अर्थ-कालीसर (करियाबासाउ)-वात, पित्त, रुधिरविकार, तृषा, वमन और ज्वरको हरनेवाली है।

अन्यच्च।

कृष्णातु सारिवा शीता वृष्या च मधुरा मता।
कफघ्नी चैव सम्प्रोक्ता गुणाश्चान्ये तु पूर्ववत् ॥(नि०र०)

अर्थ-कालीसर-शीतल,वीर्य्यवर्द्धक, मधुर और कफनाशक है, शेष गुण श्वेतसारिवाकी समान जानने।

द्विविधशारिवागुणाः।

सारिवायुगलं स्वादु स्निग्धं शुक्रकरं गुरु।
अग्निमांद्यारुचिश्वासकासामविषनाशनम् ॥
दोषत्रयास्रप्रदरज्वरातीसारनाशनम्। (भा० प्र०)

अर्थ-दोनोप्रकारकी सारिवा-स्वादिष्ठ, स्निग्ध, शुक्रजनक,भारी तथा मन्दाग्नि, अरुचि, श्वास, खासी,आम, विष, त्रिदोष,रक्तप्रदर और ज्वरातिसारको हरनेवाली है।

विवरण । कालीसारिवा और सफेदसारिवाकी काली बेल होती है,पत्ते-अनारकी समान होते हैं, उन पत्तोमे सफेद छीटे होते हैं, बेलकी जडमे कपूरकचरीकी समान सुगन्धि आती है, और इसमे दो २ फली आती है, कितनेक मनुष्य इसकी जडको सालसापरेला कहते हैं । दोनो प्रकारका शारिवा कालकाके समीप बहुत होताहै हम उशावेके स्थानमे यही वर्तते हैं ।

भृङ्गराजनामानि।

मार्कवो भृङ्गराजश्च भृङ्गाह्व· केशरञ्जनः ।
पितृप्रियो रगकश्च केश्यः कुन्तलवर्द्धनः ॥

अर्थ-मार्कव, भृङ्गराज, भृङ्गाह्व,केशरञ्जन, पितृप्रिय,रङ्गक,केश्य, कुन्तलवर्द्धन (भृङ्ग, पतङ्ग, मार्कर, मार्क, नागमार,परुरु,भृङ्गसोदर, अङ्गारक. एकरज, करञ्जक, भृङ्गरज, भृङ्गार, अजागर, केशराज, मर्कर, भृङ्गारक, भेकराज, पंकजात)

पीतभृङ्गराजनामानि ।

पीतोन्यः स्वर्णभृङ्गारो ह् िवासो हरिप्रियः ।
देवप्रियो वन्दनीयः पावनश्च षडाह्वयः ॥

अर्थ-पीतभृङ्गराज, स्वर्णभृङ्गार, हरिवास, हरिप्रिय, देवप्रिय, वन्दनीय, पावन ।

नीलभृङ्गराजनामानि ।

नीलस्तु भृङ्गराजोन्यो महानीलः सुनीलकः ।
महाभृङ्गो नीलपुष्पः श्यामलश्च षडाह्वयः ॥

अर्थ-नीलभृङ्गराज, महानील, सुनीलक, महाभृङ्ग, नीलपुष्प, श्यामल यह छे नाम है ।

संस्कृतभाषामे भृगराज, केशराज ।
हिन्दीभाषामे भागरा,भंगरा,भंगरिया,भंगरैया,कुकुरभागरा ।
बंगलाभाषामे भीमराज, केशुरे ।
मराठीभाषामे माका ।
गुजरातीभाषामे भांगरो ।
कर्णाटकीभाषामे गरुगलुरु ।
तैलिङ्गीभाषामे गुण्टकलगरचेट्टु, भृंगराजपुचेट्टु ।

अर्थ-शण, माल्यपुष्प, वामक, कटुतिक्त, निशादन, दीर्घशाख, त्वक्सार, दीर्घपल्लव।

संस्कृतभाषामें	शणपुष्पी, छि०शणपुष्पी, तृ०शणपुष्पी। शण।
हिन्दीभाषामें	झुनझुनिया, पटशण, वनशण, शणहुली, शर्णई, घागही इत्यादि। सन।
बंगभाषामें	वनशणइ, झनझने, शोणोरगाछ।
मराठीभाषामें	ताग।
कोंकणीभाषामें	खुलखुला।
गुजरातीभाषामें	शण।
द्राविडभाषामें	जनवकनर।
कर्णाटकीभाषामें	गिलुगिच्चि, चिक्कगिलु, मतेकाडाविट्टि।
तैलिङ्गीभाषामें	शणमतुबेल्ल, जेनपनर, रेल्लचेट्टु।
तामिलीभाषामें	जेनप्पनर।
ब्रह्मीभाषामें	पन।
इंग्रजीभाषामें	फ्लाक्सहेम्प्। Flax Hemp
लेटिन् भाषामें	क्रोटलरिया जुनाशिया। Crotalaria-juncia
फारसीभाषामें	लादना।

शणपुष्पीगुणाः।

शणपुष्पी कटुस्तिक्ता वामिनी कफपित्तजित्। (भा० प्र०)

अर्थ-वनशन (झुनझुनिया) चरपरी, कडवी, वमनकारक और कफपित्तनाशक है।

अन्यच्च।

शणपुष्पी रसे तिक्ता कषाया कफवातजित्।
अजीर्णज्वरदोषघ्नी वामनी रक्तदोषनुत् (रा०नि०)

अर्थ-वनशण-तिक्तरसान्वित, कषेली, कफवातनाशक, वमनजनक तथा अजीर्ण, ज्वर और रुधिरविकारको हरनेवाली है।

अपिच।

शणघण्टा रसे तिक्ता तुवरा वामनी स्मृता।
अजीर्णकफवातघ्नी रक्तदोषज्वरं जयेत्।
कण्ठास्यरोगहृद्रोगपित्तरुक्सन्निपातहृत्॥

अर्थ-वनशन-तिक्तरसान्वित, कषेली, वमनजनक तथा अजीर्ण, कफ, वात,रुधिरविकार, ज्वर, कण्ठरोग, मुखरोग, हृदयरोग,पित्त-रोग और सन्निपातको दूर करे है ।

क्षुद्रशणपुष्पीगुणाः ।

शणपुष्पी क्षुद्रतिक्ता वम्या रसनियामिका॥(रा०नि०)

अर्थ-दूसरी शणपुष्पी-कडवी, वमनकारक और पारेको बांध-नेवाली है ।

महाश्वेतागुणा ।

महाश्वेता तु तुवरा चोष्णा सूतनियामिका ।
मोहने स्तम्भने चैव प्रशस्ता ऋषिभिः स्मृतम्(नि०र०)

अर्थ-तीसरी शणपुष्पी-कषेली, गरम, पारेको बांधनेवाली तथा मोहन और स्तम्भनके विषय लीजाती है ।

शणगुणा ।

शणस्त्वम्लः कषायश्च मलपातकरो मतः। गर्भपात रक्तपातं वान्तिकृच्चामपातकृत् ॥ उष्णो वातकफघ्नश्च अंगमर्दरुजा-पहः । अस्य प्रसून प्रदरं रक्तदोषहर स्मृतम्॥ (नि०र०)

अर्थ-सन-अम्ल (खट्टी), कषेली, मलको पतित करनेवाली; गर्भ और रुधिरको गिरानेवाली, वमनजनक, आमको गिराने-वाली, गरम तथा वात, कफ और अंगके टूटनेको दूर करे है। इसका फूल-प्रदर और रुधिरविकारको हरे है।

शणबीजगुणा ।

शीतल शणबीज स्याद्ग्राहकं व गुरु स्मृतम् ।
इतरे तु गुणाः सर्वे शणवत्परिकीर्तिताः ॥ (नि०र०)

अर्थ-सनके बीज-शीतल, ग्राही और भारी है, गुण सनकी समान जानने।

विवरण । सनकी खेती हिन्दोस्थानमे सर्वत्र अधिकतासे होती है,झोदरा अंडकी समान पत्ता-फलाकर । फूल-पीले होते है । फल लम्बा और खुकल होताहै । व्यवहार-बीज और पत्ते ।

त्रायमाणानामानि ।

त्रायमाणा सुभद्राणी त्रायन्ती बलभद्रिका ॥

अर्थ-त्रायमाणा, सुभद्राणी, त्रायन्ती, बलभद्रिका(वार्षिक, बल-

देवा, भद्रनाभिका, कुलत्रा, त्रायमाणिका, बलभद्रा, सुकामा, वार्षिका, गिरिजा, अनुजा, मगल्यार्हा, देवबला, पालिनी, भयनाशिनी, अवनी, रक्षणी, त्राणा)

संस्कृतभाषामें	त्रायमाणा ।
हिन्दीभाषामें	त्रायमान ।
वंगभाषामें	बडाडुसुर, बला, बहुला, वनभाडुलिया इत्यादि।
मराठीभाषामें	त्रायमाण ।
गुजरातिभाषामें	त्राहिमान् ।
कर्णाटकीभाषामें	त्रायमाणा हिमवति प्रसिद्धा ।
लेटिन्भाषामें	थेलिक्ट्रम् फोलियो लोझम् । Thalıotum Falıolosum
फारसीभाषामें	अस्मक ।

अस्या गुणाः ।

त्रायमाणा तु तुवरा शीतला मधुरा सरा। तिक्ता पित्तरुजं छर्दिं ज्वरं गुल्मं कफं विषम् ॥ शूलं भ्रमं रक्तरुजं क्षयं ग्लानिं तृषां तथा। हृद्रोगं रक्तपित्तं च दुर्नामानं विनाशयेत् ॥ त्रिदोषनाशिनी प्रोक्ता पूर्ववैद्यैर्महर्षिभिः । (नि० र०)

अर्थ-त्रायमान-कषेली, शीतल, मधुर, दस्तावर, कडवी तथा पित्तरोग, वमन, ज्वर, गुल्म, कफ, विष, शूल, भ्रम, रक्तरोग, क्षय, ग्लानि, तृषा, हृदयरोग, रक्तपित्त, बवासीर और त्रिदोषका नाश करनेवाली है ।

विवरण । त्रायमानके पत्ते गोजियाकी समान पृथ्वीपर फैलेहुए होते है, और बीचमें दोदण्डीसी निकलतीहै, उसके बीजोको त्रायमान कहते हैं । किन्तु कितनेक मनुष्य भ्रमसे त्रायमानको गुलवनपसा कहते हैं ।

यवतिक्तानामानि ।

यवतिक्ता महातिक्ता दृढपादा विसर्पिणी । नाकुली नेत्रमीला च शंखिनी पत्रतण्डुली ॥ तंदुली चाक्षपीडा च सूक्ष्मपुष्पी यशस्विनी । माहेश्वरी तिक्तयवा यावी तिक्तेति षोडश ॥

अर्थ-यवतिक्ता, महातिक्ता, दृढपादा, विसर्पिणी, नाकुली, नेत्रमीला, शंखिनी, पत्रतण्डुली, तन्दुली, अक्षपीडा, सूक्ष्मपुष्पी, यशस्विनी, माहेश्वरी, तिक्तयवा, यावी, तिक्ता ।

संस्कृतभाषामें यवतिक्ता ।

हिन्दीभाषामे शंखिनी ।
वंगभाषामे यवेची, श्वेतबोना (कालमेघ)
मराठीभाषामे यवोची, टीटवी ।
को० शांखवेल्य ।
गुजरातीभाषामें शंखहेल्य आख्युफुटामाणा, भगलिंगी ।
कर्णाटकीभाषामे शंखिनी ।
लैटिनभाषामे एंड्रोग्राफिस् पेनिक्युलेटा । Androgr-ph-is paniculata
ब्रायोनियास्का ब्रेला Bryoniascabrella

अस्या गुणा ।

यवतिक्ता सतिक्ता स्याद्दीपनी रुचिकृत्परा ।
आमकुष्ठक्रिमिविषदोषघ्नी रेचनी च सा ॥ (रा० नि०)

अर्थ-शंखिनी-कडवी, अग्निको दीपन करनेवाली, रुचिको उत्पन्न करनेवाली, दस्तोको लानेवाली, तथा आम, कोढ, कृमि और विषदोषको दूरकरनेवाली है ।

अन्यच्च ।

यवतिक्ता महातिक्ता साऽग्निकृद्बलवर्धिनी ।
तिक्ता ज्वरातिसारघ्नी बालानां शुभदा सदा ॥ (आ० सं०)

अर्थ-शंखिनी-जठराग्निको दीपन करनेवाली, बलवर्द्धक, कडवी ज्वरातिसारनाशक और सदैव बालकोंके कल्याण करनेवाली है ।

अपिच ।

शंखिनी कटुतिक्तोष्णा गुरुः स्निग्धा विशोधिनी ।
त्रिदोषशमनी कुष्ठक्षयोदरविनाशिनी ॥ (का० नि०)

अर्थ-शंखिनी-चरपरी,कडवी, गरम, भारी, स्निग्ध, विशोधक, तथा त्रिदोष, कोढ, क्षय और उदररोगको दूरकरनेवाली है ।

अन्यच्च ।

यवतिक्ता तु कटुका रुचिरा चाग्निदीपनी ।
साम्ला कटुका तीक्ष्णा स्निग्धोष्णा च त्रिदोषहा ॥
कुष्ठामविषदोषघ्नी रक्तदोष कृमींस्तथा ।
शोफं जयेच्चोदरं च नाशयदिति कीर्तितम् ॥ (रा० नि०)

अर्थ-शंखिनी-कडवी, चरपरी, रुचिकारक, अग्निदीपक, सारक, (दस्तावर) अम्ल (खट्टी), कटु, तीक्ष्ण, स्निग्ध, गरम, त्रिदोषनाशक तथा कुष्ठ, आम, विषविकार, रक्तदोष, कृमि, सूजन और उदररोगको दूरकरनेवाली है।

विवरण। शंखिनीकी वेल-शिवलिंगीकी समान होती है, फल भी शिवलिंगीकी समान होतेहैं, शंखिनीके बीज-शंखकी सदृश होतेहैं, शिवलिंगीके फलके ऊपर सफेद छीटे होतेहैं, किन्तु शंखिनीके फलके ऊपर छीटे नहीं होते।

लिङ्गिनीनामानि।

लिङ्गिनी बहुपत्रा स्यादीश्वरी शैवमल्लिका। स्वयंभूर्लिंगसम्भूता लिंगी चित्रफलाऽमृता॥ पडोली लिंगजा देवी चण्डापस्तम्भिनी तथा। शिवजा शिववल्ली च विज्ञेया षोडशाह्वया॥

अर्थ-लिंगिनी, बहुपत्रा, ईश्वरी, शैवमल्लिका, स्वयम्भू, लिंगसम्भूता, लिंगी, चित्रफला, पडोली, लिंगजा, देवी, चण्डा, आपस्तम्भिनी, शिवजा, शिववल्ली (शिवमल्लिका, बकपुष्पा, और तुत्थिनी)

संस्कृतभाषामें	लिंगिनी।
हिन्दीभाषामें	शिवलिंगी, ईश्वरलिंगी।
बंगभाषामें	शिवलिंगिनी।
मराठी भाषामें	शिवलिंगी, वाडुवल्ली।
गुजरातीभाषामें	शिवलिंगी।
कर्णाटकभाषामें	पचगुरिया ईश्वरलिंगी।
लैटिन्भाषामें	ब्रायोनिया लेसिनियोसा। Bryonia laciniosa

अस्या गुणाः।

लिंगिनी कटुरुष्णा च दुर्गन्धा च रसायनी।
सर्वसिद्धिकरी दिव्या वश्या रसनियामिनी॥ (रा० नि०)

अर्थ-शिवलिंगी-चरपरी, गरम, दुर्गन्ध, रसायन, सर्वसिद्धिकारक, दिव्य, वशीकरण और पारेको बाधनेवाली है।

अपिच।

लिंगिनी कटुका चोष्णा दुर्गन्धा च रसायनी।
सर्वसिद्धिप्रदा लोहस्तम्भिनी सूतबन्धिनी॥

सिध्मनाशकरी वश्यकारिणी च प्रकीर्तिता। (नि० र०)

अर्थ-शिवलिङ्गी-चरपरी, गरम, दुर्गन्धित, रसायन, सर्वसिद्धिदायक, लोहस्तम्भक, पारदको बांधनेवाली, सिध्मनाशक और वशीकरण है।

विवरण। शिवलिंगीकी बेल होतीहै, फल-नीले और गोल होते हैं, पकनेपर लाल पडजातेहैं, फलके ऊपर सपेद चित्र होते है, फलमेंसे बीज निकलतेहैं, उन बीजोमे शिवके लिंगका आकार होताहै। कालकाके समीप टकसालमे बहुत होते हैं।

मूर्वानामानि।

मूर्वा मधुरसा देवी गोकर्णी दृढसूत्रिका।
तेजनी पीलुपर्णी च धनुर्माला धनुर्गुणा॥

अर्थ-मूर्वा, मधुरसा, देवी, गोकर्णी, दृढसूत्रिका, तेजनी, पीलुपर्णी, धनुर्माला, धनुर्गुणा (मोरटा, स्रवा, मधुलिका, धनुःश्रेणी, कर्म्मकरी, धनुःशाखा, श्रवा, मूर्वी, मधुश्रेणी, धनु, श्रेणी, सुरङ्गिका, देवश्रेणी, पृथकत्वचा, मधुस्रवा, अतिरसा, पीलुपर्णिका, दिव्यलता, ज्वलिनी, गोपवल्ली)

संस्कृतभाषामे	मूर्वा।
हिन्दीभाषामे	चूर्णहार, मुरहरी चुरनहार।
बंगभाषामे	मुर्वा, मुर्गा, मुरहर, शोचमुखी, घोडाचक्र इत्यादि।
मराठीभाषामे	मोरवेल।
कर्णाटकीभाषामे	मुहुरासि।
तैलिङ्गीभाषामे	चागचेट्टु, सग, चग, सागा।
तामिलीभाषामे	मरूल।
का०	मोरहरी।
लैटिन्भाषामे	क्लिमेटिस ट्राईलोबा। Clematis triloba

अस्या गुणाः।

मूर्वा सरा गुरुः स्वादुस्तिक्ता पित्तास्रमेहनुत्।
त्रिदोषतृष्णाहृद्रोगकण्डुकुष्ठज्वरापहा॥ (धन्वन्तरि)

अर्थ-चूर्णहार-सारक(दस्तावर), स्वादिष्ठ, कडवी तथा रक्तपित्त, प्रमेह, त्रिदोष, तृषा, हृदयरोग, कण्डू, कुष्ठ और ज्वरको हरनेवाली है।

अन्यच्च।

मूर्वा तिक्ता कषायोष्णा हृद्रोगकफवातहृत्।

वमिप्रमेहकुष्ठघ्नी विषमज्वरहारिणी ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ-चूर्णहार-कडवी, कषेली, गरम तथा हृदयरोग, कफ, वात, वमन, प्रमेह कोढ और विषमज्वरको दूर करनेवाली है।

अपिच।

मोरटा तुवरा तिक्ता स्वाद्वी चोष्णा गुरुः स्मृता। पाककाले तु कटुका सारका च त्रिदोषहा ॥ रक्तदोषं मेदरोगं कुष्ठ मेहं ज्वर तथा। वान्ति च मुखशोष च भ्रम कण्डूं तृषां तथा ॥हृद्रोगं च कफ पित्तं वातं च विषमज्वरम्। नाशयेदिति तैरुक्त कन्दोस्याः कृमिनाशकः॥कृमिकीलकरोगं च विषदोषं च नाशयेत्।

अर्थ-चूर्णहार-कषेली, कडवी, स्वादिष्ठ, गरम, भारी, पचनेमे चरपरी,दस्तावर,त्रिदोषनाशक तथा रुधिरविकार, मेदोरोग,कोढ, प्रमेह, ज्वर,वमन, मुखशोष, भ्रम, कण्डु, तृषा, हृदयरोग, कफ,पित्त, वात और विषमज्वरको दूर करनेवाली है। इसका कन्द-कृमि, कृमिकीलकरोग और विषविकारको दूर करेहै।

विवरण। मूर्वाकी बेल वनमे होतीहै,इसमे छोटे २ और मधुर२ फल लगते है, पत्ते-घीकुआरकी समान चिकने और कुछ मोटे २ होते है। शिमला प्रान्तमे मूर्वाके स्थानमे मरोडफलीका प्रयोग करतेहै

काकमाचीना.मानि।



मकोय.

काकमाची ध्वाक्षमाची वायसी च

अर्थ-काकमाची, ध्वांक्षमाची, वायसी, घनाघना, (काकमाचिका, काका, वायसाह्वा, सर्वतिक्ता, बहुफला, कटुफला, रसायनी, गुच्छफला, काकमाता, स्वादुपाका, सुन्दरी, तिक्तिका, बहुतिक्ता, जघनेफला, काकिनी और कुष्ठघ्नी ।

संस्कृतभाषामे	काकमाची ।
हिन्दीभाषामे	मकोय, कवैया ।
वंगभाषामे	मदन, मधुनि, गुडकामाइ ।
मराठीभाषामे	लघुकावळी, कामोनि ।
गुजरातीभाषामे	पीलुडी ।
कर्णाटकीभाषामे	कावइकाक ।
इंग्रेजीभाषामे	नाइट्सेड ।
लैटिन्भाषामे	सालनम् नाइग्रम् । Solanum nigrum
फारसीभाषामे	रोवातरीख ।
अरबीभाषामे	एनवुस्सालव ।

अस्य गुणाः

काकमाची त्रिदोषघ्नी स्निग्धोष्णा स्वरशुक्रदा ।
तिक्ता रसायनी शोथकुष्ठार्शोज्वरमेहजित् ॥
कटुर्नेत्रहिता हिक्काछर्दिहृद्रोगनाशिनी । (भा० प्र०)

अर्थ-मकोय-त्रिदोषनाशक, स्निग्ध, गरम, स्वरजनक, शुक्रकारक, कड़वी, रसायन, चरपरी, नेत्रोंको हितकारी तथा सूजन, कोढ, बवासीर, ज्वर, प्रमेह, हिचकी, वमन हृद्यरोगको हरनेवालीहै ।

अन्यच्च ।

काकमाची कटुस्तिक्तरसोष्णा कफनाशिनी ।
शूलार्शःशोफदोषघ्नी कुष्ठकण्डूतिहारिणी ॥ (रा० नि०)

अर्थ-मकोय-चरपरी, तिक्तरसान्वित, गरम, कफनाशक तथा शूल, बवासीर, सूजन, कोढ और कण्डूका नाश करे है ।

अन्यच्च ।

काकमाची सरा स्वर्या वृष्या दोषत्रयापहा ।
नात्युष्णा शीतला नातिकुष्ठहन्त्री रसायनी ॥ (शो० नि०)

अर्थ-मकोय-सारक (दस्तावर), स्वरको उत्तम करनेवाली, वीर्य्यवर्द्धक, त्रिदोषनाशक, न अत्यन्त उष्ण है, और न अत्यन्त शीतल है कुष्ठनाशक और रसायन है।

अपिच।

काकमाची रसे तिक्ता चोष्णा कट्वी रसायनी। वृष्या स्निग्धा च स्वर्य्या च हृद्या धातुविवर्द्धिनी॥ नेत्र्या रुच्या सरा लघ्वी कफशूलार्शशोफहा। त्रिदोषकुष्ठकण्डूतिकर्णकीटातिसारहा॥ हिक्काछर्दिश्वासकासज्वरहृद्रोगमेहहा। (नि०र०)

अर्थ-मकोय-तिक्तरसान्वित, गरम, चरपरी, रसायन, वीर्य्यवर्द्धक, स्निग्ध, स्वरको उत्तम करनेवाली, हृदयको हितकारी, धातुवर्द्धक, नेत्रोको हितकारी, रुचिकारी, दस्तावर, हलकी तथा कफ, शूल, बवासीर, सूजन, त्रिदोष, कोढ, कण्डू, कर्णकीट, अतिसार, हिचकी, वमन, श्वास, खाँसी, ज्वर और हृदयरोगको हरनेवाली है।

विवरण। मकोयका क्षुप होताहै। पत्ते-गोल और लम्बे। फूल-सफेद रंगका छोटा। फल-चोटलीकी समान गोल और गुच्छोमे आते है। फल पकनेपर लाल रंगके और किसी २ के काले रंगके भी होजाते है।

काकजंघानामानि।



काकजंघा च काकाक्षी काकांगी काकनासिका॥

अर्थ-काकजंघा, काकाक्षी, काकांगी काकनासिका (काका, काकनासा, काककला, कृपीबल, काकाङ्गा, ध्वांक्षजंघा, काकाह्वा, सुलोमशा, पारावतपदी, दासी, नदीकान्ता, काकी, सुरंगी)

संस्कृतभाषामे	काकजंघा।
हिन्दीभाषामे	काकजंघा, मसी।

वंगभाषामे	केउयाठहा कांटागुडकाउली ।
मराठीभाषामे	कागाचे झाड ।
गुजरातीभाषामे	अघेडी ।
कर्णाटकीभाषामे	जीरीचिलेच ।
तैलिङ्गीभाषामे	नालादुर्च्चोर्णाके ।
लॅटिन्भाषामे	लीयाहिर्टा । Leea Hirta

अस्या गुणाः ।

काकजघा तु तिक्तोष्णा कृमिव्रणकफापहा ।
बाधिर्य्याऽजीर्णजित्कट्वी विषमज्वरहारिणी (रा० नि०)

अर्थ-काकजंघा (मसी)-कडवी, गरम, चरपरी तथा कृमि, घाव,,कफ,बधिरता, अजीर्ण और विषम ज्वरको दूर करनेवाली है।

विवरण। काकजघाके क्षुप-जङ्गलमे और वनोमे बहुत होतेहै, पत्ते-लम्बे २ हरे और काले रंगके होते है, फूल-छोटे २ और काले रगके होते है। पत्तोपर खरखरापन और बारीक २ रुआसा होता है, शाखा गांठेदार होती है और उनमे थोडी २ दूरपर ऐडावेडापन होता है।

अन्यच्च ।

काकजघा हिमा तिक्ता कषाया कफपित्तनुत ।
निहन्ति ज्वरपित्तास्रव्रणकण्डूविषक्रुमीन् ॥ (भा०प्र०)
"क्षतोपयोगिका चैव बाधिर्य्यं च विनाशयेत्"

अर्थ-काकजंघा (मसी)-शीतल, कडवी, कषेली तथा कफ, पित्त, ज्वर, रक्तपित्त, कण्डू, विष, और कृमिका नाश करेहै। तथा क्षतरोगमे हितकारी, और बधिरताको दूर करे है।

काकनासानामानि ।

काकनासा तु काकांगी काकतुण्डफला च सा ।

अर्थ-काकनासा, काकांगी, काकतुण्डफला (ध्वाक्षनासा, काकतुण्डी, वायसी, सुरंगा, तस्करस्नायु, ध्वाक्षतुण्डा, सुनासिका, वायसाह्वा, ध्वांक्षनखी काकाक्षी, ध्वांक्षनासिका, काकमाणा, काकश्मश्रु, चोरस्नायु, शिरोवला)

संस्कृतभाषामे	काकनासा ।
हिन्दीभाषामे	कौआठोडी ।
वगभाषामे	केउयाठुटी ।

अर्थ-मकोय-सारक (दस्तावर), स्वरको उत्तम करनेवाली, वीर्य्यवर्द्धक, त्रिदोषनाशक. न अत्यन्त उष्ण है, और न अत्यन्त शीतल है कुष्ठनाशक और रसायन है ।

अपिच ।

काकमाची रसे तिक्ता चोष्णा कट्वी रसायनी । वृष्या स्निग्धा च स्वर्य्या च हृद्या धातुविवर्द्धिनी ॥ नेत्र्या रुच्या सरा लघ्वी कफशूलार्शशोफहा । त्रिदोषकुष्ठ-कण्डूतिकर्णकीटातिसारहा ॥ हिकाछर्दिश्वासकासज्वर-हृद्रोगमेहहा । (नि०र०)

अर्थ-मकोय-तिक्तरसान्वित, गरम, चरपरी, रसायन, वीर्य्य-वर्द्धक, स्निग्ध, स्वरको उत्तम करनेवाली, हृदयको हितकारी, धातु-वर्द्धक, नेत्रोंको हितकारी, रुचिकारी, दस्तावर, हलकी तथा कफ, शूल, बवासीर, सूजन, त्रिदोष, कोढ, कण्डू, कर्णकीट, अतिसार, हिचकी, वमन, श्वास, खाँसी, ज्वर और हृदयरोगको हरनेवाली है ।

विवरण । मकोयका क्षुप होताहै, पत्ते-गोल और लम्बे । फूल-सफेद रंगका छोटा । फल-चोटलीकी समान गोल और गुच्छोंमें आते हैं । फल पकनेपर लाल रंगके और किसी २ के काले रंगके भी होजाते हैं ।

काकजंघानामानि ।



काकजंघा च काकाङ्घ्री काकांगी काकनासिका ॥

अर्थ-काकजंघा, काकाङ्घ्री, काकांगी काकनासिका (काका, काकनासा, काककला, कृपीबल, काकाङ्गा, ध्वाक्षजंघा, काकाह्वा, सुलोमशा, पारावतपदी, दासी, नदीकान्ता, काकी, सुरंगी)

संस्कृतभाषामें	काकजंघा ।
हिन्दीभाषामें	काकजंघा, मसी ।

वंगभाषामे	केउयाठडो कांटागुडकाउली ।
मराठीभाषामें	कांगाचे झाड ।
गुजरातीभाषामे	अघेडी ।
कर्णाटकीभाषामे	जीरीचिलेच ।
तैलिङ्गीभाषामे	नालाकुर्च्चीणिके ।
लॅटिन्भाषामे	लीयाहिर्टी । Leea Hirta

अस्या गुणा ।

काकजंघा तु तिक्तोष्णा कृमिव्रणकफापहा ।
बाधिर्य्याऽजीर्णजित्कट्वी विषमज्वरहारिणी (रा० नि०)

अर्थ-काकजंघा (मसी)-कडवी, गरम, चरपरी तथा कृमि, घाव,,कफ,बधिरता, अजीर्ण और विषम ज्वरको दूर करनेवाली है।

विवरण। काकजंघाके क्षुप-जङ्गलमें और वनोंमें बहुत होतेहै, पत्ते-लम्बे २ हरे और काले रंगके होते है, फूल-छोटे २ और काले रंगके होते है । पत्तोंपर खरखरापन और बारीक २ रुआंसा होता है,शाखा गांठेदार होती है और उनमें थोडी २ दूरपर ऐडावैडापन होता है ।

अन्यच्च ।

काकजंघा हिमा तिक्ता कषाया कफपित्तनुत ।
निहन्ति ज्वरपित्तास्रव्रणकण्डूविषकृमीन् ॥ (भा०प्र०)
"क्षतोपयोगिका चैव बाधिर्य्यं च विनाशयेत्"

अर्थ-काकजंघा (मसी)-शीतल, कडवी, कषेली तथा कफ, पित्त, ज्वर, रक्तपित्त, कण्डू, विष, और कृमिका नाश करेहै । तथा क्षतरोगमें हितकारी, और बधिरताको दूर करे है ।

काकनासानामानि ।

काकनासा तु काकांगी काकतुण्डफला च सा ।

अर्थ-काकनासा, काकांगी, काकतुण्डफला (ध्वाक्षनासा,काकतुण्डी, वायसी, सुरंगा, तस्करस्नायु, ध्वांक्षतुण्डा, सुनासिका,वायसाह्वा, ध्वाक्षनखी काकाक्षी, ध्वाक्षनासिका, काकमाणा, काकश्मश्रु, चोरस्नायु, शिरोबला)

संस्कृतभाषामे	काकनासा ।
हिन्दीभाषामे	कौआठोडी ।
वंगभाषामे	केउयाठुटी ।

मराठीभाषामें श्वेतकावळी ।
कर्णाटकीभाषामें हिरीयकागे ढोले वडिलि कह्रली ।
तैलिङ्गीभाषामें बेलुमसन्दिचेट्टु, पुसग्गलिचिन्दचेट्टु,काकि दोडचेट्टु ।
लैटिन्भाषामें जिम्निमासिल्वेस्ट्रि । Gymbrima Sylvestre

अस्या गुणाः ।

काकनासा कषायोष्णा कटुका रसपाकयोः ।
कफघ्नी वामनी तिक्ता शोफार्शःश्वित्रकुष्ठनुत् ॥ (भा प्र)

अर्थ-कौआठोडी-कषेली, गरम, रसमें चरपरी और पचनेमेंभी चरपरी, कफनाशक, वमनकारक, कडवी, तथा सूजन, बवासीर और श्वित्रकुष्ठको नष्ट करे है ।

अपच्च ।

काकनासा तु मधुरा शिशिरा पित्तहारिणी ।
रसायनी दार्ढ्यकरी विशेषात्पलितापहा ॥ (रा० नि०)

अर्थ-कौआठोडी-मधुर, शीतल, पित्तनाशक, रसायन, दृढता कारक और विशेषकरके पलित (बालोका धवल होजाना) को दूर करे है । कौआठोडी-विशेषकरके जङ्गल और कठेरकी भूमिमें होतीहै, पत्ते-गुलाबके पत्तोसे छोटे, फूल नीले और सुफेद रंगके कौवेकी नासिकाकी समान होतेहै, इसपर फली आतीहै बीज लोवियेकी समान निकलते है ।

नागपुष्पीनामानि ।

नागपुष्पी श्वेतपुष्पा नागिनी रामदूतिका ।
अर्थ-नागपुष्पी, श्वेतपुष्पा, नागिनी, रामदूतिका ।

अस्या गुणाः ।

नागिनी रेचनी तिक्ता तीक्ष्णोष्णा कफपित्तनुत् ।
विनिहन्ति विषं शूलं योनिदोषवमिक्रिमीन् ॥ (भा प्र.)

अर्थ-नागपुष्पी-दस्तावर, कडवी, तीक्ष्ण, गरम तथा कफ,पित्त, विष, शूल, योनिदोष, वमन और कृमिरोगको दूर करे है ।

विवरण । नागपुष्पीकी बेल चलती है, वनके वृक्षोपर फैलजाती है, फूल-सफेद और काले होतेहै, एक एक शाखामें एक एक पत्ता होता है, इसके नीचे कंद होता है ।

मेषशृङ्गीनामानि ।

मेषशृङ्गी मेषवल्ली चक्षुर्मेषविषाणिका ॥

अर्थ-मेषशृंगी, मेषवल्ली, चक्षु, मेषविषाणिका (नन्दीवृक्ष, चक्षुर्बहल, मेढ्रशृंगी, गृहद्रुमा, बहलचक्षु, विषाणी, अजशृंगिका, विषाणिका, अजशृङ्गी, चक्रश्रेणी, अजगन्धिनी, मौर्वी, नेत्रौषधी, आवर्तिनी, वर्तिका, सर्पदंष्ट्रिका, चक्षुष्या, तिक्तदुग्धा, पुत्रशृंगी, कर्णिका, अक्षिभेषज)

संस्कृतभाषामे	मेषशृङ्गी, अजशृङ्गी।
हिन्दीभाषामे	मेढाशींगी।
वंगभाषामे	मेडाशिंगे, गाडलशिंगी, छागलवेटे।
मराठीभाषामे	मेंडफळी, केवणीच्या शेंगा।
गुजरातीभाषामे	मढाशींगी आटर्डीनी शींग।
कर्णाटकीभाषामें	डरियमर।
इंग्रेजीभाषामे	स्क्रूट्री। Screw tree
लेटिनभाषामे	हेलीक् टरा इसोरा। Helicteris isora
	जिमनेगा सिलवेस्ट्री। Gymnega Selvestre
फारसीभाषामें	किस्त।
अरबीभाषामे	बर्किस्त।

अस्या गुणाः।

अजशृंगी रसे तिक्ता रूक्षा पाके कटुः स्मृता। चक्षुष्या शीतला स्वाद्वी बल्या भेदकरी मता॥ रसायना तु तुवरा दाहपित्तकफापहा। रक्तरुक्कासतिमिरश्वासव्रणविषापहा॥ कृम्यर्शःशूलहृद्रोगनाशिनी शोथहा स्मृता। कुष्टं वात नाशयति फलमस्यास्तु तिक्तकम्॥ कटूष्णं दीपनं हृद्यं रुच्यं चाम्लं पटु स्मृतम्। स्रंसनं कुष्ठमेहघ्नं कासकृमिकफप्रणुत्॥ विषदोष व्रण वात नाशयेदिति कीर्तितम्। (नि०र०)

अर्थ-मेढाशिंगी-रसमे कडवी, रूखी, पचनेमे चरपरी, नेत्रोको हितकारी, शीतल, स्वादिष्ठ, बलकारक, भेदक, रसायन, कपेली तथा दाह, पित्त, कफ, रक्तविकार, खासी, तिमिररोग, श्वास, व्रण, विष, कृमि, बवासीर, हृदयरोग, सूजन, कोढ और वातको विनाश

करनेवाली है । इसका फल-कडवा, चरपरा, गरम, दीपन, हृदयको हितकारी, रुचिकारक, खट्टा, खारा, स्रसन तथा कोढ, प्रमेह, खाँसी, कृमि, कफ, विषविकार, व्रण और वातको दूर करनेवाला है ।

विवरण । मेढाशिंगीका बडा वृक्ष होताहै, पत्ते-फालसेके समान और फूल-लाल होते है, इसकी फली गोल और लम्बी होतीहै, इसके वृक्ष प्रायः पर्वतोपर बहुत होतेहै ।

हंसपादीनामानि ।



हंसपादी कीरमाता त्रिपादी च मधुस्रवा ।

अर्थ-हंसपादी, कीरमाता, त्रिपादी, मधुस्रवा (सुवहा, हंसपदी, गोधा-त्रिफला, गोधापदिका, त्रिदला, हंसवती, चित्रपदा, हंसपादिका, घ्रि, रक्तपादी, त्रिपदा, घृतमण्डलिका, विश्वग्रन्थि, निपादिका, ` त्र ा ि ी ि री, कर्णाटी, ताम्रपादी, विक्रान्ता, प्रह्लादनी, पदाङ्गी, शीताङ्गी, सूतपाटिका, सञ्चारिणी, पादिका, प्रह्लादी, कीर-पादिका, धार्त्तराष्ट्रपदी, गोधापदी त्रिपादिका, रक्तपादी)

संस्कृतभाषामें	हंसपादी, गोधापदी ।	
हिन्दीभाषामें	हंसपादी, हंसपर्णी ।	
बंगभाषामें	गोयालेलता ।	
मराठीभाषामें	लाल लाजालु ।	
गुजरातीभाषामें	हंसराज कालीडाडलीनो ।	
कर्णाटकीभाषामें	नावलौड ।	
तैलिंगीभाषामें	हंसपादमु ।	
इंग्रजीभाषामें	मैडनहेर ।	Maiden hair
लैटिन्भाषामें	एडिएन्टम् ल्युन्युलेटम् ।	Adiantum Lunulatum
फारसीभाषामें	परस्या उशान ।	
अरबीभाषामें	शारुलजीन् शारुलअर्द ।	

अस्या गुणाः ।

हंसपादी गुरुः शीता हन्ति रक्तविषव्रणान् ।
विसर्पदाहातीसारलूताभूताग्निरोहिणीः ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-हंसपादी-भारी, शीतल तथा रुधिरविकार, विष, व्रण, विसर्प, दाह, अतिसार, लूता, भूतबाधा और अग्निरोहिणीरोगको दूर करनेवाली है ।

अन्यच्च ।

हंसपादी तु कटुका चोष्णा प्रोक्ता रसायनी ।
भूतबाधां विषं चैवापस्मारभ्रमनाशिनी ॥ (नि० र०)

अर्थ-हंसपादी-चरपरी, गरम, रसायन तथा, भूतबाधा, विष, अपस्मार और भ्रमको हरनेवाली है ।

विवरण । हंसपादीके क्षुप-जलाशयके समीप अत्यन्त शीतल स्थानोमे होते है, विशेष करके कुँएँ बावडी इत्यादि स्थानोमे बहुत होते है, इसको इस देशमे हंसराज कहते है, इसकी जड लाल और कोमल होतीहै, पत्ते-हरे २ बहुत छोटे २ होते है ।

सोमलतानामानि ।

सोमलता सोमवल्ली सोमक्षीरी द्विजप्रिया ॥

अर्थ-सोमलता, सोमवल्ली, सोमक्षीरी, द्विजप्रिया (चन्द्रवल्लरी, इन्दुलेखा, सोमवल्लिका, महागुल्मा, यज्ञश्रेष्ठा, धनुर्लता, सोमार्हा, गुल्मवल्ली, यज्ञवल्ली, सोमक्षीरा, सोमा, यज्ञाङ्गा)

संस्कृतभाषामे	सोमवल्ली ।
हिन्दीभाषामे	सोमवल्ली, सोमलता ।
वंगभाषामें	सोमलता ।
मराठीभाषामे	सोमवल्ली ।
कर्णाटकीभाषामे	सोमवल्ली ।
तैलङ्गीभाषामे	पल्लटीजीं, टिगटसुम्मुडु, पुल्लतीगे ।

लैटिन्भाषामे सार्कोस्टेम्मा ब्रेवीस्टिग्मा Sarcostemma Brevistigma

अस्या गुणाः ।

सोमवल्ली त्रिदोषघ्नी कटुस्तिक्ता रसायनी ॥(भा० प्र०)

अर्थ-सोमलता-त्रिदोषनाशक, चरपरी,कडवी और रसायन है।

अपच्च ।

सोमवल्ली कटु· शीता मधुरा पित्तदाहनुत् ।
तृष्णा विशोपशमनी पावनी यज्ञसाधनी ॥(रा० नि०)

अर्थ-सोमलता-चरपरी, शीतल, मधुर तथा पित्त, दाह, तृषा और विशोपको शान्त करनेवाली है, पवित्र और यज्ञसाधक है

विवरण । थूहरकी जो कोई प्रकारकी जातिहै उनमेंसे सोमलता भी एकभाँतिकी बेल है,इसमें शुक्ल पक्षके दिनोंमे क्रमवार प्रतिपदासे लेकर पूर्णमासीतक एक एक पत्ता प्रतिवार निकलताहै, पन्द्रह तिथियोंमे पन्द्रह पत्ते होजातेहैं, फिर कृष्णपक्षकी परीवासे लेकर अमावास्यातक एक एक पत्ता प्रतिदिन गिरता जाताहै,पन्द्रह दिनमे एक पत्ताभी नहीं रहता, इस लताका चंद्रमासे अधिक स्नेह है, इस कारण इस अद्भुतलताका नाम सोमलता है ।

आकाशवल्लीनामानि ।


आकाशवल.

आकाशवल्ली तु बुधैः कथिताऽमरवल्लरी ॥

अर्थ-आकाशवल्ली,अमरवल्लरी,(खवल्ली,दुःस्पर्शा,व्योमवल्लिका)

संस्कृतभाषामे	आकाशवल्ली ।
हिन्दीभाषामे	आकाशबेल अमरबेल ।
बंगभाषामे	आलोकलता, आकाशबेल ।
मराठीभाषामे	आकाशवेल, अमरवेल ।
गुजरातीभाषामे	अमरवल ।
कर्णाटकीभाषामे	नेदमुदवल्ली ।
तैलिङ्गीभाषामे	इन्द्रजाल ।
लैटिनभाषामे	कसकुटारी ल्लेक्सा । Cuscutareflex केसिथाफिलिफोर्मिस् ।Cassythafilliformis
अरबीभाषामे	अफतिमून ।

अस्या गुणाः।

खवल्ली ग्राहिणी तिक्ता पिच्छिलाऽक्ष्यामयापहा।
तुवराऽग्निकरी हृद्या पित्तश्लेष्मामनाशिनी॥ (भा०प्र०)

अर्थ-आकाशबेल-ग्राही, कडवी, पिच्छल, अक्षिरोगनाशक, कपेली, अग्निजनक, हृदयको हितकारी तथा पित्त कफ और आमवातनाशक है।

अन्यच्च।

आकाशवल्ली कटुका मधुरा पित्तनाशिनी।
वृष्या रसायनी बल्या दिव्यौषधिपरा स्मृता॥ (रा०नि०)

अर्थ-आकाशबेल-चरपरी, मधुर, पित्तनाशक, वीर्यवर्द्धक, रसायन, बलकारक और दिव्योषधि है।

विवरण। आकाशबेल-डोरेकी समान वृक्षोंपै फैली हुई होती है, रंग पीला होता है, फूल-सफेद आताहै, और इसकी जड नहीं होती। व्यवहार सर्वांश। मात्रा २ तोले।

पातालगरुडीनामानि।



छिलिहिण्डो महामूलः पातालगरुडाह्वयः॥

अर्थ-छिलिहिण्ड, महामूल, पातालगरुड (वत्सादनी, सोमवल्ली, तिक्तागा, मोचकाभिधा, तार्क्षी, सौपर्णी, गारुडी, दीर्घकाण्डा, दृढकाण्डा, महाबला, दीर्घवल्ली, दृढलता)

संस्कृतभाषामें	पातालगरुडी।
हिन्दीभाषामें	छिरेटा।
बंगभाषामें	शिलिन्दा।

मराठीभाषामें	तानीचा वेल, भुयपाड ।
गुजरातीभाषामें	वेवडीओलप ।
तैलङ्गीभाषामे	दूसरतीगे ।
लेटिन्भाषामे	कोक्युलस् विलोसस् । Cocculus villosus

अस्या गुणाः ।

छिलिहिण्डः पर वृष्यः कफघ्नः पवनापहः॥(भावप्रकाश)

अर्थ-छिरेटा-अत्यन्त वीर्य्यवर्द्धक, कफ और वातनाशक है ।

अन्यच्च ।

वत्सादनी तु मधुरा पित्तदाहास्रदोषनुत् ।
वृष्या सन्तर्पणी रुच्या विषदोषविनाशिनी॥(रा०नि०)

अर्थ-छिरेटा-मधुर, वीर्य्यवर्द्धक, सन्तर्पण, रुचिकारक, तथा दाह, पित्त, रुधिरविकार और विषदोषविनाशक है ।

विवरण। पातालगरुडकी अर्थात् छिरेटीकी बेल होतीहै, यह बहुत मोटी और दृढ होती है,इसके तंतुभी बहुत पक्के होतेहै,इसके फल छोटे२ और गुच्छोंमे लगतेहै, तरुण अवस्थामे हरे और पकने-पर काले होजाते है, इसके पत्ते सीसमके पत्तोकी समान होते हैं, उसका रस निकालकर जलमे डालनेसे जल जमजाता है ।

वदानामानि ।



वंदा वृक्षादनी सेव्या परपुष्टा पराश्रया ॥

अर्थ-वंदा, वृक्षादनी, सेव्या, परपुष्टा, पराश्रया (वृक्षरुहा, जीवन्तिका, काकुरुहा, वन्दाका, शेखरा, वन्दका, वन्दक, नीलवल्ली, वन्दाकी, परवासिका, वशिनी, पुत्रिणी, वन्द्या, पादपरुहा, शिखरी, तरुरोहिणी, वृक्षादनी, कामवृक्ष, शेखरी, केशरूपा, तरुरुहा, तरुस्था, गन्धमादिनी, कामिनी, तरुभुक्, श्यामा, उपदी, वृक्षभक्षा, नीलवर्णा, वन्दाकी, गन्धमादनी और रोहिणी)

संस्कृतभाषामें	वन्दा।
हिन्दीभाषामें	वन्दा, बन्दाल, वदाक, बांदा।
बंगभाषामें	बॉदु, परगाछा, मान्दडा।
मराठीभाषामें	बादागुल, कामरुख।
गुजरातीभाषामें	वांदो।
कर्णाटकीभाषामें	वन्दणिके।
तैलिङ्गीभाषामें	वाजिनीके।

लैटिन्भाषामें लोरेन्थस लोंगिफोलियस् Loranthus Longifoliods

अस्य गुणाः।

वन्दाकः कफवातास्रनायुव्रणविषापहः॥ (म० नि०)

अर्थ-वांदा-कफ, वात, रुधिरविकार, स्नायु, व्रण और विषविनाशक है।

अन्यच्च।

वदाकः स्याद्धिमस्तिक्तः कषायो मधुरो रसे।
मांगल्यः कफवातास्ररक्षोव्रणविषापहः॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-वन्दा-शीतल, कडवा, कषेला, मधुररसान्वित, मङ्गलजनक तथा कफ, वात, रुधिरविकार, राक्षसबाधा, व्रण और विषविनाशक है।

अपि च।

वन्दाकस्तिक्तशिशिरः कफपित्तश्रमापहः।
वश्यादिसिद्धिदो वृष्यः कषायश्च रसायनः (रा०नि०)

अर्थ-वन्दा-कडवा, शीतल, कफनाशक, पित्तघ्न, श्रमहर्ता, वशीकरणादि सिद्धिकर्ता, वीर्यवर्द्धक, कषेला और रसायन है। वन्दा, वृक्षोंकी शाखोंपै होताहै।

विवरण। वन्दा, विविधप्रकारका वृक्षोपर वृक्षसरीखा होजाता है, उसकी जड अलग नहीं होती, वृक्षमें उत्पन्न होजाता है कोई २ ऐसा कहते हैं कि, काकादिक कोई पक्षी किसी वृक्षकी शाखा

लाकर वृक्षपर रखदेतेहै, उसीमें पत्ते निकल आते है और वही फल फूलकर वन्दा होजाता है, किसीमे लाल, किसीमे पीला, किसीमे सफेद, और किसीमे नीला फूल होता है, और पत्तेभी भिन्न २ जातिकेसे होते है।

वटपत्रीनामानि ।

वटपत्री तु कथिता मोहन्यैरावती बुधैः ।

अर्थ-वटपत्री-मोहनी, ऐरावती (इरावती, इनानी, गोधावती, श्यामा, खट्वाङ्गनासिका)

संस्कृतभाषामें	वटपत्री ।
हिन्दीभाषामे	वडपत्री ।
मराठीभाषामे	वडवती ।
बंगभाषामे	वडपाथरकुचि ।
तैलिङ्गीभाषामे	पिण्डि वण्डचेट्टु ।
इंग्रेजीभाषामें	लैकोपेडियम् ।

अस्या गुणाः ।

वटपत्री कषायोष्णा योनिमूत्रगदापहा ॥(भावप्रकाश)

अर्थ-वडपत्री-कषेली,गरम तथा योनिरोग और मूत्ररोगको दूर करे है।

अपि च ।

वटपत्र्यश्मभिच्छीता मधुरा तु बलप्रदा ।
किञ्चिदग्नेर्दीप्तिकरी व्रणकृच्छ्रप्रमेहजित् ॥
अश्मरीं मूत्रघातञ्चभगन्दर विनाशयेत्।(निघण्टुरत्नाकर)

अर्थ-वडपत्री-शीतल, मधुर, बलवर्द्धक, किञ्चित् अग्निको दीपन करनेवाली तथा घाव, मूत्रकृच्छ्र,प्रमेह,पथरी,मूत्रघात और भगन्दररोगको दूर करनेवाली है।

विवरण। वटपत्री पाषाणभेदहीका भेद है,इसके पत्ते-वडके समान होतेहै, इसीसे इसका नाम वटपत्री है।

मत्स्याक्षीनामानि ।

मत्स्याक्षी बालिका मत्स्यगन्धा मत्स्यादनीति च ॥

अर्थ-मत्स्याक्षी, बालिका, मत्स्यगन्धा, मत्स्यादनी ।

अस्या गुणाः ।

मत्स्याक्षी ग्राहिणी शीता कुष्ठपित्तकफास्रजित् ।

लघुस्तिक्ता कषाया च स्वाद्वी कटुविपाकिनी ॥ (भा प्र.)

अर्थ-मछेछी-ग्राही, शीतल, हलकी, कडवी, कषेली, स्वादिष्ठ, पचनेमे चरपरी तथा कोढ, पित्त, कफ और रुधिरविकारको दूर करेहै ।

विवरण । मत्स्याक्षी-अर्थात् मछेछीके क्षुप छोटे २ होते हैं, पत्ते उडदके पत्तोके समान होते है, फूल-सफेद और पीले रंगके होते है, इसमें मछलीके समान गंध आती है ।

सर्पाक्षीनामानि ।

सर्पाक्षी स्यात्तु गण्डाली तथा नाडीकलापकः ॥

अर्थ-सर्पाक्षी, गण्डाली, नाडीकलापक ।

अस्या गुणा ।

सर्पाक्षी कटुका तिक्ता सोष्णा कृमिनिकृन्तनी ।

वृश्चिकोन्दुरुसर्पाणां विषघ्नी व्रणरोपणी ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-सर्पाक्षी (सरहटी, गडनी)-चरपरी, कडवी, गरम, कृमिनाशक तथा बिच्छू, मूसा और साँपके विषको दूर करनेवाली है ।

विवरण । सर्पाक्षी-सरफोंकेका भेद है, सरफोंकेमें और इसमें किसी प्रकारका भेद नहीं पाया जाता है ।

शंखपुष्पीनामानि ।



शंखपुष्पी (शंखाहूली)

मेध्या चण्डा शंखपुष्पी सुपुष्पी कम्बुमालिनी ।

अर्थ-शंखपुष्पी-मेध्या, चण्डा, सुपुष्पी, कम्बुमालिनी, (अपराजा

पीत पुष्पी, कम्बुपुष्पा, मलविनाशिनी, किरीटी, शंखकुसुमा, भूलग्ना, शंखमालिनी, माङ्गल्यकुसुमा, कम्बुपुष्पी, वनमालिनी, इतरा, सूक्ष्मपत्रा, सर्पाक्षी, रक्तपुष्पी, रक्तपुष्पिका, नीलपुष्पी, विष्णुक्रान्ता, सितपुष्पी, श्वेतकुसुमा, वनविलासिनी।

संस्कृतभाषामे	शंखपुष्पी।
हिन्दीभाषामे	शंखाहुली, कौडियाली।
बंगलाभाषामे	शंखाहुली, डानकुनी।
मराठीभाषामे	शंखावली, शंखोनी।
गुजरातीभाषामे	शंखावली।
कर्णाटकीभाषामें	शंखपुष्पी।
लेटिन्भाषामे	इवोल्व्युलस् इरेक्टा (सफेद) Evolvulus Erecta
( )	इवोल्व्युलस् आलसिनोइडिस् (लाल) L. Aesinofes
	इवोल्व्युलस् हर्सटस् (काली) E. hirsutus

अस्या गुणाः।

शंखपुष्पी तु तीक्ष्णोष्णा मेध्या कृमिविषापहा ॥ (रा० व०)

अर्थ-शंखाहुली-तीक्ष्ण, गरम, मेधाजनक, तथा कृमि और विषविनाशक है।

अन्यच्च।

शंखपुष्पी सरा मेध्यायुष्या मानसरोगहृत्तारसायनी कषायोष्णा स्मृतिकान्तिबलाग्निदा ॥ कटुका शीतला स्वर्या कुष्ठ कृमिविषप्रणुत्। पाचकायुःस्थिरकरी मांगल्या पित्तनाशिनी ॥ लूतापस्मारदोषघ्नी ग्रहदोषस्य नाशिनी। सर्वोपद्रवहा प्रोक्ता पुष्पभेदा गुणैः समाः ॥

अर्थ-शंखाहुली-सारक, मेधाजनक, आयुर्वर्द्धक, मनके रोगोको हरनेवाली, रसायन, कषेली, गरम, स्मरणशक्तिवर्द्धक, कान्तिजनक, बलवर्द्धक, अग्निदायक, चरपरी, शीतल, स्वरको उत्तम करनेवाली, मंगलकारक, अवस्थास्थापक, पाचक तथा कोढ, कृमि, विष, पित्त, लूता, अपस्मार, ग्रहदोष और सर्वप्रकारके उपद्रवोको दूर करनेवाली है, सर्वप्रकारकी शंखपुष्पी गुणोमे समान है।

अन्यच्च ।

शंखपुष्पी कषायोष्णा कफकुष्ठविनाशिनी ।
रसायनी सरा दिव्या लालाहृल्लासजूर्तिहा ॥
लक्ष्मीमेधाबलाग्नीनां वर्द्धिनी कथिता बुधैः ।

अर्थ-शंखपुष्पी-कषैली, गरम, कफ और कुष्ठको नष्ट करनेवाली, रसायन, सारक, दिव्य, मुखसे लारका गिरना, उबकाई और ज्वरको दूर करनेवाली है तथा लक्ष्मी, मेधा, बल और अग्निको बढानेवाली है।

श्वेतशंखपुष्पीगुणाः ।

शुभ्रा च शखिनी मेध्या शीतला वश्यसिद्धिदा । रसायनी सरा स्वर्य्या किञ्चिदुष्णा च तूवरा॥स्मृतिकान्तिबलाग्नीनां वर्द्धिनी कटुका मता ॥ पाचकायुःस्थिरकरी माङ्गल्या पित्तनाशिनी॥ विषदोषमपस्मारं कफं कृमिविषं हरेत् । कुष्ठलूतात्रिदोषघ्नी ग्रहदोषस्य नाशिनी ॥ सर्वोपद्रवहा प्रोक्ता रक्ता नीला गुणैः समा । (निघण्टुरत्नाकर)

अर्थ-सफेद शंखाहुली-मेधाजनक, शीतल, वशीकरण, सिद्धिदायक, रसायन, सारक, स्वरको सुन्दर करनेवाली, किञ्चित् उष्ण, कषैली तथा स्मरणशक्ति, कांति और अग्निको बढानेवाली है। चरपरी, पाचक, अवस्थास्थापक, मंगलकारक, तथा पित्त और विषदोष, अपस्मार (मृगी), कफ, कृमि, विष, कोढ, लूता, त्रिदोष, ग्रहदोष और सर्व उपद्रवोको दूर करे है। लाल शंखपुष्पीके और नीली शंखपुष्पीके गुणभी इसकी समान जानने ।

विवरण । शंखपुष्पीका छत्ता भाय ऊपर भूमिमे होता है, पत्ते छोटे और धूसर रंगके सूक्ष्म होते है, फूल-दुपहरियासे मिलता हुवा होता है, सफेद फूलवालीको सफेद शंखाहुली कहते है, लाल रंगके फूलवालीको लाल शंखाहुली कहते है, नीले रंगके फूलवालीको विष्णुक्रान्ता कहते है ।

अर्कपुष्पीनामानि ।

पयस्या ह्यर्कपुष्पी च सूर्य्यवल्ली कुटुम्बिनी ॥

अर्थ-पयस्या, अर्कपुष्पी, सूर्यवल्ली, कुटुम्बिनी(जलकामुका, क्षीरिणी, वक्रशल्या, दुराधर्षा, क्रूरकर्मा, सिरिण्टिका, शीता, प्रहरकुटवी, शीतला, जलेरुहा, सितपर्णी, शीतपर्णी और अर्कपुष्पिका)

संस्कृतभाषामें	अर्कपुष्पी ।
हिन्दीभाषामें	अधाहुली, अर्कहुली, दधियार,क्षीरवृक्ष, अर्कपुष्पी ।
मराठीभाषामें	शिरडोरि ।
गुजरातीभाषामें	खरणेर ।
लेटिन्भाषामें	होलोस्टेमा हिडिआई Holostema rheedii

अस्या गुणाः ।

कुटुम्बिनी तु मधुरा ग्राहका च रसायनी ।
शीतला च व्रणं पित्तं कफं रक्तरुजं तथा ॥
कृमिं च कण्डुदोषं च कुष्ठं चैव विनाशयेत् । (नि० र०)

अर्थ-अर्कपुष्पी-मधुर, ग्राही, रसायन, शीतल तथा व्रण, पित्त, कफ, रुधिरविकार, कृमि, कण्डू और कुष्ठको नष्ट करे है ।

विवरण । अर्कपुष्पी जीवन्तिकाका भेद है,इसकी बेल नागरबेलकी समान होती है, पत्ते-गिलोयके समान छोटे २ होते हैं, फूल सूर्यमुखीके समान गोल आता है, और इसमें दूध निकलता है ।

लज्जालुनामानि ।



लज्जालुः स्याच्छमीपत्रा समंगाऽञ्जलिकारिका ।
रक्तपादी नमस्कारी ताम्रा खदिरकेत्यपि ॥

अर्थ-लज्जालु,शमीपत्रा,समगा, अञ्जलिकारिका, रक्तपादी, नमस्कारी,ताम्रा, खदिरका,(कन्दिरी,स्पृका,खदिरपत्रिका,सकोचिनी

समङ्गा, प्रसारिणी, सप्तपर्णी, खदिरी, गण्डमालिका, लज्जा, लज्जिका स्पर्शलज्जा, अस्त्ररोधनी, रक्तमूला, ताम्रमूला, स्वगुप्ता, महाभीता, वशिनी, महौषधी)

संस्कृतभाषामे लज्जालु ।
हिन्दीभाषामे लज्जावन्ती, छुईमुई, शर्मानी, लाजवती इत्यादि।
वंगभाषामें लाजुक, लज्जावती ।
मराठीभाषामे लाजाळु लाजरी, संकोरणी ।
गुजरातीभाषामे रिशामणी ।
कर्णाटकीभाषामे मुदीदरेमुरूटव ।
लैटिन्भाषामे माईमोसासेनसिटाईवा । Mimosasensitiva
मा० पुडिका । Pudica

अस्या गुणा ।

लज्जालुः शीतला तिक्ता कषाया कफपित्तजित् ।
रक्तपित्तमतीसार योनिरोगान्विनाशयेत् ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-लज्जावती (छुईमुई) शीतल, कडवी, कषेली तथा कफ, पित्त, रक्तपित्त, अतिसार और योनिरोगोको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

रक्तापादी कटुः शीता पित्तातीसारनाशिनी ।
शोफदाहश्रमश्वासव्रणकुष्ठकफास्रनुत् ॥ (रा० नि०)

अर्थ-लज्जावती (छुईमुई) चरपरी, शीतल, पित्तातिसारनाशक तथा सूजन, दाह, श्रम, श्वास, घाव, कोढ, कफ और रक्तविकारको दूर करे है ।

विपरीतलज्जालुनामानि ।

लज्जालुर्विपरीतान्या अल्पक्षुपबृहद्दला ॥

अर्थ-विपरीतलज्जालु, अल्पक्षुप, बृहद्दल ।

अस्या गुणा ।

वैपरीत्या च लज्जालुर्ह्यभिधाने प्रयोजयेत् ।
लज्जालुर्वैपरीत्याह्वः कटुरुष्णः कफव्रणुत् ॥
रसे नियामकश्चैव नानाविज्ञानकारकः । (राजनिघण्टु)

अर्थ-विपरीतलज्जालु-चरपरा, गरम, कफनाशक, पारेको बांधनेवाला और अनेक प्रकारके चमत्कार दिखलानेवाला है ।

विवरण । लज्जावन्ती अर्थात् छुईमुईके क्षुप वेलके समान होते हैं, पत्ते छोकर अथवा खैरके समान होतेहैं, फूल-गुलाबी नीले मिश्रित रंगके होते हैं, इसकी जड लाल होती है, इसको स्पर्श करें तो ये लज्जाके मारे समाकर सुकड जाती हैं, पश्चात् विस्तृत होजाती हैं, यह दो प्रकारकी होती है, एक काटेंवाली, एक विना काटेंकी, हाथके लगतेही सुकड सुकडाकर नीचेको झुक जाती है । इसीलिये इसका नाम लज्जावन्ती (छुईमुई) रक्खा है ।

अलम्बुषानामानि ।

अलम्बुषा खरत्वक्च तथा मेदोगला स्मृता ॥

अर्थ-अलम्बुषा, खरत्वक, मेदोगला ।

अस्या गुणाः ।

अलम्बुषा लघुः स्वादु कृमिपित्तकफापहा ॥

अर्थ-अलम्बुषा (लज्जालुका भेद) हलका, स्वादिष्ट तथा कृमि, पित्त और कफनाशक है ।

दुग्धिकानामानि ।

दुग्धी क्षीरात्मिका क्षीरी क्षीरावी च मरुद्भवा ॥

अर्थ-दुग्धी, क्षीरात्मिका, क्षीरी, क्षीरावी, मरुद्भवा,(स्वादुपर्णी, क्षीरिणी, क्षीराविका, ग्राहिणी, कच्छुरा, ताम्रमूला और दुग्धिका)

दुग्धफेनीनामानि ।

दुग्धफेनी पयःफेनी फेनी दुग्धा पयस्विनी ।
लूतारिर्व्रणकेतुश्च गोजापर्णी च सप्तधा ॥

अर्थ-दुग्धफेनी, पयःफेनी, फेनी, दुग्धा, पयस्विनी, लूतारि, व्रणकेतु, गोजापर्णी ।

नागार्जुनीनामानि ।


दुद्धी. (क)


दुद्धी (ख)

नागार्जुनी पयोवर्षा योगिनी लघुदुग्धिका ।

अर्थ-नागार्जुनी, पयोवर्षा, योगिनी, लघुदुग्धिका ।

संस्कृतभाषामे	दुग्धिका, दुग्धफेनी, नागार्जुनी ।
हिन्दीभाषामे	दुद्धी, दुधिया, दूधीकलव ।
वंगभाषामे	दुधि, दुध्या, दुदूले, क्षीरइ, खिरुइ इत्यादि ।
मराठीभाषामे	लघुदुधी, थोरदुधी ।
गुजरातीभाषामे	दुधेलीमोटी, थोरदुधी ।
कर्णाटकीभाषामे	मरिजवणीगे ।
तैलिङ्गीभाषामे	पिलपा लचेट्टु ।
लैटिन् भाषामे	युफोर्बियाहिर्टा Euphorbia hirta यू पार्विफ्लोरा Eu parviflora यू टाईमिफोलिया Eu thymefolia यू पाईल्यूलिका Euphorbia pilulifera
फारसीभाषामे	निशाशत ।

दुग्धिकागुणा ।

दुग्धिकोष्णा गुरू रूक्षा वातला गर्भकारिणी ।
स्वादुक्षीरा कटुस्तिक्ता सृष्टमूत्रमलापहा ॥
स्वादुर्विष्टम्भिनी वृष्या कफकुष्टकृमिप्रणुत् ।(भा०प्र०)

अर्थ-दुद्धी-गरम, भारी, रूखी, बादी, गर्भकारक, स्वादिष्ट, क्षीरयुक्त, मलमूत्रको निकालनेवाली, चरपरी, कडवी, मधुर, विष्टम्भजनक, वीर्य्यवर्द्धक तथा कफ, कोढ, और कृमिनाशक है ।

दुग्धफेनीगुणा ।

दुग्धफेनी कटुस्तिक्ता शिशिरा विषनाशिनी ।
व्रणापसारणी रुच्या युक्त्या चैव रसायनी॥(रा० नि०)

अर्थ-दुग्धफेनी-चरपरी, कडवी, शिशिर, विषनाशक, व्रणनिवाइक, रुचिकारक और किसीके साथ होनेसे रसायन है ।

नागार्जुनी गुणा ।

नागार्जुनी तु मधुरा वृष्या रूक्षा च ग्राहिणी। तिक्ता च वातला गर्भस्थापनी कटुका पटुः॥ धातुवृद्धिकरी हृद्या चोष्णा पारदबन्धिनी । मलस्तम्भकरी मेहकफकुष्ठकृमीन्हरेत् ॥

अर्थ-नागार्जुनी (एकप्रकारकी दुद्धी)-मधुर, वीर्य्यवर्द्धक, रूखी,

ग्राही, कडवी, वातकारक, गर्भस्थापक, चरपरी खारी, धातुवर्द्धक, हृदयको हितकारी, गरम, पारेको बांधनेवाली, मलको स्तम्भन करनेवाली तथा प्रमेह, कफ, कोढ और कृमिको दूर करेहै ।

विवरण । दुद्धीका क्षुप छत्तासा होता है, ऊपरको कम उठताहै, क्षितिमें फैलताहै, दुद्धी तीनप्रकारकी होती हैं, एक नोकदार लाल पत्तोकी, एक गोलपत्तोकी और एक मूगोके दानोके समान छोटे २ पत्तोकी होतीहै, तीनोप्रकारकी दुद्धीमें दूध निकलता है ।

भूम्यामलकीनामानि ।



मुइँआंवला.

भूम्यामली शिवा ताली क्षेत्रामली च झारिका ॥

अर्थ-भूम्यामली, शिवा, ताली, क्षेत्रामली, झारिका (बहुपुष्पी, जटा, अध्यण्डा, तालि, तामलकी, अजटा, सूक्ष्मफला, क्षेत्रामलकी, भूम्यामलकी, वितुन्नक, झटा, अफला, अमला, अजुटा, झाटा, माला, झाटामला, अमलजुटा, तमाली, तमालिका, तामलकी, उच्चटा, दृढपादी, वितुन्ना, वितुन्तिका, भूधात्री, चारटी, वृष्या विपघ्नी, बहुपत्रिका, बहुवीर्य्या, अहिमपदा, वीरा, विश्वपर्णी, हिमालया, अरुहा, भूम्यामलकिका, बहुपत्रा, बृहत्फला, भूपर्वा, दलस्पर्शिनी, बहुपुत्रा, सूक्ष्मदला, दृढपादा, विश्वपर्णी, अमली, तमालिनी, पुत्र-श्रेणिका, आमलकी, हिलोलिका, चोरटा)

संस्कृतभाषामें	भूम्यामलकी ।
हिन्दीभाषामें	भुँईआमला, भद्रऑवला, पातलऑवरा, भोमिआँवरा
बंगभाषामें	भुँईआमला ।
मराठीभाषामें	भुईआंवळी ।
गुजरातीभाषामें	भोंआवली ।

कर्णाटकीभाषामें	आर्नेल्लि ।
तैलिङ्गीभाषामें	नेलाउसीरीके ।
लैटिन्भाषामें	फाईलेन्थस् निरुरी Phyllanthusniruri
	फाईलेन्थस् युरिनेरिया P urinaria

अस्या गुणाः ।

भूधात्री च कषायाम्ला पित्तमेहविनाशिनी ।
शिशिरा मूत्ररोधार्तिशमनी दाहनाशिनी॥ (रा० नि०)

अर्थ-भुंईआमला-कषेला, खट्टा, शीतल तथा पित्त और प्रमेह-नाशक, मूत्ररोधनिवारक और दाहको शान्त करनेवाला है ।

अन्यच्च ।

भूधात्री-वातकृत्तिक्ता कषाया मधुरा हिमा ।
पिपासा कासपित्तास्रकफपाण्डुक्षतापहा ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-भुंईआमला-वातकारक, कडवा, कषेला, मधुर, शीतल तथा पियास, खाँसी, रक्तपित्त कफ, पांडुरोग और क्षतनाशक है ।

अन्यच्च ।

भूधात्री तु विशेषेण विषघ्नी पुत्रदायिनी ॥ (शो० नि०)

अर्थ-भुंईआमला-विशेषकरके विषनाशक और पुत्रदायक है ।

अपिच ।

भूधात्री तु हिमा तिक्ता कषाया मधुरा लघुः ।
रोचनी पाण्डुपित्तास्रकफकुष्ठविषापहा ॥
जयेच्छ्वास तृषा दाह हिक्काकासक्षतक्षयान् । (ग० नि०)

अर्थ-भुईआमला-शीतल, कडवा, कषेला, मधुर, हलका, रुचिकारक तथा पाण्डुरोग, रक्तपित्त, कफ, कोढ, विष, श्वास, तृषा, दाह, हिचकी, खाँसी, क्षत और क्षयका नाश करेहै ।

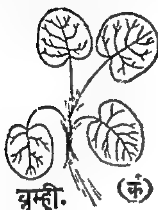
विवरण । भुईआमलेके क्षुप छोटे २ होते हैं, पत्तोंके नीचे राईके दानेके समान फलोंकी शाखा होती हैं ।

ब्राह्मीनामानि ।

ब्राह्मी वयस्था मत्स्याक्षी सुरसा ब्रह्मचारिणी ॥

अर्थ-ब्राह्मी, वयस्था, मत्स्याक्षी, सुरसा, ब्रह्मचारिणी, (सोम वल्लरी, मत्स्याक्षी, सरस्वती, सोम्या, सुरश्रेष्ठा, सुवर्चला, कपोतवेगा, वैधात्री, दिव्यतेजा, महौषधि, स्वायम्भुवी, सौम्यलता, सुरेष्टा, ब्रह्मकन्यका, मण्डूकमाता, मण्डूकी, मेध्या, वीरा, भारती, वरा, परमेष्ठिनी, दिव्या, शारदा, कपोतवङ्का, सोमवल्ली)

मण्डूकपर्णीनामानि।





मण्डूकपर्णी मण्डूकी भेकी मण्डूकपर्णिका ॥

अर्थ-मण्डूकपर्णी, मण्डूकी, भेकी, मण्डूकपर्णिका, (माण्डूकी, त्वाष्ट्री, दिव्या, महौषधी, ब्रह्ममण्डूकी, सुप्रिया, दर्दुच्छदा)

संस्कृतभाषामें	ब्राह्मी, माण्डूकी, ब्रह्ममाण्डूकी ।
हिन्दीभाषामें	ब्रह्मी, ब्रह्ममाण्डूकी, बरमी, चरेली ।
बंगभाषामें	ब्रह्मीशाक, अधाविर्णी, थुलकुडि, थालकुनि।
मराठीभाषामें	ब्राह्मी।
गुजरातीभाषामें	ब्राह्मी, वियब्राह्मी, खडभरामी ।
कर्णाटकीभाषामें	ओंदेलग ।
तैलङ्गीभाषामें	शम्ब्रनीचेट्टु, मण्डूकब्रम्मी ।
तामिलीभाषामें	वींमी, वल्लरीकिरे ।
बम्०	बाम, ब्रह्मी ।
इंग्रेजीभाषामें	इण्डियन् पेनीवर्ट । Indian penny wort
लेटिन्भाषामें	हाइड्रोकोटाईल एश्याटीका Hydrocot yleAssiatica
फारसीभाषामें	जरनव ।

ब्राह्मीगुणाः ।

ब्राह्मी हिमा सरा तिक्ता लघ्वी मेध्या च शीतला। कषाया मधु-

रा स्वादुपाकाऽऽयुष्या रसायनी ॥ स्वर्य्या स्मृतिप्रदा कुष्ठपाण्डुमेहास्रकासजित् । विषशोथज्वरहरी तद्वन्मण्डूकपर्णिनी ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-ब्रह्मी-हिम, सारक (दस्तावर), हलकी, मेधाकारक, शीतल, कषेली, मधुर, स्वादुपाकी, आयुवर्द्धक, रसायन, स्वरको उत्तम करनेवाली, स्मरणशक्तिवर्द्धक तथा कोढ, पाण्डु, प्रमेह, रुधिरविकार, खांसी, विष, सूजन और ज्वरको हरनेवाली है, इस केही समान मण्डूकपर्णीके गुण जानने ।

अन्यच्च ।

ब्राह्मी तु भेदिनी गुर्वी मेध्या पित्तकफापहा ॥ (राजवल्लभ)

अर्थ-ब्रह्मी-भेदक, भारी, मेधाजनक तथा पित्त और कफनाशक है।

अपिच ।

ब्राह्मी शीता कषाया च तिक्ता बुद्धिप्रदा मता । मेध्यायुरग्निजननी सारका स्वादुला लघुः ॥ कण्ठशुद्धिकरी हृद्या स्मृतिदा च रसायना । हृद्या मेह विष कुष्ठं पांडु कास ज्वर जयेत् । शोफकण्डूप्लीहवातरक्तपित्तारुचीर्जयेत् । श्वास शोषं सर्वदोषं कफवातामयाञ्जयेत् । सर्वेऽप्येते गुणा ब्रह्ममण्डूक्यामपि संस्थिताः । (नि० र०)

अर्थ-ब्रह्मी-शीतल, कषेली, कडवी, बुद्धिदायक, मेधाजनक, आयुर्वर्धक, अग्निजनक, सारक, स्वादिष्ठ, हलकी, कण्ठशोधक, हृदयको हितकारी, स्मरणशक्तिवर्द्धक, रसायन तथा प्रमेह, विष, कोढ, पाण्डुरोग, खासी, ज्वर, सूजन, कण्डू, प्लीहा, वातरक्त, पित्त, अरुचि, श्वास, शोष, सकलदोष, कफ और वातको दूर करनेवाली है । ब्रह्ममाण्डूकीके भी इसीके समान गुण जानने ।

अन्यच्च ।

ब्राह्मी तु पिच्छिलायुष्या सरोन्मादविमर्दिनी ।
वयसः स्थापनी मेध्या वाक्स्वरस्मृतिदा परा ॥
तिक्ता हृद्या कटुः पाके श्वासश्लेष्मनिकृन्तनी। (ग नि)

अर्थ-ब्रह्मी-पिच्छिल, आयुर्वर्द्धक, सारक (दस्तावर), उन्मादनाशक, अवस्थास्थापक, मेधाकारक तथा वाणी, स्वर और स्मरणशक्तिवर्द्धक है । कडवी, हृदयको हितकारी, पचनेमे चरपरी और श्वास तथा कफनाशक है ।

मण्डूकपर्णीगुणाः।

मण्डूकपर्णिकालघ्वी स्वादुपाका सरा हिमा॥(रा० व०)

अर्थ-ब्रह्ममाण्डूकी-हलकी,पचनेमे स्वादिष्ठ,दस्तावरऔरशीतलहै।

अस्यार्कगुणा ।

ब्रह्ममण्डूकिका पाण्डुविषशोथज्वरान्हरेत् (इतिदश)

अर्थ-ब्रह्ममण्डूकीका अर्क-पाण्डुरोग विषदोष,सूजन और ज्वरको दूर करनेवाला है।

विवरण। ब्राह्मीके क्षुपका छत्तासा प्रायः सजल क्षिति अथवा जलाशयके समीप भूमिमे होताहै, पत्ते-छोटे २ गोल एक ओरसे खिले हुए होते है दूसरी ब्रह्ममण्डूकी होतीहै, उसके पत्ते छोटे होतेहैं।

द्रोणपुष्पीनामानि ।

द्रोणा च द्रोणपुष्पी च फलेपुष्पा च कीर्तिता ॥

अर्थ- द्रोणा, द्रोणपुष्पी, फलेपुष्पा, (क्षवपत्री, कुम्भयोनि, कुरुम्बिका, चित्राक्षुप, कुरुम्बा, सुपुष्पी, चित्रपत्रिका, श्वसनक, पालिन्दी, कुम्भयोनिका, छत्राणी, छत्रका, कौण्डिन्य, वृक्षसारक)

संस्कृतभाषामे	द्रोणपुष्पी ।
हिन्दीभाषामे	गूमा, गोमा ।
बंगालीभाषामे	द्रोणपुष्पी (घलघसे)
मराठीभाषामे	कुम्भा, तुम्बा ।
गुजरातीभाषामे	कुवो ।
कर्णाटकीभाषामे	तुम्ब ।
तैलंगीभाषामे	लतुगतुम्मि ।
लेटिनभाषामे	ल्युकासासिफेलोटस् Loucas cephalotus

अस्या गुणाः ।

द्रोणपुष्पी गुरुः स्वाद्वी रूक्षोष्णा वातपित्तकृत् ।
सतीक्ष्णा लवणा स्वादुपाका कट्वी च भेदिनी ॥
कफामकामलाशोथतमकश्वासजन्तुजित् ।(भा० प्र०)

अर्थ-द्रोणपुष्पी (गूमा)-भारी,स्वादिष्ठ,रूखी, गरम, वातपित्तकारक,तीक्ष्ण और लवणरसयुक्त,पचनेमेभी स्वादिष्ठ, चरपरी,दस्तावर तथा कफ,आम,कामला,सूजन,तमकश्वास और कृमिको दूर करेहै।

अन्यच्च ।

द्रोणपुष्पी कफार्शोघ्नी कामलाकृमिशोथजित्॥(रा. वा)

अर्थ-द्रोणपुष्पी (गूमा)-कफ, बवासीर, कामला, कृमि और सूजनको दूर करे है।

अपिच।

द्रोणपुष्पी कटुः सोष्णा रुच्या वातकफापहा ।
अग्निमांद्यहरा चैव पक्षाघातस्य नाशिनी॥(शो० नि०)

अर्थ-गूमा-चरपरा, गरम, रुचिकारक तथा वात, कफ, मंदाग्नि और पक्षाघात रोगनाशक है।

अस्या पत्रगुणा ।

द्रोणपुष्पीदलं स्वादु रूक्षं गुरु च पित्तकृत् ।
भेदनं कामलाशोथमेहज्वरहरं कटु ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-गूमाके पत्ते-स्वादिष्ठ, रूखे, भारी, पित्तकारक, भेदक तथा कामला, सूजन, प्रमेह और ज्वरको हरनेवाले हैं।

विवरण। गूमाका क्षुप होता है, गुच्छे गांठ २ मे होते हैं, उन गुच्छोंमे सफेद फूल होता है। और फूलके ऊपर दो पत्ते होते हैं। इसके भीतर बीज होते ह। मात्रा २ मासेकी।

आदित्यभक्तानामानि।

आदित्यभक्ता वरदार्कभक्ता सुवर्चला सूर्यलतार्ककान्ता ।
मण्डूकपर्णी सुरसंभवा च सौरिस्सुतेजार्कहिता रवीष्टा ॥
मण्डूकी सत्यनाम्नी स्यादेषा मार्तण्डवल्लभा ।
विक्रान्ता भास्करेष्टा च भवेदष्टादशाह्वया ॥

अर्थ-आदित्यभक्ता-वरदा,अर्कभक्ता,सुवर्चला,सूर्यलता, अर्ककान्ता,मण्डूकपर्णी,सुरसम्भवा,सौरि,सुतेजा,अर्कहिता,रवीष्टा,मण्डूकी सत्यनाम्नी, मार्तण्डवल्लभा, विक्रान्ता,भास्करेष्टा (सूर्यावर्त्ता,रवि, भीता) और दूसरी ब्रह्मसुवर्चला इसीकाही भेद है।

संस्कृतभाषामे	आदित्यभक्ता, सुवर्चला, ब्रह्मसुवर्चला।
हिन्दीभाषामे	हुरहुज, ब्रह्मसोंचली, सोंचली।
वंगभाषामे	हुड्हुडे, पनसलते।

मराठीभाषामें	सूर्यफूल।
गुजरातीभाषामें	सूरजमुखी ।
कर्णाटकीभाषामें	हुरहुर, आदित्यभक्ति ।
तैलिङ्गीभाषामें	सूर्यकान्तिमु ।
इंग्रेजीभाषामें	सन्फ्लावर । Sunflower
लैटिन्भाषामें	हेलिन्थस् एन्युअस् । Helianthus annus
फारसीभाषामें	गुलेआफतावपरस्त ।
अर्बीभाषामें	अरदमून ।

आदित्यभक्तागुणा ।

आदित्यभक्ता शिशिरा स तिक्ता पटुस्तथोग्रा कफहारिणी च। त्वग्दोषकण्डूव्रणकुष्ठभूतग्रहोग्रशीतज्वरनाशिनी च॥(रा०र०)

अर्थ-आदित्यभक्ता(हुरहुज)-शीतल,कडवी,खारी,उग्र,कफनाशक तथा त्वचाके विकार,कण्डू,व्रण,कुष्ठ,भूत,और उग्रशीतज्वरनाशक है।

अन्यच्च ।

आदित्यभक्ता कटुका शीता तिक्ताऽतिपित्तला । रूक्षा स्वाद्वी च कट्वी च कफवातव्रणापहा । शीतज्वरं भूतबाधां ग्रहपीडां विनाशयेत् ॥ मेहं कृमींश्च कुष्ठं च त्वग्दोषं च विनाशयेत् ॥ (नि० र०)

अर्थ-आदित्यभक्ता (हुरहुज)-चरपरी, शीतल,कडवी,अत्यन्त पित्तकारक, रूखी,स्वादिष्ठ, खारी, तथा कफ,वात,व्रण,शीतज्वर, भूतबाधा, ग्रहपीडा, प्रमेह, कृमि, कोढ और त्वचाके दोषोंको दूर करनेवाली है।

अन्यच्च ।

सुवर्चला हिमा रूक्षा स्वादुपाका सरा गुरुः ।
अपित्तला कटुः क्षारा विष्टम्भकफवातजित् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-हुरहुज-शीतल, रूखी, पचनेमे स्वादिष्ठ, दस्तावर, भारी, पित्तकारक नहीं, चरपरा, खारी तथा विष्टम्भ, कफ, और वातको दूर करनेवाला है। अपिच।

सुवर्चला गुरुः शीता मूत्रला कर्णशूलनुत् ॥

अर्थ-हुरहुज-भारी, शीतल, मूत्रजनक और कर्णशूलनाशक है।

ब्रह्मसुवर्चलागुणा ।

अन्या तिक्ता कषायोष्णा सरा रूक्षा लघुः कटुः ।

निहन्ति कफपित्तास्रश्वासकासारुचिज्वरान् ॥
विस्फोटकुष्ठमेहास्रयोनिरुक्कृमिपाण्डुताः ॥

अर्थ-ब्रह्मसुवर्चला (ब्रह्मसोचली)-कपेली, गरम, सारक (दस्तावर), हलकी, चरपरी तथा कफ, रक्तपित्त, श्वास, खासी, अरुचि ज्वर, विस्फोटक, कोढ, प्रमेह, रुधिरविकार, योनिरोग, कृमि और पाण्डुरोगको दूर करनेवालीहै ।

अन्यच्च ।

अन्योष्णा कुष्ठमेहाश्मकृच्छ्रज्वरहरा लघुः॥ (म०नि०)

अर्थ-ब्रह्मसोचली-गरम, हलकी, तथा कोढ, प्रमेह, पथरी, मूत्रकृच्छ्र और ज्वरको हरनेवाली है ।

आदित्यपत्रागुणाः ।

अदित्यपत्रा वीर्योष्णा कट्वी सदीपनी मता। स्वर्या रसायानी तिक्ता तुवरा च सरामता ॥ रूक्षा लघ्वी च संप्रोक्ता-कफवातविनाशिनी । रक्तदोषं ज्वरं श्वास कास विस्फोटक तथा ॥ कुष्ठं मेहं चारुचि च योनिशूलं तथाश्मरीम् । मूत्रकृच्छ्रं पाण्डुरोग गुल्मं चैव विनाशयेत् ॥ (नि० र०)

अर्थ- आदित्यपत्रा-उष्णवीर्य, चरपरा, अग्निप्रदीपक, स्वरको उत्तम करनेवाला, रसायन, कडवा, कपेला, दस्तावर, रूखा हलका तथा कफ, वात, रुधिरविकार, ज्वर, श्वास, खासी, विस्फोटक, कोढ, प्रमेह, अरुचि, योनिशूल, पथरी, मूत्रकृच्छ्र, पाण्डुरोग और गुल्मका नाश करेहै ।

विवरण । ब्रह्मसुवर्चला-अर्थात् हुरहुरकी बेल तथा क्षुप होतेहैं, यह विशेषकरके बागोमे बोये जाते है, प्रायः इसपर सूर्योदयके होनेपर फूल प्रफुल्लित होजाते हैं, बेलवाले हुरहुरमे जो फूल आते हैं वे नीले रंगके होते है, और क्षुपवाले हुरहुरके फूल सफेद होते है, बहुत सुन्दर और सूर्य्याकार होते हैं परन्तु बहुत छोटे २ होतेहैं ।

वन्ध्याकर्कोटकीनामानि।

वन्ध्याःकर्कोटकी देवी कान्ता योगेश्वरीति च ।
नागारिर्भक्तदमनी विषकण्टकिनी तथा ॥

अर्थ-वध्याकर्कोटकी, देवी, कान्ता, योगेश्वरी, नागारि, भक्तदमनी, विषकण्टकिनी (नागाराति, वन्ध्या, नागहन्त्री, मनोज्ञा,

पथ्या, दिवा, पुत्रदा, सकन्दा, कन्दवल्ली, ईश्वरी, श्रीकन्टा, सुगन्धा, सर्पदमनी, विषकन्दकिनी, वरा, नक्रदमनी, कन्दशालिनी, भूतापहा, सर्वाधषी, विषमोहप्रशमनी, महायोगेश्वरी)

संस्कृतभाषामें	वन्ध्याकर्कोटकी ।
हिन्दीभाषामें	बाझखखसा, बनककोडा, बांझककोडा ।
वंगभाषामें	तित्कॉकराले, तित्कांकडी ।
मराठीभाषामें	बाझकर्टोली ।
गुजरातीभाषामें	वांझकण्टोलो ।
कर्णाटकीभाषामें	बंजेमड्डुवागलु ।
लेटिनभाषामें	मोमोंडिका डायोटकामेल । Momordica dioi camal

अस्या गुणा ।

वन्ध्याकर्कोटकी तिक्ता कटूष्णा च कफापहा ।
स्थावरादिविषघ्नी च शस्यते सा रसायने ॥(रा०नि०)

अर्थ-बांझककोडा-कडवा, चरपरा, गरम, कफनाशक, स्थावरादि विषविनाशक और पारेको बाधनेवाला है ।

अन्यच्च ।

वन्ध्या कर्कोटकी लघ्वी कफनुद्व्रणशोधिनी ।
सर्पदर्पहरी तीक्ष्णा विसर्पविषहारिणी ॥(भावप्रकाश)

अर्थ-वनककोडा-हलका, कफनाशक, व्रणशोधक, सर्पके विषको हरनेवाला, तीक्ष्ण तथा विसर्प और विषको दूर करनेवाला है ।

अपिच ।

वन्ध्याकर्कोटकी तिक्ता कट्वी चोष्णा लघुः स्मृता। रसायनी शोधिनी च स्थावरादिविषापहा ॥ कफनेत्रशिरोरोगव्रणवीसर्पकासहा । रक्तदोषं सर्पविषनाशयेदिति कीर्त्तिता ॥ (नि र०)

अर्थ-वनककोडा-कडवा, चरपरा, गरम, हलका, रसायन, शोधक, स्थावरादिविषनाशक तथा कफ नेत्ररोग, मस्तकरोग, व्रण, विसर्प, खासी, रुधिरविकार और सांपके विषको दूर करने वाला है।

विवरण-वन्ध्याकर्कोटकी अर्थात् बाझककोडेकी बेल ककोडेके समान जगलके वृक्षोंपर फैलजातीहै, परन्तु इसमे फल नही आते, इसलिये इसको बाझककोडा कहते है, फलके स्थानमे खाली एक कोष होताहै और इसकी जडके नीचे खोदनेसे एककन्द निकलताहै।

अस्या कन्दगुणा ।

वन्ध्याकर्कोटकीकन्दो हन्ति श्लेष्मविषद्वयम्॥(शो०नि०)

अर्थ-वनककोडेका कन्द-कफ और दोनो प्रकारके विष,(स्थावर और जंगम) को दूर करनेवाला है ।

मार्कण्डिकानामानि ।

मार्कण्डिका भूमिचरी मार्कण्डी मृदुरेचनी ॥

अर्थ-मार्कण्डिका, भूमिचरी, मार्कण्डी, मृदुरेचनी, (भूमिवल्ली, पीतपुष्पी, पीतपुष्पा, महौषधी, जालतीका)

संस्कृतभाषामे	मार्कण्डिका ।
हिन्दीभाषामे	भुईखखसा । (सनाय)
बंगभाषामे	काकरोलभेद ।
मराठीभाषामे	सोनामुखी ।
द०	सोनामुखी ।
दे०	आहुली ।
गुजरातीभाषामे	मीठीआवलय ।
कर्णाटकीभाषामे	तलाडवल्ली ।
तैलङ्गीभाषामे	नेलतयडी ।
इंग्रेजीभाषामे	एलेग्जेंड्रियन-सेना । Alexandrian-Sena
लैटिन्भाषामें	सेन्नफोलिआ । Sennafolia
	केसियाएगस्टिफोलिआ ।Cassia augustifolia
फारसीभाषामे	सना ।
अरबीभाषामे	सना ।

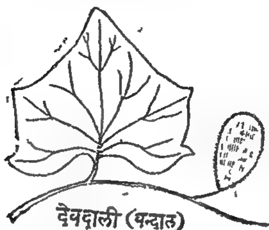
अस्या गुणा ।

मार्कण्डिका कुष्ठहरी ऊर्द्ध्वाधःकायशोधिनी ।
विषदुर्गन्धकासघ्नी गुल्मोदरविनाशिनी॥ (भा० प्र०)

अर्थ-भुईखखसा-कुष्ठनाशक, ऊपर और नीचेसे शरीरका शोधन करनेवाला तथा विष, दुर्गन्ध, खांसी, गुल्म और उदररोगोंको हरनेवाला है।

विवरण । भुईखखसाकी एक लता होतीहै,पत्ते-परवलकी समान होतेहै और फूल पीले रंगके होतेहै ।

देवदालीनामानि ।



देवदाली (बन्दाल)

जीमूतकः कण्टफला गरागरीवेणी सहा कोपफला च कट्फला।
घोरा कदम्बाविपहाचकर्कटीस्याद्देवदाली खलु सारमूषिका॥
वृत्तकोषा विषघ्नी च दाली लोमशपत्रिका ।
तुरगिका च तर्कारी नाम्नामेकोनविंशतिः ॥

अर्थ-जीमूतक, कण्टफला, गरागरी, वेणी, सहा, कोपफला, कट्फला, घोरा, कदम्बा, विपहा, कर्कटी, देवदाली, सारमूषिका, वृत्तकोषा, विषघ्नी, दाली, लोमशपत्रिका, तुरगिका, तर्कारी (देवताड, गरनाशिनी, घोषा, आशुविषहा, चतुरगका, देवदालिका, पीता, खरस्पर्शा)

संस्कृतभाषामे	देवदाली ।
हिन्दीभाषामे	सोनैया, घघरबेल, बिदाली घुसरान बंदाल ।
बंगभाषामे	घोपकलताविशेष, देयाताडा ।
मराठीभाषामे	देवदाली, देवडगरीफल ।
गुजरातीभाषामे	कुकडवेल्य ।
तैलिङ्गीभाषामे	डातरगण्डि, लताविशेषमु ।
कर्णाटकीभाषामें	देवडंगर ।
इंग्रेजीभाषामे	ब्रिस्टलि-ल्युफा । Bristly-Luffe
लैटिन्भाषामे.	ल्युफाएकिनेटा । Luffa Echinata
या०	बदाल ।

अस्या गुणा ।

देवदाली रसे पाके तिक्ता तीक्ष्णा विषापहा ।

वामनी हन्ति गुदजकफशोफामकामलाः॥
ज्वरकासारुचिश्वासहिध्मापाण्डुक्षयकृमीन्। (रा नि.)

अपि च।

अर्थ-देवदाली(घघरबेल)-रस और पाकमें कडवी, तीक्ष्ण, विषनाशक,वमनकारक,तथा गुदजरोग,कफ,शोफ,आम, कामला,ज्वर, खांसी,अरुचि, श्वास हिध्म, पाण्डु और क्षयरोगका नाश करे है।

अन्यच्च।

देवदाली वमिकरा तिक्ता चोष्णा च ऊष्मणा। तीक्ष्णा पाण्डुकफश्वासकासार्शःक्षयनाशिनी॥ कामलाकृमिहिक्काघ्नी ज्वरशोथविषापहा। भूतबाधारुचिहरा चोदुरोविषनाशिनी॥ फलमस्याः सर तिक्त गुल्मकृमिकफापहम्। शूलार्शःकामलावातनाशक परिकीर्तितम्॥ (नि० र०)

अर्थ-देवदाली (घघरबेल)-वमनकारक, कडवी, गरम, चरपरी, तीक्ष्ण तथा पाण्डुरोग, कफ,श्वास, खांसी, बवासीर, क्षय,कामला, कृमि, हिचकी, ज्वर, सूजन, विष, भूतबाधा, अरुचि और मूषेके विषको दूर करनेवाली है। इसका मूल-सारक, कडवा तथा गुल्म, कृमि, कफ, शूल, बवासीर और कामला वातको हरनेवाली है।

अन्यच्च।

देवदालीत्रय श्वासज्वरकासकफापहम्।
आखोविष निहन्त्याशु वामकञ्च विरेचकम्॥
श्वेता रक्ता च पीता च देवदाली गुणैः समा।(शो०नि०)

अर्थ-तीनों प्रकारकी देवदाली-श्वास, ज्वर, खांसी, कफ और मूषेके विषको दूर करेहै तथा वमनकारक और विरेचक है। सफेद, लाल और पीली इन तीनो देवदालीके गुण समान है।

विवरण। देवदाली,बन्दाल, घघरबेल, सुनैया और खखसाके फलवाली बडीबेल होतीहै, खेतकी वाडोपर किसान लोग बहुत लगादेतेहै, फूल-सफेद पीले और लाल तीन रंगके होते है, फलोके ऊपर बहुत छोटे २ कांटे होतेहै,इसका फल छोटी तुराईकेसा होताहै।

जलपिप्पलीनामानि।

जलपिप्पल्यभिहिता शारदी शकुलादनी।

मत्स्यादनी मत्स्यगन्धा लाङ्गलीत्यपि कीर्तिता॥

अर्थ-जलपिप्पली, शारदी, शकुलादनी, मत्स्यगन्धा, लाङ्गली (महाराष्ट्री, तोयवल्लरी, अग्निज्वाला, चित्रपत्री, प्राणदा, तृणशीता, बहुशिखा)

संस्कृतभाषामे	जलपिप्पली ।
हिन्दीभाषामे	पनिसिगा, गगतिरिया जलपीपर ।
बंगभाषामे	कॉचड़ाघास, पनिसिगा ।
मराठीभाषामे	जलपिंपळी ।
गुजरातीभाषामे	रतवेलियो ।
कर्णाटकीभाषामे	होसुगुलु ।
इंग्रेजीभाषामे	परपल् लिपिया Purple Lippia
लैटिनभाषामे	लिपियानोडिफ्लोरा । Lippia Nodiflora
फारसीभाषामे	पीपलआबी ।
अरबीभाषामे	फिलफिलमाय ।

अस्या गुणाः ।

जलपिप्पलिका हृद्या चक्षुष्या शुक्रला लघुः ।
संग्राहिणी हिमा रूक्षा रक्तदाहव्रणापहा ॥
कटुपाकरसा रुच्या कषाया वह्निवर्द्धिनी । (भा० प्र०)

अर्थ-जलपीपल-हृदयको हितकारी, नेत्रोको हितकारी, शुक्रजनक, हलकी, मलरोधक, शीतल, रूखी, पचनेमे और रसमे चरपरी, रुचिकारक, कषेली, अग्निवर्द्धक तथा रुधिरविकार, दाह और व्रणको दूर करे है ।

अ-पच्च ।

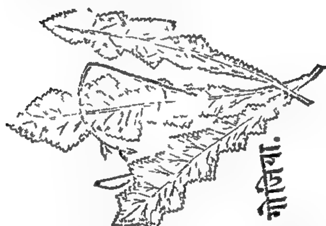
जलपिप्पलिका हृद्या चक्षुष्या शीतला मता । रसकाले च कटुका ग्राहिणी शुक्रला लघुः ॥ रूक्षा तीक्ष्णा च तुवरा मुखशुद्धिकरी मता । रुच्याग्निदीपनी वातकारिणी रक्तदोषहा ॥ रसदोषं क्रमीन्दाह व्रण श्वास कफ तथा । वात विष भ्रम मूर्च्छां तृषां पित्तज्वर हरेत् ॥ (नि० र०)

अर्थ-जलपीपल-हृदयको हितकारी, नेत्रोको हितकारी, शीतल, कटुरसान्वित, ग्राही, शुक्रजनक, हलकी, रूखी, तीक्ष्ण, कषेली, मुखको शुद्ध करनेवाली, रुचिकारक, अग्निप्रदीपक, वातकारक तथा

रुधिर विकार रसदोष, कृमि, दाह, व्रण, श्वास, कफ, वात, विष, भ्रम, मूर्च्छा, तृषा और पित्तज्वरको दूर करे है।

विवरण । जलपीपलके क्षुप-प्रायः सजल भूमिमें उत्पन्न होते हैं, पत्ते-बडी नोनियाके समान और नोकदार होते हैं, इसमें पीपलके समान एक बाल निकलती है।

गोजिह्वानामानि ।



गोजिह्वा दार्विका गोभी कुरसा दार्विपत्रिका ॥

अर्थ-गोजिह्वा, दार्विका, गोभी, कुरसा, दार्विपत्रिका (अनड्डुजिह्वा, दार्विका, दर्वी, दार्वी, गोजिह्विका, खरपत्री, वातोना, अधोमुखा, अधःपुष्पी)।

संस्कृतभाषामें	गोजिह्वा ।
हिन्दीभाषामें	गोजिया, गोभी ।
बङ्गभाषामें	दाडिशाक ।
मराठीभाषामें	पाथरी ।
गुजरातीभाषामें	भोपाथरी ।
तैलिङ्गीभाषामें	येदुनालुकचेट्टु, भरीलिकचेट्टु ।
लैटिन्भाषामें	एलिफेण्टोपस् स्केवर । Elephantopus Scabar
फारसीभाषामें	कलमरूमी ।

अस्या गुणाः ।

गोजिह्वा वातला शीता ग्राहिणी कफपित्तनुत् ।
हृद्या प्रमेहकासास्रव्रणज्वरहरी लघुः ॥
कोमला तुवरा तिक्ता स्वादुपाका रसा स्मृता । (भा० प्र०)

रुधिर विकार रसदोप, कृमि, दाह, व्रण, श्वास, कफ, वात, विप, भ्रम, मूर्च्छा, तृपा और पित्तज्वरको दूर करे है।

विवरण। जलपीपलके क्षुप-प्रायः सजल भूमिमें उत्पन्न होते हैं, पत्ते-बडी नोनियाके समान और नोकदार होते हैं, इसमे पीपलके समान एक बाल निकलती है।

गोजिह्वानामानि।



गोजिह्वा दार्विका गोभी कुरसा दार्विपत्रिका ॥

अर्थ-गोजिह्वा,दार्विका,गोभी,कुरसा,दार्विपत्रिका (अनडुज्जिह्वा, दर्विका, दर्वी, दार्वी, गोजिह्विका, खरपत्री, वातोना, अधोमुखा, अधःपुष्पी)।

संस्कृतभाषामे	गोजिह्वा।
हिन्दीभाषामे	गोजिया, गोभी।
बङ्गभाषामे	दाडिशाक।
मराठीभाषामें	पाथरी।
गुजरातीभाषामे	भोपाथरी।
तैलिङ्गीभाषामे	मेदुनालुकच्चेट्टु, भरीलिकचेट्टु।
लैटिन्भाषामे	एलिफेण्टोपस् स्केवर। Elephantopus Scabar
फारसीभाषामे	कलमरूमी।

अस्या गुणा।

गोजिह्वा वातला शीता ग्राहिणी कफपित्तनुत्।
हृद्या प्रमेहकासास्रव्रणज्वरहरी लघुः ॥
कोमला तुवरा तिक्ता स्वादुपाका रसा स्मृता। (भा० प्र०)

अर्थ-गोभी-वातकारक, शीतल, ग्राही, कफपित्तनाशक,हृदयको हितकारी, हलकी, तथा प्रमेह, खाँसी, रुधिरविकार, व्रण और ज्वरको हरनेवाली है, तथा कोमल, कषेली, कडवी, पचनेमे और रसमे स्वादिष्ठ है ।

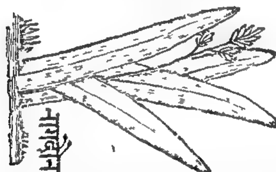
अन्यच्च।

गोजिह्वा कटुका तिक्ता शीतला व्रणरोपिणी ।
पित्त सर्वविष हन्ति कासारुचिविनाशिनी॥(नि०र०)

अर्थ-गोभी-चरपरी, कडवी, शीतल, व्रणको भरनेवाली तथा पित्त, सर्वप्रकारके विष,खाँसी और अरुचिको दूरकरनेवाली है ।

विवरण । गोभीका क्षुप होताहै, पत्ते-लम्बे और खरखरे होते है, फूल-सुवर्णके वर्णके समान चक्राकार होताहै, पत्तोके बीचमे एक बाल निकलतीहै । इसको शाकरी गोभी नही, समझना चाहिये

नागदमनीनामानि ।



विज्ञेया नागदमनी बला मोटा विषापहा ।
नागपुष्पी नागपत्रा महायोगेश्वरीति च ॥

अर्थ-नागदमनी, बला, मोटा, विषापहा, नागपुष्पी, नागपत्रा, महायोगेश्वरी, (जम्बु, जाम्बती, वृक्षा, रक्तपुष्पी,जाम्बवी,मलघ्नी, दुर्धर्षा,दुःसहा,वृत्ता,वृत्तपुष्पा,मदघ्नी,विषमर्दिनी,वि[illegible]ला,वनकुमारी विषारी, श्रीकन्दा, कदशालिनी, विषविनाशिनी,)

संस्कृतभाषामे	नागदमनी ।
हिन्दीभाषामे	नागदमन, नागदौन ।
वगभाषामे	नागदमना ।
मराठीभाषामे	नागदवणी ।
गुजरातीभाषामे	नागडमण ।
कर्णाटकीभाषामे	नागदमनी ।

तैलङ्गीभाषामें ईश्वरिचेट्टु दरणमु ।
तामिलीभाषामे माचिपत्री ।
नेपालीभाषामे तितापात ।
लैटिन्भाषामे आराटिमासियाव्हुलगेरिस् साइन ए इण्डियन ।
Artımsıa vulgarıs Syn A Indıan

अस्या गुणा ।

वला मोटा कटुस्तिक्ता लघुः पित्तकफापहा । मूत्रकृच्छ्रव्रणात्रक्षो नाशयेज्जालगर्दभम् ॥ सर्वग्रहप्रशमनी विशेषविषनाशिनी । जय सर्वत्र कुरुते धनदा सुमतिप्रदा ॥ (भा०प्र०)

अर्थ–नागदौन–चरपरी, कडवी, हलकी, तथा पित्त, कफ, मूत्रकृच्छ्र, घाव, राक्षसबाधा, और जालगर्दभरोगको दूरकरनेवाली है । सर्वग्रहोको शान्तिकरनेवाली और विशेपकरके विपनाशक है, सर्वत्र जयकारक, धन और सुमतिदायक है ।

अन्यच्च ।

ज्ञेया जम्बूस्त्रिदोषघ्नी तीक्ष्णोष्णा कटुतिक्तका ।
उदराध्मानदोषघ्नी कोष्ठशोधनकारिणी ॥ (रा०नि०)

अर्थ–नागदौन–त्रिदोषनाशक, तीक्ष्ण, गरम, चरपरी, कडवी, उदरके अफारेको दूर करनेवाली, और कोठेको शुद्ध करनेवाली है।

अपिच ।

प्रोक्ता नागदमन्युष्णा तिक्ता लघ्वी रुचिप्रदा ।
कोष्ठशुद्धिकरी तीक्ष्णा कटुका योनिदोषजित् ॥
लूतां सर्पविष वात कफ वान्ति कृमीन्व्रणम् ।
मूत्रकृच्छ्रं चोदरं च जालगर्दभक तथा । त्रिदोपं च प्रमेहं च कासं कण्ठरुजं तथा । शूलं गुल्मं रक्तदोप ज्वरं सर्वविषाणि च । अध्मान ग्रहपीडां च नाशयेदिति कीर्तिता । (नि० र०)

अर्थ–नागदौन–गरम, कडवी, हलकी, रुचिदायक, कोठेको शुद्धकरनेवाली, तीक्ष्ण, चरपरी तथा योनिदोप, मकडी और सॉपका

विप, कफ, वमन, कृमि, घाव, मूत्रकृच्छ्र, उदररोग, जालगर्दभ, त्रिदोप, प्रमेह, खासी, कण्ठरोग, शूल, गुल्म, रुधिरविकार, ज्वर, सर्वविष, आध्मान और ग्रहपीडाको दूर करनेवाली है ।

विवरण । नागदमनको कितनेक वैद्य तो दौना कहते हैं और कितनेक भिपग्वर सुदर्शन कहते हैं; सो हमको ठीक २ निश्चय नहीं होता कि, नागदमन क्या वस्तु है ।

छिक्कनीनामानि



नकछिकनी.

छिक्कनी क्षवकृत्तीक्ष्णा छिक्किका घ्राणदुःखदा ।

अर्थ-छिक्कनी, क्षवकृत, तीक्ष्णा, छिक्किका, घ्राणदुःखदा, (उग्रा, उग्रगन्धा, क्षवक, क्रूरनासा, सवेदनापटु)

संस्कृतभाषामें	छिक्कनी ।
हिन्दीभाषामें	नाकछिक्कनी ।
बंगभाषामें	हॉंचुटी, छिक्नी, हचेतागाछ ।
मराठीभाषामें	नाकशिकणी ।
गुजरातीभाषामें	नाकछीकणी ।
लैटिन्भाषामें	सेंटिपीडा ऑर्बिक्युलरीस् । Sentipeda Orbiculeris
फारसीभाषामें	बेरगाडजवा ।
अरबीभाषामें	उफरककुदुश ।

अस्या गुणा

छिक्कनी कटुका रूक्षा तीक्ष्णोष्णा वह्निपित्तकृत् ।
वातरक्तहरी कुष्ठकृमिवातकफापहा ॥(भा० प्र०)

अर्थ-नाकछिकनी-चरपरी, रूखी, तीक्ष्ण, गरम, अग्निजनक, पित्तकारक, तथा वातरक्त, कोढ, कृमि, वात,और कफनाशक है ।

अपिच ।

छिक्कनी कटुका रुच्या पित्तला चाग्निदीपनी ।
लघ्वुष्णा तुवरा तीव्रगन्धा त्वग्दोपनाशिनी ॥

कफवातश्वेतकुष्ठकृमिरक्तरुजस्तथा।
ग्रहपीडां भूतबाधां दृष्टिं चैव विनाशयेत्॥

अर्थ–नाकछिकनी–चरपरी, रुचिकारक, पित्तकारक, अग्निदीपक, हलकी, गरम, कषेली, तीव्रगन्धयुक्त, तथा त्वचाके दोष, कफ, वात, श्वेतकुष्ठ, कृमिरोग, रक्तविकार, ग्रहकी पीडा, भूतबाधा और दृष्टिके दोषोंको दूर करनेवाली है।

विवरण। नाकछिकनीका क्षुप छोटा होताहै, पत्ते छोटे होतेहैं। इसके नीचे कंद होताहै, इसके पत्तोंको वा डंडीका सूंघनेसे छींकें आतीहैं।

अन्यच्च।

छिक्कनी श्वासकासासृग्विषघ्नी वामनी मता। (शो॰नि॰)

अर्थ–नाकछिकनी–श्वास, खांसी, रुधिरविकार, और विषविनाशक है। तथा वमनकारक है।

कुकन्दरनामानि।

कुकुन्दरस्ताम्रचूडः सूक्ष्मपत्रो मृदुच्छदः।

अर्थ–कुकुन्दर, ताम्रचूड, सूक्ष्मपत्र, मृदुच्छद, (कुक्कुरद्रु)

संस्कृतभाषामें	कुकुन्दर, कुक्कुरद्रु।
हिन्दीभाषामें	कुकुरौंदा।
बंगभाषामें	कुकुरशोंका, कुकुरमुता।
मराठीभाषामें	कुकुरबंदा।
गुजरातीभाषामें	कोकरुंदा
लेटिन्भाषामें	ब्ल्युमियाओडोरेटा। Blumea Odorat
फारसीभाषामें	कमाफिसुस।
अरबीभाषामें	सनौबरुल् अर्द।

अस्य गुणाः।

कुकुन्दरः कटुस्तिक्तो ज्वरघ्नश्चोष्णकृन्मतः।
रक्तरुक्कफदाहानां तृषायाश्चैव नाशनः॥
अस्यार्द्रमूलं च मुखे धारितं मुखदोषनुत्। (नि॰र॰)

अर्थ–कुकरौंदा–चरपरा, कडवा, ज्वरनाशक, गरम, तथा रुधिरविकार, कफ, दाह और तृषाको दूर करनेवाला है। इसकी कच्ची जडको मुखमें रखनेसे मुखके रोग दूर होतेहैं।

विवरण। कुकरौंदेके क्षुप,लम्बे लम्बे होते हैं। विशेष करके शरदीके स्थानोंमें उत्पन्न हो जातेहैं, पत्ते तम्बाकूकी समान बडे बडे होतेहैं, इनके ऊपर लाल शिखा होतीहै।

सुदर्शननामानि।

सुदर्शना सोमवल्ली चक्राङ्गी मधुपर्णिका।

अर्थ-सुदर्शना-सोमवल्ली, चक्राङ्गी, मधुपर्णिका (चक्राह्वा,दध्यानी, वृषकर्णी, चक्राह्वा)।

हिन्दीभाषामें	सुदर्शन।
बंगभाषामें	सुदर्शनगुलञ्ज, पद्मगु०।

अस्या गुणाः।

सुदर्शना स्वादुरुष्णा कफशोफास्रवातजित्।

अर्थ-सुदर्शन-स्वादिष्ठ, गरम तथा कफ, सूजन, और वातरक्तको हरनेवाला है।

विवरण। सुदर्शनका क्षुप चक्रकी समान होताहै,पत्ते लम्बे लम्बे ईखकी समान होतेहैं कभी कभी किसीपर सुफेद रंगका फूलभी आताहै।

आखुकर्णीनामानि।



मूषाकर्ण्याखुपर्णी च वृषपर्ण्याखुपर्णिका।
भूमिचरी द्रवन्ती च शम्बरी भूधराश्रया॥

अर्थ-मूषाकर्णी, आखुपर्णी, वृषपर्णी, आखुकर्णिका, भूमिचरी, द्रवन्ती, शम्बरी, भूधराश्रया (कृशिका, उन्दुरकर्णी, न्यग्रोधी, मूषिकपर्णी, वृश्चिककर्णी, बहुकर्णिका, माता, भूमिचरी, चण्डा, बहुपादिका, प्रत्यश्रेणी, वृषा, पुत्रश्रेणी, आदिभू, चित्रा, सुवर्णी

शतमूलिका, आखुपर्णिका,मूषिकपर्णी, प्रतिपर्णशिफा, सहस्रमूषी, विक्रान्ता, पत्रश्रेणी, आखुपर्णी, पर्णिका, भूदरीभवा, उपचित्रा, मूषिकाह्वया, रण्डा, आखुपर्णिका, मूषिका, फञ्जिपत्रिका, मूषिपर्णिका, सचित्रा मूषीकर्णी, सुकर्णिका, न्यग्रोधी)।

संस्कृतभाषामे	आखुकर्णी, मूषाकर्णी, द्रवन्ती ।
हिन्दीभाषामे	मूसाकानी ।
बंगभाषामे	उन्दुरकानीपाना ।
मराठीभाषामे	उंदिरकानीभोपनी ।
गुजरातीभाषामे	उंदरकनी ।
कर्णाटकीभाषामे	वल्लिहर्दे ।
तैलिंगीभाषामे	एलुकचेविचट्टु ।
लैटिन्भाषामे	आईपोमिया रेनिफोर्मिस, Ipomoea Renniformis
	लेक्टट्कारिमोटीलफोरा । Lecteıremotıflora
फारसीभाषामें	गोरोमुष, सतर ।
अरबीभाषामे	अजातुल्फार।
यु०	शरदम् ।

अस्या गुणा ।

आखुकर्णी कटुस्तिक्ता कपाया शीतला लघुः ।
विपाके कटुका मूत्रकफामयकृमिप्रणुत् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-मूसाकानी-चरपरी, कडवी,कषेली, शीतल, हलकी,पचनेमे चरपरी तथा मूत्ररोग, कफरोग और कृमिरोगको दूर करनेवालीहै।

अन्यच्च ।

द्रवन्ती कृमिहृत्तीक्ष्णा योनिदोपहरा सरा।(शो०नि०)

अर्थ-मूसाकानी-कृमिनाशक, तीक्ष्ण, सारक और योनिदोषहारक है ।

अपिच ।

तद्व्याखुकर्णी कटुका तिक्ता चोष्णा च शीतला । रसायनी रसा लघ्वी कपाया कफपित्तनुत् ॥ शूलज्वरकृमिग्रन्थि मूत्रकृच्छ्रप्रमेहहृत्॥अनाहोदरहृद्रोगविषपाण्डुभगन्दरान्। कुष्ठानि नाशयेदेवं पूर्ववैद्यैर्निरूपितम् ॥

अर्थ-मूसाकानी-चरपरी, कडवी, गरम,शीतल, रसायन,सारक, हलकी, कपेली तथा कफ, पित्त, शूल, ज्वर, कृमि, ग्रन्थि, मूत्रकृच्छ्र,

प्रमेह, आनाह, उदररोग, हृदयरोग, विष, पाण्डुरोग, भगन्दर और कुष्ठको दूर करनेवाली है।

बृहदाखुकर्णीगुणाः।

आखुकर्णी बृहत्युक्ता शीतला मधुरा स्मृता।
रसबन्धकरी नेत्र्या रसायन्यथ शूलनुत्॥
ज्वर कृमीन् व्रणं चाखुविष चैव विनाशयेत्।(नि०र०)

अर्थ-बडी मूसाकानी-शीतल, मधुर, पारेको बाधनेवाली, नेत्रोंको हितकारी, रसायन तथा शूल, ज्वर, कृमि, व्रण और मूषेके विष हरनेवाली है।

विवरण। मूषाकर्णीका छत्ता पृथ्वीपर फैला हुआ होता है, पत्ते मूषेके कानकी समान होते है, हरेपत्तेके नीचे जड होती है, डाली सूक्ष्म और लालीलिये होती है और फल बहुत लगते है।

मयूरशिखानामानि।

बर्हिचूडा तु शिखिनी शिखालुः सुशिखा शिखा।
शिखिबला केकिशिखा मयूराद्याभिधाशिखा॥

अर्थ-बर्हिचूडा, शिखिनी, शिखालु, सुशिखा, शिखा, शिखिबला, केकिशिखा, मयूरशिखा, (नीलकण्ठशिखा, सहस्राहि, मधुच्छदा, मयूरचूडा)

संस्कृतभाषामें	मयूरशिखा।
हिन्दीभाषामें	मोरशिखा (लालमुर्गा)
बंगभाषामें	मयूरशिखा।
मराठीभाषामें	मयूरशिखा।
गुजरातीभाषामें	मोरशिखा।
कर्णाटकीभाषामें	होरेयसुव।
तैलिङ्गीभाषामें	मयूरशिखियने क्षुपविशेषमु।
लेटिन्भाषामें	सिलोसिया क्रिस्टाटा। Celosia Cristata
फारसीभाषामें	असनाने, असलान।

अस्या गुणाः।

नीलकण्ठशिखा लघ्वी पित्तश्लेष्मातिसारजित्। (भा०प्र०)

अर्थ-मोरशिखा-हलकी तथा पित्त, कफ और अतिसारको दूर करनेवाली है।

अन्यच्च ।

बर्हिचूडा रसे स्वादुर्मूत्रकृच्छ्रविनाशिनी ।
बालग्रहादिदोषघ्नी वश्यकर्मणि शस्यते ॥

अर्थ-मोरशिखा-स्वादुरसान्वित, मूत्रकृच्छ्रनाशक, बालग्रहादिदोषविनाशक और वशीकरण कर्ममे प्रशंसायोग्य है ।

अपिच ।

मयूराह्वा शिखा शीता कषायाऽम्लाऽम्लपाकिनी ।
लघ्वी पित्तकफं पित्तमतीसारं विनाशयेत् ॥ (कै०चि०)

अर्थ-मोरशिखा-शीतल, कषेली, खट्टी, पचनेमेभी खट्टी, हलकी तथा पित्त, कफपित्त और अतिसारनिवारक है ।

विवरण । मोरशिखाके छोटे छोटे क्षुप होते है, यह प्रायः शुस्क भूमिमे उत्पन्न होतीहै, पत्ते-कटीले होते है, इसके ऊपर मोरकी समान चोटी होती है, इसी कारण इसको मोरशिखा कहते है, कितनेक वैद्य मोरशिखाको लज्जावंतीका भेद कहते है ॥

इति श्रीशालिग्रामनिघण्टुभूषणे गुडूच्यादिवर्गः ॥ ३ ॥

अथ पुष्पवर्गः ।

पुष्पनामानि ।

स्त्रियः सुमनसः पुष्पं प्रसूनं कुसुमं सुमम् ॥

अर्थ-सुमनस, पुष्प, प्रसून, कुसुम, सुम, (सून, प्रसव, सुमन)

पुष्परसनामानि ।

पुष्पद्रवः पुष्पसारः पुष्पस्वेदश्च पुष्पजः ।
पुष्पनिर्य्यासकश्चैव पुष्पाम्बुजपडाह्वयः ॥

अर्थ-पुष्पद्रव, पुष्पसार, पुष्पस्वेद, पुष्पज, पुष्पनिर्यासक, पुष्पांबुज ।

संस्कृतभाषामे	पुष्प, पुष्पद्रव ।
हिन्दीभाषामे	फूल, पुष्पका अर्क, गुलाबादि अथवा पुष्पका मधु ।
बंगलाभाषामें	फुल, फुलेरस, गोलापजलप्रभृति वा मधु ।
मराठीभाषामे	फूल ।
गुजरातीभाषामे	फुल ।

कर्णाटकीभाषामें हुविनयसरु ।
तैलङ्गीभाषामें पुग्रु ।
इंग्रेजीभाषामें फ्लावर । Flower
लैटिन्‌भाषामें फ्लोस् Flos फ्लोरिस् Flores
फारसीभाषामें गुल ।
अरबीभाषामें वर्द ।

पुष्पधारणगुणाः ।

पुष्पस्य धारणं कान्तिवर्द्धनं कामकारकम् ।
ओजः श्रीवर्द्धकं चैव पापग्रहविनाशनम् ॥ (नि० र०)

अर्थ-पुष्पको धारण करनेसे-कान्ति, काम, ओज और लक्ष्मीकी वृद्धि होती है तथा पापग्रहका नाश होता है ।

पुष्पद्रवगुणाः ।

पुष्पद्रवः सुरभिशीतकषायगौल्यो दाहभ्रमार्तिवमि-
मोहमुखामयघ्नः । तृष्णार्तिपित्तकफदोषहरः सरश्च
सन्तर्पणश्चिरमरोचकहारकश्च ॥

अर्थ-पुष्पद्रव-(पुष्पका अर्क तथा मधु)-सुगन्धित, शीतल, कषेला, गौल्य तथा दाह, भ्रम, वमन, मोह, मुखरोग, तृषा, पित्त, कफ और बहुत कालकी अरुचिको दूर करनेवाला है । तथा सारक और सन्तर्पण है ।

अन्यच्च ।

पुष्पद्रवः सरः शीतस्तुवरः श्रमदाहहा ।
वान्तितृट्पित्तरोगघ्नो मुखरोगविनाशनः ॥(ग्रन्थान्तर)

अर्थ-पुष्पद्रव-सारक (दस्तावर), शीतल, कषेला तथा श्रम, वमन, तृषा, पित्तरोग और मुखरोग नाशक है ।

जातीनामानि ।

सुमना मालती जाती चेतकी च सुरप्रिया ॥

अर्थ-सुमना-मालती-जाती, चेतकी, सुरप्रिया (सुरभिगन्धा, सुकुमारी, सन्ध्यापुष्पी, मनोहरा, राजपुत्री, मनोज्ञा, तैलमालिनी, जनेष्टा, हृद्यगन्धा, जाति, राजपुत्रिका, जातिका, प्रियवदा, मालिनी, वासन्ती, महसन्ती, सुवसन्ता, वसन्तजा, वार्षिका,)(२स्वर्णजातिका,

स्वर्णजाती, प्रियंवदा, मनोज्ञा, नृपात्मजा, जाति और वसन्तजाता) यह नाम पीली जातिके हैं ।

संस्कृतभाषामें	जाती, स्वर्णजाती ।
हिन्दीभाषामें	जाती (चमेली) जाई, पीलीजाई ।
वंगभाषामें	जाती (चामिली) स्वर्णजाती ।
मराठीभाषामें	पांढरी जाई, पिवळीजाई ।
कर्णाटकीभाषामें	जाजि ।
तैलङ्गीभाषामें	जाईपुष्पालु ।
तुर्कीभाषामें	जाजिपु ।
अंग्रेजी भाषामें	जैसमिन । Jasmine
लैटिन्भाषामें	जेस्मिनं फ्लेक्सूसाईलिम् । Jasmine Fslexylis

अस्या गुणाः ।

जाती तु तुवरा तिक्ता लघ्वी चोष्णा कटुः स्मृता। मुखपाकं कफवातं मुखदन्तशिरोरुजम्॥ अक्षिरोगं विषं कुष्ठं रक्तदोषं व्रण तथा। पित्त कृमीन्नाशयति कलिकाऽस्या व्रणापहा॥ विस्फोटनेत्ररुक्कुष्ठनाशिनीति बुधा जगुः । पुष्पं सुगन्धि संप्रोक्तं मनोज्ञं कफपित्तनुत् ॥ (नि० र०)

अर्थ-जाती-कषेली, कडवी, हलकी, गरम, चरपरी, वमनकारक तथा मुखपाक, कफ, वात, मुखरोग, दन्तरोग, मस्तकरोग, नेत्ररोग, विष, कुष्ठ, रुधिरदोष, घाव, पित्त और कृमिरोगको दूर करनेवाली है । इसकी कली-व्रण, विस्फोट, नेत्ररोग और कुष्ठको नष्ट करे है । इसका फूल-सुगन्धित, मनोज्ञ, कफ और पित्तनाशक है ।

स्वर्णजातीगुणाः ।

स्वर्णजाती च संप्रोक्ता दन्तशूलरुजापहा ।
रक्तदोषं च पूयं च कर्णशूलं च नाशयेत् ॥
गुणास्त्वन्ये तु जातीवप्रोक्ताः पूर्वमनीषिभिः ।

अर्थ-पीलीजाती-दन्तशूल, रुधिरविकार, पूय (राध, पीप) और कर्णशूलको दूर करनेवाली है। इसके शेष गुण जातीकी समान जानने।

विवरण । जातीकी-बेल-प्रायः, चौमासेमें अधिकतासे होतीहै, फूल-सफेद और बारीक पॅखडीका होता है ।

उपजातिनामानि ।



उपजातिः सुवर्षा च सुरूपा श्रीमती तथा ।
वर्षापुष्पा च चम्बेली वलिह्वासा च वेशिका ॥

अर्थ-उपजाति, सुवर्षा, सुरूपा, श्रीमती, वर्षापुष्पा, चम्बेली, वलिह्वासा, वेशिका ।

संस्कृतभाषामे	उपजाति ।
हिन्दीभाषामे	चमेली ।
वंगभाषामे	चामिली ।
मराठीभाषामे	चमेली ।
गुजरातीभाषामे	चंबेली ।
कर्णाटकीभाषामे	मोगराचाभेदु ।
इंग्रेजीभाषामे	स्पॅनिश जास्मीन । Spanish Jamine
लेटिन्‌भाषामे	जेस्मिन ग्रान्डिफ्लोर । Jasmınumgrandı florum
फारसीभाषामे	यासमीन ।
अरबीभाषामे	यासमन् ।

अस्या गुणा ।

चम्बेली तुवरा तिक्ता व्रणकुष्टविपास्रजित् ।
शिरोक्षिमुखदन्तार्त्तिहरा त्वग्दोषनाशिनी ॥

अर्थ-चमेली-कषेली, कडवी तथा घाव, कोढ, विष, रुधिरविकार,

शिरोरोग, नेत्ररोग, मुखरोग, दन्तरोग, और त्वचाके विकारोंको दूर करनेवाली है।

विवरण। चमेलीकी वेल-वन, उपवन, बाग और पुष्पवाटिकामें लगाई जातीहै, इसकी कली लम्बी डंडीकी होतीहैं, फूलका रंग सफेद और ऊपर कुछ लाली लिये होता है, फूलकी सुगन्धि अत्यन्त प्रिय होती है चमेलीके फूलोंमे तिलोको बसाकर अर्थात् रखकर कुछ दिन पीछे कोल्हूमें पिरवाते है,तब उस तेलको फुलेल और चमेलीका तेल कहते है; वह उत्तम सुगन्धिवाला और शीतल होता है।

व. ै-मल्लिकामुद्गरनामानि

वार्षिकी शीतभीरुश्च मदयन्ती प्रमोदिनी
भद्रवल्ली प्रिया सौम्या मल्लीका वनचन्द्रिका ॥
मुद्गरको गन्धराजः सप्तपत्रश्च त्रिदप्रियः ।

अर्थ-वार्षिकी, शीतभीरु, मदयन्ती, प्रमोदिनी (अतिगन्धा, गवाक्षी, भूपदी, वार्षिकी, अष्टपदी, दन्तपत्रा, देवलता, श्रीपदी, षट्पदानन्दा, मुक्तबन्धना, दलकोपका) भद्रवल्ली, प्रिया, सौम्या, मल्लिका, वनचन्द्रिका, (भूपदी, शीतभीरु, तृणशून्य, तृणशून्या, गौरी, वनचन्द्रिका, नारीष्टा, गिरिजा, सिता, मल्ली) मुद्गरक, गन्धराज, सप्तपत्र त्रिदप्रिय, (मुद्गरा, राजपुत्री, वर्तुल, षट्पद, प्रिया, गन्धसार, अतिगन्ध, प्रिय, जनेष्ट, मृगेष्ट)

संस्कृतभाषामें	१ वार्षिकी, २ मल्लिका, ३ मुद्गर ।
हिन्दीभाषामें	बेला, मोतिया, घुघुरुमोतिया वनमोगरा, मोगरा ।
वंगभाषामें	वेलफुलगाछ, मल्लिकाफुलरगाछ, मल्लिकाभेद।
गुजरातीभाषामें	बेल्य, डोलर, जंगलीचिखलयो; रानमोगरो
मराठीभाषामें	मोगरी, रानमोगरी, सोटईमोगरा ।
कर्णाटकीभाषामें	वल्लिमाल्लिगे
तैलिङ्गीभाषामें	मल्लिपुष्पालु, मल्लेचेट्टु, कुलकान्ताचेट्टु ।
लैटिन्भाषामें	जैसामिनम् प्युविसेन्स Jasminum Pubesens जैसामिनम सँबिँबक

वार्षिकीगुणाः ।

वार्षिकी शीतला लघ्वी तिक्ता दोषत्रयापहा ।
कर्णाक्षिमुखरोगघ्नी तत्तैलं तद्गुणं स्मृतम् ॥

अर्थ-वेला-शीतल, हलका, कडवा, त्रिदोषनाशक तथा कर्ण नेत्र और मुखरोगको दूर करनेवाला है। इसके तेलके गुणभी इसीकी समान जानने।

मल्लिकागुणा।

मल्लिकोष्णा लघुर्वृष्या,तिक्ता च कटुका हरेत्।
वातपित्तास्यदृग्व्याधिकुष्ठारुचिविषव्रणान् ॥

अर्थ-मल्लिका (एकप्रकारका मोतिया)-गरम,हलका, वीर्यजनक,कडवा, चरपरा तथा वात, पित्त, नेत्ररोग, कोढ, अरुचि, विष और व्रणको नष्ट करे है।

मुद्गरगुणा ।

मुद्गरो मधुरः शीतः सुरभिः सौख्यदायकः।
मनोजमधुपानन्दकारीपित्तप्रकोपहृत् ॥ (रा० नि०)

अर्थ-मोतिया-मधुर,शीतल,सुगन्धि,सुखदायक, कामको उत्पन्न करनेवाला, भौंरोको आनन्दजनक,और पित्तके कोपको दूर करैहै।

अन्यच्च।

वार्षिकी शिशिरा हृद्या सुगन्धिः पित्तनाशिनी।
कफवातविषस्फोटकृमिदोषामनाशिनी ॥(रा० नि०)

अर्थ-वेला-शीतल, हृदयको हितकारी, सुगन्धित, पित्तनाशक तथा कफ, वात, विष, स्फोट, कृमि और कामको दूर करनेवाला है।

अपिच।

मल्लिका कटुतिक्ता स्याच्चक्षुष्या मुखपाकहृत्।
कुष्ठविस्फोटकण्डूतिविषव्रणहरा परा ॥

अर्थ-मल्लिका(मोतियाभेद)चरपरा,कडवा,नेत्रोंकोहितकारी,मुखपाकनाशक तथा कुष्ठ,विस्फोट,कण्डू,विष और व्रणको हरनेवाली है।

मल्लिकासम्भव पुष्प तिक्त जयति मारुतम्॥(शो०नि०)

अर्थ-मल्लिकाके फूल-कडवे और वातको जीते है।

विवरण। मोतिया, बेला, घुघुरमोतिया और मोगरा, यह सब एकसेही होते है। पत्ते-बेरीके पत्तोसे कुछेक छोटे और विशेष रेखावाले होते है, फूल-अत्यत सुगन्धित सुपेद रगके आते है। मोतियाके फूल अधिक गोल होते है, मोगराके फूल कुछ कम गोल होते है

नेपालीवनमल्लिकानामानि।

वासन्ती प्रहसन्ती च सुवसन्ता वसन्तजा।
सुकुमारा शिखरिणी नेपाली वनमल्लिका॥

अर्थ-वासन्ती-प्रहसन्ती, सुवसन्ता, वसन्तजा, सुकुमारा, शिखरिणी, नेपाली, वनमल्लिका, (नेपाली, मधुगन्धा, गुच्छपुष्पा, ग्रीष्मिका, राजादनदला, वनजा, सूक्ष्मपुष्पिका, सतला, नवमालिका, भद्रवर्म्मा, देवलता, गन्धनिलया, मालिका, ग्रीष्मभवा, अतिमोदा, ग्रैष्मी, ग्रीष्मोद्भवा, सुकुमारी, सुरभि, शुचिमल्लिका, सुगन्धा, नेवाली, ग्रीष्मी, वनवासिनी, कान्ता, अतिसुरभि, नेपाली, नेमाली)

संस्कृतभाषामे	नेपाली, वासन्ती।
हिन्दीभाषामे	नेवारी, वासन्ती।
वंगभाषामे	नेपाली, नेओआर, वासन्ती,।
गुजरातीभाषामे	नेवरी।
मराठीभाषामे	नेवाळी, रायनेवाळी, वीरवन्ति।
कर्णाटकीभाषामे	विरवन्तिगे, विरवन्तिभेद्।
लैटिन्भाषामे	इक्सोरा पार्विफ्लोरा। Ixora parviflora

अस्यागुणाः।

नेपाली कटुका तिक्ता शीता च सुरभिर्लघुः।
त्रिदोषनेत्ररोगघ्नी कर्णाननरुजापहा॥
सर्वरोगहरा प्रोक्ता गुणज्ञैः पूर्वकोविदैः।

अर्थ-नेवारी-चरपरी, कडवी, शीतल, सुगन्धि, हलकी तथा त्रिदोष, नेत्ररोग, कर्णरोग और मुखरोग, सर्वरोगनाशक है।

विवरण। नेवारीके वनमे बडे बडे वृक्ष होते है, पत्ते-लम्बे कुछ गोल होतेहै, फूल-आमके बेरकी समान गुच्छोमे आते हैं।

यूथिकानामानि।

यूथिका यूथि वासन्ती बालपुष्पी शिखण्डिनी।
सा पीता स्वर्णयूथी च हेमपुष्पी मनोहरा॥

अर्थ-यूथिका, यूथि, वासन्ती, बालपुष्पी, शिखण्डिनी (गणिका, अम्बष्ठा, मागधी, प्रहसन्ती, बालपुष्पिका, भृङ्गानन्दा, पुण्यगन्धा,

गुणज्वला, चारुमोदा, शिखण्डी, हरिणी, शंखयूथिका, सुगन्धिका यूथितरुणी, सुगन्धा, मोदनी, बहुगन्धा, गजाह्वया) यह जुहीके नाम है। स्वर्णयूथी, हेमपुष्पी मनोहरा, (सुवर्णयूथी, हेमपुष्पा, सुगन्धा, हेमयूथिका, युवतीष्टा, रक्तगन्धा, शिखण्डी, नागपुष्पिका, पीतयूथी, पीतिका, कनकप्रभा, हेमा, गन्धाढ्या, हेमपुष्पिका, सुवर्णाह्वा, व्यक्तगन्धा, पीतयूथी) यह पीली जुहीके नाम हैं।

संस्कृतभाषामे	यूथिका, यूथी।
हिन्दीभाषामे	जुही, पीलीजुही।
बंगभाषामे	जुइ स्वर्णजुई।
मराठीभाषामे	पाढरी लहान जुई, पिवळी जुई।
गुजरातीभाषामे	जुइजिगरी, पीली जुई।
कर्णाटकीभाषामे	यरडुमोल्ले।
तैलिङ्गीभाषामे	जुईपुष्पालु।
लैटिन्भाषामे	जास्मिन ऑरिक्युलेटम्। Jasminum Auriculatum

द्विविधयूथिकागुणा।

यूथिकायुगलं स्वादु शिशिरं शर्करार्त्तिनुत्॥ पित्तदाहतृषाहारि नाना त्वगदोषनाशनम्॥ सर्वासां यूथिकानां तु रसवीर्य्यादिसाम्यता। सुरूपञ्च सुगन्धाढ्य स्वर्णयूथ्यां विशेषतः॥ (रा० नि०)

अर्थ-दोनोप्रकारकी जुही-स्वादिष्ठ, शीतल तथा शर्करारोग, पित्त, दाह, तृषा और नानाप्रकारके त्वचाके विकारोको दूर करनेवाली है, सर्वप्रकारकी जुही रस, वीर्य्य और विपाकमे समानही है, परन्तु पीली जुही सुरूपमे और सुगन्धिमे अधिक है।

अन्यच्च।

यूथियुग्मं हिम तिक्तं कटुपाकरसं लघु।
मधुर तुवरं हृद्यं पित्तघ्नं कफवातलम्॥
व्रणास्रमुखदन्ताक्षिशिरोरोगविषापहम्।

अर्थ-दोनोप्रकारकी जुही-शीतल,कडवी,पचनेमे चरपरी,हलकी, मधुर, कषेली, हृदयको हितकारी, पित्तनाशक,कफ और वातकारक

तथा व्रण,रुधिरविकार,मुखरोग,दन्तरोग,नेत्ररोग,मस्तकरोग, और विपको नाश करनेवाली है।

विवरण। जुहीकी बेल-वन,उपवन और पुष्पवाटिकामे होतीहै, फूलकी पॅखडी सपेद रंगकी और सुगन्धिवाली होती है, दूसरी पीलेरंगकी जुही होतीहै, उसके फूल पीलेरंगके होतेहै, पीली जुही अत्यन्त शोभायुक्त और सुगन्धिदायक है।

माधवीन.मानि।

अतिमुक्ता माधवी च सुवसन्ता पराश्रया।
अतिमुक्तः कामुकश्च मण्डपो भ्रमरोत्सवः॥

अर्थ-अतिमुक्ता,माधवी,सुवसन्ता,पराश्रया, अतिमुक्त, कामुक. मण्डप, भ्रमरोत्सव (चन्द्रवल्ली, सुगन्धा, भृङ्गप्रिया, भद्रलता,भूमिमण्डप, भूषणा, वासन्ती, पुण्ड्रकलता, अतिमुक्तक, माधविका, विमुक्तक, माधवीलता, वसतन्दूती, और लतामाधवी)

संस्कृतभाषामे	माधवी।
हिन्दीभाषामे	माधवी।
वंगभाषामे	माधवीलता।
गुजरातिभाषामे	माधवीलता, रक्तपित्ते।
मराठीभाषामे	पीलवेल।
कर्णाटकीभाषामे	इन्दगोञ्चे, विरवन्तिगे।
तैलिङ्गीभाषामे	माधवतीगे, पुष्पुलगुरिविद।
इंग्रेजीभाषामे	क्लुस्टर्ड हिप्टेज। Clustered Hiptage
लैटिन्भाषामे	हिप्टेजमेडेब्लोटा Hiptage Madablota

अस्या गुणाः।

माधवी कटुका तिक्ता कपाया मदगन्धिका।
पित्तकासव्रणान् हन्ति दाहशोपविनाशिनी॥ (नि० र०)

अर्थ-माधवीलता-चरपरी, कडवी, कपैली, मदगन्धवाली तथा पित्त, खाँसी, व्रण, दाह और शोपको दूर करनेवाली है।

अन्यच्च।

माधवी मधुरा शीता लघ्वी दोपत्रयापहा। (भा० प्र०)

अर्थ-माधवीलता-मधुर,शीतल, हलकी,और त्रिदोषनाशक है।

विवरण। माधवी लताकी बडी बेल होती है, पत्ते-चम्पाकी समान होते हैं, फल-तिलकी समान होते हैं, और गुच्छोंमें आते हैं।

मालतीनामानि।

मालती सुमना जातिर्वासन्ती युवती तथा ॥

अर्थ-मालती, सुमना, जाति, वासन्ती, युवती।

संस्कृतभाषामें मालती।
हिन्दीभाषामें ”
वंगभाषामें ”
मराठीभाषामें ”
गुजरातीभाषामें ”
लैटिन्‌भाषामें एकाइटेस् केरियोफिल्लेटा। Echites Caryophyllata

अस्या गुणाः।

मालती कफपित्तास्यरुग्व्रणक्रिमिकुष्ठजित्।
चक्षुष्यं कुसुमं तस्याः पत्रं तत्कफपित्तजित्॥ (रा०व०)

अर्थ-मालतीलता कफ, पित्त, मुखरोग, व्रण, क्रमि, और कुष्ठनाशक है। मालतीके फूल-नेत्रोंको हितकारी है। मालतीके पत्ते-कफ और पित्तको हरनेवाले हैं।

अपरञ्च।

मालती कफपित्तास्त्रत्वग्दोषक्रिमिकुष्ठनुत्।
वामनी व्रणशोथघ्नी पूतिकर्णास्यपाकहृत्॥ (शो०नि०)

अर्थ-मालती-कफ, रक्तपित्त, त्वचाके दोष, कृमि, और कुष्ठनाशक है, वमनकारक तथा व्रण, सूजन और कानसे राधके बहनेको दूर करे है।

विवरण। मालती लताकीभी बेल होती है, फल झुमखोंमें आते है, पत्ते-जीवन्तीकी समान होते हैं।

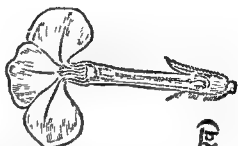
तरुणी शतपत्री कुब्जकनामानि।

सेवती रामतरुणी कर्णिका चारुकेसरा।
शतपत्री सौम्यगन्धा सवृत्ता शतपत्रिका॥
कुब्जको भद्रतरुणी वृत्तपुष्पोऽतिकेसरः।

अर्थ-सेवती, रामतरुणी, कर्णिका, चारुकेसरा (कुमारी, सहा, शत-

पत्री, गन्धाढ्या, शिववल्लभा, भृङ्गेष्टा, तरुणी, सुदला, बहुपत्रिका, भृङ्गवल्लभा) शतपत्री, सौम्यगन्धा, सुवृत्ता, शतपत्रिका, (महाकुमारी, लाक्षापुष्पा, अतिमञ्जुला, सुमना, सुशीता, शतदला, सुवृत्ता,) कुब्जक, भद्रतरुणी, वृत्तपुष्प, अतिकेसर, (महासह, कण्टकाढ्य, खर्व, अलिकुलसंकुल, बृहत्पुष्प, महासहा, कण्टकाढ्या, देवतरुणी, वारिकण्टक)







गुलाब। (ख)

संस्कृतभाषामे	तरुणी, शतपत्री, कुब्जक।
हिन्दीभाषामे	सेवती, गुलाब, कूजा, सदागुलाब, ।
बंगभाषामे	सेउती, गोलाप, कूजा श्वेतगुलाप।
मराठी भाषामे	गुलाबाचेफूल, शेवती, काटेशेवन्ती।
गुजरातीभाषामे	शेवती, गुलाब, मोशमीगुलाब।
कर्णाटकीभाषामे	सेवतिगे, चेवडे।
तैलिङ्गभाषामे	गुलाबीपुवु, चेमण्डिचेट्टु।
इंग्रेजीभाषामे	केबेज रोज Cabbage rose गुलकन्द Confection of rose (कंफेक्शन आफ रोज)
लेटिन्भाषामे	रोसा सेण्टिफोलिया Rosa Centifolia रोसाडेमेसेना। Rosadamascena
फारसीभाषामे	गुले, गुलमुर्ख, गुलेसुशकी।
अरबीभाषामे	वर्दअहमरनसरीन, जरजवीन, गुलकद, मावलवर्द, अर्क

शतपत्रीगुणाः।

शतपत्री हिमा तिक्ता कषाया कुष्ठनाशिनी।
मुखस्फोटहरा रुच्या सुरभिः पित्तदाहनुत्॥(रा०नि०)

अर्थ-गुलाब-शीतल, कडवा, कषेला, कुष्ठनाशक, मुखके मुहासोको दूर करनेवाला, रुचिको करनेवाला, सुगन्धित तथा पित्त और दाहको शान्त, करनेवाला है

अन्यच्च।

शतपत्री हिमा तिक्ता सरा रुच्याऽनिलप्रणुत्।
दाहज्वरास्रपित्तघ्नीकुष्ठविस्फोटनाशिनी॥ (आ० सं०)

अर्थ-गुलाब शीतल, कडवा, दस्तावर, रुचिकारक, वातनाशक तथा दाह, ज्वर रक्तपित्त कुष्ठ, और विस्फोटविनाशक है।

तरुणीगुणाः।

शतपत्री हिमा हृद्या ग्राहिणी शुक्रला लघुः।
दोषत्रयास्रजिद्वर्ण्या तिक्ता कट्वी च पाचनी॥

सेवती-शीतल,हृदयको हितकारी, मलरोधक शुक्रजनक, हलकी, त्रिदोषनाशक, रक्तदोषविनाशक,कडवी,चरपरी और पाचक है।

अन्यच्च।

शतपत्री सरा वृष्या शीता हृद्या च शुक्रला। लघ्वी च तुवरा स्वाद्वी सुरभिर्ग्राहिणी मता॥ वर्ण्या कट्वी च तिक्ता च रुच्या चाग्निप्रदीपनी। त्रिदोषं मुखपाकं च रक्तपित्तं कफं तथा॥ पित्तं रक्तविकारं च दाहं चैव विनाशयेत्। पुष्पं तु शीतलं वर्ण्यं वातपित्तविदाहनुत्॥

अर्थ-सेवती-सारक, वीर्य्यवर्द्धक, शीतल, हृदको हितकारी, शुक्रजनक, हलकी, कषेली, स्वादिष्ठ, सुगंधित, मलरोधक, वर्णको सुंदर करनेवाली, चरपरी, कडवी, रुचिकारक, अग्निप्रदीपक तथा त्रिदोष, मुखपाक, रक्तपित्त, कफ, पित्त, रुधिरविकार और दाहको दूर करनेवाली है। इसका फूलशीतल, वर्णको उज्ज्वल करनेवाला तथा वात पित्त और दाहनाशक है।

रक्तकुब्जकगुणाः।

रक्तस्तु कुब्जको रक्तविकृतेर्नाशको मतः।

वृश्चिकाणां विषं चैव त्रिदोषं चैव नाशयेत् ॥
अन्ये गुणाः समुद्दिष्टाः श्वेतकुब्जकवद्बुधैः। (नि०र०)

अर्थ-रक्तकुब्जक (गुलाब)-रक्तविकार, बिच्छूका विष और त्रिदोषनाशक है। और इसके गुण सदागुलाबकी समान जानने।

कुब्जकगुणाः।

कुब्जकः सुरभिः स्वादुः कषायानुरसः सरः।
त्रिदोषशमनो वृष्यः पित्तघ्नश्चेतरस्तथा ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-कूजा (सदागुलाब)-सुगन्धित, स्वादिष्ठ, किञ्चित् कषेला, सारक (कुछ दस्तावर) त्रिदोषकी शान्ति करनेवाला, वीर्यवर्द्धक और पित्तनाशक है।

अपि च।

कुब्जकः सुरभिः शीतो रक्तपित्तकफापहः।
पुष्पं तु शीतलं वर्ण्यं दाहघ्नं वातपित्तजित्।(राजनिघण्टु)

अर्थ-कूजा (सदागुलाब)-सुगन्धि, शीतल तथा रक्तपित्त और कफ नाशक है। इसका फूल-शीतल, वर्णको सुन्दरतादायक तथा दाह और वातपित्तनाशक है।

विवरण। सेवती, गुलाब और कूजा यह तीनों क्षुपजातिके वृक्ष वन उपवन और पुष्पवाटिकामे होते है, तहां सेवती सपेद फूलवाली और प्राचीन है गुलाब,लाल फूलका,पीलेफूलका सपेद फूलका और अनेक जातिका नवीन है, अर्थात् पहिले हिन्दोस्थानमे नही होता था, कूजेपे भी सपेद फूल आता है, इसके फूलमे गुलाब और सेवती की अपेक्षा अल्प सुगन्धि होती है। एक मोशमी गुलाब, दूसरा बारहमासी होता है, मोशमी गुलाब चैत्र वैशाखमे खिलताहै और इसमे सुगन्धि अत्यन्त होतीहै, बारहमासी गुलाबपे सदैव फूल आते है। गुलाब और सेवतीके फूलोका गुलकन्द तथा पाक बनता है, वह पाक पुष्टिकारी, बलदायक और दस्तावर है। मारवाडकी ओर गुलाबके वन होते है। गुलाबका अर्क अत्यन्त गुणकारी है। औषधिके प्रयोगमे सेवती और मोशमी गुलाब लेना चाहिये।

चम्पकनामानि।

चम्पकः सुकुमारश्च सुरभिः शीतलश्च सः।
चाम्पेयो हेमपुष्पश्च काञ्चनः षट्पदातिथिः ॥

अर्थ-चम्पक, सुकुमार, सुरभि, शीतल, चाम्पेय, हेमपुष्प, काञ्चन षट्पदातिथि, (कुसुमाधिराट्, हेमाह्व, सुभग, शीतलच्छद, कुसुमाधिप, वरलब्ध, उग्रगन्ध, कटु, हेमपुष्पक, पुण्यगन्ध, नागपुष्प, स्वर्णपुष्प, भृङ्गमोहि, भ्रमरातिथि, दीपपुष्प, वनदीप, स्थिरगन्ध, अतिगन्धक, पीतपुष्प, सुकुमार, स्थिरपुष्प)

अस्य कलिकानामानि ।

एतस्य कलिका गन्धफलीति कथिता बुधैः ॥

अर्थ-चम्पाकी कलीको गन्धफली, (बहुगन्धा, गन्धमोदिनी, चपककोरक कहते हैं)

संस्कृतभाषामें	चम्पक ।
हिन्दीभाषामें	चम्पा । आकीन, दे० ।
बंगभाषामें	चांपा ।
मराठीभाषामें	सोनचाफा, पिवळाचाफा ।
गुजरातीभाषामें	रायचम्पो, पीलोचम्पो ।
कर्णाटकीभाषामें	सपगे ।
तैलिङ्गीभाषामें	चपागी पुवुलु ।
ता०	चवक । तु० सपेडो ।
लेटिन्भाषामें	मिचेलिया चम्पेका । Michelia Champaca

अस्यागुणाः ।

चम्पकः कटुकस्तिक्तः कषायो मधुरो हिमः ।
विषकृमिहरः कृच्छ्रकफवातास्रपित्तजित् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-चम्पा-चरपरी, कडवी, कपेली, मधुर, शीतल तथा विष, कृमि, मूत्रकृच्छ्र, कफ, वात और रक्तपित्तको दूर करनेवाली है ।

अन्यच्च ।

चम्पकः कटुकस्तिक्तः शिशिरो दाहनाशनः ।
कुष्ठकण्डूव्रणहरो गुणाढ्यो राजचम्पकः ॥ (रा० नि०)

अर्थ-चम्पा-चरपरी, कडवी, शीतल तथा दाह, कुष्ठ और व्रणको हरनेवाली है । इससे राजचम्पा अधिक गुणवाली है ।

अस्य पुष्पगुणाः ।

चम्पक रक्तपित्तघ्न शीतोष्णं कफनाशनम् ॥ (सु० सं०)

अर्थ-चम्पाके फूल-रक्तपित्तनाशक, शीतल, उष्ण और कफनाशक है।

अन्यच्च।

चाम्पेयं कुसुमं शीतं कपाय स्वादुपाकि च।
कफपित्तहरं तद्वत्पुन्नागस्य च सम्भवम्॥ (शो० नि०)

अर्थ-चम्पाके फूल-शीतल, कषेले, पचनेमे स्वादिष्ठ, तथा कफ और पित्तनाशक है।

अपिच।

सुवर्णचम्पकश्चोक्तः शीतलस्तिक्तकः कटुः। तुवरो मधुरो वृष्यो हृद्यश्चैव सुगन्धिदः॥ भ्रमराणां घातकरो दाहपित्तकफापहः। रक्तदोप मूत्रकृच्छ्रवातं कुष्ठं विषं तथा॥ कृमिकण्डूव्रणांश्चैव नाशयेदिति कीर्त्तितम्॥ (नि० रा०)

अर्थ-चम्पा-कडवी, चरपरी, शीतल, कषेली, मधुर, वीर्य्यवर्द्धक, हृदयको हितकारी, सुगन्धि, भौरोका नाश करनेवाली तथा दाह, पित्त, रुधिरविकार, मूत्रकृच्छ्र, वात, कुष्ठ, विष, कृमि, कण्डु और व्रणको दूर करनेवाली है।

विवरण। चम्पाका बडा वृक्ष होताहै, पत्ते-रामफलकी समान होते है, फूल-पीले अत्यंत सुगंधियुक्त होते है।

चम्पकभेदा।

श्वेतस्तु चम्पकः प्रोक्तो नागादिश्चम्पकस्तथा।
सुल्तानचम्पकश्चान्यो नीलश्च भूमिचम्पकः॥

संस्कृतभाषामे	श्वेतचम्पक (क्षुद्रचम्पक, क्षीरवृक्ष) २ नागचम्पक, (नागपुष्प, नागकेशरक) ३ सुलतानचम्पक, ४ नीलचम्पक (मधुगन्धि, मनोहर) ५ भूमिचम्पक।
हिन्दीभाषामे	१ सपेदचंपा, २ नागचम्पा, ३ सुलतानचम्पा, ४ नीलचंपा, भुँईचम्पा।
मराठीभाषामें	१ खुरचांफा, २ नागचांफा, ३ सुलतानचांफा, ४ निळाचांफा, ५ भुईचाफा।
गुजरातीभाषामे	१ धोलोचम्पो, २ नागचम्पो, ३ सुलतानचम्पो, ४ लीलोचम्पो ५ भूचम्पो।

कर्णाटकीभाषामे १ नागचम्पगे ।
तैलङ्गीभाषामे १ गणेरचेट्टु ।
लैटिन्‌भाषामे १ प्ल्युमेरिया एक्युटिफोलिया । Plumieria acutifolia मेस्सुआफेलिया MeSuaferrea केलोफैल इनोफैल Ca'ophyllum Inobhllum स्वाटसेन्टेडकेलोफिल, (इ) Sweet scentedcalophyllum आर्टें बोर्टिस् ओडोरेटिसिमा । Artabotys Odoratıssıma केम्फेरिया रोटंडा । Kaempheria rotunda

श्वेतादिचम्पकगुणा ।

श्वेतस्तु चम्पकः प्रोक्तः सरस्तिक्तः कटुः स्मृतः । तुवरोष्णः कुष्ठकण्डूव्रणशूलकफापहः॥वात चोदररोगश्च आध्मान चैव नाशयेत्। नागनामा चम्पकस्तुवर्ण्यश्चोष्णः कटुः स्मृतः ॥ व्रणरोपणकारी च चक्षुष्यः कफवातहा। वस्त्वंतरस्य संयोगादग्निस्तम्भकरो मतः॥ भूमिजश्चम्पकश्चोष्ण कटुः शोथरुजापहः । गलगण्ड व्रणश्चैव नाशयेदिति कीर्त्तितम् ॥ (नि० र०)

अर्थ-सफेद चम्पा-सारक (कुछेक दस्तावर) कडवी, चरपरी, कषेली, गरम, तथा कुष्ठ, कण्डू, व्रण, शूल, काफवात, उदररोग और आध्मान रोगको दूर करनेवाली है । नागचम्पा-वर्णको उज्ज्वल करनेवाली, गरम, चरपरी, व्रणको भरनेवाली, नेत्रोको हितकारी तथा कफ और वातनाशक है । और वस्तुओके संयोगसे अग्निस्तम्भक है । भुइंचम्पा-गरम, चरपरी, तथा शोथरोग, गलगण्ड और व्रणको दूर करनेवाली है ।

विवरण । सफेद चम्पाका वृक्ष बडा होता है, पत्ते-लम्बे और तोडनेसे दूध निकलता है, फूल-सफेद और थोडे भागमे पीला होता है । नीलीचम्पाका वृक्ष मध्यमाकारका होता है, पत्ते-राम फलीकी समान होतेहै, फूल-नीले रगका होता है, उस फूलहीको नागकेशर कहतेहै नागकेसरके गुण सुगन्धितवर्गमे लिखचुकेहै।सुलतानचम्पाके फूलकोभी नागकेसर कहते है, नागकेसरकी दो जातीहै इसको आगे लिखेगे । भूमिचम्पाका फूल जैसे पृथ्वीमेसे निकलेहै वैसा होता है, पत्ते गुलबाँसकी समान होते है । फूल-सफेद आता है और सुगंधिभी गुलबाँसकेसी आती है ।

बकुलनामानि ।

बकुलः केशरः कण्ठस्तैलाङ्गो मधुपञ्जरः ॥

अर्थ- बकुल, केशर, कण्ठ, तैलांग, मधुपञ्जर (सिहकेशर, केशर, मुकुल, वकुल, मकुल, वरलब्ध, सीधुगन्ध, स्त्रीमुखमधु, दोहल, मधुपुष्प, सुरभि, भ्रमरानन्द, स्थिरकुसुम, शारदिक, करक, सिन्धुगन्ध, विशारद, गूढपुष्पक, धन्वी, मदन, पद्ममोद, चिरपुष्प,)

संस्कृतभाषामे	बकुल ।
हिन्दीभाषामे	मौलसिरी, बकुल ।
बंगभाषामें	बकुलगाछ ।
मराठीभाषामे	बकुळ ।
गुजरातीभाषामे	बोलसरी, वरशोली ।
कर्णाटकीभाषामे	करक ।
तैलिङ्गीभाषामे	पाघडा, पोगडसेट्टु ।
औत्कलीभाषामे	वउडकुडि ।
तामिलीभाषामे	मोगदम् ।
दा०	धोलसरी ।
इंग्रेजीभाषामे	सुरीनाममेडलकर । Surinam medlar
लैटिनभाषामे	माईमुसोप्सइलंजीआई । Mimusops Eleng

बकुलगुणाः ।

बकुलः शीतलो हृद्यो विषदोषविनाशनः ।
मधुरश्च कषायश्च मदाढ्यो हर्षदायकः ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ- मौलसिरी-शीतल, हृदयको हितकारी, विषदोषनाशक, मधुर, कषेली, मदाढ्य और हर्षदायक है ।

अन्यच्च ।

बकुलस्तुवरोऽनुष्णः कटुपाकरसो गुरुः ।
कफपित्तविषश्वित्रकृमिदन्तगदापहः ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-मौलसिरी-कषेली, अनुष्ण, पाक और रसमे चरपरी, भारी तथा कफ, पित्त, विष, श्वित्रकुष्ठ, कृमि और दन्तरोगोको दूर करनेवाली है ।

बकुलपुष्पगुणाः ।

बकुलजकुसुमं रुच्यं क्षीराढ्यं सुरभि शीतलं मधुरम् ।

स्निग्धं कषायं कथितं मलसंग्रहकारकं चैव ॥ (रा०नि)

अर्थ-मौलसिरीके फूल-रुचिकारक, क्षीराढ्य, सुगन्धि, शीतल, मधुर, स्निग्ध, कषैला और मलको संग्रह करनेवाले है ।

अन्यच्च ।

पुष्पं कषायमधुरं शीतं पित्तकफास्रजित्। (राजवल्लभ)

अर्थ-मौलसिरीके फूल-कषैले, मधुर, शीतल, कफ और रुधिर विकारोंको दूर करनेवाला है ।

बकुलफलगुणाः ।

मधुरं च कषायं च स्निग्धं संग्राहि बाकुलम् ।
स्थिरीकरं च दन्तानां विशदं फलमुच्यते ॥ (सु० सं)

अर्थ-मौलसिरीके फल मधुर, कषैले, स्निग्ध, मलको संचित करनेवाले, दाँतोको स्थिर करनेवाले और विशद है ।

अन्यच्च ।

तत्फलं मधुरं स्निग्धं कषायं विशदं हिमम् ।
कफपित्तहरं दन्त्यं विबन्धाध्मानवातकृत् ॥ (ध०नि०)

अर्थ-मौलसिरीके फल मधुर, स्निग्ध, कषैले, विशद, शीतल, कफपित्त नाशक, दातोंको स्थिर करनेवाले, तथा विबन्ध, आध्मान और वातकारक है ।

अपि च ।

बकुलस्य फलं रूक्षं विशदं स्तम्भनं गुरु । कषायं मधुरं शीतं लेखनं कफपित्तहृत् ॥ दन्तदार्ढ्यकरं ग्राहि विबन्धाध्मानवातकृत्। तद्बीजं दन्तचालघ्नं न स्याच्छीर्षरुजापहम्॥ (शो० नि०)

अर्थ-मौलसिरीके फल-रूखे, विशद, स्तम्भन, भारी, कषैले, मधुर, शीतल, लेखन, कफपित्तनाशक,दातोंको दृढकरनेवाले, मलरोधक तथा विबन्ध,आध्मान और वातकारक है।मौलसिरीके बीज दांतोके हिलनेको दूर करे अर्थात् दांतोको स्थिरतादायक है । और मौलसिरीके बीजोका नास लेनेसे शिरोरोग नाशको प्राप्त होता है ।

वृद्धबकुलनामानि ।

शिवमल्ली पाशुपत एकाष्ठीलो बुको वसु ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-शिवमल्ली, पाशुपत, एकाष्ठील,बुक, वसु (शैव,शिवपिण्ड, सुव्रत, वसुक, शिवांग, शिवेष्ठ, क्रमपूरक, शिवाह्लाद, शाम्भव)

संस्कृतभाषामे	शिवमल्ली, बृहद्बकुल ।
हिन्दीभाषामे	वनहुला, बृहन्मौलसिरी ।
मराठीभाषामे	थोरबकुल ।
गुजरातीभाषामे	वरशोली, मोटीवालसिरी ।
कर्णाटकीभाषामे	वगेटाहु ।

अस्य गुणा ।

बुकोऽनुष्णः कटुस्तिक्तः कफपित्तविषापहः ।
योनिशूलतृषादाहकुष्ठशोथास्रनाशनः ॥

अर्थ-बडी मौलसिरी-अनुष्ण,चरपरी,कडवी तथा कफ,पित्त,विष, योनिशूल, तृषा,दाह,कुष्ठ,सूजन और रुधिरविकारको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

बुकः शीतो विषश्लेष्मपित्तकृच्छ्राश्मदाहनुत् ।

अर्थ-बृहन्मौलसिरी (वनहुला,)-शीतल तथा विष, कफ, पित्त, मूत्रकृच्छ्र, पथरी और दाहका नाश करनेवाली है ।

अपि च ।

स्थूलपुष्पश्च बकुलो दीपनो मधुरः कटुः ।
पित्तदाहकफश्वासमूत्रकृच्छ्रविषश्रमान् ॥
अश्मरीं नाशयत्येव मदगन्धिश्च विद्यते । (नि० र०)

अर्थ-बडीमौलसिरी-अग्निप्रदीपक, मधुर, चरपरी तथा पित्त, दाह, कफ, श्वास, मूत्रकृच्छ्र, विष, श्रम और पथरी रोगका नाश करे है, तथा मदगन्धियुक्त है ।

विवरण-मौलसिरीके वृक्ष-वन और उपवनोमे होते है, पत्ते-राजजामुनके समान होते है, फूल-सूक्ष्म और सपेद तथा चक्रके आकारके होते है, फूलमे अत्यन्त सुगन्ध होती है इसकी सुगन्ध सुखानेपरभी न्यून नहीं होती; मौलसिरीकी नर नारी दो जाती है । एकमे फल आते है, और दूसरेमे नहीं आतेहै जिसपर फल नहीं आते उस मौलसिरीका फूल कुछ बडा और सपेद होता है और जिसपर सिन्दूरी रङ्गका फूल आता है उसका फल कुछ लाली

लिये और छोटा होताहै । जिस मौलसिरीपे फल नहीं आता उसको मौलसिरा कहते है और जिसपर फल आता है उसको मौलसिरी कहते है । मौलसिरीका अर्क तथा अत्तरभी निकलता है ।

मुचुकुन्दनामानि ।

मुचुकुन्दः क्षत्रवृक्षश्चित्रकः प्रतिविष्णुकः ॥

अर्थ-मुचुकुन्द, क्षत्रवृक्ष, चित्रक, प्रतिविष्णुक, (दीर्घपुष्प, बहुपत्र सुदल, मुण्डीवृक्षानुकारक, हरिवल्लभ, सुपुष्प, अर्घ्यार्हलक्षणक, रक्तप्रसव)

संस्कृतभाषामें	मुचुकुन्द ।
हिन्दीभाषामे	मुचकुन्द ।
बंगभाषामे	मुचकुन्द ।
मराठीभाषामे	मुचकुन्द ।
गुजरातीभाषामें	मुचकुन्द ।
कर्णाटकीभाषामें	मुचकुन्द ।
तैलिङ्गीभाषामे	लोलगु ।
तामिलीभाषामे	टड्डो ।
औत्कलीभाषामे	वइलो ।
लैटिन्भाषामे	टैरोस्परमम् सुबेरीफोलियम् । Pterospermum Suberifolium

अस्य गुणाः ।

मुचुकुन्दः कटुतिक्तः कफकासहरश्च कण्ठदोषघ्नः ।
त्वग्दोषशोफशमनो व्रणपामाविनाशनश्चैव ॥

अर्थ-मुचकुन्द-चरपरा, कडवा तथा कफ, खाँसी, कण्ठरोग, त्वचारोग, सूजन, व्रण और पामारोग विनाशक है ।

अन्यत्र ।

मुचुकुन्दः शिरःपीडापित्तास्रविषनाशनः । (म पा नि)

अर्थ-मुचकुन्द-शिरकी पीडा और रक्तपित्त विनाशक है ।

अपि च ।

मुचुकुन्दः कटुश्चोष्णस्तिक्तः स्वर्यः कफापहः ।
कासत्वग्दोषशोफघ्नः शीर्षपीडानिवारकः ॥
त्रिदोषरक्तपित्तघ्नः पित्तरक्तविकारनुत् । (नि० र०)

अर्थ-मुचकुन्द-चरपरा, गरम, कडवा, स्वरको सुन्दर करनेवाला कफनाशक तथा खाँसी, त्वचाके विकार, सूजन, शिरकी पीडा, त्रिदोष, रक्तपित्त, पित्त और रुधिरविकारको दूर करे है ।

विवरण । मुचकुन्दका वृक्ष बडा होता है, पत्ते-बडे और अख-रोटकी समान होते है, फूल-बडा आताहै और उसमे अत्यन्त सुगन्ध होती है, फल-लम्बे और गोल काष्ठकी समान होते है । औषधिमे केवल फूल लियेजाते है ।

कुन्दनामानि ।

कुन्द तु कथितं माध्यं सदापुष्पं च तत्स्मृतम् ॥

अर्थ-कुन्द, माध्य, सदापुष्प, (शुक्लपुष्प, दलकोष, वारट, मकरन्द, महामोद, मनोहर, मुक्तापुष्प, तारपुष्प, अट्टपुष्पक, दमन, वनहास, मनोज्ञ, भृङ्गबन्धु, मनोरम, अट्टहास, भृङ्गसुहृत्,)

संस्कृतभाषामे	कुन्द ।
हिन्दीभाषामे	कुंदेकावृक्ष, कुंदेका फूल ।
बंगभाषामे	कुन्द ।
मराठीभाषामे	कुन्द ।
कर्णाटकीभाषामे	सुरागि ।
तैलिंगीभाषामे	मोल्ल ।

अस्य गुणाः ।

कुन्दं शीत लघु श्लेष्मशिरोरुग्विषपित्तजित् ॥ (भा प्र)

अर्थ-कुन्द-शीतल, हलका, तथा कफ, शिरोरोग, विष और पित्तका नाश करनेवाला है ।

अन्यच्च ।

कुन्दोऽतिमधुरः शीत· कषायः केशभावनः ।
कफपित्तहरश्चैव सरो दीपनपाचनः ॥ (रा० नि०)

अर्थ-कुन्द-अत्यन्त मधुर, शीतल, कषेला, केशभावन, सारक (कुछेक दस्तावर) अग्निदीप, पाचक और कफपित्तनाशक है ।

अपिच ।

कुन्दः शीतोऽतिमधुरस्तुवरः सारको लघुः । पाचको दीपको हृद्यः कटुकस्तिक्तकः स्मृतः ॥ पित्तरोगशिरो-

रोगविषशोथामनाशनः। रक्तदोष च वात च नाशयेदि-
ति कीर्त्तितम्। (नि० र०)

अर्थ-कुन्द-शीतल, अत्यन्तमधुर, कषेला, सारक, हलका पाचक, दीपन, हृदयको हितकारी, चरपरा, कडवा तथा पित्तरोग, मस्तक-रोग, विष, सूजन, आम, रुधिरविकार और वातको हरनेवालाहै।

विवरण। कुन्दके वृक्ष-छोटे छोटे होते हैं, फूल-अतीव सुन्दर सफेद रंगके आते है।

तिलकनामानि।

तिलकः क्षुरकः श्रीमान् पुरुषश्छिन्नपुष्पकः।

अर्थ-तिलक, क्षुरक, श्रीमान, पुरुष, छिन्नपुष्पक (मुखमण्डनक, विशेषक, पुण्ड्र, पुण्ड्रक, स्थिरपुष्पी, छिन्नरुह, दग्धरुह, मृतजीव, तरुणीकटाक्षकाम, वासन्तसुन्दर, दुग्धरुह, भालविभूषणसंज्ञ, पुन्नाग, रेचक, शतपत्रक)

संस्कृतभाषामे	तिलकपुष्पवृक्ष।
हिन्दीभाषामे	तिलकपुष्प।
गुजरातीभाषामे	तिफकवृक्ष।
मराठीभाषामे	तिलपुष्पक।
कर्णाटकीभाषामे	तिलकपुष्पविशेष।

अस्य गुणाः।

तिलकः कटुकः पाके रसे चोष्णो रसायनः।
कफकुष्ठकृमीन् वस्तिमुखदन्तगदान् हरेत् ॥(भा० प्र०)

अर्थ-तिलकपुष्पवृक्ष-पचनेमे चरपरा, रसमे भी चरपरा, गरम, रसायन तथा कफ, कुष्ठ, कृमि, वस्तिरोग, मुखरोग और दन्तादिरोगोंको दूर करे हैं।

अन्यच्च।

तिलको मधुरः स्निग्धो वातपित्तकफापहः।
बलपुष्टिकरो हृद्यो लघुर्मेदोविवर्द्धनः॥

अर्थ-तिलक-मधुर, स्निग्ध, बलवर्द्धक, पुष्टिकारक, हृदयको हितकारी, हलका, मेदजनक तथा वात, पित्त और कफनाशक है।

अपिच।

तिलको मधुरः स्निग्धः पौष्टिको बलमेदकृत्। हृद्यो लघू

रसेत्युष्णः पाके चोष्णकरः स्मृतः ॥ रसायनस्तीक्ष्णरूक्षो दन्तरुक्क्रिमिकुष्ठहा ॥ वातपित्तकफघ्नश्च विषकण्डूव्रणापहः॥ रक्तरुग्दुग्धरुग्वस्तिरुजां नाशकरः स्मृतः।तिलकः क्षारयोगेन गुल्मशूलोदरापहः । त्वगस्य तुवरा चोष्णा पुंस्त्वघ्नी दन्तदोषहा ॥ रक्तदोषक्रिमिव्रणशोफानां च विनाशिनी॥(नि०र०)

अर्थ-तिलक-मधुर, स्निग्ध, पुष्टिकारक, बलवर्द्धक, मेदजनक, हृदयको हितकारी, हलका, रसमे अत्यन्त उष्ण, पचनेमे चरपरा, रसायन, तीक्ष्ण, रूखा तथा दन्तरोग, कृमि, कुष्ठ, वात,पित्त, कफ, विप,कण्डू,व्रण,रुधिरविकार,दुग्धरोग, और वस्तिरोगका नाश करे है । यह किसी क्षारके योगसे गुल्म, शूल और उदररोगको दूर करे है । इसकी छाल-कषेली,गरम,तथा पुरुपता,दन्तरोग,रुधिरविकार, कृमि,व्रण और सूजनको दूर करनेवाली है ।

विवरण । तिलक वृक्षका फूल-तिलके फूलकी समान होताहै और उस फूलमे सुगन्धि आतीहै, फल-पीपलकी समान तथा मधुर होता है ।

कदम्बनामानि ।

कदम्बः सुरभिर्नीपः प्रावृषेण्यो हरिप्रियः ।

अर्थ-कदम्ब,सुरभि,नीप,प्रावृषेण्य, हरिप्रिय, (हलिप्रिय, ललनाप्रिय,प्रियक,हारिद्र,अशोकारी, नीप, कादम्ब, षट्पदेष्ट,जाल, वृत्तपुष्प, कादम्बर्य्य, सीधुपुष्प, जीर्णपर्ण, महाढ्य, कर्णपूरक)

धाराकदम्बनामानि

नीपो महाकदम्बः स्याद्धाराकदम्ब इत्यपि ।

अर्थ-नीप, महाकदम्ब,धाराकदम्ब (धूलिकदम्ब,धाराकदम्बक, भ्रमरप्रिय, षट्पदप्रिय, प्रावृष्य, पुलकी, भृङ्गवल्लभ, मेघाभ,प्रियक, केशराढ्य, बहुफल, कदम्बक)

भूमिकदम्बनामानि ।

भूमिकदम्बो भूनीपो भूमिजो भृङ्गवल्लभः ।
लघुपुष्पो वृत्तपुष्पो विषघ्नो व्रणहारकः ॥

अर्थ-भूमिकदम्ब, भूनीप, भूमिज, भृङ्गवल्लभ, लघुपुष्प, वृत्तपुष्प, विषघ्न, व्रणहारक ।

वीर्य्यवृद्धिकरश्चैव तुवरो विपशोथहा ॥
पित्तं कृमींश्च सर्वांश्च मेहान्नाशयतीरितः । (नि० र०)

अर्थ-भूमिकदम्ब-कडवी, वर्णको उज्ज्वल करनेवाली, शीतल, चरपरी, वीर्य्यवर्द्धक, कपेली तथा विष, सूजन, पित्त कृमि और सर्वप्रकारके प्रमेहरोगोको दूरकरनेवाली है।

द्विविधकदम्बगुणाः ।

कदम्बयुगलं वर्ण्यं विपशोथहरं हिमम् ।

अर्थ-दोनोप्रकारकी कदम्ब (कदम्ब, बडीकदम्ब)-वर्णको सुन्दर करनेवाली, शीतल तथा विष और सूजनको दूरकरनेवाली है।

विवरण। कदम्बके वृक्ष-नगरके निकट होते है, पत्ते लम्बे और गोल तथा महुवेकी समान होते हैं, फल-गोल नीम्बूकी समान, फूल फलके ऊपर तथा सुगन्धयुक्त और छोटे होते हैं, राजकदम्ब तथा नीपको स्त्रीकदम्ब कहते हैं। कदमकी अनेक जाति है।

कर्णिकारनामानि ।

कार्णिकारः परिव्याधः पादपोत्पल इत्यपि ॥

अर्थ-कर्णिकार, परिव्याध, पादपोत्पल ऐसे तीन नाम हैं।

कर्णिकारगुणाः ।

कर्णिकारः कटुस्तिक्तस्तुवरः शोधनो लघुः ।
रञ्जनः सुखदः शोथश्लेष्मास्रव्रणकुष्ठजित् ॥ (भा० प्र०)

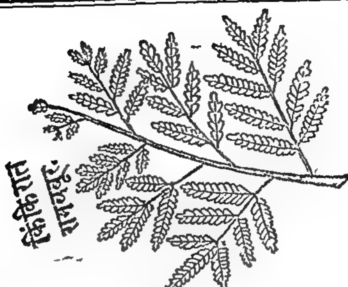
अर्थ-कर्णिकार-चरपरा, कडवा, कपेला, शोधक, हलका, रञ्जन, सुखदायक तथा सूजन, कफ, रुधिरविकार, व्रण और कुष्ठको नष्ट करे है

विवरण। कर्णिकारके वृक्ष-प्रायः पर्वत और वनोंमे अधिक होते है। पत्ते-ढाकके पत्तोकी समान होते हैं, फूल-लाल और अत्यन्त मनोहर लगते हैं।

किङ्किरातनामानि ।

किङ्किरातः किङ्किराठः पीठकः पीनभद्रकः ।
हेमगौरो विप्रलम्बी षट्पदानन्दवर्द्धनः ॥

अर्थ-किंकरात, किंकिराठ, पीतक, पीतभद्र, हेमगौर, विप्रलम्बी, षट्पदानन्दवर्द्धन (विप्रलोभी, पीताम्लान)



संस्कृतभाषामे	किकिरात ।
हिन्दीभाषामे	किकिरात ।
मराठीभाषामे	देवचाभूळ ।
गुजरातीभाषामे	रामवावल ।
फारसीभाषामे	मधिलान ।

अस्य गुणा ।

किङ्किरातो हिमस्तिक्तस्तुवरः शोधनो लघुः ।
विषक्रमिहरः शोथश्लेष्मश्रवणकुष्ठजित्॥ (ध० नि०)

अर्थ-किकिरात-शीतल, कडवा, कपेला, शोधक, हलका तथा विष, कृमि, सूजन, कफ, बधिरता और कुष्ठको नष्ट करे है ।

अन्यच्च ।

किङ्किरातो हिमस्तिक्तः कषायश्च हरेदसौ ।
कफपित्तपिपासास्रदाहशोथवमिक्रमीन् ॥

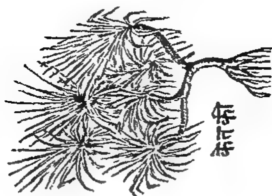
अर्थ-किकिरात-शीतल, कडवा, कषेला तथा कफ, पित्त, पियास, रुधिरविकार, दाह, सूजन, वमन और कृमिरोगको दूर करे है ।

अपिच ।

किङ्किरातं तु तुवरं तिक्त शीतोष्णदं मतम् । कफपित्ततृपारक्तदोषदाहज्वरान्वमिम्॥ मोहं विपं नाशयतीत्येवमुक्तं भिषग्वरैः।

अर्थ-किकिरात-कषेला, कडवा, शीतल, गरम, तथा कफ, पित्त, तृषा, रुधिरदोप, दाह, ज्वर, वमन, मोह और विपका नाश करेहै ।

केतकीनामानि ।



केतकः सूचिकापुष्पो जम्बुकः क्रकचच्छदः ।

अर्थ-केतक, सूचिकापुष्प, जम्बुक, क्रकचच्छद (सूचिपुष्प, हलीन, जम्बु, चामरपुष्पा, केतकी, तीक्ष्णपुष्पा, विफला, धूलिपुष्पिका, मेध्या, कण्टदला, शिवाद्विष्टा, नृपप्रिया, क्रकचा, दीर्घपत्रा, स्थिरगन्धा, गन्धपुष्पा, इंदुकलिका, दलपुष्पा, पांशुला ।

सुवर्णकेतकीनामानि ।



सुवर्णकेतकी त्वन्या लघुपुष्पा सुगन्धिनी ॥

अर्थ-सुवर्णकेतकी, लघुपुष्पा, सुगंधिनी (स्वर्णकेतकी, हेमकेतकी, कनकप्रसवा, पुष्पी, हेमी, छिन्नरुहा, विष्ठारुहा, स्वर्णपुष्पी, कामखड्गदला)

संस्कृतभाषामें	केतकी, स्वर्णकेतकी ।
हिन्दीभाषामें	केवडा, केतकी, पीलीकेतकी ।
बंगभाषामें	केयागाछ, सोणाकेया ।
मराठीभाषामें	श्वेतकेवडा, केतकी ।
गुजरातीभाषामें	केवडा ।
कर्णाटकीभाषामें	केदगे ।

तैलिङ्गीभाषामे मुगलीपुचु, मोगिलिचेट्टु।
लैटिन्भाषामे पेन्डनस्ओडोरैटिसिमस्। Pandanus Odoratissimus
फारसीभाषामें करज।
अरबीभाषामे कादी

केतकी–सुवर्णकेतकी गुणा।

केतकी कटुका स्वाद्वी लघ्वी तिक्ता कफापहा।
उष्णा तिक्तरसा ज्ञेया चक्षुष्या हेमकेतकी॥

अर्थ–केवडा–चरपरा, स्वादिष्ठ, हलका, कडवा और कफनाशक है। सुवर्णकेतकी–गरम, कडवी और नेत्रोंको हितकारी है।

अन्यञ्च।

श्वेता तु केतकी कट्वी स्वाद्वी तिक्ता लघुः स्मृता। विषं कफं नाशयति पुष्पमस्या लघु स्मृतम्॥ कटु तिक्त कान्तिकरमुष्णवातकफापहम्। केशदुर्गन्धतापघ्नं केसरः सिध्मकण्डुहा॥ किञ्चिदुष्णं फलं स्वादु वातमेहकफापहम्। सुवर्णकेतकी तिक्ता नेत्र्या चोष्णा लघुः स्मृता॥ कटुका मधुरा चैव विषरुक्कफनाशिनी। अस्याः पुष्पं सुखकरं कामोद्दीपनकारकम्॥ किञ्चिदुष्णं च कटुकं तिक्तं नेत्र्यं सुगन्धिकम्। स्तनश्चास्यातिशिशिरो देहदार्ढ्यकरः पटुः॥ बल्यो रसायनः पित्तकफस्य च विनाशकः। फलकेशरयोश्चैव गुणाः पूर्वोक्तवन्मताः॥ (नि० र०)

अर्थ–श्वेतकेतकी (केवडा) चरपरा, स्वादिष्ठ, कडवा, हलका तथा विष और कफको दूर करनेवाला है, इसका फूल–हलका, चरपरा, कडवा, कान्तिकारक, गरम तथा वात, कफ और बालोंकी दुर्गंधको दूर करे है। इसकी केसर–सिध्म और कण्डूनाशक है, तथा कुछ गरम है। इसका फल–स्वादिष्ठ तथा वात, प्रमेह और कफनाशक है। सुवर्णकेतकी (केतकी)–कडवी, नेत्रोंको हितकारी हलकी चरपरी, मधुर, विषविकार और कफनाशक है। इसका फूल–सुखकारी, कामको दीपन करनेवाला, किञ्चित् गरम चरपरा, कडवा, नेत्रोंको हितकारी और सुगन्धित है। इसके स्तन–अत्यन्त शीतल, देहको दृढकरनेवाले निमकीन, बलकारक, रसायन तथा

पित्त और कफनाशक है । और इसके फलके तथा केसरके गुण सफेद केतकीके फलकी और केसरकी समान जानने ।

अन्यच्च ।

केतकी वातला वृष्या तन्द्रानिद्राकरी मता ॥ (आ० सं०)

अर्थ-केतकी-वातकारक, वीर्य्यवर्द्धक तथा तन्द्रा और निद्राको उत्पन्न करनेवाली है ।

विवरण। केवडेके वृक्ष बाग और जलके निकट अधिकतासे होते हैं, वृक्षके भीतर बारीक कांटे और पत्ते लम्बे होते हैं, पत्तेके कोनेपर कांटे होते हैं। दूसरी सुवर्णकेतकी होती है, इसका क्षुप पीला और विशेष सुगंधवाला होता है।

अशोकनामानि ।

अशोकः शोकनाशश्च विचित्रः कर्णपूरकः ।
ककेलिर्हेमपुष्पश्च पिण्डपुष्पस्तथैव च ॥

अर्थ-अशोक, शोकनाश, विचित्र, कर्णपूरक, ककेली, हेमपुष्प, पिण्डपुष्प, (अङ्गनाप्रिय, वीतशोक, विशोक, वञ्जुलद्रुम, वञ्जुल, मधुपुष्प, अपशोक, कंकेल्लि, केलिक, रक्तपल्लव, चित्र, कर्णपूर, सुभग, दोहली, ताम्रपल्लव, रोगितरु, वामांघ्रिघातन, पिण्डीपुष्प, नट, रामा, पल्लद्रु, कान्ताङ्घ्रिदोहद, कान्ताचरणदोहद, चक्रगुच्छ, गन्धपुष्प, स्त्रीनिरीक्षणदोहद, शोकहर्त्ता, स्मराधिवास, दोषहारी प्रपल्लव, वामाङ्घ्रिघातक)

संस्कृतभाषामें	अशोक ।
हिंदीभाषामें	अशोक (अशोगि)
वंगभाषामें	अस्पाल ।
मराठीभाषामें	अशोक ।
गुजरातीभाषामें	आशुपालो देशी पीलाफुलनो, आशुपालो रातांफुलनो ।

लैटिन्‌भाषामें ग्वेटेरिया लोंजिफोलिया । Guatteria Longifolia जोनेशिया अशोका । Jonesia asoka

अशोकगुणाः ।

अशोकः शीतलस्तिक्तो ग्राही वर्ण्यः कषायकः ।
दोषापचीतृषादाहकृमिशोषविषास्रजित् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-अशोक-शीतल, कडवा, मलरोधक, वर्णको उज्ज्वल करने-

वाला कषेला तथा अपचीदोष, तृषा, दाह, कृमि, शोष, विष और रक्तदोषको दूर करे है।

अन्यच्च।

अशोको मधुरः शीतश्चास्थिसन्धानकृन्मतः। प्रियः सुगन्धिः कृमिकृत्तुवरोष्णश्च तिक्तकः॥ शरीरकान्तिकृच्चैव स्त्रीणामुच्छोकनाशनः। ग्राही पित्तहरो दाहश्रमगुल्मोदरापहः॥ शूलाध्माने विषं चार्शो व्रण सर्वां तृषं तथा। शोथापचीतृषश्चैव नाशयेद्रक्तजां रुजम्॥ (नि० र०)

अर्थ-अशोक-मधुर, शीतल, हड्डीको जोडनेवाला, प्रिय, सुगन्धि, कृमिहारक, कषेला, गरम, कडवा, देहकी कान्ति बढानेवाला, स्त्रियोंके शोकको दूर करनेवाला, मलरोधक तथा, पित्त, दाह, श्रम, गुल्म, उदररोग, शूल, आध्मान, विष, बवासीर, व्रण, सर्व प्रकारकी तृषा, सूजन, अपची, तृषा और रुधिररोगको दूर करनेवाला है।

अपि च।

अशोकस्य त्वचा रक्तप्रदरस्य विनाशिनी॥ (शो० नि०)

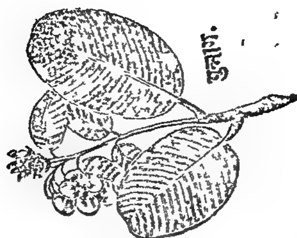
अर्थ-अशोककी छाल-रक्तप्रदररोगको हरनेवाली है।

विवरण। अशोक वृक्षकी दोजाती है, एकके पत्ते रामफलकी समान और फूल नारंगीके रंगकी सदृश होता है, माह फाल्गुनमे खिलतेहै और दूसरे अशोकके पत्ते आमकी समान होते हैं, फूल-सफेद कुछेक साधारण पीले रंगका होताहै, इसपै फल चौमासेके आरम्भमे आतेहै। इसके कच्चे फलका रंग नीला और पकनेपर लाल होजाता है, इसके फल खानेके योग्य नही है और इन फलोमेसे जो बीज निकलतेहै वह बीजभी किसी औषधिके प्रयोगमे नही लिये जाते, फूल जिसका नारंगकी समान है ऐसे अशोकको "जोनेशिआ" अशोक कहते है और दूसरेको "ग्वेटेरीआ लोजिफोलिआ" कहते है।

पुन्नागनामानि।

पुरुषाख्यो रक्तवृक्षः पुन्नागो देववल्लभः॥

अर्थ-पुरुषाख्य, रक्तवृक्ष, पुन्नाग, देववल्लभ, (पूरुष, तुङ्ग, केशर, केशव, केसरी, काम्बोज, नागपुष्प, कुम्भीक, रक्तकेशर, पाण्डुनाग, पाटलाद्रुम, रक्तपुष्प, रक्तरेणु, अरुमा।



संस्कृतभाषामें	पुन्नाग ।
हिन्दीभाषामें	पुन्नाग, पुलाक, (के) सुलतानचम्पक ।
बंगभाषामें	पुन्नागाछ, राजचम्पक ।
गुजरातीभाषामें	पुन्नाग, सुरपुन्नाग।
मराठीभाषामें	गोडी उंडीण, कडवी उंडणि, उंडली ।
कर्णाटकीभाषामें	सुरहोन्नेयभेद ।
तैलङ्गीभाषामें	सुरपोन्नचेट्टु ।
ओत्क०	पुंणां ।
तामिलीभाषामें	पिन्नप ।

लैटिन्‌भाषामें ओक्रोकार्पसलोंजिफोलियम् । Ochrocarpus Songifolium

अस्य गुणाः ।

पुन्नागो मधुरः शीतः सुगन्धिः पित्तनाशकृत् । देवप्रसाद-जनको रक्तरुग्रक्तपित्तजित् ॥ कफं पित्त भूतबाधां नाशये-दिति कीर्तितम् । पुष्पं वृष्यं वातशूलकफदोषाञ्जयत्यलम् ॥ नमेरुस्तिक्तपुन्नागादधिकश्च गुणैः स्मृतः । (नि० र०)

अर्थ-पुन्नाग-मधुर, शीतल, सुगन्धि, पित्तनाशक, देवताओंको प्रसन्नकरनेवाला तथा रक्तदोष, रक्तपित्त,कफ,पित्त और भूतबाधाको दूर करेहै । इसकेफूल-वीर्यवर्द्धक, वातशूल और कफनाशक है,सुर-पुन्नाग-कडवा और पुन्नागकी अपेक्षा अधिक गुणवाला है ।

विवरण । पुन्नागका वृक्ष बडा-होताहै; पुन्नागके फूलकी कलीको सुखालेते हैं । उसको नागकेशर कहते है नागकेशरके गुण प्रथम

सुगंधिवर्गमे लिख आये हैं। इसके फल बृहद्दन्तीकी समान होते हैं उन फलोका तेल निकलता है।

सैरेयकनामानि।

सैरेयकः श्वेतपुष्पः सैरेयं कटसारिका।
सहाचरः सहचरः स च भिंद्यपि कथ्यते॥

अर्थ-सैरेयक, श्वेतपुष्प, सैरेय, कटसारिका, सहाचर, सहचर, भिन्दी, (मृदुकण्ट, महासह, बाण, उद्यानपाकी, सौरीयक, कण्टकुरण्ट, झिण्टिका, झिण्टी)

कुरण्टकनामानि।

किंकिरातो कुरण्टश्च कनकः पीतपुष्पकः।
पीताम्लानः सहचरः पीतसैरेयकश्च सः॥

अर्थ-किंकिरात, कुरण्ट, कनक, पीतपुष्पक, पीताम्लान, सहचर, पीतसैरेयक (कुरण्टक, सहचरी, सहाचर, वीर, पीतपुष्प, दासी, कुरण्टक, पुर)

नीलझिण्टी (आर्त्तगल) नामानि।

नीलपुष्पी नीलझिण्टी दासी चार्तगलश्च सः।

अर्थ-नीलपुष्पी, नीलझिण्टी, दासी, आर्त्तगल (बाणा, अर्त्तगल, बाण, सहचर, नीलकुरुण्टक, शैरीयक, शैरेयक, सैरीय, सैरेय, नीलकुसुमा, बाला, कण्टार्तगला)

कुरबकनामानि।

रक्ताम्लानो रक्तपुष्पो रामालिङ्गनकामुकः।
रागप्रसवकश्चैव सुभगः शोणझिण्टिकः॥

अर्थ-रक्ताम्लान, रक्तपुष्प, रामालिङ्गनकामुक, रागप्रसव, सुभग, शोणझिण्टिक, (कुरबक, रक्तझिण्टी रक्तझिण्टिका, शोणझिण्टी)

रक्तपुष्पः कुरबकः पीतपुष्पः कुरण्टकः।
नीलपुष्पश्चार्त्तगलः सैरेयः श्वेतपुष्पकः॥

अर्थ-लालफूलकी कटसरैयाको "कुरबक" पीलेफूलवालीको "कुरण्टक" नीलेफूलवालीको "आर्त्तगल" और सफेदफूलकी कटसरैयाको "सैरेय (—)" कहतेहैं।



संस्कृतभाषामें सैरेयक, कुरण्टक, आर्त्तगल, कुरबक।
हिन्दीभाषामें कटसरैया, पियावाँसा।
बंगभाषामें झाँटि, कुलझाँटि, पीतझाँटि, नीलझाँटि, लालझाँटि।
मराठीभाषामें पिवळाकोरंटा, तांबडाकोरंटा, नीळाकोरंटा पांढराकोरंटा।
गुजरातीभाषामें कांटा अंगेलीयो, पीलाफुल, रातांफुलनो, काला फुलनो, धोलाफुलनो।
कर्णाटकीभाषामें होंवणदगोरंटे, वणदगिड, करियगोरंटे, सरसुल्ल गोरंटे गल्लु।
तैलङ्गिभाषामें गोरेंट्ठु।
लैटिन्‌भाषामें बालेरिया प्रायोनिटस्। Barleria Prionitis

सैरेयकगुणा।

सैरेयः कुष्ठवातास्रकफकण्डूविषापहः।
तिक्तोष्णो मधुरोऽनम्लः सुस्निग्धः केशरञ्जनः॥ (भा॰ प्र॰)

अर्थ-सफेद फूलकी कटसरैया-कडवी, गरम, मधुर, दांतोको हितकारी, सुस्निग्ध, केशरञ्जक, तथा कोढ, वात, रुधिरविकार, कफ, कण्डू और विषनाशक है।

अ यच्च।

श्वेतः कुरण्टकस्तिक्तः केश्यः स्निग्धो मधुः स्मृतः। कटुश्चोष्णो दन्तहितो वलीपलितनाशनः॥ कुष्ठं वातं रक्तदोषं कफं कण्डूं विषं तथा। नाशयेद्दारुणं चैव ऋषिभिः परिकीर्तितः॥ (नि॰ र॰)

अर्थ-सफेद फूलकी कटसरैया-कडवी, केशोको हितकारी, स्निग्ध, मधुर, चरपरी, गरम, दांतोको हितजनक तथा वलीपलित, कुष्ठ, वात, रक्तविकार, कफ, कण्डू, विष और घोर वेदनाको हरनेवाली है।

कुरण्टकगुणाः।

पीतः कुरण्टकश्चोष्णस्तिक्तश्च तुवरः स्मृतः।
अग्निदीप्तिकरो वातकफकण्डूहरः स्मृतः।
शोथं रक्तविकारं च त्वग्दोषं चैव नाशयेत् ॥

अर्थ-पीलेफूलकी कटसरैया-गरम, कडवी, कषेली, अग्निदीपक तथा वात, कफ, कण्डू, सूजन, रक्तविकार और त्वचाके दोषोको दूर करे है।

आर्तगलगुणा ।

नील· कुरण्टकस्तिक्तः कटुर्वातकफापहः।
शोथकण्डूशूलकुष्ठव्रणत्वग्दोषनाशनः ॥

अर्थ-नीलेफूलकी कटसरैया-कडवी, चरपरी तथा वात, कफ, सूजन, कण्डू,शूल, कोढ, व्रण और त्वचाके विकारोको दूर करे है।

नीलझिण्टीगुणा ।

नीलझिण्टी तु कटुका तिक्ता त्वग्दोषनाशिनी।
दन्तरोगं कफं शूलं वातं शोथं च नाशयेत् ॥

अर्थ-कालेफूलकी कटसरैया-चरपरी, कडवी तथा त्वग्दोष, दन्तरोग, कफ, शूल, वात और सूजनको दूर करनेवाली है।

कुरबकगुणा ।

रक्तः कुरण्टकस्तिक्तो वर्ण्यश्चोष्णः कटुः स्मृतः।
शोथं ज्वरं वातरोगं कफं रक्तरुजं तथा ॥
पित्तमाध्मानकं शूलं श्वासं कासं च नाशयेत् (नि०र०)

अर्थ-लालफूलकी कटसरैया-कडवी, वर्णको उज्ज्वल करनेवाली, गरम, चरपरी तथा सूजन, ज्वर, वातरोग, कफ, रक्तविकार, पित्त, आध्मान, शूल, श्वास और खाँसीको हरनेवाली है।

विवरण। पियावांसा अर्थात् कटसैरयाके क्षुप वन और बागोमे वहुत होते है, इसकी चार प्रकारकी जाति है इसके फूलोका रंग

भी चार प्रकारका होता है-सफेद, पीले, लाल और नीले इन चारों प्रकारके पियावासेमे कांटे होते हैं, पत्तेभी सबके छोटे २ एकसेही होते हैं, किसीमे विशेष अन्तर नहीं होता ।

बन्धूकनामानि।



दुपहरियाकाफूल.

बन्धूको बन्धुजीवश्च रक्तो माध्याह्निकोऽपि च ।

अर्थ-बन्धूक, बन्धुजीव, रक्त, माध्याह्निक, (रक्तक, बन्धुजीवक, बन्धुक, बन्धु, बन्धुल, बन्धूजीव, बन्धूलि, बन्धुर, सूर्यभक्त, सूर्यभक्तक, ओष्ठपुष्प, अर्कवल्लभ, मध्यादिन, रक्तपुष्प, हरिप्रिय, शरत्पुष्प, ज्वरघ्न, सुपुष्प)

संस्कृतभाषामे	बन्धूक ।
हिन्दीभाषामे	दुपहरिया, गेजुनिया ।
बंगभाषामें	बान्धुलिफुलेरगाछ।
मराठीभाषामे	दुपारीचे फूल।
गुजरातीभाषामे	बपोरियो ।
कर्णाटकीभाषामे	बदुरे ।
तैलिङ्गीभाषामे	नितिमल्ली, मकिनचेट्टु, बेगसिनचेट्टु ।
बम्०	दुपारि
पञ्जा०	गुलदुफारिया ।
लैटिन्भाषामे	पेंटापेटिस् फिनिश्या । Pentapets Phoenicea

अस्य गुणाः ।

स्याद्बन्धुजीवको ग्राही किञ्चिदुष्णो गुरुर्मतः ।
कफकृज्ज्वरहृद्वातपित्ते चैव विनाशयेत् ॥
पिशाचग्रहबाधां च नाशयेदिति कीर्त्तितः ।

अर्थ-दुपहरिया-मलरोधक, किंचित् गरम, भारी, कफनाशक, ज्वरनाशक, तथा वात, पित्त, पिशाचबाधा और ग्रहबाधाको दूर करे है।

विवरण। दुपहरियाके वृक्ष घर और बागोंमे बोदेते है, फूल सफेद, सिन्दूरी, लाल तीन चार जातिका होता है, यह दुपहरके समय खिलती है, इसीसे इसको दोपहरिया कहते है।

सिद्धेश्वरनामानि ।

सिद्धेश्वरश्च सिद्धाख्यः सिद्धनाथः प्रकीर्तितः ।

अर्थ-सिद्धेश्वर, सिद्धाख्य, सिद्धनाथ।

संस्कृतभाषाम	सिद्धेश्वर, सिद्धाख्य, सिद्धनाथ,
दे०	गुलतुर्रा ।
वंगलाभाषामे	कृष्णचूड ।
गुजरातीभाषामे	संधेशरो ।
कर्णाटकीभाषामे	कोमरी ।
लैटिन्भाषामे	सिसालपिनियालकेरिमा । Caesalpina pulcherrima

अस्य गुणा ।

सिद्धेश्वरो हिमः स्निग्धः ग्रन्थिनाडीव्रणापहः ।
वातव्याधिहरश्चैव त्रिदोषामयनाशनः ॥

अर्थ-सिद्धेश्वर-शीतल, स्निग्ध तथा ग्रन्थि, नाडीव्रण, वातरोग और त्रिदोषनाशक है।

शखोदरीनामानि ।

शंखोदरी बर्हपुष्पा चिश्चापत्राऽल्पकण्टकी ।
श्लाखापत्री सुपुष्पा च वनवासी सुशिम्बिका ॥

अर्थ-शंखोदरी, बर्हपुष्पा, चिश्चापत्रा, अल्पकण्टकी, श्लाखापत्री, सुपुष्पा, वनवासी, सुशिम्बिका।

सस्कृतभाषामे	शंखोदरी ।
दे०	गुलतोरा, गुलपरी ।
गुजरातीभाषामे	राशंगडी, नहानी, गुलमोर।
मराठीभाषामे	शंखासुर, धाकटीगुल, कुंकमकेशर ।
तैलिङ्गीभाषामे	सामिडीतांघेडु ।
लैटिन्भाषामे	पोईनसियाना रिजाइना Poinoeana rigina
	पोईनसियाना पलकेरिमा P Pulcherrima

शंखोदरीगुणा ।

शंखोदरी मता चोष्णा कफवातविनाशिनी ।
शूलामवातशमनी नेत्ररोगनिवारिणी ॥

अर्थ-शंखोदरी-गरम तथा कफ, वात, शल, आमवात और नेत्र रोगनिवारक है ।

झण्डूकनामानि ।

झण्डुः स्यात्स्थूलपुष्पा तु झण्डूको झण्डुकस्तथा ।

अर्थ-झण्डु, स्थूलपुष्पा, झण्डूक, झण्डुक ।

संस्कृतभाषामें	झण्डु, स्थूलपुष्पा, झण्डूक, झण्डुक ।
हिन्दीभाषामें	मखमली,गुलतोरा,कलगा,लालमुरगा
मराठीभाषामें	झेंडू, मखमाल ।
गुजरातीभाषामें	मुखमल ।
इंग्रेजीभाषामें	फ्रेंचमेरीगोल्ड French mary golp
लेटिन्भाषामें	टेजिटिस् इरेक्टा Tagetes erecta
	मिलेस्याक्रस्टोटा Celasiacrestota
फारसीभाषामें	काजेखरुस ।
अरबीभाषामें	हमाहम ।

अस्या गुणाः ।

झण्डुः कटु कषायः स्याज्ज्वरभूतग्रहापहा । (रा० नि०)

अर्थ-लालमुरगा-चरपरा, कषेला तथा ज्वर, भूत और ग्रहकी पीडाको दूर करनेवाला है ।

सिन्दूरपुष्पीनामानि ।

सिन्दूरपुष्पी सिन्दूरी तृणपुष्पी सुकोमला ।

अर्थ-सिन्दूरपुष्पी, सिन्दूरी, तृणपुष्पी, सुकोमला (रक्तबीजा, रक्तपुष्पी, वीरपुष्पा, करच्छदा, शोणपुष्पी) ।

संस्कृतभाषामें	सिन्दूरपुष्पी ।
हिन्दीभाषामें	सिन्दूरिया, जाफर, लटकण ।
मराठीभाषामें	शेंद्री ।
गुजरातीभाषामें	सिन्दूरी ।
कर्णाटकीभाषामें	सिन्दूरी ।

इंग्रेजीभाषामे आरनाटो Arnatto
लेटिन्भाषामे बिक्साओरमाना Bixa Omana

अस्या गुणाः ।

सिन्दूरी विषपित्तास्रतृष्णावान्तिहरी हिमा (भा० प्र०)

अर्थ-सिन्दूरपुष्पी-विष, रक्तपित्त, तृषा और कान्तिनाशक तथा शीतल है ।

अन्यच्च ।

सिन्दूरी कटुका तिक्ता कषाया श्लेष्मवातजित् ।
शिरोर्तिशमनी भूतनाशी चंडीप्रिया भवेत् ॥

अर्थ-सिन्दूरपुष्पी-चरपरी, कडवी, कपेली, तथा कफ, वात, मस्तकरोग और भूतनाशक है तथा चण्डीको प्यारी है ।

अपिच ।

सिन्दूरी पुष्पिका तिक्ता कटुः शीतलघुः स्मृता। तुवरा रक्तदोषघ्नी वातरक्तं तृष जयेत् ॥ विषदोष च पित्त च वातपित्तं वमि तथा । कफं मस्तकशूलं च भूतदोषं च नाशयेत् । (नि०र०)

अर्थ-सिदूरपुष्पी-कडवी, चरपरी, शीतल, हलकी, कपेली तथा रक्तविकार, वातरक्त, तृषा, विषदोष, पित्त, वातपित्त, वमन, कफ, मस्तकशूल और भूतबाधाको दूर करनेवाली है ।

विवरण । सिन्दूरियाके क्षुप उपवनोंमे होते हैं, पत्ते बेलके समान होतेहैं, फूल लाल २ सिन्दूरकी समान होते है उसके बीजभी लाल रंगके होते है, इनको जलमे डालनेसे जल लाल होजाताहै ।

भाजकनामानि ।



प्राजक्तः पारिजातश्च हारशृङ्गारपुष्पकः ।
नलकुङ्कुमको रागपुष्पी च खरपत्रकः ॥

संस्कृतभाषामें प्राजक्त, पारिजात, हारशृङ्गारपुष्पक, नालकुंकुम, रागपुष्पी, खरपत्रक ।
हिन्दीभाषामे हारसिंगार, प्राजक्त ।
मराठीभाषामे प्राजक्त, पारिजात ।
गुजरातीभाषामे शीयाली, हारशणगार ।
इंग्रेजीभाषामे स्केरस्टोकड निक्टेंथिस। Square Stalked Nytnacthes
लैटिन्भाषामे निक्टेन्थिस् अर्बोट्रिसटिस्। Nycranthes Arbotristis

हारशृङ्गारगुणाः ।

रसः प्राजक्तपत्रस्य ज्वरघ्नस्तिक्तकः स्मृतः ।
पर्णखण्डसमायुक्तस्त्वचा कासविनाशनः ॥

अर्थ-हारशृंगारके पत्तोका रस-ज्वरनाशक और कडवा है । इसकी छाल पानमे रखकर खानेसे खांसी दूर होतीहै ।

विवरण । इसके वृक्ष वन और उपवनोंमें होते है इसके फूल अत्यन्त सुंदर होते है, फूलकी डंडी केशरीरंगकी होती है, उन डंडिओको पीसकर वस्त्र रंगते है, इसके फल चपटे और छोटे होते है और पत्ते ओडहुलकी समान तथा खरखरे होते है ।

॥ जपापुष्पनामानि ॥



ओड्रपुष्पं जपा चाथ प्रातिका हरिवल्लभा ।

संस्कृतभाषामे ओड्रपुष्प, जपा, प्रातिका, हरिवल्लभा (जवा, ओड्राख्या, रक्तपुष्पी, अर्कप्रिया, रागपुष्पी, ओड्रपुष्पी, त्रिसन्ध्या, अरुणा)
हिंदीभाषामें ओडहुल, जवा, गुडहर।
वंगभाषामे जवाफूलेरगाछ।
मराठीभाषामें जासवंद।
गुजरातीभाषामे जासुम।
कर्णाटकीभाषामे दासनल।
तैलिङ्गीभाषामे मंदारपु।
इंग्रेजीभाषामे शुफ्लावर। Shoeflower
लैटिनभाषामे हिबिस् स्कस् रोझासाई नेनसिस् Hibiscus Rosasinensis

अस्य गुणा।

जपा शीता च मधुरा स्निग्धा पुष्टिप्रदा मता।गर्भवृद्धिकरी ग्राही केश्या जन्तुप्रदा मता॥ वान्तिजन्तुकरा दाहप्रमेहार्शविनाशिनी। धातुरुक्प्रदरं चेद्रलुप्तं चैव विनाशयेत्॥ जपापुष्प लघु ग्राहि तिक्त केशविवर्द्धनम्। (नि० र०)

अर्थ–जपा (ओडहुल, गुडहर)–शीतल, मधुर, स्निग्ध, पुष्टिकारक, गर्भवृद्धिकारक, ग्राही,बालोको हितकारी तथा वमन और कृमिको उत्पन्न करनेवाली तथा दाह, प्रमेह, बवासीर, धातुरोग, प्रदर और इन्द्रलुप्त रोगको हरनेवाली है। इसके फूल–हलके, मलरोधक, कडवे और केशवर्द्धक है।

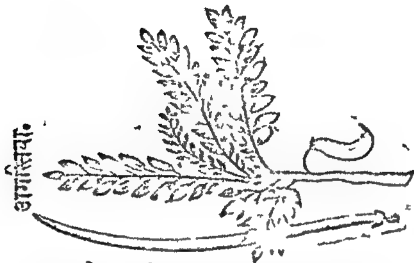
विवरण। जवाके वृक्ष मध्यमाकारके होते हैं, प्रायः बाग और उपवनोमे बोयेजाते हैं, पत्ते अडूसेकी समान बडे बडे और फूल बहुत बडा अत्यन्त लालरंगका आताहै। प्रयोगमे फूल लिये जाते हैं इसके फूलमे अनेक गुण है विशेषकरके रुधिरके विकार और स्त्रियोके रजके विकारोमे व्यवहार किये जाते हैं।

घृतभर्जितजपापुष्पगुणा।

घृतेन भर्जितजपारुयार्त्तवं कुरुते सुखम्।

अर्थ–घीमे भुनाहुवा गुडहरका फूल–स्त्रियोके सुखपूर्वक रजोधर्म करानेवाला है।

अगस्त्यनामानि ।



अगस्त्यो वङ्गसेनश्च मुनिपुष्पो मुनिद्रुमः ।

अर्थ-अगस्त्य, वङ्गसेन, मुनिपुष्प मुनिद्रुम (अगस्ति, शीघ्रपुष्प, व्रणारि, दीर्घफलक, रक्तपुष्प, सुरप्रिय, शुक्लपुष्प, व्रणापह, खरध्वसी, पवित्र, मुनिप्रिय मुनितरु, वङ्गसेनक, कनली, शीघ्रपुष्प, वक्रपुष्प, सुराश्रय)

संस्कृतभाषामे	अगस्त्य ।
हिन्दीभाषामे	अगस्तिया, हथिया, हदगा ।
बंगभाषामे	वक ।
मराठीभाषामे	अगस्ता, हदगा ।
गुजरातीभाषामे	अगथियो ।
कर्णाटकीभाषामे	अगसेधमरनु ।
तैलिङ्गीभाषामे	अनीसे, अविसि ।
तामिलीभाषामे	अगीति ।
इंग्रेजीभाषामे	लार्जफ्लावर्ड एगेटी ।
लैटिन्भाषामे	एगाटी ग्लाडी फ्लोरा ।

अस्य गुणाः ।

अगस्तिः पित्तकफजिच्चातुर्थिकहरो हिमः ।
रूक्षो वातकरस्तिक्तः प्रतिश्यायनिवारणः ।(भा० प्र०)

अर्थ-अगस्तिया-शीतल, रूखा, वातकारक, कडवा तथा पित्त, कफ, चातुर्थिकज्वर और प्रतिश्यायनिवारक है ।

अन्यच्च।

अगस्तिशिशिर गौल्य त्रिदोषघ्नं भ्रमापहम्।
बलासकासवैवर्ण्यभूतघ्नं च बलावहम्॥

अर्थ–हथिया–शीतल, गौल्य तथा त्रिदोष, भ्रम, बलास, कास, विवर्णता, भूतबाधा और बलनाशक है।

अस्य पुष्पगुणा।

अगस्तिकुसुम शीत चातुर्थिकनिवारकम्।
नक्तान्ध्यनाशनं तिक्तं कषायं कटुपाकि च॥
पीनसश्लेष्मपित्तघ्नं वातघ्न मुनिभिर्मतम्।

अर्थ–अगस्तियाके फूल–शीतल, चातुर्थिकज्वरनिवारक, रतोंधको दूर करनेवाले, कडवे, कषेले, पचनेमे चरपरे तथा पीनसरोग, कफ, पित्त और वातनाशक हैं।

अस्य पत्रगुणा।

पर्णं तु मुनिवृक्षस्य कटु तिक्त गुरु स्मृतम्।
मधुरं किञ्चिदुष्णं च स्वच्छं कृमिकफापहम्॥
कण्डूं विष रक्तपित्तं नाशयेदिति कीर्तितम्।

अर्थ–अगस्तियाके पत्ते–चरपरे, कडवे, भारी, मधुर, किञ्चित् गरम, स्वच्छ तथा कृमि, कफ, कण्डू, विष और रक्तपित्तको हरनेवाले हैं।

अस्यशिम्बीगुणा।

मुनिशिम्बी सरा प्रोक्ता बुद्धिदा रुचिदा लघुः। पाककाले तु मधुरा तिक्ता चैव स्मृतिप्रदा॥ त्रिदोषशूलकफहृत् पांडुरोगविषापनुत्॥ शोषगुल्महरा प्रोक्ता सा पक्वा रूक्षपित्तला। (नि० र०)

अर्थ–अगस्तियाकी फली–सारक (कुछेक दस्तावर) बुद्धिदायक, रुचिकारक, हलकी, पचनेमे मधुर, कडवी, स्मरणशक्तिवर्द्धक, तथा त्रिदोष, शूल, कफ, पाण्डुरोग, विष, शोष और गुल्मनाशक हैं। इसका शाक रूखा–और पित्तकारक है।

विवरण–अगस्तियाके वृक्ष पुष्पोद्यानोमे अधिक होतेहै, पत्ते सौंजिनेकेसे होते है। विशेषकरके इसपर नागरवेल अर्थात् पानोकी बेल चढा

करतीहै,इसलिये इसके पत्ते उत्तम होतेहैं इसके फूल लाल और सफेद होतेहैं इसकी फली, अत्यन्त कोमल होतीहै यह इसकी ठीक पहिचानहै कि,जब अगस्त्यमुनिका उदय होताहै तबही अगस्तियाके फूल खिलतेहैं ।

तुलसीनामानि ।

तुलसी वैष्णवी वृंदा सुगन्धा गन्धहारिणी ।
अमृता पत्रपुष्पा च पवित्रा सुरवल्लरी ॥

अर्थ-तुलसी, वैष्णवी, वृन्दा, सुगन्धा,गन्धहारिणी, अमृता,पत्रपुष्पा, पवित्रा, सुरवल्लरी (सुभगा, तीव्रा, पावनी, विष्णुवल्लभा, सुरेज्या, सुरसा, कायस्था, सुरदुन्दुभि, सुरभि, बहुपत्री, मञ्जरी, हरिप्रिया, अपेतराक्षसी, श्यामा, गौरी, त्रिदशमञ्जरी,भूतघ्नी,भूतपत्री, पर्णास, कठिञ्जर, कुठेरक,पुण्या,माधवी,सुरवल्ली, प्रेतराक्षसी, सुवहा, ग्राम्या, सुलभा, बहुमञ्जरी, देवदुन्दुभि, विष्णुपत्नी,मालाश्रेष्ठा, पापघ्नी, लक्ष्मी, श्रीकृष्णवल्लभा)

कृष्णतुलसीनामानि ।

कृष्णा तु कृष्णतुलसी कृष्णपर्णी करालकः ।

अर्थ-कृष्णा, कृष्णतुलसी, कृष्णपर्णी, करालक ।

संस्कृतभाषामे	तुलसी ।
हिन्दीभाषामे	तुलसी ।
वंगभाषामे	तुलसी ।
मराठीभाषामे	तुळस, तुलसी ।
गुजरातीभाषामे	तुलसी ।
कर्णाटकीभाषामे	एरेडतुलसी ।
तैलङ्गीभाषामे	तुलसी ।
इंग्रेजीभाषामे	व्हाईटबेझिल White Basil परपल् स्टाकुड बोझिल् Purple stalked Basil
लैटिन्भाषामे	ओसिन आल्बं Cimum Album ओसिम सेक्ट Ocimum sanctum
फारसीभाषामे	रेहान् ।
अरबीभाषामे	उलसीबदरुत ।

तुलसीगुणा ।

तुलसी कटुका तिक्ता हृद्योष्णा दाहपित्तकृत् ।
दीपनी कुष्ठकृच्छ्रास्रपार्श्वरुक्कफवातजित् ॥

शुक्ला कृष्णा च तुलसी गुणैस्तुल्या प्रकीर्तिता ।

अर्थ–तुलसी–चरपरी, कडवी, हृदयको हितकारी, गरम, दाहकारक, पित्तजनक, दीपन तथा कुष्ठ, मूत्रकृच्छ्र, रक्तविकार, पसवाडेकी पीडा, कफ और वातका नाश करनेवाली है । सफेद और काली तुलसीके गुण समान हैं ।

अन्यच्च ।

श्वेता कृष्णा च तुलसी कटूष्णा चोषणा जगुः। दाहपित्तकरी हृद्या तुवरा ह्यग्निदीपिका । लघ्वी वातकफश्वासकासहिध्माकृमीञ्जयेत् । वान्तिदौर्गन्ध्यकुष्ठानि पार्श्वशूलविषापहा ॥ मूत्रकृच्छ्रं रक्तदोषं भूतबाधां च नाशयेत्। शूलं ज्वरं च हिक्कां च नाशयेदिति कीर्तिता ॥ (नि० र०)

अर्थ–सफेद और काली तुलसी–चरपरी, गरम, तीक्ष्ण, दाहजनक, पित्तकारक, हृदयको हितकारी, कषेली, अग्निदीपक, हलकी तथा वात, कफ, श्वास, खाँसी, हिध्म, कृमि, वमन, दुर्गन्ध, कुष्ठ, पार्श्वशूल, विष, मूत्रकृच्छ्र, रक्तदोष, भूतबाधा, शूल, ज्वर और हुचकीको दूर करनेवाली है ।

विवरण । तुलसीके क्षुप जगलमे और बागोम बहुत होते है और बहुतेरे गृहस्थी लोग पूजाके लिये अपने २ घरोंमे लगा लेते है इसके पत्ते गोल २ कुछ लम्बाई लिये अत्यन्त कोमल होते है और उनमे सुगन्धिभी आती है, इसकी डाली २ मे वाल निकलती है उसको मंजरी कहते है । दूसरी श्याम पत्तोकी श्यामा तुलसी कहलाती है परन्तु आकृति दोनोकी एकसीही है ।

मरुबकनामानि ।


मरुवा. (क)


मरुवा (ख)

मरुत्तको मरुबको मरुन्मरुरपि स्मृतः ।
फणी फणिज्जकश्चापि प्रस्थपुष्पः समीरणः ॥

अर्थ-मरुत्तक, मरुबक, मरुत, मरु, फणी, फणिज्जक, प्रस्थपुष्प, समीरण (खरपत्र, गन्धपत्र, बहुवीर्य्य, शीतलक, सुराह, जम्बीर, प्रस्थकुसुम, मरिच, आजन्मसुरभिपत्र, कुलसौरभ)।

संस्कृतभाषामें	मरुबक।
हिन्दीभाषामें	मरुवा, मरुआ, गेंदरेत।
बंगभाषामें	मरुया।
मराठीभाषामें	सनजा, मर्वा।
गुजरातीभाषामें	मरवो।
कर्णाटकीभाषामें	मरुवा।
तैलङ्गीभाषामें	रुद्रजाड।
इंग्रेजीभाषामें	स्वीट्मार्जोरम् ।Sweet marjoram
लैटिन्भाषामें	ओरिध्येन मार्जोराना ।Origanum marjorana
फिरंगीभाषामें	शाहस्नू।
फारसीभाषामें	मर्जंगुश।
अरबीभाषामें	मर्जंजुश।

अस्य गुणाः

मरुदग्निप्रदो हृद्यस्तीक्ष्णोष्णः पित्तलो लघुः ।
वृश्चिकादिविषश्लेष्मवातकुष्ठक्रुमिप्रणुत् ॥
कटुपाकरसो रुच्यस्तिक्तो रूक्षः सुगन्धिकः ।

अर्थ-मरुवा-अग्निप्रदीपक, हृदयको हितकारी, तीक्ष्ण, गरम, पित्तजनक, हलका तथा बिच्छू इत्यादिका विष, कफ, वात, कुष्ठ और क्रुमिनाशक है। पाक और रसमें चरपरा, कडवा, रूखा और सुगन्धित है।

अन्यच्च ।

मरुबक कटूष्णश्च दीपनस्तिक्ततीक्ष्णकः । हृद्यः पित्तकरो रुच्यो रूक्षो लघुसुगन्धिकः ॥ पाचकः पित्तकफहृद्रक्तदोषविषज्वरान् । कुष्ठकण्डूरुचीवातश्वासशोफक्रुमीञ्जयेत् ॥ हृद्रोगग्रन्थिकविषविघ्नाध्मानशूलहा । मांद्यत्वग्दोषशम-

नः श्वेतकृष्णविभेदतः॥ श्वेतस्त्वौषधकृत्येषु योग्यः प्रोक्तः पुरातनैः । (नि० र०)

अर्थ-मरुवा-चरपरा, गरम, दीपन, कडवा, तीक्ष्ण, हृदयको हितकारी, पित्तकारक, रुचिकारी, रूखा, हलका, सुगन्धि, पाचक तथा पित्त, कफ, रक्तविकार, विषज्वर, कोढ, कण्डू, अरुचि, वात, श्वास, सूजन, कृमि, हृदयरोग, विच्छूका विष, मलबद्धता, पेटका फूलना, शूल, मन्दाग्नि और त्वचाके विकारोंको दूर करे है । मरुवा श्वेत और कृष्ण इन भेदोंसे दो प्रकारका है इनमें सफेद मरुवा औषधीके प्रयोगमें लिया जाता है ।

विवरण-मरुवेके क्षुप बागाम अधिक होते हैं, पत्ते लम्बे २ अंगुलीकी समान अत्यन्त सुगन्धित होते हैं इसमें तुलसीके समान बहुतसी बाले निकलती हैं, मरुवेके सब अंगोमें सुगन्धि आती है ।

दमणकनामानि ।



रक्तो दमनको दान्तो मुनिपुत्रस्तपोधनः ।
गन्धोत्कटो ब्रह्मजटो विनीतः कुलपत्रकः ॥

अर्थ-दमनक, दान्त, मुनिपुत्र, तपोधन, गन्धोत्कट, ब्रह्मजट, विनीत, कुलपत्रक, (पुष्पचामर, मदनक, दमन, मुनि, जटिला, दण्डी, पाण्डुराग, ब्रह्मजटा, पुण्डरीक, तापसपत्री, पत्री, पवित्रक, देवशेखर, कुलपत्र, तपस्विपत्र)

संस्कृतभाषामें — दमनक ।
हिन्दीभाषामें — दोना, दवना ।

वंगभाषामे	दोन, दना।
मराठीभाषामे	दवणा, रानदवणा ।
गुजरातीभाषामे	डमरो ।
कर्णाटकीभाषामे	दवना ।
इंग्रेजीभाषामे	वर्मुवुड । Worm wood
लैटिन्भाषामे	आर्टिमिस्या इन्डिका । Artemofia Indica
	आर्टिमिस्या सिवार्सियाना । A. Sieversian

दमनकगुणाः ।

दमनस्तुवरस्तिक्तो हृद्यो वृष्यः सुगन्धिकः ।
ग्रहणाद्विपकुष्ठास्रक्लेदकण्डूत्रिदोषजित् ॥ (नि० र०)

अर्थ-दौना-कषेला, कडवा, हृदयको हितकारी, वीर्यवर्द्धक, सुगन्धित, इसका सेवन करनेसे विष, कोढ, रुधिरविकार, क्लेद, कण्डू, और त्रिदोषका नाश होता है ।

अन्यच्च ।

दमनः शीतलस्तिक्तः कषायकटुकश्च दोषहरः ।
द्वन्द्वत्रिदोषशमनो विषस्फोटविकारहरणः स्यात् । (रा०)

अर्थ-दौना-शीतल, कडवा, कषेला, चरपरा तथा द्वन्द्वज दोष, त्रिदोष, विष और विस्फोटनाशक है ।

वनदमनकगुणाः ।

वनजो दमनः प्रोक्तो वीर्यस्तम्भनकारकः ।
बलप्रदश्चामदोषनाशकः परिकीर्तितः ॥

अर्थ-वनदौना-वीर्यस्तम्भक, बलदायक व आमदोषनाशक है ।

अग्निदमनकगुणाः ।

अग्नेर्दमनकश्चोष्णः कटू रूक्षोऽग्निदीपनः ।
रुच्यो हृद्यो वातकफगुल्मप्लीहविनाशकः ॥

अर्थ-अग्निदवना-गरम, चरपरा, रूखा, अग्निदीपक, रुचिकारक, हृदयको हितकारी तथा वात, कफ, गुल्म और प्लीहाको दूर करनेवाला है ।

विवरण-दौनेके क्षुप छोटे २ होते है, पत्ते अत्यन्त सुगन्ध युक्त होते है, पत्तोंके ऊपर बहुत रुआँसा होता है, फूलोके छत्तेसे होते है ।

अर्जकनामानि ।

अर्जकः क्षुद्रतुलसी क्षुद्रपर्णो मुखार्जकः ।
उग्रगन्धस्तु जम्बीरः कुठेरस्तु कठिञ्जरः ॥

अर्थ-अर्जक, क्षुद्रतुलसी, क्षुद्रपर्ण, मुखार्जक, उग्रगन्ध, जम्बीर, कुठेर, कठिञ्जर।

सितार्जकनामानि ।

सितार्जकस्तु वैकुठो वटपत्रः कुठेरकः ।
जम्बीरो गन्धवहुलः सुमुखः कटुपत्रकः ॥

अर्थ-सितार्जक, वैकुण्ठ, वटपत्र, कुठेरक, जम्बीर, गन्धवहुल, सुमुख, कटुपत्रक (श्वेतच्छद, पाता, अर्जक, श्वेतपर्णास, अम्राजक, तीक्ष्ण,तीक्ष्णगन्धा)

कृष्णार्जकनामानि ।

कृष्णार्जकः काममालो मालुकः कृष्णमालुकः ।
स्यात्कृष्णमल्लिका प्रोक्ता गरघ्नो वनबर्बरः ॥

अर्थ-कृष्णार्जक, कालमाल, मालुक, कृष्णमालुक, कृष्णमल्लिका गरघ्न, वनबर्बर (कृष्णवर्णी, कालपर्णी, करालक, कृष्णपर्णी, सुरभिमालक, कालमालक) ।

बर्बरीनामानि ।

बर्बरी कवरी तुङ्गी खरपुष्पाजगन्धिका ।

अर्थ-बर्बरी, कवरी, तुङ्गी, खरपुष्पा, अजगन्धिका, (असुरसा, वर्वा, अजगन्धा, कबरा, खरपुष्पिका, सुरभी, तुलसीद्वेषा, सुरसा, अवेतराक्षसी)।

वनबर्बरीनामानि।

वनबर्बरिकाऽन्या तु सुगन्धिः सुप्रसन्नकः ।
दोपाक्लेशी विपघ्नश्च सुमुखः सूक्ष्मपत्रकः ॥
निद्रालुः शोफहारी च सुवक्रश्च दशाह्वयः ।

अर्थ-वनबर्बरिका, सुगन्धि, सुप्रसन्नक, दोपाक्लेशी, विपघ्न, सुमुख, सूक्ष्मपत्रक, निद्रालु, शोफहारी, सुवक्र ।

संस्कृतभाषामें	अर्जक, बर्बरी, वनबर्बरी ।
हिन्दीभाषामें	बर्बरी, वनतुलसी ।

वंगभाषामे	वाबुइतुलसी, वनवाबुइतुलसी।
मराठीभाषामे	रानतुळस ।
गुजरातीभाषामे	रानतुलसीभेद ।
कर्णाटकीभाषामे	कगोरले-करीयकगोरले ।
तैलिङ्गीभाषामे	कारुतुलसी ।
सिं०	तोकुथलाम्या ।
लेटिन्भाषामे	ओसिमम् ग्रेटिसिम । Ocimum gratissimum
फारसीभाषामे	पलंगमुष्क।
अरबीभाषामे	फरंजमुष्क ।

अर्जक सितार्जक-कृष्णार्जकगुणा ।

अर्जकस्त्रिकटूष्णाः स्युः कफवातामयापहाः ।
नेत्रामयहरा रुच्याः सुखप्रसवकारकाः ॥ (रा० नि०)

अर्थ-तीनोप्रकारकी अर्जक-चरपरी, रुचिकारक, गरम तथा कफ, वातरोग और नेत्ररोगनाशक है तथा सुखपूर्वक प्रसव करानेवाली है।

अ०पद्य ।

वर्बरीत्रितयं रूक्षं शीतं कटु विदाहि च ।
तीक्ष्ण रुचिकर हृद्य दीपनं लघुपाकि च ॥
पित्तलं कफवातास्त्रदद्रुक्रिमिविषापहम् ।

अर्थ-तीनोप्रकारकी वर्बरी-रूखी, शीतल, चरपरी, दाहजनक, तीक्ष्ण, रुचिकारक, हृदयको हितकारी, दीपन, पचनेमे हलकी, पित्तकारक तथा कफ, वात, रुधिरदोष, दाद, कृमि और विषको दूरकरनेवाली है।

आरण्यतुलसी क्षुद्रा कटी चोष्णा च तिक्तका । रुच्याग्निदीपनी हृद्या विदाही लघुपित्तला ॥ रूक्षा कण्डूविषच्छर्दिकुष्ठज्वरविनाशिनी । वात कृमीन्कफ दद्रुं रक्तदोषं च नाशयेत् । बीजं चास्या दाहशोषनाशकंपरिकीर्त्तितम् ।

अर्थ-सर्वप्रकारकी बर्बरी-चरपरी, गरम, कडवी, रुचिकारक, अग्निदीपक, हृदयको हितकारी, दाहकारक, हलकी, पित्तजनक, रूखी तथा कण्डू, विष, वमन, कुष्ठ, ज्वर, वात कृमि, कफ, दाद और रुधिरके दोषोको दूरकरने वाली है । इसके बीज-दाह और शोषनाशक है।

वनबर्बरिकागुणाः ।

वनबर्बरिका चोष्णा सुगन्धा कटुका च सा ।
पिशाचवान्तिभूतघ्नी घ्राणसन्तर्पणी परा ॥ (रा० नि०)

अर्थ-वनबर्बरी-गरम, सुगन्धित, चरपरी, नासिकाइन्द्रियको तृप्ति करने वाली तथा पिशाचबाधा, वमन और भूतबाधाको दूर करनेवाली है ।

अन्यच्च ।

आरण्यतुलसी चोष्णा कटुका च सुगन्धिका ।
वातत्वग्दोषवीसर्पं विषं चैव विनाशयेत् ॥(नि० र०)

अर्थ-वनतुलसी-गरम, चरपरी, सुगन्धित तथा वात, त्वचाके विकार, विसर्प और विषके विकारोको हरनेवाली है ।

अपिच ।

निद्राहरः शोफहरी दाहकारी च स स्मृतः ।
समुख चातिकृच्छ्रघ्नं वातश्लेष्महरं परम् ॥

अर्थ-वनबर्बरी-निद्राका नाशकरनेवाली, शोफनाशक,दाहकाकर तथा मूत्रकृच्छ्र, वात और कफनाशक है ।

विवरण-बर्बरी अर्थात् वनतुलसी अनेक प्रकारकी होती है यह प्रायः जंगल और वनोमे अधिक होतीहै, पत्ते पियाबाँसेके समान छोटे होतेहै उनमे नीमके पत्तोकेसे कंगूर होतेहै, फूल पिलावनलिये होताहै सुगन्धिभी बहुत आती है ।

अथ पद्मनामानि ।



पङ्कजं कमलं पद्ममब्जं नलिनमम्बुजम् ।
कुशेशयं च राजीवमरविन्दं सरोरुहम् ।

अर्थ-पंकज, कमल, पद्म, अब्ज, नलिन, अम्बुज, कुशेशय, राजीव, अरविन्द, सरोरुह (पाथोज, नल, अम्भोज, अम्बुजन्म श्री (:) अम्बुरोह, अम्बुपद्म, सुजल, अम्भोरुह, पाथोरुह, पुष्कर, वार्ज, तामरस, कुञ्ज, कज, शतपत्र, बिसकुसुम, सहस्रपत्र, महोत्पल, वारिरोह, सरसिज, सलिलज, पंकेरुह बिसप्रसून, वारिज, कवार, आस्यपत्र, वनशोभन, जलजन्म, जलरुट्, जल रुह, सरोज, सरोजन्म, सरोरुट्, पंकेज, श्रीवास, श्रीपर्ण, इन्दिरालय, जलजात, कज, नालीक, नालिक, वनज, अम्लान, पुटक, अब्ज, सारज, सरसीरुह, कुटप)

श्वेतकमलनामानि ।

पुण्डरीकं महापद्मं श्वेतपद्मं सिताम्बुजम् ।
हशोपम हरिनेत्र शारद शम्भुवल्लभम् ॥

अर्थ-पुण्डरीक, महापद्म, श्वेतपद्म, सिताम्बुज, हशोपम, हरिनेत्र, शारद, शम्भुवल्लभ (सिताम्भोज, शतपत्र, शुक्लपद्म, सिताब्ज, श्वेतवारिज, शरत्पद्म) ।

रक्तकमलनामानि ।

रक्तोत्पलं कोकनद रक्तवर्णं रविप्रियम् ।

अर्थ-रक्तोत्पल, कोकनद, रक्तवर्ण, रविप्रिय, (अल्पपत्र, रक्तकमल, रक्तकम्बल, आलोहित, अलिप्रिय, कृष्णकन्द, रक्ताभोज, शोणपद्म, अरुणकमल, चारुनालक, अरविन्द, रक्तवारिज, रक्तसरोरुह ।

नीलकमलनामानि ।

नीलाम्बुजन्म नीलाब्ज नीलपद्मं मृदूत्पलम् ।

अर्थ-नीलाम्बुजन्म, नीलाब्ज, नीलपद्म, मृदूत्पल, (इन्दीवर, नीलपङ्कज, नीलकमल)

नीलोत्पलनामानि ।

इन्दीवर कुवलय कन्दोट नीलपत्रकम् ।

अर्थ-इन्दीवर, कुवलय, कन्दोट, नीलपत्रक, (उत्पलक, कन्दोत्थ, सौगन्धिक, सुगन्ध, कुड्मलक, असितोत्पल, इन्दिरावर, इन्दीवार, नीलपत्र)

संस्कृतभाषामे-कमल, पुण्डरीक, रक्तपद्म, नीलपद्म, नीलोत्पल ।

हिन्दीभाषामे	कमल, सफेदकमल, लालकमल, नीलकमल, नीलकमोदनी।
बंगभाषामे	पद्म, श्वेतपद्म, रक्तपद्म, नीलपद्म, नीलशुन्दि,
मराठीभाषामे	कमळ, पाढरेकमळ, तांबडेकमळ, नीळेकमळ।
गुजरातीभाषामे	कमल, धोलाकमल, रातनाऊघेडेते रातांकमल जेना नालमां कांटा होय, नीलकमल, सुगन्धीनेताना।
कर्णाटकीभाषामे	बिळियतावरे, केदावरे, करियतावरे, नेइदिलु।
तैलङ्गीभाषामे	कालावा, नालावाकालावा, एराकालावा, तम्मि, तस्मियुल्लु, नेल्लनामर, नल्लकुलवु।
तामिलीभाषामें	अम्बल।
इंग्रेजीभाषामे	लोटस् Lotus
लैटिन्भाषामे	लीलंबियम् स्पेसीयोझम्। Nelumbıam Specıosum; नीलंबीयं केरुलियम्। Nelumbınm Carruleum; नीलबीयं प्युबेसिन्स। N -pubeseıns
फारसीभाषामे	नीलुफर, गुलनीलोफर।
अरबीभाषामे	करबुलमा, बर्द नीलोफर।

कमलगुणा।

कमलं शीतलं वर्ण्यं मधुरं कफपित्तजित्।
तृष्णादाहास्रविस्फोटविषवीसर्पनाशनम्॥ (भा० प्र०)

अर्थ-साधारणकमल-शीतल, देहको सुन्दर करनेवाला, मधुर तथा कफ, पित्त, तृषा, दाह, रुधिरदोष, विस्फोट, विष और विसर्परोगनाशक है।

अन्यच्च।

पद्मं कषाय मधुरं शीतं पित्तकफास्रजित्। (रा० व०)

अर्थ-कमल-कषेला, मधुर, शीतल तथा पित्त, कफ और रुधिरविकारको दूर करे है।

अपिच।

कमलं शीतलं स्वादु सुगन्धि भ्रान्तितापहम्। वर्ण्यं तृप्तिकरं चैव रक्तपित्तश्रमापहम्॥ कफंपित्तंतृषां दाहं विस्फोटं रक्तदोषकम्। विसर्पं च विषं चैव नाशयेदिति कीर्त्तितम्॥

अर्थ-कमल-शीतल, स्वादिष्ठ, सुगन्धि, भ्रांतिहारक, तापनिवा-

रक, वर्णकारक, तृप्तिजनक तथा रक्तपित्त, श्रम, कफ, पित्त, तृषा, दाह, विस्फोट, रक्तविकार, विसर्प और विषको दूर करनेवाला है।

श्वेतकमलगुणाः ।

धवलं कमलं शीतं मधुरं कफपित्तजित् । (भा० प्र०)

अर्थ-सफेदकमल-शीतल, मधुर तथा कफ और पित्तनाशक है।

अन्यच्च ।

श्वेतं तु कमलं शीतं स्वादु तिक्तं कषायकम् । मधुरं वर्णकृन्नेत्र्यं रक्तदोषतृषाहरम् ॥ कफं पित्तं श्रमं दाहं तृष्णां शोथं व्रणं ज्वरम् । सर्वविस्फोटकं चैव नाशयेदिति कीर्तितम् ॥ (रा० नि०)

अर्थ-सफेदकमल-शीतल, स्वादिष्ठ, कडवा, कषैला, मधुर, वर्णको उज्ज्वल करनेवाला, नेत्रोंको हितकारी तथा रुधिरविकार, तृषा, कफ, पित्त, श्रम, दाह, तृष्णा, शोष, व्रण, ज्वर और सर्वप्रकारके विस्फोटकोंको हरनेवाला है।

रक्तकमलगुणाः ।

कोकनदं कटु तिक्तं मधुरं शिशिरं च रक्तदोषहरम् ।
पित्तकफवातशमनं सन्तर्पणकारणं वृष्यम् ॥ (रा०नि०)

अर्थ-लालकमल-चरपरा, कडवा, मधुर, शीतल, रक्तदोषनाशक, पित्त, कफ और वातको शान्ति करनेवाला, संतर्पण तथा शुक्रवर्द्धक है।

नीलकमलगुणाः ।

नीलाब्जं शीतलं स्वादु सुगन्धि पित्तनाशकृत् ।
रुच्यं रसायने श्रेष्ठं केश्यं च देहदार्ढ्यकृत् ॥ (रा० नि०)

अर्थ-नीलकमल-शीतल, स्वादिष्ठ, सुगन्धि, पित्तनाशक, रुचिकारक, रसायनकर्म्ममें उत्तम, देहको दृढ करनेवाला और बालोंको बढानेवाला है।

नीलोत्पलगुणाः ।

नीलोत्पलमतिस्वादु शीतं सुरभि सौख्यकृत् ।
पाके तु तिक्तमत्यन्तं रक्तपित्तापहारकम् ॥ (रा० नि०)

अर्थ-नीलोत्पल (फा० नीलोफर)-अत्यन्त स्वादिष्ठ, शीतल, सुगन्धि, सुखकारक, पचनेमें अत्यन्त कडवा और रक्तपित्तनाशक है।

पद्मिनीनामानि ।

मूलनालदलोत्फुल्लफलैः समुदिता पुनः ।

पद्मिनी प्रोच्यते प्राज्ञैर्विसिन्यादिश्च सा स्मृता ॥

अर्थ-मूल, नाल, पत्र और बीजादिसयुक्त, खिलेहुए कमलको पद्मिनी कहते हैं, (विसिनी, नालिनी, कुन्दिनी, मृणालिनी, कमलिनी, पुटकिनी, पंकजिनी, सरोजिनी, अरविन्दिनी, अब्जिनी, नालिकिनी, अम्भोजिनी, पुष्करिणी और जम्बालिनी यह सब पद्मिनीके पर्य्याय हैं)।

पद्मिनीगुणाः।

पद्मिनी मधुरा तिक्ता कषाया शिशिरापरा।
पित्तक्रिमिशोषवान्तिभ्रांतिसन्तापशान्तिकृत् ॥ (रा नि)

अर्थ-कमलिनी-मधुर, कडवी, कषेली, शीतल तथा पित्त, कृमि, शोष, वांति, भ्रांति और संतापकी शांति करनेवाली है।

अन्यच्च।

पद्मिनी शीतला गुर्वी मधुरा लवणा च सा।
पित्तासृक्कफनुद्रूक्षा वातविष्टम्भकारिणी ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-कमलिनी-शीतल, भारी, मधुर, लवणरसयुक्त, रक्तपित्तनिवारक, कफनाशक, रूखी और वातविष्टम्भकारक है।

अपिच।

पद्मिनी मधुरा शीता तिक्ता च तुवरा गुरुः। वातस्तम्भकरी रूक्षा स्तनदार्ढ्यकरी मता॥ कफं पित्तं रक्तरुजं विषं शोषं वमिं कृमीन्। सन्तापं मूत्रकृच्छ्रं च नाशयेदिति कीर्तिता॥ (नि०र०)

अर्थ-कमलिनी-मधुर, शीतल, कडवी, कषेली, भारी, वातस्तम्भकारक, रूखी, स्तनोंको दृढ करनेवाली तथा कफ, पित्त, रक्तविकार, विष, शोष, वमन, कृमि, संताप और मूत्रकृच्छ्ररोगको हरनेवाली है।

पद्मसंवर्त्तिकादिनामानि।

संवर्त्तिका नवदलं बीजकोशस्तु कर्णिका।
किञ्जल्कः केसरः प्रोक्तो मकरन्दो रसः स्मृतः॥
पद्मनालं मृणालं स्यात्तथा बिसमिति स्मृतम्।

अर्थ-कमलके नये पत्तोंको संवर्त्तिका, बीजकोश (कमलगट्टेका घर)को कर्णिका, केसर (जीरा)को किञ्जल्क रसको मकरन्द और नालको मृणालकंद तथा बिस (कमलकंद) कद कहते हैं।

संवर्त्तिकागुणा ।

संवर्त्तिका हिमा तिक्ता कषाया दाहतृड्प्रणुत् ।
मूत्रकृच्छ्रगुदव्याधिरक्तपित्तविनाशिनी ॥

अर्थ-कमलके कोमलपत्ते-शीतल, कडवे, कषेले तथा दाह, तृषा, मूत्रकृच्छ्र गुदरोग और रक्तपित्तको दूर करनेवाले है ।

कर्णिकागुणा ।

पद्मस्य कर्णिका तिक्ता कषाया मधुरा हिमा ।
मुखवैशद्यकृल्लघ्वी तृष्णास्रकफपित्तनुत् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-कर्णिका (बीजकोष)-कडवा, कषेला, मधुर, शीतल, हलका तथा मुखकी विरसता, तृषा, रक्तविकार, कफ और पित्तका नाश करे है ।

पद्मकेसरनामानि ।

किञ्जल्कं मकरन्दं च केसरं पद्मकेसरम् ।

अर्थ-किञ्जल्क, मकरंद, केसर, पद्मकेसर (किञ्ज, पीतपराग, तुङ्ग, चाम्पेयक, केशर, चाम्पेय, आपीत, काञ्चन)

पद्मकेशर गुणा ।

किञ्जल्कः शीतलो वृष्यः कषायो ग्राहिकोऽपि सः ।
कफपित्ततृषादाहरक्तार्शोविषशोथजित् ॥

अर्थ-कमलकेसर-शीतल, वीर्यवर्द्धक, कषेली, मलरोधक तथा कफ, पित्त, तृ ा, दाह, रक्तार्श (रुधिरकी बवासीर), विष और सूजनको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

किञ्जल्को मधुरो रूक्षः कटुरास्यव्रणापहः ।
शिशिरो रुच्यपित्तघ्नस्तृष्णादाहविषापहः॥ (रा०नि०)

अर्थ-कमलकेसर-मधुर, रूखी, चरपरी, मुखरोग तथा व्रणरोगनाशक है और शीतल, रुचिकारक, पित्तनाशक, तृषा, दाह और विषको दूर करनेवाली है ।

अपिच ।

किञ्जल्कःशीतलो ग्राही कान्तिदस्तुवरो मधुः । कटू रूक्षो रुचिकरो गर्भस्थैर्य्यकरो मतः॥ व्रण पित्तं तृषां दाह मुखरोगक्ष-

यं कफम्। विषं रक्तार्शसं शोपं ज्वरं वातं च नाशयेत्॥ (नि र)

अर्थ-कमलकेसर-शीतल, मलरोधक, कान्तिजनक, कपेली, मधुर, चरपरी, रुचिकारी गर्भको स्थिर करनेवाली तथा व्रण, पित्त, तृषा, दाह, मुखरोग, क्षय, कफ, विष, रक्तार्श, शोष, ज्वर और वातका नाश करनेवाली है।

पद्मबीजनामानि।

पद्मबीज तु पद्माक्षं गालोड्यं पद्मकर्कटी।

अर्थ-पद्मबीज, पद्माक्ष, गालोड्य, पद्मकर्कटी (कन्दली मेण्डा, क्रौञ्चादनी, क्रौञ्चा, श्यामा)।

संस्कृतभाषामे	पद्मबीज।
हिन्दीभाषामे	कमलगट्टा।
वंगभाषामे	पद्मवीचि।
मराठीभाषामे	कमलाक्ष।
तैलिङ्गीभाषामे	तामरकाडा।
गुजरातीभाषामे	कमलकाकडी।
कर्णाटकीभाषामे	पद्माक्ष।
अरबीभाषामे	वालकेकुवति।

अस्य गुणाः।

पद्मबीजं हिमं स्वादु कषायं तिक्तकं गुरु।
विष्टम्भि वृष्यं रूक्षं च गर्भस्य स्थापकं परम्॥
कफवातहरं बल्यं ग्राहि पित्तास्रदाहनुत्। (भा० प्र०)

अर्थ-कमलगट्टा-शीतल, स्वादिष्ठ, कषेला, कडवा, भारी, विष्टम्भकारक, वीर्य्यवर्द्धक, रूखा, गर्भस्थापक, कफवातनाशक, बलकारक, मलरोधक तथा रक्तपित्त और दाहको दूर करनेवाला है।

अपिच।

कमलाक्षः स्वादु रुच्यः पाचनः कटुकः स्मृतः। शीतलस्तुवरस्तिक्तो गुरुर्विष्टम्भकारकः॥ गर्भस्थितिकरो रूक्षो वृष्यो वातकरो मतः। कफकृच्छ्लेखनो ग्राही बल्यः पित्तविनाशकः॥ रक्तरुग्वमिदाहास्रपित्तनाशकरो मतः। (निघण्टुरत्नाकर)

अर्थ-कमलगट्टा-स्वादिष्ठ, रुचिकारक, पाचक, चरपरा, शीतल, कपेला, कडवा, भारी, विष्टम्भकारक, गर्भस्थापक, रूखा, वीर्य्यवर्द्धक, वातवर्द्धक कफकारक, लेखन, मलरोधक, बलकारक तथा पित्त, रक्तविकार, वमन, दाह और रक्तपित्तका नाश करनेवालाहै। पूर्वदेशमे कमगट्टेकी गिरी (मींग) को भूनकर मखाना वनाते है। मखानेके गुण आगे परिशिष्टवर्गमे लिखे है।

मकरन्द-पद्ममधुगुणा ।

अरविन्दहृतः शीतो मकरन्दोतिबृंहणः ।
त्रिदोषशमनः सर्वनेत्रामयनिषूदनः ॥ (आ० सं०)

अर्थ-कमलका मधु-शीतल अत्यन्तपुष्टिकारक, त्रिदोषनाशक और सर्वप्रकारके नेत्ररोगोको दूर करनेवाला है।

पद्मक्षारनामानि ।

कमलिन्याश्छदः शीतस्तुवरो मधुरो मतः।
तिक्तः पाकेऽतिकटुको लघुर्वै ग्राहको मतः ॥
वातकृत्कफपित्तानां नाशको मुनिभि स्मृतः ॥ (नि. र)

अर्थ-कमलिनीके पत्ते-शीतल, कपेले, मधुर, कडवे, पचनेमें चरपरे, हलके, मलरोधक, वातकारक तथा कफपित्तनाशक है।

पद्मनालनामानि ।

मृणालं पद्मनालं च कोमल बिसिनी बिसम्।

अर्थ-मृणाल, पद्मनाल, कोमल, बिसिनी, बिस (बिस, कोरक, कोमलक, तन्तुर, मृणाली, मृणालिनी, पद्मतन्तु, नलिनीरुह तन्तुल)

संस्कृतभाषामे	मृणाल, पद्मनाल ।
हिन्दीभाषामे	कमलकी नाल, कमलकी डंडी ।
बंगभाषामे	पद्मेरडांटा ।
मराठीभाषामे	कमळाचा देठ ।
कर्णाटकीभाषामे	कमलदनूलु ।
तैलिङ्गीभाषामे	तामरतुड, तामरतोगे ।

मृणालगुणा ।

मृणाल शिशिर तिक्त कषायं पित्तदाहजित् ।
मूत्रकृच्छ्रविकारघ्न रक्तवान्तिहर परम् ॥ (रा० नि०)

अर्थ-कमलकी नाल-शीतल, कडवी, कपेली तथा पित्त, दाह, मूत्रकृच्छ्, रुधिरविकार और वमनको हरनेवाली है।

अन्यच्च।

मृणाल शीतलं वृष्य पित्तदाहास्रजिद्गुरु।
दुर्जरं स्वादुपाकं च स्तन्यानिलकफप्रदम्॥
संग्राहि मधुरं रूक्ष शालूकमपि तद्गुणम्।(भावप्र०)

अर्थ-कमलकी नाल-शीतल, वीर्य्यवर्द्धक, पित्तनिवारक, दाह हारक, रक्तरोगनाशक, भारी, दुर्जर, पचनेमे स्वादिष्ठ, स्तनोमे दूध उत्पन्न करनेवाली, वातवर्द्धक, कफकारक, मलरोधक, मधुर और रूखी है इसीकी समान भसीडेके गुण जानने।

पद्मकन्दनामानि।

पद्मादिकन्दः शालूक करहाटश्च कथ्यते।
मृणालमूलं भिस्साण्डं जालालूक च कथ्यते॥

अर्थ-कमलादिकके कन्दको शालूक, करहाट (पद्ममूल, कटाह्वय, शालूक और जालालूक) कहते है। मृणालकी मूलको भिस्साण्ड, जलालूक, (पंकशूरण, शालूक, शालु और गोपभद्र) कहते है।

संस्कृतभाषामे	पद्मकन्द, भिस्साण्ड।
हिन्दीभाषामे	कमलकन्द, भसीडा।
वङ्गभाषामे	पद्मेर गेडो, शालुक।
तैलिंगीभाषामे	जाजिकाय।

शालूकगुणा।

शालूकं कटु विष्टम्भि रूक्षं रुच्य कफापहम्।
कषायकासपित्तघ्नं तृष्णादाहनिवारणम् (रा० नि०)

अर्थ-शालूक (कमलकंद, भसीडा)-कटु, विष्टम्भकारक, रूक्ष, रुचिकारक, कफनाशक, कपेला तथा खाँसी, पित्त, तृषा और दाहनिवारक है।

अपिच।

शालूकः कटुकश्चोक्तस्तुवरो मधुरो गुरुः। मलस्तम्भकरो
रूक्षो नेत्र्यो वृष्यश्च शीतलः॥ दुर्जरो ग्राहको रक्तपित्त दाह
तृषां कफम्।पित्तवातं च गुल्मं च पित्तं कास कृमींस्तथा॥
मुखरोग रक्तदोषं नाशयेदिति च स्मृतः। (नि० र०)

अर्थ-शालूक (कमलकन्द, भसीडा)-कटु, कषेला, मधुर, भारी, मलस्तम्भक, रूखा, नेत्राको हितकारी, वीर्य्यवर्द्धक, शीतल, दुर्जर, मलरोधक तथा रक्तपित्त, दाह, तृषा, कफ, पित्तवात, गुल्म, पित्त, खाँसी, कृमि, मुखरोग और रुधिरविकारको दूर करनेवाला है।

विवरण। कमल-लाल, नीले और सफेद इन भेदोंसे तीन प्रकारके होते है, कमल विशेषकरके गम्भीर और निर्मल नीरवाले स्वच्छ सरोवर और तालोंमें उत्पन्न होतेहै पत्ते बडे २ गोल और चिकने जिनपर जलका बिन्दु न ठहरे इसप्रकारके अद्भुत और शोभायमान होते है उन पत्तोको पुरैनके पातभी कहते है, उनके नीचे जो डण्डी होती है उसको मृणाल अर्थात् कमलकी नाल कहते है, कमलके फूलोमे जो पीला २ जीरा होता है उसको कमल केशर कहते है, कमलके फूलोमे जो स्वरस रस लगा होता है उसको कमलकी रज और मकरन्द कहते है, कमलमे जो फल लगते है उसको पद्मकोष कहते है उनमे जो बीज निकलते है, उनका नाम कमलगट्टे है कमलकी जडको भसीड कहते है।

कुमुदनामानि।

कैरवं चन्द्रकान्तं च गर्दभ कुमुद कुमुद्।

अर्थ-कैरव, चन्द्रकान्त, गर्दभ, कुमुद, कुमुद् (सौगन्धिक, कन्दोत, कच्छ, कुव, गन्धसोम, सितोत्पल, धवलोत्पल, श्वेतोत्पल, कह्लार, शीतलक, शशिकान्त, चन्द्रिकाम्बुज, इन्दुकमल, कुवलय)

संस्कृतभाषामे	कुमुद।
हिन्दीभाषामे	कोई, कमोदनी, बघोला, बबूलों।
बंगलाभाषामे	हेलाफुल, नालेफुल, श्वेतशुद्धि।
मराठीभाषामे	पांढरे उत्फुल।
गुजरातीभाषामे	पोयणा।
कर्णाटकीभाषामे	ावलियेते इंटिलु।

कुमुदगुणा।

कुमुद शीतलं स्वादु पाके तिक्तं कफापहम्।
रक्तदोपहर दाहश्रमपित्तप्रशान्तिकृत् ॥(रा० नि०)

अर्थ-कुमुद (कमोदनी) शीतल-स्वादिष्ठ, पचनेमे कडवी, कफनाशक तथा रुधिरविकार, दाह, श्रम और पित्तको शान्ति करे है।

अन्यच्च ।

कुमुदं पिच्छिलं स्निग्धं मधुरं ह्लादि शीतलम् ।

अर्थ-कुमुद-पिच्छिल, स्निग्ध, मधुर, शीतल और आनन्दजनक है।

कुमुदबीजगुणाः ।

भवेत्कुमुद्वतीबीजं स्वादु रूक्षं हिमं गुरु ।

अर्थ-कुमुदके बीज अर्थात् घंघोलके दाने-स्वादिष्ठ, रूखे, शीतल और भारी हैं ।

उत्पलनामानि ।

अनुष्णं चोत्पलं चैव रात्रिपुष्पं जलाह्वयम् ।
हिमाब्जं शीतजलज निशाफुल्लं च सप्तधा ॥

अर्थ-अनुष्ण, उत्पल, रात्रिपुष्प, जलाह्वय, हिमाब्ज, शीतजलज, निशाफुल्ल (पुष्प) (कुवल, कुवलय कुवेल) ।

उत्पलगुणाः ।

उत्पलं शिशिरं स्वादु पित्तरक्तार्त्तिदोषनुत् ।
दाहश्रमवमिभ्रान्तिकृमिज्वरहरं परम् ॥

अर्थ-उत्पल-शीतल, स्वादिष्ठ तथा पित्त, रक्तविकार, दाह, श्रम, वान्ति, भ्रान्ति, कृमि और ज्वरको शान्ति करे हैं ।

रक्तकुमुदनामानि ।

हल्लकं रक्तकुमुदं सोमाख्यं रक्तकैरवम् ।

अर्थ-हल्लक, रक्तकुमुद, सोमाख्य, रक्तकैरव (रक्तसन्ध्यक, रक्तकल्हार, रक्तसौगन्धिक, रोचना, अलगन्ध)

उत्पलिनीनामानि।

उत्पलिनी कैरविणी कुमुद्वती कुमुदिनी च चन्द्रेष्टा ।
कुवलयिनीन्दीवरिणी नीलोत्पलिनी च विज्ञेया ॥

अर्थ-उत्पलिनी, कैरविणी कुमुद्वती, कुमुदिनी, चन्द्रेष्टा, कुवलयिनी, इन्दीवरिणी, नीलोत्पलिनी ।

उत्पलिनीगुणाः ।

उत्पलिनी हिमा तिक्ता रक्तामयहारिणी च पित्तघ्नी ।
तापकफकासतृष्णाश्रमवमिशमनी च विज्ञेया ॥(रा नि)

अर्थ-कुमुदिनी-उत्पलिनी-शीतल, कडवी तथा रक्तरोग, पित्त, ताप, कफ, खांसी, तृषा, श्रम और वमनको दूर करनेवाली है।

विवरण। कुमुदिनी कमलके तुल्य तीन प्रकारके होते हैं लाल, नीले और सफेद फूलोंके भेदसे हो जाते हैं, कुमुदके फूल कमलके फूलोंसे छोटे होते हैं और रात्रिको चन्द्रमाके उदय होनेपर खिलते हैं और सूर्यका प्रकाश होतेही बन्द हो जाते हैं, इसके पत्ते फूलके ऊपरही लगे होते हैं, उसमें जावित्रीके समान कोष होता है, उस कोषका फल होजाता है, कच्ची अवस्थामें तो उसके भीतर लाल दाने निकलते हैं और पक जानेपर वह दाने काले पड जाते हैं उस फलको घचोल कहते हैं, उसकी जडको चाच अथवा सालक कहते हैं।

स्थलपद्मिनीनामानि।

पद्मचारिण्यतिचराऽव्यथा पद्मा च सारदा।

अर्थ-पद्मचारिणी, अतिचरा, अव्यथा, पद्मा, सारदा, (चारिटी, पद्माह्वा, सुगन्धमूला, अम्बुरुहा, लक्ष्मी, श्रेष्ठा, सुपुष्करा, रम्या, पद्मावती, स्थलरुहा, पुष्करिणी, पुष्करपर्णिका, पुष्करनाडी)।

संस्कृतभाषामें	स्थलपद्मिनी।
हिन्दीभाषामें	स्थलकमलिनी।
वंगभाषामें	स्थलपद्म।
मराठीभाषामें	स्थलकमलिनी।
कर्णाटकीभाषामें	कलुदावरे।

लैटिन्‌भाषामें आयोनीडम सफ्रुटिकोसम् । Ionidium Suffruticosum

अस्य गुणाः।

शीता तिक्ता च तुवरा स्तनदार्ढ्यकरी मता। लघ्वी कट्वी च विज्ञेया कफपित्तस्य नाशिनी॥ मूत्राश्मरीमूत्रकृच्छ्रा-तशूलातिसारहा। वान्तिदाहं मोहमेहौ रक्तरुग्श्वासहा मता॥ अपस्मारं विषं कासं नाशयेत्पद्मचारिणी। (नि० र०)

अर्थ-पद्मचारिणी-स्थलकमलिनी- शीतल, कडवी, कषेली, स्तनोंको दृढ करनेवाली, हलकी, चरपरी तथा कफ, पित्त, मूत्राश्मरी, मूत्रकृच्छ्र, वात, शूल, अतिसार, वमन, दाह, मोह, प्रमेह, रक्तविकार, श्वास, अपस्मार, विष और खांसीको दूर करनेवालीहै।

विवरण । स्थलकमलभी कमलकेही समान होताहै, परन्तु इसमे विशेषता यह है कि,पृथ्वीमे उत्पन्न होताहै,आकृति तो सब कमल-कीसीही होतीहै किन्तु पत्ते और फूल,फल सब कमलसे छोटे होते है ।

इति श्रीशालिग्रामनिघण्टुभूषणे पुष्पवर्गः ॥ ४ ॥

अथ फलवर्गः ।

आम्रनामानि ।



आम्रः प्रोक्तो रसालश्च सहकारोऽतिसौरभः ।
कामाङ्गो मधुदूतश्च माकन्दः पिकवल्लभः ॥

अर्थ-आम्र,रसाल,सहकार,अतिसौरभ,कामाङ्ग,मधुदूत, माकन्द, पिकवल्लभ, (चूतक, अम्र,फलश्रेष्ठ,फलोत्पत्ति,मृगालक,चूत,षट्पदा-तिथि,वसन्तद्रु,पिकप्रिय,स्त्रीप्रिय,गन्धबन्धु,अलिप्रिय, शरेष्ट, मदि-रासख,पिकबन्धु,केशवायुध,कोषी,परपुष्टमहोत्सव,कामशर,कामव-ल्लभ,कामांग,कीरेष्ट,माधवद्रुम,भृङ्गाभीष्ट, सीधुरस,माधूली, कोकि-लोत्सव,वसन्तदूत,मोदाढ्य,मन्मथालय,मध्वावास,सुमदन,पिकराग नृपप्रिय,प्रियम्बु, कोकिलावास,वसन्तपादप,भ्रमरप्रिय,मनोज्ञ,मन्म-थावास, शुकप्रिय, वनोत्सव, मधाढ्य,मञ्जरी) ।

संस्कृतभाषामे	आम्र ।
हिन्दीभाषामे	आम ।

बंगभाषामे	आम ।
मराठीभाषामे	आंबा ।
गुजरातीभाषामे	आंबो ।
कर्णाटकीभाषामें	माविनफल ।
तैलिङ्गीभाषामे	माविडि ।
इंग्रजीभाषामे	मङ्गोट्री । Mangotree
लार्टन्भाषामे	मॅगीफराइडिका । Mangifera Indica
फारसीभाषामे	आंबा ।
अरबीभाषामे	अम्बज ।

आम्रपुष्पगुणा ।

आम्रपुष्पमतीसारकफपित्तप्रमेहनुत् ।
असृग्दुष्टिहरं शीतं रुचिकृद्ग्राहि वातलम्॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-आमका मौर-आतिसार, कफ,पित्त, प्रमेह और दुष्टरक्तनाशक है। तथा शीतल,रुचिकारक,मलरोधक और वातकारक है।

अन्यच्च ।

आम्रपुष्प शीतलं स्याद्वातल ग्राहक मतम् ।
अग्निदीप्तिकर रुच्य कफपित्तप्रमेहनुत् ॥
प्रदर चातिसार च नाशयेदिति मे मतम् ।(निघण्टुरत्नाकर)

अर्थ-आमका मौर-शीतल,वातकारक,मलरोधक, अग्निप्रदीपक, रुचिकारी तथा कफ, पित्त, प्रमेह प्रदर और अतिसारनिवारक है।

बालतरुणाम्रगुणा ।

बालाम्रक कषायाम्लं रुच्य मारुतपित्तकृत् ।
तरुण तु तदत्यम्लं रूक्ष दोषत्रयास्रकृत् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-बालाम्र अर्थात् कच्ची अंबिया-कषेली,खट्टी रुचिकारक तथा वात और पित्तकरक है, विनापकाहुआ बडा आम-अत्यन्त खट्टा, रूखा तथा त्रिदोष और रुधिरके विकारोंको उत्पन्न करे है ।

अन्यच्च ।

बालाम्रक रक्तपित्तकर मध्य तु पित्तलम् ।(रा व)

अर्थ-कच्ची अंबिया-रक्तपित्तकारक और तरुण आम पित्तजनक है।

अपिच ।

बालाम्रस्तुवरश्चोष्णः सुगन्धिश्चाम्लकः स्मृतः । क्षारस्य योगाद्रुचिदो ग्राही रूक्षश्च कान्तिदः॥ पित्तवातकफास्रक्तदोषांश्चैव करोति सः । कण्ठरुग्वातमेहं च योनिदोषव्रणं तथा ॥ अतिसारं प्रमेहं च नाशयेदिति कीर्तितः । (नि० र०)

अर्थ-कच्ची ऑबिया-कषेली, गरम, सुगन्धि, खट्टी, किसी क्षारके साथ होनेसे रुचिकारी, मलरोधक, रूखी तथा कान्ति, पित्त, वात, कफ और रुधिरके दोषोंको उत्पन्न करनेवाली और कण्ठरोग, वात, प्रमेह, योनिदोष, व्रण, अतिसार तथा प्रमेहको हरनेवाली है ।

आम्रपेशी गुणा ।

आम्रमामं त्वचाहीनमातपेतिविशोषितम् ।
अम्लं स्वादु कषायं स्याद्भेदनं कफवातजित्॥ (भा० प्र०)

अर्थ-कच्चे आमके ऊपरका छिलका छील फिर उसके टुकडे करके धूपमें सुखा देवे उसको अमचूर कहतेहैं;वह अमचूर-खट्टा, स्वादिष्ठ, कषेला, भेदक और कफवातको हरनेवाला है ।

पक्वाम्रगुणा ।

पक्वं तु मधुरं वृष्यं स्निग्धं बलसुखप्रदम् ।
गुरु वातहरं हृद्यं वर्ण्यं शीतमपित्तलम् ॥
कषायानुरसं वह्निश्लेष्मशुक्रविवर्द्धनम् । (भा० प्र०)

अर्थ-पकाहुआ आम-मधुर, वीर्य्यवर्द्धक, स्निग्ध, बलवर्द्धक, सुखदायक, भारी, वातविनाशक, हृदयको हितकारी, वर्णको सुंदर करनेवाला, शीतल, अपित्तल अर्थात् पित्तको नहीं करनेवाला, किञ्चित् कषेला तथा अग्नि, कफ और शुक्रवर्द्धक है ।

अन्यच्च ।

पक्वं त्वाम्रफलं सुगन्धि मधुरं स्निग्धं परं बृंहणं रुच्यं वातहरं च हृद्यमलघु ग्राहि प्रमेहप्रणुत्। शीतं वर्ण्यमपित्तलं व्रणहरं श्लेष्मास्ररोगापहं यद्दृष्ट्वा मन उल्लसत्यपि मुनेः किं वर्णनं भूतले ॥

अर्थ-पकाहुआ आम-सुगन्धि, मधुर, स्निग्ध, अत्यन्त पुष्टिकारक,

रुचिकारी, वातविनाशक, हृदयको हितकारी, भारी, मलरोधक, प्रमेहनाशक, शीतल, वर्णको उज्ज्वल करनेवाला, अपित्तल तथा व्रण, श्लेष्म और रुधिरके रोगोको दूर करनेवाला है।

अपिच।

पक्वाम्रो मधुरः शुक्रवर्द्धकः पौष्टिकः स्मृतः।
गुरुः कान्तितृप्तिकरः किञ्चिदम्लो रुचिप्रदः॥
हृद्यो मांसबलानां च वर्द्धकः कफकारकः।
तुवरश्च तृषावातश्रमाणां नाशकः स्मृतः॥ (नि० र०)

अर्थ-पकाहुआ आम-मधुर, शुक्रवर्द्धक, पुष्टिकारक, भारी, कान्तिजनक, तृप्तिकारक, किञ्चित् खट्टा, रुचिकारक, हृदयको हितकारी तथा मास, बल और कफवर्द्धक है, कषेला और तृषा, वात तथा श्रमनाशक है।

वृक्षपक्वाम्रगुणाः।

तदेव वृक्षसंपक्वं गुरु वातहरं परम्।
मधुराम्लरसं किंचिद्भवेत्पित्तप्रकोपनम्॥ (भा० प्र०)

अर्थ-वही वृक्षपै पकाहुवा आम-भारी, वातनाशक, मधुर, किञ्चित् खट्टा और पित्तको कुपित करनेवाला है।

कृत्रिमपक्वाम्रगुणाः।

आम्रं कृत्रिमपक्वं च तद्भवेत्पित्तनाशनम्। रसस्याम्लस्य हीनं तु माधुर्याच्च विशेषतः॥ उषितं तत्परं रुच्यं बलवीर्यकरं लघु। शीतलं शीघ्रपाकि स्याद्वातपित्तहरं सरम्॥ (भा० प्र०)

अर्थ-पालमे पकायाहुआ आम-पित्तनाशक, अम्लरसहीन और मधुररसपूरित है। वही वासित-परम रुचिकारक, बलवर्द्धक, वीर्यजनक, हलका, शीतल, शीघ्रपाकी, वातपित्तनाशक और कुछेक दस्तावर है।

आम्ररसगुणाः।

तद्रसो गालितो बल्यो गुरुर्वातहरः सरः।
अहृद्यस्तर्पणोऽतीव बृंहणः कफवर्द्धनः॥

अर्थ-आमका निचोडाहुआ रस बलकारक, भारी, वातविनाशक, कुछेक दस्तावर, हृदयको अहितकारी, तृप्तिकारक, अतीवबृंहण और कफवर्द्धक है।

सैव दुग्धेन संयुक्तःकान्तिदः स्वाददः स्मृतः ।
वृष्यश्चान्ये गुणाश्चोक्ता रसेन सदृशाःस्मृताः॥(नि०र०)

अर्थ-वही रस दूधके साथ कान्तिजनक,स्वाददायक और वीर्य्य-वर्द्धक है और गुण रसकी समान जानने ।

चोपिताम्रगुणा ।

चोपिताम्रो बलरुचिर्वीर्य्यवृद्धिकरः परः ।
लघुता शीतता शीघ्रपाकता वातपित्तनुत् ॥
मलबन्धकरश्चैव पूर्ववैद्यैरुदीरितः ।

अर्थ-चूसकर खायाहुवा आम-बल, रुचि और वीर्य्यवर्द्धक है तथा लघुता, शीतता, शीघ्रपाकता और वातपित्तनाशक है तथा मलबन्धक है ।

शस्त्रच्छिन्नाम्रगुणा ।

पक्वः स्याच्छस्त्रछिन्नाम्रो जाड्यमाधुर्यशीतकृत् ।
रुचिकृच्चिरपाकश्च धातुवृद्धि करोति सः ॥
बलकर्त्ता वातपित्तनाशनः परिकीर्तितः । (नि०र०)

अर्थ-शस्त्र अर्थात् चक्कूसे काटके खाया हुआ आम-जडता, मधुरता, शीतता, रुचि, चिरपाक, धातुवृद्धि और बलकारक है तथा वातपित्तनाशक है ।

आम्रावर्त्त ।

पक्वस्य सहकारस्य पटे विस्तारितो रसः ।
घर्मशुष्को मुहुर्दत्त आम्रावर्त्त इति स्मृतः ॥

अर्थ-पकेहुये आमके रसको वस्त्रपर बिछाकर धूपमे सुखालेव उसको आम्रावर्त्त (ऑबट) कहतेहैं ।

आम्रावर्त्तगुणा ।

आम्रावर्त्तस्तृपाच्छर्दिवातपित्तहरः सरः ।
रुच्यः सूर्य्यांशुभिः पाकाल्लघुश्च स हि कीर्तितः॥(भा प्र)

अर्थ-आम्रावर्त्त (ऑबट)-तृषा, वमन और वातपित्तनिवारक है, कुछेक दस्तावर, रुचिकारक यह सूर्यकी किरणोंसे पाक होनेसे हलका है ।

आम्रखण्डगुणाः ।

तस्य खण्ड गुरुपरं रोचनं चिरपाकि च ।

रुचिकारी, वातविनाशक, हृदयको हितकारी, भारी, मलरोधक, प्रमेहनाशक, शीतल, वर्णको उज्ज्वल करनेवाला, अपित्तल तथा व्रण, श्लेष्म और रुधिरके रोगोंको दूर करनेवाला है ।

अपिच ।

पक्वाम्रो मधुरः शुक्रवर्द्धकः पौष्टिकः स्मृतः ।
गुरुः कान्तितृप्तिकरः किञ्चिदम्लो रुचिप्रदः ॥
हृद्यो मांसबलानां च वर्द्धकः कफकारकः ।
तुवरश्च तृषावातश्रमाणां नाशकः स्मृतः ॥ (नि०र०)

अर्थ-पकाहुआ आम-मधुर, शुक्रवर्द्धक, पुष्टिकारक, भारी, कान्तिजनक, तृप्तिकारक, किञ्चित् खट्टा, रुचिकारक, हृदयको हितकारी तथा मांस, बल और कफवर्द्धक है, कषेला और तृषा, वात तथा श्रमनाशक है ।

वृक्षपक्वाम्रगुणाः ।

तदेव वृक्षसंपक्वं गुरु वातहरं परम् ।
मधुराम्लरसं किंचिद्भवेत्पित्तप्रकोपनम् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-वही वृक्षपै पकाहुवा आम-भारी, वातनाशक, मधुर, किञ्चित खट्टा और पित्तको कुपित करनेवाला है ।

कृत्रिमपक्वाम्रगुणाः ।

आम्रं कृत्रिमपक्वं च तद्भवेत्पित्तनाशनम् । रसस्याम्लस्य हीनं तु माधुर्याच्च विशेषतः ॥ उषितं तत्परं रुच्यं बलवीर्यकरं लघु। शीतलं शीघ्रपाकि स्याद्वातपित्तहरं सरम् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-पालमे पकायाहुआ आम-पित्तनाशक, अम्लरसहीन और मधुररसपूरित है । वही वासित-परम रुचिकारक, बलवर्द्धक, वीर्यजनक, हलका, शीतल, शीघ्रपाकी, वातपित्तनाशक और कुछेक दस्तावर है ।

आम्ररसगुणाः ।

तद्रसो गालितो बल्यो गुरुर्वातहरः सरः ।
अहृद्यस्तर्पणोऽतीव बृंहणः कफवर्द्धनः ॥

अर्थ-आमका निचोडाहुआ रस बलकारक, भारी, वातविनाशक, कुछेक दस्तावर, हृदयको अहितकारी, तृप्तिकारक, अतीव बृंहण और कफवर्द्धक है ।

सैव दुग्धेन संयुक्तःकान्तिदः स्वाददः स्मृतः ।
वृष्यश्चान्ये गुणाश्चोक्ता रसेन सदृशाःस्मृताः॥(नि०र०)

अर्थ-वही रस दूधके साथ कान्तिजनक,स्वाददायक और वीर्य्य-वर्द्धक है और गुण रसकी समान जानने ।

चोपिताम्रगुणा ।

चोपिताम्रो बलरुचिर्वीर्य्यवृद्धिकरः परः ।
लघुता शीतता शीघ्रपाकता वातपित्तनुत् ॥
मलबन्धकरश्चैव पूर्ववैद्यैरुदीरितः ।

अर्थ-चूसकर खायाहुवा आम-बल, रुचि और वीर्य्यवर्द्धक है तथा लघुता, शीतता, शीघ्रपाकता और वातपित्तनाशक है तथा मलबन्धक है ।

शस्त्रच्छिन्नाम्रगुणा ।

पक्वः स्याच्छस्त्रछिन्नाम्रो जाड्यमाधुर्यशीतकृत् ।
रुचिकृच्चिरपाकश्च धातुवृद्धि करोति सः ॥
बलकर्त्ता वातपित्तनाशनः परिकीर्तितः ।(नि०र०)

अर्थ-शस्त्र अर्थात् चक्कूसे काटके खाया हुआ आम-जड़ता, मधुरता, शीतता, रुचि, चिरपाक, धातुवृद्धि और बलकारक है तथा वातपित्तनाशक है ।

आम्रावर्त्त ।

पक्वस्य सहकारस्य पटे विस्तारितो रसः ।
घर्मशुष्को मुहुर्दत्त आम्रावर्त्त इति स्मृतः ॥

अर्थ-पकेहुये आमके रसको वस्त्रपर बिछाकर धूपमे सुखालेवे उसको आम्रावर्त्त (ऑवट) कहतेहैं ।

आम्रावर्त्तगुणा ।

आम्रावर्त्तस्तृपाच्छर्दिवातपित्तहरः सरः ।
रुच्य' सूर्य्यांशुभिः पाकाल्लघुश्च स हि कीर्तितः॥(भा.प्र.)

अर्थ-आम्रावर्त्त (ऑवट)-तृषा, वमन और वातपित्तनिवारक है, कुछेक दस्तावर, रुचिकारक यह सूर्यकी किरणोसे पाक होनेसे हलका है ।

आम्रखण्डगुणाः ।

तस्य खण्डं गुरुपरं रोचनं चिरपाकि च ।

मधुरं बृंहणं बल्यं शीतलं वातनाशनम् ॥

अर्थ-आमका टुकडा-भारी, रुचिकारी, देरसे पचनेवाला, मधुर, बृंहण, बलकारक, शीतल और वातविनाशक है।

अतिशयाम्रभक्षणगुणा।

मन्दानलत्वं विषमज्वरं च रक्तामयं बद्धगुदोदरं च। आम्रातियोगे नयनामयं वा करोति तस्मादति तानि नाद्यात् ॥एतदम्लाम्रविषयं मधुराम्लपरं न तु । मधुरस्य परं नेत्रहितत्वाद्या गुणा यतः ॥ शुण्ठ्यम्भसोऽनुपानं स्यादाम्राणामतिभक्षणे । जीरकं वा प्रयोक्तव्यं सह सौवर्चलेन च ॥ (रा० नि०)

अर्थ-अधिक आमका खाना मंदाग्नि, विषमज्वर, रुधिरविकार, बद्धगुदोदर और नेत्ररोगको उत्पन्न करे है, इसकारण अधिक आमका खाना वर्जित है, यह जितने दोष आमके कहे है सो सब खट्टे आमके जानने; परन्तु मीठे आमके भक्षण करनेसे यह दोष नही होते है, मधुर आम तो अधिकतर नेत्रोको हितकारी और अधिक गुणवाला है। अधिक आम खानेके पीछे सोंठका जल पीवे तथा जीरा कालानोन खाना उचित है।

मधुयुक्ताम्रगुणा ।

मधुना तत्क्षयप्लीहवातश्लेष्महरं परम् ।

अर्थ-मधुयुक्त आम-क्षय (राजयक्ष्मा), प्लीहा, वात और श्लेष्मनाशक है।

घृतयुक्ताम्रगुणा ।

सघृतं वातपित्तघ्नं दीपनं बलवर्णकृत् । (राजवल्लभ०)

अर्थ-घृतयुक्त आम-वातपित्तनाशक, दीपन, बलवर्द्धक और वर्णकारक है।

दुग्धयुक्ताम्रगुणा ।

वातपित्तहरं रुच्यं बृंहणं बलवर्द्धनम् ।
वृष्यं वर्णकरं स्वादु दुग्धाम्रं गुरु शीतलम् ॥(भा०प्र०)

अर्थ-दुग्धयुक्त आम्र-वातपित्तहारक, रुचिकारक, बृंहण, बलवर्द्धक, वीर्य्यवर्द्धक, स्वादिष्ट, भारी और शीतल है।

आम्रास्थिगुणा।

आम्रबीजं तु मधुरं किञ्चिदम्लं कषायकम् ।
वान्त्यतीसारहृद्दाहनाशनं च बुधैर्मतम् ॥

अर्थ-आमकी गुठली-मधुर, किञ्चित् अम्ल, कषेली तथा वमन, अतिसार और हृदयकी दाहको दूर करनेवाली है ।

आम्रास्थितैलगुणा ।

आम्रतैलं तु तुवरं स्वादु रूक्षं च तिक्तकम् ।
सुगन्धि मुखरोगस्य नाशनं कफवातनुत्। (नि० र०)

अर्थ-आमकी गुठलीका तेल-कषेला, स्वादिष्ठ, रूखा, कडवा, सुगन्धि तथा मुखरोग, कफ और वातनाशक है ।

आम्रत्वचादिगुणा ।

आम्रत्वचा कषाया च मूलं सौगन्धि तादृशम् ।
रुच्यं संग्राहि शिशिरं पुष्पं तु रुचिदीपनम् ॥

अर्थ-आमकी छाल-कषेली, आमकी जड-कषेली, सुगन्धित, रुचिकारक, मलरोधक और शीतल है । आमका फूल-रुचिको दीपन करे है ।

आम्रान्तस्त्वग्गुणा ।

आम्रान्तस्त्वग्ग्राहिणी तु तुवरा दाहकारिणी ।
पित्तमेहकफानां च नाशिनी योनिशुद्धिकृत् ॥

अर्थ-आमकी अन्तरकी-छाल-मलरोधक, कषेली, दाहकारक तथा पित्त, प्रमेह और कफनाशक है । तथा योनिको शुद्ध करेहै।

आम्रमूलगुणा ।

आम्रमूलं तु तुवरं ग्राहि शीतं रुचिप्रदम् ।
सुगन्धि कफवातानां नाशनं परिकीर्तितम् ॥

अर्थ-आमकी जड-कषेली, मलरोधक, शीतल, रुचिदायक, सुगन्धि तथा कफ और वातविनाशक है ।

आम्रपल्लवगुणा ।

आम्रच्छदस्तु तुवरो ग्राहको रुचिकारकः ।
वातपित्तकफान्हन्तीत्येवं च परिकीर्त्तितम् ॥(नि०र०)

अर्थ-आमके कोमल पत्ते-कषेले, मलरोधक, रुचिकारक तथा वात पित्त और कफको हरनेवाले है ।

राजाम्रनामानि ।

राजाम्रोन्यो राजफलः स्मराम्रः कोकिलोत्सवः ।

मधुरः कोकिलानन्दः कामेष्टो नृपवल्लभः ॥

अर्थ-राजाम्र, राजफल, स्मराम्र, कोकिलोत्सव, मधुर, कोकिलानन्द, कामेष्ट, नृपवल्लभ, (टंक, आम्रात, कामाह्व, राजपुत्रक)

बालं राजफलं कफास्रपवनं श्वासातिपित्तप्रदं मेध्यं तादृशमेव दोषबहुलं भूयः कषायाम्लकम् । पक्वं चेन्मधुरं त्रिदोषशमनं तृष्णाविदाहश्रमश्वासारोचकमोचकं गुरु हिमं वृष्यातिभूपाह्वयम् ॥

अर्थ-कच्चा कलमी आम-कफ, वातरक्त, श्वास और अत्यन्त पित्तजनक है। तरुण कलमी आमके गुण कच्चे कलमी आमकी समान है। अनेक दोषकारक, कषेला और खट्टा है। पक्का कलमी आम मधुर, त्रिदोषनिवारक तथा तृष्णा, दाह, श्रम, श्वास और अरुचिनाशक है, भारी, शीतल और अत्यन्त वीर्यवर्द्धक है।

विवरण। आमके वृक्ष प्रायः भारतवर्षके समस्त प्रदेशोमे अधिकतासे होते है, अर्थात् प्रत्येक नगरके निकट आमके बाग होते है। आमकी अनेक जाति है, किन्तु आकृति सबकी एकसी होती है। पत्ते जामुनकी समान कुछ विशेष लम्बे होते है। फूल छोटा छोटा मौर आताहै, वसन्तऋतुके प्रारम्भमे फूल आने लगता है। और वसन्तऋतुके अन्तमे चनेकी बराबर फल आते है, पश्चात् बढकर १०-१० तोले तकके होजाते है। अपक्व अवस्थामे हरा रंग होता है और पकनेपर पीला पडजाता है और कोई हरेही रहते है। फलके भीतर गुठली निकलती है उसके भीतर मीग निकलती है उसको बिजली कहते है।

दूसरे कलमी, मालदये, विलायती, अनेकप्रकारके दूसरे द्वीपोंसे आये हुये आम है। वह इनकी अपेक्षा अधिक बडे और विशेष मधुर होते है। परन्तु अनेकप्रकारके कार्य्योंमे यह देशीही आम श्रेष्ठ गिनेजाते है।

आम्रातकनामानि।

आम्रातकः पीतनकः कपिचूतोम्लवाटकः।
वर्षपाकी कपिचूडा तनुक्षीरी कपिप्रियः ॥

अर्थ-आम्रातक, पीतनक, कपिचूत, अम्लवाटक, वर्षपाकी, कपिचूड, तनुक्षीरी, कपिप्रिय (पीतन, कपीतन, मधुराम्लक, आम्रवाटिक, भृङ्गी-

फल रसाढ्य, तनुक्षीर, अम्बरातक,अम्बरीष,आम्रात,अम्रात,अम्रातक, अध्वगभोग्य, मर्कटाम्र और तुङ्गी)



संस्कृतभाषामें	आम्रातक ।
हिन्दीभाषामे	अंबाडा ।
वंगभाषामें	आमडा ।
मराठीभाषामे	अंबाडा ।
कर्णाटकीभाषामे	आंबोडेयकायि ।
तैलिङ्गीभाषामे	आमाटम् ।
गुजरातभाषामे	अंभेडा ।
इंग्रेजीभाषामे	स्पोन्डिआस् मिनट् । Spondias minute
लेटिन्भाषामे	स्पोन्डिआस मेंगिफरा । Spondias mangifera

अस्य फलगुणा ।

आम्रातमम्लं वातघ्नं गुरूष्ण रुचिकृत्सरम्॥पक्कं तु तुवरं स्वादु रसे पाके हिमं स्मृतम् ॥ तर्पणं श्लेष्मलं स्निग्ध वृष्य विष्टम्भि बृंहणम्। गुरु बल्यं मरुत्पित्तक्षतदाहक्षयास्रजित् ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-कच्चा अम्बाडा-खट्टा, वातनाशक,भारी,गरम,रुचिकारक और सारक है। पक्का अम्बाडा,-कषेला, स्वादु, पाकमेभी स्वादु, शीतल, तृप्तिकारक, कफकारक, स्निग्ध,वीर्य्यवर्द्धक,विष्टम्भजनक, पुष्टिकारक, भारी, बलकारी तथा वात, पित्त, क्षत,दाह, क्षय और रुधिरविकारको दूर करे है।

अन्यच्च ।

आम्रातको गुरुश्चोष्णस्तुवरोम्लो रुचिप्रदः । सरः कव्यः पि-

त्तकफरक्तकारी च संस्मृतः॥ आमवातस्य वातस्य चामस्य च विनाशनः। स पक्वस्तुवरः शीतो गुरुर्वृष्यो बलकरः॥ मधुरस्तृप्तिकफकृत्स्निग्धो धातुविवर्धकः। मलस्तम्भकरो वातकफपित्तविनाशनः॥ रक्तरुग्दाहक्षतरुक्क्षयनाशकरो मतः। पर्णं तु कोमलं चास्य रुच्यं ग्राह्यग्निदीपनम्॥ (नि० र०)

अर्थ-अम्बाडा-भारी, गरम, कषैला, खट्टा, रुचिकारक, सारक, कंठको हितकारी तथा पित्त, कफ और रक्तकारक है तथा आमवात, वात और आमनाशक है। पका अंबाडा-कषैला, शीतल, भारी, वीर्यवर्द्धक, बलकारक, मधुर, तृप्तिकारक, कफकारक, स्निग्ध, धातुवर्द्धक, मलस्तम्भक, तथा वात, कफ, पित्त, रक्तविकार, दाह, क्षतरोग और क्षयरोगका नाश करे है। इसके कोमल पत्ते-रुचिकारक, ग्राही और अग्निप्रदीपक है।

विवरण। आम्रातक अर्थात् अम्बाडेके वृक्षः प्राय' पर्वत और वनोमे बहुत होते है, पत्ते जिगनीके पत्तोंके समान एक शाखामें बराबर दोनो ओर होते है, इसपर आमके तुल्य मौर आता है, फल कन्दूरीकी समान छोटे २ होते हैं, उनको अम्बाडा कहते है, इनका अचार डालते है, यह स्वादमे खट्टे होते है।

कोशाम्रनामानि।

कोशाम्रश्च घनस्कन्धो वनाम्रो जन्तुपादपः।
क्षुद्राम्रश्चेति रक्ताम्रो लाक्षावृक्षः सुरक्तकः॥

अर्थ-कोशाम्र, घनस्कन्ध, वनाम्र, जन्तुपादप, क्षुद्राम्र, रक्ताम्र, लाक्षावृक्ष, सुरक्तक (कोषाम्र, कृमिवृक्ष, शुकोशक)।

हिन्दीभाषामे	कोशंभ।
बंगभाषामे	केओडा, जलपाई।
मराठीभाषामे	कोशाम्र।
गुजरातीभाषामे	कोशम।
कर्णाटकीभाषामें	जूरिमाचु।
लैटिन्भाषामे	स्लीचराट्रिजगा।

अस्य गुणाः।

कोशाम्रः कुष्ठशोथास्रपित्तव्रणकफापहः।

अर्थ-कोशाम्रवृक्ष कुष्ठ, सूजन, रक्तपित्त, व्रण और कफका नाश करे है।

अस्य अपक्वफलगुणाः ।

तत्फलं ग्राहि वातघ्नमम्लोष्णं गुरुपित्तलम् ।

अर्थ- इसका कच्चा फल-मलरोधक, वातनाशक, खट्टा, गरम, भारी और पित्तकारी है

अस्य पक्वफलगुणाः ।

पक्वं तु दीपनं रुच्यं लघूष्णं कफवातनुत् । (भा० प्र०)

अर्थ-इसका पक्का फल-अग्निप्रदीपक, रुचिकारक, हलका, गरम तथा कफ और वातका नाशक है ।

अन्यच्च ।

कोशाम्रमम्लमनिलापहरं कफार्त्तिपित्तप्रदं गुरु विदाहविशोफकारि । पक्वं भवेन्मधुरमीषदपारमम्लं पट्वादियुक्तरुचिदीपनपुष्टिदायि ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ-कोशंभ-खट्टा, वातविनाशक, कफकारक, पित्तजनक, भारी तथा दाह और शोफकारी है । पक्का कोशंभ-मधुर और कुछेक खट्टा है । लवणयुक्त कोशंभ-दीपन, रुचि और पुष्टिकारक है ।

अन्यच्च ।

कोषाम्रं कफवातघ्नं दीपनं ग्राहि तत्परम् ॥ (रा० व० द्र० चं०)

अर्थ-कोशंभ-कफ और वातनाशक, अग्निप्रदीपक और मलरोधक है ।

कोशाम्रमज्जागुणाः ।

स्वादुपाकोऽग्निबलकृत्स्निग्धः पित्तानिलापहः (सु० सं०)

अर्थ-कोशंभकी मींग-पाकमें स्वादिष्ठ, अग्निकारक, बलवर्द्धक, स्निग्ध, पित्त और वातनाशक है ।

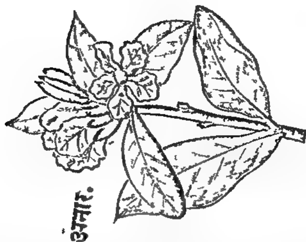
अस्य तैलगुणाः ।

सरं कोशाम्रजं तैलं कृमिकुष्ठव्रणापहम् ॥
तिक्ताम्लमधुरं बल्यं पथ्यं रोचनपाचनम् ॥ (रा० नि०)

अर्थ-कोशंभका तेल-सर (कुछेक दस्तावर), कृमिनाशक, कुष्ठघ्न, व्रणविनाशक, कडवा, खट्टा, मधुर, बलकारक, पथ्य, रोचन और पाचक है

विवरण । कोशाम्र-जंगली आमको कहतेहैं उसके वृक्षभी आमके समान होतेहैं और पत्ते, फल छोटे छोटे देखनेमें आतेहैं ।

दाडिमनामानि ।



दाडिमो दाडिमीसार· कुट्टिमः फलपाडव· । करको रक्तबीजश्च सुफलो दन्तबीजकः॥ मधुबीजः कुचफलो रोचनः शुकवल्लभः । मणिबीजस्तथा वल्कफलो वृत्तफलस्तथा ॥

अर्थ-दाडिम, दाडिमीसार, कुट्टिम, फलपाडव, करक, रक्तबीज, सुफल, दन्तबीजक, मधुबीज, कुचफल, शुकवल्लभ, मणिबीज, वल्कफल, वृत्तफल, (पिण्डपुष्प, दाडिम्ब, पर्वरुट्, स्वाद्वम्ल, पिण्डीर, फलशाडव, मुखवल्लभ, रक्तपुष्प, डालिम, शुकादन, फलसाडव, सुनील, मीलपत्र, नीलपत्रक, दन्तबीज और लोहितपुष्पक) ।

संस्कृतभाषामे	दाडिम ।
हिन्दीभाषामे	अनार ।
बंगलाभाषामे	दाडिम, डालिम् ।
मराठीभाषामे	डाळिंब ।
गुजरातीभाषामे	दाडमम ।
कर्णाटकीभाषामे	दाळिंब ।
तैलङ्गभाषामे	डानिम्बचेट्टु, दालिवकाया ।
तामिलभाषामे	मादलइ चेट्टि ।
औत्क०	दालिब ।
इग्रजीभाषामे	पमूग्रानेट । Pulmgranite
लेटिन्भाषामे	प्युनिकाग्रानेटम् । Punica granatum
फारसीभाषामे	अनार तुरस, अनारसीरी ।
अरबीभाषामे	रुमानहामीज, रुमानहुलु ।

अस्य गुणाः ।

दाडिमं त्रिविधं स्वादु स्वाद्वम्लं केवलाम्लकम्।तत्तु स्वादु त्रिदोषघ्नं तृड्दाहज्वरनाशनम् ॥ हृत्कण्ठमुखरोगघ्न तर्पणं शुक्रलं लघु । कषायानुरसं ग्राहि स्निग्धमेधाबलावहम् ॥ स्वाद्वम्लं दीपनं रुच्यं किंचित्पित्तकरं लघु।अम्ल तु पित्तजनकमम्लं वातकफापहम् ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-अनार-तीन प्रकारका होता है, एक मीठा दूसरा मीठा और खट्टा,तीसरा केवल खट्टा । तहां मीठा अनार-त्रिदोषनाशक, तृषा, दाह, ज्वर, हृदयरोग, कण्ठरोग और मुखरोगको दूर करे है। तृप्तिकारक, शुक्रजनक, हलका,किञ्चित् कषेला, मलरोधक,स्निग्ध, मेधाजनक और बलवर्द्धक है। मीठा और खट्टा अनार-दीपन, रुचिकारक,किंचित् पित्तकारक और हलका है । खट्टा अनार-पित्तकारक, खट्टा तथा वात और कफनाशक है ।

अन्यच्च ।

दाडिमं हृद्यमम्लोष्णं वातघ्नं ग्राहि दीपनम् ।
कषायानुरसं प्रोक्तं कफपित्ताविरोधि च ।

अर्थ-अनार-हृदयको हितकारी, खट्टा,गरम, वातनाशक,मलरोधक, अग्निदीपक, कषेला तथा कफ और पित्तको दूर करे है।

द्विविधं तत्तु विज्ञेयं मधुरं चाम्लमेव च ।
मधुरं तु त्रिदोषघ्नमम्लं वातकफापहम् ॥
ज्वरघ्नं रोचनं पथ्यं पाके लघ्वग्निदीपनम्।(रा व.द्र च)

अर्थ-अनार-मधुर और अम्ल इन भेदोसे दोप्रकारका है, तहां मधुर अनार-त्रिदोषनाशक है और खट्टा अनार-वातकफनाशक, ज्वरनिवारक, रोचक, पथ्य, हलका और अग्निको दीपन करे है ।

अन्यच्च ।

स्वाद्वम्लं मधुरं चाम्लं त्रिविधं दाडिमीफलम् ।
मधुरं तु त्रिदोषघ्नं स्वाद्वम्लं वातपित्तजित् ।
असृक्पित्तकरं चाम्लं संग्राहि सर्वमुच्यते ।(नि०भै०)

अर्थ-अनार-तीनप्रकारका होताहै । एक खट्टा और मीठा, दूसरा मीठा और तीसरा खट्टा, तहां मधुर अनार त्रिदोपनाशक है। और मीठा और खट्टा अनार वातपित्तनाशक है। खट्टा अनार-रक्तपित्त-कारक और सर्व प्रकारके अनार मलरोधक ह ।

अन्यच्च ।

बल्यं पित्तानिलघ्न लघु शिशिरमसृग्दाहमूर्च्छापिपासा-
भ्रान्तिश्रान्तिज्वरच्छर्द्यरुचिमदगदाजीर्णनैर्बल्यनाशी ।
मिष्टं विष्टम्भि शुक्रप्रदमकफकरं दाडिमं चातिपक्वं
हीनं तस्मादपक्वं तुवरमथ मरुन्माथि रुच्यं यदम्लम् ॥

अर्थ-अत्यन्त पक्का अनार-बलकारक, पित्तनाशक, वातविनाशक, हलका, शीतल तथा रुधिरविकार, दाह, मूर्च्छा, पियास, भ्रान्ति, श्रम, ज्वर, वमन, अरुचि, मोह, अजीर्ण और निर्बलताका नाश करे है । मिष्ट, विष्टम्भजनक, शुक्रवर्द्धक और कफकारक है । तरुण अनार-कषेला, वातनाशक, रुचिकारक और खट्टा है ।

अपि च ।

दाडिमं तुवरं चाम्लं मधुरं तृप्तिकारकम्। स्निग्धं च दीपनं ग्राहि हृद्यं चोष्णं रुचिप्रदम् ॥ लघ्वग्निदीपकं प्रोक्तं कफकासश्रमापहम्। मुखकंठरुजं पित्तं नाशयेदिति कीर्तितम् ॥ मधुरं तत्तृप्तिकरं धातुवृद्धिकरं लघु । तुवरं ग्राहकं स्निग्धं मेध्यं बल्यं च माधुरम् ॥ पथ्यं त्रिदोपतृड्दाहज्वरहृद्रोगनाशनम् । मुखरोगं कंठरोगं नाशयेदिति कीर्तितम् ॥ मधुराम्लं तत्तु रुच्यं दीपनं च मतं लघु। वातपित्तप्रशमनं तदम्लं पित्तलं मतम्॥ रक्तपित्तकरं चैव कफवातविनाशकम् । शुष्कं बालं च तत्प्रोक्तं रुच्यं च हृदयप्रियम् ॥ वातानुलोमनकरं मुनिभिः परिकीर्तितम् । (नि० र०)

अर्थ-अनार-कषेला, खट्टा, मधुर, तृप्तिकारक, स्निग्ध, दीपन, मलरोधक, हृदयको हितकारी, गरम, रुचिकारक, हलका, अग्निप्रदीपक तथा कफ, खांसी, श्रम, मुखरोग, कंठरोग और पित्तको दूर करनेवाला है ।

मधुर अनार-तृप्तिकारक,धातुवर्द्धक हलका,कषेला,ग्राही, स्निग्ध, मेधाजनक, बलवर्द्धक, मधुर, पथ्य तथा त्रिदोष, तृषा, दाह, ज्वर, हृदयरोग, मुखरोग और कंठरोगको दूर करैहै । मधुराम्ल अर्थात् खट्टा और मीठा अनार-रुचिकारक,दीपन,हलका,वात और पित्तनाशक है । खट्टा अनार-पित्तकारक रक्तपित्तजनक, कफ और वात-विनाशक है । कच्चा सुखायाहुआ अनार-अनारदाना-रुचिकारक, हृदयको प्रिय और वातको अनुलोमन करनेवाला है ।

दाडिमपुष्पादिगुणा ।

तत्पुष्पञ्च पुनर्ज्ञेयं नासासृग्गतिनाशनात् ।
दाडिमत्वक्क्रिमिघ्ना च ग्राही रक्तातिसारहा(शो०नि०)

अर्थ-अनारके फूल-नाकसे रुधिर गिरनेको दूर करैहै । अनारके वल्कल कृमिनाशक, मलरोधक और रक्तातिसारको हरैहै ।

विवरण। अनार-मध्यमाकारका वृक्ष है, हिन्दोस्थानके सर्व स्थानोंमे मिलताहै, पंजाबी और काबुली वृक्षोंके फल कुछ अधिक मधुर होतेहै। जो नाकसे रुधिर गिरता हो तो अनारको सूंघनेसे और इसका अर्क नाकमे डालनेसे आराम होजाताहै। बीज और छिलका खाँसीको खातेहै। इसकी जड कीडोको नाश करतीहै।

कदलीनामानि ।



कदली सुफलं रंभा मोचा वारणवल्लभा ।

सुकुमारा चर्म्मण्वती तत्पत्री नगरौपधिः ॥

अर्थ-कदली, सुफला, रंभा, मोचा, वारणवल्लभा, सुकुमारा, चर्म्मण्वती, तत्पत्री, नगरौपधि (वारणबुसा, अंशुमत्फला, काष्ठीला, कदल, वारबुषा, वारणबुषा, सकृत्फला, गुच्छफला, हस्तिविषाणी, गुच्छदन्तिका, निःसारा, राजेष्टा, बालकप्रिया, ऊरुस्तम्भा, भानुफला, वनलक्ष्मी, कदलक, मोचक, रोचक, लोचक, वारबृषा, आयतच्छदा, तन्तुविग्रहा, अम्बुसारा)।

संस्कृतभाषामे	कदली।
हिन्दीभाषामे	केला।
बंगभाषामे	कला
मराठीभाषामे	केळ, सोनकेळ, मुठेळी, लोखडी, चवई।
गुजरातीभाषामें	केलथ।
कर्णाटकीभाषामे	कदली, मरवालेकाष्ठ, कावालेतव।
तैलिङ्गीभाषामे	चक्राकेली, आरटीकाया, अरटिचेट्टु, बुरुगचेट्टु, दोडतोडे।
तामिलीभाषामे	वाळे।
पाह्लवीभाषामे	तल, तलमपज।
छुसाई०	वाह्ला।
बरमी०	हृगापी।
इंग्रजीभाषामे	प्लेंटेन् । Plantain
लेटिन्भाषामे	मुसासेपियेन्टम् । Musasapientum मुसोपेरेडिस्याका । M paradisiaca
फारसीभाषामे	मावज्, मोझ।
अरबीभाषामे	तना।

अस्य साधारणफलगुणाः ।

कदलं मधुरं वृष्यं कषायं नातिशीतलम् ।
रक्तपित्तहरं हृद्यं रुच्यं श्लेष्मकरं गुरु ॥ (रा० व०)

अर्थ-केलेकी साधारण फली-मधुर, वीर्य्यवर्द्धक, किञ्चित् कषेली, शीतल, रक्तपित्तनाशक, हृदयको हितकारी, रुचिकारी, कफकारक और भारी है।

अन्यच्च।

कदली शीतला गुर्वी वृष्या स्निग्धा मधुः स्मृता ॥

पित्तरक्तविकार च योनिदोषं तथाऽश्मरीम् ॥
रक्तपित्तं नाशयतीत्येवमाचार्य्यभाषितम् ।

अर्थ-कदली-शीतल, भारी, वीर्य्यवर्द्धक, स्निग्ध, मधुर तथा पित्त, रुधिरविकार, योनिदोष, पथरी और रक्तपित्तको दूर करे है।

कोमलकदलीफलगुणाः ।

कोमलं कदलं शीत मधुर च कषायकम् ।
रुच्यमम्ल समुद्दिष्टं पित्तनाशकर च तत् ॥

अर्थ-केलेकी कोमल फली-शीतल, मधुर, कषेली, रुचिकारक, अम्ल और पित्तनाशक है ।

मध्यमकदलीफलगुणाः ।

तृड्रक्तपित्तादिगदप्रमेहान् फल कदल्यास्तरुणं निहन्ति ।
सग्राहिक तिक्तकषायरूक्षं रक्तातिसारं शमयेज्ज्वर च ॥

अर्थ-केलेकी तरुणफली-तृषा, रक्तपित्त,नेत्ररोग,प्रमेह, रक्तातिसार और ज्वरको दूर करनेवालीहै,ग्राही,कडवी,कषेली और रूखीहै।

अन्यच्च ।

मध्यम कदलं किञ्चित्तुवर मधुर गुरु ।
अग्निमांद्यकर चैव ऋषिभिः परिकीर्त्तितम् ॥

अर्थ-केलेकी तरुण (कुछ कच्ची और कुछ पकी) फली-किञ्चित् कषेली, मधुर, भारी और मन्दाग्निकारक है ।

अपक्वकदलीफलगुणाः ।

संग्राह्यपक्वं च सुशीतलं च कषायकं वातकफं करोति ।
विष्टम्भि बल्यं गुरु दुर्जर च आरण्यरम्भाफलमेव चैतत् ॥

अर्थ-कच्ची केलेकी फली-मलरोधक, शीतल, कषेली, वातकफकारक, विष्टम्भकारक, बलवर्द्धक, भारी, दुर्जर और जंगली केलेके गुण इसीके समान जानने ।

पक्वकदलीफलगुणाः ।

रम्भापक्वफल कषायमधुरं बल्यं च शीत तथा पित्त चास्रविमर्द्दनं गुरुतर पथ्यं न मंदानले । सद्यः शुक्रविवर्द्धनं क्लमहरं तृष्णापहं कान्तिदं दीप्ताग्नौ सुखदं कफामयकरं सन्तर्पणं दुर्जरम् ॥

अर्थ-केलेकी पकी फली-कपेली, मधुर, बलकारक, शीतल, रक्तपित्तनाशक, भारी, मंदाग्निवाले मनुष्यको अहितकारी, तत्काल शुक्रवर्द्धक, श्रमहारक, तृष्णानिवारक, कान्तिजनक, अग्निदीपनवाले मनुष्यको हितकारी, कफरोगनाशक, तृप्तिकारक और कठिनतासे पचनेवाली है।

अपि च।

कदलीवरपक्वफलं मधुरं रुचिरं मृदु वातहरं शिशिरम् ॥
क्षतजक्षयदाहनिवार्य्यसृजायुतपित्तविकारनिवृत्तिकरम्।
प्रदराश्मगदं निहरेल्लघु च प्रतिबंधकरं बलदं न सरम्।
अशनात्प्रथमं यदि भुक्तमिदं न शुभं शुभदं त्वशनाविरतौ॥

अर्थ-केलेकी पकी फली-मधुर, रुचिकारक, कोमल, वातनाशक, शीतल तथा क्षतज, क्षय, दाह, रक्तपित्त, प्रदर और पथरी-रोगको दूर करे है, हलकी, विबन्धकारक, बलवर्द्धक, सारक नहीं, और भोजनसे प्रथम खाई हुई केलेकी फली शुभ नहीं है और भोजन करते समय हित है।

अन्यच्च।

पक्वं तु कदलं बल्यं तुवरं मधुरं गुरु। शीतं वृष्यं शुक्रवृद्धिकरं सन्तर्पणं मतम्॥मांसकांत्यरुचीनां च वर्द्धनं दुर्जरं मतम्। कफकृच्च तृषाग्लानिपित्तरक्तरुजस्तथा। मेहक्षुधानेत्ररोगनाशकं परमं मतम्। मन्दाग्नीनां विकृतिदमृपिभिः परिकीर्तितम्॥ (नि० रा०)

अर्थ-केलेकी पकी फली-बलकारक, कपेली, मधुर, भारी, शीतल वीर्य्यवर्द्धक, वृष्य, सन्तर्पण तथा मांस, कान्ति और रुचिको बढानेवाली है, दुर्जर, कफकारक तथा ग्लानि, पित्त, रक्त, प्रमेह, क्षुधा और नेत्ररोगका नाश करे है और मन्दाग्नियुक्त मनुष्योंके विकार उत्पन्न करनेवाली है।

अपि च।

सामान्यकदलीफलगुणाः।

हृद्यं मनोज्ञं कफवृद्धिकारि क्षान्तं च सन्तर्पणमेव बल्यम्। रक्तं सपित्तं श्वसनं च दाहं रम्भाफलं हन्ति सदा नराणाम्॥ (आ स)

अर्थ-केलेकी फली-हृदयको हितकारी, मनोज्ञ, कफकारी, शान्तिकारक, तृप्तिदायक, बलवर्द्धक तथा रक्तपित्त, वात और दाहको दूर करनेवाली है।

अन्यच्च।

सामान्यं कदलं प्रोक्तं कफकृन्मधुरं गुरु। स्निग्धं विष्टम्भि वृष्यं च रुच्यं किंचिच्च शीतलम् ॥ रक्तपित्तं च पित्तं च तृषां दाहं क्षतक्षयम्। वातं च नाशयत्येव वल्कं तिक्तं लघुः कटुः॥ (नि०र०)

अर्थ-केलेकी फली-कफकारक, मधुर, भारी, स्निग्ध, विष्टम्भकारक, वीर्य्यवर्द्धक, रुचिकारक, किञ्चित् शीतल तथा रक्तपित्त, पित्त, तृषा, दाह, क्षतक्षय और वातनाशक है। इसकी छाल-कडवी, हलकी और कटुरसान्वित है।

कदलीपुष्पगुणा।

कदल्याः कुसुमं स्निग्धं मधुरं तुवरं गुरु।
वातपित्तहरं शीतं रक्तपित्तक्षयप्रणुत् ॥

अर्थ-केलेका फूल-स्निग्ध, मधुर, कषेला, भारी, वातपित्तनाशक, शीतल तथा रक्तपित्त और क्षयरोगको नाशकरे है।

अन्यच्च।

पुष्पं कदल्याः सुस्निग्धं मधुरं तुवरं गुरु। ग्राहि तिक्तं चाग्निदीप्तिकरं वातविनाशनम्। किञ्चिदुष्णं च वीर्ये स्याद्रक्तपित्तं क्षयं कृमीन्। पित्तं कफं नाशयतीत्येवं च ऋषिभिर्मतम् (नि०र०)

अर्थ-केलेका फूल-स्निग्ध मधुर, कषेला, भारी, मलरोधक, कडवा अग्निप्रदीपक, वातनाशक, किंचित् उष्णवीर्य्य तथा रक्तपित्त, क्षय, कृमि, पित्त और कफका नाश करनेवाला है।

कदलीमोचकगुणा।

कदलीमोचकं हृद्यं कफघ्नं क्रिमिनाशनम्।
तृष्णाप्लीहज्वरं हन्ति दीपनं वस्ति शोधनम्॥ (रा०व)

अर्थ-केलेका मोचा हृदयको हितकारी, कफनाशक, क्रिमिनाशक, तृष्णानिवारक, प्लीहानाशक, ज्वरहारक, दीपन और वस्तिशोधक है।

कदलीजलगुणा।

रम्भातोयं शीतलं ग्राहि तृणाकृच्छ्रान्मेहान्कर्णरोगातिसारान्। अस्रस्रावं स्फोटकान्रक्तपित्तं दाहं हन्यादस्रयोनिं च शोपान्॥

अर्थ-केलेकी पक्की फली-कषेली, मधुर, बलकारक, शीतल, रक्तपित्तनाशक, भारी, मंदाग्निवाले मनुष्यको अहितकारी, तत्काल शुक्रवर्द्धक, क्लमहारक, तृष्णानिवारक, कान्तिजनक, अग्निदीपनवाले मनुष्यको हितकारी, कफरोगनाशक, तृप्तिकारक और कठिनतासे पचनेवाली है ।

अपि च ।

कदलीवरपक्कफलं मधुरं रुचिरं मृदु वातहरं शिशिरम् ॥ क्षतजक्षयदाहनिवार्य्यस्रजायुतपित्तविकारनिवृत्तिकरम् । प्रदराश्मगदं निहरेल्लघु च प्रतिबंधकरं बलदं न सरम् । अशनात्प्रथमं यदि भुक्तमिदं न शुभं शुभदं त्वशनाविरतौ ॥

अर्थ-केलेकी पक्की फली-मधुर, रुचिकारक, कोमल, वातनाशक, शीतल तथा क्षतज, क्षय, दाह, रक्तपित्त, प्रदर और पथरीरोगको दूर करे है, हलकी, विबन्धकारक, बलवर्द्धक, सारक नहीं, और भोजनसे प्रथम खाई हुई केलेकी फली शुभ नहीं है और भोजन करते समय हित है ।

अन्यच्च ।

पक्कं तु कदलं बल्यं तुवरं मधुरं गुरु । शीतं वृष्यं शुक्रवृद्धिकरं सन्तर्पणं मतम् ॥ मांसकांत्यरुचीनां च वर्द्धनं दुर्जरं मतम् । कफकृच्च तृषाग्लानिपित्तरक्तरुजस्तथा । मेहक्षुधानेत्ररोगनाशकं परमं मतम् । मन्दाग्नीनां विकृतिदमृषिभिः परिकीर्तितम् ॥ (नि० रा०)

अर्थ-केलेकी पक्की फली-बलकारक, कषेली, मधुर, भारी, शीतल वीर्य्यवर्द्धक, वृष्य, सन्तर्पण तथा मांस, कान्ति और रुचिको बढानेवाली है, दुर्जर, कफकारक तथा ग्लानि, पित्त, रक्त, प्रमेह, क्षुधा और नेत्ररोगका नाश करे है और मन्दाग्नियुक्त मनुष्योंके विकार उत्पन्न करनेवाली है ।

अपि च ।

सामान्यकदलीफलगुणा ।

हृद्यं मनोज्ञं कफवृद्धिकारि क्षान्तं च सन्तर्पणमेव बल्यम् । रक्तं सपित्तं श्वसनं च दाहं रम्भाफलं हन्ति सदा नराणाम् ॥ (आ स)

अर्थ-केलेकी फली-हृदयको हितकारी, मनोज्ञ, कफकारी, शान्तिकारक, तृप्तिदायक, बलवर्द्धक तथा रक्तपित्त, वात और दाहको दूर करनेवाली है।

अन्यच्च।

सामान्यं कदलं प्रोक्तं कफकृन्मधुरं गुरु। स्निग्धं विष्टम्भि वृष्यं च रुच्यं किंचिच्च शीतलम्॥ रक्तपित्तं च पित्तं च तृषां दाहं क्षतक्षयम्। वातं च नाशयत्येव वल्कं तिक्तं लघुः कटुः॥ (नि०र०)

अर्थ-केलेकी फली-कफकारक, मधुर, भारी, स्निग्ध, विष्टम्भकारक, वीर्य्यवर्द्धक, रुचिकारक, किञ्चित् शीतल तथा रक्तपित्त, पित्त, तृषा, दाह, क्षतक्षय और वातनाशक है। इसकी छाल-कडवी, हलकी और कटुरसान्वित है।

कदलीपुष्पगुणा।

कदल्याः कुसुमं स्निग्धं मधुरं तुवरं गुरु।
वातपित्तहरं शीतं रक्तपित्तक्षयप्रणुत्॥

अर्थ-केलेका फूल-स्निग्ध, मधुर, कषेला, भारी, वातपित्तनाशक, शीतल तथा रक्तपित्त और क्षयरोगको नाशकरे है।

अन्यच्च।

पुष्पं कदल्याः सुस्निग्धं मधुरं तुवरं गुरु। ग्राहि तिक्तं चाग्निदीप्तिकरं वातविनाशनम्। किञ्चिदुष्णं च वीर्यं स्याद्रक्तपित्तं क्षयं कृमीन्। पित्तं कफं नाशयतीत्येवं च ऋषिभिर्मतम् (नि०र०)

अर्थ-केलेका फूल-स्निग्ध मधुर, कषेला, भारी, मलरोधक, कडवा अग्निप्रदीपक, वातनाशक, किंचित् उष्णवीर्य्य तथा रक्तपित्त, क्षय, कृमि, पित्त और कफका नाश करनेवाला है।

कदलीमोचकगुणा।

कदलीमोचकं हृद्यं कफघ्नं क्रिमिनाशनम्।
तृष्णाप्लीहज्वरं हन्ति दीपनं वस्ति शोधनम्॥ (रा.व)

अर्थ-केलेका मोचा हृदयको हितकारी, कफनाशक, क्रिमिनाशक, तृष्णानिवारक, प्लीहानाशक, ज्वरहारक, दीपन और वस्तिशोधक है।

कदलीजलगुणा।

रम्भातोयं शीतलं ग्राहि तृणाकृच्छ्रान्मेहान्कर्णरोगातिसारान्। अस्रस्रावं स्फोटकान्रक्तपित्तं दाहं हन्यादस्रयोनिं च शोषान्॥

अर्थ-केलेका जल-शीतल, मलरोधक, तथा तृषा, मूत्रकृच्छ्र, प्रमेह, कर्णरोग, अतिसार, रुधिरका गिरना, स्फोटक, रक्तपित्त, दाह, रुधिरविकार, योनिरोग और शोषको दूर करे है।

कदलीकन्दगुणा।

बल्यः कदल्याः कन्दः स्यात्कफपित्तहरो गुरुः।
वातलो रक्तशमनः कषायो रूक्षशीतलः॥
कर्णशूलरजोदोष सोमरोग नियच्छति।

अर्थ-केलेका कन्द-बलकारक, कफपित्तनाशक, भारी, वातकारक, रक्तविकारको दूर करनेवाला, कषेला, रूखा, शीतल तथा कर्णशूल, रजोदोष और सोमरोगको दूर करे है।

अन्यच्च।

कन्दः कदल्या रूक्षः स्याद्वातलस्तुवरो गुरुः। शीतो बल्यो मधुः केश्यो रुच्योऽग्निमांद्यकारकः॥ कर्णशूल चाम्लपित्तं दाह रक्तरुजं तथा। सोमदोष रजोदोषं कृमीन्कुष्ठं च नाशयेत्॥ (नि० र०)

अर्थ-केलेका कन्द-रूखा, कषेला, भारी, शीतल, बलवर्द्धक, मधुर, केशोको हितकारी, रुचिकारी, मन्दाग्निकारक तथा कर्णशूल, अम्लपित्त, दाह, रुधिरविकार, सोमरोग, रजोदोष, कृमि, और कुष्ठको नष्ट करे है।

कदलीसारगुणाः।

सार कदल्याः सग्राहि चाप्रिय गुरु शीतलम्॥
तृड्दाहमूत्रकृच्छ्रातिसारमेहांश्च सोमकम्।
अस्थिस्राव रक्तपित्त विस्फोटांश्चैव नाशयेत्॥

अर्थ-कदलीसार-मलरोधक, अप्रिय, भारी, शीतल तथा तृषा, दाह, मूत्रकृच्छ्र, अतिसार, प्रमेह, सोमरोग, अस्थिस्राव, रक्तपित्त, और विस्फोट नाशक है।

आरण्यकदलीगुणा।

आरण्यकदली शीता मधुरा बलवर्धिनी। वीर्य्यवृद्धिकरी रुच्या दुर्जरा च गुरुः स्मृता। तृड्दाहशोषपित्तानां नाशिनी च प्रकीर्तिता। फल तु तुवर चास्या मधुर च गुरु स्मृतम्।

अर्थ-वनकदली अर्थात् जगलीकेली-शीतल, मधुर, बलवर्द्धक वीर्य

वर्द्धक, रुचिकारक, दुर्जर, भारी तथा तृषा, दाह, शोष और पित्तका नाश करे है । इसका फल कषेला, मधुर और भारी है ।

काष्ठकदलीगुणाः ।

काष्ठस्य कदली ग्राही हृद्या रुच्या च शीतला । अग्निमांद्यकरी गुर्वी दुर्जरा चातिमाधुरी ॥ तृड्दाहमूत्रकृच्छ्राणां रक्तपित्तस्य नाशिनी । विस्फोटं चास्थिरोगं च नाशयेदिति कीर्त्तिता ॥

अर्थ-काष्ठकदली (काठकेला)-ग्राही, हृदयको हितकारी, रुचिकारक, शीतल, मन्दाग्निकारक, भारी, कठिनतासे पचनेवाला, अत्यन्त मधुर तथा तृषा, दाह, मूत्रकृच्छ्र, रक्तपित्त, विस्फोट और अस्थिरोगका नाश करे है ।

सुवर्णकदलीगुणाः ।

सुवर्णकदली शीता मधुरा चाग्निदीपनी ।
बल्या वृष्या च गुर्वी च तृड्दाहकफनाशिनी ॥ (नि० र०)

अर्थ-सोनकेला-शीतल, मधुर, अग्निदीपक, बलकारक, वीर्यवर्द्धक, भारी तथा तृषा, दाह और कफका नाश करे है ।

अन्यच्च ।

तदेव चम्पकाख्यं तु वातपित्तहरं गुरु ।
वृष्यं चैवातिशीतं च मधुरं रसपाकयोः ॥ (रा० व०)

अर्थ-चम्पककेला-वातपित्तनाशक, भारी, वीर्यवर्द्धक, अत्यन्त शीतल, मधुर और पचनेमेभी मधुर है ।

अन्यच्च ।

सुवर्णमोचा कफवातहारिणी विष्टम्भिनी दीपनकारिणी च ।
सुदुर्जरा दाहविघातिनी च रक्तं च पित्तं शमयेत निश्चितम् ॥

अर्थ-चम्पेकेला-पीलाकेला-कफवातनाशक, विष्टम्भकारक, अग्निप्रदीपक, दुर्जर, दाहनाशक और रक्तपित्तको शान्तिकरे है ।

महेन्द्रकदलीगुणाः

महेन्द्रकदली चोष्णा वातस्य च विनाशिनी ।
प्रदरं पित्तरोगं च नाशयेदिति कीर्तिता ॥

अर्थ-महेन्द्रकदली-गरम तथा वात प्रदर और पित्तरोगको नाश करे है ।

कृष्णकदलीफलगुणाः ।

कृष्णा तु कदली रुच्या तुवरा मधुरा लघुः ।
वायोर्धातोर्वृद्धिकरी मेहपित्ततृषाहरा ॥ (नि० र०)

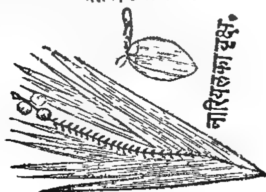
अर्थ-कालाकेला-रुचिकारक, कपेला, मधुर, हलका, वातकारक, धातुवर्द्धक तथा प्रमेह, पित्त और तृषाको दूर करे है ।

माणिक्यमुक्तामृतचम्पकाद्या भेदाः कदल्या बहवोऽपि सन्ति । उक्ता गुणास्तेषु चिराद्भवन्ति निर्दोषता स्याल्लघुता च तेषाम् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-केलेकी माणिक्य, मुक्ता, अमृत और चम्पकादि अनेक जाति हैं, उन सबोंमे उपरोक्तही गुण है किन्तु निर्दोष और हलकापन अधिक होता है ।

विवरण । केला सम्पूर्ण भारतवर्षमे और उत्तर खण्डके वन और पहाडोमे अधिकतासे होता है,केलेकी अनेक जाति हैं,जैसे पहाडी केला,चम्पककेला, जगली केला, बडा केला, काठ केला, इत्यादि, परन्तु गुणमे सब समान है केलेका वृक्ष बहुत ऊचा होता है, पत्ते दो चार गजतक लम्बे और आध आध गज चौडे होते हैं, यह वृक्ष खम्भके समान होता है और पत्तेमे पत्ते निकलते चले आते हैं,सिवाय पत्तोके और कोई शाखा इसमे नहीहोती,केवल पत्तोहीसे वेष्टित होता है,उसमे वक्कलके भीतर बक्कलही निकलता है कुछ सार नही होता उसके बीचमे एक दण्डा निकलाता है उस डण्डेपर एक हजार फली आती है बीचमे सबसे ऊपर कमलकलीसेभी बडा लालरगका एक फूल नोकदार बुर्जके तुल्य आताहै फली कच्ची अवस्थामे लाल होती है उनको तोडकर रखनेसे पीले रंगकी होजाती है पहाडमे मुनियोके भोजनके लिये यह उत्तम पदार्थ है ।

नारिकेलनामानि ।



नारिकेलो दृढफलो लांगली कूर्चशीर्षकः।
तुङ्गः स्कन्धफलश्चैव तृणराजः सदाफलः॥

अर्थ-नारिकेल, दृढफल, लाङ्गली, कूर्चशीर्षक, तुङ्ग, स्कन्धफल, तृणराज, सदाफल, (नारिकेर, नाडिकेलि, नारीकेली, नारीकारी, नारिकेरि, नारिकेलि=सदापुष्प, शिरःफल, मृदुफल, पुटोदक, गारिकेर, रसफल, सुतङ्ग, कूर्चशेखर, दृढनीर, नीलतरु, मङ्गल्य, उच्चतरु, स्कन्धतरु, दाक्षिणात्य, दुरारुह, त्र्यम्बकफल, शिराफल, करकाम्भा, पयोधर, मुकुण, कौशिकफल, फलमुण्ड, जटाफल, मुण्डफल, विश्वामित्रप्रिय, नाडीकेल, नारकेर, सुभङ्ग, फलकेशर, वरफल, महाफल, सदाफल, तोयगर्भ, त्र्यक्षफल)।

संस्कृतभाषामे	नारिकेल।
हिंदीभाषामे	नारियल, नरियल, खोपरा।
वंगभाषामे	नारिकेल, नारकोल।
मराठीभाषामे	श्रीफल, नारळ।
गुजरातीभाषामे	नालीयर।
कर्णाटकीभाषामे	तेंगिनकायि।
तैलिङ्गीभाषामे	टेंकाया, नारिकदम।
तामिलीभाषामे	टेन्ना, तेङ्गायि।
औत्कलीभाषामे	नडिया।
अंग्रेजी भाषामे	कोकोनट् पाम। Coconut palm
लैटिन्भाषामे	कोकोसन्युसिफेरा। Cocesnusifera
फारसीभाषामे	जोजहिन्दी नारीगल।
अरबीभाषामें	नारजिल्।

नारिकेलसाधारणगुणाः।

नारीकेलं सुमधुरं गुरु स्निग्ध च शीतलम्।
हृद्यं सबृंहणं वस्तिशोधनं रक्तपित्तनुत्॥ (आ० सं०)

अर्थ-साधारण नारियल-मधुर, भारी, स्निग्ध, शीतल, हृदयको हितकारी, पुष्टिकारक, वस्तिशोधक और रक्तपित्तनाशक है।

अन्यच्च

नारिकेल गुरु स्निग्ध शीतं वृष्यं च दुर्जरम्। वस्तिशुद्धिकर बल्यं बृहणं कफकारकम्॥स्वादुविष्टम्भकृत्स्रो-

तृट्पित्तनाशनम् । वातपित्तं रक्तदोषं दाहं चैव विनाशयेत्॥ क्षतक्षय नाशयतीत्येवमुक्तं कृपालुभिः । (नि० र०)

अर्थ-नारियल-साधारण, भारी, स्निग्ध, शीतल, वीर्य्यवर्द्धक, कठिनतासे पचनेवाला, बस्तिशोधक, बलकारक, पुष्टिकारक, कफकारक, स्वादिष्ठ, विष्टम्भकारक तथा शोष, तृषा, पित्त, वातपित्त, रुधिरदोष, दाह और क्षतक्षयका नाश करे है ।

अपिच ।

स्निग्धं स्वादुरसं विपाकमधुरं हृद्यं जडं दुर्जरं पित्तघ्नं क्रमिवर्द्धनं मदकरं वातामयध्वंसनम् । आमश्लेष्मविपाककोपशमनं वह्नेः श्रमध्वंसनं कन्दर्पस्य बलं ददाति नितरां तन्नारिकेलं फलम् ।

अर्थ-नारियल-साधारण, स्वादु रसयुक्त, पाकमें मधुर, हृदयको हितकारी, भारी, दुर्जर, पित्तनाशक, कृमिवर्द्धक, मदकारक, वात रोगनाशक, सारक, आम और कफके कोपको शान्ति करनेवाला, अग्निनाशक, आमनाशक और कामदेवके बलको बढानेवाला है ।

कोमलनारिकेलगुणाः ।

विशेषतः कोमलनारिकेलं निहन्ति पित्तज्वरमस्त्रदोषान् । तृट्छर्दिदाहामयमाशु हन्यात् सरक्तपित्तप्रभवांश्च रोगान् ॥

अर्थ-कोमल नारियल विशेषकरके पित्तज्वर, रक्तविकार, तृषा, वमन, दाह और रक्तपित्तसे उत्पन्न हुए रोगोंका शीघ्रही नाश करे है ।

पक्वनारिकेलगुणाः ।

पक्वं च नारिकेलं तु दाहकं पित्तलं गुरु ॥
वृष्यं मलस्तम्भकरं रुचिदं मधुरं मतम् ।
दीपनं बलकृत्प्रोक्तं वीर्य्यस्य च विवर्द्धकम् (नि०र०)

अर्थ-पक्वनारियल-दाहकारक, पित्तजनक, भारी, वीर्य्यवर्द्धक, मलस्तम्भक, रुचिदायक, मधुर, दीपन, बलवर्द्धक और वीर्य्यवर्द्धक है ।

शुष्कनारिकेलगुणाः ।

नारिकेलफलं शुष्कं दुर्जरं दाहकं गुरु ।

स्निग्धं मलस्तम्भकर बलवीर्य्यरुचिप्रदम् ॥

अर्थ–शुष्कनारियल अर्थात् सूखागोला–कठिनतासे पचनेवाला, दाहकारक; भारी, स्निग्ध, मलस्तम्भक, तथा बल, वीर्य्य और रुचिको उत्पन्नकरनेवाला है ।

नारिकेलजलगुणा ।

स्निग्ध स्वादु हिमं हृद्यं दीपनं वस्तिशोधनम् ।
वृष्यं पित्तपिपासाघ्नं नारिकेलोदकं गुरु ॥(सु॰सु॰)

अर्थ–नारियलका जल वा दूध–स्निग्ध, स्वादिष्ठ, शीतल, हृदयको हितकारी, दीपन, वास्तिशोधक, वीर्य्यवर्द्धक, पित्तनिवारक, प्यासनाशक और भारी है ।

अन्यच्च ।

दुग्धं तु नारिकेलस्य बल्यं रुच्य गुरु स्मृतम् ।
पाके स्वादु समुद्दिष्टं स्निग्धं वृष्यं च दाहकम् ॥
किञ्चिदुष्णं वातकफगुल्मकासविनाशकम् । (नि॰र॰)

अर्थ–नारियलका दूध–बलकारक, रुचिदायक, भारी, पचनेमे स्वादिष्ठ, स्निग्ध, वीर्य्यवर्द्धक, दाहकारक, किञ्चित् गरम तथा वात, कफ, गुल्म और खाँसीको दूर करे है ।

अपिच ।

नारिकेलाम्बु तरुणं तृष्णाघ्नं पित्तनाशनम् । बालस्य नारिकेलस्य जलप्रायो विरेचनम् ॥ शीतं वमथुमूर्च्छाघ्न पित्तज्वरविनाशनम् । नारिकेलोदकं जीर्णं विष्टम्भि गुरु शीतलम् ॥ रा॰व॰

अर्थ–तरुण-नारियलका जल–तृष्णा और पित्तनाशक है । बाल नारिकेल अर्थात्–कच्चे नारियलका जल–विरेचक, शीतल तथा वमन, मूर्च्छा और पित्तज्वरको दूर करे है । पक्कनारियलका जल विष्टम्भकारक, भारी और शीतल है ।

नारिकेलपुष्पगुणा ।

नारिकेलस्य पुष्प तु शीत रक्तातिसारहृत् ॥
रक्तपित्त प्रमेहं च सोमरोगं च नाशयेत् ।
मलस्तम्भकर चापि प्रोक्तं पूर्वमनीषिभिः (नि॰ र॰)

अर्थ-नारियलका फूल-शीतल तथा रक्तातिसार, रक्तपित्त, प्रमेह और सोमको दूर करेहै और मलस्तम्भक है।

नारिकेलपुष्पजलगुणाः।

नारिकेलपुष्पजलं गुरु वृष्यं प्रकीर्तितम् ॥
तत्कालमदकृत्प्रोक्तं चातिस्निग्धमुदीरितम्।
तच्चेदम्लं कफकरं पित्तलं कृमिवातनुत् (नि० र०)

अर्थ-नारियलके फूलका जल-भारी, वीर्य्यवर्द्धक, तत्काल मदकारक, अत्यन्त स्निग्ध, अम्ल, कफकारक, पित्तजनक, कृमि और वातनाशक है।

नारिकेलताडीगुणाः।

नारिकेलतरुतोयमतीव स्निग्धमाशुमदकृद्गुरु वृष्यम्।
साम्लभावमुपयात्यपराह्णे श्लेष्मपित्तजनकं च कृमिघ्नम् ॥

अर्थ-नारियलके पेडका जल-अत्यन्त स्निग्ध, तत्काल मदकारक, भारी और वीर्य्यवर्द्धक है। और वही जल दोपहरके पीछे अम्लभावयुक्त होकर कफकारक, पित्तजनक और कृमिनाशक होजाता है।

नारिकेलफलतैलगुणाः।

नारिकेलफलोद्भूतं तैलं वाजीकरं गुरु। पोषणं क्षीणधातूनां वातपित्तप्रणाशनम्॥मूत्राघाते प्रमेहे च श्वासे कासे च यक्ष्मणि। मेधालोपे च हितदं क्षतानां भरणं तथा ॥

अर्थ-नारियलका तेल-वाजीकर, भारी, क्षीणधातुवाले मनुष्यो को पुष्टिकारक, वातपित्तनाशक तथा मूत्राघात, प्रमेह, श्वास, खाँसी, राजयक्ष्मा और मेधाके लोपमे हितकारी है तथा क्षतरोगको हरनेवाला है।

मधुनारिकेलगुणाः।

मोहजातीयकं नाम नारिकेलं च शीतलम्।
मधुरं पुष्टिकृद्बल्यं रुच्यं चाग्निप्रदीपकम् ॥
कान्तिजतुकरं स्निग्धं कफस्यामस्य कोपनम्।
कामवृद्धिकरं देहस्थैर्य्यकृद्दाहनाशनम्।
तृषां पित्तं श्रमं वातमतिसारं च नाशयेत्।

अर्थ-मधुनारियल-शीतल, मधुर, पुष्टिकारक, बलवर्द्धक, रुचिकारक

अग्निप्रदीपक, कान्तिजनक, कृमिकारक, स्निग्ध, कफको कुपित करनेवाला, आमकारक, कामवर्द्धक, देहको स्थिर करनेवाला, दाहनाशक, तृषा, पित्त, श्रम, वात और अतिसारको दूर करनेवाला है ।

विवरण । नारियलका बहुत बडा वृक्ष होता है, आकार खजूर और ताडके समान होता है, यह वृक्ष पूर्वकी ओर कलकत्ता, जगन्नाथ तथा बम्बईमे बहुत है, विशेष करके नदी अथवा समुद्रके निकट अधिक उत्पन्न होते है, इनमे शाखा नही होती, इनके ऊपरके भागमे खजूरकेसे पत्ते होते है, उनही पत्तोके बीचमे नारियल लगते है उन नारियलोको फोडकर जो रस निकलता है उसको नारियलका दूध कहते है । जब वे नारियल सूख जाते है, तब उनकी भीतरकी मींगको गोला अथवा खोपडा कहते है, यह फल बंगलादि कायाम बहुत लिये जाते है ।

ग्राम्यखर्जूरीनामानि ।

भूमिखर्जूरिका स्वाद्वी दुरारोहा मृदुच्छदा ।
तथा स्कन्धफला काककर्कटी स्वादुमस्तका ॥

अर्थ-भूमिखर्ज्जूरिका, स्वाद्वी, दुरारोहा, मृदुच्छदा, स्कन्धफला, काककर्कटी, स्वादुमस्तका (खर्ज्जु, खर्ज्जू, खर्ज्जूरी, खरस्कन्धा, दुष्प्रधर्षा, दुरारुहा, कषायी, निःश्रेणी, यवनेष्टा, हरिप्रिया)

पिण्डखर्ज्जूरिकानामानि ।

पिण्डखर्जूरिका त्वन्या सा देशे पश्चिमे भवेत् ।

अर्थ-पिण्डखर्जूरिका (पिण्डखर्जूरी, राजजम्बु, पिण्डीफल, मुद्रिका, दीप्या, सपिण्डा, मधुरस्रवा, फलपुष्पा, स्वादुपिण्डा, हयभक्षा) यह पश्चिमदेशमे प्रसिद्ध है ।

छोहारानामानि ।



खर्ज्जूरी गोस्तनाकारा परद्वीपादिहागता।
जायते पश्चिमे देशे सा छोहारेति कीर्त्यते ॥

अर्थ-छुहारा गोस्तनाकाराखर्ज्जूरी यह दो नाम छुहारेके हैं, छुहारा गौके थनोंकी समान आकारवाला होता है और दूसरे द्वीपसे आया है

संस्कृतभाषामें	खर्ज्जूरी, पिण्डखर्जूरी, छोहारा।
हिन्दीभाषामें	खजूर, पिंडखजूर, छुहारा।
बंगभाषामें	खेजूर, पिण्डखेजूर, छोहारा।
मराठीभाषामें	शिंदी, खजूरी।
गुजरातीभाषामें	खजूरी, खजूर, खारक।
कर्णाटकीभाषामें	इचिलु, सिहइचिलु, करांइंचिलु।
तैलिङ्गीभाषामें	इटाचेट्टु, खजुरपुंडु।
इंग्रेजीभाषामें	डेट पाम। Date plam
लैटिनभाषामें	फिनिक्स मोंटेना। Phoenix montona
	फिनिक्स डेक्टिलिफेरा। P. Dactylifera
	फिनिक्स० सिल्वेस्ट्रिस्। P. Sylvestris
फारसीभाषामें	तमररुतब।
अरबीभाषामें	खुर्मातर, खुर्माखुश्क।

त्रिविधखर्ज्जूरीगुणाः।

खर्जूरीत्रितयं शीत मधुर रसपाकयोः। स्निग्ध रुचिवरं हृद्यं क्षतक्षयहरं गुरु ॥ तर्पण रक्तपित्तघ्न पुष्टिविष्टम्भशुक्रकम्। कोष्ठमारुतकृद्बल्य वान्तिवातकफापहम् ॥ ज्वराभिघातक्षुत्तृष्णाकासश्वासनिवारकम्। मदमूर्च्छामरुत्पित्तमद्योद्भूतगदान्तकृत् ॥ महतीभ्या गुणैरल्पा स्वल्पखर्जूरिका मता। तस्मादल्पगुण ज्ञेयमन्यत्खर्ज्जूरिकाफलम् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-तीनोंप्रकारकी खजूर-शीतल, मधुर, स्निग्ध, रुचिकारक, हृदयको भारी, तृप्तिकारी, पुष्टिकारक, विष्टंभकारक, शुक्रवर्द्धक, बलवर्द्धक, तथा क्षतक्षय, रक्तपित्त, कोठरोग, वातज्वर, अभिघात वमन, वात, कफ, क्षुधा, तृषा, खांसी, श्वास, मद, मूर्च्छा, वातपित्त और मद्यपानजनितरोगोंको दूर करनेवाली है। दोनों बडी खजूरोंसे छोटी खजूरके गुण अल्प हैं और खजूरे छोटी खजूरकी अपेक्षा हीनगुणवाली है।

अन्यच्च ।

अपक्वखर्ज्जूरफलं त्रिदोषाणां प्रकोपनम् ।
पक्वमेव हितं श्रेष्ठं त्रिदोषशमनं परम् ॥ (आ० सं०)

अर्थ-कच्चीखजूर-त्रिदोषको प्रकुपित करनेवाली । पक्की खजूर-हितकारी, उत्तम और त्रिदोषको शान्ति करनेवाली है ।

खर्ज्जूरीताडीगुणा ।

खर्ज्जूरीतरुजं तोयं मदपित्तकरं भवेत् ।
वातश्लेष्महरं रुच्यं दीपनं बलशुक्रकृत् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-खजूरकी ताडी-मदकारक, पित्तकारक, वातनाशक, कफनाशक, रुचिकारक, दीपन, बलकारक, और शुक्रवर्द्धक है ।

खर्ज्जूरादिमस्तकगुणा ।

खर्ज्जूरिकादितालानां नारिकेलस्य मस्तकम् ।
स्वादुपाकरस प्रोक्तं रक्तपित्तहर तथा ॥

अर्थ-खजूर, ताड और नारियलवृक्षका मस्तक-स्वादिष्ठ,पचनेमे भी स्वादु और रक्तपित्तनाशक है ।

अन्यच्च ।

गुवाकतालखर्ज्जूरनारिकेलशिरांसि च ।
स्वादुतिक्तकषायाणि मूत्रातङ्कहराणि च ॥
बलप्राणकराण्याहुः शुक्रवृद्धिकराणि च । (रा० ज०)

अर्थ-सुपारी,ताड,खजूर और नारियलवृक्षका मस्तक-स्वादु,कडवा, कषेला, मूत्ररोगनाशक, बलवर्द्धक, प्राणवर्द्धक और शुक्रवर्द्धक है ।

पिण्डखर्ज्जूरीगुणा ।

दाहघ्नी मधुरास्रपित्तशमनी तृष्णार्त्तिदोषापहा शीतश्वासकफश्रमोदयहरा सन्तर्पणी पुष्टिदा ॥ वह्नेर्मांद्यकरी गुरुर्विषहरा हृद्या च धत्ते बलं स्निग्धा वीर्य्यविवर्द्धिनी च कथिता पिण्डाख्यखर्ज्जूरिका ॥

अर्थ-पिण्डखजूर-दाहनाशक,मधुर,रक्तपित्तनिवारक,तृषानाशक, शीतल,श्वासनाशक,कफघ्न,श्रमहारक,तृप्तिकारक, पुष्टिदायक, मंदाग्निकारक, भारी, विषहारी, बलवर्द्धक,स्निग्ध और वीर्य्यवर्द्धक है ।

सुलेमानीखजूरीनामानि ।

सुलेमानी तु मृदुला दलहीनफला च सा ।

अर्थ-सुलेमानी, मृदुला, दलहीनफला यह नाम सुलेमानी खजूरके हैं ।

अस्या गुणाः ।

सुलेमानी श्रमभ्रान्तिदाहमूर्च्छाम्लपित्तहृत् ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-सुलेमानीखजूर-श्रम, भ्रान्ति, दाह, मूर्च्छा और अम्लपित्तनाशक है ।

विवरण । खजूर-पिण्डखजूर और छुहारेके वृक्ष सीधे लम्बे२चले जाते हैं, उनमे पत्ते लम्बे और शाखाभी लम्बी होती हैं, वृक्षपर खपटेसे दो सरीफेके समान बक्कल जमा रहता है,ऊपर शाखाओंमे फल लगते हैं वह खानेमे उत्तम नहीं होते हैं, बकसे २ होते हैं इस लिये उनको धनाढ्य लोग नहीं खाते, दीनलोग खाते हैं दूसरी पिण्डखजूर होती है उसके फूल तोडकर बोरियोंमे भर देते हैं,तीसरा छुहारा होता है यह दोनो खजूरके समान आकारवाला होता है ।

बादामनामानि ।



वातादो वातवैरी स्यान्नेत्रोपमफलस्तथा ।

अर्थ-वाताद, वातवैरी, नेत्रोपमफल, (सुफल,बादाम, वाताम, वातवैरी)

संस्कृतभाषामे	वाताद ।
हिन्दीभाषामे	बदाम मीठे, बदाम कडवे ।
बंगभाषामे	बादाम ।
मराठीभाषामे	गोडे बदाम, कडु बदाम ।
गुजरातीभाषामे	बदाम मीठी,बदाम कडवी ।
तैलङ्गीभाषामे	वेदम ।
तामिलीभाषामे	नटवडुम ।

इंग्रेजीभाषामें स्वीट् अलमंड । Sweet almond
बीटर अलमंड । Bitter almond
लैटिन्भाषामें एमिग्डेलस्ककम्युनी । Amigdalus Communis
एमिग्डेलस् एमर । Amigdalus amar
अरबीभाषामें लोजलहलु, लोजलमुर ।
फारसीभाषामें बदामशीरी, बदामतल्ख ।

बदामगुणा ।

वाताद उष्णः सुस्निग्धो वातघ्नः शुक्रकृद्गुरुः ।
वातादमज्जा मधुरा वृष्या पित्तानिलापहा ।
स्निग्धोष्णा कफकृन्नेष्टा रक्तपित्तविकारिणाम् ॥ (भा प्र)

अर्थ-बदाम-गरम, स्निग्ध, वातनाशक, शुक्रवर्द्धक, और भारी है । बदामकी मींग-मधुर, वीर्य्यवर्द्धक, वातपित्तनाशक, स्निग्ध, गरम, कफकारक और रक्तपित्तरोगवालेको हितकारी नहीं है ।

अपिच ।

बादामः सारकश्चोष्णो गुरुरम्लः कफप्रदः । स्निग्धः स्वादुश्च तुवरः शुक्रलो वातनाशनः ॥ उष्णवीर्यं चामफलं सारकं गुरु पित्तलम् । कफपित्तकरं चैव वातनाशकमुत्तमम् ॥ तत्पक्कं मधुरं वृष्यं सुस्निग्धं पौष्टिकं मतम् ।शुक्रलं कफकारी च रक्तपित्तं व्यपोहति ॥ शामकं वातपित्तस्य पूर्ववैद्यैरुदीरितम् । शुष्कं च तत्फलं प्रोक्तं मधुरं धातुवर्द्धकम् ॥ स्निग्धं वृष्यं च बल्यं च पौष्टिकं कफकारि च । वातपित्तस्य शमनं प्रोक्तं गुणविशारदैः ॥ (नि० र०)

अर्थ-बदाम-सारक, गरम, भारी, अम्ल, कफकारी, स्निग्ध, स्वादु, कषेला, शुक्रजनक, वातनाशक, उष्णवीर्य है । कच्चा बदाम-सारक, भारी, पित्तजनक तथा कफ, पित्तविकार और वातका नाश करे है । पक्का बदाम-मधुर, वृष्य, स्निग्ध, पुष्टिकारक, शुक्रजनक, कफकारक तथा रक्तपित्त और वातपित्तका नाश करे है । सूखा बदाम-मधुर, धातुवर्द्धक, स्निग्ध, वृष्य, बलकारक, पुष्टिकारी, कफकारक और वातपित्तको दूर करे है ।

बदामतैल ।

वातादतैलं मृदु रेचनं स्याद्वाजीकरं मूर्द्धगदं प्रहन्यात् ।

पित्तानिलघ्नं लघु दाहनाशि लावण्यदं मेदकरं सुशीतम् ॥
(आत्रेयसंहिता)

अर्थ-बदामका तेल-मधुरवीर्य, वाजीकर, सम्पूर्णरोगनाशक, पित्तनाशक, वातघ्न, हलका, दाहनाशक, लावण्यताकारक, मेदकारक और शीतल है।

विवरण। बदामके बडे २ वृक्ष, काबुल और मलयागिरिमें होते हैं पत्ते लम्बे और गोल होते हैं, वृक्ष मोटेमें छोटा आता है। फलके बीज बदाम कहलाते हैं।

सेवफलानि।

मुष्टिप्रमाण बदरं सेवं सिंचितिकाफलम्।

अर्थ-मुष्टिप्रमाण, बदर, सेव, सिंचितिकाफल, (सेविन, सेवि)

संस्कृतभाषामें	महाबदर।
हिन्दीभाषामें	सेव।
बंगभाषामें	सेउ।
मराठीभाषामें	मोटें बोर।
गुजरातीभाषामें	शेव।
इंग्रेजीभाषामें	ॲपल्। Apple
लेटिनभाषामें	पाइरस मेलस्। Pyrus malus
फारसीभाषामें	सेब।
अरबीभाषामें	तुफाह।

सेवस्य गुणाः।

सेवं समीरपित्तघ्नं बृंहणं कफकृद्गुरु।
रसे पाके च मधुरं शिशिरं रुचिशुक्रकृत् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-सेव। वातपित्तनाशक,पुष्टिकारक,कफकारी,भारी,रस और पाकमें मधुर,शीतल,रुचि और शुक्रकारक है,सेव प्राचीन नहीं है, क्योंकि सिवाय भावप्रकाशके और किसी ग्रन्थमें नहीं देखाजाता।

अमृतफलस्य गुणाः।

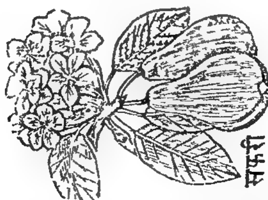
अमृतस्य फलं धातुवर्द्धकं मधुरं गुरु।
रुच्यं चाम्लं वातहरं त्रिदोषस्य च शामकम् ॥

अर्थ-नासपाती-धातुवर्द्धक, मधुर, भारी, रुचिकारक, अम्ल, वातनाशक और त्रिदोषको शांति करनेवाली है।



विवरण । सेव, वीह और नासपाती इन तीनोकी एकही जाति है, इनमे अन्तर थोडाही है, जैसे छुहारे, पिण्डखजूर, खजूरकी एकही जातिहे । सेवके वृक्ष काश्मीर और काबुलमे बहुत होतेहे, परन्तु नासपाती हिन्दोस्थानमे भी बहुत होतीहै, इनके वृक्ष अमरूदके वृक्षकी बराबर होतेहै, पत्तेभी अमरूदके बराबर कुछ चौडे होतेहै, काश्मीरका सेव बहुत मधुर होताहै, और काबुलका तुरश होताहै, काश्मीरकी नाशपातीभी बहुतही मधुरहोतीहै, जिसे नाक कहतेहै, वीहका मुरब्बा दस्तोकी व्याधिमे काम आताहै और बलदायक होता है ।

पेरुकफलनामानि ।



पेरुक दृढबीज च मांसल चापृथक्त्वचम् ।
मृदु पीत वर्तुल च तुवरं मधुराम्लकम् ॥

अर्थ–पेरुक, दृढबीज, मांसल, अपृथक्त्वच, मृदु, पीत, वर्त्तुल, तुवर, मधुराम्ल ।

संस्कृतभाषामे	पेरुक, अमृतफल ।
हिन्दीभाषामे	सपेद सफरी, लालसफरी, वीह, अमरूद-
मराठीभाषामे	पांढरे पेरू, तांबडे (गुलाबी) पेरू ।
गुजरातीभाषामे	जामफल, पेर ।
तैलिङ्गीभाषामे	ज्ञामिपडु ।
इंग्रेजीभाषामे	ग्वावावैट ग्वावारेड् । Guava white Guava red
लैटिन्भाषामे	सिडियं पोमिफरं पाईरस कोम्नीस् । Psidium Pomiferum Pyrus Communis
फारसीभाषामे	अमरुत ।
अरबीभाषामे	कमशरी ।

अस्य गुणाः ।

पेरुकं तुवरं प्रोक्तं स्वाद्वम्लं कफकारकम् ।
शुक्रलं वातपित्तघ्नं शीतलं च रसे मतम् ॥

अर्थ-सफरी-कषेली, स्वादु, अम्ल, कफकारक, शुक्रजनक, वातपित्तनाशक और शीतल है।

अन्यच्च ।

ततोऽमृतफलं स्वादु तुवरं चातिशीतलम् ।
तीक्ष्णं गुरुकफकरं वातदं मादनाशकम् ॥
वृष्यं रुचिशुक्रकरं त्रिदोषघ्नं प्रकीर्त्तितम् ॥ (नि० र०)

अर्थ-सफरी-स्वादु, कषेली, अत्यन्त शीतल, तीक्ष्ण, भारी, कफकारी, वातवर्द्धक, उन्मादनाशक, वीर्य्यवर्द्धक, रुचिकारक, शुक्रजनक और त्रिदोषनाशक है।

विवरण । सफरीके वृक्ष बागोमे अधिकतासे होते है, पत्ते आमके पत्तोसे कुछेक छोटे होते है, फल वर्षा और शिशिर ऋतुमे आते है, फल भीतरसे सफेद और कोई लालभी होता है।

नागरगनामानि ।

नारगो नागरगः स्यात्त्वक्सुगन्धो मुखप्रियः ॥

अर्थ-नारग, नागरग, त्वक्सुगन्ध, मुखप्रिय (नार्य्यङ्ग, नागर, ऐरावत, नागरुक, चक्राधिवासी, किर्मिर, किर्मीरत्वक् मुखप्रिय, सुरग, त्वगध, इरावत, वक्रवास, योगरग, गधाढ्य, गधपत्र, वरिष्ठ)



नारंगी.

संस्कृतभाषामे	नागरंग, नारंग ।
हिन्दीभाषामें	नारगी ।
बंगभाषामे	नारंगालेबु ।
मराठीभाषामे	नारिंग ।
गुजरातीभाषामे	नारंगीलिंबु ।
कर्णाटकीभाषामे	माधवला ।
तैलिङ्गीभाषामे	दयाकाया, गजनिम्म, नारंजिचेट्टु ।
तामिलीभाषामे	किचिलि ।
औत्कलीभाषामे	नारिंगी ।
इंग्रेजीभाषामे	ऑरेंज । Orange
लैटिन्भाषामे	साईट्रस् औरेंटियम् । Citrus aurant um
फारसीभाषामे	नारज ।
अरबीभाषामें	नारंज ।

अस्य फलगुणाः ।

नागरङ्गं तु सुरभि विपाके दुर्जरं गुरु ।
नात्यम्लमीषन्मधुरं वृष्यं वातविनाशनम् ॥

अर्थ-नारंगी-सुगन्धि, अतिकठिनतासे पचनेवाली, भारी, किञ्चित् अम्ल, किञ्चित् मधुर, वीर्य्यवर्द्धक और वातविनाशक है ।

अन्यच्च ।

नारंगं कफपित्तामकारकं दुर्जरं सरम् । अत्यम्लं वातहरक

चात्युष्ण च मतं बुधैः ॥ मधुरं तच्चामधुरं हृद्यमम्लं बल-प्रदम् । विशद गुरु रुच्यं च सरं चोष्णसुगन्धिकम्॥ स्वादु चामं कृमीन्वातं श्रम शूलं च नाशयेत् । (नि० र०)

अर्थ-नारंगी (मधुर और अम्ल)दोनो प्रकारकी-कफ,पित्त और आमकारक है । कठिनतासे पचनेवाली, कुछेक दस्तावर, अत्यन्त अम्ल, वातनाशक,अत्यन्त उष्ण और मधुर है । खट्टी नारंगी-हृद-यको हितकारी,अम्ल,बलवर्द्धक,विशद,भारी, रुचिकारक, सारक, उष्ण,सुगंधि,स्वादु तथा आम,कृमि,वात,श्रम और शूलका नाशकरेहै

विवरण-नारंगीके वृक्ष मध्यमजातिके बागोमे बहुत होतेहै, पत्ते नींबूके समान होतेहै फूल अत्यन्त सुगंधित,और सफेद रंगके आते है,फल गोल२होतेहै,कच्ची अवस्थामे हरे और पकनेपर लाल सिंदू-रिया रंगके होजातेहै,बागेश्वरकी नारंगी सर्वत्र स्थानोमे प्रसिद्ध है।

बीजपूरनामानि।



बीजपूरो मातुलुंगो रुचकः फलपूरकः ॥

अर्थ-बीजपूर, मातुलुंग, रुचक, फलपूरक (अम्लकेशर,बीजपूर्ण, पूर्णबीज, सुकेशर, बीजक, मातुलुङ्ग, सुपूर, बीजफलक, जन्तुघ्न, दन्तुरच्छद, पूरक, रोचनफल)

संस्कृतभाषामे	बीजपूर ।
हिन्दीभाषामे	बिजौरा नीबु ।
बंगभाषामे	टाबालेबु।
मराठीभाषामे	महाळुंग ।

गुजरातीभाषामे	बीजोरुलिंबु ।
इंग्रेजीभाषामे	साईट्रस् । Citrus
लेटिन्भाषामे	साईट्रस् एसीडा । Citrus acida
	साईट्रस् मेडिका । Citrus Madica
फारसीभाषामे	तुरंज ।
अरबीभाषामे	उतरंज ।

अस्य फलगुणाः ।

बीजपूरफलं स्वादु रसेऽम्लं दीपनं लघु ।
रक्तपित्तहरं कण्ठजिह्वाहृदयशोधकम् ॥
श्वासकासारुचिहरं हृद्यं तृष्णाहरं स्मृतम्। (भा० प्र०)

अर्थ-बिजोरानींबू-स्वादिष्ठ, खट्टा, दीपन, हलका, रक्तपित्तनाशक, कंठशोधक, जिह्वाशोधक, हृदयशुद्धिकारक तथा श्वास, खाँसी, अरुचि, तृषानाशक है और हृदयको हितकारी है ।

अन्यच्च ।

मातुलुंगफलं चाम्लमुष्णं कठविशोधकम् । तीक्ष्णं लघु प्रियं चाग्निदीपकं रुचिकारकम् । स्वादुश्च जिह्वाहृदयशोधकं पित्तवातनुत् । कफश्वासतृषाकासान्हिक्कां चैव विनाशयेत् ॥ अरुचिं रक्तपित्तं च नाशयेदिति कीर्तितम् । तच्च बालं मातुलुङ्गं पित्तवातकफप्रदम् ॥ रक्तरुक्कारकं चैते मध्यमस्यापि ते गुणाः । पक्वं महावर्णकरं हृद्यं बल्यं च पौष्टिकम् । शूलाजीर्णविबन्धघ्नं वातं श्वासं कफं जयेत् ॥ अग्निमांद्यं च शोफं च कासारोचकनाशकम् । फलत्वग्दुर्जरा तिक्ता तीक्ष्णोष्णा स्निग्धका गुरुः । कृमिवातकफान्हन्ति त्वग्द्रवः साधुशीतलः ॥ गुरुर्धातोर्वृद्धिकरः स्निग्धः कफकरः स्मृतः । वातपित्तहरः प्रोक्तः प्रोक्तोऽन्तर्भागको मधुः ॥ वातं शूलं कफं छर्दिमरोचकस्य च नाशकः । केसरं दीपनं मेध्यं लघु ग्राहि रुचिप्रदम् ॥ गुल्मोदरश्वासकासहिक्कावातमदात्ययान् । मदशोषविबन्धार्शोवातीश्च नाशयत्यलम् । केसरस्य रसः पार्श्वबस्तिशूलकफा-

रुचीः। वातं च श्वासकासं च छर्दिं चैव विनाशयेत्॥वीजं तु मातुलुगस्य गर्भदं दुर्जरं गुरु। उष्णं तिक्त दीपनं च वल्यमर्शोरुजापहम् ॥ वातपित्तशोफकफान्नाशयेदिति कीर्तितम्। फलमज्जा गुरुः शीता स्वाद्वी स्निग्धा बलप्रदा॥ वातपित्ते नाशयेच्च मूलमर्शकृमीहरम्। विषूचीमलबन्धं च शूल चैव विनाशयेत्॥ पुष्पं तु मातुलुगस्य दीपन ग्राहि शीतलम्। लघु वातं रक्तपित्त नाशयेदिति कीर्तितम्॥

अर्थ-विजोरा नीबू-खट्टा, गरम, कठशोधक, तीक्ष्ण, हलका, प्रिय, अग्निप्रदीपक, रुचिकारक, स्वादिष्ठ, तथा जिह्वा और हृदयको शुद्ध करनेवाला तथा पित्त, वात, कफ, श्वास, तृषा, खाँसी, हिचकी, अरुचि और रक्तपित्तको दूर करे है। कोमल विजोरा-पित्त, वात, कफ और रुधिरके विकारोंको उत्पन्न करे है। मध्यम अवस्थाके विजोरेकेभी कोमल अर्थात कच्चे विजोरेकी समान गुण है। पक्का विजोरा-देहको सुन्दर करनेवाला, हृदयको हितकारी, बलकारक,पुष्टिजनक तथा शूल, अजीर्ण, विबन्ध, वात, श्वास, कफ, मन्दाग्नि, सूजन, खाँसी और अरुचिको हरनेवाला है। विजोरेका बक्कल-दुर्जर,कडवा, तीक्ष्ण,गरम,स्निग्ध, भारी तथा वात और कफको दूर करे है। विजोरेके बक्कलका रस-स्वादु, शीतल,भारी,धातुवर्द्धक,स्निग्ध,कफकारक और वातपित्तनाशक है। विजोरेके बक्कलके अन्तरका भाग-मधुर तथा वात, शूल, कफ, वमन और अरुचिको दूर करे है। विजोरेकी केशर-दीपन, मेधाकारक, हलकी, मलरोधक, रुचिकारक तथा गुल्म, उदररोग, श्वास, खाँसी, हुचकी, वात, मदात्यय, उन्माद शोष, विबन्ध, अर्श और वमनको दूर करनेवाली है। विजोरेकी केसरका रस-पार्श्व, वस्तिशूल, कफ, अरुचि, वात, श्वास, खाँसी और वमनका नाश करे है। विजोरेके बीज-गर्भदायक,अतिकठिनतासे पचनेवाले, भारी,गरम,दीपन, बलवर्द्धक तथा बवासीर,वात, पित्त, सूजन और कफका नाशकरे है। विजोरेके बीजकी मींग भारी,शीतल, स्वादु, स्निग्ध, बलवर्द्धक तथा वात और पित्तका नाश करे है। विजोरेके वृक्षकी जड-अर्शरोग, कृमि, विषूची, मलबन्ध और शूलका

नाश करे है । विजौरेके फूल-दीपन,मलरोधक, शीतल, हलके तथा वात और रक्तपित्तका नाश करे है ।

ऋतुपरत्वेनानुपानगुणाः ।

सिन्धूत्थेनघनागमेच सितया काले शरत्सज्ञकेहेमन्तेलवणार्द्र-हिंगुमरिचैः सिद्धार्थतैलान्वितैः॥एतैस्तैः शिशिरे मधावपियुतैर्ग्रीष्मे गुडेनान्वित वैद्यैर्भूमिपमातुलुंगमुदित सर्वत्र साधारणम्

अर्थ-विजोरेको-वर्षाऋतुमे सैन्धवलवणके साथ, शरद्ऋतुमे मिश्रीके साथ, हेमन्तऋतुमे लवण, अदरख, हींग और मिर्चके साथ, शिशिरऋतुमे और वसतऋतुमे सरसोंके तेलके साथ और ग्रीष्मऋतुमे गुडके साथ सेवन करना चाहिये।

वनबीजपूरगुणा ।

अम्लः कटूष्णो वनबीजपूरो रुचिप्रदो वातविनाशनश्च । स्यादामदोषक्रिमिनाशकारीकफापहःश्वासनिपूदनश्च(रा नि)

अर्थ-वनविजोरानींबू-खट्टा, चरपरा, गरम, रुचिदायक,वातविनाशक तथा आमदोष, कृमि, कफ और श्वासको दूर करे है ।

मधुरमातुलुङ्गगुणा ।

मधुरं मातुलुग तु शीतं रुचिकर मधुागुरु वृष्यं दुर्ज्जर च स्वादिष्ठ च त्रिदोपनुत् ।पित्त दाह रक्तदोषान्विबन्धश्वासकासकान्॥ क्षयं हिक्कां नाशयेच्च पूर्वैरेवमुदाहृतम् ।

अर्थ-मधुरमातुलुंग-शीतल, रुचिकारक, मधुर, भारी, वीर्यवर्द्धक, दुर्जर, स्वादिष्ठ तथा त्रिदोष, पित्त, दाह, रुधिरविकार, मलबध, श्वास, खासी, क्षय और हुचकीको दूर करे है ।

विवरण। बिजोरेके वृक्ष बागोमे होते है, इसके पत्ते नीबूके पत्तोंसेही मिलते है, परन्तु लम्बाई चौडाईमें इससे आठ दशगुने होते है, फूल सपेद आता है,फल लम्बा और गोल होता है, किसी किसी देशमे जगली बिजोरा होता है, दूसरा मीठा बिजोरा होता है ।

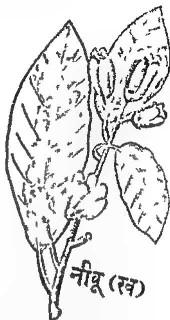
निम्बूकनामानि ।

निम्बूकंस्यादम्लजम्बीरकाख्यंवह्निदीप्यो वह्निबीजोम्लसारः दन्ताघातःशोधनो जन्तुमारी निम्बूकः स्याद्रोचनो रुद्रसंज्ञः

अर्थ-निम्बूक, अम्लजम्बीर, वह्निदीप्य, वह्निबीज, अम्लसार, दन्ताघात, शोधन, जन्तुमारी, निम्बूक, रोचन।

जम्बीरनामानि।





जम्बीरो दन्तशठो जम्भजम्भीरजम्भलश्चैव ।
रोचनको मुखशोधी जाड्यारिजंतुजिन्नवधा ॥

अर्थ-जम्बीर, दन्तशठ, जम्भ, जम्भीर, जम्भल, रोचनक, मुखशोधी, जाड्यारि, जन्तुजित् (जम्भल, जम्भक, जम्भर, दन्तहर्पण, दन्तकर्पण, गम्भीर, जम्भिर, रेवत वक्त्रशोधी, दन्तहर्पक, जम्भी)

संस्कृतभाषामे	निम्बूक, जम्बीर।
हिन्दीभाषामे	नीबू, कागजीनीबू, जम्भीरीनीबू बिहारीनीबू, कन्नानीबू, मीठानीबू।
बंगभाषामे	कागजालेबु, जामीरलेबु, पातीलेबु, कमलालेबु।
मराठीभाषामे	कागदीलिंबु, ईडालिंबु, मोठेईडलिंबु, साखरालिंबु।
गुजरातीभाषामे	कागदीलिंबु, दोडिगलिंबु, मीठालिंबु।
कर्णाटकीभाषामे	काचिले, कानिले।
तैलङ्गीभाषामे	निम्मपंडु, जाभिरमु।
इंग्रेजीभाषामे	लेमन्स। Lemons
लेटिन्‌भाषामे	लेमोन एसिड। Lemonum acidum

लेमोनिस्कोर्टिक्स ।
फारसीभाषामें लिमुनेतुर्श, लिमुनेशिरि ।
अरबीभाषामे लिमुनेहामिज ।

निम्बूकगुणा ।

निम्बूकमम्लं वातघ्नं दीपनं पाचनं लघु ।
निम्बुकं कृमिसमूहनाशनं तीक्ष्णमम्लमुदरश्रमापहम् ।
वातपित्तकफशूलिने हितं कष्टनष्टरुचिरोचनं परम् ॥ (भा प्र.)

अर्थ-नींम्बू-खट्टा, वातनाशक, दीपन, पाचक, हलका, कृमिसमूहनाशक, तीक्ष्ण, उदररोगनाशक, श्रमहारक, वात, पित्त, कफ और शूलमे हितकारी, अरुचिनिवारक और रोचन है ।

अन्यच्च ।

त्रिदोषसद्योज्वरपीडितानां दोषाश्रितानां च स्रवज्जलानाम् ।
मलग्रहे बद्धगुदे हितं च विषूचिकायां मुनयो वदन्ति ॥ (आ सं)

अर्थ-नींबू-त्रिदोषजन्य रोग, तत्कालके ज्वर अनेक प्रकारके मंदाग्निके रोग, मुखादिकसे पानीका गिरना, मलग्रह, गुदबद्धता और विषूचिकारोगमे अत्यंत हितकारी है ।

अपिच ।

निम्बूफलं रोचनमग्निवृद्धिं करोति पित्तं च सवातरक्तम् ।
अचाक्षुषं श्लेष्मकरं विशेषाद्भुक्तस्य पाकं कुरुते च सद्यः ॥ (सुषेण)

अर्थ-नींबू-रोचन, अग्निदीपक, पित्तजनक, वातरक्त कारक, नेत्रोको अहितकारी, कफकारक और विशेषकरके खायेहुए भोजनको पचानेवाला है ।

अन्यच्च ।

त्रिदोषवह्निक्षयवातरोगनिपीडितानां विषविह्वलानाम् ।
मदानले बद्धगुदे च देय विषूचिकायां मुनयो वदन्ति ॥

अर्थ-नींबू-त्रिदोष, वह्निक्षय और वातरोगसे पीडित किये हुए मनुष्योको तथा विषसे विह्वल कियेहुए मनुष्योको और मंदाग्नि, कोष्ठरोध तथा विषूचिका रोगमे देना चाहिये ।

अन्यच्च ।

निम्बूण पाचकं चाम्ल दीपन नेत्रयोर्हितम् । अतिरुच्यं च

कटुक तुवरं च मतं लघु ॥ कफवात वमिं कासं कण्ठरोगं क्षयं तथा। पित्त शूलं त्रिदोषं च मलस्तम्भं विषूचिकाम् । बद्धोदर चामवात गुल्मं चैव कृमीञ्जयेत् । तत्पक्कं च गुणैः श्रेष्ठं प्रोक्तं वैद्यविशारदैः ॥ (नि० र०)

अर्थ-नीबू-गरम, पाचक, खट्टा, दीपन, नेत्रोको हितकारी, अतिशय रुचिकारक, कटु, कपला, हलका तथा कफ, वात, वमन, खाँसी, कण्ठरोग, क्षय, पित्तशूल, त्रिदोष, मलस्तम्भ, विषूचिका, बद्धगुदोदर, आमवात, गुल्म और कृमिको दूर करे है । पक्का नीम्बू गुणोमे श्रेष्ठ है ।

जम्बीरगुणाः ।

जम्वीर मधुरं किञ्चिदत्यम्ल पित्तकृद्गुरु ।
सुगन्धि दुर्जर वह्निकफवातविबन्धनुत् ॥ (रा० व०)

अर्थ-जम्भीरीनीबू-किञ्चित् मधुर, अत्यन्त खट्टा, पित्तकारी, भारी, सुगन्धित, दुर्जर तथा अग्नि, वायु और कफकी विबन्धताको दूर करनेवाला है ।

अन्यच्च ।

जम्बीरस्य फलं रसेम्लमधुर वातापह पित्तकृत्
पथ्यं पाचन रोचन बलकर वह्नेर्विवृद्धिप्रदम् ।
पक्कं चेन्मधुरं कफार्तिशमन पित्तास्रदोषापनु-
द्वर्ण्यं वीर्यविवर्द्धनं रुचिकरं पुष्टिप्रदं तर्पणम् (रा० नि०)

अर्थ-जम्भीरीनीबू-अम्ल, मधुर, वातनाशक, पित्तजनक, पथ्य, पाचक, रोचन, बलकारक आर अग्निवर्द्धक है । पक्काजम्भीरी नीबू-मधुर, कफनाशक, रक्तपित्तनिवारक, वर्णको सुदर करनेवाला, वीर्यवर्द्धक, रुचिकारक, पुष्टिकारक और तृप्तिदायक ह ।

अपिच ।

जम्बीरमुष्ण गुर्वम्ल वातश्लेष्मविबन्धनुत् । शूल कासकफोत्क्लेशच्छर्दितृष्णामदोषजित् ॥ आस्यवैरस्यहृत्पीडावह्निमान्द्यं कृमीन् हरेत् । स्वल्पजम्बीरिका तद्वत्तृष्णाच्छर्दिनिवारिणी ॥ (रा०)

अर्थ-जम्भीरीनीबू-गरम, भारी, अम्ल, वातकफनाशक, विबन्धनिवा-

रक तथा शूल, खाँसी, कफ, उत्क्लेश, वमन, तृषा, आमदोष, मुखकी विरसता, हृदयकी पीडा, मदाग्नि और कृमिको दूर करे है। छोटी जम्भीरीके गुणभी बडीकी समान जानने विशेषकरके यह तृषा और वमनको दूर करे है।

लिम्पाकगुणा।

लिम्पाकं सुरभि स्वादु नात्यम्ल भक्तरोचनम्।
वातश्लेष्महर हृद्य छर्दिघ्नं नातिपित्तकृत् ॥(राजवल्लभ)

अर्थ-लिम्पाक (जम्बीरभेद) सुगन्धि, अत्यन्त अम्ल नहीं, अन्नरोचक, वातश्लेष्मनाशक, हृदयको हितकारी, वमननिवारक और कुछेक पित्तकारक है।

करुणगुणा।

करुण कफवातास्रमेदोघ्नं पित्तकोपनम् ॥ (रा० व०)

अर्थ-कन्नानीबू-कफ, वातरक्त और मेदरोगनाशक है तथा पित्तवर्द्धक है।

निम्बूकसाधारणगुणा।

अशीतमम्लमग्निकृत्समस्तशूलगुल्महृत्।
अरोचक विषूचिकां कृमीश्च निंबु नाशयेत् ॥

अर्थ-साधारणनीबू पित्तकारक, खट्टा, अग्निवर्द्धक, सर्व प्रकारके शूल और गुल्मको नाश करनेवाला तथा अरुचि, विषूचिका और कृमिरोगको हरनेवाला है।

बृहज्जम्बीरगुणा।

बृहज्जम्बीरक चाम्ल तुवरं तिक्तकं सरम्।
उष्ण पित्तकफघ्न च पाचन परिकीर्त्तितम् ॥
ये गुणा लघुजंबीरे ते वृद्धे सन्ति चाखिलाः।

अर्थ- बडाजम्भीरीनीबू-खट्टा, कषला, कडवा, सारक, गरम, पित्तकफनाशक, पाचक। जो गुण बडे जम्भीरीनीबूमे है वही गुण छोटे जम्भीरीनीबूमे जानने।

मधुकुक्कुटिगुणा।

मधुकुक्कुटिका शीता श्लेष्मलास्यप्रसादनी।
रुच्या स्वादुर्गुरुः स्निग्धा वातपित्तविनाशिनी॥(रा०व०)

अर्थ-मीठाजम्भीरीनीबू-शीतल, कफकारक, मुखको निर्मल करनेवाला, रुचिकारक, स्वादिष्ठ, भारी, स्निग्ध तथा वात और पित्तनाशक है।

मिष्टनिम्बुगुणा ।

मिष्टनिम्बूफलं स्वादु गुरु मारुतपित्तनुत् ।
गररोगविषध्वंसि कफोत्क्लेशघ्नरक्तहृत् ॥
शोषारुचितृषाच्छर्दिहरं बल्यं च बृंहणम् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-मीठानींबू-स्वादिष्ठ, भारी, वातपित्तनाशक, गररोगनाशक, विषविनाशक तथा कफ, उत्क्लेश, रुधिरविकार, शोष, अरुचि, तृषा और वमनको दूर करे है, बलवर्द्धक और पुष्टिकारक है ।

मधुकर्कटीगुणा ।

मधुकर्कटिका स्वाद्वी रोचनी शीतला गुरुः ।
रक्तपित्तक्षयश्वासकासहिक्काभ्रमापहा ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-चकोतरा-स्वादिष्ठ, रोचक, शीतल, भारी तथा रक्तपित्त, क्षय, श्वास, खाँसी, हिचकी और भ्रमको दूर करनेवाला है ।

जम्बीरपत्रगुणा ।

पत्रं जम्बीरजं तीक्ष्णं कृमिवातकफापहम् ।
सुरभि दीपनं रुच्यं मुखवैशद्यकारकम् ॥

अर्थ-जम्भीरीनीबूके पत्ते-तीक्ष्ण, कृमिहारक, वातनिवारक, कफनाशक, सुगन्धित, दीपन, रुचिकारक और मुखको निर्मल करनेवाले है ।

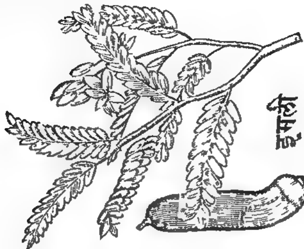
विवरण । नींबूके वृक्ष, बागोमें होते हैं, किन्तु किसी २ देशमे वनमे भी देखपडते है, पत्ते सर्वप्रकारके नींबुओंके गोल होते हैं नीबूओके पत्तोमे केवल छोटे बडेकाही अन्तर अर्थात् किसीके पत्ते छोटे और किसीके बडे होते है, सर्वप्रकारके नीबूओके फूल सफेद और सुगन्धियुक्त होते है, फल कच्ची अवस्थामे नीले और पकनेपर पीले पडजाते है, नीबू जम्भीर, कागजी, बिहारी, कन्ना, मीठानींबू, चकोतरा, नारंगी, संतरा, बिजोरा इत्यादि अनेक जातिके होतेहै ।

तिन्तिडीनामानि ।

अम्लिका चुक्रिकाम्ली च चुक्रा दन्तशठापि च ।
अम्ला च चिंचका चिंचा तिन्तिडीका च तिंतिडी ॥

अर्थ-अम्लिका, चुक्रिका, आम्ली, चुक्रा, दन्तशठा, अम्ला, चिंचिका, चिंचा, तिन्तिडीका, तिंतिडी । (तिन्तिडीक, तिन्तिडिका वृक्षाम्ल,

अम्लीका, आम्लिका, आम्लीका, तिन्तिड, तिन्तिली, तिन्तिका, आम्लिका, चुक्र, अत्यम्ला, भुक्ता, भुक्तिका, चारित्रा, गुरुपत्रा, पिच्छिला, यमदूतिका, चरित्रा, शाकचुक्रिका, सुचुक्रिका, सुतिन्तिडी, पंक्तिपत्रा, सर्वाम्ला)



संस्कृतभाषामे	तिन्तिडी ।
हिन्दीभाषामे	इमली ।
वंगभाषामे	तेतुल ।
मराठीभाषामे	चिंच ।
गुजरातीभाषामे	आंबली ।
कर्णाटकीभाषामे	हुणिसे, हुणिसेहण्णु, हुणिसिनयले ।
तैलिङ्गीभाषामे	चिंताचेट्टु, चिण्ट ।
औत्कलीभाषामे	कंआ ।
तामिलीभाषामे	पुळि ।
वम्०	टिन्टज ।
इंग्रेजीभाषामे	टेमेरिंडट्री । Tamarind Tree
लेटिन्भाषामे	टेमेरिंडस् इंडिकस् । Tamarindus indicus
अरबीभाषामें	समरहिंदी ।

अस्य फलगुणाः ।

अम्लिकाम्ला गुरुर्वातहरी पित्तकफास्रकृत् ।
पक्वा तु दीपनी रूक्षा सरोष्णा कफवातनुत् ॥ (भा०प्र०)

अर्थ–कच्ची इमली–भारी, वातनाशक, पित्तजनक, कफकारक और रक्तको दूषित करेहै । पकी इमली–दीपन, रूखी, कुछेक दस्तावर, गरम, कफ तथा वातनाश करेहै ।

अन्यच्च ।

अम्लिकायाः फलं बाल वातघ्नं कफपित्तकृत् ।
तत्पक्वं दीपन रुच्यमत्युष्णं कफवातजित् ॥ (रा०व०)

अर्थ-कच्ची इमली-वातविनाशक, कफकारक और पित्तजनक है । पकी इमली-दीपन, रुचिकारी, अत्यन्त उष्ण तथा कफ और वातको जीतेहै ।

अपिच ।

चिंचावृक्षो गुरुश्चोष्णश्चाम्लः पित्तकफप्रदः । रक्तकोपनकारी च वातनाशकरो मतः ॥ चिंचापुष्प तु तुवर स्वाद्वम्ल च रुचिप्रदम् । विशद चाग्निजनक लघु वातकफापहम् ॥ प्रमेहघ्न समुद्दिष्ट पर्णं शोथहर मतम् । रक्तदोषहर चैव फलं चास्य तु कोमलम् ॥ अत्यम्ल ग्राहकं चोष्ण रुच्यं चाग्निप्रदीपकम् । रक्तपित्तस्य पित्तस्य कफरक्तस्य कोपनम् ॥ वातनाशकर प्रोक्त तत्पक्वं वातल मतम् । कफपित्तकरं चैव तत्पक्वं मधुर सरम् ॥ अम्लं हृद्य भेदकं च मलस्तम्भकर मतम् । दीपन रुचिद चोष्णं रूक्षं वस्तिविशोधनम् ॥ व्रणदोषं कफ वातं जन्तूंश्चैव विनाशयेत् । शुष्क चिंचाफलं हृद्यं लघु भ्रान्तिश्रमापहम् ॥ तृषाहर क्लमहर कृमिनाशकर मतम् ॥

अर्थ-इमलीका वृक्ष-भारी, गरम, खट्टा, पित्तजनक, कफकारक, रक्तप्रकोपक और वातविनाशक है। इमलीके फूल-कषेले, स्वादु, अम्ल, रुचिकारक, विशद, अग्निदीपक, हलके तथा वात, कफ और प्रमेहको दूर करे है । इमलीके पत्ते-सूजन और रुधिरविकारको हरनेवाले है । कच्ची इमली-अत्यन्त खट्टी, मलरोधक, गरम, रुचिकारक, अग्निप्रदीपक तथा रक्तपित्त, कफ और रक्तको कुपित करनेवाली है तथा वातनाशक है । तरुण इमली-बादी, और पित्तको उत्पन्न करनेवाली है। पकीहुई इमली-मधुर, सारक, खट्टी, हृदयको हितकारी, दस्तावर, मलस्तम्भक, दीपन, रुचिकारक, गरम, रूखी, वस्तिशोधक तथा व्रणदोष, कफ, वात और कृमिनाश करनेवाली है, सूखी इमली-हृदयको हितकारी, हलकी तथा श्रम, भ्रान्ति, तृषा, क्लम और कृमिका नाश करे है ।

चिचा तु नूतना वातकफस्य कारिणी मता ।
सा वार्षिकी वातपित्तनाशिनी परिकीर्त्तिता ॥

अर्थ–नवीन इमली–वात और कफको उत्पन्न करे है । एक वर्षकी इमली–वात–पित्तनाशक है ।

चिचाक्षारश्चाग्निमांद्यशूलनाशकरो मतः ॥

अर्थ–इमलीका क्षार–मदाग्नि और शूलको निर्मूल करे है ।

पक्वचिचारसश्चाम्लो मधुरो रुचिकृन्मतः ।
व्रणनाशकरश्चैव लेपनाच्छोथपंक्तिहृत ॥

अर्थ–पक्कीइमलीका रस–अम्ल, मधुर, रुचिकारक, व्रणविनाशक तथा इसका लेप करनेसे–सूजन और पक्तिशूल नष्ट होता है ।

चिचासार दाहकफकारकं चातिअम्लकम् ।
वातनाशकरं प्रोक्तं समानशर्करायुतम् ॥
दाहं पित्तं कफं चैव नाशयेदिति कीर्त्तितम् । (नि०र०)

अर्थ–इमलीका सार–दाह और कफकारक, अत्यन्त खट्टा और वातविनाशक है । उसी सारमे बराबरकी खॉड मिला लीजाय तो दाह, पित्त और कफको हरनेवाला होजाता है ।

विवरण । इमलीके वृक्ष बहुत बडे२ ऊँचे और सघन जगल तथा नगरके निकट घर बाहर सर्वत्र स्थानोमे होते हैं, पत्ते चौटलीके समान डालियोमे दोनो ओर बराबर लगे होते हैं, और खट्टे होते हैं, फूल गुच्छोमे लगे होते हैं, रंग पीला २ उनमे कुछ लाल लाल बिन्दुसे पडे होते हैं; फलिये कटोरके समान तिरछी और लम्बी होती हैं, उसको भी कटारा कहते हैं, उन कटारोपर सूखे हुए छिलके होते ह, छिलकोको छीलनेसे गूदा निकलता है, परन्तु उस गूदेके भीतरभी बीज निकलते है उनको चोइये कहते हैं, यह इमली दो प्रकारकी होती है, एक लाल गूदेकी दूसरी सपेद गूदेकी ।

आलुकनामानि ।

आरुक वीरसेन च वीर वीरारुकं तथा ।
तच्च विद्याच्चतुर्जातिपत्रपुष्पादिभेदतः ॥

अर्थ–आरुक, वीरसेन, वीर, वीरारुक (आलूक, मल्ल, भल्लूक भल्ल, रक्तफल) इसकी पत्र और पुष्पादिके भेदसे चार जाति है ।

आलूबुखारा.



संस्कृतभाषामें	अरुक ।
हिन्दीभाषामें	आलुबुखारा ।
मराठीभाषामें	धीरारुक ।
गुजरातीभाषामें	आलु ।
कर्णाटकीभाषामें	आरुक ।
इंग्रेजीभाषामें	चेरिप्लम् । Cherry Plum प्रुन Prune
लटिन्भाषामें	प्रुनस् बूखेयेनासिस् । Prunus bookhariensis
	प्रुनस् कोम्युनीस् । Prunus Communis
फारसीभाषामें	आलुस्या ।
अरबीभाषामें	इज्जास् ।

आलुकगुणाः ।

आरुको ग्राही तुवरो हृद्यः शीतो गुरुः स्मृतः । मलावष्टम्भको ग्राही भेदी चोष्णः कफापहः ॥ पित्तहृत्पाचकश्चाम्लो मधुरश्च मुखप्रियः ॥ मुखस्वच्छकरश्चैव मेहगुल्मार्शनुत्परः ॥ रक्तवातरुजां हन्ता स पक्वो मधुरो गुरुः । कफपित्तकरश्चोष्णो रुच्यो धातुविवर्द्धकः ॥ प्रियश्चैव तथा प्रोक्तो मेहार्शज्वरवातहा ।
(नि० र०)

अर्थ–आलुबुखारा–मलरोधक, कषेला, हृदयको हितकारी, शीतल, भारी, मलस्तम्भक, ग्राही, दस्तावर, गरम तथा कफपित्तनाशक, पाचक, अम्ल, मधुर, मुखप्रिय, मुखको स्वच्छ करनेवाला तथा प्रमेह, गुल्म, बवासीर और रक्तवातका नाश करनेवाला है । पकाहुवा आलुबुखारा–मधुर, भारी, कफकारक, पित्तजनक, गरम, रुचिकारक, धातुवर्द्धक, प्रिय तथा प्रमेह, बवासीर, ज्वर और वातको हरनेवाला है ।

विवरण । आलुबुखारेके वृक्ष प्रायः बलख बुखरे और सिहल-द्वीपमे विशेष होतेहै। एक देशी आलुबुखारा इस देशमे होने लगाहै।

भव्यनामानि ।

भव भव्यं भविष्यं च भावनं वक्रशोधनम् ।
तथा पिच्छलबीज च तच्च लोमफलं स्मृतम् ॥

अर्थ-भव, भव्य, भविष्य, भावन, वक्रशोधन, पिच्छलबीज, लामफल (आविक, सपुटांग, कुसुमोदर)

संस्कृतभाषामे	भव्य ।
हिन्दीभाषामे	ओट ।
वङ्गभाषाम	चालत ।
मराठीभाषामें	आटाच झाड, ओटीचे फळ ।
गुजरातीभाषामे	ओटफल, करमल ।
फारसीभाषामें	चकी ।

लाटन्भाषाम गारसीनिया झेथोचाईमस(Garcinia Zuathochymus

अस्य गुणा ।

भव्यमम्लकटूष्ण च बाल वातकफापहम् ।
पक्व तु मधुराम्लं च रुचिकृच्छ्रमशूलहृत्॥(रा०नि०)

अर्थ-कच्चा भव्यफल-अम्ल, चरपरा, गरम तथा वात और कफ-नाशक है। पक्का भव्यफल-मधुर, अम्ल, रुचिकारक तथा श्रम और शूलनाशक है ।

अन्यच्च ।

भव्य स्वादु कषायाम्ल हृद्यमास्यविशोधनम् ।
तदेव पक्वं दोषघ्नं गुरु ग्राहि विषापहम् ॥ (रा० व०)

अर्थ-भव्यफल-स्वादिष्ठ, कषेला, खट्टा,हृदयको हितकारी और मुखको शुद्ध करनेवाला है । पकाहुआ भव्यफल-त्रिदोषनाशक, भारी, मलरोधक और विषनाशक है ।

विवरण । इसका बडा वृक्ष होताहै, फूल सपेद और पीले रंगके वर्षाऋतुमे आतेहै, उनमे सुगन्धि आतीहै, कलकत्ते और जगन्नाथकी ओर अधिक होताहै, फल ताडके फलके आकारका होताहै, फलके भीतरका गूदा चिकना होताहै । इसको खटाई इत्यादिकी जगह दालमे डालतेहै ।

वृक्षाम्लनामानि।

वृक्षाम्लं तिन्तिडीकं च चुक्रं स्यादम्लवृक्षकम्।

अर्थ-वृक्षाम्ल, तिन्तिडीक, चुक्र, अम्लवृक्षक, (अम्लशाक, चुक्राम्ल, तिन्तिडीफल, शाकाम्ल अम्लपूर, पराम्ल, रक्तपूरक, चूडाम्ल, बीजाम्ल, फलाम्लक, अम्लवृक्ष, अम्मफल, रसाम्ल, श्रेष्ठाम्ल, अत्यम्ल, अम्लबीज, चुक्रफल)

संस्कृतभाषामें	वृक्षाम्ल।
हिन्दीभाषामें	विषाम्बिल। तत्तडीक।
वंगभाषामें	महाद ,(भ)अम्लकुटा,(सार०हु-चुका (भा०दी०) तेतुल, (हु)।
मराठीभाषामें	आमसोल (को०) कोकमसोल।
गुजरातीभाषामें	कोकम।
कर्णाटकीभाषामें	तित्तीडिक।
इङ्ग्रेजीभाषामें	कोकमबटरट्री। Kokum Butts tree
लेटिन्‌भाषामें	ग्यारसीनिआ पर्प्यूरिआ। Garcinia Purpurea
गोवा०	त्रिंडोओ।

अस्य गुणाः।

वृक्षाम्लमाममम्लोष्णं वातघ्नं कफपित्तलम्। पक्कं तु गुरु संग्राहि कटुकं तुवरं लघु॥ अम्लोष्णं रोचनं रूक्षं दीपनं कफवातकृत्। तृष्णार्शोग्रहणीगुल्मशूलहृद्रोगजन्तुजित्।

अर्थ-कच्चा विषांबिल-खट्टा, गरम, वातनाशक, कफकारक और पित्तजनक है। पक्का-विषांबिल भारी, मलरोधक, चरपरा, कषेला, हलका, खट्टा, गरम, रोचन, रूखा, दीपन, कफकारक, वातवर्द्धक तथा तृषा, ववासीर, संग्रहणी, गुल्म, शूल, हृदयरोग और कृमिको दूर करे है।

विवरण। विषांबिलके वृक्ष गोवाकी ओर होतेहैं देखनेमें अत्यन्त सुन्दर और झाडदार होतेहैं, पत्ते लम्बे और चिकने, शीत ऋतुमें आतेहैं और वसन्तऋतुमें फल लगते हैं, फल नारंगीके समान होतेहैं इसके सब अंग खट्टे होतेहैं।

अम्लवेतसनामानि।

स्यादम्लवेतसश्चुक्रः शतवेधी सहस्रजित्।

अर्थ–अम्लवेतस, चुक्र, शतवेधी, सहस्रजित (अम्ल, बोधि, रसाम्ल, आम्लवेतस, वेतसाम्ल, अम्लसार, वेधक, भीम, भेदन, भेदी, राजाम्ल, अम्लभेदक, अम्लांकुश, रक्तसार, फलाम्ल, अम्लनायक, सहस्रवेधी, वीराम्ल, गुल्मकेतु, वराभिध, शंखद्रावी, मांसद्रावा, वराङ्गी, गुल्महा, महाक्षार)

संस्कृतभाषामे	अम्लवेतस।
हिन्दीभाषामे	अमलवेत।
बंगलाभाषामें	थैकड़, अम्लवेतस।
मराठीभाषामे	चुका।
गुजरातीभाषामे	अमलवेत।
इंग्रेजीभाषामे	कामन् सोरेल। Common Soral
लैटिन्भाषामे	आसीडो झेफोलिया। Acido Zeyfolia
फारसीभाषामे	तुर्षक।

अस्य फलगुणाः।

अम्लवेतसमत्यम्लं भेदनं लघुदीपनम्। हृद्रोगशूलगुल्मघ्नं पित्तलं लोमहर्षणम्॥ रूक्षं विण्मद्यदोषघ्नं प्लीहोदावर्त्तनाशनम्। हिक्कानाहारुचिश्वासकासाजीर्णवमिप्रणुत्॥ कफवातामयध्वंसि च्छागमांसद्रवत्वकृत्। चणकाम्लगुणं ज्ञेयं लोहसूचिद्रवत्वकृत्॥ (भा० प्र०)

अर्थ–अमलवेत–अत्यन्त खट्टा, भेदक, हलका, दीपन, पित्तकारक, लोमहर्षक, रूखा तथा हृदयरोग, शूल, गुल्म, मलदोष, मद्यदोष, प्लीहा, उदावर्त्त, हिचकी, आनाह, अरुचि, श्वास, खाँसी, अजीर्ण, वमन, कफ, और वातरोगको हरनेवाला है। बकरेके मांसको गलानेवाला। जैसे चनेके खारसे लोहेकी सुई गलजाती है उसी प्रकार इसके रसमे सुई गेरनेसे गलजातीहै।

अन्यच्च।

अम्लवेतसमत्यम्लं कषायोष्णं च वातजित्।
कफार्शःश्रमगुल्मघ्नमरोचकहरं परम्॥ (रा० नि०)

अर्थ-अमलवेत-अत्यन्त खट्टा, कषेला, गरम, वातनाशक तथा कफ, ववासीर, श्रम, गुल्म और अरुचिको दूर करनेवाला है।

अपिच।

अम्लवेतसमत्यम्लमानाहकफवातजित्।
तदेव सिद्धं दोषघ्न श्रमघ्नं ग्राहि गुर्व्वपि॥(रा० व०)

अर्थ-अमलवेत-अत्यन्त खट्टा, आनाहनाशक, कफ तथा वातविनाशक है। पक्का अमलवेत-त्रिदोषनाशक, श्रमहारी, ग्राही और भारी है।

विवरण। अम्लवेतके वृक्ष मध्यम आकार और दो प्रकारके होतेहैं, एक अम्लवेत, दूसरी वेती, यह छोटे होतेहैं यह पेड मालियोंके बागोंमे बहुत होतेहैं, फूल सफेद रंगके, फल गोल खर्बूजके समान, कच्चा हरा, पकनेपर पीला पडजाताहै और चिकना होताहै।

पनसनामानि।

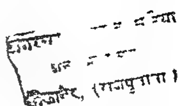


पनसः कंटकिफलः फणसोऽतिबृहत्फलः।
अपुष्पः फलदश्चैव स्थूलकण्टफलस्तथा॥

अर्थ-पनस, कंटकिफल, फणस, अतिबृहत्फल, अपुष्प, फलद, स्थूलकण्टफल, (कण्टाफल, आशय, मुरजफल, पलस, फलस, चम्पकालु, चम्पा, कोष, चम्पालु, मृदङ्गफल, पानस, महासर्ज, फलिन, फलवृक्षक, स्थूल, कण्टीफल, मूलफलद, अपुष्पफलद, पृतफल)

संस्कृतभाषामें	पनस।
हिन्दीभाषामें	कटहर, कटहल, कटैल।
वंगभाषामें	काटाल।

मराठीभाषामे फणस ।
गुजरातीभाषामे पणस ।
कर्णाटकीभाषामे हलसिनहण्णु ।
तैलिङ्गीभाषामे पनसकायि ।
ओं० फगस ।
तामिलीभाषामे वला ।



लैटिन्भाषामे आर्टोकार्पस् इन्टेग्रिफोलिया। Artocorpus Lutergrifolia

अस्य फलगुणा ।

पनसं शीतलं पक्कं स्निग्धं पित्तानिलापहम् । तर्पणं बृंहणं स्वादु मांसल श्लेष्मलं भृशम् ॥ बल्यं शुक्रप्रदं हन्ति रक्तपित्तक्षतक्षयान् । आमं तदेव विष्टम्भि वातलं तुवरं गुरु ॥ दाहकृन्मधुर बल्य कफमेदोविमर्दनम् । पनसोद्भूतबीजानि वृष्याणि मधुराणि च ॥ गुरूणि बद्धवर्चांसि सृष्टमूत्राणि सवदेव् । मज्जा पनसजो वृष्यो वातपित्तकफापहः॥(भा० प्र०)

अर्थ–पक्का कटहर–शीतल, स्निग्ध, पित्तवातविनाशक, तृप्तिकारक, पुष्टिकारक, स्वादिष्ठ, मांसवर्द्धक, कफकारक, बलवर्द्धक, शुक्रजनक तथा रक्तपित्त और क्षतक्षयको क्षय करे है । कच्चा कटहल–विष्टम्भकारक, बादी, कषेला, भारी, दाहकारक, मधुर, बलकारक, कफनाशक और मेदनाशक है । कठेलके बीज–वीर्य्यवर्द्धक, मधुर, भारी, मलको बाँधनेवाले और मूत्रको निकालनेवाले है । कठेलकी मींग–वीर्य्यवर्द्धक और वात पित्त कफका नाश करनेवाली है ।

अन्यच्च ।

कण्टाफलं सुमधुरं बृंहणं गुरु शीतलम् । दुर्ज्जर वातपित्तघ्न श्लेष्मशुक्रबलप्रदम् ॥ कण्टाफलमपक्क तु कषायं स्वादु शीतलम् । कफपित्तहर चैव तत्फलास्थ्यपि तद्गुणम् ॥ तद्बीजं सर्पिषा युक्तं स्निग्ध हृद्य बलप्रदम् । (रा० व०)

अर्थ–पक्का कटहल–मधुर, पुष्टिकारक, भारी, शीतल, दुर्ज्जर, वात और पित्तनाशक तथा कफ, शुक्र और बलवर्द्धक है । कच्चा कठेल और उसके बीज–कषेले, स्वादिष्ठ, शीतल तथा कफ और

पित्तनाशक हैं । इसके बीज घृतके साथ-स्निग्ध, हृदयको हितकारी और बलवर्द्धक हैं ।

अपिच ।

पनसस्य फलं चामं मलावष्टम्भकृन्मतम् । मधुरं दोषलं बल्यं तुवरं गुरु वातलम् ॥ कोमलं तच्च मधुरं गुरु बल्यं कफप्रदम् । मेदोवृद्धिकरं चैव दाहवातप्रपित्तनुत् ॥ तत्पक्वं शीतलं दाहि स्निग्धं वै तृप्तिकारकम् । धातुवृद्धिकरं स्वादु मांसलं च कफप्रदम् ॥ बल्यं पुष्टिकरं जन्तुकारकं दुर्जरं वृषम् । वातं क्षतक्षयं रक्तपित्तं चाशु व्यपोहति ॥ तस्य बीजं तु मधुरं वृष्यं विष्टम्भकं गुरु । तस्य पुष्पं गुरुस्तिक्तं मुखशुद्धिकरं मतम् ॥(नि० र०)

अर्थ-कटहरका कच्चा फल-मलस्तम्भक, मधुर, त्रिदोषकारक, बलवर्द्धक, कषेला, भारी और बादी है । कोमल कठैल-मधुर, भारी, बलवर्द्धक, कफकारक, मेदोवर्द्धक तथा दाह और वातपित्तनाशक है । पक्का कठैल-शीतल, विदाही, स्निग्ध, तृप्तिकारक, धातुवर्द्धक, स्वादिष्ठ, मांसवर्द्धक, कफकारक, बलवर्द्धक, पुष्टिजनक, जन्तुजनक, दुर्जर, वीर्य्यवर्द्धक तथा वात, क्षतक्षय और रक्तपित्तका नाश करे है । इसके बीज-मधुर, वृष्य, विष्टम्भक और भारी हैं । इसके फूल भारी, कडवे और मुखको शुद्ध करनेवाले हैं ।

विवरण । कटहरके वृक्ष बहुत बडे २ होते हैं, प्राय बागोंमे माली लोग बहुत लगा देते हैं, पत्ते गोल और लम्बे होते हैं, फूल आतेही नहीं, कटहल बहुत बडा फल होता है और वह गूलरके समान लकडीको फोडकर निकलता है, फल हरे रंगका निकलता है, ऊपर कडे २ काटे होते है, कटहरपर हेमन्तऋतुके पश्चात् फल लगते हैं वह फल गजभर लम्बा और बहुत मोटा होता है, तोल २० सेर तकका होता है ।

लकुचनामानि ।

लकुचः क्षुद्रपनसो लिकुचो डहुरित्यपि ।

अर्थ-लकुच, क्षुद्रपनस, लिकुच, डहु (लकच, ऐरावत, अम्लक, निकुच, कषायी, दृढवल्कल, कार्श्य, शालशूर, स्थूलस्कन्ध, ग्रन्थिमत्फल)

संस्कृतभाषामें	लकुच ।
हिन्दीभाषामें	बडहर ।

वंगभाषामें डेओ, मादार ।
मराठीभाषामें वटार, फल, क्षुद्रफणस ।
गुजरातीभाषामें लकुच ।
लैटिन्भाषामें आर्टोकार्पसलकुचा । Artocarpus Lacoocha

अस्य गुणाः ।

आमं लकुचमुष्णं च गुरु विष्टम्भकृत्तथा । मधुरं च तथाऽम्लं च दोषत्रितयरक्तकृत् ॥ शुक्राग्निनाशनं चापि नेत्रयोरहितं स्मृतम् । सुपक्वं तत्तु मधुरमम्लं चानिलपित्तहृत् ॥ कफवह्निकरं रुच्यं वृष्यं विष्टम्भकं च तत् । (भा. प्र.)

अर्थ-कच्चा बडहर-गरम, भारी, विष्टम्भकारी, मधुर, खट्टा, त्रिदोषकारक, रुधिरविकारकारक, नेत्रोंकोअहितकारी तथा शुक्र और अग्निनाशक है । पक्का बडहर-मधुर, खट्टा, वातपित्तनाशक, कफकारक, वह्निवर्द्धक, रुचिकारी, वीर्यवर्द्धक और विष्टम्भकारक है ।

अन्यच्च ।

लकुचं गुरु विष्टम्भि स्वाद्वम्लं रक्तपित्तकृत् ।
श्लेष्मकारि समीरघ्नमुष्णं शुक्राग्निनाशनम् ।

अर्थ-बडहर-भारी, विष्टम्भकारी, स्वादिष्ठ, खट्टा, रक्तपित्तकारक, कफकारक, वातनाशक, गरम तथा शुक्र और अग्निनाशक है ।

अपिच ।

लिकुचं गुरु विष्टम्भि त्रिदोषं शुक्रदूषणम् ।

अर्थ-बडहर-गुरु, विष्टम्भकारक, त्रिदोषवर्द्धक और शुक्रको दूषित करे है ।

विवरण । बडहरके वृक्ष-बहुत ऊंचे २ और झाडेदार होते हैं प्रायः बागोंमें बहुत देखनेमें आते है, पत्ते-पाखरके समान और फल-गाठदार गोल २ कैथके बराबर होते है, कच्ची अवस्थामें हरे २ होते हैं । इनको पेडपरसे तोडकर पालमें रखकर पकालेते हैं, इसके भीतर दश वीस सफेद रंगके बीज निकलते है, यहभी कटहरका भेद हैं, इसके फूलको लकुच कहते हैं, यह पीले रंगके होते है ।

तिन्दुकनामानि ।

तिन्दुकोऽनिलसारश्च कालस्कन्धोऽतिमुक्तकः ।

स्फूर्जकः स्फूर्जनः सृष्टः स्यदनो रावणो रवः ॥
कृष्णत्वक्कृष्णसारश्च सुसारश्च विरूपकः ।

अर्थ-तिन्दुक, अनिलसार, कालस्कन्ध, अतिमुक्तक, स्फूर्जक, स्फूर्जन, सृष्ट, स्यन्दन, रावण, रव, कृष्णत्वक्, कृष्णसार, सुसार, विरूपक (शितिसारक, स्फूर्जक, केन्दु, तिन्दु, तिन्दुल, तिन्दुकि, तिन्दुकी, नीलसार, स्वर्ध्यक, रावण, स्यन्दनाह्वय)

संस्कृतभाषामें	तिन्दुक ।
हिन्दीभाषामें	तेंदू ।
बंगभाषामें	गाव, तेंद ।
मराठीभाषामें	टेंभुर्णी, आपन ।
गुजरातीभाषामें	टिंवरवो ।
कर्णाटकीभाषामें	रुधुरु ।
तैलङ्गीभाषामें	तामिक ।
तामिलीभाषामें	तुम्बिक ।
इंग्रेजीभाषामें	ऐबनी । Ebony
लेटिनभाषामें	डायोस्पायीईरोस् एंब्रिओप्टेरिस् । Diospyros Embryopteris
फारसीभाषामें	अबतुसुझाड ।

अस्य गुणाः ।

तिन्दुकस्तुवरस्तिक्तः स्निग्धोष्णो व्रणवातहा। सग्राही दुर्जरो जिह्वाजाड्यकारी जडो गुरुः ॥ आमं चास्य फलं स्निग्धं कषायं लेखनं लघु । सग्राहि शीतलं रूक्षं विबन्धारुचिवातकृत् ॥ पक्वं पित्तप्रमेहास्रह्यश्मघ्नं मधुरं गुरु । स्वादु पाकरसं स्निग्धं दुर्जरं वातनाशकम् ॥

अर्थ-तेंदू-कषेला, कडवा, स्निग्ध, गरम, व्रणनाशक, वातहारक, मलरोधक, अतिकठिनतासे पचनेवाला, जिह्वाको जडताकारक, जड और भारी है। इसका कच्चा फल-स्निग्ध, कषेला, लेखन, हलका, मलरोधक, शीतल, रूखा तथा विबन्ध, अरुचि और वातको करनेवाला है। इसका पका फल-पित्त, प्रमेह, रुधिरविकार और अश्मरीनाशक है। स्वादुपाकी, स्वादु, स्निग्ध, दुर्जर और वातनाशक है।

अन्यच्च ।

अम्लोष्णं लघु संग्राहि स्निग्ध पित्ताग्निवर्द्धनम् ।
आम कषायं संग्राहि तिन्दुकं वातकोपनम् ॥ (सु० सं०)

अर्थ–तेंदू–खट्टा, गरम, हलका, स्निग्ध, पित्त और अग्निवर्द्धक है। कच्चा तेंदू–कषेला, मलरोधक और वातको कुपित करनेवाला है ।

अपिच ।

तिंदुकस्तुवरस्तिक्तः स्निग्धश्चोष्णो मधुः स्मृतः । वायुं व्रणं हरत्यस्य फलं चामं कषायकम् ॥ लेखनं ग्राहकं शीतं स्वादु रूक्षं लघु स्मृतम् । मलस्तम्भारुचिकर वातकृत्तिक्तक मतम्॥ तत्पक्क च गुरु स्वादु मधु स्निग्धं च दुर्जरम् । कफकृन्मेदपित्तघ्नं रक्तरुग्वातनाशकम् ॥ तिन्दुकाष्ठस्य सारस्तु पित्तरोगहरो मतः । (नि० र०)

अर्थ–तेंदु–कषेला, कडवा, स्निग्ध, गरम, मधुर, वात और व्रणनाशक है । इसका कच्चा फल–कषेला, लेखन, ग्राही, शीतल, स्वादु, रूखा, हलका, मलस्तम्भक, अरुचिकारक, वातवर्द्धक और कडवा है । इसका पक्का फल–भारी, मधुर, स्वादु, दुर्जर, कफकारी, प्रमेहहारी तथा पित्त, रक्तरोग और वातनाशक है । तेंदूकी लकडीका सार पित्तरोगनाशक है ।

विवरण । तेंदूके वृक्ष–अत्यन्त ऊंचे २ होते हैं, पत्ते–गोल २ नोकदार सीसमकेसे होते हैं, छाल–काली २ होती है, उसमे सार होता है, इसकी लकडी–स्यानादिकोके बनानेके काममे आती है, इसके भीतरका सार–काला और वजनदार होता है, हिन्दुस्तानी लोग इसको आवनूस कहते हैं, तेंदूके फल–गोल और शोभायमान नींबूके समान हरे हरे होते हैं, पकनेपर पीले पड जाते हैं ।

काकतिन्दुकनामानि ।

तिन्दुकोऽन्यो द्वितीयस्तु जलजो दीर्घपत्रकः ।
काकेंदुकेति विख्यातः कुपीलुः काकपीलुकः ॥

अर्थ–काकेन्दु, जलज, दीर्घपत्रक, काकेन्दुका, कुपीलु, काकपीलुक, (काकन्दु, काकतिन्दु, काकस्फूर्ज, काकाद्, काकबीजक, कुलक)

संस्कृतभाषामें	काकतिन्दुक।
हिन्दीभाषामें	मकरतेंदुआ, काकतेंदु।
बंगभाषामें	केंद, माकडागाच, माकडातेंदु।
मराठीभाषामें	काकटेंभुर्णी।
गुजरातीभाषामें	काकटिंवरवो।
तैलङ्गीभाषामें	तुम्भि, तुमुकि।
तामिलीभाषामें	तुम्बि।

अस्य गुणाः।

स्यात्काकतिन्दुकं तिक्तं शीतलं वातलं लघु।
विपाके कटुकं ग्राहि कफपित्तास्रनाशनम् ॥

अर्थ-मकरतेंदुवा-कडवा, शीतल,वादी,हलका, पचनेमें चरपरा, मलरोधक तथा कफ और रक्तपित्तकफनाशक है।

अन्यच्च।

काकतिन्दुः कषायाम्लो गुरुर्वातविकारनुत्।
पक्वस्तु मधुरः किञ्चित् कफकृत्पित्तवातहृत् ॥

अर्थ-काकतेंदू (मकरतेंदुआ)-कषेला, खट्टा,भारी, वातविकारनाशक। पक्का तेंदू-किञ्चित् मधुर,कफकारक और पित्तवातहारक है।

विवरण। तेंदूके वृक्ष-जंगलमें होते हैं, इसकी छाल काली और छालमें खार होता है, वृक्षके भीतरका सार वजनदार और काले सीसमकी समान होता है, उसको देशीभाषामें आवनूस कहते हैं, फल-गोल नीबूकी समान होते हैं। दूसरा काकतेन्दू कांटेयुक्त होता है, फल-तेंदूके फलसे छोटे होते हैं।

कारस्करनामानि।

कारस्करस्तु किंपाको विषतिन्दुर्विषद्रुमः।
गरद्रुमो रम्यफलः कुपाकः कालकूटकः ॥

अर्थ-कारस्कर,किम्पाक, विषतिन्दु, विषद्रुम, गरद्रुम, रम्यफल, कुपाक, कालकूटक(कुपीलु, मर्कटतिन्दु, कचीर, वर्तुल, चिपिट)





संस्कृतभाषामें	कारस्कार ।
हिन्दीभाषामे	कुचला ।
वंगभाषामे	कुचिले ।
मराठीभाषामे	काजरा, कारस्कार, कुचला ।
गुजरातीभाषामे	झेरकोचलां ।
कर्णाटकीभाषाम	कांजिवार ।
तैलिङ्गभाषामे	मुष्ठिगिजा ।
इंग्रेजीभाषामे	पाईझननट Poison nut
लेटिन्भाषामे	स्ट्रिकनास् नक्सवामिका Strychnos Nux vomica
फारसीभाषामे	इफराकी ।
अरबीभाषामे	कातिलुलकल्क फलूजमाही ।

अस्य गुणा ।

विषतिन्दुर्महातिक्तः कफवातविषापहः ॥

अर्थ–कुचला–अत्यन्त कडवा तथा कफ,वात और विषविनाशकहै।

अपिच ।

कारस्करः कटूष्णश्च तिक्तःकुष्ठविनाशनः ।
वातामयास्रकण्डूतिकफकार्श्यव्रणापहः ॥

अर्थ-कुचला-चरपरा, गरम, कडवा, कुष्ठनाशक तथा वातरोग, रुधिरदोष, कण्डू, कफ, कार्श्य, बवासीर और व्रणको दूर करनेवालाहै.

अन्यच्च।

कचिरः कटुकस्तिक्तो रूक्षोष्णो दीपनो लघुः।
भेदनस्तूदनो हन्ति पाण्डुरोग च कामलाम्॥

अर्थ-कुचिला-चरपरा, कडवा, रूखा, गरम, दीपन, हलका, भेदक, तूदन तथा पाण्डुरोग और कामलारोगको हरनेवाला है।

अपिच।

कारस्करो मदकरस्तुवरो ग्राहकः स्मृतः। कटुस्तिक्तो लघुश्चोष्ण. कुष्ठरक्तविकारहा॥ कण्डू कफ वातरोग व्रण चार्शो ज्वरं जयेत्। अस्य चामफल ग्राहि तुवर वातकृल्लघु॥ शीतल च समुद्दिष्ट तत्पक्व विपद गुरु। पाके च मधुर प्रोक्त कफ वात प्रमेहकम्॥ पित्त रक्तविकार च नाशयेदिति कीर्तितम्। (नि० रा०)

अर्थ-कुचिला-मदकारक, कषेला, मलरोधक, चरपरा, कडवा, हलका, गरम तथा कोढ, रक्तविकार, कण्डू, कफ, वातरोग, घाव, बवासीर और ज्वरको दूर करेहै। इसका कच्चा फल-मलरोधक, कषेला, वातकारक, हलका और शीतल है। इसका पका फल-विषद, भारी, पाकमे मधुर तथा कफ, वायु, प्रमेह पित्त और रक्तदोषनाशक है।

विवरण। कुचलेके वृक्ष-मध्यम आकारके होतेहै, प्रायः वनोमे बहुत देखनेमे आतेहै, पत्ते-पानके समान और फल नारंगीके समान सुन्दर सुन्दर होतेहै, इसके बीजोको कुचला कहते है।

मधूकनामानि।

मधूको मधुवृक्षश्च मधुष्ठीलो मधुस्रवः। गुडपुष्पो रोध्रपुष्पो वानप्रस्थोऽथ माधवः॥ मध्वगस्तीक्ष्णसारश्च डोलाफलो महाद्रुमः। मधूकोन्यो द्वितीयस्तु जलजो दीर्घपत्रक.॥ ह्रस्वपुष्पफलः स्वादुर्गोलिका स्यान्मधूलिका.।

अर्थ-मधूक, मधुवृक्ष, मधुष्ठील, मधुस्रव, गुडपुष्प, रोध्रपुष्प, वानप्रस्थ, माधव, मध्वग, तीक्ष्णसार, डोलाफल, महाद्रुम (मधुक, मधु, मधुवार,

ष्वल,) दूसरा जलमधूक होता है, उसके यह नाम है. जलज, दीर्घपत्रक, ह्रस्वपुष्पफल, स्वादु, गोलिका, मधूलिका, क्षौद्रप्रिय, तंग, कीरेष्ट, गैरिकाक्ष, मंगल्य, मधुपुष्प, गैरिकाख्य)

संस्कृतभाषामे	मधूक, जलमधूक ।
हिन्दीभाषामें	महुआ, जलमहुआ ।
वंगभाषामे	मौल, मउल, मौया, जलमउल ।
मराठीभाषामे	मोहाचा वृक्ष, मोहवृक्ष, जलमोहा ।
गुजरातीभाषामे	महुडो, जलमहुडो ।
कर्णाटकीभाषामे	महूइप्पे, जलमह्वे, तोरेइप्पे, यरडुइप्पे।
तैलिङ्गीभाषामे	इपा, पिन्ना ।
तामिलीभाषामे	कटइल्लुपि ।
इंग्रेजीभाषामे	इलूपाट्री । Elloopatree
लैटिन्भाषामे	बेसिया लाटिफोलिया । Bassia latifolia
फारसीभाषामे	चकां ।

अस्य गुणाः ।

मधूको मधुरः शीतः श्लेष्मलो वीर्य्यदः स्मृतः । पुष्टिकृत्तुवरस्तिक्तः पित्तदाहव्रणश्रमान्॥ कृमिदोष च वात च नाशयेदिति कीर्तितम्। पुष्पं च मधुरं शीतं धातुवृद्धिकरं गुरु ॥ स्निग्ध विकाशि हृद्यं च दाहपित्तमरुत्प्रणुत् । फलमस्य गुरु शीतमहृद्यं शुक्रल मतम्॥ स्निग्ध रसे च पाके च मधुरं धातुवर्द्धकम्। मलावष्टम्भक बल्यं रक्तरुग्वातपित्तकम् ॥ तृषां दाह श्वासकास क्षतयक्ष्मापहं स्मृतम् । तदेव पक्व वलदं पित्तवातविनाशनम् ॥ (नि० र०)

अर्थ–महुवेका वृक्ष–मधुर, शीतल, कफकारक, वीर्य्यवर्द्धक, पुष्टिकारक, कषेला, कडवा तथा पित्त, दाह, व्रण, श्रम, कृमिदोष और वातका नाश करनेवाला है । इसका फूल–मधुर, शीतल, धातुवर्द्धक, भारी, स्निग्ध, विकाशी, हृदयको हितकारी तथा दाह, पित्त और वातका नाश करनेवाला है । इसका फल–भारी, शीतल, हृदयको अहितकारी, शुक्रजनक, स्निग्ध, रस और पाकमे मधुर, धातुवर्द्धक, मलस्तम्भक, बलवर्द्धक, रुधिरदोष, वात, पित्त, तृषा,

दाह, श्वास, खाँसी, क्षतक्षय और राजयक्ष्माको दूर करे है। इसका पत्ता फल-बलवर्द्धक तथा वात और पित्तनाश करे है ।

अस्य त्वग्गुणा ।

मधूक रक्तपित्तघ्नं व्रणशोधनरोपणम् ।

अर्थ-महुयेकी छाल-रक्तपित्तनाशक, व्रणशोधक और व्रणरोपणहै ।

अस्य तैलगुणा ।

मधूकतैलं मधुरं पिच्छलं तुवरं मतम् ।
कफपित्तज्वरं चैव दाहपित्तं च नाशयेत् ।

अर्थ-महुयेका तेल-मधुर, पिच्छल, कषेला तथा कफ, पित्तज्वर, दाह और पित्तका नाश करेहै ।

अस्य सारगुणा ।

मधूकसारो नस्येन भूतादिकफवातजित् ॥

अर्थ-महुयेके सारकी नास लेनेसे-भूतादि बाधा, कफ और वात दूर होताहै ।

जलमधूकगुणा ।

ज्ञेयो जलमधूकस्तु मधुरो व्रणनाशनः ।
वृष्यो वान्तिहरः शीतो बलकारी रसायनः ॥

अर्थ-जलमहुवा-मधुर, व्रणनाशक, वीर्यवर्द्धक, वमननाशक, शीतल, बलवर्द्धक और रसायन है ।

विवरण । महुएके वृक्ष-वनमे और पर्वतोमे बडे २ ऊंचे होतेहैं । पत्ते-बदाम अथवा बडके पत्तोंकी समान होतेहैं । फूलमे शहदके समान गन्ध आतीहै और इसमेंसे शरीफेके समान बीज निकलतेहैं, इसके फलोमे तेल निकलता है ।

पीलुनामानि ।

पीलुः शीतसहः स्रंसी धानी गुडफलस्तथा ।
विरेचनफलः शाखी श्यामः करभवल्लभः ॥

अर्थ-पीलु, शीतसह, स्रसी, धानी, गुडफल, विरेचनफल, शाखी, श्याम, करभवल्लभ, (पीलुक, कलभवल्लभ)

महापीलुनामानि ।

अन्यथैव बृहत्पीलुर्महापीलुर्महाफलः ।

राजपीलुर्महावृक्षो मधुपीलुः षडाह्वयः ।

र्थ–बृहत्पीलु, महापीलु, महाफल, राजपीलु, महावृक्ष, मधुपीलु ।

स्कृतभाषामे	पीलु, बृहत्पीलु ।
हिन्दीभाषामे	पीलु, बडापीलु ।
गभाषामे	पीलुगाछ ।
राठीभाषामे	लघुपीलु, थोरपीलु, किकलेचा वृक्ष ।
जरातीभाषामे	खारीजाल्य, मोटीजाल्य ।
र्णाटकीभाषामे	मिरीयेऊगानि, दोड्डुपीलु ।
लङ्गभाषामे	गोलुगुचेट्टु, पिन्नवरगोण्ड ।
ामिलीभाषामे	कोकु ।
शीभाषामे	झल ।
ग्रेजीभाषामे	मस्टर्डट्री ऑफ स्क्रीप्चर Mustard tree of scripure
ैटिन्भाषामे	सालवेडोरेरापार्सिका Salvadora Persica
	सालवेडोराऑलिओइडिस Salvadora Oleoides
फारसीभाषामे	दरख्तेमिस्वाक् ।
अरबीभाषामे	ईराक ।

पीलुगुणाः ।

पीलुस्तु कटुकः कषायो मधुरोम्लकः । सरः स्वादुर्दीप
। तिक्तस्तीक्ष्णश्च भेदकः ॥ रक्तपित्तकरश्चोष्णो विदाही
ोगुल्मनुत् । स्निग्धः कफ वातरक्तं प्लीहानाहरुजं तथा ॥
् विषबाधां च नाशयेदिति कीर्तितम् ।

र्थ–लघुपीलु–चरपरा, कषेला, मधुर, खट्टा, सर, स्वादिष्ट,
न, कडवा, तीक्ष्ण, दस्तावर, रक्तपित्तकारक, गरम, दाहजनक,
ध तथा बवासीर, गुल्म, कफ, वातरक्त, प्लीहा, आनाह, उदर,
ः विषके दोषोको दूर करैहै ।

बृहत्पीलुगुणा ।

बृहत्पीलुस्तु मधुरो वृष्यः पित्तविषापहः ।
आमहा दीपनो रुच्यस्तैलं चास्य लघु स्मृतम् ॥
कफवातरुज हन्ति चेति पूर्वबुधैः स्मृतम् ॥ (नि० र०)

अर्थ-गृहत्पीलु-मधुर, वीर्य्यवर्द्धक, पित्तनाशक, विषघ्न, आमनाशक, दीपन, रुचिकारी है। इसका तेल-हलका तथा कफ और वातका नाश करनेवाला है।

विवरण। पीलुके वृक्ष दो जातिके होतेहैं, एक छोटा और एक बडा, छोटे पीलूपर बहुत छोटे २ फल आते हैं और पकनेपर लाल पडजाते हैं, दूसरा बडा पीलू होता है, उसके फूल पीले और फल लाल और काले होते हैं।

अक्षरोटनामानि।

अखरोटः पार्वतीयः फलस्नेहो गुडाशयः।
कीरेष्टः कर्परालश्च स्वादुमज्जः पृथक्छदः॥

अर्थ-अखरोट, पार्वतीय, फलस्नेह, गुडाशय, कीरेष्ट, कर्पराल, स्वादुमज्ज, पृथक्छद, (रेखाफल, वृत्तफल, मदनाभफल, अक्षोट, अक्षोटक, अखोट, आखोट, आक्षोट, आक्षोड, कन्दराल और आस्फोटक)

संस्कृतभाषामें	अक्षोट।
हिन्दीभाषामें	अखरोट।
वंगभाषामें	आक्रोट।
मराठीभाषामें	अक्रोड।
गुजरातीभाषामें	अखोड।
कर्णाटकीभाषामें	आखोट।
द्रा०	उव्वकाई।
इंग्रेजीभाषामें	वाल्नट्। Walnut बेलगाम वाल्नट्। Belgaum walnut
लेटिन्भाषामें	एल्युराइटीस् ट्रायलोबा। Aleurites triloba
	एल्युराइटीस् मोलकाना। A. moluccana
फारसीभाषामें	चार्मगज।
अरबीभाषामें	जोझअक्रुमम् मगज, जोझगीर्द गाग्वचार।

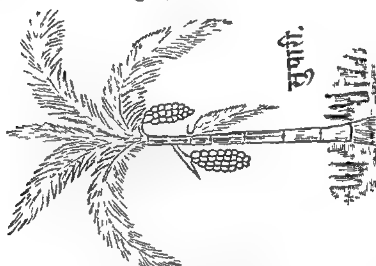
अस्य गुणाः।

अखरोटो मधुरः किञ्चिदम्लः स्निग्धश्च शीतलः। वीर्य्यवृद्धिकरश्चोष्णो रुचिदः कफपित्तकृत्॥ गुरुः प्रियो बलकरः कफकृन्मलबद्धकृत्। वातपित्तं क्षयं वातं हृद्रोगं रक्तदोषकम्॥ रक्तवातं च दाहं च नाशयेदिति कीर्तितम्॥ (नि० र०)

अर्थ-अखरोट-मधुर, किञ्चित् खट्टा, स्निग्ध, शीतल, वीर्यवर्द्धक, गरम, रुचिदायक, कफपित्तकारक, भारी, प्रिय, बलवर्द्धक, कफकारक, मलवर्द्धक तथा वातपित्त, क्षय, वात, हृदयरोग, रुधिरदोष, रक्तवात और दाहको दूर करनेवाला है ।

विवरण । इसके वृक्ष-काबुलकी ओर अधिकतासे होते हैं, फूल-सफेद रंगके छोटे और झुमखोंमें लगते हैं, पत्ते-गोल लम्बे और कुछ २ मोटे होते हैं, फल-गोल और मैनफलकी समान होता है, फलके भीतर मींग निकलती है । वह मींग बदामकी मींगकी समान मधुर होती है ।

गुवाकनामानि ।



गुवाकः खपुरः पूगीपूगश्च क्रमुकोऽस्य तु ।
फलं पूगीफलं प्रोक्तं मुद्वेगं च तदीरितम् ॥

अर्थ-गुवाक, खपुर, पूगी, पूग, क्रमुक, (घोण्टा, गूवाक, कपीतन, क्रमु, क्रमुकी, पूगवृक्ष, दीर्घपादप, दृढवल्कल, वल्कतरु, चिक्कण, अकोट, तन्तुसार, सुरंजन, गोपदल, राजताल, छटाफल, करमट्ट) इसके फलको पूगीफल, मुद्वेग और घोण्टाफल कहते हैं।

संस्कृतभाषामें	पूगीफल ।
हिन्दीभाषामें	सुपारी ।
बंगभाषामें	शुपारी ।
मराठीभाषामें	सुपारी ।
गुजरातीभाषामें	शोपारी ।
कर्णाटकीभाषामें	अडकेमर ।

तैलिङ्गीभाषामें	पाकऊाया ।
औत्क०	गुया ।
इमेंजीभाषामें	बिटलनट् पाम् । Betelnut Palm
लैटिन्भाषामें	एरिका केटेचु । Areca cata chu
फारसीभाषामें	पापिल ।
अरबीभाषामें	फोफिल ।

अस्य गुणाः ।

पूगं गुरु हिमं रूक्षं कषायं कफपित्तजित् । मोहनं दीपनं रुच्य मास्यवैरस्यनाशनम् ॥ आर्द्रं तद्गुर्वभिष्यन्दि वह्निदृष्टिह स्मृतम् । स्विन्नं दोषत्रयच्छेदि दृढमध्यं तदुत्तमम् ॥ (भा०प्र०

अर्थ-सुपारी-भारी, शीतल, रूखी, कषेली, कफपित्तनाशक मोहकारक, दीपन, रुचिकारक और मुखकी विरसताको दूर कर है । कच्ची सुपारी-भारी, अभिष्यन्दी, मन्दाग्निकारक, दृष्टिशक्ति नाशक, औटाकर बनाई हुई सुपारी, जिसका मध्यभाग दृढ होवे वैसी [illegible]री उत्तम और त्रिदोषनाशक है ।

पक्वपूगफलगुणाः ।

पक्वं तु वातलं रूक्षं भेदनं कफनाशनम् ॥

अर्थ-पक्की सुपारी-बादी, रुखी, दस्तावर और कफनाशक है ।

शुष्कफलगुणाः ।

शुष्कमग्निकरं पूगं कषायं मधुरं परम् ।

अर्थ-सूखीसुपारी-अग्निवर्धक, कषेली और मधुर है ।

अपक्वपूगफलगुणाः ।

गुर्वभिष्यन्दि मधुरं तोयधृग्वह्निनाशनम् ॥

अर्थ-कच्ची सुपारी-भारी, क्लेदजनक, मधुर और अग्निनाशक है।

पूगमादौ विषं घोरं द्वितीये भेदि दुर्जरम् ।
तृतीयादिषु पातव्यं सुधातुल्यं रसायनम् ॥

अर्थ-सुपारी-प्रथम अर्थात् कच्ची अवस्थामें विषकी समान अपकारी है । मध्यम अवस्थामें भेदक और दुर्जर है । और शुष्क अवस्थामें अमृतकी समान उपकारी और रसायन है । इस कारण प्रथम और द्वितीय अवस्थाको छोडकर तृतीय अर्थात् सूखी सुपारी खानी चाहिये ।

अपिच ।

पूगीफलं मोहकरं स्वादु रुच्यं कषायकम् । रूक्षं सर च मधुरं गुरु पथ्यं च दीपनम् ॥ किञ्चित्कटु च संप्रोक्तं मुखवैरस्यनाशकम् । वमिं क्लेदं त्रिदोषघ्नं मलं वातं कफं तथा ॥ पित्त दुर्गंधतां चैव नाशयेदिति कीर्तितम् । आर्द्रं पूगीफलं प्रोक्त तुवरं कंठशुद्धिकृत् ॥ अभिष्यन्दि सरं चैव गुरुदृष्ट्याग्निमांद्यकृत्। रक्तदोष मुखमलं पित्तं चाम कफं तथा ॥ आध्मानमुदर चैव नाशयेदिति कीर्त्तितम् । शुष्कं पूगीफलं रुच्यं पाचकं रेचकं तथा॥स्निग्धं च वातलं चैव कण्ठरुग्घ्नं त्रिदोषनुत्। पर्णं विना केवलं तु भक्षितं शोफपाण्डुकृत् ॥ पक्कं चार्द्रं पूगफलं छेदकं च त्रिदोषहृत् । शुष्कं पक्कीकृतं तत्तु स्निग्धं वातकरं मतम् ॥ त्रिदोषनाशकं चैव तद्बालं सर्वदोषहृत् ।

अर्थ-सुपारी साधारण-मोहकारक, स्वादिष्ठ,रुचिजनक, कषेली, रूखी, सारक, मधुर, भारी, पथ्य, दीपन, किञ्चित् चरपरी, मुखकी विरसताको दूर करनेवाली तथा वमन, क्लेद, त्रिदोष, मल, वात, कफ, पित्त और दुर्गंधको दूर करनेवाली है । कच्ची सुपारी-कपेली, कठशोधक, अभिष्यन्दि, सारक, भारी, दृष्टिशक्तिनाशक, मदाग्निकारक तथा रक्तविकार, मुखमल, पित्त,आम, कफ, आध्मान और उदररोगका नाश करेहै । सुखी सुपारी-रुचिकारी, पाचक, रेचक, स्निग्ध, बादी, तथा कंठरोग, और त्रिदोषका नाश करनेवाली है । विना पानके सुपारी खानेसे सूजन और पाण्डुरोग उत्पन्न होताहै । पकाईहुई कच्ची सुपारी-छेदक और त्रिदोषनाशक है । पकाई हुई सूखीसुपारी-स्निग्ध, वातकारक और त्रिदोषनाशक है । कोमल सुपारी-सर्वदोषनाशक है ।

आंध्रोद्भवं पूगफलं पाके तु मधुरं मतम्।किञ्चिदम्लं च तुवरं कफवातविनाशकम् । मुखजाड्यकरं चैव मुनिभिः परिकीर्त्तितम्॥

अर्थ-आन्ध्रदेशमे उत्पन्न होनेवाली सुपारी-पचनेमे मधुर,किञ्चित् अम्ल,कषेली तथा कफवातनाशक और मुखको जडतादायक है ।

चम्पावतीभव पूग पाचनं चाग्निर्दीपनम् ।
वलप्रद रसाढ्यं च कफनाशकरं मतम् ॥

अर्थ-चम्पापुरकी सुपारी-पाचक, अग्निप्रदीपक, (वलवर्द्धक) रसाढ्य और कफनाशक है ।

रोठसज्ञं पूगफलं रुच्यं चाग्निप्रदीपनम् ।
कटुकं तुवर चोष्ण पित्तलं मलरोधकृत् ॥

अर्थ-रोठनामवाली सुपारी-रुचिकारक, अग्निप्रदीपक, चरपरी, कपेली, गरम, पित्तजनक, और मलरोधक है ।

वल्गुलग्रामजं पूगं रुच्यं चाग्निप्रदीपनम् ।
पाचनं च त्रिदोषघ्नं मलस्तम्भाममेदहृत् ॥

अर्थ-वल्गुलग्राममे उत्पन्न होनेवाली सुपारी-रुचिकारी,अग्निप्रदीपक,पाचक,त्रिदोषनाशक तथा मलस्तम्भ,आम और मेदनाशकहै।

चन्दापुरभव पूगं रसे च मधुर मतम् ।
कटुक तुवरं रुच्य स्वादु चाग्निप्रदीपनम् ॥
पाचनं मुनिभि' प्रोक्तं कफनाशकरं मतम् ।

अर्थ-चंदापुरीसुपारी-रसम मधुर, चरपरी, कपेली, रुचिकारी, स्वादु, अग्निप्रदीपक, पाचक और कफनाशक है ।

गुहागरोद्भवं पूगं मधुर तुवरं लघु ।
कटुकं द्रावक चैव पाचक विशद मतम् ॥
मलस्तम्भं तथाऽऽध्मानवातं चैव विनाशयेत् ।

अर्थ-गुहागरीसुपारी-मधुर,कपेली,हलकी,चरपरी,द्रावक,पाचक, विशद तथा मलस्तम्भ, तथा आध्मान और वातनाशक है ।

नैलवद्ग्रामसंभूतं क्रमुकं कठशुद्धिकृत् ।
पाचन मधुर रुच्य सरं कान्तिकर लघु ॥
त्रिदोपनाशक चैव रसाम्ल च निगद्यते ।

अर्थ-नैलवतग्राममे उत्पन्न होनेवाली सुपारी-कंठशोधक,पाचक, मधुर, रुचिकारक, सारक,कान्तिकारक,हलकी, त्रिदोपनाशक और रसाम्ल है ।

पूगवृक्षस्य निर्य्यासो मोहनः शीतलो गुरुः ।
पाके चोष्णः पित्तलश्च पटुश्चाम्लः प्रकीर्तितः ॥
वातनाशकरश्चैव मुनिभिः परिकीर्त्तितः ।

अर्थ-सुपारीके पेडका गोद-मोहजनक, शीतल, भारी, पाकके समय उष्ण, पित्तकारक, चरपरा, खट्टा और वातनाशक है ।

विवरण । सुपारीके वृक्ष-ताड और नारियलकी जातिके लम्बे २ बागोंमें बहुत होतेहैं, इसका वृक्ष खम्मके समान सीधा चलाजाताहै, इसके पत्ते-बडे २ नारियलकेसे होतेहैं, इसके ऊपर, बडे २ बेरके शिरके सदृश फल कुछ लम्बाईलिये गोल २ आतेहैं, उसको छील-नेमें भीतरसे सुपारी निकलतीहै सुपारीकी अनेक जातिहैं, जिहाजी, श्रीवर्द्धनी, मानगचन्दी, और अनेक प्रकारकी होतीहैं ।

तालनामानि ।



तालस्तु लेख्यपत्रः स्यात्तृणराजो महोन्नतः ।

अर्थ-ताल, लेख्यपत्र, तृणराज, महोन्नत, (तल, भूमिपिशाच, दीर्घतरु, द्रुमश्रेष्ठ, द्रुमेश्वर, तालद्रुम, पत्री, दीर्घस्कन्ध, ध्वजद्रुम, तृणराज, मधुरस, मदाढ्य, दीर्घपादप, चिरायु, तरुराज, दीर्घपत्र, गुच्छपत्र, आसवद्रु, करपत्रवान्, दीर्घद्रु, तन्तुनिर्य्यास, तन्तुगर्भ, शतपर्वा)

श्रीतालनामानि।

श्रीतालो मधुतालश्च लक्ष्मीतालो मृदुच्छदः ॥

अर्थ-श्रीताल, मधुताल, लक्ष्मीताल, मृदुच्छद (विशालपत्र, लेखाई, सर्मालेख्यदल, शिरालपत्रक, याम्योद्भूत)

हिन्तालनामानि ।

हिन्तालः स्थूलतालश्च वल्कपत्रो बृहद्दलः ॥

अर्थ-हिन्ताल, स्थूलताल, वल्कपत्र, बृहद्दल (पूगरोट, स्थिरांघ्रिक,

हिमह्रासक, हिन्ताल, स्थिरपत्र, शिरापत्र, अस्थिराग्रिक, गर्भस्रावी, मनिताल, भीषण, बहुकण्टक, अम्लसार, बृहत्ताल)

संस्कृतभाषामें	ताल, श्रीताल, हिन्ताल ।
हिन्दीभाषामें	ताड, श्रीताड, हिन्ताल ।
बंगभाषामें	ताल, श्रीताल, हेताल ।
मराठीभाषामें	ताड, काँटेताड, काळाताड ।
गुजरातीभाषामें	ताड, श्रीताल, हिन्ताल ।
तामिलीभाषामें	पनम ।
इंग्रेजी भाषामें	पालमाईपाम Palmyra palm
लेटिन्भाषामें	बोरेसस प्लेबेलिफोर्मिस Boraissus Flabelliformis
फारसीभाषामें	ताल ।
अरबीभाषामें	तार ।

तालगुणाः ।

तालवृक्षस्तु मधुरः शीतलो मदकृद्गुरुः । पुष्टिकृच्छुक्रकफकृन्मेदकृद्बलकारकः ॥ वृष्यश्च सारकः पित्तदाहशोषविषश्रमान् । विषकुष्ठकृमीरक्तदोषवातांश्च नाशयेत् (नि० र०)

अर्थ- तालवृक्ष-मधुर, शीतल, मदकारक, भारी, पुष्टिकारक, शुक्रजनक, कफकारक, मेदकारक, बलवर्द्धक, वीर्यजनक, सारक तथा पित्त, दाह, शोष, विष, श्रम, विषकुष्ठ, कृमि, रुधिरदोष, और वातका नाश करनेवाला है ।

अस्य फलगुणाः ।

वातघ्नो बृंहणो बल्यः क्रिमिहा कुष्ठनाशनः ।
रक्तपित्तहरः स्वादुस्तालः सप्तगुणान्वितः ॥ (रा० नि०)

अर्थ-ताडका फल-पुष्टिकारक, बलवर्द्धक, क्रिमिनाशक, कुष्ठनाशक, रक्तपित्तहारक और स्वादुरसवाला है ।

अस्यामफलगुणाः ।

आममस्य फलं प्रोक्तं स्निग्धं स्वादु गुरु स्मृतम् । मलावरोधकं बल्यं शीतलं धातुवर्द्धकम् ॥ वृष्यं तृप्तिकरं मांसकफोत्पत्तिकरं स्मृतम् । वातं श्वासं रक्तपित्तं व्रणं दाहं क्षतं तथा ॥ पित्तक्षयं रक्तदोषं नाशयेदिति कीर्तितम् ॥

अर्थ-ताडका कच्चाफल-स्निग्ध, स्वादिष्ट, भारी, मलरोधक, बलकारक, शीतल, धातुवर्द्धक, वीर्य्यजनक, तृप्तिकारक, मांसवर्द्धक, कफकारक तथा वात, श्वास, रक्तपित्त, व्रण, दाह, क्षत, पित्त, क्षय और रुधिरके दोषोको दूर करनेवाला है ।

अस्य पक्वफलगुणा ।

पक्वं तालफलं पित्तरक्तश्लेष्मविवर्द्धनम् ।
दुर्जरं बहुमूत्रं च तन्द्राभिष्यन्दशुक्रदम् ॥

अर्थ-ताडका पक्का फल-रक्तपित्तकारक, कफकारक, कठिनतासे पचनेवाला, बहुमूत्रजनक, तन्द्राको उत्पन्न करनेवाला, अभिष्यन्दि और शुक्रदायक है ।

अस्यार्द्रफलबीजगुणाः ।

आर्द्रं तु फलबीजं च मूत्रलं शीतलं स्मृतम् ।
रसे पाके च मधुरं कफकृद्वातपित्तहृत् ॥

अर्थ-ताडके कच्चे फलके बीज-मूत्रजनक, शीतल, रस और पाकमें मधुर, कफकारक और वातपित्तहारक है ।

अस्य फलमज्जागुणा ।

तालमज्जा तु तरुणा किंचिन्मदकरी लघुः ।
श्लेष्मला वातपित्तघ्ना सस्नेहा मधुरा सरा ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-तरुण ताडकी मींग-किञ्चित् मदकारक, हलकी, कफकारक, वातपित्तनाशक, स्नेहयुक्त, मधुर और सारक है ।

तालफलोद्भवजलगुणा ।

तालाम्बु पित्तजिच्छुक्रस्तन्यवृद्धिकरं गुरु (रा व)

अर्थ-ताडके फलका जल-पित्तनाशक, शुक्रवर्द्धक, भारी और स्तनोंमें दूधको उत्पन्न करनेवाला है ।

तालमण्डिकागुणा ।

श्लेष्मदोषकरी वृष्या वातला श्लेष्मवर्द्धिनी ।
कासहृल्लासविध्वंसकरणी तालमण्डिका ॥ (आ० सं०)

अर्थ-ताडी-कफकारक, वीर्य्यवर्द्धक, बादी, श्लेष्मवर्द्धक, कासनाशक और उबकाईको दूर करनेवाली है ।

अथ पक्व।

तालजं तरुणं तोयमतीव मदकृन्मतम्।
अम्लीभूत तदा तु स्यात्पित्तकृद्वातदोषहृत् ॥

अर्थ-नवीन ताडी-अत्यन्त मदकारक है और खट्टी होनेपर पित्तकारक और वातहारक है।

तालप्रलम्बगुणा।

तथा तालप्रलम्ब च रूक्ष क्षतरुजापहम्।

अर्थ-तालप्रलम्ब-रूक्ष और क्षतरोगनाशक है।

तालपञ्जरगुणा।

तालवृक्षस्य शीर्षस्थः पजरो धातुवर्द्धनः।
वातपित्तहरश्चैव वस्तिशुद्धिकरः पर॰ ॥

अर्थ-ताडके मस्तकका पजर-धातुवर्द्धक, वातपित्तनाशक और बस्तिशोधक है।

तालवृन्तवायुगुणा।

तालवृन्तभवो वातस्त्रिदोषशमनो लघुः। (राजवल्लभ)

अर्थ-ताडके पखेकी पवन-त्रिदोषनाशक और हलकी है।

तालमूलगुणा।

तन्मूलं तु भवेत्स्वादु पाके च रक्तपित्तहम्।

अर्थ-ताडकी जड-स्वादिष्ठ, पचनेमे स्वादिष्ठ और रक्तपित्त-नाशक है।

श्रीतालगुणा।

श्रीतालो मधुरोऽत्यतमीषच्चैव कषायकः।
पित्तजित्कफकारी च वातमीषत्प्रकोपयेत् ॥

अर्थ-श्रीताल-अत्यन्त मधुर, किञ्चित्कषेला, पित्तनाशक, कफकारक और कुछ २ वातको कुपित करनेवाला है।

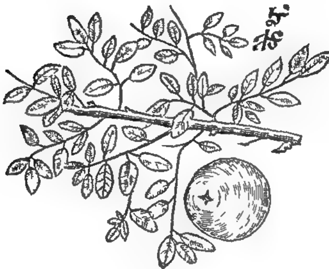
विवरण-ताडके बडे २ वृक्ष होते है, पत्ते बडे बडे लम्बे खजूरकी अनीकी समान कटीले लम्बे चौडे चार चार फूटके होते है, इनके पखे आदि कितनेक पदार्थ बनाये जाते है। पहिले यहां ताडके पत्तोपर समस्त ग्रन्थ लिखे जाते थे, ताडकी नर और नारी यह दो जाति है नर जातिके वृक्षमे फल नही आते और नारीके वृक्षमे फल लगते है। नरमें शाखा नही होती। वृक्षके रसको ताडी कहते है।

हिन्तालगुणाः ।

हिन्तालो मधुराम्लश्च कफकृत्पित्तदाहनुत् ।
श्रमतृष्णापहारी च शिशिरो वातदोषनुत् ॥ (रा. नि.)

अर्थ-हिन्ताल-मधुर, अम्ल, कफकारी, पित्तनाशक, दाहनाशक, शीतल, वातविकारविनाशक, तथा श्रम और तृषाको दूर करे है ।

कपित्थनामानि ।



कपित्थस्तु दधित्थः स्यात्तथा पुष्पफलः स्मृतः ।
कपिप्रियो दधिफलस्तथा दन्तशठोऽपि च ॥

अर्थ-कपित्थ, दधित्थ, पुष्पफल, कपिप्रिय, दधिफल, दन्तशठ (ग्राही, मन्मथ, पुष्पफल, कागित्थ, कावित्थ, देवपादाढ्य, मालूर, मङ्गल्य, नीलमल्लिका, ग्राहिफल, चिरपाकी, ग्रन्थिफल, कुचफल, कपीष्ट, गन्धफल, दन्तफल, करभवल्लभ, काठिन्यफल, करञ्जफलक, अक्षसस्य)

संस्कृतभाषामे कपित्थ ।
हिंदीभाषामे कैथ ।
वङ्गभाषामें कयेद्वाछ, कतवेल ।
मराठीभाषाम कॅवठ, कविठ ।
गुजरातीभाषामे कोट, काठ, कोठवडी ।
कर्णाटकीभाषामे वेललु ।
तैलिङ्गीभाषामे एलागाकाय ।

इंग्रेजीभाषामे वुडएपल एलिफंटएपल। Wood apple Elephant apple
लैटिन्भाषामे फेरोनिया एलिफेंटिनम् । Feronia Elephantum

कपित्थफलसाधारणगुणाः ।

कपित्थमम्लं मधुरं कषायं विशदं गुरु ।
कासातिसारहृद्रोगच्छर्दिकफरुजापहम् ॥ (आ० सं०)

अर्थ-कैथ-खट्टा, मधुर, कषेला, विशद, भारी तथा खाँसी, अतिसार, हृदयरोग, वमन और कफरोगको दूर करे है ।

अपक्वकपित्थफलगुणाः ।

कपित्थमामं कण्ठघ्नं विषघ्नं ग्राहि वातलम् ।
मधुराम्लकषायत्वात्सौगन्ध्याच्च रुचिप्रदम् (रा०)

अर्थ-कच्चाकैथ-कण्ठनाशक, विषनाशक, मलरोधक, वातवर्द्धक। यह मधुर, अम्ल, कषाय और सुगंधयुक्त होनेके कारण रुचिकारक है ।

पक्वकपित्थफलगुणाः ।

तदेव पक्वं दोषघ्नं गुरु ग्राहि विषापहम् । (राज०)

अर्थ-पक्का कैथ-त्रिदोषनाशक, भारी, ग्राही और विषविनाशकहै।

अन्यच्च ।

कपित्थं मधुरं चाम्लं तुवरं ग्राहि शीतलम् । वृष्यं तिक्तं पित्तवातव्रणनाशकरं मतम् ॥ फलमामं कपित्थस्य ग्राहि चोष्णं च रूक्षकम् । लघ्वम्लं तुवरं चैव लेखनं वातपित्तकृत् ॥ जिह्वाजाड्यकरं रुच्यं विषस्वरकफप्रणुत् । तत्पक्वं रुचिदं चाम्लं कषायं ग्राहि माधुरम् ॥ कण्ठशुद्धिकरं शीतं गुरु वृष्यं च दुर्जरम् । श्वासं क्षयं रक्तरुजं वान्तिं वातं श्रमं तथा ॥ हिध्मानं च विषं ग्लानिं तृषां दोषत्रयं तथा। हिक्कां कासं नाशयति बीजं च हृद्व्यथापहम्॥ शीर्षव्यथां विषं चैव विसर्पं चैव नाशयेत्। बीजतैलं च तुवरं ग्राहकं स्वादु पित्तनुत् ॥ आखोर्विषं कफं चैव हिक्कां वान्तिं च नाशयेत्। विषनाशकरं पुष्पं पर्णं वान्त्यतिसारनुत् ॥ हिक्कां नाशयतीत्येव प्रोक्तं पूर्वैर्महर्षिभिः । (नि० र०)

अर्थ-कपित्थ-मधुर, खट्टा, कषेला, ग्राही, शीतल, वीर्यवर्द्धक, कडवा तथा पित्त और वातका नाश करे है । इसका कच्चा फल-ग्राही, गरम, रूखा, हलका, खट्टा, कषेला, लेखन तथा वात, पित्त और जिह्वाको जडताकारक है, रुचिजनक तथा विष, स्वर और कफका नाश करे है, इसका पक्का फल-रुचिकारक, खट्टा, कषेला, ग्राही,मधुर, कंठशोधक, शीतल, भारी, वीर्यवर्द्धक, और दुर्जर है, तथा श्वास, क्षय, रक्तदोष, वमन, वायु, श्रम, विष, ग्लानि, तृषा, त्रिदोष, हुचकी, और खाँसीको दूर करे है, इसके बीज हृदयरोग, मस्तकशूल, विष, विसर्प इनको दूर करेहै, इसके बीजोंका तेल कषेला, ग्राही, स्वादु, पित्तनाशक तथा मूँसेका विष, कफ, हुचकी और वमनको दूर करे है, इसके फूल-विषनाशक है । इसके पत्ते-वमन, अतिसार और हुचकीको दूर करे है ।

विवरण । इसके वृक्ष सर्व हिन्दोस्थानमे पाये जाते है, फल बेलसे छोटे और सफेद रंगके लगते है, पत्ते छोटे और चिकने होतेहै, फूल छोटे और सफेद रंगके आते है, वर्षाऋतुमे इसकी कली खिलती है, फिर क्रमसे फलके आकार परणवती है, शीतऋतुमे फल पकजाते है, कैथमे एक आश्चर्यकारक गुण है कि, कोई हाथी कैथको खालेवे उस हाथीके पेटमे कैथका सार भाग अर्थात् गूदा रह जायगा और गूदेरहित अखण्डित कैथ मलके साथ निकल आवेगा ।

कर्मरंगनामानि ।



कारुकः कर्म्मरंगः स्याच्छिरालस्तु शुकप्रियः ।

अर्थ-कारुक, कर्म्मरंग, शिराल, शुकप्रिय (वृहद्दल, रुजाकर, कर्मार, कर्म्मरक, पीतफल, कर्म्मर, मुद्रर, धाराफल, कर्म्मारक)

संस्कृतभाषामें	कर्म्मरङ्ग ।
हिन्दीभाषामें	कमरख ।
बंगभाषामें	कामराङ्गा ।
मराठीभाषामें	कर्मरे ।
गुजरातीभाषामें	कमरकखाटां मीठावेछे ।
इंग्रेजीभाषामें	करंबोला । Carambola
लैटिन्भाषामें	एवरहोया करबोला । Averrhoa Carambola

अस्य गुणाः ।

कर्मरङ्गं तु तीक्ष्णोष्णं कटुपाकेऽम्लपित्तकृत् ॥ (रा० व०)

अर्थ-कमरख-तीक्ष्ण, गरम, पचनेमें चरपरी, खट्टी और पित्तकारक है।

अन्यच्च ।

कर्म्मारस्य फलं चामं ग्राह्यम्लं वातनाशकम् ।
उष्णं पित्तकरं चैव तत्पक्वं मधुरं मतम् ॥
अम्लं च बलपुष्टीनां रुचेश्चैव तु वर्द्धकम् । (नि० र०)

अर्थ-कच्ची कमरख-मलरोधक, खट्टी, वातनाशक, गरम और पित्तकारक है पक्की कमरख मधुर, खट्टी तथा बल, पुष्टि और रुचि-वर्द्धक है ।

विवरण। कमरखका वृक्ष अत्यन्त सुन्दर होताहै, पत्ते हरफारेवडीकी समान होते हैं, फल चार पांच धारवाले होते है, फल कच्ची अवस्थामें हरे और पकनेपर पीले पड जाते है ।

लवलीफलनामानि ।



सुगंधमूला लवली पाण्डुः कोमलवल्कला ।

अर्थ-सुगंधमूला, लवली, पाण्डु, कोमलवल्कला (घना, स्निग्धा, स्कन्धफला)

संस्कृतभाषामें	लवली ।

हिन्दीभाषामें	हरफारेवडी ।
वंगभाषामें	नोयाड, नोयाल, लोंओयाड ।
मराठीभाषामें	काथआंवळे, रायआंवळे, रानआंवळे ।
गुजरातीभाषामें	खाटीआंवली ।
लैटिन्भाषामें	साईकाडिस्टिका । Ciceod sticha

अस्य गुणाः।

लवलीफलमस्रार्शःकफपित्तहर गुरु ।
विशद रोचनं रूक्षं स्वाद्वम्लं तुवर रसे ॥(भा० प्र०

अर्थ-हरफारेवडी-रुधिरविकार, ववासीर और कफपित्तनाशक है। भारी, विशद, रोचन, रूखी, स्वादिष्ठ,खट्टी और कषेली है।

अन्यच्च।

कषायं कफपित्तघ्नं किञ्चित्तिक्तं रुचिप्रदम् ।
हृद्यं सुगन्धि विशदं लवलीफलमुच्यते ॥ (सु० सं०)

अर्थ-हरफारेवडी-कफपित्तनाशक, किंचितकडवी, रुचिदायक, हृदयको हितकारी, सुगंधि और विशद है।

अपिच।

रायामलं तु तुवर,रुचिप्रद प्रिय चाम्लम्। तिक्तं रूक्षं विशदंस्वादु सुगंधिवातलं चोक्तम्॥स्वादिष्ठं लघु चोक्त कफपित्तहर च वातपित्तघ्नम्।मूत्राश्मर्य्यर्शघ्नमृपिभिश्चोक्तं च पूर्वजैर्ग्रन्थे॥ (नि र)

अर्थ-हरफारेवडी-कषेली,रुचिकारक, प्रिय, खट्टी, कडवी,रूखी, विशद, स्वादु, सुगंधित, वातवर्द्धक, स्वादिष्ठ, हलकी तथा कफ, पित्त, वातपित्त, मूत्राश्मरी और अर्शरोगनाशक है।

विवरण। हरफारेवडीका वृक्ष अत्यन्त सुंदर होता है,पत्ते कसोंदीकी समान होतेहैं। फल गूलरके सदृश शाखाओंमेंसे निकलतेहैं।

प्राचीनामलकनामानि।

प्राचीनामलकं लोके पानीयामलकं स्मृतम् ।

अर्थ-प्राचीन आमलकको-लोकमें पानीयामलक कहतेहैं(वारीवदर)

संस्कृतभाषामें प्राचीनामलक ।

हिन्दीभाषामें	पानीआमला ।
वंगभाषामें	पानीआमला ।
मराठीभाषामें	पाणआंवले ।
गुजरातीभाषामें	पाणिआंवला ।
इंग्रेजीभाषामें	फ्लाकुरर्षा काटाफाक्टा।Flacourtia Cataphracta
	फ्लारोमोंचिआई ।F Romontchu

अस्य गुणाः ।

प्राचीनामलकं दोषत्रयजिज्ज्वरघाति च ॥(भा०प्र०)

अर्थ-पानीआमला-त्रिदोषनाशक और ज्वरको दूर करे है ।

अपिच ।

पानीयामलकं ग्राहि स्वाद्वम्लं मुखशोधनम् ।(रा०नि०)

अर्थ-पानीआमला-मलरोधक,स्वादु, अम्ल और मुखशोधक है।

अन्यच्च ।

"प्राचीनामलकं रुच्यं स्निग्धं गुरु गरापहम् ।
वातघ्नं पित्तकफहृद्गुष्णं गुरु समीरजित्" ॥(म०पा०)

अर्थ-पानीआमला-रुचिकारी, स्निग्ध, भारी, विषनाशक, वात, पित्त और कफको दूर करनेवाला, भारी और वातहारीहै ।

अपिच ।

पर्णामलकं मधुरं रुचिप्रदं गुरु चोष्णम् ।
विषत्रिदोषमशनं कफतृष्णावातहं प्रोक्तम् ॥
सुतरां तदेव पक्वं कफपित्तकरं विशेषतश्चोक्तम्॥ नि०र०)

अर्थ-पानीआमला-मधुर, रुचिदायक, भारी, गरम, त्रिदोषनाशक, तथा कफ, तृषा और वातका नाश करनेवाला है। वही पकाहुवा विशेषकरके कफ और पित्तकारक है ।

विवरण-पानीआमलेके वृक्ष जलाशयकेसमीप होते है,इस मे काटे भी होते है पत्ते लम्बे और फल लाल लाल बेरके समान कठिया होतेहैं।

करमर्दकनामानि ।

करमर्दो वने क्षुद्राकराम्लः करमर्द्दक· ।
तस्माल्लघुफला या तु सा ज्ञेया करमर्दिका ॥

अर्थ-करमर्द, वनेक्षुद्रा, कराम्ल, करमर्दक, (कृष्णपाकफल, अविघ्न, सुषेण, करामर्द, कृष्णपाक, पाकफल, कृष्णफल, पाककृष्ण, फल, कृष्णफलपाक, पाककृष्ण, फलकृष्ण, वनालय, वनालक, कराम्बुक, कणचूक, बोल, वश, करमर्दी, कराम्लक, पाणिमर्द, कण्टकी, अविघ्न, सुषुप्प, दृढकण्टक, जातिपुष्प, क्षीरफल, डिम्-डिम, गुच्छी, क्षीरी, बहुदल) इससे छोटीको करमर्दिका कहतेहैं।



संस्कृतभाषामें	करमर्दक।
हिन्दीभाषामें	करोंदा, करोंदी।
वंगभाषामें	करम्चा।
मराठीभाषामें	गोंडाकरवंदा, कडूकरवदा।
गुजरातीभाषामें	करमदी करमदां।
कर्णाटकीभाषामें	काराजग।
तैलिङ्गीभाषामें	वाका, पारिकचेट्टु।
इंग्रेजीभाषामें	जास्मिन्फ्लावर्डकेरिसा। Jasmine floweredcarisa
लैटिन्भाषामें	केरिसा कोरंदास। Carissa Corundas

अस्या गुणाः।

करमर्दद्वयं त्वाममम्लं गुरु तृषाहरम्।
उष्णं रुचिकरं प्रोक्तं रक्तपित्तकफप्रदम्॥
तत्पक्वं मधुरं रुच्यं लघुपित्तसमीरजित्।(भा० प्र०

अर्थ-दोनोंप्रकारके करोंदे कच्चे-खट्टे, भारी, तृषानाशक, गरम, रुचिकारक तथा रक्तपित्त और कफकारक हैं। वही पके-मधुर, रुचिकारी, हलके तथा पित्त और वातको जीते हैं।

अन्यच्च।

करमर्द पिपासाघ्नमम्लं रुच्य च पित्तकृत्। (रा० व०)

अर्थ-करोंदा-पिपासानाशक, खट्टा, रुचिकारी और पित्तहारीहै।

अपिच।

करमर्दफलं चामं तिक्तं चाग्निप्रदीपकम्। गुरुपित्तकरं ग्राहि चाम्लमुष्णं रुचिप्रदम्॥ रक्तपित्तं कफं चैव वर्द्धयेत्तृड्विनाशकम्॥ तत्पक्वं मधुरं रुच्यं लघु शीतं च पित्तहम्। रक्तपित्तं त्रिदोषं च विषं वातं च नाशयेत्। तच्छुष्कं पक्वसदृशं गुणज्ञेयं विचक्षणैः॥ अत्यम्लस्य गुणाश्चैव ज्ञेया आमकराम्लवत्॥

अर्थ-दोनोंप्रकारके कच्चे करोंदे-कडवे, अग्निप्रदीपक, भारी, पित्तकारी, मलरोधक, खट्टे, गरम, रुचिदायक, रक्तपित्तकारक, कफजनक और तृषानाशकहैं। वही दोनों पकेहुये मधुर, रुचिकारी, हलके, शीतल तथा पित्त, रक्तपित्त, त्रिदोष, विष और वात विनाशक हैं। सूखे करोंदेके गुण पके करोंदेकी समान जानने और अम्लकरोंदेके गुण कच्चेकी समान जानने।

अन्यच्च।

करमर्दफलं चार्द्रमम्लं पित्तकफप्रदम्।
भेदनं चोष्णवीर्यं च वातप्रशमनं गुरु॥
पक्वं वृक्षेऽल्पपित्ते च तन्मूलं कृमिनुत्सरम्। (शो० नि०)

अर्थ-कच्चाकरोंदा-खट्टा, पित्तजनक, कफकारक, भेदक, उष्णवीर्य, वातनिवारक और भारी है। पक्का करोंदा-पित्तनाशकहै। इसकी जड कृमिको हरनेवाली और सारक है।

विवरण-करोंदेके वृक्ष बागोंमे बहुतहैं, फूल सफेद और सुगन्धित जुहीके समान आतेहैं, फलोंके गुच्छे बेरोंके समान लगतेहैं, परन्तु वे दो जातिके होतेहैं, एक सफेद नोकोपर लालीलिये अत्यन्त मनोहर होते हैं, दूसरे कच्चे हरे आधे लाल और पकनेपर काले पडजाते हैं।

बदरीनामानि

वदरी दृढबीजा च कण्टकी सुफलापि च ।
नखी व्याघ्रनखी घोण्टा कोली गुडफलापि च ।

अर्थ-वदरी, दृढबीजा, कण्टकी, सुफला, नखी, व्याघ्रनखी, घोण्टा, (कोली, गुडफला, कोला, कोली, कोलि, कुवली)

बदरीफलनामानि ।

फल तु बदरं कोल सौवीरं फेनिलं कुहम् ।
कर्कन्धुः कोलिकुवलं पिच्छला बदरीच्छदा ।

अर्थ-बद्र, कोल, सौवीर, फेनिल, कुह, कर्कन्धु, कोलि, कुवल, पिच्छला, बदरीच्छदा, (सौवीरक, बालेष्ट, फलशैशिर, वृत्तफल, घोण्टा गोपघोण्टा, हस्तिकोलि, गोपघोण्टी, शृगालकोलि, वादिर, गूढफल, दृढबीज, वृत्तफल, कण्टकी, वक्रकण्टक, सुरस, सुफल, स्वच्छ, कर्कन्धू, बद्र, कोली, कोला, कुवली, स्वादुफला, गृध्रनखी, कुवल (:), पिच्छिल, स्वादुफल, कुलक, कोकिल, अजामिया, उभयकण्टक)

संस्कृतभाषामे	बदरी, बदर, कर्कन्धू, कोल, सौवीर, हस्तिकोलि,
हिन्दीभाषामे	बेरीका पेड, बेर, छोटेबेर, पैमदी बडे बेर ।
वंगभाषामे	कुलगाछ, कुलफल, वडकुलगाछ, वरुई, शियाकुल ।
मराठीभाषामे	बोरीच झाड, बोर, रायबोर, लघुबोर ।
गुजरातीभाषामे	मोटीबोरडी, नानीबोरडी ।
कर्णाटकीभाषामे	येरनु ।
तैलिङ्गीभाषामे	रेगुचेट्टु, रेंघ ।
औत्क०	कुडि ।
तामिलीभाषामे	रैयान्ति ।
इंग्रेजीभाषामे	जुजब । Jujob
लेटिन्भाषामे	झिझिफस् जुजुबा । Zizyphusfujujba
फारसीभाषामे	कुनार ।
अरबीभाषामें	सीदरनवंक ।

बदरलक्षणानि गुणाश्च ।

पच्यमान सुमधुरं सौवीर बदरं महत् । सौवीरं बदरं शीतं भेदन गुरु शुक्रलम् ॥ वृंहण पित्तदाहास्रक्षयतृष्णानिवार-

अर्थ-दोनोंप्रकारके करोंदे कच्चे-खट्टे, भारी, तृषानाशक, गरम, रुचिकारक तथा रक्तपित्त और कफकारक है। वही पके-मधुर, रुचिकारी, हलके तथा पित्त और वातको जीते है।

अन्यच्च।

करमर्द्द पिपासाघ्नमम्ल रुच्यं च पित्तकृत्। (रा० व०)

अर्थ-करोंदा-पिपासानाशक,खट्टा, रुचिकारी और पित्तहारीहै।

अपिच।

करमर्द्दफल चामं तिक्तं चाग्निप्रदीपकम् । गुरुपित्तकरं ग्राहि चाम्लमुष्ण रुचिप्रदम् ॥ रक्तपित्त कफं चैव वर्द्धयेत्तृड्विनाशकम् ॥ तत्पक्व मधुर रुच्यं लघु शीत च पित्तहम् । रक्तपित्त त्रिदोप च विषवात च नाशयेत् । तच्छुष्कं पक्वसदृशं गुणज्ञेय विचक्षणैः॥ अत्यम्लस्य गुणाश्चैव ज्ञेया आमकराम्लवत् ॥

अर्थ-दोनोंप्रकारके कच्चे करोंदे-कडवे, अग्निप्रदीपक, भारी,पित्तकारी, मलरोधक, खट्टे, गरम, रुचिदायक,रक्तपित्तकारक,कफजनक और तृषानाशकहै।वही दोनो पकेहुये मधुर,रुचिकारी,हलके,शीतल तथा पित्त, रक्तपित्त, त्रिदोष, विष और वात विनाशक है । सूखे करोंदेके गुण पके करोंदेकी समान जानने और अम्लकरोंदेके गुण कच्चेकी समान जानने ।

अन्यच्च।

करमर्द्दफल चार्द्रमम्ल पित्तकफप्रदम् ।
भेदनं चोष्णवीर्य्यं च वातप्रशमन गुरु ॥
पक्व वृक्केऽल्पपित्ते च तन्मूल कृमिनुत्सरम् ।(शो०नि०)

अर्थ-कच्चाकरोंदा-खट्टा,पित्तजनक,कफकारक, भेदक,उष्णवीर्य्य, वातनिवारक और भारी है । पक्का करोंदा-पित्तनाशकहै । इसकी जड कृमिको हरनेवाली और सारक है ।

विवरण-करोंदेके वृक्ष बागोंमे बहुतहै,फूल सफेद और सुगन्धित जुहीके समान आतेहै, फलोंके गुच्छे बेरोंके समान लगतेहै, परन्तु वे दो जातिके होतेहै,एक सफेद नोकोंपर लालीलिये अत्यन्त मनोहर होते है,दूसरे कच्चे हरे आधे लाल और पकनेपर काले पडजाते है ।

बदरीनामानि

बदरी दृढबीजा च कण्टकी सुफलापि च ।
नखी व्याघ्रनखी घोण्टा कोली गुडफलापि च ।

अर्थ-बदरी, दृढबीजा, कण्टकी, सुफला, नखी, व्याघ्रनखी, घोण्टा, (कोली, गुडफला, कोला, कोली, कोलि, कुवली)

बदरीफलनामानि ।

फलं तु बदरं कोल सौवीरं फेनिलं कुहम् ।
कर्कन्धुः कोलिकुवलं पिच्छला बदरीच्छदा ।

अर्थ-बदर, कोल, सौवीर, फेनिल, कुह, कर्कन्धु, कोलि, कुवल, पिच्छला, बदरीच्छदा, (सौवीरक, बालेष्ट, फलशैशिर, वृत्तफल, घोण्टा गोपघोण्टा, हस्तिकोलि, गोपघोण्टी, शृगालकोलि, वादिर, गूढफल, दृढबीज, वृत्तफल, कण्टकी, वक्रकण्टक, सुरस, सुफल, स्वच्छ, कर्कन्धू, बदर, कोली, कोला, कुवली, स्वादुफला, गृध्रनखी, कुवल (:), पिच्छिल, स्वादुफल, कुलक, कोकिल, अजामिया, उभयकण्टक)

संस्कृतभाषामे	बदरी, बदर, कर्कन्धू, कोल, सौवीर, हस्तिकोलि,
हिन्दीभाषामे	बेरीका पेड, बेर, छोटेबेर, पैमदी बडे बेर ।
बंगभाषामे	कुलगाछ, कुलफल, बडकुलगाछ, बरुई, शियाकुल ।
मराठीभाषामे	बोरीच झाड, बोर, रायबोर, लघुबोर ।
गुजरातीभाषामे	मोटीबोरडी, नानीबोरडी ।
कर्णाटकीभाषामे	येरतु ।
तैलिङ्गीभाषामे	रेगुचेट्टु, रंघ ।
औत्क०	कुडि ।
तामिलीभाषामे	रेथान्ति ।
इंग्रेजीभाषामे	जुजब । Jujob
लैटिन्भाषामे	झिझिफस् जुजुबा । Zizyphusfajujb ।
फारसीभाषामे	कुनार ।
अरबीभाषामे	सीदरनबंक ।

बदरलक्षणानि गुणाश्च ।

पच्यमानं सुमधुरं सौवीर बदरं महत् । सौवीरं बदर शीत भेदन गुरु शुक्रलम् ॥ बृंहण पित्तदाहास्रक्षयतृष्णानिवार-

णम् । सौवीराल्लघु संपक्व मधुरं कोलमुच्यते ॥ कोल तु बदरं दाहि रुच्यमुष्णं च वातहृत् । कफपित्तकर चापि गुरु-सारकमीरितम् ॥ कर्कन्धूःक्षुद्रबदर कथित पूर्वसूरिभिः । अम्ल स्यात्क्षुद्रबदर कषाय मधुरमनाक् ॥ स्निग्धं गुरु च तिक्त च वातपित्तापह स्मृतम् । शुष्कं भेद्यग्निकृत्सर्वं लघु तृष्णाक्लमास्रजित् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-बडा और पककर मीठा पडगयाहो ऐसे बेरको सौवीर कहतेहैं, सौवीरबेर-शीतल, भेदक, भारी, शुक्रजनक, पुष्टिकारक तथा पित्त, दाह, रुधिरविकार, क्षय और तृषानिवारक है। सौवीरसे छोटे अर्थात सामान्य बेर और पककर मीठे होगये हो ऐसे बेरोको कोल कहते है । कोलबेर-दाहजनक, रुचिकारक, गरम, वातनाशक, कफपित्तकारक, भारी और सारक है । छोटे बेरोको कर्कन्धू कहते है । कर्कन्धू-खट्टे, कपेले, मधुर, स्निग्ध, भारी, कडवे और वातपित्तनाशक है । सर्व प्रकारके सूखेहुए बेर-भेदक, अग्निजनक, हलके तथा तृषा, क्लम और रुधिरदोषोको दूर करते है ।

अन्यच्च।

कर्कन्धू· कोलबदरमाम पित्तकफावहम् । पक्व पित्तानिलहर स्निग्ध समधुरं सरम्॥ तच्छुष्कं कफवातघ्न न च पित्ते विरुध्यते । पुराणं तृट्प्रशमन श्रमघ्न दीपन लघु ॥ (राजवल्लभ)

अर्थ-छोटे, बडे और सामान्य कच्चे बेर-पित्त और कफवर्द्धक है वही पक्के-पित्तवातनाशक, स्निग्ध, मधुर और सारक है, वही सूखे-कफ और वातनाशक है और पित्तवर्द्धक नही है और वही पुराने-तृषा और श्रमनाशक है, अग्निप्रदीपक और लघुपाकी है ।

अन्यच्च

अपक्व श्लेष्माण विरचयति वात वितनुते ततो मध्यावस्थ किमपि मधुराम्ल पवनहृत् । सुपक्व पित्तघ्नं श्रममदवमिच्छेदि बलद सर तृष्णाजित्तद्वहबदरमश्नन्ति धनिनः ॥

अर्थ-अपक्व अर्थात कच्चे बेर-कफकारक और वातनिवारक है। मध्यम अवस्थाके बेर-किञ्चित मधुर, अम्ल और वातनाशक है। पक्के बेर-पित्तनाशक, श्रमहारक, वमननिवारक, बलवर्द्धक, सारक और तृषानाशक है ।

अपिच ।

बदरी शीतला रूक्षा तिक्ता पित्तकफापहा । फलमस्यास्तु मधुरं तुवरं चाम्लमीरितम् ॥ तच्च पक्वं तु मधुरमम्लमुष्णकफप्रदम् । ग्राहकं लघु रुच्यं च वाय्वतीसारशोषहृत् ॥ रक्तश्रमहरं प्रोक्तं पंडितैश्चरकादिभिः ॥ (नि० र०)

अर्थ-बेरीका वृक्ष-शीतल, रूक्ष, कडवा तथा पित्त और कफनाशक है । इसका कच्चा फल-मधुर, कषेला और खट्टा है । इसका पक्का फल-मधुर, खट्टा, गरम, कफकारक, मलरोधक, हलका, रुचिकारी तथा वात, अतिसार, शोष, रुधिरदोष और श्रमको हरनेवाला है ।

हस्तिकोलिगुणाः ।

गजकोलं दुर्जरं स्याच्छीतं स्वादु गुरु स्मृतम् ।
ग्राहकं लेखनं स्निग्धं पौष्टिकं मलवर्द्धकृत् ॥
आध्मानकारकं चैव पित्तवातविनाशनम् ॥ (रा०नि०)

अर्थ-हस्तिकोलिबेर-दुर्जर, शीतल, स्वादु, भारी, ग्राही, लेखन, स्निध, पुष्टिकारक, मलवर्द्धक, आध्मानकारक तथा पित्त और वातनाशक है ।

राजबदरगुणाः ।

राजबदरः सुमधुरः शिशिरो दाहार्तिपित्तवातहरः ।
वृष्यश्च वीर्यवृद्धिं कुरुते शोपश्रमं हरते ॥

अर्थ-राजबेर- मधुर, शीतल, दाहनाशक, पित्तनाशक, वातनिवारक, वीर्य्यवर्द्धक, वृष्य तथा शोष और श्रमनाशक है ।

भूबदरीगुणाः ।

भूबदरी मधुराम्ला कफवातविकारहारिणी पथ्या ।
दीपनपाचनकर्त्री किञ्चित्पित्तास्रकारिणी रुच्या ॥ (नि०र०)

अर्थ-झडबेर-मधुर, अम्ल, कफनाशक, वातविकारनिवारक, पथ्य, दीपन, पाचक, रुचिकारक और किंचित् रक्तपित्तको कुपित करेहै ।

बदरीफलमज्जागुणाः ।

बदरीफलमज्जा तु तुवरा मधुरा मता ।

शुक्रदा बलदा वृष्या कासश्वासतृपापहा ।
वातघ्नी छर्द्दिदाहघ्नी पित्तहा मुनिभिर्मता ॥ (नि० र०

अर्थ–बेरकी मींग–कषेली, मधुर, शुक्रजनक,बलवर्द्धक, वीर्य्यव र्द्धक तथा खाँसी,श्वास,तृषा,वात,वमन, दाह और पित्तकोदूर करेहै

बदरस्य पत्रगुणा ।

बदरस्य पत्रलेपो ज्वरदाहविनाशनः ।
त्वचा विस्फोटशमनी बीज नेत्रामयापहम् । (रा०नि०

अर्थ–बेरोके पत्तोका लेप–ज्वर और दाहका नाश करे है । बेरी की छाल फोडेको दूर करनेवाली है। बेरीके बीज अर्थात् गुठलीका मींग नेत्ररोगनिवारक है। बेरीके वृक्ष सर्व हिन्दोस्थानेके स्थानोंमे प्रसिद्ध है ।

विवरण–बेरके वृक्ष अनेक जातिके होतेंह और यह सब स्थानोमें होतेहैं, इसके वृक्ष काँटेदार मध्यम भागके होतेहैं, पत्ते छोटे और गोल कुछेक लम्बाई लिये होतेहैं, फूल मौरहीमे छोटे २ सफेद रंगके होते-है, फल अपनी२ जातिके आतेंहे, छोटे,बडे,लम्बे,गोल, पैवन्दी,कठा, पौंडा और रामपुरी इत्यादिएक झरबेर कहलातेहैं उनके क्षुप छोटे २पृथ्वीपर फैले हुए होतेंहै उनका एक वनही है जिसका नाम बदरि-काश्रमहै, और दिल्लीसे आगे बढकर जो देखा दो कोसोतक बेरकेही वृक्ष देखनेमे आये, उनही क्षुपोको काटकाटकर और उनके पत्ते झाड झाडकर बडे बडे ऊँच ढेर लगादेतेहै, उनको पाला कहतेहैं, इसीसे गाय भैसोकी उदरपूर्णता होतीहै उन क्षुपोपर छोटे२ बेरभी लगतेहै प्रथम हरे होतेहै, मध्यम अवस्थामे पीले और अतसमय लाल पड-कर सुकड जातेंहे ।

विकङ्कतनामानि ।

विकङ्कत· स्रुवावृक्षो ग्रन्थिलः स्वादुकण्टकः ।
स एव यज्ञवृक्षश्च कण्टकी व्याघ्रपादपि ॥

अर्थ–विकङ्कत,स्रुवावृक्ष, ग्रन्थिल, स्वादुकण्टक,यज्ञवृक्ष, कण्टकी, व्याघ्रपाद(विकङ्कत,वृतिकर, कण्टकारी,स्रुवावृक्ष, किंकिरी,स्रग्दारु, कण्टपत्र, स्रुग्दारु, मधुपर्णी,कण्टपाद, बहुफल, गोपघोण्टा, स्रुवद्रुम, मृदुफल, दन्तकाष्ठ, यज्ञिय, ब्रह्मपादप, पिण्डार, हिमक, पूतकिंकि-णी, पृथुबीज, सुधावृक्ष, पादरोहिण, रावण)

संस्कृतभाषामे	विकंकत ।
हिन्दीभाषामे	कंटाई, किंकिणी, वंज ।
वंगभाषामे	वईंचिगाछ ।
मराठीभाषामे	बेहडयाचे फळ ।
गुजरातीभाषामे	विकलो ।
कर्णाटकीभाषामे	हलुमाणिका मालेगु ।
तैलिङ्गीभाषामे	कानवेगुचेट्टु ।
औत्क०	बइचकुडि ।
पं०	कुकोधा ।
लैटिन्भाषामे	सिलस्ट्रस् मोंटेना । Selstrus Montana

अस्य गुणाः ।

विकंकतोऽम्लमधुरः पाकेऽतिमधुरो लघुः ।
दीपनः कामलास्रघ्नः पाचनः पित्तनाशनः (रा०नि०)

अर्थ–कंटाई–अम्ल, मधुर, पाकमेभी मधुर, लघु, दीपन, कामलानाशक, रुधिरदोषनिवारक, पाचक और पित्तनाशक है ।

अन्यच्च ।

विकंकतो मधुश्चाम्लः कषायः शीतलो जयेत् । बलासपित्तशोफास्रविकारान् कामलां तथा ॥ पाककालेऽतिमधुरो दाहं शोषं च नाशयेत् । दीपनः पाचनश्चैव व्रणलूतार्शनाशनः॥

अर्थ–विकंकत–मधुर, अम्ल, कषेला, शीतल तथा कफ, पित्त, शोफ, रुधिरविकार और कामलारोगको दूर करे है । पचनेमेभी मधुर, दीपन, पाचक और दाह, शोष, व्रण, लूता और बवासीरको दूर करे है ।

अपि च ।

विकंकतफलं पक्वं मधुरं सर्वदोषजित् । (भावप्रकाश)

अर्थ–विकंकतका पक्का फल–मधुर और सर्वदोषनाशक है ।

अन्यच्च ।

विकंकतं च नात्युष्णं दोषघ्नं नेत्रपुष्पजित् ।

अर्थ–विकंकत–अत्यन्तगरम नहीं है, त्रिदोषनाशक और आंखके फूलेको दूर करे है । विकंकतके वृक्ष–जंगल और वनोंमे होते हैं, वृक्षपै कांटे होते हैं ।

विवरण। कटाईके वृक्ष जंगल और वनोमे बहुत बडे २ होते हैं उनके पत्ते छोटे २ और डालियोमे कांटे होते हैं, इसमे बहुत अच्छे २ बेरके समान गोल २ फल लगते हैं।

प्रियालनामानि।

प्रियालस्तु खरस्कन्धश्चारो बहुलवल्कलः॥
राजादनस्तापसेष्टः सन्नकद्रुर्धनुष्पटः॥

अर्थ-प्रियाल, खरस्कन्ध, चार, बहुलवल्कल, राजादन, तापसेष्ट, सन्नकद्रु, धनुष्पट (अवट्ट, ललन, चारक, बहुवल्कल, सन्नद्रु, तापसप्रिय, स्नेहबीज, उपवट, मोक्षवीर्य्य, द्रुसल्लक, राजातन, वियल, धनु, पट, हसन्नक, धनु पट, पियालक)

संस्कृतभाषामे	प्रियाल, पिआल।
हिन्दीभाषामे	चिरोंजी।
वंगभाषामे	चिरोंजी पियाल।
मराठीभाषामे	चारोळी (को०) चारवृक्षबीज।
गुजरातीभाषामे	चारोली।
कर्णाटकीभाषामे	चारबीज।
तैलिङ्गीभाषामे	सारुपपु।
तामिलीभाषामे	काटमरा।
औ०	चरु।
पं०	चिरोली।

लैटिन्भाषामें बुकेननिया लेट्रिफोलिआ। Buchanania Latiforlia

फारसीभाषामे	बुकलेखाजा।
अरबीभाषामे	हबुस्समाना।

अस्य गुणाः।

चारोली मधुरा वृष्या चाम्ला गुर्वी सरा मता। मलस्तम्भकरी स्निग्धा शीतला धातुवर्धिनी ॥ कफकृद्दुर्जरा बल्या प्रियावातविनाशिनी। पित्तदाहज्वरतृषाक्षतरुग्रक्तदोषनुत् ॥ क्षतक्षयं नाशयति तन्मज्जा मधुरा मता॥ वृष्या च दाहपित्तघ्नी तत्तैलं मधुरं गुरु ॥ किञ्चिदुष्णं कफकरं पित्तवातविनाशनम् ॥ (नि० र०)

अर्थ-चिरौंजी-मधुर, वृष्य, भारी, अम्ल, सारक, मलस्तम्भक, स्निग्ध, शीतल, धातुवर्द्धक, कफकारक,दुर्जर, बलवर्द्धक,प्रिय,वातविनाशक तथा पित्त, दाह, ज्वर, तृषा, क्षतरोग, रक्तविकार और क्षतक्षयका नाश करेहै। चिरोंजीकी मीग-मधुर, वीर्य्यवर्द्धक,दाह और पित्तनाशक है। चिरोंजीका तेल-मधुर, भारी, किञ्चित् गरम, कफकारक, और पित्तवातको दूर करेहै।

अपिच।

प्रियालं मधुरं स्निग्धं बृंहणं वातपित्तजित्। (रा०नि०)

अर्थ-चिरोंजी-मधुर,स्निग्ध,पुष्टिकारकऔर वातपित्तनाशक है।

प्रियालमूलादिगुणाः।

चारमूलं तु तुवरं रक्तरुक्कफपित्तहम्। चारमज्जा तु मधुरा वृष्या स्निग्धा च शीतला॥ मलस्तम्भकरी चामवर्द्धका दुर्जरा मता। हृद्या च शुक्रला वातपित्तनाशकरी मता॥ (नि० र०)

अर्थ-चिरोंजीके वृक्षकी जड-कषेली तथा रुधिरविकार, कफ और पित्तनाशक है। चिरोंजीवृक्षकी मीग-मधुर, वीर्य्यवर्द्धक, स्निग्ध, शीतल, मलस्तम्भक, आमवर्द्धक, दुर्जर,हृदयको हितकारी, शुक्रजनक और वातपित्तनाशक है।

विवरण-चिरोंजीके वृक्ष कोकण आदि देशमे अधिक होते है,पत्ते छोटे२नोकदार खरखरे होते है, पत्ते छोटे २ बेरके समान नीलेरंगके होते है उसमेसे जो मीग निकलती है, उसको चिरोंजी कहते है।

राजादननामानि।

राजादनः फलाध्यक्षो राजन्या क्षीरिकापि च।

अर्थ-राजादन, फलाध्यक्ष, राजन्या,क्षीरिका (राजफल, कपीष्ट, क्षीरवृक्ष, नृपद्रुम, निम्बबीज, मधुफल,माधवोद्भव,क्षीरी,गुच्छफल, धूपेष्ट, राजवल्लभ, श्रीफल, दृढस्कन्ध, क्षीरशुक्ल)

संस्कृतभाषामे	राजादन।
हिन्दीभाषामे	खिन्नी, खिरनी।
वंगभाषामे	क्षीरिणी, राजणी।
मराठीभाषामे	खिरणी।
गुजरातीभाषामे	रायण।

कर्णाटकीभाषामे रोणे मारिले ।
तामिलीभाषामे पल्ल ।
इंग्रेजीभाषामे ओबट्युसलीव्ह माईमुसोप्स । Obtuse leaved Mimusops
लेटिन्भाषामे माईमुसोप्स हेग्झान्ड्रा । Mimusops hegzrandra

अस्य गुणाः ।

क्षीरी रुक्षाफल शीत स्निग्ध गुरु वलप्रदम् ।
तृष्णामूर्च्छामदभ्रान्तिक्षयदोषत्रयास्रजित् ॥ (म०नि०)

अर्थ-खिरनी-शीतल, स्निग्ध, भारी, बलवर्द्धक तथा तृषा, मूर्च्छा, मद, भ्रांति, क्षय और त्रिदोषको दूर करे हैं ।

अपिच ।

राजादनी तु मधुरा पित्तहृद्गुरु तर्पणी ।
वृष्या स्थौल्यकरी हृद्या सुस्निग्धा मेहनाशकृत् ॥ (रा० व०)

अर्थ-खिरनी-मधुर, पित्तनाशक, भारी, तृप्तिकारक, वीर्य्यजनक, देहको स्थूल करनेवाली, हृदयको हितकारी, स्निग्ध और प्रमेहको हरनेवाली है ।

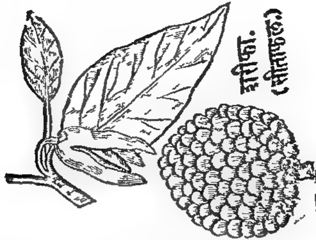
अन्यच्च ।

राजादनं हिम स्निग्ध कषायं मधुर गुरुः स्वाद्वम्लपाक सग्राहि वृष्य विष्टम्भि बृंहणम् ॥ रोचन मांसलं हन्ति दोषत्रयमदभ्रमान् । मूर्च्छामोहतृषादाह रक्तपित्तक्षतक्षयान् ॥

अर्थ-खिरनी-शीतल, स्निग्ध, कषेली, मधुर, भारी, स्वादु, अम्लपाकी, मलरोधक, वीर्य्यवर्द्धक, विष्टम्भजनक, पुष्टिकारक, रोचन, मांसवर्द्धक तथा त्रिदोष, मद, भ्रम, मूर्च्छा, मोह, तृषा, दाह, रक्तपित्त और क्षतक्षयको दूर करे हैं ।

विवरण । खिरनीके वृक्ष बडे २ ऊंचे होतेहैं, पत्ते नेवाडीके समान होतेहैं, इसमें शीतऋतुमे मोर आताहै और वसन्त ऋतुमे फल आतेहैं, फल निंबोलीके समान गुच्छे लगतेहैं, वे कच्ची अवस्थामे हरे और पकनेपर पीले पडजातेहैं और कोई २ पकनेपरभी हरे ही रहतेहैं, इनको हरियल कहतेहैं, उन फलोमेसे दूधभी निकलता है ।

आतृप्यनामानि।



सीताफलं गंडगात्र वैदेहीवल्लभ तथा।
कृष्णबीजं चाग्रिमाख्यमातृप्यं बहुबीजकम् ॥

अर्थ-सीताफल, गंडगात्र, वैदेहविल्लभ, कृष्णबीज, अग्रिमाख्य, आतृप्य, बहुबीजक।

संस्कृतभाषामे	आतृप्य।
हिन्दीभाषामें	सरीफा, सीताफल।
वङ्गभाषामें	आता।
मराठीभाषामे	सीताफळ।
तैलिङ्गीभाषामे	सीताफल।
इग्रेजीभाषामे	कस्टर्डएपल Custerd ypple
ल०	एनोना स्केमोसा Annona Sqamosa
फारसीभाषामे	काज।
अरबीभाषामे	सरीफा।

अस्य गुणा।

तर्पणं रक्तकृत्स्वादु शीतलं हृद्यमेव च।
बलदं मांसकृद्दाहरक्तपित्तमरुत्प्रणुत् ॥

अर्थ-सीताफल-तृप्तिजनक,रक्तवर्द्धक, स्वादिष्ट, शीतल,हृदयको हितकारी, बलवर्द्धक, मांसवर्द्धक तथा दाह, रक्तपित्त और वातविनाशक है।

अन्यच्च।

सीताफल तु मधुरं शीतं हृद्य बलप्रदम्।

वातलं कफकृत्स्वादु पुष्टिकृत्पित्तनाशनम् ॥ (नि० र०

अर्थ-सीताफल(सरीफा)मधुर,शीतल,हृदयको हितकारी, बलवर्द्धक,वातकारक,कफकारक,स्वादिष्ठ,पुष्टिकारक और पित्तनाशक है।

विवरण। सरीफेके वृक्ष प्रायः सर्व भारतवर्षके प्रदेशोंमे पाये जातेहैं। व्यवहार-फल,पत्र,छाल,मूलादिसके बीजोको पीसकर शिर धोनेसे शिरके कीडे अर्थात् जूँ दूर होतेहैं।

लवनीफलनामानि।



रामस्य च फल रामफलं रामाह्वय तथा।

रक्तत्वच च वासन्तं कृष्णबीज मृदूफलम् ॥

अर्थ-रामफल, रामाह्वय, रक्तत्वच, वासन्त, कृष्णबीज, मृदूफल-(लवनी, ग्रीष्मजा, अग्रिमा,)

संस्कृतभाषामे	लवनी।
हिन्दीभाषामे	लवनी, एनोना।
वंगभाषामे	नोना, लोना।
मराठीभाषामे	रामफळ।
गुजरातीभाषामे	रामफल।
तैलिङ्गीभाषामे	रामफल।
इंग्रेजीभाषामे	नेटेड्कस्टर्डएपल। Netted custard apple
लैटिन्भाषामे	एनोनारेटिक्युलेटा। A nonareteculata
गोवा०	अनोना।

अस्य गुणाः।

रामफलं कषायं च स्वाद्वम्लं कफकारकम्।

वातलं चास्तृड्दाहपित्तश्रमक्षुधापहम् ॥ (नि० र०)

अर्थ-रामफल-कषला, स्वादिष्ठ, खट्टा, कफकारक, बादी तथा रुधिरविकार, तृषा, दाह, पित्त, श्रम और क्षुधाको हरनेवाला है।

अननासनामानि।

अनन्नास.





अनंनासं पारवती चाम कौतुकसंज्ञकम्।

अर्थ-अनंनास, पारवती, आम, कौतुकसंज्ञक।

संस्कृतभाषामें	अननास, कौतुलसंज्ञक।
हिन्दीभाषामें	अनंनास।
मराठीभाषामें	अननस।
गुजरातीभाषामें	अनंनास।
इंग्रेजीभाषामें	पाईनएपल। Pine apple
लैटिन्भाषामें	अननासा सेटिवा। Annassa sative

अस्य गुणाः।

अनंनासमपक्वं तु रुच्यं हृद्य गुरुर्मतम्। कफपित्तकरं चैव प्रोक्तं चान्नमरोचकम्॥ श्रमं क्लमं नाशयति तत्पक्वं स्वादु पित्तहृत्। रसातपविकारं च नाशयेदिति कीर्तितम्॥ (नि० र०)

अर्थ-कच्चा अनंनास-रुचिकारक,हृदयको हितकारी, भारी, कफपित्तकारक,अन्नरोचक तथा श्रम और क्लमनाशक है पक्का अनंनास-स्वादिष्ठ, पित्तकारक तथा रसविकार और आतपविकारको दूर करैहै।

विवरण। अननास पहिले हिन्दोस्थानमें नहीं होताथा क्योंकि

सिवाय निघण्टुरत्नाकर (जोकि, थोडे दिनोसेही बना है) के और किसी प्राचीन निघण्टुमे नही देखजाता।

निकोचकनामानि।

निकोचकं चारुफलं सकोच जलगोजकम् ।
पिस्तं मुकूलकं ज्ञेय दन्तीफलसमाकृति ॥

अर्थ-निकोचक, चारुफल, सकोच, जलगोजक, पिस्त, मुकूलक, दन्तीफलसमाकृति।

संस्कृतभाषामे	निकोचक।
हिन्दीभाषामे	पिस्ता।
बंगभाषामे	पेस्तागाछ।
मराठीभाषामे	पिस्ते।
गुजरातीभाषामे	पिस्ता।
इंग्रेजभाषामे	पिस्टेशिओनट्। Pistachio nut
लैटिन्भाषामे	पिस्टेशियाह्वेरा। Pistasiavera
फारसीभाषामे	पिस्तां।
अरबीभाषामे	फिस्तक।

अस्य गुणा।

निकोचक गुरु स्निग्ध वृष्योष्णं धातुवर्द्धकम् ।
रक्तप्रसादन स्वादु बल्य पित्तकर मतम् ॥
तिक्तं सर च कफहृद्वातगुल्मत्रिदोषजित् । (नि०र०)

अर्थ-पिस्ते-भारी, स्निग्ध, वीर्य्यवर्द्धक, गरम, धातुवर्द्धक, रक्तको शुद्ध करनेवाले, स्वादु,बलवर्द्धक, पित्तकारक, कडवे,सारक, कफनाशक तथा वात, गुल्म, और त्रिदोषको दूर करे है।

अजीरनामानि।



अंजीरं मञ्जुलं ज्ञेयं काकोदुम्बरिकाफलम् ।

अर्थ–अंजीर, मंजुल, काकोदुम्बरिकाफल ।

संस्कृतभाषामें	अंजीर ।
हिन्दीभाषामें	अंजीर ।
वंगभाषामें	आँजीर, पेयारा ।
मराठीभाषामें	अंजीर ।
गुजरातीभाषामें	अंजरि ।
कर्णाटकीभाषामें	मेडियंड्डु ।
इंग्रेजीभाषामें	फिग्ट्री । Fig tree
लॉटिन्भाषामें	फाईकस्केरिका । Ficus carica
फारसीभाषामें	तीन ।

अस्य गुणाः ।

अंजीरकफलमतीव सुशीतलं च सद्यो निवारयति शोणितपित्तमुग्रम् । पथ्यं विशेषमपि पित्तशिरोविकारे नासाप्रवृत्तरुधिरे च विशेषतस्तु ॥

अर्थ–अंजीर–अत्यन्तशीतल, तत्काल रक्तपित्तनाशक, पित्त और शिरोरोगमें विशेषकरके पथ्य है तथा नाकसे रुधिरके गिरनेको बंद करे है ।

अन्यच्च ।

अंजीरकं गुरु हिमं मधुरं च वातपित्तास्रदोषहरणं करणं रुचीनाम् । सुस्वादु पाकरसयोर्गुरु शीतलं च श्लेष्मामवातकरमस्रविकारहारि ॥

अर्थ–अजीर–भारी, शीतल, मधुर, वातनाशक, रक्तपित्तहारी, रुचिकारी, स्वादु, पचनेमेंभी स्वादु तथा श्लेष्म और आमवातकारक है और रुधिरविकारको दूर करेहै ।

परूषकनामानि ।

परूषकं गिरिपीलु रोषणं नागदलोपमम् ।

अर्थ–परूषक, गिरिपीलु, रोषण, नागदलोपम (परावत, नीलचर्म्म, नीलमण्डल, परापर, अल्पास्थि, धन्वनच्छद, मृदुफल)



फालसा

संस्कृतभाषामें	परूषक ।
हिन्दीभाषामें	फालसा, परुषा ।
बंगभाषामें	फलसा ।
मराठीभाषामें	फाळसा ।
कर्णाटकीभाषामें	षेट्टहा, दागालि ।
तैलिङ्गीभाषामें	पुटिकी ।
गुजरातीभाषामें	ध्रामण ।
इंग्रेजीभाषामें	एश्याटिक् ग्रेविया । Asiatic Grewia
लैटिन्भाषामें	ग्रेविया एश्याटिका । Grewia asi
फारसीभाषामें	पालसा ।
अरबीभाषामें	फालसा ।

अस्य फलगुणाः ।

परूपमम्लं कटुकं कफार्तिजिद्वातापहं तत्फलमामपित्तकृत् ।
सोष्णं च पक्वं मधुरं रुचिप्रदं पित्तापहं शोफहरं च तर्पणम् ॥

अर्थ-कच्चा फालसा-कटु, कफनाशक, खट्टा, वातनाशक और पित्तको उत्पन्न करे है । पका फालसा-मधुर, रुचिदायक, पित्तनाशक, शोफनाशक और तृप्तिकारक है ।

अन्यच्च ।

परूपकं कषायाम्लमामपित्तकरं लघु ।

तत्पक्कं मधुरं पाके शीत विष्टम्भि बृंहणम् ॥
हृद्यं तृट्पित्तदाहास्रज्वरक्षयसमीरहृत् । (भा० प्र०)

अर्थ-कच्चा फालसा-कषेला, खट्टा, पित्तकारक, हलका। पक्का फालसा-मधुर, शीतल, विष्टम्भकारक, पुष्टिजनक, हृदयको हित कारी तथा तृषा, पित्त, दाह, रुधिरविकार, ज्वर, क्षय और वातको दूर करे है।

अन्यच्च।

परूषकं कषायाम्लं लघूष्णं स्वादु पित्तलम्। रूक्षं मारुतजित् पक्कं स्वाद्वम्लं शुक्रलं हिमम् ॥ रोचन मधुर पाके हृद्यं विष्टम्भि बृंहणम्। हन्ति मारुतपित्तास्रतृष्णादाहक्षतक्षयान् ॥

अर्थ-कच्चा फालसा-कषेला, खट्टा, हलका, गरम, स्वादिष्ठ, पित्तकारक, रूखा व वातको दूर करनेवाला है। पक्का फालसा-स्वादिष्ठ, खट्टा, शुक्रजनक, शीतल, रोचन, पचनेमे मधुर, हृदयको हितकारी, विष्टम्भकारक, पुष्टिकारक तथा वात, रक्तपित्त, तृषा, दाह और क्षतक्षयको क्षय करेहै।

अस्य त्वग्गुणा।

परूपत्वक्प्रमेहघ्नी योनिमेढ्रप्रदाहनुत् ॥
मूत्रदोषप्रशमनी शीतपित्तानिलापहा ॥ (आ० सं०)

अर्थ-फालसेकी छाल-प्रमेहनाशक, योनिकी दाह और लिङ्गकी दाहको दूर करनेवाली, मूत्ररोगनिवारक तथा शीत पित्त और वातविनाशक है।

विवरण-फालसेके वृक्ष मध्यम आकारके होतेहै,मालीलोग अपने बागोमे बहुत लगादेतेहै पत्ते बेलके समान तीन २ मिलेहुए होतेहै, फल दो तीन एकत्र होतेहै, फल कच्ची अवस्थामे हरे और पकनेपर ऊदे रंगके होजाते है।

तूतनामानि।



तूत तूदं ब्रह्मकाष्ठ ब्रह्मण्य ब्रह्मदारु च।
मृदु सारं सुपुष्प च सुरूप नीलरंगकम् ॥

अर्थ-तूत, तूद, ब्रह्मकाष्ठ, ब्रह्मण्य, ब्रह्मदारु, मृदुसार, सुपुष्प, सुरूप, नीलरंगक (तूल, ब्राह्मणेष्ट, नीलवृन्तक, क्रमुक, विप्रकाष्ठ, मदसार, पृण, ब्रह्मनेष्ट, नूढ, पूप, ब्रह्मण्य, पलाशिक, यूप)।

संस्कृतभाषामे	तूत।
हिन्दीभाषामे	सहतूत, तूत।
बंगभाषामे	तूँत (द्रु), पलाशपिपुल।
मराठीभाषामे	तूते।
को०	तूतीची फळे।
गुजरातीभाषामे	शेतूत, तूत।
तैलङ्गीभाषामे	कम्बलिचेट्टु।
तामिलीभाषामे	मपुकट्टइचेडि।
इंग्रेजीभाषामे	मलबेरिज़। Mulberies
लेटिन्भाषामे	मोरस इण्डिका। Morus Indica
	मोरसनिग्रा। Morus nigra
	मोरसआल्वा। Morus alba
फारसीभाषामे	शाहतूत, तूतदुर्श, तूतशीरि।
अरबीभाषामे	तूत, तूतहामीज, तूतहुलु।

अस्य गुणाः।

तूतं पक्कं गुरु स्वादु हिमं पित्तानिलापहम्।
तदेवामं गुरु सरमम्लोष्णं रक्तपित्तकृत्॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-पक्के सहतूत-भारी, स्वादिष्ठ, शीतल तथा पित्त और वात-विनाशक है। कच्चे सहतूत-भारी, सारक, खट्टे, गरम और रक्तपित्तकारक है।

अपिच।

तौतानि पक्कानि गुरुशीतानि मधुराणि च। ग्राहकाणि रक्तदोषवातपित्तहराणि च॥ कोमलानि च तानि स्युर्गुरुरेचकराणि च। अम्लानि चोष्णवीर्याणि रक्तपित्तहराणि च॥

अर्थ-पक्के सहतूत-भारी, शीतल, मधुर, मलरोधक तथा रक्तविकार,

वात और पित्तका नाश करेहै । कोमल सहतूत-भारी, दस्तावर खट्टे, गरम और रक्तपित्तका नाश करेहै । सहतूतके वृक्ष बागोमे बहुत होतेहै, पत्ते अंजीरके समान तीन २ कंगूरेवाले और नीमके पत्तोके सदृश चारो ओर आरेकेसे चिह्न होतेहै, यह वृक्ष दोप्रकारके होतेहै, एकपर काले सहतूत और दूसरेपर सफेद सहतूत आतेहै, इसके फल फलीके समान होतेहै, और उनमे बाजरेकेसे दाने सर्वत्र लगे होतेहै वह फली अत्यन्त कोमल और रसीली होतीहै ।

पारेवतनामानि ।

पारेवतं श्वेतपुष्पं तिन्दुकाभफलं मतम् ।

अर्थ-पारेवत, श्वेतपुष्प तिन्दुकाभफल (आरेवत, पालेवत)

संस्कृतभाषामे	पारेवत ।
हिन्दीभाषामे	पारेवत ।
वंगभाषामे	पेयारा ।
औ०	प्याडा ।
तैलिङ्गीभाषामे	उत्तरिगे, दोड्डउत्तरिगे ।

अस्य गुणा ।

पारेवत हिमं स्वादु गुरूष्णं वातपित्तजित् ।
तद्वन्माणवकं ज्ञेय तृष्णाघ्नं मिष्टमम्लकम् ॥ (ध०नि०)

अर्थ-पारेवत-शीतल, स्वादिष्ठ, भारी, गरम, वातपित्तनाशक और महापारेवतकेभी गुण इसीके समानहै तृषानाशक, मिष्ट और अम्लहै।

अन्यच्च ।

पारेवतं तु तुवरं कृमिवातहारि वृष्यं तृपाज्वरविदाहहर च हृद्यम् ॥ मूर्च्छाभ्रमश्रमविशेपविनाशकारि स्निग्ध च रुच्यमुदितं बहु वीर्य्यदं च ॥

अर्थ-पारेवत-कपेला, कृमिनाशक, वीर्य्यवर्द्धक, स्निग्ध, रुचिकारक, वृष्य, हृदयको हितकारी तथा तृपा, ज्वर, दाह, मूर्च्छा, भ्रम, श्रम और शोपनाशक है ।

महापारेवतगुणा ।

महापारेवते गौल्यं बलकृत्पुष्टिवर्द्धनम् ।

वृष्य मूर्च्छां ज्वरघ्नं च पूर्वोक्तादधिकं गुणैः ॥

अर्थ-महापारेवत-गौल्य, बलकारक, पुष्टिवर्द्धक, वीर्य्यवर्द्धक, मूर्च्छानिवारक, ज्वरनाशक है, यह पारेवतसे अधिक गुणवाला है।

श्लेष्मातकनामानि।

श्लेष्मातकः कर्बुदार-पिच्छिलो लेखशाटकः।
शेलुःशेलुगंधपुष्प शापितो बहुवारकः ॥

अर्थ-श्लेष्मातक-कर्बुदार, पिच्छिल, लेखशाटक, शेलु, शेलु, गन्धपुष्प, शापित, बहुवारक, (उद्दाल, भूतवृक्ष, बहुवार, द्विजकुत्सित, शीतफल, शाटक, कर्बुदारक, भूतद्रुम, श्लेष्मात, श्लेष्मातक, शीतल, उद्दालक, सेलु)

भूकर्बुदारनामानि।



भूकर्बुदारकश्चान्यो लघुश्लेष्मातकस्तथा ॥

अर्थ-भूकर्बुदार, लघुश्लेष्मातक (क्षुद्रश्लेष्मान्तक, भूशेलु, लघुपिच्छिल, लघुशीत, लघुशेलु, सूक्ष्मफल, मधुभूतद्रुम, भूकर्बुदार)

संस्कृतभाषामें	श्लेष्मातक। भूकर्बुदार।
हिन्दीभाषामें	निसोडा, निसोरे, लभेरा।
बंगभाषामें	बहुयार, चालतागाछ, बोहरी।
मराठीभाषामें	भोकर, शेळवट, भोकरी, गोधणी।
गुजरातीभाषामें	गुदोमोटो, गुदीनानी।
कर्णाटकीभाषामें	चेलु गोदिणी।
तैलिंगीभाषामें	नाकेरु, जुककेरु।
तामिलीभाषामें	विडि।
औत्कलीभाषामें	अड।

इंग्रेजीभाषामें नेरोलिव्ड सेपिस्टन । Narrow leaved Sepistun
लेटिन्भाषामे कोर्डिया एंगस्टिफोलिया । Cordia angustifolia
फारसीभाषामे सिपिस्तान् ।
अरबीभाषामे सेफिस्तान् दवक ।

अस्य गुणाः ।

श्लेष्मातं कटु शीतलं च तुवरं स्यात्पाचकं माधुरं स्निग्धं केश्यबलासद त्वथ क्रमीञ्छूलामरक्तापहम् ॥ विस्फोटव्रणपित्तनाशनकरं वीसर्पसर्वं विषं हन्ति ह्यस्य फलं तु शीतमधुरं तिक्तंलघुस्तूवरम्॥वायोर्वृद्धिकरं च पित्तशमनं विष्टम्भि रुच्यं तथासृग्दृष्टि कफनाशनं च गदितं पक्वं तथा माधुरम्॥ स्निग्धं शीतलबृहणं निगदितं विष्टम्भि रूक्षं गुरु वायोर्नाशकरं च पित्तशमनं स्याद्रक्तदोषापहम् ॥ (नि० र०)

अर्थ–श्लेष्मान्तक–कटु, शीतल,कषेला,पाचक, मधुर, स्निग्ध, केशोको हितकारी, तथा कृमि, शूल,आमरक्त, कफकारी, विस्फोटक, व्रण, पित्त, विसर्प, और सर्व प्रकारके विषोको हरनेवाला है। इसके फल–शीतल, मधुर, कडवे, हलके,कषेले, वातवर्द्धक, पित्तको शान्ति करनेवाले, विष्टम्भकारक, रुचिजनक तथा रुधिरविकार, दृष्टिविकार और कफनाशक है। इसके पक्के फल–मधुर, स्निग्ध, शीतल, पुष्टिकारक, विष्टम्भकारक, रूखे, भारी, वातविनाशक, पित्तनिवारक और रुधिरविकारको हरनेवाले हैं।

भूकर्बुदारगुणाः ।

क्षुद्रश्लेष्मातकं वातकोपनं मधुरं मतम् ।
किंचिच्च शीतल ज्ञेय कृमिघ्न स्वर्णमारकम् ॥

अर्थ–लमेरा–वातको कुपित करनेवाला, मधुर,किंचित् शीतल, कृमिनाशक और सुवर्णको मारे है।

विवरण । लिसोडेके वृक्ष जंगल और वनमे अधिक होते है, पत्ते गोल कुछ लम्बाई लिये होते है, फल अलूचेके समान गोल रसीले गुच्छोमे लगतेहै, भीतरसे चिपकतेहै इसीप्रकारके लभेडेके वृक्षभी होतेहै, पत्तेभी इसी भाँतिके होतेहै परन्तु फल–इससे छोटे होतेहै,कच्चे रगमे हरे और पकनेपर कुछ गुलाबीसे होजातेहै,फलके भीतर बीज और कुछ गोंदसा निकलताहै।

कतकनामानि।

कतकं छेदनीयं च श्लक्ष्णं तोयप्रसादनम् ।
कात्थं कतकरेणुश्च चक्षुष्यं शोधनात्मककम् ॥

अर्थ-कतक, छेदनीय, श्लक्ष्ण, तोयप्रसादन, कात्थ, कतकरेणु, चक्षुष्य, शोधनात्मक (अम्बुप्रसादनफल, रुचिष्य, लेखनात्मक, अम्बुप्रसाद, कन, तिक्तफल, रुच्य, गुच्छफल, तिक्तमरिच, तोयप्रसादफल, पयःप्रसादि)

संस्कृतभाषामें	कतक ।
हिन्दीभाषामें	निर्म्मलीफल, पायपसारी ।
वंगभाषामें	निर्म्मलफल ।
मराठीभाषामें	निवळीच्या बिया, चिल्लार, गजरा ।
गुजरातीभाषामें	निर्मली ।
कर्णाटकीभाषामें	चिल्लिकापि ।
इंग्रेजीभाषामें	नट्ट् वुइच् क्लिअर्सवाटर । Nut which clears water
लैटिनभाषामें	स्ट्रिकनोस् पोटेटेरम् । Strychinos Potaterum

अस्य गुणाः ।

कतकः कटुकस्तिक्तो लेखनो रुचिकृल्लघुः । चक्षुष्यस्तुवरः शीतो विशदश्च विकासकः ॥ छेदनो मधुरश्चैव तृषादाहविषापहः । गुल्मशूलकृमीन्मेह नेत्ररुग्जलजं मलम् ॥ नाशयेदिति च प्रोक्तः फलं तस्य च कोमलम् । चक्षुष्यं वातकृच्छीतं रक्तपित्तं तृषां विषम्॥मोहं च नाशयत्येव तरुणं तत्तु दुर्जरम्। रुचिदं कफपित्तघ्नं तत्पक्वं पित्तलं मतम्॥छर्दिः स्वेदस्य जनकं शोफं पाण्डुं विषं जयेत् । प्रतिश्यायं कामलां च नाशयेदिति कीर्तितम्॥कतकस्य च बीजं तु चक्षुष्यं तुवरं गुरु।जलप्रसादनं शीतं मधुरं चाश्मरीहरम्॥ वातं कफं मूत्रकृच्छ्रं तृषां नेत्ररुजं विषम् । प्रमेहं शीर्षरोगं च नाशयेदिति कीर्तितम् ॥ कतकस्य च मूलं तु सर्वकुष्ठहरं परम् ।

अर्थ-निर्म्मलीवृक्ष-चरपरा, कडवा, लेखन, रुचिकारक, हलका, नेत्रोंको हितकारी,कषेला,शीतल,विशद,विकासी,छेदन,मधुर तथा

तृषा, दाह, विष, गुल्म, शूल, कृमि, प्रमेह, नेत्ररोग और जलके मैलको दूर करै है । इसका कोमलफल-नेत्रोको हितकारी, वातवर्द्धक, शीतल तथा रक्तपित्त, तृषा, विष और मोहको दूर करे है। इसका तरुण फल-दुर्जर, रुचिजनक, कफ और पित्तनाशक है। इसका पका फल-पित्त जनक, वमनकारक, पसीनेको लानेवाला तथा सूजन, पाण्डुरोग, विष, प्रतिश्याय और कामला रोगको दूरकरे है । इसके बीज-नेत्रो को हितकारी, कषेले, भारी, जलको निर्मल करनेवाले, मधुर तथा पथरी, वात, कफ मूत्रकृच्छ्र, तृषा, नेत्ररोग, विष, प्रमेह और मस्तकरोगको दूर करे है । निर्म्मलीकी जड-सर्वप्रकारके कुष्ठोको नष्ट करनेवाली है ।

विवरण । कतक अर्थात् निर्मलीफल गोल होतेहै, और उसके ऊपरकी छाल कुचलेकी छालकी समान होतीहै, विशेष करके इसकी सब आकृति कुचलेसेही मिलती है ।

द्राक्षानामानि ।

द्राक्षा मधुरसा स्वाद्वी कृष्णा चारुफला रसा ।
मृद्वीका गोस्तनी चैव यक्ष्मघ्नी तापसप्रिया ॥

अर्थ-द्राक्षा, मधुरसा, स्वाद्वी, कृष्णा, चारुफला, रसा, मृद्वीका, गोस्तनी, यक्ष्मघ्नी, तापसप्रिया, (प्रियाला, गुच्छफला, रसाला, अमृतफला, स्वादुफला हारहूरा, फलोत्तमा, सुफला) ।

कपिलद्राक्षानामानि ।

अन्या कपिलद्राक्षा मृद्वीका गोस्तनी च कपिलफला ।
अमृतरसा दीर्घफला मधुवल्ली मधुफला मधूलिश्च ॥
हरिता च हारहूरा सुफला मृद्वी हिमोत्तरा पथिका ।
हैमवती शतवीर्य्या काश्मीरी गजराजमहिगणिता ॥

अर्थ-कपिलद्राक्षा, मृद्वीका, गोस्तनी, कपिलफला, अमृतरसा, दीर्घफला, मधुवल्ली, मधुफला, मधूलि, हरिता, हारहूरा, सुफला, मृद्वी, हिमोत्तरा, पथिका, हैमवती, शतवीर्य्या, काश्मीरी ।

काकलीद्राक्षानामानि ।

अन्या सा काकली द्राक्षा जाम्बुका च फलोत्तमा ।
लघुद्राक्षा च निर्बीजा सुवृत्ता रुचिकारिणी ॥

अर्थ–काकलीद्राक्षा, जाम्बुका, फलोत्तमा, लघुद्राक्षा, निर्बीजा, सुवृत्ता, रुचिकारिणी, (रसाधिका) ।



संस्कृतभाषामे द्राक्षा ।
हिन्दीभाषामे दाख,कालीदाख,किसमिस,अगूर,भूरीदाख ।
वगभाषामे किसमिस,मनेका, आंगुर, वेदाना,किसमिस् ।
मराठीभाषामे काळे द्राक्ष, वेदाणा, किसमिस ।
गुजरातीभाषामे धराख, कालिधराख, किसमिस ।
कर्णाटकीभाषामे वेडगणद्राक्षे, चिकुद्राक्षे ।
तेलङ्गीभाषामें द्राक्षा, किसमिसि, पॉडु, द्राक्षचेट्टु ।
तामिलीभाषामे कोडिमाण्दि रिप्पझाम्
इंग्रेजीभाषामे ग्रेप Grape राझिन्स । Raisins
लेटिन्भाषामे वाइटिन्स, वेनिफेरा Witins Venifera
फारसीभाषामे अगूर, मुनक्का, दानेमवीज ।
अरबीभाषामे कीसमीस, एनब्जबवि, हबुस्जवीव ।

द्राक्षा पक्का सरा शीता चक्षुष्या बृंहणी गुरुः। स्वादुपाकरसा स्वर्या तुवरा सृष्टमूत्रविट् ॥ कोष्ठमारुतकृद्वृष्या कफपुष्टिरुचिप्रदा । हन्ति तृष्णाज्वरश्वासवातवातास्रकामलाः ॥ कृच्छ्रास्रपित्तसमोहदाहशोषमदात्ययान् । आमा स्वल्पगुणा गुर्वी सैवाम्ला रक्तपित्तकृत् ॥वृष्या स्याद्गोस्तनी द्राक्षा गुर्वी च कफपित्तनुत् । अबीजान्या स्वल्पतरा गोस्तनी सदृशी गुणैः ॥

द्राक्षा पर्वतजा लघ्वी साम्ला श्लेष्माम्लपित्तकृत् । द्राक्षा पर्वतजा यादृक् तादृशी करमर्दिका (भा० प्र०)

अर्थ-पक्कीदाख-सारक (कुछ २ दस्तावर),शीतल,नेत्रोको हितकारी, बृंहण, भारी, स्वादुपाकी, स्वादु, स्वरशोधक, कषेली, मूत्र और मलको निकालनेवाली,कोठेमे वातको करनेवाली,वीर्य्यवर्द्धक, कफकारक, पुष्टिजनक, रुचिकारक तथा तृषा, ज्वर, श्वास, वात, वातरक्त, कामला, मूत्रकृच्छ्र, रक्तपित्त, मोह, दाह, शोष और मदात्ययरोगको हरनेवाली है । कच्चीदाख-स्वल्पगुणवाली, भारी, खट्टी और रक्तपित्तकारक है । गोस्तनी अर्थात् कालीदाख-वीर्य्यवर्द्धक, भारी और कफपित्तहारी है । किसमिस-कालीदाखके समान गुणवाली है । पर्वतीदाख-हलकी, खट्टी, कफ और अम्लपित्तको करनेवाली है । करमर्दिकानामवाली दाख-पर्वतीदाखकी समान गुणवाली है ।

अन्यच्च ।

द्राक्षा तु मधुरा स्निग्धा वृष्या शीतानुलोमनी ।
बल्या वृष्या क्षतक्षीणतृपावातास्रपित्तजित् ॥ (रा० व०)

अर्थ-दाख-मधुर,स्निग्ध,वीर्य्यवर्द्धक,शीतल, मलभेदक,बलकारक, वीर्य्यवर्द्धक तथा क्षत, क्षीण, वात और रक्तपित्तका नाश करे है ।

अन्यच्च ।

द्राक्षातिमधुराम्ला च शीता पित्तार्तिदाहजित् ।
मूत्रदोपहरा रुच्या वृष्या सतर्पणी परा ॥

अर्थ-दाख-मधुर, खट्टी, शीतल, पित्तनिवारक,दाहनाशक, मूत्रदोषहारक, रुचिकारक,वृष्य और तृप्तिकारक है ।

द्राक्षाबालफलं कटूष्णविशदं पित्तास्रदोषप्रदं
मध्यं चाम्लरसं रसान्तरगतं रुच्याऽतिवह्निप्रदम् ।
पक्वं चेन्मधुरं तथाऽम्लसहितं तृष्णास्रपित्तापहं
पक्वं शुष्कसमं श्रमार्त्तिशमनं सन्तर्पणं पुष्टिदम् ॥

अर्थ-कच्चीदाख-कटु,उष्ण, विशद, रक्तपित्तकारक, मध्यम अवस्थाकी दाख-खट्टी, रुचिकारक और अग्निवर्द्धक है । पक्की दाख-

मधुर, खट्टी, तृषा और रक्तपित्तनाशक है। पककर सूखगई हो
दाख-श्रमनाशक, तृप्तिकारक और पुष्टिजनक है।

द्राक्षा सैव सुधा तु वृद्धिजननी ससर्पशोषापहा
तृष्णार्त्तिव्यथनी समीरशमनी छर्द्यामयध्वंसिनी।
पाकेम्ला सुरसा रसेन मधुरा शीता च वीर्य्येण सा
सपक्का विहिता ज्वरे च कफजे विण्मूत्रसशोधनी॥

अर्थ-दाख-धातुवर्द्धक, शोषनाशक, प्यासको हरनेवाली, वात दूर करनेवाली, वमनरोगनाशक, पचनेमें अम्ल, सुरस, मधुर, शीतवी ज्वर और कफको हरनेवाली मूत्र और मलको शोधनेवाली है।

द्राक्षाफल मधुरमम्लकषाययुक्त क्षारेण पित्तमरुतां कफ रिशीघ्रम्॥ श्रेष्ठं निहन्ति रुधिरामयदाहशोषमूर्च्छाज्वर सनकासविनाशकारि॥

अर्थ-दाख-मधुर, खट्टी, कषेली और किसी क्षारके साथ पित्त व और कफका नाश करेहै। उत्तम-तथा रुधिररोग, दाह, शोष, मूर्च्छा ज्वर, श्वास और खाँसीको दूर करेहै।

गोस्तनीगुणा।

द्राक्षा तु गोस्तनी शीता हृद्या वृष्या गुरुर्मता। वातानुलोम स्निग्धा हर्षदा श्रमनाशिनी॥ दाहमूर्च्छाश्वासकासकफा त्तज्वरापहा। रक्तदोष तृषां वातं हृद्व्यथां चैव नाशयेत्।

अर्थ-कालीदाख-शीतल, हृदयको हितकारी, वीर्य्यवर्द्धक, भा वातानुलोमन, स्निग्ध, हर्षजनक तथा श्रम, दाह, मूर्च्छा, श्वा खाँसी, कफ, पित्तज्वर, रुधिरविकार, तृषा, वात और हृदय व्यथाको हरनेवाली है।

लघुद्राक्षागुणा।

लघ्वी द्राक्षा तु मधुरा शीता वृष्या रुचिप्रदा। अम्ला रसा संप्रोक्ता श्वासकासज्वरापहा॥ हृद्व्यथारक्तपित्तघ्नी क्षतक्ष विनाशिनी। स्वरभेदं तृषां वातं पित्तं चैव विनाशयेत् तिक्ततां च मुखस्यापि नाशयेदिति कीर्त्तिता।

अर्थ-किसमिस-मधुर, शीतल, वीर्यवर्द्धक रुचिप्रद, खट्टी रसाल तथा श्वास, खाँसी, ज्वर, हृदयकी पीडा, रक्तपित्त, क्षतक्षय, स्वरभेद, तृषा, वात, पित्त और मुखके कडवेपनको दूर करे हैं ।

विवरण । दाख-काली, लाल और किसमिस इत्यादि अनेक जातिकी हैं, इसकी उत्पत्ति काबुल तथा देशांतरोमे होतीहै, दूसरे प्रकारकी दाख इस देशमेंभी होती है, इसके पत्ते हाथके आकारके होते हैं, फल गुच्छोमे लगते ह ।

मण्डपीनामानि ।

भूशिम्बिका रक्तबीजा त्रिबीजा स्नेहबीजका ।
मण्डपी भूमिजा भूस्था तथा भूचणका स्मृता ॥

अर्थ-भूशिम्बिका, रक्तबीजा, त्रिबीजा, स्नेहबीजका, मण्डपी, भूमिजा, भूस्था, भूचणका ।

संस्कृतभाषामे	मण्डपी ।
हिन्दीभाषामे	मूँगफली ।
मराठीभाषामे	भुईमुगाच्या शेगा ।
गुजरातीभाषामे	माडवी ।
इंग्रेजीभाषामे	ग्राउडनट् पिनट् । Groundnut peanut
लैटिनभाषामे	आरेकीस हायपोजिया । Arachis hypoicea
फारसीभाषामे	मुलीयन् बेल ।
अरबीभाषामे	शेषवान ।

अस्य गुणाः ।

मण्डपी मधुरा स्निग्धा वातला कफकारिका ।
ग्राहिका बद्धवर्चाश्च तत्तैलं तद्गुणं स्मृतम् ॥

अर्थ-मूँगफली, मधुर, स्निग्ध, बादी, कफकारक, मलरोधक, मलको बांधनेवाली उसके तेलके गुण इसीके समान जानने ।

काजूतकनामानि ।

काजूतको वृत्तपत्रो गुच्छपुष्पश्च पार्वती ।
स्निग्धपित्तफलश्चैव पृथग्बीजो ह्यरुष्करः ॥

अर्थ-काजूतक, वृत्तपत्र, गुच्छपुष्प, पार्वती, स्निग्धपीतफल, पृथग्बीज, अरुष्कर (अग्निकृत, उपपुष्पिका)

संस्कृतभाषामें	काजूतक ।
मराठीभाषामें	काजूचें झाड ।
गुजरातीभाषामें	काजुकालिया ।
तैलङ्गीभाषामें	गतमामोड, जिढिमामेढी ।
इंग्रेजीभाषामें	केश्युनट् । Cashcurut
लेटिनभाषामें	एनाकार्डिंयं ओक्सिडेन्टेली । Anacordium Occedentaly
फारसीभाषामें	बादामफिरगी ।

अस्य गुणा ।

काजूतकस्तु तुवरो मधुरोष्णो लघुः स्मृतः । धातुवृद्धिकरो वातकफगुल्मोदरज्वरान् ॥ कृमिव्रणाग्निमांद्यानि कुष्ठ च श्वेतकुष्ठकम्।संग्रहण्यर्शआनाहान्नाशयेदितिकीर्तितः॥(नि०र०)

अर्थ-काजुतक- कषेला, मधुर, गरम, हलका, धातुवर्द्धक, तथा वात, कफ,गुल्म, उदररोग, ज्वर, कृमि, व्रण मदाग्नि, कुष्ठ, श्वेतकुष्ठ, संग्रहणी, बवासीर और अफारेको दूर करनेवाला है ।

विवरण । काजूतकके वृक्ष-दक्षिण और गुजरातमे अधिकतासे होते है । पत्ते-लम्बे और गोल, फूल-सफेद और लाली लिये झुमखोमे आते है, फल-सफरीकी समान होते है ।

जम्बूनामानि ।

जम्बूस्तु सुरभिपत्रा नीलफला श्यामला महास्कन्धा ।
राजार्हा राजफला शुकप्रिया मेघमोदिनी च नवाह्वा ॥

अर्थ-जम्बू, सुरभिपत्रा, नीलफला, श्यामला, महास्कन्धा, राजार्हा, राजफला, शुकप्रिया, मेघमोदिनी, (जम्बु, जम्बुल)

महाजम्बूनामानि ।

महाजम्बूराजजम्बूः स्वर्णमाता महाफला ।
शुकप्रिया कोकिलेष्टा महानीला बृहत्फला ॥

अर्थ-महाजम्बू, राजजम्बू, स्वर्णमाता, महाफला, शुकप्रिया, कोकिलेष्टा,महानीला,बृहत्फला, (महापत्रा,फलेंद्र,नन्द,सुरभिपत्रा)

क्षुद्रजम्बूनामानि ।

क्षुद्रजम्बूर्दीर्घपत्रा सूक्ष्मकृष्णफला तथा ॥

अर्थ-क्षुद्रजम्बू, दीर्घपत्रा, सूक्ष्मकृष्णफला (मध्यमा)

काकजम्बूनामानि ।

काकजम्बूः काकफला नादेयी काकवल्लभा ।
भृंगेष्टा काकनीला च ध्वांक्षजम्बूर्घनप्रिया ॥

अर्थ-काकजम्बू, काकफला, नादेयी, काकवल्लभा, भृंगेष्टा, काकनीला, ध्वांक्षजम्बू, घनप्रिया ।

भूमिजम्बूनामानि ।

अन्या च भूमिजम्बूर्ह्रस्वफला भृंगवल्लभा ह्रस्वा ।
भूजम्बूर्भ्रमरेष्टा पिकभक्षा काष्ठजम्बूश्च ॥

अर्थ-भूमिजम्बू, ह्रस्वफला, भृंगवल्लभा, ह्रस्वा, भ्रमरेष्टा, पिकभक्षा, काष्ठजम्बू (सूक्ष्मपत्रा, जलजाम्बुका)

संस्कृतभाषामें	जम्बू, महाजम्बू, क्षुद्रजम्बू ।
हिन्दीभाषामें	जामुन, बडीजामुन, फरेंद्र, छोटीजामुन ।
बंगलाभाषामें	जामगाछ, वडजाम, क्षुद्रेजाम, वनजाम ।
मराठीभाषामें	मोठे जांभूळ, नदीजांभूळ ।
कोकणीभाषामें	राजिले ।
गुजरातीभाषामें	राजजाम्बु, रावणां वेलरोपाजाम्बु, डुंगरिजाम्बु ।
कर्णाटकीभाषामें	निरलु, दोड्डुनिरलु ।
तैलङ्गीभाषामें	पेद्दानेरेडि, नीरनेरेडि ।
इंग्रेजीभाषामें	जाबीरट्री Jambir tree
लैटिन्भाषामें	युजिनिया जाम्बोलेना Eugenia Jambolana
सिझिझियम् जाबोलेनम्	Syzyzyum Jambolanum

जम्बूगुणाः ।

जम्बूवृक्षस्तु तुवरो ग्राही मधुरपाचकः । मलस्तम्भकरो रूक्षो रुचिकृत्पित्तदाहहा ॥ अम्लः कण्ठ्यः कृमिश्वासशोषातीसारकासहा । रक्तदोष कफ चैव व्रण चैव विनाशयेत् ॥ फलं च तुवरं चाम्लं मधुरं शीतलं मतम् । रुच्य रूक्षं ग्राहकं च ले-

खनं कंठदूषकम् ॥ मलस्तम्भकरं वातकारकं कफपित्तनुत् ।
आध्मानकारकं प्रोक्तं पूर्ववैद्यैर्मनीषिभिः ॥

अर्थ-जामुनकी छाल-कपैली, मलरोधक, मधुर,पाचक, मलस्तम्भक, रूक्ष, रुचिकारक तथा पित्त और दाहको दूर करे है, गट्टी, कंठको हितकारी तथा कृमि, श्वास, शोष,अतिसार, खाँसी, रक्तदोष, कफ और व्रण इसका नाश करे है । इसके फल-कपैले,मधुर, शीतल, रुचिकारक, रूखे,मलरोधक, कंठदूषक, मलस्तम्भक,वातवर्द्धक,कफपित्तनाशक और अफारेको करनेवालेहैं ।

अन्यच्च ।

जांबवं गुरु विष्टम्भि कषायं स्वादु शीतलम् ।
अग्निसदूषणं रूक्षं वातलं कफपित्तजित् ॥ (रा० नि०)

अर्थ-जामुनका फल-भारी, विष्टम्भकारक, कपैला, स्वादिष्ठ, शीतल, अग्निदूषक, रूखा,बादी तथा कफ और पित्तनाशक है ।

राजजम्बूगुणाः ।

राजजम्बू तु मधुरा चोष्णा च तुवरा मता। स्वर्या मलस्तम्भकरी श्वासशोषश्रमापहा ॥ मुखजाड्यातिसारघ्नी कफकासविनाशिनी । फलं चास्यास्तु रुचिदं मधुरं स्तम्भकं गुरु ॥ दोषनाशकरं स्वादु ऋषिभिः परिकीर्तितम् ।

अर्थ-राजजामुन-मधुर, गरम, कपैली, स्वरशोधक, मलस्तम्भक तथा श्वास, शोष, श्रम, मुखकी जडता, अतिसार, कफ और खाँसीको हरनेवाली है । इसके फल-रुचिकारक, मधुर, स्तम्भक, भारी, दोषनाशक और स्वादिष्ठ है ।

जलजम्बूगुणाः ।

जलजम्बू तु तुवरा शीता तिक्ता गुरु स्मृता। पाके च मधुरा चाम्ला पुष्टिकृद्ग्राहिणी मता॥वीर्यवृद्धिकरी बल्या श्रमदाहातिसारहा । रक्तदोषं कफं पित्तं व्रणं चैव विनाशयेत् ॥

अर्थ-जलजामुन-कपैली, शीतल, कडवी, भारी, पाकमें मधुर, अम्ल,पुष्टिकारक,मलरोधक,वीर्य्यवर्द्धक,बलकारक तथा दाह,अतिसार,रुधिरविकार,कफ,पित्त, और व्रणको दूर करनेवाली है ।

क्षुद्रजम्बूगुणा ।

क्षुद्रजम्बू तु तुवरा हृद्या च मधुरा मता । वीर्य्यप्रदा ग्राहिणी च पुष्टिकृत्कफपित्तहा ॥ हृद्रोगं कठरोगं च दाहं चैव विनाशयेत् ॥ अस्याः फलगुणाः प्रोक्ता राजजम्बूफलैः समाः ॥ (नि० र०)

अर्थ-छोटी जामुन-कषैली, हृदयको हितकारी, मधुर, वीर्य्यवर्द्धक, मलरोधक, पुष्टिकारक, कफपित्तनाशक तथा हृदयरोग, कण्ठरोग और दाहको दूर करे है। इसके फलोके गुण राजजामुनकी फलकी समान जानने ।

जम्बूफलगुणा ।

तन्मज्जा मधुरा ग्राही विशेषान्मधुमेहहा ।
तदकुरा हिमा रूक्षा ग्राहकाध्मानकारकाः ॥

अर्थ-जामुनकी मीग-मधुर, मलरोधक और विशेषकरके मधुमेहको हरे है । इसके अंकुर-शीतल, रूखे, ग्राही और आध्मानकारक है ।

विवरण । जामुनके वृक्ष-तीन चार प्रकारके होते है, एक नदीके निकट होते हैं, जिनके पत्ते कनेरके समान होते है उनको नदी जामुन कहते है, दूसरी बडी जामुन होती है, उसके पत्ते पीपलकेसे होते है, उसको जमुना कहते है, तीसरी साधारण जामुन होती है, उसके पत्ते आमकेसे होते है, फल मध्यम जातिका होता है, कची अवस्थामे हरी २ होती है और पकनेपर उसका रग वैजनी हो जाता है, फूलके स्थानमे जामुनपर मौरही आता है ।

इति फलवर्गः समाप्तः ।

इति श्रीशालिग्रामनिघण्टुभूषणे फलवर्गे ॥ ६ ॥

वटादिवर्गः ।

वटनामानि ।

वटो रक्तफलः शृङ्गी न्यग्रोधः स्कन्धजो ध्रुवः ।
क्षीरी वैश्रवणावासो बहुपादो वनस्पतिः ॥

अर्थ-वट, रक्तफल, शृङ्गी, न्यग्रोध, स्कन्धज, ध्रुव, क्षीरी, वैश्रवणावास, बहुपाद, वनस्पति (नन्दी, शृङ्ग, बृहत्पाद, वैश्रवणालय, वैश्रवणोदय, वृक्षनाथ, यमप्रिय, कर्म्मज, भाण्डीर, जटाल, रोहिण,

अवरोहा, विटपी, स्कन्धरुह, मण्डली, महच्छाय, भृङ्गी, यक्षावास, यक्षतरु, पादरोहण, नील, शिफारुह,बहुपाद, जटिल, जटी)

संस्कृतभाषामे	वट ।
हिन्दीभाषामे	वड ।
बंगभाषामे	वट ।
मराठीभाषामे	वड ।
गुजरातीभाषामे	वड ।
कर्णाटकीभाषामे	आल ।
तैलिङ्गीभाषामे	मर्रिचेट्टु, मारि, पेडिमरि ।
तामिलीभाषामे	आल ।
औत्कलीभाषामे	बोरु ।
इग्रजीभाषामे	बनीयन्ट्री । Banyantree
लैटिन्भाषामे	फाईकस इन्डिकस् । Ficus indicus
फारसीभाषामे	दरखितरेशा, वडवाई, ऐसाएयगर्द ।
अरबीभाषामे	जातुदवाइवथआव ।

अस्य गुणा ।

वटः शीतो गुरुर्ग्राही कफपित्तव्रणापहः ।
वर्ण्यो विसर्पदाहघ्नः कषायो योनिदोषहृत्॥(भा० प्र०)

अर्थ-वड-शीतल, भारी, मलरोधक कफ और पित्तनाशक, व्रणविनाशक, वर्णको सुन्दर करनेवाला, विसर्परोगनाशक, दाह-विनाशक और योनिदोषको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

वटः कषाये मधुरः शिशिरः कफपित्तजित् ।
ज्वरदाहतृषामोहव्रणशोफापहारकः ॥ (रा० नि०)

अर्थ-वड-कषैला, मधुर, शीतल, कफपित्तनाशक तथा ज्वर, दाह, तृषा, मोह, व्रण, और सूजनको दूर करे है ।

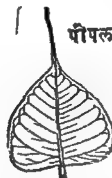
अपिच ।

वटो रूक्षो हिमो ग्राही छर्दिघ्नो योनिदोषजित् ।
वर्ण्या मूर्च्छाविसर्पघ्न कफपित्तहरो गुरुः॥(ध० नि०)

अर्थ-वड-रूखा, शीतल, मलरोधक, वमननिवारक, योनिदोषहारक, वर्णको सुंदर करनेवाला, भारी तथा मूर्च्छा, विसर्प और कफपित्तको दूर करेहै ।

विवरण । वडका वृक्ष महाविशाल होताहै, इसके पत्तेभी लम्बे चौडे होतेहै, फल छोटे २ झडबेरके बराबर आतेहै । इसकी शाखाओमेसे लाल लाल अंकुर निकलतेहै, जब वह बढजातेहै उसको वटकी डाढी कहतेहै, वह इतनी बढजातीहै कि, लटकती २ पृथ्वीमे आकर जमजातीहै । जहॉ जहॉ यह डाढी जमजातीहै वहां २ वडके वृक्ष होजातेहै, इसप्रकार एक वडकी अनेक जडे होतीहै परन्तु यह सब वास्तवमे एकहीहै और परस्पर मिलीहुई होतीहै ऐसेही यह बढते २ उस वडका बीघोमे विस्तार होजाताहै ।

अश्वत्थनामानि ।



बोधिद्रुः पिप्पलोऽश्वत्थश्चलपत्रो गजाशनः ॥

अर्थ-बोधिद्रु, पिप्पल, अश्वत्थ, चलपत्र, गजाशन, (केशवालय, चैत्यद्रु, बोधितरु, कृष्णावास, चैत्यवृक्ष, नागबन्धु, देवात्मा, महाद्रुम, कपीतन, बोधिद्रुम, चलदल, कुञ्जराशन, अच्युतावास, पवित्रक, शुभद, बोधिवृक्ष, याज्ञिक, गजभक्षक, श्रीमान्, क्षीरद्रुम, विप्र, मङ्गल्य, श्यामल, गुह्यपुष्प, सेव्य, सत्य, शुचिद्रुम, धनुर्वृक्ष)

संस्कृतभाषामे	अश्वत्थ ।
हिन्दीभाषामे	पीपलवृक्ष ।
वंगभाषामे	अश्वत्थ, आशोतगाछ ।
मराठीभाषामे	पिंपळ ।
गुजरातीभाषामे	पीपलो ।
कर्णाटकीभाषामे	अरली ।

तैलिङ्गीभाषामें	राविचेट्टु, कुकुमुः
इंग्रेजीभाषामें	पोःकलीव्ड फिगट्री।
लॅटिनभाषामें	फाईकस रिलिजियोझ.
फारसीभाषामें	दरख्तनलरजा।

अश्व गुण।

पिप्पलो दुर्जरः शीतः पित्तश्लेष्मव्रण
गुरुस्तुवरको रूक्षो वर्ण्यो योनिविशोध

अर्थ-पीपल-दुर्जर, शीतल, पित्त, श्लेष्म, व्रण विकारोंको दूर करेहै। भारी, कषेला, रूखा, वर्णक और योनिशोधक है।

अपिच।

अश्वत्थो मधुरः शीतः कषायो दुजरो गुरुः। रूक्ष
कश्च योनिशोधनकारकः ॥ योनिदोष रक्तदो
फाञ्जयेत्। व्रणं च नाशयत्येव फल पक्क च शीतरु
रुजं पित्त विष दोष च नाशयेत्। दाहं वान्ति
ह्यरुचि चैव नाशयेत् ॥ (नि० र०)

अर्थ-पीपल-मधुर, शीतल, कषेला, दुर्जर, भारी, उज्ज्वल करनेवाला, कडवा, योनिशोधक तथ रुधिरदोष, दाह, पित्त, कफ और व्रणको दूर करनेव पके फल-शीतल, हृदयको हितकारी तथा रक्तरोग, दाह, वमन, शोष और अरुचिको दूर करनेवाले है।

विवरण। पीपलका वृक्ष-बहुत बडा होताहै, यह नगरोंमें बहुत होतेहैं, वनोंमें बहुत कम होतेहैं, इसके अनीदार डालियोंपर लगतेहैं, यह परभी छोटे अकुर होतेहैं, फल भी तुल्य लगते हैं, उनको पिपलीति क खभी आतीहैं, परन्तु सदैव श्रेष्ठ और पवित्र है ऋषि रक्खाहै।

पारीशोन्यो

गर्द्दभांडः कन्दरालः कपीतनः सुपार्श्वकः ॥

र्थ-पारीश, फलीश, कपिचूत, कमण्डलु, गर्द्दभाण्ड, कंदराल, न, सुपार्श्वक।

ंस्कृतभाषामे	पारीश।
हिन्दीभाषामे	पारिसपीपल, गजदंड।
वंगभाषामे	गजशुंडी।
मराठीभाषाम	पारसपिपळ भेद। को०मणेरवृक्ष।
गुजरातीभाषामे	पारसपिपलो।
कर्णाटकीभाषाम	वंगरली।
तैलिङ्गीभाषामे	घेनगाखी, गंगरेय।
तामिलीभाषामे	पोरिश, पूवरश, सरम्।
अंग्रेजीभाषामे	हिबिक्सम् Hibiscus
लटिन्भाषामे	थेसपीसीया पोपलनिया। Thaspesia populnea
फारसीभाषामे	यलास बेलय।

अस्य गुणा।

फलीशो दुर्जरः स्निग्धः कृमिशुक्रकफप्रदः।
फलेऽम्लो मधुरो मूले कषायः स्वादुमज्जकः॥(भा०प्र०)

अर्थ-पारिसपीपल-अत्यन्त कठिनतासे पचनेवाला, स्निग्ध, कृमिजनक, शुक्रकारक और कफवर्द्धक है। इसके फल-अम्ल। इसकी जडमे मधुरता। इसकी मज्जामे कषेला और मीठापन है।

अन्यच्च।

ह्मवृक्षस्तु मधुरो वृष्योऽम्लस्तुवरो मतः।दुर्जरःकफकृत्स्निग्धः कृमिशुक्रकारकः॥ वात पित्त च हृद्रोगं दाह कंठं रुज तथा। मङ्गल्य, श्यासंप्रोक्तः फलमम्लं मधु स्मृतम्॥मूलं तु तुवरं ज्ञेय संस्कृतभाषामृता बुधैः। (नि० र०)

हिन्दीभाषा पीपल-मधुर,वीर्य्यवर्द्धक,खट्टा, कषेला, अतिकठिन- वंगभाषामे ,कफकारक,स्निग्ध,शुक्रजनक,कृमिकारक तथा वात मराठीभाषा दाह और कंठरोगको दूर करे है। इसके फल-अम्ल गुजरातीभा इसकी जड-कषेली है। इसकी मज्जा स्वादिष्ट है। कर्णाटकीभ

विवरण। पारिसपीपलका वृक्ष-पीपलके समान होताहै, परन्तु पीपलपर फूल नहीं होतेहैं और पारिसपीपलमें भिंडीकी समान पीपलफूलभी आतेहैं और इसके डोरे भिंडीके आकार होतेहैं।

नन्दीवृक्षनामानि।

नन्दीवृक्षोऽश्वत्थभेदः प्ररोही गजपादपः।
स्थालीवृक्षः क्षयतरुः क्षीरी च स्याद्वनस्पतिः॥

अर्थ-नन्दवृक्ष, अश्वत्थभेद,-प्ररोही, गजपादप, स्थालीवृक्ष, क्षयतरु, क्षीरी, वनस्पति।

संस्कृतभाषामें	नन्दीवृक्ष।
हिन्दीभाषामें	वेलियापीपल।
तैलिङ्गीभाषामें	वट्टिचेट्टु।

अस्य गुणाः।

नन्दीवृक्षो लघुः स्वादुस्तिक्तस्तुवर उष्णकः।
पाके कटू रसे ग्राही विषपित्तकफास्रनुत्॥ (भा० प्र०)

अर्थ-वेलियापीपल-हलका,स्वादिष्ठ,कषेला,कडवा,गरम, पचनेमें चरपरा,मलरोधक तथा विष,पित्त,कफ और रुधिरके दोषको दूरकरेहै

विवरणवेलिया पीपलभी पीपलका भेदहै,इसके पत्ते-बडेरहोतेहैं इसकी शाखाओमेभी अंकुर होतेहै,इसकी जड बहुत मोटी होतीहै।

प्लक्षनामानि।

प्लक्षो जटी पर्कटी च कर्परी चारुदर्शिनी।
शृङ्गी वरोहशाखी च ह्यश्वत्थी पिंपरी वटी॥

अर्थ-प्लक्ष, जटी, पर्कटी, कर्परी, चारुदर्शिनी, शृङ्गी, वरोहशाखी, अश्वत्थी, पिंपरी, वटी (कमण्डलुतरु, कपीतन, क्षीरी, सुपार्श्व, कमण्डलु, गर्दभाण्ड, पीतन, दृढप्ररोह, प्लवक, प्लवङ्ग, महाबल, कन्दरालु, पर्कोटी, प्लक्षा, जटि, प्लीक्षा)

संस्कृतभाषामें	प्लक्ष, पर्कटी।
हिन्दीभाषामें	पाखर, पाकर, पिलखान।
वंगभाषामें	पाकुडगाछ।
मराठीभाषामें	पिंपरी।

गुजरातीभाषामे	पीपर्य ।
कर्णाटकीभाषामे	बसुरि ।
लेटिन्भाषामे	फाईलसविरेन्स । Fielus verance

अस्य गुणाः ।

प्लक्षः कषायः शिशिरो व्रणयोनिगदापहः ।
दाहपित्तकफास्रघ्नः शोफहा रक्तपित्तहृत् ॥ (भा० प्र०

अर्थ–पाखर–कषेला, शीतल तथा व्रण, योनिरोग, दाह, पि
कफ, रुधिरविकार, सूजन और रक्तपित्तको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

प्लक्षः कटुः कषायश्च शिशिरो रक्तदोषजित् ।
मूर्च्छाभ्रमप्रलापघ्नो ह्रस्वपत्रो विशेषतः ॥

अर्थ–पाखर–कटु, कषाय, शिशिर, रक्तदोषनाशक तथा मूर्च्छ
भ्रम और प्रलापको दूर करनेवाला है । ह्रस्वपत्रवाला पाखर अधि
गुणवाला है ।

विवरण । पाखरके वृक्ष–बड पीपलकी भाँति जंगल और ग्राममें
बहुत होतेहैं, पत्ते–लम्बे २ आमकेसे होतेहैं, जब नया वृक्ष लगा
होताहै तब इसके गुद्देको काटकर लगादेतेहैं, उसीमेंसे हरे २ प
निकलने लगतेहैं, पांच,छै, वर्षमें वैसाही वृक्ष छायादार होजाता
इसके सघन वनकी प्रशसा है, कि, ऐसी उत्तम छाया किसी वृक्ष
नही होतीहैं ।

उदुम्बरनामानि ।


गूलर.

विवरण। पारिसपीपलका वृक्ष-पीपलके समान होताहै, परन्तु पीपलपर फूल नहीं होतेहैं और पारिसपीपलमें भिंडीकी समान पीपलफूलभी आतेहैं और इसके डोरे भिंडीके आकार होतेहैं।

नन्दीवृक्षनामानि।

नन्दीवृक्षोऽश्वत्थभेदः प्ररोही गजपादपः।
स्थालीवृक्षः क्षयतरुः क्षीरी च स्याद्वनस्पतिः॥

अर्थ-नन्दीवृक्ष, अश्वत्थभेद, प्ररोही, गजपादप, स्थालीवृक्ष, क्षयतरु, क्षीरी, वनस्पति।

संस्कृतभाषामें	नन्दीवृक्ष।
हिन्दीभाषामें	वेलियापीपल।
तैलिङ्गीभाषामें	वट्टिचेट्टु।

अस्य गुणाः।

नन्दीवृक्षो लघुः स्वादुस्तिक्तस्तुवर उष्णकः।
पाके कटू रसे ग्राही विषपित्तकफास्रनुत्॥ (भा० प्र०)

अर्थ-वेलियापीपल-हलका, स्वादिष्ठ, कषेला, कडवा, गरम, पचनेमें चरपरा, मलरोधक तथा विष, पित्त, कफ और रुधिरके दोषको दूरकरेहै

विवरण। वेलिया पीपलभी पीपलका भेदहै, इसके पत्ते-बडे२होतेहैं इसकी शाखाओंमेंभी अंकुर होतेहैं, इसकी जड बहुत मोटी होतीहै।

प्लक्षनामानि।

प्लक्षो जटी पर्कटी च कर्पंरी चारुदर्शिनी।
शृङ्गी वरोहशाखी च ह्यश्वत्थी पिपरी वटी॥

अर्थ-प्लक्ष, जटी, पर्कटी, कर्परी, चारुदर्शिनी, शृङ्गी, वरोहशाखी, अश्वत्थी, पिपरी, वटी (कमण्डलुतरु, कपीतन, क्षीरी, सुपार्श्व, कमण्डलु, गर्दभाण्ड, पीतन, दृढप्ररोह, प्लवक, प्लवङ्ग, महाबल, कन्दरालु, पर्कोटी, प्लक्षा, जटि, प्लीक्षा)

संस्कृतभाषामें	प्लक्ष, पर्कटी।
हिन्दीभाषामें	पाखर, पाकर, पिलखान।
बंगभाषामें	पाकुडगाछ।
मराठीभाषामें	पिपरी।

गुजरातीभाषामे पीपर्य ।
कर्णाटकीभाषामें बसुरि ।
लैटिन्भाषामे फाईलसविरेन्स । Ficlus verance

अस्य गुणाः ।

प्लक्षः कषायः शिशिरो व्रणयोनिगदापहः ।
दाहपित्तकफास्रघ्नः शोफहा रक्तपित्तहृत् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-पाखर-कषेला, शीतल तथा व्रण, योनिरोग, दाह, पित्त, कफ, रुधिरविकार, सूजन और रक्तपित्तको दूर करै है ।

अन्यच्च ।

प्लक्षः कटुः कषायश्च शिशिरो रक्तदोषजित् ।
मूर्च्छाभ्रमप्रलापघ्नो ह्रस्वपत्रो विशेषतः ॥

अर्थ-पाखर-कटु, कषाय, शिशिर, रक्तदोषनाशक तथा मूर्च्छा, भ्रम और प्रलापको दूर करनेवाला है । ह्रस्वपत्रवाला पाखर अधिक गुणवाला है ।

विवरण । पाखरके वृक्ष-बड पीपलकी भाँति जंगल और ग्रामोमें बहुत होतेहै, पत्ते-लम्बे २ आमकेसे होतेहैं, जब नया वृक्ष लगाना होताहै तब इसके शुद्धेको काटकर लगादेतेहै, उसीमेसे हरे २ पत्ते निकलने लगतेहै, पांच,छे, वर्षमे वैसाही वृक्ष छायादार होजाताहै, इसके सघन वनकी प्रशंसा है कि, ऐसी उत्तम छाया किसी वृक्षकी नही होतीहै ।

उदुम्बरनामानि ।



उदुम्बरः क्षीरवृक्षो हेमदुग्धः सदाफलः ।
अपुष्पफलसम्बंधो यज्ञाङ्गः शीतवल्कलः ॥

अर्थ-उदुम्बुर, क्षीरवृक्ष, हेमदुग्ध, सदाफल, अपुष्पफलसंबंध, यज्ञाङ्ग, शीतवल्कल (कृमिकण्ट, कृमिकण्टक, क्रिमिकण्टक, पाणिसुख, पुष्पहीन, जन्तुफल, यज्ञफल, यज्ञोडुम्बर, उडुंबर, हेमदुग्धक, ब्रह्मवृक्ष, हेमदुग्धी, सुचक्षु, श्वेतवल्कल, कालस्कन्ध, यज्ञयोग्य, यज्ञीय, सुप्रतिष्ठित शीतवल्क, यज्ञसार, पुष्पशून्य, पवित्रक, सौम्य, शीतफल, जघनेफल)

संस्कृतभाषामे	उदुम्बर ।
हिन्दीभाषामे	गूलर ।
वंगभाषामे	यज्ञडुमुर ।
मराठीभाषामे	उम्बर ।
गुजरातीभाषामे	उंबरो ।
कर्णाटकीभाषामे	अत्ति ।
तैलिङ्गीभाषामे	वाडुवेट्टु ।
इंग्रेजीभाषामे	किग्ट्री । Keg tree
लैटिन्भाषामे	फाइकसग्लोमिरेटा । Ficus glomirata
फारसीभाषामें	अंजीरे आदम ।
अरबीभाषामें	जमीझ ।

अस्य गुणाः ।

उदुम्बरः शीतलः स्याद्भग्नसन्धानकारकः । व्रणरोपणकृद्रूक्षो मधुरस्तुवरो गुरु ॥ अस्थिसन्धानकृद्वर्ण्यः कफपित्तातिसारकान् । योनिरोग नाशयति वल्क चैवास्य शीतलम् ॥ दुग्धदं तुवर गर्भ्यं व्रणनाशकरं स्मृतम् । कोमलं चास्य च फल स्तम्भकृत्तुवर मतम् ॥ हितकारि तृषापित्तकफरक्तरुजापहम् । मध्यमं कोमलं स्वादु शीतलं तुवरं मतम् ॥ पित्त तृषामोदकरं रक्तस्रुतिवमीहरम् । प्रहारघ्नं समुद्दिष्टमपक्क तुवरं मतम् ॥ रुच्यं चाम्लं दीपन स्यान्मांसवृद्धिकरं मतम् । रक्तरुक्कारकं चैव दोपल च जडं मतम् ॥ तत्पक्क च कषायं स्यान्मधुरं कृमिका-

रकम् । जडं रुचिप्रदं चातिशीतलं कफकारकम् ॥ रक्तरुक्पित्तदाहक्षुत्तृषाश्रमप्रमेहहम् । शोषमूर्च्छाहरं प्रोक्तं पूर्वैः स्वेस्वे निघण्टके ॥ (नि० र०)

अर्थ–गूलर–शीतल, गर्भसन्धानकारक, व्रणको भरनेवाला, रूखा, मधुर, कषेला, भारी, अस्थिसन्धानकारक, वर्णको उज्ज्वल करनेवाला तथा कफ, पित्त, अतिसार और योनिरोगको नाश करे है। इसकी छाल अत्यन्त शीतल, दुग्धवर्द्धक, कषेली, गर्भको हितकारी और वर्णविनाशक है। इसके कोमल फल–स्तम्भक, कषेले, हितकारी तथा तृषा, पित्त, कफ और रुधिरके रोगोंका नाश करे है। मध्यम कोमल फल–स्वादु, शीतल, कषेले, पित्त, तृषा और मोह कारक तथा रक्तस्राव, वमन और प्रदररोग नाशक है। इसके तरुण फल–कषेले, रुचिकारक, अम्ल, दीपन, मांसवर्द्धक, रुधिरको बिगाडनेवाले, दोषजनक और जड है। इसके पक्के फल–कषेले, मधुर कृमिकारक, जड, रुचिकारक, अत्यन्त शीतल, कफकारक तथा रुधिरविकार, पित्त, दाह, क्षुधा, तृषा, श्रम, प्रमेह, शोष और मूर्च्छाको हरनेवाले हैं।

नद्युदुम्बरनामानि ।

नद्युदुम्बरिका चान्या लघुपत्रफला तथा ।
लघुहेमदुग्धा प्रोक्ता लघुपूर्वसदाफला ॥

अर्थ–नद्युदुम्बरिका, लघुपत्रफला, लघुहेमदुग्धा, लघुपूर्वसदाफला।

अस्य गुणाः ।

नद्युम्बरीगुणैः सर्वैः सदृशा तु मता बुधैः ।
रसवीर्य्यविपाकेषु किञ्चिन्न्यूना च पूर्वतः ॥

अर्थ–नदीके निकटका गूलर गूलरकेही समान गुणवाला है तथा रस वीर्य्य और विपाकमे किंचित् हीन है।

काकोदुम्बरिका नामानि ।

उदुम्बरफला चैव कर्कशच्छदनाऽसुमा ।
काकोदुम्बरिका ज्ञेया क्षीरी च खरपत्रिका ॥

अर्थ–उदुम्बरफला, कर्कशच्छदना, असुमा, काकोदुम्बरिका, क्षीरी, खरपत्रिका (कृष्णोदुम्बरिका, खरपत्रि, राजिका, क्षुद्रोदुम्ब-

रिका, कुष्ठघ्नी, फल्गुवाटिका, अजाजी, फल्गुनी, मलयू, चित्रभेषजा, ध्वांक्षनाम्नी, फल्गु, जघनेफला, बहुफला, खरदला, मलयु, फल्गुफला, काकोडुम्बर, काकोडुम्बरिका, अजाक्षी, भद्रोडुम्बरिका)

संस्कृतभाषामें	काकोदुम्बरिका।
हिन्दीभाषामें	कठूमर।
बंगालीभाषामें	काकडुमुर।
मराठीभाषामें	कालाउम्बर, बोखाडा।
गुजरातीभाषामें	टेडउम्बरो।
कर्णाटकीभाषामें	काआत्ति।
तैलङ्गीभाषामें	ब्रह्ममेडिचेट्टु, काकी बाड्डुचेट्टु।
इङ्ग्रेजीभाषामें	किग्ट्री। Keg tree
लैटिन्भाषामें	फाइकस् ओपोझिटि फोलिया। Ficus opposetifolia
	फाइकस् हिस्पिडा। F. Hispida
फारसीभाषामें	अंजिरेदस्ती।
अरबीभाषामें	तनबरि।

अस्या गुणाः।

मलपूस्तम्भकृत्तिक्ता शीतला तुवरा जयेत्।
कफपित्तव्रणश्वित्रकुष्ठपाण्ड्वर्शकामलाः ।(भा० प्र०)

अर्थ-कठूमर-स्तम्भक, शीतल, कषेला तथा कफ, पित्त, व्रण, श्वित्रकुष्ठ, पाण्डुरोग, बवासीर और कामलारोगको दूर करे है।

अन्यच्च।

काकोदुम्बरिका शीता कषाया दद्रुघातिनी।
रक्तातिसारहन्त्री च मुखनासास्रघातिनी॥ (शो० प्र०)

अर्थ-कठूमर,-शीतल, कषेला तथा दाह, रक्तातिसार, मुख और नाकिकासे रुधिरके गिरनेको दूर करे है।

अपिच।

काकोदुम्बरिका शीता तिक्ताम्लास्तम्भका कटुः।तुवरा ग्राहिणी प्रोक्ता चेन्द्रियाणां प्रसादका॥ त्वग्दोषकामलापित्तरक्तपित्तकफाञ्जयेत्।श्वेतकुष्ठव्रण पाण्डु रक्तरोगं च शोथकम्॥

दुर्नामान चोर्द्धदोष नाशयेदिति कीर्तितम् । फलमस्याः स्वादु शीतं तुवर तृप्तिकारकम् ॥ गुरु धातुवृद्धिकरं पाके च मधुरं स्मृतम्।स्निग्धं मलस्तम्भकर पौष्टिकं ग्राहि वातलम् (नि०र०)

अर्थ-कठूमर-शीतल, कडवा, अम्ल, मलस्तम्भक, कटु, कषेला, ग्राही, इन्द्रियप्रसादक तथा त्वग्दोष, कामला, पित्त, रक्तपित्त,कफ, श्वेतकुष्ठ, व्रण, पाण्डुरोग, रुधिरविकार, सूजन,बवासीर और ऊर्ध्व-गत दोषको दूर करे है । इसके फल-स्वादु, शीतल, तृप्तिकारक, भारी, धातुवर्द्धक, पचनेमे मधुर, स्निग्ध, मलस्तम्भकारक पुष्टिजनक मलरोध और वातजनक है ।

विवरण । गूलर अर्थात् उदुम्बर और कठूमरका बडा वृक्ष होता है, इसपर फूल नही आते, इसकी शाखाओमेसे फल उत्पन्न होते है, फल गोल२अंजीरकी समान होतेहै और इसमेसे दूध निकलता है, इसके पत्ते-लम्बेबेकेसे होते है, नदी उदुम्बरके पत्ते गूलरकेपत्तोसे छोटे और फलभी छोटे होते है, कठूमरके पत्ते गूलरके पत्तोसे बडे है बरन गंगेरनके पत्तोके समान होते है। इसके पत्तोको छूनेसे हाथोमे खुजली होने लगतीहै और पत्तोमे दूध निकलता है ।

शिरीषनामानि ।

शिरीषो भण्डिलो भण्डी भण्डीरश्च कपीतनः ।
शुकपुष्पः शुकतरुर्मृदुपुष्पः शुकप्रियः ॥

अर्थ-शिरीष, भण्डिल, भण्डी, भण्डीर, कपीतन,शुकपुष्प, शुकतरु, मृदुपुष्प, शुकप्रिय (कर्णपूर, शुकद्रुम, भण्डील, भाण्डिर, मूर्द्धपुष्प, विषघाती, विषनाशन, शीतपुष्प, भण्डिक, स्वर्णपुष्पक, शुकेष्ट बर्हपुष्प, विषहन्ता, सुपुष्पक, उद्दानक, शुकतरु, लोमशपुष्पक, कपीतक, कलिंग, श्यामल, शंखिनीफल, मधुपुष्प, वृत्तपुष्प, शिखिनीफल, प्लवग, श्यामवर्ण)

संस्कृतभाषामे	शिरीष।
हिन्दीभाषामे	सिरस।
बंगभाषामें	शिरीषगाछ, चट्का ।
मराठीभाषामे	शिरसी ।
गुजरातीभाषामे	शिरीष, शरषडो ।
कर्णाटकीभाषामे	शिरसु ।

वस्तिरुग्व्रणदाहास्रबलासान्गर्भपातिनी । (भा ० प्र०)

अर्थ-सीसम-कटु, तिक्त, कषाय, शोषनाशक, उष्णवीर्य्य तथा मद, श्वित्रकुष्ठ,वमन,कृमि,वस्तिरोग,व्रण, दाह, रुधिरविकार और कफको हरनेवाला तथा गर्भको गिरानेवाला है ।

अन्यच्च ।

शिंशपा दद्रुशोफघ्नी कुष्ठजीर्णज्वरापहा ।

अर्थ-सीसम-दाह,सूजन,कोढ,अजीर्ण और ज्वरको हरनेवालाहै।

अन्यच्च ।

श्यामादिशिंशपा तिक्ता कटूष्णा कफवातजित् ।
कुष्ठा जीर्णहरा दीप्या शोफातीसारहारिणी ॥

अर्थ-सीसम-कडवा, चरपरा,गरम,अग्निप्रदीपक तथा कफ,वात, कुष्ठ, अजीर्ण, सूजन और अतीसारको दूर करे है ।

श्वेतशिंशपागुणा ।

श्वेतादिशिंशपा तिक्ता शिशिरा पित्तदाहनुत् ।

अर्थ-सफेद सीसम-कडवा,शीतल तथा पित्त और दाहको दूर करे है ।

कपिलशिंशपागुणा ।

कपिला शिंशपा तिक्ता शीतवीर्य्या श्रमापहा ।
वातपित्तज्वरघ्नी च च्छर्दिहिक्काविनाशिनी ॥

अर्थ-भूरेरंगका सीसम-कडवा,शीतवीर्य,श्रमनाशक तथा वात, पित्त, ज्वर, वमन और हिचकीको दूर करे ह ।

त्रिविधशिंशपागुणा ।

शिंशपात्रितयं वर्ण्यं हिम शोफविसर्पजित् ।
पित्तदाहप्रशमन बल्यं रुचिकरं परम् ॥ (रा० नि०)

अर्थ-तीनो प्रकारके सीसम-वर्णको सुंदर करनेवाले,शीतल,बल-वर्द्धक,रुचिजनक तथा सूजन,विसर्प,पित्त और दाहको शान्तकरेहै।

विवरण । सीसमके वृक्ष बहुत बडे२जगलमे होते है, पत्ते गोल नोकदार बेरीकी बरावर होते है,फूल बहुत छोटे २ गुच्छोमे लगतेहै, फली बहुत पतली और चपटी होतीहै,उसमे छोटे २ चपटे बीज निकलतेहै,सीसमकी लकडी कुछ श्यामता और ललाई लिये भूरेरंगकी होतीहै, दूसरा काले रगका सीसमभी इसीप्रकारका होता है ।

सालनामानि ।



सालस्तु सर्जकार्याऽश्वकर्णिकासस्यसम्बरः ।

अर्थ–साल, सर्जकार्य, अश्वकर्णिका सस्यसम्बर, (अश्वकर्णक, सस्यशम्बर, उपमेत, दीर्घशाख, जलदाशन, लतातरु, लताशंख, शंकुतरु, शंकुवृक्ष, सर्ज, सर्जरस, कल, कललजोद्भव, वल्लीवृक्ष, चीरपर्ण, रालकार्य्य, अजकर्णक, वस्तकर्ण, कषायी, ललन, गन्धवृक्षक, वंश, रालनिर्य्यास, द्विपसार सुरेष्टक, शूर, अग्निवल्लभ, यक्षधूप, सिद्धक, जरणद्रुम, तार्क्ष्यप्रसव, धन्य, दीर्घपर्ग, कुशिक, कौशिक)

संस्कृतभाषामे	साल, अश्वकर्ण ।
हिन्दीभाषामे	साल, सखुया, सांखु ।
वंगभाषामे	शालगाछ, लताशाल ।
मराठीभाषामे	राळेचा वृक्ष, साजरा ।
कर्णाटकीभाषामे	सज्जरदामर ।
त०	एपचेट्ट ।
तामिलीभाषामे	कुगिलियम् ।
इंग्रेजीभाषामे	सालट्री । Sal tree
लैटिन्भाषामे	शोरिया रोवष्टा । Shoria Robusta

अस्य गुणा ।

अश्वकर्णः कषायः स्याद्व्रणस्वेदकफकृमीन् ।
ब्रध्नविद्रधिबाधिर्य्ययोनिकर्णगदान्हरेत् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-अश्वकर्ण साल-कपेला तथा व्रण, पसीना, कफ, कृमि, ब्रध्न, विद्रधि, बधिरता, योनिरोग और कर्णरोगको हरनेवाला है।

अन्यच्च।

अश्वकर्णः कटुस्तिक्तः स्निग्धः पित्तास्रनाशनः।
उरोविस्फोटकण्डूघ्नः शिरोदोषार्त्तिकृंतनः॥ (रा०नि०)

अर्थ-अश्वकर्ण-कटु, तिक्त, स्निग्ध, रक्तपित्तनाशक तथा उरोविस्फोट, कण्डु और मस्तकरोगको दूर करे है।

अन्यच्च

ऊर्जो व्रणहरश्चैव श्लेष्मरक्तप्रकोपहृत्।

अर्थ-साल-व्रणविनाशक और कफ तथा पित्तके कोपको शांति करे है।

अपिच।

अश्वकर्णः कटुस्तिक्तो रूक्षः कान्तिकरो मतः। स्निग्धोष्णः कफपाण्ड्वार्त्तिपित्तकर्णरुजाहरः॥ रक्तरुङ्मेहकुष्ठघ्नो व्रणोरःक्षतकण्डुहा। विषदोषं वातरोगं शिरोरोगञ्च नाशयेत्॥ फलं च मधुरं रूक्षं शीतं स्तम्भनकृद्गुरु। मलावष्टम्भनकरं तुवरं लेखनं मतम्॥ आध्मानशूलवातानां कारकं पित्तनाशकम्। रक्तदोषतृषादाहक्षतक्षयविनाशनम्॥ (नि० र०)

अर्थ-अश्वकर्ण-शाल-चरपरा, कडवा, रूखा, कान्तिकारक, स्निग्ध, गरम तथा कफ, पाण्डुरोग, पित्त, कर्णरोग, रक्तरोग, प्रमेह, कोढ, व्रण, उरःक्षत, कण्डू, विषविकार, वातरोग और शिरोरोगका नाश करे है। इसका फल-मधुर, रूखा, शीतल, स्तम्भक, भारी, मलावष्टम्भक, कषेला, लेखन तथा आध्मान शूल और वातकारक है। पित्तनाशक और रुधिरविकार, तृषा, दाह और क्षतक्षयको दूर करे है।

अथ शालभेद।

सर्ज्जकोऽन्योऽजकर्णः स्याच्छालो मरिचपत्रकः।

अर्थ-सर्ज्जक, अजकर्ण, शाल, मरिचपत्रक।

लैटिन्‌भाषामें वेटेरियाइण्डिका।

अस्य गुणाः।

अजकर्णः कटुस्तिक्तः कषायोष्णो व्यपोहति।

कफपाण्डुश्रुतिगदान्मेहकुष्ठविषव्रतान् ।(भा० प्र०)
अर्थ-अजकर्ण (सालभेद)-चरपरा, कडवा, कषेला, गरम तथा कफ,पाण्डुरोग, कर्णरोग, प्रमेह,कोढ, विष और व्रणको दूर करे है।

अन्यच्च।

सर्जस्तु कटुतिक्तोष्णो हिमः स्निग्धोऽतिसारजित् ।
पित्तास्रदोषकुष्ठघ्नः कण्डूविस्फोटवातजित् ॥(रा०नि०)

अर्थ-अजकर्ण(सालभेदक)चरपरा,कडवा,गरम, शीतल, स्निग्ध तथा अतिसार,रक्तपित्त,कोढ,कण्डू और विस्फोटका नाश करे है।

विवरण-शालके बडे बडे वृक्ष होतेहै पत्तेभी बहुत बडे बडे लगतेहै, फूल झुमखोमे आतेहै । दूसरा अश्वकर्ण, अजकर्ण, इत्यादि शालके कई एक भेदहै । शालके गोंदको राल कहते है ।

शल्लकीनामानि।

शल्लकी गजभक्षा च गजप्रिया च ह्लादिनी।
महारुहा वसा मोचा सुरभी सुरभीरसा ॥

अर्थ-शल्लकी, गजभक्षा, गजप्रिया, ह्लादिनी, महारुहा, वसा, मोचा, सुरभी, सुरभीरसा(गजभक्ष्या, शिल्लकी, सिल्लकी, सल्लकी, सिह्लकी, सिह्लभूमिका, सुवहा, सुरभि, महेरुणा, कुन्दुरुकी, गजाशना, महेरणा, महारणा, ह्लादिनी, अश्वमूत्री (अश्वपुत्री) कुम्भी, अग्नफला, करका, सुखमोदा, सुगन्धा, सुरभिस्रवा, गजवल्लभा, ह्रस्वदा, बहुस्रवा,गन्धवीरा,सुस्रवा,वनकर्णिका, नागवधू,सुश्रीका, गन्धमूला, रसाला, जलातिक्तिका)

संस्कृतभाषामे	शल्लकी ।
हिन्दीभाषामे	सालई, सलई ।
वंगभाषामे	शलई, शालाविशेष ।
मराठीभाषामे	शालईवृक्ष, धूपशलाई ।
गुजरातीभाषामे	शालेड्ड, धूपेडो ।
कर्णाटकीभाषामे	तदकि ।
तामिलीभाषामे	कुालि ।
लेटिन्भाषामे	वोझवेलिया, थराफरा । Boswelia Therifera

अस्य गुणाः।

शल्लकी तुवरा शीता श्लेष्मपित्तातिसारजित् । रक्तपित्तव्रणह-

री पुष्टिकृत्समुदीरिता ॥ तत्फलं कफवातार्शःकुष्ठारोचकनाशनम्।पुष्पं चास्य कफं वातमर्शःकुष्ठरुचीर्जयेत्॥(रा०नि०)

अर्थ-शालई-कषेली, शीतल तथा कफ, पित्त, अतिसार, रक्तपित्त और व्रणको दूर करेहै तथा पुष्टिकारक है । इसका फल-कफ, वात, बवासीर कोढ और अरुचिको दूर करे है । इसका फूल-कफ, वात, बवासीर, कोढ और अरुचिको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

वृक्षस्तु शल्लकीसंज्ञः पुष्टिकारी कषायकः । शीतवीर्यश्च मधुरस्तिक्तो ग्राह्यस्त्रिदोषनुत् ॥ व्रणदोषं कफं वातं पित्तं चार्शं च नाशयेत् । पक्वातिसारकुष्ठञ्च रक्तपित्तं विनाशयेत्॥ निर्यासोस्य मतो नाम्ना कुन्दुरुः सुज्ञभाषितः ॥ (नि० र०)

अर्थ-शालई-पुष्टिकारक, कषेली,शीतवीर्य, मधुर,कडवी,मलरोधक तथा रुधिरविकार,व्रण,कफ,वात,पित्त,बवासीर,पक्वातिसार, कोढ और रक्तपित्तका नाश करेहै । इसके गोंदको विद्वान् कुन्दुरु कहतेहै ।

विवरण-सल्लकी अर्थात् सालईका बहुत बडा वृक्ष होताहै, पत्ते नीमके समान होतेहै,फलमे तीन रेखा होतीहै, इसीवृक्षका गोंद, कुन्दुरु होताहै ।

अर्जुननामानि ।

अर्ज्जुनः फाल्गुनः पार्थश्चित्रयोधी धनञ्जयः ।
वैरांतकः किरीटी च नदीसर्जोथ पांडवः ॥

अर्थ-अर्ज्जुन, फाल्गुन,पार्थ,चित्रयोधी,धनंजय,वैरान्तक,किरीटी, नदीसर्ज,पांडव(वीरतरु, इन्द्रद्रु ककुभ, इन्द्रद्रुम, शम्बर, गाण्डीवी, कर्णारि,करवीरक,कौन्तेय,इन्द्रसूनु,गण्डीरी,शिवमल्लक,सव्यसाची, वीरद्रु, कृष्णसारथि, पृथाज, धन्वी, वीर, वीरवृक्ष, धवल) ।

संस्कृतभाषामे	अर्जुन ।
हिन्दीभाषामे	कोह, कौह ।
बंगलाभाषामे	अर्जुनगाछ
मराठीभाषामे	सारढोल ।
गुजरातीभाषामे	कडायो
तैलङ्गीभाषामे	मद्दिचे ।

कर्णाटकीभाषामें तारेमात्ति ।
लेटिनभाषामें स्टर्क्युलियायुरेन्स ; Sterculia urens

अस्य गुणाः ।

ककुभः शीतलो भग्नक्षतक्षयविषास्रजित् ।
मेदोमेहव्रणान्हन्ति तुवरः कफपित्तहृत् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-अर्जुन-शीतल, कषेला, तथा भग्न, क्षत, क्षय, विष, रुधिर-विकार, मेद, प्रमेह, व्रण और कफपित्तको दूर करेहै ।

अन्यच्च ।

अर्जुनस्तु कषायोष्णः कफघ्नो व्रणशोधनः ।
पित्तश्रमतृषार्त्तिघ्नो मारुतामयकोपनः ॥ (रा०नि०)

अर्थ-अर्जुन-कषेला, गरम, कफनाशक, व्रणशोधक, तथा पित्त, श्रम और तृषानिवारक है एव वातरोगको कुपित करेहै ।

अन्यच्च ।

पार्थः पथ्येक्षते भग्ने रक्तस्तम्भनकृच्छ्रयोः (रा नि)

अर्थ-अर्जुन-क्षत, भग्न, रक्तस्तम्भ और मूत्रकृच्छ्ररोगमे हितकारी है।

अपिच ।

अर्जुनस्तुवरश्चोष्णो मधुरः शीतलः स्मृतः । कान्तिदो बलकृच्चैव लघुर्व्रणविशोधकः ॥ अस्थिभंगास्थिसंहारे हितः कफविनाशकः । पित्तश्रमतृषादाहमेहवातविनाशकः ॥ हृद्रोगं पाण्डुरोगं च विषबाधां क्षतक्षयम् । मेदोवृद्धिं रक्तदोषं घर्म्मं श्वास क्षत तथा ॥ भस्मरोग नाशयति पूर्वैरिति निरूपितम् ॥ (नि०र०)

अर्थ-अर्जुन-कषेला, उष्ण, मधुर, शीतल, कान्तिजनक, बलकारक, हलका, वणशोधक, तथा, अस्थिभंग, अस्थिसंहार, कफ, पित्त, श्रम, तृषा दाह, प्रमेह, हृदयरोग, पाण्डुरोग, विषबाधा, क्षतक्षय, मेदवृद्धि, रुधिरविकार, पसीना, श्वास, क्षत और भस्मरोगको नाश करे है।

विवरण-अर्जुनके वृक्ष बडे २ लम्बे और ऊँचे २ वनोमे होतेहैं, इसके पत्ते लम्बे और गोल अनीदार होतेहैं, इसकी छाल सफेद रंगकी होतीहै और उसमे दूध निकलता है ।

री पुष्टिकृत्समुदीरिता ॥ तत्फलं कफवातार्शः कुष्ठारोचकनाशनम्।पुष्प चास्य कफ वातमर्शःकुष्ठारुचीर्जयेत्॥(रा०नि०)

अर्थ-शालई-कषेली, शीतल तथा कफ, पित्त, अतिसार, रक्तपित्त और व्रणको दूर करैहै तथा पुष्टिकारक है । इसका फल-कफ, वात, बवासीर कोढ और अरुचिको दूर करे है । इसका फूल-कफ, वात, बवासीर, कोढ और अरुचिको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

वृक्षस्तु शल्लकीसञ्ज्ञः पुष्टिकारी कषायकः । शीतवीर्य्यश्च मधुरस्तिक्तो ग्राह्यस्त्रिदोषनुत् ॥ व्रणदोष कफं वातं पित्त चार्शं च नाशयेत् । पक्वातिसारकुष्ठश्च रक्तपित्तं विनाशयेत्॥ निर्य्यासोस्य मतो नाम्ना कुन्दुरुः सुज्ञभाषितः ॥ (नि० र०)

अर्थ-शालई-पुष्टिकारक, कषेली,शीतवीर्य्य, मधुर,कडवी,मलरोधक तथा रुधिरविकार,व्रण,कफ,वात,पित्त,बवासीर,पक्वातिसार, कोढ और रक्तपित्तका नाश करैहै । इसके गोंदको विद्वान् कुन्दुरु कहतेहै ।

विवरण-सल्लकी अर्थात् सालईका बहुत बडा वृक्ष होताहै, पत्ते नीमके समान होतेहै,फलमे तीन रेखा होतीहै, इसीवृक्षका गोंद, कुन्दरु होताहै ।

अर्जुननामानि ।

अर्ज्जुनः फाल्गुनः पार्थश्चित्रयोधी धनंजयः ।
वैरांतकः किरीटी च नदीसर्जोंथ पांडवः ॥

अर्थ-अर्ज्जुन, फाल्गुन,पार्थ,चित्रयोधी,धनजय,वैरान्तक,किरीटी, नदीसर्ज्ज,पाडव(वीरतरु, इन्द्रद्रु ककुभ, इन्द्रद्रुम, शम्बर, गाण्डीवी, कर्णारि,करवीरक,कौन्तेय,इन्द्रसूनु,गण्डीरी,शिवमल्लक,सव्यसाची, वीरद्रु, कृष्णसारथि, पृथाज, धन्वी, वीर, वीरवृक्ष, धवल) ।

संस्कृतभाषामे	अर्जुन ।
हिन्दीभाषामे	कोह, कौह ।
बगलाभाषामे	अर्जुनगाछ
मराठीभाषामे	सारढोल ।
गुजरातीभाषामे	कडायो
तैलङ्गीभाषामे	मद्दिचे ।

कर्णाटकीभाषामें	तारेमात्ति ।
लैटिनभाषामें	स्टर्क्युलियायुरेन्स ; Stereulia urens

अस्य गुणाः ।

ककुभः शीतलो भग्नक्षतक्षयविषास्रजित् ।
मेदोमेहव्रणान्हन्ति तुवरः कफपित्तहृत् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ–अर्जुन–शीतल, कषेला, तथा भग्न, क्षत, क्षय, विष, रुधिर-विकार, मेद, प्रमेह, व्रण और कफपित्तको दूर करेहैं ।

अन्यच्च ।

अर्जुनस्तु कषायोष्णः कफघ्नो व्रणशोधनः ।
पित्तश्रमतृषार्तिघ्नो मारुतामयकोपनः ॥ (रा०नि०)

अर्थ–अर्जुन–कषेला, गरम, कफनाशक, व्रणशोधक, तथा पित्त, श्रम और तृषानिवारक है एवं वातरोगको कुपित करेहै ।

अन्यच्च ।

पार्थः पथ्येक्षते भग्ने रक्तस्तम्भनकृच्छ्रयोः (रा नि)

अर्थ–अर्जुन–क्षत, भग्न, रक्तस्तम्भ और मूत्रकृच्छ्ररोगमे हितकारी है।

अपिच ।

अर्जुनस्तुवरश्चोष्णो मधुरः शीतलः स्मृतः। कान्तिदो बलकृच्चैव लघुर्व्रणविशोधकः॥ अस्थिभग्नास्थिसंहारे हितः कफविनाशकः । पित्तश्रमतृषादाहमेहवातविनाशकः॥ हृद्रोगं पाण्डुरोगं च विषबाधां क्षतक्षयम् । मेदोवृद्धिं रक्तदोषं घर्म्मं श्वासं क्षतं तथा॥ भस्मरोगं नाशयति पूर्वैरिति निरूपितम्॥(नि०र०)

अर्थ–अर्जुन–कषेला, उष्ण, मधुर, शीतल, कान्तिजनक, बलकारक, हलका, व्रणशोधक, तथा, अस्थिभग्न, अस्थिसंहार, कफ, पित्त, श्रम, तृषा दाह, प्रमेह, हृदयरोग, पाण्डुरोग, विषबाधा, क्षतक्षय, मेदवृद्धि, रुधिरविकार, पसीना, श्वास, क्षत और भस्मरोगको नाश करे है।

विवरण–अर्जुनके वृक्ष बडे २ लम्बे और ऊँचे २ वनोंमे होतेहैं, इसके पत्ते लम्बे और गोल अनीदार होतेहैं, इसकी छाल सफेद रंगकी होतीहै और उसमे दूध निकलता है ।

असननामानि ।

बीजकः पीतसारश्च पीतसालक इत्यपि ।
बन्धूकपुष्प. प्रियकः सर्ज्जकश्चासनः स्मृतः ॥

अर्थ-बीजक,पीतसार, पीतसालक, बन्धूकपुष्प, प्रियक, असन, (पीतशाल, पीतशालक, पीतसाल, परमायुध, महासर्ज,सौरि,बधूकपुष्प, बीजवृक्ष, नीलक, प्रियसालक, असन)

संस्कृतभाषामें	असन, बीजक, पीतसाल ।
हिन्दीभाषामें	आसन, विजयसार, विजयसारका गोंद ।
बंगभाषामें	पियाशाल ।
मराठीभाषामें	बिवला, बिवलयाचा गोंद ।
गुजरातीभाषामें	बीयो, हीरादखण, बीयानो गुंद ।
कर्णाटकीभाषामें	केपिन्नहोने ।
तैलिङ्गीभाषामें	माद्दि ।
द्र०	अइन ।
इंग्रजीभाषामें	इन्डियन् किनोट्री । Indian Kinotree
लैटिन्भाषामें	टेरोकार्पस मार्सुपियम । Pterocarpus Marsupium
फारसीभाषामें	कमरकस् ।

असनगुणाः ।

असनः कटुरुष्णश्च तिक्तो वातार्तिदोषनुत् ।
सारको गलदोषघ्नो रक्तमण्डलनाशनः ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ-असन (विजयसार)-चरपरी,गरम,कडवी, वातार्तिदोषनाशक, सारक, गलरोगनिवारक और रक्तमण्डलनाशक है ।

अन्यच्च ।

बीजकः कुष्ठवीसर्पश्वित्रमेहगुदकृमीन् ।
हन्ति श्लेष्मास्रपित्तं च त्वच्यः केश्यो रसायनः॥ (भा प्र)

अर्थ-विजयसार-कोढ, विसर्प, श्वित्रकुष्ठ, प्रमेह, गुदाके रोग, कृमी, कफ और रक्तपित्तका नाश करे है, त्वचा और केशोको हितकारी तथा रसायन है ।

अस्य पुष्पगुणाः ।

असनस्य तु पुष्पाणि विपाके मधुराणि च ।

तिक्तानि पाचनीयानि वातलानि भवन्ति हि ॥

अर्थ-विजयसारके फूल-पचनेमे मधुर,कडवे,पाचक और बादीहै।

विवरण-असन अर्थात् विजयसारके वृक्ष वनोमे बहुत वडे २ होते है । पत्ते पीपलके पत्तोसे कुछ २ छोटे होते है, फल पहिले आमलेके समान होते है इसकी लकडी कालापन लिये होती है ।

खदिरनामानि ।

खदिरो रक्तसारश्च गायत्री दन्तधावनः ।
कण्टकी बालपत्रश्च बहुशल्यश्च याज्ञिकः ॥

अर्थ-खदिर, रक्तसार, गायत्री, दन्तधावन, कण्टकी, बालपत्र, वहुशल्य, यांज्ञिक, (बालतनय, पथिद्रुम, तिक्तसार, कण्टकीद्रुम, प्रसख, युपद्रु, चालपुत्र, कर्कटी, जिह्मशल्य, कुष्ठहृत्, बालपत्रक, युपद्रुम, खद्यपत्री, क्षितिक्षम, सुशल्य, वक्रकण्टक, यज्ञांग, जिह्मशल्य, सारद्रुम, कुष्ठारि, वहुसार, मेध्य)

श्वेतखदिरनामानि ।



खदिरः श्वेतसारोऽन्यः कदरः सोमवल्कलः ।

अर्थ-खदिर, श्वेतसार,कदर, सोमवल्कल, (सोवमल्क, ब्रह्मशल्य, खदिरोपम, कार्म्मुक, कुजकण्टक, सोमसार, सोमवृक्ष, पथिद्रुम, श्यामसार, नेमिवृक्ष, कण्टाढ्य, महावृक्ष, द्विजप्रिय)

संस्कृतभाषामे	खदिर, श्वेतखदिर ।
हिन्दीभाषामें	खैर, सफेदखैर पपडियाखैर (कत्था) ।
वंगभाषामे	खयेरगाछ, पापरीखयेरगाछ ।
मराठीभाषामे	खैर, पांढराखैर ।
गुजरातीभाषामे	खैरियो, गोरड ।
कर्णाटकीभाषामे	केपिनखैर विलियतार्त्रि ।
तैलिङ्गीभाषामे	चंडचेट्टु, खाम्रु तेल्लचंड ।
लैटिन्भाषामे	एकेश्याकेटेच्यु । Acacia catechu

खदिरगुणा ।

खदिरः शीतलो दन्त्यः कण्डूकासारुचिप्रणुत् ।
तिक्तः कषायो मेदोघ्नः कृमिमेहज्वरव्रणान् ॥
श्वित्रशोथामपित्तास्रपाण्डुकुष्ठकफान्हरेत् । (भा० प्र०)

अर्थ-खैर-शीतल, दांतोंको दृढ करनेवाली, कडवी, कषेली तथा कण्डू, खाँसी, अरुचि, मेद, कृमि, प्रमेह, ज्वर, व्रण, श्वित्रकुष्ठ, शोथ आम, रक्तपित्त, पाण्डुरोग, कुष्ठ, और कफको दूर करनेवाली है ।

श्वेतखदिरगुणा ।

कदरो विशदो व्रण्यो मुखरोगकफास्रजित् ।
"हन्ति कण्डूविषश्लेष्मकृमिकुष्ठव्रणग्रहान्" ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-सफेद खैर-विशद, व्रणको हितकारी तथा मुखरोग, कफ, रुधिरदोष, कण्डू, विष, श्लेष्म, कृमि, कोढ, व्रण और ग्रहबाधाको हरे है ।

अन्यच्च ।

श्वेतस्तु खदिरस्तिक्तः कषायः कटुरुष्णकः ।
कण्डूतिकुष्ठभूतघ्नः कफवातव्रणापहः ॥ (रा० नि०)

अर्थ-सफेद खैर-कडवी, कषेली, चरपरी, गरम, तथा कण्डू, कुष्ठ, भूतबाधा, कफ, वात, और व्रणको दूर करनेवाली है ।

अथ निर्य्यासादिगुणा ।

निर्य्यासस्तस्य मधुरो बल्यः शुक्रविवर्द्धनः ।
सारस्तु विशदो व्रण्यो मुखरोगकफास्रजित् (म०वि०)

अर्थ-इसका गोंद-मधुर, बलकारक, शुक्रवर्द्धक, इसका सार विशद व्रणको हितकारी तथा मुखरोग, कफ औररुधिरके दोषोको दूरकरेहै ।

खदिरसारनामानि ।

खादिरः खदिरोद्भूतस्तत्सारो रंगदः स्मृतः ।

अर्थ-खादिर, खदिरोद्भूत, रंगद (अद्भुतसार, रंग, सत्सार, खदिरशर्करा)

संस्कृतभाषामें	खदिरसार ।
हिन्दीभाषामें	खैरसार, कत्था ।
बंगभाषामें	खयेर ।

मराठीभाषामे खैराचा साड, नार, कात ।
गुजरातीभाषामे खैरसार, काथो ।
कर्णाटकीभाषामे काथ ।
इंग्रेजीभाषामे केटेच्यु । Catechu
लेटिन्भाषामे केटेच्युएक्स्ट्राकुटं । Gareebneytraeninm
फारसीभाषामे कात ।
अरबीभाषामे कात ।

अस्य गुणाः ।

खादिरस्तुवरोष्णश्च तिक्तो रुचिकरो मतः। अग्निदीप्तिकरो ग्राही दतदार्ढ्यकरो मतः ॥ कटुकः कफवातानां व्रणस्य च विनाशकः। कण्ठरोगं सर्वमेहं कृमीन्मुखरुज तथा ॥ अष्टादशैव कुष्ठानि स्थौल्यं चार्शं च नाशयेत् ।

अर्थ-खादिरसार तथा कत्था-कषेला, गरम, कडवा, रुचिकारक, अग्निप्रदीपक, मलरोधक, दांतोंको दृढ करनेवाला, चरपरा तथा कफ, वात, व्रण, कण्ठरोग, सर्वप्रकारके प्रमेह, कृमि, मुखरोग, अठारह १८ प्रकारके कोढ, शरीरकी स्थूलता और बवासीरको दूर करेहै ।

विट्खदिरनामानि ।

इरिमेदो विट्खदिरः कालस्कन्धोऽरिमेदकः ।

अर्थ-इरिमेद, विट्खदिर, कालस्कन्ध, अरिमेदक (विट, इरिमेद, अहिमेद, क्रिमिशात्रव, गिरिमेद, मरुद्रुम, रिमेद, गोधास्कन्ध, अहिमार, प्रतिभेद, अहिमेदक)

संस्कृतभाषामे अरिमेद् ।
हिन्दीभाषामे दुर्गंधिखैर ।
बगभाषामे गुयेबाब्ला, विट्खयेर ।
मराठीभाषामे शेण्याखैर, गांधयाहिवर, घाणेरा खैर ।
गुजरातीभाषामे इरिमेद, गन्धिलोखेर ।
इंग्रेजीभाषामे स्पजट्री Sponge tree
लेटिन्भाषामे एकेशिया फारनेशीयाना । Acacia Farneisiana

अस्य गुणाः ।

इरिमेदः कषायोष्णो मुखदन्तगदास्रजित् ।

हन्ति कण्डूविषश्लेष्मकृमिकुष्ठविषव्रणान् ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-दुर्गंधखैर-कषेली, गरम तथा मुखरोग, दन्तरोग, रुधिरविकार, कण्डू, विष, कफ, कृमि,कोढ, विष और व्रणको दूर करेहै।

अन्यच्च।

अरिमेदः कषायोष्णस्तिक्तको भूतनाशनः ।
शोफातिसारकासघ्नो विषवीसर्पनाशनः ॥ (रा० नि०)

अर्थ-दुर्गंधखैर-कषेला, गरम, कडवा, भूतनाशक तथा सूजन, अतिसार, खांसी, विषविकार और विसर्पको हरनेवाला है ।

अस्य निर्य्यासगुणाः ।

अरिमेदस्य निर्य्यासो मधुरस्तु बलप्रदः ।
धातुवृद्धिकरश्चैव मुनिभिः सम्भाषितः ॥ (नि० र०)

अर्थ-अरिमेदका गोद-मधुर, बलवर्द्धक और धातुवर्द्धक है ।

लघुखदिरगुणाः ।

लघुस्तु खदिरः प्रोक्तस्तिक्तोष्णश्च कषायकः । कटुस्तीक्ष्णश्च अम्लश्च रूक्षः कृमिकफापहः ॥ मुखरोगं दन्तरोगं रक्तदोषं प्रमेहकम् । मदं कण्डूं विसर्पं च वस्तिरोगं विषज्वरम् ॥ पिशाचबाधामुन्मादं कुष्ठं दाहं व्रणं तथा । आध्मानं नाशयत्येव फलं चास्य मधु स्मृतम् । स्निग्धं कटूष्णमत्तं च कफवातविनाशकम् ।

अर्थ-लघुखैर-कडवा, गरम, कषेला, चरपरा, तीक्ष्ण, अम्ल, रूखा तथा कृमि, कफ, मुखरोग, दंतरोग, रुधिरविकार, प्रमेह, मद, कण्डू, विसर्प, वस्तिरोग, विषमज्वर, पिशाचबाधा, उन्माद, कोढ, दाह, व्रण और आध्मानको दूर करे है । इसके फल-मधुर, स्निग्ध, चरपरे, गरम तथा कफ और वातविनाशक है ।

वल्लीखदिरगुणाः ।

वल्लीखदिरकस्तिक्तः कटुश्चोष्णः कषायकः ।
रसेऽम्लः श्वासकासघ्नः पित्तरक्तत्रिदोषजित् ॥ (नि० र०)

अर्थ-वल्लीखैर-कडवा, चरपरा, गरम, कषेला, खट्टा तथा श्वास, खाँसी पित्त, रक्तविकार और त्रिदोषनाशक है ।

विवरण । खैरके वृक्ष बनमे बडे २ होते है, इसकी छाल खरदरी और चटकी हुई होतीहै, इसके पत्ते आमलेकेसे छोटे २ होतेहैं, इस पर महीन २ और टेढे २ कांटे होतेहैं, खैरसार और कत्था यह भी खैरहीकी लकडीका बनाया जाताहै, दूसरे सफेद खैर और दुर्गंधित खैरके वृक्ष वनमे बहुत होते है ।

रोहीतकनामानि ।

रोहीतको रोहितकश्च रोहितः कुशाल्मली दाडिमपुष्पसंज्ञकः ॥
सदाप्रसूनः स च कूटशाल्मलिर्विरोचनःशाल्मलिको नवाह्वयः ।

अर्थ-रोहीतक, रोहितक, रोहित, कुशाल्मली, दाडिमपुष्पसंज्ञक, सदाप्रसून, कूटशाल्मलि, विरोचन, शाल्मलिक, (रक्तपुष्प, सदापुष्प, रक्तघ्न, प्लीहनाशन, प्लीहघाती, रुच्य, रक्तप्रसादन, रोही, प्लीहशत्रु, दाडिमपुष्पक, प्लीहघ्न, मासदलन, यकृद्वैरी, चलच्छद, प्लीहारि, रोहितेय, रोहिण)

श्वेतरोहीतकनामानि ।

सप्ताह्वः श्वेतरोहीतः सितपुष्पः सिताह्वयः ।
सितांगः शुक्ररोहीतो लक्ष्मीवाञ्जनवल्लभः ॥

अर्थ-सप्ताह्व, श्वेतरोहीत, सितपुष्प, सिताह्वय, सितांग शुक्ररोहीत, लक्ष्मीवान्, जनवल्लभ (क्षारयोग्य, लक्ष्मी, सर्वजनप्रिय)

संस्कृतभाषामे	रोहितक, कूटशाल्मली, श्वेतरोहितक ।
हिन्दीभाषामे	रोहेडा ।
वंगभाषामे	रोढा, रयना, नयना, कडार ।
मराठीभाषामे	रक्तरोहिडा ।
गुजरातीभाषामे	रगतरोहिडो, श्वेतरोहिडो ।
कर्णाटकीभाषामे	यरडुमल, मुत्तलू ।
तैलिङ्गीभाषामे	मुलुमोदुगचेट्टु ।
लैटिन्भाषामे	टेकोमा अण्डुलेटा । Tecoma undulata

रोहीतको यकृत्प्लीहगुल्मोदरहरः परः (रा० व०)

अस्य गुणा ।

अर्थ-रोहेडा-यकृत, प्लीहा गुल्म और उदररोग नाशक है ।

अ यच्च ।

रोहीतकौ कटुस्निग्धौ कषायौ च सुशीतलौ ।

कृमिदोषव्रणप्लीहारक्तनेत्रामयापहौ ॥

अर्थ-दोनो प्रकारके रोहेडे-चरपरे, स्निग्ध, शीतल, कषैले तथा कृमिरोग, व्रण, प्लीहा, रक्तविकार और नेत्ररोगोको दूर करे है ।

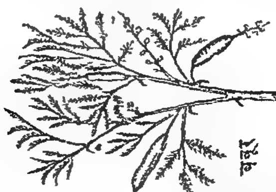
अपिच ।

रोहीतकद्वय स्निग्ध तुवर कटुक मतम् । रक्तप्रसादनं तिक्तं शीतलं च सर मतम् ॥ कृमिप्लीहारक्तदोषव्रणकर्णरुजापहम् । विषं नेत्ररुजं गुल्मयकृत्कफविनाशनम् ॥ वातं विबन्धं मांसं च मेद शूलं च नाशयेत् । आनाह भूतबाधां च नाशयेदिति कीर्तितम् ॥ (नि० र०)

अर्थ-दोनो प्रकारके रोहेडे-स्निग्ध, कसैले, चरपरे, रक्तप्रसादक कडवे, शीतल, सारक तथा कृमि, प्लीहा, रुधिरविकार, व्रण, कर्णरोग, विष, नेत्ररोग, गुल्म, यकृत, कफ, वात, विबन्ध, मांस मेद, शूल, आनाह और भूतबाधाको दूर करे है ।

विवरण।रोहिडेके वृक्ष बनोंमें अधिक होते है, फूल अनारकी समान होता है, लाल और सपेद इन फूलोंके भेदसे रोहेडकी दो जाति है, राजनिघण्टुमे लाल रोहिडे और कूटशाल्मलीके एकत्र नाम तथा गुण लिखे है और शोढलनिघटुमेंभी कूटशाल्मली और लाल रोहिडा एकही लिखा है, किन्तु भावप्रकाशमे लाल रोहिडा और कूटशाल्मली भिन्न २ लिखे है और गुण भी अलग २ लिखे हैं सो भावप्रकाशसे कूटशाल्मलीके नाम और गुण आगे लिखे है ।

बबूरनामानि ।



मालाफलोथ बब्बूलो युग्मकण्टो दृढारुहः ।
कण्टकी सूक्ष्मपत्रश्च पीतपुष्पः कषायकः ॥

अर्थ-मालाफल,ववूल,युग्मकण्ट,दृढारुह,कण्टकी, सूक्ष्मपत्र, पीतपुष्प,कषाय, (किंकिरात्त,किंकिराट,युगलाक्ष,कण्टलु, तीक्ष्णकण्टक, गोशृंग, पंक्तिबीज, दीर्घकंटक, कफान्तक, दृढबीज, अजभक्ष, कण्टल, बब्बूल, बब्बोल, वावल, स्वर्णपुष्प, पीतक)

संस्कृतभाषामें	वर्बूर, बब्बूल।
हिन्दीभाषामे	ववूर, कीकर, २ ववूरका गोंद।
वंगभाषामे	वावगालाछ।
मराठीभाषामे	बाभूळ, बाबूळ, कीकर, २ बाभळीचा गोंद
गुजरातीभाषामे	बावल।
कर्णाटकीभाषामे	पुलई।
तैलिङ्गीभाषामे	बलवंतडु, नल्लतुम्म।
औत्क०	गुइवा।
वम्०	रोमकाडि।
तामिलीभाषामे	कलिकिकर।
इंग्रेजीभाषामें	एकश्याट्री। Acacia tree
	गम् आरेबीक Gum Arabic
लैटिनभाषामे	एकेश्या आरेबीका Acacia Arabica
	एकेश्या गम्मि। A Gummi
फारसीभाषामे	मुगिला २ गोन्।
अरबीभाषामे	अमुगिला २ सिमग।

अस्य गुणाः।

वर्बुरस्तु कषायोष्णः कफकासामयापहः।
आमरक्तातिसारघ्नः पित्तदाहार्शनाशनः॥ (रा० नि०)

अर्थ-बबूर-कषैला, गरम तथा कफ, खाँसी, आम, रक्तातिसार, पित्त, दाह और ववासीरको दूर करे है।

अन्यच्च।

बब्बूलः कफनुद्ग्राही कुष्ठक्रिमिविषापहः। (भा० म०)

अर्थ- बब्बूल-कफनाशक, मलरोधक तथा कोढ, कृमि और विषविनाशक है।

अपिच।

बब्बूलस्तिक्तमधुरः स्निग्ध- शीतोष्णतुवरः। आमरक्ताति-

साराणां नाशनो ग्राहको मतः ॥ कफ कासं च पित्तं च दाहं रक्तातिसारकम् । वातं प्रमेहं शमयेत्पर्णन्तु ग्राहकं मतम् ॥ रुच्यं कटूष्णकासघ्नं वातपुंस्त्वकफार्शनुत्॥ (नि०र०)

अर्थ–बबूर–कडवा, मधुर, स्निग्ध, शीतल, गरम, कषेला, मलरोधक तथाआम,रक्तातिसार, कफ, खाँसी, पित्त, दाह, वात, और प्रमेहको दूर करे हैं इसके पत्ते–मलरोधक, रुचिकारक, चरपरे, गरम तथा खांसी, वात, पुरुषत्ता, कफ और बवासीरको हरे हैं ।

अस्य फलगुणाः ।

"बब्बूलस्य फलं रूक्षं विशदं स्तम्भनं गुरु ।
कषायं मधुरं शीतं लेखनं कफपित्तहृत् ॥"(भावप्रकाश)

अर्थ- बबूरकी फली–रूखी, विशद, मलस्तम्भक, भारी, कषैली, मधुर, शीतल, लेखन तथा कफ और पित्तनाशक है ।

अस्य निर्य्यासगुणाः ।

बब्बूलस्य तु निर्य्यासो ग्राही पित्तानिलापहः ।
रक्तातिसारपित्तास्रमेहप्रदरनाशनः ।
भग्नसन्धानकः शीतः शोणितस्रुतिवारणः ॥ (आ०सं०)

अर्थ–बबूरका गोंद–मलरोधक, पित्त और वातनाशक तथा रक्तातिसार, रक्तपित्त, प्रमेह और प्रदरको दूर करे है । भग्नसन्धानकारक, शीतल और रुधिरके गिरनेको बंद करे है ।

विवरण–बबूरके बहुतसे वृक्ष जलाशयके समीप जंगलादिमें एकत्र उपज खडे होतेहैं, इसमें सुईके समान महातीक्ष्ण काँटे होतेहैं और वे काँटे दो दो एकत्र खडे होतेहैं । पत्ते बहुत छोटे २ आमलेकेसे होतेहैं, फूल पीले रंगके गोल २ लगतेहैं, उसमें मिर्चके सदृश टेढी २ फली होती है ।

अरिष्टकनामानि ।

अरिष्टकस्तु माङ्गल्यः कृष्णवर्णोऽर्थसाधनः ।
रक्तबीजः पीतफेनः फेनिलो गर्भपातनः ॥

अर्थ–अरिष्टक, माङ्गल्य, कृष्णवर्ण, अर्थसाधन, रक्तबीज, पीतफेन, फेनिल, गर्भपातन, (रीठा, गुच्छफल, अरिष्ट, मंगल्य कुम्भबीजक, प्रकीर्य्य, सोमवल्कल)

संस्कृतभाषामे	अरिष्टक ।
हिन्दीभाषामे	रीठा ।
बंगभाषामे	रिटेगाछ ।
मराठीभाषामे	रिठा ।
गुजरातीभाषामे	अरिठा ।
तैलिंगीभाषामे	कुकुड ।
इंग्रेजीभाषामे	सोपबेरी सोपनट्ट । Soap berri Soap nut
लैटिन्भाषामे	सेपिंस्स इमार्जिनटस् । Sapintus emarginatus
	सेपिडस् ट्रिफोलियेटस् । S Trifoliatus
फारसीभाषामें	फिद्कहिंदी ।
अरबीभाषामे	बुंदक ।

अस्य गुणाः ।

अरिष्टकस्त्रिदोषघ्नो ग्रहजिद्गर्भपातनः । भा० प्र०)

अर्थ-रीठा-त्रिदोषनाशक,ग्रहविनाशक और गर्भको गिरानेवालाहै।

अन्यच्च ।

अरिष्टकः कटुःपाके तीक्ष्णोष्णो लेखनो गुरुः । दोषत्रयहरो गर्भपातनो गर्भशान्तिकृत्॥तज्जलं वामक पानान्नस्याच्छीर्ष-रुजापहम् । अर्धशीर्षव्यथां हन्ति वमनाद्विषनाशनम् ॥

अर्थ-रीठा-पचनेमे चरपरा, तीक्ष्ण, गरम, लेखन, भारी, त्रिदोषनाशक, गर्भको गिरानेवाला तथा गर्भको शान्ति करनेवाला है। इसके जलको पीनेसे वमन होताहै और वमनसे विष दूर होताहै । इसके जलका नास लेनेसे मस्तकरोग और आधासीसी दूर होतीहै।

विवरण । रीठेके वृक्ष-वन और उपवनोमे होतेहैं, पत्ते रीठेके एक डंडीमे ६।७ लगे होतेहै,फल झुमखोमे आतेहै । रीठेके झागोसे वस्त्र धोतेहै ।

पुत्रजीवनामानि ।

पुत्रजीवः पवित्रश्च गर्भदः सुतजीवकः ।
पुत्रजीवोपत्यजीवः सिद्धिदोपत्यजीवकः ॥

अर्थ-पुत्रजीव, पवित्र, गर्भद, सुतजीवक, पुत्रजीव, अपत्यजीव, सिद्धिद, अपत्यजीवक, (गर्भकर, जीवपुत्रक, श्लीपदापह, कुमारजीव, यष्टीपुष्प, अर्थसाधक)

संस्कृतभाषामें	पुत्रजीव ।
हिन्दीभाषामें	जियापोता,पानेजिया,जियापति,पितोजिया
बंगभाषामें	जियापुँता, पुतजिया ।
मराठीभाषामें	पुत्रजीववृक्ष ।
गुजरातीभाषामें	पुत्रजीवक ।
कर्णाटकीभाषामें	पुत्रजीव ।
तैलिङ्गीभाषामें	शीश, कुँश्रजुवि ।
लैटिन्भाषामें	पुत्रजीवा राक्सबुर्घिआई । Putrjiva Roxburghii

अस्य गुणाः ।

पुत्रजीवो गुरुर्वृष्यो गर्भदः श्लेष्मवातकृत्।
सृष्टमूत्रमलो रूक्षो हिमः स्वादुः कटुः पटुः ॥(भा०प्र०)

अर्थ-जीयापोता-भारी,वीर्य्यवर्द्धक,गर्भदायक, कफवातकारक, मलमूत्रको करनेवाला,रूखा,शीतल,स्वादिष्ठ,चरपरा और खारा है।

अन्यच्च ।

पुत्रजीवो हिमो वृष्यः श्लेष्मदो गर्भजीवदः ।
चक्षुष्यः पित्तशमनो दाहतृष्णानिवारणः ॥(रा०नि०)

अर्थ-जीयापोता-शीतल, वीर्य्यवर्द्धक, कफकारक, गर्भ और जीवदायक, नेत्रोंको हितकारी, पित्तको शान्त करनेवाला तथा दाह और तृषाको हरनेवाला है ।

विवरण । पुत्रजीवक अर्थात् पतिजियाके वृक्ष सम्पूर्ण इंगुदीके वृक्षके समान होते हैं, पत्तेभी उसी आकारके, फलभी उसी आकारके होतेहैं,और इसके बीजोंकी माला रुद्राक्षकी तुल्य बनती है, प्रायः साधु लोग बहुत बनालेतेहैं ।

इंगुदीनामानि ।

इंगुदोऽङ्गारवृक्षश्च तिक्तकस्तापसद्रुमः ॥

अर्थ-इंगुद, अङ्गारवृक्ष,तिक्तक, तापसद्रुम (भद्रकाष्ठिक, इंगुदी, कण्टक,पुत्रिपत्रा, तापसतरु, इगुल, हिंगुपत्र, विपक्कंटक, अनिलान्तक, गौरत्वक, तनुपत्र, शलारि, विषकण्टक, तीक्ष्णकण्ट, तैलफल, पूतिगन्ध, विगन्धक, कोष्ठफल, तिक्तमज्ज, कृशरक, जलजन्तुविनाशक, दीर्घकण्टा,तैलबीजा,दारुणफला और अंगुलिदला)

संस्कृतभाषामें इगुदी ।
हिन्दीभाषामे हिंगोट, गोंदी ।
वंगभाषामे जियापुता, इङ्गोट ।
मराठीभाषामे हिंगणबेट ।
गुजरातीभाषामे इंगोरियो ।
तैलिङ्गीभाषामे गरा ।
इंग्रेजीभाषामे डेलील । Dolil
लैटिन्‌भाषामे बेलेनाइटीस राक्सबुर्धिआई Balanites Roxburdhi
अरबीभाषामे हिलेलजे ।

अस्य गुणाः ।

इंगुदः कुष्ठभूतादिग्रहव्रणविषक्रिमीन् ।
हन्त्युष्णश्वित्रशूलघ्नस्तिक्तकः कटुपाकवान् ॥ (भा प्र)

अर्थ-हिंगोट-कोढ,भूतादिबाधा,ग्रहबाधा,व्रण,विष कृमि,श्वित्र। कुष्ठ और शूलको निर्मूल करे है। गरम, कडवा और पचनेमे चरपरा है

अन्यच्च ।

इगुदी कफरक्तामग्रन्थिघ्नी स्याद्व्रणे हिता ।
ऐंगुदं स्वादु तिक्तं च स्निग्धोष्णं श्लेष्मवातजित्॥(शो नि)

अर्थ-हिंगोट-कफ,रक्ताम,ग्रन्थि और व्रणविनाशक है। इसका फल स्वादिष्ठ,कडवा,स्निग्ध,गरम तथा कफ और वातविनाशक है ।

अपिच ।

इगुदीनामको वृक्षो मदगंधिः कटुर्लघुः। तिक्तश्चोष्णः फेनिलश्च प्रोक्तश्चैव रसायनः ॥ कृमीन्वातं विषं शूलं श्वित्रं कुष्ठं व्रणं कफम् । ग्रहपीडां भूतबाधां नाशयेदिति कीर्तितम् ॥ अस्य पुष्पन्तु मधुरं स्निग्धं चोष्णं च तिक्तकम् । वातं कफं नाशयतीत्येवमाचार्य्यभाषितम् ॥ (नि० र०)

अर्थ-हिंगोट-मदगन्धियुक्त,चरपरा,हलका कडवा,गरम,फेनिल, (झागोकोकरनेवाला) रसायन तथा कृमि, वात, विष,शूल, श्वित्र-कुष्ठ, व्रण, कफ,ग्रहपीडा और भूतबाधाको दूर करेहै । इसके फूल मधुर, स्निग्ध,गरम,कडवे तथा वात और कफका नाश करे है ।

अस्य फलमज्जागुणा ।

इगुद्याः फलमज्जको जलयुतो ले ो मुखे कान्तिदः।(वै जी)

अर्थ-इगुदीके फलकी मींगको, जल के साथ मुखमें लेप करनेसे मुखकी कान्ति बढती है ।

विवरण । इगुदीके बडे २ वृक्ष जंगल और वनोंमे उत्पन्न होतेहैं, इस वृक्षमे काटेभी होतेहैं, फूल नीबूके समान कुछेक लम्बे और गोल होते हैं, फलके ऊपर गुठलीके सदृश रस लगा रहताहै मानो फल रसम तर रहता है ।

जिङ्गिनीनामानि ।

जिङ्गिनी झिंगिनी झिंगी सुनिर्यासा प्रमोदिनी ॥

अर्थ-जिङ्गिनी, झिगिनी, झिङ्गी, सुनिर्य्यासा, प्रमोदिनी,(कुल मजरी, पार्वती)

संस्कृतभाषामे	जिगिनी ।
हिन्दीभाषामे	जिगिणी ।
मराठीभाषामे	मोई, मोक ।
गुजरातीभाषामे	मखेडी, मोलेडु ।
कर्णाटकीभाषामे	ओरिथ, मरम ।
लाटिन्भाषामे	ओडिनावोडियर । Odina wodier

अस्य गुणा ।

जिङ्गिनी मधुरा सोष्णा कपाया योनिशोधिनी ।
कटुका व्रणहृद्रोगवातातीसारहृत्पटुः ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-जिङ्गिनी-मधुर, गरम, कपेली, योनिशोधक,चरपरी तथा व्रण,हृदयरोग, वात और अतिसारको दूर करे हैं और नमकीन है।

अन्यच्च ।

जिंगिनी मुखदौर्गंध्यतृष्णावातकफापहा ।
कटुपाका जयेद्वातव्रणातीसारहृद्रुजः ॥ (सो० नि०)

अर्थ-जिङ्गिनी-मुखकी दुर्गन्धता, तृषा, वात, कफ, वातव्रण, अतिसार और हृदयरोगको दूर करे है, तथा पचनेमे चरपरी है ।

विवरण-जिगनीके बडे २ ऊचे वृक्ष जगल और पहाडोमे होतेहैं पत्ते मरुवेके समान शाखाओमे बराबर दोनो ओर लगे होते हैं, फूल सफेद और फल बेरके समान आतेहैं ।

तमालनामानि।

तमाल उक्तस्तापित्थः कालस्कन्धो मितद्रुमः।
लोकस्कन्धो नीलध्वजो नीलतालश्च स स्मृतः॥

अर्थ-तमाल, तापित्थ, कालस्कन्ध, अमितद्रुम, लोकस्कन्ध, नीलध्वज, नीलताल, (तापिञ्ज तापिच्छ, कृष्णस्कन्ध, तम, तमा, कालताल, महाबल)

संस्कृतभाषामे	तमाल।
हिन्दीभाषामे	स्यामतमाल।
वगभाषामे	तामालगाछ।
मराठीभाषामे	तमालवृक्ष।
गुजरातीभाषामे	तमाल।
तैलिङ्गभाषामें	तमालु।

अस्य गुणा।

तमालस्तुवरः शोथदाहविस्फोटहृत्पुनः॥ (म० नि०)

अर्थ-श्यामतमाल-कषेला, सूजन, दाह और विस्फोटनाशक है।

अन्यच्च।

कालस्कन्धश्च मधुरो बल्यो वृष्यो गुरुः स्मृतः।
धातुवृद्धिकरः शीतः श्रमदाहकफापहः।
पित्तशोथं च विस्फोटं पित्तं चैव विनाशयेत्॥(नि०र०)

अर्थ-स्यामतमाल-मधुर, बलवर्द्धक, वीर्य्यवर्द्धक, भारी, धातुवर्द्धक, शीतल तथा श्रम, दाह, कफ पित्तसे उत्पन्न हुआ शोथरोग विस्फोट और पित्तको दूर करे है।

विवरण-तमालके वृक्ष प्रायः यमुना और तापी नदीके निकट बहुत होतेहै, वृक्षकी मूल और शाखा श्यामरंगकी होतीहै, पत्ते गोल और शीशमकी सदृश और फूल लाल २ होतेहै और फल छोटे २ करौंदेके समान होते हैं।

तूणीनामानि।

तूणी तुन्नक आपीनस्तुणिकः कच्छकस्तथा।
कुठरकः कान्तलको नन्दीवृक्षश्च नन्दक॥

अर्थ-तूणी, तुन्नक, आपीन, तुणिक,कच्छक, कुठेरक, कान्तलक, नन्दीवृक्ष, नन्दक (तूणीक, पीतक, कच्छप, कान्त, नन्दी)

अस्य गुणाः ।

तूणीयकः कटुः पाके कषायो मधुरो लघुः ।
तिक्तो ग्राही हिमो वृष्यो व्रणकुष्ठास्रपित्तजित् (रा० नि०)

अर्थ-तूणी-पचनेमें चरपरी, कषेली, मधुर, हलकी, कडवी, मलरोधक, शीतल, वीर्य्यवर्द्धक तथा व्रण, कुष्ठ और रक्तपित्तको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

नन्दीवृक्षः कटुस्तिक्तः पीतस्तिक्तास्रदाहजित ।
शिरोर्तिश्वेतकुष्ठघ्नः सुगंधिः पुष्टिवीर्य्यदः ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-तून-चरपरी,कडवी,पीली,सुगंधि, पुष्टिकारक, वीर्य्यवर्द्धक तथा रक्तपित्त, दाह, शिरकी पीडा और श्वेतकुष्ठको दूर करे है ।

अपिच ।

तूणीवृक्षः कटुस्तिक्तःपुष्टिकृच्छीतलो लघुः । वीर्य्यप्रदश्च मधुरस्तुवरो ग्राहको मतः॥वृष्यस्त्रिदोषहृत्प्रोक्तो व्रणं कुष्ठं च नाशयेत् ॥ रक्तपित्तं श्वेतकुष्ठं शीर्षपीडां च नाशयेत् ॥ कण्डूं पित्तं रक्तदोषं दाहं चैव विनाशयेत् ॥ (नि० र०)

अर्थ-तून-चरपरी, कडवी, पुष्टिकारक, शीतल, हलकी, वीर्य्य-वर्द्धक, मधुर, कषेली, मलरोधक, वृष्य, त्रिदोषनाशक तथा व्रण,कुष्ठ रक्तपित्त, श्वेतकुष्ठ, शिरकी पीडा, कण्डू, पित्त, रुधिरविकार और दाहको दूर करे है ।

विवरण-तूनके बडे सघन वृक्ष जंगल और वनोंमे होतेहैं, पत्ते नीमके पत्तोंसे कुछेक बडे होतेहैं, फूल बहुत छोटे २ सफेद रंगके आतेहैं, लकडी इसकी बहुत उत्तम होती है ।

भूर्जपत्रनामानि।

भूर्जपत्र स्मृतो भूर्जश्चर्म्मी बहुलवल्कलः ॥

अर्थ-भूर्जपत्र,भूर्ज,चर्म्मी,बहुलवल्कल(सुचर्म्मा,छदपत्र,वल्कद्रुम, भूर्जपत्रक, चित्रत्वक्, बिन्दुपत्र, रक्षापत्र, विचित्रक, भूतघ्न, मृदुपत्र, मृदुचर्म्मी, शैलेन्द्रस्थ, चर्म्मद्रुम, छत्रपत्र, शिवि,स्थिरच्छद, मृदुत्वक्, दलनिर्म्मोक, पत्रकी, विग्रादल, पत्रपुष्पक, भुज, बहुपट, बहुत्वक्, मृदुच्छद)

संस्कृतभाषामे	भूर्ज्जपत्र ।
हिन्दीभाषामे	भोजपत्र ।
वगभाषामे	भूर्जिपत्र ।
मराठीभाषामे	भूर्जपत्र ।
गुजरातीभाषामे	भोजपत्र ।
कर्णाटकीभाषामें	भूर्जपत्र ।
इंग्रेजीभाषामे	जेक्वेमोटी । Jacque montu
लेटिन्भाषामे	बिट्युला भोजपत्रा । Betula bojaputra

अस्य गुणाः।

भूर्जो भूतग्रहश्लेष्मकर्णरुक्पित्तरक्तजित् ।
कषायो राक्षसघ्नश्च मेदोविषहरः परः ॥ (भा० प्र०)

अर्थ–भोजपत्र–भूत, ग्रह, कफ, कर्णरोग, रक्तपित्त, राक्षस, मेद और विषविनाशक है तथा कपेला है ।

अन्यच्च ।

भूर्जः कटुकषायोष्णो भूतरक्षाकरः परः ।
त्रिदोषशमनः पथ्यो दुष्टकौटिल्यनाशनः ॥
"पित्तरक्तरुजां हंता मंत्रकार्येषु सिद्धिदः" ।

अर्थ–भोजपत्र–चरपरा, कपेला, गरम, भूतबाधाको दूर करनेवाला, त्रिदोषको शान्त करनेवाला, पथ्य तथा दुष्ट,कुटिलता और रक्तपित्तको हरनेवाला है तथा मंत्रादि कार्य्योंमे सिद्धिदेनेवाला है ।

अन्यच्च

भूर्जो बल्यः कफास्रघ्नः । (राजवल्लभ)

अर्थ–भोजपत्र–बलकारक, कफनाशक और रुधिरके दोषोंको दूर करे है ।

विवरण । भोजपत्रके वृक्ष विशेषकरके हिमालयादि पर्वतोंमे उत्पन्न होते है, इस वृक्षकी छालकोही भोजपत्र कहते है, छाल कागज तथा सूखे केलेके पत्तेकी समान होती है, पहिले भोजपत्रका वस्त्रके स्थानमे व्यवहार किया जाता था भोजपत्रमे अनेक प्रकारके जत्र मंत्र लिखे जाते है ।

पलाशनामानि ।

पलाशः किंशुकः पर्णो याज्ञिको रक्तपुष्पकः ।

क्षारश्रेष्ठो वातपोथो ब्रह्मवृक्षः समिद्वरः ॥

अर्थ-पलाश, किंशुक, पर्ण, याज्ञिक, रक्तपुष्पक, क्षारश्रेष्ठ, वातपोथ, ब्रह्मवृक्ष, समिद्वर, (करक, त्रिपत्रक, ब्रह्मपादप, पलाशक, त्रिपर्ण, रक्तपुष्प, पूतद्रु, ब्रह्मवृक्षक, ब्रह्मोपनेता, काष्ठद्रु, बीजस्नेह, त्रिपर्ण, कृमिघ्न, वक्रपुष्पक, सुपर्णी)



संस्कृतभाषामे	पलाश ।
हिन्दीभाषामे	ढाक, टेसू, केसू, धारा, कांकरिया, पलाश ।
वंगभाषामे	पलाशगाछ ।
मराठीभाषामे	पळस ।
गुजरातीभाषामे	खाखरा ।
कर्णाटकीभाषामे	मुत्तलु ।
तैलङ्गीभाषामे	मादुकाचेट्टु ।
तामिलीभाषामे	परशन् ।
औत्कलीभाषामे	पराशु ।
इंग्रेजीभाषामे	डाउनीब्राच ब्युटिया । Downy branch butaa
लेटिन्भाषामे	ब्युटिया फ्रंडाझा (लाल) Butoufrondoza
	ब्युटिया पार्विफ्लोरा (धवल) B parviflora

अस्य गुणाः ।

पलाशो दीपनो वृष्यः सरोष्णो व्रणगुल्मजित् । भग्नसन्धानकृ-दोषग्रहण्यर्शःकृमीन्हरेत् ॥ कषायः कटुकस्तिक्तः स्निग्धो गुदरोगजित् । तत्पुष्प स्वादु पाके तु कटुतिक्तं कषायकम् ॥ वातलं कफपित्तास्रकृच्छ्रजिद्ग्राहि शीतलम् । तद्बीजदाहशमनं

वातरक्तकुष्ठहर परम् ॥ फलं लघूष्णं मेहार्शःकृमिवातकफाप-
हम्।विपाके कटुक रूक्षं कुष्ठगुल्मोदरप्रणुत्॥ (भा० प्र०)

अर्थ-ढाक-अग्निप्रदीपक, वीर्य्यवर्द्धक, सारक, गरम, कषेला, चरपरा,कडवा, स्निग्ध,टूटे हाडको जोडनेवाला तथा गुदजरोग, संग्रहणी,बवासीर, कृमि, व्रण और गुल्मको हरनेवाला है । इसके फूल-स्वादुपाकी, कटु, तिक्त, कषले,वातवर्द्धक तथा कफ,रक्तपित्त, मूत्रकृच्छ्र, वातरक्त और कुष्ठको नष्टकरेहैं. तथा शीतल, मलरोधक, तृषा और दाहको दूर करनेवाले हैं। इसके फल-हलके, गरम, पचनेमे चरपरे,रूखे तथा प्रमेह,बवासीर, कृमि, वात, कफ, कुष्ठ, गुल्म और उदररोगको दूरकरे है ।

अन्यच्च ।

पलाशस्तु कषायोष्णः कृमिदोषविनाशनः । तद्वीजं पामक-
ण्डूतिदद्रुत्वग्दोषनाशकृत्॥तस्य पुष्प च सोष्णं च कण्डूकु-
ष्ठार्त्तिनाशनम्।रक्तः पीतः सितो नीलः कुसुमैस्तु विभज्यते॥
किंशुकैर्गुणसाम्येपि सितो विज्ञानदः स्मृतः ।

अर्थ-ढाक-कषेला, गरम और कृमिदोषनाशक है। इसके बीज पामा, कण्डू,दाद और त्वचाके दोषोको दूर करेहै।इसके फूल-गरम तथा कण्डू और कुष्टको नष्टकरे है।टेसू-लाल,पीले,सफेद और नीले इन फूलोके भेदसे चार प्रकारका है, गुण तो चारोके समानही हैं, किन्तु सफेद फूलका अनेक प्रकारके विज्ञानदायक है ।

अन्यच्च

पालाशमूलस्वरसो नेत्रच्छायांध्यपुष्पजित् ।
तद्वीज कृमिविध्वंसि कांडो रसायने हितः ॥(शो०नि०)

अर्थ-पलाशकी जडका स्वरस-नेत्रच्छाया, रतोंधी और नेत्रके फूलोको दूर करे है।इसके बीज-कृमिनाशक है।इसकी कांड रसायनकर्म्ममे उत्तम है

अपिच ।

उष्णः पलाशस्तुवरो वृष्यो दीप्तिकरः सरः। तिक्तः स्निग्धो
ग्राहकश्च भग्नसन्धानकारकः ॥ व्रणगुल्मकृमिप्लीहासंग्रहण्य-

र्शवातहा॥कफं योनिरुजं पित्त नाशयेदिति कीर्त्तितम् । पुष्पभेदादय रक्तपीतशुभ्रकनीलकः ॥ पुष्पाणि स्वादुतिक्तानि उष्णानि तुवराणि च॥वातलानि ग्राहकाणि शीतलान्यूषणानि च । तृषादाहपित्तकफास्रक्तदोष च कुष्टकम् ॥ मूत्रकृच्छ्रं घातयन्ति फलं रुक्षं लघु स्मृतम्॥उष्ण च कटुकं पाके कफवातोदरकृमीन् ॥ कुष्टगुल्मप्रमेहार्शशूलाना चैव नाशकम् । फलबीज च स्निग्धोष्णं कटुकृमिकफाञ्जयेत् ॥नूतनाः पल्लवाश्चास्य कृमिवातविनाशकाः । (नि०र०)

अर्थ-ढाक-कषेला, गरम, वीर्य्यवर्द्धक, अग्निप्रदीपक, सारक, कडवा, स्निग्ध, मलरोधक, भग्नसन्धानकारक तथा व्रण, गुल्म, कृमि, प्लीहा, संग्रहणी, बवासीर, वात, कफ, योनिरोग और पित्तको दूर करे है । यह लाल, पीत, श्वेत और नील इन फूलोंके भेदसे चारप्रकारका है । इसके फूल-स्वादिष्ठ, कडवे, गरम, कषेले, वातवर्द्धक, मलरोधक, शीतल, चरपरे तथा तृषा, दाह, पित्त,कफ, रुधिरविकार, कुष्ठ और मूत्रकृच्छ्रको दूरकरे है । इसके फल-रूखे, हलके, गरम, पचनेमे चरपरे तथा कफ, वात, उदररोग, कृमि, कुष्ठ, गुल्म,प्रमेह, बवासीर और शूलको निर्मूल करेहै।इसके फलके बीज-स्निग्ध,गरम, चरपरे तथा कफ और कृमिका नाश करेहैं । इसके कोमल पत्ते-कृमि और वातका नाशकरे है ।

अस्य निर्यासगुणाः ।

पलाशभवनिर्य्यासो ग्राही च क्षपयेद्ध्रुवम् ।
ग्रहणीं मुखजान्कासाञ्जयेत्स्वेदातिनिर्गमम् (आ०स०)

अर्थ-ढाकका गोंद-मलरोधक तथा संग्रहणी, मुखरोग, खासी और पसीनेको दूरकरे है ।

विवरण । पलाश अर्थात् ढाकके बडेर वृक्ष प्राय-नदीकी तलेटी और जांगल प्रदेशमे होते है,पत्ते-गोल २ एक एक डडीमे तीन तीन आते हैं,प्रथम लाल निकलते है ।फिर हरे रगके होजाते है । फूलकी डडी काली और रग अत्यन्त सुन्दर, लाल रगके होते है। फली लम्बी २ लगती है, बीज गोल और चपटे निकलते है,उसके बीजोको ढकपन्ना कहते हे ।

हस्तिकर्णपलाशनामानि।

तद्भेदे स्यात्किशुलुकः किञ्चुलो हस्तिकर्णकः॥

अर्थ-इसका भेद हस्तिकर्ण है उसके नाम यह है किशुलुक, किंचुल और हस्तिकर्णक।

अस्य गुणा।

हस्तिकर्णः परं वृष्यो मेधायुर्बलवर्द्धनः॥ (रा०नि०)

अर्थ-हस्तिकर्णपलाश-अत्यन्त वीर्य्यवर्द्धक तथा मेधा, आयु और बलवर्द्धक है।

शाल्मलीनामानि।

शल्मलिः स्याच्छाल्मलिश्च शल्मली शाल्मली तथा॥

अर्थ-शल्मलि, शाल्मलि, शाल्मली, शल्मली (पिच्छला, पूरणी, मोचा, स्थिरायु, तूलिफला, दुरारोहा, शाल्मलिनी, शाल्मल, अपूरणी, निर्गन्धपुष्पी, तुलिनी, कुक्कुटी, रक्तपुष्पा, कण्टकारी, मोचनी, शीमूलु, कदला, चिरजीवी, पिच्छिल, रक्तपुष्पक, तूलवृक्ष, मोचाख्य, कण्टकद्रुम, कुकुटी, रक्तोत्पल, रम्यपुष्प, बहुवीर्य्य, यमद्रुम, दीर्घद्रुम, स्थूलफल, दीर्घायु, कण्टकाष्ठ, निस्सारा, दीर्घपादपा)

मोचरसनामानि।

निर्य्यासः शाल्मलेः पिच्छो शाल्मलीवेष्टकोपि च।
मोचस्रावो मोचरसो मोचनिर्य्यास इत्यपि॥

अर्थ-शाल्मलीनिर्य्यास, पिच्छ, शाल्मलीवेष्टक, मोचस्राव, मोचरस, मोचनिर्य्यास, (मोचसार, मोचश्रुत, मोचस्नुत, पिच्छिलसार, सुरस, मोचाक, शाल्मलि, मोचाढ, वेशमरस, शाल्मल)

संस्कृतभाषामें	शाल्मली, २ शाल्मलीनिर्य्यास, मोचरस।
हिन्दीभाषामें	सेमल [र] २ सेमरका गोंद, मोचरस।
वंगभाषामें	शिमुल, २ शिमुलेरआठा।
मराठीभाषामें	सांवरी, शेवरी २ सांवरीचा डीक।
गुजरातीभाषामें	शेमलो २ शेमलानो गुंद, मोचरस।
कर्णाटकीभाषामें	यवलवदमर।
तैलङ्गीभाषामें	रुगचेट्टु।
औत्कलीभाषामें	वोन्रो।

तामिलीभाषामे पुला ।
इंग्रेजीभाषामे सिल्ककाटनट्री Silkcottyn tree
लेटिनभाषामे बॉंबेक्समेलेबेरिकम् Bombaxmalabar.cum
सालमेलिया मेलबेरिका Salmaliya malabarica

शाल्मलीगुणा ।

शालमली शीतला स्वाद्वी रसे पाके रसायनी ।
श्लेष्मला स्निग्धवृष्या च बृंहणी रक्तपित्तजित् (भा०प्र०)

अर्थ-सेमल-शीतल, स्वादिष्ठ, पचनेमेंभी स्वादिष्ठ, रसायन, कफकारक, स्निग्ध, वीर्यवर्द्धक,पुष्टिकारक और रक्तपित्तनाशक है।

अन्यच्च ।

शालमली पिच्छला वृष्या बल्या मधुरशीतला ।
कषाया च लघुः स्निग्धा शुक्रश्लेष्मविवर्धिनी ॥(रा०नि०)

अर्थ-सेमल-पिच्छिल, वीर्य्यवर्द्धक, मधुर,शीतल, कषेला,हलका, स्निग्ध तथा शुक्र और कफवर्द्धक है ।

अपिच ।

शालमली मधुरा वृष्या बल्या च तुवरा मता ।शीतला पिच्छिला लघ्वी स्निग्धा स्वाद्वी रसायना ॥ शुक्रला श्लेष्मला चैव धातुवृद्धिकरी मता । रक्तपित्तं च पित्त च रक्तदोषं च नाशयेत् ॥ त्वग्रसोस्या ग्राहकः स्यात्तुवरः कफनाशनः । पुष्पन्तु शीतल पित्तं गुरु स्वादु कषायकम् ॥ वातलं ग्राहक रूक्षं कफपित्तविनाशकम् । रक्तदोपहर चैव गुणा ह्येते फलस्य च ॥ कन्दोस्या मधुरः शीतो मलस्तम्भकरो मतः । शोफं दाह च पित्त च सन्तापं चैव नाशयेत (नि० र०)

अर्थ-सेमल-मधुर, वीर्य्यवर्द्धक, बलकारक, कषेला, शीतल, पिच्छिल, हलका, स्निग्ध, स्वादिष्ठ, रसायन, शुक्रजनक, कफकारक,धातुवर्द्धक, तथा रक्तपित्त, पित्त और रुधिरके दोषोको दूर करेहै । इसकी छाल-कषेली और कफनाशक है, इसके फूल-शीतल, कडवे, भारी, स्वादिष्ठ, कषेले, वादी, मलरोधक, रूखे तथा कफ, पित्त और रुधिरके दोषोको दूर

करे है। इसके फलके गुणभी इसीकी समान जानने।इसका कंद-मधुर, शीतल, मलस्तम्भक तथा सूजन, दाह, पित्त और सन्तापको हरनेवाला है।

अस्य पुष्पशाकगुणाः।

शाल्मलीपुष्पशाकन्तु घृतसैन्धवसाधितम्।
प्रदरं नाशयत्येव दुःसाध्यञ्च न संशयः॥
कफपित्तास्रजिद्ग्राहि वातलं च प्रकीर्त्तितः।

अर्थ-घृत और सैंधवनोनसे बनायाहुआ सेमलके फूलोंका शाक. असाध्य प्रदररोगको हरे है,कफ और रक्तपित्तको दूर करे है,मलरोधक और बादी है।

मोचरसगुणाः।

मोचारसस्तु तुवरो ग्राही बलकरः स्मृतः। पुष्टिकृद्धातुकृद्वर्ण्यो बुद्धिदः शीतलः स्मृतः॥ वयसस्थापनो वृष्यो गुरुः स्वादू रसायनः। स्निग्धः कफकरो गर्भस्थापको वातनाशनः॥ अतिसारप्रवाहघ्नो रक्तरुक्पित्तदाहहा। आमातीसारशमनो रक्तातीसारनाशनः॥ "पारदस्य विकारघ्नो सेवनान्मासमात्रतः। केचिन्मोचरसस्थाने पूगपुष्पं च निक्षिपेत्"॥ (नि र)

अर्थ-मोचरस-कषेला,मलरोधक,बलवर्द्धक,पुष्टिकारक,धातुवर्द्धक, वर्णको उज्ज्वल करनेवाला, बुद्धिदायक, शीतल, अवस्थास्थापक, वीर्यवर्धक,भारी,स्वादिष्ठ,रसायन, स्निग्ध, कफकारक, गर्भस्थापक, वात नाशक तथा अतिसार, प्रवाहिका, रक्तरोग, पित्तदाह,आमातिसार और रक्तातिसारको दूर करनेवालाहै। इसको एक मासपर्यंत सेवन करनेसे पारेके विकार दूर होतेहैं, कोई २ वैद्य मोचरसके स्थानमें सुपारीका फूल गेरतेहैं।

विवरण। सेमलके वृक्ष प्रायः जंगलोंमे अधिक होतेहैं एक डंडीमें आठ दश पत्ते लगतेहैं इसमें काटे होतेहैं। फूल कमलकी समान लाल रंगके होतेहैं। फल आकके समान लगतेहैं।भीतरसे रुई निकलतीहै इसके गोंदको मोचरस कहते हैं।

कूटशाल्मलीनामानि।

कुत्सितः शाल्मलिः प्रोक्तो रोचनः कूटशाल्मलिः॥

अर्थ-कुत्सितशाल्मलि, रोचन, कूटशाल्माले।

कूटशाल्मलीगुणाः ।

कूटशाल्मलिकस्तिक्तः कटुकः कफवातनुत् ।
भेद्युष्णः प्लीहजठरयकृद्गुल्मविषापहः ॥
भूतानाहविबंधासमेदःशूलकफापहः । (भावप्रकाश)

अर्थ-कूटशाल्मली-कडवा, चरपरा, कफवातनाशक,भेदक,गरम तथा प्लीहा, उदररोग, गुल्म, विष, भूत, आनाह, विबंध, रुधिरविकार, मेद, शूल और कफनाशक है। कूटशाल्मलिके वृक्ष जंगलमे विशेष करके होते हैं, पत्ते जिंगिनीके समान, फूल अत्यत लालरंगके आतेहं । एक सफेद रंगका होताहै ।

धवनामानि।

धवः पिशाचवृक्षश्च शकटाख्यो धुरन्धरः ॥

अर्थ-धव, पिशाचवृक्ष, शकटाख्य, धुरन्धर,(शाकटाख्य,दृढतरु, गौर, कषाय, मधुरत्वक्, शुष्कवृक्ष, शुष्काङ्ग, पाण्डुतरु, धवल, पाण्डुर, घट, नन्दितरु, स्थिर, पीतफल, मधुरत्वच्)

संस्कृतभाषामे	धव ।
हिन्दीभाषामे	धो, धावा ।
बंगभाषामे	धाऊयागाछ ।
मराठीभाषामे	धावडा ।
गुजरातीभाषामे	धावडो ।
कर्णाटकीभाषामे	सिरिवरु ।
तैलिङ्गीभाषामे	नारिजचेट्टु ।
लैटिन्भाषामे	एनोजिसस् लाटिफोलिया । Anogisus Latifola
	कोनोकार्पस लाटिफोलिया । Conocorpus Latifolia

अस्य गुणाः ।

धवः कटुः कषायः स्यात्कफवातविनाशनः ।
पित्तप्रकोपनो रुच्यः दीपनः पाण्डुरोगजित् ॥

अर्थ-धव-चरपरा, कषैला,कफवातनाशक,पित्तको कुपित करनेवाला, रुचिकारक, दीपन और पाण्डुरोगको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

धवस्तु तुवरः शीतो मधुरः कटुको मतः ।

दीपनो रुचिकृच्चैव पाण्डुरोगप्रमेहजित् ॥
कफपित्तार्शवातानां नाशकः परिकीर्तितः। फलं चास्य हिमं स्वादु रूक्षं च तुवरं मतम् ॥मलस्तम्भकरं चैव वातलं कफपित्तजित्। "मूलं कटु कषायं च पित्तकृद्दीपनं परम्"॥(नि र)

अर्थ-धों-कषेला, शीतल,मधुर,चरपरा,दीपन, रुचिकारक तथा पाण्डुरोग, प्रमेह,कफ, पित्त,बवासीर और वातको दूर करेहै। इसका फल-शीतल, स्वादिष्ठ,रूखा, कषेला, मलस्तम्भक,वातवर्द्धक तथा कफपित्तनाशक है। इसकी जड-चरपरी, कषेली, पित्तकारक और परम दीपन है।

विवरण। धवके वृक्ष जंगलमे अधिक होतेहैं,इसके पत्ते अमरूदकी समान और छाल सफेद रंगकी होतीहै, फल बहुत छोटे होतेहै इसकी लकडीके हल और मूसल बनतेहैं।

धन्वगनामानि।

धन्वंगस्तु धनुर्वृक्षो गोत्रवृक्षः सुतेजनः ॥

अर्थ-धन्वंग, धनुर्वृक्ष, गोत्रवृक्ष, सुतेजन।

अस्य गुणाः।

धन्वङ्गः कफपित्तास्रकासहृत्तुवरो लघुः।
बृंहणो बलकृद्रूक्षः सन्धिकृद्व्रणरोपणः॥ (भा० प्र०)

अर्थ-धन्वंगवृक्ष-कफ,रक्तपित्त और खाँसीको दूर करेहै,कषेला,हलका,बृंहण,बलकारक,रूखा, संधिकारक और व्रणको भरनेवाला है।

धन्वननामानि।

धन्वनः पिच्छिलत्वक्च धनुर्वृक्षो महाबलः।

अर्थ-धन्वन,पिच्छिलत्वक्,धनुर्वृक्ष,महाबल,(रक्तकुसुम, रुजासह, पिच्छिलक, रूक्ष, स्वादुफल)

अस्य गुणाः।

धन्वनस्तुवरो वृष्यो मधुरः कटुको मतः। बल्यो रूक्षो लघुश्चैव धातुवृद्धिकरो मतः॥ किंचिदुष्णश्च संप्रोक्तो व्रणरोपणकारकः। कफवातहरो दाहशोपकण्ठरुजापहः॥ रक्तरुक्पित्तकासघ्नः पीनसस्य विनाशकः। फलं चास्य स्वादु शीतं तुवरं कफवातहम् ॥

अर्थ-धामिनवृक्ष-कषेला, वीर्य्यवर्द्धक, मधुर, चरपरा, बलकारक, रूखा, हलका, धातुवर्द्धक, किंचित् गरम, व्रणरोपण तथा कफ, वात, दाह, शोष, कण्ठरोग, रुधिरविकार, पित्त, खाँसी, और पीनस रोगको दूर करे है। इसका फल-स्वादिष्ट, शीतल, कषेला, कफ और वात विनाशक है।

विवरण। धामिनके वृक्ष-बहुत बडे और लम्बे होतेहैं, पत्तेबेरके पत्तोसे कुछ बडे होतेहैं, इसकी लकडी प्रायः इमारतके काममे आतीहै।

करीरनामानि।

करीरं गूढपत्रं च शाकपुष्प कटूफलम्।
ग्रन्थिलं तीक्ष्णसारं च कण्टकीमरुभूरुहम्॥

अर्थ-करीर, गूढपत्र, शाकपुष्प, कटूफल, ग्रन्थिल, तीक्ष्णसार, कण्टकी, मरुभूरुह (क्रकर, क्रकच, निष्पत्रिका, कारिर, करक, तीक्ष्णकण्टक, मृदुफल, निष्पत्र, शोणपुष्प, विदाहिक, शतकुन्त, सुफल, उष्णसुदर, विष्वक्पत्र, कृशशाख)

संस्कृतभाषामें	करीर।
हिन्दीभाषामे	करील।
वंगभाषामे	करील (मथुरादिमे) कचडा।
मराठीभाषामे	नेवती।
गुजरातीभाषामे	केर।
कर्णाटकीभाषामे	तिप्पतिगे।
तैलिङ्गीभाषामे	कवरकुराक एनुगदत सुमोदवु।
इंग्रेजीभाषामे	केपर Caper
लैटिन्भाषामे	केपरिस् स्पाइनोझा Cappuris spinosa
फारसीभाषामे	कबार।

अस्य गुणा।

करीरमाध्मानकरं कषाय कटूष्णमेतत्कफहारि भूरि।
श्वासानिलारोचकसर्वशूलविच्छर्दिखर्ज्जूव्रणदोषहारि।

अर्थ-करील-आध्मानकारक, कषेला, चरपरा, गरम, कफनाशक तथा श्वास, वात, अरुचि, सर्वप्रकारके शूल, वमन, खर्ज्जू और व्रणविनाशक है।

अन्यच्च।

करीरः कटुकस्तिक्तः स्वेद्युष्णो भेदनः स्मृतः।
दुर्नामकफवातामगरशोथव्रणप्रणुत् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-करील-चरपरा, कडवा, पसीनेको लानेवाला, उष्ण, भेदक तथा बवासीर, कफ, वात, आम तथा विष, सूजन और व्रणको दूर करेहै।

अन्यच्च।

करीरस्तुवरश्चोष्णः कटुश्चाध्मानकारकः। रुच्यो भेदकरः स्वादुः कफवातामशोथजित्॥ विषार्शोव्रणशोथघ्नः कृमिपामाहरो मतः।अरोचकं सर्वशूलं श्वासं चैव विनाशयेत्॥ फलं चास्य कटुस्तिक्तमुष्णं च तुवरं मतम्। विकासि मधुरं ग्राहि मुखवैशद्यकारकम्।हृद्यं रूक्षं कफं मेहं दुर्नामानं च नाशयेत् पुष्प वातकरं प्रोक्तं तुवरं कफपित्तनुत् ॥ (नि० र०)

अर्थ-करील-कषेला, गरम, चरपरा, आध्मानकारक, रुचिकारक, भेदक, स्वादु तथा कफ, वात, आम,सूजन,विष, बवासीर, व्रण, शोथ,कृमि, खुजली, अरुचि, सर्व प्रकारके शूल और श्वासको दूर करेहै।इसका फल-चरपरा,कडवा,गरम,कषेला,विकासि,मधुर मलरोधक, मुखको स्वच्छ करनेवाला, हृदयको हितकारी, रूखा तथा कफ, प्रमेह और पित्तका नाश करे है।

अन्यच्च।

करीरो व्रणशोफार्शोरक्तह्रत्कफवातजित्। पटुपाकरसोऽत्युष्णो यकृत्प्लीहापहोग्निकृत् ॥ तत्पुष्पं कफवातघ्नं कटुपाकरस लघु। सृष्टमूत्रपुरीष च सदा पथ्यं रुचिप्रदम् ॥ बालं चास्य फल पाके कटुक श्लेष्मशोथजित्। कपाय वातलं तिक्तं तत्पक्क कफपित्तजित् ॥ (शो० नि०)

अर्थ-करील-व्रण, सूजन, बवासीर और रक्तविकारको दूर करनेवाला तथा कफ, वात, यकृत् और प्लीहाको दूर करे है, पचनेमे चरपरा और अग्निवर्द्धक है। इसके फूल-कफवातविनाशक, चरपरे, पचनेमे भी चरपरे,हलके,मूत्र और मलको करनेवाले,सदैव पथ्य और

अर्थ-धामिनवृक्ष-कषेला, वीर्य्यवर्द्धक, मधुर, चरपरा, बलकारक, रूखा, हलका, धातुवर्द्धक, किंचित् गरम, व्रणरोपण तथा कफ, वात, दाह, शोष, कण्ठरोग, रुधिरविकार, पित्त, खाँसी, और पीनस रोगको दूर करे है। इसका फल-स्वादिष्ठ, शीतल, कषेला, कफ और वात विनाशक है।

विवरण। धामिनके वृक्ष-बहुत बडे और लम्बे होतेहै, पत्तेबेरके पत्तोंसे कुछ बडे होतेहैं, इसकी लकडी प्रायः इमारतके काममे आतीहै।

करीरनामानि।

करीरं गूढपत्रं च शाकपुष्पं कटूफलम्।
ग्रन्थिल तीक्ष्णसारं च कण्टकीमरुभूरुहम्॥

अर्थ-करीर, गूढपत्र, शाकपुष्प, कटूफल, ग्रन्थिल, तीक्ष्णसार, कण्टकी, मरुभूरुह (क्रकर, क्रकच, निष्पत्रिका, कारिर, करक, तीक्ष्णकण्टक, मृदुफल, निष्पत्र, शोणपुष्प, विदाहिक, शतकुन्त, सुफल, उष्णसुदर, विष्वक्पत्र, कृशशाख)

संस्कृतभाषामे	करीर।
हिन्दीभाषामे	करील।
वंगभाषामे	करील (मथुरादिमे) कचडा।
मराठीभाषामे	नेवती।
गुजरातीभाषामे	केर।
कर्णाटकीभाषामें	तिप्पतिगे।
तैलिङ्गीभाषामे	कवरकुराक एतुगदत सुमोदतु।
इंग्रेजीभाषामे	केपर Caper
लैटिन्भाषामे	केपरिस् स्पाइनोझा Cappuris spinosa
फारसीभाषामे	कबार।

अस्य गुणाः।

करीरमाध्मानकरं कषाय कटूष्णमेतत्कफहारि भूरि।
श्वासानिलारोचकसर्वशूलविच्छर्दिखर्ज्जूव्रणदोपहारि।

अर्थ-करील-आध्मानकारक, कषेला, चरपरा, गरम, कफनाशक तथा श्वास, वात, अरुचि, सर्वप्रकारके शूल, वमन, खर्ज्जू और व्रणविनाशक है।

अन्यच्च।

करीरः कटुकस्तिक्तः स्वेद्युष्णो भेदनः स्मृतः।
दुर्नामकफवातामगरशोथव्रणप्रणुत् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-करील-चरपरा, कडवा, पसीनेको लानेवाला, उष्ण, भेदक तथा बवासीर, कफ, वात, आम तथा विष, सूजन और व्रणको दूर करेहै।

अन्यच्च।

करीरस्तुवरश्चोष्णः कटुश्चाध्मानकारकः। रुच्यो भेदकरः स्वादुः कफवातामशोथजित् ॥ विषार्शोव्रणशोथघ्नः कृमिपामाहरो मतः। अरोचकं सर्वशूलं श्वासं चैव विनाशयेत्॥ फलं चास्य कटुस्तिक्तमुष्णं च तुवरं मतम्। विकासि मधुरं ग्राहि मुखवैशद्यकारकम्। हृद्यं रूक्षं कफं मेहं दुर्नामानं च नाशयेत् पुष्पं वातकरं प्रोक्तं तुवरं कफपित्तनुत् ॥ (नि० र०)

अर्थ-करील-कषेला, गरम, चरपरा, आध्मानकारक, रुचिकारक, भेदक, स्वादु तथा कफ, वात, आम, सूजन, विष, बवासीर, व्रण, शोथ, कृमि, खुजली, अरुचि, सर्व प्रकारके शूल और श्वासको दूर करेहै। इसका फल-चरपरा, कडवा, गरम, कषेला, विकासि, मधुर मलरोधक, मुखको स्वच्छ करनेवाला, हृदयको हितकारी, रूखा तथा कफ, प्रमेह और पित्तका नाश करे है।

अन्यच्च।

करीरो व्रणशोफार्शोरक्तहृत्कफवातजित्। पटुपाकरसोऽत्युष्णो यकृत्प्लीहापहोऽग्निकृत् ॥ तत्पुष्पं कफवातघ्नं कटुपाकरसं लघु। सृष्टमूत्रपुरीषं च सदा पथ्यं रुचिप्रदम् ॥ बालं चास्य फलं पाके कटुकं श्लेष्मशोथजित्। कषायं वातलं तिक्तं तत्पक्वं कफपित्तजित् ॥ (शो० नि०)

अर्थ-करील-व्रण, सूजन, बवासीर और रक्तविकारको दूर करनेवाला तथा कफ, वात, यकृत् और प्लीहाको दूर करे है, पचनेमें चरपरा और अग्निवर्द्धक है। इसके फूल-कफवातविनाशक, चरपरे, पचनेमें भी चरपरे, हलके, मूत्र और मलको करनेवाले, सदैव पथ्य और

रुचिकारक है। इसके कच्चे फल-पचनेमे चरपरे,कफनाशक,शोथनिवारक,कषेले,वादी,कडवे और पक्के फल-कफ तथा पित्तनाशक है।

. विवरण-करीलके वृक्ष मूडके उपर तथा मारवाडकी भूमिमे अधिकतासे होते है, इसकी डंडी नीले रंगकी और फूल गुलाबी रंगका होता है, फाल्गुन और चैत्रमासमे इसके ऊपर फल फूल आते है, पत्ते न होनेके कारण वृक्षमे फूलही फूल दीखते है।

शाखोटनामानि।

शाखोटः पीतफलको भूतावासः खरच्छदः।

अर्थ-शाखोट,पीतफलक,भूतावास,खरच्छद(पिशाचद्रु, पीतफल, कर्कशच्छद, शाखिनीवास, भूतवृक्ष, सकट, अक्षधर, करच्छद, गवाक्षी, धूकावास, रूक्षपत्र, पीत, कौशिकयोज, क्षीरनाश)

सं०	शाखोट।	गु०	सहोडा।
हिं०	सहोडा (रा)।	क०	आखोडमरणु।
ब०	शेओडा, श्यांडा।	ते०	भारिणिकेचेट्टु वरनूकी।
म०	सहोड।	लै०	स्ट्रेप्ल्यूसास्पर। Streplusaspor

अस्य गुणाः।

शाखोटो रक्तपित्तार्शोवातश्लेष्मातिसारजित्।

अर्थ-सहोडा-रक्तपित्त, बवासीर, वात, कफ और अतिसारको दूर करे है।

विवरण सिहोडेके वृक्ष अत्यंत गँठीले झाड झकाडसे मध्यम कदके होतेहै, पत्ते छोटे २ और चिकने २ होतेहै, फूल सफेद रंगके और लकडीमे कांटेसे प्रतीत होतेहै।

शाकनामानि।

शाकः क्रकचपत्रः स्यात्खरपत्रोतिपत्रकः।
महीरुहः श्रेष्ठकाष्ठः स्थिरसारो गृहद्रुमः॥

अर्थ-शाक, क्रकचपत्र, खरपत्र, अतिपत्रक, महीरुह, श्रेष्ठकाष्ठ, स्थिरसार, गृहद्रुम, (अनिल, अर्ण, महापत्र, शाकतरु, शाकवृक्ष, शाकाख्य, अर्जुनोपम, शरपत्र, अतिपत्र, भूमिरुह, द्वारदारु, खरच्छद, दीर्घच्छद, कोलफल, योगी, हलीमक, गन्धसार, स्थिरसार, स्थिरक, ध्रुवसाधन)

संस्कृतभाषामे	शाक ।
हिन्दीभाषामे	सागोन, सागवन ।
वंगलाभाषामे	शेगुनगाछ ।
मराठीभाषामे	साग, सागवान ।
गुजरातीभाषामे	शाग ।
कर्णाटकीभाषामे	नगु ।
तैलङ्गीभाषामे	टेकुचेट्टु ।
तामिलीभाषामे	टेक ।
ओरक०	सिगुरु ।
इंग्रेजीभाषामे	इंडियनटीक्ट्री । Indian terk tree
लैटिन्भाषामे	टेकटोना ग्रांडीस् । Tectona Grandis
फारसीभाषामे	फिलगोस् ।
अरबीभाषामे	फिलजोश उजनुलफिल ।

अस्य गुणाः ।

शाकस्तु सारकः प्रोक्तः पित्तदाहश्रमापहः ।
कफघ्न मधुर रूक्षं कषायं शाकवल्कलम् ॥ (रा० नि०)

अर्थ-शाक(सागोन)-सारक तथा पित्त,दाह और श्रमनाशक है। सागोनकी छाल-कफनाशक, मधुर, रूखी और कपेली है ।

अन्यच्च ।

भूमिसहस्तु शिशिरो रक्तपित्तप्रसादनः ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-सागवन-शीतल और रक्तपित्तको शुद्धकरनेवाला है।

अपिच ।

शाकः श्लेष्मानिलामघ्नो गर्भसन्धानदो हिमः ।(म०नि०पा०)

अर्थ-सागोन-कफ और वातनाशक, गर्भसन्धानकारक और शीतल है ।

अन्यच्च ।

शाकवृक्षस्तु तुवरः शीतलो रक्तपित्तहा । गर्भस्थैर्य्यकरश्चैव गर्भसन्धानकारकः ॥ वातपित्त तथार्शांसि कुष्ठं चातिसृतिं जयेत्। अस्य पुष्पं तु तुवर तिक्त च विशदं लघु॥वातप्रकोपनं रूक्षं कफपित्तप्रमेहनुत्।वल्कल चास्य मधुरं रूक्षं च मधुरं मतम्॥कफनाशकर चैव मुनिभिः परिकीर्तितम् । (वि० र०)

अर्थ-शाकवृक्ष-कपेला,शीतल,रक्तपित्तनाशक,गर्भको स्थिर करनेवाला,गर्भसन्धानकारक तथा वात, पित्त, बवासीर, कोढ और अतिसारको दूर करेहै। इसके फूल-कषेले, कडवे, विशद, रूखे, हलके, वातको कुपित करनेवाले तथा कफ, पित्त और प्रमेहको दूर करेहै। इसकी छाल-मधुर, रूखी, कपेली और कफनाशक है।

विवरण। शाकके बडे वृक्ष जगलमें होतेहैं, पत्ते बडे और खरखरे होतेहैं इसके पत्तोको हाथसें मलनेसे हाथ लाल होजाते हैं सागके फूल छोटे और सफेद होतेहैं।

वरुणनामानि।

वरुणो वर्हपुष्पश्च तिक्तशाकः कुमारकः।
उरुमाणः सेतुवृक्षः श्वेतद्रुर्मारुतापहः॥

अर्थ-वरुण, बर्हपुष्प, तिक्तशाक, कुमारक, उरुमाण, सेतुवृक्ष, श्वेतद्रु, मारुतापह,(वरण, कुमार,-अश्मरीघ्न, सेतुक, सेतु, वराण, शिखिमण्डल, श्वेतवृक्ष, श्वेतद्रुम, साधुवृक्ष, तमाल)

संस्कृतभाषामे	वरुण।
हिन्दीभाषामे	वरना (बिलि)
वंगभाषामे	वरुणगाछ।
मराठीभाषामे	वायवरणा,(को०) भाटवरणा।
गुजरातीभाषामे	वरणो।
कर्णाटकीभाषामे	मदवसले।
तैलङ्गीभाषामे	उरुमाट्टि, जाजिचेट्टु,उलिमिरिचेट्टु।
तामिलीभाषामे	मरालिगम्।
लैटिनभाषामे	क्रेटिवा,रोक्सबुर्घिआई। Crateava Roxburghii
	क्रेटिया, रिलिजिओसा। Crataeva C Religiosa

अस्य गुणा।

वरुणः पित्तलो भेदी श्लेष्मकृच्छ्राश्ममारुतान्।
निहन्ति गुल्मवातास्रकृमीश्चोष्णाग्निदीपनः॥
कषायो मधुरस्तिक्तः कटुको रूक्षको लघुः॥ (भा०प्र०)

और कृमिका नाश करेहै। गरम, अग्निप्रदीपक, कषेला, मधुर, कडवा, चरपरा, रूखा और हलका है।

अन्यच्च।

वरुणः कटुरुष्णश्च रक्तदोषहरः परः।
शीतवातहरः स्निग्धो दीप्यो विद्रधिवातजित्॥ (रा० नि०)

अर्थ-वरना-चरपरा, गरम, रुधिरविकारनाशक, शीतवातनिवारक, स्निग्ध, दीपन तथा विद्रधि और वातविनाशक है।

अन्यच्च।

वरुणोऽनिलशूलघ्नो भेदी चोष्णोऽश्मरीहरः।
पुष्प वरुणजं ग्राहि पित्तघ्नमामवातजित् ॥ (रा० नि०)

अर्थ-वरना-वात और शूलनाशक, दस्तावर, गरम और पथरीको दूर करेहै। वरनाके फूल-मलरोधक, पित्तनाशक और आमवातको दूर करेहै।

अपिच।

वरुणोष्णः कटुः स्निग्धो दीपनो मधुरः स्मृतः। लघुस्तिक्तस्तु तुवरः पित्तलो भेदकः स्मृतः ॥ वातकफं विद्रधिं च मूत्रकृच्छ्रं च नाशयेत्।अश्मरी वातरक्तं च गुल्मं रक्तरुज कृमीन्॥ रक्तदोष शीर्षवातं मूत्राघातं च हृद्रुजम् ॥ हृद्रोग नाशयत्येव पुष्प चास्य च ग्राहकम्॥रक्तदोषहरं चैव फल चास्य सरं गुरु। पाके तु मधुरं स्वादु स्निग्धोष्णं वातनाशकम् ॥ पित्त कफ नाशयतीत्येवं च मुनिभिर्मतम् ॥ (नि० र०)

अर्थ-वरना-गरम, चरपरा, स्निग्ध, दीपन, मधुर, हलका, कडवा, कषेला, पित्तजनक, दस्तावर तथा वायु, कफ, विद्रधि, मूत्रकृच्छ्र, पथरी, वातरक्त, गुल्म, रक्तविकार, कृमि, रक्तदोष, शीर्षवात, मूत्राघात, हृदयरोग और उरःशूलको नष्टकरे है। इसका फूल-मलरोधक, रक्तविनाशक। इसके फल-सारक, भारी, पचनेमे मधुर, स्वादिष्ठ, स्निग्ध, गरम तथा वातपित्त और कफको हरे है।

विवरण। वरनेका बडा वृक्ष होता ह, पत्ते बेलकी समान तीन२

लगते हैं, फल बेलकी समान गोल और सुपारीकी आकृतिवाले होते हैं, फूल गुलतुर्रेकी सदृश होता है।

कटभीनामानि।

कटभी नासिका शौण्डी पाटली किणिही तथा।
मधुरेणुः क्षुद्रश्यामा कैडर्य्यश्यामला नवा॥

अर्थ-कटभी, नासिका, शौण्डी, पाटली, किणिही, मधुरेणु, क्षुद्रश्यामा, कैडर्य्य, श्यामला, (स्वादुपुष्प, कटम्भर, किणिही, भद्रेन्द्राणी)

श्वेतकटभीनामानि।

सितादिकटभी श्वेतकिणिही गिरिकर्णिका।
शिरीषपत्री कालिन्दी शतपादा विषघ्निका॥
महाश्वेता महाशौण्डी महादिकटभी दश॥

अर्थ-सितकटभी, श्वेतकिणिही, गिरिकर्णिका, शिरीषपत्री, कालिन्दी, शतपादा, विषघ्निका, महाश्वेता, महाशौंडी और महाकटभी।

संस्कृतभाषामें	कटभी, श्वेतकटभी।
हिन्दीभाषामें	करही, कटभी, हरिमल।
मराठीभाषामें	वाक्कुंभा।
गुजरातीभाषामें	वाघुगा।
कर्णाटकीभाषामें	वेल्लाल।
इंग्रेजीभाषामें	केरीसट्री। Careys tree
लैटिन्भाषामें	केरिया आर्बोरिया। Careya arborea

कटभीगुणाः।

कटभी चोष्णकटुरुष्णा गुल्मविषाध्मानशूलदोषघ्नी।
वातकफाजीर्णरुजां शमनी श्वेता च तत्र गुणयुक्ता॥(रा०नि०)

अर्थ-कटभी-चरपरी, गरम तथा गुल्म, विष, आध्मान, शूल, वात, कफ और अजीर्णरोगको दूर करे है और श्वेतकटभी गुणयुक्त है।

अन्यच्च।

कटभी तु प्रमेहार्शोनाडीव्रणविषकृमीन्।
हन्त्युष्णा कफकुष्ठघ्नी कटू रूक्षा च कीर्त्तिता।

अर्थ-कटभी-प्रमेह, बवासीर, नाडीव्रण, विष, कृमि, कफ और कुष्ठको नष्ट करे है, गरम, चरपरी और रूखी है। इसका फल-कषेला और विशेषकरके कफ तथा शुक्रनाशक है।

विवरण। कटभीके मध्यम आकारके वृक्ष होतेहैं पत्ते लम्बे और कुछ कुछ गोल होतेहैं, फल अंड खर्बूजेकी समान छोटे छोटे लगतेहैं।

मुष्ककनामानि।

मुष्कको मोक्षको मुष्टिर्मूर्खको मोचकस्तथा।
क्षारश्रेष्ठः क्षारवृक्षो द्विविधः श्वेतकृष्णकः॥

अर्थ-मुष्कक, मोक्षक, मुष्टि, मूर्खक, मोचक, क्षारश्रेष्ठ, क्षारवृक्ष, (गोलिक, मेहन, पाटली, विषाण्ह, जटाल, वनवासी, सुतीक्ष्णक, गोलीढ, गोलिह, क्षारोष्ण, शिखरी, वनवासी, घण्टापाटलि, क्षुद्रपाटलि, मुंचक, जटालु, झाटल, मोक्ष, घण्टा, पाटलि, क्षारद्रु, कालमुष्कक, पाटली, घण्टाक, तीक्ष्ण, घण्टक, कालस्थाली) यह सफेद और कृष्ण इन भेदोंसे दो प्रकारका है।

संस्कृतभाषामें	मुष्कक, मोक्षक।
हिन्दीभाषामें	मोपा, मोखा, फरवाह।
वंगभाषामें	घण्टापारुल।
मराठीभाषामें	मोकडी, मोखावृक्ष।
गुजरातीभाषामें	मरखो।
कर्णाटकीभाषामें	मोखदलाई।
तैलिङ्गभाषामें	मोकपुचेट्टु, मुष्कतुण्डुचेट्टु।
लेटिन्भाषामें	स्क्रीबीरास्वीटे निओइडिस्। Schre bera swiote nioides

अस्य गुणाः।

मुष्ककः कटुकोम्लश्च रोचनः पाचनः परः।
प्लीहगुल्मोदरार्तिघ्नो द्विधातुल्यगुणान्वितः (रा०नि०)

अर्थ-दोनोंप्रकारके मोखावृक्ष-चरपरे, खट्टे, रोचन, पाचक तथा प्लीहा गुल्म और उदररोगको दूर करे है।

अन्यच्च।

मोक्षकः कटुकस्तिक्तो ग्राह्युष्णः कफवातहृत्।

अर्थ-मोखा-चरपरा, कडवा, मलरोधक, गरम तथा कफ, वात, विष, मेद, गुल्म, कण्डू, वस्तिरोग, कृमि और शुक्रको नष्ट करेहै ।

अन्यच्च ।

मोक्षकः कफवातघ्नो ग्राही गुल्मविषक्रमीन् ।
हन्त्युष्णो वस्तिरुक्कण्डू तत्पुष्पं कफपित्तजित् ॥
निर्य्यासोस्य परं वृष्यः शोपपित्तानिलापहः। (म नि)

अर्थ-मोखा-कफवातनाशक, मलरोधक, गुल्म, विष और कृमिनाशक है गरम वस्तिरोग और कण्डूको दूर करे है । इसका फूल कफपित्तनाशक है इसका गोद अत्यन्त वीर्य्यवर्द्धक तथा शोष, पित्त और वातविनाशक है ।

अन्यच्च ।

मुष्ककः कटुकश्चाम्लो रुचिकृत्पाचनः स्मृतः । ग्राहकोष्णः पटुस्तिक्त-प्लीहगुल्मोदरापहः ॥ विषदोष कफ वात मेदरुग्वस्तिशूलहा । शुक्रदोषं कर्णरुजं पित्तं कण्डूं क्रमीञ्जयेत् ॥ पुष्प कुष्ठहरं ज्ञेयं वातपित्तकफप्रणुत् । फलमग्नेर्दीप्तिकरं भेदकं रोचक मतम् ॥ गुल्ममेहार्शःपाण्डुघ्नं शुक्रदोषोदरञ्जयेत्। (नि र.)

अर्थ-मोखावृक्ष-चरपरा, खट्टा, रुचिकारक, पाचक, मलरोधक, गरम, निमकीन, कडवा तथा प्लीहा, गुल्म, उदररोग, विषविकार, कफ, वात, मेदरोग, वस्तिशूल, शुक्रदोष, कर्णरोग, पित्त, कण्डू और कृमिको दूर करेहै । इसका फूल-कुष्ठ, वात, पित्त, कफको दूर करेहै । इसका फल-अग्निप्रदीपक, दस्तावर, रोचक तथा गुल्म, प्रमेह, बवासीर, पाण्डुरोग, शुक्रदोष और उदररोगको दूर करे है ।

विवरण । मोखके वृक्ष सफेद और काले इनभेदोसे दोप्रकारके होतेहै, पत्ते बडे २ होतेहैं । उनमे आककी समान दूध निकलता है । फल घंटाकारके लगतेहै ।

अम्बुशिरीषिकानामानि ।

शिरीषिका ढिंढिणिका दुर्बलाम्बुशिरीषिका ।

अर्थ-शिरीषिका, ढिंढिणिका, दुर्बला, अम्बुशिरीषिका ।

संस्कृतभाषामे अम्बुशिरीषिका ।
हिन्दीभाषामे जलसिरस, ढाढोन ।
मराठीभाषामे जलशिरसी ।

अस्य गुणा. ।

त्रिदोषकफकुष्ठार्शोहरी वारि शिरीषिका ।

अर्थ-जलसिरस(ढाँढोन)-त्रिदोष, कफ, कोढ और बवासीरको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

ढिंढिणी कफकुष्ठार्शःसन्निपातविषापहा ॥ (म०नि०)

अर्थ-जलसिरस-कफ, कुष्ठ, बवासीर, सन्निपात और विषको दूर करे है ।

विवरण । जलसिरसके वृक्ष, सिरसकेही समान कुछ छोटे जलमे होतेहै ।

शमीनामानि ।

शमी शक्तुफली शान्ता केशहन्त्री शिवाफला ।
मङ्गल्या शुभदा लक्ष्मीः पवित्रा पापनाशिनी ॥

अर्थ-शमी,शक्तुफली,शान्ता,केशहन्त्री,शिवाफला,मङ्गल्या,शुभदा,लक्ष्मी,पवित्रा,पापनाशिनी(सक्तुफली,शक्तुफला,सक्तुफला,शिवा, काननारि, तुंगा, कचारिफला,केशमथनी,ईशानी,तपनतनया,इष्टा, शुभकरी, हविर्गन्धा, मेध्या, दुरितदमनी, शक्तुफलिका, समुद्रा, वह्निगर्भा, समीर,ईशान, सुरभी, पापशमनी,भद्रा, शंकरी, सुपत्रा, सुखदा, ईशाना, शंकरा, शंकुफलिका, सुभद्रा)

संस्कृतभाषामे शमी ।
हिन्दीभाषामे छोकर (रा) समी, सफेदकीकर, छिकुर ।
बंगभाषामे शाँइ, छुँइवाल्ला ।
मराठीभाषामे थोरशमी, लघुशमी ।
गुजरातीभाषामे खिजडी, नानी खिजडी ।
कर्णाटकीभाषामे बनि, कावन्नि ।
तैलिङ्गीभाषामे शमीचेट्टु ।
औत्क० शुमि ।
इंग्रेजीभाषामे स्पजट्री । Spungetree
लैटिन्भाषामे प्रोसोपिस स्पाइसिजेरा।Prosopis spicigera

अस्य गुणाः ।

शमी रूक्षा कषाया च रक्तपित्तातिसारजित् ।
तत्फलं तु गुरु स्वादु रूक्षोष्णं नखकेशनुत् ॥ (रा०नि०)

अर्थ-शमी (छोकर)-रूखा, कषेला, तथा रक्तपित्त और अतिसारनाशक है। इसका फल भारी, स्वादिष्ठ, रूखा, गरम तथा नख और केशोका नाश करे हैं ।

अन्यच्च ।

शमी तिक्ता कटुः शीता कषाया रोचनी लघुः ।
कफकासभ्रमश्वासकुष्ठार्शःकृमिजित्स्मृता ॥
"तत्फल पित्तलं रूक्ष मेध्यं केशविनाशनम्" ।(भा० प्र०)

अर्थ-छोकर-कडवा,चरपरा,शीतल, कषेला, रोचन, हलका तथा कफ,खाँसी,भ्रम,श्वास,कोढ,बवासीर और कृमिको दूर करेहै। इसका फल-पित्तजनक,रूखा,मेधाकारक और केशोका नाश करे है ।

अन्यच्च ।

शमी तु तुवरा रूक्षा शीता लघ्वी च तिक्तका । कटुका रेचनी चैव रक्तपित्तातिसारनुत् ॥ कुष्ठार्शःश्वासकासघ्नी कफभ्रमकृमीन् हरेत् । कम्पश्रमाणां शमनी फलं तीक्ष्णञ्च पित्तलम् ॥ मेध्य गुरु स्वादु रूक्षमुष्णं केशहरं परम् ।

अर्थ-शमी (छोकर)-कषेला,रूखा,शीतल, हलका, कडवा,चरपरा, दस्तावर तथा रक्तपित्त,अतिसार,कुष्ट,बवासीर,श्वास,खाँसी, कफ, भ्रम, कृमि, कम्प और श्रमनाशक है । इसका फल-तीक्ष्ण, पित्तजनक, मेधाजनक, भारी,स्वादिष्ठ, रूखा, गरम और केशोको दूर करेहै ।

विवरण । बडा वृक्ष होताहै,पत्ते छोटे, खैरकी समान और फली सेगरीकी समान होतीहै । यहभी एक बबूरकी जातिमेसे है ।

सप्तपर्णनामानि ।

सप्तपर्णो विशालत्वक्छारदो विषमच्छदः ।

अर्थ-सप्तपर्ण,विशालत्वक्,शारद,विषमच्छद(विद्र,विनद,विन्याक, सारद, देववृक्ष,दलेगन्धि, शिरोरुजा, ग्रहनाश,सुतिपत्र,ग्रहाशर,

ग्रहनाशन, गुच्छपुष्प, शुक्तिपर्ण, सुपर्णक, अयुक्च्छद, अयुग्मच्छद, युग्मपर्ण, मुनिच्छद, बृहत्त्वक्, बहुपर्ण, शाल्मलिपत्रक, मदगन्ध, गन्धिपर्ण, सतच्छद, छत्रपर्ण, शारदिपुष्प)

संस्कृतभाषामें	सप्तपर्ण ।
हिन्दीभाषामे	छतिवन, सतवन, सतोना, छातियान् ।
बंगालीभाषामे	छातिमगाछ, छेतेन ।
मराठीभाषामें	सात्विण ।
गुजरातीभाषामे	सप्तपर्ण ।
व०	छातविण ।
कर्णाटकीभाषामें	एलेलेग ।
तैलङ्गीभाषामें	ऐडाकुल, अरिटाकु ।
लैटिन्भाषामे	आल्स्टोनिया स्कोलेरिस । Alstonia schlaris

अस्य गुणा ।

सप्तपर्णो व्रणश्लेष्मवातकुष्ठास्रजन्तुजित् ।
दीपनः श्वासगुल्मघ्नः स्निग्धोष्णस्तुवरः सर.(भा०प्र०)

अर्थ-सतवन-व्रण, कफ, वात, कुष्ठ, रुधिरविकार, कृमि, श्वास और गुल्मका नाश करेहै।दीपन, स्निग्ध, उष्ण और कुछ २ दस्तावरहै।

अन्यच्च ।

सप्तपर्णः कषायोष्णस्तिक्तो दीप्तिकरः सरः ।
स्निग्धो हृद्यः कृमिश्वासकुष्ठगुल्मव्रणास्रजित् ॥
मदगन्धिस्त्रिदोषघ्नः शूलरक्तरुजापहः ॥ (रा० नि०)

अर्थ-सतवन-कषेला, गरम, कडवा, अग्निदीपक, सारक, स्निग्ध, हृदयको हितकारी, मदगन्धिवाला तथा कृमि, श्वास, कोढ, गुल्म, व्रण, रुधिरविकार, त्रिदोष, शूल और रक्तरोगका नाश करेहै ।

विवरण-बडा वृक्ष है, पत्ते शेमलकी समान और एक २ डालीमे सात २ लगते है ।

तिनिशनामानि ।

तिनिशः स्पंदनो नेमी सर्वसारोऽश्मगर्भकः ।

अर्थ-तिनिश, स्पंदन, नेमी, सर्वसार, अश्मगर्भक (तिनाशक,

स्पंदनद्रुम, अक्षक, चित्रकर्म्मा, रथद्रु, अतिमुक्तक, वञ्जुल, चित्रकृत, चक्री, शतांग, शकट, रथ, रथिक, भस्मगर्भ, मेषी, जलधर, स्पंदनि)

संस्कृतभाषामें	तिनिश ।
हिन्दीभाषामें	तिरिच्छ, (–) तिनसुना ।
बंगभाषामें	निनारा, सादन, जारुलगाछ ।
मराठीभाषामें	तिवस ।
गुजरातीभाषामें	हम्मों, मिणोहम्मों
लेटिन्भाषामें	युजिनियाडा यंजिया ओईडिस Oogenia dalbergia oides

अस्य गुणाः।

तिनिशः श्लेष्मपित्तास्रमेदःकुष्ठप्रमेहजित् ।
तुवरः श्वित्रदाहघ्नो व्रणपाण्डुकृमिप्रणुत् (भा० प्र०)

अर्थ-तिरिच्छ-कफ, पित्त, रुधिरविकार, मेद, कोढ, प्रमेह, श्वित्रकुष्ठ, दाह, व्रण, पाण्डु और कृमिका नाश करे है तथा कपेला है ।

अन्यच्च ।

तिनिशस्तुवरश्चोष्णो ग्राहकः कफवातहा । रक्तातिसारं कुष्ठं च मेहमेदं व्रण तथा। रक्तदोषं च पित्त च शिवत्रकुष्ठ कृमीस्तथा । दाहं च पाण्डुरोग च नाशयेदिति कीर्त्तितः (नि० र०)

अर्थ-तिरिच्छ, कपेला, गरम, ग्राही, कफवातनाशक तथा रक्तातिसार, कोढ, प्रमेह, मेद, व्रण, रुधिरविकार, पित्त, श्वित्रकुष्ठ, कृमि, दाह और पाण्डुरोगका नाश करे है ।

विवरण-तिनिसके बडे बडे वृक्ष होते हैं पत्ते छोटे २ छोकरके समान होतेहै, इसकी आकृति खैर अथवा लीकरकी समान होतीहै।

हरिद्रुनामानि ।

हारिद्रकः पीतवर्णः श्रीमान् गौरद्रुमो वरः ।

अर्थ-हारिद्रक, पीतवर्ण, श्रीमान्, गौरद्रुम (हरिद्र, पीतदारु, पीतकाष्ठ, पीतक, कदम्बक, सुपुष्प, सुराह्व, पीतकद्रुम)

संस्कृतभाषामें	हरिद्रु ।
हिन्दीभाषामें	लादिवा, हलुदवा, हलद्रु ।
बंगभाषामें	वृक्षविशेष ।
मराठीभाषामें	हळदिवावृक्ष ।

गुजरातीभाषामे हलदरवो ।
कर्णाटकीभाषामे विलिलु ।
लेटिन्भाषामे नोक्लिया कोर्डिफोलिया । Nauclea cordifolia
एडिना कोर्डिफोलिया । Adina cordifolia

अस्य गुणाः ।

हरिद्रुः कटुकः पाके वीर्योष्णस्तुवरः कटुः ।
लघुः कफहरो वर्ण्यो व्रणशोधनरोपणः ॥
तिक्तो बल्यः कान्तिदश्च त्वग्दोषांश्च विनाशयेत् ।

अर्थ-हलदुवा-पचनेमे चरपरा,उष्णवीर्य्य,कषेला,चरपरा, हलका, कफनाशक, वर्णको उज्ज्वल करनेवाला, व्रणशोधक, व्रणरोपण, कडवा, बलवर्द्धक, कान्तिजनक और त्वचाके दोषोंको दूर करे है ।

अपिच।

हरिद्रुः शीतलस्तिक्तो मंगल्यः पित्तवान्तिजित् ।
अगकान्तिकरो बल्यो नानात्वग्दोषनाशनः ॥(रा०नि०)

अर्थ-हलदुवा-शीतल, कडवा, मंगलकारक, पित्तनाशक,वमननिवारक, बलवर्द्धक और त्वचाके दोषोंको दूर करे है ।

विवरण। हलदुके बडेर वृक्ष पर्वत और वनोमे होतेहै,इसकी छाल पीले रंगकी होतीहै । पत्ते दोनो ओर शाखामे बराबर लगे होतेहै ।

रुद्राक्षनामानि ।

रुद्राक्ष च शिवाक्षं च शर्वाक्षं भूतनाशनम् ।
पावन नीलकंठाक्ष हराक्ष च शिवप्रियम् ॥

अर्थ-रुद्राक्ष, शिवाक्ष, शर्वाक्ष, भूतनाशन,पावन, नीलकंठाक्ष, हराक्ष, शिवप्रिय, (तृणमेरु, अमर, पुष्पचामर)

हिन्दी, बंग, मराठी, गुजराती, कर्णाटकी, तैलिंगी-रुद्राक्ष ।
लैटिन्भाषामे इल्योकार्पस गेनीट्रस ।

अस्य गुणाः ।

रुद्राक्षमम्लमुष्णं च वातघ्नं कफनाशनम् ।
शिरोर्तिशमन रुच्य भूतग्रहविनाशनम् ॥

अर्थ-रुद्राक्ष-अम्ल, उष्ण, वातनाशक, कफनिवारक, शिरकी पीडाको दूर करनेवाला तथा भूतबाधा और ग्रहबाधाको हरेहै। रुद्राक्षके वृक्ष विशेषकरके वनमे होतेहैं, पत्ते लघु और कुछ गोल होतेहैं। इसके बीजोंको रुद्राक्ष कहतेहै।

माडनामानि।

माडो माडद्रुमो दीर्घो ध्वजवृक्षो वितानकः।
मद्यद्रुमो मोहकारी मद्यद्रुरज्जुरप्यथा॥

अर्थ-माड, माडद्रुम, दीर्घ, ध्वजवृक्ष, वितानक, मद्यद्रुम, मोहकारी, मद्यद्रु, रज्जु।

संस्कृतभाषामे	माड।
हिन्दीभाषामे	माड।
मराठीभाषामे	माड।
गुजरातीभाषामे	माड, भेंलिमाड।
कर्णाटकीभाषामे	वैनो।
इंग्रेजीभाषामे	टोर्नलिव्ड। Tornleaved
लेटिन्भाषामे	केर्युटायुरेन्स कार्गोट। Caryota UrensCargota

अस्य गुणाः।

माडस्तु शिशिरो रुच्यः कषायः पित्तदाहकृत्।
तृष्णापहो मरुत्कारी श्रमहृच्छ्लेष्मकारकः॥(रा०नि०)

अर्थ-माड-शीतल, रुचिकारक, कषेला, पित्तदाहकारक, तृष्णा निवारक, वादी, श्रमनाशक और कफकारक है।

विवरण। माडके वृक्ष वन जगल सर्वत्र होतेहैं, पत्ते बडे बडे लम्बे और गोल होतेहैं, फूल सफेद और लाल रंगके आतेहैं।

साजडनामानि।

साजडो वनजो वृक्षः कृष्णत्वक् श्यामसारकः।
धाराफलोऽथ निस्सारफलको वीरवृक्षकः॥

अर्थ-साजड, वनजवृक्ष, कृष्णत्वक्, श्यामसारक, धाराफल, निस्सारफलक, वीरवृक्षक।

हिन्दीभाषामे कोहा (ह)।

मराठीभाषामे	आयन, ऐन ।
गुजरातीभाषामे	साजड ।
तैलिङ्गीभाषामे	नल्लमद्दि ।
लैटिन्भाषामे	टरामिनालया ग्लेब्रा ।

अस्य गुणाः ।

"पार्थः क्षतेऽनिले भग्ने रक्तस्तम्भे कफे हितः" ॥

अर्थ-साजड-क्षत, वात, भग्न, रक्तस्तम्भ और कफरोगमे हित कारी है ।

विवरण-साजडभी अर्जुनका भेद है, इसकी आकृति प्रायः अर्जुन वृक्षके समान होती है । इसीका भेद ढोल समुद्रिका जानना ।

ढोलसमुद्रिकागुणाः ।

ढोलसमुद्रिका प्रोक्ता कीटादीनां विषप्रणुत् ॥

अर्थ-ढोलसमुद्र-कीटादिकोंके विषको हरनेवाला है ।

इति श्रीशालिग्रामनिघण्टुभूषणे वटादिवर्गः ॥ ६ ॥

अथ धातूपधातुवर्गः ।

सुवर्णनामानि ।

स्वर्णं सुवर्णं कनकं हिरण्यं हेम हाटकम् ।
चामीकरं शातकौम्भं द्राविणं भूरिपिञ्जरम् ॥

अर्थ-स्वर्ण, सुवर्ण, कनक, हिरण्य, हेम, हाटक, चामीकर, शातकौम्भ, द्राविण, भूरिपिञ्जर, (गांगेय, भर्म्म, कर्व्वूर, जातरूप, महारजत, काञ्चन, रुक्म, कार्त्तस्वर, जाम्बूनद, अष्टापद, करहाटक, ऋक्थ, सानसि, अकुप्य, लोहोत्तम, भूत्तम, पुरट, रेकन, शातकुम्भ, कर्बुर, कर्च्चूर, रुक्म, भद्र, गैरिक, चाम्पेय, मरु, चन्द्र, कलधौत, अभ्रक, अग्निबीज, लोहवर, ऊर्ध्व, सारुक, स्पर्शमणिप्रभव, मुख्यधातु, शतखण्ड, उज्ज्वल, कल्याण, मनोहर, अग्निवीर्य्य, अग्नि, भास्कर, पिञ्जान, आपिञ्जर, तेज, दीप्त, अग्निभ, दीप्तक, मङ्गल्य, सौमेरुक, भृङ्गार, जाम्बव, आग्नेय, निष्क, तपनीयक, अग्निशिख, चंड, अय, पेग, कृशान, लोह, अमृत, मरुव, दत्र, चारुरत्न, पीतक, श्रीनिकेत, भूषणार्ह, सूर्य्यनामक)

संस्कृतभाषामे सुवर्ण,स्वर्ण ।	तैलिङ्गीभाषामे भङ्गारं।
हिन्दीभाषामे सोना।	इङ्ग्रेजीभाषामे गोल्ड् । Gold
वंगभाषामे सोना।	लैटि० ओरं। Aurum
मराठीभाषामे सोने।	फारसीभाषामे तिला।
गुजरातीभाषामे सोनु।	अरबीभाषामे जहब।
कर्णाटकीभाषामे चिन्ना,स्वर्ण।	

स्वर्णगुणा।

स्वर्णं स्निग्धं कषायं च तिक्तं मधुरमेव च।
स्वादु शीतं त्रिदोषघ्नं रसायनं सुरोचकम् ॥
चक्षुष्यमायुष्यप्रज्ञावीर्य्यबलस्मृतिप्रदम् ॥

अर्थ-सोना-स्निग्ध, कषेला,कडवा, मधुर, स्वादु, शीतल,त्रिदोषनाशक, रसायन, रुचिकारक, नेत्रोको हितकारी, आयुवर्द्धक, प्रज्ञाजनक, वीर्य्यदायक, बलकारक और स्मरणशक्तिवर्द्धक है।

सुवर्णपरीक्षा।

दाहे रक्तं सितं छेदे निकषे कुंकुमप्रभम्। तारशुल्वोज्झितं स्निग्धं कोमलं गुरु हेम तत्॥ तच्छ्वेतं कठिनं रूक्षं विवर्णं समलं दलम्॥ दाहे छेदे सितं श्वेतं कषे त्याज्यं लघु स्फुटम्।

अर्थ-तपानेमे लालहो,तोडनेमे सफेदहो,कसौटीके ऊपर रखनेसे केशरी रंगका होजाय, चादी और तांबे करके रहित हो,स्निग्ध, नरम और भारी ऐसा सोना उत्तम होता है। सफेदरंगका कठोर, रूखा, बुरेरंगका, मैलयुक्त, पत्तरयुक्त, तपाने और तोडनेमे सफेद हो, कसौटीके ऊपर रखनेसे सफेद होजाय,हलका और चोट मारनेसे टूट जावे ऐसा सोना त्याज्य है।

अन्ये च गुणाः।

सुवर्णं शीतलं वृष्यं बल्यं गुरु रसायनम्। स्वादुतिक्तं च तुवरं पाके च स्वादु पिच्छिलम्॥ पवित्रं बृंहणं नेत्र्यं मेधास्मृतिमतिप्रदम्। हृद्यमायुष्करं कान्तिवाग्विशुद्धिस्थिरत्वकृत्॥ विषद्वयक्षयोन्मादत्रिदोषज्वरशोषहृत्।

अर्थ-सोना(सोनेकी,भस्म)-शीतल वीर्य्यवर्द्धक,बलवर्द्धक,भारी

रसायन स्वादिष्ठ,कडवा,कषेला,पचनेमें,स्वादु पिच्छिल,पवित्र,पुष्टिकारक,नेत्रोको हितकारी तथा मेधा, स्मरणशक्ति और बुद्धिजनक है,हृदयको हितकारी, आयुवर्द्धक, कान्तिजनक, वाणीको शुद्ध और स्थिरकरनेवाला, तथा स्थावरविष, जंगमविष, क्षय,उन्माद, त्रिदोष, ज्वर और शोषको दूर करे है।

असम्यङ्मारितस्वर्णगुणा ।

असम्यङ्मारितं स्वर्णं बलं वीर्य्यं च नाशयेत् ।
करोति रोगान् मृत्युं च तद्धन्याद्यत्नतस्ततः ॥

अर्थ-अविधिसे मारा सुवर्ण-बल,और वीर्य्यनाशक है,रोगजनक और मृत्युकारक है। इसकारण उसको भले प्रकारसे मारे।

अशुद्धस्वर्णस्य दोषा ।

बलं सवीर्य्यं हरते नराणां रोगव्रजं पोषयतीह काये ।
असौख्यकार्य्येव सदासुवर्णमशुद्धमेतन्मरणं च कुर्य्यात्॥
(भा०प्र०)

अर्थ-अशोधितसुवर्ण बल और वीर्य्यनाशक,शरीरमे अनेकप्रकारक रोगोंको उत्पन्न करनेवाला, निरन्तर,असुखकारक और मरणको करनेवाला है।

दह्यते धातवो वह्नौ मणिरत्नाभ्रकादयः।न क्षीयते न म्रियते सुवर्णमजरामरम् ॥ अपक्वहेमसंघृष्टं शिलायां जलयोगतः। द्रवरूपं तु तत्पेयं मधुना गुणदायकम् ॥ मध्वामलकचूर्णं च वरकश्चेति तत्त्रयम्। प्राश्यारिष्टग्राहितोपि मुच्यते प्राणसंकटात् ॥ तस्मान्मृतोत्थितं चापि भक्षयेत्तद्विचारयेत्। मृतहाटकंदिव्यकांतिनोतिक्षतश्वासकासौक्षयपित्तवातौ। प्रमेहंग्रहण्यातिसारौचकुष्ठज्वरंहन्तिवापंढकंदर्पदंच ॥

अर्थ-धातु,मणि,रत्न और अभ्रकादि सम्पूर्ण रस अग्निमें डालनेसे जलजातेहैं। किन्तु सोना न तो मरताहै और न कमहोताहै,इसकारण यह अजर और अमर है। कच्चे सोनेको लेकर जलके योगसे पत्थरपर।घिसे,फिर उसमे सहत डालकर पिये तो अत्यन्त गुण होताहै।

सहत-आमले को चूर्ण और सोनेके वर्क इनको एकत्र मिलाकर चाटनेसे अरिष्टको प्राप्त हुवा और प्राणसंकट होनेपरभी आरोग्य होजाता है ।

सोनेकी भस्म-दिव्य,कांतिजनक तथा क्षत,श्वास,खासी,क्षय पित्त वात,प्रमेह संग्रहणी,अतिसार,कुष्ठ और ज्वरको दूर करेहै तथा नपुंसकोंके कामदेवकी वृद्धि करे है ।

स्वर्णस्योत्पत्तिः ।

पुरा निजाश्रमस्थानां सप्तर्षीणां जितात्मनाम् । मरीचिरंगिरा अत्रिः पुलस्त्यः पुलहः क्रतुः ॥ वसिष्ठश्चेति सप्तेते कीर्तिताः परमर्षयः । पत्नीं विलोक्य लावण्यलक्ष्मीसम्पन्नयौवनाम् ॥ कंदर्पदर्पविध्वस्तचेतसो जातवेदसः । पतितं यद्धरापृष्ठे रेतस्तु हेमतामगात् ॥ कृत्रिमं चापि भवति तद्रसेन्द्रस्य वेधनः ॥ (भा.प्र)

अर्थ-पूर्वकालमें मरीचि, अंगिरा, अत्रि, पुलस्त्य, पुलह, क्रतु, वसिष्ठ यह जितात्मा, सप्तऋषि अपने आश्रममें बैठे हुयेथे । इनकी पत्नीकी लावण्यता और यौवनावस्थारूप लक्ष्मीको देख कामके बाणोसे पीडित अग्निका शुक्र जो पृथ्वीमे गिरा उससे सोनेकी उत्पत्ति हुई और एक कृत्रिमभी होताहै,जिसको पारेके वेधसे बनातेहै।

विवरण-लंका, चीन,अमेरिका, आफ्रिका आदिदेशोमे सोनेकी अनेक खानें है । प्रायः उपर्युक्तस्थानोंकी भूमिको खोदनेसे जो सोनेकी धूलसा मिलाहुवा रेता निकलताहै उसको अनेकप्रकारसे साफ करके सोना बनाया जाता है ।

रूप्यकनामानि

रूप्यं दुर्वर्णकं श्वेतं खर्जूरं लोहराजकम् ।
अकुप्यं रजतं सौधं विमलं चन्द्रलोहकम् ॥

अर्थ-रूप्य, दुर्वर्णक, श्वेत, खर्जूर, लोहराजक, अकुप्य, रजत, सौध, विमल, चन्द्रलोहक, (शुभ्र, वसुश्रेष्ठ,रुधिर,श्वेतक,महाशुभ्र, तप्तरूपक, चन्द्रभूति, सित, तार, कलधूत, इन्द्रलोहक, रौप्य,धौत, चन्द्रहास, राजरंग, दुर्वर्ण, रंगबीज, कलधौत, कुप्य, रुचिर, चन्द्रवपु, महावसु, बाष्कल, महाधन, चन्द्रकान्ति, शुभ)

सं० रूप्यक, रौप्य, रजत।
हिं० चांदी, रूपा।
बं० रूप।
म० रुप चांदी।
गु० रुपु।
क० बेळ्ळि।
त० ऐडी।
इं० सिल्वर। Silver
ल० आर्गेन्टम्। Argentum
फा० नुकरा।
अ० फिद्दा।

रौप्यपरीक्षा।

गुरु स्निग्धं मृदु श्वेतं दाहे च्छेदे घनक्षमम्। वर्णाढ्यं चन्द्रवत्स्वच्छं रूप्यं नवगुणं शुभम्॥ कठिनं कृत्रिमं रूक्षं रक्तपीतदलं लघु॥ दाहे छेदे घनैर्नष्टं रूप्यं दुष्टं प्रकीर्तितम्॥

अर्थ-तोलमे भारी, स्निग्ध, नरम, तपाने और तोडनेमे सफेद, घनकी चोटको सहलेवे,सुंदरवर्ण और चन्द्रमाके समान निर्मल यह नवगुणयुक्त रूपा उत्तम होताहै। कठोर, बनावटी, रूखा, लाल, पीलपत्तरवाला, हलका, तपाने तोडने और घनकी चोटसे टूटजाय ऐसा रुपा दुष्ट होताहै।

रौप्यगुणा।

रौप्यं स्निग्धं कषायाम्लं विपाके मधुरं सरम्।
वयसः स्थापनं शीतं लेखनं वातपित्तजित्॥

अर्थ-रूपा-स्निग्ध, कषेला, अम्ल, पचनेमे मधुर, सारक, आयुवर्द्धक, शीतल, लेखन और वातपित्तको हरनेवाला है।

अन्यच्च।

तारं च तारयति रोगसमुद्रपारं देहस्य पौष्टिककरं हरते मलं च। वर्ण्यं विषघ्नममलं हरति प्रमेहं वृष्यं पुनर्नवकरं कुरुते चिरायुः॥

अर्थ-तार (रूपा)-प्राणियोंको रोगरूपी समुद्रसे तारनेवाला है, शरीरको पुष्ट करनेवाला, देहके मैलको हरनेवाला, वर्णको उज्ज्वल करनेवाला, विषनाशक, प्रमेहनाशक, वीर्यवर्द्धक, वृद्धमनुष्यको यौवनवान् करनेवाला और आयुको बढानेवाला है।

अपिच।

सितया हन्ति दाहाद्यं वातपित्तं फलत्रिकात्।
त्रिसुगन्ध्याप्रमेहादीन्रजतं इत्यसंशयम्॥

अर्थ-रूपा-चीनीके साथ-दाहादिरोगोंको,त्रिफलेके साथ-वात पित्तादिकोंको और त्रिसुगन्धि (इलायची, दालचीनी और तेज-पात) के साथ-प्रमेहादिक रोगोंको हरनेवाला है।

अशोधितरौप्यगुणाः।

तारं शरीरस्य करोति तापं विध्वंसनं यच्छति शुक्रनाशम्। वीर्य्यं बलं हन्ति तनोश्च पुष्टिं महागदान् पोषयति ह्यशुद्धम्।

अर्थ-अशोधित रूपा-शरीरमें तापको करनेवाला, शरीरको शिथिल करनेवाला,शुक्रनाशक,वीर्यविनाशक पुष्टिनाशक,बलहारक और महारोगोंको उत्पन्न करनेवाला है।

रौप्यस्योत्पत्तिः।

त्रिपुरस्य वधार्थाय निर्निमेषैर्विलोचनैः। निरीक्षयामास शिवः क्रोधेन परिपूरितः॥अग्निस्तत्कालमपतत्तस्यैकस्माद्विलोचनात्। ततो रुद्रः समभवद्वैश्वानर इव ज्वलन्॥ द्वितीयादपतन्नेत्रादश्रुबिन्दुस्तु वामकात्। तस्माद्रजतमुत्पन्नमुक्तकर्म्मसु योजयेत्॥ कृत्रिमं च भवेत्तद्धि वङ्गादिरसयोगतः। (भा प्र०)

अर्थ-त्रिपुरासुरके वध करनेके लिये श्रीमहादेवजी अत्यंत क्रोधित हुये तब उस त्रिपुरासुरको पलकरहित देखते हुये उसीसमय महादेवके एकनेत्रसे अग्नि निकली; जिससे महादेव अग्निके समान प्रज्वलित होते हुये और बॉये नेत्रोंसे जो आंसूकी बूंद गिरी उससे चांदीकी उत्पत्ति हुई। एक कृत्रिम चांदी वंग और पारेके योगसे बनती है।

विवरण।चांदीकी खानें अमेरिका,सिलोन आदि देशोंमे अधिकहैं।

ताम्रनामानि।

ताम्रं म्लेच्छमुखं द्विष्टं वरिष्ठं च कनीयसम्।

अर्थ-ताम्र,म्लेच्छमुख, द्विष्ट, वरिष्ठ, कनीयस (ताम्रक, शुल्व, द्व्यष्ट, उदुम्बर,शुल्ल,उदम्बर,औदुम्बर,औडुम्बर उदुम्बर, रविसञ्ज्ञक, मुनिपित्तल, अर्क,सूर्य्याह्व,लोहितायस, लोहिताप, तपनेष्ट,अम्बक, अरविन्द, रविप्रिय, रक्त, नैपालिक, रक्तधातु, सर्वलोह, पवित्र, ब्रह्मवर्चस, भासुर)

सं०	ताम्र ।	ते०	रागी ।
हि०	ताँबा ।	ता०	तांम्रम्,शेप्पु
बं०	तामा ।	इं०	कापर । Copper
म०	तांब ।	ल०	क्युप्रम् । Cuprum
गु०	त्रांबो ।	फा०	मिस ।
क०	ताम्र ।	अ०	तुहास ।

उत्कृष्टताम्रस्य लक्षणम् ।

जपाकुसुमसंकाशं स्निग्धं मृदु घन क्षमम् ।
लोहनागोज्झितं ताम्रं मारणाय प्रशस्यते ॥

अर्थ-जो जपाके फूलकी समान रंगवाला, स्निग्ध, नरम, घनकी चोटको सहलेवे और जिसमे लोहे तथा शीशेका मेल न हो ऐसा तांबा मारणकर्म्ममे उत्तम होता है ।

दूषितताम्रस्य लक्षणम् ।

कृष्णं रूक्षमतिस्तब्धं श्वेतं चापि घनासहम् ।
लोहनागयुत चेति शुल्व दुष्टं प्रकीर्तितम् ॥

अर्थ-जो काला, रूखा, अत्यन्त कठोर, सफेद, घनकी चोट न सहसके और लोहे तथा शीशेयुक्त हो ऐसा तांबा दुष्ट होता है । यह मारणकर्म्ममे त्याज्य ह ।

ताम्रगुणा ।

ताम्रं सुपक्व मधुरं कषाय तिक्त विपाके कटु शीतल च ।
कफापहं पित्तहर विबन्धशूलघ्नपाण्डूदरगुल्मनाशि ॥(रा नि)

अर्थ-तांबा-मधुर, कषेला, कडवा, पाकमे कटु, शीतल, कफनाशक, पित्तनिवारक तथा विबध, शूल, पाण्डुरोग, उदररोग और गुल्मरोगनाशक है ।

अन्यच्च ।

गुल्म च कुष्ठ च गुदामय च शूलानि शोफोदरपांडुरोगम ।
उत्क्लेशमेदभ्रमदाहहीनं निहन्ति सम्यङ्मृतमेव शुल्वम् ॥

अर्थ-औरभी ताँबा-गुल्म, कोढ, गुदारोग, शूल, सूजन, उदररोग, पांडुरोग, उत्क्लेश, मेद, भ्रम और दाहको हरनेवाला है ।

अपिच ।

ताम्र कषाय मधुरं सतिक्तमम्ल च पाके कटु सारक च ।

कफ,ज्वर, मेह, पथरी और विद्रधि आदि, मुख्यरोगोंको उत्पन्न करे है तथा विषकी समान है । और अशोधित शीसाभी उपरोक्त रोगोंको उत्पन्न करता है ।

वङ्गस्य प्रकारभेदा ।

क्षुरक मिश्रकं चापि द्विविधं वङ्गमुच्यते ।
उत्तमं क्षुरकं तत्र मिश्रक त्वहितं मतम् ॥

अर्थ-क्षुरक और मिश्रक इन भेदोंसे वंग दो प्रकारकी है, तहां क्षुरक वग अत्यन्त उत्तम और मिश्रक वग अहितकारी है ।

धवल मृदुल स्निग्धं द्रुतद्रावं सगौरवम् ।
निःशब्द खुरवगं स्यात् मिश्रकं श्यामशुभ्रकम् ॥

अर्थ-जो श्वेत, नरम,चिकनी शीघ्र गलजाय, तोलमे भारी और अग्निमे डालनेसे शब्द न करे उसको क्षुरक कहते हैं और मिश्रक शुभ्र और श्याम मिलेहुये रगकी होती है ।

श्रेष्ठवङ्गस्य लक्षणम् ।

श्वेतं मृदु लघु स्वच्छस्निग्धमुष्णसहं हिमम् ।
सूत्रपत्रकर कान्त त्रपुश्रेष्ठमुदाहृतम् ॥

अर्थ-सफेद, नरम, तोलमे हलका, स्वच्छ, स्निग्ध, उष्णसह, शीतल,जिसके सूत और पत्तर होजाय और चमकदार, ऐसा, रॉग उत्तम होताहै ।

विवरण । रॉग अन्यद्वीपोसे आताहै, वर्तनोकी कलई और रंग प्रभृतिके काममे आताहै । तांबेके योगसे इसका कॉसा बनताहै । रॉगकी भस्मको वग कहतेहैं ।

सीसकनामानि ।

सीसं सुवर्णक चीन पिष्ट सिन्दूरकारणम् ।

अर्थ-सीस, सुवर्णक, चीन, पिष्ट, सिन्दूरकारण (सीसक. सीसपत्रक, नाग, वप्र, योगेष्ट, गण्डूपदभव, वर्द्ध, स्वर्णारि, यवनेष्ट,चीर, वध्र, पिच्चट, सुवर्णारि, त्रपु [:], वध्रक, महाबल, यामुनेष्टक,बहुमल, श्वेतरंजन, जड, भुजङ्गम,उरग,कुरंग,परिपिष्टक, मृदुकृष्णायस, पद्म, तारशुद्धिकर, शिरावृत्त, वयोरग, चीनपिष्ट, चीनरग, लेख्य, धातुमल, पार्वत) ।

सं०	नाग, सीसक।	तै०	शीश, शिषमु।
हि०	सीसा।	द्रा०	शिशु।
वं०	सीसे, सीसा।	इं०	लेड। Lead
म०	शिसे।	ल०	प्लंबम्। Plumbum
गु०	शीसुं।	फा०	सुर्ब।
क०	सीसा।	अ०	रुसासुल, अस्वद्।

सीसकगुणा।

सीसं रंगगुणं ज्ञेयं विशेषान्मेहनाशनम्। नागस्तु नागशनतुल्यबलं ददाति व्याधिं विनाशयति जीवनमातनोति॥ वह्निं प्रदीपयति कामबलं करोति मृत्युं च नाशयति संततसेवितोऽसौ॥

अर्थ-शीशेमे रांगके तुल्य गुण हैं; विशेषकाके प्रमेहको दूर करेहै सीसा-सौ हाथियोकी समान बलको देवेहै। व्याधिविनाशक, जीवनवर्द्धक, जठराग्निको दीपन करे, कामजनक, बलवर्द्धक और निरंतर सेवन करनेसे मृत्युकाभी नाश करेहै।

अन्यच्च।

क्षयपवनविकारे गुल्मपाण्ड्वामयेषु भ्रमकृमिकफशूले मेहकासामयेषु। ग्रहणिगुदगदे वै नष्टवह्नौ प्रशस्तः शुभविधिकृतनागः कामपुष्टिं ददाति॥

अर्थ-सीसा-क्षयरोग, वातविकार, गुल्म, पाण्डुरोग, भ्रम, कृमि, कफ, शूल, प्रमेह, खाँसी, संग्रहणी और गुदाके रोगोमे देना चाहिये।

नागस्य प्रकारभेदा।

नागं तु द्विविधं प्रोक्तं कुमारं समलं तथा। कुमारं सर्वकार्य्येषु योजनीयं गुणाधिकम्॥ द्रुतद्रावं महाभारं छेदे कृष्णं समुज्ज्वलम्। पूतिगंधं बहिः कृष्णं शुद्धसीसमतोऽन्यथा॥

अर्थ-कुमार और समल इन भेदोसे नाग दो प्रकारका है। तहां अधिक गुणवाला होनेके कारण कुमार जातिके सीसेको सर्व कार्य्योमे प्रयोग करना चाहिये। जो अग्निमे डालनेसे शीघ्र गलजाय, तोलमे भारी हो, तोडनेमे काला और भीतर उज्ज्वल हो, जिसमे दुर्गंध आवे और बाहरसे काला हो ऐसा सीसा उत्तम होता है।

कफ,ज्वर, मेह, पथरी और विद्रधि आदि, मुख्यरोगोंको उत्पन्न करे है तथा विषकी समान है । और अशोधित शीसाभी उपरोक्त रोगोंको उत्पन्न करता है ।

वङ्गस्य प्रकारभेदा ।

क्षुरकं मिश्रकं चापि द्विविधं वङ्गमुच्यते ।
उत्तमं क्षुरकं तत्र मिश्रकं त्वहितं मतम् ॥

अर्थ-क्षुरक और मिश्रक इन भेदोंसे वंग दो प्रकार की है, तहां क्षुरक वंग अत्यन्त उत्तम और मिश्रक वंग अहितकारी है ।

धवलं मृदुलं स्निग्धं द्रुतद्रावं सगौरवम् ।
निःशब्दं क्षुरवंगं स्यात् मिश्रकं श्यामशुभ्रकम् ॥

अर्थ-जो श्वेत, नरम,चिकनी शीघ्र गलजाय, तोलमे भारी और अग्निमे डालनेसे शब्द न करे उसको क्षुरक कहते है और मिश्रक शुभ्र और श्याम मिलेहुये रंगकी होती है ।

श्रेष्ठवङ्गस्य लक्षणम्।

श्वेतं मृदु लघु स्वच्छस्निग्धमुष्णसहं हिमम् ।
सूत्रपत्रकरं कान्तं त्रपुश्रेष्ठमुदाहृतम् ॥

अर्थ-सफेद, नरम, तोलमे हलका, स्वच्छ, स्निग्ध, उष्णसह, शीतल,जिसके सूत और पत्तर होजाय और चमकदार, ऐसा, रॉग उत्तम होताहै ।

विवरण । रॉग अन्यद्वीपोंसे आताहै, बर्तनोंकी कलई और रंग प्रभृतिके काममे आताहै । तांबेके योगसे इसका कॉसा बनताहै । रॉगकी भस्मको वंग कहतेहै ।

सीसकनामानि ।

सीसं सुवर्णकं चीनं पिष्टं सिन्दूरकारणम् ।

अर्थ-सीस, सुवर्णक, चीन, पिष्ट, सिन्दूरकारण (सीसक, सीसपत्रक, नाग, वप्र, योगेष्ट, गण्डूपदभव, वर्द्ध, स्वर्णारि, यवनेष्ट,चीर, वध, पिच्चट, सुवर्णारि, त्रपु [:], वध्रक, महाबल, यामुनेष्टक,बहुमल, श्वेतरंजन, जड, भुजङ्गम,उरग,कुरंग,परिपिष्टक, मृदुकृष्णायस, पद्म, तारशुद्धिकर, शिरावृत्त, वयोरंग, चीनपिष्ट, चीनरंग, लेख्य, धातुमल, पार्वत) ।

सं०	नाग, सीसक ।	तै०	शीश, शिषमु ।
हि०	सीसा ।	द्रा०	शिश्र् ।
बं०	सीसे, सीसा ।	इं०	लेड । Lead
म०	शिसे ।	ल०	प्लंबम् । Plumbum
गु०	शीसुं ।	फा०	सुर्ब ।
क०	सीसा ।	अ०	रुसासुल, अस्वद ।

सीसकगुणाः ।

सीसं रंगगुणं ज्ञेयं विशेषान्मेहनाशनम् ।नागस्तु नागशततुल्यबलं ददाति व्याधिं विनाशयति जीवनमातनोति॥वह्निं प्रदीपयति कामबलं करोति मृत्युं च नाशयति संततसेवितोऽसौ ॥

अर्थ-शीशेमें रांगके तुल्य गुण हैं, विशेषकरके प्रमेहको दूर करेहै सीसा-सौ हाथियोंकी समान बलको देवेहै । व्याधिविनाशक, जीवनवर्द्धक, जठराग्निको दीपन करे, कामजनक, बलवर्द्धक और निरंतर सेवन करनेसे मृत्युकाभी नाश करेहै ।

अन्यच्च।

क्षयपवनविकारे गुल्मपाण्ड्वामयेषु भ्रमकृमिकफशूले मेहकासामयेषु । ग्रहणिगुदगदे वै नष्टवह्नौ प्रशस्तः शुभविधिकृतनागः कामपुष्टिं ददाति ॥

अर्थ-सीसा-क्षयरोग,वातविकार, गुल्म, पाण्डुरोग,भ्रम, कृमि, कफ,शूल,प्रमेह,खाँसी,सग्रहणी और गुदाके रोगोंमें देना चाहिये ।

नागस्य प्रकारभेदाः ।

नागं तु द्विविधं प्रोक्तं कुमारं समलं तथा । कुमारं सर्वकार्य्येषु योजनीयं गुणाधिकम्॥द्रुतद्रावं महाभारं छेदे कृष्णं समुज्ज्वलम् । पूतिगंधं बहिः कृष्णं शुद्धसीसमतोऽन्यथा ॥

अर्थ-कुमार और समल इन भेदोंसे नाग दो प्रकारका है । तहां अधिक गुणवाला होनेके कारण कुमार जातिके सीसेको सर्व कार्य्योंमें प्रयोग करना चाहिये । जो अग्निमें डालनेसे शीघ्र गलजाय, तोलमें भारी हो, तोडनेमें काला और भीतर उज्ज्वल हो, जिसमें दुर्गंध आवे और बाहरसे काला हो ऐसा सीसा उत्तम होता है ।

अशोधितवगनागदोषाः ।

पाकेन हीनौ किल वगनागौ कुष्ठानि गुल्मांश्च तथा विकारान् ।
कण्डूप्रमेहानिलसादशोथभगन्दरादीन् कुरुतः प्रभक्तौ ॥

अर्थ-पाकहीन वग और शीशेके खानेसे-कुष्ठ, गुल्म, कण्डू, प्रमेह, मंदाग्नि, सूझन और भगदरादि रोग उत्पन्न होतेहैं ।

नागोत्पत्तिः ।

दृष्ट्वा भोगिसुतां रम्यां वासुकिस्तु मुमोच ह ।
वीर्य्यं जातस्ततो नागः सर्वरोगापहः नृणाम् ॥

अर्थ-भोगिसर्पकी सुदर पुत्रीको देख वासुकी सॉपने वीर्य्य छोडा, उस वीर्य्यसे मनुष्योके सर्वरोग हरनेवाला सीसा उत्पन्न हुवा ।

जसदनामानि ।

जसदं वंगसदृशं रीतिहेतुश्च तन्मतम् ।

अर्थ-जसद, वगसदृश, रीतिहेतु (श्वेतपटल, कसास्थि)

संस्कृतभाषामे जसद ।	तैलिंगीभाषामे खर्पर ।
हिन्दीभाषामे जस्त, जस्ता ।	इंग्रेजीभाषामे झिंक् । Zinc
बंगभाषामे दस्ता ।	लैटिन्भाषामे झिंक । Zincum
मराठीभाषामे जस्त ।	फारसीभाषामे रुएतुतिया ।
गुजरातीभाषामे जसत ।	अरबीभाषामे शबहा ।

जसदगुणाः ।

जसदं तुवरं तिक्तं शीतलं कफपित्तहृत् ।
चक्षुष्यं परमं मेहान् पाण्डुं श्वासं च नाशयेत् ॥

अर्थ-जस्त-कषेला, कडवा, शीतल, कफपित्तनाशक, नेत्रोंको हितकारी तथा प्रमेह, पाण्डु और श्वासको दूर करे है ।

कान्तलोहनामानि ।

तीव्रं लोहमयस्कान्तं कृष्णायो लोहकान्तकम् ॥

अर्थ-तीव्र, लोह, अयस्कान्त, कृष्णायस, लोहकान्तक (कान्तलोह, तीक्ष्ण, शस्त्रालय, शस्त्र, शस्त्रक, शम्बक, पित्त, पित्तायस, आयस, शच, मुण्डज, निशित, खड्ग, अयः, कान्त, चित्रायस, और चालज)

कृष्णलोहनामानि।

वर्त्तलोहं तीक्ष्णलोह नीलिकापुटलोहकम्।

अर्थ-वर्त्तलोह, तीक्ष्णलोह, नीलिका, पुटलोहक (रुक्मलोह, मृत्तकाल, कृष्णायस, मुण्डलोह, मुण्डायस, दृषत्सार, शिलात्मज, अश्मज, कृषिलोह और आर)

संस्कृतभाषामें	लोह।
हिन्दीभाषामे	लोहा, इस्पात, फोलाद।
वंगभाषामे	लौह, तिखा, इप्पात, काललोह।
मराठीभाषामे	लोखंड, पोलाद, तिखे।
गुजरातीभाषामे	लोढुं, मोलुं, गजवेल।
कर्णाटकीभाषामें	अयस्कान्त, कब्बिण।
तैलिङ्गीभाषामे	इनुमु।
इंग्रेजीभाषामे	आयर्न। Iron स्टील Steel
लैटिन्भाषामे	फेर्म। Ferrum
फारसीभाषामे	आहन्, फोलाद, संगेआहन।
अरबीभाषामे	हदीद, हजरुल।

कान्तलोहगुणा।

गुल्मोदरार्शःशूलाममामवात भगन्दरम्। कामलाशोथकुष्ठानि क्षयं कान्तमयो हरेत्॥ प्लीहानमम्लपित्तं च यकृच्चापि शिरोरुजम्। सर्वान्रोगान्विजयते कान्तलोहं न संशयः॥ बलं वीर्य्यं वपुःपुष्टिं कुरुतेऽग्निं विवर्द्धयेत्।

अर्थ-कान्तलोह, गुल्म, उदर, अर्श, शूल, आम, आमवात, भगन्दर, कामला, शोथ, कुष्ठ, क्षय, प्लीहा, अम्लपित्त, यकृत् और मस्तकादि अनेक रोगोको दूर करै है, बलकारक, वीर्य्यजनक, शरीरको पुष्टि देनेवाला और अग्निवर्द्धक है।

कान्तलोहस्य लक्षणम्।

यत्पात्रे न प्रसरति जले तैलबिन्दुः प्रतप्ते हिंगुगध त्यजति च निजं तिक्ततां निम्बकल्कः॥ तप्तं दुग्धं भवति शिखराकारकं नैति भूमिं कृष्णांगः स्यात्सजलचणकः कान्तिलोहं तदुक्तम्॥

अशोधितवंगनागदोषा ।

पाकेन हीनौ किल वंगनागौ कुष्ठानि गुल्मांश्च तथा विकारान् ।
कण्डूप्रमेहानिलसादशोथभगन्दरादीन् कुरुतः प्रभक्तौ ॥

अर्थ-पाकहीन वंग और शीशेके खानेसे-कुष्ठ, गुल्म, कण्डू, प्रमेह, मंदाग्नि, सूजन और भगंदरादि रोग उत्पन्न होतेहैं ।

नागोत्पत्ति ।

दृष्ट्वा भोगिसुतां रम्यां वासुकिस्तु मुमोच ह ।
वीर्य्यं जातस्ततो नागः सर्वरोगापहः नृणाम् ॥

अर्थ-भोगिसर्पकी सुंदर पुत्रीको देख वासुकी साँपने वीर्य्य छोडा, उस वीर्य्यसे मनुष्योंके सर्वरोग हरनेवाला सीसा उत्पन्न हुवा ।

जसदनामानि ।

जसदं वंगसदृश रीतिहेतुश्च तन्मतम् ।

अर्थ-जसद, वंगसदृश, रीतिहेतु (श्वेतपटल, कसास्थि)

संस्कृतभाषामें जसद ।	तैलिंगीभाषामें खर्पर ।
हिन्दीभाषामें जस्त, जस्ता ।	इंग्रेजीभाषामें झिङ्क । Zinc
वंगभाषामें दस्ता ।	लैटिन्भाषामें झिकं । Zincum
मराठीभाषामें जस्त ।	फारसीभाषामें रुपतुतिया ।
गुजरातीभाषामें जसत ।	अरबीभाषामें शबहा ।

जसदगुणा ।

जसदं तुवरं तिक्तं शीतलं कफपित्तहृत् ।
चक्षुष्यं परमं मेहान् पाण्डुं श्वासं च नाशयेत् ॥

अर्थ-जस्त-कपेला, कडवा, शीतल, कफपित्तनाशक, नेत्रोंको हितकारी तथा प्रमेह, पाण्डु और श्वासको दूर करे है ।

कान्तलोहनामानि ।

तीव्रं लोहमयस्कान्तं कृष्णायो लोहकान्तकम् ॥

अर्थ-तीव्र, लोह, अयस्कान्त, कृष्णायस, लोहकान्तक (कान्तलोह, तीक्ष्ण, शास्त्रालय, शस्त्र, शस्त्रक, शम्बक, पित्त, पित्तायस, आयस, शत्र, मुण्डज, निशित, खड्ग, अयः, कान्त, चित्रायस, और चालज)

कृष्णलोहनामानि।

वर्त्तलोहं तीक्ष्णलोहं नीलिकापुटलोहकम्।

अर्थ-वर्त्तलोह, तीक्ष्णलोह, नीलिका, पुटलोहक (रुक्मलोह, मृत्तकाल, कृष्णायस, मुण्डलोह, मुण्डायस, दृषत्सार, शिलात्मज, अश्मज, कृपिलोह और आर)

संस्कृतभाषामें	लोह।
हिन्दीभाषामे	लोहा, इस्पात, फोलाद।
बंगभाषामे	लौह, तिखा, इस्पात, काललौह।
मराठीभाषामे	लोखंड, पोलाद, तिखे।
गुजरातीभाषामे	लोढुं, मोलुं, गजवेल।
कर्णाटकीभाषामे	अयस्कान्त, कब्बिण।
तैलिङ्गीभाषामें	इनुमु।
इंग्रेजीभाषामे	आयर्न। Iron स्टील Steel
लैटिन्भाषामे	फेरम। Ferrum
फारसीभाषामे	आहन्, फोलाद, संगेआहन।
अरबीभाषामे	हदीद, हजरुल।

कान्तलोहगुणा।

गुल्मोदरार्शःशूलाममामवातं भगन्दरम्। कामलाशोथकुष्ठानि क्षयं कान्तमयो हरेत्॥ प्लीहानमम्लपित्तं च यकृच्चापि शिरोरुजम्। सर्वान्रोगान्विजयते कान्तलोहं न संशयः॥ बलं वीर्य्यं वपुःपुष्टिं कुरुतेऽग्निं विवर्द्धयेत्।

अर्थ-कान्तलोह, गुल्म, उदर, अर्श, शूल, आम, आमवात, भगन्दर, कामला, शोथ, कुष्ठ, क्षय, प्लीहा, अम्लपित्त, यकृत् और मस्तकादि अनेक रोगोको दूर करे है, बलकारक, वीर्य्यजनक, शरीरको पुष्टि देनेवाला और अग्निवर्द्धक है।

कान्तलोहस्य लक्षणम्।

यत्पात्रे न प्रसरति जले तैलबिन्दुः प्रतप्ते हिंगुर्गंधं त्यजति च निजं तिक्ततां निम्बकल्कः॥ तप्तं दुग्धं भवति शिखराकारकं नैति भूमिं कृष्णांगः स्यात्सजलचणकः कान्तिलोहं तदुक्तम्॥

अर्थ-जिसके वर्त्तनद्वारा जलमें तेलकी बूंद डालनेसे नहीं फैले, जिसमे तपानेसे हींग अपनी गन्धको छोड देवे और नीमका कल्क रखनेसे मीठा होजाय तथा जिसमें दूध औटानेसे दूध शिखरके आकार ऊपरको खडा होजावे, परन्तु फैले नहीं और जिसमें जलसहित चने भिगोनेसे काले हो जावे उसको कान्तलोह कहते हैं।

सर्वविधशुद्धलोहस्य गुणाः ।

लोहं तिक्तं सरं शीतं मधुरं तुवरं गुरु। रूक्षं वयस्यं चक्षुष्यं लेखनं वातलं जयेत् ॥ कफं पित्तं गरं शूलं शोथार्शःप्लीहपाण्डुताः। मेदोमेहकृमीन् कुष्ठं तत्किट्टं तद्वदेव हि ॥

अर्थ-शुद्ध लोहा-कडवा, सारक, शीतल, मधुर, कषेला, भारी, रूखा, अवस्थास्थापक, नेत्रोंको हितकारी, बादी तथा कफ, पित्त, विष, शूल, सूजन, बवासीर, प्लीहा, पाण्डुरोग, मेद, प्रमेह, कृमि और कुष्ठका नाश करे है। लोहके समान लोहके कीटके गुण जानने।

अशोधितलोहस्य दोषाः ।

क्लीबत्वकुष्ठामयमृत्युदं भवेद्धृद्रोगशूलौ कुरुतेऽश्मरीं च।
नानारुजां चापि तथा प्रकोपं करोति हृल्लासमशुद्धलोहम्।
जीवहारि मदकारि चायसं चेदशुद्धिमदसंस्कृतं ध्रुवम्।
पाटवं न तनुते शरीरके दारुणां हृदि रुजां च यच्छति॥

अर्थ-शुद्धलोहा-नपुंसकता, कुष्ठ, मृत्यु, हृदयरोग, शूल, पथरी, नानाप्रकारके रोगोंका कोप और हृल्लासको करनेवाला है। प्राणनाशक, मदकारक, शरीरकी चातुर्य्यतानाशक और दारुण हृद्व्यथाको उत्पन्न करता है।

लोहस्य स्वाभाविकदोषाः ।

गुरुता दृढता क्लेदो कफो देहस्य कारिता।
अश्मदोषः सुदुर्गन्धो दोषाः सप्तायसस्य तु ॥

अर्थ-गुरुता, दृढता, क्लेद, कफ, देहकारिता, पत्थरदोष और दुर्गंध यह सात दोष लोहमे स्वाभाविक रहते हैं।

मुण्डलोहगुणाः ।

मुण्डं रूक्षोष्णतिक्तं च वातपित्तकफप्रणुत् ।

तीक्ष्ण पाण्डुहरं तच्च शूलमेहनिवारणम् ॥

अर्थ-मुण्डलोह-रूखा, गरम,कडवा, त्रिदोषनाशक, तीक्ष्ण तथा पाण्डुरोग,शूल और प्रमेहको हरनेवाला है।

लोहस्योत्पत्ति ।

पुरा लोमिनदैत्यानां निहतानां सुरैर्युधि ।
उत्पन्नानि शरीरेभ्यो लोहानि विविधानि च ॥

अर्थ-पूर्वकालमे देवताओंके द्वारा युद्धमे विनाश किये हुए जो लोमिन दैत्य उनके शरीरसे अनेक प्रकारके लोहे उत्पन्न हुए, ऐसी लोहकी उत्पत्ति हुई है।

लोहसेविन कार्याणि ।

गुञ्जामेकां समारभ्य यावत्स्युर्नवरक्तिकाः । तावल्लोह समश्नीयाद्यथादोषबल नरः ॥ कूष्माण्ड तिलतैल च माषान्नं राजिकां तथा । मद्यमम्लरस चैव वर्जयेल्लोहसेवकः ॥

अर्थ-एकगुंजासे लेकर नवरत्तीतक लोहकी मात्रा है। लोहेको सेवन करनेवाले मनुष्य-पेठा,तिलका तेल,उडद, राई, मदिरा और अम्ल रस खटाई आदि)वाले पदार्थोको छोड देवे।

मण्डूरनामानि ।

सिहानं किट्टिमण्डूरं लोहकिट्टमयोमलम् ॥

अर्थ-सिहान,किट्टि,मण्डूर,लोहकिट्ट ,अयोमल(लोहसिहानिका, लोहज,लोहपुरीष,लोहमल,सितवन,सिंहास,सितघाण, शूलघातन, लोहमल, किट्ट, लोहचूर्ण, कृष्णचूर्ण, लोष्ट और सिहल)

मण्डूरलक्षणगुणा ।

ध्मातस्य लोहस्य मलं मण्डूरमिति चोच्यते ।
यल्लोहं यद्गुण प्रोक्तं तत्किट्टमपि तद्गुणम् ॥

अर्थ-दग्धलोहेके मलकोही मण्डूर कहते है। जिस २ लोहेके जैसे २ गुण है, वैसे २ ही उसकी कीटके जानने।

सर्वविधा मण्डूरप्रकारभेदा ।

शतोर्द्धमुत्तम किट्टं मध्य चाशीतिवार्षिकम् ।
अधमं षष्टिवर्षीयं ततो हीनं विषोपमम् ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-१०० सौवर्षसे अधिक कालका मण्डूर सर्वोत्कृष्ट है, ८० अस्सी वर्षका मण्डूर मध्यम है, ६० साठ वर्षका मण्डूर अधम और इससे अल्पकालका मण्डूर विषके समान है ।

विवरण । लोहेकी अनेक जातिहै,उन सबको यहा ग्रन्थ बढनेके भयसे नहीं लिखा । लोहेके अलग २ भेद और गुणदोष विशेष देखनेकी इच्छा होय तो "रसराजशंकर" ग्रंथमे देखो ।

कांस्यनामानि ।

कांस्य विद्युत्प्रियं कंसं ताम्रार्धं वंगशुल्वजम् ॥

अर्थ-कांस्य-विद्युत्प्रिय,कंस,ताम्रार्द्ध,वंगशुल्वज,(कंसास्थि,प्रकाश, घण्टाशब्द,असुराह्वय,सौराष्ट्रक,घोष,कासीय, घोरपुष्प, वह्निलोहक, दीप्तिलोहक,घोषपुष्प, दीप्तलोह, कासक, कांस,ताम्रत्रपुज, दीप्ति)

संस्कृतभाषामे	कांस्य ।
हिन्दीभाषामे	कॉसा कॉसी ।
वंगभाषामे	कांसा ।
मराठीभाषामे	कासे ।
गुजरातीभाषामे	कासु ।
कर्णाटकीभाषामे	कंचु ।
तैलिंगीभाषामे	कंचु ।
इंग्रेजीभाषामे	बेलमेटल । Bell Metal ब्रोंझ Bronze
फारसीभाषामे	रोईन ।
अरबीभाषामे	तालिकून ।

कांस्यकगुणा ।

कांस्यस्य तु गुणा ज्ञेया स्वयोनिसदृशा जनैः ।
सयोगजप्रभावेण तस्यान्येऽपि गुणाः स्मृताः ॥
कांस्य कषाय तिक्तोष्ण लेखन विशद सरम् ।
गुरु नेत्रहितं रूक्ष कफपित्तहर परम् ॥ (भा. प्र)

अर्थ-कासेके गुण तांबे और रांगके समान जानने । सयोगके कारण इसके अलगभी और गुण कहते है। कासा-कपेला, कडवा, गरम, लेखन, विशद, कुछेक दस्तावर, भारी, नेत्रोको हितकारी, रूखा और कफपित्तको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

कांस्यं तु तिक्तमुष्णं चक्षुष्यं वातकफविकारघ्नम् ।
रूक्षं कषाय रुच्यं लघु दीपनपाचनं पथ्यम् ॥ (रा० नि०)

अर्थ-शुद्ध कॉसा-कडवा, गरम, नेत्रोको हितकारी, वातकफदोषनाशक, रूखा, कषेला, रुचिकारक, दीपन और पाचक है ।

घृतमेकं विना चान्यत्सर्व कांस्यगतं नृणाम् ।
भुक्तमारोग्यसुखदं हितं सात्म्यकरं तथा ॥

अर्थ-एक केवल घृतको छोडकर शेष सर्व प्रकारके पदार्थ कांसेके पात्रमें रक्खे हुए-आरोग्यता और सुखको देनेवाले तथा सात्म्य होजाते है ।

विवरण । कासा-आठभाग तांबा और दोभाग रांगके योगसे बनाया जाता है । कासेके पात्र आदि अनेक सामान बनते है । कांसा उपधातु है ।

पित्तलनामानि ।

पित्तलं चाथारकूटः कपिलोहं सुवर्णकम् ॥
रिरीरीरी च रीतिश्च पीतलोहं सुलोहकम् ॥
ब्राह्मी तु राज्ञी कपिला ब्रह्मरीतिर्महेश्वरी ।

अर्थ-पित्तल, आरकूट, कपिलोह, सुवर्णक, रिरी, रीरी, रीति, पीतलोह, सुलोहक, ब्राह्मी, राज्ञी, कपिला, ब्रह्मरीति, महेश्वरी, (पतिकावेर, द्रव्यदारु, रीती, मिश्र, आर, राजरीति, क्षुद्रसुवर्ण, सिंहल, पिंगल, पीतनक, लोहितक, पिंगललोह, पीतक, पाकतुण्डी, राजपुत्री, ब्रह्माणी, हरिलोह, पिंग)

सं० भा० पित्तल ।
हिं० भा० पीतल, कांची पीतल ।
बं० भा० पित्तल, कॉचा पितल ।
म० भा० पितळ, सोनापितळ ।
गु० भा० पीतल ।
क० भा० पित्तालेयरड्डु ।
तै० भा० इत्तडी ।
इं० भा० ब्रास । Brass
फा० भा० विरज ।

पित्तलगुणाः ।

पित्तलस्य गुणा ज्ञेयाः स्वयोनिसदृशा जनैः । संयोगजप्रभा-

वेण तस्यान्येपि गुणाः स्मृता ॥ रीतिका युगलं रूक्ष तिक्त च लवणं रसे । शोधन पाण्डुरोगघ्न कृमिघ्न नातिलेखनम् ॥

अर्थ-पीतलके गुण तांबे और जस्तकी समान है, संयोगजनक प्रभावसे औरभी गुण कहतेहै । दोनो प्रकारके पीतल-रूखे, कडवे, लवणरसान्वित, शोधक, पाण्डुरोगनाशक, कृमिनाशक और अतिलेखन नहीं है ।

अन्यच्च ।

सकलमेहमरुद्गुदजां रुज ग्रहणिकाकफपाण्डुभवं रुजम् ।
श्वसनकामलशूलभव रुजं हरति भस्म तदारकसम्भवम् ॥

अर्थ-पीतल-सर्वप्रकारके प्रमेह, वात, गुदजरोग, संग्रहणी, कफ, पाडु, श्वास, कामला और शूलका नाश करे हैं ।

अपिच ।

रीतिर्द्वय पांडुसमीरनाशन रूक्षं सर कृमिहरं लवणं विषघ्नम् । वृष्य वलीपलितनाशनमुग्रमायुर्वृद्धि करोति सहसा च रसायन च ।

अर्थ-दोनोप्रकारके पीतल-पाण्डुरोगनाशक, वातविनाशक, रूखे, सारक, कृमिहारक, लवणरसान्वित, विषनाशक, वीर्य्यवर्द्धक, वलीपलितनाशक और आयुवर्द्धक है ।

विवरण।पीतल-उपधातु है यह तांबे और जस्तके योगसे बनाया जाता है । इसमे तांबा १ भाग और जस्त ३ भाग डालकर बनाया जाता है । यह दोप्रकारका होताहै ।

पारदनामानि ।

पारदो रसधातुश्च रसेन्द्रश्च महारस' ।
चपलः शिववीर्य्यं च रसः सूत' शिवाह्वयः ।

अर्थ-पारद, रसधातु, रसेन्द्र, महारस, चपल, शिववीर्य्य, रस, सूत, शिवाह्वय (रसराज, रसनाथ, महातेज, रसलेह, रसोत्तम, सूतराट्, जैत्र, शिवबीज, शिव, अमृत, लोकेश, दुर्द्धर, प्रभु, रुद्रज, हरतेज, अचिन्तज, अवित्तज, खेचर, अमर, देहद, मृत्युनाशक, स्कन्द, स्कन्दाशक, देव, दिव्यरस, रसायनश्रेष्ठ, यशोद, सूतक, सिद्धधातु, पारद, हरबीज, रजस्वल, मूर्ति, पार, लोहेश, दुर्धर, मृत्युनाशन, हेमनिधि, त्रिनेत्र, रोपण, स्वामी)

संस्कृतभाषामें पारद। हिन्दीभाषामे पारा। वंगभाषामे पारा। मराठीभाषामें पारा। गुजरातीभाषामे पारो। कर्णाटकीभाषामे पारदरस। तैलिङ्गीभाषामे पारदरसम्। इंग्रेजीभाषामे मर्क्युरी Mercury लैटिन्भाषामे हेड्रार्जिरं। Aydrargyrum फारसीभाषामे सिमाब। अरबीभाषामें जीवक।

पारदगुणा

पारदः षड्रसः स्निग्धस्त्रिदोषघ्नो रसायनः। योगवाही महावृष्यः सदादृष्टिबलप्रदः॥ सर्वामयहरः प्रोक्तो विशेषात्सर्वकुष्ठनुत्। असाध्यो यो भवेद्रोगो यस्यनास्ति चिकित्सितम्॥ रसेन्द्रो हन्ति तद्रोगं नरकुञ्जरवाजिनाम्॥ (भा० प्र०)

अर्थ-पारा-मधुर, अम्ल, कटु, तिक्त, कषाय और लवणरसान्वित, स्निग्ध, त्रिदोषनाशक, रसायन, योगवाही, महावृष्य, सदैव दृष्टि और बलको बढाता है। सर्वरोगनाशक और विशेष करके कुष्ठनाशक है। जो रोग असाध्य है और जिनकी चिकित्सा नहीं है उन मनुष्य, हाथी और घोडेके रोगोंको पारा अवश्य हरता है।

अन्यच्च।

देहस्य शुद्धिं कुरुते च पारदो नानागदानां हरणे समर्थः। करोति पुष्टिं हरते च मृत्युं कल्पायुषं चैव करोति नूनम्॥ पारदः सकलरोगपारदो राजयक्ष्मसरभेकवारिदः। सर्वरोगमपहंति तत्क्षणान्नागवल्लिरसराजभक्षणात्॥

अर्थ-पारा-देहशुद्धकारक, नानाप्रकारके रोगविनाशक, पुष्टिकारक और मृत्युहारक है, तथा चिरजीव करनेवाला है। पारा सर्वरोगोंको दूर करनेवाला, राजयक्ष्मारोगको हरनेवाला और पानके रसके साथ भक्षण करनेसे सर्वप्रकारके रोगोंको तत्काल दूर करनेवाला है।

अपिच।

मूर्च्छार्तो गदहृत्तथैव खगतिं धत्ते विबद्धोर्थदः स्याद्भस्मामयबाधकादिहरणं दृक्पुष्टिकांतिप्रदम्। वृष्यं मृत्युविनाशनं

बलकरं कांताजनानंदनं शार्दूलातुलसत्त्वकृच्च भुविजात्रोगानुसारी स्फुटम् ॥ मूर्च्छितो हरते भुजङ्गधनं भूयोपि मुक्तिदो भवति । अमरीकरोति मृतः कोऽन्यः करुणाकरोऽस्ति सूतात् ॥

अर्थ-मूर्च्छितपारा-रोगनाशक और आकाशमार्गमें गमन करनेकी शक्ति देनेवाला है। बद्धपारा अर्थदायक है। और पारेकी भस्म तरुणता, दृष्टि, पुष्टि तथा कान्तिजनक है। वीर्यवर्द्धक, मृत्युनाशक, स्त्रियोंको आनन्दजनक और योगवाही है। मूर्च्छित पारा-अगम्रहनाशक और मुक्तिदायक है। और मराहुआ पारा अमरपदको देवेहै। फिर इससे अधिक और कौन दूसरा कृपा करनेवाला है।

पारदे पथ्यानि ।

हित मुद्गान्नदुग्धाजशाल्यन्नानि सदा ततः। शाके पुनर्नवा देवि मेघनादं सवास्तुकम्॥सैंधवं नागरं मुस्ता मूलकानि च भक्षयेत् । आत्मज्ञानं कथा पूजा शिवस्य च विशेषतः।एतांस्तु समयान्भद्रे न लघेद्रसभक्षकः ॥ (नि० र०

अर्थ-पारेको भक्षण करनेवाले मनुष्योंको मूंग, दूध, शालिधानके चावल, बकरीका दूध, पुनर्नवेका शाक, चौलाईका शाक, बथुयेका शाक, सेंधानोंन, नागरमोथा और मूली भक्षण करनी चाहिये। तथा आत्मज्ञान, कथा, पूजा और विशेष करके शिवकी भक्ति करनी चाहिये और कदापि लंघन नहीं करे।

पारददोषा ।

मल विषं वह्निगिरित्वचापलं नैसर्गिकं दोषमुशन्ति पारदे। उपाधिजौ द्वौत्रपुनागयोगजौदोषौ रसेन्द्रे कथितौ मुनीश्वरैः॥ मलेन मूर्च्छा मरणं विषेण दाहोग्निना कष्टतरः शरीरे।देहस्य जाड्यं गिरिणा सदा स्याच्चांचल्यतावीर्यहृतिश्च पुंसाम् ॥ वंगेन कुष्ठ भुजगेन पढो भवेत्ततोसौ परिशोधनीयः।वह्निर्विषं मल चेति मुख्या दोषास्त्रयो रसे॥एते वन्ति सन्ताप मृर्ति

मूर्च्छा नृणां क्रमात्।अन्येऽपि कथिता दोषा भिषग्भिः पारदे यदि॥तथाप्येते त्रयो दोषा हरणीया विशेषतः।

अर्थ-मल,विष, अग्नि, गिरिदोष, चपलता यह पाच दोष पारेमें स्वभावसेही है और रांग तथा शीशेके दो दोष इसमे उपाधिज है, ऐसे सात दोष मुनीश्वरोंने कहे है। मलके दोषसे मूर्च्छा, विषके दोषसे मृत्यु, अग्निदोषसे दाह और अत्यन्त शरीरमे पीडा,पर्वतके दोषसे देहमें जडता और चंचलताके दोषसे वीर्य्यको हरेहै। वंग दोषसे कुष्ठ और शीशेके दोषसे नपुंसकताको करता है। इसकारण इसको विधिपूर्वक शोधना चाहिये। अग्नि,विष और मल यह तीन दोष पारेमे मुख्य है। सो संताप, मृत्यु और मूर्च्छा इनको क्रमसे करते है यद्यपि औरभी पारेमे वैद्योने अनेक दोष कहे है; किन्तु मुख्य यह तीनही दोष है, इससे इनको विशेषकरके हरना चाहिये।

अशोधितपारददोषाः।

संस्कारहीनं खलु सूतराजं यः सेवते तस्य करोति बाधाम्। देहस्य नाशं विदधाति नूनं कष्टांश्च रोगाञ्जनयेन्नराणाम्॥

अर्थ-जो मनुष्य अशोधितपारेका सेवन करता है उसको यह बाधा करताहै। निश्चय देहका नाश करनेवाला कष्ट और अनक प्रकारके रोगोको उत्पन्न करे है।

पारदस्योत्पत्तिजातिलक्षणानि।

रसायनादिभिर्लोके पारदो रस्यते यतः। ततो रस इति प्रोक्तः स च धातुरपि स्मृतः॥शिवाङ्गात्प्रच्युतं रेतः पतितं धरणीतले। तद्देहसारजातत्वाच्छुक्लमच्छमभूच्च तत्॥ क्षेत्रभेदेन विज्ञेयं शिववीर्य्यं चतुर्विधम्।श्वेत रक्तं तथा पीतं कृष्णं तत्तु भवेत्क्रमात्॥ ब्राह्मणः क्षत्रियो वैश्यः शूद्रश्च खलु जातितः। श्वेतं शस्त रुजां नाशे रक्तं कील रसायनम्॥ धातुवादे तु तत्पीतं खे गतौ कृष्णमेव च।

अर्थ-रसायनकी इच्छावाले प्राणी इसकी कांक्षा करते है। इस-कारण इसका नाम रसहै और इसको धातुभी कहते है। पृथ्वीमें महादेवका वीर्य्य पतित होनेपर पारेकी उत्पत्ति हुई इस कारण

बलकरं कांताजनानंदनं शार्दूलातुलसत्त्वकृच्च भुविजा-
न्योगानुसारी स्फुटम् ॥ मूर्च्छितो हरते भुजदधनं भूयोपि मु-
क्तिदो भवति । अमरीकरोति मृतः कोऽन्यः करुणाकरोस्ति
सुतात् ॥

अर्थ-मूर्च्छितपारा-रोगनाशक और आकाशमार्गमें गमन कर-
नेकी शक्ति देनेवाला है। बद्धपारा अर्थदायक है।और पारेकी भस्म
तरुणता,दृष्टि,पुष्टि तथा कान्तिजनक है। वीर्यवर्द्धक,मृत्युनाशक
स्त्रियोंको आनन्दजनक और योगवाही है।मूर्च्छित पारा-अंगग्रह
नाशक और मुक्तिदायक है।और मराहुआ पारा अमरपदको देवेहै
फिर इससे अधिक और कौन दूसरा कृपा करनेवाला है।

पारदे पथ्यानि।

हित मुद्गान्नदुग्धाजशाल्यन्नानि सदा ततः।शाके पुनर्नवा दे-
मेघनादं सवास्तुकम्॥सैंधवं नागरं मुस्ता मूलकानि च भक्ष-
येत्। आत्मज्ञानं कथा पूजा शिवस्य च विशेषतः।एतांस्
समयान्भद्रे न लघेद्रसभक्षक ॥ (नि० र०

अर्थ-पारेको भक्षण करनेवाले मनुष्योंको मूँग, दूध,शालिधानके
चावल, बकरीका दूध,पुनर्नवेका शाक, चौलाईका शाक, बथुयेका
शाक, सैंधानोंन, नागरमोथा और मूली भक्षण करनी चाहिये
तथा आत्मज्ञान, कथा,पूजा और विशेष करके शिवकी भक्ति
करनी चाहिये और कदापि लंघन नहीं करे।

पारददोषाः।

मल विषं वह्निगिरित्वचापलं नैसर्गिकं दोषमुशन्ति पारदे
उपाधिजौ द्वौ त्रपुनागयोगजौ दोषौ रसेन्द्रे कथितौ मुनीश्वरैः
मलेन मूर्च्छा मरणं विषेण दाहोग्निना कष्टतरः शरीरे।देहस्य
जाड्यं गिरिणा सदा स्याच्चांचल्यता वीर्यहृतिश्च पुंसाम्
वंगेन कुष्ठं भुजगेन षढो भवेत्ततोसौ परिशोधनीयः।वह्निवि-
षं मल चेति मुख्या दोषास्त्रयो रसे॥एते वन्ति सन्ताप मृ-

मूर्च्छां नृणां क्रमात्।अन्येऽपि कथिता दोषा भिषग्भिः पारदे यदि॥तथाप्येते त्रयो दोषा हरणीया विशेषतः ।

अर्थ-मल,विष, अग्नि, गिरिदोष, चपलता यह पांच दोष पारेमें स्वभावसेही है और रांग तथा शीशेके दो दोष इसमे उपाधिज है, ऐसे सात दोष मुनीश्वरोंने कहे है। मलके दोषसे मूर्च्छा, विषके दोषसे मृत्यु, अग्निदोषसे दाह और अत्यन्त शरीरमे पीडा,पर्वतके दोषसे देहमे जडता और चंचलताके दोषसे वीर्य्यको हरेहै । वंग दोषसे कुष्ठ और शीशेके दोषसे नपुसकताको करता है । इसकारण इसको विधिपूर्वक शोधना चाहिये । अग्नि,विष और मल यह तीन दोष पारेमे मुख्य है। सो संताप, मृत्यु और मूर्च्छा इनको क्रमसे करते है यद्यपि औरभी पारेमे वैद्योने अनेक दोष कहे है; किन्तु मुख्य यह तीनही दोष है, इससे इनको विशेषकरके हरना चाहिये ।

अशोधितपारददोषा ।

संस्कारहीनं खलु सूतराजं यः सेवते तस्य करोति बाधाम् ।
देहस्य नाशं विदधाति नूनं कष्टांश्च रोगाञ्जनयेन्नराणाम् ॥

अर्थ-जो मनुष्य अशोधितपारेका सेवन करता है उसको यह बाधा करताहै । निश्चय देहका नाश करनेवाला कष्ट और अनेक प्रकारके रोगोको उत्पन्न करे है ।

पारदस्योत्पत्तिजातिलक्षणानि ।

रसायनादिभिर्लोकै पारदो रस्यते यतः। ततो रस इति प्रोक्तः स च धातुरपि स्मृतः॥शिवाङ्गात्प्रच्युत रेतः पतितं धरणीतले । तद्देहसारजातत्वाच्छुक्लमच्छमभूच्च तत् ॥ क्षेत्रभेदेन विज्ञेयं शिववीर्य्यं चतुर्विधम्।श्वेत रक्तं तथा पीतं कृष्णं तत्तु भवेत्क्रमात् ॥ ब्राह्मणः क्षत्रियो वैश्यः शूद्रश्च खलु जातितः । श्वेतं शस्त रुजां नाशे रक्तं कील रसायनम् ॥ धातुवादे तु तत्पीतं खे गतौ कृष्णमेव च ।

अर्थ-रसायनकी इच्छावाले प्राणी इसकी कांक्षा करते है । इसकारण इसका नाम रसहै और इसको धातुभी कहते है । पृथ्वीमे महादेवका वीर्य्य पतित होनेपर पारेकी उत्पत्ति हुई इस कारण

यह देहका सारभाग, शुक्र उत्पन्न होनेके हेतु शुक्लवर्ण और स्वच्छ हुवा। यह क्षेत्रभेदसे श्वेत, रक्त, पीत और कृष्ण चार प्रकारका है। तहाँ सफेद रंगके पारेको ब्राह्मण कहते हैं, यह रोगनाश करनेमें उत्तम है। और लाल रंगके पारेको क्षत्रिय कहते हैं, यह रसायन-कार्य्यमें उत्तम है। पीलेरंगके पारेको वैश्य कहते हैं, यह धातुवादमें श्रेष्ठ है।और काले रंगके पारेको शूद्र कहते हैं यह आकाश-मार्गमें चलनेको सहायक है।

पारदप्रशंसा।

मृद कोटिगुणं स्वर्णं स्वर्णात् कोटिगुण मणिः।
मणेः कोटिगुणं बाणो बाणात्कोटिगुणं रसः॥
रसात्परतरं लिंगं न भूतं न भविष्यति। (नि० र०)

अर्थ-मट्टीके गुणोंसे अधिक करोड गुण सुवर्णके दर्शन करनेमें है। सुवर्णके गुणोंसे अधिक करोडगुण मणिके दर्शन करनेमें है।मणिके गुणोंसे अधिक करोडगुण बाणके दर्शन करनेमें है और बाणके गुणोंसे करोड गुण अधिक पारेके दर्शन करनेमें है, पारेसे अधिक गुणवाला पदार्थ न हुवा और न होगा। पारेका विशेषवर्णन हमारे बनाये "रसराजशंकर" ग्रंथमें देखो।

हिंगुलनामानि।

हंसपाद रसस्थान हिंगुलं रक्तपारदम्॥

अर्थ-हंसपाद, रसस्थान, हिंगुल, रक्तपारद, (हिंगुल, हिंगुलि, हिंगुलु, रक्त, मर्कटशीर्ष, दरद, रस, उरु, उन्द, कपिशीर्षक, बर्बर, सुरंग, सुनर, रंजन, म्लेच्छ, चित्राङ्ग, चर्म्मारक, रसोद्भव, रंजक रसगर्भ, चूर्णपारद, मनोहर, चर्म्मार, नानाशृंगारवर्द्धन)

संस्कृतभाषामें	हिंगुल।
हिन्दीभाषामें	हिंगुलू, सिंगरफ, ईंगुर, हींगलू।
बंगभाषामें	हिंगुल।
मराठीभाषामें	हिंगूळ।
गुजरातीभाषामें	हिंगलो।
कर्णाटकीभाषामें	इंगुलियक।
तैलिङ्गभाषामें	इंगिलाकामु।

इंग्रेजीभाषामे सल्फेट ऑफ् मर्क्युरि । Sulphate of Mercury
सिनेबारानेटिव । cinnabar Native
लेटिन भाषामे सल्फुण्ट हैड्राजिरं । Sulphuatum Hydrargyrium
फारसीभाषामे । सिंग्रफ् ।
अरबीभाषामे जंजफर ।

हिंगुलगुणा ।

तिक्तः कषायः कटु हिंगुलुः स्यान्नेत्रामयघ्नः कफपित्तहारी ।
हृल्लासकुष्ठज्वरकामलाश्च प्लीहामवातौ च गरं निहन्ति ॥

अर्थ-हिंगुल (सिंगरफ)-कडवा, कषेला, चरपरा तथा नेत्ररोग, कफ, पित्त, हृल्लास, कुष्ठ, ज्वर, कामला, प्लीहा, आमवात और विषको दूर करे हैं ।

अन्यच्च ।

हिंगुलं मधुरं तिक्तमुष्णं वातकफापहम् ॥
त्रिदोषद्वन्द्वदोषोत्थं ज्वरं हरति सेवनात् ॥

अर्थ-हिंगुल(सिंगरफ)-मधुर, कडवा, गरम, वातकफ, त्रिदोष, द्वन्द्वजदोष और ज्वरका नाश करेहै ।

अपिच ।

हिंगुलः सर्वदोषघ्नो दीपनोऽतिरसायनः ।
सर्वरोगहरो वृष्यो जारणे लोहमारणे ॥

अर्थ-हिंगुल (सिंगरफ)-सर्वदोषनाशक, दीपन, अतिरसायन, सर्वरोगनाशक, वीर्य्यवर्द्धक, जरण और लोहके मारनेमे उत्तम है ।

हिंगुलभेदकलक्षणम् ।

हिंगुलस्त्रिविधः प्रोक्तश्चर्म्मारः शुकतुण्डकः । हंसपादस्तृतीयः स्याच्चर्म्मारः शुभ्रवर्णकः ॥ शुकतुण्डकहिंगुलः पीतवर्णो भवेत्स हि । जपाकुसुमसङ्काशो हंसपादो महोत्तमः ॥ (भा प्र.)

अर्थ-सिंगरफ-चर्म्मार, शुकतुण्डक और हंसपाद इनभेदोसे तीन प्रकारका हैं । तहा चर्म्मारहिंगुल सफेद रंगका, शुकतुण्डकहिंगुल पीले रंगका और हंसपादहिंगुल जपाके फूलोकी समान लाल रंगका अत्यन्त उत्तम होता है ।

हिंगुलोत्पत्ति ।

अशुद्धपारदं भागं चतुर्भाग तु गन्धकम् । उभौ क्षिप्त्वा लोहपात्रे क्षण मृद्वग्निना पचेत् ॥ कृत्वाऽथ खंडशस्तत्र काचकुप्यां निरुध्य च । वस्त्रमृत्तिकया सम्यक्काचकूपिं प्रलेपयेत् । सर्वतोगुलमानेन च्छायाशुष्कं तु कारयेत् । वालुकायंत्रगर्भे तु दिनं मृद्वग्निना पचेत् ॥ क्रमवृद्ध्याऽग्निना पश्चात्पचेद्दिवसपंचकम् । सप्ताहं तु समुद्धृत्य हिंगुलः स्यान्मनोहरः ॥

अर्थ-अशुद्धपारा-एकभाग, गन्धक चारभाग इन दोनोको लोहके पात्रमे डालकर, एक क्षण मदाग्निसे पकावे, फिर टुकडे करके कांचकी शीशीमे रख उस शीशीपै कपडा और मिट्टी लपेटे, चारोओर एक अगुल ऊँचा लेप करे; छायामे सुखावे फिर वालुकायन्त्रमे रखकर एक दिन मृदु अग्निसे पकावे क्रमस फिर पाचदिन पर्यंत वृद्धिकरता हुवा अग्नि लगावे सातवे दिन निकाललें, अच्छा सिंग्रफ बनजायगा ।

स्रोतोंजननामानि ।

स्रोतोऽञ्जनं नदीज च वाल्मीक च जयामलम् ॥

अर्थ-स्रोतोजन, नदीज, वाल्मीक, जयामल, (स्रोतज, स्रोतोनदीभव, स्रोतोभव, सौवीर, सौवीरसार, कपोताञ्जन, यामुन, पीतसारी, वारिभव, कपोतसार, कापोतसार, और वाल्मीकशीर्ष)

सौवीराञ्जननामानि ।

सौवीरकं पार्वतेय मेचक नीलमजनम् ।

अर्थ-सौवीरक, पार्वतेय, मेचक, नील, अजन, (यामुन, कृष्ण, नादेव, स्रोतोज, द्रग्भद, सुवीरज, नीलाजन, चक्षुष्य, वारिसम्भव और कपोतक)

संस्कृतभाषामे	स्रोतोजन, सौवीराञ्जन ।
हिन्दीभाषामे	सुरमा, अंजन, श्वेतशुर्म्मा, कालाशुर्म्मा ।
बगभाषामे	श्वेतशुर्म्मा, नीलशुर्म्मा, नीलाञ्जन, कालशुर्म्मा ।
मराठीभाषामे	काळासुरमा, लालसुरमा, पांढरासुरमा ।
गुजरातीभाषामे	सुरमो, कालोसुरमो, लालसुरमो ।
कर्णाटकीभाषामे	स्रोतोजन ।
तैलिङ्गीभाषामें	सौवीराञ्जन ।

इंग्रेजीभाषामें सल्फुरेट ऑफ आंटीमनी। Sulphuret of antimony
लैटिन्भाषामें आंटिमोनाई सलफ्फुरेटम् । Antimonai Sulphuretum
फारसीभाषामे सूर्मअस्फहानि ।
अरबीभाषामे कुहल इसमुद ।

स्रोतोञ्जनगुणा ।

स्रोतोऽञ्जनं स्मृतं स्वादु चक्षुष्य कफपित्तनुत् ।
कषायं लेखनं स्निग्धं ग्राहि च्छर्दिविषापहम् ॥
हिक्काक्षयास्रजिच्छीतं सेवनीय सदा बुधैः। (भा० प्र०)

अर्थ-स्रोतोञ्जन (कालासुर्म्मा)-स्वादिष्ठ, नेत्रोंको हितकारी, कफपित्तनाशक, कषेला, लेखन, स्निग्ध, मलरोधक, वमननिवारक, विषनाशक, हिचकीको दूर करनेवाला, क्षयरोगको हरनेवाला है, रक्तदोषनिवारक और शीतल है ।

श्रेष्ठस्रोतोऽञ्जनस्य लक्षणम् ।

वल्मीकशिखराकार भिन्नं नीलाञ्जनप्रभम् ।
घृष्टे च गैरिकावर्णं श्रेष्ठ स्रोतोऽञ्जनं च तत् ॥

अर्थ-बॉबीकी शिखरके आकार भिन्न नील अंजनकी समान प्रभायुक्त और जो घिसनेमे गेरूकी रंगकाहो वह उत्तम स्रोतोऽञ्जनहै

सौवीराञ्जनगुणा ।

सौवीर मधुरं शीत कषायं स्निग्धलेखनम् ॥
रक्तपित्तविषच्छर्दिहिक्काघ्नं दृक्प्रसादनम् ॥

अर्थ-सौवीराञ्जन-मधुर, शीतल, कषेला, स्निग्ध, लेखन, तथा रक्तपित्त, विष, वमन् और हुचकीको दूर करेहै तथा नेत्रप्रसादक है ।

पुष्पाञ्जननामानि ।

पुष्पाञ्जनं तु कौसुम्भं रीतिकं कुसुमाञ्जनम् ॥

अर्थ-पुष्पाञ्जन, कौसुम्भ, रीतिक, कुसुमाञ्जन (रीतिपुष्प, पुष्पकेतु, पौष्पक, सदञ्जन, रीतिकुसुम, माक्षिक, चाक्षुष्य, कुभिरसाञ्जन, और धातुमाक्षिक)

स० पुष्पाञ्जन ।
हि० पुष्पांजन ।
बं० पुष्पाञ्जन ।
म० पितळेचे कीट,पुष्पाञ्जन।
गु० कसाजण ।
क० पुष्पांजन ।
तै० पुष्पांजनमु ।
इं० झिंक ओक्सैड । [Zinc Oxide
लै० झिनसाई ओक्सैड । Zinci Oxidum

पुष्पाञ्जन गुणा ।

पुष्पाञ्जन हिम प्रोक्त पित्तहिक्काप्रदाहनुत् ।
नाशयेद्विषकासार्तिसर्वनेत्रामयापहम् ॥ (रा० नि०)

अर्थ-पुष्पांजन-शीतल, पित्तनिवारक, हिक्कानाशक, दाहकारक, विषविनाशक, खाँसीकी पीडाको हरनेवाला और सर्व प्रकारके नेत्ररोगोको दूर करनेवाला है ।

अन्यच्च ।

रीतिपुष्पं च चक्षुष्यं शीतपित्तकफापहम् ॥
हिक्कादाह विष कासं नेत्ररोगं च नाशयेत् ॥(नि०र०)

अर्थ-पुष्पाजन-नेत्रोको हितकारी तथा शीतपित्त, कफ,हिचकी, दाह, विष, खाँसी और नेत्ररोगनाशक है ।

अपिच ।

पुष्पाञ्जन हिमं स्निग्ध शीतं सर्वाक्षिरोगहृत् ।
अतिदुर्धरहिक्काघ्नं विषज्वरगदापहम् ॥

अर्थ-पुष्पाजन-हिम, स्निग्ध,शीतल,सर्वप्रकारके नेत्ररोगहारक, अत्यतदुर्धर,हिचकीको दूर करनेवाला तथा विष और ज्वरनाशकहै ।

तुत्थकनामानि ।

मूषातुत्थं कांस्यनीलं तुत्थकं शिखिकण्ठकम् ॥

अर्थ-मूषातुत्थ,कांस्यनील,तुत्थक,शिखिकण्ठक(तुत्थ, हरिताश्म, नीलागज, मयूरग्रीवक, ताम्रगर्भ, अमृतोद्भव, मयूरतुत्थ, भूतक, शिखिकण्ठ, नील, तुत्थाजन, शिखिग्रीव,वितुन्नक,मयूरक,हेमसार, मृतामिद और ताम्रोपधातु)

संस्कृतभाषामे तुत्थ मयूरतुत्थ ।
हिन्दीभाषामे (तूतिया) नीलाथोथा, नीलातूतिया ।
बंगलाभाषामे तूँतिया ।

मराठीभाषामे	मोरचूत (द)।
गुजरातीभाषामे	मोरथुथु।
कर्णाटकीभाषामे	मयूरतुत्थ।
तैलिङ्गीभाषामे	मेलतुतु।
इंग्रेजीभाषामे	सल्फेट ऑफ कॉपर। Sulphate of Copper
लॅटिन्भाषामे	क्युप्रिआसल्फस Cupres Sulphas
फारसीभाषामे	तूतिया।
अरबीभाषामे	तुतिया अकजर।

तुत्थगुणाः।

तुत्थकं कटुकं क्षारं कषायं वामकं लघु।
लेखनं भेदनं शीतं चक्षुष्यं कफपित्तहृत्॥
विषाश्मकुष्ठकण्डूघ्नं खर्परं चापि तद्गुणम्।

अर्थ–नीलाथोथा–चरपरा, नमकीन, कषेला, वमनकारक, हलका, लेखन, भेदक, शीतल, नेत्रोंको हितकारी तथा कफ, पित्त, विष, पथरी, और कण्डूनाशक है। खपरियाके भी इसीकी समान गुण जानने।

अन्यच्च।

तुत्थं कटु कषायोष्णं श्वित्रनेत्रामयापहम्।
विषदोषेषु सर्वेषु प्रशस्तं वान्तिकारकम्॥ (रा० नि०)

अर्थ–नीलाथोथा–चरपरा, कषेला, गरम, श्वित्रकुष्ठनाशक, नेत्ररोगनाशक, सर्वप्रकारके विषके विकारोंमें प्रशस्त और वमनकारक है।

अपिच।

तुत्थकं नेत्ररोगघ्नं शीतं चित्रविनाशनम्।
कृमिघ्नं लेखनं भेदि कण्डूक्लेदविषापहम्॥

अर्थ–नीलाथोथा–नेत्ररोगनाशक, शीतल, चित्रकुष्ठनाशक, कृमिनाशक, लेखन, भेदक तथा कण्डू, क्लेद और विषके विकारोंको हरनेवाला है।

अपिच।

निःशेषदोषविषहृद्गदशूलमूलकुष्ठाम्लपित्तकविवधहरं परं च।
रसायनं वमनरेचककरं गदघ्नं चित्रापहं गदितमत्र मयूरतुत्थम्॥

अर्थ- नीलाथोथा-सर्वदोष, विष, हृदयरोग, शूल,कुष्ठ,अम्लपित्त और विबन्धको दूर करनेवाला है, रसायन, वमनकारक, दस्तलानेवाला और चित्रकोढको दूर करनेवाला है।

अन्यच्च।

वमने मंडले दद्रौ विषे चैव प्रशस्यते ॥

अर्थ-नीलाथोथा-वमन, मंडलकुष्ठ दाद और विषके विकारोंमे हितकारी है।

खर्परनामानि।

चक्षुष्यममृतोत्पन्नं खर्परीदार्विका तथा ॥

अर्थ-चक्षुष्य, अमृतोत्पन्न, खर्परी, दार्विका (खर्पर, रसक, खर्परिका, तुत्थ, खर्परीतुत्थ, खर्परीतुत्थक, यशदोपधातु)

संस्कृतभाषामे	खर्पर।
हिन्दीभाषामे	खपरिया, खापरिया।
वंगभाषामे	खापर।
मराठीभाषामे	कलखापरी।
गुजरातीभाषामे	खापरियुंकालु।
कर्णाटकीभाषामें	खर्परी।
तैलिङ्गीभाषामे	खर्परं।
इंग्रेजीभाषामे	ब्लाक् जाक्। Black jack
लैटिन्भाषामे	झिंकिसल्फाईड। Zinci Sulphidum
फारसीभाषामे	सङ्गवसरी।
अरबीभाषामे	तुतिया, किरमानी, मकसुल।

खर्परगुणा।

रसकः सर्वमेहघ्नः कफपित्तविनाशनः।
नेत्ररोगक्षयघ्नश्च ज्वरकुष्ठविषापहः ॥ (वै० वि० नि०)

अर्थ-खपरिया-सर्व प्रकारके प्रमेह, कफ, पित्त, नेत्ररोग, क्षय, ज्वर, कुष्ठ और विषके विकारोंको दूर करेहै।

अन्यच्च।

जायते शोभनं भस्म सर्वव्याधिहरं परम्।
नेत्ररोगहर क्लेदिक्षयहा खर्परी गुरुः ॥ (रसचन्द्रिका)

अर्थ-खपरिया-सर्वप्रकारकी व्याधिविनाशक, नेत्ररोगनिवारक क्लेदकारक, क्षयरोगको हरनेवाली और भारी है ।

अशोधितखर्परदोषा. ।

अशुद्धः खर्परः कुर्य्याद्वान्ति भ्रान्ति विशेषतः ।
तस्माच्छोध्यः प्रयत्नेन यावद्वांतिविवर्जितः ॥

अर्थ-अशोधित खपरिया-वान्ति और भ्रान्तिको करती है इस कारण जबतक वान्ति करके रहित न हो तबतक प्रयत्नसे शोधे।

स्वर्णमाक्षिकनामानि ।

माक्षिकं धातुमाक्षिकं ताप्यं स्वर्णाह्वयं मतम् ।

अर्थ-माक्षिक, धातुमाक्षिक, ताप्य, स्वर्णाह्वय (सुवर्णमाक्षिक, स्वर्णमाक्षिक, तापिच्छ, आपीत, ताप्यक, पीतमाक्षिक, आवर्त्त, क्षौद्रधातु, माक्षिकधातु, कदम्ब, चक्रनामा, तापिञ्ज, स्वर्णवर्ण, हेमद्युति, मधुधातु, अजनामक)

तारमाक्षिकनामानि ।

विमलं माक्षिकश्रेष्ठं श्वेताक्षं तारमाक्षिकम् ।

अर्थ-विमल, माक्षिकश्रेष्ठ, श्वेताक्ष, तारमाक्षिक (रूप्यमाक्षिक रौप्यमाक्षिक)

संस्कृतभाषामें	स्वर्णमाक्षिक, तारमाक्षिक ।
हिन्दीभाषामें	सोनामाखी, रूपामाखी, तारामुखी ।
बंगभाषामें	स्वर्णमाक्षिक, तारमाक्षिक, रौप्यमाक्षिक ।
मराठीभाषामें	दगडीसोनामुखी, रौप्यमाक्षी ।
गुजरातीभाषामें	सोनामाखी, रूपामाखी ।
कर्णाटकीभाषामें	धातुमाक्षिक, यरडुमाक्षिक ।
तैलिङ्गीभाषामें	स्वर्णमाखी, रूपामाखी ।
इंग्रेजीभाषामें	आयर्नपाईराईटीस् । Iron Pyrites
लैटिन्भाषामें	फेरीसल्फ्युरेटम् । FecriSulphuretum
अरबीभाषामें	मुर्कशीशाजहबी, मुर्कशीशाफिद्दा ।

स्वर्णमाक्षिकगुणा ।

सुवर्णमाक्षिकं स्वादु तिक्तं वृष्यं रसायनम् ।

चक्षुष्यं बस्तिहृत्कण्ठपाण्डुमेहविषोदरम् ॥
अर्शःशोफविष कण्डुत्रिदोषानपि नाशयेत्॥ (भा०प्र०)

अर्थ-सोनामाखी-स्वादु, कडवी, वृष्य, रसायन, नेत्रोको हितकारी, वस्तिरोगनाशक तथा कण्ठरोग, पाण्डुरोग, प्रमेह, विष, उदररोग, बवासीर, सूजन, विष, कण्डू और त्रिदोषका नाश करैहै।

अन्यच्च।

माक्षिक मधुरं तिक्तमम्लं कटु कफापहम्।
भ्रमहृल्लासमूर्च्छार्त्तिश्वासकासविषापहम् ॥

अर्थ-माक्षिकधातु-मधुर, कडवी, अम्ल, चरपरी, कफनाशक तथा भ्रम, हल्लास, मूर्च्छा, श्वास, खांसी और विषको दूर करे है।

अन्यच्च।

माक्षिकं तुवर वृष्य स्वर्यं लघु रसायनम्।
चक्षुष्य कुष्ठशोफार्शोमेहवस्त्यर्तिपाण्डुताः।
व्यवायि कटुक हन्ति कुष्ठोदरविषक्षयान् ॥ (म०नि०)

अर्थ-माक्षिकधातु-कषेली, वीर्य्यवर्द्धक, स्वरको स्वच्छ करने वाली, हलकी, रसायन, नेत्रोको हितकारी तथा कुष्ठ, सूजन बवासीर, प्रमेह, वस्तीकी पीडा, पाण्डुरोग, कुष्ठ, उदररोग, विष और क्षयरोगका नाश करे है। व्यवायी और चरपरी है।

अशुद्धमाक्षिकदोषाः।

मन्दानलत्वं बलहानिमुग्रां विष्टम्भितां नेत्रगदान्सकुष्ठान्।
मालां तथैव व्रणपूर्विकां च कुर्य्यादशुद्धं खलु माक्षिकञ्च (भा प्र)

अर्थ-अशुद्ध माक्षिकधातु-मन्दाग्नि, बलहानि, विष्टम्भता, नेत्ररोग, कुष्ठ, गण्डमाला और व्रणको उत्पन्न करनेवाली है।

अन्यच्च।

अशुद्धं माक्षिक कुर्यादाध्यं कुष्ठ क्षय कृमीन्।
शोधनीय प्रयत्नेन तस्मात्कनकमाक्षिकम् ॥ (नि०र०)

अर्थ- अशुद्ध सोनामुखी-आध्य, कुष्ठ, क्षय और कृमिको उत्पन्न करे है। इसकारण प्रयत्न करके शोधनी चाहिये।

अपिच।

किञ्चित्सुवर्णसाहित्यात्स्वर्णमाक्षिकमीरितम् ।
उपधातुः सुवर्णस्य किञ्चित्स्वर्णगुणान्वितम् ॥

अर्थ-किंचित् सुवर्णमिश्रित होनेसे यह स्वर्णमाक्षिक कहीजाती है,सुवर्णकी उपधातु है और किञ्चित् सुवर्णके गुणयुक्त है ।

तारमाक्षिकगुणाः ।

माक्षिको रजतहाटकप्रभः शोधितोऽतिगुणदः सुसेवितः ।
मेहकुष्टक्रमिशोफपाण्डुतापस्मृतिं हरति सोश्मरी जयेत्॥
स्वर्णमाक्षिकवद्दोषा विज्ञेयास्तारमाक्षिके ।

अर्थ-रूपामाखी चांदीकी और सोनेकी समान प्रभायुक्त होती है, यह भलेप्रकारसे शोधी हुई अनेक गुणदायक है तथा प्रमेह, कोढ, कृमि,सूजन, पाण्डुरोग, अपस्मार और पथरीको हरनेवाली है । अशोधित रूपामाखीके दोष स्वर्णमाखीकी समान जानने ।

तारमाक्षिकमन्यत्तु तद्भवेद्रजतोपमम् ।
किञ्चिद्रजतसाहित्यात्तारमाक्षिकमीरितम् ॥

अर्थ-जो माखी रूपेकी समान श्वेतवर्ण तथा किंचित् रौप्यमिश्रित हो वह रूपामाखी कही जाती है ।

वोदारनामानि।

वोदारो नागसत्वश्च व्रणघ्नः स्वर्णवर्णकः ।

संस्कृतभाषामें	वोदार, नागसत्व, व्रणघ्न, स्वर्णवर्णक ।
हिन्दीभाषामें	मुरदाशिंग ।
मराठीभाषामें	मुरदाडशिंग ।
गुजरातीभाषामें	वोदारकांकरो ।
इंग्रजीभाषामें	लिथार्ज । Litharge
लैटिन्भाषामें	प्लुंबी आक्षैड । Llumbi
फारसीभाषामें	मुरदासिंग ।
अरबीभाषामें	मुर्दासिंज ।

वोदारगुणाः ।

वोदारःसारको भेदी व्रणरोपणकारकः । वान्तिकृन्मूत्रकृच्छ्रा-

णां प्रहेस्य च कारकः॥कफं वातं व्रणं शूलमुदरं कृमिशोथक-म्॥आध्मानं वातगुल्मश्च आनाह शोफज्वरम् ॥ उदावर्त्तं नाशयतीत्येवमाहुर्मनीपिणः ।

अर्थ-मुरदासिंग-सारक, भेदक, व्रणरोपक, वमनकारक, मूत्रकृच्छ्र-कारक, प्रमेहकारक तथा कफ, वात, व्रण, शूल, उदररोग, कृमि, सूजन, आध्मान, वात, गुल्म, आनाह, शोफज्वर और उदावर्तको दूर करे है।

अपरञ्च।

सीससत्त्वं मरुच्छ्लेष्मशमनं कायदाहकम् ।
केश्यं पुंसांगरोगघ्नं रंजनं रसबंधनम् ॥ (नि० र०)

अर्थ-मुरदासिंग-वात, कफ, गरमीके रोग और शरीरकी दाहको दूर करे है, केशोको हितकारी, पुरुषोके अंगरोगोको दूर करने-वाला और पारेको बांधनेवाला है ।

वोदारोत्पत्तिलक्षणम् ।

अर्बुदस्य गिरेः पार्श्वे जातं वेंदारशृंगकम् ।
सदलं पीतवर्णं च भवेद्गुर्जरमंडले ॥

अर्थ-अर्बुदपर्वतके निकट पार्श्वभागमें वेदार नामवाला शृंग है उस शृंगपै मुरदासिंग उत्पन्न होता है यह सदल और पीले रंगका तथा गुर्जरदेशमें होता है ।

अभ्रकनामानि ।

अभ्रकं गिरिजावीजं निर्मलं गिरिजामलम् ।
अब्दं व्योमघनं शुभ्रं बहुपत्रं घनाह्वकम् ॥

अर्थ-अभ्रक, गिरिजावीज, निर्मल, गिरिजामल, अब्द, व्योम, घन, शुभ्र, बहुपत्र, घनाह्वक, (गिरिज, अमल, गौर्य्यामल, गरजध्वज, अभ्र, भृङ्ग, अम्बर, अन्तरिक्ष, आकाश, ख, अनन्त, गौरीज, गौरीजेय, गगन)

संस्कृतभाषामे	अभ्रक ।
हिन्दीभाषामे	अभ्रक, अवरख, आभ ।
वंगभाषामे	अभ्र ।
मराठीभाषामे	अभ्रक ।
गुजरातिभाषामें	अभरख।

कर्णाटकीभाषामें	अभ्रक।
तैलङ्गीभाषामे	अभ्रक।
इंग्रेजीभाषामे	टाल्क, ग्लिमर। TalC Glimmer
लैटिन्भाषामे	माईका। Mica
फारसीभाषामे	सिताराजमीन।
अरबीभाषामे	तल्क।

मारिताभ्रकगुणा।

अभ्र कषायं मधुरं सुशीतमायुष्करं धातुविवर्द्धनञ्च। हन्यात्त्रिदोष व्रणमेहकुष्ठ प्लीहोदरग्रन्थिविषकृमीश्च ॥ रोगान्हन्ति द्रढयति वपुर्वीर्य्यवृद्धिं विधत्ते तारुण्याढ्यं रमयति शतं योषितां नित्यमेव। दीर्घायुष्काञ्जनयति सुतान्विक्रमैः सिंहतुल्यान्मृत्योर्भीतिं हरति सततं सेव्यमानं मृताभ्रम्।

अर्थ-अभ्रक-कषेला, मधुर, शीतल, आयुकर, धातुवर्द्धक, त्रिदोष नाशक तथा व्रण, प्रमेह, कोढ, प्लीहा, उदररोग, ग्रन्थि, विष और कृमिका नाश करेहै। रोगनाशक, देहको दृढकरनेवाला, वीर्य्यवर्द्धक, तरुणअवस्थायुक्त सौ स्त्रियोंसे नित्यप्रति रमनेका सामर्थ्य करानेवाला, दीर्घ आयुवाले और सिंहकी समान पराक्रमी ऐसे पुत्रोंको उत्पन्न करानेवाला और मृत्युके भयकोभी हरनेवाला है।

अन्यच्च।

मृताभ्रकं कामबलप्रद च विषं मरुच्छ्वासभगन्दरांध्यम्।
मेह भ्रम पित्तकफ च कास क्षय निहन्त्येव यथानुपानात्॥

अर्थ-अभ्रकको यथानुपानके साथ सेवन करनेसे काममद, बलकारक तथा विष, वात, श्वास, भगन्दर, आंध्य, प्रमेह, भ्रम, पित्त, कफ, खाँसी और क्षयरोगको हरनेवाला है।

अभ्रस्य जातिवर्णभेदा।

विप्रक्षत्रियविट्शूद्रभेदात्स्यात्तच्चतुर्विधम्।
क्रमेण च सित रक्तं पीत कृष्णञ्च वर्णतः॥

अर्थ-अभ्रक-जातिके भेदसे चार प्रकारकाहै, जैसे ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र, तहां ब्राह्मणअभ्रक-श्वेतरंगका, क्षत्रिय अभ्रक-लाल-

रंगका, वैश्यअभ्रक-पीले रंगका और शूद्रअभ्रक काले रंगका होता है ।

प्रशस्यते सितं तारे रक्तं तत्तु रसायने
पीतं हेमनि कृष्णं तु गदेषु भूतयेऽपि च ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-चांदीके बनानेमे सफेद अभ्रक, रसायन कर्म्ममे लाल, सुवर्णके बनानेमे पीला और रोगोमे तथा ऐश्वर्यके लिये कृष्ण अभ्रक लेना चाहिये ।

चतुर्विधाभ्रस्य नामलक्षणगुणा ।

पिनाकं दर्दुरं नागं वज्रञ्चेति चतुर्विधम् ।पिनाकं वर्ज्जयेद्धीमान्दर्दुरञ्च विशेषतः। तृतीयं नागसंज्ञञ्च दूरतः परिवर्ज्जयेत् । मुञ्चत्यग्नौ विनिःक्षिप्तं पिनाकं दलसञ्चयम् ॥ अज्ञानाद्भक्षणात्तस्य महाकुष्ठप्रदायकम् । दर्दुरं त्वग्निनिःक्षिप्तं कुरुते दर्दुरध्वनिम् ॥ गोलकान्बहुशः कृत्वा तत्स्यान्मृत्युप्रदायकम् । नागन्तु नागवद्वह्नौ फूत्कारं परिमुञ्चति ॥ तद्भक्षितमवश्यन्तु विदधाति भगन्दरम् ॥ वज्रन्तु वज्रवत्तिष्ठेत्तन्नाग्नौ विकृतिं व्रजेत्॥वज्रसंज्ञं हितं योग्यमभ्रं सर्वत्र नेतरत् । सर्वाभ्रेषु वरं वज्रं व्याधिवार्द्धक्यमृत्युहृत् ॥ अभ्रमुत्तरशैलोत्थं बहुसत्त्वं गुणाधिकम् । दक्षिणाद्रिभवं चाभ्रं स्वल्पसत्त्वगुणप्रदम् ॥

अर्थ-पिनाक, दर्दुर, नाग और वज्र इन भेदोसे अभ्रक चार प्रकारका है ।इनमे पिनाक, दर्दुर और नागनामवाला अभ्रक त्यागने योग्य है । पिनाकअभ्रक अग्निमे डालनेसे परत २ होजाताहै । यदि इसको कोई अज्ञानक वशसे खा ले तो उसके महाकुष्ठरोग उत्पन्न होताहै ।दर्दुर नामवाला अभ्रक अग्निमे डालनेसे मेंडककी समान शब्द करता है। तथा गोलाकार होजाताहै ।इसको भक्षण करनेसे मृत्यु होतीहै । नागनामवाला अभ्रक अग्निमे डालनेसे फुकार करता है, इसको भक्षण करनेसे अवश्य भगन्दररोग उत्पन्न होताहै ।और वज्रसंज्ञक अभ्रक अग्निमे गेरनेसे वज्रके समान जैसेका तैसा बना रहता है और विकारको प्राप्त नही होताहै यह वज्राभ्रक सर्व प्रकारके अभ्रकोमे उत्तम होनेके कारण सब प्रकारके रोग,

वृद्धावस्था और मृत्युको हरनेवाला है । उत्तरके पर्वतोमे होनेवाला अभ्रक बहुत सत्त्वसम्पन्न और अधिक गुणवाला है तथा दक्षिणके पर्वतोमे उत्पन्न होनेवाला अभ्रक अल्पसत्त्व और अल्पगुणवाला है ।

अशोधिताभ्रदोषा ।

पीडां विधत्ते विविधां नराणां कुष्ठंक्षयं पाण्डुगदं च शोथम् ।
हृत्पार्श्वपीडाञ्च करोत्यशुद्धमभ्र ह्यसिद्ध गुरुतापदं स्यात् ॥

अर्थ-अशुद्ध अभ्रक-अनेक प्रकारकी पीडा, कुष्ठ, क्षय, पाण्डुरोग, सूजन, हृदयकी पीडा, पसवाडेकी पीडा, भारीपन और तापको उत्पन्न करे है ।

अभ्रकोत्पत्तिः ।

पुरा वधाय वृत्रस्य वज्रिणा वज्रमुद्धृतम् ॥ विस्फुलिङ्गा-
स्ततस्तस्य गगने परिसर्पिताः ॥ ते निपेतुर्घनध्वाना-
च्छिखरेषु महीभृताम् । तेभ्य एव समुत्पन्नं तत्तद्गिरिषु
चाभ्रकम् ॥ तद्वज्रवज्रजातत्वादभ्रमभ्ररवोद्भवात् ।
गगनाद्गलितं यस्माद्गगनञ्च ततो मतम् ॥(भा० प्र०)

अर्थ-पूर्वकालमे इन्द्रदेवने वृत्रासुरके मारनेको वज्र उठाया उस समय उस वज्रमेसे चिनगारिये निकलकर आकाशमंडलमे फैलगई, फिर वेही चिनगारिये गर्जते बादलोसे निकलकर जिन २ पर्वतोके शृंगोमे गिरी उन्ही २ पर्वतोमे अभ्रक उत्पन्न हुआ । यह वज्रसे जो उत्पन्न हुआ इससे इसको वज्र कहते है, बादलोके शब्दसे जो प्रगट हुआ इससे इसको अभ्रक कहते है, और आकाशसे जो गिरा इसी कारण इसको गगन कहते है ।

अभ्रेपथ्यम् ।

क्षाराम्ल द्विदलं चैव कर्कटी कारवेल्लकम् ।
वृन्ताकं च करीरं च तैलं चाभ्रे विवर्ज्जयेत् ॥

अर्थ-अभ्रकको सेवन करनेवाले मनुष्य क्षार, अम्ल, द्विदल (उडद मूँगादि) ककडी, करेला, बैंगन, करील और तेलको छोडदेवे ।

गन्धकनामानि ।

गौरीबीजं बलिर्गन्धपाषाणो गन्धकः स्मृतः ।

अर्थ-गौरीबीज, बलि, गन्धपाषाण, गन्धक, (गन्धिक, गन्धाश्म, पामाघ्न, सौगन्धिक, सुगन्धिक, पामारि, शुल्वारि, गन्धी, गन्धमोदन,

वर, पूतिगन्ध, गन्ध, दिव्यगन्ध, सगन्ध,रसगन्धक,कुष्ठारि, कीटघ्न, क्रूरगन्ध, शरभूमिज, बलरस)

संस्कृतभाषामें गन्धक ।	तैलिङ्गीभाषामें गंधकमु ।
हिन्दीभाषामें गन्धक ।	अं० सल्फर ब्रिम्स्टोन ।
बंगभाषामें गन्धक ।	फारसीभाषामें गोगिर्द ।
मराठीभाषामें गन्धक ।	लैटिन्भाषामें सल्फर ।
गुजरातीभाषामें गन्धक ।	अरबीभाषामें किब्रित ।

गन्धकगुणा ।

गन्धकः कटुकस्तिक्तो वीर्य्योष्णस्तुवरः सरः ।
पित्तलः कटुकः पाके कण्डूवीसर्पजन्तुजित् ।
हन्ति कुष्ठक्षयप्लीहकफवातान्रसायनः ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ गन्धक-चरपरा,कडवा,उष्णवीर्य्य,कषेला,सारक,पित्तजनक, पचनेमे कटु, रसायन तथा कण्डू, विसर्प, कृमि, कुष्ठ, क्षय, प्लीहा, कफ और वातको दूर करनेवाला है ।

अन्यच्च ।

शोधितो यस्तु गन्धः स्याज्जरामृत्युरुजापहः ।
अग्निसंदीपनः श्रेष्ठो वीर्य्यवृद्धिकरोऽस्थिकृत॥(प्र०भू०)

अपिच ।

अर्थ-शोधितगंधक-जरा और मृत्युनाशक है तथा सर्वरोगनिवारक है,अग्निप्रदीपक,श्रेष्ठ,अत्यन्तवीर्य्यवर्द्धक और अस्थिजनक है ।

पवनपित्तकफान्विषकामलान् सकलकुष्ठगदाञ्छुचिगन्धकः । हरति निष्कमितः पयसान्वितो मदनवृद्धिकरो नयनार्त्तिहृत् ॥ (नि० र०)

अर्थ-शोधितगंधक-चार मासे दूधके साथ सेवनकरनेसे वातविकार, पित्तविकार, कफविकार, विष,कामला, सर्व प्रकारके कुष्ठ और नेत्ररोगोंको दूर करेहै तथा कामदेवको बढावेहै ।

अशुद्धगन्धकदोषा ।

अशोधितो गन्धक एष कुष्ठं करोति तापं विषमं शरीरे ।
सौख्यञ्च रूपञ्च बलं तथौजः शुक्रं निहन्त्येव करोति चास्रम्॥

अर्थ-अशुद्धगन्धक-कोढ और विषमताप देहमे उत्पन्न करता है तथा सुख, रूप, बल, ओज और शुक्रका नाश करता है और रुधिरको दूषित करे है।

अन्यच्च।

अशुद्धं कुरुते कुष्ठ पित्तं दाहं भ्रम रुजम्।
हन्ति वीर्य्य बलं रूपं गन्धक शोधयेत्ततः॥

अर्थ-अशुद्धगन्धक-कुष्ठ, पित्त, दाह, भ्रम और पीडाको उत्पन्न करे है। वीर्य्य, बल और रूपका नाश करे है इस कारण प्रथम शोधकर काम लेवे।

गन्धकस्य प्रकारभेदा।

श्वेतो रक्तश्च पीतश्च नीलश्चेति चतुर्विधः। गंधको वर्णतो ज्ञेयो भिन्नभिन्नगुणाश्रयः। श्वेतः कुष्टापहारी स्याद्रक्तो लोहप्रयोगकृत। पीतो रसे प्रयोगार्हो नीलो वर्णान्तरोचितः॥

अर्थ-गन्धक-सफेद, लाल, पीला और नीला इन भेदोसे चार प्रकारका है, तहां सफेद गन्धक-कुष्ठनाशक है। लाल गन्धक लोहके मारनेमे लेना। पीला गन्धक-पारेके विषयमे उत्तम है और नीला गन्धक वर्णान्तर तथा रसायन कर्म्ममें श्रेष्ठ है।

अन्यच्च।

रक्तो हेमक्रियासूक्तः पीतश्चैव रसायने।
व्रणविलेपने श्वेतः कृष्णः श्रेष्ठः सुदुर्लभः॥

अर्थ-लाल गंधक सुवर्णके बनानेमे लेना, पीलागन्धक रसायन कर्म्ममे लेना, व्रणके लेपादिकमे सफेद गन्धक लेना और कृष्णगन्धक श्रेष्ठ और दुर्लभ है।

श्वेतगन्धकलक्षणम्।

शुक्लपद्मसमच्छायो नवनीतसमप्रभः।
मसृणः कठिनः स्निग्धः श्रेष्ठगन्धक उच्यते॥

अर्थ-जो सफेद कमलकी समान वर्णवाला, नवनीतकी समान प्रभायुक्त हो, मसृण, कठिन और स्निग्ध ऐसा गंधक उत्तम कहा जाता है।

गंधकस्य उत्पत्तिः।

श्वेतद्वीपे पुरा देव्याः क्रीडन्त्या रजसाप्लुतम्।
दूकूलं तेन वस्त्रेण स्नातायाः क्षीरनीरधौ॥
प्रसृतं तद्रजस्तस्माद्गन्धकः समजायत।

अर्थ-पूर्वकालमें श्वेतद्वीपमें क्रीडा करती हुई भगवती देवी रजस्वला हुई तब उस रजके सने हुए कपडेसे भगवती देवी क्षीरसमुद्रमें न्हाई वह रज क्षीर समुद्रमें गिरा उससे गन्धककी उत्पत्ति हुई।

सिन्दूरनामानि।

सिन्दूरं नागजं वीरं रक्तं सन्ध्यारुणं शिवम्॥

अर्थ-सिन्दूर, नागज, वीर, रक्त, सन्ध्यारुण, शिव (रक्तवालुका रंगज, वंगज, शृङ्गारभूषण, नागरक्त, नागसम्भव, रक्तचूर्ण, रक्तवालुक, रक्तशासन, भालदर्शन, नागरेणु, सीमन्तक, नागगर्भ, शोण, वीररज, गणेशभूषण, सन्ध्याराग, शृङ्गारक, सौभाग्य, अरुण, मङ्गल्य, सीसज, सीसोपधातु)

सं०	सिन्दूर।	लैं०	प्लंब ओक्सैडम्।
हिं०	सिन्दूर।	ता०	चेन्दूरम्।
वं०	सिन्दूर।	इं०	मिनियम् रेडलेड।
म०	शेंदुर।	फा०	सिरिंजं।
तै०	चेन्दुरमु।	अ०	उसरज।

सिन्दूरगुणाः।

सिन्दूरमुष्णं वीसर्पकुष्ठकण्डूविषापहम्।
भग्नसन्धानजननं व्रणशोधनरोपणम्॥

अर्थ-सिन्दूर-गरम, विसर्पनाशक, कुष्ठविनाशक, कण्डूनिवारक, विषहारक, भग्नसन्धानकारक, व्रणको शोधनेवाला और भरनेवाला है।

सिन्दूरस्य स्वरूपम्।

सीसोपधातुः सिन्दूरं गुणैस्तत्सीसवन्मतम्।
संयोगजप्रभावेण तस्याप्यन्ये गुणाः स्मृताः॥ (भा प्र)

अर्थ-सिन्दूर सीसेसे बनाया जाता है इस कारण सिन्दूरको सीसेकी उपधातु कहते हैं, सिन्दूरके गुण सीसेकी समान हैं परन्तु संयोगज प्रभावसे और २ भी गुण कहे हैं।

मन शिलानामानि ।

मनःशिला च गोला च मनोज्ञा नागजिह्विका ।
मनोगुप्ता रोगशिला नैपाली कुनटी शिला ॥

अर्थ-मनःशिला, गोला, मनोज्ञा, नागजिह्विका, मनोगुप्ता, रोगशिला, नैपाली कुनटी, शिला, (मनःसिल, कुलटी, मनोह्वा, नेपालिका, कल्याणिका, नागमाता, रसनेत्रिका, दिव्यौषधि)

सं० मनःशिला ।	त० मानुशिला ।
हिं० मनशिल, मैनशिल ।	फा० जरनिख, अहेमर ।
बं० मनछाल ।	इ० रीलेगार ।
म० मनशीळ ।	लै० आर्सेनिक, सल्फैडम् ।
गु० मणशाल ।	

मन शिलागुणा ।

मनःशिला गुरुर्वल्या सरोष्णा लेखनी कटुः ।
तिक्ता स्निग्धा विषश्वासकासभूतकफास्रनुत ॥

अर्थ-मनशिल-भारी, बलकारी, सारक, गरम, लेखन, चरपरी, कड़वी, स्निग्ध तथा विष, श्वास, खासी, भूत, कफ और रुधिरके विकारोको दूर करे है ।

अशोधितमन शिलादोषा ।

मनःशिला मन्दवलं करोति जन्तून्ध्रुव शोधनमन्तरेण ।
मलानुबन्ध किल मूत्ररोधमशर्करं कृच्छ्रगद च कुर्यात ॥

अर्थ-अशुद्धमनशिल-बलको कम करनेवाली, मलरोधक, मूत्ररोधक, शर्करारोगजनक और मूत्रकृच्छ्र रोगको करे है ।

हरितालमनःशिलयोर्भेदः ।

तालकस्यैव भेदोऽस्ति मनागेव तदन्तरम् ।
तालकमतिपीतं स्याद्भवेद्रक्ता मन.शिला ॥

अर्थ-हरिताल और मनशिल इन दोनोंमे केवल इतनाही अतर है कि, हरिताल अत्यन्त पीली और मनशिल लाल होती है ।

हरितालनामानि ।

पिञ्जरं पित्तल ताल मनोज्ञ हरितालकम् ।

छत्रांगं काञ्चनरसं गोदन्तं नटमण्डनम् ॥

अर्थ-पिञ्जर, पित्तल, ताल, मनोज, हरितालक, छत्राङ्ग, काञ्चनरस, गोदन्त, नटमंडन (विस्रगन्धि, पीतक, हरिताल, कर्बुर, पीतन, हरिबीज, सिद्धधातु, पिञ्जल, लोमहृत्, वंशपत्रक, वर्णक, अल, पीत, गोरोच, चित्राङ्ग, पिञ्जरक, वेदल, तालक, कनकरस, काञ्चनक, बिडालक, चित्रगन्ध, पिङ्ग, पिङ्गसार, गोरीललित)

सं० हरिताल।	क० हरिदाल।
हिं० हरिताल।	इ० ओर्पिमेंट।
बं० हरिताल, हत्तेल।	लें०यलोआर्से निकंसलफाईडम्
म० हरताळ।	अ० जरनिख अस्फर।

हरितालगुणाः ।

हरितालं कटु स्निग्धं कषायोष्णं हरेद्विषम् ।
कण्डूकुष्ठास्यरोगास्रकफपित्तकचव्रणान् ॥

अर्थ-हरिताल-चरपरी, स्निग्ध, कपेली, गरम, विषनाशक तथा कण्डू, कुष्ठ, मुखरोग, रुधिरविकार, कफ, पित्त, बाल और व्रणको दूर करे है।

अन्यच्च ।

शोधितं हरितालन्तु कान्तिवीर्य्यविवर्द्धनम् ।
कुष्ठादिकफरोगघ्नं जरामृत्युहरं परम् ॥

अर्थ-शोधित हरिताल-कान्तिजनक, वीर्य्यवर्द्धक, कुष्ठादिरोगहारक, कफरोगनिवारक, जरा और मृत्युको नाश करनेवाली है।

अपिच ।

अशीतिवातान्कफपित्तरोगान्कुष्ठानि मेहांश्च गुदामयांश्च ।
निहन्ति गुञ्जार्धमितं तु तालं षड्भागखण्डेन समं च युक्तम् ॥

अर्थ-आधी चोटलीभर हरितालकी भस्म और छः भाग चीनी मिलाकर खानेसे अस्सी प्रकारके वात, कफ, पित्त कुष्ठ प्रमेह और बवासीर दूर होतीहै।

अशुद्धहरितालदोषाः ।

अशुद्धं तालमायुर्हृत्कफमारुतमेहकृत् ।
तापस्फोटादिसंकोचान्कुरुते तेन शोधयेत् ॥

अर्थ-अशोधित हरिताल-आयुनाशक, कफकारक, वातवर्द्धक, प्रमेहजनक, तापजनक, विस्फोटकारक और अंगसंकोचक है।

अपिच।

अशुद्धतालं खलु पीतवर्णं सधूमकं वातचयं च पित्तम्।
पंगुत्वकुष्ठे तनुते च तेन देहस्य नाशं च करोति सद्यः॥

अशुद्धहरताल-पीली और अग्निमें डालनेसे धुआं देने लगतीहै ऐसी हरिताल-वातपित्तको बढानेवाली है, देहमें पंगुता और कुष्ठको उत्पन्न करनेवाली है और तत्काल देहनाशक है।

अन्यच्च।

हरति च हरितालं चारुतां देहजातां सृजति च बहुतापमगसङ्कोचपीडाम्॥ वितरति कफवातौ कुष्ठरोगं विदध्यादिदमशितमशुद्धं मारितं चाप्यसम्यक्॥

अर्थ-अशुद्ध और कुविधिसे मारी हुई हरिताल-देहकी सुंदरताको हरनेवाली घोर ताप तथा अंगोका संकोच और पीडाको करनेवाली, कफवातको बढानेवाली और कोढको करनेवाली है।

हरितालस्य प्रकारभेदाः।

हरितालं द्विधा प्रोक्तं पत्राख्यं पिण्डसंज्ञकम्। तयोराद्यं गुणैः श्रेष्ठं ततो हीनगुणं परम्॥ स्वर्णवर्णं गुरु स्निग्धं सपत्रं चाभ्रपत्रवत्। पत्राख्यं तालकं विद्याद्गुणाढ्यं तद्रसायनम्॥ निष्पत्रं पिण्डसदृशं स्वल्पसत्त्वं तथा गुरु। स्त्रीपुष्पहारकं स्वल्पगुणं तत्पिण्डतालकम्॥

अर्थ-पत्रहरिताल और पिंडहरिताल इन भेदोंसे हरिताल दो प्रकारकी है तहां पत्रहरिताल (तबकिया) गुणोंमें श्रेष्ठ और पिण्डहरिताल हीनगुणवाली है। जो हरिताल स्वर्णके समान वर्णवाली हो, भारी हो, स्निग्ध हो और अभ्रककी समान पत्रयुक्त हो वह पत्रहरिताल जाननी यह हरिताल अधिक गुणवाली और रसायन है और जो पत्ररहित हो, पिण्डकी समान गोल हो वह अल्पसत्वयुक्त, हलकी, स्त्रीके पुष्पका नाश करनेवाली और अल्पगुणवाली ऐसी पिंडहरिताल जाननी।

अन्यच्च ।

हरितालोऽष्टधा प्रोक्तो गोदन्तः सर्वतोऽधिकः ।
तदभावे तु पत्राख्यो वयस स्थापन परः ॥

अर्थ-हरिताल आठ प्रकारकी कही है, उन सबमे गोदन्तहरिताल उत्तम है, गोदन्त हरितालके अभावमे पत्राख्य हरिताल लेनी यह अवस्थास्थापक है ।

हरितालभस्मानुपानम् ।

सर्वरक्तविकारेषु देयमाम्रहरिद्रया । सुहालाहलजीराभ्यामपस्मारहर परम् ॥ समुद्रफलयोगेन जलोदरविनाशनम् । देवदालिरसैर्युक्त भगन्दरहर परम् । फिरगदोषज रोग जातं हन्ति सुदुस्तरम् ॥ विसर्पमण्डल कण्डूपामाविस्फोटकं तथा । वातरक्तकृतान्रोगानन्यानपि विनाशयेत् ॥

अर्थ-हरितालकी भस्म सर्वप्रकारके रक्तविकारोमे आम्बियाहलदीके साथ देनी चाहिये,बच्छनाग विष और जीरेकेसाथ अपस्माररोगमे देनी चाहिये,समुद्रफलके साथ जलोदररोगमे देनी चाहिये और देवडालीके रसके साथ भगन्दर, फिरगोपदंश, विसर्प, मंडल, कण्डू, पामा, विस्फोट और वातरक्तजनित रोग तथा अन्यान्य रोगोकोभी दूर करेहै ।

हरितालभक्षणप्रमाणम् ।

भक्षयेद्रत्तिमात्र हि यथायोगेन तालकम् ।
क्षाराम्लौ च कटु त्यक्त्वा मिष्टभोजनमाचरेत् ॥

अर्थ-हरिताल प्रथम एक गुजा प्रमाण भक्षण करनी चाहिये तथा क्षार, अम्ल और कटुपदार्थ नही खावे और मिष्ट भोजन करे ।

हरितालप्रयोज्यम् ।

श्वासे कासे क्षये दुष्टे पित्ते वै वातशोणिते ।
दद्रुपामाव्रणे कुष्टे तालक च प्रदापयेत् ॥

अर्थ-हरिताल-श्वास, खासी, क्षय, पित्त, वातरक्त, दद्रु, पामा, व्रण और कुष्ठरोगमे देनी चाहिये ।

हरितालादीनामुत्पत्ति ।

हरितालं हरेर्वीर्य्यं लक्ष्मीवीर्य्यं मनःशिला ।
पारदं शिववीर्य्यं स्याद्गन्धकं पार्वतीरजः ॥

अर्थ-विष्णुके वीर्यसे हरिताल,लक्ष्मीके वीर्य्यसे मनःशिल,शिवके वीर्य्यसे पारा और पार्वतीके रजसे गन्धककी उत्पत्ति है ।

विवरण । हरिताल-वंशपत्री, स्तबक (तबकिया)और पिण्डाख्य (गुबरिया)इन भेदोंसे कई प्रकारकी है दूसरी एक गोदन्ती हरिताल होतीहै ।

कासीसनामानि ।

कासीसं धातुकासीसं खाचरं धातुशेखरम् ।
शोधनं पांशुकासीसं केसरं हंसलोमशम् ॥

अर्थ-कासीस, धातुकासीस, खाचर, धातुशेखर, शोधन, पांशुकासीस, केशर, हंसलोमश (शुभ्र, कासीस, नेत्रौषध)

पुष्पकासीसनामानि ।

द्वितीयं पुष्पकासीसं वत्सकं च मलीमसम् ।
ह्रस्वं नेत्रौषधं योज्यं विशदं नीलमृत्तिका ॥

अर्थ-पुष्पकासीस, वत्सक, मलीमस,ह्रस्व,नेत्रौषध,विशद, नील-मृत्तिका ।

संस्कृतभाषामे	कासीस, पुष्पकासीस ।
हिन्दीभाषामे	कसीस, पुष्पकसीस ।
वंगभाषामे	धातुकासीस, पुष्पकासीस ।
मराठीभाषामे	हिराकस, श्वेतनीळी ।
गुजरातीभाषामे	हीराकशी बे जातनो छे नीली तथा धोळी।
कर्णाटकीभाषामे	कासींस ।
इंग्रेजीभाषामे	सल्फेट ऑफ् आयर्न । Sulphateof iron विटिअलग्रीन् Vitriolgreen
लै०	फेरिसलफास Ferry Sulphas
फारसीभाषामे	जाकेसब्ज ।
अरबीभाषामे	जाजेअखदर, जाजेअस्फर ।

कासीसगुणाः ।

कासीसं तु कषायं स्याच्छिशिर विषकुष्ठजित् । खर्ज्जूकृमिहरं चैव चक्षुष्यं कान्तिवर्द्धनम् ॥ पुष्पकासीसकं तिक्त शीतं नेत्रामयापहम् । लेपेन पामाकुष्ठादिनानात्वग्दोषनाशनम् ॥

अर्थ-कसीस-कषेला, शीतल, नेत्रोंको हितकारी, कान्तिवर्द्धक, तथा विष, कुष्ठ, खर्ज्जू और कृमिका नाश करे है। पुष्पकासीस-कडवा, शीतल, नेत्ररोगनाशक, इसका लेप करनेसे पामा, कुष्ठादि और अनेक प्रकारके त्वचाके विकार दूर होते हैं।

अन्यच्च ।

कासीसं तुवर शीतं चक्षुष्य कान्तिवर्द्धनम् । अम्लमुष्णञ्च तिक्तञ्च केश्यं क्षारविषप्रणुत्॥वृष्य च चित्रकुष्ठघ्न मूत्रकृच्छ्राश्मरीहरम् । कफं वातं व्रणं कुष्ठ क्षय चैव विनाशयेत् ॥

अर्थ-कासीस-कषेला, शीतल, नेत्रोंको हितकारी,कान्तिवर्द्धक, अम्ल, उष्ण, कडवा, केशोंको हितकारी, क्षार, विषनाशक, वृष्य, चित्रकुष्ठनाशक तथा मूत्रकृच्छ्र, पथरी, कफ, वात, व्रण, कुष्ठ और क्षयरोगका नाश करे है।

अपिच ।

पुष्पादिकासीसमपि प्रशस्त सोष्णं कषायाम्लमतीव नेत्र्यम्।
विषानिलश्लेष्मगतिव्रणघ्नं श्वित्रक्षयघ्न कचर जन च ॥
वातश्लेष्महर केशनेत्रकण्डूविषप्रणुत् ।
मूत्रकृच्छ्राश्मरीश्वित्रनाशनं परिकीर्त्तितम् ॥ (नि० र०)

अर्थ-पुष्पकासीस-अत्यन्त प्रशस्त,गरम, कषेला, खट्टा,अतिशय नेत्रोंको हितकारी तथा विष, वात, कफ, व्रण, श्वेतकुष्ठ और क्षयरोगका नाश करे है, केशरंजक, वात, कफ, नेत्र और केशोंकी खुजली विष, मूत्रकृच्छ्र और पथरीको दूर करे है।

कासीसलक्षणम्।

भस्मवन्मृत्तिकाम्ल च कासीसं धातु इत्यपि ।
तदेव किञ्चित्पीत तु पुष्पकासीसमुच्यते ।

अर्थ-धातुकासीस-भस्मकी समान अम्लमृत्तिका होतीहै और पुष्पकासीस धातुकासीससे कुछेक पीला होता है।

गैरिकनामानि।

गिरिमृद्गैरिकं रक्तधातुर्लोहितमृत्तिका।

अर्थ-गिरिमृद्, गैरिक, रक्तधातु, लोहितमृत्तिका (गिरिधातु, गवेधुक, धातु, सुरगधातु, गिरिमृद्भव, वनालक्त, गवेरुक, प्रत्यश्म, गिरिज, गैरेय, ताम्रधातु)

सुवर्णगैरिकनामानि।

सुवर्णगैरिकं चान्यत्सुरक्तं स्वर्णगैरिकम्।

अर्थ-सुवर्णगैरिक, सुरक्त, स्वर्णगैरिक, (स्वर्णधातु, शिलाधातु, सन्ध्याभ्र, बभ्रुधातु, सुरक्तक)

पाषाणगैरिकनामानि।

पाषाणगैरिकं प्रोक्तं कठिनं ताम्रवर्णकम्।

अर्थ-पाषाणगैरिक, कठिन, ताम्रवर्णक।

संस्कृतभाषामें	गैरिक, सुवर्णगैरिक, पाषाणगैरिक।
हिंदीभाषामें	गेरु, पीला गेरु, हिरौंजी।
बंगभाषामें	गिरिमाटी।
मराठीभाषामें	सोनगेरु, ताबेगेरु, हुरमुजी।
गुजरातीभाषामें	गेरु, सोनागेरु, हडमची।
कर्णाटकीभाषामें	जाजु, होजाजु।
इंग्रेजीभाषामें	ओकर Oker रेडलम्बरस्टोन Red lumber stone
लैटिनभाषामें	बॉलरुब्रा Bole Rubra
फारसीभाषामें	गिलेसुर्खोमिश्री।
अरबीभाषामें	तीनेमगरेबी अहमर।

गैरिकगुणाः।

गैरिकं रक्तपित्तास्रकफहिक्काविषापहम्।
चक्षुष्यमन्यद्बल्यं च विशेषाद्वान्तिनाशनम्॥

अर्थ-गेरु-रक्तपित्त, रक्तविकार, कफ,हिचकी और विषका नाश करे है, नेत्रोंको हितकारी, बलकारक और विशेषकरके वमननिवारक है।

अन्यच्च।

विशदो गैरिकः स्निग्धः कषायो मधुरो हिमः।

चक्षुष्यो रक्तपित्तघ्नश्छर्दिहिक्काविषापहः ॥

अर्थ-गेरु-विशद,स्निग्ध,कषेला,मधुर,शीतल,नेत्रोको हितकारी, रक्तपित्तनाशक, तथा वमन,हिचकी और विषविनाशक है ।

सुवर्णगैरिकगुणाः ।

सुवर्णगैरिकं स्निग्धं मधुरं तुवरं मतम् । चक्षुष्यं शीतलं बल्यं व्रणरोपणकारकम् ॥ विशदं कान्तिकृत्प्रोक्तं दाहं पित्तं कफं जयेत् । हिक्कां रक्तरुजं जूर्तिं विषं विस्फोटकं वमिम् ॥ अग्निदग्धव्रणं चार्शोरक्तपित्तं च नाशयेत् ॥

अर्थ-पीला गेरु-स्निग्ध, मधुर, कषेला, नेत्रोको हितकारी, शीतल,बलकारक, व्रणरोपण, विशद, कान्तिजनक तथा दाह, पित्त, कफ, रुधिरविकार,ज्वर, विष, विस्फोटक, वमन, अग्निदग्ध-व्रण, बवासीर और रक्तपित्तको हरनेवाला है ।

द्विविधगैरिकगुणाः ।

गैरिकद्वितयं स्निग्धं मधुरं तुवरं मतम् ।
चक्षुष्यं दाहपित्तास्रकफहिक्काविषापहम् ॥

अर्थ-दोनोप्रकारके गेरु-स्निग्ध,मधुर,कषेले,नेत्रोको हितकारी तथा दाह,रक्तपित्त, कफ, हुचकी और विषको हरनेवाले है ।

खडीनामानि ।

पाकशुक्ला शिलाधातुः कठिनी च खटिः खडी ।

अर्थ-पाकशुक्ला,शिलाधातु,कठिनी,खटि,खडी (खटी, खटिनी, खटिका, धवलमृत्तिका, श्वेतधातु, पाण्डुमृत्तिका, सितधातु, पाण्डुमृत, कक्खटी,वर्णरेखा, वर्णलेखा, मृत्तिकाखा, अनीलाधातु, वर्णलेखिका, शुक्लधातु, धातुपल, काठिनिका, लेखनी, मकछ ।

संस्कृतभाषामे	खटी ।
हिन्दीभाषामे	खरियामाटी, खडिया, गौरखडी ।
बंगभाषामे	खडिमाटी, चाखडि ।
मराठीभाषामे	खडु ।
गुजरातीभाषामे	खडी ।
कर्णाटकीभाषामे	बेणचडु ।

इंग्रेजीभाषामे पाईपक्ले । Pipe clay
लैटिन्भाषामें कार्बोनेट् आफ्कलशम्। Carbonate of calcium
फारसीभाषामे गिलेसुफेद, गिलेखारिया।
अरबीभाषामें तिने अबयिद ।

खटीगुणा. ।

खटिका मधुरा तिक्ता शीतला व्रणदोषहा ।
पित्तं दाहं कफं रक्तदोषं नेत्ररुजं जयेत् ॥

अर्थ-खडिया-मधुर, कडवी, शीतल, व्रणनाशक तथा पित्त, दाह, कफ, रुधिरविकार और नेत्ररोगको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

खटी दाहास्रनुच्छीता मधुरा विषशोफजित् । कफघ्नी नेत्रयोः पथ्या लेखना बालकोचिता । तद्वत्पाषाणखटिका व्रणपित्तास्रजिद्धिमा । लेपादितद्गुणा प्रोक्ता भक्षिता मृत्तिका समा॥

अर्थ-खडिया-दाह, रक्तदोष, विष, शोष और कफको दूर करे है, शीतल, मधुर, नेत्रोको हितकारी, लेखन और बालकोको हितकारी है। पाषाणखटिका (सेलखडी)-केभी गुण खडियाकी समान है तथा व्रण, पित्त और रक्तविकारको दूर करेहै, शीतल इसके लेप करनेमे यह गुण है और खानेमे तो मिट्टीकी समान है ।

कपर्दकनामानि।

कपर्दको वराटश्च कपर्दी च वराटिका ।

अर्थ-कपर्दक, वराटक, कपर्दी, वराटिका (वराट, कपर्द, रुद्राक्षी, चराचर, चर, वर्ज्य, बालक्रीडक)

संस्कृतभाषामे : कपर्दक ।	गुजरातीभाषामे कोडी ।
हिन्दीभाषामे कवडी, कौडी।	कर्णाटकीभाषामे कवडी ।
बंगभाषामे कडि ।	इंग्रेजीभाषामे कवरिझ Covries
मराठीभाषामे कवडी ।	

कपर्दिकागुणा ।

कपर्दिका हिमा नेत्रहिता स्फोटक्षयापहा ।
कर्णस्रावाग्निमांद्यघ्नी पित्तास्रकफनाशिनी ॥

अर्थ-कवडी-शीतल, नेत्रोको हितकारी तथा स्फोट, क्षय, कर्णस्राव, अग्निमांद्य, रक्तपित्त और कफका नाश करे है।

अपिच।

कटूष्णा दीपनी वृष्या गुल्मवातकफापहा।
परिणामादिशूलघ्नी ग्रहणी क्षयनाशिनी॥

अर्थ-कौडी-चरपरी, गरम, दीपन, वृष्य तथा गुल्म, वात, कफ, परिणामशूल, संग्रहणी और क्षयरोगका नाश करे है।

अन्यच्च।

कपर्दः कटुतिक्तोष्णः कर्णशूलव्रणापहः।
शूलगुल्मामयघ्नश्च नेत्रदोषनिकृन्तनः॥

अर्थ-कौडी-चरपरी, कडवी, गरम तथा कर्णशूल, व्रण, शूल, गुल्म और नेत्ररोगको हरनेवाली है।

कपर्दिकाभेदाः।

वराटिका त्रिधा प्रोक्ता श्वेता शोणा त्रिधा परा। पीता च तीक्ष्णा चक्षुष्या श्वेता शोणा हिमा व्रणा॥ अतिबिंदुभिरश्वेतैर्लांछिता रेखयाऽथवा। बालग्रहहरा नानाकौतुकेषु च पूजिता॥ पीता गुल्मयुता पृष्ठे रसयोगेषु योजयेत्। सार्धनिष्कप्रमाणाऽसौ श्रेष्ठा योगेषु योजयेत्॥ निष्कप्रमाणा मध्या सा हीना पादोननिष्कका॥

अर्थ-कौडी सफेद, लाल और पीली इन भेदोसे तीनप्रकारकी है, तहां पीली कौडी-तीक्ष्ण और नेत्रोको हितकारी है, सफेद और लाल कौडी-शीतल और व्रणको भरनेवालीहै। काले बिंदुयुक्त तथा रेखाओकरकेलांछित ऐसी कौडी-बालग्रहनाशक और अनेक प्रकारके कौतुकोमे उपयोगी है और जिसकी पीठपर पीली गांठे हो ऐसी कौडी रसकर्म्ममे लेनी चाहिये। तोलमे डेढ तोलेवाली कौडी उत्तम होती है एक तोलेभरकी कौडी मध्यम और पाव तोले भरकी कौडी कनिष्ठ होती है।

शुक्तिनामानि।

शुक्तिर्मुक्ताप्रसूश्चैव महाशुक्तिश्च शुक्तिका।
मुक्ता स्फोटोऽब्धिमण्डूकी मौक्तिकप्रसवा च सा॥

अर्थ-शुक्ति, मुक्ताप्रसू, महाशुक्ति, शुक्तिका, मुक्तास्फोट, अब्धिमण्डूकी, मौक्तिकप्रसवा (दुर्नामा, दीर्घकोपिका, दीर्घकोशिका, पङ्कशुक्ति, मुक्तागार, महाशुक्ति, तौतिक, मौक्तिकशुक्ति, मुक्तमाता, मुक्तास्फोटा)

जलशुक्तिनामानि ।

जलशुक्तिर्वारिशुक्तिः क्रमिसूः क्षुद्रशुक्तिका
शम्बूका जलडिम्बश्च पुटिका तोयशुक्तिका ॥

अर्थ-जलशुक्ति, वारिशुक्ति, क्रमिसु(क्ति), क्षुद्रशुक्तिका, शम्बूका, जलडिंब, पुटिका, तोयशुक्तिका, (नरशुक्ति)

संस्कृतभाषामे	शुक्ति, जलशुक्ति ।
हिन्दीभाषामे	मोतीकी सीप, जलसीप
वगभाशामे	झिनुक, शामुक ।
मराठीभाषामे	मात्याची शिप, नदींताल शिप ।
गुजरातीभाषामे	मोतीनी छीप, नदीना छिपना ।
कर्णाटकीभाषामे	मुक्तिनीसिपु, तोरेयसिपु ।
इंग्रेजीभाषामे	ओईस्टरशेल । oysteR shell

शुक्तिगुणा ।

मुक्ताशुक्तिः कटु· स्निग्धा श्वासहृद्रोगनाशिनी ।
शूलप्रशमनी रुच्या मधुरा दीपनी परा ॥ (रा० नि०)

अर्थ-मोतीकी सीप-चरपरी, स्निग्ध, श्वासनिवारक, हृदयरोगहारक, शूलको दूर करनेवाली, रुचिको उत्पन्न करनेवाली, मधुर और दीपन है।

अन्यच्च ।

मुक्ताशुक्तिस्तु मधुरा स्निग्धा रुच्या च दीपनी ।
कट्वी च कासशूलघ्नी हृद्रोगस्य च नाशिनी ॥
स्नायुरोगहरी चैव ज्वरघ्नी व्रणभेदिनी ॥ (रा० नि०)

अर्थ-मोतीकी सीप-मधुर, स्निग्ध, रुचिकारक, दीपन, चरपरी तथा खासी, शूल, हृदयरोग, स्नायुरोग और ज्वरका नाश करनेवाली है और व्रणभेदक है ।

अपिच ।

शुक्तिश्च शिशिरा पित्तरक्तज्वरविनाशिनी ॥

अर्थ-सीप-शीत,पित्त,रुधिरविकार और ज्वरको हरनेवाली है।

जलशुक्तिगुणा ।

जलशुक्तिः कटुः स्निग्धा दीपनी गुल्मशूलनुत् ।
विषदोषहरा रुच्या पाचनी बलदायिनी ॥

अर्थ-जलसीप-चरपरी,स्निग्ध, दीपन,गुल्मनाशक,शूलनिवारक, विषविकारहारक, रुचिकारक, पाचक और बलवर्द्धक है ।

अन्यच्च ।

जलशुक्तिः कटुः स्निग्धा दीपनी पाचका च सा ।
रुच्या बलप्रदा गुल्मनाशिनी चक्षुषोर्हिता ॥
विषदोषं च शूलं च नाशयेदिति कीर्तिता । (रा०नि०)

अर्थ-जलकी सीप-चरपरी,स्निग्ध,दीपन, पाचक, रुचिकारक, बलवर्द्धक,गुल्मनाशक,नेत्रोंको हितकारी तथा विषदोष और शूलका नाश करे है ।

विवरण । मोतीकी सीप और साधारण सीप इन भेदोंसे सीप दोप्रकारकी होतीहै।तहा मोतीकी सीप अत्यंत शुभ्र और सुफेद रंगकी समुद्रमें होतीहै । दूसरी सीप नदियोमे होती है ।

शंखनामानि ।

शंखः समुद्रजः कम्बुः सुनादः पावनध्वनिः ॥

अर्थ-शंख, समुद्रज, कम्बु, सुनाद, पावनध्वनि(कम्बु,कम्बोज, अब्ज, त्रिरेख, जलज, अर्णोभव, अन्तःकुटिल, महानाद, श्वेतपूत, मुखर,दीर्घनाद, बहुनाद, हरिप्रिय, दीर्घनिस्वन, सुरचर, सम्यक्छब्द, जलोद्भव, विष्णुप्रिय, दुष्टद्रावी, धवल, स्त्रीविभूषण, पांचजन्य, अर्णवभव, अर्णवभवोदर ।

सं०	शख ।	गु०	शंख ।
हिं०	शख ।	त०	शंखसु ।
बं०	शॉक, शंख ।	इं०	कोंच । Conch
म०	शख ।		

शंखगुणा ।

शखो-नेत्र्यो हिमः शीतो लघुः पित्तकफास्रजित् ।

अर्थ-शंख-नेत्रोको हितकारी, शीतल, हलका, तथा पित्त, कफ और रुधिरके विकारोको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

शंखः कटुः सरः शीतः पुष्टिवीर्य्यबलप्रदः ।
गुल्मशूलहरः श्वासनाशनो विषदोषनुत ।

अर्थ-शंख- चरपरा, सारक, शीतल, पुष्टि, वीर्य्य और बलवर्द्धक तथा गुल्म, शूल, श्वास और विषके विकारोको हरे है ।

अपिच ।

शखः शीतः कषायश्च लेखी चाजीर्णशूलजित ।

अर्थ-शख-शीतल, कपेला, लेखन तथा अजीर्ण और शूल-नाशक है ।

अपिच ।

शंखस्तु पौष्टिको बल्यो रसकाले कटुः स्मृतः । पटुः शीतो ग्राहकश्च चक्षुष्यो वर्णकृन्मतः ॥ नेत्रपुष्प पक्तिशूल गुल्मं संग्रहणी हरेत् । तारुण्यपिटिकागुल्मशूलश्वासहरः स्मृतः ॥ दक्षिणावर्तशखस्तु त्रिदोषकामलापहः । विषदोषक्षयनेत्रग्रह-पीडाविनाशकः ॥ (रत्नाकरे)

अर्थ-शंख-पुष्टिकारक, बलवर्द्धक, कटुरसान्वित, खारी, शीतल, मलरोधक, नेत्रोंको हितकारी, वर्णकारक तथा नेत्रका फूला, पंक्ति-शूल, गुल्म, संग्रहणी, तारुण्यपिटिका (मुहासे), गुल्म, शूल और श्वासनाशक है । दक्षिणावर्त्तशख-त्रिदोष, कामलारोग, विषदोष, क्षय, नेत्ररोग और ग्रहकी पीडाको दूर करे है ।

शखस्य प्रकारभेदा ।

द्विधा स दक्षिणावर्त्तिर्वामावार्त्तस्तु भेदतः ।
दक्षिणावर्त्तशंखस्तु पुण्ययोगादवाप्यते ॥
यद्गृहे तिष्ठति स वै स लक्ष्म्या भाजन भवेत् ।

अर्थ-शंख-दक्षिणावर्त्त और वामावर्त्त इन भेदोसे दो प्रकारका है । दक्षिणावर्त्त शख पुण्यके योगसेही प्राप्त होता है और जिसके घरमे यह रहता है उसके लक्ष्मीकी अधिक वृद्धि होती है ।

श्रेष्ठशंखलक्षणम् ।

शखस्तु विमलः श्रेष्ठश्चन्द्रकान्तिसमप्रभः ।
अशुद्धो गुणदो नैव शुद्धस्तु सुगुणप्रदः ।

अर्थ-निर्मल और जिसकी चन्द्रमाके समान कान्ति हो ऐसा शंख उत्तम है। अशुद्ध शंख गुणदायक नहीं है और शुद्ध शंख गुणदायक है।

कृमिशंखनामानि गुणाश्च ।

कृमिशंखः कृमिजलजःकृमिवारिश्च जन्तुकम्बुश्च ॥
कथितो रसवीर्य्याद्यैः कृतनिधिभिः शंखसदृशोऽयम् ॥

अर्थ-कृमिशंख, कृमिजलज, कृमिवारि, जन्तुकम्बु कृमिशंख-रसवीर्यादिकमे शंखके समान है।

क्षुद्रशंखनामानि।

कोशस्था लघुशंखास्तु क्षुद्रकाः क्षुल्लकास्तथा ।
शखनकाश्च शम्बूकाः क्षुद्रशंखा नदीभवाः ॥

अर्थ-कोशस्थ, लघुशंख, क्षुद्रक, क्षुल्लक, शखनक, शम्बूक, क्षुद्र-शख, नदीभव ।

क्षुद्रशंखगुणा ।

शम्बूकाः शीतला नेत्ररुजास्फोटविनाशिनः ।
शीतज्वरहरास्तीक्ष्णा ग्राहिदीपनपाचनाः ॥

अर्थ-क्षुद्रशख शीतल, नेत्ररोगनाशक, स्फोटकविनाशक, शीत-ज्वरनिवारक, तीक्ष्ण, ग्राही, दीपन और पाचक है।

अन्यच्च।

शम्बूकः सृष्टविण्मूत्रो मधुरः पित्तरोगहा ।

अर्थ-क्षुद्रशंख (घोंघा)-मल और मूत्रको करनेवाला, मधुर और पित्तरोगनाशक है।

अपिच।

क्षुल्लकः कटुकस्तिक्तः शूलहारी च दीपनः ।

अर्थ-क्षुल्लक (घोंघा) चरपरा, कडवा, शूलनाशक और दीपन है ।

फकुष्ठनामानि।

फकुष्ठ कालकुष्ठञ्च विरग रगदायकम् ।

अर्थ-ककुष्ठ, कालकुष्ठ, विरंग, रंगदायक (रेचक, पुलक, शोधक, कालपालक)

संस्कृतभाषामे ककुष्ठ।
हिन्दीभाषामे कंकुष्ठ, मुरदासिंग।
बंगालीभाषामे पार्वतीयमृत्तिकाविशेष।
मराठीभाषामें कुंकुष्ठ।
गुजरातीभाषामे पीलीयो।

ककुष्ठगुणाः।

कंकुष्ठ रेचनं तिक्तं कटूष्णं वर्णकारकम्।
कृमिशोथोदराध्मानगुल्मानाहकफापहम्॥ (भा॰ प्र॰)

अर्थ-कंकुष्ठ-दस्तावर, कडुआ, चरपरा, वर्णकारक तथा कृमि, सूजन, उदर, आध्मान, गुल्म, आनाह और कफरोगका नाश करे है।

अन्यच्च।

ककुष्ठं तिक्तकटुकं वीर्य्यं चोष्णं प्रकीर्त्तितम्।
गुल्मोदावर्त्तशूलघ्नं रसजन्तुव्रणापहम्॥ (रत्नाकर)

अर्थ-ककुष्ठ-कडवा, चरपरा, उष्णवीर्य्य तथा गुल्म, उदावर्त्त, शूल, रस, जन्तु और व्रणविनाशक है।

अन्यच्च।

कंकुष्ठं पित्तकृद्भेदि विबधकफगुल्मनुत्। भजेदेन विरेकार्थे ग्राहिभिर्यवमात्रया॥ नाशयेदामपूतिं च विरेच्य क्षणमात्रतः। सुभक्षितं च ताम्बूल विरेकं तं विनाशयेत्॥

अर्थ-ककुष्ठ-पित्तकारक, भेदक तथा विबंध, कफ और गुल्मको दूर करेहै। इसको एक जौकी बराबर मलरोधी मनुष्योको देनेसे क्षणमात्रमे दस्त होने लगते है और दुर्गंध आम दूर होजाती है तथा ताम्बूलके खानेसे वही दस्त बन्द हो जाते है॥

कङ्कुष्ठोत्पत्तिलक्षणम्।

हिमवत्पादशिखरे कंकुष्ठमुपजायते। तत्रैकं नलिकाख्य स्यात्तदन्य रेणुकं स्मृतम्॥ पीतप्रभं गुरु स्निग्धं श्रेष्ठं कंकुष्ठमादिमम्। श्यामं पीतं लघु त्यक्तसत्त्वं नेष्टं हि रेणुकम्।

अर्थ-कंकुष्ठ हिमालय पर्वतके शिखरोंमे उत्पन्न होताहै;तहा एक नलिकाख्य और दूसरा रेणुक कहा जाताहै । इनमे पीला, भारी, चिकना ऐसा श्रेष्ठ कंकुष्ठ होताहै और काला, पीला,हलका और जिसमे सत्त्व न हो वह कनिष्ठ और उसको रेणुक कंकुष्ठ कहते है ।

अपिच ।

केचिद्वदन्ति कंकुष्ठं सद्योजातस्य दन्तिनः ।
वर्चश्च श्यामपीताभं तदतीव विरेचनम् ॥

अर्थ-कोई मुर्देसिंगको तत्कालके उत्पन्न हुवे हाथीके बच्चेकी विष्ठा कहतेहैं । यह श्याम और पीली प्रभावाला होता है तथा अत्यन्त दस्तावर है ।

शंखजीरकनामानि ।

कम्बुजीरः श्लक्ष्णजीरस्तथा श्लक्ष्णमृदापि च ।

अर्थ-कम्बुजीर, श्लक्ष्णजीर, श्लक्ष्णमृत [द्] ।

संस्कृतभाषामे	शंखजीरक ।
हिन्दीभाषामे	संगजराहत ।
मराठीभाषामें	शंखजिरें ।
गुजरातीभाषामें	शंखजीरु ।
इंग्रेजीभाषामे	सापस्टोन् । Soapstone
लेटिन्भाषामें	सिलिकेट ऑफ मेगनिश्या । Silicate of Magnesia
फारसीभाषामे	सङ्गे जराहत ।
अरबीभाषामे	हजरुल एरावी ।

अस्य गुणाः ।

शंखाभिधं जीरकं तु व्रणदाहरुजं जयेत् ।
प्रलेपाच्छोफवीसर्पकक्षारक्तविकारजित् ॥

अर्थ-शंखजीरक (सङ्गजराहत)-व्रण और दाहरोगको दूर करे है । इसका लेप करनेसे सूजन, विसर्प, कक्षा और रक्तविकार दूर होता है ।

स्फटीनामानि ।

स्फटी च स्फटिका प्रोक्ता श्वेता शुभ्रा च रंगदा ॥
दृढरंगा रंगदृढा दृढा रंगापि कथ्यते ॥

अर्थ-स्फटी,स्फटिका,श्वेता,शुभ्रा,रंगदा,दृढरंगा,रंगदृढा,दृढा,रंगा (स्फटिकारि, स्फटिकारिका, रंगाङ्गा, सुरंगा, गन्तरंगा)

सं० स्फटिकारि।	तै० फाटिक्के।
हिं० फटकिरी।	अ० विट्रील ह्वाईट आलम्।
बं० फटकिरी।	ल० हैड्रार्जिरमूसल् फ्युरेष्टम्।
म० तुर्टी, फटकी।	फा० जाकसफेत।
क० फटकी।	अ० जाज कल्कतार।

अस्य गुणा ।

स्फटिका तु कषायोष्णा वातपित्तकफव्रणान् ।
निहन्ति श्वित्रवीसर्पान् योनिसंकोचकारिणी॥ (भा०प्र०)

अर्थ-फटकिरी-कषेली,गरम तथा वात, पित्त,कफ,व्रण, श्वित्रकुष्ठ और विसर्पको दूर करे है तथा योनिको संकुचित करनेवाली है ।

अन्यच्च ।

स्फटिकी तुवरा स्निग्धा कट्वी रंगप्रदा मता । रसबन्धकरी कुष्ठव्रणप्रदरनाशिनी ॥ विषदोषं मूत्रकृच्छ्रं वान्तिशोषं त्रिदोषकम् । प्रमेहं नाशयत्येव पूर्वाचार्य्यैर्निवेदितम् ॥ (रत्नाकर)

अर्थ-फटकिरी-कषेली, स्निग्ध, चरपरी, रंगप्रद, रसबन्धक तथा कुष्ठ, व्रण, प्रदर, विषविकार, मूत्रकृच्छ्र, वमन, शोष, त्रिदोष और प्रमेहरोगको हरनेवाली है ।

चुम्बकनामानि गुणाश्च ।

चुम्बकः कान्तपाषाणोऽयस्कान्तो लोहकर्षकः ।
चुम्बको लेखनः शीतो मेदो विषगरापहः ॥

अर्थ-चुम्बक,कान्तपाषाण,अयस्कान्त और लोहकर्षक । चुम्बकपत्थर-लेखन, शीतल तथा मेद,विष और उपविषको दूर करे है ।

राजावर्त्तगुणा ।

राजावर्त्तः कटुस्तिक्तः शिशिरः पित्तनाशनः ।
राजावर्त्तः प्रमेहघ्नश्छर्दिहिक्कानिवारणः ॥

अर्थ-राजावर्त्त-(रेवटी)-कटु, तिक्त, शीतल, पित्तनाशक तथा प्रमेह, वमन और हिचकीको दूर करे है ।

सौराष्ट्रीनामानि ।

सौराष्ट्र्याढकी तुवरी पर्पटी कालिका सती ।
सुजाता देशभाषायां गोपीचंदनमुच्यते ॥

अर्थ-सौराष्ट्री,आढकी,तुवरी,पर्पटी,कालिका,सती,सुजाता,इसको गोपीचदन कहते है । (काक्षी, पार्वती, मसी,मृद्राह्वया, मृत्,मृत्स्ना, आसङ्ग, सुराष्ट्रजा, मृत्तालक, काली, मृत्तिका,कसोद्भवा, मृत्तिका, सुरमृत्तिका, स्तुत्या, सौराष्ट्री)

संस्कृतभाषामे	सौराष्ट्री ।
हिन्दीभाषामे	गोपीचंदन,सोरठकी मिट्टी ।
बंगभाषामें	सौराष्ट्रदेशीय सुगन्धिमृत्तिकाविशेष ।
मराठीभाषामे	गोपीचंदन ।
गुजरातीभाषामे	गोपीचंदन ।
लेटिन्भाषाम	सिलिकेट ऑफ एलुमीना ।

सौराष्ट्रीगुणाः ।

गोपिकाचन्दन शीत दाहव्रणविषापहम् ।
विसर्पशमक लेपात्पतद्गर्भस्थिरीकरम् ॥

अर्थ-गोपीचदन-शीतल,दाहनाशक,व्रणविनाशक, विषहारक, विसर्पनिवारक और इसका लेप करनेसे पतित गर्भ स्थिर हो जाताहै।

अन्यच्च ।

गोपीचदनक दाहक्षतरक्तविकारनुत् ।
पित्तं कफं च प्रदर नाशयेदिति कीर्त्तितम् ॥

अर्थ-गोपीचदन-दाह,क्षत, रुधिरविकार, पित्त, कफ और प्रदररोगका नाश करे है ।

वालुकानामानि ।

सिकता वालुका सिक्ता शीतला सूक्ष्मशर्करा ॥
प्रवाहोत्था महाश्लक्ष्णा सूक्ष्मा पानीयचूर्णका ॥

अर्थ-सिकता, वालुका,सिक्ता,शीतला,सूक्ष्मशर्करा, प्रवाहोत्था, महाश्लक्ष्णा, सूक्ष्मा, पानीयचूर्णका, (वालिका,प्रवाही, महासूक्ष्मा, पानीयवर्णिका, रेतज

सं०	वालुका ।	त०	विशिका ।	
हिं०	बालु, रेत (ती,ता,]	इ०	सॅन्ड ।	Sand
व०	वाली ।	लै०	सीलीका ।	Silica
म०	बालु, रेती ।	फा०	रेग ।	
गु०	रेती, वेलु ।	अ०	रमल ।	
क०	हालुलु ।			

अस्य गुणा ।

सिकता मधुरा शीता लेखनी तापनाशिनी ।
अग्निदग्धव्रणं चैव व्रणोरःक्षतनाशिनी ॥
श्रमकुष्ठहरी चास्याः स्वेदनं वातनाशनम् । (रत्नाकर)

अर्थ-बालु तथा रेता-मधुर, शीतल, लेखन, तापनाशक तथा अग्नि दग्धव्रण, व्रण, उरःक्षत, श्रम और कुष्ठका नाश करे है। इसका सेक वातनाशक है ।

कर्दमनामानि ।

पकस्तु जलकल्कश्च चुलुकः कर्दमो मलः ।
चिकिलः पलितो द्राप: पललश्च निषद्वरः ॥

अर्थ-पंक, चुलुक, कर्दम, मल, चिकिल, पलित, द्राप, पलल, निपद्वर, (जम्बाल, साद, दम)

कृष्णमृत्तिकानामानि ।

मृन्मृदा मृत्तिका मृत्स्ना क्षेत्रजा कृष्णमृत्तिका ।

अर्थ-मृद, मृदा, मृत्तिका, मृत्स्ना, क्षेत्रजा, कृष्णमृत्तिका ।

संस्कृतभाषामे	पक, कर्दम, मृद ।
हिन्दीभाषामे	काच, गारा, मिट्टी, काली मिट्टी ।
बंगभाषामे	कादा, माटी, कालमाटी ।
मराठीभाषामे	चिखल, माती, गारा ।
गुजरातीभाषामे	गारो, कालीमाटी ।
तैलिङ्गभाषामे	नोबुलु ।
इंग्रेजीभाषामे	मडब्लॅक् क्ले Mud blackClay
लैटिन्भाषामे	हैड्रस् सिलिकेट ऑफ् आल्युमीनीयम् । Hydrasis silicate of alumunum

पङ्कगुणाः ।

पंको दाहास्रपित्तास्रशोथघ्नः शीतलः सरः ।

अर्थ-कीच-दाह, रक्तपित्त, रुधिरविकार और सूजनको दूर करे है । शीतल और सारक है ।

अन्यच्च ।

कर्दमः शीतलो रूक्षो विषघ्नो वेदनापहः ॥

शोफदाहप्रशमनो व्रणशोधनरोपणः ॥

अर्थ-कीच-शीतल, रूखी, विषघ्न, वेदनानाशक, शोफनिवारक, दाहको शांत करनेवाली, व्रणशोधक और व्रणरोपक है ।

अपिच ।

कर्दमः शीतलः स्निग्धो विषपित्तास्रभग्नजित् ।

शोफदाहक्षतहरो हितः शोधनरोपणे ॥

अर्थ-कीच-शीतल, स्निग्ध तथा विष, रक्तपित्त, भग्न, सूजन, दाह और घावको दूर करे है । व्रणशोधक और व्रणको भरनेवाला है ।

कृष्णमृद्गुणाः ।

कृष्णमृत्क्षतदाहास्रप्रदरश्लेष्मपित्तनुत् ।

अर्थ-कालीमिट्टी-घाव, दाह, रुधिरविकार, प्रदर और कफपित्तनाशक है ।

अन्यच्च ।

कृष्णमृत्स्ना रक्तदोषप्रदरक्षतदाहहा ।

मूत्रकृच्छ्रं कफं पित्तं नाशयेदिति कीर्त्तिता ॥

अर्थ-कालीमिट्टी-रुधिरविकार, प्रदर, क्षत, दाह, मूत्रकृच्छ्र, कफ और पित्तको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

कृष्णामृत्क्षतदाहास्रप्रदरश्लेष्मपित्तनुत् ।

प्रलेपाद्विनिहन्त्येषा शोथं भल्लातसम्भवम् ॥

अर्थ-कालीमिट्टी-क्षत, दाह, रुधिरविकार, प्रदर, कफ, पित्तको हरे और इसका लेप करनेसे भिलावेसे उत्पन्न हुई सूजन दूर होती है ।

बोलनामानि।

बोलं गन्धरस पिण्डं निर्लोह बार्बरं रसम्।
सुगन्ध नालकं पौर रसगन्धं सितं विदुः॥

अर्थ-बोल, गन्धरस, पिंड, निर्लोह, बर्बररस, सुगन्ध, नालक, पौर, रसगन्ध, सित, (रक्तापह, मुण्ड, सुरस, पिण्डक, विष, बबर, सौरभ, रस, रसगन्धक, महागन्ध, विश्व, शुभगन्धक, विश्वगन्ध, व्रणारि, प्राण, बोल, गोप, गोस, पिण्डगोस, शश, गोसशश, गान्धार, मसिवर्धन, गोपरस, बोलज, गोपक, पिण्डल, गोल)

संस्कृतभाषाम	बोल।
हिन्दीभाषामे	बोल, हीराबोल, बीजाबोल।
वंगभाषामे	गन्धरस, बोल, हिराबोल, खुनखारापी।
मराठीभाषामे	बोळ।
गुजरातीभाषामे	हिराबोल।
कर्णाटकीभाषामें	बोल।
तैलिङ्गीभाषामें	बालिम्, त्रोपोलम्।
तामिलीभाषामें	वेल्लइपोलम्।
बम्०	रत्तया बोल।
इंग्रेजीभाषामे	मिर्हा। Myrha
लैटिन्भाषामे	बालासामोडेड्रन् मिर्हा। Bulsa mododron myrha
फारसीभाषामें	मुर।
अरबीभाषामे	मुरसाफ, मुरमकी।

अस्य गुणाः।

रक्तबोलः कटुस्तिक्तस्तुवरोष्णश्च पाचनः। मेध्योऽग्निदीपको गर्भाशयस्य च विशोधनः॥ सुगन्धिरक्तदोषघ्नः कफपित्तत्रिदोषनुत्। प्रदराश्मरिमेहघ्नो योनिशूलज्वरप्रणुत्॥ कुष्ठापस्माररक्तातीसारस्वेदनिवारणः। ग्रहबाधां पौरुषत्वं नाशयेदिति कीर्तितम्॥ (रत्नाकरे)

अर्थ-बोल-चरपरा, कडवा, कषेला, गरम, पाचक, मेधाजनक, अग्निदीपक, गर्भाशयशोधक, सुगंधि तथा रुधिरदोष, कफ, पित्त,

पङ्कगुणाः ।

पंको दाहास्रपित्तास्रशोथघ्नः शीतलः सरः ।

अर्थ-कीच-दाह, रक्तपित्त, रुधिरविकार और सूजनको दूर करे है। शीतल और सारक है ।

अन्यच्च ।

कर्दमः शीतलो रूक्षो विषघ्नो वेदनापहः ॥
शोफदाहप्रशमनो व्रणशोधनरोपणः ॥

अर्थ-कीच-शीतल, रूखी, विषघ्न, वेदनानाशक, शोफनिवारक, दाहको शांत करनेवाली, व्रणशोधक और व्रणरोपक है ।

अपिच ।

कर्दमः शीतलः स्निग्धो विषपित्तास्रभग्नजित् ।
शोफदाहक्षतहरो हितः शोधनरोपणे ॥

अर्थ-कीच-शीतल, स्निग्ध तथा विष, रक्तपित्त, भग्न, सूजन, दाह और घावको दूर करे है । व्रणशोधक और व्रणको भरनेवाला है ।

कृष्णमृद्गुणाः ।

कृष्णमृत्क्षतदाहास्रप्रदरश्लेष्मपित्तनुत् ।

अर्थ-कालीमिट्टी-घाव, दाह, रुधिरविकार, प्रदर और कफपित्तनाशक है।

अन्यच्च ।

कृष्णमृत्स्ना रक्तदोषप्रदरक्षतदाहहा ।
मूत्रकृच्छ्रं कफं पित्तं नाशयेदिति कीर्त्तिता ॥

अर्थ-कालीमिट्टी-रुधिरविकार, प्रदर, क्षत, दाह, मूत्रकृच्छ्र, कफ और पित्तको दूर करे है।

अन्यच्च ।

कृष्णामृत्क्षतदाहास्रप्रदरश्लेष्मपित्तनुत् ।
प्रलेपाद्विनिहन्त्येषा शोथं भल्लातसम्भवम् ॥

अर्थ-कालीमिट्टी-क्षत, दाह, रुधिरविकार, प्रदर, कफ, पित्तको हरै और इसका लेप करनेसे भिलावेसे उत्पन्न हुई सूजन दूर होती है।

बोलनामानि।

बोलं गन्धरस पिण्डं निर्लोहं वार्बरं रसम्।
सुगन्ध नालकं पौरं रसगन्धं सितं विदुः॥

अर्थ-बोल, गन्धरस, पिंड, निर्लोह, बर्बररस, सुगन्ध, नालक, पौर, रसगन्ध, सित, (रक्तापह, मुण्ड, सुरस, पिण्डक, विष, बबर, सौरभ, रस, रसगन्धक, महागन्ध, विश्व, शुभगन्धक, विश्वगन्ध, व्रणारि, प्राण, बोल, गोप, गोस, पिण्डगोस, शश, गोसशश, गान्धार, मांसिवर्धन, गोपरस, बोलज, गोपक, पिण्डल, गोल)

संस्कृतभाषाम	बोल।
हिन्दीभाषामे	बोल, हीराबोल, बीजाबोल।
वंगभाषामे	गन्धरस, बोल, हिराबोल, खुनखारापी।
मराठीभाषामे	बोळ।
गुजरातीभाषामे	हिराबोल।
कर्णाटकीभाषामें	बोल।
तैलिङ्गीभाषामें	बोलिम्, बोपोलम्।
तामिलीभाषामें	वेल्लइप्पोलम्।
वम्०	रत्तया बोल।
इंग्रेजीभाषामे	मिर्हा। Myrha
लैटिन्भाषामे	बालासामोडेड्रन्मिर्हा। Bulsa mododron myrha
फारसीभाषामें	मुर।
अरबीभाषामे	मुरसाफ, मुरमकी।

अस्य गुणाः।

रक्तबोलः कटुस्तिक्तस्तुवरोष्णश्च पाचनः। मेध्योऽग्निदीपको गर्भाशयस्य च विशोधनः॥ सुगन्धिरक्तदोषघ्नः कफपित्तत्रिदोषनुत्। प्रदराश्मरिमेहघ्नो योनिशूलज्वरप्रणुत्॥ क्षुधापस्माररक्तातीसारस्वेदनिवारणः। ग्रहबाधां पौरुषत्वं नाशयेदिति कीर्तितम्॥ (रत्नाकरे)

अर्थ-बोल-चरपरा, कडवा, कषेला, गरम, पाचक, मेधाजनक, अग्निदीपक, गर्भाशयशोधक, सुगंधि तथा रुधिरदोष, कफ, पित्त,

त्रिदोष, प्रदर, पथरी, प्रमेह, योनिशूल, ज्वर, कुष्ठ, अपस्मार, रक्तातिसार, पसीना, ग्रहबाधा और पुरुषताका नाश करे है।

शिलाजतुनामानि।

शिलाजत्वद्रिजतु च शैलनिर्य्यास इत्यपि।
गैरेयमश्मजं चापि गिरिजं शैलधातुजम्॥

अर्थ-शिलाजतु, आद्रिजतु, शैलनिर्य्यास, गैरेय, अश्मज, गिरिज, शैलधातुज, (अर्थ्य, शिलाज, अगज, शैल, शैलेय, शीतपुष्पक, शिलाव्याधि, अश्मोत्थ, अश्मलाक्षा, अश्मजतुक, जत्वश्मक)

सं०	शिलाजतु।	क०	कलुवेचरु।
हिं०	शिलाजीत।	इं०	आसफेल्ट, जुझपिच।
बं०	शिलाजतु।	ल०	आस्पलूटं पञ्चाबिनम्।
म०	शिलाजीत।		बिटुमेन जुडाईकम्।

अस्योत्पत्तिलक्षण गुणाश्च।

निदाघे घर्मसन्तप्ता धातुसार धराधराः। निर्य्यासवत्प्रमुञ्चन्ति तच्छिलाजतुकीर्त्तितम्॥ सौवर्ण रजत ताम्रमायस तच्चतुर्विधम्। शिलाह्व कटु तिक्तोष्णं कटुपाक रसायनम्॥छेदि योगवहं हन्ति कफमेदोश्मशर्कराः। मूत्रकृच्छ्रं क्षय श्वास वातासार्शांसि पांडुताम्॥ अपस्मार तथोन्माद शोथकुष्ठोदरकृमीन्। सौवर्णं तु जपापुष्पवर्णं भवति तद्रसात्॥ मधुर कटु तिक्त तु शीतलं कटुपाकि च। राजतं पाण्डुर शीत कटुक स्वादु पाकि च॥ ताम्र मयूरकण्ठाभ तीक्ष्णमुष्णं च जायते। लौह जटायुपक्षाभ तत्तिक्त लवणं भवेत्॥विपाके कटुक शीत सर्वश्रेष्ठमुदाहृतम्॥ (भा० प्र०)

अर्थ-उष्णकालमे सूर्यकी किरणोसे पर्वत तापित होकर धातुओके सारको गोंदकी समान छोडते है; उस सारको शिलाजीत कहते है, सौवर्ण, रजत, ताम्र और आयस इन भेदोसे शिलाजीत चार प्रकारका है। शिलाजीत-कटु, तिक्त, उष्ण, कटुपाकी, रसायन,

छेदक, योगवाही तथा कफ, मेद, पथरी, शर्करा, मूत्रकृच्छ्र, क्षय, श्वास, वातरक्त, बवासीर पाण्डुरोग, अपस्मार, उन्माद, सूजन, कुष्ठ, उदररोग और कृमिरोगका नाश करे है। सौवर्ण (सुवर्णकी खानका) शिलाजीत-जपाके फूलके समान लाल रंगका होता है। मधुरसंयुक्त, कटुरसान्वित, तिक्तरसयुक्त, शीतल और पचनेमे चरपरा है। राजत (रूपेकी खानका) शिलाजीत-पाण्डुरंगका होता है। शीतल, कटु और पचनेमे स्वादिष्ठ है। ताम्र (तांबेकी खानका) शिलाजीत-मोरकी गरदनके रंगकेसा होता है। तीक्ष्ण और उष्ण है। लौह (लोहेकी खानका) शिलाजीत-जटायुकी पखकी समान काले रंगका होता है। कडवा, लवणरसान्वित विपाकमे चरपरा, शीतल और सबमे श्रेष्ठ है।

अन्यच्च।

मासे शुक्रे शुचौ चैव शैलाः सूर्य्यांशुतापिताः।जतुप्रकाशं स्वरस शिलाभ्यःप्रस्रवन्ति हि॥शिलाजत्विति विख्यातं सर्वव्याधिविनाशनम्।त्रप्वादीनान्तु लौहानां षण्णामन्यतमान्वयम्। ज्ञेयं सुगन्धं तच्चापि षड्योनिप्रथितं क्षितौ।लौहाद्भवति तद्यस्माच्छिलाजतु जतुप्रभम्। तस्य लौहस्य तद्वीर्य्यं रसञ्चापि बिभर्ति तत्। त्रपुसीसायसादीनि प्रधानान्युत्तरोत्तरम्॥ यथायोगप्रयुक्ता हि श्रेष्ठश्रेष्ठगुणाः स्मृता'। (सु० स०)

अर्थ-ज्येष्ठ आषाढके महीनेमे पर्वत सूर्य्यकी किरणोसे अत्यन्त तपित होकर लाखकी समान प्रकाशमान अपने रसोंको शिलाओंसे बहाते है; वह रस शिलाजीत नामसे विख्यात है यह सर्व व्याधिका नाश करनेवाला है, सीसा इत्यादि और लोहादिक छह धातुओंसे यह पृथक् है इसे सुगन्धिवाला जानना। यह पृथ्वीमें छे स्थानोंसे होता है जो लोहसे उत्पन्न होता है वह लाखके रंगका है, वह उस लोहका वीर्य्य और रसभी धारण करता है। रांग, सीसा लोहादि खानजनित गुणोमे उत्तरोत्तर प्रधान है, वह श्रेष्ठ गुणवाले यथायोग्य प्रयुक्त करने चाहिये।

अथ शिलाजतुलक्षणम्।

गोमूत्रगन्धवत्कृष्णं स्निग्धं मृदु तथा गुरु।
तिक्तं कषायं शीतञ्च सर्वश्रेष्ठं तदायसम्॥

अर्थ-जिसमे गोमूत्रकी समान गंध आतीहो, रंग कृष्ण हो, चिकना, नरम, भारी, कडवा, कषेला और शीतल ऐसा शिलाजीत लोहकी खानसे उत्पन्न हुआ श्रेष्ठ जानना।

शिलाजतुगुणा।

शैलजं कटुकं तिक्तं मेहघ्नश्च रसायनम्। उष्णमुन्मादशोफघ्न क्षयकुष्ठाश्मरीहरम्॥ शोफोदरापस्मारघ्न बस्तिरोगार्शनाशनन्। कण्डूश्च पाण्डुरोगश्च छर्दिं वात कफ जयेत्॥ वलीपलितकासघ्नं श्वासमूत्ररुजापहम्॥

अर्थ-शिलाजीत-चरपरा, कडवा, प्रमेहनाशक, रसायन, गरम तथा उन्माद, सूजन, क्षय, कोढ, पथरी, शोफ, उदर, अपस्मार, वस्तिरोग, बवासीर, कण्डू, पाण्डुरोग, वमन, वात, कफ, वलीपलित, खाँसी, श्वास और मूत्ररोगको दूर करे है।

अपिच।

शिलाजं कफवातघ्नं तिक्तोष्णं क्षयरोगनुत्।
वह्नौ क्षिप्तं भवेद्यत्तल्लिंगाकारमधूमकम्॥

अर्थ-जो अग्निमे गेरनेसे धूमरहित और लिंगाकार खडा होजावे वह शिलाजीत उत्तम और शुद्ध जानना। शिलाजीत-कफ वातनाशक, कडवा, गरम और क्षयरोगका नाशक है।

अशुद्धशिलाजतुदोषा।

अशुद्धं दाहमूर्च्छायां भ्रमपित्तास्रशोणितम्।
शिलाजतु प्रकुरुते मांद्यमग्नेश्च विड्ग्रहम्॥ (रत्नाकर)

अर्थ-अशुद्ध शिलाजीत-दाह, मूर्च्छा, भ्रम, रक्तपित्त, रुधिरविकार, अग्निमांद्य और मलबद्धताको करता है।

इति श्रीशालिग्रामनिघण्टुभूषणे धातूपधातुवर्गः॥ ६॥

अथ रत्नोपरत्नवर्गः।

अथ रत्नस्य निरुक्तिः,

धनार्थिनो जनाः सर्वे रमन्तेऽस्मिन्नतीव यत्।
ततो रत्नमिति प्रोक्तं शब्दशास्त्रविशारदैः॥ (भा०प्र०)

रत्नं क्लीबे मणिः पुंसि स्त्रियामपि निगद्यते ।
तत्तु पाषाणभेदोऽस्ति मुक्तादि च तदुच्यते ॥ (कोष)

अर्थ-धनकी इच्छावाले प्राणी इन रत्नोमे अतीव रमतेहै इसी-कारण शब्दशास्त्रोंके ज्ञाताओंने रत्न ऐसा नाम रक्खा है। रत्न और मणि यह दोनो चमकनेवाले जवाहरात और मोती आदिमे कहे जाते है ।

रत्नानां निरूपणम् ।

वज्रं विद्रुममौक्तिकं मरकतं वैदूर्य्यगोमेदकं
माणिक्यं हरिनीलपुष्पदृपदौ रत्नानि नाम्ना नव ।
यान्यन्यान्यपि सन्ति कानिचिदिह त्रैलोक्यसीम्नि स्फुटं
नाम्ना तान्युपरत्नसञ्ज्ञकतमान्याहुः परीक्षाकृतः ।(नि० र०)

अर्थ-नवरत्न-हीरा १ मूंगा २ मोती ३ मरकत ४ वैदूर्य ५ गोमेद ६ माणिक्य ७ नील ८ और पुष्पराग ९ इस प्रकार यह नौ है । और इस पृथ्वीपर इन्ही रत्नोंकी सदृश दूसरे रत्न होते है उनको उपरत्न ऐसा परीक्षक लोग कहते है ।

अन्यच्च ।

मुक्ताफलं हीरकं च वैदूर्य्यं पद्मरागकम् ।
पुष्परागं च गोमेदं नीलं गारुत्मतं तथा ॥
प्रवालयुक्तान्येतानि महारत्नानि वै नव ।(विष्णुधर्म्मोत्तरे)

अर्थ-मोती,हीरा,वैडूर्य्य, माणिक, पुखराज, गोमेद, नील, पन्ना और मूंगा इन नवरत्नोंको महारत्न कहते है ।

रत्नगुणाः ।

रत्नानि भक्षितानि स्युर्मधुराणि सराणि च ।
चक्षुष्याणि च शीतानि विषघ्नानि धृनानि च ॥
मङ्गल्यानि मनोज्ञानि ग्रहदोषहराणि च ।

अर्थ-रत्न-मधुर,सारक, नेत्रोंको हितकारी,शीतल,विषनाशक, स्निग्ध,मंगलकारक, मनोज्ञ और ग्रहदोषको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

मणयो वीर्य्यतः शीता मधुरास्तुवरा रसात् ।

चक्षुष्या लेखनाश्चापि सारका विषहारकाः ॥

अर्थ-मणि(रत्न)-शीतवीर्य्य,मधुर, कषेली, नेत्रोको हितकारी, लेखन, सारक और विषहारक ह ।

हीरकनामानि ।

हीरक वज्रमशिरं षट्कोण दृढगर्भकम् ।

अर्थ-हीरक,वज्र,अशिर,षट्कोण,दृढगर्भक (हीर, दधीच्यस्थि, वज्रक, सूचीमुख,वरारक,रत्नमुख्य,वज्रपर्य्यायनाम, अभेद्य, दृढाङ्ग, चन्द्र, मणिवर) ।

संस्कृतभाषामे	हीरक, वज्र ।
हिन्दीभाषामे	हीरा ।
वंगभाषामे	हिरे ।
मराठीभाषामे	हिरा ।
गुजरातीभाषामे	हिरो ।
कर्णाटकीभाषामे	वज्र ।
तैलिङ्गीभाषामे	वज्र ।
इंग्रेजीभाषामे	डाएमोण्ड । Diamond
लैटिन्भाषामे	पिओरकार्बन,एडम्स्।Pure carbon Adams
फा०	इल्मास ।

हीरकगुणा ।

हीरकः सारकः शीतः कषायो मधुरस्तथा ।
चक्षुष्यो वान्तिकृत्पापालक्ष्मीनाशकरो धृतः ॥

अर्थ-हीरा-सारक(कुछरदस्तावर) शीतल, कषेला, मधुर और नेत्रोको हितकारी वमनकारक है । इसको धारण करनेसे पाप और अलक्ष्मीका नाश होताहै ।

हीरकभेदलक्षणगुणा ।

स श्वेतस्तु स्मृतो विप्रो लोहितः क्षत्रियः स्मृतः। पीतो वैश्योऽसितः शूद्रश्चतुर्वर्णात्मकश्च सः॥रसायने मतो विप्रः सर्वसिद्धिप्रदायकः।क्षत्रियो व्याधिविध्वसी जरामृत्युहरः स्मृतः ॥ वैश्यो धनप्रदः प्रोक्तस्तथा देहस्य दार्ढ्यकृत् । शूद्रो नाशयति

व्याधीन्वयःस्तम्भं करोति च ॥ पुस्त्रीनपुंसकानीह लक्षणी-यानि लक्षणैः । सुवृत्ताः फलसम्पूर्णास्तेजोयुक्ता बृहत्तराः ॥ पुरुषास्ते समाख्याता रेखाबिन्दुविवर्जिताः । रेखाबिन्दुसमायुक्ताः षडस्रास्ते स्त्रियः स्मृताः ॥ त्रिकोणाश्च सुदीर्घास्ते विज्ञयाश्च नपुंसकाः । तेषु स्युः पुरुषाः श्रेष्ठा रसबन्धनकारिणः ॥ स्त्रियः कुर्वन्ति कायस्य कान्तिस्त्रीणां सुखप्रदाः । नपुंसकास्त्ववीर्य्याः स्युरकामाः सत्ववर्ज्जिताः ॥ स्त्रियः स्त्रिभ्यः प्रदातव्यः क्लीव क्लीबे प्रयोजयेत् । सर्वेभ्यः सर्वदा देयाः पुरुषावीर्य्यवर्द्धनाः ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-हीरा-जातिके भेदसे चार प्रकारका है, जैसे ब्राह्मण,क्षत्रिय, वैश्य, और शूद्र, तहां ब्राह्मण हीरा (सफेद हीरा) रसायनकार्य्य मे उत्तम और सर्वसिद्धिदायक है । क्षत्रिय हीरा (लालरंगका) यह सर्व व्याधि, जरा और मृत्युनाशक है । वैश्यहीरा, (पीले रंगका) यह, धनप्रदायक, और शरीरको दृढ करनेवाला है । और शूद्र हीरा, (काले रंगका) होता है, यह व्याधिनाशक और अवस्था स्थापक है । हीरा स्त्री, पुरुष और नपुंसक, इन भेदोंसे तीन प्रकारका है, उत्तम-गोलाकार, चमकदार, बडा, रेखा और बिन्दु करके हीन हीरेको पुरुषजातिका जानना । रेखा और बिन्दुकरके युक्त तथा छै कोनेवाले हीरेको स्त्रीजातिका हीरा जानना । त्रिकोणयुक्त और सुदीर्घ हीरेको नपुंसकजातिका जानना । इनमे पुरुषजातिका हीरा-रस (पारा) को बांधनेवाला और श्रेष्ठ है । स्त्रीजाति हीरा-कान्तिजनक और स्त्रियोंको सुखकारक है । नपुंसकजातिका हीरा वीर्य्यविहीन, कामवर्ज्जित और सत्वशून्य जानना । स्त्रीजातिका हीरा स्त्रियोंके, नपुंसक जातिका नपुंसकोंके और पुरुषजातिका हीरा सर्व प्राणियोंके लिये उपयोगी और वीर्य्यवर्द्धक है ।

हीरकगुणा ।

वज्रं समीरकफपित्तगदांश्च हन्याद्वज्रोपमश्च कुरुते वपुरुत्तमश्रि । शोषक्षयभ्रमभगन्दरमेहमेदपाण्डूदरश्वयथुहारि च षड्साढ्यम् ।

अर्थ-हीरा-वातपित्तकफरोगनाशक, शरीरको वज्रके समान दृढ करनेवाला, लक्ष्मीवर्द्धक, षड्रसयुक्त तथा शोष, क्षय, भ्रम, भगन्दर, प्रमेह, मेद, पाण्डु, उदररोग और सूजनको दूर करनेवाला है ।

अन्यच्च ।

वज्रं रसायनं चैव षड्रसैश्च युतं सदा। देहदार्ढ्यकरं पुष्टिबलवीर्यविवर्द्धनम् ॥ सुवर्णसुखकृद्वातकुष्ठपित्तक्षयभ्रमान् । कफं वातं च शोफं च मेदमेहभगन्दरान् । पाण्डुरोगोदरं मेद नाशयेदिति कीर्तितम् ॥

अर्थ-हीरा-रसायन, षड्रसयुक्त, देहको दृढकरनेवाला, पुष्टि, बल और वीर्य्यवर्द्धक है, वर्णको सुंदर करनेवाला,सुखकारक तथा वात-कुष्ठ, पित्त, क्षय, भ्रम, कफ, वात, शोफ, मद, प्रमेह, भगन्दर, पाण्डुरोग, उदर और मेदनाशक हैं ।

अशुद्धहीरकदोषाः ।

अशुद्धं कुरुते वज्रं कुष्ठं पार्श्वव्यथां तथा। पाण्डुतापं गुरुत्वञ्च तस्मात्सशोध्य मारयेत् ॥ पीडां विधत्ते विविधां नराणां कुष्ठं क्षयं पाण्डुगदं च दुष्टम् । हृत्पार्श्वपीडां कुरुतेऽतिदुःखदामशुद्धवज्रं गुरुमात्मदं त्यजेत् ॥ (रत्ना०)

अर्थ-अशोधित हीरा-कोढ, पार्श्वशूल, पाण्डु, शरीरमे ताप और भारीपनको करे हैं । तथा अनेक प्रकारकी पीडा, कुष्ठ, क्षय, पाण्डुरोग, हृदय और पसलीमे शूल तथा आत्माका नाश करे है ।

माणिक्यनामानि ।

पद्मरागो लोहितको माणिक्यं शोणरत्नकम् ।

अर्थ-पद्मराग, लोहित, माणिक्य, शोणरत्नक, (रत्नराट्, रविरत्नक, शोणरत्न, तरणिरत्न, शृंगारी, रंगमाणिक्य, तरुण, रत्ननायक, रागयुक्, रत्न, शोणोपल, सौगन्धिक, कुरुविन्द, कुरुविल्व, लोहित, कुरुविन्दक, लक्ष्मीपुष्प, अरुणोपल) ।

सं०	पद्मराग, माणिक्य ।	तै०	माणिक्यं ।
हिं०	मानिक, लाल ।	इं०	रुबी । Ruby
बं०	माणिक ।	लै०	रुबिनस् । Rubinus
म०	माणिक ।	फा०	लालबदख्शानी ।
गु०	माण्यक, चुनी ।	अ०	लाल ।
क०	माणक ।		

माणिक्यगुणा ।

माणिक्य लेखन शीतं कषायं मधुर सरम् ।
चक्षुष्य मगल दाहदुष्टग्रहविषापहम् ॥

अर्थ-मानिक-लेखन, शीतल, कषेला, मधुर, सारक, नेत्रोंको हितकारी, मङ्गलकारक तथा दाह, दुष्टग्रह और विषनाशक है ।

माणिक्यभेदवर्णा ।

सिंहले तु भवेद्रक्त पद्मरागमनुत्तमम्।पीत काणपुरोद्भूतं कुरुविन्दमिति स्मृतम् ॥अशोकपल्लवच्छायमिदं सौगन्धिकं विदुः। तुम्बुरुच्छायया नील नीलगन्धिप्रकीर्त्तितम्॥ उत्तमं सिंहलोद्भूत निकृष्ट तुम्बुरूद्भवम् । मध्यमं मध्यम ज्ञेय माणिक्य क्षेत्रभेदतः ॥

अर्थ-सिंहल देशमे लाल रंगका पद्मराग नामवाला रत्न उत्पन्न होता है यह सर्वमे श्रेष्ठ जानना । कानपुर नामवाले देशमे कुरुविन्द नामवाला माणिक उत्पन्न होता है यह पीला और मध्यम जानना । अशोक वृक्षके पल्लवकी सदृश रगके सौगन्धिक नाम वाले माणिक्यको मध्यम जानना । तुम्बुरु देशमे उत्पन्न होनेवाले नीले रगके माणिकको नीलगन्धि माणिक कहते हैं यह अत्यन्त निकृष्ट है अर्थात् सिंहल देशमे उत्पन्न होनेवाला माणिक अत्युत्तम, तुम्बुरु देशमें उत्पन्न होनेवाला अत्यन्त निकृष्ट और अन्य देशमे उत्पन्न होनेवाले सर्व मध्यम जानने ।

बहुमूल्यमाणिक्यगुणा ।

बन्धूकगुञ्जाशकलेन्द्रगोपाजपासुमासृक्समवर्णशोभाः ।
भ्राजिष्णवो दाडिमबीजवर्णास्तथापरे किंशुकपुष्पभासः॥
सिन्दूरपद्मोत्पलकुंकुमानां लाक्षारसस्यापि समानवर्णाः ।
चकोरपुंस्कोकिलसारसानां नेत्रावभासश्च भवन्ति केचित् ॥

अर्थ-बन्धूक पुष्पकी समान, गुञ्जाकी, इंद्रगोप कीडेकी और जपाके फूलकी समान वर्णवाला और शोभा संयुक्त तथा चमकदार, अनारके बीजकी सदृश रगवाला माणिक होता है । और कोई कहते हैं टेसूके फूलकी समान प्रभायुक्त, सिंदूरकी सदृश, लाल कमलकी समान, कुम्कुमकी समान, लाखकी समान तथा

चकोर, कोकिला, और सारस इनके नेत्रोंकी कांतिकी समान वर्णवाले माणिक क्वचित् होते हैं।

अन्यच्च।

क्वचित्तु स्फाटिकोत्थानां देशे तुवरसञ्ज्ञके। सधर्म्माणः प्रजायन्ते स्वल्पमूल्या हि ते स्मृताः॥ वर्णानुयायिनस्तेषां रंध्रदेशे तथापरे। यज्जायन्ते तु ते केचिन्मौल्यलेशमवाप्नुयुः॥ शोभाद्वितयवन्तो ये मणयः क्षतिकारकाः। उभयत्र पद येषां तेन च स्यात्पराभवः॥

अर्थ-कहीं तुवर देशमें स्फटिक मणिका माणिक बना लेते हैं वह स्वल्प मूल्यका होता है। रंध्रदेशमें उन्हींके रंगकी समान दूसरा बनाते हैं वह उससे भी कम कीमतके होते हैं वह मणियें हानिकारक हैं। और जिनके दोनों ओर पद हैं उन माणिकोंसे हार होती है।

अथ तोल।

गुञ्जाफलप्रमाणस्तु दशसप्तगुञ्जकात्। पद्मरागस्तुलयति यथा पूर्वं महागुणः॥ बिम्बीफलसमाकारः षड्सुदशतोलकः। पद्मरागस्तुलयति यथोत्तरमहागुण.॥ अतः पर प्रमाणेन मानेन न च लक्ष्यते।

अर्थ-तोल-एक गुञ्जासे लेकर १७ गुञ्जा प्रमाण तक पद्मराग मणि तुलती है-वह बडे गुणों करके युक्त होती है। पद्मराग मणि जितनी २ तोलमें अधिक होगी उतनी २ ही उसकी कीमत भी अधिक होगी। जिसका कदूरोंकी समान आकार है और ६-८-१० तोलेकी तोलेमें है उसकी कीमत यथाक्रमसे अधिक जाननी। इसके उपरान्त प्रमाणसे मालूम होता है।

अथ मूल्यम्।

षड्विंशतिसहस्राण्येकमणे पलप्रमाणस्य। कर्षत्रयस्य विंशति रूपरिष्टात्पद्मरागस्य॥ अर्द्धपलस्य द्वादश कर्षस्यैव षट्सहस्राणि। यच्चाष्टमासिकमित तस्य सहस्रत्रय मौल्यम्॥ माषचतुष्टयं यत्स्यात्तस्य दशशत मौल्यम्॥ माषद्वयमितो

यस्तु पद्मरागः सुनिर्मलः । तस्य पचशतं मौल्य रौप्यं कर्षस्य चेरितम्॥मापकैकमितो यस्तु पद्मरागो गुणान्वितः । शतैकसंमित वाच्य मौल्यं तस्य विचक्षणेः॥ अतो न्यूनप्रमाणास्तु पद्मरागा गुणोत्तराः ॥ स्वर्णाद्द्विगुणमौल्येन मूल्य तेषां प्रकल्पयेत् । व्रणे मूल्यं चार्द्धतेजोहीनस्य मूल्यमष्टांशः । अल्पगुणो बहुदोपो मूल्य नाप्नोति विंशांशम् ॥

अर्थ-जो माणिक तोलमे ४ तोलेभर हो उसकी कीमत २६०००, रुपये है । और जो माणिक ३ तोलेभर हो उसकी कीमत २००००, रुपये है । जो माणिक तोलम दो तोलेभरहो उसकी कीमत १२०००, रुपये ह । और जो तोलमे एक तोलाभर हो उसकी कीमत ६०००, रुपये है । और जो तोलमे आठ मासे हो उसकी कीमत ३०००,रुपये हे और जो तोलमे चार मासेभर हो उसकी कीमत १०००, रुपये जानने जो पद्मराग तोलमे दो मासेका हो और निर्मल हो उसका मूल्य, ५००, रुपये जानने । जो पद्मराग तोलमे एक मासेका है और गुणसयुक्त है उसका मूल्य १००, जानने । और जो तोलमे इससे भी कम है तथा गुणोमें श्रेष्ठ ह उसका मूल्य सुवर्णसे दुगुना जानना और जो उसमे व्रण हो तो आध मूल्यका जानना।और हीनतेजका हो तो कीमत आठवें भाग जाननी । जिसम अल्पगुण और बहुत दोष हो तो उसकी कीमत बीसवे भाग भी नही ।

रत्नपरीक्षा ।

बालार्ककरसस्पर्शाद्यः शिखा लोहितां वमेत् । रजयेदाश्रयश्चापि स महागुण उच्यते।दुग्धे शतगुणे क्षिप्तो रंजयेद्यः समतत। वमेच्छिखां लोहितां वा पद्मराग· स उत्तम· । अन्धकारे महाघोरे यो न्यस्तः सन्महामणिः ॥ प्रकाशयति सूर्य्याभः स श्रेष्ठ· पद्मरागक·।पद्मकोशेषु यो न्यस्तः प्रकाशयति तत्क्षणात् ॥ पद्मरागवरो ह्येष देवानामपि दुर्लभः । सर्वारिष्टप्रशमनः सर्वसम्पत्तिदायक ॥बालार्काभिमुखं कृत्वा दर्पणे धारये-

चकोर, कोकिला, और सारस इनके नेत्रोंकी कांतिकी समान वर्णवाले माणिक कचित् होते हैं ।

अन्यच्च ।

कचित्तु स्फाटिकोत्थाना देशे तुवरसंज्ञके । सधर्म्माणः प्रजायन्ते स्वल्पमूल्या हि ते स्मृताः ॥ वर्णानुयायिनस्तेषां रावदेशे तथापरे । यज्जायन्ते तु ते केचिन्मौल्यलेशमवाप्नुयुः॥शोभाद्वितयवन्तो ये मणयः क्षतिकारकाः । उभयत्र पदं येषां तेन च स्यात्पराभवः ॥

अर्थ-कहीं तुवर देशमें स्फटिक मणिका माणिक बना लेते हैं वह स्वल्प मूल्यका होता है । रावदेशमें उन्हींके रंगकी समान दूसरा बनाते हैं वह उससे भी कम कीमतके होते हैं वह मणियें हानिकारक हैं । और जिनके दोनों ओर पद हैं उन माणिकोंसे हार होती है ।

अथ तोल ।

गुञ्जाफलप्रमाणस्तु दशसप्ततिगुञ्जकात् । पद्मरागस्तुलयति यथा पूर्वं महागुणः ॥ बिम्बीफलसमाकारः षड्वसुदशतोलकः । पद्मरागस्तुलयति यथोत्तरमहागुणः ॥ अतः परं प्रमाणेन मानेन न च लक्ष्यते ।

अर्थ-तोल-एक गुञ्जासे लेकर १७ गुञ्जा प्रमाण तक पद्मराग मणि तुलती है-वह बडे गुणों करके युक्त होती है । पद्मराग मणि जितनी २ तोलमें अधिक होगी उतनी २ ही उसकी कीमत भी अधिक होगी । जिसका कदूरीकी समान आकार है और ६-८-१० तोलेकी तोलेमें है उसकी कीमत यथाक्रमसे अधिक जाननी । इसके उपरान्त प्रमाणसे मालूम होता है ।

अथ मूल्यम् ।

षड्विंशतिसहस्राण्येकमणे पलप्रमाणस्य । कर्षत्रयस्य विंशतिरुपरिष्टात्पद्मरागस्य ॥ अर्द्धपलस्य द्वादश कर्षस्यैव षट्सहस्राणि । यच्चाष्टमासिकमितं तस्य सहस्रत्रयं मौल्यम् ॥ माषचतुष्टयं यत्स्यात्तस्य दशशतं मौल्यम् ॥ माषद्वयमितो

यस्तु पद्मरागः सुनिर्मलः । तस्य पचशत मौल्य रौप्य कर्षस्य चेरितम्॥माषकैकमितो यस्तु पद्मरागो गुणान्वितः । शतैकसंमित वाच्य मौल्य तस्य विचक्षणै ॥ अतो न्यूनप्रमाणास्तु पद्मरागा गुणोत्तराः ॥ स्वर्णाद्विगुणमौल्येन मूल्य तेषां प्रकल्पयेत् । व्रणे मूल्यं चार्द्धतेजोहीनस्य मूल्यमष्टांशः । अल्पगुणो बहुदोषो मूल्यं नाप्नोनि विशांशम् ॥

अर्थ-जो माणिक तोलमे ४ तोलेभर हो उसकी कीमत २६०००, रुपये है । और जो माणिक ३ तोलेभर हो उसकी कीमत २००००, रुपये है । जो माणिक तोलम दो तोलेभरहो उसकी कीमत १२०००, रुपये ह । और जो तोलमे एक तोलाभर हो उसकी कीमत ६०००, रुपये है । और जो तोलमे आठ मासे हो उसकी कीमत ३०००,रुपये है और जो तोलमे चार मासेभर हो उसकी कीमत १०००, रुपये जानने जो पद्मराग तोलमे दो मासेका हो और निर्मळ हो उसका मूल्य, ५००, रुपये जानने । जो पद्मराग तोलमे एक मासेका है और गुणसंयुक्त है उसका मूल्य १००, जानने । और जो तोलमे इससे भी कम है तथा गुणोमें श्रेष्ठ ह उसका मूल्य सुवर्णसे दुगुना जानना और जो उसमे व्रण हो तो आध मूल्यका जानना ।और हीनतेजका हो तो कीमत आठवें भाग जाननी । जिसम अल्पगुण और बहुत दोष हो तो उसकी कीमत बीसवे भाग भी नही ।

रत्नपरीक्षा ।

बालार्ककरसस्पर्शाद्यः शिखां लोहितां वमेत् । रंजयेदाश्रयं वापि स महागुण उच्यते।दुग्धे शतगुणे क्षिप्तो रंजयेद्यः समंतत । वमेच्छिखां लोहितां वा पद्मराग· स उत्तम· । अन्धकारे महाघोरे यो न्यस्तः सन्महामणि· ॥ प्रकाशयति सूर्य्याभः स श्रेष्ठः पद्मरागक·।पद्मकोशेषु यो न्यस्तः प्रकाशयति तत्क्षणात् ॥ पद्मरागवरो ह्येष देवानामपि दुर्लभः । सर्वारिष्टप्रशमन· सर्वसम्पत्तिदायक ॥बालार्काभिमुख कृत्वा दर्पणे धारये-

न्मणिम् । तत्र कान्तिविभागेन च्छायाभाग विनिर्दिशेत् ॥ अप्रणश्यति सन्देहे शिलायां परिघर्षयेत् । घृष्टो योऽत्यन्तशोभावान्परिमाणं न मुञ्चति ॥ स ज्ञेयोऽशुद्धजातीयो ज्ञेयाश्चान्ये विजातय. । अत्यन्तलोहितो यश्च पद्मरागः स उच्यते ॥

अर्थ-जो प्रातःकालके सूर्य्यकी किरणोके स्पर्श करतेही लाल कान्तिको त्याग देता है और जो अपने आश्रितको प्रसन्न करे वह पद्मरागरत्न महागुणवाला ह । जो अपनेसे सौगुने दूधमे पडा हुआ भी चारो ओरसे कान्ति प्रगट करता है और जो लाल रङ्ग की कान्तिको फैलावे है वह पद्मरागरत्न अत्यन्त उत्तम है । महाघोर अधकारमे रक्खा हुआ यह महारत्न यदि सूर्य्यकी समान प्रकाश करे तो उत्तम है । जो माणिक मुद्रितकमलमे रखनेसे तत्काल कमल को प्रफुल्लित करदे वह उत्तम पद्मरागरत्न देवताओकोभी दुर्लभ है सम्पूर्ण अरिष्टोको शान्ति करनेवाला और सम्पूर्ण सम्पत्तियोको देनेवाला है । प्रातःकालके सूर्य्यके सन्मुख दर्पणमे इस मणिको धरे उसके कान्तिविभागसे छायाभागको जाने संदेहको दूर करनेके लिये इसको पत्थरपर घिसे जो घिसनेसे अत्यन्त शोभावाला हो और परिमाणको त्याग न करे तो शुद्ध पद्मरागमणि जाने और दूसरे विजातीय पद्मराग है जो अत्यन्त लाल है वेभी पद्मराग मणि है ।

माणिक्यगुणा ।

सपत्नमध्येऽपि कृताधिवास प्रमादवृत्तावपि वर्त्तमानम् ।
न पद्मरागस्य महागुणस्य भर्त्तारमापत्समुपैति काचित् ॥
दोषोपसर्गप्रभवाश्च ये ते नोपद्रवास्त समभिद्रवन्ति ।
गुणैः सुमुख्यैः सकलैरुपेतो य. पद्मराग प्रयतो बिभर्त्ति ॥

अर्थ-शत्रुओके बीचमे रहने और प्रमाद करनेपर भी इस महागुणवाली पद्मरागमणिके प्रभावसे इसका धारण करनेवाला कभी आपत्तिको प्राप्त नहीं होता जितने दोष है उनमेसे कोई भी इसको प्राप्त नही होता जो पद्मराग मणिको धारण करता है वह सम्पूर्ण गुणोसे सयुक्त हो जाता है ।

अन्यच्च ।

माणिक्य मधुरं स्निग्ध वातघ्नञ्च रसायनम् ।
कफघ्न दीपन वृष्य भूतघ्नञ्च क्षयार्त्तिनुत् ॥

अर्थ-माणिक्य-मधुर,स्निग्ध,वातविनाशक,रसायन,कफनाशक दीपन, वीर्य्यवर्द्धक, भूत और क्षयरोगको दूर करे है ।

अपिच।

माणिक्य मधुर स्निग्धं वातपित्तप्रणाशनम् ।
रत्नप्रयोगप्रज्ञानां रसायनकर परम् ॥

अर्थ-माणिक-मधुर, स्निग्ध, वातपित्तनाशक, रत्नके प्रयोगमे श्रेष्ठ और रसायन है ।

अन्यच्च ।

माणिक्य मधुरं स्निग्ध वातघ्न च रसायनम् ।
पित्तं व्रणं नाशयति पूर्वैरिति निवेदितम् ॥

अर्थ-माणिक-मधुर, स्निग्ध, वातनाशक, रसायन, पित्तनाशक और व्रणको दूर करे हैं ।

मौक्तिकनामानि ।

मौक्तिकं शुक्तिजं मुक्ता शौक्तिकेय शशिप्रभम् ।
अम्भःसारमिन्दुरत्न लक्ष्मी मुक्ताफल हिमम् ।

अर्थ-मौक्तिक, शुक्तिज,मुक्ता,शौक्तिकेय,शशिप्रभ, अम्भः सार, इन्दुरत्न,लक्ष्मी,मुक्ताफल,हिम(शुक्तिबीज,हारी,कुवल,सौम्य,नार, तारा,मौतिक,तौतिक,शीतल,नीरज,नक्षत्र, अम्भःसार, बिन्दुफल, मुक्तिका, शौक्तेयक, शुक्तिमणि, स्वच्छ, हिमबल, सुधाशुभ, सुधांशुरत्न,लक्ष,शशिप्रिय, हैमवत, भूरुह, शौक्तिक) ।

सं०	मुक्ता ।	त०	मोत्यालु ।
हि०	मोती ।	इं०	पर्ल । Pearl
बं०	मुक्ता ।	लॅ०	मार्गारिटा । Margraira
म०	मोती ।	फा०	मखारिद ।
गु०	मोती ।	अ०	लोलो ।
क०	मौक्तिक ।		

मौक्तिकगुणा ।

मुक्ता कषाया स्वाद्वी च बलपुष्टिप्रदायिनी ।
वृष्या नेत्रहिता राजयक्ष्मघ्नी विषनाशिनी ।
स्त्रीणां कान्तिरतिकरी धारणाद्दृढपापनुत् ।(आ० सं०)

अर्थ-मोती-कषेला, स्वादिष्ठ, बलवर्द्धक, पुष्टिकारक, वीर्यवर्द्धक, नेत्रोको हितकारी तथा राजयक्ष्मा और विषविनाशक है। इसको धारण करनेसे-स्त्रियोकी कान्ति और रति बढतीहै तथा ग्रह और पापका नाश होता है।

अन्यच्च।

मौक्तिकं सुमधुरं सुशीतलं दृष्टिरोगशमनं विषापहम्। राजयक्ष्मपरिकोपनाशनं क्षीणवीर्य्यबलपुष्टिवर्द्धनम् ॥ कफपित्तक्षयध्वंसि कासश्वासाग्निमांद्यजित्। पुष्टिदं वृष्यमायुष्यं दाहघ्नं मौक्तिकं मतम्। मुक्तानां हारविधृतिर्दाहपित्तविनाशिनी। कान्तिं हर्षं नेत्रसुखं ददातीति प्रकीर्तितम् ॥ (नि र.)

अर्थ-मोती-मधुर, शीतल, दृष्टिरोगको दूर करनेवाला, विषविनाशक, राजयक्ष्माको हरनेवाला, क्षीणवीर्य्यवालेको बल और पुष्टि देनेवाला है। मोती-कफ, पित्त, क्षय, खांसी, श्वास, मंदाग्नि और दाहको दूर करेहै, पुष्टिकारक, वीर्य्यवर्द्धक और आयुवर्द्धक है। मोतियोका हार धारण करनेसे दाह और पित्त दूर होता है, कान्तिजनक, हर्ष बढाता है और नेत्रोमे सुख होता है।

मौक्तिकोत्पत्ति।

शुक्तिः शंखो गजः क्रोडः फणीमत्स्यश्च दर्दुरः।
वेणुश्चाष्टौ समाख्याताः सुज्ञैर्मौक्तिकयोनयः ॥

अर्थ-पंडितोने सीप, शंख, हाथी, सूअर, साप, मछली, मेडक और बांस यह आठ मोतीके उत्पन्न होनेके स्थान कहे है।

गजमौक्तिक।

यद्दन्तावलकुम्भसम्भवमदः पीतारुणं मंदरुक्।
धात्रीदघ्नतयात्र रत्नमधमं काम्बोजकुम्भोद्भवम् ॥

अर्थ-गजमोती-काम्बोजदेशके बलवान् हाथियोके गंडस्थलके निकट किंचित् लाल और पीले रंगका मोती उत्पन्न होताहै उसको स्त्री धारण करती है और वह अधम रत्न है।

वराहमौक्तिक।

एकाकी ससुखेन निस्पृहतया यः काननं गाहते

तस्यानादिवराहवंशजनुषः कोलस्य मूर्ध्नि स्थितम् ।
कंकोलाकृतिमिन्दुवत्सधवलं दैवादवाप्नोति तत्
यस्तं धारयते भवेत्सनिधिभिर्मर्त्यो धनाधीशवत् ॥

अर्थ-वराहमोती-आदि वराह अवतारके वंशका जो सूअर इकला सुखसहित निस्पृह वनमे विहार करता है उस सूअरके मस्तकमें मोती होताहै, वह मोती ककोलकी समान आकृतिवाला, चन्द्रमाकी समान धवल होता है, यह मोती प्रारब्धके ही वशसे प्राप्त होताहै । इस मोतीके मिलनेसे दरिद्री धनाधीश होजाते है ।

वेणुमौक्तिक ।

मुक्ताः सन्ति कुलाचलेषु करकाकान्त्युद्भवा वंशजाः।
कर्कन्धूफलबन्धवो निदधते कंठेषु शुद्धांगनाः ॥

अर्थ-वंशमोती-कुलाचल पर्वतपर उत्तमकान्तिवाले बास होतेहै उन बांसोमे बेरकी समान मोती उत्पन्न होताहै उस मोतीको स्त्रियां कण्ठमे धारण करती है ।

मत्स्यमौक्तिक ।

प्रोष्ठीगर्भगतस्तु मौक्तिकमणिर्गाजैः समं पाटली·
पुष्पाभःस न लक्ष्यते भुवि जनैरस्मिन्कलौ पापिभि·॥

अर्थ-मत्स्यमोती-मछलीके पेटमे होतेहै यह मोती गजमोतीकी समान आकृतिवाले और पाढलके फूलकी समान रंगवाले होतेहै और यह मोती इस पृथ्वीपर पापीजनोकी दृष्टि नहीं पडतेहै ।

दर्दुरमौक्तिक ।

यन्मेघोदरसम्भवं तदवनीमप्राप्तमेवामरैर्व्योमस्थैरपनीयते विनियतं वर्षासु मुक्ताफलम्॥ तिग्मांशोरपि दुर्निरीक्ष्यमकृशं सौदामिनीसन्निभं देवानामपि दुर्लभं न मनुजस्यैतस्य प्राप्तिः पुनः ॥

अर्थ-वर्षाऋतुमे जो मेडक मेघोदरसे उत्पन्न होते और पृथ्वीके ऊपर नही गिरते है उन मेढकोंके उदरमे मोती उत्पन्न होतेहै वह मोती पृथ्वीपर नही आते बीचमे देवता ग्रहण करलेते है वह मोती

सूर्य्यकी तेजसेभी अधिक और बिजलीकी समान प्रभावाले होते हैं देवताओंको भी दुर्लभ हैं और मनुष्यकी तो क्या बात है ।

शंखमौक्तिक।

शंखस्याच्युतहारणो जलनिधौ ये वंशजाः कम्बुका-
स्तेष्वंत· किल मौक्तिक भवति वै तच्छुक्रतारानिभम्॥
कापोताण्डसम सुवृत्तमसकृच्छ्रीकं सरूपं लघु
स्निग्धं स्पर्शकृतं हि तच्च न पुनर्मर्त्यैस्तदा साद्यते ॥

अर्थ-पाचजन्य शखके वंशके जो शंख समुद्रमें है उन शंखोंमे सफेद तथा नक्षत्रकी समान कान्तिवाले और कबूतरके अंडेकी समान गोल मोती उत्पन्न होते हैं वह मोती झलकदार, स्निग्ध, हलके और लक्ष्मीजनक हैं तथा वह एकवार मनुष्योंको स्पर्श होने पर फिर हाथ नहीं लगते हैं ।

सर्पजमौक्तिक।

शेषस्यान्वयिनां फणासु फणिनां यन्मौक्तिक जायते वृत्त निर्मलमुज्ज्वलं शशिरुचि श्यामच्छवि श्रीकरम्॥ककोलाकृति कोपि काटिसुकृतैः प्राप्नोति चेन्मानवः स स्याद्वाजिगजाधिको नृपसमो जातोपि नीचे कुले॥आस्ते सद्मनि चेत्स पन्नगमणिस्ते यातुधानामरा हर्तुं रध्रमवेक्षते इतरत' कुर्य्यान्महाशांतिकम् ॥

अर्थ-सर्पजमौक्तिक-शेषके वशमें जो उत्पन्न हुये सर्प उन सर्पोंके फणोंमें उत्पन्न होते हैं वह मोती गोल, निर्मल, उज्ज्वल, चन्द्रमाकी समान श्याम छबिवाले और ककोलकी समान आकृतिवाले होते हैं वह मोती किसी करोड जन्मतक पुण्य करनेवाले मनुष्यकेही हाथ लगते हैं जिस मनुष्यको यह मोती प्राप्त होते हैं उसके गज अश्वादिककी वृद्धि होती है और वह नीचकुलकाभी मनुष्य राजाके समान हो जाता है और उन मोतियोंको घरमें रखनेसे निश्चय राक्षसबाधा दूर होती है तथा महाशान्ति होती है ।

लक्षणम्।

श्वेतस्निग्धमतीव बधुरतर स्यात्पारसीकोद्भवम्।
रूक्षं काञ्चनवर्णसकरयुतं स्याद्वार्बरं मौक्तिकम् ॥

शोण तूर्मजसभवंविदुरतिस्निग्ध तथा दोषजम्
चातुर्वर्ण्ययुतं सुलक्षणमिति श्लक्ष्ण कविश्रीकरम् ॥

अर्थ-पारसदेशके समुद्रमे उत्पन्न होनेवाला मोती-श्वेत, स्निग्ध और अत्यन्त प्रकाशमान होता है अरबके समुद्रमे उत्पन्न होनेवाला मोती रूखा और कुछ सुवर्णकी समान रङ्गवाला होता है । और अन्य समुद्रोमे उत्पन्न होनेवाले मोती लाल, स्निग्ध, दोषजनक, चारवर्णयुक्त, सुलक्षण और चिकने तथा लक्ष्मीको करनेवाले होते है ।

शुक्तिमौक्तिक ।

पट्स्वेतेष्वपि रुक्मिणीव जगति ख्याति गता रुक्मिणी
नाम्ना शुक्तिमतीव चोत्तमगुणा सिंधौ समुज्जृम्भते ॥
तस्या गर्भभवन्तु कुकुमनिभ जातीफलाकृत्तिनम्
स्थूल स्निग्धमतीव निर्मलतम भूमौ प्रकाश सदा॥

अर्थ-जो सीप रूपेकी समान या सोनेकी समान दीप्तिमान अत्यन्त उत्तमगुणयुक्त समुद्रमे उत्पन्न होती है उस सीपमे कुंकुमकी समान प्रभायुक्त जायफलकी समान रूपवाले, स्थूल,स्निग्ध,अत्यन्त निर्मल और सदैव प्रकाश करनेवाले मोती उत्पन्न होते है ।

मौक्तिकपरीक्षा ।

यद्विच्छाय मौक्तिक व्यगकाय शुक्तिस्पर्श रक्तता चापि धत्ते।
मत्स्याक्षांक रूक्षमुत्ताननिम्न नैतद्धार्यं धीमता दोपदायि ॥
नक्षत्राभ वृत्तमत्यन्तमुक्त स्निग्धं स्थूलं निर्व्रण निर्मल च।
न्यस्तं धत्तेगौरवं यत्तुलायां निर्मौल्यंतन्मौक्तिकं सिद्धिदायि॥

अर्थ-जो मोती कान्तिरहित, व्यंगशरीरवाला, सीपीमे लगा हुआ, लाल, मछलीकी आंखोकी समान चिह्नित, रूखा और ऊंचा नीचा होता है ऐसे दोपदायक मोतीको बुद्धिमान् पुरुप नहीं धारण करे। जो मोती नक्षत्रकी समान कान्तिवाला, गोल, स्निग्ध,स्थूल, व्रणरहित, निर्मल और तोलमे भारी होताहै ऐसा मोती अमूल्य और सिद्धिदायक है ।

प्रवालनामानि ।



प्रवालोंगारकमणिर्विद्रुमोंभोधिपल्लवः ।
भौमरत्नं च रत्नांगो रक्तांगश्च लतामणिः ।

अर्थ-प्रवाल, अङ्गारकमणि, विद्रुम, अम्भोधिपल्लव, भौमरत्न, रत्नाङ्ग, रक्ताङ्ग, लतामणि (रक्तकन्द, रक्तकन्दल, रक्ताकार)

संस्कृतभाषामे	प्रवाल ।
हिन्दीभाषामे	मूगा ।
वगभाषामे	पला, मुङ्गा ।
मराठीभाषामे	पोवळे ।
गुजरातीभाषामे	परवाला ।
कर्णाटकीभाषामे	अवलेहवत ।
तैलङ्गीभाषामे	प्रवालक, पागडालु ।
इग्रेजीभाषामे	रेड्कोरल । Red coral
लैटिन्भाषामे	कोरेलियंरुव्र । Corallum rubrum
फारसीभाषामे	मिरजान्, वेखमिरजां ।
अरबीभाषामे	एहेमखुलसुद ।

प्रवालगुणाः ।

वीर्य्यवृद्धौ तथा पुष्टौ यस्येच्छा वर्तते परा ।
विद्रुमं शोधितं तेन सेवनीयं गुणप्रदम् ॥

अर्थ-जिन मनुष्योंको वीर्य्यको वढानेकी और शरीरको पुष्टि

इच्छा वर्त्तती है उनको शुद्धप्रवाल (मूँगा)का सेवन करना चाहिये और यह प्रवाल अनेक गुणदायक है।

अन्यच्च।

विद्रुमं सर्वदोषघ्नं दीपनं रुचिपुष्टिदम्।
क्षयपाण्डुज्वरश्वासकासमेदोगदाञ्जयेत्॥

अर्थ-मूँगा-सर्वदोषनाशक, दीपन, रुचिकारक,पुष्टिदायक तथा क्षय, पाण्डु, ज्वर, श्वास, खाँसी और मेदरोगको दूर करे है।

अन्यच्च।

प्रवालं मधुरं साम्लं कफपित्तादिदोषहृत्। वीर्य्यकान्तिकरं स्त्रीणां धृतेमंगलदायकम्॥ क्षयपित्तास्रकासघ्नं दीपनं पाचनं लघु। विषभूतादिशमनं विद्रुमं नेत्ररोगहृत्॥

अर्थ-मूँगा-मधुर,अम्ल,कफनाशक, पित्तनिवारक, वीर्य्यवर्द्धक, कान्तिजनक,स्त्रियोंको धारण करनेसे मंगलदायक,क्षयनाशक,रक्तपित्तहारक ,कासघ्न,दीपन,सारक,पाचक,हलका तथा ज्वर,विष,भूतादिबाधा,उन्माद,पाण्डुरोग, प्रमेह और नेत्ररोगको दूर करे है।

प्रवालमञ्जरीगुणाः।

प्रवालमंजरी सार्द्रा कामपुष्टिकरी नृणाम्।
सेविता सततं देहे वीर्य्यस्तम्भं करोति च॥

अर्थ-मूंगेकी कच्ची बेल-मनुष्योंके काम और पुष्टिको देनेवाली है और इसको निरंतर सेवन करनेसे वीर्य्यस्तम्भ होता है।

प्रवालोत्पत्तिलक्षणम्।

बालार्ककिरणारक्ता सागरसलिलोद्भवा च जलताया।
न त्यजति निजां रुचिं निकषे घृष्टापि सा मृता जात्या॥
पक्वबिंबफलच्छायं वृत्तायतमवक्रकम्। स्निग्धमव्रणकं स्थूलं प्रवालं सप्तधा शुभम्॥ आररंग जलाक्रान्तिवक्रं सूक्ष्मं सकोटरम्। रूक्षं कृष्णं लघु श्वेतं प्रवालमशुभं त्यजेत्॥

अर्थ-समुद्रमें बालसूर्य्यके किरणोंकी समान लाल मूंगेकी बेल उत्पन्न होती है वह बेल कसौटीपै घिसनेसेभी अपनी कान्ति और

प्रवालनामानि ।



प्रवालोगारकमणिर्विद्रुमोंभोधिपल्लवः ।
भौमरत्नं च रत्नांगो रक्तांगश्च लतामणिः ।

अर्थ-प्रवाल, अङ्गारकमणि, विद्रुम, अम्भोधिपल्लव, भौमरत्न, रत्नाङ्ग, रक्ताङ्ग, लतामणि (रक्तकन्द, रक्तकन्दल, रक्ताकार)

संस्कृतभाषामे	प्रवाल ।
हिन्दीभाषामे	मूंगा ।
वंगभाषामे	पला, मुङ्गा ।
मराठीभाषामे	पोवळे ।
गुजरातीभाषामे	परवाला ।
कर्णाटकीभाषामे	अवलेहवत ।
तैलङ्गीभाषामे	प्रवालकं, पागडालु ।
इङ्ग्रेजीभाषामे	रेड्कोरल । Red coral
लैटिन्भाषामे	कोरेलियरुब्र । Corallum rubrum
फारसीभाषामे	मिरजान्, वेखमिरजा ।
अरबीभाषामे	एहेमखुमुद ।

प्रवालगुणाः ।

वीर्य्यवृद्धौ तथा पुष्टौ यस्येच्छा वर्तते परा ।
विद्रुमं शोधितं तेन सेवनीयं गुणप्रदम् ॥

अर्थ-जिन मनुष्योंको वीर्य्यको बढानेकी और शरीरको पुष्टि

इच्छा वर्त्तती है उनको शुद्धप्रवाल (मूँगा)का सेवन करना चाहिये और यह प्रवाल अनेक गुणदायक है।

अन्यच्च।

विद्रुमं सर्वदोषघ्नं दीपनं रुचिपुष्टिदम्।
क्षयपाण्डुज्वरश्वासकासमेदोगदाञ्जयेत्॥

अर्थ-मूँगा-सर्वदोषनाशक, दीपन, रुचिकारक,पुष्टिदायक तथा क्षय, पाण्डु, ज्वर, श्वास, खाँसी और मेदरोगको दूर करे है।

अन्यच्च।

प्रवालं मधुरं साम्लं कफपित्तार्त्तिदोषनुत्। वीर्य्यकान्तिकरं स्त्रीणां धृतेर्मंगलदायकम्॥ क्षयपित्तास्रकासघ्नं दीपनं पाचनं लघु। विषभूतादिशमनं विद्रुमं नेत्ररोगहृत्॥

अर्थ-मूँगा-मधुर,अम्ल,कफनाशक, पित्तनिवारक, वीर्यवर्द्धक, कान्तिजनक,स्त्रियोंको धारण करनेसे मंगलदायक,क्षयनाशक,रक्त-पित्तहारक,कासघ्न,दीपन,सारक,पाचक,हलका तथा ज्वर,विष,भूतादिबाधा,उन्माद,पाण्डुरोग, प्रमेह और नेत्ररोगको दूर करे है।

प्रवालमंजरीगुणाः।

प्रवालमंजरी सार्द्रा कामपुष्टिकरी नृणाम्।
सेविता सततं देहे वीर्य्यस्तम्भं करोति च॥

अर्थ-मूँगेकी कच्ची बेल-मनुष्योंके काम और पुष्टिको देनेवाली है और इसको निरंतर सेवन करनेसे वीर्य्यस्तम्भ होता है।

प्रवालोत्पत्तिलक्षणम्।

बालार्ककिरणारक्ता सागरसलिलोद्भवा च जलतापा।
न त्यजति निजां रुचिं निकषे घृष्टापि सा मता जात्या॥
पक्वबिंबफलच्छायं वृत्तायतमवक्रकम्। स्निग्धमव्रणकं स्थूलं प्रवालं सप्तधा शुभम्॥ आररंग जलाक्रान्तिवक्रं सूक्ष्मं सकोटरम्। रूक्षं कृष्णं लघु श्वेतं प्रवालमशुभं त्यजेत्॥

अर्थ-समुद्रमें बालसूर्य्यके किरणोंकी समान लाल मूँगेकी बेल उत्पन्न होती है वह बेल कसोटीपै घिसनेसेभी अपनी कान्ति और

प्रवालनामानि ।



प्रवालोगारकमणिर्विद्रुमोभोधिपल्लवः ।
भौमरत्नं च रत्नांगो रक्तांगश्च लतामणिः ।

अर्थ-प्रवाल, अङ्गारकमणि, विद्रुम, अम्भोधिपल्लव, भौमरत्न, रत्नाङ्ग, रक्ताङ्ग, लतामणि (रक्तकन्द, रक्तकन्दल, रक्ताकार)

संस्कृतभाषामे	प्रवाल ।
हिन्दीभाषामे	मूंगा ।
वंगभाषामे	पला, मुङ्गा ।
मराठीभाषामे	पोवळे ।
गुजरातीभाषामे	परवाला ।
कर्णाटकीभाषामे	अवलेहवत ।
तैलङ्गीभाषामे	प्रवालक, पागडालु ।
इंग्रेजीभाषामें	रेड्कोरल । Red coral
लैटिन्भाषामे	कोरेलियरुब्र । Corallum rubrum
फारसीभाषामे	मिरजान्, वेखमिरजां ।
अरबीभाषामे,	एहेमखुमूसुद ।

प्रवालगुणा ।

वीर्य्यवृद्धौ तथा पुष्टौ यस्येच्छा वर्तते परा ।
विद्रुम शोधित तेन सेवनीय गुणप्रदम् ॥

अर्थ-जिन मनुष्योंको वीर्य्यको बढानेकी और शरीरको पुष्टि

अर्थ-स्वच्छ, भारी, स्निग्ध, मृदु,अङ्गंग और बहुरंगवाला ऐसा पन्ना शृङ्गारी मनुष्योंको धारण करना चाहिये । खरखरा,रूखा, मलिन,हलका,कान्तिहीन,कलमषयुक्त,त्रासयुक्त और विकृताग धारण नहीं करे ।

अपिच ।

हरिद्वर्णं गुरु स्निग्ध स्फुरद्रश्मिरय शुभम् । भासुरं भासन तार्क्ष्यं गात्रसमं सुसमतम् ॥ कपिल कर्कश नीलं पाण्डु कृष्णं च लाघवम्॥ चिपट विकृत कृष्ण रूक्ष तार्क्ष्यं न शस्यते। (रत्नाकर)

अर्थ-हरेरंगवाला,भारी, स्निग्ध, कान्तिवान्, तेजस्वी, दीप्ति युक्त और गरुडकी समान रूपवाला ऐसा पन्ना उत्तम है । कपिलवर्ण, खरखरा, नीला, पाण्डुवर्ण, कृष्ण, हलका, चिपट, विकृत और रूखा ऐसा पन्ना उत्तम नहीं होता ।

पुष्परागनामानि ।

पुष्परागो जीवरत्नं पीतस्फटिक इत्यपि ।

अर्थ-पुष्पराग,जीवरत्न,पीतस्फटिक,(पुष्पराज, मंजुमणि, वाचस्पतिवल्लभ, पीत,पीतरक्त,पीताश्मा, गुरुरत्न, पीतमणि)

सं०	पुष्पराग ।	क०	पुष्परागं ।
हिं०	पुखराज ।	तै०	पुष्परागम् ।
व०	पुष्पराज ।	इं०	टोपाज । Topag
म०	पुष्कराज ।	ल०	टोपाजीयो। Topagio
गु०	पुखराज,पीळु रत्न।		

पुष्परागगुणा ।

पुष्पराग विषच्छर्दिकफवाताग्निमांद्यजित् ।
दाहकुष्ठार्शशमनं दीपन लघुपाचनम् ॥

अर्थ-पुखराज-विष, वमन, कफ,वात, मन्दाग्नि, दाह, कुष्ठ, और बवासीरको दूर करेहै, दीपन,हलका और पाचक है ।

अन्यच्च ।

पुष्परागोम्लः शीतः स्याद्वातलोग्निश्च दीपनः ।
वृष्यो वयःस्थापकश्च प्रज्ञाबुद्धिविवर्द्धनः ॥
वातनाशकरः प्रोक्तो मुनिभिः पारदर्शिभिः ।

रंगको नहीं छोडती तथा अमृतकी समान गुणकारी है। पक्की कन्दूरीके फलकी समान लाल, गोल, लम्बे, सरल, स्निग्ध, वणरहित और स्थूल इन सात लक्षणोसे युक्त मूंगे उत्तम होते हैं । पीतलकी समान रंगवाले, पानीकी समान रंगवाले, वक्र (टेढे), सूक्ष्म, छिद्रयुक्त, रूक्ष, कृष्ण, हलके और श्वेत ऐसे मूंगे त्याज्य हैं ।

मरकतनामानि ।

गारुत्मतं मरकतमश्मगर्भं हरिन्मणिः ।

अर्थ-गारुत्मत, मरकत, अश्मगर्भ, हरिन्मणि (गारुत्मक, गरुडाश्म, मरक्त, राजनील, गरुडाङ्कित, रौहिणेय, सौपर्ण, गरुडोद्गीर्ण, बुधरत्न, अश्मगर्भज, गरलारि, वापबोल, गारुड, गरुडोत्तीर्ण, वाम्रबोल)

सं० मरकत ।	तै० नीलम् ।
हिं० पन्ना ।	इं० इमरल्ड । Emerold
बं० पान्ना ।	लै० स्मेरेग्डस् । Smaragdus
म० पाचूरत्न ।	फा० जुमुरईद ।
गु० लीलुंपालुं ।	अ० जमर्रद ।
क० पाचि पच्चे ।	

मरकतगुणाः ।

पाचिका शीतला रुच्या रसकाले मधुः स्मृता ।
पुष्टिकृद्विषहा वृष्या भूतबाधाम्लपित्तहा ॥

अर्थ-पन्ना-शीतल, रुचिकारक, मधुररसान्वित, पुष्टिकारक, विषनाशक, वीर्यवर्द्धक तथा भूतबाधा और अम्लपित्तको दूर करेहै ।

अन्यच्च ।

ज्वरच्छर्दिविषश्वासं सन्तापाग्नेश्च मांद्यनुत् ।
दुर्नामपाण्डुशोफघ्न तार्क्ष्यमोजोविवर्द्धनम् ॥

अर्थ-पन्ना-ज्वर, वमन, विष, श्वास, सन्ताप, मन्दाग्नि, बवासीर, पाण्डुरोग और सूजनको दूर करेहै और ओजको बढानेवाला है ।

मरकतमणिपरीक्षा ।

स्वच्छ गुरु स्निग्धगात्रं च मार्दवसमेतऽयंगं बहुरंगम् । शृंगारीमरकत बिभृयात् । शर्करिलं रूक्षं मलिनम् । लघुहीनकान्तिकल्मष त्रासयुत विकृतांग मरकतममरोपि नोपयुंजीत ।

तेलिङ्गीभाषामे नील ।
इंग्रेजीभाषामे सेफायर Saffire
लेटिनभाषामे सेफायर्स Saffirus

नीलगुणा ।

श्वासकासहरं वृष्यं त्रिदोषघ्नं सुदीपनम् ।
विषमज्वरदुर्नामपापघ्नं नीलमीरितम् ॥

अर्थ-नीलम्-श्वास, खासी, त्रिदोष, विषमज्वर, बवासीर और पापनाशक है, वीर्यवर्द्धक और अग्निप्रदीपक है।

अन्यच्च ।

नीलः सतिक्तकोष्णश्च कफपित्तानिलापहः ।
यो दधाति शरीरे च सौरिमर्दनदो भवेत् ॥

अन्यच्च ।

अर्थ-नीलम्-कडवा, गरम, वातकफपित्तनाशक और इसको शरीरमे धारण करनेसे शनिग्रहकी बाधा दूर होती है ।

नीलस्य वर्णभेदा ।

सितशोणपीतकृष्णच्छाया नीलाः क्रमादिमे कथिताः ।
विप्रादिवर्णसिद्धयै धारणमस्यापि वज्रवत्फलदम् ॥

अर्थ-सफेद, लाल, और काला इन भेदोसे नीलम् चार प्रकारका है तहा सफेद रंगका ब्राह्मण, लालरंगका क्षत्रिय, पीले रंगका वैश्य और काले रगका शूद्र होता है। नीलम् अगमे धारण करनेसे हीरेकी समान फल देता है ।

गोमेदनामानि ।

पिंगस्फटिको गोमेदोऽगस्तिसत्त्वं तमोमणिः ।

अर्थ-पिगस्फटिक, गोमेद, अगस्तिसत्त्व, तमोमणि (गोमेदक, पीतरत्नक, वाहुरत्न, स्वर्भानव)

संस्कृतभाषामे गोमेदक ।
हिन्दीभाषामे गोमेदमणि ।
वगभाषामे गोमेद ।
मराठीभाषामे गोमेदमणि ।
गु० गोमूत्र जेवु पीलारगनुं
क० गोमेद ।
तैलिङ्गीभाषामे गोमेदक ।
इ० ओनिक्स Onyx
ल० ओनिक्स । Onyx

अर्थ-पुखराज-अम्ल, शीतल, बादी, अग्निप्रदीपक, वीर्य्यवर्द्धक, अवस्थास्थापक, प्रज्ञाजनक, बुद्धिवर्द्धक और वातविनाशक है।

पुष्परागलक्षणम्।

पुष्परागं गुरु स्निग्धं स्वच्छ स्थूल समं मृदु।
कार्णिकारप्रसूनाभं मसृण शुभमष्टधा॥

अर्थ-पुखराज-भारी, चिकना, निर्मल, स्थूल, गोल, नरम, अमलतासके फूलकी समान पीलेरंगका और मसृण इन आठ प्रकारसे पुखराज उत्तम जानना।

अन्यच्च।

कृष्णं विद्धाङ्कितं व्यगं धवलं मलिनं लघु॥ विच्छायं शर्कराभागं पुष्पराग सदोपलम्॥ स्वच्छायपीतगुरुगात्रसुरंगशुद्धं स्निग्ध च निर्मलमतीव सुवृत्तशीलम्। यत्पुष्परागममल कलयेदमुष्य पुष्णाति कीर्तिमतिशौर्यसुखायुरर्थान्॥ अय खलु पुष्परागो जात्यस्तथा चाय परीक्षकैरुक्तः।

अर्थ-जो पुष्पराग-काला, विद्ध, अंकित, व्यंग (झाईयुक्त) सफेद, मलिन, हलका, बेरंग और खरखरा ऐसा पुखराज दोषवाला होताहै। और जो दीप्तिवान्, पीला, भारी, उत्तमरंगदार, शुद्ध, स्निग्ध, निर्मल और उत्तम गोल ऐसा पुखराज श्रेष्ठ होताहै यह पुखराज कीर्ति, शौर्य, सुख, आयु अर्थको देवेहै।

नीलमणिनामानि।

नीलस्तु शौरिरत्नः स्यान्नीलाश्मा नीलरत्नकः।
नीलोपलस्तृणग्राही महानीलः सुनीलकः॥

संस्कृतभाषामें-नील, शौरिरत्न, नीलाश्मा, नीलरत्नक, नीलोपल, तृणग्राही, महानील, सुनीलक (मसार)

हिन्दीभाषामें	नीलमणि।
वंगभाषामें	नीलमणि।
मराठीभाषामें	नीलमणि।
गुजरातीभाषामें	नीलम्, कालुंनग।
कर्णाटकीभाषामें	नील।

न्ति गोमेदप्रतिरूपिणम्॥शुद्धस्य गोमेदमणेस्तु मूल्य सुवर्णतो द्वैगुणयाहुरेके। अन्ये तथा विद्रुमतुल्यमूल्यं तथापरे चामरतुल्यमाहुः॥चतुर्विधानामेषां तु धारणं परिसम्मतम्।

(भोजराजकृतयुक्तिकल्पतरुः)

अर्थ-गोमादमणि-हिमालय और सिन्धुमे होतीहै। स्वच्छकान्तिवाली, भारी, चिकनी, अच्छेवर्णवाली, दीतिमान्, गोल और पिजरयुक्त ऐसी गोमेदमणि उत्तम होती है, जातिके भेदसे गोमेदमणि चार प्रकारकी है ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र तहां ब्राह्मण सफेद रंगकी, क्षत्रिय लाल रगकी, वैश्य पीले रगकी और शूद्र नीले रगकी होती है।इसी प्रकार चार तरहकी छाया होती है सफेद, लाल, पीली और काली।जो भारी, सफेदरगकी, चिकनी तथा अत्यन्त पुरानी और स्वच्छ हो ऐसी गोमेदमणिको धारण करनेसे लक्ष्मी और धनधान्यकी वृद्धि होती है। जो हलकी, विरूप, खरदरी,स्नेहसे लिपटी हुईसी और मलीन है उस गोमेदमणिको धारण करनेसे-सम्पत्ति,भोग, बल और वीर्य्यका नाश होताहै।जो दोष हीरेमे होते है वह दोष गोमेद मणिमेभी है। इसकी परीक्षा अग्नि और शानसे करनी चाहिये स्फटिक मणिकोभी गोमेदमणि बनालेते है। शुद्ध गोमेदमणि का मूल्य सुवर्णसे दूना है और कोई मूँगेकी बराबर कहते है। कोई अमररत्नकी समान कहते है। इसका चार प्रकारका धारण करना शुभ है।

वैदूर्य्यं राष्ट्रकं केतुरत्न मेघखराङ्कुरम्।

अर्थ-वैदूर्य्य, राष्ट्रक, केतुरत्न, मेघखरांकुर (बालवायज, बालसूर्य्य, बालसूर्यक, कैतव, प्रावृष्य, अभ्ररोह, शराब्दांकुर, वीदूररत्न, विदूरज, केतुग्रहवल्लभ)।

सस्कृतभाषामे	वैदूर्य्य।
हिन्दीभाषामे	वैडूर्य्य, बेदूर्य, लहसुनिया।
वगभाषामे	वैदूर्य्य।
मराठीभाषामे	वैडूर्य्यरत्न।
गुजरातीभाषामें	माजरानी ऑख जेवुं लसाणियो।
कर्णाटकीभाषामें	वडूर्य्य।
तैलङ्गीभाषामे	वैडुर्य्य।
इंग्रजीभाषामे	केट्सआइ। Catseye

गोमेद्रगुणाः ।

गोमेदकोऽम्लश्चोष्णश्च वातकोपविकारनुत् ।
दीपनः पाचनश्चैव धृतोयं पापनाशनः ॥

अर्थ-गोमेदमणि-अम्ल, उष्ण, वातके कोपको शान्ति करने वाली, दीपन, पाचक और इसको शरीरमें धारण करनेसे पापका नाश होता है ।

अन्यच्च ।

गोमेदं कफपित्तघ्नं क्षय पाण्डुक्षयकरम् ।
दीपन पाचनं रुच्यं त्वच्यं बुद्धिप्रबोधनम् ॥

अर्थ-गोमेदमणि-कफपित्तनाशक, क्षयनाशक, पाण्डुरोगहारक दीपन, पाचक, रुचिकारी, त्वचाको हितकारी और बुद्धिप्रबोधक है ।

अपिच ।

गोमेदोऽम्लः पापकश्च चक्षुष्योष्णोऽग्निदीपनः ॥
लघुर्वातस्य कासस्य नाशकारी प्रकीर्त्तितः ॥

अर्थ-गोमेदमणि-अम्ल, पाचक, नेत्रोंको हितकारी, गरम, अग्निप्रदीपक, हलकी तथा वात और खांसीको दूर करे है ।

गोमेदपरीक्षा ।

हिमालये वा सिन्धौ वा गोमेदमणिसम्भवः । स्वच्छकान्तिर्गुरुः स्निग्धो वर्णाढ्यो दीप्तिमानपि ॥ वलक्षः पिञ्जरो धन्यो गोमेद इति कीर्त्तितः। चतुर्धा जातिभेदस्तु गोमेदोऽपि प्रशस्यते ब्राह्मणः शुक्लवर्णः स्यात्क्षत्रियो रक्त उच्यते । आपीतो वैश्यजातिस्तु शूद्रस्तु नील उच्यते ॥ छाया चतुर्विधा श्वेतारक्तपीताऽसिता तथा । गुरुप्रवाढ्यः सितवर्णरूपः स्निग्धो मृदुर्वाति महापुराणः ॥ स्वच्छस्तु गोमेदमणिर्धृतोयं करोति लक्ष्मी धनधान्यवृद्धिम् । लघुर्विरूपोऽतिखरोऽन्यमानः स्नेहोपलिप्तो मलिनः खरोऽपि॥ करोति गोमेदमणिर्विनाशं सम्पत्तिभोगाबलवीर्य्यराशेः। ये दोषा हीरके ज्ञेयास्ते गोमेदमणावपि ॥ परीक्षा वह्नितः कार्य्या शाणे वा बहुको विदैः। स्फटिकेनैव कुर्व-

न्ति गोमेदप्रतिरूपिणम्॥शुद्धस्य गोमेदमणेस्तु मूल्य सुवर्णतो द्वैगुणयाहुरेके। अन्य तथा विद्रुमतुल्यमूल्यं तथापरे चा मरतुल्यमाहु-॥चतुर्विधानामेषां तु धारणं परिसम्मतम्।

(भोजराजकृतयुक्तिकल्पतरुः)

अर्थ-गोमादमणि-हिमालय और सिन्धुमे होतीहै। स्वच्छकान्तिवाली, भारी, चिकनी, अच्छेवर्णवाली, दीप्तिमान्, गोल और पिजरयुक्त ऐसी गोमेदमणि उत्तम होती है, जातिके भेदसे गोमेदमणि चार प्रकारकी है ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र तहां ब्राह्मण सफेद रंगकी, क्षत्रिय लाल रगकी, वैश्य पीले रगकी और शूद्र नीले रगकी होती है।इसी प्रकार चार तरहकी छाया होती है सफेद, लाल, पीली और काली।जो भारी, सफेदरगकी, चिकनी तथा अत्यन्त पुरानी और स्वच्छ हो ऐसी गोमेदमणिको धारण करनेसे लक्ष्मी और धनधान्यकी वृद्धि होती है । जो हलकी, विरूप, खरदरी, स्नेहसे लिपटी हुईसी और मलीन है उस गोमेदमणिको धारण करनेसे-सम्पत्ति, भोग, बल और वीर्य्यका नाश होताहै।जो दोष हीरेमे होते है वह दोष गोमेद मणिमेभी है। इसकी परीक्षा अग्नि और शानसे करनी चाहिये स्फटिक मणिकोभी गोमेदमणि बनालेते है। शुद्ध गोमेदमणिका मूल्य सुवर्णसे दूना है और कोई मूंगेकी बराबर कहते है। कोई अमररत्नकी समान कहते है। इसका चार प्रकारका धारण करना शुभ है ।

वैदूर्य्यं राष्ट्रकं केतुरत्न मेघखराङ्कुरम् ।

अर्थ-वैदूर्य्य, राष्ट्रक, केतुरत्न, मेघखरांकुर (बालवायज, बालसूर्य्य, बालसूर्यक, कैतव, प्रावृष्य, अभ्ररोह, शराब्दांकुर, वीदूररत्न, विदूरज, केतुग्रहवल्लभ)।

सस्कृतभाषामे	वैदूर्य्य ।
हिन्दीभाषामे	वैडूर्य्य, वैदूर्य, लहसुनिया ।
वंगभाषामे	वैदूर्य्य ।
मराठीभाषामे	वैडूर्य्यरत्न ।
गुजरातीभाषामें	माजरानी ऑख जेवुं लसणियो।
कर्णाटकीभाषामें	वडूर्य्य ।
तैलङ्गीभाषामे	वैडुर्य्य ।
इंग्रेजीभाषामे	केट्सआइ । Catseye

अस्य गुणाः ।

वैडूर्य्यमुष्णमम्लञ्च कफमारुतनाशनम् ।
गुल्मादिदोषशमनं भूषितञ्च शुभावहम् ॥ (रा॰ नि॰)

अर्थ-वैडूर्य-गरम, अम्ल, कल्याणकारक तथा कफ, वात और गुल्मादि दोषोंको दूर करे है । एवं इसको धारण करनेसे शुभ फलको देता है ।

अन्यच्च ।

वैडूर्य्यं रक्तपित्तघ्नं प्रज्ञायुर्बलवर्द्धनम् ।
पित्तप्रधानरोगघ्नं दीपनं गुल्मनाशनम् ॥

अर्थ-वैडूर्य्यमणि-रक्तपित्तनाशक, प्रज्ञा, आयु और बलवर्द्धक, पित्तप्रधानरोगनाशक, दीपन और गुल्मको दूर करहै ।

अपिच

वैडूर्य्यमुष्णमम्लं स्यादग्निदं च रसायनम् ।
शूलगुल्मोदरकफवातनाशकरं मतम् ॥
अन्ये गुणा हीरकवद्विज्ञेया विबुधैः किल ।

अर्थ-वैडूर्य्यमणि-गरम, अम्ल, अग्निप्रदीपक, रसायन तथा शूल, गुल्म, उदररोग, कफ और वातका नाश करे है और गुण हीरेकी समान जानने ।

उत्तमवैडूर्य्यलक्षणम् ।

वैडूर्य्यं श्यामशुभ्राभं समस्वच्छं गुरु स्फुटम् ।
भ्रमच्छुभ्रान्तरीयेण गर्भितं शुभमीरितम् ॥

अर्थ-जो वैडूर्य्यरत्न (लहसुनिया)-श्याम और शुभ्र तथा विमलकांतिवाला हो, समगोल, स्वच्छ, भारी, स्फुट, भीतरसे जिसमेंसे धवल और चन्द्रमाकी समान श्याम कांति हो ऐसा वैडूर्य्य उत्तम होता है ।

इति रत्नानि ।

अथोपरत्नानि ।



वैक्रान्तनामानि ।

वैक्रान्तश्चैव विक्रान्तं नीलवज्रं कुवज्रकम् ।
गोनासः क्षुद्रकुलिशं जीर्णवज्रश्च गोनसम् ॥

अर्थ-वैक्रान्त, विक्रान्त, नीलवज्र, कुवज्रक, गोनास, क्षुद्रकुलिश, जीर्णवज्र, गोनस।

वैक्रान्तगुणा।

वैक्रान्तस्तु त्रिदोषघ्नः षड्रसो देहदार्ढ्यकृत्।
पाण्डूदरज्वरश्वासकासक्षयप्रमेहनुत्॥

अर्थ-वैक्रान्तमणि-त्रिदोषनाशक, षड्रसान्वित, देहको दृढ करनेवाला तथा पाण्डुरोग, उदररोग, ज्वर, श्वास, खांसी, क्षय और प्रमेहको दूर करे है।

अन्यच्च।

वैक्रान्तो वज्रसदृशो देहलोहकरो मतः।
विषघ्नो रसराजश्च ज्वरकुष्ठक्षयप्रणुत्॥

अर्थ- वैक्रान्तमणिके गुण हीरेके समान है, देहको दृढ करनेवाली पारेके विषको हरनेवाली तथा ज्वर, कुष्ठ और क्षयरोगको दूर करेहै।

सूर्य्यकान्तनामानि।

दीप्तोपलः सूर्य्यकान्तो ज्वलनाश्माग्निगर्भकः।

अर्थ-दीप्तोपल, सूर्यकान्त, ज्वलनाश्मा, अग्निगर्भक (रविकान्त, अर्कोपल, तापन, तपनमणि, सूर्य्याश्मा, दहनोपम, सूर्यमणि)।

संस्कृतभाषामे	सूर्यकान्त।
हिन्दीभाषामे	आतिशीशीशा, सूर्यकान्त।
बंगभाषामे	आतसपाथर।
मराठीभाषामे	सूर्यकान्तमणि।
गुजरातीभाषामे	अगनचशमानो काच।
इंग्रेजीभाषामे	मेग्निफाइंग ग्लास। Magnifying glass

सूर्य्यकान्तगुणा।

सूर्य्यकान्तो भवेदुष्णो निर्मलश्च रसायनः।
वातश्लेष्महरो मेध्यः पूजनाद्रवितुष्टिदः॥ (र०नि०)

अर्थ-सूर्यकान्तमणि-गरम, निर्मल, रसायन, वात और कफनाशक, मेधाजनक और इसका पूजन करनेसे सूर्य संतुष्ट होताहै।

अन्यच्च।

सूर्य्यकान्तस्त्रिदोषघ्नो मेध्योष्णश्च रसायनः

कफवातहरः प्रोक्तः पूर्वैरायुर्विदैर्जनैः ॥ (रत्नाकर)

अर्थ-सूर्यकान्तमणि-त्रिदोषनाशक, मेधाजनक, रसायन, कफ और वातको दूर करेहै।

शुद्धःस्निग्धो निर्व्रणो निस्तुषस्तु यो निर्घृष्टो व्योमनैर्मल्यमेति। यःसूर्य्यांशुस्पर्शनिर्व्यूतवह्निर्जात्या सोयं चक्षते सूर्य्यकान्तः॥

अर्थ-जो चिकना, व्रणरहित, तुषरहित, घिसनेसे आकाशकी समान निर्मल होजाय और धूपमे रखनेसे जिसमे अग्नि बलउठे ऐसा सूर्य्यकान्त (आतिशीशीशा) उत्तम होताहै ।

चन्द्रकान्तनामानि।

चन्द्रकान्तः सोममणिः सिताश्मा प्रस्तरोपलः ।

अर्थ-चन्द्रकान्त, सोममणि, सिताश्मा, प्रस्तरोपल (चान्द्र, चन्द्रमणि, चन्द्रोपल, इन्दुकान्त, चन्द्राश्मा, स्रुवोपल, शीताश्मा, चन्द्रिकाद्राव, शशिकान्त)।

संस्कृतभाषामे	चंद्रकान्त ।
हिंदीभाषामे	चन्द्रकान्त ।
बंगभाषामे	चन्द्रकान्त
मराठीभाषामे	चन्द्रकान्तमणि ।
कर्णाटकीभाषामे	चन्द्रकान्त ।
तैलिंगीभाषामे	चन्द्रकान्तमु ।

चन्द्रकान्तमणिगुणाः ।

चन्द्रकान्तमणिः शीतः स्निग्धः स्वच्छः शिवप्रियः ।
अस्रदाहग्रहालक्ष्मीविनाशनो निरन्तरम् ॥

अर्थ-चन्द्रकान्तमणि-शीतल, स्निग्ध, स्वच्छ, शिवप्रिय तथा रुधिरविकार, दाह, ग्रह और अलक्ष्मीका नाश करेहै ।

चन्द्रकान्तोद्भवजलगुणाः ।

चन्द्रकान्तोद्भवं रूक्षं शीतं दाहविनाशनम् ।

अर्थ-चंद्रकान्तमणिका जल-रूखा, शीतल और दाहको दूरकरेहै।

चन्द्रकान्तस्य स्वरूपम् ।

पूर्णेन्दुकरसंस्पर्शादमृतं स्रवति क्षणात् ।

चन्द्रकान्तं तदाख्यातं दुर्लभं तत्कलौ युगे ॥ (यु० क०)

अर्थ-चन्द्रमाकी किरणोके स्पर्शसे जिसमे अमृत(जल) टपकताहै उसीको चन्द्रकान्तमणि कहतेहै यह कलियुगमें अत्यन्त दुर्लभ है।

स्फटिकनामानि।

शैवः शूकः श्वेतरत्नं स्फटिको निस्तुषोपलम्।

अर्थ-शैव,शूक,श्वेतरत्न,स्फटिक,निस्तुषोपल (स्फाटिक, स्फाटक, स्फटिकात्मा, स्फाटीक,स्फाटिकोपल, भासुर, स्फटिकोपल, शालिपिष्ट, धौतशिल, सितोपल, विमलमणि, निर्मलोपल, स्वच्छ,स्वच्छमणि, अमररत्न, निस्तुषरत्न, शिवप्रिय)।

स०	स्फटिक।	गु०	फाटकमणि।
हि०	स्फटिक,फटिकमणि।	क०	स्फाटिक।
बं०	फटिक्।	त०	स्फाटिक।
म०	स्फटीक।	इं०	क्रिष्टल।

स्फटिकगुणाः।

स्फटिकः समवीर्य्यः स्यात्पित्तदाहार्तिशोषनुत्।
तस्याक्षमालाजपतो धत्ते कोटिगुण फलम् ॥ (नि० र०)

अर्थ-स्फटिकमणि-समवीर्य्य तथा पित्त,दाहकी वेदना और शोषको दूर करे है इसकी मालाके जपनेसे कोटिगुण फल होता है।

पेरोजनामानि।

पेरोज हरिताश्मा च भस्माङ्ग हरित द्विधा।

अर्थ-पेरोज, हरिताश्म, भस्माङ्ग और हरित इन भेदोसे दो प्रकारका है।

संस्कृतभाषामे	पेरोज।
हिन्दीभाषामे	फिरोजा।
बंगभाषामे	उपरत्नविशेप।
मराठीभाषामें	पेरोज।
गुजरातीभाषामे	पीरोजो।
कर्णाटकीभाषामे	पेरोज।
इग्रेजीभाषामे	टरकोइज्ञ। Tirkois
लाटनभाषामे	टरचेसयिस टरचीना। Terche-ious Turchina

फारसीभाषामें फिरोजा ।
अरबीभाषामें फिरोजज ।

अस्य गुणाः ।

पेरोज सुकषायं स्यान्मधुरं दीपनं परम् ।
स्थावरं जङ्गमञ्चैव सयोगाच्च तथा विषम् ॥
तत्सर्वं नाशयेच्छीघ्र शूलं भूतादिदोषजम् ।

अर्थ-फिरोजा-कषैला, मधुर, दीपन और किसीके संयोगसे स्थावर तथा जंगम विषको दूर करे है और भूतादि दोषोंसे उत्पन्न हुए शूलका नाश करे है ।

काचनामानि ।

काच० कृत्रिमरत्नं च पिंगाणो मुकुरोपि च ।

अर्थ-काच, कृत्रिमरत्न, पिंगाण, मुकुर-

सं०	काच ।	इं०	ग्लास । Glass
हिं०	काँच कच्च ।	ले०	ग्लेसम् । Glesum
बं०	काच ।	फा०	आबुगीनां ।
म०	काच ।	अ०	जुजाज ।
गु०	काच ।		

अस्या गुणाः ।

काचा तु सारका लघ्वी व्रणनेत्रहितावहा ।
लेखनी शूलहृत्प्रोक्ता वैद्यशास्त्रविशारदैः ॥ (नि० र०)

अर्थ-काच-सारक, हलका, व्रण और नेत्रोंको हितकारी, लेखन और शूलनाशक है ।

दुग्धपाषाणनामानि ।

दुग्धपाषाणिका क्षीरी माधवी मेदसन्निभा ।

अर्थ-दुग्धपाषाणिका, क्षीरी, माधवी, मेदसन्निभा (दुग्धपाषाण, दुग्धपाषाणक, दुग्धाश्मा, गोमेदसन्निभ, वज्राभ, दीप्तिक, दुग्धी, क्षीरक्षव, सौंध)

सस्कृतभाषामें दुग्धपाषाण ।
हिंदीभाषामें शिरगोला ।

वंगभाषामे	शिरगोला।
मराठीभाषामे	शिरगोळा।
गुजरातीभाषामे	दुधियो पाणो।
कर्णाटकीभाषामे	रंगवालियहरेह्ल।

अस्य गुणाः।

दुग्धपाषाणको रुच्य ईषदुष्णो ज्वरापहः।
पित्तहृद्रोगशूलघ्नः कासाध्मानविनाशनः॥

अर्थ-दुग्धपाषाण-रुचिकारक, ईषदुष्ण, ज्वरनाशक तथा पित्त, हृदयरोग, शूल, खाँसी और आध्मानको दूर करे है।

इति श्रीशालिग्रामनिघण्टुभूषणे रत्नोपरत्नवर्गः समाप्तः॥ ८॥

अथ विषवर्गः।

विषनामानि।

काकोलो गरलः क्ष्वेडो विषं स्याद्दारदोपि च।
सौराष्ट्रिकः शौक्लकेयो ब्रह्मपुत्रः प्रदीपनः॥

अर्थ-काकोल, गरल, क्ष्वेड, विष, दारद, सौराष्ट्रिक, शौक्लकेय, ब्रह्मपुत्र, प्रदीपन (आहेय, अमृत, गरद, कालकूट, कसाकूल, हारिद्र, रक्तशृङ्गिक, नील, गर, घोर, हालाहल, हलाहल शृङ्गी, भुगर, जाङ्गल, तीक्ष्ण, रस, रसायन. जगुल, जागुल, वत्सनाभ, जीवनाघात, किषल, प्राणहर)

संस्कृतभाषामें	वत्सनाभ, अमृत।
हिन्दीभाषामे	वचनाग, मीठाविष।
वंगभाषामे	काटविष, अमृतविष।
मराठीभाषामे	वचनाग।
गुजरातीभाषामे	झिगाडियो, वछनाग।
कर्णाटकीभाषामे	वशनवी।
तैलिङ्गीभाषामे	नाभी।
इंग्रेजीभाषामे	एकोनाईट। AConite
लेटिनभाषामे	एकोनाइटफेरोक्स। Aconitumferox
फारसीभाषामे	जहर।
अरबीभाषामे	विष।

वत्सनाभविषगुणाः ।

वत्सनाभोतिमधुरः सोष्णो वातकफापहः ।
कण्ठरुक्सन्निपातघ्नः पित्तसन्तापकारकः ॥ (रा० नि०)

अर्थ-(वत्सनाभ मीठा)-अत्यन्त मधुर, गरम, वातकफनाशक तथा कण्ठरोग और सन्निपातको दूर करेहै पित्त और सन्तापको उत्पन्न करे है ।

अन्यच्च ।

विष प्राणहर प्रोक्त व्यवायि च विकाशि च ॥
आग्नेयं वातकफहृद्योगवाहि मदावहम् ॥

अर्थ-विष-प्राणनाशक, व्यवायी, विकाशी, आग्नेय, वातकफनाशक, योगवाही और मदकारक है ।

अपिच ।

रूक्षमुष्ण तथा तीक्ष्ण सूक्ष्ममाशु व्यवायि च। विकाशि विशदञ्चैव लघ्वपाकि च ते दश ॥ तद्रौक्ष्यात्कोपयेद्वायुमौष्ण्यात्पित्तं सशोणितम्।तैक्ष्ण्यान्मतिं मोहयति मर्म्मबन्धान्भिनत्ति च॥शरीरावयवान्सौक्ष्म्यात्प्रविशेद्धि करोति च । आशुत्वादाशुतत्प्रोक्त व्यवायात्प्रकृतिं हरेत् । विकाशित्वाद्दीपयति दोषान्धातुन्मलानपि । अतिरिच्यते वैशद्याद्दुश्चिकित्स्यञ्च लाघवात्॥दुर्जरं चाविपाकित्वात्तस्मात्क्लेशयते चिरम् ।

अर्थ-रूक्ष, उष्ण, तीक्ष्ण, सूक्ष्म, आशुव्यवायी, विकाशी, विशद, लघु और अपाकी यह दश गुण विषमे रहते हैं । तहाँ रूक्षगुणसे वायु प्रकुपित होतीहै । उष्णगुणसे पित्त और रक्त कुपित होते है । तीक्ष्णगुणसे मतिको मोहता और मर्मबन्धनको छिन्न करताहै । सूक्ष्मगुणसे सर्व शरीरके अवयवोमे हठसे प्रवेश करके क्रियाओंका प्रकाश करताहै । आशुगुणसे अत्यन्त शीघ्र अपने कार्योंको प्रकाशित करता है । व्यवायिगुणसे प्रकृतिको नष्ट करता है । विकाशिगुणसे शारीरक वातादि दोष, रसादि धातु और मूत्रादि मलके समूहको फैलाताहै । विशदगुणके द्वारा अत्यन्त दस्तोंको लाताहै, लघु गुणसे अतिशय दुश्चिकित्स्य जानना और अपाकि गुणसे दुर्जर तथा तज्जन्य बहुत कालपर्यन्त क्लेश होताहै ।

अन्यच्च ।

विषं रसायनं बल्यं वातश्लेष्मविकारनुत् । कटु तिक्तं कषायञ्च मदकारि सुखप्रदम् ॥ व्यवायि च शिरोद्दाहि कुष्ठवातास्रनाशनम् । अग्निमांद्यश्वासकासप्लीहोदरभगन्दरम् ॥ गुल्मपाण्डुव्रणार्शांसि नाशयेद्विधिसेवितम् ॥

अर्थ-विधिसेवित विष-रसायन, बलकारक तथा वात, श्लेष्म, कुष्ठ, वातरक्त, अग्निमांद्य, श्वास, खाँसी, प्लीहा, उदररोग, भगन्दर, गुल्म, पाण्डु और व्रणका नाश करे है तथा चरपरा, कडवा, कषेला, मदकारी, सुखकारी और व्यवायी है ।

अपिच ।

विषं व्रणहरं प्रोक्तं व्यवायि च विकाशि च । आग्नेयं वातकफहृद्योगवाहि मदावहम् ॥ तदेव युक्तियुक्तन्तु प्राणदायि रसायनम् । पथ्याशिनां त्रिदोषघ्नं बृंहणं वीर्य्यवर्द्धनम् ।

अर्थ-विष-व्यवायी, विकाशी, योगवाही, मादक है इसीको युक्तिपूर्वक सेवन करनेसे बलदायक, रसायन, पुष्टिकारक, वीर्य्यवर्द्धक तथा व्रण, कफ और त्रिदोषजनित रोग नष्ट होते है ।

विषस्य प्रकारभेदाः ।

वत्सनाभः स हारिद्रः सक्तुकश्च प्रदीपनः । सौराष्ट्रिकः शृङ्गकश्च कालकूटस्तथैव च ॥ हालाहलो ब्रह्मपुत्रो विषभेदा अमी नव ।

अर्थ-वत्सनाभ, हारिद्र, सक्तुक, प्रदीपन, सौराष्ट्रिक, शृङ्गक, कालकूट, हालाहल और ब्रह्मपुत्र इन भेदोसे विष नव प्रकारका है ।

१ अथ वत्सनाभस्य स्वरूपम् ।

सिन्धुवारसदृक्पत्रो वत्सनाभ्याकृतिस्तथा ।
यत्पार्श्वे न तरोर्वृद्धिर्वत्सनाभः स भाषितः ॥

अर्थ-संभालुके पत्तोंकी समान बछडेकी नाभिकी आकृतिवाला और जिसके निकट दूसरा वृक्ष नहीं जमे उसको वत्सनाभ विष कहते हैं ।

२ अथ हारिद्रस्य स्वरूपम् ।

हरिद्रातुल्यमूलो यो हारिद्रः स उदाहृतः ।

अर्थ-हलदीकी समान जिसका मूल हो उसको हारिद्र विष जानना

वत्सनाभविषगुणाः ।

वत्सनाभोतिमधुरः सोष्णो वातकफापहः ।
कण्ठरुक्सन्निपातघ्नः पित्तसन्तापकारकः ॥ (रा० नि०)

अर्थ-(वत्सनाभ मीठा)-अत्यन्त मधुर, गरम, वातकफनाशक तथा कण्ठरोग और सन्निपातको दूर करहे पित्त और सन्तापको उत्पन्न करे है ।

अन्यच्च ।

विषं प्राणहरं प्रोक्तं व्यवायि च विकाशि च ॥
आग्नेयं वातकफहृद्योगवाहि मदावहम् ॥

अर्थ-विष-प्राणनाशक, व्यवायी, विकाशी, आग्नेय, वातकफनाशक, योगवाही और मदकारक है ।

अपिच ।

रूक्षमुष्णं तथा तीक्ष्णं सूक्ष्ममाशु व्यवायि च। विकाशि विशदञ्चैव लघ्वपाकि च ते दश ॥ तद्रौक्ष्यात्कोपयेद्वायुमौष्ण्यात्पित्तं सशोणितम् ।तैक्ष्ण्यान्मतिं मोहयति मर्म्मबन्धान्भिनत्ति च॥शरीरावयवान्सौक्ष्म्यात्प्रविशेद्धि करोति च। आशुत्वादाशुवत्प्रोक्तं व्यवायात्प्रकृतिं हरेत् । विकाशित्वाद्दीपयति दोषान्धातून्मलानपि । अतिरिच्यते वैशद्याद्दुश्चिकित्स्यश्च लाघवात्॥दुर्जरं चाविपाकित्वात्तस्मात्क्लेशयते चिरम् ।

अर्थ-रूक्ष, उष्ण, तीक्ष्ण, सूक्ष्म, आशु,व्यवायी, विकाशी, विशद, लघु और अपाकी यह दश गुण विषमे रहते हैं । तहाँ रूक्षगुणसे वायु प्रकुपित होतीहै । उष्णगुणसे पित्त और रक्त कुपित होते है । तीक्ष्णगुणसे मतिको मोहता और मर्मबन्धनको छिन्न करताहै । सूक्ष्मगुणसे सर्व शरीरके अवयवोंमे हठसे प्रवेश करके क्रियाओंका प्रकाश करताहै । आशुगुणसे अत्यन्त शीघ्र अपने कार्योंको प्रकाशित करता हैं । व्यवायिगुणसे प्रकृतिको नष्ट करता है । विकाशिगुणसे शारीरक वातादि दोष, रसादि धातु और मूत्रादि मलके समूहको फैलाताहै । विशदगुणके द्वारा अत्यन्त दस्तोको लाताहै, लघु गुणसे अतिशय दुश्चिकित्स्य जानना और अपाकि गुणसे दुर्जर तथा तज्जन्य बहुत कालपर्यन्त क्लेश होताहै ।

अर्थ-दाखोके गुच्छोके समान फल और तालके वृक्षोकी समान वृक्ष होता है जिसके तेजसे समीपके वृक्ष जलजाते है उसको हालाहल विष जानना यह किष्किन्धापुर, हिमालय पर्वत, दक्षिण समुद्रके तटके देशोमे और कोकणदेशमे उत्पन्न होता है ।

९ अथ ब्रह्मपुत्रस्य स्वरूपम् ।

वर्णतः कपिलो यः स्यात्तथा भवति सारकः ।
ब्रह्मपुत्रः स विज्ञेयो जायते मलयाचले ॥

अर्थ-जिसका रङ्ग कपिलवर्ण और सारभी जिसका कपिलवर्ण होता है उसको ब्रह्मपुत्र जानना यह मलयाचल पर्वतमे उत्पन्न होता है ।

विषस्य वर्णभेदाः ।

ब्राह्मणः पाण्डुरस्तेषु क्षत्रियो लोहितप्रभः । वैश्यः पीतोऽसितः शूद्रो विष उक्तश्चतुर्विधः । रसायने विषं विप्र क्षत्रिय देहपुष्टये वैश्य कुष्ठविनाशाय शूद्र दद्याद्वधाय च ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-पाण्डु रङ्गका विष ब्राह्मण,लाल रंगका क्षत्रिय,पीले रंगका वैश्य और काले रंगका विष शूद्र होता है । रसायनमे ब्राह्मणविष, देहको पुष्टि करनेके लिये क्षत्रियविष,कुष्ठको दूर करनेके लिये वैश्य और मारणके लिये शूद्र जातिका विष देना चाहिये ।

अन्यच्च ।

स्थावर जगमश्चैव द्विविध विषमुच्यते ।
दशाधिष्ठानमाद्यन्तु द्वितीय षोडशाश्रयम् ॥

अर्थ-स्थावर और जगम इन भेदोसे विष दो प्रकारका है तहां स्थावर विष १० प्रकार और जंगम विष १६ प्रकारका जानना ।

स्थावरविषस्य दशप्रकारा यथा ।

मूलं पत्रं फल पुष्प त्वक्क्षीर सारमेव च ।
निर्य्यासो धातवः कन्दः स्थावरस्याश्रया दश ॥

अर्थ-स्थावरविष-वृक्षादिकके मूल, पत्र, फल, पुष्प, छाल, दूध, सार, गोंद, धातु और कन्द इन दश स्थानोमे रहता है । अमृतादिक विषको स्थावरविष कहते है ।

३ अथ सक्तुकस्य स्वरूपम्।

यद्ग्रन्थिः सक्तुकेनव पूर्णमध्यः स सक्तुकः।

अर्थ-जिसकी गांठ सक्तूकी सदश बीचमेसे भरी हुई हो उसको सक्तुक विष जानना।

४ अथ प्रदीपनस्य स्वरूपम्।

वर्णतो लोहितो यः स्याद्दीप्तिमान्दहनप्रभः।
महादाहकरः पूर्वैः कथितः स प्रदीपनः॥

अर्थ-जिसका वर्ण लाल अत्यन्त दीप्तिमान् और अग्निकी समान प्रभावाला हो उसको महादाह करनेवाला प्रदीपन विष जानना।

५ अथ सौराष्ट्रिकस्य स्वरूपम्।

सुराष्ट्रविषये यः स्यात्स सौराष्ट्रिक उच्यते।

अर्थ-जो सोरठ देशमे उत्पन्न होता है उसको सौराष्ट्रिक विष कहते है।

६ अथ शृङ्गिकस्य स्वरूपम्।

यस्मिन्गोशृङ्गके बद्धे दुग्धं भवति लोहितम्।
स शृङ्गिक इति प्रोक्तो द्रव्यतत्त्वविशारदैः॥

अर्थ-जिसको गायके सींगसे बांधनेसे गायका दूध लाल उतरने लगे उसको वैद्योने शृङ्गिक (सिंगियाविष) कहा है।

७ अथ कालकूटस्य स्वरूपम्।

देवासुररणे देवैर्हतस्य पृथुमालिनः। दैत्यस्य रुधिराज्जातस्तरुरश्वत्थसन्निभः॥ निर्य्यासः कालकूटोऽस्य मुनिभिः परिकीर्तितः। सोहिच्छत्रे शृङ्गवेरे कोङ्कणे मलये भवेत्॥

अर्थ-देव असुरोके संग्राममे देवोने जब पृथुमालि दैत्यको मारा। तब उस दैत्यके रुधिरसे पीपलकी समान वृक्ष उत्पन्न हुआ इस वृक्षके गोंदको मुनि कालकूट विष कहते हैं यह अहिच्छत्र, शृङ्गवेर, कोकण और मलबारमे उत्पन्न होता है।

८ अथ हालाहलस्य स्वरूपम्।

गोस्तनाभफलो गुच्छस्तालपत्रच्छदस्तथा। तेजसा यस्य दह्यन्ते समीपस्था द्रुमादयः॥ असौ हालाहलो ज्ञेयः किष्किन्धायां हिमालये दाक्षिणाब्धितटे देशे कोङ्कणेपि च जायते॥

अर्थ-दाखोके गुच्छोके समान फल और तालके वृक्षोकी समान वृक्ष होता है जिसके तेजसे समीपके वृक्ष जलजाते है उसको हाला हल विष जानना यह किष्किन्धापुर, हिमालय पर्वत, दक्षिण समुद्रके तटके देशोमे और कोकणदेशमे उत्पन्न होता है।

९ अथ ब्रह्मपुत्रस्य स्वरूपम्।

वर्णतः कपिलो यः स्यात्तथा भवति सारकः ।
ब्रह्मपुत्रः स विज्ञेयो जायते मलयाचले ॥

अर्थ-जिसका रङ्ग कपिलवर्ण और सारभी जिसका कपिलवर्ण होता है उसको ब्रह्मपुत्र जानना यह मलयाचल पर्वतमे उत्पन्न होता है।

विषस्य वर्णभेदा'।

ब्राह्मणः पाण्डुरस्तेषु क्षत्रियो लोहितप्रभः । वैश्यः पीतोऽसितः शूद्रो विष उक्तश्चतुर्विधः। रसायने विषं विप्र क्षत्रिय देहपुष्टये वैश्य कुष्ठविनाशाय शूद्रं दद्याद्वधाय च ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-पाण्डु रङ्गका विष ब्राह्मण,लाल रंगका क्षत्रिय,पीले रंगका वैश्य और काले रंगका विष शूद्र होता है। रसायनमे ब्राह्मणविष, देहको पुष्टि करनेके लिये क्षत्रियविष,कुष्ठको दूर करनेके लिये वैश्य और मारणके लिये शूद्र जातिका विष देना चाहिये।

अन्यच्च ।

स्थावरं जगमश्चैव द्विविधं विषमुच्यते ।
दशाधिष्ठानमाद्यन्तु द्वितीय षोडशाश्रयम् ॥

अर्थ-स्थावर और जगम इन भेदोसे विष दो प्रकारका है तहां स्थावर विष १० प्रकार और जंगम विष १६ प्रकारका जानना।

स्थावरविषस्य दशप्रकारा यथा।

मूलं पत्रं फलं पुष्पं त्वक्क्षीर सारमेव च ।
निर्य्यासो धातवः कन्दः स्थावरस्याश्रया दश ॥

अर्थ-स्थावरविष-वृक्षादिकके मूल, पत्र, फल, पुष्प, छाल, दूध, सार, गोंद, धातु और कन्द इन दश स्थानोमे रहता है। अमृतादिक विषको स्थावरविष कहते है।

स्थावरविषस्य भक्षणदोषा ।

स्थावरं तु ज्वरं हिक्कां दन्तहर्षं गलग्रहम् ।
फेनवम्यरुचिश्वासमूर्च्छांश्च जनयेद्विषम् ॥

अर्थ-स्थावरविष-ज्वर, हिचकी, दन्तहर्ष, गलवेदना, मुखमें झागोका आना, वमन, अरुचि, श्वास और मूर्च्छाको उत्पन्न करता है।

जङ्गमविषस्य स्वरूपम् ।

सर्प्पाः कीटोन्दुगलूता वृश्चिका गलगोधिकाः । जलौका मत्स्यमण्डूकाः शलभाः सकृकण्टकाः ॥ श्वसिंहव्याघ्रगोमायुतरक्षुनकुलादयः।दंष्ट्रिणोऽमी विष तेषां दंष्ट्रोत्थ जंगम मतम्॥

अर्थ-साँप, कीट, उन्दुर (मूसा), लूता (मकडी), वृश्चिक (विच्छू), गलगोधिका, जलौका (जोंक), मत्स्य (मछली), मण्डूक (मेडक), शलभ (पतंग), कृकलास, कुक्कुर, सिंह, व्याघ्र, शृगाल, तेन्दुआ और नौला इन सब जन्तुओंके दाँतोंके विषको जंगम विष कहते हैं।

जङ्गमविषस्य षोडशप्रकारा ।

दृष्टिर्निश्वासो दंष्ट्राश्च नखमूत्रमलानि च ॥
शुक्र लालामुखं स्पर्श सदंश स्रावमर्दितम् ॥
गुदास्थिपित्तशूकानि दशषड् जंगमाश्रयाः ।

अर्थ-जंगमविष-सर्पादिक विषैली जन्तुओंकी दृष्टि, निश्वास, दन्त, नख, मूत्र, मल, शुक्र, लार, मुख, स्पर्श, दांत, स्राव, गुदेदेश, अस्थि, पित्त और शूक इन १६ स्थानोंमें होता है।

जङ्गमविषस्य भक्षणदोषा ।

निद्रां तन्द्रां क्लम दाह सपाक लोमहर्षणम् ।
शोकश्चैवातिसारश्च जनयेज्जंगमं विषम् ॥

अर्थ-जंगमविष-निद्रा, तन्द्रा, क्लान्ति, दाह, पाक, लोमहर्षण, शोक और अतिसारको उत्पन्न करता है।

शोधितविषगुणा ।

ये दुर्गुणा विषेऽशुद्धे ते स्युर्हीना विशोधनात् ।
तस्माद्विषं प्रयोगेषु शोधयित्वा प्रयोजयेत् ॥

अर्थ-जो दुर्गुण अर्थात् दोष अशुद्ध विषयमे है वे दोष शोधित विषमे नहीं है इस कारण विषको शोधनपूर्वक औषधिमे लेना चाहिये।

अथ विषसेवनप्रकार।

नानारसौषधैर्यें तु दुष्टा यांतीह नो गदाः। ते नश्यन्ति विषे दत्ते शीघ्रं वातकफोद्भवाः॥ शरद्ग्रीष्मवसन्तेषु वर्षासु च प्रदापयेत्। चातुर्मास्ये हरेद्रोगान्कुष्ठलूतादिकानपि। दातव्यं सर्वरोगेषु घृताशिनि हिताशिनि॥ क्षीराशिनि प्रयोक्तव्य रसायनरते नरः। ब्रह्मचर्य्यविधानं हि विषकल्पे समाचरेत्॥ पथ्ये स्वस्थमना भूत्वा तदा सिद्धिर्न संशयः। आचार्येण तु भोक्तव्यं शिष्यप्रत्ययकारकम्॥ विषे शुद्धिर्हि तदपि मात्रया नान्यथा भवेत। सर्वरोगप्रशमनं दृष्टिपुष्टिकर विषम्।

अर्थ-वातकफोद्भवरोग नानाप्रकारकी औषधियोको सेवन करनेसे नहीं दूर होते वे रोग विषके सेवन करनेसे दूर होजाते है सर्व ऋतुओंमे विष मात्राके प्रमाण विधिपूर्वक देना चाहिये। चार महीनेमे विष, कुष्ठ और लूतादि रोगोको दूर करता है और यह सर्वरोगोंमे देना चाहिये। रसायनमे रत ऐसे मनुष्योको दूध, घी और हितकारक अन्नका सेवन करना और ब्रह्मचर्यको धारण कर अनन्तर विषका सेवन करे इस प्रकार करनेसे रोगोका नाश होता है। शिष्य और रोगीके निश्चयके लिये प्रथम विषवैद्यको भक्षण करना चाहिये। शोधित विष मात्राके अनुसार सर्वरोगोमे देना हितकारक है। विष दृष्टिको स्वच्छ करनेवाला और शरीरकी पुष्टि करनेवाला है।

विषमात्राप्रमाणम्।

एकाष्टक भवेद्यावदभ्यस्त तिलमात्रया।
सर्वरोगहर नृणां जायते शोधित विषम्॥

अर्थ-शोधित विष प्रथम आठ दिनपर्यन्त तिलप्रमाण देना तदनन्तर एक तिल बढावे इस प्रकार करनेसे सर्व प्रकारकी व्याधियोका नाश होता है।

अन्यच्च।

प्रथमे सार्षपीमात्रा द्वितीये सार्षद्वयम्।तृतीये च चतुर्थे च पञ्चमे दिवसे तथा॥षष्ठे च सप्तमे चैव क्रमवृद्ध्या विवर्द्धयेत्।

सप्तसर्षपमात्रेण प्रथम सप्तकं नयेत् ॥ एवं मात्रा विषं देय तृतीये सप्तके क्रमात् । वृद्ध्या हन्यात्प्रदातव्यं चतुर्थे सप्तके तथा ॥ एवं सप्त समायाते परा मात्रां भिषग्वरैः । स्थिरीकुर्य्याद्यथेच्छन्तु ततस्त्यागन्तु कारयेत् । सेवनक्रमहान्या तु विषकल्पस्तु ईरितः । एव मात्रासेवन स्याद्गुञ्जामात्रं तु कुष्ठवान्॥एवमेवाष्टपर्यन्तं परा मात्राधिका मता॥ विधिना मात्रया काले भवेत्पथ्याशिना नृणाम् ।

अर्थ-विष-पहिले दिन एक सरसोकी बराबर, दूसरे दिन दो सरसोकी समान, तीसरे दिन तीन सरसोकी समान अर्थात् सात दिनपर्य्यन्त एक २ सरसो रोज २ बढाता जाय और दूसरे सप्ताहमे भी सात सरसो प्रमाण देता रहे, तीसरे सप्ताहमे फिर क्रमसे एक एक सरसो अधिक बढा दे इस प्रकार तीसरे सप्ताहमे क्रमसे विषकी मात्रा देनी चाहिये। चौथे सप्ताहमे क्रमसे वृद्धि कर देनी चाहिये। इसप्रकार सात सप्ताह बीतने पर श्रेष्ठ वैद्योने विषकी परम मात्रा कही है यथेच्छ स्थिरकरके फिर इसका त्याग कर दे क्रमसे कमती करे।यह विषकल्पके सेवन करनेकी विधि है।इसप्रकार कुष्ठवाला एक गुंजा प्रमाण खाय आठ गुंजापर्य्यन्त इसकी परम मात्रा है । विधिपूर्वक मात्रा सेवन करता हुआ पथ्यसे रहे ।

विषसेवनमें पथ्यपदार्थ ।

घृतं क्षीरं सिता क्षौद्रं गोधूमांस्तण्डुलांस्तथा । मरीचं सैन्धवं द्राक्षां मधुर पानक हिमम् ॥ ब्रह्मचर्य्यं हिम देश हिम कालं हिम जलम् । विषस्य सेवको मर्त्यो भजेदतिविचक्षणः ॥

अर्थ-विष सेवन करनेवाले मनुष्यको घी, दूध, मधु, गेहूँ, चावल कालीमिरच, सेंधानमक, दाख मधुर और शीतल, पानक, ब्रह्मचर्य्य, शीतलदेश, शीतकाल और जल सेवन करना चाहिये।

मात्राधिकभक्षणस्य परीक्षा।

मात्राधिक यदा मर्त्यः प्रमादाद्भक्षयेद्विषम्॥ अष्टौ वेगास्तदा तेन जायते तस्य देहिनः॥रोमाञ्च प्रथमे वेगे द्वितीये वेपथुर्भवेत्।वेगे तृतीये दाहः स्याच्चतुर्थे पतनं भवेत्।फेनस्तु पचमे

वेगे षष्ठे वैकल्यमेव चाजडता सप्तमे वेगे मरणं चाष्टमे भवेत्॥ विषवेगानिति ज्ञात्वा मन्त्रतन्त्रैर्विनाशयेत् । यावन्नाष्टमवेगन्तु संप्राप्नोति हि मानवः ॥

अर्थ-जिस समय जो मनुष्य प्रमादके वश होकर मात्रासे अधिक विषको भक्षण करलेताहै उस मनुष्यके उसीसमय आठ वेग उत्पन्न होतेहै तहा प्रथम वेगमे रोमाञ्च और दूसरेमे कम्प, तीसरे वेगमे दाह, चौथे वेगमे शरीरका गिरना, पाचवे वेगमे मुखमे झागोंका अजाना,छठे वेगमे विकलता,सातवे वेगमे जडता और आठवे वेगमे मरण होताहै । इसप्रकार विषके वेगोको जानकर जबतक आठवॉ वेग न आवे तवतक मन्त्र और तन्त्रासे नाश करे ।

विषको उतारना ।

अतिमात्रं यदा भुक्तं वमनं तस्य कारयेत्।दद्यात्तावदजादुग्धं यावच्छान्तिर्न जायते ॥ अजादुग्धं यदा कोष्ठे स्थिरीभवति देहिनः। विषवेगं ततो जीर्णं जानीयात्कुशलो भिषक् ॥

अर्थ-जो कोई मात्रासे अधिक विषको खाले उसको वमन करावे जबतक वमन न हो तवतक वकरीका दूध पिलादे जिस समय बकरीका दूध कोठेमे स्थिर होजाय उसी समय विषका वेग उतर जायगा.

अन्यच्च ।

विषं हन्याद्रसः पीतो रजनीमेघनादयोः ।
सर्पाक्षिटंकणं वापि घृतेन विषहृत्परम् ॥

अर्थ-हलदी और चौलाई तथा सर्पाक्षि अथवा सुहागा और घी देनेसे विषका नाश होता है ।

अन्यच्च ।

पुत्रजीवकमज्जा वा पीता निम्बकवारिणा ।
विषवेगं निहन्त्येव वृष्टिर्दावानलं यथा ॥

अर्थ-जियापोता वृक्षकी मज्जाको नीबूके रसमे उबालकर पीनेसे विषवेगका नाश होता है जैसे वृष्टिमे दावानलका नाशहोता है ।

अतिमात्रं यदा भुक्तं तदाज्यं टंकणं पिबेत् ।

सप्तसर्षपमात्रेण प्रथमं सप्तकं नयेत् ॥ एवं मात्रा विषं देय तृतीये सप्तके क्रमात् । वृद्ध्या हन्यात्प्रदातव्यं चतुर्थे सप्तके तथा ॥ एवं सप्त समायाते परा मात्रा भिषग्वरैः । स्थिरीकुर्य्याद्यथेच्छन्तु ततस्त्यागन्तु कारयेत् । सेवनक्रमहान्या तु विषकल्पस्तु ईरितः । एव मात्रासेवन स्याद्गुञ्जामात्रं तु कुष्ठवान्॥एवमेवाष्टपर्यन्त परा मात्राधिका मता॥ विधिना मात्रया काले भवेत्पथ्याशिना नृणाम् ।

अर्थ-विष-पहिले दिन एक सरसोंकी बराबर, दूसरे दिन दो सरसोंकी समान, तीसरे दिन तीन सरसोंकी समान अर्थात् सात दिनपर्यन्त एक २ सरसो रोज २ बढाता जाय और दूसरे सप्ताहमे भी सात सरसों प्रमाण देता रहै, तीसरे सप्ताहमे फिर क्रमसे एक एक सरसो अधिक बढा दे इस प्रकार तीसरे सप्ताहमे क्रमसे विषकी मात्रा देनी चाहिये। चौथे सप्ताहमे क्रमसे वृद्धि कर देनी चाहिये। इसप्रकार सात सप्ताह बीतने पर श्रेष्ठ वैद्योंने विषकी परम मात्रा कही है यथेच्छ स्थिरकरके फिर इसका त्याग कर दे क्रमसे कमती करे।यह विषकल्पके सेवन करनेकी विधि है।इसप्रकार कुष्ठवाला एक गुंजा प्रमाण खाय आठ गुंजापर्य्यन्त इसकी परम मात्रा है। विधिपूर्वक मात्रा सेवन करता हुआ पथ्यसे रहै।

विषसेवनमें पथ्यपदार्थ ।

घृत क्षीर सिता क्षौद्र गोधूमांस्तण्डुलांस्तथा । मरीचं सैन्धवं द्राक्षा मधुर पानक हिमम् ॥ ब्रह्मचर्य्यं हिम देशं हिम कालं हिम जलम् । विषस्य सेवको मर्त्यो भजेदतिविचक्षणः ॥

अर्थ-विष सेवन करनेवाले मनुष्यको घी, दूध, मधु, गेहूँ, चावल कालीमिरच, सेंधानमक, दाख मधुर और शीतल, पानक, ब्रह्मचर्य्य, शीतलदेश, शीतकाल और जल सेवन करना चाहिये।

मात्राधिकभक्षणस्य परीक्षा।

मात्राधिक यदा मर्त्यः प्रमादाद्भक्षयेद्विषम्॥ अष्टौ वेगास्तदा तेन जायते तस्य देहिन ॥रोमाञ्चः प्रथमे वेगे द्वितीये वेपथुर्भवेत्।वेगे तृतीये दाहः स्याच्चतुर्थे पतनं भवेत्।फेनस्तु पचमे

वेगे षष्ठे वैकल्यमेव चा जडता सप्तमे वेगे मरणं चाष्टमे भवेत्॥ विषवेगानिति ज्ञात्वा मत्रंतंत्रैर्विनाशयेत् । यावन्नाष्टमवेगन्तु संप्राप्नोति हि मानवः ॥

अर्थ-जिस समय जो मनुष्य प्रमादके वश होकर मात्रासे अधिक विषको भक्षण करलेताहै उस मनुष्यके उसीसमय आठ वेग उत्पन्न होतेहैं तहा प्रथम वेगमे रोमाञ्च और दूसरेमे कम्प, तीसरे वेगमे दाह, चौथे वेगमे शरीरका गिरना, पांचवे वेगमे मुखमे झागोंका अजाना,छठे वेगमे विकलता,सातवे वेगमे जडता और आठवे वेगमे मरण होताहै । इसप्रकार विषके वेगोको जानकर जबतक आठवाँ वेग न आवे तबतक मत्र और तत्रासे नाश करे ।

विषको उतारना ।

अतिमात्रं यदा भुक्तं वमनं तस्य कारयेत्। दद्यात्तावदजादुग्धं यावद्भ्रान्तिर्न जायते ॥ अजादुग्धं यदा कोष्ठे स्थिरीभवति देहिनः । विषवेगं ततो जीर्णं जानीयात्कुशलो भिषक् ॥

अर्थ-जो कोई मात्रासे अधिक विषको खाले उसको वमन करावे जबतक वमन न हो तबतक बकरीका दूध पिलादे जिस समय बकरीका दूध कोठेमे स्थिर होजाय उसी समय विषका वेग उतर जायगा.

अन्यच्च ।

विष हन्याद्रसः पीतो रजनीमेघनादयोः ।
सर्पाक्षिटंकणं वापि घृतेन विषहृत्परम् ॥

अर्थ-हलदी और चौलाई तथा सर्पाक्षि अथवा सुहागा और घी देनेसे विषका नाश होता है ।

अन्यच्च ।

पुत्रजीवकमज्जा वा पीता निम्बकवारिणा ।
विषवेगं निहन्त्येव वृष्टिर्दावानलं यथा ॥

अर्थ-जियापोता वृक्षकी मज्जाको नीबूके रसमे उबालकर पीनेसे विषवेगका नाश होता है जैसे वृष्टिमे दावानलका नाशहोता है ।

अतिमात्रं यदा भुक्तं तदाज्यं टंकणं पिबेत् ।

विषं स वेगतो नाशमाशु प्राप्नोति निश्चितम् ॥

अर्थ-जिस समय जो कोई मनुष्य मात्रासे अधिक विषको भक्षण करे उस मनुष्यको उसी समय सुहागा और घी मिलाकर पिलानेसे वर्त्तमान विषके वेगका शीघ्रही नाश हो जायगा।

आखुपाषाणनामानि।

शतमल्ले तु मल्लः स्याद्गौरीपाषाणकस्तथा।
आखुपाषाणकश्चैव लोहशंकरकारकः ॥

अर्थ-शतमल्ल, मल्ल, गौरीपाषाण, आखुपाषाण, लोहशंकरकारक।

संस्कृतभाषामें	आखुपाषाण।
हिन्दीभाषामें	शोमलखार, शंखिया।
मराठीभाषामें	सोमल, शंखिया।
गुजरातीभाषामें	शोमल, शोमलखार, शंखियो।
इंग्रेजीभाषामें	ऑक्सेड ऑफ आर्सेनिक Oxide of Arsenic
लैटिन्भाषामें	ऑक्सेडं आर्सेनिकम्। Oxidum Arsenicum
फारसीभाषामें	मिर्गवमूष।
अरबीभाषामें	सुंबुल (खा) र।

अस्य गुणाः।

खनिज विषमाख्यातं दाहवांतिविरेककृत्।
मात्राधिकं यदा खादेत्तदा मृत्युमवाप्नुयात् ॥

अर्थ-खनिजविष-दाह, वमन और विरेचनको करनेवाला है मात्रासे अधिक खानेसे मृत्युको देवे है।

आखुपाषाणकः स्निग्धः पारदस्य नियामकः। लोहभेदकरश्चैव वीर्य्यकृत्कांतिवर्द्धनः ॥ त्रिदोषसर्वव्याधीनां नाशकः परिकीर्त्तितः। अशुद्धः स तु विज्ञेयः सप्तधातुविनाशकृत् ॥ दाहं चित्तभ्रमं चैव लालास्रावं तथा मृतम्। अनेकवेदनाश्चैव बहुव्याधिं तृषां तथा॥ करोत्यतो मूर्खहस्ते न दातव्यः कदाचन। तत्समीपे नैव वाच्यः प्राणघातकरो ह्यसौ ॥

अर्थ-शंखिया-स्निग्ध, पारेको बांधनेवाला, लोहभेदक, वीर्य्यवर्द्धक

कान्तिवर्द्धक तथा त्रिदोष और सर्वव्याधिनाशक है । अशुद्धशंखिया-सप्तधा तुनाशक तथा दाह, चित्तभ्रम, लालास्राव, मृति, अनेक प्रकारकी पीडा, बहुव्याधि और तृषाको उत्पन्न करे है यह मूर्खके हाथमे कभीभी नहीं देना और न कहना तथा उसके समीपभी न रखना क्योकि यह प्राणनाशक ह ।

अथ उपविषनामानि ।

अर्कक्षीरं स्नुहीक्षीर तथैव कलहारिका ।
करवीरोऽथ धुस्तूरः पञ्च चोपविषाः स्मृताः॥(अमरकोश)

अर्थ-आकका दूध, सेहुंडका दूध, कलिहारी, कनेर और धतूरा यह पांच उपविष है ।

अन्यच्च ।

अर्कक्षीरं स्नुहीक्षीर लाङ्गली करवीरकः ।
गुञ्जाहिफेनो धुस्तूरः सप्तोपविषजातयः ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-आकका दूध, सेहुण्डका दूध, कलिहारी, कनेर, घुघुची, अफीम और धतूरा यह सात उपविषकी जाति है ।

अपिच ।

स्नुह्यर्कलाङ्गलीगुञ्जाहयारिविषमुष्टिकः ।
जैपालोन्मत्ताहिफेनं नवोपविषजातयः ॥

अर्थ-सेहुण्ड,आक,कालिहारी,घुघुची,कनेर,कुचिला, जमालगोटा, धतूरा और अफीम यह ९ उपविषकी जाति है ।

इति श्रीशालिग्रामवैश्यविरचिते शालिग्रामनिघण्टुभूषणे विषोपविषवर्गः समाप्त ॥ ९ ॥

अथ धान्यवर्गः ।

धान्यनामानि।

धान्यं भोग्य च भोगार्हमन्नाद्यं जीवसाधनम् ।

अर्थ-धान्य, भोग्य, भोगार्ह,-अन्न, आद्य, जीवसाधन (स्तम्बकरि, व्रीहि)

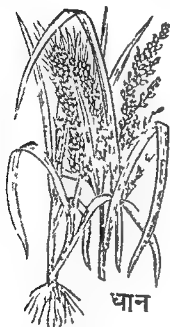
धान्यभेदा ।

शालिधान्यं व्रीहिधान्य शूकधान्यं तृतीयकम् । शिम्बीधान्यं क्षुद्रधान्यमित्युक्तं धान्यपचकम्॥शालयो रक्तशाल्याद्या

व्रीहयः षष्टिकादयः । यवादिकं शूकधान्यं मुद्गाद्य शिम्बिधान्यकम् ॥ कंग्वादिकं क्षुद्रधान्यं तृणधान्यं च तत्स्मृतम् ॥

अर्थ-शालिधान्य, व्रीहिधान्य, शूकधान्य, शिम्बीधान्य और क्षुद्रधान्य इन भेदोसे धान्य पांच प्रकारके कहे है । तहा रक्तशालि आदि शालिधान्य, साठीआदि व्रीहिधान्य, जौको आदिले शूकधा-न्य, मूंगको आदिले शिम्बी धान्य और कंगुनीको आदिले धान्योको क्षुद्रधान्य कहते है और क्षुद्रधान्यको तृणधान्यभी कहते है।

शालिधान्यनामानि ।







रक्तशालिः सकलम पाण्डुक· शकुनाहृतः । सुगन्धक कर्दमको महाशालिश्च दूपक· ॥ पुष्पाण्डकः पुण्डरीकस्तथा महिषमस्तक । दीर्घशूकः काञ्चनको हायनो लोध्रपुष्पकः । इत्याद्या शालय सन्ति बहवो बहुदेशजा । ग्रन्थविस्तारभीतेस्ते समस्ता नात्र भाषिताः ॥

अर्थ-रक्तशालि, कलम, पाण्डुक, शकुनाहृत, सुगन्धक, कर्दमक, महाशालि, तूपां पुष्पाण्डक, पुण्डरीक, महिषमस्तक, दीर्घशूक, काञ्चनक ...पेनेव । इत्यादि अनेक प्रकारके शालिधान्य अनेक देशोमे ...लिया- । सब ग्रन्थ बढनेके भयसे यहा नही कहे ।

संस्कृतभाषामे	शालि, तण्डुल ।
हिन्दीभाषामे	धान, शालिधान, चावल ।
वंगभाषामे	शालिधान्य, चाउल ।
मराठीभाषामे	साळी, भात ।
गुजरातीभाषामे	शाल्य, चाखा ।
कर्णाटकीभाषामे	नेलु ।
तैलिंगीभाषामे	धान्यमु, बीयमु ।
इंग्रेजीभाषामे	राइस । Rice
लैटिन्भाषामें	ओरिझासेटाईवा । Oryza sativa
फारसीभाषामे	बिरंज ।
अरबीभाषामे	उरज ।

शालिधान्यलक्षणम् ।

कण्डनेन विना शुक्का हैमन्ताः शालयः स्मृताः

अर्थ–जो विना छरे फटके सफेद हो उनको शालिधान कहते है और शालिधान हेमन्तऋतुमे होते है इस कारण इनका हैमन्तिक नामभी है ।

शालिधान्यगुणा ।

शालयो मधुराः स्निग्धा बल्या बद्धाल्पवर्चसः ।
कषाया लघवो रुच्याः स्वर्य्या वृष्याश्च बृंहणाः ॥
अल्पानिलकफाः शीताः पित्तघ्ना मूत्रलास्तथा ।

अर्थ–शालिधान–मधुर, स्निग्ध,बलकारक,अल्पप्रमाणमलरोधक, कषेले, हलके, रुचिकारक, स्वरको शुद्ध करनेवाले, वीर्यवर्द्धक, पुष्टिजनक,कुछेक वातकफको कुपित करनेवाले,शीतल,पित्तनाशक और मूत्रजनक है ।

अपिच ।

शालयो दग्धभूजाताः कषाया लघुपाकिनः । सृष्टमूत्रपुरीषाश्च रूक्षाः श्लेष्मापकर्षणाः ॥ कैदारा वातपित्तघ्ना गुरवःकफशुक्रलाः।कषायाः स्वल्पवर्चस्का मधुराश्च बलावहाः ॥स्थलजाः स्वादवः पित्तकफघ्ना वातपित्तदाः। किञ्चित्तिक्ताः कषायाश्च विपाके कटुका अपि।वापिता मधुरा वृष्या बल्याः पित्तप्रणाशनाः॥श्लेष्मलाश्चाल्पवर्चस्काः कषाया गुरवो हिमाः ।

वापितेभ्यो गुणैः किञ्चिद्धीनाः प्रोक्ता अवापिताः ॥रोपिता स्तु नवा वृष्याः पुराणा लघवः स्मृताः।तेभ्यस्तु रोपिता भूयः शीघ्रपाका गुणाधिकाः ॥छिन्नरूढा हिमा रूक्षा बल्याः पित्त-कफापहाः । बद्धविट्काः कषायाश्च लघवश्चाल्पतिक्तकाः ॥

अर्थ-जलीहुई पृथ्वीमे उत्पन्न हुये शालिधान-कषेले, लघुपाकी, मल और मूत्रको करनेवाले, रूखे और कफको शोखनेवाले हैं। खेतमे उत्पन्न हुये शालिधान-वातपित्तनाशक, भारी, कफकारी, शुक्रजनक, कषेले, अल्पमलवर्द्धक, मधुर और बलवर्द्धक हैं। स्थलमे उत्पन्न हुये शालिधान-स्वादिष्ठ, पित्तकफनाशक, वातपित्तवर्द्धक, किञ्चित्कडवे,कषेले और पाकमे कटु हैं। वापितधान्य-मधुर, वीर्य्य-वर्द्धक,बलकारक,पित्तनाशक,कफकारक,अल्पमलवर्द्धक,कषेले,भारी और शीतल हैं। अवापितधान्य वापितधान्यसे किञ्चित् हीन गुण वाले हैं। रोपितनवीनधान्य-वीर्य्यवर्द्धक हैं और वही पुराने होने पर हलके होजाते हैं। और २ धानोकी अपेक्षा रोपितधान्य अधिकगुणवाले और शीघ्रपाकी हैं। छिन्नरूढशालिधान्य-शीतल, रूखे, बलकारक, पित्तनाशक, मलरोधक, कषेले, हलके और किञ्चित् कडवेहैं।

रक्तशालिगुणाः।

रक्तशालिर्वरस्तेषु बल्यो वर्ण्यस्त्रिदोषजित्। चक्षुष्यो मूत्रलः स्वर्य्यः शुक्रलस्तृड्ज्वरापहः ॥ विषव्रणश्वासकासदाहनुद्व-ह्निपुष्टिदः।तस्मादल्पान्तरगुणाः शालयो महदादयः(भा प्र)

अर्थ-लालशालिधान्य (दाऊदखानि चावल)-सब धान्योमे उत्तम हैं, बलवर्द्धक, शरीरके रंगको उज्ज्वल करनेवाले, त्रिदोषनाशक,नेत्रोको हितकारी,मूत्रजनक,स्वरको श्रेष्ठ करनेवाले,शुक्रजनक, तृषानिवारक, ज्वरहारक, विषविनाशक, व्रणनाशक, श्वासको दूर करनेवाले, खाँसीको हरनेवाले, दाहको दूर करनेवाले और पुष्टिको देनेवाले हैं।महाशालि आदिके गुण रक्तशालिधानकी अपेक्षा कमहैं।

महाशालिधान्यगुणाः।

राजान्नशालिका स्निग्धा मधुरा चाग्निदीपनी ।
बलकान्तिधातुपथ्यकारका च त्रिदोषहा ॥
लघ्वी गुणैरभ्यधिका ज्ञेया चैवोत्तरोत्तरम् ।
श्वेता रक्तास्तथा कृष्णा ज्ञेयाश्च गुणदर्शिभिः॥ (रत्नाकरे)

अर्थ-राजशालि (हंसराज, बाँसमती इत्यादि)-स्निग्ध, मधुर, अग्निप्रदीपक, बलकारक, कान्तिजनक, धातुवर्द्धक, पथ्य, त्रिदोष नाशक और हलके हैं। ये सफेद, लाल और काले इन भेदोसे तीन प्रकारके हैं इन तीनोके गुण एक २ से अधिक हैं।

अन्यच्च ।

रक्तशालिर्महाशालिः कलमा षष्टिका परा । खञ्जरीटा पसाहीच जीरकाऽन्या कपिञ्जला॥सौगन्धी शूकला चान्या विलवासी कचोरका । गरुडा रुक्मवती च कलमाऽन्या तथा परा ॥ बिल्वजा मागधी पीता ता अष्टादश शालयः ।

अर्थ-रक्तशालि, महाशालि, कमला,षष्टिका, खंजरीटा,पसाही, जीरका,कपिञ्जला,सौगन्धी,शूकला,बिलवासी, कचोरका,गरुडा, रुक्मवन्ती, कलमा, बिल्वजा, मागधी और पीता इन भेदोसे शालिधान अठारह प्रकारके हैं।

तेषां गुणाः ।

रक्तशालिस्त्रिदोषघ्नी चक्षुष्या मूत्ररोगहा । महाशालिर्गुरुर्वृष्या चक्षुष्या बलवर्द्धिनी ॥शीता गुरुस्त्रिदोषघ्नी मधुरा परषष्टिका । जीरका वातपित्तघ्नी कलमा श्लेष्मपित्तहा ॥ कपिञ्जला श्लेष्मला स्यान्मागधी कफवातला । बिलवासी गुरुश्चापि पित्तघ्नी शुक्रवर्द्धिनी॥शूकला पित्तवातघ्नी कचोरा पित्तनाशिनी । गरुडाऽन्या च वातघ्नी पित्तमूत्रगदापहा॥ रुक्मवन्ती लघुरुचिबलपुष्टिकरी मता।कलमान्या लघुः पथ्या वातश्लेष्मविवर्द्धिनी॥बिल्वजा मागधी पीता सामान्यास्ता गुणागुणे॥ रुचिकृद्बलकृन्मूत्रदोषघ्नी च श्रमापहा ॥ दग्धग्रामाचले जाताः शालयो लघुपाकिनः । सुपथ्या बद्धविण्मूत्रा रूक्षाःश्लेष्मापकर्षिणः ॥ केदारप्रभवा वृष्या वातपित्तविनाशिनः । रक्तपित्तविकारघ्ना वातला॰ कफकारका॰ ॥ देशेदेशे विभिन्ना-

न्दिनो बद्धवर्चस्काः षष्टिकैः समाः॥ कृष्णव्रीहिर्वरस्तेषां तस्मादल्पगुणाः परे। (भा० प्र०)

अर्थ-व्रीहिधान-वर्षाकालमे पकतेहै यह धान छरनेमे सफेद और बहुत देरमे पकतेहै व्रीहिधान अनेक प्रकारके होतेहै जैसे कृष्णव्रीहि, पाटल,कुक्कुटाण्डाकृति,शालामुख और जतुमुख इत्यादि। जिसके तुष और चावल काले रंगके होय उसको कृष्णव्रीहि कहतेहै।जिसका रंग पाडलके फूलकी समान हो उसको पाटलव्रीहि कहते है। जिसका आकार मुरगेके अंडेकी समान हो उसको कुक्कुटाण्डव्रीहि कहतेहै। जिसका शूक और चावल काला हो उसको शालिमुख कहतेहै।जिसके मुखका रंग लाखकी समान हो उसको जतुमुखव्रीहि कहते है। सर्वप्रकारके व्रीहिधानपाकमे मधुर, शीतवीर्य्य, अल्प अभिष्यन्दि और मलरोधक है। व्रीहिधानोमे कृष्णव्रीहिधान अधिक गुणवालेहै, शेष अल्प गुणवाले है।

अन्यच्च।

कृष्णव्रीहिस्त्रिदोषघ्नी मधुरा कार्श्यहा तथा।
पित्तघ्नी पिच्छिला शुक्ररूपवर्णबलप्रदा॥ (वै० नि०)

अर्थ-कृष्णव्रीहिधान-त्रिदोषनाशक, मधुर, कृशतानाशक, पित्तनिवारक,पिच्छिल तथा शुक्र,रूप और वर्ण तथा बलको देवेहै।

षष्टिकलक्षण नामानि च।

गर्भस्था एव ये पाक यान्ति ते षष्टिका मताः। षष्टिकः शतपुष्पश्च प्रमोदकमुकुन्दकौ॥ महाषष्टिक इत्याद्याः षष्टिकाः समुदाहृता.। ऋतेऽपि व्रीहय. प्रोक्ता व्रीहिलक्षणदर्शनात्॥

अर्थ-जो बालमेही पकजाय उनको षष्टिक धान्य कहते है।षष्टिक, शतपुष्प,प्रमोदक,मुकुन्दक,महाषष्टिक(षष्टिका, षष्टिशालि, षष्टिज, स्निग्धतण्डुल , षष्टिवासरज) इत्यादिक षष्टिकधान्य कहलाते है। इनमे व्रीहिधानोके लक्षण मिलनेसे यह व्रीहि कहे जाते है।

अन्यच्च।

यो व्रीहिः षष्टिरात्रेण पच्यते स तु षष्टिकः।

अर्थ-जो धान ६० रातमे पकके तैय्यार होजाय उनको षष्टिकधान्य कहते है।

नि नामानि परिलक्षयेत् । समान्गुणैश्च सर्वांस्तान्भूमिभागोद्भवान्विदु.॥शालयश्छिन्नरोहाश्च मूत्रला वातला हिमाः॥हारीतः

अर्थ-रक्तशालिधान-त्रिदोषनाशक, नेत्रोको हितकारी और मूत्ररोगको दूर करे है । महाशालिधान-भारी, वीर्यवर्द्धक, नेत्रोको हितकारी और बलकारी है । षष्टिक शालिधान-शीतल, भारी, त्रिदोपनाशक और मधुर है । जीरक शालिधान-वातपित्तनाशक है । कलमीधन-कफ और पित्तको दूर करे है । कपिञ्जल शालिधान-कफकारक है । मागधी शालिधान-कफ और वातको करे है । बिलवासी शालिधान-भारी, पित्तनाशक और शुक्रवर्द्धक है । शूकजा शालिधान-पित्तवातनाशक है । कचोरा शालिधान-पित्तनाशक है । गरुड शालिधान-वातविनाशक तथा पित्त और मूत्ररोगको दूर करे है । रुक्मवन्ती शालिधान-हलके, रुचिकारक, बलवर्द्धक और पुष्टिकारक है । दूसरे प्रकारके कलमधान-हलके, पथ्य और वातकफवर्द्धक है । बिलवजा, मागधी और पीता यह तीनो प्रकारके शालिधान गुण और दोषोमे समान है । रुचिकारक, बलकारक, मूत्रदोपनाशक और श्रमरोगहारक है । दग्धग्राम और पर्वतमे उपजे शालिधान लघुपाकी है, पथ्य, मलमूत्ररोक, रूखे, और कफको सोखनेवाले है । खेतमे उपजे शालिधान-रूखे वातपित्तनाशक, रक्तपित्तनाशक, वातवर्द्धक और कफकारक है । इन सब शालिधानोके नाम देश २ मे भिन्न है । सर्व प्रकारके शालिधान सर्व प्रकारकी भूमिके भागोमे उत्पन्न हुये गुणोमे समान है । छिन्नरोहशालिधान-मूत्रजनक, वातकारक और शीतल है ।

व्रीहिधान्यलक्षणम् ।

वार्षिका कण्डिताः शुक्ला व्रीहयश्चिरपाकिनः । कृष्णव्रीहिः पाटलश्च कुक्कुटाण्डक इत्यपि॥शाखामुखो जतुमुख इत्याद्या व्रीहय.स्मृता ।कृष्णव्रीहि स विज्ञेयो यत्कृष्णतुपतण्डुल. ॥ पाटल पाटलापुष्पवर्णको व्रीहिरुच्यते।कुक्कुटांडाकृतिर्व्रीहिः कुक्कुटाण्डक उच्यते ॥ शालामुख. कृष्णशूकः कृष्णतण्डुल उच्यते । लाक्षावर्णं मुख यस्य ज्ञेयो जतुमुखस्तु सः ॥व्रीहयः कथिता पाके मधुरा वीर्यतो हिमा. । अल्पाभिष्य-

न्दिनो बद्धवर्चस्काः षष्टिकैः समाः ॥ कृष्णव्रीहिर्वरस्तेषां तस्मादल्पगुणाः परे । (भा० प्र०)

अर्थ-व्रीहिधान-वर्षाकालमे पकतेहै यह धान छरनेमे सफेद और बहुत देरमे पकतेहै व्रीहिधान अनेक प्रकारके होतेहै जैसे कृष्णव्रीहि, पाटल,कुक्कुटाण्डाकृति,शालामुख और जतुमुख इत्यादि । जिसके तुष और चावल काले रंगके होय उसको कृष्णव्रीहि कहतेहै।जिसका रंग पाडलके फूलकी समान हो उसको पाटलव्रीहि कहते है। जिसका आकार मुरगेके अडेकी समान हो उसको कक्कुटाण्डव्रीहि कहतेहे । जिसका शूक और चावल काला हो उसको शालिमुख कहतेहै।जिसके मुखका रंग लाखकी समान हो उसको जतुमुखव्रीहि कहते है । सर्वप्रकारके व्रीहिधानपाकमे मधुर, शीतवीर्य्य, अल्प अभिष्यन्दि और मलरोधक ह । व्रीहिधानोमे कृष्णव्रीहिधान अधिक गुणवालेहै, शेष अल्प गुणवाले है ।

अन्यच्च ।

कृष्णव्रीहिस्त्रिदोषघ्नी मधुरा कार्श्यहा तथा ।
पित्तघ्नी पिच्छिला शुक्ररूपवर्णबलप्रदा ॥ (वै० नि०)

अर्थ-कृष्णव्रीहिधान-त्रिदोषनाशक, मधुर, कृशतानाशक, पित्त-निवारक,पिच्छिल तथा शुक्र,रूप और वर्ण तथा बलको देवेहै ।

षाष्टिकलक्षण नामानि च।

गर्भस्था एव ये पाक यान्ति तेषष्टिका मताः । षष्टिकः शतपुष्पश्चप्रमोदकमुकुन्दको ॥ महाषष्टिक इत्याद्याः षष्टिकाः समुदाहृता· । ऋतेऽपि व्रीहय· प्रोक्ता व्रीहिलक्षणदर्शनात् ॥

अर्थ-जो बालमेही पकजावे उनको षाष्टिक धान्य कहते है।षष्टिक, शतपुष्प,प्रमोदक,मुकुन्दक,महाषाष्टिक(षष्टिका, षष्टिशालि, षष्टिज, स्निग्धतण्डुल , षष्टिवासरज) इत्यादिक षष्टिकधान्य कहलाते है । इनमे व्रीहिधानोके लक्षण मिलनेसे यह व्रीहि कहे जाते है ।

अन्यच्च ।

यो व्रीहिः षष्टिरात्रेण पच्यते स तु षष्टिक ।

अर्थ-जो धान ६० रातमें पकके तैय्यार होजावे उनको षष्टिक-धान्य कहते हैं ।

षष्टिकगुणाः ।

षष्टिका मधुराः शीता लघवो बद्धवर्चसः । वातपित्तप्रशमनाः शालिभिः सदृशा गुणैः । षष्टिका प्रवरा तेषां लघ्वी स्निग्धा त्रिदोषजित् ॥ स्वाद्वी मृद्वी ग्राहिणी च बलदा ज्वरहारिणी । रक्तशालिगुणैस्तुल्यास्ततः स्वल्पगुणाः परे ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-षष्टिक(साठीधान)-मधुर,शीतल,हलके, मलरोधक, वातपित्तनाशक यह गुणोमे शालिधानके समान है । सर्वप्रकारके धानोंमें षष्टिक धान्य उत्तम है,हलके,स्निग्ध,त्रिदोषनाशक,स्वादिष्ट, नरम,मलरोधक,बलदायक,ज्वरनाशक । इनके गुण लाल शालि धानोंकी समान जानेन और २ धान इनसे हीनगुणवाले हैं ।

अन्यच्च ।

स्निग्धो ग्राही गुरुः स्वादुस्त्रिदोषघ्नः स्थिरो हिमः ॥
षष्टिको व्रीहिषु श्रेष्ठो गौरश्चासितगौरतः ॥ (वाग्भट)

अर्थ-साठीधान-स्निग्ध, मलरोधक, स्वादिष्ठ, त्रिदोषनाशक, स्थिर, शीतल और सर्वधानोमे श्रेष्ठ है । यह वर्णके भेदसे कृष्ण और गौर दो प्रकारके है तहां कृष्णषष्टिक धानोकी अपेक्षा गौरषष्टिक धान अधिक गुणवाले है ।

अपिच ।

स्निग्धो वातहरस्त्रिदोषशमनः पथ्यः सदा प्राणिनां श्रेष्ठो व्रीहिषु षष्टिकः श्रमहरः कृच्छ्रादिदोषापहः ॥ गौरश्चासितगौरतोपि नितरां सेव्यः करोत्युच्चकैः शुक्रं श्वासहरः क्षतक्षयहरः कासादिदोषापहः ॥

अर्थ-सफेद और काले दोनोप्रकारके साठीधान-स्निग्ध,वातनाशक, त्रिदोषनाशक, पथ्य, सर्वप्रकारके व्रीहिधानोमे श्रेष्ठ, मूत्रकृच्छ्रादिदोषनाशक, शुक्रजनक, श्वासनाशक तथा क्षत, क्षय और कासादिरोगोको दूर करेहै ।

विवरण। धानकी ४ जातिहै शालि, शूक,शिम्बी और तृणधान्य इनमे शालिधान अनेक प्रकारके होते है देशके भेदसे इसके नाम

भिन्नरहै। संस्कृतग्रन्थोमे अनेक नाम कहेहै जैसे कलम, सुगधशालि, धान्योत्तम, राजभोग्य, सुवर्णशालि, प्रमोदक, षष्टिक इत्यादि अनेक जातिहै वह सर्व नहीं लिखीं क्योंकि वर्त्तमानकालमे संस्कृत नाम प्रचलित नही है देश २ मे जुदे २ नाम है जैसे इस देशमे हसराज, वासमती, सुनखर्चा, बिदली, दाऊदखानी, मुनिया, रायमुनिया, दलबादल, चवल, फतेपुरी, बंकीनागपुरी, मोथा इत्यादि प्रचलित है अगर इसी देशोके नाम लिखे तो १०० पृष्ठकी पुस्तक तय्यार होजाय। जो साठ दिनमे पककर तैय्यार होजायँ उनको साठीधान कहते है। साठीधान और धानोकी अपेक्षा हलके और पथ्यहै। जौ, गेहू, बाजरा, ज्वार इत्यादिको शूकधान्य कहते है। मूंग, उडद, मोठ, चने इत्यादिको शिम्बीधान्य कहते है। शमा, कगुनी, कोदो आदि तृणधान्य है।

यवनामानि।

यवस्तु मेध्यः सितशूकसज्ञो दिव्यो क्षतः कचुकिधान्यराजौ।
स्यात्तीक्ष्णशूकस्तुरगप्रियश्च शक्रुर्हयेष्टश्च पवित्रधान्यम् ॥

अर्थ-यव, मेध्य, सितशूक, दिव्य, अक्षत, कंचुकि, धान्यराज, तीक्ष्णशूक, तुरगप्रिय, शक्रु, हयेष्ट, पवित्रधान्य (शितशूक, हयप्रिय यवक, श्वेतशुङ्ग, प्रवेट, शीतशूक, कंचुकी, तुरंगप्रिय)

संस्कृतभाषामे	यव।
हिन्दीभाषामे	जौ।
बंगभाषामे	यव।
गुजरातीभाषामे	जव।
मराठीभाषामे	जव, जौं।
कर्णाटकीभाषामे	मुंडजयव।
तैलिङ्गीभाषामे	यवधान्य।
तामिलीभाषामें	वॉलअरिसु।
इग्रेजीभाषामे	बिटरबार्ली, पेरलबार्ली। Bitter Rarley Poarl Rarley
लैटिन्भाषामे	होर्डियंहेपुझास्टिकम्। Hordeum Hexasticum
फारसीभाषामे	जव।
अरबीभाषामे	शईर।

यवस्य प्रकारभेदा ।

यवः सशूकनिःशूकहरिद्वर्णैस्त्रिधा मतः ।
सशूको गुणवांस्तस्मान्निःशूकोल्पगुणः स्मृत' ॥
हरिद्वर्णो हीनगुणो मुनिभिः परिकीर्त्तितः ।

अर्थ-जो शूक, निःशूक और हरित वर्ण इन भेदोंसे तीन प्रकारके है तहां शूकयुक्त जो गुणोमे अधिक हैं, निःशूक जो हीन गुणवाले और हरित् वर्ण जो उनसेभी हीन गुणवाले हैं ।

अन्यच्च ।

यवस्तु शीतशूकः स्यान्निःशूकोऽतियवः स्मृत- ।
स्तोक्यस्तद्वत्स हरितस्ततः स्वल्पश्च कीर्त्तितः॥(भा. प्र,

अर्थ-शीतशूकवाले जौको यव कहते है, शूकहीन जौको अतियव कहते है,हरे रगके जौको स्तोक्य कहते हैं और साधारण यवोको स्वल्पयव कहते है ।

यवगुणा ।

रूक्षः शीतो गुरुः स्वादु' कषायो मधुरो यवः ।
वृष्यो ग्राही कफघ्नश्च स्यात्पित्तश्वासकासनुत्॥(हा॰ स॰)

अर्थ-जो-रूखे,शीतल,भारी,स्वादु,कषैले,मधुर,वीर्य्यवर्द्धक,मलरोधक, कफनाशक तथा पित्त,श्वास और खांसीको दूर करे हैं ।

अन्यच्च ।

यवः कषायो मधुरः शीतलो लेखनो मृदु- । व्रणेषु तिलवत्पथ्यो रूक्षो मेधाग्निवर्द्धन ॥ कटुपाकोऽनभिष्यन्दी स्वर्य्यो बलकरो गुरुः । बहुवातमलो वर्णस्थैर्य्यकारी च पिच्छिलः ॥ कण्ठत्वगामयश्लेष्मपित्तमेदःप्रणाशनः । पीनसश्वासकासोरुस्तम्भलोहिततृट्प्रणुत् ॥ तस्मादतियवो न्यून' स्तोक्यो न्यूनतरस्ततः ॥ (भा॰ प्र॰)

अर्थ-जो-कषैले, मधुर, शीतल, लेखन, मृदु, व्रणरोगमे तिलकी समान हितकारी, रूखे, मेधा और अग्निवर्द्धक, पाकमे कटु, अनभिष्यंदी, स्वरको शुद्ध करनेवाले, बलकारक,भारी, अत्यन्त वातको

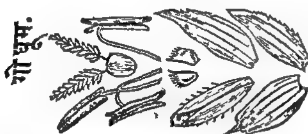
करनेवाले,बहुत मलको करनेवाले,वर्णको सुन्दर करनेवाले,पिच्छिल तथा कण्ठरोग, त्वचारोग, कफ,पित्त,मेदरोग,पीनस, श्वास, खांसी, ऊरुस्तम्भ, रक्तविकार और तृषाको दूर करनेवाले हैं। जैसे अतियव और अतियवसे स्तोक्य हीनगुणवाले हैं।

अन्यच्च ।

यवः कषायो मधुरः सुशीतलः प्रमेहजित्तिक्तकफापहारकः ।
अशूकमुण्डस्तुयवोबलप्रदोवृष्यश्चनॄणांबहुवीर्य्यपुष्टिदः ।(रा०)

अर्थ-जौ-कषेले, मधुर, शीतल, प्रमेहनाशक, कडवे और कफनाशक हैं। अशूक अर्थात् मुण्डे जौ-बलवर्द्धक, वीर्य्यवर्द्धक, वृष्य और पुष्टिकारक हैं।

गोधूमनामानि ।



गोधूमो बहुदुग्धः स्यादरूपो म्लेच्छभोजनः ।
यवनो निस्तुषः क्षीरी रसालः सुमनश्च सः ॥

अर्थ-गोधूम, बहुदुग्ध, अरूप, म्लेच्छभोजन, यवन, निस्तुष, क्षीरी, रसाल, सुमन (गोधुम, सुमना,)

संस्कृतभाषामें	गोधूम ।
हिन्दीभाषामें	गेहू ।
बंगभाषामें	गम ।
मराठीभाषामें	गहूं, काठे लाल रंगाचे(को०-)पोटगुळधुवे।
गुजरातीभाषामें	घउ ।
कर्णाटकीभाषामें	गोदी ।
तैलिङ्गीभाषामें	गोदुमु ।
इंग्रेजीभाषामें	व्हीट । Wheat
लेटिन्भाषामें	ट्रिटिकम्, वल्गेरी । Triticum Vulgare

फारसीभाषामें गन्दुम।
अरबीभाषामें हिता।

गोधूमगुणा।

मधुरो गुरुर्विष्टम्भी वृष्यो बल्योऽथ बृंहण.।
ईषत्कषायः शीतश्च गोधूमः स्यात्त्रिदोषहा॥ (हा०स०)

अर्थ-गेहू-मधुर, भारी, विष्टम्भकारक, वीर्य्यवर्द्धक, बलकारक, पुष्टिकारक, कुछेक कषैले, शीतल और त्रिदोषनाशक है।

अन्यच्च।

गोधूम उक्तो मधुरो गुरुश्च बल्यः स्थिरः शुक्ररुचिप्रदश्च। स्निग्धोऽतिशीतोऽनिलपित्तहता सन्धानकृज्जीवनकोऽल्परेची।

अर्थ-गेहू-मधुर, भारी, बलकारी, देहको स्थिरकरनेवाले, शुक्रजनक, रुचिकारक, स्निग्ध, अत्यन्त शीतल, वातपित्तनाशक, सन्धानकारक, प्राणदायक और कुछेक दस्तावर है।

अन्यच्च।

गोधूम· स्निग्धमधुरो वातघ्नः पित्तदाहहृत्।
गुरुः श्लेष्ममदो बल्यो रुचिरो वीर्य्यवर्द्धन·॥ (रा नि)

अर्थ गेहू-स्निग्ध, मधुर,वातनाशक, पित्तघ्न, दाहनिवारक,भारी, कफकारी, मदकारक, बलवर्द्धक, रुचिजनक और वीर्य्यवर्द्धक है।

अपिच लक्षणगुणा।

गोधूम· सुमनोऽपि स्यात्त्रिविध स च कीर्त्तित·। महागोधूम इत्याख्य· पश्चाद्देशात्समागतः॥ मधूली तु तत· किञ्चिदल्पा सा मध्यदेशजा। नि शूको दीर्घगोधूम क्वचिन्नन्दीमुखाभिध·॥ गोधूमो मधुर शीतो वातपित्तहरो गुरुः। कफशुक्रप्रदो बल्य स्निग्ध· सन्धानकृत्सर·॥ जीवनो बृंहणो वर्ण्यो व्रण्यो रुच्यः स्थिरत्वकृत्।मधूली शीतला स्निग्धा पित्तघ्नी मधुरा लघु·॥शुक्रला बृंहणी पथ्या तद्वन्नन्दीमुख स्मृत·॥ (भा प्र)

अर्थ-गेहू,महागोधूम,मधूली और दीर्घगोधूम इन भेदोंसे तीन

कफ· द-कफकारक एसा नवीन पदहै,परन्तु किसी प्राचीन ग्रन्थमें नहीं लिखा.

प्रकारके है तहा महागोधूम पाश्चिम मरुदेश आदिमे होते है,मधूली गोधूम महागोधूमसे छोटा है यह मध्यदेश (देहली,आगरा,लखनऊ आदि) मे होता है और दीर्घगोधूम,शूकरहित होता है और कहीं २ नन्दीमुखनामसे भी प्रसिद्ध है। गेहू-मधुर, शीतल, वातपित्तनाशक, भारी, कफकारक, शुक्रजनक, बलकारक,स्निग्ध, सन्धानकारक, सारक, सजीवन, पुष्टिकारक, वर्णको सुन्दर करनेवाले, रुचिकारी और शरीरको स्थिर करनेवाले है।मधूली गेहू-शीतल,स्निग्ध, पित्तनाशक, मधुर, हलके, शुक्रजनक,पुष्टिकारक और पथ्य है तथा नन्दीमुखकेभी गुण इसीके समान जानने।

यवनालनामानि।

यवनालो यावनाल· शिखरी वृत्ततण्डुलः।
दीर्घनालो दीर्घशरः क्षेत्रेक्षुश्चेक्षुपत्रकः॥

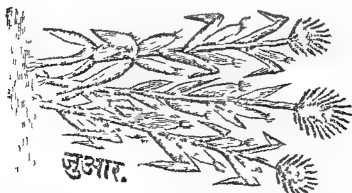
अर्थ-यवनाल, यावनाल,शिखरी,वृत्ततण्डुल,दीर्घनाल,दीर्घशर, क्षेत्रेक्षु, इक्षुपत्रक।

धवलयावनालनामानि।

धवलो यावनालस्तु पाण्डुरस्तारतण्डुलः।
नक्षत्राकृतिविस्तारो वृत्तो मौक्तिकतण्डुलः॥

अर्थ-धवलयावनाल, पाण्डुर, तारतण्डुल, नक्षत्राकृतिविस्तार, मौक्तिकतण्डुल (ऊर्णाह्व, देवधान्य, जूर्णल, बीजपुष्पक, जूर्नल, पुष्पगन्ध, सुगन्ध, सेगुरुदक)

तुवरयावनालनामानि।



अथ तुवरयावनालस्तुवरश्च कषाययावनालश्च।
अपि रक्तयावनाललोहितलोहिततुवरधान्याश्च॥

अर्थ-तुवरयावनाल-तुवर,कषाययावनाल,रक्तयावनाल,लोहित लोहिततुवरधान्य ।

अपिच ।

ललिता क्रोष्टुपुच्छा च श्रीखण्डी च सुगन्धिका ।
कृष्णा भाद्रपदी चान्या श्वेता मडा च जूर्णका ॥
रक्तिका कुब्जिकाद्याश्च बह्वयो जूर्णाह्वजातयः ।

अर्थ-ललिता,क्रोष्टुपुच्छा,श्रीखण्डी,सुगन्धिका, कृष्णा, भाद्रपदी, श्वेता,मडा,जूर्णका,रक्तिका और कुब्जिका इत्यादि ज्वारकी अनेक जाति हैं ।

संस्कृतभाषामें	यावनाल, धवलयावनाल, रक्तयावनाल ।
हिन्दीभाषामें	जुआर, सफेदजुआर, लालज्वार ।
बंगभाषामें	जोआर, जनार+श्वेतजनार, कालजनार, लालजनार, भुट्टो ।
मराठीभाषामें	जोंधळे, ज्वारी ।
गुजरातीभाषामें	जारच, जुवार ।
कर्णाटकीभाषामें	जोलदहेसरु, कारुजोल ।
तैलङ्गीभाषामें	जोन्नलु ।
इंग्रेजीभाषामें	ग्रेटमॉलेट । Great Millet
लेटिन्भाषामें	होलकस् वलगेरी Holcus vulgare सोरघम् वलगेरिस् Sorghum vulgare
फारसीभाषामें	जुरमका ।
अरबीभाषामें	हंताउमिया-खंदरूस ।

यावनालगुणाः ।

यावनालो गुरुः शीतो रूक्षो ग्राही रुचिप्रदः ।
वृष्यो मलस्तम्भकरः स्वादुः पित्तकफापहः ॥
रक्तरोगप्रशमनो ऋषिभिः पूर्वमीरितः ॥

अर्थ-जुआर,भारी,शीतल,रूखी,मलरोधक, रुचिकारक,वीर्य्यवर्द्धक,मलस्तम्भक,स्वादिष्ठ, पित्तकफनाशक और रुधिरके विकारको शान्ति करनेवाली है ।

धवलयावनालगुणा ।

धवलो यावनालस्तु पथ्यो वृष्यो बलप्रदः ।
त्रिदोषार्शोव्रणहरो गुल्मारुचिविनाशकः ॥

अर्थ-सफेद्ज्वर-पथ्य, वीर्यवर्द्धक, बलकारक तथा त्रिदोष, बवासीर, व्रण, गुल्म और अरुचिको दूर करे है।

शारदयावनालगुणा ।

शारदो यावनालस्तु श्लेष्मलः पिच्छिलो गुरुः ।
शीतलो मधुरो वृष्यो बल्यः पुष्टिकरो मतः ॥
त्रिदोषशमनश्चैव पूर्ववद्यानरूपितः । (नि० र०)

अर्थ-शारदयावनाल-कफकारक, पिच्छिल, भारी, शीतल, मधुर, वीर्यवद्धक, बलकारक, पुष्टिकारक और त्रिदोषनाशक है।

साजकनामानि ।

वर्जरी नालिका नाली नीलसस्यं च साजकः ।
अग्रधान्य वर्जरीका तथा नीलकणा स्मृता ॥

अर्थ-वर्जरी, नालिका, नाली, नीलसस्य, साजक, अग्रधान्य, वर्जरीका, नीलकणा।

संस्कृतभाषामे	वर्जरी, साजक।
हिन्दीभाषामे	बाजरा।
मराठीभाषामे	बाजरी।
गुजरातभाषामे	बाजरो।
इंग्रेजीभाषामे	स्पाइक्डमिलेट् Spiked millet
लैटिन्भाषामे	पनासालया, स्पाईकटा Peniecllaria sPicate पेनसिटं, टाइफोडियं Pennisetum typhodnium
फारसीभाषामे	गावंसा।
अरबीभाषामे	जावंस।

अस्य गुणा ।

साजको वातलो हृद्यो बल्यः कान्तिकरो मतः ।
अग्निदीप्तिकरश्चोष्णो रूक्षः पित्तप्रकोपनः ॥
स्त्रीकामदो दुर्जरश्चपुंस्त्वपुष्टिहरो मतः । (नि० र०)

अर्थ-बाजरा-बादी, हृदयको हितकारी, बलकारी, कान्तिजनक, अग्निप्रदीपक, गरम, रूखा, पित्तको कुपित करनेवाला, स्त्रियोंके कामको बढानेवाला, देरमें पचनेवाला तथा पुरुषता और पुष्टिको हरनेवालाहै।

अन्यच्च।

वर्जरी दुर्जरा ज्ञेया कफवातप्रणाशिनी।

अर्थ-बाजरा-देरमें पचनेवाला और कफवातको हरनेवाला है।

शमीधान्यनामानि।

शमीजाः शिम्बिजाः शिम्बीभवाः सूप्याश्च वैदलाः।

अर्थ-शमीज, शिम्बिज, शिम्बीभव, सूप्य, वैदल।

शमीधान्यगुणाः।

वैदला मधुरा रूक्षाः कषायाः कटुपाकिनः।
वातला कफपित्तघ्ना बद्धमूत्रमला हिमाः॥
ऋते मुद्गमसूराभ्यामन्ये त्वाध्मानकारकाः।

अर्थ-शिम्बीधान्य (मूँग, मसूर, मोठ, उडद, लोबिया, चने, अडहर, मटर, कुलथी इत्यादि)-मधुर, रूखे, कषैले, पचनेमें कटु, वातकारक, कफपित्तनाशक, मूत्रमलरोधक, शीतल इनमें मूँग और मसूरको छोडकर शेष सर्व आध्मानकारक है।

अन्यच्च।

शिम्बीधान्यं तु मधुरं शीतं रूक्षं कषायकम्। कटु पाके वातलं च मूत्रलं मलस्तम्भकृत् ॥ मसूरमुद्गरहितं गुरु चाध्मानकारकम्। लेपादिना रक्तदोषमेदपित्तकफापहम् ॥ (र० नि०)

अर्थ-शिम्बीधान्य-मधुर, शीतल, रूक्ष, कषाय, पाकमें कटु, बादी, मूत्रजनक, मलस्तम्भक इनमें मसूर और मूँगको छोडके शेष सर्व शिम्बीधान्य भारी और आध्मानकारक है। इनका लेपादिक करनेसे रक्तविकार, मेद, पित्त और कफका नाश होता है।

मुद्गनामानि।

मुद्गस्तु सूपश्रेष्ठः स्याद्वर्णार्हश्च रसोत्तमः।
भुक्तिप्रदो हयानन्दः सुफलो वाजिभोजनः॥

अर्थ- मुद्ग, सूपश्रेष्ठ, वर्णार्ह, रसोत्तम, भुक्तिप्रद, हयानन्द, सुफल, वाजिभोजन ।

संस्कृतभाषामे	मुद्ग ।
हिन्दीभाषामे	मूग ।
वंगभाषामे	मुग ।
मराठीभाषामे	हिरवे मूग, पिवळे मूग ।
गुजरातीभाषामे	मग लीला, काला कच्छी ।
कर्णाटकीभाषामे	हेसयेरु ।
तोलिङ्गीभाषामे	पेसलु ।
पंजाबीभाषामे	मूंजि ।
इंग्रेजीभाषामे	ग्रीन ग्रेन । Green grain
लेटिन्‌भाषामे	फेसीओलस् मुगो । Phascolus Muego
फारसीभाषामे	बुनुमाष ।
अरबीभाषाम	मज ।

मुद्गगुणा ।

शीतः कषायो मधुरो लघुःस्यात्पैत्तास्रभूदोषहरः सरश्च। विपाकतोऽसौ कटुकप्रधानो मुद्गस्तथान्यः कथितोऽभिरम्यः(हा०)

अर्थ-मूँग-शीतल, कषेली, मधुर, हलकी, पित्त और रक्तके दोषको दूर करनेवाली सारक विपाकमे कटु और रमणीक है ।

अन्यच्च ।

कृष्णमुद्गा महामुद्गा गौरा हरितपीतकाः।श्वेता रक्तास्तु निर्दिष्टा लघवः पूर्वपूर्वतः ॥ प्रधाना हारितास्तत्र वन्यमुद्गास्तु मुद्गवत् । मुद्गः कषायो मधुरः कफपित्तास्रजिल्लघुः ॥ ग्राही शीतः कटुः पाके चक्षुष्यो नातिवातलः ॥ (राज० नि०)

अर्थ-मूँग-अनेक प्रकारके होते है जैसे कृष्णमुद्ग, अरुणमुद्ग, गौरवर्णमुद्ग, हारितमुद्ग, पीतमुद्ग श्वेतमुद्ग, और रक्तवर्णमुद्ग इनमे पूर्वसे पूर्व मूग लघु है अर्थात् रक्त मूँगसे सफेद मूँग, सफेद मूँगसे पीलेमूँग और पीले मूँगसे हरा मूँग हलका है इत्यादि सर्व मूँगोमे हरा मूँग प्रधान है । वनमूँग (मोठ) के गुण भी मूँगके समान है । मूँग कषेली

मधुर, कफनाशक, रक्तपित्तनिवारक, हलका, मलरोधक, शीतल पचनेमे कटु, नेत्रोको हितकारी और अत्यन्त वातकारक नहीहै।

अपिच।

मुद्गो रूक्षो लघुर्ग्राही कफपित्तहरो हिमः। स्वादुरल्पानिलो नेत्र्यो ज्वरघ्नो वनजस्तथा ॥ मुद्गो बहुविधः श्यामो हरितः पीतकस्तथा। श्वेतो रक्तश्च तेषां तु पूर्वः पूर्वो लघुः स्मृतः॥ सुश्रुतेन पुनः प्रोक्तो हरितः प्रवरो गुणैः। चरकादिभिरप्युक्त एष एव गुणाधिकः ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-मूँग-रूखा, हलका, मलरोधक, कफपित्तनाशक, शीतल, स्वादिष्ठ, अल्पवातकारक, नेत्रोको हितकारी और ज्वरको दूर करे है। वनमूँग (मोठ) के गुणभी मूँगके समान है। मूँग अनेक प्रकारकी है जैसे श्याम, हरित, पीत, सफेद, लाल। इनमे पहिले २ मूँग हलके है सुश्रुतने हरे मूँगको उत्तम कहा है और चरकादिकभी इसी प्रकार कहते है।

अन्यच्च।

मुद्गः पित्तकफापहो व्रणहरः कण्ठामयघ्नो लघुः पथ्यो वातविरक्तजन्तुषु तथा नेत्रामये सर्वदा ॥ नैवाध्मानकरस्तथा निलहरो मन्दानले शस्यते भक्तानामपि चोत्तमः स्वरकरो मूत्रामयच्छेदनः ॥

अर्थ-मूँग-पित्तकफनाशक, व्रणविनाशक, कण्ठरोग निवारक, हलकी तथा वातरक्त, कृमिरोग और नेत्ररोगमे हितकारी है, आध्मानकारक नही, वातहारकभी नही, मन्दाग्निको दूर करनेवाली, भोजनके ऊपरभी पथ्य, स्वरको श्रेष्ठ करनेवाली और मूत्ररोगको हरनेवाली है।

कृष्णमुद्गनामानि।

कृष्णमुद्गस्तु वासन्तो माधवश्च सुराष्ट्रजः।

अर्थ-कृष्णमुद्ग, वासन्त, माधव, सुराष्ट्रज।

कृष्णमुद्गगुणाः।

कृष्णमुद्गस्त्रिदोषघ्नो मधुरो वातनाशनः॥
लघुश्च दीपनः पथ्यो बलवीर्यांगपुष्टिदः

अर्थ-कालीमूँग-त्रिदोषनाशक, मधुर, वातनाशक, हलकी, दीपन, पथ्य तथा बल, वीर्य्य और शरीरको पुष्टि देनेवालीहै ।

हरिन्मुद्गनामानि ।

शारदस्तु हरिन्मुद्गो धूसरोऽन्यश्च शारदः ।

अर्थ-शारद और हरिन्मुद्ग यह दो नाम हरिन्मुद्गके हैं, धूसर और शारद यह दूसरी होती है ।

हरिन्मुद्गगुणा ।

हरिन्मुद्गः कषायश्च मधुरः कफपित्तहृत् ।
रक्तमूत्रामयघ्नश्च शीतलो लघुदीपनः ॥

अर्थ- हरिमूँग-कषेली, मधुर, कफपित्तनाशक तथा रुधिरविकार और मूत्ररोगको दूर करे है, शीतल, हलकी और दीपन है ।

धूसरमुद्गगुणा ।

तद्वच्च धूसरोमुद्गो रसवीर्य्यादिषु स्मृतः ।
कषायो मधुरो रुच्यः पित्तवातविबन्धकृत् ॥ (रा०नि०)

अर्थ-धूसर रंगकी मूँग रसवीर्य्यादिकमे तो हरीमूँगकी समानहै कषेली, मधुर रुचिकारी तथा पित्त, वात्त और विबन्धकारक है ।

मकुष्ठनामानि ।

मकुष्ठको मकुष्ठश्च वनमुद्गः कृमीलकः ।
अमृतोऽरण्यमुद्गश्च वल्लीमुद्गश्च कीर्त्तितः ॥

अर्थ-मकुष्ठक, मकुष्ठ, वनमुद्ग, कृमीलक, अमृत, अरण्यमुद्ग, वल्लीमुद्ग, मुकुष्ठ, मपष्ठ, राजमुद्ग, मयष्ठ, मकुष्टक, मकुष्ठक, मकुष्ठ, वरक, निगूढक, कुलीनक, खण्डी, मुद्गष्टक, मुद्गष्ठ, मयष्टक, मुकुष्ठ, मयूष्ट, मयष्ट, मद्यक, मयुष्टक, मयुष्ट)

संस्कृतभाषामे	मकुष्ठ ।
हिन्दीभाषामे	मोठ ।
बंगभाषामे	वनमूँग ।
मराठीभाषामे	मटस्या ।
गुजरातीभाषामे	मठ ।
कर्णाटकीभाषामे	मुगु, हेसरुभेद ।
तैलिंगीभाषामे	कर्कपेसालु ।

इंग्रेजीमे एकोनेटेलिव्ड किडनीबिन। Aconite leaved Kidney bean
लैटिन्भाषामे फेसी ओलस् Phaseolus
एकोनिटि फोलीयम् aconite folium
फारसीभाषामे माषहिंदि।

मकुष्टगुणा।

सरक्तपित्तकफवातहन्ता चोष्णः कषायो मधुरः प्रदिष्टः।
ग्राही सुशीतो गुदकीलगुल्म मकुष्टकः सर्वगदान्निहन्ति॥

अर्थ-मोठ-रक्तपित्त, कफ और वातनाशक है, गरम, कषैली, मधुर, मलरोधक, शीतल तथा गुदकील, गुल्म और रोगोंको दूर करेहै।

अन्यच्च

मकुष्टकः कषायः स्यान्मधुरो रक्तपित्तजित्।
ज्वरदाहहरः पथ्यो रुचिकृत्सर्वदोषजित्॥ (रा० नि०)

अर्थ-मोठ-कषैली, मधुर, रक्तपित्तनाशक, ज्वरनिवारक, दाहहारक, पथ्य, रुचिकारक और सर्वदोषनाशक है।

अन्यच्च।

मकुष्टो वातलो ग्राही कफपित्तहरो लघुः।
वान्तिजिन्मधुरः पाके कृमिकृज्ज्वरनाशनः॥ (भा०प्र०)

अर्थ-मोठ-बादी, मलरोधक, कफपित्तनाशक, हलकी, वमननिवारक, पचनेमे मधुर, कृमिजनक और ज्वरनाशक है।

अपिच।

मुद्गष्टः शीतलो ग्राही कफपित्तक्षयापहः॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ-मोठ-शीतल, ग्राही, तथा कफ, पित्त और क्षयको दूर करेहै।

अस्य सूपगुणा।

मकुष्टसूपोऽल्पबलः पाचनो दीपनो लघुः।
चक्षुष्यो बृंहणो वृष्य पित्तश्लेष्मास्ररोगनुत्॥ (द्र०गु०)

अर्थ-मोठकी दाल-अल्पबलकारक, पाचक, दीपन, हलकी, नेत्रोंको हितकारी, वीर्य्यवर्द्धक तथा पित्त, कफ और रुधिरके दोषोंको दूर करे है।

माषनामानि।

माषस्तु कुरुविन्द स्याद्धान्यवीरो वृषांकुरः।

मांसलश्च बलाढ्यश्च पित्र्यश्च पितृभोजनः ॥

अर्थ-माष, कुरुविन्द, धान्यवीर, वृषाकुर, मासल, बलाढ्य, पित्र्य, पितृभोजन (बीजरत्न, बली)

संस्कृतभाषामे	माष ।
हिन्दीभाषामे	उडद ।
वंगभाषामे	माषकलाय ।
मराठीभाषामें	उडीद ।
गुजरातीभाषामे	उडद ।
कर्णाटकीभाषामें	उडु ।
तौलिंगीभाषामे	मिनुउलु ।
इंग्रेजभाषामे	किड्नीबीन । Kidney bean
लेटिन्भाषामे	फेसीओलस् रेडीएटस् । Phaseolus rediatus
फारसीभाषामे	माष ।
अरबीभाषामे	माषा ।

माषगुणा ।

माषः स्निग्धो बहुमलकरः शोषणः श्लेष्मकारी वीर्ये उष्णो झटिति कुरुते रक्तपित्तप्रकोपम् । हन्याद्वात गुरु बलकरो रोचनो भक्ष्यमाणः स्वादुर्नित्य श्रमसुखवतां सेवनीयो नराणाम् ॥ (रा० नि०)

अर्थ-उडद-स्निग्ध, बहुमलकारक, शोषक, कफकारक, उष्णवीर्य्य, शीघ्र रक्तपित्तको कुपित करनेवाला, वातनाशक, भारी, बलकारी, रुचिकारक, स्वादिष्ठ तथा श्रम और सुखवान् मनुष्योको सदैव सेवने योग्य है ।

अन्यच्च ।

स्निग्धोऽथ वृष्यो मधुरश्च बल्यो मरुत्कफानां परिबृंहणश्च। पाकेम्लकोष्णो विदितो हिमश्च माषोऽथ हृद्य· कथितो नरैश्च ॥

अर्थ-उडद-स्निग्ध, वीर्य्यवर्द्धक, मधुर, बलकारक, वात और कफको बढानेवाला, पाकमे अम्ल, उष्ण, शीतल और हृदयको हितकारी है।

अन्यच्च ।

माषो गुरुर्भिन्नपुरीषमूत्रः स्निग्धोष्णवृष्यो मधुरोऽनिलघ्नः ।

सन्तर्पणः स्तन्यकरो विशेषाद्बलप्रदः शुक्रकफावहश्च ॥

अर्थ-उडद-भारी, मलमूत्रका निकालनेवाला, स्निग्ध, गरम, वीर्यवर्द्धक, मधुर, वातनाशक, तृप्तिकारक, स्तनोंमें दूधको बढानेवाला तथा विशेषकरके बल,शुक्र और कफको करनेवाला है।

कषाय्यभावान्न पुरीषभेदी न मूत्रलो नैव कफस्य कर्त्ता ।
स्वादुर्विपाके मधुरोऽथसान्द्रः सन्तर्पण स्तन्यरुचिप्रदश्च ॥

अर्थ-उडद-कषैलेपनसे मलभेदक नहीं है और मूत्रजनकभी नहीं है और न कफको करनेवालाहै, पचनेमें स्वादु, मधुर, स्निग्ध,तृप्तिकारक, स्तनोंमे दूध प्रगट करनेवाला और रुचिकारक है।

अन्यच्च ।

माष· स्निग्धो बलश्लेष्ममलपित्तकरः सरः ।
गुरूष्णोनिलहा स्वादुः शुक्रवृद्धिविरेककृत् (वाग्भ०)

अर्थ-उडद-स्निग्ध,बलकारक,कफजनक, मलकारक, पित्तकारक, सारक, भारी, गरम, वातविनाशक, स्वादिष्ठ, शुक्रजनक और दस्तावर है।

अन्यच्च ।

माषः मात्रागण स्निग्धः शोषणोष्ण· कफप्रदः।वृष्य· पित्त-कर· पित्तकोपनो रोचको गुरुः॥बल्यःसन्तर्पणः स्वादुः पुष्टिकृन्मूत्रशुक्रल । मलभेदकरो दुग्धकारको मांसवर्द्धकः ॥मेद-वृद्धिकरश्चैव श्वासश्रमनिवारण । परिणामभवं शूलमर्दितं च विनाशयेत् । वात चार्शं नाशयतीत्येवमार्यैर्निरूपितम्॥(२०)

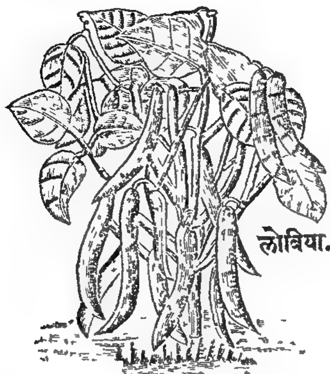
अर्थ-उडद-स्निग्ध, शोषण, गरम,कफकारक, वीर्यवर्द्धक पित्तकारक, पित्तको कुपित करनेवाला,रुचिको उत्पन्न करनेवाला,भारी, बलकारक, तृप्तिजनक, स्वादिष्ठ, पुष्टिकारक, मूत्रजनक, मलभेदक, दुग्धकारक, मांसवर्द्धक, मेदवर्द्धक तथा श्वास, श्रम, परिणामशूल, अर्दितवात, वात और बवासीरको दूर करे है।

राजमाषनामानि ।

राजमाषो महामाषश्चपलश्चवल· स्मृतः ।

अर्थ-राजमाष,महामाष,चपल,चवल(-बर्बट, मकरकर,द्विजसत,

नीलमाष, नृपमाष, नृपोचित, सितमाष, दीर्घबीज, निष्पाव, राजमाषक सुकुमार, दीर्घशिम्बी, क्षुधाभिजनक)



लोविया.

संस्कृतभाषामे	राजमाष।
हिन्दीभाषामे	लोविया।
वंगभाषामे	वरवटीकलाय, वोरा।
मराठीभाषामे	चंवळया (अळसुदे।
गुजरातीभाषामे	चोला।
कर्णाटकीभाषामे	वरवटा, अलसदे।
पंजाबीभाषामे	रैंस।
इंग्रेजीभाषामे	चाईनिझ डोलिकोस्। Chinese dolicos
लैटिन्भाषामे	डोलिकोस् सिनन्सीस्। Dolichos sinensis
	विगना कटिऐंग्। Vigna catiang
फारसीभाषामे	लोविया।
अरबीभाषामे	फारिका।

राजमाषगुणा।

राजमाषो गुरुः स्वादुस्तुवरस्तर्पणः सरः।
रूक्षो वातकरो रुच्यः स्तन्यो भूरिबलप्रद.॥

सन्तर्पणः स्तन्यकरो विशेषाद्बलप्रदः शुक्रकफावहश्च ॥

अर्थ-उडद्-भारी, मलमूत्रका निकालनेवाला, स्निग्ध, गरम, वीर्य्यवर्द्धक, मधुर, वातनाशक, तृप्तिकारक, स्तनोमे दूधको बढानेवाला तथा विशेषकरके बल, शुक्र और कफको करनेवाला है।

कषायभावान्न पुरीषभेदी न मूत्रलो नैव कफस्य कर्त्ता।
स्वादुर्विपाके मधुरोऽथसांद्रः सन्तर्पणः स्तन्यरुचिप्रदश्च ॥

अर्थ-उडद-कषेलेपनसे मलभेदक नही है और मूत्रजनकभी नही ह और न कफको करनेवालाहै, पचनेमें स्वादु, मधुर, स्निग्ध, तृप्तिकारक, स्तनोमे दूध प्रगट करनेवाला और रुचिकारक है।

अपिच।

माषः स्निग्धो बलश्लेष्ममलपित्तकरः सरः।
गुरूष्णोनिलहा स्वादुः शुक्रवृद्धिविरेककृत् (वाग्भ०)

अर्थ-उडद-स्निग्ध, बलकारक, कफजनक, मलकारक, पित्तकारक, सारक, भारी, गरम, वातविनाशक, स्वादिष्ठ, शुक्रजनक और दस्तावर है।

अपच्च।

माषः साधारण स्निग्धः शोषणोष्णः कफप्रदःवृष्यः पित्तकर पित्तकोपनो रोचको गुरुः॥बल्यःसन्तर्पणः स्वादुः पुष्टिकृन्मूत्रशुक्रलः। मलभेदकरो दुग्धकारको मांसवर्द्धकः ॥मेदवृद्धिकरश्चैव श्वासश्रमनिवारण। परिणामभवं शूलमर्दितं च विनाशयेत्। वातं चार्शं नाशयतीत्येवमार्यैर्निरूपितम्॥(९०)

अर्थ-उडद-स्निग्ध, शोषण, गरम, कफकारक, वीर्य्यवर्द्धक पित्तकारक, पित्तको कुपित करनेवाला, रुचिको उत्पन्न करनेवाला, भारी, बलकारक, तृप्तिजनक, स्वादिष्ठ, पुष्टिकारक, मूत्रजनक, मलभेदक, दुग्धकारक, मांसवर्द्धक, मेदवर्द्धक तथा श्वास, श्रम, परिणामशूल, अर्दितवात, वात और बवासीरको दूर करे है।

राजमाषनामानि।

राजमाषो महामाषश्चपलश्चवलः स्मृतः।

अर्थ-राजमाष, महामाष, चपल, चवल (वर्बट, महत्कर, द्विजसत्त,

नीलमाष,नृपमाष,नृपोचित,सितमाष,दीर्घबीज,निष्पाव,राजमाषक सुकुमार, दीर्घशिम्बी, क्षुधाभिजनक)



लोबिया.

संस्कृतभाषामे	राजमाष।
हिन्दीभाषामे	लोबिया।
वंगभाषामे	वरवटीकलाय, वोरा।
मराठीभाषामे	चंवळचा (अळसुंदे।
गुजरातीभाषामे	चोला।
कर्णाटकीभाषामे	वरवटा, अलसदे।
पंजाबीभाषामे	रैंस।
इंग्रेजीभाषामे	चाईनिझ डोलिकोस्। Chinese dolicos
लेटिन्भाषामे	डोलिकोस् सिनेन्सीस्। Dolichos sinensis
	विगना काटिऐंग्। Vigna catiang
फारसीभाषामे	लोबिया।
अरबीभाषामे	फारिका।

राजमाषगुणाः।

राजमाषो गुरुः स्वादुस्तुवरस्तर्पणः सरः।
रूक्षो वातकरो रुच्यः स्तन्यो भूरिबलप्रदः॥

श्वेतरक्तस्तथा कृष्णस्त्रिविध· सम्प्रकीर्त्तित· ।
यो महांस्तेषु भवति स एवोक्तो गुणाधिकः ॥ (°

अर्थ-लोविया-भारी,स्वादिष्ठ, कषेला,तृप्तिकारक, सारक,रुखा, वातकारक,रुचिजनक, स्तनोमे दूध करनेवाला और बलकारक है। सफेद, लाल और काला इन भेदोसे लोविया तीन प्रकारके है इनमे बडा लोविया अधिक गुणवाला जानना।

अपरञ्च।

राजमाष सरो रुच्य कफशुक्राम्लपित्तकृत् ।
स स्वादुर्वातलो रूक्ष· कषायो विशदो गुरु ॥ (च०सु०स०)

अर्थ-लोविया-सारक,रुचिकारक,कफकारी,शुक्रजनक,अम्लपित्तकारक,स्वादिष्ठ,वातकारक,रूखा, कषेला, विशद और भारी है।

अपिच।

रूक्षो गुरुर्बहुशकृच्चलकृच्च शिम्बीधान्याधमस्त्वमसि नागम एष मिथ्या। हे राजमाष तव राजपद प्रदत्त माषं विहाय विधिना तददृष्टमेव ॥ (वै० अ०)

अर्थ-हे राजमाष ! (लोविया)-जो कि, तुम रूखे, भारी, बहुत मलको करनेवाले,शिम्बीधान्योमे अधम हो यह बात मिथ्या नही है इसपरभी विधाताने तुमको और उरदोको छोडकर राजपद दिया यह प्रारब्धका फल नही तो क्या है ?।

अथ सूपगुणा ।

राजमाषभव· सूपः स्वादू रूक्ष· कषायक· ।
ग्राही गुरुर्वातकर स्तन्यकृद्रुचिकारक· ॥ (द्रव्यगुण)

अर्थ-लोवियेकी दाल-स्वादिष्ठ, रुखी, कषेली,मलरोधक,भारी, वातकारी, स्तनोमे दूध प्रगट करनेवाली और रुचिको उत्पन्न करनेवाली है।

निष्पावनामानि।

निष्पावो राजशिम्बी स्याद्वल्लक· श्वेतशिम्बिकः ।

अर्थ-निष्पाव,राजशिम्बी, वल्लक, श्वेतशिम्बिक ।

संस्कृतभाषामे	निष्पाव।
हिंदीभाषामें	भटवासु, भटरास, राजशिम्बीके बीज ।

वंगभाषामें	राजशिम्बीबीज, भेटरासु ।
मराठीभाषामें	कडवेवाल,पाढरे पावटे,तांबडे पावटे।ऑवरे।
गुजरातीभाषामें	ओलिया ।
कर्णाटकीभाषामें	आवरे, तोरेआवरे ।
तैलिङ्गीभाषामें	आनपचेट्ट ।
लैटिन्भाषामें	लेबलेबवल्गेरीस् Lablab Vulgaris

निष्पावगुणाः ।

निष्पावो मधुरो रूक्षो विपाकेऽम्लगुरुः सरः ।
कषायः स्तन्यपित्तास्रमूत्रवातविबधकृत् ।
विदाह्युष्णो विषश्लेष्मशोथहृच्छुक्रनाशनः ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-निष्पाव (भटवासु)–मधुर, रूखा, पाकमें अम्ल, भारी, वातकारी, कुछेक दस्तावर, कषेला, स्तनोंमें दूधको प्रगट करनेवाला तथा रक्तपित्त, मूत्र, वात और विबंधकारक है, दाहजनक, गरम तथा विष, कफ, सूजन और शुक्रको हरे है ।

अन्यच्च ।

निष्पावो वातपित्तास्रस्तन्यमूत्रकरो गुरुः ।
सरो विदाहि दृक्छुक्रकफशोफविनाशनः ॥ (वाग्भट)

अर्थ-निष्पाव-वात, पित्त, रुधिरविकार, स्तनोंमें दूध और मूत्रको उत्पन्न करेहैं । भारी, सारक, दाहकारक तथा दृष्टि, शुक्र, कफ और सूजनको दूर करे हैं ।

अपिच ।

निष्पावो मधुरो रूक्षः पाकेऽम्लः सारको गुरुः ।
उष्णः शोफकरो बल्यः पुष्टिकृत्तुवरो मतः ॥
विषदृष्टिहरः प्रोक्तः पूर्ववैद्यैः कृपालुभिः । (र० नि०)

अर्थ-भटवासु-मधुर, रूखा, पचनेमें अम्ल, सारक, भारी, गरम, सूजनको करनेवाला, बलकारक, पुष्टिकारक, कषेला तथा विष और दृष्टिको हरनेवाला है ।

अन्यच्च ।

निष्पावस्तुवरो मेध्यो दीपनो मधुरो रसे ।
कंठशुद्धिकरो रुच्यो ग्राहको मुनिभिर्मतः ॥

निष्पावसदृशास्त्वन्ये गुणा ज्ञेयाश्चिकित्सकैः ।

अर्थ-सफेद और नील निष्पाव-कडवे, मेधाजनक, दीपन, रसमें मधुर, कण्ठशोधक, रुचिकारक और ग्राही है शेष गुण निष्पावकी समान जानने ।

रक्तनिष्पावगुणाः ।

रक्तनिष्पावको रुच्यो मधुरः शीतलो गुरुः ।
किञ्चित्कषायो बल्यश्च वातलः पुष्टिकृन्मतः ॥
आध्मानकृद्गुणास्त्वन्ये निष्पावसदृशा मताः ।

अर्थ-लाल निष्पाव-रुचिकारक, मधुर, शीतल, भारी, किञ्चित्कषेला, बलकारी, वातकारक, पुष्टिकारक, आध्मानकारक और गुण निष्पावकी समान जानने ।

नदीनिष्पावगुणाः ।

नदीनिष्पावकस्तिक्तः कटुर्वातकरो गुरुः ।
रक्तप्रदः कफकरो रुचिकृत्तुवरो मतः ॥
विषदोषहरश्चैव मुनिभिः परिकीर्त्तितः । (नि० र०)

अर्थ नदीनिष्पाव-कडवा, चरपरा, वातकारक, भारी, रक्तकारक, कफकारक, रुचिजनक, कषेला और विषके दोषोंको हरनेवाला है ।

मसूरनामानि ।

मसूरो रागदालिस्तु मङ्गल्यः पृथुबीजकः ।
सूरः कल्याणबीजश्च गुरुबीजो मसूरकः ॥

अर्थ-मसूर, रागदालि, मङ्गल्य, पृथुबीजक, सूर, कल्याणबीज, गुरुबीज, मसूरक (मङ्गल्यक, मसुर, व्रीहिकाञ्चन, गभोलिक, ताम्बूल राग, हालासक, मसुरा, मसूरा, मसूरिका, मसूरि, मङ्गल्या, माङ्गल्या)

संस्कृतभाषामें	मसूर ।
हिंदीभाषामें	मसूर ।
बंगभाषामें	मुसूरि, कलाय ।
मराठीभाषामें	मसूर ।
गुजरातीभाषामें	मसूर ।
कर्णाटकीभाषामें	चणगी ।

तैलङ्गीभाषामे	मसूरपप्पु, चिरशनमलु ।
तामिलीभाषामे	मिसुर, पुरपुर ।
इंग्रेजीभाषामे	लेंटिल । Lentil
लाटन्भाषामे	ईरवंलेन्स । Ervylens
फारसीभाषामे	बुनोसुर्ख ।
अरबीभाषामे	अदस् ।

मसूरगुणा ।

मसूरो मधुरः शीतः संग्राही कफपित्तजित् ।
वातामयकरश्चैव मूत्रकृच्छ्रहरो लघुः ॥ (रा० नि०)

अर्थ-मसूर-मधुर,शीतल,मलरोधक,कफपित्तनाशक,वातरोगको करनेवाली,हलकी और मूत्रकृच्छ्र रोगको दूर करे हैं ।

अन्यच्च ।

रूक्षो विशोषी मधुरः प्रदिष्टः शूलार्तिगुल्मग्रहणीविकारान् ।
करोति वातामयवर्द्धनश्च पित्तास्रसकृच्छ्रहरो मसूरः॥(हा सं.)

अर्थ-मसूर-रूखी, विशोषक, मधुर तथा शूल, गुल्म और संग्रहणीरोगको उत्पन्न करनेवाली है, वातरोगोको बढानेवाली तथा रक्तपित्त और मूत्रकृच्छ्ररोगको हरनेवाली है।

अन्यच्च ।

मासूरा लघवोऽतिरूक्षविशदाश्चक्षुष्यमूत्रग्रहाः
श्लेष्मापित्तनिबर्हणा रुचिकरा वातव्यथाकारकाः ।
विष्टम्भं जनयन्ति कोष्ठधमन कृच्छ्राश्मरीछेदकाः
सर्वे पित्तविकारजेषु विहिता हृद्याश्च माधुर्यकाः ॥

अर्थ-मसूर-हलकी, अत्यन्त रूखी, विशद, नेत्रोको हितकारी, मूत्रग्रहनाशक, श्लेष्मापित्तनाशक, रुचिकारक, वातरोगकारक, विष्टम्भजनक, मलरोधक, मूत्रकृच्छ्र, पथरी और सर्व प्रकारके पित्तविकारोको दूर करे है, हृदयको हितकारी और मधुर है ।

अपिच ।

मसूरो लेपनो वर्ण्यो रूक्षो बद्धमलो हिम· ।
वाताध्मानकर· किञ्चित्पित्तास्रकफहा लघुः ॥

कषायो मधुरो मेदोहंता चासौ प्रकीर्त्तितः ।
तत्पर्णशाकं तुवरं लघु तिक्तश्च कीर्त्तितम् ॥

अर्थ-मसूरका लेप-वर्णको सुन्दर करनेवाला और त्वचाके रोगोंको हरनेवाला है, मसूर-रूखी, मलवर्द्धक, शीतल, वातकारक, किंचित् आध्मानकारक, रक्तपित्त और कफनाशक, हलकी, कषेली, मधुर, मेदनाशक है। इसके पत्तोंका शाक-कषेला, हलका और कडवा है।

चणकनामानि।

चणको हरिमन्थः स्याद्वाजिमन्थश्च जीवनः ।

अर्थ-चणक, हरिमन्थ, वाजिमन्थ, जीवन (हरिमन्थक, हरिमन्थज, चण, सुगन्ध, कृष्णचञ्चुक, बालभोज्य, वाजिभक्ष्य, कंचुकी, बालभैषज्य, सकलाप्रिय)

संस्कृतभाषामें	चणक।
हिन्दीभाषामें	चने, चना, छोला।
बंगभाषामें	छोलारगाछ, बुट्ट।
मराठीभाषामें	हरभेरे।
गुजरातीभाषामें	चण्या।
कर्णाटकीभाषामें	कडले, विलियकडले।
तैलिङ्गीभाषामें	शलंगालु।
इंग्रेजीभाषामें	ग्राम। Gram
लैटिनभाषामें	सीसरएरियटिन। Cicer Arietinum
फारसीभाषामें	नखूद।
अरबीभाषामें	हुमस्।

चणकगुणाः।

चणकः शीतलो रूक्षो रक्तपित्तकफापहः ।
लघुः कषायो विष्टम्भी वातलः कुष्ठनाशनः ॥ (म नि.)

अर्थ-चने-शीतल, रूखे, रक्तपित्तनिवारक, कफहारक, हलके, कषेले विष्टम्भकारक, वातवर्द्धक और कुष्ठनाशक है।

अन्यच्च।

चणको मधुरो रूक्षो मेहजिद्वातपित्तकृत् ।

दीप्तिवर्णकरी बल्यो रुच्यश्चाध्मानकारकः॥(रा०नि०)

अर्थ-चने-मधुर, रूखे, प्रमेहनाशक, वातपित्तकारक, दीपन, वर्णकारक, बलकारक, रुचिकारी और आध्मानको करनेवाले हैं।

अपिच ।

रक्ते कफे पीनसके तु कंठे गलामये वातरुजे सपित्ते ।
शीतः प्रतिश्यायकृमीन्निहन्ति शुष्कस्तथार्द्रश्चणकः प्रशस्तः ।
(हा० सं०

अर्थ-सूखे तथा गीले चने-रुधिरविकार, कफ, पीनस, कण्ठरोग गलरोग, वातरोग, पित्तरोग प्रतिश्याय और कृमिरोगको दूर करे है और शीतल है।

अन्यच्च ।

चणको वातलः शीतः कफासृक्पित्तपुंस्त्वनुत्॥ (रा० व०)

अर्थ-चने-वादी, शीतल तथा कफ, रक्तपित्त और पुरुषतानाशक है।

अन्यच्च ।

चणकः शीतलो रूक्षः पित्तरक्तकफापहः। लघुः कषायो विष्टम्भी वातलो ज्वरनाशनः ॥ स चाङ्गारेण सभृष्टस्तैलभृष्टश्च तद्गुणाः । आर्द्रभृष्टो बलकरो रोचनश्च प्रकीर्त्तितः ॥ शुष्कभृष्टोतिरूक्षश्च वातकुष्ठप्रकोपनः । स्विन्नः पित्तकफ हन्यात्सूपः क्षोभकरो मतः ॥ आर्द्रोतिकोमलो रुच्यः पित्तशुक्रहरो हिमः । कषायो वातलो ग्राही कफपित्तहरो लघुः ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-चने-शीतल, रूखे, रक्तपित्तनाशक, कफघ्न, हलके, कषेले, विष्टम्भकारक, वादी और ज्वरनाशक है। वही चने अंगारों तथा तेलमे भुनेहुये पूर्वोक्त गुणोको करनेवाले है। गीले भुनेहुये चने-बल कारक और रोचक है। सूखे भुने चने अत्यन्त रूखे तथा वात और कोढको कुपित करनेवालेहै। सीजेहुये चने-पित्त और कफनाशक हैं। चनेकी दाल-क्षोभको करनेवाली है। कच्चे चने-अत्यन्तकोमल, रुचिकारक, पित्तनाशक, शुक्रनिवारक, शीतल, कषेले, वातकारक, मलरोधक, कफपित्तनाशक और हलके हैं।

अन्यच्च।

आमश्चण· शीतलरुच्यकारी सन्तर्पणो दाहतृपापहारी। गौल्यो

श्मरीशोषविनाशकारी कषाय ईषत्कफवीर्य्यकारी (रा.नि)

अर्थ-कच्चे-चने-शीतल, रुचिकारक, तृप्तिजनक, दाहनाशक, तृषानिवारक, गौल्य,अश्मरीको दूर करनेवाले, शोषनाशक,किञ्चित्कषेले कफ और वीर्य्यकारक है।

अपिच भृष्टचणकगुणा ।

भृष्टस्तु चणकश्चोष्णो रुच्यो रक्तरुजाकरः।लघुर्बल्यः शुक्लश्च तेजोवृद्धिकरः स्मृतः॥ विना जलेन च भृष्टाश्चातिरूक्षाश्च वातलाः। कुष्ठप्रवर्द्धनाः प्रोक्ता गुणास्त्वन्ये तु पूर्ववत्॥ (र०नि०)

अर्थ-भुनेहुये चने-गरम, रुचिकारी, रक्तरोगकारक, हलके, बलकारक, शुक्रजनक, शरीरको तेज देनेवाले तथा पसीना,शीतलता, आम, वात और क्रमका नाशकरे हैं। सूखे भुनेचने अत्यन्त रूखे, बादी, कुष्ठवर्द्धक और गुण पहिलेके समान जानने।

कृष्णचणकगुणा ।

कृष्णस्तु चणकः शीतो मधुरश्च रसायनः।
बलकृच्छ्वासकासघ्नः पित्तातीसारपित्तहा॥ (नि० र०)

अर्थ-काले चने-शीतल, मधुर, रसायन, बलकारक तथा श्वास, खासी, पित्तातीसार और पित्तको दूर करेहैं।

चणकशाकगुणा ।

चणकानां दलं चाम्ल किञ्चिद्वातप्रकोपनम्।
मलस्तम्भकर रुच्य तर्पण चाग्निकारकम्॥
कफनाशकर प्रोक्तं पूर्ववैद्यैः कृपालुभिः (र० नि०)

अर्थ-चनेका शाक-अम्ल, किञ्चित् वातकारक, मलस्तम्भक, रुचिजनक, तृप्तिकारक, अग्निकारक और कफनाशक है।

अपच्च।

रुच्यं चणकषाय स्याद्दुर्जर कफवातकृत्।
अम्ल विष्टम्भजनक पित्तनुद्दन्तशोथहृत्॥ (भा० प्र०)

अर्थ-चनेके पत्तोका शाक-कषेला, कठिनतासे पचनेवाला, कफ और वातकारक, अम्ल, विष्टम्भजनक, पित्तनाशक और दांतोकी सूजनको दूर करेहै।

आढकीनामानि ।



आढकी तुवरी वर्य्या मृत्ताल च मृतालकम् ।
काक्षी करवीरभुजा वृत्तबीजा सुराष्ट्रजम् ॥

अर्थ–आढकी, तुवरी, वर्य्या, मृत्ताल, मृत्तालक, काक्षी, करवीरभुजा, वृत्तबीजा, सुराष्ट्रज (पीतपुष्पा, मृत्स्ना, तुवरिका, मृतालक, शणपुष्पिका)

संस्कृतभाषामे	आढकी ।	
हिंदीभाषामे	अरहर ।	
बंगभाषामे	अडहर, आड़रि ।	
मराठीभाषामे	तुरी ।	
गुजरातीभाषामे	तुरदाल्य ।	
कर्णाटकीभाषामे	कटलाकटु, तौगरी ।	
तैलिंगीभाषामे	कादुलु ।	
इंग्रेजीभाषामे	पीजीअन्पी ।	Pigeon pea
लैटिन्भाषामे	केजेनस इंडिकस्	Cajanus indicus
फारसीभाषामे	शाखुल ।	

आढकीगुणा ।

मृदुः कषाया च सरक्तपित्त वात कफ हन्ति मुखव्रणश्च ।
गुल्मज्वरारोचककासछर्दिहृद्रोगदुर्नामहराढकी स्यात् ॥ (हा०)

अर्थ–अडहर–कषेली तथा रक्तपित्त, वात, कफ, मुखव्रण, गुल्म, ज्वर, अरुचि, खासी, वमन, हृदयरोग और बवासीरको दूर करेहै।

अन्यच्च ।

तुवर्यतिकषाया च मेदःश्लेष्मास्रपित्तजित् ।
विबन्धाध्मानकृत्स्वादुः स्वादुपाकाल्पवातला ॥
शीतला बद्धविण्मूत्रा लघ्वी रूक्षा प्रकीर्त्तिता (शो नि.)

अर्थ-अडहर-अत्यन्त कषेली, मेद, कफ और रक्तपित्तनाशक है, विबन्धकारक, आध्मानकारक, स्वादिष्ट, पचनेमे स्वादिष्ट, किञ्चित् वातकारक, शीतल, मल और मूत्रको बांधनेवाली, हलकी और रूखी है।

अपिच ।

आढकी मधुरा किञ्चिद्वातला च कषायका। गुर्वी रुच्या ग्राहिणी च रूक्षा वर्ण्या च शीतला।कफपित्तज्वरविषरक्तरुग्गुल्मवातनुत् । अर्शोनाशकरा प्रोक्ता घृतयुक्ता च वातहा ॥ कफपित्तहरा लेपैः सेकैर्मेदकफापहा। तुवरी दालिका पथ्या किञ्चिद्वातकरा मता ॥ कृमित्रिदोषशमनी घृतयुक्ता त्रिदोषहा ।

अर्थ-साधारण अडहर-मधुर, किञ्चित् वातकारक, कषेली, भारी, रुचिकारी, मलरोधक, रूखी, वर्णकारक, शीतल, तथा कफ पित्तज्वर, विष, रुधिरविकार, गुल्म, वात और बवासीरको दूर करे है और घीके साथ वातका नाश करे है। इसका लेप करनेसे कफ और पित्तका नाश होता है। इसका सेक करनेसे मेद और कफ दूर होते है। इसकी दाल-पथ्य, किञ्चित् वातकारक तथा कृमि और त्रिदोषका नाश करेहै और घीयुक्त त्रिदोषनाशक है।

श्वेताढकीगुणाः ।

श्वेता तु तुवरी गुर्वी वातपित्तप्रकोपदा ।
अम्लपित्तकरा ग्राहिण्यपथ्याध्मानकारिणी ॥

अर्थ-सफेद अडहर-भारी, वातपित्तप्रकोपक, अम्लपित्तकारक, मलरोधक, पथ्य और आध्मानकारक है।

रक्ताढकीगुणाः ।

रक्ता तु तुवरी रुच्या बल्या पथ्या ज्वरापहा ।
पित्तसन्तापादिनानारोगनाशकरी मता ॥

अर्थ-लाल अडहर-रुचिकारक, बलकारक, पथ्य, ज्वरनाशक तथा पित्त और सन्ताप इत्यादि नानाप्रकारके रोगोंको दूर करेहै ।

कृष्णाढकीगुणा ।

कृष्णा तुतुवरी बल्या चाग्निर्दीप्तिकरा मता ।
पित्तदाहप्रशमनी ऋषिभिः परिकीर्त्तिता ॥ (रत्नाकर)

अर्थ-काली अडहर-बलकारक, अग्निप्रदीपक, पित्त और दाहको शान्ति करनेवालीहै ।

कलायनामानि ।





कलायो मुण्डचणको हरेणू रेणुकः स्मृतः ॥

अर्थ-कलाय, मुण्डचणक, हरेणु, रेणुक, ' (सतीलक, हरेणु,

खण्डक, त्रिपुट, अतिवर्तुल, शमन, नीलक,कण्टी, सतील,सतीन, हरेणुक, सतीनक)

संस्कृतभाषामें	कलाय ।
हिन्दीभाषामें	मटर, केराव ।
वंगभाषामें	वॉटुला मटर, मठर, तेओडा मटर ।
मराठीभाषामें	वाटाण ।
गुजरातीभाषामें	मटाणा ।
कर्णाटकीभाषामें	वट्टकडले ।
तैलङ्गीभाषामें	पेद्दइर्वे ।
इंग्रेजीभाषामें	फील्डपी । Field pea
लैटिन्भाषामें	पाईसम् सेटाइवम् । Pisum sativum

अस्य गुणा ।

कलायः कुरुते वातं पित्त दाहकफापहः ।
रुचिपुष्टिप्रदः शीतः कषायश्चामदोषकृत् ॥ (रा०नि०)

अर्थ-मटर-वातकारक, पित्तनाशक, दाहनिवारक, कफहारक, रुचिकारक, पुष्टिजनक, शीतल, कषेला और आमदोषको करे है ।

अन्यच्च ।

कलायो मधुरः स्वादुः पाके रूक्षश्च शीतलः ।
"रक्तहा कफपित्तघ्नो भिन्नविट्कोतिवातलः"॥ (भा०प्र०)

अर्थ-मटर-(केराव)-मधुर, पचनेमे स्वादिष्ट, रूखी, शीतल, रुधिरविनाशक, कफपित्तहारक, मलको निकालनेवाली और वातको करनेवाली है ।

अपिच ।

किञ्चित्कषाया मधुराः प्रदिष्टा रक्तप्रशान्तिं जनयन्ति बल्याः । किञ्चित्सवातं विनिहन्ति पित्तं कलायका मुद्गसमानरूपाः॥ (हि०स०)

अर्थ-मटर-किञ्चित्कषेली, मधुर,रक्तविकारको शान्ति करनेवाली, बलकारक, किञ्चित् वात और पित्तको दूर करे है । यह रूपमें मूँगकी समान होतीहै ।

त्रिपुटनामानि ।

त्रिपुटः खण्डिकोपि स्यात्कथ्यन्ते तद्गुणा अथ ॥

संस्कृतभाषामे	त्रिपुट, खण्डिक ।
हिन्दीभाषामे	खेसारी, कसूर×कस्सा ।
वंगभाषामे	खेसारिकलाय ।
मराठीभाषामे	लांग, लाक ।
गुजरातीभाषामे	मटर ।
तैलिङ्गीभाषामे	लांक ।
इंग्रेजीभाषामे	चिकिलिंगवेच । Chickling Vetch
लेटिन्भाषामे	लेथिरस सेटिवस् । Lathyrus Sativus
	पिस एर्वेन्स । Pisum Arvens
फारसीभाषामे	मासंग, जलवान् ।
अरबीभाषामे	हवुल वकर, खलज ।

त्रिपुटगुणा ।

त्रिपुटो मधुरस्तिक्तस्तुवरो रूक्षणो भृशम् ।
कफपित्तहरो रुच्यो ग्राहकः शीतलस्तथा ॥
किन्तु खञ्जत्वपङ्गुत्वकरो वातातिकोपनः । (भा० प्र०)

अर्थ-त्रिपुट (खेसारी)-मधुर,कडवा,कषेला,अत्यन्त रूखा,कफपित्तनाशक,रुचिकारक,मलरोधक, शीतल, अत्यन्त वातको कुपित करनेवाला और खजापन तथा लगडेपनको देनेवाला है ।

अन्यच्च ।

रूक्षो विशोषी मधुरः प्रदिष्टः स्नायुं करोत्यस्थिगतं बलिष्ठम् ।
शूलं विबन्धभ्रमशोफकर्त्ता दाहार्शहृद्रोगविकारकारी॥(हा॰ स॰)

अर्थ-त्रिपुट (कस्सा)-रूखा, शोधक, मधुर, हड्डीकी नसोंको बलवान करनेवाला तथा शूल, विबन्ध, भ्रम, सूजन, दाह, ववासीर और हृदय रोगको उत्पन्न करेहै ।

अपिच ।

लाङ्कस्तु शीतलो रुच्यो मधुरो वातकारकः। गुरुश्च तुवरो रूक्षः कफपित्तविनाशकः ॥वृषभाणां हितः प्रोक्तः पर्णशाका तु वातला । रुच्या पित्तकफाना तु हननी परिकीर्तिता॥(नि०र०)

अर्थ-त्रिपुट तथा लांक-खेसारी-शीतल, रुचिकारक, मधुर, वातकारक, भारी, कषेली, रूखी, कफपित्तनाशक और बैलोंको

हितकारी है । इसके पत्तोका, शाक-बादी, रुचिकारी तथा पित्त और कफनाशक है ।

कुलित्थनामानि ।

कुलित्थस्ताम्रबीजश्च श्वेतबीजः सितेतरः ॥

अर्थ-कुलित्थ, ताम्रबीज, श्वेतबीज, सितेतर, (कालवृन्त, ताम्रवृक्ष, कुलत्थिका, ताम्रवृन्त, ताम्रबीज, कुलत्थ)

संस्कृतभाषामें	कुलित्थ ।
हिन्दीभाषामें	कुलथी ।
बंगभाषामें	कुलथी, कलाय ।
मराठीभाषामें	कुळीथ, हुलगे ।
गुजरातीभाषामें	कलथी ।
कर्णाटकीभाषामें	हुलुवलेतोसी ।
तैलिंगीभाषामें	वुलावुल ।
इंग्रेज़ीभाषामें	टुफ्लावर्डडोलीकोस् । Two flowered dolichos
लैटिन्भाषामें	डोलीकोस् बाईफ्लोरस् । Dolichos Biorotjs
फारसीभाषामें	किल्लत, मुखहिंदी ।
अरबीभाषामें	हबुलकिलत ।

कुलत्थगुणाः ।

कुलत्थस्तु कषायोष्णो रूक्षो वातकफापहः ॥ (रा० नि०)

अर्थ-कुलथी-कषेली, गरम, रूखी तथा वात और कफनाशक है ।

अन्यच्च ।

कुलत्थः कफवातघ्नो ग्राह्युष्णो बृंहणः कटुः ।
गुल्मशुक्राश्मरीमेदःश्वासकासप्रमेहजित् ॥ (राज०)

अर्थ-कुलथी-कफवातनाशक, मलरोधक, गरम, पुष्टिकारक, चरपरी तथा गुल्म, शुक्र, पथरी, मेद, श्वास, खाँसी और प्रमेहको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

कुलत्थ कटुक पाके कषायः पित्तरक्तकृत् । लघुर्विदाही वीर्य्योष्ण· श्वासकासकफानिलान् ॥ हन्ति हिक्काश्मरीशुक्रदाहानाहान्सपीनसान् । स्वेदसंग्राहको मेदोज्वरक्रिमिहर· परः ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-कुलथी-पाकमे कटु, कपेली, रक्तपित्तकारक,हलकी, दाह जनक, उष्णवीर्य्य तथा श्वास, खाँसी, कफ, वात, हिचकी, पथरी, शुक्र, दाह, आनाह, पीनस,मेद, ज्वर और कृमिरोगको दूर करे है। तथा पसीनेको रोकनेवाली है।

अन्यच्च ।

उष्णो जयेन्मारुतपीनसं तु कासप्रतिश्यायविबन्धगुल्मान् । हिक्कां सरक्तस्तु बलासपित्त निहन्ति मेदश्च कुलत्थकोऽयम् । (हा)

अर्थ-कुलथी-गरम,वात,पीनस,खाँसी,प्रतिश्याय, विबन्ध,गुल्म, हिचकी,रक्त,कफ,पित्त, और मेदोरोगको दूर करे है।

अन्यच्च ।

वीर्य्ये चोष्णाः कुलत्थाः कफपवनहराः पित्तरक्तप्रदाश्च
पाकेम्लाः श्वासकासोदरहृदयशिरोबस्तिशूलापहाश्च ।
मूत्राघाताश्मरीघ्ना नयनगदहराः शुक्रविच्छेदनाश्च
श्रेष्ठा दुर्नामकुष्ठश्वयथुगदयकृद्गुल्मतूनीगदेषु ॥

अर्थ-कुलथी-उष्णवीर्य्य,कफवातनाशक,रक्तपित्तजनक, पचनेमे, अम्ल तथा श्वास,खाँसी, उदररोग,हृदयरोग, शिरोरोग,वास्तिशूल, मूत्राघात, अश्मरी (पथरी), नेत्ररोग,शुक्र,बवासीर, कोढ, सूजन, यकृत, गुल्म, और तूनीरोगको हरनेवली है।

अपिच ।

उष्णाः कुलत्थाः पाकेम्ला विषं स्थावरजङ्गमम् ।
कासार्शःकफवातांश्च घ्नन्ति पित्तास्रदाः परम् ॥ (वाग्भट)

अर्थ-कुलथी-गरम, पचनेमे अम्ल, तथा स्थावरविष, जंगमविष, खाँसी, बवासीर, कफ और वातका नाश करे है तथा रक्तपित्तको उत्पन्न करेहै।

तिलकनामानि ।

तिलस्तु होमधान्यं स्यात्पवित्रः पितृतर्पणः ।
पापघ्न पूतधान्य च जटिलस्तु वनोद्भवः ॥

अर्थ-तिल,होमधान्य,पवित्र,पितृतर्पण, पापघ्न, पूतधान्य, जटिल, वनोद्भव (स्नेहफल, पूरफल, तैलफल)



संस्कृतभाषामे	तिल।
हिन्दीभाषामे	तिल, कालेतिल, तिली।
बंगभाषामे	तिलगाछ।
मराठीभाषामें	तीळ, काळ तीळ, चोखे तीळ।
गुजरातीभाषामे	तल।
कर्णाटकीभाषाम	एलु
तैलिङ्गीभाषामे	नोवुलु, सन्विनूने, नुव्वुलु।
तामिलीभाषामे	वाल्लेनय।
द्राविडाभाषाम	वारिकतिल।
इंग्रेजीभाषामे	सिसेम नैजरसीड्स। Sisamum Niger seeds
लैटिन्‌भाषाम	सिसेमम् इण्डिकम्। Sesam Indicum
फारसीभाषामे	कुञ्जद।
अरबीभाषामे	सिमसिम।

तिलगुणा।

तिलो रसे कटुस्तिक्तो मधुरस्तुवरो गुरुः। विपाके कटुकः स्वादु: स्निग्धोष्णः कफपित्तकृत् ॥ बल्य: केश्यो हिमस्पर्शस्त्वच्यः स्तन्यो व्रणे हितः। दन्त्योऽल्पमूत्रकृद्ग्राही वातघ्नोऽग्निमतिप्रदः ॥ कृष्णः श्रेष्ठतमस्तेषु शुक्लो मध्यम उच्यते। अन्ये हीनतराः प्रोक्तास्तज्ज्ञै रक्तादयस्तिलाः ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-तिल-चरपरे, कडवे, मधुर, कषेले, भारी, पचनेमें चरपरे, स्वादु, स्निग्ध, उष्ण, कफपित्तकारक, बलवर्द्धक, केशोंको हितकारी,

स्पर्शमे शीतल, त्वचाको हितकारी, स्तनोमे दूध उत्पन्न करनेवाले, व्रणरोगमे हितकारी, दांतोंको हितकारी, अल्पमूत्रकारक, मलरोधक, वातविनाशक और बुद्धिको उत्पन्न करे हैं। सर्वतिलोमे काले तिल उत्तम हैं, सफेद तिल मध्यम है, यह वीर्यवर्द्धक हैं और रक्तआदि तिल हीनगुणवाले हैं।

अन्यच्च ।

"ईषत्कषायो मधुरः सतिक्तः सग्राहिकः पित्तकरस्तथोष्णः।
तिलो विपाको मधुरो बलिष्ठः स्निग्धो व्रणे लेपनपथ्य उक्तः॥
दन्त्योऽग्निजननोल्पमूत्रः स्तन्योऽथ केश्योनिलहा गुरुश्च ।
तिलेषु सर्वेष्वसितः प्रधानो मध्यः सितो हीनतरास्तथान्ये॥"
(आ, सं.)

अर्थ-तिल-किञ्चित्कषैले, मधुर, कडवे, मलरोधक, पित्तकारक, गरम, पचनेमे मधुर, स्निग्ध, व्रणके लेपमे पथ्य, दाँतोंको हितकारी अग्निजनक, अल्पमूत्रकारक, स्तनोमे दूध उत्पन्न करनेवाले, केशोके हितकारी, वातहारी और भारी है। सर्व तिलोमे काले तिल प्रधान है, सफेद मध्यम और दूसरे अधम है।

अस्य पिण्याकगुणा ।

पिण्याकं मधुरं रुच्यं तीक्ष्णं नेत्रविकारकृत् ।
मलावष्टम्भकं रूक्षं कफवातप्रमेहनुत् ॥
पित्तास्रबलपुष्टिञ्च ददातीति भिषङ्मतम् । (नि० र०)

अर्थ-तिलोकी खल,-मधुर, रुचिकारक, तीक्ष्ण, नेत्रविकारको करनेवाली, मलस्तंभक, रूखी, कफ, वात और प्रमेहनाशकहै, रक्तपित्त, बल और पुष्टिको देनेवाली है।

अतसीनामानि ।

अतसी पिच्छिला देवी मदगन्धा मदोत्कटा ।
उमा क्षुमा हैमवती सुनीला नीलपुष्पिका ॥

अर्थ-अतसी, पिच्छिला, देवी, मदगन्धा, मदोत्कटा, उमा, क्षुमा, हैमवती, सुनीला, नीलपुष्पिका (चणका, क्षौमी, रुद्रपत्नी, सुवर्चला, नीलपुष्पी, पार्वती, मसृणा, तैलोत्तमा)



संस्कृतभाषामे	अतसी ।
हिन्दीभाषामे	अलसी, तिसी, मसीना ।
बंगभाषामे	मसिना तिसी ।
मराठीभाषामे	जवस, अळशी ।
गुजरातीभाषामें	अळशी ।
कर्णाटकीभाषाम	असगे ।
तैलङ्गीभाषामे	नल्लपगसिचेट्टु ।
इंग्रेजीभाषाम	कामन् फ्लेक्ससीड् Common flaxseeds Linseeds
लैटिन्भाषामें	लीनीसेमीना । Lini Semina
	लीनडासिटेटिसिम । Linum Usitatissimum
फारसीभाषामे	तुख्मेकतान ।
अरबीभाषामे	वजरुलकतान ।

अतसीगुणा ।

अतसी मदगन्धा स्यान्मधुरा बलकारिका ।
कफवातकरी चेषत्पित्तहृत्कुष्ठवातनुत ॥ (रा० नि०)

अर्थ-अलसी-मदगन्धयुक्त, मधुर, बलकारक, किञ्चित् कफवात कारक, पित्तनाशक, तथा कुष्ठ और वातको दूर करेहै ।

अन्यच्च ।

अतसी मधुरा तिक्ता स्निग्धा पाके कटुर्गुरुः ।
उष्णा दृक्छुक्रवातघ्नी कफपित्तविनाशनी॥(भा० प्र०)

अर्थ-अलसी-मधुर, कडवी, स्निग्ध, पचनेमे चरपरी, भारी, गरम तथा दृष्टि, शुक्र, वात और कफ पित्तका नाश करनेवाली है ।

अन्यच्च ।

अतसी शुक्रदृष्टिघ्नी स्निग्धा वातास्रजिद्गुरुः ॥ (म०नि०)

अर्थ-अलसी-शुक्रनाशक, दृष्टिनाशक, स्निग्ध, वातरक्तविनाशक और भारी है ।

अपिच ।

अतसी मधुरा स्निग्धा गुर्वी चोष्णा बलप्रदा ।
पाके कटी च तिक्ता च कफवातव्रणापहा ॥
पृष्ठशूल च शोथं च पित्तं शुक्र दृशं जयेत् ।
पर्णमस्याः कासकफवातनुच्छ्वासहृत्तथा ॥ (नि० र०)

अर्थ-अलसी-मधुर, स्निग्ध, भारी, गरम, बलकारक, पचनेमे चरपरी, कडवी तथा कफ, वात, व्रण, पृष्ठशूल, सूजन, पित्त, शुक्र और दृष्टिका नाश करेहै । इसके पत्ते-खाँसी, कफ, वात और श्वासको दूर करे है ।

सर्षपनामानि ।

सर्षपः कटुकस्नेहो भूतघ्नो रक्षिताफलः ।
उग्रगन्धो ग्रहघ्नश्च तन्तुभोथ कदम्बकः ॥

अर्थ-सर्षप, कटुकस्नेह, भूतघ्न, रक्षिताफल, उग्रगन्ध, ग्रहघ्न तन्तुभ, कदम्बक (सरिषप, कदम्बद, बिम्बट, कदम्ब, तन्तुक, कटुस्नेह, राजक्षवक)

गौरसर्षपनामानि ।





तीक्ष्णकश्च दुराधर्षो रक्षोघ्नः कुष्ठनाशनः ।
सिद्धप्रयोजनः सिद्धसाधनः सितसर्षपः ॥

अर्थ-तीक्ष्णक, दुराधर्ष, रक्षोघ्न, कुष्ठनाशक, सिद्धप्रयोजन, सिद्धसाधन, सितसर्षप(गौर, अनघ्य,सिद्धार्थ,भूतनाशन, कटुस्नेह, ग्रहघ्न, कण्डूघ्न, राजिकाफल, गुरुघ्न)

संस्कृतभाषामे	सर्षप, गौरसर्षप ।
हिन्दीभाषामे	सरसो, सफेदसरसो ।
वंगभाषामे	सरिषा, सर्षे, श्वेतसर्षे ।
मराठीभाषामें	शिरस, श्वेताशिरस ।
गुजरातीभाषामे	शरशव ।
कर्णाटकीभाषामें	बिलीयसासेव ।
तैलिङ्गीभाषामे	पाच्चाअश्वालु ।
इंग्रेजीभाषामे	सिनापिसआल्वा । Sinapisalba
लेटिन्भाषामे	ब्रेसिका केपेस्ट्रिस् । Brassicacampestris
फारसीभाषामे	सर्षफ ।
अरबीभाषामे	उफॅअबीयद् ।

सर्षपगुणा ।

सर्षपस्तु रसे पाके कटुर्हृद्यः सतिक्तक ।तीक्ष्णोष्णः कफवातघ्नो रक्तपित्ताग्निवर्द्धनः॥रक्षोहरो जयेत्कण्डूकुष्ठकोष्ठकृमिग्रहान् । यथारक्तस्तथा गौरः किन्तु गौरो वरो मतः ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-सरसो रस और पाकमे-चरपरी है, स्निग्ध, कडवी,तीक्ष्ण, गरम, कफवातनाशक, रक्तपित्तजनक,अग्निवर्द्धक तथा राक्षसबाधा, कण्डू, कुष्ठ, कोढ, कृमि और ग्रहकी बाधाको दूर करनेवाली है, लाल और सफेद सरसो समानही गुणवाली है, किन्तु तोभी सफेद सरसों लालकी अपेक्षा उत्तम है ।

अन्यच्च ।

सर्षप· कटुकस्तिक्तस्तीक्ष्णश्चोष्णोग्निदीपनः । किञ्चिद्रूक्षः पित्तलश्च रक्तपित्तकरो मतः॥ रूक्षो वात कफ कण्डूं कुष्ठ शूलं कृमीञ्जयेत्।ग्रहपीडां च पीडांच नाशयेदिति कीर्तितः॥(नि र)

अर्थ-सरसो-चरपरी, कडवी, तीक्ष्ण, गरम, अग्निदीपक, किञ्चित् रूखी, पित्तकारक, रक्तपित्तजनक, रूक्ष तथा वात, कफ, कण्डू, कुष्ठ, शूल, कृमि, ग्रहपीडा और पीडाको दूर करे है।

सिद्धार्थगुणा ।

सिद्धार्थः कटुकस्तिक्तो रुच्योष्णो वातरक्तकृत् ।
ग्रहपीडार्शत्वग्दोषशोथव्रणविषापहः ॥

अर्थ-सफेद सरसो-चरपरी, कडवी, रुचिकारक, गरम, वातरक्तकारक तथा ग्रहपीडा, ववासीर, त्वचाके दोष, सूजन, व्रण और विषका नाश करे है।

सर्षपशाकगुणा ।

पर्णशाका सरा चाम्ला पित्तला तुवरा गुरुः ।
स्वाद्वी चोष्णा च पट्वी च कफनाशकरी मता ॥ (नि० र०)

अर्थ-सिरसोके पत्तोका शाक-सारक, अम्ल, पित्तकारक, कषेला, भारी, स्वादिष्ठ, गरम, खारी और कफहारी है।

राजिकानामानि ।

राजी तु राजिका तीक्ष्णगन्धा क्षुज्जनिकासुरी ।
क्षवः क्षुताभिजनकः कृमिकः कृष्णसर्षपः ॥

अर्थ-राजी, राजिका, तीक्ष्णगन्धा, क्षुज्जनिका, आसुरी, क्षव, क्षुताभिजनक, कृमिक, कृष्णसर्षप (क्षुधाभिजनन, कृष्णिका, कटु, असुरी, काकोदुम्बारिका, रक्तिक, रक्तसर्षप, अतितीक्ष्णा, मधुरिक, क्षवक, क्षुतक, क्षव, ज्वलन्ती, ज्वलत्प्रभा)

राजसर्षपनामानि ।

राजक्षवकः कृष्णातीक्ष्णफला राजिका राज्ञी ।
सा कृष्णसर्षपा विज्ञेया राजसर्षपाख्या च ॥

अर्थ-राजक्षवक, कृष्णा, तीक्ष्णफला, राजिका, राज्ञी, कृष्णसर्षपा, राजसर्षप (कृष्णिका, सुरी, क्षुद्रक, व्यष्टक, कटुक, क्षव, क्षुताभिजनन, क्षुधाभिजनन)



संस्कृतभाषामें	राजिका, राजसर्षप ।
हिन्दीभाषामें	राई, लाई ।
बंगभाषामें	राइसष, कालसर्ष, राजसर्षा, राइसरिषा ।
मराठीभाषामें	मोहरी, रायी ।
गुजरातीभाषामें	राई जम्बुसरी अने देशी ।
कर्णाटकीभाषामें	सासिराई ।
तैलिङ्गीभाषामें	वर्णालु ।
इंग्रेजीभाषामें	मस्टर्ड सीड्स् । Mustrd Seeds
लैटिनभाषामें	सिनापिस् नाईग्रा ब्रोसेका नाईग्रा । Sinapis nigra, Brossica Nigra
अरबीभाषामें	खरदल ।

राजिकागुणाः ।

आसुरी कटुतिक्तोष्णा वातप्लीहार्तिशूलनुत् ।
दाहपित्तप्रदा हन्ति कफगुल्मकृमिव्रणान् ॥ (रा० नि०)

अर्थ-राई-चरपरी, कडवी, गरम, वात, प्लीहा और शूलनाशक है । दाहजनक, पित्तकारक, तथा कफ, गुल्म, और कृमिरोगको हरनेवाली है

अन्यच्च ।

राजिका कफपित्तघ्नी तीक्ष्णोष्णा रक्तपित्तकृत् ।
किञ्चिद्रूक्षाग्निदा कण्डूकुष्ठकोष्ठकृमीन्हरेत् ॥
अतितीक्ष्णा विशेषेण तद्वत्कृष्णापि राजिका । (भा० प्र०)

अर्थ-राई-कफपित्तनाशक, तीक्ष्ण, गरम, रक्तपित्तकारक, किश्चित् रूखी, अग्निवर्द्धक तथा कण्डू, कुष्ठ, कोष्ठरोग और कृमिरोगको दूर करे है। काली राईके भी गुण राईकी समान है, विशेष करके अत्यन्त तीक्ष्ण है।

राजसर्षपगुणा ।

राजसर्षपकश्चोष्णः पित्तलो दाहकारकः ।
कटुस्तिक्तो गुल्मकुष्ठकण्डूव्रणरुजापहः ॥
वातशूल नाशयतीत्येव पूर्वैर्निवेदितम् ।

अर्थ-राजसर्षप- गरम, पित्तजनक, दाहकारक, चरपरी, कडवी तथा गुल्म, कुष्ठ, कण्डू, व्रण और वातशूलका नाश करे है।

राजिकापत्रशाकगुणा ।

राजिकापर्णशाका तु कट्वी चोष्णा बलप्रदा ।
स्वाद्वी पित्तकरी ज्ञेया कृमिवातकफापहा ॥
कण्ठरोगहरा चोक्ता पूर्वैः सुज्ञचिकित्सकैः । (नि० र०)

अर्थ-राईके पत्तोका शाक-चरपरा, गरम, बलकारक, स्वादिष्ठ, पित्तकारक, कृमिनाशक, वातकफनाशक और कण्ठरोगको दूर करेहै.

तृणधान्यनामानि ।

क्षुद्रधान्यं कुधान्य च तृणधान्यमिति स्मृतम् ।

अर्थ-क्षुद्रधान्य, कुधान्य, तृणधान्य ।

तृणधान्यगुणा ।

तृणधान्यमनुष्ण स्यात्कषायं लघु लेखनम् ।
मधुरं कटुक पाके रूक्ष च क्लेदशोपकम् ॥
वातकृद्बद्धविट्कञ्च पित्तरक्तकफापहम् । (भा० प्र०)

अर्थ-तृणधान्य-अनुष्ण, कषैले, हलके, लेखन, मधुर, पचनेमे चरपरे, रूखे, क्लेदशोषक, वातवर्द्धक, मलबन्धक तथा पित्तरक्त और कफनाशक है।

अन्यच्च ।

तृणधान्यं लघु स्वादु पाके कटु च लेखनम् । मलबंधकरं रूक्षं तुवरं मधुर मतम् ॥ क्लेदशोषकरं चोष्णं वातल पित्तलं तथा ॥ कफनाशकर चेत्र पूर्वैर्येरुदाहृतम् ॥ (नि० र०)

अर्थ-तृणधान्य-हलके, स्वादिष्ठ, पाकमे कटु, लेखन, मलबंधक, रूखे, कषेले, मधुर, क्लेदशोषक, गरम, वादी, पित्तकारक और कफ नाशक हैं।



कंगनी.

स्त्रियां कंगुः प्रियगु द्वे कृष्णा रक्ता सिता तथा।
पीता चतुर्विधा कंगुस्तासां पीता वरा स्मृता॥

अर्थ-कंगु, प्रियगु (पियगू, कंगू, कंगुका, कगुनीका, कंगूनी, चीनक, पीततण्डुल।

संस्कृतभाषामे	कंगु।
हिन्दीभाषामे	कगुनी, कागनी, कङ्गनी।
बंगभाषामें	काङ्गुनी, कानिधान।
मराठीभाषामे	कांग।
गुजरातीभाषामे	काग।
कर्णाटकीभाषामें	नवणे।
तैलिंगीभाषामे	कोर्रलु।
लैटिन्भाषामे	पेनिक मिलियेस्यं। Panicum Miliaceum
फारसीभाषामे	गल।

कगनी-काली, लाल, सफेद और पीली इन भेदोंसे चार प्रकारकी है, इनमे पीली कंगनी उत्तम है।

कंगुगुणा।

कंगुस्तु भग्नसन्धानवातकृद्बृंहणो गुरुः।
रूक्षा श्लेष्महरातीव वाजिनां गुणकृद्भृशम्॥ (भा०प्र०)

अर्थ-कगनी-भग्नसन्धानकारक, वातकारक, पुष्टिकारक, भारी, रुखी, कफनाशक और घोडोके लिये अत्यन्त उपकारी है।

अन्यच्च ।

प्रियङ्गुर्मधुरो रुच्यः कषायः स्वादु शीतलः ।
वातकृत्पित्तदाहघ्नो रूक्षो भग्नास्थिसन्धिकृत् ॥

अर्थ-कंगनी-मधुर, रुचिकारक, कषेली, स्वादिष्ठ, शीतल वादी, पित्त और दाहनाशक, रूखी, भग्न और हड्डीको जोडनेवाली है ।

अन्यच्च ।

कङ्गुः शीतो वातकरो रूक्षो वृष्यः कषायकः । धातुवृद्धिकरः स्वादुर्गुरुश्चाश्वहितावहः ॥ भग्नास्थिसन्धानकरो गर्भपाते हितावहः । कफपित्तहरश्चायं कृष्णरक्ताच्छपीतकैः ॥ वर्णैश्चतुर्धा समतो गुणैश्चोत्तरतोऽधिकः ॥

अर्थ-कगनी-शीतल, वातकारक, रूखी, वृष्य, कषेली, धातुवर्द्धक, स्वादिष्ठ, भारी, अश्वोको हितकारी, भग्नास्थिसन्धानकारक, गर्भके गिरानेमे हितकारी, कफपित्तनाशक है, यह कृष्ण, रक्त, सुफेद और पीली इन भेदोसे चारप्रकारकी है इनमे एकसे एकके अधिक गुण है ।

चीनकनामानि ।

चीनकः काककंगुश्च सुश्लक्ष्णः श्लक्ष्णकः स्मृतः ॥

अर्थ-चीनक, काककगु, सुश्लक्ष्ण, श्लक्ष्णक (कगु)

संस्कृतभाषामे	चीनक ।
हिंदीभाषामे	चीना, चैना ।
बंगभाषामे	चिने ।
मराठीभाषामे	राळे ।
गुजरातीभाषामे	चीणो ।
कर्णाटकीभाषामे	चीनक ।
इंग्रेजीभाषामे	मीलेट । Millet
लैटिन्भाषामे	पेनिकामिलेयेरी । Panicum Miliari
फारसीभाषामें	उरजान ।
अरबीभाषामे	बारेगा ।

चीनकगुणाः ।

चीनकः कङ्गुभेदोऽस्ति स ज्ञेयः कंगुवद्गुणैः ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-चीनाधान कंगनीका भेद है। इसकारण इसके गुणभी कंगनीकी समान जानने।



नीवारनामानि।

निवारोऽरण्यधान्यं स्यान्मुनिधान्य तृणोद्भवम् ॥

अर्थ-नीवार, अरण्यधान्य, मुनिधान्य, तृणोद्भव (तृणधान्य, वनव्रीहि, अरण्यशालि, प्रसाधिका)

संस्कृतभाषामे	नीवार।
हिंदीभाषामे	तिली, तीनी, तोली।
वंगभाषामे	उडीधान्य।
मराठीभाषामे	देवभात।
गुजरातीभाषामे	वंटी।
कर्णाटकीभाषामें	ज्यरहुमेध।
तैलङ्गीभाषामे	निवारिवट्टु।
लॅटिन्भाषामे	पेनिक इटालिक। Panicum Italicum

नीवारगुणा।

नीवारो मधुरः स्निग्धःपवित्रः पथ्यदो लघुः ॥ (राजनिघण्टु)

अर्थ-नीवारधान्य-मधुर, स्निग्ध, पवित्र, पथ्य और हलके है।

अन्यच्च।

नीवारः शीतलो ग्राही पित्तघ्नः कफवातकृत् ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-नीवारधान्य-शीतल, मलरोधक, पित्तनाशन तथा कफ और वातकारक हैं।

अपिच।

नीवारः श्लेष्मलो रूक्षः कषायो वातलो हिमः।

लेखनो बद्धविण्मूत्रः स्वादुः पित्तहरो लघुः ॥ (शो. नि.)

अर्थ-नीवारधान्य-कफकारी, रूखे, कषैले, बादी, शीतल, लेखन, मल और मूत्रको बांधनेवाले, स्वादिष्ठ, पित्तनाशक और हलके हैं।

वरकनामानि।

वरकः स्थूलकंगुश्च रूक्षः स्थूलप्रियंगुकः ।

अर्थ-वरक, स्थूलकङ्गु, रूक्ष, स्थूलप्रियंगु (स्थूलकंगू)

वरकगुणाः ।

वरको मधुरो रूक्षः कषायो वातपित्तकृत् ॥ (रा० नि०)

अर्थ-वरक, (चीनाभेद)-मधुर, रूखे, कषाय और वातपित्तकारक है। यह कंगनीकाही भेद है।

संस्कृतभाषामे	वरक।
हिन्दीभाषामे	चीनाभेद।
वंगभाषामे	चीनाविशेष।
मराठीभाषामें	वऱ्या।
गुजरातीभाषामे	वर्यो।
लेटिन्भाषामे	पेनिकंमिलीयेरी कहते हैं।

नर्त्तकनामानि।



नर्त्तको नृत्यकुण्डश्च भूचरा च मलीयसः ।
कठिनो गुच्छकणिशो लञ्छनो बहुपत्रकः ॥

अर्थ-नर्त्तक, नृत्यकुण्ड, भूचरा, मलीयस, कठिन, गुच्छ, कणिश, लञ्छन, बहुपत्रक।

संस्कृतभाषामे	नर्त्तक।
हिन्दीभाषामे	नर्त्तक मडुआ।
मराठीभाषामे	नाचणी, नागली।

गुजरातीभाषामे नागली।
कर्णाटकीभाषामे रपिगुचणे।
इंग्रेजीभाषामें थ्रिक्स्पाइक्ड एल्युसीन। Thrick Spiked Elensine
लेटिन्भाषामें इल्युसाइन कोरेकेना। Elensine Coracaua
फारसीभाषामे मंडवा।

अस्य गुणाः।

नर्त्तकस्तुवरस्तिक्तो मधुरस्तर्पणो लघुः।बल्यःशीतःपित्तहरस्त्रिदोपशमनो मतः॥रक्तदोषहरश्चैव मुनिभिः पूर्वमीरितः।(नि र.)

अर्थ-नर्त्तक-कषेले, कडवे, मधुर, तृप्तिकारक, हलके,बलकारक, शीतल, पित्तनाशक, त्रिदोषनिवारक, और रुधिरके दोषोंको दूर करे है।

श्यामाकनामानि।

श्यामाकः श्यामकः श्यामस्त्रिबीजः स्यादविप्रियः।
सुकुमारो राजधान्यं तृणबीजोत्तमश्च सः॥

अर्थ- श्यामाक, श्यामक, श्याम, त्रिबीज, अविप्रिय, सुकुमार, राजधान्य, तृणबीजोत्तम।

संस्कृतभाषामें श्यामाक।
हिन्दीभाषामें समा।
बंगभाषामें शामाधान।
मराठीभाषामे सावे, काथली।
गुजरातीभाषामे शामो।
कर्णाटकीभाषामे सधे।
तैलिंगीभाषामे श्यामालु।
लेटिनभाषामे पेनिकं फ्रुमेटेश्यं। Panicum Frumentaceum
ओपलिस मनस फ्रुमेटेश्य। Oplis menus Frumentaceum
फारसीभाषामे शामाख्।

श्यामाकगुणाः।

श्यामाको मधुरः स्निग्धः कषायो लघुशीतलः।
वातकृत्कफपित्तघ्नः सग्राही विषदोषनुत्॥ (रा० नि०)

अर्थ-समा-मधुर, स्निग्ध, कषेला, हलका, शीतल, वातकारक, कफपित्तनाशक,मलरोधक और विषके दोषोंको दूर करे है।

अन्यच्च ।

श्यामाकः शोषणो रूक्षो वातलः कफपित्तनुत् ॥ (भा प्र.)

अर्थ-समा-शोषक, रूखा, वादी और कफपित्तनाशक है।

कोद्रवनामानि ।

कोद्रवः कोरदूपः स्यादुद्दालो वनकोद्रवः ॥

अर्थ-कोद्रव, कोरदूष (कुद्रव, कोरदूषक, कोरदुष्क, कोद्दार, कोद्दाल, कुदाल, मदनाग्रक,कोर्द्रव) उद्दाल और वनकोद्रव यह दो नाम वनकोदोके है ।

संस्कृतभाषामें	कोद्रव ।
हिन्दीभाषामे	कोदो ।
वंगभाषामे	कोदोधान्य ।
मराठीभाषामे	हरीक, कोद्रू ।
गुजरातीभाषामे	कोदरो, जगलीकोदरो ।
कर्णाटकीभाषामे	हारक।
तैलिङ्गीभाषामे	आलुवालु ।
इग्रेजीभाषामे	पंकचर्ड पासपेलं । Panctured Paspalum
लेटिनभाषामे	पासपेलं स्क्रोबिट्युटेल्यम् । Paspalum Scrobicutalium
आरबलीभाषामे	कोद्रु ।

कोद्रवगुणा ।

कोद्रवो वातलो ग्राही हिमः पित्तकफापहः ।
उद्दालस्तु भवेदुष्णो ग्राही वातकरो भृशम् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-कोदो-वातकारक, मलरोधक, शीतल और पित्तकफनाशक है, वनकोदो-गरम, मलरोधक और वातकारक है ।

अन्यच्च ।

कोद्रवो मधुरस्तिक्तो व्रणिनां पथ्यकारकः ।
कफपित्तहरो रूक्षो मोहकृद्वातलो गुरुः ॥

अर्थ-कोदों-मधुर, कडवे,व्रणरोगवालोको पथ्य,कफपित्तनाशक, रूखे, मोहकारक, वादी और भारी है ।

अन्यच्च ।

कोरदूषः परं ग्राही स्पर्शशीतो विषापहः ॥ (वाग्भट)

अर्थ-कोदो-अत्यन्त मलरोधक,स्पर्शमे शीतल और विषनाशक है।

अन्यच्च ।

रूक्षो ग्राही कोद्रवः स्याद्रक्तपित्तविशोधनः ।
नात्यन्तकफकृत्प्रोक्तो रुच्यः स्वादुः प्रकीर्त्तितः॥(हा सं)

अर्थ-कोदो-रूखे, ग्राही, रक्तपित्तशोधक, अत्यन्त कफकारक नहीं, रुचिकारी और स्वादिष्ठ है ।

अपिच ।

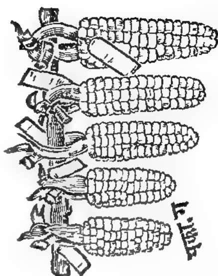
कोद्रवो बद्धविण्मूत्रो वातलो लेखनो लघुः ।
विषपित्तकफामघ्नो कषायो रक्तपित्तजित् ॥
स्पर्शः शीतः परग्राही मधुरो रूक्षशीतलः ॥
उद्दालकस्तु वीर्य्योष्णो लेखनो वातलो लघुः ।
रूक्षः स्वादुः कषायश्च श्लेष्मजिद्बद्धमूत्रविट् ॥ (शो नि)

अर्थ-कोदो-मलमूत्रबद्धक,वातकारक, लेखन, हलके, विषविनाशक, पित्तनिवारक, कफघ्न, आमनाशक, कषेले और रक्तपित्तको दूर करनेवाले,स्पर्शमे शीतल,अत्यन्त ग्राही,मधुर,रूखे और शीतल है। वनकोदो-उष्णवीर्य्य, लेखन, बादी, हलके, रूखे, स्वादिष्ठ, कषेले, कफनाशक और मलमूत्रबद्धक है ।

कदिधान्यनामानि ।







मकायस्तु महाकायो कटिजः कांडजः स्मृतः ।
शिखालुः संपुटांतस्थो यावनालसमो गुणैः ॥

अर्थ-मकाय, महाकाय, कटिज, का डज, शिखालु, संपुटांतस्थ । इसके गुण ज्वारकी समान है ।

संस्कृतभाषामे	मकाय, महाकाय ।
हिन्दीभाषाम	मक्का, भुटे ।
मराठीभाषामे	मका ।
गुजरातीभाषामे	मकाइ ।
तैलङ्गीभाषामे	जनपटलु ।
इंग्रेजीभाषामे	इंडियन्कोर्नमेझ । Indian Corn Maize
लैटिन्भाषामे	झियामेझ ।Zia—Maize

अस्य गुणा

महाकायस्तृप्तिकरो वातलः कफपित्तहृत् ।
विष्टम्भजनको रूक्ष कोमलो रुचिपुष्टिकृत् ॥

अर्थ-मक्का-तृप्तिकारक, बादी, कफपित्तनाशक, विष्टम्भकारक और रूखी है । कच्चीमक्का-पुष्टि और रुचिको करनेवाली है ।

गवेधुकानामगुणाश्च ।

गवेधुका तु विद्वद्भिर्गवेधुः कथिता स्त्रियाम् ॥

अर्थ-गवेधुका, गवेधु (गवेड्डु, गवड्डुका, कुन्न, क्षुद्रा, गोजिह्वा, शुन्द्रगुत्थ)

गवेधुः कटुका स्वाद्वी कार्श्यकृत्कफनाशिनी ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-गरहेडुआ-कटु, स्वादिष्ठ, शरीरको कृश करनेवाला और कफनाशक है ।

वरटानामानि ।

कुसुम्भबीज वरटा सैव प्रोक्ता वरट्टिका ॥

संस्कृतभाषामें कसूमके बीजोंको वरटा और वरट्टिका कहते हैं ।

हिन्दीभाषामें	कर्र, कर ।
वंगभाषामें	कुसुमफल ।
मराठीभाषामें	कडर्चा ।
गुजरातीभाषामें	कुसुम्बानावी ।
फारसीभाषामें	तुख्मकापशा ।
अरबीभाषामें	हब्बुल् अस्फर ।

अस्या गुणाः ।

वरटा मधुरा स्निग्धा रक्तपित्तकफापहा ।

कषाया शीतला गुर्वी स्वादुर्वृष्यानिलापहा ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-कर्र-मधुर, स्निग्ध, रक्तपित्तनाशक, कफघ्न, कषेली, शीतल, भारी, स्वादिष्ठ, वीर्यवर्द्धक और वातविनाशक है ।

चारुकनामगुणाश्च ।

चारुकः शरबीजं स्यात्कथ्यन्ते तद्गुणा अथ ।

चारुको मधुरो रूक्षो रक्तपित्तकफापहः ॥

शीतलो लघु वृष्यश्च कषायो वातकोपनः । (भा० प्र०)

अर्थ-सरपत्तेके बीजोंको चारुक कहते है । चारुक-मधुर, रूक्ष, रक्तपित्तनाशक, कफघ्न, शीतल, लघु, वृष्य, कषाय और वातको कुपित करे है ।

वेणुयवगुणाः ।

यवा वंशभवा रूक्षा कषाया कटुपाकिनः ।

बद्धमूत्रा कफघ्नाश्च वातपित्तकराः सराः ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-बांसके चावल-रूखे, कषेले, पचनेमे कटु, मूत्ररोधक, कफ नाशक, वातपित्तकारक और सारक है । इसके गुण और नाम प्रथम तृणवर्गमें लिख चुके हैं ।

यवनालगुणाः ।

यवनालो हिमः स्वादुर्लोहितः श्लेष्मपित्तजित् ।
अवृष्यस्तुवरो रूक्षः क्लेदकृत्कथितो लघुः (भा० प्र०)

अर्थ-पुनेरा-शीतल, स्वादिष्ठ, लाल, कफपित्तनाशक, अवृष्य, कषेला, रूखा, क्लेदकारक और हलका है ।

नूतनपुरातनादिभेदेन धान्यगुणाः ।

धान्यं सर्वं नवं स्वादु गुरु श्लेष्मकरं स्मृतम् । तत्तु वर्षोषितं पथ्यं यतो लघुतरं हितम् ॥ वर्षोषित सर्वधान्य गौरव परिमुञ्चति । नतु त्यजति वीर्य्यं स्व क्रमान्मुञ्चत्यतः परम्॥ एतेषु यवगोधूमतिलमाषा नवा हिताः ॥ पुराणा विरसा रूक्षा न तथा गुणकारिणः ॥ पुराणा वर्षद्वयादुपरिस्थिता यवादयो नवाः स्वस्थान्प्रति हिताः पथ्याशिनां तु पुराणा हिताः ॥

अर्थ-सर्व नये धान्य-स्वादिष्ठ,भारी और कफको करनेवाले कहे हैं । एक वर्षके बीतजाने पर वह हलके होनेके कारण पथ्य होते हैं, वर्ष दिनके पीछे सर्वधान्य भारीपनको छोड देते हैं किन्तु अपने २ वीर्य्यको नही त्यागते क्रमसे दो वर्षके पीछे वीर्य्यको छोड देते हैं । इनमे जौ, गेहूं, तिल, उडद यह नयेही हितकारी होते हैं, पुराने बेरस, रूखे और गुणकारीभी नहींहै । यवादिक नवीन निरोगी मनुष्योंके लिये हितकारी कहे हैं । किन्तु पथ्य भोजन करनेवालोंको पुरानेही हितकारक कहे हैं ।

इति श्रीशालिग्रामनिघण्टुभूषणे धान्यवर्गः समाप्तः ॥ १० ॥

अथ शाकवर्गः ।



पत्रं पुष्पं फलं नालं कंदं संस्वेदजं तथा ।
शाकं षड्विधमुद्दिष्टं गुरु विद्याद्यथोत्तरम् ॥

अर्थ-पत्र, पुष्प, फल, नाल, कद और सस्वेदज इन भेदोंसे शाक छः प्रकारका है इनमें एकसे दूसरा भारी जानना अर्थात् पत्रसे पुष्प, पुष्पसे फल,फलसे नाल,नालसे कद और कन्दसे सस्वेदज भारी है।

शाकदोषा।

प्रायः शाकानि सर्वाणि विष्टम्भीनि गुरूणि च। रूक्षाणि बहुवर्चांसि सृष्टविण्मारुतानि च॥ शाकं भिनत्ति वपुरस्थि निहन्ति नेत्रं वर्णं विनाशयति रक्तमथापि शुक्रम्। प्रज्ञाक्षयं च कुरुते पलितं च नूनं हन्ति स्मृतिं गतिमिति प्रवदन्ति तज्ज्ञाः॥ शाकेषु सर्वेषु वसंति रोगास्ते हेतवो देहविनाशनाय। तस्माद्बुध शाकविवर्जनन्तु कुर्य्यात्तथाम्लेषु स एव दोषः॥

अर्थ-दोष और गुण-प्रायः सर्व प्रकारके शाक-विष्टम्भकारक, भारी, रूखे, बहुमल करनेवाले तथा विष्ठा और अधोगत वातको करनेवाले है। शाक-शरीर,हड्डी,नेत्र, रक्त,शुक्र और बुद्धिका नाश करे है। स्मरणशक्तिको हरेहै, गतिशक्तिको दूर करे है और विनासमयकेही बालोको धवल करे है। सर्व प्रकारके शाकोमे रोग रहते है और रोगही शरीरके नाश करनेके हेतु है, इसकारण बुद्धिमान् शाक भोजन करना छोडदेवे औरऐसेही दोष अम्लद्रव्य अर्थात् खटाईमे है, सो खटाईभी त्यागने योग्य है।

शाकं सर्वमचक्षुष्यं चक्षुष्यं शाकपंचकम्।
जीवन्ती वास्तु मत्स्याक्षी मेघनादः पुनर्नवा॥

अर्थ-सर्वप्रकारके शाक नेत्रोंको अहितकारी है,किन्तु जीवन्ती, वास्तूक,मत्स्याक्षी,चौलाई और पुनर्नवा यह पांच शाक हित कारी है।

तत्रादौ वास्तूकशाकनामानि।

वास्तूकं वास्तुकञ्च स्यात्क्षारपत्रञ्च शाकराट्।
तदेव तु बृहत्पत्रं रक्तं स्याद्गौडवास्तुकम्॥

अर्थ-वास्तूक, वास्तुक, क्षारपत्र, शाकराट्, (पाशुपत्र,शाकश्रेष्ठ, शाकवीर, ककेल्ल,धनाञ्जन, वास्तु, वस्तुक, हिलमोचिका,शाकराज, राजशाक, चक्रवर्ती)। दूसरा लाल पत्तोका होता है उसके पर्याय यह है गौडवास्तुक (चिल्ली, चिल्लिका, तुनी, अग्रलोहिता,मृदुपत्री, क्षारदला, क्षारपत्रा, वास्तुकी, महद्दला और गौडवास्तु)

संस्कृतभाषामे	वास्तूक, गौडवास्तूक।
हिन्दीभाषामे	बथुआ, चिल्ली, बडा बथुआ।
वंगभाषामे	वेतुया, वेतोशाक।
मराठीभाषामे	चाकवत, चिविल, चाकवताची भाजी।
गुजरातीभाषामे	टांको, चील।
कर्णाटकीभाषामे	चक्रवती, विलीपचिल्लीके।
इंग्रेजीभाषामे	व्हाईट गुजफूट White goose foot परपल गुजफुट Purple goose foot
लैटिन्‌भाषामे	कनापाडपं आलबं Chenopodum Album के एट्रिप्लिसीस्। Che atripolisis
फारसीभाषामे	मुसेलेसा सरमक।
अरबीभाषामे	रोकूबतुल बजामेल कुतुफ।

वास्तूकगुणा ।

वास्तूकोऽग्निकरो रसे च मधुरः पित्तापहश्चक्षुषः
स्निग्धो वातविनाशनः क्रुमिहरः पित्तादिदोषापहः ।
वर्चोमूत्रविशोधनः प्रथमतः श्लेष्मामयानां तथा
शाकानामपि चोत्तमो लघुतरः पथ्यः सदा प्राणिनाम् ॥

अर्थ-बथुआ-जठराग्निजनक, मधुररसान्वित, पित्तनाशक, नेत्रोंको हितकारी, स्निग्ध, वातविनाशक, क्रुमिनाशक, पित्तादिदोषनाशक, मलमूत्रविशोधक, शाकोंमे उत्तम और कफरोगवाले मनुष्योंको सदैव हितकारी है ।

अन्यच्च ।

सक्षारः कृमिजित्त्रिदोषशमनः सन्दीपनः पाचन-
श्चक्षुष्यो मधुरः सरो रुचिकरो विष्टम्भशूलापहः ।
वर्चोमूत्रविशोधनः स्वरकरः स्निग्धो विपाके गुरु-
र्वास्तूकः सकलामयप्रशमनश्चिल्ली तदेवोत्तमा ॥

अर्थ-बथुआ-क्षारयुक्त, क्रुमिनाशक, त्रिदोषनिवारक, दीपन, पाचन, नेत्रोंको हितकारी, मधुर, सारक, रुचिकारक, विष्टम्भनाशक, शूलनाशक, मलमूत्रशोधक, स्वरको उत्तम करनेवाला, स्निग्ध,

पाकमे भारी और सर्व प्रकारके रोगोको शान्ति करनेवाला है। चिल्ली अर्थात् लाल बथुआ इससेभी उत्तम है।

अन्यच्च।

अर्शस्त्रिदोषारुचिजन्तुहारी विस्रंसनो बुद्धिबलाग्निकारी। क्षारो विपाके कटु वास्तुकः स्यात्तद्वच्च चिल्ली लघुपत्रयुक्ता। (सुषेण)

अर्थ-बथुआ-बवासीर, त्रिदोष, अरुचि और कृमिनाशक है, विस्रंसन, बुद्धिजनक, बलकारक, जठराग्निवर्द्धक, क्षार, विपाकमे कटु और चिल्लीके गुणभी इसीकी समान है।

अपिच।

वास्तूकद्वितयं स्वादु क्षारं पाके कटूदितम्।
दीपनं पाचनं रुच्यं लघु शुक्रबलप्रदम्॥
सरं पित्तास्रप्लीहार्शःकृमिदोषत्रयापहम्। (भा० प्र०)

अर्थ-दोनो प्रकारके बथुए-स्वादिष्ठ, क्षार, पाकमे कटु, दीपन, पाचन, रुचिकारक, हलके, शुक्रजनक, बलकारक, कुछेक दस्तावर, रक्त, पित्त, प्लीहा, रुधिरविकार, कृमि और त्रिदोषको दूर करे है।

अन्यच्च।

वास्तुकं मधुरं हृद्यं वातपित्तार्शसां हितम्॥ (हा० सं०)

अर्थ-बथुआ-मधुर, हृदयको हितकारी तथा वात, पित्त और बवासीररोगवालोको हितकारी है।

चिल्लीगुणाः।

चिल्ली वास्तुकतुल्या च सक्षारा श्लेष्मपित्तनुत्।
प्रमेहमूत्रकृच्छ्रघ्नी पथ्या च रुचिकारिणी॥ (रा० नि०)

अर्थ-चिल्ली अर्थात् लाल बथुआ-बथुएकी समानही गुणवाला है। क्षार, कफपित्तनाशक, प्रमेहनाशक, मूत्रकृच्छ्रनिवारक, पथ्य और रुचिकारक है। बथुआ जौ और गेहूंके खेतमे अधिकतासे उत्पन्न होताहै इसके पत्तोमे खार बहुत होताहै और यह सर्वत्र प्रसिद्ध है।

लोणीबृहल्लोणीनामानि।

लोणा लोणी च कथिता बृहल्लोणी च घोलिका॥

अर्थ-लोणा, लोणी, बृहल्लोणी, घोलिका।

संस्कृतभाषामे	लोणा, लोणी, बृहल्लोणी, घोलिका।

हिन्दीभाषामे लोनी, नोनिया, कुलफा ।
वंगभाषामे वडणुनी, क्षुद्रेणुनी, वनणुनी ।
मराठीभाषामे घोळ, लहान घोळ, मळेघोळ, रायघोळ, ।
गुजरातीभाषामे लुणी झीणी, लुणी मोटी ।
कर्णाटकीभाषामे गोलि ।
तैलिङ्गीभाषामे अईलकुस ।
तामिलीभाषामे कोरिलकीरइ ।
इंग्रेजीभाषामे पर्सलेन । Purse Lane
लैटिन्भाषामे पोर्चलेका ओलिरेसिया । Portulaca oleracea
फारसीभाषामे खुरफा ।
अरबीभाषामे वक्लुतुलहुमक्का ।

लोणीगुणा ।

लोणी रूक्षा गुरुः कट्वी वातश्लेष्महरी पटुः ।
अर्शोघ्नी दीपनी चाम्ला मन्दाग्निविषनाशिनी ॥

अर्थ–लोणी अर्थात् नोनियाका शाक–रूखा, भारी, कटु, वातकफ नाशक, खारी, अर्शरोगनाशक, दीपन, अम्ल, मन्दाग्नि और विष-विनाशक है ।

घोलिकागुणा ।

घोलिकाम्ला सरा चोष्णा वातकृत्कफपित्तहृत् ।
वाग्दोषव्रणगुल्मघ्नी श्वासकासप्रमेहनुत् ॥
पित्तलाम्ला ग्रहण्यर्शःकुष्ठातीसारनाशिनी ।

अर्थ–घोलिका अर्थात् बडी नोनिया, कुलफा-अम्ल, सारक, गरम, वातकारक, कफपित्तनाशक, वाणीके दोषको दूर करनेवाला, व्रण विनाशक, गुल्मनाशक, श्वासनिवारक, कासहारक, प्रमेहनाशक पित्त-जनक, अम्ल तथा संग्रहणी, बवासीर, कुष्ठ और अतिसारको दूरकरे है

अन्यच्च ।

घोलिका रुचिदा पट्वी पित्तला चाम्लिका मता ।
सरा कफकरा चोष्णा वातत्वग्दोषनाशिनी ॥
गुल्मव्रणश्वासकासनेत्ररुङ्मेहशोथहा ।

अर्थ–नोनिया–रुचिकारी, खारी, पित्तजनक, अम्ल, सारक,

कफकारक, गरम तथा वात, त्वचाके दोष, गुल्म, व्रण, श्वास, खांसी नेत्ररोग, प्रमेह और सूजनको दूर करनेवाली है।

अन्यच्च

राजपूर्वा घोलिका तु रूक्षा चाम्ला पटुः स्मृता ।
रुच्या कट्वी च गुर्वी च दीपिकाग्नेः कफापहा ॥
वातं चार्शश्चाग्निमांद्यं विषं शुक्रं च नाशयेत् ॥

अर्थ-बडी लोणी-रूक्ष, अम्ल, खारी, रुचिकारक, कटु, भारी, अग्निप्रदीपक, कफनाशक तथा वात, बवासीर, मन्दाग्नि, विष और शुक्रका नाश करे है।

क्षुद्रघोलिकागुणाः ।

क्षुद्रघोलिका पित्तला सरा कफकरी च कट्वी जीर्णज्वरतिहा ।
श्वासकासहा गुल्मनाशिनी मेहशोथहा सा रसायनी ॥
वातहा मता चोष्णकारिणी चाम्लिका मता नेत्ररोगहा ।
चर्मदोषहा व्रणहरी मता पूर्ववैद्यकैः सा निरूपिता ॥ (नि.रा.)

अर्थ-छोटेपत्तोंके नोनियाका शाक-पित्तजनक, सारक, कफकारक, कटु, जीर्णज्वरनाशक और श्वास, खांसी, वायगोला, प्रमेह और सूजनको दूर करनेवाला है, रसायन, वातविनाशक, गरम, खट्टा तथा नेत्ररोग, चर्मविकार और व्रणका विनाश करे है, नोनिया और कुल्फा यह दोनो गीली और रेतीली तथा खारी जमीनमे उत्पन्न होते है।

चुक्रनामानि ।



चुक्र तु चुक्रवास्तूकं लिकुचं चाम्लवास्तुकम् ।

दलाम्लमम्लशाकाख्यमम्लादिहिलमोचिका ॥

अर्थ-चुक्र, चुक्रवास्तुक, लिकुच, अम्लवास्तुक, दलाम्ल, अम्लशाकाख्य, अम्लहिलमोचिका (चुक्रिका, पत्राम्ला, रोचनी, शतवेधनी)

संस्कृतभाषामें	चुक्र, चुक्रिका ।
हिन्दीभाषामें	चूका, चूकाका शाक ।
बंगभाषामें	चुकापालङ ।
मराठीभाषामें	आंबचुका, लघु व थोर ।
गुजरातीभाषामें	चुको खाटी भाजी ।
कर्णाटकीभाषामें	हुलिचकोत ।
इंग्रेजीभाषामें	ब्लेडरडाक । Bladdeered Dock
लेटिन्भाषामें	रुमेक्स वेसिकेरिपस् । Rumex vesicarips
फारसीभाषामें	तुरशक बडा तुर्श खुरासानी छोटा ।
अरबीभाषामें	हुमाजबुकले हामिजा ।

अस्य गुणाः ।

चुक्रोऽग्निदीपनश्चोष्णो रुचिकारी लघुः स्मृतः । पित्तलः सारकः पथ्यो ह्यत्यम्लः शूलनाशकः ॥ गुल्माग्निमांद्यहृत्पीडावद्धविट्कामवातहा । स्वादुतृष्णावान्तिकफवातगुल्मापहो मतः । वातं च मुखवैरस्यं नाशयेदिति कीर्तितः ॥ (नि०र०)

अर्थ-चूका अग्निदीपक, गरम, रुचिकारक, हलका, पित्तकारक, पथ्य, अत्यन्त अम्लशूलनाशक तथा गुल्म, अग्निमांद्य, हृदयकी पीडा, मलबद्ध, आमवात, तृषा, वमन, कफवात, गुल्म, वात और मुखकी विरसताको दूर करे है तथा स्वादिष्ठ है ।

अन्यच्च ।

चुक्रकं दुर्जरं भेदि वातजित्पित्तलं गुरु ॥ (राजवल्लभ०)

अर्थ-चूका-दुर्जर अर्थात् कठिनतासे पचनेवाला, भेदक, वातनाशक, पित्तकारक और भारी है ।

मारिषनामानि ।

मारिषो बाष्पको मार्षः श्वेतो रक्तश्च स स्मृतः ॥
दीर्घनालो रक्तपर्णो विन्दुपर्णश्च स स्मृतः ॥

अर्थ-मारिष, बाष्पक और मार्ष यह नाम मारिषके हैं, मरसा सफेद और लाल इन भेदोंसे दो प्रकारका है, मरसाकी नाल बडी होती है, पत्ते लाल होतेहैं और पत्तोंके ऊपर बिन्दु होते हैं।

संस्कृतभाषामें	मारिष ।
हिंदीभाषामें	सफेद मरसा, लाल मरसा, नवडा ।
बंगाभाषामें	श्वेतकॉटानटेरशाक, लाल कॉटनटेरशाक ।
मराठीभाषामें	पोकळ्याची भाजी, माठाची भाजी ।
गुजरातीभाषामें	डांभो ।
औत्कलीभाषामें	नेउटाशाग ।
तैलिङ्गीभाषामें	डुगलकुरा ।
लैटिन्भाषामें	एमेरेंथस् ट्रिकलर । Amaranthus tricolor

मारिषगुणाः ।

मारिषो मधुरः शीतो विष्टम्भी पित्तनुद्गुरुः । वातश्लेष्मकरो रक्तपित्तनुद्विषमाग्निजित्॥रक्तमार्षो गुरुर्नातिसक्षारो मधुरः सरः।श्लेष्मलः कटुकः पाके स्वल्पदोषउदीरितः॥(भा० प्र०)

अर्थ-मरसा-मधुर, शीतल,विष्टम्भकारक,पित्तनाशक,भारी,वातकफकारक,रक्तपित्त निवारक और अग्निकी विषमताको दूर करैहै। लाल मरसा-अत्यन्त भारी नहीं, क्षार, मधुर, सारक, कफकारक, पचनेमे चरपरा और स्वल्पदोषयुक्त है ।

अन्यच्च ।

मारिषो रोचकः शीतो गुरुर्मेदस्त्रिदोषजित्॥(म० नि०)

अर्थ-मरसा-रुचिकारक, शीतल, भारी तथा मेदरोग और त्रिदोषनाशक है ।

तण्डुलीयनामानि ।

तण्डुलीयो मेघनादः काण्डेरस्तण्डुलेरकः ।
भण्डीरस्तण्डुली वीजो विषघ्नश्चाल्पमारिषः ॥

अर्थ-तण्डुलीय,मेघनाद,काण्डेर, तण्डुलेरक,भण्डीर, तंडुलीबीज विषघ्न, अल्पमारिष (तण्डुलीक, तण्डुल, तण्डुली, तंडुलीयक, ग्रन्थिल, बहुवीर्य्य, घनस्वन, सुशाक, पथ्यशाक,स्फूर्जथु, स्वानिताह्वय, वीर, तण्डुलनामा)

कश्वटनामानि।

पानीयं तण्डुलीयं यत्तत्कञ्चटमुदाहृतम् ॥

अर्थ-पानीय तण्डुलीय, कञ्चट (मारिष जलज)

संस्कृतभाषामे	तण्डुलीय, कञ्चट।
हिन्दीभाषामे	चौलाईका शाक, जलचौलाई।
वंगभाषामे	क्षुद्रेनटे, चांपानटे,गोयाल,कांचडादाम।
मराठीभाषामे	तांदुळजा, चवळाई।
गुजरातीभाषामे	ताजलजो।
तैलिंगीभाषामे	मोलाकुरा, कुईकोरा।
कर्णाटकीभाषामें	किरुकुशाले।
तामिलीभाषामे	मुल्लुकिरइ।
द्राविडीभाषामे	काण्डेमाट।
इंग्रेजीभाषामे	हरमेफ्रोडाईट एमेरेंथ Hermaphrodite Amaranth
लैटिन्भाषामे	एमेरेंथस् टेन्युईफोलियस् AmaranthusTenifolius
फारसीभाषामे	सुपेजमर्ज।
अरबीभाषामे	बुकलेयमानीय।

तण्डुलीयगुणाः।

तण्डुलीयो लघुः शीतो रूक्षः पित्तकफास्रजित्।
सृष्टमूत्रमलो रुच्यो दीपनो विषहारकः॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-चौलाई-हलकी,शीतल,रूखी,पित्तकफनाशक, रक्तविकार-विनाशक,मलमूत्रनिःसारक,रुचिकारक,दीपन और विषहारक है।

अन्यच्च।

तण्डुलीयस्तु शिशिरो मधुरो विषनाशनः।
रुचिकृद्दीपनः पथ्यः पित्तदाहभ्रमापहः॥

अर्थ-चौलाई-शीतल,मधुर,विषनाशक,रुचिकारक, दीपन, पथ्य तथा पित्त, दाह और भ्रमको दूर करे है।

अपिच।

रसे विपाके मधुरोऽतिशीतो रूक्षस्तृषारोचकनाशनश्च।
स दाहपित्त रुधिर विष च विशेषतो हन्ति च तण्डलीयः॥

अर्थ-चौलाई-रस और विपाकमे मधुर, अत्यन्त शीतल, रूखा तथा तृषा, अरुचि, दाह, पित्त, रुधिरविकार और विषका विनाश करे है।

अन्यच्च।

स्वादुपाकमसृक्पित्तविषघ्नं तण्डुलीयकम्।

अर्थ-चौलाई-स्वादुपाकी तथा रक्तपित्त और विषनाशक है।

अस्य पत्रगुणाः।

तण्डुलीयकदलं हिममर्शःपित्तरक्तविषकासविनाशि।
ग्राहकं समधुरं च विपाके दाहशोषशमनं रुचिदायि॥ (रा० नि०)

अर्थ-चौलाईके पत्ते-छूनेमे शीतल, पित्तरक्तनाशक, विषघ्न, कासनिवारक, मलरोधक, पचनेमें मधुर तथा दाह और शोषविनाशक है।

अस्य मूलगुणाः।

तण्डुलीयकमूलं स्यादुष्णं श्लेष्मविनाशनम्।
रजोरोधकरं रक्तपित्तप्रदरसहरम्॥ (आ० सं०)

अर्थ-चौलाईकी जड-गरम, कफनाशक, रजरोधक तथा रक्तपित्त और प्रदररोगको दूर करनेवाली है।

कञ्चटगुणाः।

कञ्चटं तिक्तकं रक्तपित्तानिलहरं लघु। (भा० प्र०)

अर्थ-जलचौलाई-कडवी, हलकी तथा रक्तपित्त और वातका नाश करे है।

पालक्यनामानि।



पालङ्क्य तु पलक्यायां मधुरा क्षुरपत्रिका।
सुपत्रा स्निग्धपत्रा च ग्रामिणी ग्राम्यवल्लभा॥

अर्थ-पालङ्क्य, पलङ्क्या, मधुरा, क्षुरपत्रिका, सुपत्रा, स्निग्धपत्रा, ग्रामिणी, ग्राम्यवल्लभा (क्षुरिका,पालक्या, वास्तुकाकारा,छुरिका, चीरितच्छदा, पालंकी) ।

संस्कृतभाषामे	पालंक्य ।
हिन्दीभाषामे	पालगका शाग ।
वंगभाषामे	पालशाक ।
मराठीभाषामे	पालख, पोईशाक ।
गुजरातीभाषामें	पालखनी भाजी ।
कर्णाटकीभाषामे	पालक्य ।
इंग्रेजीभाषामें	स्पाईनेज Spinage
लेटिन्भाषामे	स्पाईनेश्या ओलिरेश्या Spinasia Oleracea
फारसीभाषामे	इस्पनाख ।
अरबीभाषामे	अस्पनाख ।

पालङ्क्यगुणाः ।

पालक्या वातला शीता श्लेष्मला भेदिनी गुरुः ।
विष्टम्भिनी मदश्वासपित्तरक्तविषापहा ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-पालगका साग-बादी, शीतल, कफकारक, भेदक, भारी, विष्टम्भजनक तथा मद,श्वास,रक्तपित्त और विषका विनाश करेहै ।

अन्यच्च ।

पालंक्यमीषत्कटुकं मधुरं पथ्यशीतलम् ।
रक्तपित्तहरं ग्राहि ज्ञेयं सन्तर्पणं परम् ॥ (रा० नि०)

अर्थ-पालगका साग-किंचित् चरपरा, मधुर, पथ्य, शीतल, रक्तपित्तनाशक, मलरोधक और तृप्तिकारक है ।

अन्यच्च ।

पालक्यामिति वर्णयन्ति सुधियो गुर्वी सरा पिच्छिला ।
शीता श्लेष्मकरी च रक्तशमनी पित्तं विषं नाशयेत् ॥

अर्थ-पालगका साग-भारी, कुछेक दस्तावर, पिच्छिल, शीतल, कफकारक, रुधिरके विकारोंको शान्त करनेवाला तथा पित्त और विषका नाश करे है ।

कुणञ्जरनामानि ।

कुणञ्जरः कुणञ्जी च कुणजोऽरण्यवास्तुकः ।

अर्थ-कुणञ्जर, कुणञ्जी, कुणञ्ज, अरण्यवास्तुक (क्षेत्रशाक, क्षुद्रशाक, मञ्जरी, श्वेतमञ्जरी, अतिसारजनक, दुर्भिक्षवल्लभ) ।

संस्कृतभाषामें	कुणंजर ।
हिन्दीभाषामें	लेसुवा ।
बंगभाषामें	वनबेतुया ।
मराठीभाषामें	कुणजीरु ।
गुजरातीभाषामें	कणेझरो, कणेझो ।
कर्णाटकीभाषामें	गोरेजेयपलेय ।
लेटिन्भाषामें	एमेरेन्थस् पोलिगोनोइडिस् । Amaranthus Polygonoides

कुणञ्जरगुणा ।

कुणञ्जरस्त्रिदोषघ्नो मधुरो रुच्यदीपकः ।
ईषत्कषायः संग्राही पित्तश्लेष्महरो लघुः ॥ (रा० नि०)

अर्थ-कुणञ्जर-त्रिदोषनाशक, मधुर, रुचिकारक, दीपन, किंचित्कषेला; मलरोधक, पित्तश्लेष्मनाशक और हलका है ।

विवरण-कुणंजरके क्षुप वर्षातमें उत्पन्न होते हैं, पत्ते चौलाईकी समान और बाल सफेद तथा लालरंगकी निकलती है ।

उपोदकीनामानि ।



उपोदकी कलम्बी च पिच्छिला पिच्छिलच्छदा ।

मोहिनी मदशाकश्च विशाला वलिपोदकी ॥

अर्थ-उपोदकी, कलम्बी, पिच्छिला, पिच्छिलच्छदा, मोहिनी, मदशाक, विशाला, वलिपोदकी (उपोदिका, उपोदीका, उपोती, वृश्चिकप्रिया, अपोदिका, पूनीका, पूतिका)।

संस्कृतभाषामे	उपोदकी, पोदकी ।
हिन्दीभाषामे	पोईका साग ।
वंगभाषामे	पुइशाक ।
मराठीभाषामे	मायाळु, लघु व थोर ।
गुजरातीभाषामें	पोथी ।
इंग्रेजीभाषामे	रेडमलबारनाइटेशड । Red Malbar Night shabe
लैटिन्भाषामे	बसेला रुब्रा Bassella Ruba
	ब० आल्बा । B Alba

उपोदकीगुण ।

उपोदकी कषायोष्णा कटुका मधुरा च सा ।
निद्रालस्यकरी रुच्या विष्टम्भश्लेष्मकारिणी ॥

अर्थ-पोईका शाक-कषेला, गरम, चरपरा, मधुर, निद्रा और आलस्यको करनेवाला, रुचिकारक, विष्टम्भजनक और कफकारक है।

अन्यच्च ।

पोतकी शीतला स्निग्धा श्लेष्मला वातपित्तनुत् ।
अकण्ठ्या पिच्छिला निद्राशुक्रदा रक्तपित्तनुत् ॥
बलदा रुचिकृत्पथ्या बृंहणी तृप्तिकारिणी ॥ (भा० म०)

अर्थ-पोईका शाक-शीतल,स्निग्ध, कफकारक, वातपित्तनाशक, कण्ठको अहितकारी, पिच्छिल, निद्राजनक, शुक्रजनक, रक्तपित्तनाशक, बलवर्द्धक,रुचिकारक,पथ्य, पुष्टिकारक और तृप्तिजनक है।

अन्यच्च ।

उपोदिका सरा स्निग्धा बल्या श्लेष्मकरी हिमा ।
स्वादुपाकरसा वृष्या वातपित्तमदापहा ॥

अर्थ-पोईका शाक कुछेक दस्तावर,स्निग्ध,बलकारक,कफकारक, शीतल, स्वादुपाकी, वृष्य तथा वात, पित्त और मदनाशक है ।

अपि च ।

उपोदकी द्वितीया च क्षुद्रान्या वनजा तथा ।
चतुर्थी मूलपोती च गुणैः सर्वाः समाः स्मृताः ॥

अर्थ-पोई, लालपोई, छोटी पोई, वनपोई और मूलपोई इन सबके गुण पोईकी समान है ।

विवरण । पोईकी बेल घर बाहर सब स्थानोमे उत्पन्न होजाती है । बेलका रंग सफेद और लाल होताहै, पत्ते गोल होते है और बीज लाल होते है ।

सहस्रमूलीनामानि ।

काण्डपत्री कोपपुष्पी घननीलसुमा शुभा ।
सहस्रमूलिका ज्ञेया वर्षाकाली च सा स्मृता ॥

अर्थ-काण्डपत्री, कोपपुष्पी, घननीलसुमा, शुभा, सहस्रमूलिका, वर्षाकाली ।

संस्कृतभाषामे	सहस्रमूली ।
हिन्दीभाषामे	सहस्रमूली ।
मराठीभाषामे	वेलिची भाजी ।
गुजरातीभाषामें	शिषमूली ।
इंग्रजीभाषामे	स्पैंडरवर्ट । Spider Wort
लाटिनभाषामे	कोमिलिया काम्युनास् । Comeyllia Communis

अस्या गुणाः ।

सहस्रमूलीका स्निग्धा मधुरा पित्तनाशिनी ।
किञ्चिद्वातकरी बल्या सरा चैव रसायनी ॥

अर्थ-सहस्रमूली-स्निग्ध, मधुर, पित्तनाशक, किञ्चित् वातकारक, बलकारक, सारक और रसायन है।

चञ्चुनामानि ।

चञ्चुश्च विजला चञ्चूः कलभी भीरुपत्रिका ।
चञ्चुरश्चञ्चुपत्रश्च सुशाकः क्षेत्रसम्भवः ॥

अर्थ-चञ्चु, विजला, चञ्चू, कलभी, भीरुपत्रिका, चञ्चुर, चंचुपत्र, सुशाक, क्षेत्रसम्भव (चिश्वा, चिचुर्का, दीर्घपत्री)

महाचञ्चुनामानि।

बृहच्चंचु विपारिस्यान्महाचंचुः सुचंचुका।
स्थूलचचुर्दीर्घपत्री दिव्यगन्धा च सप्तधा॥

अर्थ-बृहच्चचु, विपारि, महाचञ्चु, सुचञ्चुका, स्थूलचञ्चु,दीर्घपत्री, दिव्यगन्धा।

क्षुद्रचचुनामानि।

क्षुद्रचञ्चुस्तु चञ्चुः स्याच्चंचूः शुनकचंचुका॥
त्वक्सारा भेदनी क्षुद्रा कटुका पटुपत्रिका॥

अर्थ-क्षुद्रचंचु,चंचु, चंचू,शुनकचंचुका, त्वक्सारा, भेदनी, क्षुद्रा, कटुका, पटुपत्रिका।

संस्कृतभाषामे	चचु।
हिन्दीभाषामे	चंचु, चेवुना।
वंगभाषामे	चेचको।
मराठीभाषामें	लघुचंचु, थोरचचु।
गुजरातीभाषामे	छुछ राजगरीनी भाजी।
तैलङ्गीभाषामे	चिन्तचेट्टु।

लैटिन्भाषामे काकोरस् एक्युटेंग्युलेरिस्। Corchorus acutangularis

चचुगुणा।

चचुस्तु मधुरा तीक्ष्णा कषाया मलशोषिणी।
गुल्मोदरविबन्धार्शोग्रहणीरोगहारिणी॥

अर्थ-चंचु-मधुर, तीक्ष्ण, कषेला,मलशोषक तथा गुल्म,उदररोग, विबंध, बवासीर, और संग्रहणी रोगको दूर करेहै।

महाचचुगुणा।

महाचंचुः कटूष्णा च कषाया मलरोधिनी।
गुल्मशूलोदरार्शोर्तिविषघ्नी च रसायनी॥

अर्थ-बडा चचुका शाक-चरपरा, गरम,कषेला, मलरोधक,रसायन, गुल्म, शूल, उदररोग, बवासीर और विषका नाश करे है।

क्षुद्रचचुगुणा।

क्षुद्रचचुस्तु मधुरा कटूष्णा च कषायिका।

दीपनी गुल्मशूलार्शःशमनी च विबन्धकृत् ॥

अर्थ-क्षुद्रचञ्चु-मधुर, चरपरा, गरम, कषेला, विबन्धकारक तथा गुल्म, शूल और बवासीरको दूर करै है।

अन्यच्च।

चञ्चु शीता सरा रुच्या स्वाद्वी दोषत्रयापहा।
धातुपुष्टिकरी बल्या मेध्या पिच्छिलिका स्मृता ॥

अर्थ-चंचुका शाक-शीतल, सारक, रुचिकारक, स्वादिष्ठ, त्रिदोषनाशक, धातुवर्द्धक, पुष्टिकारक, बलकारक, मेधाजनक और पिच्छिल है।

चञ्चुबीजगुणाः।

चञ्चुबीजं कटूष्णं च गुल्मशूलोदरार्त्तिजित्।
विषं त्वग्दोषकण्डूतिआखोर्दुष्टविषापहम् ॥

अर्थ-चंचुके बीज-चरपरे, गरम, तथा गुल्म, शूल, उदरकीपीडा, विष, त्वचाके दोष, खुजली, मूसेका विष और दुष्ट विषको दूरकरेहै। विवरण-चुचुनाके छोटे २ क्षुप होते हैविशेषकरके यह चौमासेमे होता है फूल पीला आता है औरफललिगतीहैइसकी अनेकजातिहै,

नाडीकनामानि।

नाडीकं कालशाकञ्च श्राद्धशाकं च कालकम्

अर्थ-नाडीक, कालशाक, श्राद्धशाक, कालक।

अस्य गुणाः।

कालशाकं सरं रुच्यं वातकृत्कफशोफहृत् ॥
बल्यं रुचिकरं मेध्यं रक्तपित्तहरं हिमम् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-नाडीका शाक-कुछेक दस्तावर, रुचिकारी, वातकारक, कफनाशक, सूजनको दूर करनेवाला, बलकारक, रुचिजनक मेधाकारक, रक्तपित्तनाशक और शीतल है।

नाडीशाक-पट्टशाकनामानि।

पट्टशाकस्तु नाडीको नाडिशाकश्च स स्मृतः।

अर्थ-पट्टशाक, नाडीक, नाडीशाक (नाडीच, केचुक, पेचुली, पेचु, विश्वरोचन)।

संस्कृतभाषामे पट्टशाक, नाडीशाक।

हिंदीभाषामे	पटुआसाग ।
वंगभाषामे	पाटशाक, कोसटारशाक, नालते ।
मराठीभाषामे	नाडीशाक ।
गुजरातीभाषामे	नालानी भाजी ।
लैटिन्भाषामे	आईपोमिया रिप्टेन्स । Ipomoea Reptams

अस्य गुणा ।

नडीकशाकं द्विविध तिक्तं मधुरमेव च । रक्तपित्तहर तिक्तं कृमिकुष्ठविनाशनम् ॥ मधुर पिच्छल शीत विष्टम्भिकफवातकृत् । तच्छुष्कपत्र ज्वरदोपनाशन विशेषतः पित्तकफज्वरापहम् । जलं च तस्यापि च पित्तहारकं सुरोचनं व्यञ्जनयोगकारकम् ॥ (रा०नि०)

अर्थ-नाडीक शाक-तिक्त और मधुर इन भेदोसे दो प्रकारका है, तहां तिक्त शाक-रक्तपित्तनाशक तथा कृमि और कुष्ठका नाश करे है । मधुर शाक-पिच्छिल,शीतल, विष्टम्भजनक और कफवातकारक है । नाडीके सूखे पत्ते-ज्वर और विशेषकरके पित्त, कफ, ज्वरनाशक है । नाडीका जल-पित्तनिवारक, रोचन और व्यंजनमे उपयोगी है ।

अन्यच्च ।

तच्छुष्कं जलदोपघ्न पित्तश्लेष्मामवातनुत् ॥

अर्थ-नाडीके सूखे पत्ते-जलदोपनाशक, पित्त, कफ और आमवातविनाशक है ।

विवरण । नाडीकी बेल पानीमे होतीहै। इसकी डंडी पोली और गांठदार होती है । पत्ते लम्बे लम्बे होतेहै । अफीमके विषको दूर करनेके लिये इसके पत्तोका रस प्रयोग किया जाता है ।

कलम्बीनामानि ।

कलम्बी शतपर्वा च कथ्यन्ते तद्गुणा अथ ॥

अर्थ-कलम्बी, शतपर्वा (कडम्बी, कलम्बू, कलम्बिका)

संस्कृतभाषामे	कलम्बी ।
हिन्दीभाषामे	कलमीशाक ।
वंगभाषामे	कलमी ।
तैलिङ्गीभाषामे	तोमेवचलिचेट्टु ।

अस्या गुणाः ।

कलम्बी स्तन्यदा प्रोक्ता मधुरा शुक्रकारिणी॥(भा०प्र०)

अर्थ-कलमीशाक-स्तनोंमें दूधको उत्पन्नकरनेवाला, मधुर और शुक्रजनक है ।

विवरण। कलमीशाक प्रायः खेतोंमे होता है ।

हिलमोचिकानामानि ।

हिलमोची त्रिवृत्पर्णी विषघ्नी हिलमोचिका ।

अर्थ-हिलमोची, त्रिवृत्पर्णी, विषघ्नी, हिलमोचिका (हिलमोचि, रोची, मोची, मत्स्याङ्गी, हेलञ्ची, मम्बी, मत्स्याक्षी, चक्राङ्गी, जल-ब्राह्मी, ब्राह्मी, शंखधरा, आचारी)

संस्कृतभाषाम	हिलमोचिका ।
हिन्दीभाषामे	हुरहुल ।
बंगभाषा	हिञ्चेशाक।
बम्	हुरहुची ।
आरक०	हिरमिचा ।

अस्या गुणाः ।

शोथं कुष्ठं कफं पित्तहरते हिलमोचिका॥(भावप्रकाश)

अर्थ-हिलमोचिका अर्थात् हुलहुराका शाक-सूजन, कोढ, कफ, पित्त इनको दूर करे है।

अन्यच्च ।

हिलमोची सरा तिक्ता कुष्ठघ्नी कफपित्तजित् ।

अर्थ-हुरहुलशाग-कुछेक दस्तावर, कडवा तथा कुष्ठ और कफ, पित्तनाशक है ।

विवरण। यह ब्राह्मीकी समान होती है । प्रायः जलके निकटक स्थानोंमें देखीजाती है । फूल छोटा छोटा नीले रंगका आता है ।

सुनिषण्णकनामानि ।

सितवारः सितिमरः स्वस्तिकः सुनिषण्णकः ।
श्रीवारकः सूचिपत्रः पर्णाकः कुर्कुटः शिखी ॥

अर्थ-सितिवार, स्वस्तिक, सुनिषण्णक, श्रीवारक, सूचिपत्र, पर्णाक, कुर्कुट, शिखी (वितुन्न, सुनिषण्ण, चञ्चु, सुतपत्र, शितिचार सूच्याह्वय, सूच्याह्व, सूचिपत्रक, श्रीवारक, बभ्रु, कुरण्ट, कुक्कुट, सच्छिदल, श्वेतावर, मेधाकृत, ग्राहक, शितिवार,

संस्कृतभाषामें	सुनिषण्णक ।
हिंदीभाषामें	शिरिआरि, चौपतिया, उटिंगण, गुठवा । उटिंगणके बीज ।
बंगभाषामें	सुषुणीशाक, शुशुनीशाक ।
मराठीभाषामें	कुरडू ।
गुजरातीभाषामें	ओटीगण,ओटीगणनाबी । खडकातिरा ।
तैलिंगीभाषामें	सुनिषण्णमनेशाकमु ।
औत्कलीभाषामें	छुनछुनिया ।
लेटिनभाषामें	ब्लेफरिस् इडयुलीम् । Blepharis Edulis
फारसीभाषामें	अंजरा, तुख्मेअजरा ।
अरबीभाषामें	अजरा, तुख्मेअंजरा ।

अस्य गुणाः ।

सुनिषण्णो हिमो ग्राही मोहदोषत्रयापहः ।
अविदाही लघुः स्वादुः कषायो रूक्ष दीपनः ।
वृष्यो रुच्यो ज्वरश्वासमेहकुष्ठभ्रमप्रणुत् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-सुनिषण्णक-शिरिआरि-चौपतियाका शाक-शीतल, मलरोधक, मोहनाशक, त्रिदोषनिवारक, अविदाही, हलका, स्वादिष्ठ, कषेला, रूखा, दीपन, वृष्य, रुचिकारक तथा ज्वर, श्वास, प्रमेह, कोढ और भ्रमको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

सुनिषण्णो लघुर्ग्राही वृष्योऽग्निकृत्त्रिदोषहा ।
मेधारुचिप्रदो दाहज्वरहारी रसायनः ॥ (शो० नि०)

अर्थ-चौपतियाका शाक-हलका, ग्राही, वीर्य्यवर्द्धक, जठराग्निजनक, त्रिदोषनाशक, मेधाजनक, रुचिकारक, दाहनिवारक, ज्वरहारक और रसायन है ।

अस्य बीजगुणाः ।

सुनिषण्णकबीजन्तु मूत्रकृच्छ्रनिवारणम् ।

अर्थ-उटिंगणके बीज-मूत्रकृच्छ्र रोगको दूर करे है ।

विवरण । सुनिषण्णक अर्थात् उटिंगणका छता क्षुपकी समान सजल स्थानोंमें होताहै पत्ते चार और चांगेरीकी समान होतेहैं ८

चार पत्तोके बीचमे कलीसी निकलती है उसमे दो बीज चपटे लगे-हुये होते है वह बीज तालमखानेकी सदृश चिकने होते है ।

मूलकस्य पत्रशाकगुणाः ।

पाचनं लघु रुच्योष्ण पत्रं मूलकजं नवम् ।
स्नेहसिद्धं त्रिदोषघ्नमसिद्धं कफपित्तकृत् ॥

अर्थ-नवीनमूलीके पत्तोंका शाक-हलका, रुचिकारकारी, गरम और पाचक है वही घी और तेलादिमे सिद्धकिया अर्थात् छौंकाहुआ त्रिदोषनाशक है और असिद्ध अर्थात् कच्चा कफपित्तकारक है ।

चम्पकपत्रशाकगुणाः ।

काञ्चनं पत्रशाकं तु कषायं कटुकं मधु ।
गंडमालारक्तपित्तकुष्टवातांश्च नाशयेत् ॥

अर्थ-चम्पाके पत्तोका शाक-कषेला, चरपरा, मधुर तथा गंडमाला, रक्तपित्त, कुष्ठ और वातका विनाश करे है ।

मुष्कपत्रशाकगुणाः ।

मोक्षपत्रस्य शाकन्तु तिक्तं च तुवरं मतम् ।
दीपनं गुल्ममेहघ्नमुष्ण वातकफक्रमीन् ॥
जयेत्प्लीहामग्रहणीमेहपाण्डुगुदामयान् ।

अर्थ-मोखाके पत्तोंका शाक-कडवा, कषेला, दीपन, गरम तथा गुल्म, प्रमेह, वात, कफ, कृमि, प्लीहा, आम, संग्रहणी, मेह, पाण्डु और गुदाके रोगोंको दूर करेहै ।

करलीनामानि ।

करली दीर्घपत्रा च मध्यदण्डा प्रलम्बिका ।

अर्थ-करली, दीर्घपत्रा, मध्यदण्डा, प्रलम्बिका ।

हिन्दीभाषामे	करली ।
गुजरातीभाषामें	कुलीची भाजी ।
मराठीभाषामे	करलीनी भाजी ।
लेटिन्भाषामे	फेलोंऽयमृट् युवरोक्ष ।

अस्या गुणाः ।

करली शीतला स्वाद्वी वातला कफकृद्गुरुः ।

अर्थ-करली-शीतल, स्वादिष्ठ, वातजनक, कफकारक, और भारी है

अन्यच्च।

करली मधुरा तिक्ता वातला सारका मता।

अर्थ-करलीके पत्तोंका शाक-मधुर, कडवा, बादी और सारक है। विवरण। करलीके क्षुप वर्षाऋतुमे उत्पन्न होतेहै, पत्ते लम्बे और पत्तेके बीचमेसे एक बाल निकलती है इसमे सफेद फूल होताह इसका फल नीले रंगका हो ताहै और इसके पत्तोका शाक करतेहैं।

शतपुष्पापत्रशाकगुणा।

शतपुष्पादलं सोष्णं मधुरं गुल्मशूलजित्।
वातघ्नं दीपनं पथ्यं पित्तकृद्रुचिदायकम्॥

अर्थ-सोयके पत्तोका शाक-गरम, मधुर, गुल्मनाशक, शूलनिवारक, वातविनाशक, दीपन, पथ्य, पित्तजनक और रुचिकारक है।

मेथिकापत्रशाकगुणा।

मेथिकापत्रशाका तु तिक्ता वातहरा मता।
रुचिकृद्दीपनी या च किंचित्पित्तप्रकोपनी॥

अर्थ-मेथीके पत्तोका शाक-कडवा, वातविनाशक, रुचिकारक, दीपन और कुछ २ पित्तको कुपित करेहै।

राजिकापत्रशाकगुणा।

कटूष्णं राजिकापत्रं कृमिवातकफापहम्।
कण्ठामयहरं स्वादु वह्निदीपनकारकम्॥

अर्थ-राईके पत्तोका शाक-चरपरा, गरम, स्वादिष्ठ, अग्निप्रदीपक तथा कृमि, वात, कफ और कण्ठरोगको दूर करेहै।

सर्षपपत्रशाकगुणा।

सार्षपं पत्रमत्युष्णं रक्तपित्तप्रकोपनम्।
विदाहि कटुकं स्वादु शुक्रकृद्रुचिदायकम् (रा० नि०)

अर्थ-सरसोंके पत्तोका शाक-अत्यन्त गरम, रक्तपित्तप्रकोपक, दाहजनक, चरपरा, स्वादिष्ठ, शुक्रजनक और रुचिकारक है।

अन्यच्च।

कटुकं सार्षपं शाकं वहुमूत्रमलं गुरु।

अम्लपाक विदाहि स्यादुष्णं रूक्षं त्रिदोषजित् ॥
सक्षार लवणं तीक्ष्ण स्वादु शाकेषु निन्दितम्। (भा०प्र०)

अर्थ-रससोके पत्तोका शाक-चरपरा, बहुमूत्रमलकारक, भारी, अम्लपाकी, दाहजनक, गरम, रूखा, त्रिदोषनाशक, क्षारयुक्त, लवणरसयुक्त, स्वादु और सर्वशाकोसे निन्दित है।

शिग्रुपत्रशाकगुणा ।

शिग्रुपत्रभव शाक रुच्य वातकफापहम् ।
कटूष्णं दीपन पथ्य कृमिघ्न पाचनं परम् ॥

अर्थ-सैजिनेके पत्तोका शाक-रुचिकारक, वातकफनाशक, चरपरा, गरम, दीपन, पथ्य, कृमिनाशक और परम पाचक है।

द्रुद्रुघ्नपत्रशाकगुणा ।

द्रद्रुघ्नपत्र दोषघ्नमम्ल वातकफापहम् ।
कण्डूकासकृमिश्वासदद्रुकुष्ठघ्नं लघु ॥

अर्थ-पवारके पत्तोका शाक-दोषनाशक, खट्टा, वातनाशक तथा कण्डू, खाँसी, कृमि, श्वास, दाद और कुष्ठनाशक और हलका है।

कासमर्दनामानि ।

कासमर्दोऽरिमर्दश्च कासारिः कर्कशस्तथा ।

अर्थ-कासमर्द, अरिमर्द, कासारि, कर्कश (कालकूत, विमर्द, कासमर्दक, काल, कनक, जरण, दीपन, काशमर्द)।

संस्कृतभाषामे	कासमर्द (क)
हिन्दीभाषामे	कसौंदी ।
बंगभाषामे	कालकासुन्दा ।
मराठीभाषामे	रानकासविंदा ।
गुजरातीभाषामे	कासोदरी जगली तथा मोटो झाड ।
कर्णाटकीभाषामे	कासवटी फरहुल कसाद ।
तैलङ्गीभाषामे	गुरंपुताढचं ।
इंग्रेजीभाषामे	राउण्डपोडेडकेश्या । Round podded cassia
लैटिन्भाषामे	केश्यासोफेरा । Cassia Sophera
	केश्याओकसिडेंटेलिस् । C Occi dentails

अथ पत्रगुणा ।

कासमर्ददलं रुच्यं वृष्यं कासविषार्शनुत् ॥
मधुरं कफवातघ्नं पाचनं कण्ठशोधनम् ।
विशेषतः कासहरं पित्तघ्नं ग्राहकं लघु ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-कसौदीके पत्तोका शाक-रुचिकारक, वीर्य्यवर्द्धक, कासनाशक, विषघ्न, बवासीरको दूर करनेवाला, मधुर, कफवातविनाशक, पाचक, कण्ठशोधक, विशेषकरके खांसिको दूर करनेवाला, पित्तनाशक, ग्राही और हलका है ।

अन्यच्च ।

कासमर्दः सतिक्तोष्णो मधुरः कफवातनुत् ।
अजीर्णकासपित्तघ्नः पाचनः कण्ठशोधनः ॥

अर्थ-कसौदी-कडवी, गरम, मधुर, कफवातनाशक, अजीर्णको हरनेवाली, खांसीको दूर करनेवाली, पित्तनाशक, पाचक और कण्ठशोधक है ।

अन्यच्च ।

कासमर्दोऽग्निदः स्वर्य्यः स्वादुस्तिक्तस्त्रिदोषजित् ॥

अर्थ-कसौदीका शाक-अग्निप्रदीपक, स्वरको उत्तम करनेवाला, स्वादिष्ठ, कडवा और त्रिदोषनाशक है ।

विवरण । कसौदीके क्षुप प्रायः बाग और जंगलमें बहुत होतेहैं, पत्ते बराबर डंडीपर लगे होतेहैं, फूल पीला आता है, फली चपटी आतीहै

कौसुम्भशाकगुणा ।

कौसुम्भशाकं मधुरं कटूष्णं विण्मूत्रदोषापहरं मदघ्नम् ॥
दृष्टिप्रसादं कुरुते विशेषाद्रुचिप्रदं दीप्तिकरं च वह्नेः ॥

अर्थ-कसूमके पत्तोका शाक-मधुर, चरपरा, गरम, मल और मूत्रके दोषोको हरनेवाला, मदनाशक, दृष्टिको बढानेवाला, रुचिकारक और अग्निको दीपन करे है ।

वर्षाभूशाकगुणा ।

वर्षाभूवसुकौ पर्णकफमान्द्यानिलापहौ ।
शाके रूक्षतरौ गुल्मप्लीहशूलापहारकौ ॥

अर्थ-पुनर्नवा और वसुकके पत्तोका शाक-रूखा तथा कफ, मन्दाग्नि, गुल्म, प्लीहा और शूलको निर्मूल करे है ।

गोजिह्वाशाकगुणा ।

गोजिह्वाकुष्ठमेहास्रकृच्छ्रज्वरहरी लघुः ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-गोभीका शाक-कोढ, प्रमेह, रुधिरविकार, मूत्रकृच्छ्र, ज्वर नाशक है तथा हलका है।

पटोलपत्रगुणा ।

पटोलपत्रं पित्तघ्नं दीपनं पाचनं लघु ।
स्निग्धं वृष्यं तथोष्णं च ज्वरकासकृमिप्रणुत् ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-परवलके पत्तोंका शाक-पित्तनाशक, दीपन, पाचक, हलका, स्निग्ध, वीर्य्यवर्द्धक, गरम तथा ज्वर, खाँसी और कृमिरोगको दूरकरे है।

गुडूचीपत्रशाकगुणा ।

गुडूचीपत्रमाग्नेयं सर्वज्वरहरं लघु । कषायं कटु तिक्तं च स्वादुपाकं रसायनम् ॥ बल्यमुष्णं च संग्राहि हन्याद्दोषत्रयं तृषाम् । दाहप्रमेहवातास्रकामलाकुष्ठपाण्डुताः ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-गिलोयके पत्तोंका शाक-अग्निप्रदीपक, सर्व प्रकारके ज्वरको हरनेवाला, हलका, कसेला, चरपरा, कडवा, स्वादुपाकी, रसायन, बलवर्द्धक, गरम, मलरोधक, त्रिदोषनाशक, तृषानिवारक तथा दाह, प्रमेह, वातरक्त, कामला, कोढ और पाण्डुरोगको दूर करे है।

पर्पटशाकगुणा ।

पर्पटो हन्ति पित्तास्रज्वरतृष्णाकफभ्रमान् ।
सग्राही शीतलस्तिक्तो दाहनुद्वातलो लघुः ॥

अर्थ-पित्तपापडेका शाक-रक्तपित्त, ज्वर, तृषा, कफ, भ्रम और दाहको दूर करे है, ग्राही, शीतल, कडवा, बादी और हलका है।

सेहुण्डपत्रशाकगुणा ।

सेहुण्डस्य दलं तीक्ष्णं दीपनं रोचनं हरेत् ।
आध्मानाष्ठीलिकागुल्मशूलशोथोदराणि च ॥

अर्थ-सेहुण्डके पत्तोंका शाक-तीक्ष्ण, दीपन, रोचक तथा आध्मान, आष्ठीलिका, गुल्म, शूल, सूजन और उदररोगको दूरकरे है।

यवानीपत्रशाकगुणा ।

यवानीशाकमाग्नेयं रुच्यं वातकफप्रणुत्

उष्ण कटु च तिक्तं च दीपन गुल्मशूलनुत् ॥

अर्थ-अजशायनके पत्तोका शाक-जठराग्निकारक, रुचिकारक, वातकफनाशक, गरम, चरपरा, कडवा, दीपन, गुल्म और शूलको दूर करे है।

द्रोणपुष्पीपत्रशाकगुणा ।

द्रोणपुष्पीदल स्वादु रूक्ष गुरु च पित्तकृत् ।
भेदक कामलाशोथमेहज्वरहर कटु ॥

अर्थ-गूमाके पत्तोका शाक-स्वादिष्ठ, रूखा, भारी, पित्तजनक, भेदक तथा कामला, सूजन, प्रमेह और ज्वरका नाश करे है तथा चरपरा है।

चणकपत्रशाकगुणा ।

रुच्य चणकशाकं स्याद्दुर्जर कफवातकृत् ।
अम्ल विष्टम्भजनकं पित्तनुद्दन्तशोथनुत् ॥

अर्थ-चनेके पत्तोका शाक-दुर्जर, कफवातकारक, खट्टा, विष्टम्भकारक, पित्तनाशक और दांतोकी सूजनको दूर करे है।

कलायपत्रशाकगुणा ।

कलायशाकं भेदि स्याल्लघु तिक्त त्रिदोषजित् ।

अर्थ-मटरके पत्तोका शाक-दस्तावर, हलका, कडवा और त्रिदोषनाशक है।

अथ पुष्पशाकम् ।

अगस्तिपुष्पगुणा ।

अगस्तिकुसुम शीत चातुर्थिकनिवारणम् ।
नक्ताध्यनाशनं तिक्त कषाय कटुपाकि च ॥
पीनसश्लेष्मपित्तघ्नं वातघ्न मुनिभिर्मतम् ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-अगस्तियाके फूलोका शाक-शीतल, चातुर्थिक अर्थात् चौथियाको दूर करनेवाला, रतोंधेको हरनेवाला, कडवा, कसेला, कटुपाकी तथा पीनस,श्लेष्म पित्त और वातको विनाश करे है।

जीवन्तीपुष्पशाकगुणा ।

जीवन्तीपुष्पज शाक तुवर मधुर लघु ।

पथ्यं रुचिकरं वृष्य कफपित्तविनाशनम् ॥

अर्थ-जीवन्तीके फूलोका शाक-कसेला, मधुर, हलका, पथ्य, रुचिकारक, वृष्य और कफपित्तनाशक है।

कदलीपुष्पगुणा ।

कदल्याः कुसुमं स्निग्धं मधुर तुवरं गुरु ।
वातपित्तहर शीरं रक्तपित्तक्षयप्रणुत् ॥

अर्थ-केलेके फूलोका शाक-स्निग्ध, मधुर, कसेला, भारी, वातपित्तनाशक, शीतल तथा रक्तपित्त और क्षयरोगको क्षय करे है।

शिग्रुपुष्पगुणा ।

शिग्रोः पुष्पन्तु कटुक तीक्ष्णोष्ण स्नायुशोथकृत् ।
कृमिहृत्कफवातघ्न विद्रधिप्लीहगुल्मजित् ॥
मधुशिग्रोस्त्वक्षिहित रक्तपित्तप्रसादनम् ।

अर्थ-सैजिनेके फूलोका शाक-चरपरा, तीक्ष्ण, गरम, स्नायुओमे सूजन करनेवाला, कृमिनाशक, कफवातनाशक तथा विद्रधि, प्लीहा और गुल्मको दूर करे है। मधुशिग्रुके फूलोका शाक-नेत्रोको हितकारी और रक्तपित्त प्रसादक है।

शालमलीपुष्पशाकगुणा ।

शालमलीपुष्पशाकन्तु घृतसैन्धवसाधितम् । प्रदर नाशयत्येव दुःसाध्यं च न सशयः॥रसे पाके च मधुर कषाय शीतल गुरु । कफपित्तास्रजिद्ग्राहि वातल च प्रकीर्त्तितम् ॥

अर्थ-घी और सैंधानिमक डालकर बनायाहुआ शेमलके फूलोका शाक दुःसाध्यप्रदरका निःसंदेह नाश करे है। रस और पाकमे मधुर, कसेला, शीतल, भारी, तथा कफ और रक्तपित्तका नाश करे है, ग्राही और बादी है।

वरुणपुष्पगुणा ।

पुष्पं वरुणज ग्राहि पित्तघ्नमामवातजित् ।

अर्थ-बरनाके फूलोका शाक-मलरोधक, पित्तनाशक और आमवातको दूर करे है।

मधूकपुष्पगुणा ।

मधूकपुष्पञ्च हृद्य तर्पण बृंहण परम् ।

अर्थ-महुवाके फूलोका शाक-हृदयको हितकारी, तृप्तिकारक और पुष्टिजनक है।

कोविदारादिपुष्पशाकगुणाः।

कोविदारकर्बुदारशणशाल्मलिपुष्पकम्।
ग्राहि शाकं प्रशस्त च रक्तपित्ते विशेषतः॥

अर्थ-कचनार, सफेद कचनार, सन और सेमलके फूलोका शाक मलरोधक और रक्तपित्तरोगमे हितकारी है।

अथ फलशाकम्।

कूष्माण्डनामानि।

कूष्माण्डं स्यात्पुष्पफल पीतपुष्पं बृहत्फलम्।

अर्थ-कूष्माण्ड, पुष्पफल, पीतपुष्प, बृहत्फल (घृणावास,तिमिष, ग्राम्यकर्कटी, कूष्माण्डक,कर्कारु,शिखिवर्द्धक,कुम्भाण्ड, कूष्माण्डी, कर्कोटिका, कुम्माडी, बृहत्फला, सुफला, कुअफला, नागपुष्पफला)

संस्कृतभाषामे	कूष्माण्ड।
हिन्दीभाषामे	पेठा, कुम्हडा, कोहडा।
बंगभाषामे	कुमडागाछ।
मराठीभाषामें	कोहोळा।
गुजरातीभाषाम	भुरु कोलु।
कर्णाटकीभाषामे	दारकोहोळा।
तैलङ्गभाषामे	पुल्लाहा, वर्डीका, गुम्माडि।
द्रडी०	कखाडु, पानीकखारु।
इग्रेजीभाषामे	पंपकीन। Pumpkin
लैटिन्भाषामे	बेनीनकासा सेरिफेरा Benincasa Cerifera
फारसीभाषामें	भूराकुदु।
अरबीभाषामें	महद्देवा।

अस्य फलगुणा।

मूत्राघातहरं प्रमेहशमनं कृच्छ्राश्मरीछेदनम्।

विण्मूत्रग्लपन तृषार्तिशमनं जीर्णांगपुष्टिप्रदम् ॥
वृष्य स्वादुतरं त्वरोचकहरं बल्य च पित्तापहम् ।
कूष्माण्डप्रवरं वदन्ति भिषजो वल्लीफलानांपुनः॥(रा०नि०)

अर्थ-पेठा-मूत्राघात रोगको हरनेवाला,प्रमेहाको शान्ति करनेवाला,मूत्रकृच्छ्र और पथरीका नाश करनेवाला, मल और मूत्र तृषाकी पीडाको शान्ति करनेवाला, जीर्ण शरीरवालोको पुष्टिदेनेवाला,वीर्यको बढानेवाला,स्वादिष्ठ,अरुचिको हरनेवाला, बलको करनेवाला,पित्तका नाशकरनेवाला और सब बेलवाले फलोमे उत्तम है।

अन्यच्च ।

मूत्रावरोधशमनं बहुपित्तहारि कृच्छ्राश्मरीप्रशमनं विनिहन्ति पित्तम् ॥ पथ्यसशोणितसमुल्बणपित्तरोगे तृष्णापहं त्रिपु सम तमुदाहरन्ति ॥ (सु०)

अर्थ-पेठा-मूत्रके रोधको दूर करनेवाला, अनेक प्रकारके पित्तोको हरनेवाला, मूत्रकृच्छ्र और पथरीरोगको शान्ति करनेवाला, पित्त, नाशक तथा रक्तपित्तरोगमे हितकारी, तृषानिवारक है ।

अपिच ।

कूष्माण्डं भेद्यभिष्यन्दि विष्टम्भि वातपित्तजित् । वस्तिशुद्धिकर वृष्य स्वादुपाकरस गुरु ॥ विशेषात्पित्तनुद्वालमध्य चैव कफापहम् ।पक्व लघूष्ण सक्षारं दीपन पाचन तथा॥सर्वं दोषहरं हृद्य पथ्य चेतोविकारनुत् ॥(शो० नि०)

अर्थ-पेठा-भेदक, अभिष्यन्दी, विष्टम्भकारक, वातपित्तनाशक, वस्तिशोधक, वीर्यवर्द्धक, स्वादुपाकी और भारी है । कच्चा पेठा-विशेष करके पित्तनाशक है । मध्यम अवस्थाका पेठा-कफनाशक है और पक्का पेठा-हलका,गरम,क्षारयुक्त,दीपन,पाचन, त्रिदोषनाशक हृदयको हितकारी, पथ्य और हृदय (मन) के रोगनाशक है ।

अन्यच्च

कूष्माण्डकफलं वृष्य पुष्टिकृद्धातुवर्द्धकम् । वस्तिशुद्धिकरब ल्यमतिस्वादु च शीतलम् ॥ गुरु रूक्ष सारक च हृद्य कफकरं

मतम् । मूत्राघातं प्रमेहञ्च मूत्रकृच्छ्राश्मरी तृषाम् ॥ अरोच कं वातपित्त पित्तरक्तरुजं तथा । वात रेतोविकार च नाशये-दिति तन्मतम् ॥ तत्कोमल चातिशीतं दोपकृत्पित्तहारकम् ॥ तन्मध्यमं कफकरं पक्कं किञ्चिच्च शीतलम् ॥ दीपकं च लघुस्वादु क्षारं वस्तेश्च शुद्धिदम् ॥ सर्वदोपहरं पथ्य पक्कमज्जा च माधुरी । वस्तिशुद्धिकरी वृष्या पित्तनाशकरी मता ॥ (नि० र०)

अर्थ-पेठा-वीर्यवर्द्धक, पुष्टिकारक, धातुवर्द्धक, वस्तिशोधक, बलकारक, अत्यन्त स्वादिष्ठ, शीतल, भारी रूखा, सारक, हृदयको हितकारी, कफकारक तथा मूत्राघात, प्रमेह, मूत्रकृच्छ्र, पथरी, तृषा, अरुचि, वातपित्त, पित्त, रुधिरविकार, वात और शुक्रके विकारको हरे है, कच्चा पेठा-अत्यन्त शीतल, दोपकारक, पितकारक है। मध्यम अवस्थाका पेठा-कफकारक और पका पेठा-किञ्चित शीतल, दीपन, हलका, स्वादिष्ठ, खार, वस्तिशोधक, त्रिदोषनाशक और पथ्य है। पके पेठेकी मूँग-मधुर, वस्तिशोधक, वृष्य और पित्तनाशक है।

विवरण। पेठा घरबाहर सब जगह बोयाजाता है और इसकी बेल चलती है यह फल बडा और इसका रंग नीला होता है जब यह फल पकजाता है तब इसके ऊपर सफेद रंगकी धूलसी जमजाती है।

पीतकूष्माण्डनामानि।

कूष्माण्डं पीतपुष्पा च ग्राम्या पीतफला च सा ।
गुडयोगफला चैव पीतकूष्माण्ड इत्यपि ॥

अर्थ-कूष्माण्ड, पीतपुष्पा, ग्राम्या, पीतफला, गुडयोगफला, पीतकूष्माण्ड।

संस्कृतभाषामें	(डगरी) पीतकूष्माण्ड ।
हिन्दीमें	लालपेठा, गोलकद्दू, भिलयाकद्दू, काशीफल, सफुरियाकुम्मार ।
बंगभाषामें	विलातिकुमडा ।
मराठीभाषामें	तावडा भोपळा ।
गुजरातीभाषामें	पतकोलु, शाकरकोलु ।
कर्णाटकीभाषामें	ढंगर ।
तैलिंगीभाषामें	तियागुमडिकाया ।

इंग्रेजीभाषामें दिगोर्ड । The gourd
लेटिन्भाषामें कुकुर्बिटा मोसिमा । Cucurpita Masceima
फारसीभाषामें वादरग ।

पीतकूष्माण्डगुणाः ।

अपरं पीतकूष्माण्डं गुरु पित्तकरं परम् ।
अग्निमान्द्यकरं स्वादु श्लेष्मघ्नं वातकोपनम् ॥ (आ०सं०)

अर्थ-पीतकूष्मांड अर्थात् भिलया, लालकदू-भारी, पित्तजनक, मन्दाग्निकारक, स्वादिष्ठ, कफनाशक और वातको कुपित करे है ।

विवरण-लाल कदू अर्थात् भिलयाकदू सर्वत्र बोया जाताहै, इसकी पेठेकी माफिक बेल चलतीहै, पत्ते बडे बडे, फूल पीला और फल बहुत बडे बडे लगतेहैं ।

कूष्माण्डीनामगुणाश्च ।

कूष्माण्डी तु भृशं लघ्वी कर्कारुरपि कीर्तिता ।
कर्कारुर्ग्राहिणी शीता रक्तपित्तहरा गुरुः ॥
पक्वा तिक्ताग्निजननी सक्षारा कफवातनुत् । (भा० प्र०)

अर्थ-कूष्माण्डी (कोहडी) हलकी और इसको कर्कारु भी कहतेहैं, कर्कारु-मलरोधक, शीतल, रक्तपित्तनाशक और भारी है, अग्निदीपक, क्षारयुक्त और कफवातनाशक है ।

अलाबुनामानि ।

अलाबुः कथिता तुम्बी द्विधा दीर्घा च वर्तुला ।

अर्थ-अलाबु, तुम्बी (अलाबु, तुम्ब, तुम्बक, तुम्बा, पिण्डफला, महाफला, आलाबू एलाबु, लाबु, लाबुका, तुम्बिका, तुम्बी, अलोवु, तुम्बक) यह दो प्रकारका होताहै एक लम्बा और दूसरा गोल ।

संस्कृतभाषामें अलाबु, तुम्बी ।
हिन्दीभाषामें कदू तोम्बी, लम्बा, लौआ, ग्रहालौआ, रामतोरई ।
बंगभाषामें लाउ, कदु ।
मराठीभाषामें दुध्या भोपाळ ।
गुजरातीभाषामें दुधीयु, दुधलुं ।
कर्णाटकीभाषामें कडउवलकायि ।

तैलिङ्गीभाषामें	तीयातुखडीकाया।
इंग्रेजीभाषामें	व्हाइटगुर्ड। White gourd
लैटिन्भाषामें	कुकुर्बिटा लाजिनेरिया। Cucurbita lagenaria
फारसीभाषामें	कुट्टाशीरिन् कुदुएदरोज।
अरबभाषामें	युक्तिनेहुलुकरा।

अस्या गुणाः।

मिष्टतुम्बीफलं हृद्यं पित्तश्लेष्मापहं गुरु।
वृष्यं रुचिकरं प्रोक्तं धातुपुष्टिविवर्द्धनम्॥ (भा॰ प्र॰)

अर्थ–तोम्बी कद्दू हृदयको हितकारी, पित्तनाशक,भारी, वीर्यवर्द्धक, रुचिकारक और धातु तथा पुष्टिवर्द्धक है।

अन्यच्च।

तुम्बी सुमधुरा स्निग्धा पित्तघ्नी गर्भपोषकृत्।
वृष्या वातप्रदा चैव बलपुष्टिविवर्द्धिनी॥ (रा॰ नि॰)

अर्थ–तोम्बी–मधुर, स्निग्ध, पित्तनाशक, गर्भपोषक, वृष्य, वातजनक तथा बल और पुष्टिकारक है।

अपिच।

अलाबूर्भेदनी गुर्वी पित्तघ्नी कफला हिमा।

अर्थ–कद्दू रामतोरई–भेदक,भारी, पित्तनाशक कफकारक और शीतल है।

अन्यच्च।

तुम्बी तु मधुरा स्निग्धा गर्भपोषणकारिणी। वृष्या वातप्रदा बल्या पौष्टिका रुच्यशीतला॥ मलस्तम्भकरी रूक्षा भेदका गुरुपित्तनुत्। काण्डमस्याश्च मधुरं वातलं कफकारकम्॥ स्निग्धं शीतं भेदकं च पित्तनाशकरं जगुः। (नि॰ र॰)

अर्थ–तोम्बी–मधुर, स्निग्ध, गर्भको पोषण करनेवाली, वृष्य, वातजनक, बलकारक,पुष्टिजनक,रुचिकारक,शीतल, मलस्तम्भक, रूखी, भेदक और पित्तनाशक है। इसकी बेलके काड–मधुर,बादी, कफकारक, स्निग्ध, शीतल, भेदक और पित्तनाशक है।

कटुतुम्बीनामानि।

कटुतुम्बी पिण्डफला राजपुत्री नृपात्मजा।

फलिनी तिक्ततुम्बी च तिक्तका कटु तिक्तका ॥

अर्थ-कटुतुम्बी, पिण्डफला, राजपुत्री, नृपात्मजा, फलिनी, तिक्त
म्बी, तिक्तका, कटुतिक्तका (लम्बा, इक्ष्वाकु, कटुकालाबु, कटुफला,
म्बिनी, बृहत्फला, दंतबीजा, तुम्बिका, तु
म्बीका, क्षत्रियवरा, कटुतुम्बिनी)।

संस्कृतभाषामें	कटुतुम्बी ।
हिंदीभाषामें	तितलोकी, कडवीतोम्बी ।
बंगभाषामें	तितलाउ ।
मराठीभाषामें	कडू भोपळा
गुजरातीभाषामें	कडवी तुंबडी ।
कर्णाटकीभाषामें	कहीसोरे ।
तैलङ्गभाषामें	चेतिआनव ।
इंग्रजीभाषामें	बोटलगुर्ड । Bottle gourd
लेटिन्भाषामें	लेजनेरिया वलगेरिस । L
	क्युकर्बिटालेजिनेरिया । Cu
फारसीभाषामें	कदुतलख ।
अरबीभाषामें	करउलमुर ।

अस्या गुणाः ।

कटुतुम्बी कटुस्तीक्ष्णा वान्तिकृच्छ्वासवात
कासघ्नी शोधनी शोफव्रणशूलविषापहा ॥

अर्थ-कडवी तोम्बी-कटु, तीक्ष्ण, वान्तिजनक
करनेवाली, वातनाशक, कासनिवारक, शोधक तथ
शूल और विषनाशक है ।

अन्यच्च ।

कटुतुम्बी हिमा हृद्या पित्तकासविषापहा ।
तिक्ता कटुर्विपाके च वातपित्तज्वरान्तकृत्

अर्थ-कडवी तोम्बी-शीतल, हृदयको हितकारी,
कटु तथा पित्त, खासी, विष और वातपित्तज्वरको दू

अस्याः पर्णगुणाः ।

पर्णं पाके तु मधुरं मूत्रशोधनमुत्तमम् ।

पित्तशान्तिकर प्रोक्तमृषिभिः सूक्ष्मदर्शिभिः ॥

अर्थ-कडवीतोम्बीके पत्ते-पाकमे मधुर,मूत्रशोधक और पित्तको शान्तिकरै है ।

कासश्वासविपच्छर्दिज्वरार्ते कफकर्षिते ।
प्रताम्यति नरे चैव वमनार्थं तदिष्यते ॥

अर्थ-कडवीतोम्बी-खाँसी,श्वास,विष,वमन और जो मनुष्य ज्वरसे तथा कफसे पीडित है उनके लिये इसकी वमन देनी चाहिये।

विवरण-कडवीतोम्बी और रामतोरईकी बेल एकसी होती है, फूलभी दोनोपै सफेद आतेहैं, फलभी एकसे लगते है ।

कर्कटीनामानि ।

एर्वारुः कर्कटी प्रोक्ता कथ्यन्ते तद्गुणा अथ ॥

अर्थ-एर्वारु,कर्कटी (लोमशी, व्यालपत्रा, बृहत्फला, व्यालपत्री, लोमशा,स्थूला,तोयफला,हस्तिदन्तफला,कर्कटी,छर्दापनिका, पीनसा, मूत्रला, मूत्रफला, त्रपुषा, हस्तिपर्णी, लोमशकाण्डा, बहुकन्दा, चिर्भटी,कर्कटाक्ष,शान्तनु,वालुङ्की, त्रपुषी,इर्वारु, उर्वारु ईर्वारु)।

संस्कृतभाषामे	कर्कटी ।
हिन्दीभाषामे	ककडी ।
बंगभाषामे	कॉकुड, बडकॉकड ।
मराठीभाषामे	काकडी, वालुक-कांकडी ।
गुजरातीभाषामे	काकडी ।
कर्णाटकीभाषामे	कयेयसौत ।
तैलिङ्गभाषामे	दोसकाया ।
इंग्रेजभाषामे	ककंबर । Cucumber
लैटिनभाषामे	क्युक्युमिस् सेटिवस् । Cucumis Sativus
फारसीभाषामे	ख्याटजावन्दरज ख्यारदराज ।
अरबीभाषामे	किस्साकदम्र ।

अस्या गुणा ।

कर्कटी शीतला रूक्षा ग्राहिणी मधुरा गुरुः ।
रुच्या पित्तहरा सामा पक्का तृष्णाग्निपित्तकृत्॥ (भा०प्र०)

फलिनी तिक्ततुम्बी च तिक्तका कटुतिक्तका ॥

अर्थ-कटुतुम्बी, पिण्डफला, राजपुत्री, नृपात्मजा, फलिनी, तिक्तुम्बी, तिक्तका, कटुतिक्तका (लम्बा, इक्ष्वाकु, कटुकालाबु, कटुफला, तुम्बिनी, बृहत्फला, देतबीजा, तुम्बिका, तुम्बी, महाफला, तुम्बीका, क्षत्रियवरा, कटुतुम्बिनी)।

संस्कृतभाषामें	कटुतुम्बी ।
हिंदीभाषामें	तितलौकी, कडवीतोम्बी ।
बंगभाषामें	तितलाउ ।
मराठीभाषामें	कडू भोपळा
गुजरातीभाषामें	कडवी तुंबडी ।
कर्णाटकीभाषामें	कहीसोरे ।
तैलङ्गीभाषामें	चतिआनव ।
इंग्रजीभाषामें	बोटलगुर्ड । Bottle gourd
लेटिन्भाषामें	लेजनिरिया वल्गेरिस । Lagenaria Vulgaris
	क्युकर्बिटालेजिनेरिया । Cucurbita Lagenaria
फारसीभाषामें	कदुतलख ।
अरबीभाषामें	करउलमुर ।

अस्या गुणाः ।

कटुतुम्बी कटुस्तीक्ष्णा वान्तिकृच्छ्वासवातजित् ।
कासघ्नी शोधनी शोफव्रणशूलविषापहा ॥ (रा० नि०)

अर्थ-कडवी तोम्बी-कटु, तीक्ष्ण, वान्तिजनक, श्वासको दूर करनेवाली, वातनाशक, कासनिवारक, शोधक तथा सूजन, व्रण, शूल और विषनाशक है ।

अन्यच्च ।

कटुतुम्बी हिमा हृद्या पित्तकासविषापहा ।
तिक्ता कटुर्विपाके च वातपित्तज्वरान्तकृत् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-कडवी तोम्बी-शीतल, हृदयको हितकारी, कडवी, पचनेमें कटु तथा पित्त, खांसी, विष और वातपित्तज्वरको दूर करै है ।

अस्याः पत्रगुणाः ।

पत्रं पाके तु मधुरं मूत्रशोधनमुत्तमम् ।

पित्तशान्तिकरं प्रोक्तमृषिभिः सूक्ष्मदर्शिभिः ॥

अर्थ-कडवीतोम्बीके पत्ते-पाकमे मधुर,मूत्रशोधक और पित्तको शान्तिकरै है।

कासश्वासविषच्छर्दिज्वरार्ते कफकर्षिते।
प्रताम्यति नरे चैव वमनार्थं तदिष्यते ॥

अर्थ-कडवीतोम्बी-खॉसी,श्वास,विष,वमन और जो मनुष्य ज्वरसे तथा कफसे पीडित है उनके लिये इसकी वमन देनी चाहिये।

विवरण-कडवीतोम्बी और रामतोरईकी बेल एकसी होती है, फूलभी दोनोपै सफेद आतेहै, फलभी एकसे लगते है।

कर्कटीनामानि।

एर्वारुः कर्कटी प्रोक्ता कथ्यन्ते तद्गुणा अथ ॥

अर्थ-एर्वारु,कर्कटी (लोमशी, व्यालपत्रा, बृहत्फला, व्यालपत्री, लोमशा,स्थूला,तोयफला,हस्तिदन्तफला,कर्कटी,छर्दापनिका, पीनसा, मूत्रला, मूत्रफला, त्रपुषा, हस्तिपर्णी, लोमशकाण्डा, बहुकन्दा, चिर्भटी,कर्कटाक्ष,शान्तनु,वालुङ्की, त्रपुषी,इर्वारु, उर्वारु ईर्वारु)।

संस्कृतभाषामे	कर्कटी।
हिन्दीभाषामे	ककडी।
बंगभाषामे	कॉकुड, बडकॉकड।
मराठीभाषामे	काकडी, वालुक-कांकडी।
गुजरातीभाषामे	कांकडी।
कर्णाटकीभाषामे	कयेयसौत।
तैलिङ्गीभाषामे	दोसकाया।
इंग्रेजीभाषामे	ककंवर। Cucumber
लेटिनभाषामे	क्युक्युमिस् सेटिवस्। Cucumis Sativus
फारसीभाषामे	ख्याटजावन्दरज ख्यारदराज।
अरबीभाषामे	किस्साक्ढम्।

अस्या गुणाः।

कर्कटी शीतला रूक्षा ग्राहिणी मधुरा गुरुः।
रुच्या पित्तहरा सामा पक्वा तृष्णाग्निपित्तकृत्॥ (भा०प्र०)

अर्थ-कच्ची ककडी-शीतल, रूखी, मलरोधक, मधुर, भारी, रुचिकारक और पित्तको दूर करे है। पकी ककडी-गरम, अग्निवर्द्धक और पित्तकारक है।

एर्वारुक पित्तहर सुशीतल मूत्रामयघ्न मधुरं रुचिप्रदम्। सन्तापमूर्च्छापहरञ्च तृप्तिद वातप्रकोपाय घन तु सेवितम् (रा नि)

अर्थ-ककडी-पित्तनाशक, शीतल, मूत्ररोगनाशक, मधुर, रुचिकारक सन्ताप और मूर्च्छाको दूर करनेवाली, तृप्तिजनक और अत्यन्त सेवन करनेसे वातको कुपित करे है।

अन्यच्च।

कर्कट्यास्तु फल पक्क छर्दितृष्णाक्लमार्तिनुत् ॥

अर्थ-पकी ककडी-वमन, तृषा और क्लान्तिको दूर करे है।

अपिच।

एर्वारुकं तु मधुर रुच्य रूक्ष च शीतलम्। तृप्तिकृद्ग्राहकं प्रोक्तमत्यन्तवातकारकम् ॥ गुरुवातज्वरकफकारक तापहारकम्। पित्तं मूर्च्छा मूत्रकृच्छ्र नाशयेदिति कीर्तितम् ॥ कोमलैर्वारुक तिक्त लघु स्वाद्वतिमूत्रलम्। शीत रूक्ष रक्तपित्तमूत्रकृच्छ्रास्रदोषजित् ॥ तत्पक्क पित्तल चाग्निदीपनं च तृषापहम्। उष्णं त्रिदोषशमन क्लमदाहहर मतम् ॥ गृहे जीर्णं तु तज्ज्ञेयमुष्ण पित्तकरं मतम्। कफवायोर्नाशकर प्रोक्तमायुर्विदैर्जनैः ॥

अर्थ-ककडी-मधुर, रुचिकारक, रूखी, शीतल, तृप्तिकारक, मलरोधक, अत्यन्त बादी, वातज्वरकारक, कफकारक, तापनाशक तथा पित्त मूर्च्छा और मूत्रकृच्छ्र रोगका नाश करे है। कोमल ककडी-हलकी, कडवी, स्वादु, अत्यन्त मूत्रकारक, शीतल, रूखी है तथा रक्तपित्त, मूत्रकृच्छ्र, और रुधिरके विकारोको दूर करे है, पकी ककडी-पित्तजनक, अग्निप्रदीपक, तृषानिवारक, गरम, त्रिदोषनाशक, क्लमहारक, दाहनिवारक है और जो घरमे रक्खी हुई पकजावे ऐसी ककडी-गरम, पित्तकारक तथा कफ और वातको नष्ट करेहै।

कर्कटी मधुरा रुच्या शीता लघ्वी च मूत्रला। त्वचा या कटुका

तिक्ता पाचकाग्निप्रदीपनी ॥ अवृष्या ग्राहिणी प्रोक्ता मूत्ररोधाश्मरीहरा । मूत्रकृच्छ्रं वमिं दाहं श्रमं चैव विनाशयेत् ॥ सा पक्वा रक्तदोषस्य कारिण्युष्मा बलप्रदा ॥

अर्थ-दूसरे प्रकारकी ककडी-मधुर, शीतल, रुचिजनक, हलकी, मूत्रजनक, इसकी त्वचा-कटु, तिक्त, पाचक, अग्निप्रदीपक, अवृष्य, ग्राहिणी, मूत्ररोध, पथरी, मूत्रकृच्छ्र, वमन दाह और श्रमका नाश करे है । वही पक्की ककडी-रुधिरविकारकारक, गरम, और बलकारक है ।

तृतीया कर्कटी रुच्या मधुरा वातकारिणी ।
शीता मूत्रप्रदा गुर्वी कफकृद्दाहनाशिनी ॥
वमिं पित्त भ्रम मूत्रकृच्छ्र मूत्राश्मरीं हरेत् ।

अर्थ-तीसरेप्रकारकी ककडी-रुचिकारक, मधुर, वातवर्द्धक, शीतल, मूत्रजनक, भारी, कफकारी, दाहनाशक तथा वमन, पित्त, भ्रम, मूत्रकृच्छ्र, मूत्ररोध, पथरीको दूर करे है ।

अरण्यकर्कटीगुणाः ।

अरण्यकर्कटी चोष्णा रसे तिक्ता च भेदिका ।
पाके कट्वी कफकृमिपित्तकण्डूज्वरापहा ॥

अर्थ-वनककडी-गरम, तिक्तरसान्वित, भेदक, पाकमे कटु तथा कफ, कृमि, पित्त, कण्डु और ज्वरको दूर करनेवाली है ।

तिक्तकर्कटीगुणाः ।

तिक्तकर्कटिका प्रोक्ता रसे पाके कटुःस्मृता ।
तिक्ता मूत्रकरी वान्तिकारिका मूत्रकृच्छ्रहा ।
आध्मानवात चाष्ठीलां नाशयेदिति कीर्तिता ॥

अर्थ-कडवीककडी-रस और पाकमें कटु, तिक्त, मूत्रजनक, वमनकारक, मूत्रकृच्छ्रहारक तथा आध्मान, और अष्ठीलाको दूर करेहै।

चीनाकर्कटीगुणाः ।

चीनाकर्कटिका शीता मधुरा रुचिदा गुरुः ।
कफवाततृप्तिकरी हृद्या पित्तरुजापहा ॥
दाहशोपहरा प्रोक्ता मुनिभिश्चरकादिभिः ।

अर्थ-चीनाककडी-शीतल, मधुर, रुचिकारक, भारी, कफकारी, वातवर्द्धक, तृप्तिजनक, हृदयको हितकारी, पित्तरोगनाशक तथा दाह और शोपको हरनेवाली है।

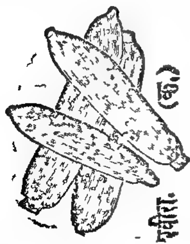
सर्वकर्कटीगुणाः।

सर्वा कर्कटिका गुर्वी दुर्जरा वातरक्तदा।अग्निमांद्यकरीप्रोक्ता ऋषिभिःशास्त्रकोविदैः॥ वर्षाशरदि चोत्पन्ना नो हिता न च भक्षयेत्। हेमन्तजा रुचिकरा पित्तहा भक्षिता हिता॥ सैवार्धपक्वा सम्प्रोक्ता पीनसोत्पादनी मता।सम्यक्पक्वा च मधुराकफनाशकरी मता॥ (नि० र०)

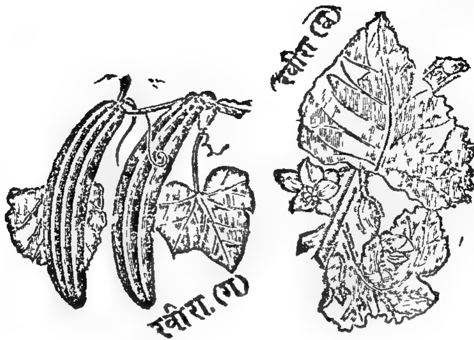
अर्थ-सर्वप्रकारकी ककडी-भारी,कठिनतासे पचनेवाली,वातरक्तको करनेवाली और मन्दाग्निको करनेवाली है। वर्षा और शरद ऋतुमें उत्पन्न होनेवाली ककडी हितकारक नहीं है और न भक्षण करनी चाहिये। हेमन्त ऋतुमें होनेवाली ककडी-रुचिकारक,पित्तनाशक भक्षणकरनेयोग्य और हितकारी है, अधपकी ककडी-पीनसको उत्पन्नकरनेवाली है। अच्छे प्रकारसे पकीहुई ककडी-मधुर और कफनाशक है।

विवरण-ककडीकी अनेक जाति हैंकिन्तु सर्वप्रकारकी ककडियोमे ग्रीष्म ऋतुकी ककडी उत्तम है, ककडी सर्वत्र होतीहै।

त्रपुषनामानि







त्रपुषं कण्टकिफलं सुधावासं सुशीतलम् ।

अर्थ-त्रपुष, कण्टकिफल, सुधावास, सुशीतल(पीतपुष्पा,काण्डालु, कण्टालु, त्रपुकर्कटी, बहुफला, कण्टकिलता, कोषफला, तुन्दिलफला, सुधावासा)।

संस्कृतभाषामें	त्रपुष ।
हिंदीभाषामें	खीरा, क्षीरा, बालमखीरा ।
वंगभाषामें	शशा ।
मराठीभाषामें	तवसे, कांकडी, खिरा ।
गुजरातीभाषामें	तांसालि ।
कर्णाटकीभाषामें	तसेयकायि ।
तैलिंगीभाषामें	दोजकइअ ।
तामिलीभाषामें	महेवेहरिकोडुणो ।
इंग्रेजीभाषामें	The Cocumber
लैटिनभाषामें	(Cucumis salivus S N C Hardwichii)
फारसीभाषामें	शियारखुर्द ।

त्रपुषगुणाः ।

त्रपुषं लघु नील च नवं तृट्क्लमदाहजित्।स्वादु पित्तापहं शीतं रक्तपित्तहरं परम् ॥ तत्पक्वमम्लमुष्णं स्यात्पित्तलं कफवा।

नुत्।तद्बीजं मूत्रलं शीतं रूक्षं पित्तास्रकृच्छ्रजित् ॥ (भा० प्र०)
अर्थ-नवीनखीरा-हलका, नीला, स्वादिष्ट, शीतल तथा तृपा, क्रम, दाह, पित्त और रक्तपित्तको दूर करेहै।पकाहुआ खीरा-खट्टा, गरम,पित्तकारक,कफवातनाशक है। इसके बीज-मूत्रजनक,शीतल, रूखे तथा रक्तपित्त और मूत्रकृच्छ्रको दूर करेहै ।

अन्यच्च ।

स्यात्त्रपुषीफलं रुच्यं मधुरं शिशिरं गुरु ।
भ्रमपित्तविदाहार्त्तिवान्तिजिद्बहुमूत्रदम् ॥ (रा० नि०)

अर्थ-खीरा-रुचिकारक, मधुर, शीतल, भारी, बहुमूत्रजनक तथा भ्रम, पित्त, दाहकी वेदना और वमनको दूर करेहै । खीरा सर्वत्र प्रसिद्ध है ।

चिर्भिटनामानि ।

चिर्भिटं धेनुदुग्धं च तथा गोरक्षकर्कटी ।

अर्थ-चिर्भिट,धेनुदुग्ध, गोरक्षकर्कटी(सुचित्रा, चित्रफला,क्षेत्रचिर्भिटा, पाण्डुफला, पथ्या, रोचनफला, चिर्भिटिका, कर्कचिर्भिटा)।

मृगेर्वारुनामानि ।

मृगाक्षी श्वेतपुष्पा च मृगेर्वारुर्मृगादनी । चित्रवल्ली बहुफला कपिलाक्षी मृगेक्षणा॥चित्रा चित्रफला पथ्या विचित्रा मृगचिर्भिटा।मरुजा कुम्भसी देवी ज्ञेया चैकोनविंशतिः ॥

अर्थ-मृगाक्षी, श्वेतपुष्पा, मृगेर्वारु, मृगादनी, चित्रवल्ली, बहुफला, कपिलाक्षी, मृगेक्षणा,चित्रा, चित्रफला, पथ्या, विचित्रा, मृगचिर्भिटा, मरुजा, कुम्भसी, देवी (कटुफला, लघुचिर्भिटा)।

संस्कृतभाषामें	चिर्भिट (टा) मृगेर्वारु ।
हिन्दीभाषामें	कचरिया,गुरुभीहुँ भकुर,सेंध, फूट,गोरखककडी।
बंगभाषामें	काकुड, गोमुक, फुटी ।
मराठीभाषामें	चिबूड, रोदाड, टकमके ।
गुजरातीभाषामें	चिभडा, राजगरा, कोठीबा ।
तैलङ्गीभाषामें	बुडरगपंडु ।
इंग्रेजीभाषामें	पुबिसेंटक्युकुंबर । Pubescent Cucumber
लैटिन्भाषामें	क्युकुम्युमिस् प्युबीसेन्स । Cucumis Pubescens
क्यु०	ट्राईगोनस् । C Trigonus

चिर्भिटगुणा ।

चिर्भिटं मधुरं रूक्षं गुरुपित्तकफापहम् ।
अनुष्णं ग्राहि विष्टम्भि पक्वमुष्णञ्च पित्तलम् ॥

अर्थ-कचरिया, गुरुमहिंदु-मधुर, रूखी, भारी, पित्तकफनाशक, गरम नहीं, ग्राही और विष्टम्भकारक है । पक्की कचरिया-गरम और पित्तकारक है ।

अन्यच्च ।

बाल्ये तिक्ता चिर्भटा किञ्चिदम्ला गौल्योपेता दीपनी सा च पाके । शुष्का रूक्षा श्लेष्मवातारुचिघ्नी जाड्यघ्नी सा रोचनी दीपनी च ॥

अर्थ-कच्ची कचरिया-कडवी, किञ्चित् अम्ल, गोल्य और पाकमें दीपन है । सूखी कचरिया-रूखी, कफनाशक, वातविनाशक, अरुचिनिवारक, जडतानाशक रोचन और दीपन है ।

अन्यच्च ।

चिर्भटः शीतलो ग्राही गुरुश्च मधुरः स्मृतः । मलस्तम्भकरः पित्तमूत्रकृच्छ्राश्मरीहरः ॥ दाहं प्रमेह वात च शोष चैव विनाशयेत् । तत्कोमलफल वातकोपनं कफपित्तनुत् ॥ तत्पक्व पित्तलं चोष्ण मुनिभिः परिकीर्त्तितम् ।

अर्थ-कचरिया-शीतल, मलरोधक, भारी, मधुर, मलस्तम्भक तथा पित्त, मूत्रकृच्छ्र, पथरी, दाह, प्रमेह, वात और शोषका नाश करे है । कच्ची कचरिया-वातको कुपित करनेवाली, कफपित्तनाशक है । पक्की कचरिया पित्तकारक और गरम है ।

अपिच ।

समस्तं चिर्भट वातकफकृत्स्वादु शीतलम् ॥

अर्थ-सर्वप्रकारकी कचरिया- वातकफकारक, स्वादिष्ठ और शीतल है ।

चिर्भटपुष्पगुणा ।

पुष्पञ्च चिर्भटस्यैव दोषत्रयकरं स्मृतम् ।
अपक्व जीर्णकफकृत्पक्वं किञ्चिद्विशिष्यते (शा०सं०)

अर्थ-कचरियाके फूल त्रिदोषकारक है, वचा अजीर्ण और कफ करेहै और पक्का कुष्ठेक विशेष होजाता है।

मृगाक्षीगुणा ।

मृगाक्षी कटुका तिक्ता पाकेम्ला वातनाशिनी ।
पित्तकृत्पीनसहरा दीपनी रुचिकृत्परा । (रा०नि०)

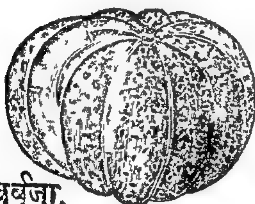
अर्थ-सेंध-चरपरी, कडवी, पचनेमें खट्टी, वातनाशक, पित्तनाशक पीनसरोगको दूरकरनेवाली, दीपन और रुचिको करनेवाली है।

तिक्तं सुतीव्रं मधुरं च साम्लं वातापहं पित्तविनाशनं च ।
श्लेष्माकरं रोचनपाचनं च कोठीवटं चाग्निकरं नराणाम्॥

अर्थ-सेंध-कडवी, तीव्र, मधुर, खट्टी, वातविनाशक, पित्तनाशक, कफकारक, रोचन, पाचक और मनुष्योंके अग्निको दीपन करेहै।

विवरण। चिर्भटा, फूट, सेंध, कचरिया इन सबकी बेल ककडी तथा खर्बूजेकी समान होती है।

खर्बूजनामानि ।



दशांगुलं तु खर्बूजं कथ्यते तद्गुणा अथ ॥

अर्थ-दशांगुल, खर्बूज (फलराज, अमृताह्व, षड्भुजा, मधुफला, षड्रेखा, वृत्तकर्कटी, तिक्ता, तिक्तफला, मधुपाका वृत्तेर्वारु षण्मुखा ।

संस्कृतभाषामें	दशांगुल ।
हिन्दीभाषामें	खरबूजा ।
बंगभाषामें	खरमुज, खरबुजा ।
मराठीभाषामें	खर्बुज ।

गुजरातीभाषामें	तालिया शकरटेटी ।
कर्णाटकीभाषामें	पढजसोते ।
तैलिंगीभाषामें	खरबूज ।
इंग्रेजीभाषामें	मलन् Melon
लैटिन्‌भाषामें	कुक्युमिस् मेलो । Cucumis Melo
फारसीभाषामें	खुरपुजा ।
अरबीभाषामें	बित्तिख ।

अस्य गुणाः ।

खर्बूजं मूत्रलं बल्यं कोष्ठशुद्धिकरं गुरु । स्निग्धं स्वादुतरं शीतं वृष्यं पित्तानिलापहम् ॥ तेषु यच्चाम्लमधुरं सक्षारञ्च रसाद्भवेत् । रक्तपित्तकरं तत्तु मूत्रकृच्छ्रकरं परम् ।

अर्थ-खर्बूजा-मूत्रकारक बलकारक, कोठेको शुद्ध करनेवाला, भारी, स्निग्ध, स्वादुतर, शीतल, वीर्य्यवर्द्धक तथा पित्त और वातको नष्ट करे है । इसमे जो खरबूजा रसमे खट्टा, मीठा और खारी होता है वह रक्तपित्तको करनेवाला और मूत्रकृच्छ्ररोगको उत्पन्न करनेवाला होता है ।

अन्यच्च ।

तिक्तं बाल्ये तदनु मधुरं किञ्चिदम्लं च पाके निष्पक्वं चेत्तदमृतसमं तर्पणं पुष्टिदायि । वृष्यं दाहश्रमविशमनं मूत्रवृद्धिं च धत्ते पित्तोन्मादापहरकफदं षड्भुजं वीर्य्यकारि ॥ (रा० नि०)

अर्थ-कच्चा खर्बूजा-कडवा, ईषत् मधुर और पाकमे किंचित् खट्टा है । पका खर्बूजा-अमृतकी समान तृप्तिकारक, पुष्टिदायक, वृष्य, दाहको दूर करनेवाला, श्रमको हरनेवाला, मूत्रवर्द्धक तथा पित्त और उन्मादका नाश करनेवाला, कफकारक और वीर्य्यजनक है ।

अन्यच्च ।

खर्बुजं फलराजमुत्तमगुणं पक्वं रसं बृंहणं बल्यं स्वादुतरं हिमं गुरु महत्पित्तानिलार्त्तिं हरेत् । स्निग्धं मूत्रलसौदरामयहरं सौगन्धिमत्यादरान्नीतं पाणियुगे दशांगुलमतो नाम्ना कृतं विष्णुना ॥ (सुषेण)

अर्थ–फलोंमे राजा, उत्तम है गुण जिसके ऐसा पका खरबूजा पुष्टिकारक, बलवर्द्धक, स्वादुतर, शीतल, भारी, पित्त और वातकी वेदनाको शान्ति करनेवाला, स्निग्ध, मूत्रजनक, उदररोगको दूर करनेवाला और अत्यन्त सुगंधिवाला है । विष्णुने इसको अत्यन्त आदरसे दोनो हाथोमे लिया इसकारण इसका नाम दशांगुल है ।

अपिच ।

पक्वन्तु खर्बूजं तृप्तिकारक पौष्टिक मतम् । कफकृन्मूत्रल बल्यं कोष्ठशुद्धिकर गुरु ॥ स्निग्धं सुस्वादु शीत च वृष्य दाहश्रमापहम् । वात पित्त च उन्माद नाशयेदिति तन्मतम् ॥ तत्कोमलम-धुस्तिक्तं किञ्चिदम्लं च तन्मतम् । तत्तु वृद्ध च मधुर रसे क्षारञ्च अम्लकम् ॥ रक्तपित्तं मूत्रकृच्छ्रं करोतीति बुधा जगुः ॥ (रत्ना०)

अर्थ–पका खरबूजा–तृप्तिकारक, पुष्टिजनक, कफकारक, मूत्रवर्द्धक, बलकारक, कोठेको शुद्ध करनेवाला, स्निग्ध, सुस्वादु, शीतल, वृष्य तथा दाह, श्रम, वात, पित्त और उन्मादरोगको हरनेवाला है । कच्चा खरबूजा मधुर, कडवा और किंचित् खट्टा है । पुराना खरबूजा–मधुर, क्षाररसान्वित, अम्ल तथा रक्तपित्त और मूत्रकृच्छ्ररोगको उत्पन्न करनेवाला है । खरबूजा कईप्रकारका होता है । किन्तु ग्रीष्म ऋतुमे उत्पन्न होनेवाला सर्वमे श्रेष्ठ होता है ।

कालिङ्गनामानि ।



कालिङ्ग कृष्णवीज स्यात्कालिन्द च सुवर्त्तुलम् ।

अर्थ-कालिग, कृष्णबीज, कालिद, सुवर्त्तुल (मांसफल, चित्रफल, चित्रवल्लिका, चित्र, मधुरफल, वृत्तफल, घृणाफल, मांसल, अल्पप्रमाणक, सुखाश, राजातेनिप, लतापनस, नाटाम्र, मेट, शीर्णवृन्त, बृहद्गोल, सुखवास, सेट, गोडुम्ब, रक्तबीज, चेलान, मूत्रल)

संस्कृतभाषामे	कालिङ्ग, शीर्णवृन्त।
हिन्दीभाषामे	तर्बूज, सरदा तरबूज, लाल और कालेबीजोंका, कालिग।
वंगभाषामे	तरमुज, चेलना।
मराठीभाषामे	कालिगड।
गुजरातीभाषामें	तडबूच, कालिगडुं।
कर्णाटकीभाषामे	कोंडे।
तैलङ्गीभाषामे	तरबुजपुच्चकाया।
औत्क०	तरपुज।
ईंग्रजीभाषामे	वाटरमेलन्। Water Melon
लैटिन्भाषामे	साईट्रुलस् वलगेरीस्। Citrullus Vulgaris
फारसीभाषामे	हिंदवाना।
अरबीभाषामे	बत्तिखहिंदी।

कालिङ्गगुणाः।

कालिङ्गं ग्राहि दृक्पित्तशुक्रहृच्छीतलं गुरु।
पक्वन्तु सोष्णं सक्षारं पित्तलं कफवातकृत्॥ (भा० प्र०)

अर्थ-कच्चा तरबूज-मलरोधक, नेत्रपित्त और शुक्रको हरनेवाला, शीतल और भारी है, पका तरबूज-गरम, क्षारयुक्त, पित्तजनक और कफवातनाशक है।

अपिच।

कालिंगो मधुरः शीतः पित्तदाहश्रमापहः।
वृष्यः सन्तर्पणो बल्यो वीर्य्यपुष्टिविवर्द्धन॥ (रा० नि०)

अर्थ-तरबूज-मधुर, शीतल, पित्तनाशक, दाहनिवारक, श्रमनाशक, वृष्य, तृप्तिकारक, बलवर्द्धक तथा वीर्य्य और पुष्टिवर्द्धक है।

अन्यच्च।

शीर्णवृन्तं कफकरं सक्षारं मधुरं लघु।

अर्थ-तरबूज-कफकारक, क्षारयुक्त, मधुर और हलका है।

अपिच।

चेलानं गुरु विष्टम्भि मधुरं वातपित्तजित् ।(राजवल्लभ)

अर्थ-दूसरे प्रकारका तरबूज-भारी, विष्टम्भकारक, मधुर और वातपित्तनाशक है।

अन्यच्च

कालिंग शीतल बल्यं मधुरं तृप्तिकारकम्। गुरु पुष्टिकरं ज्ञेय मलस्तम्भकरं तथा ॥ कफकृद्दृष्टिपित्तघ्नं शुक्रधातोस्तु नाशकम्। तत्पक्व पित्तल क्षारं चोष्णं वातकफप्रणुत् ॥ "मज्जस्तु मधुरो बल्यो रुचिकृद्धातुवर्द्धकः"। पर्णं तिक्तं रक्तवृद्धिकरं चैव प्रकारितम् ॥ (नि०र०)

अर्थ-कच्चा तरबूज-शीतल, बलकारक, मधुर, तृप्तिकारक, भारी, पुष्टिकारक, मलस्तम्भक, कफकारक तथा दृष्टि, पित्त, शुक्र और धातुका नाश करेहै। पक्का तरबूज-पित्तजनक, क्षारयुक्त, गरम और वातकफनाशक है। तरबूजकी मींग-मधुर, बलकारक, रुचिजनक और धातुवर्द्धक है। इसके पत्ते-कडवे और रक्तवर्द्धक हैं।

विवरण। तरबूजके खेत प्रायः नदीके निकट और रेतीमें होते हैं तरबूज दो प्रकारका होता है एक काले बीजोंका दूसरा लाल बीजोंका,काले बीजोंके तरबूजका गूदा गुलाबी और पलिरंगका होता है और लाल बीजोंके तरबूजका गूदा लाल, गुलाबी और पीले आदि सब रंगका होता है इस देशमें तरबूजको पौष और माघके महीनेमें बोते हैं, फाल्गुन और चैत्रमें क्षुप होकर पुष्प आजाते हैं और वैशाख ज्येष्ठमें फल लगते हैं।दूसरे प्रकारके अर्थात् काले बीजोंके तरबूज कार्तिक मासमें होते हैं। किसी २ देशमें तरबूज सदैव होते हैं और तोलमें १ मनपर्य्यन्त होता है।

कोशातकीनामानि।

कोशातकी स्वादुफला सुपुष्पा कर्कोटकी स्यादपि पीतपुष्पा । धाराफला दीर्घफला सुकोशा धामार्गवः स्यान्नवसञ्ज्ञकोऽयम् ॥

अर्थ-कोशकी,स्वादुफला,सुपुष्पा,कर्कोटकी,पीतपुष्पा,धाराफला, दीर्घफला,सुकोशा,धामार्गव(कृतवेधना,जालिनी, राजकोशातकी, राजिमत्फला)

संस्कृतभाषामे	कोशातकी, धाराफला ।
हिन्दीभाषामे	तोरई ।
वंगभाषामे	घोषलता।
मराठीभाषामे	शिराळी, दोडकी ।
गुजरातीभाषामे	तुरीयां थिसोडा ।
कर्णाटकीभाषामे	धारवितरोई।
तैलिङ्गीभाषामे	बीरकाया ।
इंग्रेजीभाषामे	एक्युटेंगलेडककम्बर । Acutengled Cucumber
लैटिनभाषामे	ल्यफाएक्युटेंगुला । Luffa acutengula

अस्या गुणा ।

धाराकोशातकी स्निग्धा मधुरा कफपित्तनुत् ।
ईषद्वातकरी पथ्या रुचिकृद्बलवीर्य्यदा ॥ (रा० नि०)

अर्थ-तोरई-स्निग्ध, मधुर, कफपित्तनाशक, किंचित् बादी, पथ्य, रुचिकारक, बल और वीर्य्यको देनेवाली है ।

अन्यच्च ।

पित्तानिलघ्नं कफजिद्विपाकात्पथ्यं ज्वरे स्वादु रसोपपन्नम् ।
हुताशनोद्दीपनभेदकं च कोशातकं शाकवरं वदन्ति ॥

अर्थ-तोरइयोंका शाक-पित्तवातनाशक, कफहारक, ज्वरमे पथ्य, स्वादुरसवाला, अग्निको दीपन करनेवाला और शाकोमे इसको श्रेष्ठ कहते है ।

अपिच ।

धाराकोशातकी शीता मधुरा कफवातला ।
पित्तघ्नी दीपनी श्वासज्वरकासकृमिप्रणुत्॥(भा०प्र०)

अर्थ-तोरई-शीतल, मधुर, कफकारक, बादी, पित्तनाशक, दीपन तथा श्वास, ज्वर, खांसी और कृमिका नाश करेहै।

महाकोशातकीनामानि ।

महाकोशातकी प्रोक्ता हस्तिघोषा महाफला ।
धामार्गवो घोषकश्च हस्तिपर्णश्च सस्मृतः ॥

अर्थ-महाकोशातकी, हस्तिघोषा, महाफला, धामार्गव, घोषक, हस्तिपर्ण (बृहत्कोशातकी, हस्तिकोशातकी, ग्राम्यकोशातकी, ए भी, महत्पुष्पा, सर्पातका, हस्तिघोषातकी)।

संस्कृतभाषामें	महाकोशातकी ।
हिन्दीभाषामें	घियातोरई, नेनुआ ।
बंगभाषामें	हस्तिघोषा+धुन्दुल ।
मराठीभाषामें	घोसाळी, घडघोसाळी, पारोशी ।
गुजरातीभाषामें	गलकां ।
कर्णाटकभाषामें	अराहरे ।
तैलिंगीभाषामें	पुछाबीरकाया+एतुगवीर ।
लैटिन्भाषामें	ल्युफापेंटेड्रा । Luffapentandra
फारसीभाषामें	खियार ।
उडि०	तराडि ।

अस्या गुणाः ।

महाकोशातकी स्निग्धा सरा पित्तानिलापहा ।(म० वि०)

अर्थ-घियातोरई-स्निग्ध,सारक तथा पित्त और वातका नाशकरेहै।

अन्यच्च ।

महाकोशातकी स्निग्धा रक्तपित्तानिलापहा। (भा० प्र०)

अर्थ-घियातोरई, बडी तोरई-स्निग्ध, रक्तपित्तनाशक और वात विनाशक है ।

अपिच ।

हस्तिकोशातकी स्निग्धा मधुराध्मानवातकृत् ।
वृष्या कृमिकरी चैव व्रणसरोपिणी च सा॥(रा० नि०)

अर्थ-घियातोरई, नेनुआ-स्निग्ध,मधुर, आध्मानकारक, वातवर्द्धक, वृष्य, कृमिजनक और घावको भरनेवाली है ।

तिक्तकोशातकीनामानि ।

कोषातक्यां कृतच्छिद्रा जालिनी कृतवेधना ।
क्ष्वेडा सुतिक्ता घण्टाली मृदंगफलिका मता ॥

अर्थ-कोषातकी, कृतच्छिद्रा, जालिनी, कृतवेधना,क्ष्वेडा, सुतिक्ता,घण्टाली, मृदंगफलिका (तिक्तकोषातकी, तिक्ता,कृतवेधनिका



संस्कृतभाषामे	तिक्तकोशातकी ।
हिन्दीभाषामे	कडवी तोरई, जगलीतोरई, झिमनी ।
वंगभाषामे	झिङ्गा ।
मराठीभाषामे	कडूदोडकी, दीवाली, कडूशिराळी ।
गुजरातीभाषामे	झुमखडां कडवाते कडवी घी सोडी,धामार्गवते। कडवा तुरीया ।
कर्णाटकीभाषामे	काहिरे ।
तेलिङ्गीभाषामे	चेदुविर्कोया ।
उडि०	जनी ।
इङ्ग्रेजीभाषामे	बिटरल्युफा । Bitter Luffa
लेटिन्भाषामे	ल्युफाएमेरा । Ruffa amara
फारसीभाषामे	तुरीयेतल्ख ।

अस्य गुणाः ।

तिक्तकोशातकी शीता किञ्चित्कट्वी कषायका । तिक्ता पक्वाशयाध्मानमलामाशयशुद्धिकृत्॥लघ्वी रूक्षा वातकफपित्तपाण्डुविषापहा । यकृत्कुष्टार्शशोथघ्नी कासोदरविनाशिनी ॥ कामलागुल्मशमनी फलं चास्यास्तु भेदकम् ॥ कटु तिक्तं च शीतञ्च स्निग्धं हृद्यं च दीपनम् ॥ कासारोचकमेहघ्नं ज्वरकुष्टकफापहम्। श्वास पित्तं च वातञ्च नाशयेदिति कीर्त्तितम्॥

अर्थ-कडवी तोरईकी बेल-शीतल, किञ्चित्कटु, कषेली, कडवी, पक्वाशय, आध्मान, मल और आमाशयको शुद्ध करनेवाली, हलकी, रूखी तथा वात, कफ, पित्त, पाण्डु, विष, यकृत्, कुष्ठ, बवासीर, सूजन, खांसी, उदररोग, कामला और गुल्मको हरेहै । इसका फल भेदक, कटु, तिक्त, शीतल, स्निग्ध, हितकारी, दीपन तथा खाँसी, अरुचि, प्रमेह, ज्वर, कुष्ठ, कफ, श्वास, पित्त और वातका नाश करे है ।

अन्यच्च ।

तिक्तकोशातकं तिक्तं वातलं कफपित्तजित् ।
अवृष्यं कटुकं पाके सारकं वान्तिकारकम् ॥
एतत्फलं च बीजं च नस्यान्नासाशिरोर्त्तिजित् । (शो नि)

अर्थ-कडवी तोरई-कडवी, बादी, कफपित्तनाशक, अवृष्य, पचनेमें कटु, सारक और वमनकारक है । इसके फल और बीजोंके नास लेनेसे नासिका और शिरकी पीडा दूर होती है ।

विवरण-तोरई, घियातोरई और कडवी तोरई इन भेदोंसे तीन प्रकारकी है, तहां तोरई सफेद रंगकी और धारयुक्त तथा पीले फूलकी होतीहै । घियातोरई नीलेरंगकी और लम्बे गोल तथा पीले फूलकी होतीहै और कडवी तोरई सफेद रंगकी जंगलमें वृक्षोंके ऊपर लगती है, फूल पीले और बीज काले होते है ।

चिचिण्डनामानि ।

चिचिण्डः श्वेतराजिः स्यात्सुदीर्घो गृहकूलकः ।

अर्थ-चिचिण्ड, श्वेतराजि, सुदीर्घ, गृहकूलक (चिचुण्ड, वेश्मकूल, बृहत्फला, अहिफला, दीर्घफला, चीनकर्कटिका ।

संस्कृतभाषामें	चिचिण्ड×अहिफला ।
हिंदीभाषामें	चचेंडा, चिचेंडा ।
बंगभाषामें	चिचिङ्गा, चिचिण्डा ।
मराठीभाषामें	टरकांकडी ।
गुजरातीभाषामें	पडोलो ।
तैलिंगीभाषामें	पोटलाकाया ।
इंग्रेजीभाषामें	स्नेकगोर्ड । Snake Gourd
लैटिनभाषामें	ट्रिकोसैंथिस् ऐंग्विना Trichos—anthis auguina

अस्य गुणा ।

चिचिण्डो वातपित्तघ्नो बल्यः पथ्यो रुचिप्रदः ।
शोषिणोऽतिहितः किञ्चिद्गुणैर्न्यूनः पटोलतः ॥

अर्थ–चिचेंडा–वातपित्तनाशक, बलकारक, पथ्य, रुचिजनक, शोषरोगमे हितकारी और परवलोसे गुणोमे किञ्चित् न्यून है ।

विवरण । चचेंडेकी बेल तोरईकी समान होती है, फल बडे बडे लम्बे साँपकी समान होते हैं ।

पटोलनामानि ।

स्वादी च स्वादुपूर्वा सा स्वादिष्ठा जनवल्लभा ।
राजपूर्वा सुशाका च स्वादुपत्रफला च सा ॥

अर्थ–स्वादुपटोल, स्वादु, स्वादिष्ठा, जनवल्लभा, राजपूर्वा, सुशाका, स्वादुपत्रफला (राजपटोल) ।

अस्य गुणा ।

पटोलं पाचनं हृद्यं वृष्यं लघ्वग्निदीपनम् । स्निग्धोष्णं हन्ति कासास्रज्वरदोषत्रयकृमीन् ॥ पटोलस्य भवेन्मूलं विरेचनकरं सुखात् । नालं श्लेष्महरं पत्रं पित्तहारि फलं पुनः ॥ दोषत्रयहरं प्रोक्तं तद्वत्तिक्तपटोलिकाः । (भा॰ प्र॰)

अर्थ–परवल–पाचक, हृदयको हितकारी, वृष्य, हलका, अग्निमदीपक, स्निग्ध, गरम तथा खाँसी, रुधिरविकार, ज्वर, त्रिदोष और कृमिका नाश करे है । परवलकी जड सुखपूर्वक विरेचन करनेवाली है। परवलकी नाल–कफनाशक है । पटोलके पत्ते–पित्तनाशक है । इसके फल–त्रिदोषनाशक है, कडवे परवलके गुणभी इसीके समान हैं ।

अन्यच्च ।

पटोली बलकृत्स्वादुः पथ्या दीपनपाचनी । रुच्या पुष्टिकरी ज्ञेया वातपित्तज्वरापहा ॥ शोषत्रिदोषशमनी फलं वृष्यं रुचिप्रदम् । मधुरं स्वादु पथ्यं च पाचनं लघुदीपकम् ॥ हृद्यं स्निग्धं च उष्णं च कफरक्तत्रिदोषनुत् । कासज्वरकृमीन्हन्ति पर्णं वै पित्तनाशनम् । मूलं रेचकरं प्रोक्तं वल्ली चैव कफापहा ॥

अर्थ-परवल-बलकारक,स्वादिष्ट,पथ्य,दीपन,पाचक,रुचिकारक, पुष्टिजनक, तथा वात,पित्त,ज्वर,शोष और त्रिदोषको शान्ति करेहै इसके फल-वृष्य,रुचिकारक, मधुर, स्वादिष्ठ, पथ्य, पाचन, हलके, दीपन, हृदय को हितकारी,स्निग्ध, गरम, कफ, रक्तविकार, त्रिदोष, खाँसी, ज्वर और कृमिनाशक है । इसके पत्ते पित्तनाशक । इसकी जड विरेचन करानेवाली है । इसकी बेल कफनाशक है ।

राजपटोलीनामानि ।

मेकी राजपटोली च पर्वंगी पीलुपर्णिका ।
राजनामा सुपथ्या च वृत्तबीजा च पर्वंग ॥

अर्थ-मेकी, राजपटोली,पर्वंगी,पीलुपर्णिका, राजनामा, सुपथ्या, वृत्तबीजा, पर्वरा ।

पर्वरं पाचनं हृद्यं वृष्यं वह्निकरं लघु।दीपनं स्निग्धमुष्णञ्च कासरक्तत्रिदोषहम् ॥ कृमिजिन्मधुरं प्रोक्तं वैद्यैर्विद्याविचक्षणैः । कफनाशकरी वल्ली पत्रं पित्तस्य नाशकम् ॥ मूलं तु रेचकं चास्य मुनिभिः परिकीर्तितम् ॥ (नि० र०)

अर्थ-पर्वर-पाचक,हृदयको हितकारी,वृष्य, अग्निजनक, हलका, दीपन, मधुर,स्निग्ध,गरम तथा खांसी, रुधिरविकार, त्रिदोष और कृमिनाशक है । इसकी बेल-कफनाशक । पत्र-पित्तनाशक और मूल-दस्त करानेवाली है ।

तिक्तपटोलनामानि ।

पटोलः कुलकः प्रोक्तः पाण्डुकः कर्कशच्छदः।राजीफलः पाण्डुफलो राजीमानोऽमृताफलः॥तिक्तोत्तमो बीजगर्भः कुष्ठारिः कासमर्द्दनः॥पञ्चराजीफलो ज्योत्स्ना कच्छुरो ज्वरनाशनः ॥

अर्थ-पटोल, कुलक, पाण्डुक, कर्कशच्छद, राजीफल, पाण्डुफल, राजीमान,अमृताफल,तिक्तोत्तम,बीजगर्भ,कुष्ठारि, कासमर्दन, पञ्चराजीफल,ज्योत्स्ना, कच्छुर, ज्वरनाशन (तिक्तक, पटु, पटुक,कर्कशदल,कुलज,वाजिमान, लताफल, राजफल, राजपटोल, वरतिक्त, तिक्तभद्रक, कटुफल,कटुक, कटु,अमृतफल, पाण्डुरु,पाण्डु,नागफल, पञ्चर, ज्योत्स्नी,कच्छुघ्नी,प्रतीक,कुष्ठहा,कासभञ्जन) ।

संस्कृतभाषामे	पटोल, तिक्तपटोल ।
हिंदीभाषामे	कडवे परवल ।
बंगभाषामे	पलतालता ।
मराठीभाषामे	कडुपडवळ ।
गुजरातीभाषामे	कडवापटोल, आरण्यफुटामणा ।
कर्णाटकीभाषामे	काहेपडवल ।
तैलिङ्गीभाषामे	सेसपदूला-कोम्मुपटोल ।
तामिलीभाषामे	कोम्बुपुडलै।
कानडीभाषामे	मोरहडी ।

लैटिन्भाषामे ट्रिकोसेथस् कुकुमेरिना। Trichosanths cucumerina

अस्य गुणा ।

पटोलः कटुतिक्तोष्णः सरः पित्तबलासजित् ।
कफकण्डूतिकुष्ठासृग्ज्वरदाहार्तिनाशनः ॥ (रा० नि०)

अर्थ-कडवे परवल,-कटु,तिक्त,गरम, कुछेक दस्तावर तथा पित्त, बलास, कफ, कण्डू, कुष्ठ, रुधिरविकार, ज्वर, और दाहकी वेदना-को दूर करनेवाले हैं ।

अन्यच्च ।

पटोल कफपित्तास्रव्रणकुष्ठज्वरापहम् । विसर्पनयनव्याधि-त्रिदोषगरनाशनम्॥पटोलपत्रं पित्तघ्नं नाडी तस्य कफापहा। फलं तस्य त्रिदोषघ्नं मूलं तस्य विरेचनम् ॥ (रा० व०)

अर्थ-कडवे परवल-कफ, रक्तपित, व्रण कुष्ठ, ज्वर, विसर्प, नेत्र-रोग, त्रिदोष और विषका विनाश करेहैं । पटोलपत्र-पित्तनाशकहैं परवलकी नाडी-कफनाशक इसके फल-त्रिदोषनाशक और इसकी जड-दस्तावर है।

अन्यच्च ।

तिक्ता पटोली कटुका सारकोष्णा कटुः स्मृता । भेदनी पाच-नी चैव अग्निदीप्तिकरी परा॥पित्तं कफचकण्डूश्च कुष्ठरक्तवि-कारकम् । ज्वर दाह तृषां कोष्ठरोग कृमिं च नाशयेत् ॥ फल-मस्याः कटुस्तिक्तं पाके स्वादु लघु स्तृनम् । दीपनं पाचनं वृ-ष्य मललोमनकारकम् ॥ वातपित्तकफानां तु यथास्थाने

निवेशकम् । सारकं श्वासज्वरहृत्त्रिदोषकृमिनाशकम् ॥ पित्तनाशकरं पर्णं मूलं कफविनाशकम् । कफनाशकरं वल्ली तैलं वातकफापहम् ॥ (नि० र०)

अर्थ-कडवे परवल-चरपरे, सारक, गरम, कटु, भेदक, पाचक, अग्निप्रदीपक तथा पित्त, कफ, कण्डू, कुष्ठ, रक्तविकार, ज्वर, दाह, तृषा, कोष्ठरोग और कृमिरोगका नाश करे है । इसके फल-चरपरे, कडवे, स्वादुपाकी, हलके दीपन, पाचन, वृष्य, मलअनुलोमक तथा वात,पित्त और कफको यथास्थानमे स्थापन करनेवाले, सारक तथा श्वास, ज्वर, त्रिदोष और कृमिरोगका नाश करे हैं । इसके पत्ते पित्तनाशक। इसकी जड-कफनाशक । इसकी बेल कफनाशक और इसका तेल-वात और कफनाशक है ।

विवरण । परवल मधुर और कडवे इनभेदोसे दो प्रकारके होते हैं, तहां कडवे परवल औषधिमे अधिकतासे लियेजाते है । परवलकी बेल प्रायः जंगलमे होतीहै, फूल सफेद, फल नीले और पकनेपर लाल होजाते हैं ।

बिम्बीनामानि ।

बिम्बी रक्तफला तुण्डी तुण्डकेरी च बिम्बिका ।
ओष्ठोपमफला प्रोक्ता पीलुपर्णी च कथ्यते ॥

अर्थ-बिम्बी, रक्तफला, तुण्डी, तुण्डिकेरी, बिम्बिका, ओष्टोपमफला, पीलुपर्णी (ओष्ठी, कर्म्मकरी, तुण्डिकेरी, तुण्डिकोरिका, तुण्डिकेर, झुण्डिकेशी, बिम्बा, बिम्बक, कम्बजा, दन्तच्छदोपमा, गोही, रुचिरफला, छर्दिनी) ।

संस्कृतभाषामे	बिम्बी ।
हिंदीभाषामे	कन्दूरी ।
वंगभाषामे	तेलाकुच ।
मराठीभाषामे	गोडतोंडली, कोंढवली ।
गुजरातीभाषामे	घोलामिठा ।
कर्णाटकीभाषामे	सीहिदोडे, तोंडेहण्णु ।
तामिलभाषामे	कोवे ।
तैलिङ्गीभाषामे	दोंडतिरो ।
लैटिन्भाषामे	कोकसियाइण्डिक ।

अस्या गुणा ।

बिम्बीफलं स्वादु शीतं गुरुपित्तास्रवातजित् ।
स्तम्भन लेखनं रुच्यं विबंधाध्मानकारकम् ॥

अर्थ-कन्दूरी-स्वादिष्ठ, शीतल, भारी, रक्तपित्तनाशक, वातविनाशक, स्तम्भन, लेखन, रुचिकारक तथा विबन्ध और आध्मानकारक है ।

अन्यच्च ।

बिम्बीफल स्वादु शीतं स्तन्यकृत्कफपित्तजित् ।
हृद्दाहज्वरपित्तास्रकासश्वासक्षयापहम् ॥ (शो० नि०)

अर्थ-कन्दूरी-स्वादिष्ठ, शीतल, स्तनोमे दूध उत्पन्न करनेवाली, कफपित्तनाशक तथा दाह, ज्वर, रक्तपित्त, खासी, श्वास और क्षयरोगका क्षय करे है ।

अन्यच्च ।

बिम्बिका मधुरा शीता कफवान्तिकरा मता । रक्तपित्तक्षयश्वासकामलापित्तशोफकान्॥रक्तरुग्विषकासांश्च रक्तपित्तज्वरान्हरेत् । फलमस्या गुरु स्वादु शीतल लेखन मतम् ॥ मलस्तम्भकर स्तन्यमुदरे वातसंचयम् । रुच्य पित्त रक्तदोषवाताञ्श्वास च नाशयेत् । शोथवृद्धिदाहकासश्वासनाशकरं मतम् । पुष्पमस्याः कण्डुपित्तकामलानाशकारकम् ॥ अस्याः पर्णोद्भवा शाका शीतला मधुरा लघुः । ग्राहका तुवरा तिक्ता पाके कट्वी च वातला ॥ कफपित्तहरा प्रोक्ता पूर्वैर्वैद्यवरैः स्फुटम् । मूलमस्या हिमं मेहनाशनं धातुवर्द्धकम्॥हस्तदाहहर भ्रान्तिवान्तिनाशकरं मतम् । (इति रत्नाकरे)

अर्थ-कन्दूरी-मधुर, शीतल, कफकारक, वमनजनक तथा रक्तपित्त, क्षय, श्वास, कामला, पित्तकी सूजन, रुधिरविकार, विषदोष, खॉसी,रक्तपित्त और ज्वरको दूर करेहै । इसके फल भारी, स्वादिष्ट शीतल, लेखन, मलस्तम्भक, स्तन्यकारक, उदरमे वायुको सचित करनेवाले, रुचिकारक तथा पित्त, रुधिरविकार, वात, श्वास, सूजन, वृद्धि, दाह, खांसी और दमेको हरनेवाले है इसके फूल-कण्डू, पित्त, कामलाको दूर करनेवाले है । इसके पत्तोका शाक-

शीतल, मधुर, हलका, मलरोधक, कसेला, पचनेमे, चरपरा, बादी तथा कफ और पित्तका नाशकरे है । इसकी जड-शीतल, प्रमेह-नाशक, धातुवर्द्धक तथा हाथ पावोंकी दाह, वान्ति और भ्रान्तिको शान्ति करे है ।

तिक्तबिम्बीनामानि ।

तिक्ततुण्डी तु तिक्ताख्या कटुका कटुतुण्डिका ।
बिम्बी च कटुतिक्तादितुण्डी पर्य्यायगा च सा ॥

अर्थ-तिक्ततुण्डी, तिक्ताख्या, कटुका, कटुतुण्डिका, कटुबिम्बी, तिक्तबिम्बी, तुण्डीपर्य्यायगा ।

संस्कृतभाषामे	तिक्ततुण्डी ।
हिन्दीभाषामे	कडवी कन्दूरी ।
वंगभाषामे	कटुतराड, तितपल्ता, तेत कन्दुरुकी ।
मराठीभाषामे	कडू तोंडली ।
गुजरातीभाषामे	कडवी घोली ।
कर्णाटकीभाषामे	तीतकुन्दुरु, कहितोंडे ।
लेटिन्भाषामे	सिफेलेन्ड्राइंडिका । Cephalandra Indica कोकासिनीयाग्मेरा ।

अस्या गुणाः ।

कटुतुण्डी कटुस्तिक्ता कफपित्तविषापहा ।
अरोचकास्रपित्तघ्नी सदा पथ्या च रेचनी ॥ (रा० नि०)

अर्थ-कडवी कन्दूरी-चरपरी, कडवी, सदेव पथ्य, रेचन करनेवाली तथा कफ, पित्त, विष, अरुचि, खाँसी और रक्तपित्तको नष्ट करनेवाली है ।

अन्यच्च ।

तिक्तबिम्बीफलं तिक्तं वामकं वातकोपनम् ।
शोथरुग्विषपित्तघ्नं रक्तरुक्कफपाण्डुहम् ॥ (नि० र०)

अर्थ-कडवी, कन्दूरी-कडवी, वमनकारक, वातको कुपित करनेवाली तथा शोथरोग, विष, पित्त, रुधिरविकार कफ और पाण्डुरोगको हरनेवाली है ।

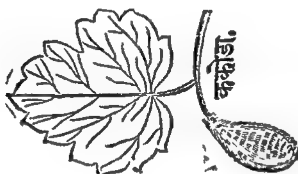
अपि च ।

तिक्तबिम्बीफलं चामं छर्दनं कफनाशनम् ।
पक्वं पित्तहरं शीतं मधुरं रसपाकयोः ॥ (गो० नि०)

अर्थ-कची कडवी कन्दूरी-वमनकारक और कफनाशक है। पकी कडवी कन्दूरी-पित्तनाशक, शीतल और रसपाकमे मधुर है।

विवरण-कन्दूरी मधुर और कडवी इन भेदोसे दो प्रकारकी होती है,तहां मधुर कन्दूरी प्रायः बागोमे बोई जातीहै और कडवी कन्दूरी स्वय वन तथा वॉसियोमे उत्पन्न होजाती है इसकी वेल चलतीहै। पत्त तीन अनीवाले होतेहै। फूल सफेद, फल हरे और पकनेपर लाल होजाते है।

ककोंटकीनामानि।



ककोंटकी पीतपुष्पी महाजालीति चोच्यते।

अर्थ-ककोंटकी, पीतपुष्पी, महाजाली (पीतपुष्पा, महाजालिनिका, अवन्ध्या, बोधनाजालि, मनोज्ञा, मनस्विनी)।

संस्कृतभाषामे	ककोंटकी।
हिन्दीभाषामे	खेखसा, ककोडा।
वंगभाषामे	फलशाकविशेषण (काकरोल)।
मराठीभाषामे	काटली, कटोली।
गुजरातीभाषामे	कटोली।
लैटिन्‌भाषामे	मोमोर्डिकाडायोईका।
तैलिङ्गीभाषामे	अगोरकर।
म०	वेपावल।
तु०	काड कुंचाला।
ता०	इगारवाल्लि।
क०	मडुवागाळ।

अस्या गुणाः।

ककोंटी मलहृत्कुष्ठहृल्लासारुचिनाशिनी।

कासश्वासज्वरान्हन्ति कटुपाका च दीपनी ॥

अर्थ-ककोडा-मलको हरनेवाला तथा कुष्ठ, हृल्लास, अरुचि, श्वास,खाँसी और ज्वरको दूर करनेवाला,कटुपाकी और दीपन है ।

अन्यच्च ।

कर्कोटकी कटूष्णा च तिक्ता विषविनाशिनी ।
वातघ्नी पित्तहृच्चैव दीपनी रुचिकारिणी ॥(रा॰नि॰)

अर्थ-ककोडा-चरपरा, गरम, कडवा, विषनाशक, वातनाशक, पित्तहारक, दीपन और रुचिकारक है ।

अपिच ।

कर्कोटकी रुचिकरा कट्वी चाग्निप्रदीपनी । तिक्तोष्णा वातकफहृद्विष पित्तं विनाशयेत्॥फलमस्यास्तु मधुरं लघु पाके कटु स्मृतम् । अग्निदीप्तिकरं गुल्मशूलपित्तत्रिदोषनुत् ॥ कफकुष्ठकासमेहश्वासज्वरकिलासनुत् । लालास्रावारुचिर्वातकिलासहृदयव्यथाः । नाशयेत्पर्णमस्याश्च रुच्यं वृष्य त्रिदोषनुत् । कृमिज्वरक्षयश्वासकासहिक्कार्शनाशनम् ॥ कंदो माक्षिकसंयुक्तः शीर्षरोगे प्रशस्यते ॥ (नि॰ र॰)

अर्थ-कर्कोटकी-रुचिकारक, कटु, अग्निप्रदीपक, तिक्त गरम तथा वात, कफ, विष और पित्तका नाशकरेहै । इसके फल-मधुर, लघु, पचनेमे कटु, अग्निप्रदीपक तथा गुल्म, शूल, पित्त, त्रिदोष, कफ, कुष्ठ, खाँसी,प्रमेह, श्वास,ज्वर, किलास,लालास्राव, अरुचि, वात, किलास और हृदयकी पीडाको दूरकरेहै । इसके पत्ते-रुचिकारक, वीर्य्यवर्द्धक, त्रिदोषनाशक तथा कृमि, ज्वर, क्षय, श्वास, खाँसी,हिचकी और बवासीरको हरनेवाले है । इसका कंद-मधुके साथ मस्तकरोगमे हितकारीहै ।

विवरण । ककोडेकी बेल प्रायः झाडी और वाडोके ऊपर फैल जातीहै, फलके ऊपर काटे होतेहै कच्ची अवस्थामे हरे और पकनेपर,लाल पडजातेहै ।

कारवेल्लनामानि ।

कारवेल्लं कठिल्लं स्यादुग्रकाण्डं सुकाण्डकम् ।

अर्थ-कारवेल्ल,कठिल्ल,उग्रकाण्ड, सुकाण्डक (कटिल, कारवेल्लक)

कारवेल्लीनामानि।



कारवेल्ली वारिवल्ली बृहद्वल्ल्यापरा स्मृता।

अर्थ-कारवेल्ली, वारिवल्ली, बृहद्वल्ली (करका, करवल्ली, चिरिपत्र कठिल्लका, सूक्ष्मवल्ली, कण्टफला, पीतपुष्पा, अम्बुवल्लिका, कटिल्लक, सुषवी, राजवल्ली, शुषवी, ऊर्ध्वासित, तोयवल्ली, कण्डूर, काण्डकट्क, सुकाण्ड, उग्रकाण्ड, नासासंवेदन, पटु)।

संस्कृतभाषामे	कारवेल्ल, कारवेल्ली।
हिन्दीभाषामे	करेला, करेली ।
वंगभाषामे	बडकरेलाउच्छे, छोटकरलाउच्छे ।
मराठीभाषामे	कारले, क्षुद्रकारली, लघुकारली।
गुजरातीभाषामे	कारेला, कडवा वेला।
कर्णाटकीभाषामें	हागल।
तैलिंगीभाषामे	कारिला, काकरकाया।
औत्कलीभाषामे	शलरा।
इंग्रेजीभाषामे	हेरीमोर्डिका। Hairy Mordica
लैटिन्भाषामे	मोमोर्डिकाकरेटिया। Memordica Choratia
	मो सिंबेलेरिया। M Cymbalaria
फारसीभाषामे	कारेलाह ।
अरबीभाषामे	किस्सा, उलहिमार ।

कारवेल्लगुणा।

कारवल्लं हिमं भेदि लघु तिक्तमवातलम्।
ज्वरपित्तकफास्रघ्नं पाण्डुमेहकृमीन्हरेत्॥

तद्गुणा कारवेल्ली स्याद्विशेषाद्दीपनी लघुः ।(भा प्र)

अर्थ-करेला-शीतल, भेदक, हलका, कडवा, वातकारक नहीं तथा ज्वर, पित्त, कफ, रुधिरविकार, पाण्डुरोग, प्रमेह और कृमि रोगका नाशकरे है। करेलीके गुणभी करेलेकी समानहैं,विशेषकरके पित्तनाशक और हलकी है।

अन्यच्च।

कारवेल्लमवृष्यञ्च रोचनं कफपित्तजित् (रा० नि०)

अर्थ-करेला-अवृष्य,रुचिकारक तथाकफऔरपित्तकानाशकरेहै।

अन्यच्च।

[कारवेल्लश्च वातघ्नः कफघ्नः पित्तकारकः ।
उष्णो रुचिकरः प्रोक्तो रक्तदोषकरो नृणाम्] (हा०)

अर्थ-करेला-वातविनाशक, कफनाशक, पित्तकारक, गरम, रुचिकारक और रुधिरके विकारोंको करनेवाला है।

अपिच।

कारवेल्लं चातितिक्तमग्निदीप्तिकरं लघु । उष्णं शीतं भेदकं च स्वादु पथ्यं समीरितम्॥अरुचिं च कफं वातं रक्तदोषं ज्वरं कृमीन्।पित्तं पाण्डुञ्च कुष्ठञ्च नाशयेदिति कीर्तितम् ॥ बृहदुक्तं कारवेल्लं कटु तिक्तं च दीपनम्।अवृष्यं भेदकं स्वादु रुच्यं क्षारं लघु स्मृतम् ॥ अवातलं पित्तहरं रक्तरुक्पाण्डुरोगहृत् । अरोचककफश्वासव्रणं कासं कृमींस्तथा॥कोष्ठं कुष्ठं ज्वरं चैव प्रमेहाध्माननाशनम्।कामलां नाशयत्येव गुणास्त्वन्ये तु पूर्ववत् ॥ जलजं कारवेल्लं स्यात्तिक्तं भेदकरं मतम्।कफं कुष्ठं पाण्डुरोगं कृमीन्पित्तञ्च नाशयेत्॥यवजं कारवेल्लन्तु दीपनं तिक्तकं मतम्।हृद्यं ज्वरार्शःकासघ्नं कफवातकृमीहरम् (रत्नाकर)

अर्थ-करेली-अत्यन्तकडवी, अग्निप्रदीपक, हलकी,गरम, शीतल, दस्तावर, स्वादु पथ्य तथा अरुचि, कफ, वात, रुधिरविकार, ज्वर कृमि, पित्त पाण्डुरोग और कुष्ठरोगको नष्टकरनेवाली है। करेला-कटु, तिक्त, दीपन, अवृष्य, भेदक,स्वादिष्ठ,रुचिकारक,क्षार,हलका, वातकारक नहीं, पित्तनाशक तथा रुधिरविकार,पाण्डुरोग,अरुचि,

कफ श्वास व्रण खाँसी,कृमि,कोठरोग,कुष्ठ,ज्वर,प्रमेह, आध्मान और कामला रोगको हरनेवाला है । और शेष गुण पूर्वकी नाई जानने । जलमे उत्पन्न होनेवाला करेला-कडवा, भेदक तथा कफ, कुष्ठ, पाण्डुरोग,कृमि और पित्तरोगका नाश करे है । वनकरेला-दीपन, कडवा,हृदयको हितकारी तथा ज्वर, बवासीर,खाँसी और वातको दूरकरे है ।

डिण्डिशनामानि गुणाश्च ।

डिण्डिशो रोमशफलो मुनिनिर्मित इत्यपि ।
डिण्डिशो रुचिकृद्भेदी पित्तश्लेष्मापहः स्मृतः ॥
सुशीतो वातलो रूक्षो मूत्रलश्चाश्मरीहरः ॥ (भा० प्र०)

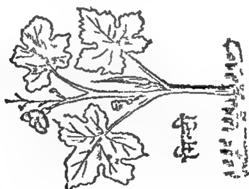
अर्थ-डिण्डिश, रोमशफल, मुनिनिर्मित । हिं० ढेडश । ढेडश-रुचिकारक, भेदक, पित्तकफनाशक, शीतल, बादी, रूक्ष,मूत्रजनक और पथरीको दूर करे है ।

पिण्डारगुणा ।

पिण्डारं शीतलं बल्यं पित्तघ्नं रुचिकारकम् ।
पाके लघु विशेषेण विषशान्तिकरं स्मृतम् ॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-पिण्डार-शीतल, बलकारक, पित्तनाशक, रुचिकारक,लघुपाकी और विशेषकरके विषको शान्ति करे है ।

भेण्डानामानि ।



भेण्डा भिण्डातिका भिण्डो भिण्डकः क्षेत्रसम्भवः ।
चतुष्पदश्चतुःपुण्ड्रः सुशाकः पिच्छिलः स्मृतः ॥

अर्थ-भेण्डा,भिण्डातिका,भिण्ड,भिण्डक,क्षेत्रसम्भव,चतुष्पद,चतुःपुण्ड्र,सुशाक,पिच्छिल(भिण्डीतक,अम्लपत्रक, कारपर्ण, वृत्तबीज) ।

संस्कृतभाषामें भिण्डा ।
हिन्दीभाषामें भिण्डी ।
वंगभाषामें स्वनामख्यातफलशाक वि० ।
मराठीभाषामें भेंडे, रानभेंडे ।
गुजरातीभाषामें भींडा ।
कर्णाटकीभाषामें वेंडे ।
तैलिङ्गीभाषामें भेंडकाया ।
लेटिन्भाषामें हिबिस्कस् एस्क्युलेंटस् । Hibiscus Esculentus
फारसीभाषामें बामिया ।
अरबीभाषामें कुवार ।

भेण्डागुणाः ।

करपर्णफलरुच्य पिच्छिल गुरु वातलम् । वृष्य श्लेष्मकरं बल्यं शुक्रवृद्धिकरं परम् ॥ कासे मन्दानले वाते पीनसेषु विनिंदितम् ।

अर्थ-भिण्डी-रुचिकारक, पिच्छिल, भारी, बादी, वृष्य, कफकारक, बलकारक, शुक्रवर्द्धक तथा खाँसी, मंदाग्नि, वात और पीनसरोगमे अहितकारी है ।

अन्यच्च ।

भेण्डा त्वम्लरसा चोष्णा ग्राही च रुचिकारका ।
राजनामानिघण्टे च द्रव्ये वृष्या परा स्मृता ॥ (नि० र०)

अर्थ-भिण्डी-अम्ल, गरम, मलरोधक, रुचिकारक और वृष्यहै ।

वार्ताकुनामानि ।



वार्त्ताकी कण्टवृन्ताकी कण्टालुः कण्टपत्रिका । निद्रालुर्मांसलफला वृन्ताकी च महोटिका॥ चित्रफला कण्टकिनी महती कट्फला च सा । मिश्रवर्णफला नीलफला रक्तफला तथा ॥ शाकश्रेष्ठा वृत्तफला नृपप्रियफला स्मृता ।

अर्थ-वार्त्ताकी, कण्टवृन्ताकी, कण्टालु, कण्टपत्रिका निद्रालु, मांसलफला, वृन्ताकी, महोटिका, चित्रफला, कण्टकिनी, महती, कट्फला, मिश्रवर्णफला, नीलफला, रक्तफला, शाकश्रेष्ठा, वृत्तफला, नृपप्रियफला (हिंगुली, सिंही, भण्टाकी, दुष्प्रधर्षिणी, वार्त्ता, वार्त्ताकु, वातिकुण, वार्त्ताक, शाकबिल्व, राजकूष्माण्ड, महाबृहती, शाकबिल्वक, वार्त्तिक, वातिगम, वृन्ताक, वङ्गण, अङ्गण, बेर, नीलवृषा, भाण्टिका, नीलकण्टका) ।

संस्कृतभाषामें	वार्त्ताकु ।
हिन्दीभाषामें	बैंगन, भण्टा, भटा ।
बंगभाषामें	वेगुनगाछ ।
मराठीभाषामें	वांगे ।
गुजरातीभाषामें	रिंगणा, रिंगणी ।
कर्णाटकीभाषामें	वदने ।
तैलङ्गीभाषामें	वंकाया, वङ्गणहिरिवगु ।
औत्कलीभाषामें	वाइगुण ।
तामिलीभाषामें	कुठिरेकई ।
इंग्रेजीभाषामें	ब्रिंजल् । Bringal
लैटिन्भाषामें	सोलेनमेलजीना । Solanum Melongena
फारसीभाषामें	बादंगान् ।
अरबीभाषामें	बाद्जान् ।

वार्त्ताकुगुणा ।

वार्त्ताकी कटुका रुच्या मधुरा पित्तनाशिनी ।
बलपुष्टिकरी हृद्या गुरुर्वातेषु निन्दिता ॥ (रा० नि०)

अर्थ-बैंगन-कटु, रुचिकारक, मधुर, पित्तनाशक, बलकारक, पुष्टिजनक, हृदयको हितकारी, भारी और वातरोगमें निन्दित है।

अन्यच्च ।

निद्राकरं प्रीतिकरं गुरु स्यात्सवातलं कासविकारकारि ।

श्रेष्ठं सुदीर्घं कफवर्द्धनञ्च सश्वासकासारुचिवर्द्धनञ्च ॥ (हा.)

अर्थ-बेगन-निद्राजनक, प्रीतिकारक, भारी, बादी, खाँसीके विकारोंको करनेवाला तथा कफ, श्वास, खाँसी और अरुचिको बढानेवाला है। लम्बा बैगन श्रेष्ठ होता है।

अन्यच्च

अग्निप्रदा मारुतनाशिनी च शुक्रप्रदा शोणितवर्द्धिनी च।
हृल्लासकासारुचिनाशिनी च वार्त्ताकुरेषा गुणसप्तयुक्ता ॥

अर्थ-बेगन-अग्निवर्द्धक, वातविनाशक, शुक्रजनक, शोणितवर्द्धक तथा हृल्लास, खाँसी और अरुचिको दूर करनेवाला है।

सा बाला कफपित्तघ्नी पक्का सक्षारपित्तला। सदाफला त्रिदोषघ्नी रक्तपित्तप्रसादनी ॥ अङ्गारपक्का वार्त्ताकुः किञ्चित्पित्तकरी मता। कफमेदोऽनिलहरा सरा लघुतरा परा ॥ (रा० व०)

अर्थ-कच्चा बेगन-कफपित्तनाशक और पक्का बेगन-क्षारयुक्त और पित्तल है। मध्यम बेगन-त्रिदोषनाशक और रक्तपित्तको निर्मल करनेवाला है। अंगारोंपे भुनाहुआ बेगन [बैगनका भुरता] किंचित् पित्तकारक, कफ, मेद और वातविनाशक है, सारक और लघुतर है।

अन्यच्च।

वृन्ताकं कटु तिक्तमुष्णमधुरं क्षारं क्षुधादीपनं
हृद्यं रुच्यमपित्तलं कफमरुज्जित्सर्वशाकोत्तमम् ॥
सक्षारं कफवातहारि रुचिकृद्वह्नेस्तु संदीपनं
तिक्तोष्णं मधुरं तथा कटुरसं मीषच्च पित्तप्रदम् ॥ (त्रि०)

अर्थ-बैगन-कटु, तिक्त, गरम, मधुर, क्षार, क्षुधाको दीपनकरनेवाला, हृदयको हितकारी, रुचिकारी, अपित्तल, कफवातनाशक, और सर्वशाकोंमे उत्तम है। और किसी क्षारके साथ कफवातनाशक, रुचिकारक, अग्निप्रदीपक, तिक्त, गरम, मधुर, कटुरसान्वित और किञ्चित् पित्तको कुपित करे है।

अपिच।

वृन्ताकं स्वादु तीक्ष्णोष्णं कटुपाकमपित्तलम्। ज्वरवातबलासघ्नं दीपनं शुक्रलं लघु॥ तद्बालं कफपित्तघ्नं वृद्धं पित्तकरं गुरु।

वृन्ताकं पित्तल किञ्चिदङ्गारपरिपाचि तत्॥ कफमेदोनिलामघ्नमत्यन्तलघु दीपनम्।तदेव हि गुरु स्निग्ध सतैलं लवणान्वितम् ॥ अपर श्वेतवृन्ताकं कुक्कुटाण्डसमं भवेत्। तदर्शःसु विशेषेण हित हीनश्च पूर्वतः ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-बैगन-स्वादु, तीक्ष्ण, गरम, पाकमे कटु, अपित्तल, ज्वर, वात और कफनाशक, दीपन, शुक्रजनक और हलका है, कच्चा बैगन-कफपित्तनाशक, पक्का बैगन-पित्तकारक और भारीहै । अंगारोपै भुनाहुआ बैगन किंचित् पित्तकारक है तथा कफ, मेद और वातनाशक और अत्यन्त हलका तथा दीपन है वही अंगारोपै भुना हुआ बैगन-तेल और लवणयुक्त, भारी और स्निग्धहै और दूसरा सफेद रंगका बैगन मुरगेकी अंडेकी समान होता है वह सफेद बैगन ववासीरवाले मनुष्योको विशेष करके हितकारी है और पहिले बैगनोसे गुणोमे हीन है । बैगन सर्वत्र प्रसिद्ध है ।

गोराणीनामानि।

गोराणी दृढवीजा च निशांध्यघ्नी च बाकुची ।
सुशाका वक्रशिम्बी च गोरक्षफलिनी स्मृता ॥

अर्थ-गोराणी, दृढवीजा, निशाध्यघ्नी, वाकुची, सुशाका, वक्रशिम्बी, गोरक्षफलिनी ।

संस्कृतभाषामे	गोराणी।
हिन्दीभाषामें	ग्वारकी फली ।
मराठीभाषामे	गोवारीच्या शेंगा, बावच्या ।
गुजरातीभाषामे	गुवार ।
तैलिङ्गीभाषामे	गोराचिकुड्ड ।

लैटिन्भाषामे सोयेमोपासिस् सोरेलियाइडिस्। Cyamops s Psoraloide

अस्या गुणा ।

बाकुचिका शिम्बिरूक्षा वातला मधुरा गुरु ।
सरा कफकरी चाग्निदीपनी पित्तनाशिनी ॥ (नि० र०)
"पत्रमस्या निशांध्यघ्नं पित्तनाशकर परम्" ।

अर्थ-गुवारकी फली-रूखी,बादी,मधुर,भारी, दस्तावर, कफका-

रक, अग्निप्रदीपक और पित्तनाशक है । गुवारके पत्ते-रतोंधको दूरकरनेवाले और पित्तको हरनेवाले हैं ।

हरितनिष्पावीनामानि ।

निष्पावी ग्रामजादिः स्यात्फलिनी नखपूर्विका ।
मण्डपा फलिका शिम्बी ज्ञेया गुच्छफला च सा ॥

अर्थ-निष्पावी, ग्रामजा, फलिनी, नखपूर्विका, मण्डपा, फलिका, शिम्बी, गुच्छफला (विशालफलिका, निष्पावि, चिपिटा) ।

शुभ्रनिष्पावीनामानि ।

अन्यांगुलिफला चैव नखनिष्पाविका स्मृता ।
वृत्तनिष्पाविका ग्राम्या नखपुञ्जफलाशना ॥

अर्थ-अङ्गुलिफला, नखनिष्पाविका, वृत्तनिष्पाविका, ग्राम्या, नखपुञ्जफला, अशना (कपिकच्छुफला) ।

संस्कृतभाषामें	निष्पावी, अंगुलिफला ।
हिन्दीभाषामें	सम, सेवी ।
बंगभाषामें	बारा, बरबटी ।
मराठीभाषामें	घेवडा, लघु घेवडा, थोर घेवडा, वालपापडी
गुजरातीभाषामें	वालोल, पांदडी ।
तामिलीभाषामें	मोचेकोटै ।
तैलङ्गीभाषामें	चिकुडु, अनुमुलु ।
इंग्रेजीभाषामें	ब्लाक्सीडेड डोलिकोस । Black seeded Dolichos
लैटिन्भाषामें	डोलिकोस् लबलब । Dolichos Lablab
अरबीभाषामें	बिन्स ।

द्विविधनिष्पावीगुणाः ।

निष्पावौ द्वौ हरिच्छुभ्रौ कषायौ मधुरौ रसौ ।
कण्ठशुद्धिकरौ मेध्यौ दीपनौ रुचिकारकौ ॥ (रा० नि०)

अर्थ-दोनों प्रकारकी (हरी और सफेद) निष्पावी-कषैली, मधुर, कण्ठशोधक, मेधाजनक, दीपन और रुचिकारक हैं ।

अन्यच्च ।

ग्रामजा वातला रुच्या तुवरा मधुरा मता । मुखप्रिया कण्ठशु-

द्धिकारिणी ग्राहिणी मता ॥ अग्निदीप्तिकरी चैव कफपित्तविनाशका । बृहत्तु ग्रामजा रुच्या वातला चाग्निदीपनी । मुखप्रिया च संप्रोक्ता शाकज्ञानविशारदैः ॥ कृष्णा तु ग्रामजा कण्ठ्या मेध्या चाग्निप्रदीपनी।तुवरा च रसे माध्वी रुच्या च ग्राहिणी मता ॥ प्रोक्तांगुलिफला वातकारिणी कफकारिणी । विषनाशकरी प्रोक्ता गुणास्त्वन्ये तु कृष्णवत्। पीतायास्त्वधिका ज्ञेयाः पूर्ववैद्यैर्विचारिभिः । (इति रत्नाकरे)

अर्थ-निष्पावी-बादी, रुचिकारक, कषेली, मधुर, मुखप्रिय, कण्ठको शुद्ध करनेवाली, मलरोधक, अग्निप्रदीपक और कफ तथा पित्तविनाशक है । बडी निष्पावी-रुचिकारक, बादी, अग्निप्रदीपक और मुखप्रिय है । काली निष्पावी-कण्ठको हितकारी, मेधाजनक, अग्निप्रदीपक, कषेली, मधुर, रुचिकारक और मलरोधक है।सफेद निष्पावी-बादी, कफकारक, विषविनाशक और शेष गुण काली निष्पावीकी समान जानने । पीली निष्पावीके गुण सर्वनिष्पावियोंसे अधिक है।

शिम्बीनामानि ।

असिशिम्बी खड्गशिम्बी शिंबनी नीलशिम्बिका ।
महाशिम्बी बृहच्छिम्बी स्थूलशिम्बी च शिम्बिका ॥

अर्थ-असिशिम्बी, खड्गशिम्बी, शिम्बिनी, नीलशिंबिका, महाशिंबी, बृहच्छिम्बी, स्थूलशिंबी, शिम्बिका ।

कोलशिम्बीनामानि ।

कोलशिम्बी कृष्णफला खड्गा सूकरपादिका ।
शिम्बी कुशिम्बी कुत्साम्रशिम्बी पुस्तकशिम्बिका ॥

अर्थ-कोलशिम्बी, कृष्णफला, खड्गा, सूकरपादिका, शिम्बी, कुशिम्बी, कुत्साम्रशिम्बी, पुस्तकशिम्बिका (पटपंकपादिका) ।

संस्कृतभाषामें	खड्गशिम्बी, कोलशिम्बी ।
हिंदीभाषामें	सेम, सुअरासेम, गोजियासेम ।
वंगभाषामें	शेमगाछ ।
मराठीभाषामें	खडसांवळ, आवईची शेंग ।

गुजरातीभाषामे परवोलिया, तरवारडी।
तैलिङ्गीभाषामे कारुचिकट्ट।
लैटिन्भाषामे केनावोलिया एन् सिफोर्मिस्।
Canavalia Ensiformis
अरबीभाषामे गलाफुलगोल।

द्विविधशिम्बीगुणा।

शिम्बिद्वयञ्च मधुरं रसे पाके हिमं गुरु।
बल्यं दाहहरं प्रोक्तं श्लेष्मलं वातपित्तजित्॥ (भा०प्र०)

अर्थ-दोनो प्रकारकी सेम-मधुर, पाकमेभी मधुर, शीतल, भारी, बलकारक, दाहनाशक, कफकारक और वातपित्तको जीतनेवाली है।

अन्यच्च।

कृष्णा सर्वं बली चोष्णा गुर्वी बल्या रुचिप्रदा।
शुक्राग्निमांद्यजननी मलस्तम्भकरी मता॥
तुवरा मादका वातकफनुत्पित्तला मता। (नि०र०)

अर्थ-काली सेम-गरम, भारी, बलकारक, रुचिकारक, शुक्रजनक, मन्दाग्निजनक, मलस्तम्भक, कषेली, मदकारक, वातकफनाशक और पित्तकारक है।

असिशिम्बी तु मधुरा कषाया श्लेष्मपित्तजित्।
व्रणदोषापहन्त्री च शीतला रुचिदीपनी॥ (रा० नि०)

अर्थ-सेम-मधुर, कषेली, कफपित्तनाशक, व्रणके विकारोको हरनेवाली, शीतल और रुचिको दीपन करनेवाली है।

कोलशिम्बीगुणा।

कोलशिम्बी समीरघ्नी गुर्व्युष्णा कफपित्तकृत्।
शुक्राग्निमांद्यकृद्वृष्या रुचिकृद्बद्धविड्गुरुः॥

अर्थ-खुअरासेम-वातनाशक, भारी, गरम, कफपित्तजनक, शुक्र और अग्निको मन्द करनेवाली, वृष्य, रुचिकारक, मलरोधक और भारी है।

दधिपुष्पीनामानि।

दधिपुष्पी खड्गांगी खड्गापर्यंकपादिका कृपा।

खट्वापादी वंश्या काकाकोलपालिका नवधा ॥

अर्थ-दधिपुष्पी, खट्वाङ्गी, खट्वा, पर्यकपादिका, कूपा, खट्वा पादी, वश्या, काकाकोलपालिका।

संस्कृतभाषामें	दधिपुष्पी।
हिन्दीभाषामें	करियसेम, चमरियासेम।
वंगभाषामें	कट्राशिम्।
मराठीभाषामें	गोडी कोहळी।
गुजरातीभाषामें	अडदवेल्य-कागडोलिया।
कर्णाटकीभाषामें	कूगरी।
लेटिन्भाषामें	मुक्युनामोनोस्परमा। Mucuna Monospema

अस्या गुणाः।

दधिपुष्पी कटु मधुरा शिशिरा सन्तापपित्तदोषघ्नी।
वातामयदोषकरी गुरुस्तथारोचकघ्नी च ॥ (रा० नि०)

अर्थ-चमरियासेम-कटु, मधुर, शीतल, सन्तापनिवारक, पित्तनाशक, वातरोगकारक, भारी और अरुचिको हरनेवाली है।

अपरञ्च।

दधिपुष्पी तु मधुरा कटी शीतोष्णदा मता। वृष्या हृद्या गुरुर्ज्ञेया मलस्तम्भाग्निमांद्यकृत् ॥ रुचिशुक्रप्रदा प्रोक्ता सन्तापारोचकाञ्जयेत्। त्रिदोषशमनी प्रोक्ता पूर्ववैद्यैर्मनीषिभिः ॥ गुरु हृद्य बीजमस्या रुचिदं स्तम्भकं मतम्। कफाग्निमांद्यकरणं वातं पित्तं च नाशयेत् ॥ (नि० र०)

अर्थ-दधिपुष्पी-करियासेम-मधुर, कटु, शीतल, गरम, वृष्य, हृदयको हितकारी, भारी, मलस्तम्भक, मन्दाग्निकारक, रुचिकारक, शुक्रकारक, सन्तापनाशक, अरुचिको दूर करनेवाली और त्रिदोषनाशक है। इसके बीज-भारी, हृदयको हितकारी, रुचिकारी, मलस्तम्भक, कफकारक, अग्निमांद्यकारक तथा वात और पित्तको दूर करे है।

सौभाञ्जनशिंबीगुणाः।

सौभाञ्जनफलं स्वादु कषायं कफपित्तनुत्।
शूलकुष्ठक्षयश्वासगुल्मनुद्दीपनं परम् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-सहिजनेकी फली-स्वादिष्ठ,कषेली, कफपित्तनाशक तथा शूल, कोढ,क्षय, श्वास और गुलमको दूर करे है तथा दीपन है।

डोडिकानामगुणाश्च।

डोडिका विषमुष्टिश्च डोडीत्यपि सुमुष्टिका।
डोडिका पुष्टिदा वृष्या रुच्या वह्निप्रदा लघुः॥
हन्ति पित्तकफार्शांसि कृमिगुल्मविषामयान्।(भा०प्र०)

अर्थ-डोडिका, विषमुष्टि, डोडी,समुष्टिका। डोडी अर्थात् करेरुआ-पुष्टिकारक,वीर्य्यवर्द्धक,रुचिकारक,अग्निजनक, हलकी तथा पित्त,कफ,बवासीर, कृमि, गुल्म और विषक रोगोको दूर करे है।

मुनिशिम्बीगुणाः।

मुनिशिम्बी सरा प्रोक्ता बुद्धिदा रुचिदा लघुः। पाककाले तु मधुरा तिक्ता चैव स्मृतिप्रदा॥ त्रिदोषशूलकफहृत्पाण्डुरोगविषापनुत्।शोषगुल्महरा प्रोक्ता सा पक्का रूक्षवातला॥(नि र)

अर्थ-अगस्तियाकी फली-सारक, बुद्धिदायक, हलकी, पचनेमे मधुर, कडवी,स्मरणशक्तिवर्द्धक तथा त्रिदोष,शूल, कफ, पाण्डुरोग, विष, शोष और गुल्मको हरनेवाली है। वही पकी हुई फली-रूखी और बादी करे है।

शृङ्गाटकनामानि।

सिंघाडे.



शृङ्गाटकं जलफलं त्रिकोणफलमित्यपि।

अर्थ-शृङ्गाटक, जलफल, त्रिकोणफल (जलसूचि, संघाटिका, वारिकण्टक, शुभ्रदुग्ध, शृङ्गाट, वारिकुब्जक, क्षीरशुक्र,जलकण्टक, शृङ्गरुह, जलवल्ली, जलाशय, शृङ्गकन्द, शृङ्गमूल, विषाणी, जलकन्द, त्रिकोट, त्रिकट, त्रिक)।

संस्कृतभाषामें	शृङ्गाटक।
हिन्दीभाषामे	सिघाडे।
वंगभाषामे	पाणिफल, सिघाडे।
मराठीभाषामे	शिंगाडे।
गुजरातीभाषामे	शिगोडां।
कर्णाटकीभाषामे	सिघाडे।
तैलिङ्गभाषामें	परिकेगड्डु।
इंग्रेजीभाषामें	वाटरकेलट्राप। Water Caltrop
लेटिन्‌भाषामें	ट्रापाबाईस्पाईनोझ। Trapa Bispinosa
फारसीभापामें	सुरंजान्।

अस्य गुणाः ।

शृङ्गाटकं हिमं स्वादु गुरु वृष्यं कषायकम्।
ग्राहि शुक्रानिलश्लेष्मप्रदं पित्तास्रदाहनुत् (भा० प्र०)

अर्थ-सिघाडे-शीतल,स्वादिष्ट,भारी,वीर्य्यवर्द्धक,कषेले, मलरोधक, शुक्रजनक, वातकारक, कफनाशक, तथा रक्तपित्त और दाहको दूर करे है।

अन्यच्च।

शृङ्गाटकः शोणितपित्तहारी लघुः खरो वृष्यतमो विशेषात्।
त्रिदोषतापश्रमशोफहारी रुचिप्रदो मेहनदार्ढ्यहेतुः॥(रा०नि०)

अर्थ-सिघाडे-रक्तपित्तनाशक, हलके, खर, वृष्यतम, त्रिदोषनाशक, तापनिवारक, श्रमहारक, शोफनाशक, रुचिकारक और लिंगको दृढ करनेवाले है।

अन्यच्च।

शृङ्गाटं गुरु विष्टम्भि शीतलं रक्तपित्तनुत्॥ (रा०व०)

अर्थ-सिघाडे-भारी,विष्टम्भकारक,शीतल और रक्तपित्तनाशक हैं।

अपिच।

शृङ्गाटकश्चातिवृष्यो लघुर्ग्राही रुचिप्रदः।शुक्लो वातकफकृद्गुरुर्मेहनदार्ढ्यकृत्॥ तुवरो मधुरः शीतस्तर्पणः स्वादुपित्तजित्। दाहत्रिदोषमेहघ्नो रक्तदोषभ्रमापहः। शोफसन्तापहा प्रोक्तः पूर्ववैद्यैर्महार्षिभिः ॥ (नि०र०)

अर्थ-सिंघाडे अत्यन्त वृष्य, हलके, मलरोधक, रुचिकारक, शुक्रजनक, वात और कफकारी, भारी, लिंगको दृढकरनेवाले, कषैले, मधुर, शीतल, तृप्तिकारक, स्वादिष्ठ, पित्तनाशक तथा दाह, त्रिदोष, प्रमेह, रुधिरविकार, भ्रम, सूजन और सन्तापको हरनेवाले है ।

विवरण-सिंघाडेकी बेल बडेर सरोवरोमे होतीहे, बेलमें तीन धारवाले फल लगते हे फलके ऊपर तीन कांटोकी समान अणी होती हे फलोंमसे एक मींग निकलती हे उस मींगके शाकादि पदार्थ बनातेह और उसी मींगको सुखाकर उसका चून बनातेंहे उस चूनकीभी अनेक वस्तु बनाई जातीहे इस देशमें सिंघाडेका चून फलाहार होगया हे ।

अथ नालशाकम् ।

सर्षपनालगुणा ।

तीक्ष्णोष्णं सार्षपं नालं वातश्लेष्मव्रणापहम् ।
कण्डूक्रिमिहरं दद्रुकुष्ठघ्नं रुचिकारकम् ॥

अर्थ-सरसोंकी नाल-तीक्ष्ण, गरम, रुचिकारक तथा वात, श्लेष्म, व्रण, कण्डू, कृमि दद्रु और कुष्ठका नाश करे है ।

सूरणनालगुणा ।

नालं तु सूरणं रुच्यं कफवातहरं लघु ।
अर्शसां तु विशेषेण हितं कामाग्निदीपनम् ॥ (म०वि०)

अर्थ-जमीकन्दकीनाल-रुचिकारी, कफ वातविनाशक, हलकी, कामाग्निदीपक और विशेष करके अर्शरोगमें हितकारी है।

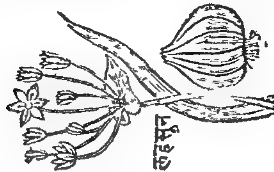
अथ कन्दशाकम् ।

रसोननामानि ।

रसोनो लशुनोऽरिष्टो म्लेच्छकन्दो महौषधः ।
शुक्रकन्दो महाकन्दो वातारिर्दीर्घपत्रकः ॥

अर्थ-रसोन, लशुन, अरिष्ट, म्लेच्छकन्द, महौषध, शुक्रकन्द, महा-

कन्द, वातारि, दीर्घपत्रक (रसुन गृञ्जन, रसोनक, कटुकन्द, राहूच्छिष्ट, राहूत्सृष्ट, भूतघ्न, उग्रगन्ध, यवनेष्ट)।



संस्कृतभाषामे	रसोना।
हिन्दीभाषामे	लशुन लहशन, कादा।
बंगभाषामे	लसुन।
मराठीभाषामे	पांढरी लसूण, तांबडी लसूण।
गुजरातीभाषामे	लसण।
कर्णाटकीभाषामे	बिलीयबेल्लुली।
तैलिङ्गीभाषामे	तेल्लाउल्लीगांडा।
तामिलीभाषामे	वल्लइपाण्डु।
इंग्रेजीभाषामे	गार्लिकरूट्। Garlic root
लैटिनभाषामे	एलियसेटिव। Allium Sativum
फारसीभाषामे	सीर।
अरबीभाषामे	सुम् ईस्कुर्दियून सुमलेहयार।

अस्य गुणाः।

पञ्चभिश्च रसैर्युक्तो रसेनाम्लेन वर्जितः। तस्माद्रसोन इत्युक्तो द्रव्याणां गुणवेदिभिः॥ कटुकश्चापि मूलेषु तिक्तः पत्रेषु संस्थितः। नाले कषाय उद्दिष्टो नालाग्रे लवणः स्मृतः॥ बीजे तु मधुरः प्रोक्तो रसस्तद्गुणवेदिभिः। रसोनो बृंहणो वृष्यः स्निग्धोष्णः पाचनः सरः॥ रसे पाके च कटुकस्तीक्ष्णो मधुरको मतः॥ भग्नसन्धानकृत्कण्ठ्यो गुरुः पित्तास्रवृद्धिदः॥ बलवर्णकरो मेधाहितो नेत्र्यो रसायनः॥ हृद्रोगजीर्णज्वरकुक्षिशूल-

विबन्धगुल्मारुचिकासशोफान् ॥ दुर्नामकुष्ठानलसादजन्तुसमीरणश्वासकफांश्च हन्ति । मद्यं मांस तथाम्लं च हितं लशुनसेविनाम् । व्यायाममातप रोषमतिनीरं पयोगुडम् ॥ रसोनमश्नन्पुरुषस्त्यजेदेतन्निरन्तरम् (भा० प्र०)

अर्थ-लहसन-पांच रसयुक्त है और अम्लरस करके वर्जितहै इस कारण इसको एकरस ऊन अर्थात् रसोन कहते हैं । इसकी जडमे चरपरा रस, पत्तोंमे कडवा रस, नालमे कषेला रस, नालके अगले भागमे लवणरस और बीजोंमे मधुर रस रहताहै। लशुन-बृंहण,वृष्य स्निग्ध, उष्ण, पाचक,सारक, रस और पाकमे चरपरा, तीक्ष्ण,मधुर, भग्नसन्धानकारक, कण्ठको हितकारी,भारी, रक्तपित्तको बढानेवाली, बलकारक, वर्णको सुन्दरकरनेवाली, मेधाकारक, नेत्रोंको हितकारी, और रसायन है । तथा हृदयरोग, जीर्णज्वर, कुक्षिशूल, विबन्ध, गुल्म, अरुचि, खाँसी,सुजन,बवासीर, कोढ,मंदाग्नि,कृमि, वात, श्वास और कफको हरनेवाली है, लहसन सेवनकरनेवाले मनुष्यको मद्य, मास और अम्ल (खटाई) हितकारीहै । व्यायाम (दंड, कसरत), धूपमें फिरना, क्रोध करना, अत्यन्त जल पीना, दूध और गुड यह लशुन भक्षण करनेवाले मनुष्यको निरन्तर त्यागने चाहिये ।

अन्यच्च ।

रसोन उष्णः कटुपिच्छिलश्च स्निग्धो गुरुः स्वादुरसोऽथबल्यः । वृष्यःसुमेधास्वरवर्णकारीभग्नस्यसन्धानकरःसुतीक्ष्ण.(रा नि)

अर्थ-लशुन-गरम, चरपरी, पिच्छिल, स्निग्ध, भारी, स्वादिष्ठ बलकारक,वीर्य्यवर्द्धक,मेधाजनक, स्वरको उत्तमकरनेवाली, वर्णको सुंदरकरनेवाली, भग्नसन्धानकारक और तीक्ष्ण है ।

अपिच ।

रसोनः सर्वांगं प्रसरति मरुन्नाशनकरःसरो वृष्यःस्निग्धो गुरुरुचिकासज्वरहरः । कफं श्वास गुल्मं क्षपयति च केश्यः कृमिहरः प्रमेहार्शःकुष्ठश्वयथुहर उक्तस्त्वशिशिरः ॥ प्रभग्ने सन्धानो रुधिरयुतपित्त प्रकुरुते जराव्याधिध्वंसी पचयति च शूलप्रशमनः ।

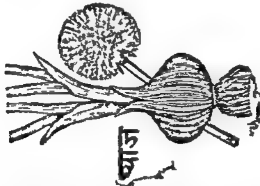
अर्थ-लहसन-शरीरमे सर्वप्रकारकी फैलीहुई वातकी पीडाका नाश करनेवाली, सारक, वृष्य, स्निग्ध, भारी, अरुचिको दूर करनेवाली, खाँसीको हरनेवाली, ज्वरका नाश करनेवाली तथा कफ, श्वास और गुल्मका विनाश करनेवाली, केशोंको हितकारी, कृमिनाशक, प्रमेह,बवासीर, कोढ और सूजनको क्षय करनेवाली, गरम, भग्नसन्धानकारक, रक्तपित्तको कुपित करनेवाली, शूलको शान्ति करनेवाली और जराव्याधिका नाश करे है ।

पलाण्डुनामानि ।

पलाण्डुर्यवनेष्टश्च दुर्गन्धो मुखदूषकः ।

अर्थ-पलाण्डु, यवनेष्ट, दुर्गन्ध, मुखदूषक (सुकन्दक, निकेतन, नीचभोज्य, लोहितकन्द, तीक्ष्णकन्द, उष्ण, मुखदूषण, शूद्रप्रिय, दीपन, कृमिघ्न, मुखगन्धक, बहुपत्र, विश्वगन्ध, रोचन, पलाण्डु, सुकन्द, सुकन्दक, मुकुन्दक) ।

राजपलाण्डुनामानि ।



अन्यो राजपलाण्डुः स्याद्यवनेष्टो नृपाह्वयः । राजप्रियो महाकन्दो दीर्घपत्रश्च रोचकः ॥ नृपेष्टो नृपकन्दश्च महाकन्दो नृपप्रियः । रक्तकन्दश्च राजेष्टो नामान्यत्र त्रयोदश ॥

अर्थ-राजपलाण्डु, यवनेष्ट, नृपाह्वय,राजप्रिय, महाकन्द,दीर्घपत्र, रोचक, नृपेष्ट, नृपकन्द, महाकन्द, नृपप्रिय, रक्तकन्द, राजेष्ट ।

संस्कृतभाषामें	पलाण्डु, राजपलाण्डु ।
हिन्दीभाषामे	प्याज, लालप्याज ।
वंगभाषामे	पेयाज, लालपेयाज ।
मराठीभाषामे	पाढराकांदा, लालकांदा,पातीचा कांदा ।

गुजरातीभाषामें	डुंगली
कर्णाटकीभाषामे	लोहिवी उल्लि-केंपिन उल्लि।
तैलङ्गीभाषामे	नीरउली।
तामिलीभाषामे	वञ्जयम्।
इंग्रेजीभाषामे	बल्व ओंयिन। (Balb) onion
लेटिन्भाषामे	एलीयंसेपा। Allium cepa।
फारसीभाषामे	प्याज।
अरबीभाषामे	बसल्।

पलाण्डुगुणाः।

पलाण्डुः कटुको बल्यः कफपित्तहरो गुरुः।
वृष्यश्च रोचनः स्निग्धो वान्तिदोषविनाशनः॥ (रा नि)

अर्थ-प्याज-चरपरी, बलकारक, कफपित्तनाशक, भारी, वृष्य, रोचन, स्निग्ध और वमनके दोषको हरनेवाली है।

अन्यच्च।

पलाण्डुर्वातकफहा शुक्रलः शूलगुल्मनुत्। (हा० स०)

अर्थ-प्याज-वातकफनाशक,शुक्रजनक तथा शूल और गुल्मका नाश करे है।

अन्यच्च।

पलाण्डुस्तु बुधैर्ज्ञेयो रसोनसदृशो गुणैः।
स्वादुः पाकरसेऽनुष्णः कफकृन्नातिपित्तलः॥
हरते केवलं वातं बलवीर्य्यकरो गुरुः। (भा० प्र०)

अर्थ-प्याजके गुण लहसुनके गुणोंकी समान जानने। प्याज स्वादु पाकी, स्वादिष्ट, अनुष्ण, कफकारक, अत्यन्त पित्तकारक नहीं, वातविनाशक, बलकारी, वीर्य्यजनक और भारी है।

राजपलाण्डुगुणाः।

पलाण्डुर्नृपपूर्वः स्याच्छिशिरः पित्तनाशनः।
कफहृद्दीपनश्चैव बहुनिद्राकरस्तथा॥

अर्थ-लालप्याज-शीतल, पित्तनाशक, कफहारक, दीपन और अत्यन्त निद्राकारक है।

अन्यच्च ।

वक्ष्यते नृपपलाण्डुलक्षणं क्षारतीक्ष्णमधुरो रुचिप्रदः ।
कण्ठशोषशमनोऽतिदीपनः श्लेष्मपित्तशमनोऽतिबृंहणः ॥

अर्थ-लालप्याज-क्षार, तीक्ष्ण मधुर, रुचिकारक, कण्ठशोषको दूर करनेवाली, अत्यन्त दीपन, कफ पित्तनाशक और अत्यन्त बृंहण है।

पलाण्डुबीजगुणा ।

बीजं पलाण्डोर्वृष्यं स्याद्दन्तकीटप्रमेहजित् । (रत्नाकर)

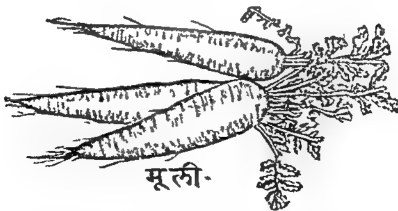
अर्थ-प्याजके बीज-वृष्य तथा दांतोके कीडे और प्रमेहको दूर करनेवाले है ।

मूलकनामानि ।

मूलकं हरिपर्णञ्च भूमिकाक्षार एव च ।
नीलकण्ठ महाकन्द रुचिष्य हस्तिदन्तकम् ॥

अर्थ-मूलक, हरिपर्ण, भूमिकाक्षार, नीलकण्ठ, महाकन्द, रुचिष्य, हस्तिदन्तक (राजालुक, करुकन्दक, हस्तिदन्त, मूलाह्व, दीर्घमूलक, दीर्घपत्रक, मृत्क्षार, कन्दमूल, सित, शंखमूल, रुचिर, दीर्घकन्दक, कुञ्जर, क्षारमूल, शिम्बी फ. ठ)

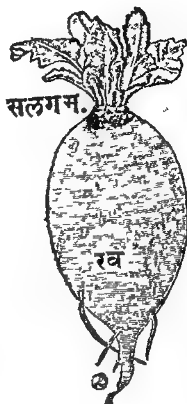
चाणक्यमूलकनामानि ।


मूली-

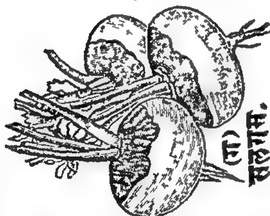
चाणक्यमूलकं चान्यद्वानेयं विष्णुगुप्तकम् ।
स्थूलमूलं महाकंद कौटिल्य मरुसम्भवम् ॥
शालामर्कटक मिश्र ज्ञेय चैव नवाभिधम् ।

। अर्थ-चाणक्यमूलक, वानेय, विष्णुगुप्तक, स्थूलमूल, महाकन्द, कौटिल्य, मरुसम्भव, शालामर्कट, मिश्र।









संस्कृतभाषामें	मूलक, चाणक्यमूलक ।
हिन्दीभाषामें	मूली, बडीमूली, मूला, मूलीकी फली ।
बंगभाषामें	मुला, चणकमूली ।
मराठीभाषामें	मूळा ।
गुजरातीभाषामें	मूला, मूलाफली, मोगरी ।
कर्णाटकीभाषामें	मुलंगी ।
तैलिंगीभाषामें	शतिरंपा ।
इंग्रेजीभाषामें	रेडीश । Radish
लैटिन्भाषामें	रफेनस् स्टेटिवस् । Raphanus Slativus

फारसीभाषामे तुख्म तुख्मतुख ।
अरबीभाषामे फजल् बजरुल् ।

मूलकगुणाः ।

मूलकं तीक्ष्णमुष्णञ्च कटूष्णं ग्राहि दीपनम् ।
दुर्नामगुल्महृद्रोगवातघ्नं रुचिदं गुरु ॥

अर्थ-मूली-तीक्ष्ण,गरम, कटु,उष्ण,ग्राही, दीपन,तथा बवासीर, गुल्म,हृदयरोग और वातका नाश करे है,रुचिकारी और भारी है।

चाणक्यमूलकगुणाः ।

चाणक्यमूलकं सोष्णं कटुकं रुच्यदीपनम् ।
कफवातकृमीन्गुल्मं नाशयेद्ग्राहकं गुरु ॥ (रा० नि०)

अर्थ-बडीमूली-गरम,चरपरी, रुचिकारक, दीपन, कफवातनाशक, कृमिघ्न, गुल्मनाशक, ग्राही और भारी है।

अन्यच्च ।

लघुमूलकमुष्णं स्याद्रुच्यं लघु च पाचनम् ।दोषत्रयहरं स्वर्यं ज्वरश्वासविनाशनम्॥नासिकाकण्ठरोगघ्नं नयनामयनाशनम्। महत्तदेव रूक्षोष्णं गुरु दोषत्रयप्रदम् ॥ स्नेहसिद्धं तदेव स्याद्दोषत्रयविनाशनम् । (भा० प्र०)

अर्थ-छोटी मूली-गरम,रुचिकारक, हलकी, पाचक, त्रिदोषनाशक,स्वरको शुद्ध करनेवाली तथा ज्वर, श्वास, नासिकारोग,कण्ठरोग और नेत्ररोगको दूर करे है । बडी मूली-रूखी, गरम, भारी, त्रिदोषनाशक । वही मूली तेलमे सिद्ध की हुई त्रिदोषनाशक होजाती है ।

अन्यच्च ।

मूलकं गुरु विष्टम्भि तीक्ष्णमामं त्रिदोषकृत्।तदेव स्नेहपक्वं चेत्कफकृद्वातपित्तजित् ॥ शुष्कं त्रिदोषशमनं शोथघ्नं गरजिल्लघु । तत्पुष्पं कफपित्तघ्नं तत्फलं कफवातजित् ॥ (रा० व०)

अर्थ-कच्ची मूली-भारी, विष्टम्भकारी, तीक्ष्ण और त्रिदोषजनक है । वही तेल,घृतादिमे पकाई हुई-कफकारक और वातपित्तहारक होजाती है । सूखी मूली-त्रिदोषनाशक, शोथनिवारक,विषनाशक और हलकी है।मूलीके फूल-कफ पित्तनाशक और मूलीकी फली-कफवातनाशक है ।

अपिच ।

बालं तु मूलकं तिक्तं कटूष्णं च रुचिप्रदम्। लघ्वग्निदीपकं हृद्यं तीक्ष्णं तु पाचकं सरम् ॥मधुरं ग्राहकं बल्यं मूत्रदोषार्शनाशनम् । गुल्मक्षयश्वासकासनेत्ररोगविनाशकम् ॥ नाभिशूलं कफं वातं कण्ठरोगविनाशकम् । त्रिदोषदद्रुशूलघ्नमुदावर्त्तप्रणुत्परम् ॥ पीनसं च व्रणं चैव नाशयेदितिकीर्तितम् । जीर्णमूलं चोष्णवीर्य्यं शोषं च दाहपित्तकृत् ॥ रक्तदोषकरं चैव ऋषिभिः परिकीर्त्तितम् । पक्वमूलं तु कटुकं चोष्णमग्निकरं मतम् ॥ भक्षिते भोजनात्पूर्वं पित्तदाहप्रकोपनम्॥ भोजनोत्तरवेलायां भक्षितं बलदं हितम् ॥ वेसवारयुतं चार्शःशूलहृद्रोगनाशकम्। किंचिदुष्णा मूलशिम्बी कफवातविनाशिनी ॥ मूलपुष्पं कफकरं पित्तकृत्परिकीर्त्तितम् । (रत्नाकर)

अर्थ-कच्ची मूली-कडवी, चरपरी, गरम, रुचिकारक, हलकी, अग्निप्रदीपक, हृदयको हितकारी, तीक्ष्ण, पाचक, सारक, मधुर, ग्राही, बलकारी तथा मूत्रदोष, बवासीर, गुल्म, क्षय, श्वास, खासी नेत्ररोग, नाभिशूल, कफ, वात, कण्ठरोग,त्रिदोष,दाद,शूल,उदावर्त्त, पीनस और व्रणका नाश करे है।पुरानी मूली उष्णवीर्य्य तथा शोष, दाह,पित्त और रुधिरके विकारोंको उत्पन्न करे है।पकी मूली-चरपरी, गरम, अग्निजनक है, यह भोजनसे प्रथम भक्षण करीहुई पित्त और दाहको कुपितकरे है। भोजनके पीछे भक्षण की हुई-बलको करनेवाली और हितकारक है । बेसवारके साथ खाई हुई मूली-बवासीर, शूल और हृदयरोगका नाश करे है । मूलीकी फली-किंचित् गरम और कफ वातनाशक है । मूलीके फूल-कफकारक और पित्तजनक है ।

गर्जरनामानि ।

गाजरं गृञ्जनं प्रोक्तं तथा नारंगवर्णकम् ॥

अर्थ-गाजर, गृञ्जन, नारंगवर्ण (पिण्डमूल, पीतकन्द, सुमूलक, स्वादुमूल, सुपीत, नारंग, पीतमूलक)।

गृञ्जननामानि।

गृञ्जनं शिखिमूल च यवनेष्ट च वर्त्तुलम्।
ग्रन्थिमूल शिखाकन्दं कन्द डिण्डीरमोदकम्॥

अर्थ-गृञ्जन, शिखिमूल, यवनेष्ट, वर्त्तुल, ग्रन्थिमूल, शिखाकन्द, कंद, डिंडीरमोदक।

पिण्डमूलनामानि।



पिण्डमूलं गजीडं च पिण्डिकं पिण्डमूलकम्।

अर्थ-पिण्डमूल,	गजीड, पिण्डिक, पिण्डमूलक।
संस्कृतभाषामे	गर्जर, गृञ्जन, पिण्डमूल।
हिन्दीभाषामें	गाजर, जगली गाजर, गोलमूली।
वंगभाषामे	गाजर।
मराठीभाषमे	गाजर, रानगाजर।
गुजरातीभाषामे	गाजर, पतालुगाजर, अडवाउगाजर।
कर्णाटकीभाषामे	सेठीमूल, चांडेकेयमूलंगी।
तैलिङ्गभाषामे	गृञ्जन।
इंग्रेजीभाषामे	क्यारटरुट Carrotroot कारटसीड्स। Carrots eeds
लैटिन्भाषामे	डाक्सकेरोटा। Daucus carota
फारसीभाषामे	जर्दक, गजर, गजरेदस्ति तुख्मेजर्दक।
अरबीभाषामे	जजर, जजरेबीरं बजरुल्जजर।

गर्जरगुणा।

गाजरं मधुरं तीक्ष्णं तिक्तोष्णं दीपनं लघु।
सग्राहि रक्तपित्तार्शोग्रहणीकफवातजित्॥(भा० प्र०)

अर्थ-गाजर-मधुर,तीक्ष्ण, कडवी, गरम,दीपन, हलकी, मलरोधक तथा रक्तपित्त,बवासीर,संग्रहणी,कफ और वातका नाशकरे है।

अन्यच्च।

गाजरं मधुरं रुच्यं किञ्चित्कटु कफापहम्।
आध्मानक्रिमिशूलघ्नं दाहपित्ततृषापहम्॥ (रा० नि०)

अर्थ-गाजर-मधुर, रुचिकारक, किञ्चित् चरपरी, कफनाशक तथा आध्मान,कृमि, शूल, दाह, पित्त और तृषाको दूर करे है।

गृञ्जनगुणा।

गृञ्जनं कटु चोष्णं हि कफवातरुजापहम्।
रुच्यं च दीपनं हृद्यं दुर्गंधं गुल्मनाशनम्॥

अर्थ-जंगलीगाजर-चरपरी, गरम, कफवातरोगनाशक,रुचिकारक,दीपन,हृदयको हितकारी तथा दुर्गंध और गुल्मका नाश करेहै।

पिण्डमूलगुणा।

पिण्डमूलं कटूष्णञ्च गुल्मवातादिदोषनुत्।

अर्थ-गोलमूली-चरपरी, गरम तथा गुल्म और वातादि दोषोको दूर करनेवाली है।

सूरणनामानि



सूरणः कन्द ओलश्च कन्दलोऽर्शोघ्न इत्यपि॥

अर्थ-सूरण, कंद,ओल,कन्दल,अर्शोघ्न, (सूरण, ओल, कण्ठाल, कण्डुल,कन्दी,सुकन्दी,स्थूलकन्दक,दुर्नामारि, सुवृत्त,वातारि,कन्दशूरण,तीव्रकण्ठ,कदार्ह, कन्दवर्द्धन,बहुकन्द,रुच्यकन्द, शूरणकन्द)।

संस्कृतभाषामे	शूरण ।
हिन्दीभाषामे	सूरन, जिमीकन्द ।
वंगभाषामे	ओल ।
मराठीभाषामे	गोडा सुरण । खाजेरा सुरण ।
गुजरातीभाषामे	सूरण ।
कर्णाटकीभाषामे	सूरण
तैलिङ्गीभाषामे	मंचाकन्दा, दोलकन्दा ।
तामिलभाषामे	सूरण ।
लेटिन्भाषामे	एमोर्फोफेलस् पेनिक्युलेटस् । Amorphophallus (-paniculatus
फारसीभाषामे	ओल ।

अस्य गुणाः ।

सुरणो दीपनो रूक्षःकषायःकण्डुकृत्कटुः । विष्टम्भी विशदो रुच्यः कफार्शःकृन्तनो लघुः ॥ विशेषादर्शसि पथ्यः प्लीहगुल्मविनाशनः । सर्वेषां कन्दशाकानां सूरणः श्रेष्ठ उच्यते ॥ दद्रूणां रक्तपित्तानां कुष्ठिनां न हितो हि सः।सधानो योगसम्प्राप्तसूरणो गुणवत्तमः ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-सूरण—जमीकन्द-रूखा, कषेला, खुजलीको करनेवाला, चरपरा,विष्टम्भकारक, विशद, रुचिकारक, कफनाशक,बवासीरको दूर करनेवाला हलका,विशेषकरकेअर्शरोगवालोको हितकारी है तथा प्लीहा और गुलमरोगोका नाशकरे है यह दाद, रक्तपित्त और कुष्ठरोगवालोको हितकारी नही है इसका सन्धान अधिक गुणकारी है ।

अन्यच्च ।

सूरणश्च कटुरुच्यदीपनः पाचनः कृमिकफानिलापहः।
श्वासकासवमनार्शसां हरः शूलगुल्मशमनोऽस्रदोषकृत्॥

अर्थ-जमीकन्द-चरपरा, रुचिकारक, दीपन, पाचक, कृमिघ्न, कफवातनाशक तथा श्वास,खांसी, वमन, बवासीर,शूल और गुलम रोगको दूरकरेहै तथा रुधिरके विकारोको उत्पन्न करे है।

सूरणो दीपनो रुच्यः कफघ्नो विशदो लघुः ।
विशेषादर्शसां पथ्यो ग्राम्यकन्दस्तु दोषलः ॥

अर्थ-जमीकन्द-दीपन, रुचिकारक, कफनाशक, विशद, हलका, विशेष करके बवासीर रोगवालोंको पथ्य है और नगरका पैदाहुआ जिमिकन्द दोषजनक है।

वनसूरणनामानि।

वज्रकन्दः सुरेन्द्रः स्याद्वन्योऽन्यश्चित्रकन्दकः।

अर्थ-वज्रकन्द, सुरेन्द्र, वन्य, चित्रकन्दक (सितसूरण, वनकन्द, अरण्यसूरण, वनज, श्वेतसूरण, वनओल्ल)।

अस्य गुणाः।

तद्वद्वन्यो वज्रकन्दः कफघ्नः पित्तरक्तकृत्।

अर्थ-जंगली सूरणके गुणभी सूरणकेही समान हैं, कफनाशक और पित्तकारक है।

अन्यच्च।

वज्रसूरणको रुच्यः कटूष्णः कृमिनाशनः।
गुल्मशूलादिदोषघ्नः स चारोचकहारकः॥ (रा० नि०)

अर्थ-वनसूरण-रुचिकारी, चरपरा, कृमिनाशक, गरम, गुल्म, शूलादिकरोगनाशक और अरुचिको हरनेवाला है।

रक्तालुनामानि।

रक्तस्तु रक्तपिण्डालू रक्तालू रक्तपिण्डकः।
लोहितो रक्तकन्दश्च लोहितालुः षडाह्वयः॥

अर्थ-रक्त, रक्तपिण्डालु, रक्तालु, रक्तपिण्डक, लोहित, रक्तकन्द, लोहितालु।

पिण्डालुनामानि।

श्वेतः पिण्डीतकः पिण्डकन्दो रोमशकन्दकः।
कन्दग्रन्थिश्च पिण्डालुः पिच्छिलः स्वादुकन्दकः॥

अर्थ-पिण्डीतक, पिण्डकन्द, रोमशकन्दक, कन्दग्रन्थि, पिण्डालु, पिच्छिल, स्वादुकन्दक।

संस्कृतभाषामें	रक्तालु, पिण्डालु।
हिंदीभाषामें	रतालु, पिण्डालु, कॉंदु, शकरकन्दी।
बंगभाषामें	लालपिण्डालु, गोलआलु, चुवडिआलु।

मराठीभाषामे	लाल रताळे, पांढरे रताळें ।
गुजरातीभाषामे	रतालु, सकरकन्द, श्वेतालु ।
कर्णाटकीभाषामे	केंपिनहेडळ, बिळयहेडल ।
तैलिङ्गीभाषामे	चिरगेड्डु ।
तामिलीभाषामे	यामस्कोल ।
औत्क०	घराअलु ।
इंग्रेजीभाषामे	स्वीट्पाटेटो Sweet potato
लैटिन्भाषामे	बटाटास् एस् क्युलेंटस् Batatas Esculafus ब. एड्युलीस् B Edulis
फारसीभाषामे	जरदाक लहोरी ।

रक्तालुगुणा ।

रक्तपिण्डालुकः शीतो मधुराम्लः श्रमापहः ।
पित्तदाहापहो वृष्यो बलपुष्टिकरो गुरुः ॥

अर्थ–रतालु–शीतल, मधुर, अम्ल, श्रमनाशक, पित्तनाशक, दाहनिवारक, वृष्य, बलकारक, पुष्टिजनक और भारी है ।

पिण्डा [श्वेता] लुर्मधुरः शीतो मूत्रकृच्छ्रामयापहः ।
दाहशोषप्रमेहघ्नो वृष्य- सन्तर्पणो गुरुः ॥ (रा० नि०)

अर्थ–पिंडालु–मधुर, शीतल, मूत्रकृच्छ्ररोगनाशक, दाहनिवारक शोषनाशक, प्रमेहकोहरनेवाले, वीर्य्यवर्द्धक, तृप्तिकारक औरभारीहै ।

पिण्डालुक कफकर गुरु वातप्रकोपनम् ॥ (राजवल्लभ)

अर्थ-पिंडालु–कफकारक, भारी और वातको कुपितकरनेवालेहैं।

आलुकीगुणा ।

राजालुभेदः सम्प्रोक्तश्चारुई इति नामतः ।
मलावष्टम्भकः स्निग्धो जडो बलकरो मतः ।
कफनाशकरश्चैव तैले पक्को रुचिप्रदः ॥ (नि० र०)

अर्थ–रतालुका भेद अरुई है । अरुई–मलस्तम्भक, स्निग्ध, जड, बलकारक, कफनाशक और यह तेलमें पकाईहुई रुचिकारक है ।

गजकर्णालुनामानि ।

आलुक दीर्घनालश्च तीक्ष्णकन्द सुकन्दकम् ।

मराठीभाषामे	लाल रताळे, पांढरे रताळें ।
गुजरातीभाषामे	रतालु, सकरकन्द, श्वेतालु ।
कर्णाटकीभाषामे	केंपिनहेडल, बिलयहेडल ।
तैलिङ्गीभाषामे	चिरगड्ड ।
तामिलीभाषामे	वामस्कोलं ।
औत्क०	वराअलु ।
इंग्रेजीभाषामे	स्वीट्पोटेटो Sweet potato
लैटिन्भाषामे	बटाटास् एस् क्युलेटस् Batatas Esculatus
	ब. एडयुलीस् B Edulis
फारसीभाषामें	जरदाक लहोरी ।

रक्तालुगुणा ।

रक्तपिण्डालुकः शीतो मधुराम्लः श्रमापहः ।
पित्तदाहापहो वृष्यो बलपुष्टिकरो गुरुः ॥

अर्थ-रतालु-शीतल, मधुर, अम्ल, श्रमनाशक, पित्तनाशक, दाहनिवारक, वृष्य, बलकारक, पुष्टिजनक और भारी है ।

पिण्डा [श्वेता] लुर्मधुरः शीतो मूत्रकृच्छ्रामयापहः ।
दाहशोषप्रमेहघ्नो वृष्यः सन्तर्पणो गुरुः ॥ (रा० नि०)

अर्थ-पिंडालु-मधुर, शीतल, मूत्रकृच्छ्ररोगनाशक, दाहनिवारक शोषनाशक, प्रमेहकोहरनेवाले, वीर्य्यवर्द्धक, तृप्तिकारक औरभारीहै।

पिण्डालुकं कफकरं गुरु वातप्रकोपनम् ॥ (राजवल्लभ)

अर्थ-पिंडालु-कफकारक, भारी और वातको कुपितकरनेवालेहैं।

आलुकीगुणा ।

राजालुभेदः सम्प्रोक्तश्चारुई इति नामतः ।
मलावष्टम्भकः स्निग्धो जडो बलकरो मतः ।
कफनाशकरश्चैव तैले पक्वो रुचिप्रदः ॥ (नि० र०)

अर्थ-रतालुका भेद अरुई है। अरुई-मलस्तम्भक, स्निग्ध, जड, बलकारक, कफनाशक और यह तेलमें पकाईहुई रुचिकारक है।

गजकर्णालुनामानि ।

आलुकं दीर्घनालञ्च तीक्ष्णकन्दं सुकन्दकम् ।

कासालुनामानि ।

कासालुः कासकन्दश्च कन्दालुश्चालुकश्च सः ।
आलुर्विशालपत्रश्च पत्रालुश्चेति सप्तधा ॥

अर्थ-कासालु, कासकन्द, कन्दालु, आलुक, आलु, विशालपत्र, पत्रालु ।

कासालुगुणाः ।

कासालुरुग्रकण्डूतिविषश्लेष्मामयापहः ।
अरोचकहरः स्वादुः पथ्यो दीपनकारकः ॥ (रा० नि०)

अर्थ-कासालु-उग्र, कण्डूको हरनेवाला, विषघ्न, कफरोगनाशक, अरुचिको दूर करनेवाला, स्वादिष्ठ, पथ्य और अग्निको दीपन करैहै।

अन्यच्च ।

कासालुकं कण्डुकरं मधुरं पथ्यकारकम् ।
दीपनं रुचिदं प्रोक्तं कफवातरुजापहम् ॥ (नि० र०)

अर्थ-कासालु-कण्डूको उत्पन्न करनेवाला, मधुर, पथ्यकारक, दीपन, रुचिकारक तथा कफ और वातरोगका नाश करनेवाला है।

फोंडालुनामानि ।

फोण्डालुर्लोहितालुश्च रक्तपत्रो मृदुच्छदः ॥

अर्थ-फोण्डालु, लोहितालु, रक्तपत्र, मृदुच्छद ।

फोण्डालुगुणाः ।

फोण्डालुः श्लेष्मवातघ्नः कटूष्णो दीपनीयकः ॥

अर्थ-फोण्डालु-कफवातविनाशक, चरपरे, गरम और अग्निको दीपन करनेवाले है ।

पानीयालुनामानि ।

पानीयालुर्जलालुः स्यादनूपालुरवालुकः ।

अर्थ-पानीयालु, जलालु, अनुपालु, अवालुक ।

पानीयालुगुणाः ।

पानीयालुस्त्रिदोषघ्नः सन्तर्पणकरः परः ॥

अर्थ-पानीयालु-त्रिदोषनाशक और तृप्तिकारक है ।

नीलालुनामानि ।

नीलालू रसिकालुः स्यात्कृष्णालुः श्यामलालुकः ।

अर्थ-नीलालु, रसिकालु, कृष्णालु, श्यामलालुक ।

नीलालुगुणाः।

नीलालुर्मधुरः शीतः पित्तदाहश्रमापहः।

अर्थ-नीलालु-मधुर, शीतल तथा पित्त, दाह और श्रमको दूर करेहै।

शुभ्रालुनामानि।

शुभ्रालुर्महिषीकन्दो लुलायकन्दश्च शुक्लकन्दश्च।
सर्पाख्यो वनवासी विषकन्दो नीलकन्दाख्यः॥

अर्थ-शुभ्रालु-महिषीकन्द, लुलायकन्द, शुक्लकन्द, सर्पाख्य, वनवासी, विषकन्द, नीलकन्द।

शुभ्रालुगुणाः।

कटूष्णो महिषीकन्दः कफवातामयापहः।
मुखजाड्यहरो रुच्यो महासिद्धिकरः सितः॥

अर्थ-भैसाकन्द-चरपरा, गरम, कफ वात,रोगनाशक,मुखकी जडताको हरनेवाला,रुचिको करनेवाला और सफेद रंगका महासिद्धिकारक है।

हस्तिकन्दनामानि।

हस्तिकन्दो हस्तिपत्रः स्थूलकंदोतिकन्दकः। बृहत्पत्रोऽतिपत्रश्च हस्तिकर्णस्तु कर्णकः॥ त्वग्दोषारिः कुष्ठहन्ता गिरिवासी नगाश्रयः।गजकन्दोनागकन्दो ज्ञेयो वै सप्तनामकः॥

अर्थ-हस्तिकन्द, हस्तिपत्र, स्थूलकन्द, अतिकन्दक, बृहत्पत्र, अतिपत्र, हस्तिकर्ण, कर्णक, त्वग्दोषारि, कुष्ठहन्ता, गिरिवासी, नागाश्रय, गजकन्द, नागकन्द।

हस्तिकन्दगुणाः।

हस्तिकन्दः कटूष्णः स्यात्कफवातामयापहः।
त्वग्दोषघ्नो महाकुष्ठविषवैसर्पनाशकः॥ (रा० नि०)

अर्थ-हस्तिकन्द-चरपरा, गरम, कफवातरोगनाशक तथा त्वचाके विकारनाशक, महाकुष्ठ,विष और विसर्परोगको नाश करे है।

हस्तिकन्दः स्मृतश्चोष्णः कटुको मधुरो गुरुः।

शोफं कफं रक्तदोषं वातं कुष्ठं विसर्पकम् ॥
त्वग्दोषं नाशयत्येवं मुनिभिः परिकीर्तितम् ॥ (नि०र०)

अर्थ-हस्तिकन्द-गरम, चरपरा, मधुर, भारी, तथा सूजन, कफ, रुधिरविकार, वात, कोढ, विसर्प और त्वचाके दोषाको दूर करैहै ।



कोलकन्दनामानि ।

कोलकन्दः कृमिघ्नश्च पञ्जलो वस्त्रपञ्जलः ।
पुटालुः सुपुटश्चैव पुटकन्दश्च सप्तधा ॥

अर्थ-कोलकन्द, कृमिघ्न, पञ्जल, वस्त्रपञ्जल, पुटालु, सुपुट पुटकन्द

कोलकन्दगुणाः ।

कोलकन्दः कटुश्चोष्णः कृमिदोषविनाशनः ।
वान्तिविच्छर्दिशमनो विषदोषनिवारणः ॥

अर्थ-कोलकन्द-चरपरा, गरम, कृमिरोगनाशक, वान्तिको शान्त करनेवाला, दुष्ट वान्तिको हरनेवाला और विषके विकारोको दूर करनेवाला है ।

वाराहीकन्दनामानि ।

वाराहीकन्द एवान्यैश्चर्मकारालुको मतः ।
अनूपे स भवेद्देशे वराह इव लोमवान् ॥

अर्थ-वाराहीकन्द, चर्मकारालुक, (विष्वक्सेनप्रिया, घृष्टि, बदराकच्छा, वनमालिनी, गृष्टि, बिल्वमूला, शूकरी, क्रोडकन्या, विष्वक्सेनकान्ता, वराही, कौमारी, त्रिनेत्रा, ब्रह्मपुत्री, क्रोडी, कन्या, माधवेष्टा गृष्टिका, शूकरकन्द, क्रोड, वनवासी, कुष्ठनाशक, वल्य, अमृत, महावीर्य, शम्बरकन्द, वराहकन्द, वीर, ब्राह्मीकन्द, महौषध, सुकन्दक, उद्भिद, व्याधिहन्ता, मागधी) ।



वाराहीकंद.

विवरण । यह कन्द अनूपदेशमें होताहै इस कन्दके ऊपर सूअर की समान बाल होतेहैं इस कारण इसको वाराहीकन्द कहतेहैं ।

संस्कृतभाषामें	वाराहीकन्द ।
हिन्दीभाषामें	गेंठी, भिवाँलीकन्द ।
वंगभाषामें	चामालु, चुवडिआलु ।
मराठीभाषामें	डुकरकन्द ।
गुजरातीभाषामें	वाराहीकन्द,सुअरिया सालिवणावल्य ।
कर्णाटकीभाषामें	हंदिगेंट्टे ।
तैलिंगीभाषामें	व्राहदचिट्टु । पाचिताके, नेलताडिचेट्टु
लैटिन्भाषामें	डायोस्कोरियासेटिवा । Diorcorea Sativa

वाराहीगुणा ।

वाराही पित्तला बल्या कट्वी तिक्ता रसायनी ।
आयुःशुक्राग्निकृन्मेहकफकुष्ठानिलापहा ॥ (भावप्रका०)

अर्थ-वाराहीकन्द-पित्तजनक, बलकारक, चरपरा, कडवा, रसायन तथा आयु, शुक्र और जठराग्निको वढानेवाला है और प्रमेह, कफ, कोढ और वातका नाश करे है ।

अन्यच्च ।

वाराही तिक्तकटुका विषपित्तकफापहा ॥
कुष्ठमेहकृमिहरा वृष्या बल्या रसायनी ॥ (रा०नि०)

अर्थ-वाराहीकन्द-कडवा,चरपरा, वृष्य, बलकारक तथा विष, पित्त, कफ, कोढ, प्रमेह और कृमिरोगको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

वाराहकन्दश्चार्शोघ्नो वातगुल्मनिवारणः । (आ०)

अर्थ-वाराहीकन्द-बवासीर, वात और गुल्मरोगका नाश करनेवाला है ।

अपिच ।

वाराहकन्दः कटुकस्तिक्तो बल्यश्च पित्तलः । रसायनः शुक्रलश्च वृष्यश्चाग्निप्रदीपकः ॥ मधुरोष्णो वर्णकरः स्वर्य्यश्चायुर्विवर्द्धनः । कुष्ठं मेह त्रिदोषञ्च कफ वातं कृमीस्तथा ॥ मूत्रकृच्छ्रहरः प्रोक्तो वैद्यैर्विद्याविशारदैः । (नि० र०)

अर्थ-वाराहीकन्द-चरपरा,कडवा,बलकारक,पित्तजनक,रसायन, शुक्रजनक, वीर्य्यवर्द्धक, अग्निप्रदीपक,मधुर,गरम,वर्णकारक,स्वरको शुद्ध करनेवाला, आयुवर्द्धक तथा कोढ, प्रमेह, त्रिदोष, कफ,वात, कृमि और मूत्रकृच्छ्र रोगको नाश करे है ।

विवरण । वाराहीकंदको कहीं गेठी और कही अंगोठी तथा सूअर कंदभी कहतेहैं।यह पृथ्वीमें गुडकी भेलीकी समान होताहै। पत्ते कटीले बडे बडे अनीदार होतेहैं, इसपर सूअरकी समान बाल होतेहैं ।

विष्णुकन्दनामानि ।

विष्णुकन्दो विष्णुगुप्तः सुपुष्टो बहुसम्पुटः ।
जलवासा बृहत्कन्दो दीर्घवृत्तो हरिप्रियः ॥

अर्थ-विष्णुकन्द,विष्णुगुप्त,सुपुष्ट, बहुसम्पुट, जलवासा, बृहत्कन्द, दीर्घवृत्त, हरिप्रिय ।

विष्णुकन्दगुणाः ।

विष्णुकन्दस्तु मधुरः शिशिरः पित्तनाशनः ।
दाहशोफहरो रुच्यः सन्तर्पणकरः परः ॥ (रा० नि०)

अर्थ-विष्णुकन्द-मधुर, शीतल, पित्तनाशक, दाहनाशक, शोफहारक, रुचिकारक और तृप्तिकारक है ।

धरणीकन्दनामानि ।

धरणी धारणीया च वीरपत्री सुकन्दकः ।

कन्दालुर्वनकन्दश्च कन्दाढ्यो दण्डकन्दकः ॥

अर्थ-धरणी, धारणीया, वीरपत्री, सुकन्दक, कन्दालु, वनकन्द, कन्दाढ्य, दण्डकन्दक।

धरणीकन्दगुणाः।

मधुरो धरणीकन्दः कफपित्तामयापहः।
वक्त्रदोषप्रशमनः कुष्ठकण्डूतिनाशनः ॥

अर्थ-धरणीकन्द-मधुर, कफपित्तरोगनाशक,मुखदोषको दूर करनेवाला तथा कोढ और खुजलीको हरनेवाला है।

नाकुलीकन्दनामानि।

नाकुली सर्पगन्धा च सुगन्धा रक्तपत्रिका।
ईश्वरी नागगन्धा चाप्यहिभुक्स्वरसा तथा ॥
सर्पादनी व्यालगन्धा ज्ञेया चेति दशाह्वया ॥

अर्थ-नाकुली,सर्पगन्धा, सुगन्धा, रक्तपत्रिका,ईश्वरी, नागगन्धा, अहिभुक्, स्वरसा, सर्पादनी, व्यालगन्धा।

गन्धनाकुलीनामानि।

अन्या महासुगन्धा च सुवहा गन्धनाकुली। सर्पाक्षी फणिहन्त्री च नकुलाढ्याहिभुक्च सा॥ विषमर्दनिका चाहिमर्दनी विषमर्दनी। महाहिगन्धाहिलता ज्ञेया स्याद्द्वादशाह्वया ॥

अर्थ-महासुगन्धा, सुवहा, गन्धनाकुली, सर्पाक्षी, फणिहन्त्री, नकुलाढ्या, अहिभुक्, विषमर्दनिका, अहिमर्दनी, विषमर्दनी, महाहिगन्धा, अहिलता।

द्विविधानाकुलीकन्दगुणाः।

नाकुलीयुगलं तिक्तं कटूष्णं च त्रिदोषजित्।
अनेकविषविध्वंसि किञ्चिच्छ्रेष्ठं द्वितीयकम् ॥(रा०नि०)

अर्थ-दोनो प्रकारके नकुलकंद-कडवे,चरपरे,गरम,त्रिदोषनाशक, अनेक प्रकारके विषोंका विध्वंस करनेवाले और सुगंधनाकुलीकन्द नाकुलीकन्दकी अपेक्षा कुछेक उत्तम है।

मालाकन्दनामानि।

अथ मालाकन्दः स्याद्दलकन्दश्च पङ्क्तिकन्दश्च।

त्रिशिखदला ग्रन्थिदला कन्दलता कीर्तिता षोढा ॥

अर्थ-मालाकन्द, बलकन्द, पंक्तिकन्द, त्रिशिखदला, ग्रन्थिदला, कन्दलता ।

मालाकन्दगुणा ।

मालाकन्दः सुतीक्ष्णः स्याद्गण्डमालाविनाशकः ।
दीपनो गुल्महारी च वातश्लेष्मापकर्षकृत् ॥

अर्थ-मालाकन्द-तीक्ष्ण, गण्डमालारोगको हरनेवाला, दीपन, गुल्मनाशक तथा वात और कफका नाश करनेवाला है ।

विदारीकन्दनामानि ।

विदारिका स्वादुकन्दा सिता शुक्ला शृगालिका । विदारी वृष्यकन्दा च बिडाली वृष्यवल्लिका ॥ भूकूष्माण्डी स्वादुलता गजेष्टा वारिवल्लभा । ज्ञेया कन्दफला चेति मनुसंख्याह्वया मता ॥

अर्थ-विदारिका, स्वादुकन्दा, सिता, शुक्ला, शृगालिका, विदारी, वृष्यकन्दा, बिडाली, वृष्यवल्लिका, भूकूष्माण्डी, स्वादुलता, गजेष्टा, वारिवल्लभा, कन्दफला ।

विदारीकन्दगुणा ।

विदारी मधुरा शीता गुरुः स्निग्धास्रपित्तजित् ।
ज्ञेया च कफकृत्पुष्टिबल्या वीर्य्यविवर्द्धिनी ॥

अर्थ-विदारीकन्द-बिलारीकन्द-बिलाईकन्द--मधुर, शीतल, भारी, स्निग्ध, रक्तपित्तनाशक, कफकारक, तथा पुष्टि, बल और वीर्यको बढानेवाला है ।

क्षीरविदारीनामानि ।

अन्या क्षीरविदारी स्यादिक्षुगन्धेक्षुवल्लरी। इक्षुवल्ली क्षीरकन्दः क्षीरवल्ली पयस्विनी ॥ क्षीरशुक्ला क्षीरलता पयःकन्दा पयोलता । पयोविदारिका चेति विज्ञया द्वादशाह्वया ॥

अर्थ-क्षीरविदारी, इक्षुगन्धा, इक्षुवल्लरी, इक्षुवल्ली, क्षीरकन्द, क्षीरवल्ली, पयस्विनी, क्षीरशुक्ला, क्षीरलता, पयःकन्द, पयोलता, पयोविदारिका ।

क्षीरविदारीगुणा ।

ज्ञेया क्षीरविदारी च मधुराम्ला कषायका ।

तिक्ता च पित्तशूलघ्नी मूत्रमेहामयापहा ॥

अर्थ-क्षीरविदारी-दूधविहारी-कंद-मधुर, अम्ल, कसेला, कडवा, पित्तनाशक, शूलनिवारक तथा मूत्ररोग और प्रमेहरोगको दूर करे है।

क्षीरकन्दो द्विधा प्रोक्तो विनालस्तु सनालकः ।
विनालो रोगहर्त्ता स्याद्वयःस्तम्भी सनालकः ॥

अर्थ-क्षीरविदारी विना नालवाला और नालयुक्त इन भेदोंसे दो प्रकारका है, तहा विना नालका क्षीरकंद-रोगनाशक और नाल युक्त-वयस्तम्भक है । विदारीकंदके विशेष गुण दोष गुडूच्यादि वर्गमे देखो ।

चण्डालकन्दनामानि ।

प्रोक्तश्चण्डालकन्दः स्यादेकपत्रो द्विपत्रकः ।
त्रिपत्रोऽथ चतुःपत्रः पञ्चपत्रश्च भेदतः ॥

अर्थ-चण्डालकन्द-एकपत्र, द्विपत्र, त्रिपत्र, चतुःपत्र और पंचपत्र इन भेदोंसे पांच प्रकारका है ।

चण्डालकन्दगुणाः ।

चण्डालकन्दो मधुरः कफपित्तास्रदोषजित् ।
विषभूतादिदोषघ्नो विज्ञेयश्च रसायनः ॥

अर्थ-चण्डालकन्द-मधुर, कफघ्न, रक्तपित्तनाशक, विषनिवारक, भूतादिबाधाओंको हरनेवाला और रसायन है ।

तैलकन्दनामानि ।

अथ तैलकन्द उक्तो द्रावककन्दस्तिलाङ्कितदलश्च ।
करवीरकन्दसंज्ञो ज्ञेयस्तिलचित्रपत्रको बाणैः ॥

अर्थ-तैलकन्द, द्रावककन्द, तिलाङ्कितदल, करवीरकंदसंज्ञ, तिलचित्रपत्रक ।

तैलकन्दगुणाः ।

लोहद्रावी तैलकन्दः कटूष्णो वातापस्मारहारी विषारिः ।
शोफघ्नः स्याद्बधकारी रसस्य द्रागेवासौ देहसिद्धिं विधत्ते ॥

अर्थ-तैलकन्द-लोहेको पतला करनेवाला, चरपरा, गरम तथा वात, अपस्मार, विष और सूजनको दूर करेहै, पारेको बांधनेवाला और तत्काल देहको सिद्धकरनेवाला है ।

त्रिपर्णीनामानि।

त्रिपर्णिका बृहत्पत्रा या च्छिन्नग्रन्थिका च सा।
कन्दालुः कन्दबहुलाऽप्यम्लवल्ली द्रुमारुहा॥

अर्थ-त्रिपर्णिका, बृहत्पत्रा, छिन्नग्रन्थिका, कन्दालु, कन्दबहुला, अम्लवल्ली, द्रुमारुहा।

त्रिपर्णीगुणा।

त्रिपर्णी मधुरा शीता श्वासकासविनाशिनी।
पित्तप्रकोपशमनी विषव्रणहरा परा॥

अर्थ-त्रिपर्णिकन्द-मधुर, शीतल तथा श्वास, खाँसी, पित्त, विष, और व्रणका नाशकरनेवाला है।

लक्ष्मणाकन्दनामानि।

लक्ष्मणा पुत्रकन्दा च पुत्रदा नागिनी तथा।
नागाह्वा नागपत्री च तुलिनी मक्षिका च सा॥
अस्रबिन्दुच्छदा चैव सुकन्दा दशधाह्वया।

अर्थ-लक्ष्मणा, पुत्रकन्दा, पुत्रदा, नागिनी, नागाह्वा, नागपत्री, तुलिनी, माक्षिका, अस्रबिन्दुच्छदा, सुकन्दा।

अस्या गुणा।

लक्ष्मणा मधुरा शीता स्त्रीवन्ध्यत्वविना.
रसायनकरी वल्या त्रिदोषशमनी परा॥

अर्थ-लक्ष्मणाकन्द-मधुर,शीतल, स्त्रीके बाझपनेको हरनेवाला, रसायन,बलकारक और त्रिदोषको शान्ति करनेवाला है।

हस्तजोडिनामगुणाश्च।

हस्तपर्य्यायपूर्वस्तु जोडिर्वैद्यवरैः स्मृतः।
करजोडिरिति ख्यातो रसबद्धादिवश्यकृत्॥

अर्थ-हस्तजोडि और करजोडि यह नाम हस्ताजूडी,हत्थाजूडीके हैं, हत्थाजोडी-पारेआदिको बांधनेवाली और वशीकरण है।

गुच्छकन्दनामानि।

गुच्छाह्वकन्दःस्तबकाह्वकन्दो गुलच्छकन्दश्च विषण्टिकाभिधः

अर्थ-गुच्छाह्वकन्द, स्तबकाह्वकन्द, गुलच्छकन्द, विषण्टिका।

गुलच्छकन्दगुणाः ।

गुलच्छकन्दो मधुरः सुशीतलो वृष्यप्रदस्तर्पणदाहनाशनः ॥
(राजनिघण्टु)

अर्थ-गुलच्छकन्द-मधुर, शीतल, वृष्य, तृप्तिकारक और दाहनाशक है ।

मानकन्दनामानि ।

मानकः स्यान्महापत्रः कथ्यन्ते तद्गुणा अथ ।

अर्थ-मानक, महापत्र, (स्थलपद्म, विस्तीर्णपर्ण, माण, बृहच्छद, छत्रपत्र, माणक) ।

अस्य गुणाः ।

माणकः शोथहृच्छीतः पित्तरक्तहरो लघुः ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-मानकन्द-सूजनको दूर करनेवाला, शीतल, रक्तपित्तनाशक और हलका है ।

अन्यच्च ।

माणकः स्वादुः शीतश्च गुरुः शोथहरः कटुः ॥(राजनि०)

अर्थ-मानकन्द-स्वादिष्ठ, शीतल, भारी, सूजनको दूर करनेवाला और चरपरा है ।

शंखालुनामानि ।

शखालुः शंखसकाशो मध्वालुः स्यात्तु रोमशः ।

अर्थ-शंखालु, शंखसकाश, मध्वालु, रोमश ।

काष्ठालुनामानि ।

काष्ठालुः स्वल्पकाष्ठ च ततः काष्ठालुक स्मृतम् ।

अर्थ-काष्ठालु, स्वल्पकाष्ठ, काष्ठालुक ।

सर्वविधाऽऽलुगुणाः ।

आलुक शीतल सर्व विष्टम्भि मधुर रसम् ।
सृष्टमूत्रमल रूक्ष दुर्जर रक्तपित्तनुत् ॥
कफानिलकरं वृष्य बल्य स्तन्यविवर्द्धनम् ॥ (म० नि०)

अर्थ-सर्वप्रकारके आलु-शीतल, विष्टम्भकारक, मधुररसान्वित, मलमूत्रको करनेवाले, रूखे, दुर्जर, रक्तपित्तनाशक, कफवातकारक, वृष्य, बल्य और स्तनोंमे दूध प्रगट करनेवाले है ।

राजाल्वादिगुणा ।

मधुराजालुकं शीतं मधुरं वायुकारकम् । पाके कटु च विज्ञेयं रुचिदं दाहपित्तनुत् ॥ शोषतृट्कफनुत्प्रोक्तमस्य कन्दस्तु शीतलः । अग्निमांद्य मलस्तम्भकफकृत्पित्तनुत्परः ॥ रक्तराजालुकं किञ्चिदुष्णं चाग्निप्रदीपकम् । कफवातहरं चैव ऋषिभिः परिकीर्तितम् ॥ श्वेतालु किञ्चित्कटुकमुष्णं वातकफापहम् । कृष्णालुकं तु मधुरं शीतवीर्य्यं श्रमापहम् ॥ पित्तदाहहरं चैव ऋषिभिः परिकीर्त्तितम् । कृष्णं वनालुकं रुच्यं महासिद्धिकर परम् ॥ मुखजाडयहरं प्रोक्तं मुनिभिस्तत्त्वदार्शिभिः । वनालुक तृप्तिकरं त्रिदोषशमनं परम् ॥ (नि० र०)

अर्थ–मधुर राजालु–शीतल, मधुर, वातकारक, पाकमे चरपरे, रुचिकारक, दाहनाशक, पित्तनिवारक, शोषको दूर करनेवाले, तृषाको हरनेवाले, कफनाशक। इसका कन्द–शीतल, मदाग्निकारक, मलस्तम्भक, कफकारक और पित्तनाशक है। लालराजालु–किञ्चित् उष्ण, अग्निप्रदीपक और कफ तथा वातको हरनेवाले हैं। सफेद आलु–किञ्चित चरपरे, गरम, वात कफनाशक हैं। कृष्णालुक–मधुर, शीतवीर्य्य, श्रमनाशक, पित्त और दाहको हरनेवाले हैं। काले वनआलु रुचिकारक, महासिद्धिदायक, मुखकी जडताको दूर करनेवाले हैं। वनालु–तृप्तिकारक और त्रिदोषको शान्तिकरनेवाले हैं।

कसेरुनामानि ।

गुण्डकन्दः कसेरुः स्यात्क्षुद्रमुस्ता कसेरुका ।
सूकरेष्टः सुगन्धिश्च सुगन्धो गन्धकन्दकः ॥

अर्थ–गुण्डकन्द, कसेरु, क्षुद्रमुस्ता, कसेरुका, सूकरेष्ट, सुगन्धि, सुकन्द, कसेरुक, (कशेरु, राजकशेरुक)।

कसेरु द्विविध तत्तु महद्राजकशेरुकम् ।
मुस्ताकृतिर्लघु स्याद्यत्तच्चिचोडमिति स्मृतम् ॥

अर्थ–कसेरु दो प्रकारके हैं एक कसेरु दूसरा चिचोड । तहां बड

कसेरु अर्थात् कसेरुको कसेरू कहते है और जिसका आकार मोथा के समान हो तथा हलका हो उसको चिचोड कहते हैं ।

संस्कृतभाषामे	कसेरु ।
हिन्दीभाषामे	कसेरू ।
वगभाषामे	केशुर ।
मराठीभाषामे	कचरा, फुरडचा ।
कर्णाटकीभाषामे	सेकिनगड्डे।
तैलिङ्गीभाषामे	इाट्टिकोति ।
लैटिनभाषामे	स्क्रिपस केसूर । Scripus Kyscor

द्विविधकसेरुगुणा ।

कसेरुकद्वय शीत मधुर तु वर गुरु ।
पित्तशोणितदाहघ्नं नयनामयनाशनम् ॥
ग्राहि शुक्रानिलश्लेष्मारुचिस्तन्यकर स्मृतम् ।(भा०प्र)

अर्थ-दोनो प्रकारके कसेरू-शीतल, मधुर, कसेले, भारी, रक्तपित्तनाशक, दाहनिवारक, नेत्ररोगको हरनेवाले, मलरोधक, शुक्रजनक, वातकफकारक, रुचिजनक और स्तनोमे दूधको उत्पन्न करे है ।

केबुकनामानि ।

केबुका केमुकः केम्बु सुपत्रा दलमालिनी ।
केलूट· स्वल्पविटप· स्वादुकन्दश्च पोलिनी ॥

अर्थ-केबुका, केमुक, केम्बु, सुपत्रा, दलमालिनी, केलूट, स्वल्पविटप, स्वादुकन्द, पोलिनी, (पेचुक, पेचुनी, पेचु, पेचिका, दलसारिणी, केचुक)।

संस्कृतभाषामे	केमुक ।
हिन्दीभाषामे	केउआ ।
वगभाषामे	केउँगाछ केलूपपेपा ।
मराठीभाषामे	कोबी ।
गुजरातीभाषामे	कोबी ।
इंग्रेजीभाषामे	कबज । (Cab bage)
लेटिन्भाषामे	कोस्टस स्पेश्योसस् । Costus speciosus
फारसीभाषामे	कलाम ।
अरबीभाषामे	कंद्कलम ।

अस्य गुणाः।

केमुकः कटुकः पाके तिक्तं ग्राहि हिमं लघुः।
दीपनं पाचनं हृद्यं कफपित्तज्वरापहम्॥
कुष्ठकासप्रमेहार्शोनाशनं वातलं कटु। (भा० प्र०)

अर्थ-केमुक-पचनेमे कटु,कडवा,मलरोधक,शीतल,हलका,दीपन, पाचक, हृदयको हितकारी, वातकारक, चरपरा तथा कफ, पित्त, ज्वर, कुष्ठ, खांसी, प्रमेह और बवासीरको हरनेवाला है।

अन्यच्च।

केमूकं तु मधुरं रूक्षमच्छं च शीतलम्॥
भेदकं ग्राहकं रुच्यं गुरुपित्तकफापहम्।
वातनाशकरं चैव कंदेप्येते गुणाः स्मृताः॥ (नि० र०)

अर्थ-केमुक, मधुर, रूखा, स्वच्छ,शीतल,भेदक,मलरोधक,रुचिकारक, भारी, पित्तकफनाशक, वातनाशक और कन्दके गुणभी इसकी समान जानने।

शाल्मलीकन्दनामानि।

शाल्मलीकन्दकश्चाथ विज्जलो वनवासकः।
वनवासो मलघ्नश्च मलहन्ता षडाह्वयः॥

अर्थ-शाल्मलीकन्द,विज्जुल,वनवासक,वनवास,मलघ्न,मलहन्ता

शाल्मलीकन्दगुणाः।

मधुरः शाल्मलीकन्दो मलसंग्रहरोधजित्।
शिशिरः पित्तदाहार्तिशोषसन्तापनाशनः॥ (रा० नि०)

अर्थ-शाल्मलीकन्द-अर्थात् सेमलकी मूली-मधुर, मलसंग्रहके रुकनेको दूर करनेवाली,शीतल तथा पित्त, दाह, शोष और सन्तापको हरनेवाली है।

कदलीकन्दगुणाः।

कन्दः कदल्या रूक्षः स्याद्वातलस्तुवरो गुरुः।शीतो बल्यो मधु-
केश्यो रुच्योऽग्निमांद्यकारकः॥कर्णशूलं चाम्लपित्तं
जं तथा।सोमदोषरजोदोषकृमीन्कुष्ठं च नाशयेत्॥

अर्थ-केलेका कन्द-रूखा, वादी,कसेला, भारी,

मधुर, केशोको हितकारी, रुचिजनक,मंदाग्निकारक तथा कर्णशूल, अम्लपित्त, दाह, रुधिरविकार, सोमदोष, रजोदोष,कृमि और कुष्ठ रोगका नाश करे है।

अथ सस्वेदजशाकनामानि ।



उक्तं सस्वेदजं शाकं भूमिच्छत्रं शिलीन्ध्रकम् ।
क्षितिगोमयकाष्ठेषु वृक्षादिषु तदुद्भवेत् ॥

अर्थ-संस्वेदजशाक, भूमिच्छत्र, शिलीन्ध्रक, (भूछत्र, पृथिवीकन्द, शिलीन्ध्र, कवच, भूमिच्छत्र, भूमिस्फोट, धरांकुर, भूसुता, छत्र, छत्राक, उच्छिलीन्ध्र, स्वेदज)यह मृत्तिका, गोबर, काष्ठ और वृक्षादिकोंमे उत्पन्न होता है।

संस्कृतभाषामे	संस्वेदजशाक ।
हिंदीभाषामे	सांपकी छत्री, छाता, छतोना ।
वंगभाषामे	छातकुड, छाता, भुँईछाति ।
मराठीभाषामे	भुईफोड, अळम्बी ।
कोंकणीभाषामे	कामिल ।
गुजरातीभाषामे	फुग्ग मींददानी वली ।
इंग्रेजीभाषामे	मशरूम । Mrshroom
लेटिन्भाषामे	फगाइ । Fungi

अस्य गुणाः ।

सर्वे सस्वेदजाःशीताःदोषला पिच्छिलाश्च ते । गुरवश्छर्दतीसारज्वरश्लेष्मामयप्रदा ॥ श्वेतशुभ्रस्थलीकाष्ठवंशगोव्रजसम्भवा । नातिदोषकरास्ते स्युःशेषास्तेभ्यो विगर्हिताः॥(भा०प्र०)

अर्थ-सर्वप्रकारके संस्वेदजशाक-शीतल, दोषजनक, पिच्छिल, भारी तथा वमन, अतिसार, ज्वर और कफ रोगोको उत्पन्न करे है। सफेद शुभ्रस्थानमे उत्पन्न होनेवाले तथा काठ, बांस और गायोके स्थानोंमे उत्पन्न होनेवाले अत्यन्त दोषकारक नही है और शेष सर्व त्यागने योग्य है।

अन्यच्च ।

शीता वल्या सुनेशानी गुरुर्भेदकरा मधुः । त्रिदोषकारिणी वृष्या कफदा च मता बुधैः॥ भेदास्त्रयः समाख्याताः कृष्णो रक्तश्च पाण्डुरः। कृष्णा रसे च पाके च मधुरोष्णा गुरुः स्मृता॥ श्वेता तु पाककाले च गुर्वी रक्ताल्पदोषदा । (नि० र०)

अर्थ-सांपकी-छत्री शीतल, बलकारक, भारी, भेदक, मधुर, त्रिदोषजनक, वीर्य्यवर्द्धक और कफकारक है। यह कृष्ण, रक्त और पाण्डु इन भेदोसे तीन प्रकारकी है । तहां कालेरंगका मधुर, गरम और भारी है । सफेद-पाकमे भारी और लाल अल्पदोषजनक है ।

इति श्रीशालिग्रामनिघण्टुभूषणे शाकवर्ग समाप्त ॥ ११ ॥

अथ वारिवर्गः ।



जलनामानि ।

पानीयं सलिलं नीरं कीलालं जलमम्बु च ।
आपो वार्वारिकं तोयं पयः पाथस्तथोदकम् ॥
जीवनं वनमम्भोर्णोऽमृतं घनरसोऽपि च ।

अर्थ-पानीय, सलिल, नीर, कीलाल, जल, अम्बु, आप्, वार्, वारि, तोय, पयस्, पाथस्, उदक, जीवन, वन, अम्भस्, अर्णस्, अमृत, घनरस (मेघप्रसव, कमल, भुवन, कबन्ध, पुष्कर, सर्वतोमुख, सलिल, सल, जड, क, अन्ध, कमन्ध, उद, दक, नार, शम्बर, अवप्रुष्प, घृत, कृत्स्न, पयर्प, पाथ, यादोनिवास, ओजिनीर, हृटनिम, कुलीन, पिप्पल, कुश, विष, काण्ड, सवर, सर, क्षोद, चंडोत्ल, मदन, कर्बुर, व्योम, सम्ब, इरा, वाज, तामर, कम्बल, स्यन्दन, सम्बल, जलपीथ, हार, वन,

ऊर्ज्जे, कोमल, सोम, नारा, छद्म, क्षोद, नम, मधु, पुरीष, रेत, कश, जन्म, वृबूक, बुस, तुग्या, कर्बुर, सुक्षेम, धरुण, सुरा, अरविन्दानि, धतुन्धतु, जामि, आयुधानि, क्षय, अहि, अक्षर, स्रोत, तृती, रहलू, रस, भेषज, सह, शव, पह, ओज, सुख, क्षत्र, आरया, शुम, य द्ध, भूत, भविष्य, महत, यश, मह, सर्णीक, स्तृतीक, स्तीन, गहन, गभीर, गम्भलंग, अन्न, हवि, सद्य, योनि, ऋत्स्ययोनि, सत्य, रयि, सत, पूर्ण, सर्व, अक्षित बर्हि, नाम, सर्पि, अप, पवित्र, इन्दु, हेम, स्वसर्ग, सम्बर, अम्ब, वपु, अम्बु, तुप, शुक्र, तेज, दर्भ, जलाष, वज्र, नीलकण्ठप्रिय) इत्याद्यनेकनामानि सन्ति ।

संस्कृतभाषामें	पानीय, सलिल ।
हिन्दीभाषामें	जल, पानी ।
बंगभाषामें	जल ।
मराठीभाषामें	उदक, पाणी ।
गुजरातीभाषामें	पाणी ।
कर्णाटकीभाषामें	मुनीक ।
तैलिंगीभाषामें	नीरु ।
इंग्रेजीभाषामें	वाटर । water
लैटिन्भाषामें	एक्वा । Aqua
फारसीभाषामें	आब ।
अरबीभाषामें	माय ।

जलगुणा ।

पानीयं श्रमनाशनं क्लमहरं मूर्च्छापिपासापहं तन्द्राछर्दिविबन्ध-हृद्बलकरं निद्राहरं तर्पणम् । हृद्यं गुप्तरसं ह्यजीर्णशमकं नित्यं हितं शीतलं लघ्वच्छं रसकारणं निगदते पीयूषवज्जीवनम् ॥

अर्थ–जल–पानी–श्रम, मूर्च्छा, प्यास, तन्द्रा, वमन, विबन्ध और निद्राको दूर करेहै, बलकारक, तृप्तिजनक, हृदयको हितकारी, गुप्तरस-वाला, अजीर्णको हरनेवाला, निरन्तर हितकारी, शीतल, हलका, स्वच्छ, रसोंका कारण और अमृतकी समान सर्वप्राणियोंका जीवन है ।

अथातः सम्प्रवक्ष्यामि पानीयानि पृथक्पृथक् । शृणुत्व च समासेन गुणान्गुणविपर्य्ययम् ॥ द्विविधं चोदकं प्रोक्तमान्त-

रीक्षं तथौद्भिदम्। आन्तरीक्षं तुद्विविध गाङ्ग सामुद्रिकं पयः॥ गाङ्गसामुद्रविज्ञानं कथयिष्यामि साम्प्रतम्। धारितं येन पात्रेण लक्ष्यते तेन तद्विधम् ॥धौतं शुद्धं सितं वस्त्रं चतुर्हस्तप्रमाणकम्। दण्डास्त्रिहस्ताश्चत्वारश्चतुष्कोणेषु बन्धयेत्। तस्मात्परीक्ष्यं तत्तोय शुद्धे रौप्यमयेऽथवा। कांस्यपात्रे समुद्धृत्यपरीक्षेत भिषग्वरः ॥शुद्धकार्पासतूलं वा श्वेतशाल्योदनस्य वा। पिण्डिका तत्समाक्षिप्ता श्वेततां याति सा पुनः॥श्वेता तु निर्मला पिण्डीशुद्धश्च निर्मलं पयः। तद्गाङ्ग सर्वदोषघ्नं गृहीताङ्गसुभाजने॥ तद्धारयेच्च मतिमान्बल्य मेध्यं रसायनम्। श्रमक्लमपिपासाघ्नं कण्डूदोषनिवारणम् ॥ लघुमूर्च्छातृषाच्छर्दिमूत्रस्तम्भविनाशनम् ॥ गङ्गोदकस्य वृष्टिः स्याद्दिवसे वा प्रदृश्यते। आविलं समलं नील घनं पीतमथापि च। सक्षारंपिच्छिल चैव सामुद्रं तन्निगद्यते ॥ सघनं कफकृच्चैव कण्डूश्लीपदकारकम्। सवातलं च विज्ञेयं रक्तदोषार्तिकारणम्॥(हा०सं०)

अन्यच्च।

अर्थ-महर्षि आत्रेयजी हारीतसे कहते हुये कि,मै अब पानियोके भेद और गुण दोपकहताहूं तू सुन। पानी आन्तरीक्ष और औद्भिद इन भेदोसे दो प्रकारका कहा है तहां आन्तरीक्ष (आकाशका) पानीकिभी दो भेद हैं एक गांग अर्थात् गंगाका और दूसरा सामुद्रिक अर्थात् समुद्रका गंगा और समुद्रके जलके विज्ञानको कहताहूं। जिस पात्रमे रक्खा हो उसी पात्रके अनुसार लक्षण प्रतीत होते हैं। जलपरीक्षा-धुला हुआ शुद्ध और सफेद वस्त्र चार हाथ लेवे फिर तीन २ हाथ के दंडोसे उस वस्त्रके चारो कोने बाध देवे इसके उपरान्त शुद्ध चादीके बरतनमे अथवा काँसीके बरतनमें उस जलकी परीक्षा करे तथा शुद्ध कपासकी रुई वा शालिचावलोके भातका पिण्ड बना उस जलमे डालदे जो सफेदपनेको प्राप्त होजावे और सफेद होकर वह पिण्ड निर्मल होजावे और वह जलभी शुद्ध और निर्मलहोजावे तो उसको गंगाका पानी जानना।वह गंगाजलसर्वदोष-

नाशक है, उस जलको सुंदर पात्रमे बुद्धिमान् ग्रहण करे, वह गंगाका जल-वलकारक, मेधाजनक, रसायन, तथा श्रम, क्लम, प्यास, कण्डू, मूर्च्छा, तृषा, वमन और मूत्रस्तम्भको दूर करे है और हलका है। अथवा दिनमे जो बरसता है वह गंगोदक है। कलुषतायुक्त, मलसंयुक्त, नीला, घन, पीला, क्षारसहित और पिच्छिल हो ऐसे मेघके जलको सामुद्रिकजल जानना। समुद्रका जल-कफकारक, कण्डू, और श्लीपद रोगको उत्पन्न करनेवाला, वादी और रुधिरके विकारोंको करता है।

अन्यच्च।

पानीयं मुनिभिः प्रोक्तं दिव्य भौममितिद्विधा। दिव्यं चतुर्विध प्रोक्त धाराजं करकाभवम्॥ तौषारञ्च तथा हैमन्तेषु धारं गुणाधिकम्। धाराभिः पतित तोय गृहीतं स्फीतवाससा॥ शिलायां वसुधायां वा धौतायां पतित च तत्। सौवर्णे राजते ताम्रे स्फाटिके काचनिर्मिते॥ भाजने मृण्मये वापि स्थापित धारमुच्यते। धारं नीर त्रिदोषघ्नमनिर्देश्य रस लघु॥ सौम्य रसायन बल्यं तर्पणं ह्लादि जीवनम्। पाचन मतिकृन्मूर्च्छातन्द्रादाहश्रमक्लमान्॥ तृष्णां हरति नात्यर्थं विशेषात्प्रावृषि स्थितम्। धार जलञ्च द्विविध गाङ्गसामुद्रभेदतः॥ आकाशगङ्गासम्बन्धि जलमादाय दिग्गजाः। मेघैरन्तरितावृष्टिं कुर्वन्तीति वचः सताम्॥ गाङ्गमाश्वयुजे मासि प्रायो वर्षति वारिदः। सर्वथा तज्जल देयं तथैव चरके वचः॥ स्थापिते हेमजे पात्रे राजते मृण्मयेऽपि वा। शाल्यन्नं येन संसिक्त भवेदक्लेदि वर्णवत्॥ तद्गाङ्गं सर्वदोषघ्न ज्ञेयं सामुद्रमन्यथा। तत्तु सक्षारलवणं शुक्रदृष्टिबलापहम्॥ विस्रञ्च दोषलं तीक्ष्णं सर्व्वकर्मसमाहितम्। सामुद्र त्वाश्विने मासि गुणैर्गाङ्गवदादिशेत्॥ यतोऽगस्त्यस्य दिव्यर्पैरुदयात्सकल जलम्। निर्मल निर्विष स्वादु शुक्रलं स्याददोषलम्॥ फूत्कारविषवातेन नागानां व्योमचारिणाम्।

वर्षासु सविष तोय दिव्यमप्याश्विन विना। अनार्त्तवं प्रमुञ्चंति वारि वारिधरास्तु यत् ॥ तत्रिदोषाय सर्वेषां देहिनां परिकीर्त्तितम् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-मुनीश्वरोने जल दो प्रकारका कहा है एक दिव्य और दूसरा भौम तहां दिव्यजल-धाराज, करकाभव, तौषार और हैम इन भेदोसे चार प्रकारका है। इनमे धाराजल गुणोमे अधिक है। धारारूपसे पतित हुये जलको स्वच्छ वस्त्रमे छानले वह जल निर्मल वा धुलीहुई शिलामे हो वा स्वच्छ भूमिमे गिरा हुआहो, उसमेंसे सुवर्ण, रजत, ताम्र, स्फटिकमणि, काच वा मृत्तिकाके पात्रमे भरलेना उसको धाराजल कहते है। धाराजल-त्रिदोपनाशक, गुप्तरस, हलका, शीतल, रसायन, बलकारक, तृप्तिजनक, आनन्दजनक, जीवन, पाचक, बुद्धिवर्द्धक तथा मूर्च्छा, तन्द्रा, दाह, श्रम, क्लम और तृषाको दूर करे है। यह गुण शरदऋतुमे कहे है, किन्तु वर्षाऋतुमे नहीं। धाराजल गांग और सामुद्र इन भेदोसे दो प्रकारका है। पहिले आचार्योंने कहा है कि, आकाशगंगासम्बन्धी जलको दिग्गज (दिशाके हाथी) लेकर मेघोमें छिपे हुए प्रायः आश्विनके महीनेमे मेघद्वारा वर्षातेहै वह जल सर्वथा सबको देना चाहिये तैसेही चरकमे भी कहाहै। परीक्षा-सुवर्ण तथा चांदी अथवा मृत्तिकाके पात्रमे चावल डालकर जल भरदेवे, जो वह चावल न बिगडे और न उनका रंग बदले तो उनको गंगाजल जानना। यह गंगाजल सर्वदोपनाशक है। और जो वह चावल सडजावे और रंग बदल जावे तो उस जलको सामुद्रजल जानना। यह समुद्रजल सर्वदोषजनक है। समुद्रजल-खारी, निमकीन, शुक्र,दृष्टि और बलविनाशक है, दुर्गंधयुक्त, दोषकारक तीक्ष्ण और सर्वकर्मोंमे यह अहितकारी है। किन्तु आश्विनके महीनेमे जो समुद्रसम्बंधी वर्षाका जल है वह गंगाजलकी समान गुणकारक जानना। कारण यह है, आश्विनके महीनेमे अगस्त्य ऋषिके उदय होनेसे सर्व जल-निर्मल, निर्विष, स्वादु, शुक्रजनक और अदोषकारी होजाते है। क्योंकि वर्षाऋतुमे आकाशमे विचरनेवाले सांपोकी विषेली पवनसे दिव्यजलभी विषयुक्त होजातेहै, किन्तु आश्विनके महीनेमे विषयुक्त नहीं होते। जो जल अपनी ऋतुको छोडकर और ऋतुओमे बरसता है वह जल सर्व त्रिदोष करनेवाला है।

इति द्विधोदक प्रोक्त तथा वक्ष्ये चतुर्विधम् । रात्रिवृष्टिर्दिवावृष्टिर्दुर्दिना समयोद्भवा ॥ निशाजल कफकरं घनं शीतगुणात्मकम् । समुद्रतोयस्य सम विज्ञेय वातकोपनम् ॥ दिवासूर्य्यांशुसंतप्ता मेघा वर्षन्ति यत्पयः । तत्कफघ्नं पिपासाघ्न लघु वातप्रकोपनम् ॥ दुर्दिने वृष्टिसपातं वातोद्धृतं सवातकम् । कफकृच्छोपहनन तर्पण दोपकोपनम् ॥ तथा श्रावणवृष्टिश्च दोपरोपकरा नृणाम् । कण्डूत्रिदोपजनन पानीयं न प्रशस्यते॥ सघन नाभसं नीर श्लेष्मकृद्वातकोपनम् । शमनं पित्तरोगाणां मधुरं रक्तदोपहृत् ॥ रूक्षं पित्तकरं चाम्लगुणं रक्तविकारकृत् । चित्रानक्षत्रसम्भूत पर शस्त त्रिदोपहृत् । कार्त्तिकीवृष्टिसम्भूतं स्वातिसम्पातशीतलम्॥नाशनं च त्रिदोपाणां सर्वसस्यविवर्द्धनम् । शीतल वलकृद्वृष्य तृड्दाहज्वरनाशनम् ॥

अर्थ-इसप्रकार ऊपरका पानी दो प्रकारका कहा,अब चार प्रकारका कहतेहैं । रात्रिमे जो बरसता है, दिनमे जो बरसता है,दुर्दिनमे जो बरसताहै,और असमयमें जो बरसता है । रात्रिमे वर्षा हुआ जल-कफकारक, घन, शीतल गुणोंवाला, वातको कुपित करने वाला और समुद्रके जलके समान है । दिनमे सूर्य्यकी किरणोंसे तप्त हुये मेघ जो पानीको बर्षाते हैं वह जल कफनाशक, प्यासको हरनेवाला,हलका और वातको कुपित करता है । दुर्दिनमे वर्षा हुआ जल-वातल,कफकारक,शोषनाशक, तृप्तिकारक और दोषोंको कुपित करे है । श्रावणके महीनेकी वर्षाका पानी-मनुष्योंके दोषोंको कुपित करनेवाला,कण्डूजनक,त्रिदोषकारक और यह जल उत्तम नही है । भादोंके महिनेकी वर्षाका जल-कफकारक, वातको कुपित करनेवाला,पित्तरोगोकी शांति करनेवाला, मधुर और रुधिरके विकारोंको करे है । आश्विनके महीनेकी वर्षाका जल-रूखा, पित्तजनक अम्ल और रुधिरके विकारोको उत्पन्न करे है । चित्रानक्षत्रमें वर्षाहुआ जल-त्रिदोषनाशक और अत्यन्त उत्तम होता है । कार्तिकमासकी वर्षाका जल-अति शीतल, त्रिदोषनाशक, सर्व प्रकारकी खेतियोंको बढानेवाला, शीतल, बलकारक, वीर्य्यवर्द्धक तथा तृषा दाह और ज्वरको हरनेवाला है ।

धारकादिचतुर्विधजलस्य लक्षणम्।

तथा धारं च कारं च तौषारं हैममेव च।
चतुर्विधं समुद्दिष्टं तेषां वच्मि गुणागुणम्॥

अर्थ-धार, कार, तौषार, हैम इन भेदोंसे जल चार प्रकारके हैं, अब इनके गुण और दोषोंको कहताहू।

धारं चतुर्विधं प्रोक्तं वक्ष्ये कारं महामते।
श्रीमतां च महाप्राज्ञहिताय रुजशान्तये।

अर्थ-धारसंज्ञक जल चार प्रकारका कहा है, अब कार जल श्रीमान् और बडे विद्वानोंके हितके लिये और रोगकी शान्तिके लिये कहताहूँ।

अथ करका।

स्वर्नद्याःशीतवातेन मेघविस्फूर्जसंकुलम्। शीताम्बुबद्धकाठिन्यं शिलाजातं हिमेन तु॥ पश्चात्सूर्यांशुसन्तापात्किञ्चिद्द्रवते जलम्। वहन्ति मेघाः सलिलं शकलं शीतलं मतम्॥

(हा० सं०)

अर्थ-शीतलपवनसे स्वर्गगादि नदियोंका शीतल जल मेघके शब्दसे संकुलित हुआ कठिन होके पीछे शीतसे शिलारूप होजाताहै पश्चात् सूर्यकी किरणोंके सन्तापसे कुछेक द्रवीभूत (पतला) होजाताहै फिर मेघ उसको खण्ड खण्डरूप(ओलोंको) बरसाते हैं उन ओलोंका जल परमशीतल होताहै।

अन्यच्च।

दिव्य वाय्वग्निसंयोगात्संहताः खात्पतन्ति [illegible]।
पाषाणखण्डवच्चापस्ताः कारिक्योऽमृतोपमाः॥

अर्थ-दिव्य वायु और बिजलीके संयोगसे ताडित हुआ [illegible] आकाशसे शिलारूपसे गिरता है उसको 'करकाजल' कहते हैं।

गुणाः।

करकाजं जलं रूक्षं विशदं च गुरु [illegible]।
दारुणं शीतलं सान्द्रं पित्तहृत्कफवातकृत्।

अर्थ-ओलोंका जल-रूखा, विशद, भारी, [illegible] गाढा, पित्तनाशक और कफकारक है।

अन्यच्च ।

कारं शीतगुणं श्रमोपशमनं रूक्षं मरुलेष्मकृन्मूर्च्छामोहशिरोर्त्तिनाशनकरं हिक्काविनिर्वारणम्। शोफीनां व्रणिनां च नो हितकरं पित्तात्मकानां हितं शंसन्ति प्रवरा गुणैः प्रतिकृतिं तस्मान्न दूरे कृतम् ॥

अर्थ-ओलोंका जल-शीतगुणान्वित,श्रमनाशक, रूखा, वातकफकारक तथा मूर्च्छा,मोह, शिरकी पीडा और हिचकीको दूर करे है। सूजन, तथा व्रणरोगियोंको अहितहै और पित्तकी प्रकृतिवाले मनुष्योंको हितकारी है। यह अत्युत्तम है इसमें अनेक गुणहै इसकरण इसको कदापि दूर नहीं करना चाहिये। (हा० स०)

अथ तौषारलक्षण गुणाश्च ।

अपि नद्याः समुद्रान्ते वह्निरापस्तदुद्भवाः । धूमावयवनिर्मुक्तास्तुपाराख्यास्तु ताः स्मृताः॥अपथ्याः प्राणिनां प्रायो भूरुहाणां च नो हिताः । तुपाराम्बु हिमं रूक्षं स्याद्वातलमपित्तलम्॥कफोरुस्तम्भकंठाग्निमेहगण्डादिरोगनुत् । (भा० प्र०)

अर्थ-नदीसे लेकर समुद्रतक अग्निहै उससे उत्पन्न हुये जल धुएँके अवयव हीन तुपार कहातेहै, वह तुपार प्राणियोंको और वृक्षोंको अहितकारक है। तुपारका जल-शीतल,रूखा,बादी, अपित्तल तथा कफ, ऊरुस्तम्भ, कण्ठ, प्रमेह और गलगण्डादि रोगोंको दूर करे है।

अन्यच्च ।

तौषारं लघु शीतलं श्रमहरं पित्तार्त्तिशान्तिप्रदम् । दोषाणां शमनं जलार्त्तिहननं सर्वामयघ्नं परम्॥कुष्ठश्लीपदचर्चिकाविपहरं पामाविसर्पापहम्॥क्षीणानां क्षतशोषिणां हितकरं संसेव्यते मानवैः ॥ (हा० सं०)

अर्थ-तुपारका जल-हलका,शीतल,श्रमनाशक,पित्तकी पीडाको शान्तिकरनेवाला,दोषनिवारक,जलके रोगोंको हरनेवाला, सर्वप्रकारके रोगोंका नाशकरनेवाला तथा कोढ, श्लीपद, मकडीका

विष, पामा और विसर्परोगका नाश करेहै । तथा क्षीणमनुष्य, क्षतरोगवाले और शोष रोगवालोको हितकारी है ।

अथ हिमजललक्षणम् ।

हिमवच्छिखरादिभ्यो द्रवीभूयाभिवर्षति ।
यत्तदेव हिमं हैमं जलमाहुर्मनीषिणः ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-हिमके समान शीतल पर्वतोसे जो बर्फ गलकर जल टपकताहै उसको विद्वान् हिमजल कहतेहै ।

हिमजलगुणाः ।

हैमं घनं च मधुरश्च कफात्मकश्च मूर्च्छाश्रमार्तिशमन भ्रमनाशनश्च । पित्तास्रजप्रशमनं रुधिरक्षतघ्नं शान्ति करोति हिमसम्भववारि सद्यः ॥

अर्थ-हिमजल-घन, मधुर, कफकारक तथा मूर्च्छा, श्रम, भ्रम, रक्तपित्त, रुधिरके विकार और क्षतरोगका नाशकरे है तथा शीघ्रही शान्तिको करे है ।

अन्यच्च ।

हिमन्तु शीतल रूक्षं दारुणं सूक्ष्ममित्यपि ।
न तद्दूषयते वात न च पित्तं न वा कफम् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-हिमजल-शीतल, रूखा, दारुण, सूक्ष्म और न यह वातको दूषित करे, न पित्तको दूषित करे और न यह कफको दूषित करे है ।

अथ भौमजलम् ।

भौममम्भोनिगदित प्रथमं त्रिविधं बुधैः। जाङ्गलं परमानूपं ततस्साधारणं क्रमात् ॥ अल्पोदकोऽल्पवृक्षश्च पित्तरक्तामयान्वितः । ज्ञातव्यो जांगलो देशस्तत्रत्यं जांगल जलम् ॥ बहुवृर्बहुवृक्षश्च वातश्लेष्मामयान्वितः । देशोऽनूप इतिख्यातआनूपं तद्भवेज्जलम् ॥ मिश्रचिह्नस्तु यो देशः स हि साधारणः स्मृतः । तस्मिन्देशे यदुदक तत्तु साधारण स्मृतम् ॥ जाङ्गलं सलिल रूक्षं लवण लघुपित्तनुत् । वह्निकृत्कफहृत्पथ्यं विकारान्हरते बहून् ॥ आनूप वार्य्यभिष्यन्दि स्वादु स्निग्धं

घनं गुरु । वह्निहृत्कफकृद्वृष्य विकारान्कुरुते बहून् ॥ साधारणन्तु मधुरं दीपन शीतल लघु । तथा तृष्णादाहमदच्छर्दि दोपत्रयप्रणुत ॥

अर्थ-भौमजल अर्थात् पृथ्वीका जल-जांगल, अनूप और साधारण इन भेदोसे तीन प्रकारकाहै। जिस देशमे अल्पजल और थोडे वृक्ष हो और जहां प्रायः प्राणी पित्त तथा रुधिरके रोगवाले अधिक हो उस देशको जागलदेश कहते है और उस देशके जलको जांगल जल कहते है। जिस देशमे बहुत जल और बहुत वृक्षहो और जहांके जीव अधिकतर वात कफ रोगवाले हो उस देशको अनूप देश कहतेहै और उस देशके जलको आनूप कहतेहै। जिस देशमे जगल और अनूप दोनो लक्षण मिश्रितहों रोगभीमिश्रितहो उस देशको साधारण कहतेहै और उस देशके जलको साधारणजल कहतेहै। जागलजल-रूखा, निमकीन, हलका, पित्तनाशक, जठराग्निजनक, कफनाशक, पथ्य और अनेक प्रकारके विकारोंको हरनेवालाहै। आनूपजल-अभिष्यंदि, स्वादिष्ठ, स्निग्ध, घन, भारी, जठराग्निनाशक, वृष्य और अनक प्रकारके विकारोंको करे है। साधरणजल-मधुर, दीपन, शीतल, हलका तथा तृषा, दाह, मद, वमन और त्रिदोपका नाश करे है।

अथाष्टविध जलम् ।

धारं पृथिव्यां पतितं पयस्तु तत्रैव जात गुणभेदभिन्नम् ।
नानाविधैर्भेदगुणैश्च सम्यग्जात जल चाष्टविधं वदन्ति ॥
नद्यौद्भिद प्रस्रवणं च चौंड्यं कौप तडागं सरसोद्भवञ्चावाप्योद्भवं त प्रवदन्ति धीरा नीरं समासेन वदामि चात्र॥ (हा०सं०)

अर्थ-धारनामवाला जल पृथिवीमे पतित हुआ तहा गुणोके भेदोसे भिन्न होजाताहै फिर अनेक प्रकारके भेद और गुणोसे आठ प्रकारका होता है। नादेय (नदीका), औद्भिद (जो पृथ्वीको तोडकर बहता है उसका जल)झरनेका, चौडचका, कुएका, तडागका, सरका और वापीका इन भेदोसे जल आठ प्रकारका कहाहै ।

नदीजलम् ।

नद्या नदस्य वा नीरं नादेयमिति कीर्तितम् ।

नादेयमुदकं रूक्षं वातलं लघु दीपनम् ॥
अनभिष्यन्दि विशदं कटुकं कफपित्तनुत् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-नदी और नदके जलको नादेय ऐसा कहते हैं नदीका जल-रुखा, बादी, हलका, दीपन, अनभिष्यंदि, विशद, चरपरा तथा कफ पित्तका नाश करे है।

अन्यच्च।

यच्छ्रीमताञ्चैव महीपतीनां सेव्यं तथा योग्यतमं प्रदिष्टम्।
नादेयतोयं मधुरं तथा लघु रूक्ष तथोष्णं शमनञ्च वायोः॥
सन्दीपन सस्यविनाशनञ्च हिमागमे वा शिशिरे निषेव्यम्।
बलप्रद पथ्यकरं नराणां प्रदिष्टमेतत्तु सदा भिषग्भिः॥
(हा० सं०)

अर्थ-नदीका जल-लक्ष्मीवान् और राजाओंको अतियोग्य कहा है मधुर, हलका, रूखा, गरम, वातको शान्ति करनेवाला, अग्निमदीपक, खेतीका नाश करनेवाला, बलकारक और पथ्य है, यह जल शीतऋतुके आगममे तथा शिशिर ऋतुमे सेवन करना चाहिये।

नद्यः शीघ्रवहा लघ्व्यः सर्वा याश्चामलोदकाः।
गुर्व्यः शैवलसंछन्ना मदगाः कलुषाश्च याः॥

अर्थ-शीघ्र बहनेवाली नदियोका जल-हलका और निर्मल होताहै। और मदबहनेवाली नदियोका जल-भारी, काईसे ढका हुआ और कलुषतायुक्त होताहै।

नदीसरस्तडागस्थे कूपप्रस्रवणादिजे।
उदके देशदेभेन गुणान्दोषांश्च लक्षयेत् ॥

अर्थ-नदी सरोवर, तालाब, कूआ, झरना इनके जलके [illegible] द्वारा गुण और दोष जानने।

अथ गंगाजलगुणाः।

स्वादुपाकरसं शीत त्रिदोषशमन तथा।
पवित्रमतिपथ्यञ्च गाङ्गं वारि मनोहरम्॥

अर्थ-गंगाजल-स्वादुपाकी, शीतल, त्रिदोषनाशक, पवित्र, अत्यन्त पथ्य और मनोहर है।

यमुनाजलगुणा ।

गाङ्गात्किञ्चिद्गुरुतरं स्वादु पित्तापहं परम् ।
वातलं वह्निजननं रूक्षं च यामुनं जलम् ॥

अर्थ-यमुनाका जल गंगाजलसे किंचित् भारीहै, स्वादिष्ठ, पित्तनाशक, वातजनक, जठराग्निजनक और रूखा है ।

नर्मदाजलगुणा ।

अथ स्वच्छं प्रशस्तञ्च शीतलं लघु लेखनम् ।
पित्तश्लेष्मप्रशमनं नार्मदं सर्वरोगनुत् ॥

अर्थ-नर्मदानदीका जल-निर्मल,शीतल,हलका,लेखन, पित्त और कफकी शान्ति करने वाला और सर्वप्रकारके दोषोंका नाशकरेहै ।

गोदावरीजलगुणा ।

कण्डूकुष्ठप्रशमनं वह्निसंदीपनं परम् ।
...विकारोंको हरनेवालाहै । और गोदावरीभवम् ॥

...ग्ध, घन, भारी, जठराग्निनाशक, दृद्रु,कुष्ठ और वातपित्तनाशक है,
...कारोंको करे है । साधरणजल-मधुर,
...ा तृषा, दाह, मद, वमन और त्रिदोषक... ।

अथाष्टविध जलम् । बलवर्णकृत् ।

...वन वातपित्तघ्न... जातं प्राशकृत् ॥
...दावरी नदीका जल-... जलं चाग्निनाशक,बलकारक,वर्णको
...क और पाचक है । तडाग स... अत्यन्त शीतल तथा

...रीसलिलं पथ्यं ... वदामि...
...यमतिशीतञ्च ... पतित हुआ...नम् ।
...ीनदीका जल-पथ्य ...के भेद अ...
...ला, जठराग्निको ...; औद्भिद (...रक्तकोकुपितकरेहै।
...का नाश करे है । ...पित्तलाः स-
... शीतलं वारि ...ग्निनहा याश्चाम-
...ीकाजल ...तोऽन्यथा ॥
...द्य सर्व... ...की सर्वनदी
...नाशना... ...जानेवाली

नदियोका जल और शीघ्र वहनेवाली नदियोका जल निर्मल है। नदीका जल अल्पही पथ्य होता है और अधिक सेवन करना अहितकारक है।

नादेयं संप्रवक्ष्यामि समुद्रगामिस्रोतसाम्॥ ससैकता सपाषाणा द्विविधा चाम्बुवाहिनी॥सदादहा वा घनवारिकोष्णा मरुत्कफानां शमनश्च तस्याः। नीरं वसन्ते हितकृद्विशेषान्नदीभव नैव हिमागमे च ॥ घनविमलशिलानां स्फालनाज्जातफेन बहलसजलवीचीच्छन्नसंक्षोभहृत्तम् । ननु सुखमयशीत नातिचोष्ण घनश्च हरति पवनपित्तं श्लेष्मकृद्वारि सम्यक् ॥ न घनविमलतोयं सैकतायाः प्रवाहो नच भवति लघुत्वं श्लेष्मकृद्धन्ति पित्तम् । भवति मधुरमेव किञ्चिदुष्ण कषाय भवति पवनकारी शोषमूर्च्छां निहन्ति ॥ हिमवत्प्रभवा नद्यः पुण्या देवर्षिसेविताः। घनपाषाणसिकतावाहिनी विमलोदकाः ॥ हन्ति वातकफं तोय श्रमशोषविनाशनम् । किञ्चित्करोति वा पित्त त्रिदोषशमनं जलम् ॥ पारिभद्रभवा याश्च विन्ध्यसिन्धुभवाश्च याः।शिरोहृद्रोगकुष्ठानां ता हेतुः श्लीपदस्य च॥ मलयप्रभवा नद्यः शीततोयाः सुधोपमाः।प्रतिपित्त च वातं च शोषभ्रमश्रमापहाः॥गंगा सरस्वती शोणा यमुना सरयू शची। वेणा शरावती नीला उत्तरापूर्ववाहिनी ॥ हिमवत्प्रभवा ह्येता हिमसघातशीतलाः।समाः सर्वगुणैर्नद्यो वातश्लेष्महरा नृणाम् ॥ आसां नवशतैर्युक्ता गङ्गा प्रोक्ता मनीषिभिः।तथा चर्मण्वती वेत्रवती पारावती तथा॥क्षिप्रा महापदी पीता मुत्सकन्या मनस्विनी।शेवती चैव शैलिन्यः सिन्धुयुक्ताः समुद्रगाः॥ वातपित्तहरं नीर त्रिदोषघ्नं मतं परम्। श्रमग्लानिहर वृष्यमुत्तराशानुगामि च॥तापी गोपतिगोलोमी गोमती सलिला मही।

यमुनाजलगुणाः ।

गाङ्गात्किञ्चिद्गुरुतरं स्वादु पित्तापहं परम् ।
वातलं वह्निजननं रूक्षं च यामुनं जलम्

अर्थ-यमुनाका जल गंगाजलसे किंचित् भारीहै, स्वादिष्ट, पित्तनाशक, वातजनक, जठराग्निजनक और रूखा है ।

नर्मदाजलगुणाः ।

अथ स्वच्छ प्रशस्तञ्च शीतलं लघु लेखनम् ।
पित्तश्लेष्मप्रशमनं नार्मदं सर्वरोगनुत् ॥

अर्थ-नर्मदानदीका जल-निर्मल,शीतल,हलका,लेखन, पित्त और कफकी शान्ति करने वाला और सर्वप्रकारके दोषोंका नाशकरेहै ।

गोदावरीजलगुणाः ।

कण्डूकुष्ठप्रशमनं वह्निसंदीपनं परम् ।
...त्तनाशक, जठरा... गोदावरीभवम् ॥
विकारोंको हरने... पाचनं ...डू,कुष्ठ और वातपित्तनाशक है,
अर्थ-गोदावरी...
अग्नि प्रदीपक और ॥ ।

बलवर्णकृत् ।
कावेरीसलिलं...नाशकृत् ॥
आग्नेयमतिशी...नाशक,बलकारक,वर्णको
अर्थ-कावेरीनदीका ... अत्यन्त शीतल तथा
सुंदर करनेवाला, जठराग्नि
दाद और कुष्ठका नाश करे

कृष्णवे...नम् ।

रूक्ष च शीतल वारि ...रक्तकोकुपितकरेहै ।
अर्थ-कृष्णावेणीकाजल-रूखा, ...स्मा·पित्तला· स-
पूर्वदेशोद्भवा नद्य· सर्वा वातकोपनहा याश्चाम-
र्वा· कफवातविनाशना· ॥ पश्चिमो...तोऽन्यथा ॥
लोदका । पथ्या समासात्ता नद्यो ...की

अर्थ-पूर्वदेशकी सर्वनदी
पित्तकारक और कफवातविनाशकहै । पश्चि...

नदियोंका जल और शीघ्र वहनेवाली नदियोंका जल निर्मल है। नदीका जल अल्पही पथ्य होता है और अधिक सेवन करना अहितकारक है।

नादेयं संप्रवक्ष्यामि समुद्रगामिस्रोतसाम्॥ ससैकता सपाषाणा द्विविधा चाम्बुवाहिनी॥सदावहा वा घनवारिकोष्णा मरुत्कफानां शमनश्च तस्याः। नीरं वसन्ते हितकृद्विशेषान्नदीभव नैव हिमागमे च ॥ घनविमलशिलानां स्फालनाज्जातफेन बहलसजलवीचीच्छन्नसंक्षोभहृत्तम् । ननु सुखमयशीत नातिचोष्ण घनश्च हरति पवनपित्तं श्लेष्मकृद्वारि सम्यक् ॥ न घनविमलतोयं सैकतायाः प्रवाहो नच भवति लघुत्वं श्लेष्मकृद्धन्ति पित्तम् । भवति मधुरमेव किञ्चिदुष्णं कषाय भवति पवनकारी शोषमूर्च्छां निहन्ति ॥ हिमवत्प्रभवा नद्यः पुण्या देवर्षिसेविताः। घनपाषाणसिकतावाहिनी विमलोदकाः ॥ हन्ति वातकफं तोय श्रमशोषविनाशनम् । किञ्चित्करोति वा पित्तं त्रिदोषशमन जलम् ॥ पारिभद्रभवा याश्च विन्ध्यसिन्धुभवाश्च याः।शिरोहृद्रोगकुष्ठानां ता हेतुः श्लीपदस्य च॥ मलयप्रभवा नद्यः शीततोयाः सुधोपमाः।प्रतिपित्त च वातं च शोषभ्रमश्रमापहाः॥गंगा सरस्वती शोणा यमुना सरयू शची। वेणा शरावती नीला उत्तरापूर्ववाहिनी ॥ हिमवत्प्रभवा ह्येता हिमसंघातशीतलाः।समाः सर्वगुणैर्नद्यो वातश्लेष्महरा नृणाम् ॥ आसां नवशतैर्युक्ता गङ्गा प्रोक्ता मनीषिभिः।तथा चर्मण्वती वेत्रवती पारावती तथा॥क्षिप्रा महापदी पीता मुत्सकन्या मनस्विनी।शेवती चैव शैलिन्यः सिन्धुयुक्ताः समुद्रगाः॥ वातपित्तहरं नीरं त्रिदोषघ्नं मत परम्। श्रमग्लानिहर वृष्यमुत्तराशानुगामि च॥तापी गोपतिगोलोमी गोमती सलिला मही।

सरस्वतीयुता नद्यो नर्म्मदा पश्चिमानुगाः ॥ आसां जल घन शीत पित्तश्च कफकृत्तथा । वातदोषहर हृद्य कण्डूकुष्ठविनाशनम् ॥ पश्चिमाद्रिसमुद्भूता गौतमीपुण्यभावनाः । आसां शीत जल वापि कफवातविकारकृत्॥ पित्तदं शमनं वल्य मूत्रदोषविकारकृत् । पूर्णा पयस्विनी वेत्रा प्रणीता च वराननाः॥ द्रोणा गोवर्द्धनी यान्या गौतम्यानुगता इमाः ।आसां जल घन नातिवातश्लेष्मविकारकृत् ॥ पूर्वसमुद्रगाश्चैव नद्यो नवशतैर्युताः । कावेरी वीरकान्ता च भीमा चैव पयस्विनी॥ विभावरी विशाला च गोवन्दनी मदनस्वसा।पार्वती चापरा नद्यो दक्षिणादिग्गमा इमाः ॥प्रत्येकशो नवशतैर्युता इमाः पृथक्पृथक् । सर्वासां परिसंख्या च शतानां चैकविंशतिः॥ कोशेकोशे भवेत्कुल्या योजनेयोजने नदी। द्वियोजना च विज्ञेया महानीरा बुधैर्नदी ॥ (हा० स०)

अर्थ-आत्रेयजी कहतेहैं कि, अब समुद्रमे जानेवाली नदियोंको कहताहूं, रेतेवाली और पत्थरोंवाली इन भेदोंसे नदी दो प्रकारकी है । सदैव बहनेवाली नदी-घनजलवाली, गरम, वात और कफकी शान्ति करनेवाली है उनका जल विशेष करके वसतऋतुमे हितकारी नही है । घन और निर्मल ऐसे पत्थरोंवाली नदीका जल-फेनयुक्त और तरंगोके क्षोभसे गरम होजाता है, सुदर, शीतल, अत्यन्त उष्ण नहीं, हलका, घन, वातपित्तनाशक और कफको करता है । बालु रेतेवाली नदियोंका जल-घन नहीं, निर्मल,हलका भी नहीं, कफकारक, पित्तनाशक, मधुर, किञ्चित् गरम, कषेला, वातकारक तथा मूर्च्छा और शोषको दूर करे है । हिमालय पर्वतसे उत्पन्न हुई नदी पवित्र है देव और ऋषियो करके सेवित है, भारी पत्थर और बालूकरके युक्त बहनेवाली है और उनका जल-निर्मल, वातकफनाशक, श्रमनिवारक, शोषनाशक, किञ्चित् पित्तकारक तथा पित्त और त्रिदोषको शान्ति करे है।पारिभद्र विन्ध्याचल और सिन्धुपर्वतसे उत्पन्न हुई नदियोंका जल-शिरोरोग, हृदयरोग,कुष्ठ और श्लीपदादिरोगोंका कारण है।मलय पर्वतसे उत्पन्न हुई नदियोंका

जल-शीतल, अमृतके समान तथा वात, पित्त, शोष, भ्रम और श्रमका नाश करे है। गंगा, सरस्वती, शोण, यमुना, सरयू, शची, वेणा, शरावती और नीला तथा उत्तर और पूर्वको बहनेवाली, हिमालय पर्वतसे उत्पन्न हुई और हिमके संघातसे शीतल हुई यह सर्व नदी गुणोमे समान और मनुष्योंके वात तथा कफको हरनेवाली है। इनमे ९०० नौसो नदियोंयुक्त गंगा कही है। तथा चर्मण्वती, वेत्रवती, पारावती, क्षिप्रा, महापदी, पीता, मुत्सका, मनस्विनी, शेवती, शेवलिनी और सिन्धु, यह सर्वनदी समुद्रमे जानेवाली है। इन सर्वनदियोंका जल-वातपित्तनाशक, त्रिदोषनाशक, श्रमहारक, ग्लानिनिवारक, वीर्य्यवर्द्धक और उत्तर दिशासे आता है तापी, गोमती, गोलोमी, गोमती, सलिला, मही, सरस्वती और नर्मदा यह सर्व पश्चिमसे बहती है इनका जल-घन, शीतल, पित्तनाशक कफकारक, वातविकारविनाशक, हृदयको हितकारी तथा कण्डू और कुष्ठका नाश करे है। पश्चिमके पर्वतसे उत्पन्न हुई गौतमी और पुण्यभावना आदि नदियोंका जल-शीतल कफ और वातके विकारोंको करे है। पित्तज दोषोंको शान्ति करे है, बलकारक और मूत्रदोषोंको उत्पन्न करे है। पूर्णा, पयस्विनी, वेत्रा, प्रणीता, वरानना, द्रोणा, गोवर्द्धनी आदि नदी गौतमी नदीका अनुगमन करती है। इनका जल-अत्यन्त घन नहीं है तथा वात और कफके दोषोंको उत्पन्न करे है। पूर्वके समुद्रमे गमन करनेवाली ९०० नदी है। कावेरी, वीरकान्ता, भीमा, पयस्विनी, विभावरी, विशाला, गोवन्दनी, मदनरवसा और पार्वती आदि नदी दक्षिण दिशाको गमन करनेवाली है। एकरनदी ९०० नदीयुक्त है और सर्वहिन्दोस्थानकी नदियोकी संख्या २१०० है। कोशकोशमे कुल्या होती है, योजन२ मे नदी होती है और बारह २ योजनमे महाजलवाली नदी होती है जिसको नद कहते है।

औद्भिदभूमिगुणा।

भूमिः पञ्चविधा ज्ञेया कृष्णा रक्ता सिता तथा। पीता नीला भवेच्चान्या गुणास्तासां प्रकीर्त्तिताः॥ सा कृष्णा मधुरा क्षारा कपाया पीतवर्णिनी। रक्ता सा तु भवेत्तिक्ता मधुराम्ला सिता स्मृता॥ नीला सकटुका ज्ञेया भूमिभागाज्जलं विदुः। सवनं मधुरं नीरं कृष्णभूमिपरिस्रुतम्॥ पीतास्थितं कषाय च रक्तायाः क्षारमाधुरम्। सिताया ह्यम्लमधुरं भूमिभागेन लक्षयेत्॥ (हा०सं)

अर्थ-पृथिवी-काली, लाल, सफेद, पीली और नीली इन भदोसे पांच प्रकारकी है, अब उनके गुण कहते हैं, काली पृथिवी मधुर और खारी हैं। पीले रंगकी पृथिवी कषेली है। लाल पृथिवी कडवी है। सफेद पृथिवी-मधुर और खट्टी है। और नीली पृथिवी चरपरी है। ऐसेही पृथिवीके भागका पानी कहा है। काली पृथिवीका जल-घन और मधुर होताहै। पीली पृथिवीका पानी-कषेला होताहै। लाल भूमिका जल-खारी और मधुर होता है सफेद भूमिका जल-अम्ल और मधुर होताहै ऐसे पृथिवीके भागसे जलको लक्षित करे, प्रायः पृथिवीके समान जलका स्वाद होता है।

औद्भिदजललक्षण गुणाश्च।

विदार्य्य भूमि निम्नाया महत्या धारया स्रवेत्। तत्तोयमौद्भिदं नाम वदन्तीति महर्षयः॥ औद्भिदं वारि पित्तघ्नं सविदाह्यतिशीतलम्। प्रीणनं मधुरं बल्यमीषद्वातकरं लघु॥ (भावप्रकाश)

अर्थ-पृथिवीको फाडकर जो नीचे बडी धारासे जल बहताहै उस जलको औद्भिद जल कहते हैं, औद्भिदजल-पित्तनाशक, अविदाही, अत्यन्त शीतल प्रीणन, मधुर, बलकारक, किंचित् वातकारक और हलका है।

अथ प्रस्रवणजलस्य लक्षण गुणाश्च।

शैलसानुस्रवद्वारि प्रवाहो निर्झरो झरः। स तु प्रस्रवणश्चापि तत्रत्यं नैर्झरं जलम्॥ नैर्झरं रुचिकृन्नीरं कफघ्नं दीपनं लघु। मधुरं कटुपाकं च वातलं स्यादपित्तलम्॥

अर्थ-पर्वतमेसे जो जल बहताहै उसको निर्झर, झर और प्रस्रवण कहतेहैं, हिन्दीमे झरनेका जल कहते हैं झरनेका जल-रुचिकारक, कफनाशक, दीपन, हलका, मधुर, कटुपाकी, वातजनक और अपित्तल है।

अथ चौंड्यस्य लक्षण गुणाश्च।

शिलाकीर्णं स्वयं श्वभ्रं नीलाञ्जनसमोदकम्। लतावितानसंछन्नं चौण्ड्यमित्यभिधीयते॥ अश्मादिभिरबद्धं यत्तच्चौण्ड्यमिति चापरे। तत्रत्यमुदकं चौण्ड्यं मुनिभिस्तदुदाहृतम्॥ चौण्ड्यं वह्निकरं नीरं रूक्षं कफहरं लघु। मधुरं पित्तनुद्रुच्यं पाचनं विशदं स्मृतम्॥

अर्थ-जो गड्ढा चारो ओरसे शिलाओंकरके व्याप्त हो और जिसका जल नील अंजनकी समान निर्मलहो और जिसके ऊपर लता छारहीहो उसको चौण्ड्य कहतेहैं कोई आचार्य्य कहतेहैं कि, जो पत्थर आदिसे न बांधाहो उसको चौञ्ज्य कहतेहैं। उसके जलको चौञ्ज्य जल कहतेहैं । चौण्ड्यका जल-जठराग्निजनक, रूखा, कफनाशक, हलका, मधुर पित्तनाशक, रुचिकारक, पाचक और विशद है ।

अथ कौपस्य लक्षण गुणाश्च ।

भूमौ खातोल्पविस्तारो गम्भीरो मण्डलाकृतिः । बद्धोऽबद्धः स कूपः स्यात्तदम्भः कौपमुच्यते॥ कौपं जलं यदि स्वादु त्रिदोषघ्नं हित लघु । तत्क्षारं कफवातघ्नं दीपनं पित्तकृत्परम् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-भूमिमें थोडा चौडा गहरागोल गड्ढा खोदकर ईटपत्थरोसे बनाले वा कच्चाही रहनेदेवे उसको कूप कहतेहैं और उसके जलको कौपजल कहतेहैं, कुयेका जल यदि स्वादिष्ठ हो तो त्रिदोषनाशक, पथ्य और जो हलका होताहै और खारी होय तो कफवातनाशक, दीपन और पित्तकारक होताहै ।

अन्यच्च ।

कफघ्नं कूपपानीयं क्षारं पित्तकरं लघु । (रा० नि०)

अर्थ-औरभी कुयेका जल-कफनाशक, खारी, पित्तकारक और हलका है ।

तडागजलस्य लक्षण गुणाश्च ।

प्रशस्तो भूमिभागस्थो बहुसंवत्सरोषितः । जलाशयस्तडागः स्यात्ताडागं तज्जलं स्मृतम् ॥ ताडागमुदकं स्वादु कषायं कटुपाकि च । वातलं बद्धविण्मूत्रमसृक्पित्तकफापहम् ॥

अर्थ-उत्तम भूमिके भागमे बहुतवर्षोंके पुराने जलाशयको तडाग कहतेहैं, उसके जलको ताडागजल कहतेहैं । तालावका जल स्वादिष्ठ, कषेला, कटुपाकी, वातवर्द्धक, मल और मूत्रको बॉधनेवाला तथा रक्तपित्त और कफका नाश करे है ।

सारसलक्षण गुणाश्च ।

नद्याः शैलादिरुद्धाया यत्र सन्निरुत्य तिष्ठति । तत्सरोजलसंच्छन्नं तदम्भः सारसं स्मृतम् ॥ सारससलिलं बल्यं तृष्णाघ्नं मधुरं लघु । रोचनं तुवरं रूक्षं बद्धमूत्रमलं स्मृतम् ॥

हैमन्तिकजलगुणा ।

हैमन्तिकं जलं स्निग्धं वृष्यं बल्यं हितं गुरु ।

अर्थ-हेमन्तऋतुका जल-स्निग्ध, वृष्य, बलकारक, हितकारी और भारी है ।

शैशिरजलगुणा ।

शैशिरं कफवातघ्नं किञ्चिद्धैमन्तिकाल्लघु ।

अर्थ-शिशिरऋतुका जल-कफ वातनाशक और हैमन्तिक जलसे किञ्चित् हलका है ।

वासन्तिकजलगुणा ।

कषायं मधुरं रूक्षं विद्याद्वासंतिकं जलम् ।

अर्थ-वसन्तऋतुका जल-कषेला, मधुर, और रूखा होता है ।

ग्रैष्मिकजलगुणा ।

ग्रैष्मिकञ्चानभिष्यन्दि जलमित्येष निश्चयः ॥ (रा० व०)

अर्थ-ग्रीष्मऋतुका जल-क्लेदरहित होता है ।

ऋतुपरत्वेन जलगुणा ।

हेमन्ते सारसं तोयं ताडागं वा हितं स्मृतम् । हेमन्ते विहितं तोयं शिशिरेऽपि प्रशस्यते ॥ वसन्तग्रीष्मयोः कौपं वाप्यं वा नैर्झरं जलम् । नादेयं वारि नादेयं वसन्तग्रीष्मयोर्बुधैः ॥ विषवद्वनवृक्षाणां पत्राद्यैर्दूषितं यतः । औद्भिदं वान्तरिक्षं वा कौपं वा प्रावृषि स्मृतम् ॥ शस्तं शरदि नादेयं नीरमशूदकं परम्

(भा० प्र०)

अर्थ-हेमन्तऋतुमे सरोवर और तालावका जल पीना हितकारी है, जो जल हेमन्तऋतुमे हितकारी कहा है वह जल शिशिर ऋतुमे भी हितकारी, है वसन्त और ग्रीष्मऋतुमें कुयेका, बावडीका और झरनेका जल पीना चाहिये, वसन्त और ग्रीष्मऋतुमे नदीका जल नही देना चाहिये । कारण यह है कि,इसऋतुमे पतझड होता है इससे उन पत्तोसे वह नदीका जल विषकी समान दूषित होजाता है । वर्षाऋतुमे औद्भिद वा अन्तरिक्षजल अथवा कुयेका जल पीना चाहिये और शरदऋतुमे नदीका जल अथवा अशूदक सेवन करना चाहिये ।

अन्यच्च।

शरदि स्वच्छमुदयादगस्त्यस्याखिलं हितम् ॥

अर्थ-शरदृऋतुमे अगस्त्यऋषिके उदय होनेसे सर्व जल निर्मल और हितकारी होजाते हैं।

अन्यच्च।

पौषे वारि सरोजात माघे तत्तु तडागजम् ।फाल्गुने कूपसम्भूतं चैत्रे चौण्ढयं हितं मतम्॥ वैशाखे नैर्झरं नीरं ज्येष्ठे शस्तं तथौद्भिदम्। आषाढे शस्यते कौपं श्रावणे दिव्यमेव च ॥ भाद्रे कौप पयः शस्तमाश्विने चौज्यमेव च। कार्तिके मार्गशीर्षे च जल मात्रं प्रशस्यते ॥ (वृद्धसुश्रुतात्)

अर्थ-पौषके महीनेमे सरोवरका जल, माघके महीनेमें तलावका फाल्गुणके महीनेमे कुयेका, चैत्रके महीनेमे चौण्ढयका, वैशाखके महीनेमे झरनेका, जेठके महीनेमे उद्भिदका, आषाढके महीनेमे कुयेका, श्रावणके महीनेमे दिव्योदक, भादोके महीनेमे कुएका, आश्विनके महीनेमे चौज्य और कार्तिक तथा मार्गशीर्षके महीनेमें सर्व जल सेवन करने चाहिये।

तथा चतुर्विधं तोय वक्ष्यामि शृणु कोविद।
पापोदकं रोगोदकमंशूदकारोग्योदकौ ॥

अर्थ-आत्रेयजी कहने लगे कि अब जलको-पापोदक-रोगोदक-अंशूदक और आरोग्योदक इन भेदोसे चार प्रकारसे कहता हूं हे हारीत! सुन।

पापोदक।

पापं पापोदकं चैव करोत्येवमरोचकम् । विष्ठायुक्तं याहि नीरं कृमिकीटसमाकुलम् ॥ समल नीलशैवालं पापन्तु नर्दितं च यत्।स्नाने पाने न तच्छस्तं नराणां वा हयेषु च॥स्नानेन त्वग्भवान्रोगान्कण्डूकुष्ठविसर्पकृत् । पानेन कफगुल्मानां कृमीणां वरसम्भवान् ॥ करोति विविधान्रोगांस्तस्मात्तत्परिवर्जयेत् ॥

अर्थ-पापोदक अर्थात् पापीपानी-अरुचिकारक है । विष्ठायुक्त जल-मलरोधक है। कृमि, कीट, मल और नीलोकाई आदिसे मिलेहुये जलको पापोदक कहतेहैं । यह पापोदक-मनुष्य और

घोडोको स्नान और पीनेमे अहितकारी है। और इस जलसे स्नान करनेसे त्वचाके रोग, कण्डू, कुष्ठ और विसर्प रोग उत्पन्न होता है। और इस जलको पान करनेसे-कफ, गुल्म और कृमिप्रभृति नाना-प्रकारके रोग उत्पन्न होते है। इस कारण यह पापीजल कदापि नही पीना चाहिये।

रोगोदकम्।

बहुवृक्षलताकुञ्जछायाकूपोऽथ वा सरः। अन्ययश्चेदधोऽप्येवं कृमिशैवालसंयुतम् ॥ क्लिन्नं सपिच्छिलं कृष्णं वृक्षमूलाश्रितं भवेत्। बहुवृक्षपर्णयुक्तं दुर्गन्धं मूत्रगन्धवत् ॥ रोगोदकं विजानीयात्करोति विषमान्गदान्।शूलं कुष्ठं च कण्डूं च सेवितं न करोति हि ॥विण्मूत्रतृणनीलिकाविषयुतं तप्तं घनं फेनिलं दन्तग्राह्यमनार्त्तवं हि सजलं दुर्गन्धि शैवालजम्। नानाजीवविमिश्रितं गुरुतरं पर्णौघपङ्काविलं चन्द्रार्कांशुसुगोपितं न च पिबेन्नीरं सदा दोषलम् ॥ गुल्मं प्लीहार्शः पाण्डुश्च जलं वापिजलोदरम्।

अर्थ-बहुतसे वृक्ष और बहुतसी बेलोके समूहकी छायामे कूवा वा सरोवर हो और उसमे पानी सदेव भरा रहता हो वह जल कृमि, शिवारयुक्त हो, क्लेदितहो, पिच्छिल हो, काले रंगका हो, वृक्षोकी जडोसे आश्रितहो और बहुत वृक्षोके पत्तोसे युक्त हो, दुर्गंधित हो मूत्रकी समान गन्धवाला हो उसको रोगोदक अर्थात् रोगी पानी-विषमरोग, शूल कुष्ठ और कण्डूरोगको उत्पन्न करता है। तथा जो जल विष्ठा, मूत्र, तृण, काई और विषसहित हो, गरमहो, घनहो,फेनिलहो,दांतोंको पकडताहो, अकालमे वर्षाहो, दुर्गन्धियुक्तहो,शिवारयुक्तहो, अनेक प्रकारके जीवोंसे मिलाहुवाहो अधिकतर भारीहो, पत्र और कीचडसे मेलाहो और जिसपर चन्द्रमा और सूर्य्यकी किरणें नही पडती हो वह जलभी रोगोदक जानना,यह जलभी नहीं पीना चाहिये। यह सर्व कालमे दोषजनक है तथा गुल्म, प्लीहा, बवासीर, पाण्डु और जलोदर रोगको उत्पन्न करता है।

अशुदकम्।

दिवासूर्यांशुसन्तप्तं रात्रौ चन्द्रांशुशीतलम्।

अंशूदकमिति ख्यातं सर्वरोगनिवारकम् ॥
कफमेदोनिलघ्नं च दीपनं वस्तिशोधनम् ।
श्वासकासहरं नीरं चक्षुष्य नेत्ररोगहृत् ॥

अर्थ-जो जल-दिनमें सूर्य्यकी किरणोंसे तप्त होताहै और रात्रिमे चन्द्रमाकी किरणोंसे शीतल होता है वह जल अंशूदक नामसे विख्यात है । अंशूदक सर्वरोगनिवारक है, कफ,मेद और वातविनाशक है । दीपन, वस्तिशोधक श्वास और खाँसीको हरनेवाला, नेत्रोंको हितकारी और नेत्ररोगनाशक ह ।

आरोग्योदकम् ।

पादशेषन्तु क्वथितं तच्चारोग्यजलं विदुः ।कासश्वासहरं पथ्यं मारुतं चापकर्षति॥सद्यो ज्वरं हरत्याशु समेदःकफनाशनम्। प्रतिश्यायं पाचयति शूलगुल्मार्शनाशनम् । दीपनञ्च हुताशस्य पाण्डुशोथोदरापहम् । अजीर्णञ्च जरत्याशु पीतमुष्णोदकं निशि ॥(हारीतसंहिता)

अर्थ-जो जल-अग्निपर औटानेसे चौथाई भाग बाकी रहजाय वह आरोग्योदक है । आरोग्योदक-खांसी और श्वासको हरनेवाला, पथ्य, वातविनाशक, नवीन ज्वरको शीघ्र हरनेवाला तथा मेद,कफ, प्रतिश्याय, शूल, गुल्म और बवासीरको दूर करै है । अग्निमदीपक और पाण्डुरोग, सूजन,उदररोग तथा रात्रिमे पिया हुआ गरमजल अजीर्णको दूर करे है ।

जलग्रहणकाल ।

भौमानामम्भसां प्रायो ग्रहणं प्रातरिष्यते ।
शीतत्वं निर्मलत्वं च यतस्तेषां मतो गुणः ॥

अर्थ-भूमिसम्बन्धी जल प्रात कालही ग्रहण करना चाहिये, कारण यह है कि जलमे मुख्य गुण शीतलता और निर्मलता है, सो यह दोनो गुण प्रातःकालही होते हैं ।

शीतजलगुणा ।

शीताम्बुमदमूर्च्छाघ्नं छर्दिपित्तज्वरापहम् ।
श्रमक्लमतृषादाहमदात्ययविषापहम् ॥

अर्थ-शीतजल-मद, मूर्च्छा, वमन, पित्तज्वर, श्रम, क्लम, तृषा' दाह, मदात्यय और विषका नाशकरेहैं।

उष्णोदकलक्षण गुणाश्च।

क्वाथ्यमानन्तु यत्तोयं निष्फेनं निर्मलीकृतम्। भवत्यर्द्धावशिष्टन्तु तदुष्णोदकमुच्यते ॥ उष्णोदकं सदा पथ्य कासज्वरविबन्धनुत् ॥ कफवातामदोषघ्न दीपनं वस्तिशोधनम् ॥ तत्पादहीनं वातघ्नमर्द्धहीनन्तु पित्तजित्। कफघ्नं पादशेषन्तु पानीय लघु दीपनम् ॥ (राज०)

अर्थ-क्वाथ्यमानजलको अग्नि देते २ जब वह निष्फेन और निर्मल होकर अर्द्धशेष रहजाय तब उस जलको उष्ण जल कहते है। उष्ण जल सर्दैव पथ्य, तथा कास, ज्वर, विबन्ध, कफ, वात और आमदोषनाशक है, दीपन और वस्तिशोधक है। उष्ण जलका जब जलते २ एकपाद कम होजावे तब वह जल वातविनाशक होजाता है और जब जलते २ आधा बाकी रहजाय तब वह जल पित्तनाशक होजाता है और जब जलते १ एकही भाग शेष रहजाय तब वह जल कफनाशक, हलका और अग्निसंदीपक होजाताहै।

अन्यच्च।

अष्टमेनांशशेषेण चतुर्थेनार्द्धके न चाअथवा क्वाथने चैव सिद्धमुष्णोदक वदेत् ॥ श्लेष्मामवातमेदोघ्न वस्तिशोधनदीपनम्। कासश्वासज्वरान्हन्ति पीतमुष्णोदकं निशि ॥

अर्थ-जो जल-औटाते २ आठवा भाग शेष रहगया हो, उसको वा औटाते २ चौथा भाग शेष रहगयाहो उसको अथवा औटाते २ आधा रहगयाहो उसको तथा केवल औटायेहुवेहो जलको उष्णोदक कहते हैं। उष्णजल रात्रिमे पियाहुवा-कफ, आमवात और मेदरोगनाशक है। वस्तिशोधक, दीपन तथा खांसी, श्वास और ज्वरको हरनेवाला है।

ऋतुभेदे उष्णजलभेद।

हेमन्ते शिशिरे पादहीन पादस्थितं मधौ
स्यात्पानीय शरत्काले ग्रीष्मे चार्द्धावशेषितम् ॥

इच्छन्ति बहुदोषत्वात्प्रावृष्यष्टावशेषितम् ।

अर्थ-उष्णजल हेमन्त और शिशिर ऋतुमें चतुर्थांशहीन, वसन्त-ऋतुमे चतुर्थांश शेष, शरद और ग्रीष्मऋतुमे अर्द्धशेष और वर्षाऋतुमें जल बहुत दोषयुक्त होताहै, इसकारण इस ऋतुमे उष्णजलको, औटाते २ जब आठवां भाग शेष रहजाय तब व्यवहारमे लाना चाहिये ।

अन्यच्च ।

त्रिपादशेषं सलिलं ग्रीष्मे शरदि शस्यते ।
हिमेऽर्द्धशेष शिशिरे तथा वर्षावसन्तयोः ॥

अर्थ-कोई वैद्य ऐसा कहतेहैं कि उष्णजल ग्रीष्म और शरदऋतुमें तीन पादशेष रहनेपर और हिमऋतु, शिशिरऋतु वर्षा और वसन्त ऋतुमें अर्द्धशेष रहनेपर सेवन करना चाहिये ।

पर्य्युषितजलगुणा ।

दिवाशृतञ्च यत्तोयं रात्रौ तद्गुरुतां व्रजेत् । रात्रौ शृतं दिवा चापि गुरुत्वमधिगच्छति ॥ रात्रौ तप्तञ्च शीतञ्च न पेयं दिवसे जनैः । दिवातप्तञ्च शीतञ्च न पेय निशि सर्वदा ॥

अर्थ-दिनका औटाया हुआ पानी रात्रिमे भारीपनको प्राप्त हो जाता है और रात्रिका औटाया जल दिनमे भारीपनको प्राप्त हो जाताहै । रात्रिमे औटाकर जो जल शीतल होजाय वह जल दिनमें नही पीना चाहिये और जो जल दिनमे औटाकर शीतल होजाय वह जल रात्रिमे नहीं पीना चाहिये ।

शृतशीतजलगुणा ।

शृतशीतं त्रिदोषघ्न यदन्तर्बाष्पशीतलम् ॥

अर्थ-जो जल औटाकर अपने आप ढके हुए वासनमे शीतल हुआहो वह जल त्रिदोषनाशक है ।

अन्यच्च ।

शृतशीत न च स्निग्धं न रूक्षं च तदेव हि ।
न च श्लेष्मकर तद्धि न च वायु प्रकोपयेत् ॥

अर्थ-शृतशीत अर्थात् जो औटाकर ठंढा होगयाहो वह जल स्निग्ध नहीं है, न रूखा है, न कफकारक और न वायुको कुपित करैहै ।

अन्यच्च ।

स्वच्छ सज्जनचित्तवल्लघुतया नाप्यार्त्तवच्छीतलं पुत्रालिंगनवत्तथैव मधुरं वालस्य संजल्पवत् । पथ्यं दीपनपाचनं लघुतरं सश्वासकासापहं हिक्काध्माननवज्वरेऽपि शमनं श्लेष्मापहं श्वासजित् ॥ संशुद्धौ वरवस्तिशुद्धिकरणं हृत्पार्श्वशूलापहं गुल्मारोचकपीनसे निगदितं शीतोष्णमेतज्जलम् ॥

अर्थ-शृतशीतल-स्वच्छ, सज्जनके चित्तकी समान निर्मल, हलका, शीतल पुत्रके आलिंगनकी समान मधुर, पथ्य, दीपन, पाचक, लघुतर तथा श्वासयुक्त खांसी, हिचकी, अफारा, नवीन ज्वर, कफ और श्वासको दूर करे है । शुद्ध, वस्तिशोधक, हृदयरोग, पार्श्वकी पीडा और शूलको दूर करेहै । और गुल्म, अरुचि और पीनसरोगमे हितकारी है ।

अपिच ।

पित्तोत्तरे पित्तरोगे पित्तासृक्कफपित्तयोः । मूर्च्छाछर्दिज्वरे दाहे तृष्णातीसारपीडिते ॥ धातुक्षये विषार्त्ते च सन्निपाते विशेषतः । शस्तं विवन्धरोगे च शृतशीतं जलं सदा ॥

अर्थ-शृतशीतजल-कफ, वात और पित्तरोगमे, रक्तपित्त और कफ पित्तमे, मूर्च्छा, वमन, ज्वर, दाह, तृषा, अतिसार, धातुक्षय, विषसे पीडित रोगोंमें, सन्निपात रोगमे और विशेष करके विवन्ध रोगमे हितकारी है ।

अपिच ।

द्विपाचितं जलं पीतं विषतुल्यं सदा चरेत् ।

अर्थ-ओटाकर शीतल कियेहुये जलको दुबारा गरम नहीं करना चाहिये । क्योंकि, गरम जलको दुबारा गरमकरके पानकरनेसे विषकी समान अपकार करता है ।

उष्णजलनिषेध ।

मदात्यये सदाहे च रक्तपित्ते तथोर्ध्वगे ।
रक्तमेहे विशेषेण नोष्णं तोयं प्रशस्यते ॥ (हा० सं०)

अर्थ-गरमजल-मदात्यय, दाह, रक्तपित्त, ऊर्ध्वरोग, और रक्तप्रमेह रोगमे अहितकारी है ।

शीतलजलनिषेधः ।

पार्श्वशूले प्रतिश्याये वातरोगे गलग्रहे । आध्माने स्तिमिते कोष्ठे सद्यःशुद्धौ नवज्वरे ॥ अरुचिग्रहणीगुल्मश्वासकासेषु विद्रधौ । हिक्कायां स्नेहपाने च शीताम्बु परिवर्जयेत् ॥
(भावप्रकाश)

अर्थ–शीतलजल–पसवाडेकी पीडा, प्रतिश्याय, वातरोग, गलग्रह, आध्मान, बद्धकोष्ठ, जो तत्काल जुल्लाब ले चुका हो, नवीनज्वर, अरुचि, संग्रहणी, गुल्म, श्वास, खांसी, विद्रधि, हिचकीरोग और स्नेहपानमे त्याज्य है ।

अल्पजलपानविषय ।

अरोचके प्रतिश्याये मन्देऽग्नौ श्वयथौ क्षये। मुखप्रसेके जठरे कुष्ठे नेत्रामये ज्वरे ॥ व्रणे च मधुमेहे च पिबेत्पानीयमल्पकम् । (भावप्रकाश)

अर्थ–अरुचि, प्रतिश्याय, मन्दाग्नि, सूजन, क्षय, मुखप्रसेक, उदररोग, कुष्ठ, नेत्ररोग, ज्वर, व्रण, और मधुमेह रोगवाले मनुष्यको अल्प जल पीना चाहिये ।

गुल्मार्शोग्रहणीक्षयेषु जठरे मदानले ध्मानके शोफे पाण्डुगलग्रहे व्रणगदे मेहे च नेत्रामये । वातारुच्यतिसारके कफयुते कुष्ठे प्रतिश्यायके चोष्ण वारि सुशीतलं शृतहिमं स्वल्प प्रदेयं जलम् ॥

अर्थ–गुल्म, अर्श, संग्रहणी, क्षय, उदररोग, मन्दाग्नि, आध्मान, सूजन, पाण्डु, गलग्रह, व्रण, प्रमेह, नेत्ररोग, वात, अरुचि, अतिसार, कफ, कुष्ठ और प्रतिश्याय रोगमे उष्ण, शीतल अथवा शृतशीत जल अल्प पीना चाहिये

जलपानविधि ।

अत्यम्बुपानान्न विपच्यतेऽन्नमनम्बुपानाच्च स एव दोषः।
तस्मान्नरो वह्निविवर्द्धनाय मुहुर्मुहुर्वारि पिबेदभूरि ॥

अर्थ–बहुत जल पीनेसे भोजनका परिपाक नही होता और बिलकुल जल न पीनेसेभी अन्न नही पचता है, इस कारण मनुष्य जठराग्निके बढानेके लिये वारवार ठहर २ कर अल्प जल पीवै ।

अजीर्णे भेषज वारि जीर्णे वारि बलप्रदम् ।
भोजने चामृतं वारि रात्रौ वारि विषप्रदम् ॥

अर्थ-अजीर्ण अवस्थामें जल औषधीकी समानहै अर्थात् औष-धीकी तुल्य गुण करेहै । जीर्ण अर्थात् भोजनके पचजानेमें जल बलको देनेवाला है । भोजनमे जल अमृतकी समान गुण करे है और रात्रिमे जल विषके सदृश दोषजनक है ।

अन्यच्च ।

पिबेद्घटसहस्राणि यावन्नास्तमितो रविः ॥
अस्तंगते दिवानाथे बिन्दुरेको घटायते ॥

अर्थ-जबतक सूर्य्य अस्त नही होय तबतक चाहे हजारो घडे जल पिये किन्तु जब सूर्य्य अस्त होजाय तब एक बिन्दुभी जल नही पीना चाहिये अर्थात् एक बिन्दु जलभी घटकी समान हो जाता है ।

ग्रीष्मे शरदि पातव्यं स्वेच्छया सलिलं नरैः ।
अन्यदा स्वल्पमेवैतद्वातश्लेष्मभयात्पिबेत् ॥

अर्थ-ग्रीष्म और शरदृऋतुमे जल स्वेच्छया अर्थात् जितनी अप-नी इच्छा हो उतनाही पीना चाहिये और शेष ऋतुओमे वात कफके भयसे अल्प जल पीना चाहिये ।

आदौ जलं वह्निविनाशकारि पश्चात्तदते कफबृंहणं च ।
मध्ये तुपीत समता सुख च तस्याभियोगोभिमत-सकृज्ज॥

अर्थ-भोजनकी प्रथम अवस्थामे जल पीनेसे मंदाग्नि होतीहै, भोजनके अंतमे जल पीनेसे कफ बढता है और भोजनके मध्यमे जल पीनेसे जठराग्नि प्रबल होतीहै ।

भुक्तान्त' परतः शस्त पीत वारि गुणात्मकम् । अध्वश्रान्ते क्षुधाक्रान्ते शोपक्रोधातुरेपु च ॥ विषमासनोपविष्टे च पीत वारि रुजाकरम् । तस्मात्प्रसन्ने मनसि पानीय मन्दमाचरेत् ॥ आदौ पीत्वा दहत्यग्निं मध्ये पीत्वा रसायनम् ।तदन्ते च जलं पीत्वा तज्जल दुर्जर भवेत् ॥ भोजनादौ जल पीत्वा चाग्नि-सादः कृशाङ्गता । अन्ते करोति स्थूलत्वमूर्ध्वमामाशयात्क-फम् ॥ (हा० स०)

अर्थ-भोजनके मध्यमे पीया हुवा पानी गुणकारक है । मार्गसे थकाहुवा और भूखसे व्याकुल हुवा तथा शोक और क्रोधसे पीडित हुवा और विषम आसनपै बैठा हुवा ऐसा मनुष्य पानीको पीवे तो रोगकी उत्पत्ति होती है । इसकारण प्रसन्न मनसे अल्प पानी पीवे । भोजनकी आदिमे पियाहुवा पानी मंदाग्निको करता है. भोजनके मध्यमे पियाहुवा पानी रसायन है और भोजनके अन्तमे पियाहुवा पानी दुर्जर होजाता है । भोजनकी आदिमे जल पीनेसे मंदाग्नि और शरीरमे कृशता होतीहै और भोजनके अन्तमे पानी पनिसे-स्थूलता और आमाशयके ऊपर कफ उत्पन्न होताहै ।

पानीय पानीयं शरदि वसन्ते च पानीयम् ।
नादेयं नादेयं शरदि वसन्ते च नादेयम् ॥

अर्थ-शरद् और वसन्त ऋतुमें पानी पीना चाहिये किन्तु नद और नदीका पानी शरद् और वसन्त ऋतुमे नही पीना चाहिये । कारण यह है कि, उक्त समयमे जल दूषित होकर दोषोको दूषित करे है ।

जलपानावश्यकता ।

पानीयं प्राणिनां प्राणास्तदायत्त हि जीवनम् । तस्मात्सर्व्वा-स्ववस्थासु केश्चिद्वा वारि वार्यते ॥ अन्नेनापि विना जन्तुः प्राणान्धारयते चिरम् । तोयाभावे पिपासार्त्तः क्षणात्प्राणैर्वि-मुच्यते ॥ तृषितो मोहमायाति मोहात्प्राणान्विमुञ्चति । तस्मात्प्राणस्य रक्षार्थं वारि देयं पिपासवे ॥

अर्थ-जल जीवोका प्राणस्वरूप है इस कारण जीवन जलके आधीन है,अतएव मनुष्योको किसी अवस्थामे भी जल त्याग नहीं करना चाहिये । अन्नके विना प्राणी बहुत काल पर्य्यंत जीते रहतेहै, परन्तु जलके विना तो क्षणभरमेही प्राणोको त्यागदेतेहै । तृषासे पीडित मनुष्यके मोह उत्पन्न होताहै और मोहसे प्राणोंका नाश होता है । अतएव प्राणोंकी रक्षाके लिये प्यासे मनुष्यको जल देना चाहिये ।

अथ स्वच्छजलगुणाः ।

अगन्धमव्यक्तरस सुशीतं तर्पनाशनम् ।
अच्छ लघु च हृद्यं च तोय गुणवदुच्यते ॥

अर्थ-अजीर्ण अवस्थामे जल औषधीकी समानहै अर्थात् औषधीकी तुल्य गुण करैहै। जीर्ण अर्थात् भोजनके पचजानेमे जल बलको देनेवाला है। भोजनमे जल अमृतकी समान गुण करे है और रात्रिमे जल विषके सदृश दोषजनक है।

अन्यच्च।

पिबेद्घटसहस्राणि यावन्नास्तमितो रविः॥
अस्तगते दिवानाथे बिन्दुरेको घटायते॥

अर्थ-जबतक सूर्य्य अस्त नही होय तबतक चाहे हजारो घडे जल पिये किन्तु जब सूर्य्य अस्त होजाय तब एक बिन्दुभी जल नहीं पीना चाहिये अर्थात् एक बिन्दु जलभी घटकी समान हो जाता है।

ग्रीष्मे शरदि पातव्यं स्वेच्छया सलिलं नरैः।
अन्यदा स्वल्पमेवैतद्वातश्लेष्मभयात्पिबेत्॥

अर्थ-ग्रीष्म और शरदृऋतुमे जल स्वेच्छया अर्थात् जितनी अपनी इच्छा हो उतनाही पीना चाहिये और शेष ऋतुओमे वात कफके भयसे अल्प जल पीना चाहिये।

आदौ जलं वह्निविनाशकारि पश्चात्तदन्ते कफवृंहणं च।
मध्ये तुपीतं समता सुखं च तस्याभियोगोभिमतः सकृच्च॥

अर्थ-भोजनकी प्रथम अवस्थामे जल पीनेसे मंदाग्नि होतीहै, भोजनके अंतमे जल पीनेसे कफ बढता है और भोजनके मध्यमे जल पीनेसे जठराग्नि प्रबल होतीहै।

भुक्तान्तः परतः शस्तं पीतं वारि गुणात्मकम्। अध्वश्रान्ते क्षुधाक्रान्ते शोपक्रोधातुरेषु च॥ विषमासनोपविष्टे च पीतं वारि रुजाकरम्। तस्मात्प्रसन्ने मनसि पानीयं मन्दमाचरेत्॥ आदौ पीत्वा दहत्यग्निं मध्ये पीत्वा रसायनम्। तदन्ते च जलं पीत्वा तज्जलं दुर्जरं भवेत्॥ भोजनादौ जलं पीत्वा चाग्निसादः कृशाङ्गता। अन्ते करोति स्थूलत्वमूर्ध्वंमामाशयात्कफम्॥ (हा० सं०)

अर्थ-भोजनके मध्यमे पीया हुवा पानी गुणकारक है । मार्गसे थकाहुवा और भूखसे व्याकुल हुवा तथा शोक और क्रोधसे पीडित हुवा और विषम आसनेपै बैठा हुवा ऐसा मनुष्य पानीको पीवे तो रोगकी उत्पत्ति होती है। इसकारण प्रसन्न मनसे अल्प पानी पीवे। भोजनकी आदिमे पियाहुवा पानी मंदाग्निको करता है. भोजनके मध्यमे पियाहुवा पानी रसायन है और भोजनके अन्तमे पियाहुवा पानी दुर्जर होजाता है। भोजनकी आदिमे जल पीनेसे मंदाग्नि और शरीरमे कृशता होतीहै और भोजनके अन्तमे पानी पनिसे- स्थूलता और आमाशयके ऊपर कफ उत्पन्न होताहै ।

पानीयं पानीयं शरदि वसन्ते च पानीयम् ।
नादेयं नादेयं शरदि वसन्ते च नादेयम् ॥

अर्थ-शरद और वसन्त ऋतुमे पानी पीना चाहिये किन्तु नद और नदीका पानी शरद और वसन्त ऋतुमे नही पीना चाहिये । कारण यह है कि, उक्त समयमे जल दूषित होकर दोषोको दूषित करे है ।

जलपानावश्यकता।

पानीयं प्राणिनां प्राणास्तदायत्तं हि जीवनम् । तस्मात्सर्वा-स्ववस्थासु केश्चिद्वा वारि वार्यते ॥ अन्नेनापि विना जन्तुः प्राणान्धारयते चिरम् । तोयाभावे पिपासार्त्तः क्षणात्प्राणैर्वि-मुच्यते ॥ तृषितो मोहमायाति मोहात्प्राणान्विमुञ्चति । तस्मात्प्राणस्य रक्षार्थं वारि देयं पिपासवे ॥

अर्थ-जल जीवोका प्राणस्वरूप है इस कारण जीवन जलके आधीन है,अतएव मनुष्योको किसी अवस्थामे भी जल त्याग नहीं करना चाहिये। अन्नके विना प्राणी बहुत काल पर्य्यंत जीते रहतेहै, परन्तु जलके विना तो क्षणभरमेही प्राणोको त्यागदेतेहै। तृषासे पीडित मनुष्यके मोह उत्पन्न होताहै और मोहसे प्राणोंका नाश होता है। अतएव प्राणोंकी रक्षाके लिये प्यासे मनुष्यको जल देना चाहिये ।

प्रशस्तजलगुणा ।

अगन्धमव्यक्तरसं सुशीतं तर्पनाशनम् ।
अच्छं लघु च हृद्यं च तोयं गुणवदुच्यते ॥

अर्थ-दुर्गंधहीन, अव्यक्तरस, शीतल, तृषानाशक, स्वच्छ, हलका और हृदयको हितकारी ऐसा जल उत्तम कहा है ।

निन्दितजलम् ।

पिच्छिलं कृमिलं क्लिन्नं पर्णशैवालकर्दमैः । विवर्णं विरसं सांद्रं दुर्गंधं न हितं जलम् ॥ कलुषाच्छन्नमम्भोजपर्णनीलीतृणादिभिः । सुदुर्दर्शमसंस्पृष्टं सौरचान्द्रमसांशुभिः ॥ अनार्त्तवं वार्षिकन्तु प्रथमं तच्च भूमिगम् । व्यापन्नं परिहर्त्तव्यं सर्वदोषप्रकोपनम् ॥ तत्कुर्य्यात्स्नानपानाभ्यां तृष्णाध्मानोदरज्वरान् । कासाग्निमान्द्याभिष्यन्दि कण्डूगण्डादिकांस्तथा ॥

अर्थ-पिच्छिल, कृमियुक्त, पत्ते, काई और कीचसे बिगडाहुवा, बुरेरंगका, बुरेस्वादका, गाढा, दुर्गंधवाला, कलुषतायुक्त पुरैनके पत्तोंसे, नीलीसे और तृणोंसे ढकाहुवा, बुरीभूमिका जिसका स्पर्श बुराहो, जिसपर सूर्य्य और चन्द्रमाकी किरणें न पडती हों, विना समयका, जो वर्षकर प्रथमही भूमिमें भराहो और बिगडा हुवा ऐसा जल कभीभी काममें नहीं लेना चाहिये।यह जल अहितकारी और सर्वदोषोंको कुपित करैहै । इस जलमें स्नान और पान करनेसे तृषा, आध्मान, उदररोग, ज्वर, खाँसी मंदाग्नि, अभिष्यन्द, कण्डू और गलगण्डादि रोग उत्पन्न होतेहैं ।

दुष्टजलनिर्दोषीकरणम् ।

निन्दितं चापि पानीयं क्वथितं सूर्य्यतापितम् ।ताम्रं सुवर्णं रजतं पाषाणं सिकतां मृदम् ॥भृशंसन्ताप्य निर्व्वाप्य सप्तधासाधितं तथा । कर्पूरजातीपुन्नागपाटलादिसुवासितम् ॥ शुचिसांद्रपटस्रावि क्षुद्रजन्तुविवर्जितम् । स्वच्छं कनकमुक्ताद्यैः शुद्धं स्याद्दोषवर्ज्जितम् ॥ पर्णमूलविषग्रन्थिमुक्ताकनकशैवलेः । गोमेदेन च वस्त्रेण कुर्य्यादम्बुप्रसाधनम् ॥

अर्थ-दुष्टजलके शोधनकी विधि-प्रथम दुष्टजलको खूब औटावे, फिर धूपमें धर देवे, पीछे सुवर्ण, रजत, लोह, पत्थर और बालूको गरम करके सातबार उस जलमें बुझावे फिर उत्तम मिट्टीके कोरे

पात्रमे भरकर उसमे । कपूर, चमेली, पुन्नाग और पाटलादिक फलोसे तथा खस आदि सुगंधित वस्तुओसे सुगंधित करे फिर श्वेत निर्मलवस्त्रमें छानलेवे । जिससे कि, उसमे छोटे२ जन्तु न रहै तथा स्वर्ण मुक्तादिसे शुद्ध किया हुवा जल निर्दोष होजाता है । पर्ण, मूल, कमलकी गांठ, मोती, स्वर्ण, सिवार, गोमेद और वस्त्रादिसे जलको शुद्ध करना चाहिये ।

सुवासितजलगुणाः ।

सुवासित जलं पुष्पैः पूतं शुक्लेन वाससा ।
नवे मृद्भाजने न्यस्तं माङ्गल्य रुचिकृत्परम् ॥

अर्थ-सुगंधित पुष्पादिकोसे सुवासित कियाहुवा श्वेतवस्त्रमें छानाहुवा और नवीन मृत्तिकापात्रमे रखाहुवा ऐसा जल मंगलजनक और रुचिकारक है ।

पीतजलपाकविधिः ।

आम जलं जीर्य्यति यामयुग्माद्यामेकमात्राच्छृतशीतलं च ।
तदर्द्धमात्रेण शृतं कदुष्णं पयःप्रपाके विधिरेष उक्तः ॥

अर्थ-कच्चा जल पियाहुवा दो पहरमे पचताहै, औटाकर शीतल किया जल एक पहरमे पचता है और गरम जल १॥ डेढ घटेमे पचता है इस प्रकार जलपाककी विधि कही है ।

इति श्रीशालिग्रामनिघण्टुभूषणे वारिवर्ग समाप्त ॥ १२ ॥

अथ दुग्धवर्गः ।

दुग्धं क्षीरं पयः स्तन्यं पीयूषं बालजीवनम् ॥

अर्थ-दुग्ध, क्षीर, पय, स्तन्य, पीयूष, बालजीवन (ऊधस्य, अमृत, दोहज, अवदोह, दोहापनय)

सं०	दुग्ध ।	तै०	पालु ।
हिं०	दूध ।	इं०	मिल्क । Milk
बं०	दुध ।	लै०	लॅक्टस । Lactus
म०	दूध ।	फा०	शीरे ।
गु०	दुध ।	अ०	लवनुल ।
क०	हालु ।		

दुग्धगुणा ।

दुग्ध सुमधुरं स्निग्ध वातपित्तहर सरम्।सद्यःशुक्रकर शीतं सात्म्यं सर्व्वशरीरिणाम्॥जीवनं बृहणं वल्यं मेध्यं वाजीकरं परम् । वयःस्थापनमायुष्यं सन्धिकारि रसायनम् । विरेकवान्तिवस्तीनां तुल्यमोजोविवर्द्धनम्। जीर्णज्वरे मनोरोगे शोषमूर्च्छाभ्रमेषु च ॥ ग्रहण्यां पाण्डुरोगे च दाहतृषि हृदामये ॥ शूलोदावर्त्तगुल्मेषु वस्तिरोगगुदांकुरे ॥ रक्तपित्तातिसारे च योनिरोगश्रमक्लमे । गर्भस्रावे च सततं हितं मुनिवरैः स्मृतम् ॥ बालवृद्धक्षतक्षीणाः क्षुद्व्यवायकृशाश्च ये । तेभ्यः सदातिशयित हितमेतदुदाहृतम् ॥ विदाहीन्यन्नपानानि यानि भुक्ते हि मानवः।तद्विदाहप्रशान्त्यर्थं भोजनान्ते पय. पिबेत्॥(भा०प्र०)

अर्थ-दूध-मधुर, स्निग्ध, वातपित्तनाशक, कुछेक दस्तावर, तत्काल वीर्य्यजनक, शीतल, सर्वप्राणियोकी आत्मा,जीवन,बृंहण, बलकारक, मेध्य,वाजीकरण,अवस्थास्थापक,आयुष्यकारक, संधि कर्त्ता और रसायनहै । ओजके बढानेमे विरेचन,वमन और वस्तिको समान गुण करे है, तथा जीर्णज्वर, मनरोग, शोष, मूर्च्छा, भ्रम, सग्रहणी, पाण्डुरोग, दाह, तृषा, हृदयरोग, शूल, उदावर्त्त,गुल्मरोग, वस्तिरोग, गुदाकुर, रक्तपित्त, अतिसार, योनिरोग, श्रम,क्लम और गर्भस्रावमे निरन्तर हितकारी है । जो बाल, वृद्ध, क्षतक्षीण, भूखे और मैथुन करनेसे क्षीण होगये है उनको दूध सदैव अतिशय हितकारी है । मनुष्य जो दाहजनक अन्न और पानीको सेवन करते है इनके दाहको शान्तिकरनेके लिये भोजनके अन्तमे दूध अवश्य पीना चाहिये ।

अन्यच्च ।

क्षीर स्वादुरस स्निग्धमोजस्य धातुवर्द्धनम् ।
वातपित्तहर वृष्य श्लेष्मलं शीतलं गुरु ॥ (राजवल्लभ)
जीर्णज्वरे कफे क्षीणे क्षीर स्यादमृतोपमम् ।
तदेव तरुणे पीत विषवद्धन्ति मानवम् ॥ (वै०)

अर्थ-दूध-स्वादुरसान्वित, स्निग्ध, ओजस्य और धातुवर्द्धक, वात पित्तनाशक, वृष्य, कफकारक, शीतल और भारी है। दूध-जीर्णज्वर और कफके क्षीण होनेमे अमृतकी समान गुणकारी है और वही दूध तरुणज्वरमे पीना विषकी समान मनुष्यको मार डालता है।

गोमहिषीछागलाविकगजतुरगखरोष्ट्रमानुषस्त्रीणाम्।
क्षीरादिकगुणदोषौ वक्ष्येनुक्रमतो यथायोग्यम्॥

अर्थ-गाय, भैस, बकरी, भेड, हथिनी, घोडी, गधी, ऊँटनी, और स्त्रियोके दूधके गुण और दोषोको यथाक्रमसे कहताहूं।

गोदुग्धगुणा।

धेनोः पयः स्यान्मधुरं सुशीतं रसायनं स्निग्धमलं गुरु स्यात्।
भ्रमश्रमघ्न विषहृत्सरं च कफावहं शुक्रकरं हि वर्ण्यम्॥

अर्थ-गायका दूध-मधुर, शीतल, रसायन, स्निग्ध, भारी, भ्रमनाशक, श्रमहारक, विषविनाशक, सारक, कफकारक, शुक्रजनक और वर्णको सुंदर करेहै।

अन्यच्च।

गव्य क्षीरं पथ्यमत्यंतरुच्यं स्वादु स्निग्धं पित्तवातामयघ्नम्।
कांति प्रज्ञां बुद्धिमेधाङ्गपुष्टिं धत्ते स्पष्टं वीर्य्यवृद्धिं विधत्ते॥

अर्थ-गायका दूध-पथ्य, अत्यन्त रुचिकारी, स्वादिष्ठ स्निग्ध, पित्त और वातरोगनाशक, कान्तिजनक तथा प्रज्ञा, बुद्धि, मेधा, अङ्गमें पुष्टि और वीर्यको बढावे है।

अन्यच्च।

गोक्षीरं जीवनं बल्यं रक्तपित्तानिलापहम्।
आयुष्यं पुंस्त्वकृत्पथ्ये मेध्यं वृष्यं रसायनम्॥

अर्थ-गायका दूध-जीवन, बलकारक, रक्तपित्तनाशक, वातनाशक आयु और पुरुषतावर्द्धक, पथ्य, मेधाजनक, वृष्य और रसायन है।

अपिच।

गव्यं दुग्धं विशेषेण मधुरं रसपाकयोः। शीतलं स्तन्यकृत्स्निग्धं वातपित्तास्रनाशनम्॥ दोषधातुमलस्रोतः किञ्चित्क्लेदकरं गुरु। जरा समस्तरोगाणां शान्तिकृत्सेविनां सदा॥

दुग्धगुणाः ।

दुग्धं सुमधुरं स्निग्ध वातपित्तहर सरम्। सद्यःशुक्रकरं शीतं सात्म्यं सर्व्वशरीरिणाम्॥ जीवनं बृंहणं बल्यं मेध्यं वाजीकरं परम्। वयःस्थापनमायुष्यं सन्धिकारि रसायनम्। विरेकवान्तिवस्तीनां तुल्यमोजोविवर्द्धनम्॥ जीर्णज्वरे मनोरोगे शोषमूर्च्छाभ्रमेषु च ॥ ग्रहण्यां पाण्डुरोगे च दाहतृषि हृदामये ॥ शूलोदावर्त्तगुल्मेषु वस्तिरोगगुदांकुरे ॥ रक्तपित्तातिसारे च योनिरोगश्रमक्लमे। गर्भस्रावे च सततं हितं मुनिवरैः स्मृतम् ॥ बालवृद्धक्षतक्षीणाः क्षुद्व्यवायकृशाश्च ये। तेभ्यः सदातिशयित हितमेतदुदाहृतम् ॥ विदाहीन्यन्नपानानि यानि भुक्ते हि मानवः।तद्विदाहप्रशान्त्यर्थं भोजनान्ते पयः पिबेत्॥(भा०प्र०)

अर्थ-दूध-मधुर, स्निग्ध, वातपित्तनाशक, कुछेक दस्तावर, तत्काल वीर्यजनक, शीतल, सर्वप्राणियोकी आत्मा, जीवन, बृंहण, बलकारक, मेध्य, वाजीकरण, अवस्थास्थापक, आयुष्यकारक, संधिकर्त्ता और रसायनहै। ओजके बढानेमे विरेचन, वमन और वस्तिको समान गुण करे है, तथा जीर्णज्वर, मनरोग, शोष, मूर्च्छा, भ्रम, सग्रहणी, पाण्डुरोग, दाह, तृषा, हृदयरोग, शूल, उदावर्त्त, गुल्मरोग वस्तिरोग, गुदांकुर, रक्तपित्त, अतिसार, योनिरोग, श्रम, क्लम और गर्भस्रावमे निरन्तर हितकारी है। जो बाल, वृद्ध, क्षतक्षीण, भूखे और मैथुन करनेसे क्षीण होगये है उनको दूध सदैव अतिशय हितकारी है। मनुष्य जो दाहजनक अन्न और पानीको सेवन करते है उनके दाहको शान्तिकरनेके लिये भोजनके अन्तमे दूध अवश्य पीना चाहिये।

अन्यच्च।

क्षीर स्वादुरसं स्निग्धमोजस्य धातुवर्द्धनम्।
वातपित्तहर वृष्य श्लेष्मलं शीतल गुरु ॥ (राजवल्लभ)
जीर्णज्वरे कफे क्षीणे क्षीर स्यादमृतोपमम्।
तदेव तरुणे पीत विषवद्धन्ति मानवम् ॥ (वै०)

अर्थ-दूध-स्वादुरसान्वित, स्निग्ध, ओजस्य और धातुवर्द्धक, वात पित्तनाशक, वृष्य, कफकारक, शीतल और भारी है। दूध-जीर्णज्वर और कफके क्षीण होनेमे अमृतकी समान गुणकारी है और वही दूध तरुणज्वरमे पीना विषकी समान मनुष्यको मार डालता है।

गोमहिषीछागलाविकगजतुरगखरोष्ट्रमानुषस्त्रीणाम्।
क्षीरादिकगुणदोषौ वक्ष्येनुक्रमतो यथायोग्यम् ॥

अर्थ-गाय, भैंस, बकरी, भेड, हथिनी, घोडी, गधी, ऊँटनी, और स्त्रियोंके दूधके गुण और दोषोंको यथाक्रमसे कहताहूं।

गोदुग्धगुणाः।

धेनोः पयः स्यान्मधुरं सुशीतं रसायनं स्निग्धमलं गुरु स्यात्।
भ्रमश्रमघ्नं विषहृत्सरं च कफावहं शुक्रकरं हि वर्ण्यम् ॥

अर्थ-गायका दूध-मधुर, शीतल, रसायन, स्निग्ध, भारी, भ्रमनाशक, श्रमहारक, विषविनाशक, सारक, कफकारक, शुक्रजनक और वर्णको सुंदर करेहै।

अन्यच्च।

गव्यं क्षीरं पथ्यमत्यंतरुच्यं स्वादु स्निग्धं पित्तवातामयघ्नम्।
कांतिं प्रज्ञां बुद्धिमेधाङ्गपुष्टिं धत्ते स्पष्टं वीर्य्यवृद्धिं विधत्ते ॥

अर्थ-गायका दूध-पथ्य, अत्यन्त रुचिकारी, स्वादिष्ठ स्निग्ध, पित्त और वातरोगनाशक, कान्तिजनक तथा प्रज्ञा, बुद्धि, मेधा, अङ्गमें पुष्टि और वीर्यको बढावे है।

अन्यच्च।

गोक्षीरं जीवनं बल्यं रक्तपित्तानिलापहम्।
आयुष्यं पुंस्त्वकृत्पथ्यं मेध्यं वृष्यं रसायनम् ॥

अर्थ-गायका दूध-जीवन, बलकारक, रक्तपित्तनाशक, वातनाशक आयु और पुरुषतावर्द्धक, पथ्य, मेधाजनक, वृष्य और रसायन है।

अपिच।

गव्यं दुग्धं विशेषेण मधुरं रसपाकयोः। शीतलं स्तन्यकृत्स्निग्धं वातपित्तास्रनाशनम् ॥ दोषधातुमलस्रोतः किञ्चित्क्लेदकरं गुरु। जरा समस्तरोगाणां शान्तिकृत्सेविनां सदा ॥

अर्थ-गायका दूध-विशेष करके रस और पाकमें मधुर, शीतल, स्तनोंमे दूध उत्पन्न करनेवाला, वातनाशक, रक्तनाशक, दोष, धातु, मल, स्रोत और किञ्चित् क्लेदकारक है, भारी और सदैव सेवन करनेवाले मनुष्योंके जरा तथा सर्वरोगोंको शान्ति करनेवाला है।

वर्णविशेषे गुणविशेषा.।

कृष्णाया गोर्भवेद्दुग्धं वातहारि गुणादिकम्।
पीताया हरते पित्त तथा वातहर भवेत् ॥
श्लेष्मल गुरु शुक्लाया रक्तचित्रा च वातहृत ॥

अर्थ-कालीगायका दूध-वातनाशक और अधिक गुणवाला है। पीली गायका दूध-पित्तनाशक और वातनाशक है। सफेद गायका दूध-कफकारक और भारी है। लाल और चितकबरी गायका दूध-वातनाशक है।

विवत्सावालवत्सायाः पयो दोपलमीरितम्।

अर्थ-जिन गायोंका बछडा नही है अथवा जिनका छोटा बछडा है उनका दूध दोषकारक है।

बष्कयिणीगोदुग्धगुणा।

बष्कयिण्यास्त्रिदोपघ्न तर्पण बलकृत्पयः।

अर्थ-बाखरी गायका दूध-त्रिदोपनाशक, तृप्तिकारक, और बलवर्द्धक है।

देशविशेषे गुणविशेषा।

जाङ्गलानूपशैलेषु चरन्तीनां यथोत्तरम्।
पयो गुरुतर स्नेहो यथाहार प्रवर्त्तते ॥

अर्थ-जो गाय जांगल, अनूप और पर्वतोंमे चरती है उनका दूध यथाक्रमसे भारी जानना। अर्थात् जांगल देशकी चरनेवालियोसे अनूप देशकी गायोंका, और अनूप देशकी चरनेवालियोसे पर्वतोंमे चरनेवाली गायोंका दूध भारी है और जैसा यह आहार करती है वैसेही आहारके अनुसार घृत निकलता है।

आहारविशेषे गुणविशेषा।

स्वल्पान्नभक्षणाज्जात क्षीर गुरु कफप्रदम्।
तत्तु वर्ण्यं परं वृष्यं सुस्थानां गुणदायकम् ॥
पलालतृणकार्पासबीजजातं गुणैर्हितम्। (भा० प्र०)

अर्थ-जो गाय अल्प अन्न आहार करती हैं उनका दुध-भारी कफकारक, वर्णको सुंदर करनेवाला, परमवृष्य, और आरोग्य, मनुष्योंको गुणदायक है। जो प्याल चरीकी कुट्टी, घास और बिनोले खाती है उनका दूध अत्यन्त हितकारक है।

अवस्थाविशेषगुणाः ।

तरुणीनां गवां दुग्धं मधुरं च रसायनम् । त्रिदोषशमनं चैव वृद्धाया दुर्बलं मतम् ॥ सगर्भायाः समुद्दिष्टं त्रिमासोर्ध्वं च पित्तलम् । क्षारं च मधुरं चैव मतं वै शोषकारणम्॥ प्रथमं च प्रसूताया निःसारं गुणहीनकम् । नूत्नप्रसूतगोर्दुग्धं रुक्षं दाहकरं मतम् ॥ रक्तदोषस्य जनकं पित्तलं च मतं बुधैः । चिरप्रसूतादुग्धं तु मधुरं दाहकं पटु ॥ (निघण्टुरत्नाकरे.)

अर्थ-तरुणी गायका दूध-मधुर, रसायन और त्रिदोषनाशक है। वृद्धगायका दूध-दुर्बल है । जिस गायको ग्यावन हुवे तीन महीने बीतगये हों उस गायका दूध-पित्तकारक, खारी, मधुर और शोषकारक है। जो गाय पाहिलीवार व्याई है उसका दूध-सारहीन और गुणोमे हीन है। जो गाय नवीन व्याई है उसका दूध-रूखा, दाहकारक, रक्तको कुपित करनेवाला और पित्तकारक है । जिस गायको व्याये हुवे बहुत दिन बीत गये हैं उसका दूध-मधुर, दाहकारक और निमकीन है।

अन्यच्च गोदुग्धानां प्रशस्ताप्रशस्तभेदाः ।

शस्तं वत्सैकवर्णाया धवलीकृष्णयोरपि ।
इक्ष्वादा मापपर्णाद्या ऊर्ध्वशृङ्गी च या भवेत् ॥
तासां गवां हितं क्षीरं शृतं वाऽशृतमेव वा ॥

अर्थ-जिन गायोंका रंग बछडेके रंगसे मिलता है उन गायोका दूध तथा काली और सफेद गायका दूध प्रशंसायोग्य है । जो गाय ईख और मषवन आदिको खाती है और जिन गायोके सींग ऊपरको उठे हैं उन गायोंका दूध पक्क अथवा अपक्क हितकारी है ।

गोदुग्धग्रहणकालनिर्णयः ।

गव्यं प्रत्युषसि क्षीरं गुरु विष्टम्भि दुर्जरम् ।

तस्मादभ्युदिते सूर्य्ये यामं यामार्धमेव वा ॥
समुत्तार्य्य ततो ग्राह्यं तत्पथ्यं दीपनं लघु ॥ (रा०व०)

अर्थ-गायका दूध प्रातःकालमे-भारी, विष्टम्भकारी और दुर्जर होता है। अतएव सूर्यके उदय होनेपर एक प्रहर अथवा अर्द्ध प्रहर समय व्यतीत होजानेपर गायका दूध ग्रहण करणा चाहिये। इसप्रकार ग्रहण करनेसे वह दूध-पथ्य, दीपन और हलका है।

माहिषीदुग्धगुणा।

स्निग्ध मरुच्छीतकरं च तन्द्रानिद्राकर वृष्यतम श्रमघ्नम्।
बलप्रदं पुष्टिकर कफस्य संजीवन माहिषमुच्यते पयः॥(हा०सं०)

अर्थ-भैसका दूध-स्निग्ध, वातकारक, शीतजनक, तन्द्रा और निद्राको करनेवाला, वीर्यवर्द्धक, श्रमनाशक, बलकारक, पुष्टिकारक, और कफको उत्पन्न करेहै।

अन्यच्च।

माहिषं बलवर्णाग्निनिद्राशुक्रकफप्रदम्। तीक्ष्णाग्निशमनं स्वादु रसे पाके च पुष्टिदम्॥ व्यायामश्रान्तदेहस्य श्रमघ्नमनिलापहम्।निष्कामस्यातिवृद्धस्य स्त्रीषु काममदायकम्॥ बलेन तरुणस्यापि विशेषात्काममदायकम्।(सुषेण)

अर्थ-भैसका दूध-बलकारक, वर्णको सुदर करनेवाला, अग्निजनक, निद्राकारक, शुक्रजनक, कफकारी, तीक्ष्ण, अग्निकी शाति करनेवाला, रस और पाकमे मधुर, पुष्टिकारक, तथा जिनका देह कसरत करनेसे थकगया है उनके श्रमको दूर करे है, श्रमनाशक वातविनाशक और निष्काम, वृद्ध, स्त्री और तरुणादिकके काम उपजानेवाला है।

अन्यच्च।

माहिष मधुर गव्यात्स्निग्ध शुक्रकर गुरु।
निद्राकरमभिष्यन्दि क्षुधाधिक्यकरं हिमम्॥(भा०मि०)

अर्थ-भैसका दूध-गायके दूधकी अपेक्षा मधुर है, स्निग्ध, शुक्रजनक, भारी, निद्राकारी, अभिष्यन्दि, क्षुधाको अधिक करन वाला और शीतल है।

छागीदुग्धगुणा ।

छागं कषायं मधुरञ्च शीतं ग्राहि लघु पित्तक्षयापहारि ।
कासज्वराणांरुधिरातिसारेहितंपयश्छागलजं त्रिदोषजित्(हा)

अर्थ-बकरीका दूध-कषेला, मधुर,शीतल,मलरोधक,हलका तथा पित्त, क्षय, खांसी, ज्वर और रक्तातिसारमे हितकारी तथा त्रिदोषनाशक है।

छागीनामल्पकायत्वात्कटुतिक्तनिषेवणात् ।
नात्यम्बुपानाद्व्यायामात्सर्वदोषहरं पयः ॥
दीपनं लघु संग्राहि श्वासकासास्रपित्तनुत् । (सुश्रुत)

अर्थ-बकरियोकी छोटी देह होतीहै और चरपरी और कडवी वनस्पतियोको चरतीहै। जल बहुत कम पीतीहै और दिनभर जंगलमे विचरती फिरतीहै इसीसे बकरियोंका दूध सर्वदोषनाशक, दीपन, हलका, मलरोधक तथा श्वास, खांसी और रक्तपित्तको दूर करेहै।

मेषीदुग्धगुणा ।

आविकं लवणं स्वादु स्निग्धोष्णं चाश्मरीप्रणुत् ।
अहृद्यं तर्पणं वृष्यं शुक्रपित्तकफप्रदम् ॥
गुरु कासेऽनिलोद्भूते केवले चानिले वरे। (भा० प्र०)

अर्थ-भेडका दूध-निमकीन, स्वादिष्ट, स्निग्ध, गरम, पथरीको दूर करनेवाला, हृदयको अहितकारी, तृप्तिकारक, वृष्य तथा शुक्र पित्त और कफकारक है। भारी तथा वातकी खांसी और केवल वातरोगमे हितकारी है।

अन्यच्च ।

औरभ्रं मधुरं रूक्षमुष्णं वातकफापहम् ।
न शस्तं रक्तपित्तीनां वातिकानां हितं भवेत् ॥

अर्थ-भेडका दूध-मधुर, रूखा, गरम, वातकफनाशक,रक्तपित्त रोगवालोको हितकारी नहीं है।केवल वातरोगवालोको हितकारी है।

मृगीदुग्धगुणा ।

मृगीनां जांगलस्थानामजाक्षीरगुणं पयः । (भा० प्र०)

अर्थ-जंगलदेशकीमृगीकादूध-बकरीके दूधकीसमान गुणवालाहै।

अश्वीदुग्धगुणा ।

रूक्षोष्णं वडवाक्षीरं बल्यं शोषानिलापहम् ।
अम्ल पटु लघु स्वादु सर्वमैकशफ तथा ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-घोडीका दूध-रूखा, गरम, बलकारक, शोषनाशक, वातविनाशक,अम्ल,खारी,हलका,स्वादिष्ठ है। इसी प्रकार और जितने एकखुरवाले पशु है उन सबका दूध घोडीके दूधकी समान जानना।

उष्ट्रीदुग्धगुणा ।

रूक्ष तथोष्णं लवणं कफस्य निवारण वातविकारहारि ।
लघुप्रशस्तकटुककृमीणांशोफार्शसामौष्ट्रपयोऽनुकूलम्।(हा ग)

अर्थ-ऊँटनीका दूध-रूखा,गरम,नमकीन,कफनिवारक,वातहारक, हलका,अच्छा,चरपरा तथा कृमि,सूजन और बवासीरको दूर करेहै।

अन्यच्च।

औष्ट्र दुग्ध लघु स्वादु लवण दीपनं तथा ।
कृमिकुष्ठकफानाहशोथोदरहरं सरम् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-ऊँटनकीका दूध-हलका,स्वादिष्ठ, निमकीन, दीपन, सारक तथा कृमि, कुष्ठ, कफ, आनाह,सूजन और उदररोगको दूर करे है।

हस्तिनी दुग्धगुणा ।

बृंहण हस्तिनीदुग्धं चक्षुष्य स्थिरताकरम् ।
स्निग्धं च मधुर वृष्य कषायानुरस गुरु ॥

अर्थ-हथिनीका दूध-पुष्टिकारक, नेत्रोको हितकारी, स्थिरताकारक, स्निग्ध, मधुर, वीर्य्यवर्द्धक, किंचित कषेला और भारी है।

गर्दभीदुग्धगुणा ।

गर्दभ्यास्तु स्मृत दुग्धं मधुर बलकारकम्। रूक्ष चाम्ल दीपन च बुद्धिमांद्यकरं मतम् ॥पथ्य रुचिप्रद क्षार कफवातविनाशनम्। बालरोगं च कासं च श्वास चैव विनाशयेत् ॥

अर्थ-गधीका दूध-मधुर, बलकारक, रूखा,अम्ल,दीपन, बुद्धिको मन्द करनेवाला, पथ्य, रुचिकारक, खारी, कफवातविनाशक तथा बालरोग, खाँसी और श्वासको हरनेवाला है।

स्त्रीदुग्धगुणाः।

सञ्जीवनं बृंहणमेव सात्म्यं सन्तर्पणं नेत्ररुजापहं च।
पित्तस्य रक्तस्य च नाशनं च नारीपयः स्नेहनमेव शस्तम्॥

अर्थ-स्त्रीका दूध-सजीवन,पुष्टिकारक, पथ्य,सात्म्य, तृप्तिकारक, नेत्ररोगनाशक, पित्तनाशक, रुधिरके विकारोको हरनेवाला और स्नेहयुक्त है।

अन्यच्च।

प्रोक्तं तु मानुषीदुग्धं मधुरं शीतलं लघु। चक्षुष्यं तुवरं पथ्यं दीपनं पाचकं मतम्॥धातुवृद्धिकरं रुच्य जीवनं स्नेहन तथा। रक्तपित्ते च नस्यार्थं नेत्रशूलेऽक्षिपूरणे॥उत्तमं नेत्ररोगघ्नमभिघातविनाशकम्। वातं पित्तं नाशयतीत्येवमुक्तं चिकित्सकैः॥
(नि० र०)

अर्थ-स्त्रीका दूध-मधुर,शीतल,हलका,नेत्रोको हितकारी,कपेला, पथ्य, दीपन, पाचक, धातुवर्द्धक, रुचिकारक, जीवन और स्नेहयुक्त है। तथा रक्तपित्तपर इसका नास देना और नेत्रके फूलेपर इसको आंखमे भरना उत्तम है; नेत्ररोगनाशक, अभिघातविनाशक, वात और पित्तका नाश करे है।

दुग्धस्य सात्म्यासात्म्यविधि।

अल्पाम्बुपानव्यायामात्कटुतिक्ताशने लघु। पिण्याकाम्लाशिनीनां तु गुर्वभिष्यंदि शीतलम्॥ क्षीणानां दुर्बलानाञ्च तथा जीर्णज्वरार्दिते। दीप्ताग्निमानतन्द्राणां श्रमशोषविकारिणाम्॥ व्यवायिनामल्परेतःश्वासिनां विषमाग्निनाम्। तथा च राजयक्ष्माणां क्षीरपानं विधीयते॥न शस्तं लवणैर्युक्तं क्षीरं चाम्लेन वा पुनः।करोति कुष्ठं त्वग्दोषं तस्मान्नैव हितं मतम्॥
(हा० सं०)

अर्थ-जो मनुष्य-अल्पजल पीते है, कसरत करते है तथा चरपरे और कडवे पदार्थ खाते है उनके लिये दूध हलका है। और जो मनुष्य तिलोकी पिट्ठी खाते है और अम्लरसका सेवन करते है उनके लिये दूध भारी, अभिष्यन्दि और शीतल है। क्षीण, दुर्बल, जीर्णज्वरसे पीडित,जिनकी जठराग्नि दीपन है,तन्द्राहीन,श्रमवाले,

शोपयुक्त, मैथुन करनेवाले, क्षीणवीर्य्यवाले, श्वासयुक्त, विषम, अग्नियुक्त और राजयक्ष्मारोगवाले मनुष्योंको दूधका सेवन करना चाहिये। लवणयुक्त अथवा अम्लद्रव्ययुक्त दूधका पीना श्रेष्ठ नहीं है। यह कोढ और त्वचाके रोगोको उत्पन्न करता है इस कारण यह अहितकारी है।

आम क्षीरमभिष्यन्दि गुरु श्लेष्मामवर्द्धनम्।
ज्ञेय सर्वमपथ्यं तद्गव्यं माहिषवर्जितम्॥
नारीक्षीरं त्वाममेव हित न तु शृतं हितम्॥

अर्थ-गाय और भैसके दूधको छोडकर प्रायः सर्व दूध अभिष्यन्दी, भारी, कफकारी और अपथ्य होते हैं किन्तु स्त्रीका दूध कच्चाही हितकारी होता है और पक्का नहीं होता।

धारोष्णादिदुग्धगुणा।

धारोष्ण गोपयो वल्यं लघु शीतं सुधासमम्। दीपनं च त्रिदोषघ्न तद्धाराशिशिरं त्यजेत्॥ धारोष्ण शस्यते गव्य धाराशीत तु माहिषम्। शृतोष्णमाविक पथ्य शृतशीतमजापयः॥ शृतोष्णं कफवातघ्न शृतशीतं तु पित्तनुत्। अर्धोदकं क्षीरशिष्टमामाल्लघुतरं पयः॥ जलेन रहितं दुग्धमतिपक्कं यथायथा। तथा तथा गुरु स्निग्धं वृष्य वलविवर्द्धनम्॥ (भा० प्र०)

अर्थ-धारोष्ण (दुहनेके समय जो उष्ण होता है)-गायका दूध बलकारी, हलका, शीतल, अमृतकी समान दीपन और त्रिदोषनाशक है। जो गायके दूधकी धार शीतल होगई हो तो त्यागने योग्य है। गायका दूध-धारोष्ण प्रशंसायोग्य है। भैसका दूध-धाराशीत उत्तम होता है। भेडका दूध गरमागरम हितजनक है और बकरीका दूध ओटा कर शीतल किया हुवा हितकारी होता है। शृतोष्ण अर्थात् औटाकर गरम किये दूध कफवातनाशक और औटाकर शीतल किये हुए दूध पित्तनाशक होते हैं। आधा पानी मिलाकर शेष बचा हुआ दूध कच्चे दूधकी अपेक्षा हलका है। जलसे रहित जैसेरदूध बहुत औटता है वैसे वैसेही अधिक भारी, स्निग्ध, शुक्रजनक और बलवर्द्धक होता है।

प्रभातादिभवदुग्धगुणा।

रात्रौ चन्द्रगुणाधिक्याद्व्यायामाकरणात्तथा। प्राभातिकं त-

दा प्रायः प्रादोषाद्गुरु शीतलम् ॥ दिवाकरकराघाताव्द्यायामानलसेवनात्। प्राभातिकाच्चु प्रादोषं लघु वातकफापहम् ॥

अर्थ-रात्रिमें चन्द्रगुणकी अधिकतासे तथा व्यायाम न करनेसे प्रातःकालका दूध प्रायः सायंकालके दूधसे भारी और शीतल होता है। दिनमें धूपके लगनेसे तथा व्यायामकी गरमीके सेवन करनेसे सायंकालका दूध प्रातःकालके दूधसे हलका और वात तथा कफको दूर करे है।

समयविशेष दुग्धसेवनगुणा।

वृष्यं बृंहणमग्निदीपनकरं पूर्वाह्णकाले पयो मध्याह्ने तु बलावहं कफहरं पित्तापहं दीपनम्। बाले वृद्धिकरं क्षये क्षयकरं वृद्धेषु रेतोवहं रात्रौ पथ्यमनेकदोषशमनं क्षीरं सदा सेव्यते ॥ वदन्ति पेयं निशि केवलं पयो भोज्यं न तेनेह सहौदनादिकम्। भवत्यजीर्णेन शयीत शर्वरी क्षीरस्य-पानस्य न शेषमुत्सृजेत् ॥ दीप्तानले कृशे पुंसि बाले वृद्धे पयःप्रिये। मतं हिततमं दुग्धं सद्यःशुक्रकरं परम् ॥ भुक्ता ये बहुतीव्रचंडविदला ये चाम्लतिक्ता रसा रूक्षाः क्षारविदाहशोषककरा ये चातितापप्रदाः। काषायाः कटुरूक्षदुर्जरतराः संसेव्यमाना हठात्तत्सर्वं बलकृत्करोति तरसा दुग्धं निशासेवितम् ॥

अर्थ-पूर्वाह्णकाल (प्रथम प्रहर) में पिया हुआ दूध-वीर्यबढानेवाला, पुष्टिको करनेवाला और अग्निको दीपन करे है। मध्याह्नकालमें पियाहुवा दूध-बलकारक, कफनाशक, पित्तहारक, अग्निप्रदीपक, बालकोंको बढानेवाला, क्षई रोगका क्षयकरनेवाला और वृद्ध मनुष्योंके वीर्यको देनेवाला है। और रात्रिके समयमें दूध पिया हुवा अनेक दोषोंकी शान्ति करता है, पथ्यहै, इसकारण दूध नित्य सेवन करना चाहिये। कोई वैद्य ऐसा कहते हैं कि, रातमें केवल दूधही पीना चाहिये, उसके साथ चावल आदिक न खाने चाहिये, क्योंकि रात्रिमें भात आदि भोजन करनेसे अजीर्ण होजाताहै और निद्रा नहीं आतीहै, तथा पीत दूधको बाकी न छोडे। जिनकी जठराग्नि दीप्तहै और जिनका शरीर कृशहै, बालक, वृद्ध और जिनको दूध प्याराहै उनके लिये दूध

अत्यन्त हितकारीहै और तत्काल शुक्रको उत्पन्न करेहै। जो मनुष्य अत्यन्त तीव्र तथा अनेक दोषोको कुपित करनेवाले विदलोको खातेहै और जो, मनुष्य-अम्ल, कडवे, रूखे, खारी, दाहजनक, शोषकारक, तापजनक, कषैले, चरपरे, रूखे और दुर्जर पदार्थोंका सेवन करतेहै उन सबको रात्रिमे सेवन किया हुवा दूध बलको देनेवाला है।

निन्दितदुग्धम्।

विवर्णं विरसं चाम्लं दुर्गंधग्रन्थिलं पयः। वर्जयेदम्ललवणयुक्तं कुष्ठादिकृद्यतः ॥ क्षीरं मुहुर्तत्रितयोषितं यदततमतद्विकृतिं प्रयाति। षष्ठे तु दोषं कुरुते तदूर्ध्वं विषोपमं स्यादुषितं दशानाम् ॥

अर्थ-जो दूध बुरे रंगका, बुरे स्वादवाला, खट्टा,दुर्गंधित और गांठदार हो उसको नही पीना चाहिये, तथा खटाई और नमकके पदार्थोंके साथभी दूध नही सेवन करना चाहिये। तीन मुहूर्त्ततक रक्खा हुवा कच्चा दूध विकारको प्राप्त होजाता है। अर्थात् बिगड जाताहै, छः मुहुर्त्ततक रक्खा हुवा दूध अनेक प्रकारके दोषोको उत्पन्न करताहै और दश मुहूर्त्ततक रक्खा हुवा दूध विषकी समान होजाताहै।

अन्यच्च।

मुहुर्तपंचकादूर्ध्वं क्षीरं भजति विक्रियाम्। तदेव द्विगुणे काले विषवद्धन्ति मानवम् ॥ अकथित दशघटिकाक्कथित द्विगुणास्ताश्च पयः पथ्यम्। कोष्ण च स्वरसाढ्य यावत्तावत्पयः प्राश्यम् ॥ तस्माच्छृत वाप्यश्रृतं पयस्तात्कालिकं पिबेत् ॥

अर्थ-पांच मुहूर्त्तके पश्चात् विना औटाया हुवा दूध विकारको प्राप्त होजाताहै और वही दश मुहूर्त्तके बाद विषकी समान मनुष्यको मार देता है। कच्चा दूध दश घडीतक और औटा हुवा दूध बीस घडीतक पीनेयोग्य और पथ्य होताहै ऐसा मतान्तर है। मंदोष्ण और जबतक रसयुक्त होय तबतक दूध पीनेयोग्य होताहै इसकारण औटा हुवा अथवा विना औटा हुवा तत्कालका दूध पीना चाहिये।

क्षीरसात्म्यासात्म्यम्।

जीर्णज्वरे कफे क्षीणे क्षीरं स्यादमृतोपमम्। तदेव तरुणे पीतं

विषवद्धन्ति मानवम् ॥ चतुर्थभाग सलिलं निधाय यत्नाद्यदावर्त्तितमुत्तमं तत् ॥ सर्वामयघ्नं बलपुष्टिकारि वीर्यप्रदं क्षीरमतिप्रशस्तम् ॥ येषां न सात्म्यं क्षीरेण पीतं चाध्मानकारकम् । तेषामर्द्धजलं दत्त्वा नागरं पिप्पलीयुतम् ॥ आवर्त्तयेत्क्षीरशेष तत्पीत्वा सुखमाप्नुयात् । गव्यं पूर्वाह्णकाले स्यादपराह्णे तु माहिषम् ॥ क्षीरं सशर्करं पथ्यं यद्वा सात्म्यं च सर्वदा । स्निग्ध शीतं गुरु क्षीरं सर्वकाल न सेवयेत् ॥ दीप्ताग्निं कुरुते मंदं मन्दाग्निं नष्टमेव च । नित्यं तीव्राग्निना सेव्यं सुपक्वं माहिष पयः ॥ पुष्यन्ति धातवः सर्वे बलपुष्टिविवर्द्धनम् । खण्डेन सहित दुग्धं कफकृत्पवनापहम् ॥ सितासितोपलायुक्तं शुक्रल त्रिमलापहम् । सगुडं मूत्रकृच्छ्रघ्नं पित्तश्लेष्मकरं मतम् ॥

अर्थ-दूध-जीर्णज्वर, कफ और निर्बलतामे अमृतकी समान है और वही दूध नये ज्वरमें पिया हुवा विषकी समान मनुष्यको मार देवेहै । दूधमें चौथा भाग पानी मिलाकर औटावे जब वह पानी जल जाय तब सेवन करे, वह दूध श्रेष्ठ, सर्वरोगनाशक, बलवर्द्धक, पुष्टिकारक, वीर्यजनक और अत्यन्त प्रशंसायोग्य है । जिनको दूध नहीं पचता है और जिनके दूध पीनेसे अफारा हो जाताहै उनको चाहिये कि दूधमे आधा भाग पानी डालकर, एक तोला सोठ और एक तोला पीपल डाललेवे फिर औटावे, जब पानी जल जाय तब उतारकर खूब लोट पोट करे । तदनन्तर सेवन करनेसे पच जाताहै और सुख उत्पन्न होताहै ।गायका दूध पूर्वाह्णकालमे और भैसका दूध अपराह्णकालमे पीना चाहिये शर्करायुक्त और गरम कियाहुआ दूध सर्व कालमे श्रेष्ठ है । स्निग्ध, शीतल, गाढा ऐसा दूध सर्व कालमे सेवन नहीं करना चाहिये। पकाहुआ भैसका दूध-दीप्ताग्निको मद करेहै और मन्दाग्निको नष्ट करे है । इस कारण सदैव तीव्राग्निवाले मनुष्यको पीना चाहिये और मंदाग्निवाले मनुष्यको कभी भी नही पीना चाहिये, सर्व धातुओंको पुष्टि करे और बल तथा पुष्टिवर्द्धक है, खांडयुक्त दूध-कफकारक और वातविनाशक है, मिश्रीके साथ दूध-शुक्रजनक और त्रिदोपनाशक है, गुडके साथ दूध-मूत्रकृच्छ्रनाशक और पित्तश्लेष्मकारक है ।

पर्य्युषितक्षीरगुणा ।

क्षीरं पर्य्युषितं सर्व्वं गुरु विष्टम्भि दुर्जरम् ।

अर्थ-सर्व प्रकारके बासी दूध-भारी, विष्टम्भकारी और देरमे पचते हैं ।

पीयूषकिलाटक्षीरशाकतक्रपिण्डमोरटानां लक्षणानि गुणाश्च ।

क्षीरं तत्कालसूतायाः घनं पीयूषमुच्यते । नष्टदुग्धस्य पक्वस्य पिण्डः प्रोक्तः किलाटकः ॥ अपक्वमेव यन्नष्टं क्षीरं शाकं हि तत्पयः । दध्ना तक्रेण वा नष्टं दुग्धं बद्धं सुवाससा ॥ द्रवभावेन सहितं तक्रपिण्डः स उच्यते । नष्टदुग्धं भवेन्नीरं मोरटं जय्यटोऽब्रवीत् ॥ पीयूषं च किलाटश्च क्षीरशाकं तथैव च । तक्रपिण्डा इमे वृष्या बृंहणा बलवर्द्धनाः ॥ गुरवः श्लेष्मला हृद्या वातपित्तविनाशनाः । दीप्ताग्नीनां विनिद्राणां विद्रधौ चाभिपूजिता ॥ मुखशोषतृषादाहरक्तपित्तज्वरप्रणुत् । लघुर्बलकरो रुच्यो मोरटः स्यात्सितायुतः ॥

अर्थ-तुरतकी व्याई हुई गाय भैंसादिकके गाढे दूधको पीयूष (खीस) कहते हैं । जो दूध, अग्निसे जलकर पिण्डी बँध जाय उसको किलाट (मावा, खोया) कहते हैं । विना औटायेही जो कच्चा दूध फट जाय उसको क्षीरशाक (फटा दूध) कहते हैं । जो दूध दही अथवा मठेके पडनेसे नष्ट होगयाहो फिर उस दही वा छाउसे फटे हुए दूधको झीने वस्त्रसे बाँधकर उसका पानी निकाल डाले जब उसका पिण्ड होजाय और जलका उसमे कुछ अंश न रहे तब उसको तक्रपिण्ड कहते है । फटे दूधके पानीको जय्यटदेवने मोरट कहाहै । पीयूष, किलाट, क्षीरशाक और तक्रपिण्ड यह सब वीर्य्यवर्द्धक, पुष्टिकारक, बलवर्द्धक, भारी, कफकारी, हृदयको हितकारी और वातपित्तको दूर करे हैं । जिनकी जठराग्नि दीपन है जिनको निद्रा नहीं आती है और जिनको विद्रधिरोग है उन मनुष्योंको यह परमहितकारीहै । चीनीके साथ मोरट (फटे दूध) के पानीको पीनेसे मुखशोष, तृषा, दाह, रक्तपित्त और ज्वर दूर होताहै तथा लघु, बलकारक और रुचिकारक है ।

क्षीरसन्तानिकागुणा ।

सन्तानिका गुरुः शीता वृष्या पित्तास्रदाहनुत् ।

तर्पणी बृंहणी स्निग्धा बलासबलशुक्रदा ॥

अर्थ-दूधकी मलाई-भारी, शीतल, वीर्य्यवर्द्धक, रक्तपित्तनाशक, दाहनिवारक, तृप्तिकारक,पुष्टिजनक, स्निग्ध तथा कफ, बल और शुक्रको करेहै ।

चण्डाहक्षीरगुणा ।

क्षीरं गव्यमथाजं वा कोष्णं दण्डाहतं पिबेत् ।
लघु वृष्यं ज्वरहरं वातपित्तकफापहम् ॥

अर्थ-गाय तथा बकरीके दूधको अल्प उष्ण करके रईसे मथकर पीवे वह मथाहुवा दूध हलका, वीर्य्यवर्द्धक, ज्वरनाशक तथा वात पित्त और कफको नष्ट करेहै ।

गोदुग्धादिभवफेनगुणा ।

गोदुग्धप्रभवं किंवा छागीदुग्धसमुद्भवम् । भवेत्फेनं त्रिदोषघ्नं रोचनं बलवर्द्धनम् ॥ वह्निवृद्धिकरं वृष्यं सद्यस्तृप्तिकरं लघु । अतिसारेऽग्निमान्द्ये च ज्वरे जीर्णे प्रशस्यते ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-गायके दूधके झाग अथवा बकरीके दूधके झाग-त्रिदोषनाशक,रुचिकारक,बलवर्द्धक,अग्निवर्द्धक,वीर्य्यवर्द्धक,तत्काल तृप्तिकारक, हलके तथा अतीसार,मंदाग्नि और जीर्णज्वरमे हितकारी है ।

पयसः केवलस्यापि पदार्था बलवृष्यदाः ।
हिताः सुगन्धिनः पुष्टिधातुवृद्धिकराग्निदाः ॥ (नि० र०)

अर्थ-पेडे-बरफी, रबडी इत्यादि शुद्ध दूधके बने हुये पदार्थ-बलकारक, वीर्य्यवर्द्धक, हितकारी,सुगन्धिजनक तथा पुष्टि, धातु और अग्निवर्द्धक है ।

इति श्रीशालिग्रामनिघण्टुभूषणे दुग्धवर्गः समाप्तः ॥ १३ ॥

अथ दधिवर्गः ।

दधि पयस्यं मंगल्यं विरलं च दधिद्रप्सम् ।

अर्थ-दधि, पयस्य, मंगल्य, विरल, दधिद्रप्स, (घनेतर, क्षीरज, क्षीरोद्भव, दिग्ध, तक्रजन्म, साम्लक)

संस्कृतभाषामें	दधि ।
हिन्दीभाषामें	दही ।
वंगभाषामें	दइ ।
मराठीभाषामें	दहीं ।
गुजरातीभाषामें	दहि ।
कर्णाटकीभाषामें	मसरु ।
तैलिंगीभाषामें	पेरुगु ।
इंग्रेजीभाषामें	करड्लूडमिल्क । Curdled Milk
फारसीभाषामें	दोग ।
अरबीभाषामें	जुगरात ।

साधारणदधिगुणाः ।

पाकेम्लमुष्णं दधि दीपनं च स्निग्धं कषायं सरसं गुरु स्यात्। संग्राहि पित्तास्रकफप्रदं स्यान्मेदःप्रदं शोफकरं प्रसिद्धम् ॥

अर्थ-दही-पचनेमें खट्टा,गरम स्निग्ध,दीपन,कषेला,भारी, मलरोधक,रक्तपित्त कारक,कफकारक,मेदजनक और सूजनको उत्पन्न करेहै।

अन्यच्च ।

दध्यम्लं गुरुवातदोषशमनं संग्राहि मूत्रावहं बल्यं शोफकफार्त्यरुच्यशमनं वह्नेश्च शान्तिप्रदम् । कासश्वासस्सपीनसेषु विषमे शीतज्वरे स्याद्धितं रक्तोद्रेककरं करोति सततं शुक्रस्य वृद्धिं पराम् ॥(रा० नि०)

अर्थ-दही-अम्ल,भारी,वातके विकारको दूर करनेवाला,मलरोधक मूत्रजनक,बलकारक,शोफनाशक,कफहारक, अरुचिनिवारक, [illegible]को शान्त करनेवाला तथा खाँसी, श्वास, पीनस, विषमज्वर [illegible]शीतज्वरको दूर करे है और रक्तपित्त तथा शुक्रवर्द्धक है ।

अन्यच्च ।

[illegible]पनं स्निग्धं कषायानुरसं गुरु । पाकेम्लं ग्राहि पित्तास्र[illegible]फप्रदम् ॥ मूत्रकृच्छ्रे प्रतिश्याये शीतके विष[illegible]रेऽरुचौ कार्श्ये शस्यते बलवर्द्धनम्॥ (म०वि०)

[illegible]

अर्थ-दही-गरम, दीपन, स्निग्ध, कुछेक कषेला, भारी, पाकमें अम्ल, मलरोधक तथा रक्तपित्त, सूजन, मेद और कफको करे है। मूत्रकृच्छ्र, प्रतिश्याय, शीत, विषमज्वर, अतिसार, अरुचि और कृशतामें दही हितकारी है तथा बलवर्द्धक है।

अन्यच्च।

दधि स्वाद्वग्निदं हृद्यं स्नेहनं रोचनं गुरु ।
पाकेऽम्लमुष्णं वातघ्नं माङ्गल्यं बृंहणं परम् ॥ (राजवल्लभ)

अर्थ-दही-स्वादिष्ठ, अग्निजनक, हृदयको हितकारी, स्निग्ध, रुचिकारी, भारी, पाकमे अम्ल, गरम, वातनाशक, मंगलकारक और पुष्टिकारक है।

दधिभेदाः।

आदौ मंदं ततः स्वादु स्वाद्वम्लं च ततः परम् ।
अम्लं चतुर्थमत्यम्लं पंचमं दधि पञ्चधा ॥

अर्थ-प्रथम मन्द, फिर मधुर, फिर मधुरखट्टा, उसके उपरान्त खट्टा और फिर अत्यन्त खट्टा ऐसे दही पांचप्रकारका होता है।

मन्दादीनां लक्षणानि गुणाश्च।

मन्दं दुग्धवदव्यक्तं रसं किञ्चिद्धनं भवेत् । मन्दं स्यात्सृष्टविण्मूत्रं दोषत्रयविदाहकृत् ॥ यत्सम्यग्घनतां यातं व्यक्तं स्वादुरसं भवेत् । अव्यक्ताम्लरसं तत्तु स्वादु विज्ञैरुदाहृतम् ॥ स्वादु स्यादत्यभिष्यन्दि वृष्यं मेदकफावहम् ॥ वातघ्नं मधुरं पाके रक्तपित्तप्रसादनम् ॥ स्वाद्वम्लं सान्द्रमधुरं कषायानुरसं भवेत् । स्वाद्वम्लस्य गुणा ज्ञेयाः सामान्यदधिवज्जनैः॥ यत्तिरोहितमाधुर्य्यं व्यक्ताम्लत्वं तदम्लकम् । अम्लन्तु दीपनं पथ्यं रक्तश्लेष्मविवर्द्धनम् ॥ तदत्यम्लं दन्तरोमहर्षकण्ठादिदाहकृत् । अत्यम्लं दीपनं रक्तपित्तपुष्टिकरं परम् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-जो दूध कुछेक जमकर गाढा पडगयाहो और जिसमें मधुर अम्लादिक किसी प्रकारका स्वाद न मालूम हो उस दहीको मंद

कहतेहैं । मंद दही-मलमूत्रको करनेवाला तथा त्रिदोष और दाहको करे है। जो जमकर गाढा होगया हो और जिसमे स्वादु रस मालूम हो तथा अम्लरस प्रगट न हो उसको स्वादु दही जानना स्वादु दही अत्यन्त अभिष्यन्दी, वीर्य्यवर्द्धक, मेदजनक, कफकारी, वातनाशक, पचनेमे मधुर और रक्तपित्तको कुपित करेहै । जो दधि अम्ल और मधुर दोनो रसयुक्त हो सान्द्र तथा कुछेक कषेला हो उसको स्वाद्वम्ल दही कहते है। स्वाद्वम्ल दहीके गुण सामान्य दहीकी समान जानने। जिस दहीकी मधुरता नाश होकर खट्टा होगया हो उस दहीको अम्लदही कहते है, अम्लदही-दीपन, रक्तपित्त और कफकारक है । जो दही अत्यन्त खट्टा हो, दातोको खट्टे करे, जिसके खानेसे रोमांच होआवे और कण्ठादिमे दाहको उत्पन्न करे उस दहीको अत्यम्लदधि कहते है। अत्यम्लदही-दीपन, रुधिरविकार, वात और पित्तको करे है ।

मधुरं भक्षयेच्चैव चात्यम्लं वर्जयेत्सदा ।
मधुरं दधिरोगघ्नमत्यम्लं रोगकारकम् ॥

अर्थ-मधुर दधि खाना चाहिये और अत्यन्त खट्टा दही नहीं खाना चाहिये। कारण यह है कि, मधुर दही रोगनाशक और अत्यन्त खट्टा दही रोगकारक है ।

गव्यदधिगुणाः ।

दधिगव्यमतिपवित्रं शीतं स्निग्धं च दीपनं बलकृत् ।
मधुरमरोचकहारि ग्राहि च वातामयघ्नं च ॥ (रा०नि०)

अर्थ-गायका दही-अत्यन्त पवित्र,शीतल,स्निग्ध,दीपन,बलकारक,मधुर,अरुचिको हरनेवाला,मलरोधक और वातरोगनाशक है ।

अन्यच्च ।

गव्यं दध्युत्तमं बल्यं पाके स्वादु रुचिप्रदम् ।
पवित्रं दीपनं स्निग्धं पुष्टिकृत्पवनापहम् ॥
उक्तं दध्नामशेषाणां मध्ये गव्यं गुणाधिकम् । (भावप्रकाश)

अर्थ-गायका दही-उत्तम,बलकारक,पचनेमे स्वादिष्ठ, रुचिकारक,पवित्र,दीपन,स्निग्ध,पुष्टिकारक और वातविनाशक है । सर्व दहियोमें गायका दही-गुणोमे सबसे अधिक है ।

अरोचके पीनसकासकृच्छ्रे शीतज्वरे तद्विषमज्वरे च ।

दुर्नामरोगे ग्रहणीगदे च गव्यं प्रशस्तं दधि सर्वदैव ॥

अर्थ-गायका दही-अरुचि,पीनस, खांसी, मूत्रकृच्छ्र, शीतज्वर विषमज्वर, बवासीर और संग्रहणीरोगमे हितकारी है।

माहिषं दधि सुस्निग्ध श्लेष्मलं वातपित्तनुत्।
स्वादुपाकमभिष्यन्दि वृष्यं गुर्वस्रदूषणम् ॥

अर्थ-भैसका दही-स्निग्ध, कफकारक, वातपित्तनाशक, स्वादुपाकी, अभिष्यन्दि,वीर्य्यवर्द्धक, भारी और रुधिरको दूषित करेहै।

अन्यच्च।

घनं माहिषमुद्दिष्टं मधुरं रक्तदोषकृत्।
कफशोफहरं स्वस्थं पित्तकृद्वातकोपनम् ॥ (हा०सं०)

अर्थ-भैसका दही-गाढा, मधुर, रुधिरको दूषित करनेवाला, कफनाशक, स्वस्थ,पित्तकारक और वातको कुपित करेहै।

अपिच।

महिष्यास्तु दधि प्रोक्तं रक्तपित्तप्रसादनम्। वृष्यं स्निग्धं च मधुरं शोधनं कफकारकम्॥गुर्वभिष्यदि बल्यं स्याच्छुक्रलं च प्रकीर्त्तितम् ॥ पित्तं वातं श्रमं चैव नाशयेदिति कीर्त्तितम् ॥ (नि० र०)

अर्थ-भैसका दही-रक्तपित्तको कुपित करनेवाला, वीर्य्यवर्द्धक, स्निग्ध, मधुर, शोधन, कफकारक, भारी, अभिष्यंदी, बलकारक, शुक्रजनक तथा पित्त, वात और श्रमको दूर करेहै।

छागदधिगुणाः।

दध्याजं कफपित्तनाशनकरं वातघ्नमुष्णं तथा दुर्नामश्वसने च कासिनि हितं चाग्नेश्च सदीपनम्। वृष्यं बृंहणकान्तिदं बलकरं सर्वामयध्वंसनं आमार्शोऽत्रतिसारके निगदितं पथ्यं सदा प्राणिनाम् ॥

अर्थ-बकरीका दही-कफपित्तनाशक, वातविनाशक, गरम, वीर्य्यवर्द्धक, पुष्टिकारक, कान्तिकारक, बलवर्द्धक, सर्वरोगनाशक, अग्निदीपक तथा बवासीर,श्वास, खाँसी, आम, अर्श और अतिसाररोगको दूर करेहै और सदैव मनुष्योंको पथ्य है।

अन्यच्च।

आजं दधिभवेच्चोष्णं क्षयवातविनाशनम्। दुर्नामश्वासकासे-

षु हितमग्निप्रदीपनम् ॥ विपाके मधुरं वृष्य रक्तपित्त प्रसादनम् । शस्त प्राभातिकं प्रोक्तं वातपित्तनिबर्हणम् ॥ (अ०हा०)

अर्थ-बकरीका दही-गरम, क्षय, वातनाशक, बवासीर, श्वास और खाँसीमे हितकारी, अग्निप्रदीपक, पचनेमे मधुर, वीर्य्यवर्द्धक, रक्तपित्तप्रसादन और प्रातःकालका बकरीका दही-श्रेष्ठ और वात-पित्त-निवारक है ।

अन्यच्च ।

दध्याजं कफवातघ्न लघूष्णं नेत्रदोषजित् ।
दुनामश्वासकासघ्न रुच्य दीपनपाचनम् ॥ (रा० नि०)

अर्थ-बकरीका दही-कफवातनाशक, हलका, नेत्रविकारनाशक, बवासीरको हरनेवाला, श्वासनाशक, कासघ्न, रुचिकारक, दीपन और पाचन है ।

आविकदधिगुणा ।

कोपनं कफवातानां दुर्नाम्नां चाविक दधि।दीपनीयन्तु चक्षुष्यं पाण्डुकृच्चापि वातुलम् ॥ रूक्षमुष्णं कषाय स्यादत्यभिष्यन्दि दोषलम् । रसे पाके च मधुरं कषायं कुष्ठवर्द्धनम् (अ०हा०)

अर्थ-भेडका दही कफ, वात और बवासीरको कुपित करनेवाला, जठराग्निको दीपन करनेवाला, नेत्रोंको हितकारी, पाण्डुरोगको उत्पन्न करनेवाला. बादी, रूखा, गरम, कषेला, अत्यन्त अभिष्यन्दि, दोषजनक,रस,और पाकमे मधुर,कषाय और कुष्ठको बढानेवालाहै।

अन्यच्च ।

आविकं दधि सुस्निग्धं कफपित्तकर गुरु ।
वाते च रक्तवाते च पथ्य शोफव्रणापहम् ॥ (रा०नि०)

अर्थ-भेडका दही-स्निग्ध, कफपित्तकारक, भारी, वात और रक्तवातमे पथ्य तथा सूजन और बवासीरको दूर करे है ।

हस्तिनीदधिगुणा ।

हस्तिनी दधिकषायलघूष्ण पक्तिशूलशमनं रुचिप्रदम् ।
दीप्तिद खलु बलासगदघ्नं वीर्यवर्द्धनबलप्रदमुक्त ॥

अर्थ-हाथिनीका दही-कषेला, हलका, गरम, पक्तिशूलनिवारक, रुचिकारक,अग्निप्रदीपक,कफनाशक,वीर्य्यवर्द्धक और बलदायकहै ।

अन्यच्च।

हस्तिन्या दधि वीर्य्योष्णं कषायं कफवातनुत्।

अर्थ-हथिनीका दही-उष्णवीर्य्य, कषेला और कफ तथा वातनाशक है।

अश्वीदधिगुणाः।

अश्वीदधि स्यान्मधुरं कषायं कफार्तिमूर्च्छामयहारि रूक्षम्।
वातालपदं दीपनकारि नेत्रदोषापहं तत्कथितं पृथिव्याम्॥

अर्थ-घोडीका दही-मधुर, कसेला, कफकी वेदना और मूर्च्छारोगको दूर करनेवाला, रूखा, अल्पवातकारक, दीपन और नेत्रोंके विकारोंको हरनेवाला है।

अन्यच्च।

वाजिजं समधुरं बलवर्णस्वेददाहमुपयाति गुरुत्वम्।
दीपनीयमतिदोषलं सदा चाक्षुषं दधि मरुत्प्रकोपि च॥

अर्थ-घोडीका दही-मधुर, बलकारक, वर्णकारक, पसीनेको लानेवाला, दाहजनक, भारी, अग्निप्रदीपक, अत्यन्त दोषकारक, नेत्रोंको हितकारी और वातको कुपित करेहै।

गर्दभीदधिगुणाः।

गर्दभीदधि रूक्षोष्णं लघु दीपनपाचनम्।
मधुराम्लरसं रुच्यं वातदोषविनाशनम्॥ (रा० नि०)

अर्थ-गधीका दही-रूखा, गरम, हलका, दीपन, पाचन, मधुर, अम्ल, रुचिकारी और वातके दोषोंको दूर करे है।

उष्ट्रीदधिगुणाः।

वातार्शकुष्ठक्रिमिनाशनं च औष्ट्रं विपाके कटु तिक्तकं च।
सक्षारमम्लं कृमिकोष्ठनाशनं बल्यञ्च सन्तर्पणमाशुकारि॥

अर्थ-ऊंटनीका दही-बादीकी बवासीर, कोढ, कृमि और कोठेके रोगको दूर करे है। पाकमे कटु, तिक्त, क्षार, अम्ल बलकारक और तत्काल तृप्तिकारक है।

अन्यच्च।

विपाके कटु सक्षारं गुरु भेद्यौष्ट्रिक दधि।
वातमर्शांसि कुष्ठानि कृमीन्हंत्युदरं परम्॥ (हा० सं०)

अर्थ-ऊंटनीका दही-पचनेमे कटु, खारी, भारी, भेदक तथा वात, अर्श, कुष्ठ, कृमि और उदररोगको हरे है ।

मानुषीदधिगुणा ।

स्निग्धं विपाके मधुरं बल्य सन्तर्पणं हितम् ।
चक्षुष्यं ग्राहि दोषघ्न दधि नार्य्या गुणोत्तमम् ॥ (हा०सं०)

अर्थ-स्त्रीका दही-स्निग्ध, पचनेमे मधुर, बलकारक, तृप्तिजनक, पथ्य, नेत्रोंको हितकारी, मलरोधक, वातादिदोषनाशक और अधिक गुणवाला है ।

वार्षिकदधिगुणा ।

वार्षिक पित्तकृद्वातशमनं कफकोपनम् ।
गुल्मार्शःकुष्ठरोगे च रक्तपित्ते न शस्यते ॥

अर्थ-वर्षाऋतुका दही-पित्तकारक, वातनिवारक, कफको कुपित करनेवाला तथा गुल्म, बवासीर, कुष्ठ और रक्तपित्तरोगमे हितकारी नही है ।

शारदीयदधिगुणा ।

शारद दधि गुर्व्वम्ल रक्तपित्ते न शस्यते ॥
शोफतृष्णाज्वरार्त्तानां करोति विषमज्वरम् ॥

अर्थ-शरदृऋतुका दही-भारी, खट्टा, रक्तपित्तवर्द्धक, तथा सूजन, तृषा और ज्वरसे पीडित मनुष्योंके विषमज्वरको उत्पन्न करे है ।

हैमन्तकदधिगुणा ।

गुरु स्निग्धं सुमधुरं कफकृद्बलवर्द्धनम् ।
वृष्यं मेध्य च हैमन्त पुष्टिदं तुष्टिवृद्धिदम् ॥

अर्थ-हेमन्तऋतुका दही-भारी, स्निग्ध, मधुर, कफकारक, बलवर्द्धक वीर्य्यजनक, मेधाकारक, पुष्टिदायक और तुष्टिवर्द्धक है ।

शैशिरदधिगुणा ।

वृष्यं बलकर पैत्तं श्रमस्यापहरं परम् ।
शिशिर सघन चाम्लं पिच्छिलं गुरु चैव च ।

अर्थ-शिशिरऋतुका दही-वीर्य्यवर्द्धक, बलकारक, पित्तजनक, श्रमनाशक, गाढा, खट्टा, पिच्छिल और भारी है ।

वासन्तिकदधिगुणा ।

वासन्तं मधुर स्निग्ध किञ्चिदम्लं कफात्मकम् ।

बलकृद्वीर्य्यकृत्प्रोक्तं वसन्ते न प्रशस्यते ॥

अर्थ-वसन्तऋतुका दही-बादी, मधुर, स्निग्ध, किंचित् खट्टा, कफकारी, बलकारक, वीर्य्यवर्द्धक,वसन्तऋतुमे दही श्रेष्ठ नहीं है।

ग्रैष्मिकदधिगुणाः।

लघु चाम्लं भवेद्ग्रीष्मे चात्युष्णं रक्तपित्तकृत्।
शोषभ्रमपिपासाकृद्दधि प्रोक्तं न ग्रैष्मिके ॥ (हारीतसं०)

अर्थ-ग्रीष्मऋतुका दही-हलका, खट्टा, अत्यन्त गरम, रक्तपित्त-कारक तथा शोष, भ्रम और प्यासको करनेवाला है इस ऋतुका दही उत्तम नहीं है।

पक्वदुग्धभवदधिगुणाः।

पक्वदुग्धभवं रुच्यं दधि स्निग्धं गुणोत्तमम्।
पित्तानिलापहं सर्वधात्वग्निबलवर्द्धनम् ॥

अर्थ-औटाये हुवे दूधका दही-रुचिकारक, स्निग्ध,गुणोमे श्रेष्ठ, पित्तवातनाशक तथा सम्पूर्णधातु, अग्नि और बलको बढावे है।

निःसारदधिगुणाः।

असारं दधि संग्राहि शीतलं वातलं लघु।
विष्टम्भि दीपनं रुच्यं ग्रहणीरोगनाशनम्।

अर्थ-जिस दहीका मक्खन निकाल लिया हो फिर उसको जमादिया हो ऐसा असार दही-मलरोधक, शीतल, वातकारक, हलका, विष्टम्भकारक, दीपन, रुचिकारी और संग्रहणीरोगको दूर करे है।

गालितदधिगुणाः।

गालितं दधि सुस्निग्धं वातघ्नं कफकृद्गुरु।
बलपुष्टिकरं रुच्यं मधुरं नातिपित्तकृत् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-छानाहुआ और निचोडाहुआ दही-स्निग्ध, वातनाशक, कफकारक, भारी, बलकारक, पुष्टिजनक, रुचिकारक, मधुर और अत्यन्त पित्तकारक नहीं है।

सितायुक्तदधिगुणाः।

सितायुक्तं दधि प्रोक्तं पित्तदाहतृषाहरम्।
रक्तदोषहरं चैव मुनिभिः परिकीर्त्तितम् ॥

अर्थ-ऊंटनीका दही-पचनेमे कटु, खारी, भारी, भेदक तथा वात, अर्श, कुष्ठ, कृमि और उदररोगको हरे है।

मानुषीदधिगुणा ।

स्निग्धं विपाके मधुर बल्य सन्तर्पणं हितम्।
चक्षुष्यं ग्राहि दोषघ्न दधि नार्य्या गुणोत्तमम् ॥(हा०सं०)

अर्थ-स्त्रीका दही-स्निग्ध, पचनेमे मधुर, बलकारक, तृप्तिजनक, पथ्य, नेत्रोंको हितकारी, मलरोधक, वातादिदोषनाशक और अधिक गुणवाला है।

वार्षिकदधिगुणा ।

वार्षिक पित्तकृद्वातशमन कफकोपनम्।
गुल्मार्शःकुष्ठरोगे च रक्तपित्ते न शस्यते ॥

अर्थ-वर्षाऋतुका दही-पित्तकारक, वातनिवारक, कफको कुपित करनेवाला तथा गुल्म, बवासीर, कुष्ठ और रक्तपित्तरोगमें हितकारी नहीं है।

शारदीयदधिगुणा ।

शारदं दधि गुर्व्वम्ल रक्तपित्ते न शस्यते ॥
शोफतृष्णाज्वरार्त्तानां करोति विषमज्वरम् ॥

अर्थ-शरदऋतुका दही-भारी, खट्टा, रक्तपित्तवर्द्धक, तथा सूजन, तृषा और ज्वरसे पीडित मनुष्योंके विषमज्वरको उत्पन्न करे है।

हैमन्तकदधिगुणा ।

गुरु स्निग्धं सुमधुरं कफकृद्बलवर्द्धनम्।
वृष्यं मेध्य च हैमन्तं पुष्टिदं तुष्टिवृद्धिदम् ॥

अर्थ-हेमन्तऋतुका दही-भारी, स्निग्ध, मधुर, कफकारक, बलवर्द्धक वीर्य्यजनक, मेधाकारक, पुष्टिदायक और तुष्टिवर्द्धक है।

शैशिरदधिगुणा ।

वृष्य बलकरं पैत्त श्रमस्यापहर परम्।
शैशिर सघनं चाम्ल पिच्छिलं गुरु चैव च।

अर्थ-शिशिरऋतुका दही-वीर्य्यवर्द्धक, बलकारक, पित्तजनक, श्रमनाशक, गाढा, खट्टा, पिच्छिल और भारी है।

वासन्तिकदधिगुणा ।

वातलं मधुर स्निग्ध किञ्चिदम्लं कफात्मकम्।

बलकृद्वीर्य्यकृत्प्रोक्तं वसन्ते न प्रशस्यते ॥

अर्थ-वसन्तऋतुका दही-बादी, मधुर, स्निग्ध, किंचित् खट्टा, कफकारी, बलकारक, वीर्य्यवर्द्धक,वसन्तऋतुमे दही श्रेष्ठ नहीं है।

ग्रैष्मिकदधिगुणाः।

लघु चाम्लं भवेद्ग्रीष्मे चात्युष्णं रक्तपित्तकृत्।
शोषभ्रमपिपासाकृद्दधि प्रोक्तं न ग्रैष्मिके ॥ (हारीतसं०)

अर्थ-ग्रीष्मऋतुका दही-हलका, खट्टा, अत्यन्त गरम, रक्तपित्तकारक तथा शोष, भ्रम और प्यासको करनेवाला है इस ऋतुका दही उत्तम नहीं है।

पक्कदुग्धभवदधिगुणाः।

पक्कदुग्धभवं रुच्यं दधि स्निग्धं गुणोत्तमम्।
पित्तानिलापहं सर्वधात्वग्निबलवर्द्धनम् ॥

अर्थ-औटाये हुवे दूधका दही-रुचिकारक, स्निग्ध,गुणोमें श्रेष्ठ, पित्तवातनाशक तथा सम्पूर्णधातु, अग्नि और बलको बढावे है।

निःसारदधिगुणाः।

असारं दधि संग्राहि शीतलं वातलं लघु।
विष्टम्भि दीपनं रुच्यं ग्रहणीरोगनाशनम्।

अर्थ-जिस दहीका मक्खन निकाल लिया हो फिर उसको जमादिया हो ऐसा असार दही-मलरोधक, शीतल, वातकारक, हलका, विष्टम्भकारक, दीपन, रुचिकारी और संग्रहणीरोगको दूर करे है।

गालितदधिगुणाः।

गालितं दधि सुस्निग्धं वातघ्नं कफकृद्गुरु।
बलपुष्टिकरं रुच्यं मधुरं नातिपित्तकृत् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-छानाहुआ और निचोडाहुआ दही-स्निग्ध, वातनाशक कफकारक, भारी, बलकारक, पुष्टिजनक, रुचिकारक, मधुर और अत्यन्त पित्तकारक नहीं है।

सितायुक्तदधिगुणाः।

सितायुक्तं दधि प्रोक्तं पित्तदाहतृषाहरम्।
रक्तदोषहरं चैव मुनिभिः परिकीर्त्तितम् ॥

अर्थ-ऊंटनीका दही-पचनेमे कटु,खारी, भारी, भेदक तथा वात, अर्श, कुष्ठ, कृमि और उदररोगको हरे है।

मानुषीदधिगुणा।

स्निग्धं विपाके मधुरं बल्यं सन्तर्पणं हितम्।
चक्षुष्यं ग्राहि दोषघ्नं दधि नार्य्या गुणोत्तमम्॥(हा०सं०)

अर्थ-स्त्रीका दही-स्निग्ध, पचनेमे मधुर, बलकारक, तृप्तिजनक, पथ्य, नेत्रोको हितकारी, मलरोधक, वातादिदोषनाशक और अधिक गुणवाला है।

वार्षिकदधिगुणाः।

वार्षिकं पित्तकृद्वातशमनं कफकोपनम्।
गुल्मार्शःकुष्ठरोगे च रक्तपित्ते न शस्यते॥

अर्थ-वर्षाऋतुका दही-पित्तकारक, वातनिवारक, कफको कुपित करनेवाला तथा गुल्म,बवासीर, कुष्ठ और रक्तपित्तरोगमे हितकारी नही है।

शारदीयदधिगुणा।

शारदं दधि गुर्व्वम्लं रक्तपित्ते न शस्यते॥
शोफतृष्णाज्वरार्त्तानां करोति विषमज्वरम्॥

अर्थ-शरदृऋतुका दही-भारी, खट्टा, रक्तपित्तवर्द्धक, तथा सूजन, तृपा और ज्वरसे पीडित मनुष्योके विषमज्वरको उत्पन्न करे है।

हैमन्तकदधिगुणा।

गुरु स्निग्धं सुमधुरं कफकृद्बलवर्द्धनम्।
वृष्यं मेध्यं च हैमन्तं पुष्टिदं तुष्टिवृद्धिदम्॥

अर्थ-हेमन्तऋतुका दही-भारी, स्निग्ध,मधुर,कफकारक,बलवर्द्धक वीर्य्यजनक, मेधाकारक, पुष्टिदायक और तुष्टिवर्द्धक है।

शैशिरदधिगुणा।

वृष्यं बलकरं पैत्तं श्रमस्यापहरं परम्।
शैशिरं सघनं चाम्लं पिच्छिलं गुरु चैव च।

अर्थ-शिशिरऋतुका दही-वीर्य्यवर्द्धक, बलकारक, पित्तजनक, श्रमनाशक, गाढा, खट्टा, पिच्छिल और भारी है।

वासन्तिकदधिगुणा।

वातलं मधुरं स्निग्धं किञ्चिदम्लं कफात्मकम्।

बलकृद्वीर्य्यकृत्प्रोक्तं वसन्ते न प्रशस्यते ॥

अर्थ-वसन्तऋतुका दही-बादी, मधुर, स्निग्ध, किंचित् खट्टा, कफकारी, बलकारक, वीर्य्यवर्द्धक,वसन्तऋतुमे दही श्रेष्ठ नहीं है।

ग्रैष्मिकदधिगुणाः।

लघु चाम्लं भवेद्ग्रीष्मे चात्युष्ण रक्तपित्तकृत्।
शोषभ्रमपिपासाकृद्दधि प्रोक्तं न ग्रैष्मिके ॥ (हारीतसं०)

अर्थ-ग्रीष्मऋतुका दही-हलका, खट्टा, अत्यन्त गरम, रक्तपित्तकारक तथा शोष, भ्रम और प्यासको करनेवाला है इस ऋतुका दही उत्तम नही है।

पक्वदुग्धभवदधिगुणाः।

पक्वदुग्धभवं रुच्यं दधि स्निग्धं गुणोत्तमम्।
पित्तानिलापहं सर्वधात्वग्निबलवर्द्धनम् ॥

अर्थ-औटाये हुवे दूधका दही-रुचिकारक, स्निग्ध,गुणोमे श्रेष्ठ, पित्तवातनाशक तथा सम्पूर्णधातु, अग्नि और बलको बढावे है।

निःसारदधिगुणाः।

असारं दधि संग्राहि शीतलं वातलं लघु।
विष्टम्भि दीपनं रुच्यं ग्रहणीरोगनाशनम्।

अर्थ-जिस दहीका मक्खन निकाल लिया हो फिर उसको जमादिया हो ऐसा असार दही-मलरोधक, शीतल, वातकारक, हलका, विष्टम्भकारक, दीपन, रुचिकारी और संग्रहणीरोगको दूर करे है।

गालितदधिगुणाः।

गालितं दधि सुस्निग्धं वातघ्नं कफकृद्गुरु।
बलपुष्टिकरं रुच्यं मधुरं नातिपित्तकृत् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-छानाहुआ और निचोडाहुआ दही-स्निग्ध, वातनाशक, कफकारक, भारी, बलकारक, पुष्टिजनक, रुचिकारक, मधुर और अत्यन्त पित्तकारक नहीं है।

सितायुक्तदधिगुणाः।

सितायुक्तं दधि प्रोक्तं पित्तदाहतृषाहरम्।
रक्तदोषहरं चैव मुनिभिः परिकीर्त्तितम् ॥

अर्थ-चीनीयुक्त दही-पित्त, दाह, तृषा और रुधिरके विकारको दूर करे है।

गुडयुक्तदधिगुणाः।

गुडयुक्तं दधि प्रोक्तं तर्पणं धातुवर्द्धकम्।
गुरुवातहरं चैव मुनिभिः परिकीर्त्तितम्। (नि० र०)

अर्थ-गुडमिश्रित दही-तृप्तिकारक, धातुवर्द्धक, भारी और वातविनाशक है।

दधिभक्षणनिषिद्धता।

न नक्तं दधि भुञ्जीत न चाप्यघृतशर्करम्।
नामुद्गसूपं नाक्षौद्रं नोष्णमामलकैर्विना॥ (सु० सं०)

अर्थ-रात्रिमे दही नही खाना चाहिये तथा घृतरहित दही मिश्री, मूंगकी दाल, मधु और आमलेके विना तथा उष्ण दही खाना चाहिये।

शरद्ग्रीष्मवसन्तेषु प्रायशो दधि गर्हितम्।
हेमन्ते शिशिरे चैव वर्षासु दधि शस्यते॥ (सु० सं०)

अर्थ-शरद,ग्रीष्म और वसन्तऋतुमे दही प्रायः अपकारी है और हेमन्त शिशिर तथा वर्षाऋतुमे दही हितकारी है।

अक्रमदधिभक्षणदोषाः।

ज्वरासृक्पित्तवीसर्पकुष्ठपाण्ड्वामयान्भ्रमान्।
प्राप्नुयात्कामलाश्चापि विधिं हित्वा दधिप्रियः॥

अर्थ-विना नियमके दहीको खानेसे-ज्वर,रक्तपित्त, विसर्प, कुष्ठ, पाण्डु, भ्रम और कामलादिक अनेक प्रकारके रोग उत्पन्न होते हैं।

त्रिकट्वादियुक्तदधिगुणाः।

दधि त्रिकटुकयुक्तं राजिकाचूर्णमिश्रं कफहरमनिलघ्नं वह्निसंधुक्षणं च। तुहिनशिशिरकाले सेवितं चातिपथ्यं रचयति तनुदार्ढ्यं कान्तिमत्त्वं च नृणाम्॥ (रा० नि०)

अर्थ-दहीमे त्रिकुटेका चूर्ण, सेधानोन और राईका चूर्ण मिलाकर हेमन्त और शिशिर ऋतुमे खानेसे कफको दूर करे, वातका नाश करे, अग्निको दीपन करे, अत्यन्त पथ्य तथा शरीरको दृढ करे और अङ्गमें कान्तिको उत्पन्न करेहै।

सरस्य मस्तुनश्च लक्षणानि गुणाश्च ।

दध्नस्तूपरि यो भागो घनः स्नेहसमन्वितः । स लोके सर इत्युक्तो दध्नो मण्डस्तु मस्त्विति ॥ सरः स्वादुर्गुरुर्वृष्यो वातवह्निप्रणाशनः।साम्लो वस्तिप्रशमनः पित्तश्लेष्मविवर्द्धनः। मस्तु क्लमहरं बल्यं लघु भक्ताभिलाषकृत् । स्रोतोविशोधनं ह्लादि कफतृष्णानिलापहम् ॥ अवृष्यं प्रीणनं शीघ्रं भिनत्ति मलसञ्चयम् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-दहीके ऊपरके स्नेहयुक्त गाढे भागको लोकमें सर (मलाई) कहते हैं और दहीके जलको मस्तु (तोड) कहते हैं । दहीकी मलाई-स्वादिष्ठ, भारी, वीर्य्यवर्द्धक, वातविनाशक, जठराग्निका मंद करनेवाली, खट्टी, वस्तिरोगनाशक, पित्त और कफवर्द्धक है । दहीका जल-क्लमनाशक, बलकारक, भोजनमें रुचिको करनेवाला, शरीरके स्रोतोंको शोधनेवाला, आनन्दजनक,कफनाशक, तृषानिवारक, वातविनाशक, अवृष्य, तृप्तिकरनेवाला और शीघ्रही मलके संचयको भेदनेवाला है ।

दधिकूर्चिका लक्षणगुणाश्च ।

अर्धोदके पयस्युष्णे दध्यम्लं दधिकूर्चिका ।
वातघ्नी ग्राहिणी रूक्षा दुर्जरा दधिकूर्चिका॥ (रा०व०)

अर्थ-गरम दूधमें दूधसे आधा भाग पानी मिलाले फिर उसमें खट्टा दही मिलालेवे उसको दधिकूर्चिका कहते हैं । दधिकूर्चिका वातनाशक, रूखी, मलरोधक और कठिनतासे पचनेवाली है ।

इति श्रीशालिग्रामनिघण्टुभूषणे दधिवर्गः समाप्तः ॥ १४ ॥



अथ तक्रवर्गः ।

तक्रं दण्डाहतं घोलं गोरसः कट्वरं द्रवः
मथितं कङ्करं चाम्लं मलिनं भग्नसन्धिकम् ॥

अर्थ-तक्र, दण्डाहत, घोल, गोरस, कट्वर, द्रव, मथित, कङ्कर,

अम्ल, मलिन, भग्नसन्धिक (गोरसज, कालशेय, विलोडित, अरिष्ट, उदश्वित, प्रमाथित, अम्बर, कट्वर, घल, केवल, छच्छिका)।

संस्कृतभाषामें	तक्र ।
हिन्दीभाषामे	छाछ मट्ठा ।
वंगभाषामे	घोल ।
मराठीभाषामे	ताक ।
गुजरातीभाषामे	छास, घोलवु ।
कर्णाटकीभाषामे	मज्जिगे ।
तैलिङ्गीभाषामे	चल्ला ।
इंग्रेजभाषामे	१ बटरमिल्क २ व्हे । Butter Milk Weay
फारसीभाषामे	मस्त, मठा ।
अरबीभाषामे	हमीज ।

तक्रभेदा ।

तेषां नामानि भिन्नानि लक्षणानि समानि च । घोलन्तु मथितं तक्रमुदश्विच्छच्छिकापि च ॥ ससारं निर्जलं घोलं मथित त्वसरोदकम् । तक्र पादजलं प्रोक्तमुदश्वित्त्वर्द्धवारिकम्॥ छच्छिका सारहीना स्यात्स्वच्छा प्रचुरवारिका ॥

अर्थ-घोल, माथित, तक्र, उदश्वित और छच्छिका इन भेदोंसे तक्र पांच प्रकारका है । जो तक्र मलाई सहित मथा गया हो और पानी जिसमे न पडा हो उसको घोल कहते है और जिसमेंसे मलाई निकालली हो विनापानी डाले मथा गया हो, उसको माथित कहते है । जिसमे तीन भाग दही हो और एक भाग पानी गेरकर मथा गया हो, उसको तक्र (मट्ठा) कहते है जिसमे आधा दही और आधा पानी पडाहो उसको उदश्वित कहते है और जिसमे अंधाधुन्ध पानी पड़ा हो उसको सारहीन स्वच्छ छच्छिका (छाछ) कहते हैं ।

एतेषां गुणा ।

वातपित्तहरं घोलमथित कफपित्तनुत् । तक्रं ग्राहि कषायाम्लं स्वादुपाक रसं लघु ॥ वीर्योष्णं दीपनं वृष्य प्रीणनं वातनाशनम् । ग्रहण्यादिमतां पथ्यं भवेत्सग्राहि लाघवात्॥ किंचित्स्वा-

दुविपाकित्वान्न च पित्तप्रकोपनम् । अम्लोष्णं दीपन वृष्यं प्रीणनं वातनाशनम् ॥ कषायोष्णविकाशित्वाद्रौक्ष्याच्चापि कफापहम् । न तक्रसेवी व्यथते कदाचिन्न तक्रदग्धाःप्रभवन्ति रोगाः॥ यथा सुराणाममृतं सुखाय तथा नराणां भुवि तक्रमाहुः ।उदश्वित्कफकृद्बल्यं श्रमघ्नं परमं मतम् ॥ छच्छिका शीतला लघ्वी पित्तश्रमतृषाहरी । वातनुत्कफनुत्सा तु दीपनी लवणान्विता ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-तहाँ-घोल-वातपित्तनाशक हे । मथित-कफपित्तनाशकहे । तक्र-मलरोधक,कसेला,खट्टा,पचनेमे स्वादु, रसमेभी स्वादु,हलका, उष्णवीर्य्य, अग्निप्रदीपक, वीर्य्यवर्द्धक, तृप्ति करनेवाला, वातनाशक और संग्रहणी अतीसारादि रोगोंमे पथ्यहे। तक्र हलका होनेसे ग्राही, स्वादुपाकी होनेसे पित्तको कुपित नहीं करता । अम्ल,उष्ण, दीपन, वृष्य, प्रीणन, वातनाशक,कषाय, उष्ण, विकाशि और रुक्ष होनेसे कफका नाश करे हे । तक्रका पान करनेवाला मनुष्य कभी रोगी नही होता, तक्रसे भस्म किये हुवे रोग फिर कभी नहीं होते । जैसे स्वर्गलोकमें देवताओको अमृत है वेसेही मृत्युलोकमे प्राणियोंको तक्र है ।उदश्वित्-कफकारक, बलवर्द्धक और श्रमनाशक हे । छच्छिका (छाछ)-शीतल, हलकी, पित्तनाशक, श्रमहारक, तृषानिवारक और लवणके साथ छाछ वातनाशक,कफहारक और अग्निको दीपन करे है ।

अन्यच्च ।

घोलं मारुतपित्तहारि मथितं वातापहं श्लेष्महृत
पित्तश्लेष्मविनाश्युदश्विदधिकं तक्रं त्रिदोषापहम् ।
मन्दाग्नावरुचौ तथैव नितरामन्येषु रोगेष्वपि
श्रेष्ठं तक्रमिदं वदन्ति मुनयस्तेनोत्तमं प्राणिनाम् ॥

अर्थ-घोल-वातपित्तनाशक, मथित-वात और कफनाशक हे । उदश्वित्-पित्त आर कफनाशक है । और तक्र-त्रिदोषनाशक है, तथा मन्दाग्नि, अरुचि और अन्यरोगोंमे भी हितकारी हे ।

तक्रं त्रिदोषशमनं स्वादुपाकरसं लघु ।

वीर्योष्णं मूत्रकृच्छ्रघ्नं कषायमम्लमग्निदम् ॥

अर्थ-तक्र-त्रिदोषनाशक, स्वादुपाकी, स्वादुरसान्वित, हलका, उष्णवीर्य, मूत्रकृच्छ्ररोगनिवारक, कसेला, खट्टा और जठराग्निजनक है।

अम्लेन वातं मधुरेण पित्तं कफं कषायेण निहन्ति सद्यः ।

अर्थ-तक्र-अम्लपनसे वातका, मधुरपनसे पित्तका और कसेलपनसे कफका नाश करे है । इस प्रकार तक्र त्रिदोषनाशक है ।

अन्यच्च ।

तक्रं स्वादु कषायमम्लकरसं भक्ष्यं लघूष्णं हितं
गुल्मार्शःपरिणामशूलशमनं छर्दिप्रसेकापहम् ।
तृष्णारोचकशोफमेदगरजिच्छ्लेष्मानिलघ्नं परं
सेव्यं मूत्रगदापहं ज्वरहरं स्नेहोत्थपीडापहम् ॥

अर्थ-तक्र-स्वादिष्ठ, कसेला, खट्टा, भक्षनेयोग्य, हलका, गरम, हितजनक तथा गुल्म, बवासीर, परिणामशूल, वमन, प्रसेक, तृषा, अरुचि, सूजन, मेद, विष, कफ, वात, मूत्ररोग, ज्वर और स्नेहसे उत्पन्न हुई पीडाको दूर करे है ।

अन्यच्च।

आमातिसारे च विषूचिकायां वातज्वरे पाण्डुषु कामलायाम् ।
प्रमेहगुल्मोदरवातशूले नित्यं पिबेत्तक्रमरोचके च ॥

अर्थ-तक्र-आमातिसार, विषूचिका, वातज्वर, पाण्डुरोग, कामला, प्रमेह, गुल्म, उदररोग वातशूल और अरुचिमें सदैव पीना चाहिये ।

तथा च त्रिविधं तक्रं कथ्यते शृणु पुत्रक। यथायोगेन तत्सम्यक्छस्यते येषु रोगिषु ॥ समुद्धृतघृतं तक्रमर्द्धोद्धृतघृतञ्च यत् । अनुद्धृतघृतञ्चान्यदित्येतत्त्रिविधं मतम् ॥ पूर्वं लघु च पथ्यं च त्रिदोषशमनं परम् ॥ ततः परं वृष्यतरं क्रमेण समुदीरितम् ॥ अनुद्धृतघृतं सान्द्रं गुरु विद्यात्कफात्मकम् । बलप्रदन्तु क्षीणानामामशोफातिसारकृत् (हा० सं०)

अर्थ-आत्रेयजी कहनेलगे कि, तक्र तीन प्रकारका है सो मैं कहताहूं । हे पुत्र ! सुन, यह तक्र जिन रोगोंमें हितकारी है सो

दिखलाताहूं।घृतहीन, अल्पघृतयुक्त और घृतसंयुक्त ऐसे तक्र तीन प्रकारका है तहां घृतहीन अर्थात् जिस तक्रमेसे घी निकाललियाहो ऐसा तक्र हलका,पथ्य और त्रिदोषनाशक है। अल्पघृतसंयुक्त अर्थात् जिसमेंसे थोडा घी निकाललियाहो ऐसा तक्र वीर्य्यवर्द्धक और घृतसंयुक्त अर्थात् जिसमेसे घी नहीं निकालाहो ऐसा तक्र-गाढा, भारी,कफकारक, क्षीणमनुष्योको बल देनेवाला तथा आम, सूजन और अतिसारको दूर करे है।

तत्पुनर्मधुरं श्लेष्मप्रकोपनकरं परम् ।
वातघ्नं पित्तशमनमम्लन्तु पित्तकृत्सदा ॥

अर्थ-मीठातक्र-कफकारक, वातनाशक और पित्तको शान्ति करे है। और खट्टा तक्र-सदैव पित्तकारक है।

पक्वापक्वतक्रगुणाः ।

तक्रमामं कफं कोष्ठे हन्ति कण्ठे करोति च ।
पीनसश्वासकासेषु पक्वमेव प्रयुज्यते ॥ (अ०)

अर्थ-कच्चा तक्र-कोष्ठके कफको दूर करे और कण्ठमें कफको करे है इसकारण पीनस, श्वास और खासीमें तो पक्काही तक्र देना चाहिये।

दोषविशेषे व्याधिविशेषे च तक्रविशेषाः ।

वातेऽम्लं शस्यते तक्रं शुण्ठीसैन्धवसयुतम् ॥ पित्ते स्वादु सितायुक्तं सव्योषमधिकेकफे हिंगुजीरयुतं घोलं सैन्धवेन सुसंयुतम् । भवेदतीववातघ्नमर्शोऽतीसारहृत्परम् ॥ सुरुच्यं पुष्टिदं बल्य वस्तिशूलविनाशनम्॥मूत्रकृच्छ्रे तु सगुडं पाण्डुरोगे सचित्रकम् ॥

अर्थ-वातरोगमें-सोठ और सैधवलवणका चूर्ण मिलाकर खट्टा तक्र पीना चाहिये, पित्तरोगमें बूरा मिलाकर मीठातक्र पीना। अधिक कफमे त्रिकुटेका चूर्ण डालकर पीना चाहिये। घोल-हींग, जीरा और सैधवलवणयुक्त अत्यन्त वातनाशक है। तथा बवासीर और अतिसारको दूर करे है, रुचिकारक, पुष्टिजनक, बलकारक और वस्तिशूलको निर्मूल करे है।घोल-मूत्रकृच्छ्ररोगमे गुडके साथ पीना चाहिये और पाण्डुरोगमे चीतेके साथ पीना चाहिये।

तक्रसेवननिमित्तानि।

शीतकालेऽग्निमान्द्ये च तथा वातामयेषु च। अरुचौ स्रोतसां रोधं तक्र स्यादमृतोपमम् ॥ तत्तु हन्ति गरच्छर्दिप्रसेकविषमज्वरान्। पाण्डुमेदोग्रहण्यर्शोमूत्रग्रहभगन्दरान् ॥ मेह गुल्ममतीसारं शूलप्लीहोदरारुचीः। श्वित्रकोष्ठगतव्याधीन्कुष्ठशोथतृषाकृमीन् ॥

अर्थ-शीतऋतु, मन्दाग्नि, वातरोग, अरुचि और छिद्रोंके रोधमें तक्र अमृतकी समान गुणकारक है। यह विष, वमन, प्रसेक, विषमज्वर, पाण्डुरोग, मेदरोग, संग्रहणी, बवासीर, मूत्रकृच्छ्र, भगंदर, प्रमेह, गुल्म, अतिसार, शूलरोग, प्लीहा, उदररोग, अरुचि, श्वित्रकुष्ठ, कोष्ठरोग, कोढ, सूजन, तृषा और कृमिरोगको हरे है।

अन्यच्च।

शीतकालेऽग्निमान्द्ये च कफोत्थेष्वामयेषु च।
मार्गावरोधे कुष्ठे च वायौ तक्र प्रशस्यते ॥

अर्थ-शीतकाल, मन्दाग्नि, कफसे उत्पन्न हुये रोग, मार्ग चलनेकी थकावट, कुष्ठ और वातके रोगोंमें तक्र हितकारी है।

रोगविशेषे तक्रनिषेध।

नव तक्रं क्षते दद्यान्नोष्णकाले न दुर्बले।
न मूर्च्छाभ्रमदाहेषु न रोगे रक्तपैत्तिके ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-क्षतरोग, उष्णकाल, दुर्बलता, मूर्च्छा, भ्रम, दाह और रक्तपित्त रोगमे तक्र देना नहीं चाहिये।

गव्यादीनां तक्राणां विशिष्टगुणा।

यान्युक्तानि दधीन्यष्टौ तद्गुणं तक्रमादिशेत्। (भा०प्र०)

अर्थ-पहिले जो आठ प्रकारके दही कहे है उनहीके समान उन दहियोके तक्रोंके गुण जानने।

गोतक्रगुणा।

गव्य त्रिदोषशमनं पथ्ये श्रेष्ठं तदुच्यते।
दीपन रुचिकृन्मेध्यमर्शोदरविकारजित् ॥

अर्थ-गायका तक्र-त्रिदोषनाशक,पथ्योमे उत्तम,दीपन,रुचिकारक, मेधाजनक,तथा बवासीर और उदरके विकारोको दूर करे हैं ।

माहिषीतक्रगुणा ।

माहिषं कफकृत्किश्चिद्धनं शोफकरं नृणाम् ।
शस्तं प्लीहार्शोग्रहणीदोषेऽर्तीसारिणामपि ।

अर्थ-भेसका तक्र-कफकारक, कुछ २ गाढा, मनुष्योके सूजनको करनेवाला तथा प्लीहा,बवासीर,संग्रहणी और अतिसारमें हित है ।

छागीतक्रगुणा ।

छागलं लघु संस्निग्धं त्रिदोषशमन परम् ।
गुल्मार्शोग्रहणीशूलपाण्ड्वामयविनाशनम् ॥ (हा० सं०)

अर्थ-बकरीका तक्र-हलका,स्निग्ध, त्रिदोषनिवारक तथा गुल्म, बवासीर, संग्रहणी, शूल और पाण्डुरोगको दूर करे है ।

आविकतक्रगुणा ।

आवितक्रमपथ्यं स्यादम्ल दुर्गंधकारकम् ।
दीपन कटुक चोष्णं लेखन लघु पित्तकृत् ॥
रक्तदोषकर चैव कफवातविनाशनम् ।

अर्थ-भेडका मट्ठा-अपथ्य, खट्टा, दुर्गन्धकारी, दीपन, चरपरा, गरम, लेखन, हलका, पित्तकारक, रुधिरके विकारोको करनेवाला और कफवातविनाशक है ।

हस्तिनीतक्रगुणा ।

हस्तिन्यास्तु स्मृत तक्रमग्निमांद्यकर गुरु ।
उष्णं च तुवरं तेजोवर्द्धकं कफवातहम् ॥

अर्थ-हथिनीका तक्र-मन्दाग्निकारक, भारी, गरम, कसेला, तेजवर्द्धक और कफ वातनाशक है ।

अश्वीतक्रगुणा ।

अश्वीतक्रं तु तुवरं किञ्चिद्वातकर मतम् ।
अग्निदीप्तिकरं रूक्षं नेत्र्यं मूर्च्छाकफापहम् ॥

अर्थ-घोडीका तक्र-कसेला, किञ्चिद्वातकारक, अग्निप्रदीपक, रूखा,नेत्रोको हितकारी तथा मूर्च्छा और कफका विनाश करेहै ।

उष्ट्रीतक्रगुणा ।

औष्ट्रं तक्रं तु विरसं गुरु हृद्यं च दोषलम् ।
पीनसश्वासकासेषु शस्तमुक्तं मनीषिभिः ॥

अर्थ-ऊँटनीका तक्र-बेस्वाद, भारी, हृदयको हितकारी, दोषजनक तथा पीनस, श्वास और खाँसीमें हितकारी है ।

गर्दभीतक्रगुणा ।

गर्दभ्यास्तु स्मृतं तक्रं मधुरं दीपनं मतम् ।
रूक्षमम्लकरं चोष्णं वातनाशकरं परम् ॥

अर्थ-गधीका तक्र-मधुर, दीपन, रूखा, खट्टा, गरम और वातनाशक है ।

स्त्रीतक्रगुणा ।

स्त्रीतक्रं ग्राहकं चाम्लं चक्षुष्यं तर्पणं गुरु ।
पाके च मधुरं बल्यं त्रिदोषस्य च नाशकम् ॥ (रत्नाकर)

अर्थ-स्त्रीका तक्र-मलरोधक, खट्टा, नेत्रोंको हितकारी, तृप्तिकारक, भारी, पाकमें मधुर, बलकारक और त्रिदोषनाशक है ।

इति श्रीशालिग्रामनिघण्टुभूषणे तक्रवर्गः समाप्तः ॥ १९ ॥

अथ नवनीतवर्गः ।

म्रक्षणं सरजं सारं नवनीतं नवोद्धृतम् ॥

अर्थ-म्रक्षण, सरज, सार, नवनीत, नवोद्धृत, (मन्थज, हैयङ्गवीन [क], दधिसार, नवनी, कलम्बुट, दधिज ।)

संस्कृतभाषामें	नवनीत ।
हिन्दीभाषामें	नवनी, नोनी, मक्खन ।
बंगभाषामें	ननी, माखन ।
मराठीभाषामें	लोणी ।
गुजरातीभाषामें	माखण ।
कर्णाटकीभाषामें	बेण्णी ।
तैलिङ्गीभाषामें	पेन्ना ।

इंग्रेजीभाषामे बटर । Butter
लेटिन्भाषामे बुटिरम् । Butyrum
फारसीभाषामे मसका ।
अरबीभाषामें जुबुद ।

साधारणनवनीतगुणा ।

शीतं वर्णबलावहं सुमधुरं वृष्यं च संग्राहकं वातघ्नं कफकारकं रुचिकरं सर्वाङ्गशूलापहम् । कासघ्नं श्रमनाशनं सुखकरं कान्तिप्रदं पुष्टिदं चक्षुष्यं नवनीतमुद्धृतनवं गोः सर्वदोषापहम् (रा० नि०)

अर्थ-नवीन (ताजी)नवनीत-शीतल, वर्णको सुंदर करनेवाला, बलकारक, मधुर, वीर्य्यवर्द्धक, मलरोधक, वातनाशक, कफकारक, रुचिकारक, शरीरके सर्वप्रकारके शूलोको हरनेवाला, खाँसीको दूर करनेवाला, श्रमनाशक, सुखकारक, कान्तिजनक, पुष्टिकारक, नेत्रोको हितकारी और सर्वदोषोको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

शीतं बलाढ्यं मधुराम्लवृष्यं श्लेष्मावहं पित्तमरुत्प्रणाशम् । शोफक्षयक्षीणकृशोतिवृद्धबालेषु पथ्यं नवनीतमुक्तम् ॥

(द्रव्यगुणदीपिका)

अर्थ-नवनीत-माखन-शीतल,बलकारक,मधुर,खट्टा,वीर्य्यवर्द्धक, श्लेष्मकारक, पित्तवातनाशक तथा शोफरोगी, क्षयरोगी, क्षीण, अत्यन्त कृश, वृद्ध और बालकोको हितकारी है ।

अपिच ।

नवनीतं नवं ग्राहि हृद्यं चोल्वणदीपकम् । क्षयारुच्यार्दितप्लीहग्रहण्यर्शोविकारनुत् ॥ चक्षुष्यं शिशिरं स्निग्धं वृष्यं जीवनबृंहणम् । क्षीणे द्रवं हिमं ग्राहि रक्तपित्ताक्षिरोगनुत् ॥ स्मृतिवाग्निशुक्रौजःकफमेदोविवर्द्धनम् । वातपित्तकफोन्मादशोफालक्ष्मीज्वरापहम् ॥ सर्वदोषापहं शीतं मधुरं रसपाकयोः ॥ (हा.स)

अर्थ-नवीन नौनी-ग्राही, हृदयको हितकारी, अग्निको दीपन करनेवाला, क्षयनाशक, अरुचिको हरनेवाला, लकुवा वायुको

दूर करनेवाला, प्लीहाका नाश करनेवाला, संग्रहणीको हरनेवाला, बवासीरको नष्ट करनेवाला, नेत्रोंको हितकारी, शीतल, स्निग्ध, वृष्य, प्राणरक्षक, पुष्टिकारक, क्षीणमनुष्यको हितकारी,शीतवीर्य्य, मलरोधक, रक्तपित्तनाशक, नेत्ररोगनिवारक, स्मरणशक्तिको बढानेवाला, वातवर्द्धक, वीर्य्यकारक, अग्निजनक, ओजवर्धक, कफकारक, मेदजनक तथा वात,पित्त,कफ,उन्माद, सूजन, अलक्ष्मी, ज्वर और सर्वदोषनाशक है तथा पाक और रसमें मधुर है।

गव्यनवनीतगुणा ।

नवनीतं हित गव्य वृष्य वर्णबलाग्निकृत् ।
सग्राहि वातपित्तासृक्क्षयार्शोर्दितकासजित् ।
तद्धित बालके वृद्धे विशेषादमृतं शिशोः ॥

अर्थ-गायका माखन-हितकारी,वीर्य्यवर्धक, वर्णकारक, बलकारक,अग्निप्रदीपक,ग्राही,तथा वात,पित्त,रुधिरविकार,क्षय,बवासीर लकवा और खाँसीको दूर करे है। बालक और वृद्धोंको हितकारी और विशेषकरके यह माखन बालकोंको अमृतके समान गुणकारक है।

माहिषीनवनीतगुणाः ।

माहिषं नवनीतन्तु कषाय मधुरं रसे ।
शीत वृष्यप्रदं बल्य ग्राहि पित्तघ्नतुन्दरम् ॥ ((रा नि,)

अर्थ-भैसका माखन-कसेला,मधुररसान्वित,शीतल,वीर्यवर्द्धक, बलकारक, ग्राही, पित्तनाशक, और तुन्द (थोद) को देता है।

अन्यच्च ।

नवनीत महिष्यास्तु वातश्लेष्मकरं गुरु ।
दाहपित्तश्रमहरं मेद·शुक्रविवर्द्धनम् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-भैसका नौनी-वातकफकारक, भारी,दाह,पित्त और श्रमनाशक, मेदजनक तथा शुक्रवर्द्धक है।

गव्य वा माहिष वापि नवनीत नवोद्धृतम् ।
शस्यते बालवृद्धस्य बलकृद्धातुवर्द्धनम् ॥

अर्थ-गाय अथवा भैसका मक्खन-नवीनही श्रेष्ठ होता है, बाल और वृद्धोंको हितकारी, बलकारक और धातवर्द्धक है।

छागीनवनीतगुणा ।

नवनीतमजायास्तु मधुरं तुवरं लघु। चक्षुष्यं दीपनं बल्यंहित- कृत्क्षयकासनुत्॥गुल्मं प्रमेहं शूलञ्च कण्डू नेत्ररुज ज्वरम् । पाण्डु च श्वित्रकुष्ठं च नाशयेदिति कीर्तितम् ॥ (नि० र०)

अर्थ-बकरीका नौनी-मधुर, कसेला,नेत्रोंको हितकारी, दीपन, बलकारक, हितकारक तथा क्षय, खांसी, गुल्म, प्रमेह,शूल, कण्डु, नेत्ररोग, ज्वर, पाण्डुरोग और श्वित्रकुष्ठको नष्ट करे है।

आविकनवनीतगुणा ।

नवनीतं स्मृत चाव्याःपाके शीतं सरं लघु।योनिशूलेकफेवाते शोफे चार्शसि चोदरे॥जठराग्नौ सदा शस्तं कृमिज्वरकरं पर- म्।कण्डूं वांतिं चारुचिं च करोतीति बुधा जगुः॥(नि० र०)

अर्थ-भेडका माखन-पाकमे शीतल, कुछेक दस्तावर, हलका तथा योनिशूल, कफ, वात, सूजन, बवासीर, उदररोग और जठराग्निमे श्रेष्ठ है। कृमिकारक, ज्वरजनक तथा कण्डु, वमन और अरुचिको उत्पन्न करे है।

हस्तिनीनवनीतगुणाः ।

हस्तिन्या नवनीतं तु तुवर दीपनं लघु ।
तिक्त मलस्तम्भकरं कृमिपित्तकफापहम् ॥ (नि. र)

अर्थ-हथिनीका माखन-कसेला, दीपन, हलका, कडवा, मल- स्तम्भक, तथा कृमि, पित्त और कफनाशक है।

अश्वीनवनीतगुणा. ।

अश्विन्या नवनीतन्तु तुवर कटुकं मतम् ।
अचक्षुष्यं स्मृतं चोष्णं कफवातविनाशनम् ॥ (नि र.)

अर्थ-घोडीका माखन-कसेला, चरपरा, नेत्रोंको अहितकारी, गरम, तथा कफ और वातविनाशक है।

गर्दभीनवनीतगुणा. ।

गर्दभ्या नवनीतन्तु बल्यं च तुवर मतम् ।
उष्णं च दीपनं चैव कफं वात विनाशयेत् ॥
मूत्रदोष नाशयतीत्येवमाचार्य्यभाषितम् ॥ (नि. र)

अन्यच्च ।

सर्पिर्गवां चाप्यमृतं विपघ्नं चाक्षुष्यमारोग्यकरं च वृष्यम् ।
रसायनं चेदमतीव मेध्यं स्नेहोत्तमांगं विबुधाः स्तुवन्ति ॥

अर्थ-गायका घी अमृतकी समान गुणकारी, विषविनाशक, नेत्रोको आरोग्य करनेवाला, वीर्य्यवर्द्धक, रसायन, मेधाजनक और सर्व स्नेहोमे उत्तम है।

माहिषघृतगुणाः।

सर्पिर्माहिषमुत्तमं धृतिकरं सौख्यप्रदं कान्तिकृद्वातश्लेष्मनिबर्हणं बलकरं वर्णप्रदाने क्षमम् । दुर्नामग्रहणीविकारशमनं मन्दानलोद्दीपनं चक्षुष्यं नवगव्यतः परमिदं हृद्यं मनोहारि च ॥ (रा नि.)

अर्थ-भैसका घी-उत्तम, धृतिकारक, सुखकारक, कान्तिजनक, वातश्लेष्मनिवारक, बलकारक, वर्णप्रदायक, बवासीर और संग्रहणीको हरनेवाला, मन्दाग्निको दीपन करनेवाला, नेत्रोको हितकारी नवीनगायके घीसे परम हृदयको हितकारी और मनोहारी है।

अन्यच्च ।

माहिषं तु घृतं स्वादु पित्तरक्तानिलापहम् ।
शीतलं श्लेष्मलं वृष्यं गुरु स्वादु विपच्यते ॥

अर्थ-भैसका घी-स्वादिष्ठ, रक्तपित्तनाशक, वातविनाशक, शीतल, कफकारक, वीर्य्यवर्द्धक, भारी और स्वादुपाकी है।

छागीघृतगुणाः ।

आजमाज्यं करोत्यग्निं चक्षुष्यं बलवर्द्धनम् ।
श्वासे कासे क्षये चापि हितं पाके भवेत्कटु ॥
कफार्शोराजक्ष्माणां नाशनं परिकीर्त्तितम् ।

अर्थ-बकरीका घी-अग्निजनक, नेत्रोको हितकारी, बलवर्द्धक, श्वास, खाँसी और क्षय रोगमे हितकारी, पाकमे कटु तथा कफ और राजयक्ष्मारोगको दूर करे है।

मेषीघृतगुणाः ।

पाके लघ्वाविकं सर्पिः सर्वरोगविषापहम् ।
वृद्धिं करोति चास्थ्नां वै वाश्मरीशर्करापहम् ॥ (हा स.)

अर्थ-भेडका घी-पाकमे लघु, सर्वरोगविनाशक, विषनाशक, हाड्डियोको बढानेवाला, तथा पथरी और शर्कराको दूर करे है।

अन्यच्च।

पाके लघ्वाविकं सर्पिर्नवं पित्तप्रकोपनम्।
योनिदोषे कफे वामे शोफे कम्पे च तद्धितम्॥ (रा०नि०)

अर्थ-भेडका घी-लघुपाकी, पित्तप्रकोपक, तथा योनिदोष, कफ, वात, सूजन और कम्पमे हितकारी है।

हस्तिनीघृतगुणा।

हस्तिन्यास्तु घृत तिक्तं लघु वै तुवर मतम्।
अग्निदीप्तिकर प्रोक्तं कुष्ठक्रिमिविनाशनम्॥
मलमूत्रस्तम्भकरं कफपित्तविनाशनम्।
विषं रक्तविकारं च नाशयेदिति कीर्तितम्॥ (नि० र०)

अर्थ-हथिनीका घी-कडवा, हलका, कषेला, अग्निप्रदीपक, कुष्ठ और कृमिविनाशक, मलमूत्रस्तम्भक, कफ पित्तनाशक, विष और रुधिरके विकारोको हरे है।

अश्वीघृतगुणाः।

वृद्धिं करोति देहाग्नेर्लघुपाके विषापहम्।
तर्पणं नेत्ररोगघ्नं दाहनुद्वडवाघृतम्॥

अर्थ-घोडीका घी-देह और अग्निको बढानेवाला, लघुपाकी, विषविनाशक,तृप्तिकारक, नेत्ररोगनिवारक और दाहहारक है।

अन्यच्च।

अश्वीघृत तु मधुरं किञ्चिचाग्निप्रदीपकम्।
तुवरं कटुकं चैव मलमूत्रावरोधकम्।
किञ्चिच्च वातलं चोष्णं पाककाले लघु स्मृतम्।
गुरु च कफमूर्च्छानां नाशनं परमं मतम्।

अर्थ-घोडीका घी-मधुर, किञ्चित अग्निप्रदीपक, कषेला, चरपरा, मलमूत्ररोधक, किञ्चित वातकारक,गरम,लघुपाकी,भारी तथा कफ और मूर्च्छाको हरनेवाला है।

अर्थ-स्त्रीका घी-रुचिकारक, नेत्रोको हितकारी, लघुपाकी, अग्निप्रदीपक तथा वात, पित्त, कफ, प्रमेह और विषविनाशक है।

उष्ट्रीणां चापि नारीणां गर्दभीनां पयांसि च।
घृते कार्य्येषु योज्यानि घृत येषां न विद्यते॥

अर्थ-जहां-ऊटनी, स्त्री और गधीका घृत न मिलताहो तहा उनका दूधही प्रयोगमे लेना चाहिये।

हैयंगवीनघृतगुणा।

हैयंगवीनं चक्षुष्यं रुच्यं चाग्निप्रदीपकम्।
बल्यं वृष्यं धातुकरं विशेषाज्ज्वरनाशकम्॥

अर्थ-हैयंगवीन-नेत्रोको हितकारी, रुचिकारी, अग्निप्रदीपक, बलकारक, वीर्य्यवर्द्धक, धातुकारक और विशेषकरके ज्वरनाशक है।

दुग्धोद्भवघृतगुणा।

घृतन्दुग्धभव ग्राहि शीतल नेत्ररोगनुत्।
निहन्ति पित्तदाहास्रमदमूर्च्छाभ्रमानिलान्॥

अर्थ-दूधमेंसे निकाला हुवाघी-मलरोधक, शीतल, नेत्ररोगनाशक तथा पित्त, दाह, रुधिरविकार, मद, मूर्च्छा, भ्रम और वायुको दूर करे है।

शतधौतघृतगुणा।

शतधौत घृत प्रोक्त दाहमोहज्वरापहम्।

अर्थ-सौबार धुलाहुवा घी-दाह, मोह और ज्वरनाशक है।

नूतनघृतगुणा।

नूतन तु घृतं तृप्तिकारक दुर्बले हितम्।
भोजने स्वादुद प्रोक्तं नेत्र्य पाण्डुरुजापहम्॥

अर्थ-नवीन घी-तृप्तिकारक, दुर्बल मनुष्यको हितकारी, भोजनमें स्वाददायक, नेत्रोको हितकारी, और पाण्डुरोगनाशक है।

पुराणघृतम्।

सर्पिः पुराणं तिमिरप्रतिश्यायामकासजित्। मूर्च्छाकुष्ठविषोन्मादग्रहापस्मारनाशनम्॥ उग्रगन्धं पुराणं स्याद्दशवर्षस्थित घृतम्। लाक्षारसनिभं शीत प्रपुराणमतः परम्॥ यथायथा भवेज्जीर्णं गुणवत्स्यात्तथा परम्। (रा० व०)

गर्दभीघृतगुणा ।

गर्दभ्यास्तु घृत बल्यं बुद्धिद वामकं मतम् ।
अग्निदीप्तिकरं चोष्णवीर्य्यं पाके लघु स्मृतम् ॥
कषायं ग्लानिदं प्रोक्तं मूत्रदोषकफापहम् ॥

अर्थ-गधीका घी-बलकारक,बुद्धिदायक, वमनकारक,अग्निप्रदीपक, उष्णवीर्य्य, लघुपाकी, कषेला, ग्लानिको देनेवाला तथा मूत्र विकार और कफनाशक है ।

एकशफपशुघृतगुणा ।

मधुर रक्तपित्तघ्नं लघु पाके च दीपनम् ।
सर्वमकशफं सर्पिः कषायं कफनाशनम् ॥

अर्थ-एक खुरीवाले सर्वपशुओंका घी-मधुर, रक्तपित्तनाशक, लघुपाकी,दीपन, कषेला और कफनाशक है ।

उष्ट्रीघृतगुणा ।

औष्ट्रं घृतं चाग्निदीप्तिकारक च पटु स्मृतम्।पाककाले च कटुक विषार्शःकृमिनाशनम्॥शोथ वातं कफ चैव क्रोष्टुशीर्षं तथोदरम् । कुष्ठगुल्मोन्मादमोहमूर्च्छापस्मारजूर्तिहम् ॥ (नि० र०)

अर्थ-ऊंटनीका घी-अग्निप्रदीपक,नमकीन, पचनेमे चरपरा, विषविनाशक, बवासीरको हरनेवाला, कृमिनाशक तथा सूजन, वात, कफ, क्रोष्टुशीर्ष, उदररोग कुष्ठ,गुल्म, उन्माद,मोह,मूर्च्छा,अपस्मार और ज्वरको दूर करे है।

स्त्रीघृतगुणा ।

कफेऽनिले योनिदोषे रोगेष्वन्येषु तद्धितम् ।
चक्षुष्यमाहुः स्त्रीणां च सर्पिः स्यादमृतोपमम् ॥(हा० नि०)

अर्थ-स्त्रीका घी-कफ,वात,योनिदोष और अन्य रोगोमे हितकारी है । नेत्रोंको हितकारी और अमृतकी समान गुणकारी है ।

अन्यच्च ।

स्त्रीघृत रुचिदं नेत्र्य पाके लघ्वग्निदीपनम् ।
वातं पित्त कफ मेह विष चव विनाशयेत् ॥ (नि० र०)

अर्थ-स्त्रीका घी-रुचिकारक, नेत्रोंको हितकारी, लघुपाकी, अग्निप्रदीपक तथा वात, पित्त, कफ, प्रमेह और विषविनाशक है।

उष्ट्रीणां चापि नारीणां गर्दभीनां पयांसि च।
घृते कार्य्येषु योज्यानि घृतं येषां न विद्यते ॥

अर्थ-जहां-ऊटनी, स्त्री और गधीका घृत न मिलताहो तहा उनका दूधही प्रयोगमे लेना चाहिये।

हैयंगवीनघृतगुणाः।

हैयंगवीनं चक्षुष्यं रुच्यं चाग्निप्रदीपकम्।
बल्यं वृष्यं धातुकरं विशेषाज्ज्वरनाशकम् ॥

अर्थ-हैयंगवीन-नेत्रोको हितकारी, रुचिकारी, अग्निप्रदीपक, बलकारक,वीर्य्यवर्द्धक,धातुकारक और विशेषकरके ज्वरनाशक है।

दुग्धोद्भवघृतगुणाः।

घृतन्दुग्धभवं ग्राहि शीतलं नेत्ररोगनुत्।
निहन्ति पित्तदाहास्रमदमूर्च्छाभ्रमानिलान् ॥

अर्थ-दूधमेंसे निकाला हुवाघी-मलरोधक,शीतल,नेत्ररोगनाशक तथा पित्त, दाह, रुधिरविकार, मद, मूर्च्छा, भ्रम और वायुको दूर करे है।

शतधौतघृतगुणाः।

शतधौतं घृतं प्रोक्तं दाहमोहज्वरापहम्।

अर्थ-सौवार धुलाहुवा घी-दाह, मोह और ज्वरनाशक है।

नूतनघृतगुणाः।

नूतनं तु घृतं तृप्तिकारकं दुर्बले हितम्।
भोजने स्वादुदं प्रोक्तं नेत्र्यं पाण्डुरुजापहम् ॥

अर्थ-नवीन घी-तृप्तिकारक, दुर्बल मनुष्यको हितकारी,भोजनमे स्वाददायक, नेत्रोंको हितकारी, और पाण्डुरोगनाशक है।

पुराणघृतम्।

सर्पिः पुराणं तिमिरप्रतिश्यायामकासजित्। मूर्च्छाकुष्ठविषोन्मादग्रहापस्मारनाशनम् ॥ उग्रगन्धं पुराणं स्याद्दशवर्षस्थितं घृतम्। लाक्षारसनिभं शीतं प्रपुराणमतः परम् ॥ यथायथा भवेज्जीर्णं गुणवत्स्यात्तथा परम्। (रा० व०)

अर्थ-पुराना घी-तिमिररोग, प्रतिश्याय, आम और खाँसीको दूर करेहै तथा मूर्च्छा, कुष्ठ, विष, उन्माद, ग्रहकी पीडा, और मृगी रोगनाशक है । दश वर्षका रखा हुआ और उग्र गन्धवाला तथा लाखके रंगकी समान लाल रंगका ऐसेही घीको पुराना घृत कहते है । दश वर्षसे अधिक रखे हुवे घीको प्रपुराना घृत कहते है । घी जितना २ अधिक पुराना होता है उतना २ ही अधिक गुणवान् जानना ।

मतान्तरे ।

वर्षादूर्ध्वंभवेदाज्यं पुराणं तत्रिदोषनुत्।मूर्च्छाकुष्ठविषोन्मादापस्मारतिमिरापहम् ॥ यथायथाऽखिलं सर्पिः पुराणमधिकं भवेत्। तथातथा गुणैःस्वैःस्वैरधिकं तदुदाहृतम्॥(भा०प्र०)

अर्थ-भावमिश्रने एक वर्ष बीतजानेपर घीको पुराना कहाहै । वह पुराना घी-त्रिदोषनाशक, तथा मूर्च्छा, कुष्ठ, विष उन्माद, अपस्मार और तिमिररोगनाशक है । घी जितने २ अधिक पुराने होते जाते है वैसे २ ही जो जो गुण जिस २ घीमें कहे है उन २ गुणोंको अधिक करते है ।

नूतनघृतविषया ।

योजयेन्नवमेवाज्यं भोजने तर्पणे श्रमे ।
बलक्षये पाण्डुरोगे कामलानेत्ररोगयोः ॥

अर्थ-भोजन, तर्पण, श्रम, बलक्षय, पाण्डुरोग, कामला और नेत्ररोगमें नवीनही घृत देना चाहिये ।

ज्वरे विबन्धे च विषूचिकायामरोचके वा शमिते तथाग्नौ ।
पानात्यये वापि मदात्यये वा शस्तं न सर्पिर्बहु मन्यते सुधीः (हा० सं०)

अर्थ-ज्वर, विबन्ध, विषूचिका, अरोचक, मन्दाग्नि, पानात्यय और मदात्ययरोगमें घी नही देना चाहिये ।

अन्यच्च ।

शतवर्षसहस्रं वा स्थितं कौम्भमिति स्मृतम् ।
एकादशशताद्यं च महाघृतमिति स्मृतम् ॥

अर्थ-सौ वर्षके पुराने अथवा एक सहस्र वर्षके पुराने घृतको कौम्भ कहते है और इसके उपरान्तके घृतको महाघृत कहते है ।

इति श्रीशालिग्रामनिघण्टुभूषणे घृतवर्गः समाप्तः ॥ १७ ॥

अथ मूत्रवर्गः ।



स्रवणं मेहनं मूत्रं प्रस्रावं प्रस्रवं तथा ।

अर्थ-स्रवण, मेहन, मूत्र, प्रस्राव, प्रस्रव (गुह्यनिष्यन्द, स्रव)।

संस्कृतभाषामे	मूत्र ।
हिन्दीभाषामे	मूत, पेशाब ।
वंगभाषामे	मुत, चोना, प्रस्राव ।
मराठीभाषामे	मूत, मूत्र ।
गुजरातीभाषामे	मुतर ।
कर्णाटकीभाषामें	मूत्र, आकलगोत ।
तैलङ्गीभाषामे	उच्चा ।
इंग्रेजीभाषामें	युरीन् ।
लैटिन्भाषामे	युरिना ।

मूत्रं गोजाविमाहिष्यं गजाश्वोष्ट्रखरोद्भवम् ।
मूत्रं मानुषजञ्चान्यत्समासेन गुणाञ्छृणु ॥

अर्थ-आत्रेयजी कहने लगे कि-गाय, बकरी, भेड, भैस, हाथी, घोडा,ऊंट और मनुष्य इनके मूत्रके गुण संक्षेपसे कहताहूं तूं सुन ।

गोमूत्रगुणाः ।

तीक्ष्णं चोष्णं क्षारमेवं कषायं गौल्यं मेध्यं श्लेष्मवातं निहन्ति । भेद्यारक्तं पित्तशांतिं करोति गुल्मानाहोन्माददोषापहं च ॥ कण्डूकिलासमलशूलमुखाक्षिरोगान् गुल्मामवातगुदमारुतमूत्ररोधान् । कासं सकुष्ठजठरक्रिमिकोपजालं गोमूत्रमेकमपि पीतमहो निहन्ति ॥

अर्थ-गोमूत्र-गायका पेशाब-तीक्ष्ण, गरम, खारी,कषेला, गौल्य, मेधाजनक, कफवातनाशक, भेदक, रक्तपित्तको शान्त करनेवाला, तथा गुल्म, आनाह और उन्माददोषनाशक है। तथा किलास, मल, शूल, मुखरोग, नेत्ररोग, गुल्म, आमवात, गुदरोग, मूत्ररोध, खांसी, कोढ, उदररोग, और कृमिके समूहको नाश करे है।

अन्यच्च ।

गवां मूत्रं कषायं स्यात्कटु तिक्तं लघु स्मृतम् । क्षारं चोष्णं च तीक्ष्णं च पाचनं चाग्निदीपनम् ॥ भेदकं पित्तलं मेध्यं किञ्चिच्च मधुरं सरम् । लेखनं बुद्धिदं प्रोक्तं कफवातविनाशनम् ॥ कुष्ठं गुल्मं चोदरञ्च पाण्डुरोगं किलासकम् । शूलं चार्शश्च कण्डूं च श्वासं चामं ज्वरं तथा॥आनाहवातं कासं च मलस्तम्भञ्च शोथकम् ।मुखाक्षिरोगं त्वग्रोगं कामिन्याश्चातिसारकम् ॥ मूत्ररोधं नाशयति ह्येतच्चैव गुणाधिकम् (र० नि०)

अर्थ-गायका मूत-कषेला, चरपरा, कडवा, हलका, खारी, गरम, तीक्ष्ण, पाचन, अग्निसंदीपक,भेदक,पित्तकारक,मेधाजनक, किञ्चित् मधुर, सारक, लेखन, बुद्धिदायक तथा कफ, वात, कोढ, गुल्म, उदररोग, पाण्डुरोग, किलास,शूल, बवासीर, खुजली, श्वास, आम, ज्वर, आनाहवात, खाँसी, मलस्तम्भ, सूजन, मुखरोग, नेत्ररोग, त्वचाके रोग, स्त्रियोंका अतिसार और मूत्ररोधको दूर करेहै । यह गुणोंमें अधिक है ।

छागीमूत्रगुणा ।

आजं मूत्रं तीक्ष्णमुष्णं कषायं योज्यं पाने शूलगुल्मार्तिनाशम् । कासे श्वासे कामलापाण्डुरोगे ह्यर्शोरोगे श्रेष्ठमेतद्वदन्ति (हा० सं०)

अर्थ-बकरीका मूत्र-तीक्ष्ण, गरम, कषेला तथा शूल, गुल्म, खाँसी, श्वास, कामला, पाण्डुरोग, और बवासीरको हरनेवाला है ।

आविकमूत्रगुणा ।

सक्षारं कटुकं तीक्ष्णं मूत्रं वातघ्नमाविकम् ।
दुर्नामोदरशूलघ्नं कुष्ठमेहविशोधनम् ॥

अर्थ-भेडका मूत-क्षारयुक्त, चरपरा, तीक्ष्ण, वातनाशक तथा बवासीर, उदररोग, शूल, कुष्ठ और प्रमेहको दूर करे है ।

माहिषमूत्रगुणः ।

क्षारं सतिक्तं कटुकं कषायं प्रभेदि वातस्य शमं करोति ।
पित्तप्रकोपं कुरुते सदा च कुष्ठार्शपाण्डूदरशूलनाशनम् ॥

अर्थ-भैसका मूत-खारी, कडवा, चरपरा, कषेला, भेदक, वातको

शान्ति करनेवाला, पित्तको सदैव कुपित करनेवाला, तथा कुष्ठ, बवासीर, पाण्डुरोग और शूलनाशक है ।

गजमूत्रगुणा. ।

सतिक्तं लवणं भेदि वातघ्नं कफकोपनम् ।
क्षारमण्डलकुष्ठानां नाशनं गजमूत्रकम् ॥

अर्थ-हाथीका मूत-कडवा, नमकीन, वातनाशक, कफको कुपित करनेवाला, खारी और मण्डलकुष्ठको नष्ट करे है ।

अश्वीमूत्रगुणा ।

छर्दिकासकफहरं कृमिकुष्ठविनाशनम् ।
दीपनं कटुतीक्ष्णोष्णं वातश्लेष्मविकारनुत्॥ (हा. स.)

अर्थ-घोडीका मूत-वमन, खांसी, कफ, कृमि, कोढ, वात और कफनाशक है, दीपन, चरपरा, तीक्ष्ण और गरम है ॥

गर्दभीमूत्रगुणा ।

खरमूत्रं कटूष्ण च क्षारं तीक्ष्णं कफापहम् ।
महावातापहं भूतकम्पोन्मादहरं परम् ॥ (रा. नि)

अर्थ-गधीका मूत्र-चरपरा, गरम, खारी, तीक्ष्ण, कफनाशक तथा महावात, भूत, कम्प और उन्मादको दूर करे है ।

औष्ट्रमूत्रगुणा ।

औष्ट्रं कफहरं रूक्षं कृमिदद्रुविनाशनम् ।
श्रेष्ठं कुष्ठोदरोन्मादशोषार्शःकृमिवातनुत् ॥

अर्थ-ऊंटनीका मूत-कफनाशक, रूखा, कृमि और दद्रुनिवारक है, श्रेष्ठ तथा कुष्ठ,उन्माद,शोष,बवासीर,कृमि और वातनाशक है।

मानुषमूत्रगुणा ।

मानुष क्षारकटुक मधुरं लघु चोच्यते । चक्षूरोगहरं बल्यं दीपनं कफनाशनम् ॥ असूताया घनं मूत्रं प्रसूताया द्रवं लघु । न किंगुणविशेषः स्यात्समता पाकवीर्य्ययोः ॥

अर्थ-स्त्रीका मूत-खारी, चरपरा, मधुर,हलका, नेत्ररोगनाशक, बलकारक, दीपन और कफनाशक है । अप्रसूतस्त्रीका मूत्र गाढा होताहै, प्रसूता स्त्रीका मूत-पतला, हलका और अप्रसूताके मूतसे

कुछ विशेष गुणवाला नही है और पाक तथा वीर्यमे भी समा-
नहीं है ।

गोजाविमहिषीणां तु स्त्रीणां मूत्र प्रशस्यते ।
खरोष्ट्रेभनराश्वानां पुंसां मूत्रं हितं मतम् ॥

अर्थ-गो, बकरी, भेड, भैस इनोमें स्त्रियोंका मूत्र उत्तम होताहै और गधा, ऊंट, हाथी, मनुष्य इनोमें पुरुषका मूत्र उत्तम होता है ।

मूत्रविशेषगुणाः ।

सौरभेयकमूत्रन्तु घनं सान्द्रं प्रशस्यते । तच्च वृपणहीनानां किञ्चिल्लघुतर स्मृतम् ॥ वृपमूत्रश्च शोफघ्नं कृमिदोपविनाशनम् । कामलाग्रहणीपाण्डुनाशनश्चाग्निदीपनम्॥ अजागविगत मूत्र पाने शस्तं भिषग्वर । आविक माहिपं चाश्वं तैलपाके विधीयते॥ गजमूत्रप्रलेपश्च कण्डूदद्रुविसर्पनुत । कारभं खरमूत्रं वा तैले नस्ये विधायकम् । औष्ट्रं गोजाविनां च गजहयमहिपीमूत्रवर्गः खरोत्थ तिक्त तीक्ष्ण लघूष्ण सलवणसुरस पित्तलं भेदि रूक्षम् ॥ हृद्य रुच्यं कृमिघ्न हुतवहजनन कुष्ठमेदोविनाश गुल्मानाहार्शशूलानिलकफविषजिच्छोफपाण्डूदरघ्नम् ॥सर्वेष्वपि च मूत्रेषु गोमूत्रं गुणतोधिकम् । अतो विशेषात्कथने मूत्रं गोमूत्रमुच्यते । प्लीहोदरश्वासकासशोथवर्चोग्रहापहम् । शूलगुल्मरुजानाहकामलापाण्डुरोगहृत॥ मानुषं विषजिन्मूत्रं विपूच्यामहर च तत् । नस्ये चौष्ट्रं च पाने तु गवां चाव्याः प्रशस्तकम् ॥ तैलयोगे गर्दभस्य वस्त्यश्वमहिपन्तथा । दद्रुकण्डूविसर्पाणां लेपने हस्तिमूत्रकम् ॥

अर्थ-बैलका मूत-गाढा, सान्द्र और श्रेष्ठ होता है और वही बैल वृषणहीन अर्थात् बधियाका मूत-कुछेक हलका होताहै। बैलका मूत-सूजनको दूर करनेवाला, कृमिदोपनाशक तथा कामला, संग्रहणी इनको दूर करे है और अग्निप्रदीपक है। बकरीका मूत और गायका मूत पीनेमे उत्तम है, भेडेका मूत, भैसका मूत और घोडेका मूत तेलपाकमे हितकारी है । हाथीके मूतका

लेप कण्डू, दद्रु और विसर्परोगनाशक है । ऊँटका मूत्र और गधेका मूत्र-तेलमें और नस्यमे उत्तम है, ऊँट, गाय, बकरी, भेड, हाथी, घोडा, भैंस और गधेका मूत्र यह सर्व मूत्रवर्ग कडवा, तीक्ष्ण, हलका, गरम, लवणरसान्वित, पित्तकारक, भेदक, रूखा, हृदयको हितकारी, रुचिजनक, कृमिनाशक, क्षुधाको बढ़ानेवाला, कुष्ठ और मेदरोगनाशक तथा गुल्म, आनाह, बवासीर, शूल, वात, कफ, विष, सूजन, पाण्डु और उदररोगको दूर करे है । सर्वप्रकारके मूत्रोंमे गोमूत्र गुणोमे अधिक है । अतएव जहां कही मूत्रशब्द आवे वहांपर गोमूत्र समझना चाहिये । गोमूत्र-प्लीहा, उदररोग, श्वास, खाँसी, सूजन, मलरोध, शूल, गुल्म, अफारा, कामला और पाण्डुरोगको दूर करे है । मनुष्यका मूत्र-विषविनाशक और विषूचिका रोगको नष्ट करे है, नासमे ऊंटका मूत्र उत्तम है, पानमे गोमूत्र श्रेष्ठ है । तैलयोगमे गर्दभका मूत्र, वस्तिकर्ममे घोडे और भैसका तथा दाद, खुजली और विसर्पके लेपमे हाथीका मूत्र लेना चाहिये ।

इति श्रीशालिग्रामनिघण्टुभूषणे मूत्रवर्गः समाप्तः ॥ १८ ॥

अथ तैलवर्गः ।

तिलादिस्निग्धवस्तूनां स्नेहस्तैलमुदाहृतम् ।

अर्थ-तिलादिक स्निग्धवस्तुओके स्नेहको तेल कहते है (अभ्यञ्जन, म्रक्षण, तिलज, स्नेह) ।

संस्कृतभाषामे	तैल ।
हिन्दीभाषामे	तैल ।
बंगभाषामे	तैल, तेल ।
मराठीभाषामे	तेल ।
गुजरातीभाषामें	तेल ।
कर्णाटकीभाषामे	तैलं ।
तैलङ्गीभाषामे	नुने ।
इंग्रेजीभाषामे	आइल । Oil
लैटिन्भाषामे	ऑइलयम् । Oluem
फारसीभाषामे	रोगन, रोगनेकुंजद ।
अरबीभाषामे	दोहनुसिमसिग ।

तैल वातहर सर्वं विशेषात्तिलसम्भवम् ।

अर्थ-सर्व प्रकारके तेल वातनाशक हैं और विशेष करके तिलका तैल वातको हरे है।

तिलतैलगुणा ।

कषायानुरसं स्वादु सूक्ष्ममुष्ण व्यवायि च ।
पित्तकृद्वातशमन श्लेष्मरोगादिवर्द्धनम् ॥

अल्प रुचिकरं मेध्यं कण्डूकुष्ठविकारनुत् । वृष्यं श्रमापहं ज्ञेय तिलतैल विदुर्बुधाः ॥ छिन्नभिन्ने च्युते घृष्टे भग्नाग्निदाहकेऽपि च । वाताभिष्यन्दिस्फुटने चाभ्यङ्गे तिलतैलकम् ॥ व्यालश्व-सर्पभेकानां विषेऽभ्यङ्गावगाहने । पाने वस्तौ वलासे च तिलतैलं विधीयते ॥ तिलतैल विधेय स्यात्सर्वरोगनिवारणे। (हा सं)

अर्थ-तिलका तेल-कषेला, स्वादिष्ठ, सूक्ष्म, गरम, व्यवायि, पित्तकारक, वातनिवारक, कफादिरोगवर्द्धक, अल्परुचिकारक, मेधाजनक, खुजलीको हरनेवाला, कोढको दूर करनेवाला, वीर्य-वर्द्धक, श्रमनाशक, छिन्न अर्थात् खड्ग आदिके लगनेसे कटे हुएमें बरछी आदिके कटे हुएमें, गिरजानेसे जो चोट लगजाती है, उसमे घिसनेमें, पत्थर आदिके रगडनेसे छिलजानेमें, हाड आदिक टूट-नेमे, अग्निसे जलजानेमे, वाताभिष्यन्दमे, फुटनेमें, भेडिया, कुत्ता, मेंढक और सर्पके विषमें, मालिस, स्नान, वस्तिकर्म्म और बला-सरोगमे तिलका तेल हितकारी है और सर्वरोगोंको दूर करनेके लिये तिलका तेल देना चाहिये ।

तिलतैलमलंकरोति केशान्मधुर तिक्तकषायमुष्णतीक्ष्णम् ।
बलकृत्कफवातजं तु खर्जूव्रणकण्डूतिहरं च कान्तिदायि ॥
(राजनिघण्टु)

अर्थ-तिलका तेल-केशोको उत्तम करनेवाला, मधुर, कडवा, कषेला, गरम, तीक्ष्ण, बलकारक तथा कफ, वात, कृमि, खुजली, घाव, कंडू इनको दूर करनेवाला और कान्तिको देनेवाला है ।

तिलतैल गुरु स्थैर्य्यबलवर्णकर सरम् । वृष्यं विकाशि विशदं मधुर रसपाकयो ॥ सूक्ष्मं कषायानुरस तिक्तं वातकफापहम्।

वीर्य्योष्णं तु हिमं स्पर्शे बृंहण रक्तपित्तकृत्॥लेखनं बद्धविण्मूत्रं गर्भाशयविशोधनम्। दीपन बुद्धिदं मेध्यं व्यवायि व्रणमेहनुत् । श्रोत्रयोनिशिरःशूलनाशनं लघुताकरम् ॥ त्वच्यं केश्यञ्च चक्षुष्यमभ्यङ्गे भोजनेऽन्यथा । छिन्नभिन्नच्युतोत्पिष्टमथितक्षतपिच्चिते ॥ भग्नस्फुटितविद्धाग्निदग्धाविश्लिष्टदारिते । तथाभिहतनिर्भुग्नमृगव्याघ्रादिविक्षते ॥ वस्तौ पानेन्नसंस्कारे नस्ये कर्णाक्षिपूरणे । सेकाभ्यङ्गावगाहेषु तिलतैलं प्रशस्यते ॥ (भावमिश्रः)

अर्थ-तिलका तेल-भारी, स्थिरताकारक, बलकारक, वर्णको सुंदर करनेवाला, सारक, वृष्य, विकाशी, विशद,रस और पाकमे मधुर, सूक्ष्म, कषेला, कडवा, वातकफनाशक, उष्णवीर्य्य, स्पर्शमे शीतल, पुष्टिकारक, रक्तपित्तकारक, लेखन,मलमूत्ररोधक,गर्भाशयविशोधक, दीपन, बुद्धिदायक, मेधाजनक, व्यवायि, व्रण और प्रमेहनाशक, कान, योनि और शिरके शूलको दूर करनेवाला, लघुताकारक, त्वचाको हितकारी, केशोको सुंदर करनेवाला नेत्रोको हितकारी यह गुण तेलके मलनेके हैं । खानेमे यह गुण नहीं है और गुण इनसे उलटे हैं । छिन्न भिन्न, गिरजाना, पिसजाना, मसलजाना, घाव, पिचजाना, टूटजाना, फटजाना, बिधजाना, आगसे जलजाना, स्थानसे उतरजाना,चिरजाना, चोट लगनी, टेढा होजाना, मृग और व्याघ्रादिसे घायल होजानेपर, वस्तिकर्म, पान, अन्नसंस्कार, (तेलसे छौंकना) नासकर्म्म, कान और आंखोमें भरना, सेक, मर्दन और अवगाहनमे तिलका तेल हितकारी है ।

नास्ति तैलात्परं किञ्चिदौषधं मारुतापहम् ।
तैलं संयोगसंस्कारात्सर्वरोगापहं स्मृतम् ॥

अर्थ-तेलकी समान और कोई दूसरी वातनाशक औषधि नहीं है और, द्रव्योके संयोगसे संस्कृत (पक्का) तेल सर्वरोगनाशक है ।

घृताच्छ्रेष्ठतमं तैलं मर्दने न च भोजने ।
घृतमन्दात्परं पक्कं हीनवीर्य्यं प्रजायते ॥
तैलं पक्कमपक्कं वा चिरस्थायि गुणाधिकम् ।

अर्थ-तेल-घृतसे गुणोंमे अत्यन्त श्रेष्ठ है । यह मर्दन करनेमे है, भोजन करनेमे नहीं है। घी एकवर्ष बीतजानेपर पका हुवा हीनवीर्य्य होजाता है,परन्तु तेल तो पकाहुवा वा विनापका जितना जितना ज्यादे पुराना होगा उतनाही अधिकगुणवाला होता है ।

न पित्तरोगे न च शोणिते च पथ्ये महावातविकारसंघे ।
तिलोद्भवं तैलमुदाहरन्ति वाताश्रितान्हन्ति समस्तदोषान् ॥

अर्थ-तिलोंका तेल-पित्तरोग और रक्तरोगमे पथ्य नहीं है,महा वातरोगके समूहमे पथ्यहै और सर्वप्रकारके वातरोगोंका नाश करैहै।

सर्षपतैलगुणाः ।

कटूष्णं सार्षपं तैलं रक्तपित्तप्रदूषणम् ।
कफशुक्रानिलहरं कण्डूकृमिविनाशनम् ॥ (राज० नि०)

अर्थ-सरसोंका तेल-चरपरा,गरम,रक्तपित्तकारक तथा कफ,शुक्र, वात, खुजली और कृमिनाशक है ।

अन्यच्च ।

दीपनं सार्षपं तैलं कटुपाकि सरं लघु ।
लेखनं स्पर्शवीर्य्योष्णं तीक्ष्णं पित्तास्रदूषकम् ॥
कफमेदोऽनिलाऽर्शोघ्नं शिरःकर्णामयापहम् ।
कण्डूकोठकृमिश्वित्रकुष्ठदुष्टव्रणप्रणुत् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-सरसोंका तेल-दीपन, पचनेमे चरपरा, सर, लघु, लेखन, स्पर्श और वीर्य्यमें उष्ण, तीक्ष्ण, रक्तपित्तको प्रकोपित करनेवाला तथा कफ, मेदरोग, वात, बवासीर, शिररोग, कर्णरोग, कण्डू, कोठ, कृमि, श्वित्रकुष्ठ, कुष्ठ, और दुष्ट व्रणको नष्ट करनेवाला है ।

अपिच।

कटु तिक्तं तथा ग्राहि चोष्णं स्यात्कफवातनुत् ।
कृमिकण्डूशोधनं स्यात्पित्तकृत्सार्षपस्तुतम् ॥
कर्णरोगे कृमिरोगे तथा वातामयेषु च ।
कण्डूकुष्ठामये चैव कफमेदोगदेषु च ॥

प्रशस्यं सार्पपञ्चैव रोगाणाञ्च विभावयेत् ।
वस्तिकर्म्मणि नो शस्तं पित्तदाहकरं महत्॥ (हा०सं०)

अर्थ-सरसोका तेल-चरपरा, कडवा, मलरोधक, गरम, कफवात नाशक, कृमि और कण्डूनिवारक, पित्तजनक तथा कर्णरोग, कृमि-रोग, वातरोग, कण्डू, कुष्ठ, कफ और मेदरोगमे हितकारी है, वस्तिकर्ममे उत्तम नही है और पित्त दाहकारक है ।

राजिकातैलगुणाः ।

श्वेतायाश्चैव रक्ताया राजिकायास्तु तैलकम् ।
केश्यं च तिक्तं कटुकं मूत्रकृच्छ्रकरं मतम् ॥
त्वग्दोषं वातदोषं च पूयं चैव विनाशयेत् ।
गुणास्त्वन्ये सर्षपानां तैलतुल्या इतीरितम् ॥ (नि०र०)

अर्थ-लाल वा काली राईका तेल-केशोको हितकारी, कडवा, चरपरा, मूत्रकृच्छ्रजनक तथा त्वचाके दोष, वातविकार और पूय (राध) को हरेहै । शेष गुण सरसोके तेलकी समान जानने ।

तुवरीतैलगुणाः ।

तीक्ष्णोष्णं तुवरीतैलं लघु ग्राहि कफास्रजित् ।
वह्निकृद्विषहृत्कण्डूकुष्ठकोठकृमिप्रणुत् ॥
मेदोदोषापहं चापि व्रणशोथहरं परम् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-तोरीका तेल-तीक्ष्ण, गरम, हलका, मलरोधक, कफनाशक रक्तविकारनिवारक, अग्निप्रदीपक, विषविनाशक तथा खुजली, कोढ, कोठ, कृमि, मेदोदोष, व्रण और सूजनको हरणकरे है ।

अतसीतैलगुणाः ।

अतसीप्रभवं तैलं घनं मधुरपिच्छिलम् ।
विपाके कटु चोष्णञ्च वातश्लेष्मनिवारणम्॥ (हा०सं०)

अर्थ-अलसीका तेल-गाढा, मधुर, पिच्छिल, विपाककालमें कटु, उष्ण, वात और कफनाशक है ।

अन्यच्च ।

मधुरं त्वतसीतैलं पिच्छिलं चानिलापहम् ।

मदगन्धिकषायञ्च कफकासापहारकम् ॥ (रा०नि०)

अर्थ-अलसीका तेल-पिच्छिल, वातविनाशक, मदगन्धियुक्त कषैला तथा कफ और खाँसीको दूर करे है।

अन्यच्च।

उमातैलं च वातघ्नं स्वादूष्णं बलकृद्गुरु।
कटुपाकमचक्षुष्यं त्वग्दोषकफपित्तकृत् ॥ (शो०नि०)

अर्थ-अलसीका तेल-वातविनाशक,स्वादिष्ठ, बलकारी, भारी, कटुपाकी, नेत्रोंको हितकारी नहीं, तथा त्वग्दोष, कफ, और पित्तकारक है।

अन्यच्च।

अतसीतैलमाग्नेयं स्निग्धोष्णं कफपित्तकृत्।कटुपाकमचक्षुष्यं बल्यं वातहरं गुरु ॥ मलकृद्रसतः स्वादु ग्राहि त्वग्दोषहृद्व्रणम् । वस्तौ पाने तथाभ्यङ्गे नस्ये कर्णस्य पूरणे ॥ अनुपानविधौ चापि प्रयोज्यं वातशान्तये ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-अलसीका तेल-अग्निजनक, स्निग्ध, गरम, कफ पित्तकारक कटुपाकी,नेत्रोंको अहितकारी,बलकारी,वातहारी,भारी मलकारक, रसमें स्वादु, मलरोधक, त्वचाके विकार और व्रणको हरनेवाला तथा वस्तिकर्म्म,पान मर्दन, नास, कर्णपूरण और अनुपानविधिमें वातशान्ति करनेके लिये देना चाहिये।

कुसुम्भतैलगुणाः।

कुसुम्भतैलमुष्णन्तु विपाके कटुकं गुरु।
विदाहकं विशेषेण सर्वदोषप्रकोपनम् ॥ (हा० सं०)

अर्थ-कसुमका तेल-गरम, पचनेमें चरपरा, भारी, विशेषकरके दाहकारक और सर्वदोषोंको कुपित करनेवाला है।

अन्यच्च।

कुसुम्भतैलमम्लं स्यादुष्णं गुरु विदाहि च।
चक्षुर्भ्यामहितं बल्यं रक्तपित्तकफप्रदम् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-कसूमका तेल-खट्टा, भारी, दाहजनक, नेत्रोंको अहितकारी, बलकारी तथा रक्तपित्त और कफकारक है।

अपिच ।

कुसुम्भतैलं बलदं क्षारं कटु विदाहकृत । अचक्षुष्यं गुरुस्तीक्ष्ण मुष्ण विट्स्तम्भकारकम् ॥ रक्तपित्तकर चाम्ल त्रिदोषाणां च कारकम् ॥ कृमिवातहरं प्रोक्तं पूर्वाचार्य्यैर्महर्षिभिः ॥ (नि० र०)

अर्थ-कसूमका तेल-बलवर्द्धक, खारी, चरपरा, दाहजनक, नेत्रोंको अहितकारी, भारी, तीक्ष्ण, गरम, मलस्तम्भक, रक्तपित्तकारक, खट्टा, त्रिदोषजनक तथा कृमि और वातविनाशक है ।

गोधूमादितैलगुणाः ।

गोधूमयावनालव्रीहियवाद्यखिलधान्यजं तैलम् ।
वातकफपित्तशमनं कण्डूकुष्ठादिहारि चक्षुष्यम् ॥ (रा० नि०)

अर्थ-गेहूं, ज्वार, व्रीहिधान्य और यवादिकोंका तेल-वात, कफ, पित्त निवारक, नेत्रोंको हितकारी तथा कण्डू और कुष्ठादिरोगनाशक है ।

एरण्डतैलगुणाः ।

एरण्डतैलं कृमिनाशनं च सर्वत्र शूलघ्नमरुत्प्रणाशनम् ।
कुष्ठापहं चापि रसायनं च पित्तप्रकोपानलशोधनं च ॥

अर्थ-एरण्डका तेल-कृमिनाशक, सर्व प्रकारके शूलोंको निर्मूल करनेवाला, वातविनाशक, कुष्ठनाशक, रसायन, पित्तको कुपित करनेवाला और अग्निशोधक है ।

अन्यच्च ।

एरण्डतैलं तीक्ष्णोष्णं दीपनं पिच्छिलं गुरु । वृष्यं त्वच्यं वयःस्थापि मेधाकान्तिबलप्रदम् ॥ कषायानुरसं सूक्ष्मं योनिशुक्रविशोधनम् । विस्रं स्वादु रसे पाके सतिक्तं कटुकं सरम् ॥ विषमज्वरहृद्रोगपृष्ठगुह्यादिशूलनुत् । हन्ति वातोदरानाहगुल्माष्ठीलाकटिग्रहान् ॥ वातशोणितविड्बन्धब्रध्नशोथामविद्रधीन् । आमवातगजेन्द्रस्य शरीरवनचारिणः ॥ एक एव निहन्तायमेरण्डस्नेहकेसरी । (भा० प्र०)

अर्थ-अंडका तेल-या अंडीका तेल-तीक्ष्ण, गरम, दीपन, पिच्छिल, भारी, वीर्य्यवर्द्धक, त्वचाको हितकारी, अवस्थास्थापक, मेधाजनक, कान्तिकारक, बलदायक, कषेला, सूक्ष्म, योनि और शुक्रशोधक,

आमगन्धिवाला, रस और पाकमे स्वादिष्ठ, कडवा, चरपरा, कुछ कुछ दस्तावर तथा विषमज्वर, हृदयरोग, पीठ और गुह्यस्थानका, शूल, वात, उदररोग, आनाह, गुल्म, अष्ठीलिका, कमरका दर्द, वातरक्त, मलबद्ध, वध्मे (बद) सूजन, आम और विद्रधीरोगको नष्ट करेहै शरीररूपी वनमे विचरनेवाले आमवातरूपी मत्त हाथीके मारनेको यह एकही अंडीका तेलरूपी सिंह है ।

अन्यच्च ।

एरण्डतैलं मधुरं गुरु श्लेष्माभिवर्द्धनम् । वातासृग्गुल्महृद्रोगजीर्णज्वरहरं परम् ॥ हृद्वस्तिपार्श्वजानूरुत्रिकपृष्ठास्थिशूलिनाम् । आनाहाष्ठीलवातासृक्प्लीहोदावर्त्तशूलिनाम् ॥ हितं वातामयश्वासग्रन्थिब्रध्नविकारिणाम् ॥ (राजनि०)

अर्थ-अंडीका- तेल मधुर,भारी,श्लेष्मवर्द्धक तथा वातरक्त, गुल्म, हृदयरोग और जीर्णज्वरको दूर करे है तथा हृदय, वस्ति,पार्श्व,जानु ऊरु,त्रिक,पृष्ठ और अस्थिशूलवाले मनुष्योंको एवं आनाह,अष्ठीला, वातरक्त, प्लीहा, उदावर्त्त, शूल, वातरोग, श्वास, ग्रन्थि और ब्रध्न रोगवाले मनुष्योंको हितकारी है ।

करञ्जतैलगुणाः ।

कारजं कटुकं पाके कटूष्णमनिलापहम् ।
कुष्ठशीर्षगदार्शोघ्नमेदशुक्रप्रमेहजित् ॥
अधोर्ध्वहरणं श्लेष्मकृमिविध्वंसनं लघु ।
मक्षिकादंशकीटादिनाशनं व्रणरोपणम् ॥ (शो० नि०)

अर्थ-करंजका तेल-पचनेमे चरपरा,गरम वातनाशक तथा कोढ, शीर्षरोग, बवासीर, मेद, शुक्र, प्रमेह, अध और ऊर्द्धवात, कृमि, मक्षिका और दंशादि कीडोंके विषको दूर करेहै हलका और व्रणको भरनेवाला है ।

अन्यच्च ।

करंजतैलं तिक्तं स्यादुष्णं च व्रणपूरकम् । नेत्ररोगं विचर्चीश्च वातं कुष्ठं व्रणं तथा ॥ कण्डूगुल्ममुदावर्त्तं योनिदोषं च नाशयेत् ॥ अर्शोघ्नं लेपनाच्चैव नानात्वग्दोषनाशनम् ॥ (नि० र०)

अर्थ-करंजका तेल-कडवा, गरम, व्रणको भरनेवाला तथा नेत्ररोग, विचर्चा, वात, कोढ, व्रण, कण्डू, गुल्म, उदावर्त, योनिविकार, बवासीर और लेप करनेसे नानाप्रकारके त्वचाके दोषोंको दूर करे है।

इंगुदीतैलगुणा ।

इगुद्यास्तु स्मृत तैल स्निग्ध शीतं च कान्तिदम् ।
मधुरं कफकृद्वल्यं चक्षुष्य धातुवर्द्धकम् ॥
केशवृद्धिकरं चैव पित्तनाशकरं मतम् (नि० र०)

अर्थ-हिंगोटका तेल-स्निग्ध, शीतल, कान्तिजनक, मधुर, कफकारक, बलकारक, नेत्रोंको हितकारी, धातुवर्धक, केशवर्द्धक और पित्तनाशक है।

निम्बतैलगुणा ।

निम्बतैलं किञ्चिदुष्ण तिक्तं कृमिकफापहम् ।
कुष्ठ व्रणं वातपित्तं पित्तं चार्श ज्वरं तथा ॥
शोफोदरं रक्तरुज कफ पित्तज्वराञ्जयेत्॥ (नि० र०)

अर्थ- नीमका तेल-किंचित् गरम, कडवा तथा कृमि, कफ, कोढ, घाव, वातपित्त, पित्त, बवासीर, ज्वर, सूजन, उदररोग, रुधिररोग, कफ और पित्तज्वरनाशक है।

शिग्रुतैलगुणा ।

शिग्रुतैलं च कटुकं चोष्णमुक्तं च पिच्छिलम् ।
त्वग्दोपं च व्रण वातं कफं कण्डूञ्च नाशयेत् ॥
शोथनाशकरं चैव मुनिभिः परिकीर्त्तितम्॥ (नि० र०)

अर्थ-सैजिनेका तेल-चरपरा, गरम, पिच्छिल, तथा त्वचाके दोष, व्रण, वात, कफ, कण्डू और सूजनको दूर करे है।

ज्योतिष्मतीतैलगुणा ।

ज्योतिष्मत्याः स्मृतं तैल वामकं तिक्तकं मतम्। अत्युष्णं सारक तीक्ष्णं पित्तल स्मृतिबुद्धिदम् ॥ मेधाकरं लेखनं च रसायनकरं मतम्। अग्निदीप्तिकर वात त्रिदोपं च कफ जयेत् ॥
(नि० र०)

अर्थ-मालकांगुनीका तेल-वमनकारक, कडवा, अत्यन्त गरम, सारक, तीक्ष्ण, पित्तजनक, स्मरणशक्ति और बुद्धिदायक, मेधाकारक, लेखन, रसायन, अग्निप्रदीपक, वात, त्रिदोष और कफनाशक है।

आम्रतैलगुणाः ।

आम्रबीजभवं तैलं सुगंधि मधुरं मतम् ।
रूक्षं किञ्चित्पित्तलं च तिक्तं च विशदं मतम् ॥
कफवातहरं चैव मुनिभिः परिकीर्तितम् ।

अर्थ-आमकी गुठलीका तेल-सुगंधि, मधुर, रूखा, किंचित् पित्तकारक, कडवा, विशद और कफवातनाशक है ।

मधूकतैलगुणाः ।

मधूकतैलं मधुरं पिच्छिलं तुवरं मतम् ।
कफपित्तज्वरं चैव दाहं पित्तं च नाशयेत् ॥
पलाशपाटलायास्तु तैलस्यैते गुणा मताः ।

अर्थ-महुवेका तेल-मधुर, पिच्छिल, कषेला तथा कफ, पित्त, ज्वर, दाह और पित्तको दूर करेहै । पलाश और पाडलके तेलके गुणभी इसीके समान जानने ।

वन्दातैलगुणाः ।

वन्दाकतैलं मधुरं गुरुः कटुरसं मतम् ।

अर्थ-वदाका तेल-मधुर, भारी और कटुरसान्वित है ।

अकोलतैलगुणाः ।

अकोलतैलं वातघ्नमभ्यङ्गात्त्वग्रुजापहम् ।
कफनाशकरं प्रोक्तं पूर्ववैद्यैर्महर्षिभिः ॥

अर्थ-अकोलका तेल-वातनाशक इसको मलनेसे त्वचाके रोग दूर होते है और कफनाशक है ।

दन्तीतैलगुणाः ।

दन्त्यास्तैलं स्वादुकेश्यं लेपनात्सर्वकुष्ठहम् ।
वातहं प्राशनेनैव पित्तस्यास्रस्य नाशकम् ।

अर्थ-दंतीका तेल-स्वादिष्ठ, केशोंको हितकारी, लेप करनेसे सर्वप्रकारके कुष्ठोंको नष्टकरे है, पीनेसे वातको हरे और रक्तपित-नाशक है ।

पुत्रजीवकतैलगुणाः ।

पुत्रजीविभवं तैलं कफवातविनाशकम् ।

अर्थ-जियापोताका तेल-कफवातविनाशक है ।

त्रायमाणतैलगुणा ।

त्रायमाणभवं तैलं सर्वव्याधिविनाशकृत् ।

अर्थ-त्रायमाणका तेल-सर्वरोगनाशक है ।

शखिनीतैलगुणा. ।

शखिनीसम्भवं तैलं तीक्ष्णं तिक्तं कटु स्मृतम् । रक्तपित्तकरं चैव सारक च मतं लघु ॥ कृमिकुष्ठार्शमेहघ्नं कफवातहरं परम् । शुक्रमेदहर प्रोक्तं पूर्ववैद्योत्तमैः पुरा (इ० र०)

अर्थ-शखिनीका तेल-तीक्ष्ण, कडवा, चरपरा, रक्तपित्तकारक सारक, हलका तथा कृमि, कोढ, बवासीर, प्रमेह, कफवात, शुक्र और मेदनाशक है।

पुन्नागतैलगुणा ।

पुन्नागतैलं कटुकं सरं तिक्तं च लेखनम् ।

पित्तल वातरक्तघ्न दाहनाशकरं मतम्॥

अर्थ-पुन्नागका तेल-चरपरा, सारक, कडवा, लेखन, पित्तकारक वातरक्तनाशक और दाहको दूर करे है ।

कपित्थतैलगुणा ।

कपित्थतैलं तुवरं स्वादु चाखुविषापहम् ।

अर्थ-कैथके बीजोका तेल-कषेला, स्वादिष्ठ और मूसेके विषकों हरे है।

खसखसतैलगुणा ।

खसबीजस्य तैलन्तु बल्यं वृष्यं गुरु स्मृतम् ।

स्वादु शीत कफकरं वातनाशकर मतम् ॥

अर्थ-खसखसका तेल-बलकारक, वीर्य्यवर्द्धक, भारी, स्वादिष्ठ, शीतल, कफकारक और वातविनाशक है।

नारिकेलतैलगुणा ।

नारिकेलभव तैल रसे पाके मधु स्मृतम् ।

बल्यं केश्य वातहरमुष्ण नेत्ररुजापहम् ॥

अर्थ-नारियलका तेल-रस और पाकमे मधुर, बलकारक, केशोको हितकारी; वातनाशक, गरम और नेत्ररोगनाशक है।

पीलुतैलगुणा ।

पीलुतैल सरं चोष्ण कुष्ठवातक्षनापहम् । शोथं पित्तहजं कण्डू

गण्डमालां विनाशयेत् ॥ अंत्रवृद्धिं रक्तदोषं नाशयेदिति च स्मृतम् । अम्लवेतसतैलस्याप्येत एव गुणाः मताः ॥

अर्थ-पीलुका तेल-सारक, गरम, तथा कोढ, वात, क्षत, सूजन, पित्तरोग, कण्डू, गंडमाला, अंत्रवृद्धि और रुधिरके दोषोंको दूर करेहै अमलवेतके तेलके गुणभी इसीके समान जानने ।

शिशपादितैलगुणा ।

शिंशपागरुगण्डीरनिर्गुण्डीसरलादिजम् ।
तैलं तु तुवरं तिक्तं कटुकं वातरक्तजित् ॥
विषकण्डूवातकफकुष्ठदुष्टव्रणाञ्जयेत् ।

अर्थ-सीसो, अगर, गण्डीर, निर्गुण्डी और सरलादिकका तेल-कषेला, कडवा, चरपरा तथा वातरक्त, विष, खुजली, वात, कफ कुष्ठ और दुष्टव्रणको नष्ट करे है ।

पृथ्वीकादितैलगुणाः ।

पृथ्वीकानीपजीमूतहस्तिकर्णार्कमूलजम् । काम्पिल्लकं च तैलन्तु तीक्ष्णं पाके कटु स्मृतम्॥ सरमुष्णं च तिक्तं च लघु कुष्ठकफापहम्। मेहमूर्च्छामदकृमिनाशनं परमं मतम्॥(रत्नाकर)

अर्थ-पृथ्वीका (हिंगुपत्री) जीमूत (देवदाली) मूली, हस्तिर्ण, पलाश, नीप (कदम्ब) और कबीलेका तेल-तीक्ष्ण, पचनेमें चरपरा सारक, गरम, कडवा, हलका तथा कोढ, कफ, प्रमेह, मूर्च्छा, मद और कृमिको दूर करे है ।

तैलं स्वयोनिगुणकृद्वाग्भटेनाखिलं मतम् ।
अतः शेषस्य तैलस्य गुणा ज्ञेयाः स्वयोनिवत् ॥

अर्थ-वाग्भटने सर्व तेल स्वयोनि अर्थात् जिस २ औषधीसे जो २ तेल उत्पन्न होताहै वह उसीके समान गुणकरे है ऐसा कहा है इसीसे जो तेल इस ग्रन्थमें नहीं कहे गये उनके गुण अपनी २ योनिके समान जानने ।

अवगाहनयुक्ततैलगुणा ।

स्नेहोऽवगाहने युक्तः शरीरे बलमाहरेत् ।
शिरामुखै रोमकूपैर्धमनीभिश्च तर्पयेत् ॥

अर्थ-प्रथम तेलको मलकर पीछे जलसे स्नानकरे इसप्रकार करनेसे शरीरमे बल बढता है तथा शिरासुख, रोमकूप और धमनी नाडियोंके द्वारा तृप्तिकारक है।

शिरसि तैलमर्दनगुणा।

नित्यं स्नेहार्द्रशिरसः शिरःशूल न जायते। न खालित्यं न पालित्यं न केशाः प्रपतन्ति च॥ दृढमूलाश्च कृष्णाश्च भवन्ति च घनायताः। इन्द्रियाणि प्रसीदन्ति सुदृग्भवति लोचनम्॥

अर्थ-जो मनुष्य प्रतिदिन मस्तकमे तेल मलतेहै, उनके शिरशूल नही उत्पन्न होताहै तथा केशोकी अल्पता, पक्कता और केश नहीं पतन होते हैं और दृढ मूलसहित, काले और सघन केश होजातेहै तथा इन्द्रियोंमें प्रसन्नता और नेत्रोमे सुदृश्यता उत्पन्न होतीहै।

कर्णतैलपूरणगुणा।

कर्णप्रपूरणान्नित्यं न मन्या न हनुग्रहाः।
नोच्चःश्रुतिन बाधिर्यं न कर्णे वातजा रुजः॥ (राजवल्लभ)

अर्थ-जो मनुष्य कर्णमे नित्यप्रति तेल डालतेहै-उनके मन्यास्तम्भ, हनुग्रह, कानसम्बन्धी ऊंचा सुनना आदि दुःसाध्यरोग, बधिरता और कानमे वातादिरोग उत्पन्न नही होते है।

मर्दने तैलगुणा।

"घृतादष्टगुणं गुरु"

अर्थ-शरीरमें मलनेसे तेलमे घीकी अपेक्षा आठ गुण अधिक है।

तैलं न सेवयेद्धीमान् यस्यकस्य च यद्भवेत्।
विषसात्म्यगुणत्वाच्च योगे तन्न प्रयोजयेत्॥

अर्थ-बुद्धिमान् पुरुषको चाहिये कि, जिस तिसके दिये हु तेलको सेवन नही करे और उसमे विषकी समानता होनेसे बिन विचारे किसी योगमे भी प्रयोग नही करे।

इति श्रीशालिग्रामनिघण्टुभूषणे तैलवर्ग समाप्त.॥ १८॥

अथ अर्कवर्गः।

अथातः संप्रवक्ष्यामि केवलार्कगुणं ध्रुवं।
अर्थ-इसके उपरान्त केवल अर्कोंके गुण कहता हूं।

हरीतक्यर्कगुणाः ।

हरीतक्याः शूलकृच्छ्रकामलानाहनाशनः ।

अर्थ-हरडका अर्क-शूल, मूत्रकृच्छ्र, कामला और आनाह रोगनाशक है।

बिभीतकार्कगुणाः ।

विभीतकस्य तृट्छर्दिकफकासविनाशनः ।

अर्थ-बहेडेका अर्क-तृषा, वमन, कफ और खाँसीको हरे है।

आमलक्यर्कगुणाः ।

आमलक्यास्त्रिदोषास्रपित्तमोह विनाशयेत् ।

अर्थ-आमलेका अर्क-त्रिदोष, रक्तपित्त और मोहनाशक है।

नागरार्कगुणाः ।

शुण्ठ्या विबन्धामवातशूलश्वासबलासहृत् ।

अर्थ-सोंठका अर्क-मलबद्धता, आमवात, शूल, श्वास और कफनाशक है।

आर्द्रकार्कगुणाः ।

आर्द्रकस्य ज्वरं दाह हरेद्रुच्यग्निदीप्तिकृत् ।

अर्थ-अदरखका अर्क-ज्वर और दाहको हरे है, रुचिकारक अग्निदीपक है।

पिप्पल्यर्कगुणाः ।

पिप्पल्याः श्वासकासामवातार्शोज्वरशूलहृत् ।

अर्थ-पीपलका अर्क-श्वास, खाँसी, आमवात, बवासीर, ज्वर और शूलको नष्ट करे है।

मरीचार्कगुणाः ।

मरीचकः श्वासकृमीन्हरेत्सर्वान्गदानपि ।

अर्थ-कालीमिर्चका अर्क-श्वास, कृमि और अन्यान्य सर्व रोगोंको नाश करे है।

पिप्पलीमूलार्कगुणाः ।

ग्रन्थिकस्य प्लीहगुल्मकफवातहरः परः ।

अर्थ-पीपरामूलका अर्क-प्लीहा, गुल्म, कफ और वातविनाशक है।

चव्यार्कगुणाः ।

चव्यार्कोऽत्यन्तरुचिकृद्विशेषाद्गुदजापहः ।

अर्थ-चव्यका अर्क-अत्यन्तरुचिकारक और विशेषकरके गुदारोगनाशक है।

गजपिप्पल्यर्कगुणाः ।

अर्कस्तु गजपिप्पल्या वातश्लेष्माग्निमान्द्यनुत् ।

अर्थ-गजपीपलका अर्क-वात, कफ और मन्दाग्निनाशक है ।

चित्रकार्कगुणाः ।

चित्रकस्याग्निकृत्कासग्रहणीकफशोषहा ।

अर्थ-चीतेका अर्क-अग्निजनक तथा खाँसी, सग्रहणी, कफ और शोषको हरे है ।

यमान्यर्कगुणाः ।

यमान्याः पाचनो रुच्यो दीपनः शुक्रशूलहृत् ।

अर्थ-अजवायनका अर्क-पाचक, रुचिकारक, दीपन तथा शुक्र और शूलनाशक है ।

अजमोदार्कगुणाः ।

अजमोदोद्भवो वातकफहा वस्तिशोधनः ।

अर्थ-अजमोदका अर्क-वात कफनाशक और वस्तिशोधक है ।

पारसीकयमान्यर्कगुणाः ।

पारसीकयमान्यास्तु ग्राही पाचकमादकः ।

अर्थ-खुरासानी अजवायनका अर्क-मलरोधक, पाचक और मदकारक है ।

जीरकार्कगुणाः ।

जीरकस्य तु संग्राही गर्भाशयविशुद्धिकृत् ।

अर्थ जीरेका अर्क-ग्राही और गर्भाशयशोधक है ।

कृष्णजीरकार्कगुणाः ।

कृष्णजीरस्य चक्षुष्यो गुल्मच्छर्द्यतिसारजित् ।

अर्थ-कालेजीरेका अर्क नेत्रोको हितकारी तथा गुल्म, वमन और अतिसारको दूर करे है ।

कारवीजीरकार्कगुणाः ।

कारव्या बलकृच्चार्को ज्वरघ्नः पाचनः सरः ।

अर्थ-कलोजीका अर्क बलकारक, ज्वरनाशक, पाचक और सारक है ।

धान्यकार्कगुणाः ।

धान्यकस्य तृषादाहवमिश्वासत्रिदोषजित् ।

अर्थ-धनियेका अर्क-तृषा, दाह, वमन, श्वास और त्रिदोषनाशक है ।

शतपुष्पार्कगुणाः ।

मिश्या ज्वरानिलश्लेष्मव्रणशूलाक्षिरोगहृत् ।

अर्थ-सौंफका अर्क-ज्वर, वात, कफ, व्रण, शूल और नेत्ररोगनाशक है ।

मिश्रेयार्कगुणाः ।

मिश्रेयाया वह्निमान्द्ययोनिशूलकृमीन्हरेत् ।

अर्थ-सोयेका अर्क-मन्दाग्नि, योनिशूल और कृमिनाशक है ।

ज्वालामरिचार्कगुणाः ।

ज्वालामरीचकस्यापस्मारभूतत्रिदोषनुत् ।

अर्थ-लालमिर्चका अर्क-अपस्मार, भूत व त्रिदोषनाशक है ।

मेथिकार्कगुणाः ।

मेथिकायाः श्लेष्मवातज्वरामकफनाशनः ।

अर्थ-मेथीका अर्क-श्लेष्म, वात, ज्वर, आम और कफनाशक है ।

वनमेथिकार्कगुणाः ।

वनमेथ्याः सर्वरोगान्हरेत्कुञ्जरवाजिनाम् ।

अर्थ-वनमेथीका अर्क-हाथी और घोडोके सर्व रोगोंको हरे है ।

चन्द्रसूरार्कगुणाः ।

चन्द्रसूरस्य हिक्कासृग्वातहृत्पुष्टिवर्द्धनः ।

अर्थ-हालोका अर्क-हुचकी, रुधिरविकार और वातनाशक है तथा पुष्टिवर्द्धक है ।

हिंग्वर्कगुणाः ।

हिङ्गुनः पाचनो रुच्यः कृमिशूलोदरापहः ।

अर्थ-हींगका अर्क-पाचन, रुचिकारक तथा कृमि, शूल और उदररोगनिवारक है ।

वचार्कगुणाः ।

वचाया वह्निवमिकृद्विबन्धाध्मानशूलहृत् ।

अर्थ-वचाका अर्क-अग्निजनक, वमनकारक तथा विबंध, आध्मान और शूलको हरे है ।

पारसीकवचार्कगुणाः ।

पारसीकवचायास्तु भूतोन्मादबलं हरेत् ।

अर्थ-खुरासानी वचका अर्क-भूतोन्माद और बलनाशक है ।

कुलिञ्जनार्कगुणा।

कुलिञ्जनस्य स्वरकृद्दृक्कण्ठमुखशोधनः।

अर्थ-कुलिंजनका अर्क-स्वरको शुद्ध करनेवाला तथा कण्ठ और मुखशोधक है।

स्थूलग्रन्थिवचार्कगुणा।

स्थूलग्रन्थिवचस्यार्को विशेषात्कफकासहृत्।

अर्थ-स्थूलग्रन्थि वचका अर्क-विशेष करके कफनाशक है।

द्वीपान्तरवचार्कगुणः।

द्वीपान्तरवचायास्तु हरेच्छूल फिरङ्गकम्।

अर्थ-चोपचीनीका अर्क-शूल और फिरंगरोगनाशक है।

हपुषार्कगुणा।

हपुषाया हरेत्प्लीहं विषमोहञ्च दारुणम्।

अर्थ-हाऊबेरका-अर्क-प्लीहा, विष और दारुणमूर्च्छाको हरेहै।

क्षुद्रवपुषार्कगुणा।

वपुषायाः समीरार्शोग्रहणीगुल्मशूलनुत्।

अर्थ-छोटेहाऊबेरका अर्क-वात, बवासीर, संग्रहणी गुल्म और शूलनाशक है।

विडङ्गार्कगुणा।

विडङ्गस्योदरश्लेष्मकृमिवातविबन्धनुत्।

अर्थ-वायविडंगका अर्क-उदररोग, कफ, कृमि, वात और विबंध नाशक है।

तुम्बुरोरर्कगुणा।

तुम्बुरोर्गुरुताश्वासप्लीहागुल्मकृमीन्हरेत्।

अर्थ-तुम्बुरुका अर्क-शरीरका भारीपन, श्वास, प्लीहा, गुल्म और कृमिको दूर करे है।

वंशलोचनार्कगुणा।

वंशलोचनजस्तृष्णाक्षयश्वासज्वरान्हरेत्।

अर्थ-वंशलोचनका अर्क-तृष्णा, क्षय, श्वास और ज्वरको हरे है।

समुद्रफेनार्कगुणा।

समुद्रफेनजः शीतो रेचकः कफहृत्परः।

अर्थ-समुद्रफेनका अर्क-शीतल, दस्तावर और कफनाशक है।

जीवकार्कगुणा ।

जीवकोत्थः शुक्रकफबलकृच्छीतलः समः ।

अर्थ-जीवकका अर्क-शुक्र,कफ और बलकारक और समशीतलहै ।

ऋषभकार्कगुणा ।

आर्षभः पित्तदाहास्रकासवातक्षयापहः ।

अर्थ-ऋषभकका अर्क-पित्त, दाह, रुधिरविकार, खाँसी, वात और क्षयको क्षय करे है ।

मेदार्कगुणा ।

सुनामेदोद्भवार्कस्तु हृद्यः स्तन्यः कफावहः ।

अर्थ-मेदका अर्क-नेत्रोको हितकारी, स्तनोमे दूध करनेवाला और कफकारी है ।

महामेदार्कगुणा ।

महामेदोद्भवः शीतो रक्तवातज्वरप्रणुत् ।

अर्थ-महामेदाका अर्क-शीतल तथा वात,रक्त और ज्वरनाशकहै ।

काकोल्यर्कगुणा ।

काकोल्याः शुक्रलः शीतो पित्तशोषज्वरापहः ।

अर्थ-काकोलीका अर्क-शुक्रजनक, शीतल तथा पित्त, शोष और ज्वरनाशक है ।

क्षीरकाकोल्यर्कगुणा ।

क्षीरकाकोलिकाजातो बृंहणो दाहवातहा ।

अर्थ-क्षीरकाकोलीका अर्क-पुष्टिकारक तथा दाह और वातविनाशक ह ।

ऋद्ध्यर्कगुणा ।

ऋद्ध्या बल्यस्त्रिदोषघ्नो रक्तपित्तविनाशकः ।

अर्थ-ऋद्धिका अर्क-बलकारी, त्रिदोषनाशक और रक्तपित्तनाशक ह ।

वृद्ध्यर्कगुणा ।

वृद्ध्या गर्भगतः शीतः क्षतकासक्षयापहः ।

अर्थ-वृद्धिका अर्क-शीतल तथा क्षत, खाँसी और क्षयरोगनाशक है ।

मधुकार्कगुणा ।

मधुयष्ट्या केशकरः स्वर्य्यः पित्तानिलास्रजित् ।

अर्थ-मुलैठीका अर्क-केशोको उत्पन्न करनेवाला, स्वरको उत्तम करनेवाला तथा पित्त,वात और रुधिरके विकारोको हरेहै ।

जलमधुयष्ट्यर्कगुणा ।

जलयष्ट्या विषच्छर्दितृष्णाग्लानिक्षयापहः ।

अर्थ-जलमुलेठीका अर्क-विष, वमन, तृषा, ग्लानि और क्षय-रोगनाशक है ।

काम्पिल्लार्कगुणा ।

काम्पिल्लस्य विरेकी स्यान्मेहनस्य विकारनुत् ।

अर्थ-कवीलेका अर्क-विरेचक और मूत्रविकारनिवारक है ।

आरग्वधार्कगुणा ।

आरग्वधस्य पित्तास्रवातोदावर्त्तशूलहृत् ।
कण्डूमेहश्वासकासकृमिकुष्ठज्वरापहः ॥

अर्थ-अमलतासका अर्क-रक्तपित्त, वात, उदावर्त्त, शूल, कण्डू, प्रमेह, श्वास, खाँसी, कृमि, कोढ और ज्वरनाशक है ।

भूनिम्बार्कगुणा ।

भूनिम्बस्य तृषाकुष्ठज्वरव्रणकृमिप्रणुत् ।

अर्थ-चिरायतका अर्क-तृषा, कोढ, ज्वर, व्रण और कृमिनाशक है।

वत्सार्कगुणा ।

भद्रमानस्तु पित्तास्रकृमिवीसर्पकुष्ठनुत् ।

अर्थ-इन्द्रजौका अर्क-रक्तपित्त, कृमि, विसर्प और कुष्ठको नष्ट करे है।

मदनफलार्कगुणा ।

मदनोत्थश्छर्दनेन चतुर्थज्वरकादिहृत् ।

अर्थ-मैनफलका अर्क-वमनकारक और चातुर्थिक (चौथिया) ज्वरनिवारक है ।

रास्नार्कगुणा ।

रास्नोद्भवः समीरास्रवातशूलोदरापहः ।

अर्थ-रास्नाका अर्क-वातरक्त, वातशूल और उदररोगनाशक है।

नागभिन्नार्कगुणा ।

नागभिन्नोद्भवा भोगीलूताद्याखुविकारहृत् ।

अर्थ-नाकुलीका अर्क-सर्प, मकडी और मूसे आदिके विषको हरे है ।

माचिकार्कगुणा ।

माचिकाजस्तु पित्तास्रपक्वातीसारहा लघुः ।

अर्थ-मोईयेका अर्क-हलका, रक्तपित्त और पक्वातिसारनाशक है।

तेजस्विन्यर्कगुणाः ।

तेजस्विन्याः श्वासकासकफहृद्वह्निदीपनः ।

अर्थ-तेजबलका अर्क-श्वास, खाँसी और कफनाशक है तथा अग्निप्रदीपक है ।

ज्योतिष्मत्यर्कगुणाः ।

ज्योतिष्मत्या वान्तिकरो वह्निबुद्धिस्मृतिप्रदः ।

अर्थ-मालकांगुनीका अर्क-वमनकारक तथा अग्नि, बुद्धि और स्मरणशक्तिवर्द्धक है ।

कुष्ठार्कगुणाः ।

कुष्ठस्य हन्ति वातास्रकासकुष्ठमरुत्कफान् ।

अर्थ-कूठका अर्क-वातरक्त, खाँसी, कोढ, वात और कफनाशक है।

पौष्करार्कगुणाः ।

पौष्करस्यारुचिश्वासान्विशेषात्पार्श्वशूलनुत् ।

अर्थ-पोहकरमूलका अर्क-अरुचि, श्वास और विशेषकरके पसवाडेकी पीडाको दूर करे है ।

क्षीरिण्यर्कगुणाः ।

हेमाह्वाया रेकवान्तिकरः कण्डूविनाशनः ।

अर्थ-स्वर्णक्षीरीका अर्क-विरेचक, वमनकारक और कण्डूनाशक है ।

शृङ्ग्यर्कगुणाः ।

शृङ्गी हरेदूर्ध्ववातहिक्कातृष्णाक्षयज्वरान् ।

अर्थ-काकडाशिंगीका अर्क-ऊर्ध्ववात, हिचकी, तृषा, क्षय और ज्वरनाशक है ।

कट्फलार्कगुणाः ।

कट्फलोत्थः श्वासकासप्रमेहार्शोऽरुचिं हरेत् ।

अर्थ-कायफलका अर्क-श्वास, खाँसी, प्रमेह, बवासीर और अरुचिको दूर करे है ।

भार्ग्यर्कगुणाः ।

भार्ग्या हरेत्कफश्वासपीनसज्वरमारुतान् ।

अर्थ-भारंगीका अर्क-कफ, श्वास, पीनस, ज्वर और वातविनाशक है ।

पाषाणभेद्यर्कगुणाः ।

पाषाणभेदजो योनिरोगहृच्छ्वासगुल्महा ।

अर्थ-पाषाणभेदका अर्क-योनिरोग, श्वास और गुल्मनाशक है ।

धातक्यर्कगुणाः ।

धातकीजस्तृषासारविषकीटविसर्पजित् ।

अर्थ-धायके फूलोंका अर्क-तृषा, अतिसार, विष, कृमि और विसर्परोगनाशक है ।

समङ्गार्कगुणाः ।

माञ्जिष्ठजो विषश्लेष्मरक्तातीसारकुष्ठहा ।

अर्थ-मजीठका अर्क-विष,श्लेष्म,रक्तातिसार और कुष्ठनाशक है ।

कुसुम्भार्कगुणाः ।

कुसुम्भजोवर्णकरो रक्तपित्तकफापहः ।

अर्थ-कसूमका अर्क-वर्णको सुन्दर करनेवाला तथा रक्तपित्त और कफनाशक है ।

लाक्षार्कगुणाः ।

लाक्षाजः कृमिवीसर्प व्रणोरःक्षतकुष्ठहा ।

अर्थ-लाखका अर्क-कृमि,विसर्प,व्रण,उरःक्षत और कुष्ठनाशक है।

हरिद्रार्कगुणाः ।

हरिद्राया मेहशोथत्वग्दोषव्रणपाण्डुनुत् ।

अर्थ-हलदीका अर्क-प्रमेह, सूजन, त्वचाके दोष, व्रण और पाण्डुरोगनाशक है ।

आरण्यहरिद्रार्कगुणाः ।

आरण्यकहरिद्रायाः कुष्ठवातास्रनाशनः ।

अर्थ-वनहलदीका अर्क-कोढ,वात और रक्तविकार विनाशक है ।

कर्पूरहरिद्रार्कगुणाः ।

कर्पूरकहरिद्रायाः सर्वकण्डूविनाशनः ।

अर्थ-कपूरहलदीका अर्क-सर्वप्रकारके कण्डूनाशक है ।

दारुहरिद्रार्कगुणाः ।

दार्व्या विशेषतो लेपान्नेत्रकर्णस्य रोगनुत् ।

अर्थ-दारुहलदीका अर्क-विशेष करके लेप करनेसे नेत्ररोग और कर्णरोगको हरेहै ।

रसाञ्जनार्कगुणाः ।

रसाञ्जनोद्भवो नेत्रविकारव्रणदोषनुत् ।

अर्थ-रसाञ्जन अर्थात् रसौतका अर्थ नेत्रविकार और व्रणदोष-निवारक है।

अवल्गुजार्कगुणा ।

वाकुच्याः कृमिविष्टम्भपाण्डुशोफककफापहः ।

अर्थ-बापचीका अर्क-कृमि, विष्टम्भ, पाण्डु, सूजन और कफनाशक है।

चक्रमर्दार्कगुणा ।

प्रपुन्नाटस्य हन्त्येव कण्डूदद्रुविषानिलान् ।

अर्थ-चकवडका अर्क-खुजली, दाद विष और वातविनाशक है।

अतिविषार्कगुणा ।

विषजो दीप्तिकार्य्यर्कः कफपित्तातिसारहा ।

अर्थ-अतीसका अर्क-अग्निदीपक तथा कफ, पित्त और अतिसारनाशक है।

लोधार्कगुणा ।

लोध्रजः शीतलो ग्राही चक्षुष्यः कफपित्तनुत् ।

अर्थ-लोधका अर्क-शीतल, मलरोधक, नेत्रोंको हितकारी तथा कफ और पित्तनाशक है।

बृहत्पत्रार्कगुणा ।

बृहत्पत्रोद्भवो नेत्र्यो ज्वरातीसारशोथहृत् ।

अर्थ-पठानीलोधका अर्क-नेत्रोंको हितकारी, ज्वर, अतिसार और सूजनको हरे है।

भल्लातकार्कगुणा ।

भल्लातकोद्भवो हन्याज्ज्वरोदरकृमिव्रणान् ।

अर्थ-भिलावेका अर्क-ज्वर, उदररोग, कृमि और व्रणनाशक है।

गुडूच्यर्कगुणा ।

गुडूच्या दीपनः श्वासकासपाण्डुज्वरापहः ।

अर्थ-गिलोयका अर्क-दीपन तथा श्वास, खाँसी, पाण्डुरोग और ज्वरको हरे है।

बिल्वार्कगुणा ।

बैल्वः श्लेष्महरो बल्यो लघुरुष्णश्च पाचनः ।

अर्थ-बेलका अर्क-कफनाशक, बलकारक, हलका, गरम और पाचक है।

काश्मर्य्यर्कगुणाः ।

गाम्भारीजो भ्रान्तितृष्णाशूलार्शोविषदाहनुत् ।

अर्थ-कुम्भेरका अर्क-भ्रान्ति, तृषा, शूल, बवासीर, विष और दाहनाशक है ।

पाटलार्कगुणाः ।

पाटल्याश्छर्दिशोफास्रतृष्णादाहारुचीर्हरेत् ।

अर्थ-पाढलका अर्क-वमन, सूजन, रुधिरविकार, तृषा, दाह और अरुचिनिवारक है ।

अग्निमन्थार्कगुणाः ।

अग्निमन्थोद्भवः शोफकृमिपाण्डुबलासनुत् ।

अर्थ-अरणीका अर्क-सूजन, कृमि, पाण्डु, और कफनाशक है ।

श्योनाकार्कगुणाः ।

श्योनाकजस्तु गुल्मार्शःकृमिहृद्रुचिदीप्तिकृत् ।

अर्थ-श्योनाकका अर्क-गुल्म,बवासीर और कृमिनाशक और रुचिदीपक है ।

शालिपर्ण्यर्कगुणाः ।

शालिपर्ण्याः क्षतकृमिज्वरच्छर्द्यतिसारहा ।

अर्थ-शालिपर्णीका अर्क-क्षतरोग, कृमि, ज्वर, वमन और अतिसारनिवारक है ।

पृश्निपर्ण्यर्कगुणाः ।

पृश्निपर्ण्या ज्वरश्वासरक्तातीसारदाहहृत् ।

अर्थ-पिठवनका अर्क-ज्वर,श्वास,रक्तातिसार और दाहनाशक है ।

बृहत्यर्कगुणाः ।

वार्त्ताक्या ज्वरवैरस्यमलारोचकशूलहा ।

अर्थ-बृहती अर्थात् कटाईका अर्क-ज्वर, मुखकी विरसता, मलदोष, अरुचि और शूलनाशक है ।

श्वेतकण्टकार्य्यर्कगुणाः ।

कण्टकार्य्या गर्भकरः पाचनः कफकासहा ।

अर्थ-सफेद कटेरीका अर्क-गर्भकारक, पाचन तथा कफ और खाँसीको दूर करे है ।

कण्टकार्यर्कगुणा ।

कण्टकार्य्या दीपनश्च श्लेष्मशोफरुजापहः ।

अर्थ-कटेरीका अर्क-अग्निप्रदीपक तथा श्लेष्म और सूजनको दूर करे है ।

गोक्षुरार्कगुणा ।

गोक्षुरस्याश्मरीमेहकृच्छ्रहृद्रोगवातहा ।

अर्थ-गोखुरूका अर्क-पथरी, प्रमेह, मूत्रकृच्छ्र, हृदयरोग, और वातविनाशक है ।

जीवन्त्यर्कगुणा ।

जीवन्त्याः सारहृन्नेत्र्यो दोषत्रितयनाशनः ।

अर्थ-जीवन्तीका अर्क-नेत्रोको हितकारी तथा त्रिदोष और अतिसारनाशक है ।

मुद्गपर्ण्यर्कगुणा ।

मुद्गपर्ण्याः शोफदाहग्रहण्यर्शोऽतिसारहृत् ।

अर्थ-मुगवनका अर्क-सूजन, दाह, संग्रहणी और अतिसारनिवारकहै

माषपर्ण्यर्कगुणा ।

माषपर्ण्याः शुक्रकरो वातपित्तज्वरास्रजित् ।

अर्थ-मषवनका अर्क-शुक्रजनक तथा वात पित्त और रुधिरके दोषोको दूर करे है ।

श्वेतरण्डार्कगुणा ।

पञ्चांगुलोद्भवः शूलशिरःपीडोदरापहः ।

अर्थ-सफेद अण्डका अर्क-शूल, शिरकी पीडा और उदररोगनाशक है ।

रक्तैरण्डार्कगुणा

रुबुकोत्थोद्भवः श्वासकासकुष्ठाममारुतान् ।

अर्थ-लाल अंडका अर्क-श्वास, खाँसी, कोढ और आमवातनाशक है ।

मन्दारार्कगुणा

मन्दारजो वातकुष्ठकण्डूव्रणविषापहः ।

अर्थ-मन्दारका अर्क-वात, कुष्ठ, कण्डू, व्रण और विषविनाशक है

अर्क्यर्कगुणा

अर्क्यर्कः प्लीहगुल्मार्शः श्लेष्मोदरकृमीन्हरेत् ।

अर्थ-आकका अर्क-प्लीहा, गुल्म, बवासीर, श्लेष्म, उदररोग और कृमिनाशक है ।

वज्र्यर्कगुणा।

वज्रीजो लेपतो हन्याद्व्रणशोफोदरव्रणान्।

अर्थ-वज्री (एकप्रकारका सेहुंड) का अर्क-लेपसे व्रण, सूजन और उदररोगनाशक है।

सातलार्कगुणा।

सातलोत्थः कफानाहपित्तोदावर्त्तशोफहा।

अर्थ-सातलाका अर्थ-कफ, आनाह, पित्त, उदावर्त्त और सूजनको हरे है।

लाङ्गल्यर्कगुणा।

लाङ्गल्या लेपतो हन्याच्छोफार्शोंव्रणरोगहृत्।

अर्थ-कलिहारीके अर्कका लेप करनेसे सूजन, बवासीर और व्रणको हरेहै।

श्वेतकरवीरार्कगुणा।

करवीरोद्भवो नेत्रशोफकुष्ठव्रणापहः।

अर्थ-सफेद कनेरका अर्क-नेत्ररोग,सूजन,कोढ, व्रणविनाशक है।

रक्तकरवीरार्कगुणा।

चाण्डातोत्थस्तु विषहृद्भक्षणे लेपने सुहृत्।

अर्थ-लाल कनेरका अर्क-भक्षण करनेमे विषनाशक और लेप करनेमे विशेष उपकारी है।

धत्तूरबीजार्कगुणा।

धत्तूरजो हरेल्लेपाद्यूकाकृमिविषादिकम्।

अर्थ-धतूरेका अर्क-लेपकरनेसे यूका, कृमि, विषदोषनाशक है।

वासार्कगुणा।

वासोद्भवो ज्वरच्छर्दिमेहकुष्ठक्षयापहः।

अर्थ-अडूसेका अर्क-ज्वर,वमन,प्रमेह,कोढ, क्षयरोगनाशक है।

पर्पटार्कगुणा।

पार्पटो हन्ति पित्तास्रभ्रमतृष्णाकफज्वरान्।

अर्थ-पित्तपापडेका अर्क-रक्तपित्त, भ्रम,तृषा, कफ,ज्वरको हरे है।

निम्बार्कगुणा।

निम्बजः श्रमतृट्कासज्वरारुचिवमिप्रणुत्।

अर्थ-नीमका अर्क-श्रम,तृषा,खाँसी,ज्वर,अरुचि,वमननिवारक है।

महानिम्बार्कगुणाः ।

महानिम्बोद्भवो गुल्ममूषिकाविषनाशनः ।

अर्थ-बकायननीमका अर्क-गुल्म और मूषेके विषको हरे है ।

पारिभद्रार्कगुणाः ।

पारिभद्रोऽनिलश्लेष्मशोफमेदकृमिप्रणुत् ।

अर्थ-फरहदका अर्क-वात, श्लेष्म, शोफ, मेद, कृमि, विनाशक है ।

काञ्चनारार्कगुणाः ।

काञ्चनारो गण्डमालागुदभ्रंशव्रणापहः ।

अर्थ-कचनारका अर्क-गण्डमाला, गुदभ्रंश और व्रणविनाशक है।

कोविदारार्कगुणाः ।

कोविदारस्तु पित्तास्रप्रदरक्षयकासहा ।

अर्थ-लालकचनारका अर्क-पित्त, रुधिरविकार, क्षय, खाँसीको हरे है।

रक्तशोभाञ्जनार्कगुणाः ।

शोभाञ्जनार्को रुचिकृच्छुक्रलो ग्राहि दीपनः ।

अर्थ-लालसैंजिनेका अर्क-रुचिकारक, शुक्रजनक, मलरोधक और दीपन है ।

श्वेतशोभाञ्जनार्कगुणाः ।

मधुशिग्रूद्भवो हन्याद्विद्रधिश्वयथुकृमीन् ।

अर्थ-मधुशिग्रु वा सफेद सैंजिनेका अर्क-विद्रधि, सूजन और कृमिरोगनाशक है ।

शिग्रुजार्कगुणाः ।

शिग्रुजो विषहृन्नेत्र्यस्तस्य नस्याच्छिरोर्तिहृत् ।

अर्थ-सामान्यसैंजिनेका अर्क-नेत्रोंको हितकारी, विषविनाशक और इसका नासलेनेसे शिरकी पीडा दूर होती है ।

गिरिकर्ण्यर्कगुणाः ।

गिरिकर्ण्याः कर्णशूलशोफव्रणविषापहः ।

अर्थ-कोयलीका अर्क-कर्णशूल, सूजन, व्रण, विषविनाशक है ।

सिन्धुवारार्कगुणाः ।

सिन्धुवारोद्भवो हन्ति शूलशोफाममारुतान् ।

अर्थ-सम्हालुका अर्क-शूल, सूजन और आमवातनाशक है ।

निर्गुण्ड्यर्कगुणाः ।

निर्गुण्ड्यर्को हरेज्जन्तुव्रणकुष्ठारुचि लघुः ।

अर्थ-निर्गुण्डीका अर्क-हलका तथा कृमि, व्रण, कोढ और अरुचिनाशक है।

कुटजार्कगुणा।

कौटजो दीपनः शीतः कफतृष्णामकुष्ठजित्।

अर्थ-कुडेका अर्क-दीपन, शीतल तथा कफ, तृषा, आम और कुष्ठनाशक है।

करञ्जार्कगुणा।

कारञ्जः कफगुल्मार्शोव्रणकृमिरुजापहः।

अर्थ-करंजका अर्क-कफ, गुल्म, बवासीर, व्रण और कृमिरोगनाशक है।

घृतकरञ्जार्कगुणा।

घृतकारञ्जको भेदी वातार्शःकृमिकुष्ठजित्।

अर्थ-घृतकरंजका अर्क-भेदक तथा वात, बवासीर, कृमि और कुष्ठनाशक है।

करञ्जार्कगुणा।

कारजो वान्तिवातार्शःकृमिकुष्ठप्रमेहजित्।

अर्थ-करंजुयेका अर्क-वमन, वात, बवासीर, कृमि, कोढ और प्रमेहनाशक है।

श्वेतगुञ्जार्कगुणा।

उच्चटार्कः केशकरो वातपित्तकफापहः।

अर्थ-सफेद घुघुचीका अर्क-केशोंको उत्पन्न करनेवाला तथा वात पित्त और कफनाशक है।

रक्तगुञ्जार्कगुणा।

गुञ्जाया हरते श्वासमुखशोषश्रमज्वरान्।

अर्थ-घुघुचीका अर्क-श्वास, मुखशोष, श्रम और ज्वरनाशक है।

शूकशिम्ब्यर्कगुणा।

कपिकच्छूद्भवो वृष्योबृंहणो वाजिकर्म्मकृत्।

अर्थ-कौंछका अर्क-वीर्य्यवर्द्धक पुष्टिकारक और वाजीकरण है।

मांसरोहिण्यर्कगुणा।

मांसरोहिण्युद्भवस्तु वृष्यो दोषत्रयापहः।

अर्थ-मांसरोहिणीका अर्क-वीर्य्यवर्द्धक और त्रिदोषनाशक है।

चिह्वकार्कगुणा।

चैह्वः कुर्य्याद्धातुपुष्टिं तत्फल मारयेज्ज्वरान्।

अस्थिसंहारिकार्कगुणा ।

अस्थिसंहारिकायास्तु भग्नसंधानकृत्स्थिरः ।
अर्थ-अस्थिसंहारकाका अर्क-टूटेहुए हाडोंको जोडनेवाला है ।

कुमार्य्यर्कगुणा ।

कुमारिकाया ग्रन्थ्यग्निदग्धविस्फोटकाञ्जयेत् ।
अर्थ-घीकुआरका अर्क-ग्रन्थि,अग्निदग्ध और विस्फोटनिवारक है।

पुनर्नवार्कगुणा ।

पुनर्नवायाः श्वेतायाः सर्वनेत्रामयापहः ।
अर्थ-विषखपरेका अर्क-सर्वप्रकारके नेत्ररोगनाशक है ।

रक्तपुनर्नवार्कगुणा ।

पुनर्नवाया रक्ताया ग्राही पित्तास्रनाशनः ।
अर्थ-सांठका अर्क-मलरोधक और रक्तपित्तनाशक है ।

प्रसारिण्यर्कगुणा ।

प्रसारिण्या वातहरो वृष्यः सन्धानकृत्सरः ।
अर्थ-पसरनका अर्क-वातविनाशक,वृष्य, व्रणनाशक,सारक है ।

शारिवार्कगुणा ।

शारिवाया वह्निमांद्यकासामयविनाशनः ।
अर्थ-सरिवनका अर्क-अग्निमान्द्य और कासरोगनाशक है ।

भृङ्गराजार्कगुणा ।

भृङ्गराजस्य दन्त्योऽर्कः केश्यो रुच्यः शिरोर्त्तिहा ।
अर्थ-भँगरेका अर्क-दांतोको हितकारी,केशोंको सुंदरकरनेवाला रुचिकारक और शिरोरोगनाशक है ।

शणपुष्प्यर्कगुणा ।

शणपुष्पीलतायास्तु ह्यर्कः पित्तकफान्तकः ।
अर्थ-शणपुष्पी, पटशनका अर्क-पित्त और कफनाशक है ।

त्रायन्त्यर्कगुणा ।

त्रायन्त्यर्कः शूलविषविलेपिज्वरनाशनः ।
अर्थ-त्रायमाणका अर्क-शूल,विष और विलेपकज्वरनाशक है ।

मूर्वार्कगुणा ।

मूर्वाया मेहहृद्रोगकण्डूकुष्ठज्वरापहः ।

अर्थ-मूर्वाका अर्क-प्रमेह, हृदयरोग, कण्डू, कुष्ठ और ज्वररोगनाशक है।

काकमाच्यर्कगुणा।

काकमाच्या नेत्रहितश्छर्दिहृद्रोगनाशनः।

अर्थ-मकोयका अर्क-नेत्रोंको हितकारी तथा वमन और हृदयरोगनाशक है।

काकनासार्कगुणा।

काकनासाभवो वाम्यः शोफार्शःश्वित्रकुष्ठहृत्।

अर्थ-काकनासा (कौआठोडी) का अर्क-वमनकारक तथा सूजन बवासीर और श्वित्रकुष्ठनाशक है।

काकजंघार्कगुणा।

काकजंघोद्भवो हन्याज्ज्वरकण्डूविषक्रिमीन्।

अर्थ-काकजंघा(मसी)का अर्क-ज्वर,कण्डू,विष और कृमिरोगनाशक है।

नागाह्वार्कगुणा।

नागाह्वाया हरेच्छूल योनिदोषवमिक्रिमीन्।

अर्थ-नागवला गगेरनका अर्क-शूलरोग, योनिदोष, वमन और कृमिरोगनाशक है।

मेषशृङ्ग्यर्कगुणा।

मेषशृङ्ग्याः श्वासकासव्रणश्लेष्माक्षिशूलहा।

अर्थ-मेढाशिंगीका अर्क-श्वास, खाँसी, व्रण, कफ, नेत्ररोग और शूलनाशक है।

हंसपद्यर्कगुणा।

हंसपद्या हन्ति लूताम्भूतरक्तव्रणान्विषम्।

अर्थ-हंसपदीका अर्क-मकडीका विष, भूतोन्माद, रक्तव्रण और अन्यप्रकारके विषोंको हरे है।

सोमवल्ल्यर्कगुणा।

सोमवल्ल्यास्त्रिदोषघ्नः क्षीरकृच्च रसायनः।

अर्थ-सोमलताका अर्क-त्रिदोषनाशक,क्षीरजनक और रसायन है

आकाशवल्ल्यर्कगुणा।

आकाशवल्ल्याः शीतोऽर्कः पित्तश्लेष्मामनाशनः।

अर्थ-आकाशवेलका अर्क-शीतल तथा पित्त, कफ और आमनाशक है।

मार्कंडिकार्कगुणा ।

मार्कण्डिकाया दुर्गंधविषगुल्मोदरापहः ।

अर्थ-मार्कण्डिका (एक प्रकारका ककोडा) का अर्क-दुर्गंध, विष, गुल्म और उदररोगनाशक है ।

देवदाल्यर्कगुणाः ।

देवदाल्याः शूलगुल्मश्लेष्माशोंवातजित्सरः ।

अर्थ-देवदालीका अर्क-शूल, गुल्म, श्लेष्म, बवासीर, वातनाशक है तथा दस्तावर है ।

धत्तूरार्कगुणा ।

ग्राही धत्तूरजः शीतो वह्निकृद्व्रणदाहहा ।

अर्थ-धतूरेका अर्क-मलरोधक, शीतल, अग्निजनक तथा व्रण और दाहनाशक है ।

गोजिह्वार्कगुणा ।

गोजिह्वाया मेहकासव्रणसारज्वरापहः ।

अर्थ-गोभीका अर्क-प्रमेह, खांसी, व्रण, अतिसार और ज्वरनाशक है ।

नागपुष्प्यर्कगुणा ।

नागपुष्प्याः सर्वविषसर्वग्रहनिवारणः ।

अर्थ-नागदमनीका अर्क-सर्वप्रकारके विष और सर्वप्रकारके ग्रहदोषनिवारक है ।

बिल्वतर्व्यर्कगुणा ।

बैल्वतर्य्यो मूत्रवाताश्मरीयोन्यनिलार्त्तिजित् ।

अर्थ-बेलतरीका अर्क-मूत्राघात, पथरी, योनिरोग और वातविनाशक है ।

छिक्कन्यर्कगुणा ।

छिक्कन्या वह्निरुचिकृदर्शःकुष्ठकृमिप्रणुत् ।

अर्थ-नाकछिकनाका अर्क-अग्निकारक, रुचिजनक तथा बवासीर, कोढ और कृमिनाशक है ।

कुकुन्दरार्कगुणा ।

कौकुन्दरो ज्वर रक्त मुखशोष कफं हरेत् ।

अर्थ-कुकरौंदेका अर्क-ज्वर, रुधिरविकार, मुखशोष और कफनाशक है ।

सुदर्शनार्कगुणाः ।

सुदर्शनार्कश्चात्युष्णः कफशोफास्रवातजित् । (इ०लङ्कानाथः)

अर्थ-सुदर्शनका अर्क-अत्यन्त गरम तथा कफ, सूजन, रुधिर विकार और वातनाशक है ।

इति श्रीशालिग्रामनिघण्टुभूषणेऽर्कवर्गः समाप्त ॥ १८ ॥

अथ मधुवर्गः ।

मधुनामानि ।

माक्षिकं मधु च क्षौद्रं पवित्रं कुसुमासवम् ।
भृङ्गवातं सारघं च पित्र्यं पुष्परसोद्भवम् ॥

अर्थ-माक्षिक, मधु, क्षौद्र, पवित्र, कुसुमासव, भृङ्गवात, सारघ, पित्र्य, पुष्परसोद्भव (माक्षीक, पुष्पासव, पुष्परसाह्वय, माध्वीक, वरटीवांत, मकरन्दरस) ।

संस्कृतभाषामे	मधु, माक्षिक ।
हिन्दीभाषामें	मधु, सहत ।
बंगभाषामे	मधु, मौ ।
मराठीभाषामे	मध ।
गुजरातीभाषामे,	मध ।
कर्णाटकीभाषामे	जेनतुप्प ।
तैलङ्गीभाषामे	तेनी ।
इंग्रेजीभाषामे	हनी । Honay
लैटिन्भाषामे	मेल । Mel
फारसीभाषामे	शहद, अगबीन ।
अरबीभाषामे	असलुल् नहल् ।

मधुसामान्यगुणाः ।

शीतं कषायं मधुरं लघु स्यात्सन्दीपनं लेहनमेव शस्तम् ।
सशोधनं वा व्रणशोधनश्च संरोपणं ह्ययनमश्च वल्यम् ॥
त्रिदोषनाशं कुरुते च पुष्टिं कासक्षये वा क्षतजे च छर्याम् ।

अर्थ-मोम-कोमल,स्निग्ध,भूतबाधाको हरनेवाला,व्रणको भरनेवाला,भग्नसन्धानकारक तथा वात विसर्प और रुधिरके विकारोंको हरे है।

अन्यच्च।

सिक्थकं पिच्छिलं स्वादु कटु स्निग्धं मृदु स्मृतम्। अस्थिसंधिकरं व्रण्यं वातकुष्ठविसर्पनुत् ॥ रक्तदोषं वातरक्तं भूतदोषं च नाशयेत्। स्फुटितस्याङ्गलेपेन त्वचःसंधिकरं मतम् ॥

अर्थ-मोम-पिच्छिल, स्वादिष्ठ, कटु, स्निग्ध, नरम, अस्थिसंधानकारक,व्रणको हितकारी, तथा वात, कोढ, विसर्प, रुधिरविकार, वातरक्त,भूतबाधा और लेप करनेसे फटीहुई त्वचाको आराम करे है।

इति श्रीशालिग्रामनिघण्टुभूषणे मधुवर्गः समाप्तः ॥ १९ ॥

अथ इक्षुवर्गः।

इक्षुनामानि।

इक्षुर्दीर्घच्छदः प्रोक्तस्तथा भूरिरसोऽपि च।
गुडमूलोऽसिपत्रश्च तथा मधुतृणः स्मृतः ॥

अर्थ-इक्षु,दीर्घच्छद,भूरिरस,गुडमूल,असिपत्र, मधुतृण, (मधुयष्टि विपुलरस, गुडदारु, रसालु, कोशकार, इक्षुर, असिपत्रक, पयोधर, कर्कोटक,वंश, कान्तार, सुकुमारक, अधिपत्र, वृष्य, गुडतृण, मृत्युपुष्प, गुडद, गण्डीदी, खड्गपत्रक, गुडकाष्ठ, तृणाधिप)



संस्कृतभाषामें	इक्षु।
हिन्दीभाषामें	ईख, गन्ना, गाडा, पोंडा, ऊख।
बंगभाषामें	आक, कुशिर।
मराठीभाषामें	ऊस।
गुजरातीभाषामें	शेरडी शेरडीनु मूल।

कर्णाटकीभाषामे	कब्बु, कब्बिनमेरु ।
तैलिङ्गीभाषामे	चिरकु ।
इंग्रेजीभाषामे	श्युगरकेन । Sugar Cane
लैटिनभाषामें	सेक्करं आल्व । Saccharum Officenarum
	सेक्करं आफसीनेरं
फारसीभाषामे	नेशकर ।
अरबीभाषामे	कसबुस शक्कर ।

इक्षुसाधारणगुणा ।

इक्षवो रक्तपित्तघ्ना बल्या वृष्याः कफप्रदाः ।
विपाके मधुराः स्निग्धा गुरवो मूत्रला हिमाः ॥

अर्थ–ईख–रक्तपित्तनाशक, बलकारक, वीर्य्यवर्द्धक, कफकारी, पचनेमे मधुर, स्निग्ध, भारी, मूत्रजनक और शीतल है ।

सितेक्षुगुणा ।

स्निग्धश्च सन्तर्पणबृंहणश्च संजीवनः स्वादुरसः श्रमघ्नः ।
वृष्यश्च पित्तास्रशमं नयेच्च ह्यंतर्विदाही कफकृत्सितेक्षुः ॥

अर्थ–सफेद–ईख–स्निग्ध, तृप्तिकारक, पुष्टिकारक, संजीवन, स्वादिष्ठ, श्रमनाशक,वृष्य,रक्तपित्तको शान्ति करनेवाली,शरीरके भीतरकी दाहको हरनेवाली और कफकारक है।

कृष्णेक्षुगुणा ।

तद्वत्सुकृष्णो हि भवेद्गुणेश्च वृष्यो भवेत्तर्पणदाहहर्ता ।
सक्षारकिञ्चिन्मधुरोरसेन शोषापहर्त्ता व्रणशोफकर्त्ता॥(हा०सं०)

अर्थ–काली ईख–व काले गन्ने–गुणोमे सफेद ईखकी समान है, वीर्य्यवर्द्धक, तृप्तिकारक, दाहनिवारक, क्षारयुक्त, मधुररसान्वित, शोषनाशक और व्रण तथा शोफजनक है ।

रक्तेक्षुगुणा ।

रक्तेक्षुः शीतलः पाके मधुरो मृदु वृष्यकः । बलकान्तिप्रदश्चैव धातुवृद्धिकरो गुरुः ॥ तुवरः पित्तदाहघ्नो वातविस्फोटनाशकः । मूत्राघात मूत्रकृच्छ्रं रक्तदोष च नाशयेत् ॥ (नि०र०)

अर्थ-शतपोरक नामवाली ईख-किञ्चित् कोशकारईखकी समान गुणवाली है, विशेषता यह है कि, किञ्चित् गरम, क्षार और वातनाशक है ।

मनोगुप्तागुण. ।

मनोगुप्ता वातहारी तृष्णामयविनाशिनी ।
सुशीता मधुरातीव रक्तपित्तविनाशिनी ॥

अर्थ-मनोगुप्तानामवाली ईख-वातविनाशक, तृषारोगनाशक, शीतल अत्यन्त मधुर और रक्तपित्तविनाशक है ।

तापसेक्षुगुणा ।

तापसेक्षुर्भवेन्मृद्वी मधुरा श्लेष्मकोपना ।
तर्पणी रुचिकृच्चापि वृष्या च बलकारिणी ।

अर्थ-तापसेक्षु-नरम, मधुर, श्लेष्मप्रकोपक, तृप्तिकारक, रुचिजनक, वीर्य्यवर्द्धक और बलकारक है ।

काण्डेक्षुगुणा ।

एवंगुणैस्तु काण्डेक्षुः स तु वातप्रकोपनः ।

अर्थ-काण्डेक्षुके गुण तापसेक्षुकी समान है और विशेषकरके वातको कुपित करे है ।

सूचीपत्रनैपालीदीर्घपत्रनीलपोराणां गुणा ।

सूचीपत्रो नीलपोरो नैपालो दीर्घपत्रकः ।
वातलाः कफपित्तघ्नाः सकषाया विदाहिनः ॥

अर्थ-सूचीपत्रके नीलपोर-नैपाल और दीर्घपत्र यह चारोप्रकारकी ईख-बादी, कफपित्तनाशक, कषेली और दाहजनक है ।

इक्षुमूलादिगुणा ।

इक्षुमूलोऽतिमधुरो मध्ये मधुर एव च ।
ग्रन्थौ त्वच्यग्रभागे च विज्ञेयो लवणो रसः ॥

अर्थ-ईखके मूलमें मधुररस और मध्यभागमेंभी मधुररस तथा ग्रन्थि, त्वचा और अग्रभागमे लवणरस रहता है ।

बाल्युवावृद्धेक्षुगुणा ।

बालइक्षुः कफ कुर्यान्मेदोमेहकरश्च सः ।
युवा तु वातहृत्स्वादुरीषत्तीक्ष्णश्च पित्तनुत् ॥

अर्थ-लालईख-शीतल, पाकमें मधुर, मृदु, वीर्यवर्द्धक, बलकारक, कान्तिजनक, धातुवर्द्धक, भारी, कफेली तथा पित्त, दाह, वात, विस्फोट, मूत्राघात, मूत्रकृच्छ्र और रुधिरके विकारोंको दूरकरेंहै ।

इक्षुभेदा. ।

पौण्ड्को भीरुकश्चापि वंशकः शतपोरकः । कान्तारस्तापसेक्षुश्च काण्डेक्षुः सूचिपत्रकः ॥ नैपालो दीर्घपत्रश्च नीलपोरोऽथ कोशकृत् । इत्येता जातयस्तेषां कथयामि गुणानपि ॥

अर्थ-पौण्ड्रक, भीरुक, वंशक, शतपोरक, कान्तार, तापसेक्षु, काण्डेक्षु, सूचिपत्र, नैपाल, दीर्घपत्र, नीलपोर, कोशकृत, यह ईखकी जातिहैं । अब इनके गुणोंको कहता हूं ।

पौण्ड्रकभीरुकयोर्गुणाः ।

वातपित्तप्रशमनो मधुरो रसपाकयोः ।
सुशीतो बृंहणो बल्यः पौण्ड्रको भीरुकस्तथा ॥

अर्थ-पौण्ड्रक और भीरुकनामवाली ईख-वातपित्तनाशक, रस और पाकमें मधुर, शीतल, पुष्टिकारक और बलवर्द्धक है ।

कोशकारगुणाः ।

कोशकारो गुरुः शीतो रक्तपित्तक्षयापहः ।

अर्थ-कोशकारनामवाला गन्ना-भारी, शीतल तथा रक्तपित्त और क्षयरोगनाशक है ।

कान्तारेक्षुगुणाः ।

कान्तरेक्षुर्गुरुर्वृष्यः श्लेष्मलो बृंहणः सरः ।

अर्थ-कान्तारनामवाला गन्ना-भारी, वृष्य, कफकारी, पुष्टिकारक और सारक है ।

दीर्घपोरवंशकयोर्गुणाः ।

दीर्घपोरः सुकठिनः सक्षारो वंशकः स्मृतः ।

अर्थ-दीर्घपोरवाली ईख-कठिन और वंशक ईख-क्षारयुक्त है ।

शतपोरकगुणाः ।

शतपर्वा भवेत्किञ्चित्कोशकारगुणान्वितः ।
विशेषात्किञ्चिदुष्णश्च सक्षारः पवनापहः ॥

अर्थ-शतपोरक नामवाली ईख-किञ्चित् कोशकारईखकी समान गुणवाली है, विशेषता यह है कि, किञ्चित् गरम, क्षार और वातनाशक है ।

मनोगुप्तागुण. ।

मनोगुप्ता वातहारी तृष्णामयविनाशिनी ।
सुशीता मधुरातीव रक्तपित्तविनाशिनी ॥

अर्थ-मनोगुप्तानामवाली ईख-वातविनाशक, तृषारोगनाशक, शीतल अत्यन्त मधुर और रक्तपित्तविनाशक है ।

तापसेक्षुगुणा ।

तापसेक्षुर्भवेन्मृद्वी मधुरा श्लेष्मकोपना ।
तर्पणी रुचिकृच्चापि वृष्या च बलकारिणी ।

अर्थ-तापसेक्षु-नरम, मधुर, श्लेष्मप्रकोपक, तृप्तिकारक, रुचिजनक, वीर्य्यवर्द्धक और बलकारक है ।

काण्डेक्षुगुणा ।

एवंगुणैस्तु काण्डेक्षुः स तु वातप्रकोपनः ।

अर्थ-काण्डेक्षुके गुण तापसेक्षुकी समान है और विशेषकरके वातको कुपित करे है ।

सूचीपत्रनैपालीदीर्घपत्रिनीलपोराणां गुणा ।

सूचीपत्रो नीलपोरो नैपालो दीर्घपत्रकः ।
वातलाः कफपित्तघ्नाः सकषाया विदाहिनः ॥

अर्थ-सूचीपत्रके नीलपोर-नेपाल और दीर्घपत्र यह चारोंप्रकारकी ईख-बादी, कफपित्तनाशक, कषेली और दाहजनक है ।

इक्षुमूलादिगुणा ।

इक्षुमूलोऽतिमधुरो मध्ये मधुर एव च ।
ग्रन्थौ त्वच्यग्रभागे च विज्ञेयो लवणो रसः ॥

अर्थ-ईखके मूलमे मधुररस और मध्यभागमेभी मधुररस तथा ग्रन्थि, त्वचा और अग्रभागमे लवणरस रहता है ।

बालयुवावृद्धेक्षुगुणा ।

बालइक्षुः कफं कुर्यान्मेदोमेहकरश्च सः ।
युवा तु वातहृत्स्वादुरीषत्तीक्ष्णश्च पित्तनुत ॥

रक्तपित्तहरो वृद्धः क्षतहृद्बलवीर्य्यकृत् ।

अर्थ-बाल अर्थात् कच्ची ईख-कफकारी, मेदजनक, प्रमेहकारक, युवा अर्थात् कुछ २ पकी और कुछ २ कच्ची ईख-वातनाशक, स्वादिष्ठ, किंचित् तीक्ष्ण और पित्तनाशक है। वृद्ध अर्थात् पकी ईख-रक्तपित्तनाशक, क्षतनिवारक और बलवीर्य्यकारक है।

दन्तनिष्पीडितेक्षुगुणा ।

दन्तनिष्पीडितस्येक्षो रसः पित्तास्रनाशनः ।
शर्करासमवीर्य्यः स्यादविदाही कफप्रदः ॥

अर्थ-दाँतोसे चूसीहुई ईखका रस-रक्तपित्तनाशक, शर्कराकी समान वीर्य्यवाला, दाहरहित और कफकारी है।

अन्यच्च ।

वृष्यः शीतोऽस्रपित्तं शमयति मधुरो बृंहणः श्लेष्मकारी स्निग्धो हृद्यः सरश्च श्रमशमनपटुर्मूत्रवृद्धिं करोति। मेदोवृद्धिं विहन्याच्छमयति च मलं तर्पणश्चेन्द्रियाणां दन्तैर्निष्पीड्य साक्षादमृतमयरसो भक्षयेदिक्षुदण्डः ॥

अर्थ-दाँतोसे चूसीहुई ईखका रस-शीतल, रक्तपित्तनिवारक, मधुर, पुष्टिकारी, कफकारक, स्निग्ध, हृदयको हितकारी, सारक, श्रमकोहरनेवाला, नमकीन, मूत्रवर्द्धक, मेदवृद्धिकोशान्तिकरनेवाला, त्रिदोषनाशक इन्द्रियोंको तृप्ति करनेवाला और अमृतोपम है।

अपिच ।

दन्तैर्निपीडितरसो रुचिकृद्गुरुश्च सन्तर्पणो बलकरः कफकृच्छ्रमघ्नः । विष्टम्भकृच्च रुधिरस्य तथैवपित्तदोषं निहन्ति सकलं वमनञ्च शोषम् ॥

अर्थ-दाँतोसे चूसीहुई ईखका रस-रुचिकारी, भारी, तृप्तिकारी, बलकारी, कफकारी, श्रमहारी, विष्टम्भकारी, रुधिरके दोषोंको दूर करनेवाला, पित्तको हरनेवाला वमननिवारक और क्षोषहारक है।

यन्त्रनिष्पीडितेक्षुरसगुणा ।

मूलाग्रजन्तु जग्धादिपीडनान्मलसंकरात् ।

किञ्चित्कालं विधृत्वा च विकृतिं याति यान्त्रिकः ॥
तस्माद्विदाही विष्टम्भी गुरुः स्याद्यान्त्रिको रसः।

अर्थ-ईखकी जड और अगला भाग जो कीडोंसे खायाहुवा होताहै और गाँठ ये सब कोलूमे पेली गईहो उनके मैल आदिके मिलनेसे तथा कुछ अधिक समयतक रक्खारहनेसे वह कोलूका पिला हुवा रस विगडजाताहै अर्थात् खट्टा होजाताहै वह दूषित रस-दाहजनक, मलवर्द्धक, और भारी होताहै।

पर्युषितेक्षुरसगुणाः।

रसः पर्युषितो दुष्टो ह्यम्लो वातापहो गुरुः।
कफपित्तकरः शोषी भेदनश्चातिमूत्रलः।

अर्थ-ईखका बासी रस-अच्छा नही होता, खट्टा, वातनाशक, भारी, कफपित्तकारक, शोषजनक भेदक और मूत्रजनक है।

इक्षुपक्वरसगुणाः।

पक्वो रसो गुरुः स्निग्धः सुतीक्ष्णः कफवातनुत्।
गुल्मानाहप्रशमनो किञ्चित्पित्तकरः स्मृतः॥(भा०प्र०)

अर्थ-ईखका पक्का अर्थात् अग्निपे औटाया हुवा रस-भारी, स्निग्ध, तीक्ष्ण, कफवातनाशक, गुल्म और अफारेको हरनेवाला और कुछेक पित्तकारक है।

इक्षुविशेषगुणाः।

भक्षितो भोजनात्पूर्वं चेक्षुः पित्तस्य शामकः।
भोजनोत्तरकाले च भक्षितो वातकोपनः॥
भोजने भक्षितश्चासावतिजाड्यकरो मतः।(नि०र०)

अर्थ-भोजनसे पहिले भक्षणकरीहुई ईख-पित्तनिवारक है। भोजनसे पीछे खाईहुई ईख वातको कुपित करे है और भोजनके मध्य मे खाईहुई ईख अत्यन्त जडताकारक है।

इक्षुरसविकाराणां गुणाः।

इक्षोर्विकारास्तृड्दाहमूर्च्छापित्तास्रनाशनाः।
गुरवो मधुरा बल्याः स्निग्धा वातहराः सराः॥

वृष्या मोहहराः शीता बृंहणा विषहारिणः ।

अर्थ-इक्षुविकार अर्थात् ईखके रसके बनाये हुये पदार्थ-तृषा, दाह, मूर्च्छा, रक्तपित्त, वात, मोह और विषको हरे है, भारी, मधुर, बलकारी, स्निग्ध, सारक, वीर्य्यवर्द्धक, शीतल, और पुष्टिकारक है ।

फाणितलक्षणगुणाश्च ।

इक्षो रसस्तु यःपक्वः किञ्चिद्गाढो बहुद्रवः। स एवेक्षुविकारेषु ख्यातः फाणितसंज्ञया॥ फाणितं गुर्वभिष्यंदि बृंहणं कफशुक्रकृत्। वातपित्तश्रमान्हन्ति मूत्रबस्तिविशोधनम्॥ (भा० प्र०)

अर्थ-कुछेक गाढा और बहुत पतला ऐसे पकायेहुये ईखके रसको फाणित कहते है, फाणित-भारी, अभिष्यन्दी, पुष्टिकारक, कफकारी, शुक्रजनक, तथा वात, पित्त, श्रम, इनको दूर करे है और मूत्र तथा वस्तिशोधक है ।

मत्स्यण्डीलक्षण गुणाश्च ।

इक्षो रसो यः संपक्वो घनः किञ्चिद्द्रवान्वितः। मन्दं यत्स्पन्दते तस्मात्तन्मत्स्यण्डी निगद्यते ॥ मत्स्यण्डी भेदिनी बल्या लघ्वी पित्तानिलापहा । मधुरा बृंहणी वृष्या रक्तदोषापहा मता॥

अर्थ-ईखका रस जो पकायाहुवा गाढा कुछ पतला और थोडा पिघलता है इसलिये इसको मत्स्यण्डी कहते है । मत्स्यण्डी-भेदक, बलकारक, हलकी, वातपित्तनाशक, मधुर, पुष्टिकारक, वीर्य्यवर्द्धक और रुधिरके दोषोको हरे है ।

गुडनामानि ।

गुडः स्यादिक्षुसारस्तु मधुरो रसपाकजः ।
शिशुप्रियः सितादिः स्यादरुणो रसजः स्मृतः ॥

अर्थ-गुड, इक्षुसार, मधुर, रसपाकज, शिशुप्रिय, सितादि अरुण, रसज, (खण्डज, द्रवज, सिद्ध, मोदक, अमृतसारज, इक्षुरसक्वाथ, गण्डोल, मधुबीजक, गुल, स्वादुखण्ड, स्वादु) ।

गुडलक्षणम् ।

इक्षो रसो यः संपक्वो जायते लोष्ठवद्दृढः ।
स गुडो गौडदेशे तु मत्स्यंडयेव गुडो मतः॥ (भा० मि०)

अर्थ-ईखके रसको पकाकर मट्टीके डेलेकी समान दृढ करलेवे। उसको गुड कहते हैं। किन्तु गौडदेशमे मत्स्यण्डीको गुड कहतेहैं।

संस्कृतभाषामे	गुड ।
हिन्दीभाषामे	गुड ।
वंगभाषामे	गुड ।
मराठीभाषामे	गूळ ।
गुजरातीभाषामे	गोल ।
कर्णाटकीभाषामें	होसवेल्लद हेलरु, ह्रुनोहलेयवेल्ल ।
तैलङ्गीभाषामे	वेल्लासु ।
इंग्रेजीभाषामें	ट्रीकलमोलासीस । Treaclo-Molasseas
फारसीभाषामे	कन्देसिया ।
अरवीभाषामे	कंदेअस्वद ।

गुडगुणा ।

गुडो वृष्यो गुरुः स्निग्धो वातघ्नो मूत्रशोधनः ।
नातिपित्तकरो मेदःकफक्रिमिबलप्रदः (राजवल्लभ)

अर्थ- गुड- वीर्य्यवर्द्धक, भारी, स्निग्ध, वातनाशक,मूत्रशोधक, पित्तकारक नहीं तथा मेद, कफ, कृमि और बलकारक है।

पुरातनगुडगुणा ।

पित्तघ्नः पवनापहो रुचिकरो हृद्यस्त्रिदोषापहः ।
संयोगेन विशेषतो ज्वरहरः सन्तापशान्तिप्रदः ।
विण्मूत्रामयनाशनोऽग्निजननः कण्डूप्रमेहान्तकृत्
स्निग्धः स्वादुरसो लघुःश्रमहरःपथ्यःपुराणोगुडः॥(रा.नि)

अर्थपुराना-गुड-पित्तनाशक,वातविनाशक,रुचिकारक हृदयको हितकारी, त्रिदोषनाशक और किसीके साथ विशेष करके ज्वर-नाशक, सन्तापको शान्ति करनेवाला, मल और मूत्ररोगनाशक, अग्निप्रदीपक, कण्डूनाशक, प्रमेहनिवारक, स्निग्ध, स्वादुरसान्वित, हलका, श्रमनाशक और पथ्य है।

नूतनगुडगुण ।

गुडो नवःकफश्वासकृमिकारोऽग्निमान्द्यकृत्।श्लेष्माणमाशु वि-

निहन्तिसदार्द्रकेण पित्तंनिहन्ति च तदेव हरीतकीभिः।शुण्ठ्या सम हरतिवातमशेपमित्थंदोपत्रयंक्षयकराय नमोगुडाय।(भा.प्र

अर्थ-नवीनगुड-कफ, श्वास, और कृमिको उत्पन्न करेहै तथा मंदाग्निजनक सोसदैव अदरखके साथ सेवन किया हुवा गुड-कफको हरताहै, हरडके साथ सेवन कियाहुवा गुड-पित्तको दूर करता है और सोंठके साथ खायाहुवा गुड-सर्व वातके दोषोको नष्ट करताहै अतएव हे त्रिदोपविनाशक गुड ! तुमको नमस्कार है।

अन्यच्च।

नूतनो गुडो मधुः क्षारो गुरुश्चोष्णश्च संमतः। रक्तरुक्पित्तदोपाणामहितो मूत्रशोधनः ॥ वृष्य' स्निग्धः सरः प्रोक्तः कृमिमेदकरो मतः । शुक्रमज्जामांसरक्तकारकश्चाग्निदीपनः ॥ पित्तलो भेदको वातश्वासकासकफापहः । स शुद्धो रक्तकफकृत्स्वादुः स्निग्धश्च वातहा।मलमूत्रे यथामार्गं प्रवर्तयति चांजसा।स चैकहायनो रुच्यः पथ्यश्चाग्निप्रदीपकः ॥ मूत्रविष्ठाशुद्धिकरो सद्यः स्वादुश्च पौष्टिकः। रसायनो लघु• स्निग्धो वृष्यो मेहश्रमापह•॥ त्रिदोषपण्डुसन्तापपित्तवातापहो मत• । सयोगेन ज्वरहरश्चयव्दजीर्णो लघुः स्मृत• ॥ सर्वदोषहरः श्रेष्ठः पुराणेषु च उत्तमः । अरिष्टादिषु योज्यः स्यादूर्ध्वं हीनगुणः स्मृतः ॥ (नि० र०)

अर्थ-नवीनगुड-मधुर,खारी,भारी,गरम, रक्तरोगी और पित्तरोगियोको अहितकारी है, मूत्रशोधक, वीर्य्यवर्द्धक, चिकना, कुछ कुछ दस्तावर, कृमिकारक, मेदजनक, शुक्र, मज्जा, मास और रक्तकारक है, अग्निप्रदीपक, पित्तजनक, भेदक तथा वात, श्वास, खॉसी और कफनाशक है, शुद्धकिया हुवा गुड-रक्तकारक, कफकारी, स्वादिष्ठ, चिकना, वातनाशक और मलमूत्रको यथामार्ग प्रवर्त्तानेवाला है, एकवर्षका पुराना गुड रुचिकारक पथ्य, अग्निप्रदीपक, मूत्र और मलको शुद्ध करनेवाला, हृदयको हितकारी, स्वादिष्ठ, पुष्टिकारक, रसायन, हलका, स्निग्ध, वृष्य तथा प्रमेह,

श्रम, त्रिदोष, पाण्डु, सन्ताप, पित्त और वातनाशक है, और किसीके संयोगसे ज्वरनाशक है, तीनवर्षका पुराना गुड-हलका, सर्वदोष-नाशक, उत्तम, सर्वप्रकारके पुराने गुणोंमें श्रेष्ठ है, इसको अरिष्टादिकोंमे डालना चाहिये। तीन वर्षसे अधिक पुराना गुड हीनगुणवाला होजाताहै।

गुदामये कामलशोषमेहे गुल्मामये पाण्डुहलीमके च।
वाते सपित्तासृजि राजरोगे रुचिप्रदो रोगहरो गुरुः स्यात्॥
कासे शोषे गुडः श्रेष्ठश्चान्यत्रापि हितो मतः।
योगयुक्तो विशेषेण हितो गुणगणालयः॥ (हा० सं०)

अर्थ-गुड-गुदारोग, कामलारोग, शोष, प्रमेह, गुल्मरोग, पाण्डुरोग, हलीमक, वात, रक्तपित्त और राजरोगको हरेहै तथा रुचिको उत्पन्न करेहै। कास और श्वासरोगमे गुड हितकारीहै। और अन्यान्य रोगोंमेभी हितकारक है और किसी अनुपानके साथ नानाप्रकारके रोगोंको हरनेवाला है।

खण्डनामानि।

खण्डे रसोद्भवा शुक्ला सुपिष्टा पाण्डुरा तथा॥

अर्थ-खण्ड, रसोद्भवा, शुक्ला, सुपिष्टा, पाण्डुरा, (पंशुलका)

संस्कृतभाषामे	खण्ड।
हिन्दीभाषामे	खांड।
वंगभाषामे	खॉड।
मराठीभाषामे	साखर।
गुजरातीभाषामे	खांड।
कर्णाटकीभाषामे	मालखंड।
तैलिंगीभाषामे	पांचदारा।
इंग्रेजीभाषामे	शुगर। Sugar
लेटिन्भाषामे	साकेरम्। Saccharum
फारसीभाषामे	शकर।
अरबीभाषामे	शकर।

खण्डगुणा।

वातपित्तहरं शीतं स्निग्धं बल्यं मुखप्रियम्।
चक्षुष्यं श्लेष्मकृच्चोक्तं खंडं वृष्यतमं मतम्॥

अर्थ-खांड-वातपित्तनाशक, शीतल,स्निग्ध,बलकारक, मुखप्रिय, नेत्रोको हितकारी, कफकारी और वीर्य्यवर्द्धक है ।

अन्यच्च ।

वातं निवारयति पित्तमपाकरोति तृष्णां छिनत्ति विनिहन्ति च मोहमूर्च्छाम् ॥ शोषं विघट्टयति तर्पयतीन्द्रियाणि शीतः सदा स मधुरः खलु शुद्धखण्डः ॥

अर्थ-खांड-वातनिवारक,पित्तहारक,तृषानाशक,मोह,मूर्च्छाऔर शोषको हरनेवाली,इन्द्रियोंको तृप्त करनेवाली,शीतल और मधुर है

गुडखण्डगुणा ।

गुडखण्डश्च मधुरः सितश्च वातपित्तहा ।
किञ्चिच्छीतगुणोपेतो बल्यो वृष्यो रुचिप्रदः ॥

अर्थ-गुडकी खांड अर्थात् शकर-मधुर,सफेद,वातपित्तनाशक,किञ्चित् शीतगुणयुक्त, बलकारक, वीर्य्यवर्द्धक और रुचिकारक है ।

शर्करानामानि ।

शर्करा मीनाण्डी शुक्ला सिता च वालुकात्मजा ।
अहिच्छत्रा तु सिकता शुद्धा शुभ्रा सितोपला ॥

अर्थ-शर्करा,मीनाण्डी शुक्ला,सिता, वालुकात्मजा। अहिच्छत्रा, सिकता, शुभ्रा, शुद्धा, सितोपला, (शुक्लोपला, शार्क, श्वेता, मत्स्यण्डिका, गडोद्भवा) ।

संस्कृतभाषामे	शर्करा ।	
हिन्दीभाषामे	बूरा, मिश्री, बतासे, कंद ।	
बंगभाषामे	चिनी, मिछरी ।	
मराठीभाषामें	पिठीसाखर, खडीसाखर ।	
गुजरातीभाषामें	शाकर ।	
कर्णाटकीभाषामें	गुडगुडातुगीतु।	
तैलिङ्गीभाषामे	फाटिकेपाचादारा ।	
इंग्रेजीभाषामें	प्युरिफाईड श्युगरकेंडी	Purified Sugor Candy
लैटिन्भाषामे	साकरम्प्युरिफिकेटम्।	Saccharum Purificatum
फारसीभाषामें	खडीशकर नवात ।	
अरबीभाषामे	सक्करे अबियद ।	

शर्करागुणा।

शर्करा शीतवीर्य्या च विपाके मधुरा सरा।
दाहतृट्छर्दिमूर्च्छास्रक्रुमिकोपविनाशिनी॥(गणनि ०)

अर्थ-शर्करा(बूरा)-शीतवीर्य्य,विपाकमे मधुर,सारक तथा दाह, तृषा,वमन,मूर्च्छा,रुधिरविकार और कृमिरोगको नष्ट करेहे।

मूर्च्छामोहतृषास्यशोषशमनी दाहज्वरध्वंसिनी श्वासच्छर्दिमदात्ययक्लमहरी हृद्या च सन्तर्पणी।क्षीणे रेतसि पावके च विषमे क्षीणे क्षते दुर्बले दुर्वातेपि च रक्तपित्तजगदे सेव्या सदा शर्करा॥ इक्षुजेषु विकारेषु सर्वेष्वपि मनोहरा।समस्तरोगशमनी तवराजाख्यशर्करा॥ (सुषेणदेव)

अर्थ-मिश्री-मूर्च्छा, मोह और तृषाके शोषको शान्ति करनेवाली, दाहज्वरनाशक, श्वास, वमन, मदात्यय और क्लमको हरनेवाली, हृदयको हितकारी, तृप्तिकारक तथा क्षीणवीर्य्य,विषमाग्नि, क्षीण,क्षत,दुर्बल,वातरक्त और रक्तपित्तरोगमे सदैव सेवन करनी चाहिये। सर्व प्रकारके इक्षुविकारोमे तवराजशर्करा श्रेष्ठ और सर्व प्रकारके रोगोको शान्ति करनेवाली है।

अन्यच्च।

शर्करा मधुरा शीता बल्या वृष्या सरा मता।स्निग्धा कफकरी चैव क्षयं कासं तृषां जयेत्॥विषदोषं मदं श्वासं मोहं मूर्च्छां वमिं तथा।अतिसारं रक्तदोषं पित्तं वातं कृमींस्तथा॥भ्रान्तिं दाहं श्रमं चार्शं नाशयेदिति कीर्तिता। यथा यथा च धौता स्यात्तथा गुणकरी मता॥ खण्डोपला च चक्षुष्या स्निग्धा धातुविवर्द्धिनी।मुखप्रिया च मधुरा शीता वृष्या बलप्रदा॥ सरेन्द्रियतृप्तिकरी लघ्वी तृष्णाविनाशिनी।क्षतं क्षयं रक्तपित्तं मोहं मूर्च्छां कफं तथा॥ वातं पित्तं च दाहं च शोषं चैव विनाशयेत्।पौण्ड्रेक्षुजा शर्करा तु स्निग्धा हितकरी मता॥ वृष्या क्षतक्षयं चैव क्षयं चैवारुचिञ्जयेत्।वंशेक्षुसम्भवा बल्या चक्षु

ष्या धातुवर्द्धिनी ॥ रूक्षा च मधुरा चैव श्यामेक्षूणां बलप्रदा । श्रमघ्नी तर्पणी रुच्या रसेक्षूणां च शीतला ॥ स्निग्धा कान्तिकरी प्रोक्ता रक्तेक्षोः पित्तनाशिनी । (नि. र.)

अर्थ-शर्करा-बूरा-चीनी-मधुर, शीतल, बलकारक, वीर्य्यवर्द्धक, सारक, स्निग्ध, कफकारक, तथा क्षय, खाँसी, तृषा, विषविकार, मद, श्वास, मोह, मूर्च्छा, वमन, अतिसार, रुधिरविकार, पित्त, वात, कृमि, भ्रम, दाह, श्रम और बवासीरको दूर करे है । यह जितनी२अधिक सफेद होगी उतनी२ही अधिक गुणवाली है। मिश्री व कन्द-नेत्रोंको हितकारी, स्निग्ध, धातुवर्द्धक, मुखप्रिय, मधुर, शीतल, वीर्य्यवर्द्धक, बलकारक, सारक, इन्द्रियोंको तृप्त करनेवाली, हलकी, तृषानाशक तथा क्षत, क्षय, रक्तपित्त, मोह, मूर्च्छा, कफ, वात, पित्त, दाह और शोषको हरनेवाली है । पुण्ड्रकादि ईखोंकी-बूरा-स्निग्ध, हितकारी, वीर्य्यवर्द्धक, क्षतक्षय, क्षय और अरुचिको हरेहै । वंशक नामवाली ईखकी खांड-बलकारी, नेत्रोंको हितकारी, धातुवर्द्धक रूखी और मधुर है । काली ईखकी चीनी-बलकारक, श्रमनाशक, तृप्तिकारक, रुचिजनक है । रसेक्षुनामवाली ईखकी चीनी-शीतल, स्निग्ध और कान्तिजनक है। लालईखकी -बूरा-पित्तनाशक है ।

लसीकादीनामुत्तरोत्तरनैर्मल्यादिनागुणवत्त्वमाह ।

लसीका फाणितगुडं खण्डमत्स्याण्डका सिता ।
निर्म्मला लघवो ज्ञेयाः शीतवीर्य्या यथोत्तरम् ॥
यथा यथैषां नैर्मल्यं गुणवत्स्यात्तथा तथा । (रा० व०)

अर्थ-लसीका (सीरा), फाणित (राब), गुड, खांड, चीनी और मिश्री यह क्रमसे निर्मल है, हलकी और शीतवीर्य्य है अर्थात् सीरेसे राब, राबसे गुड, गुडसे खाड, खांडसे चीनी और चीनीसे मिश्री-निर्मल, हलकी और शीतवीर्य्य है इनमें जो जो अधिक निर्मल होतीहैं उन उनकेही अधिक गुण जानने ।

यावनालशर्करानामानि ।

यावनाली हिमोत्पन्ना हिमानी हिमशर्करा ।
क्षुद्रशर्करिका क्षुद्रा गुडजा जलबिन्दुजा ॥

अर्थ-यावनाली, हिमोत्पन्ना, हिमानी, हिमशर्करा, क्षुद्रशर्करिका, क्षुद्रा, गुडजा, जलबिन्दुजा ।

तद्गुणा ।

क्षुद्रा तु शर्करा किञ्चिदुष्णा तिक्तातिपिच्छला ।
स्निग्धा च मधुरा रुच्या सरा दाहविनाशिनी ॥
वातपित्तं रक्तदोषं नाशयेदिति कीर्त्तिता । (नि० र०)

अर्थ-यावनालशर्करा (सीरेखिस्त)-किञ्चित् गरम, कडवी, अत्यन्तपिच्छिल, स्निग्ध, मधुर, रुचिकारक, सारक, दाहनाशक तथा वात, पित्त और रुधिरके दोषोंको हरे है ।

यवासशर्करागुणा ।

यवासशर्करा शीता रसे स्वाद्वी कषायका ।
वृष्या तिक्ता च मधुरा भ्रमं पित्तं तृषां जयेत् । (रा० नि०)

अर्थ-यवासशर्करा (तुरंजबीन)-शीतल, स्वादिष्ठ, कषेली, वीर्य्यवर्द्धक, कडवी, मधुर तथा भ्रम, पित्त और तृषानाशक है ।

अन्यच्च ।

यवासशर्करा ज्ञेया बृंहणी पित्तहारिणी । ज्वरघ्नदीपनी शीता रेचनी च पुरातनी ॥ नार्य्याश्चापन्नसात्वया दुर्बलस्य तथा शिशोः । रेचनार्थं प्रयोज्येयं क्षीणस्य स्थविरस्य च ॥ (आ० सं०)

अर्थ-यवासशर्करा (तुरजबीन)-पुष्टिकारक, पित्तनाशक, ज्वरहारक, अग्निप्रदीपक, शीतल और यह पुरानी दस्तावर है । गर्भवती स्त्री, दुर्बल बालक, क्षीण और वृद्धमनुष्योंको इससे दस्त करानेचाहिये ।

मधुशर्करागुणा ।

मधुजा शर्करा बल्या गुर्वी वृष्या च शीतला । मधुरा तर्पणी रूक्षा तुवरा छेदका तथा ॥ पाके स्वाद्वी वमिं दाहं पित्तं च अतिसारकम् । रक्तपित्तं तृषां पित्तं कफं चैव विनाशयेत् ॥ (नि० र०)

अर्थ-मधुकी खांड-बलकारक, भारी, वीर्य्यवर्द्धक, शीतल, मधुर, तृप्तिकारक, रूखी, कषेली, छेदक, पचनेमें स्वादिष्ठ तथा वमन, दाह, पित्त, अतिसार, रक्तपित्त, तृषा, पित्त और कफको दूर करे है ।

पुष्पशर्करागुणाः।

पुष्पोद्भवा शर्करा तु स्वाद्वी हृद्या च शीतला। गुर्वी पित्तं रक्तदोषं नाशयेदिति कीर्त्तिता ॥ यावन्त्यः शर्कराः प्रोक्ताः सर्वा दाहप्रणाशनाः। रक्तपित्तप्रशमनाश्छर्दिमूर्च्छातृषापहाः॥

अर्थ-पुष्पशर्करा अर्थात् फूलसे बनाईहुई चीनी-स्वादिष्ठ,हृदयको हितकारी, शीतल, भारी, पित्त और रुधिरके विकारोंको हरे है। जितनी प्रकारकी चीनी है वे सर्व प्रकारकी दाहनाशक रक्तपित्तको शान्त करनेवाली तथा वमन, मूर्च्छा और तृषाको हरनेवाली है।

इति श्रीशालिग्रामनिघण्टुभूषणे इक्षुवर्गः समाप्तः ॥ २० ॥

अथ सन्धानवर्गः।

काञ्जिकनामानि।

काञ्जिकं कञ्जिकं काञ्जी कुण्डलं कुण्डगोलकम्।
धान्यमूलं धान्ययोनिः कुल्माषं कुल्माभियुतम् ॥

अर्थ-काञ्जिक, काञ्जिक, काञ्जी,कुण्डल, कुण्डगोलक, धान्यमूल, धान्ययोनि, कुल्माष, कुल्माभियुत, (आरनालक, सौवीर,कुल्माष, अभियुत, आवन्तिसोम,धान्याम्ल,कुञ्जल, सिद्धजल, सिद्धसलिल, काचिक,काञ्चिका, भक्तवारि, तुषाम्बु, सन्धान, गृहाम्ल, महारस, तुषोदक, शुक्तचुक्र, धातुघ्न, उन्नाह, रक्षोघ्न, सुवीराम्ल, पङ्कवारि, वीर, अभिषव, अम्लसारक)।

काञ्जिकलक्षण गुणाश्च।

संधित धान्यमण्डादि काञ्जिकं कथ्यते जनैः। काञ्जिकं भेदि तीक्ष्णोष्णं रोचनं पाचनं लघु॥दाहज्वरहरं स्पर्शात्पानाद्वातकफापहम्। माषादिवटकैर्यत्तु क्रियते तद्गुणाधिकम् ॥ लघु वातहरं तत्तु रोचनं पाचनं परम्। शूलाजीर्णविबन्धामनाशनं बस्तिशोधनम् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-धान्यादिकोंके मांडको कुछ दिनों धरारहनादेवे उसको कांजी

कहते हैं कांजी-भेदक, तीक्ष्ण, गरम, रोचन, पाचक, हलकी, शरीरमें लगानेसे दाह और ज्वरको दूर करे और पीनेसे वातकफको हरे है । उडद आदिके बडोंकी बनाईहुई कांजी अधिक गुणवाली है हलकी, वातनाशक, रोचन, पाचन, तथा शूल, अजीर्ण, विबन्ध और आमनाशक और बस्तिशोधक है ।

निषेध ।

शोषे मूर्च्छाज्वरार्तानां भ्रमके दुर्विषार्दिते । कुष्ठानां रक्तपित्तानां काञ्जिकं न प्रशस्यते॥पाण्डुरोगे राजयक्ष्मण्यथ शोफातुरेषु च । क्षतक्षीणे परिश्रांते मन्दज्वरनिपीडिते ॥नरे नैव हितं प्रोक्तं काञ्जिकं दोषकारकम् ॥ (हारी० सं०)

अर्थ-शोष, मूर्च्छा, ज्वरसे पीडित, भ्रम, विषसे पीडित, कुष्ठ, रक्तपित्त, पाण्डुरोग, राजयक्ष्मा, सूजनसे पीडित, क्षतक्षीण, मार्गचलनेसे थकेहुये और मन्दज्वरसे पीडित मनुष्योंको कांजी हितकारी नहीं किन्तु दोषकारी है ।

काञ्जिकविशेषगुणाः।

शूलवातार्दितानान्तु तथा जीर्णविबन्धिनाम् ।
श्रेष्ठं प्रोक्त तथाम्लश्च गुणाधिक्यं नरेषु च ॥ (हा० सं०)

अर्थ-शूल और वातसे पीडित तथा अजीर्ण और विबन्ध रोगवाले रोगियोंको कांजी अत्युत्तम है और अनेक गुण करे है ।

अन्यच्च ।

नूतनं मृन्मयं कुम्भं कटुतैलेन लेपयेत्।निर्मलं च जलं तस्मिन्राजिकाजाजिसैन्धवम्॥हिंगुविश्वानिशा चैव ओदनं वंशपल्लवाः। ओदनस्य कुलित्थानां जलं वटकखांडवम् ॥सर्वं तस्मिन्निधायाथ मुद्रां दत्त्वा दिनत्रयम् । रक्षयित्वा ततो वस्त्रे गालितं काञ्जिकं मतम्॥तद्भेदकं वस्तिशुद्धिकरमुष्णं च तीक्ष्णकम्। रुच्यमम्लं पाचकं च लघु लेपे च दाहकम्॥ज्वरनाशकरं प्रोक्त तत्पीतं कफवातहम्।शूलं शोथं भ्रमं दाहं मूर्च्छां पित्तज्वरं तथा ॥ अजीर्णाध्मानविट्स्तम्भानामनाशकरं मतम् ।

काञ्जिके संस्थिताश्चैव वटका रुचिदा मताः॥शीताः कफकरा दाहशूलाजीर्णविनाशकाः। नेत्ररोगे हिता नोक्ता ऋषिभिः पाककोविदैः। (इति रत्नाकरे)

अर्थ-प्रथम कोरा मट्टीका घडा लेकर उसके भीतर तथा ऊपर तेलका लेप करदे फिर उसमें निर्मल स्वच्छ जल भर देवे उस जलमे राई, जीरा, सैंधानोन, हींग, सोंठ, हलदी, भात, बांसके कोमल पत्ते, कुलथीके भातका जल और बडोंके टुकडे यह सब पदार्थ डालकर मुख बंद करके तीनदिनतक बंद किया रक्खा रहने देवे इसके उपरान्त उसको खोलकर वस्त्रसे छानले उसको कांजी कहते हैं। वह कांजी-भेदक, बस्तिशोधक, गरम, तीक्ष्ण, रुचिकारक, खट्टी, पाचक, हलकी, इसका लेप करनेसे दाह और ज्वर दूर होता है और यह पीनेसे कफ, वात, शूल, सूजन, भ्रम, दाह, मूर्च्छा, पित्तज्वर, अजीर्ण, आध्मान और मलस्तम्भको दूर करे है। कांजीमे पडेहुए बडे-रुचिकारक, शीतल, कफकारी, दाह, शूल और अजीर्णनाशक हैं और नेत्ररोगोमें हितकारी नहीं है।

तुषोदकलक्षण गुणाश्च।

तुषोदकं यवैरामैः सतुषैः शकलीकृतैः।
तुषाम्बु दीपनं हृद्यं पाण्डुक्रिमिगदापहम्॥
तीक्ष्णोष्णं पाचनं पित्तरक्तकृद्बस्तिशूलनुत्॥ (भा० प्र०)

अर्थ-कच्चे तुषसहित जवोंको कूटकर भिजोदे जब उसमें खट्टापन होजाय तब वह तुषोदक होजाता है। तुषोदक-दीपन, हृदयको हितकारी, पाण्डु और कृमिरोगको दूर करे, तीक्ष्ण, गरम, पाचक तथा रक्तपित्तकारक और बस्तिकी पीडाको हरे है।

अन्यच्च।

तुषोदकं वातपित्तहरन्तु रक्तपित्तकरं प्रभेदकं च। विपाचनं स्याज्जरणं क्रिमिघ्नमजीर्णहन्तृ कटुकं च पाके॥ (हा० सं०)

अर्थ-तुषोदक-वातपित्तनाशक, रक्तपित्तकारक, दस्तावर, पाचक, कच्चे अन्नको भस्म करता है, कृमिनाशक, अजीर्णनिवारक और पचनेमे चरपरा है।

सौवीरनामानि।

सौवीरक सुवीराम्ल यवोत्थ गोधूमसम्भवम्।

यवाम्लजं तुषोत्थं च तुषोदकश्चापि कीर्त्तितम् ॥

अर्थ-सौवीरक, सुवीराम्ल, यवोत्थ, गोधूमसम्भव, यवाम्लज, तुषोत्थ, तुषोदक ।

अस्य लक्षण गुणाश्च ।

सौवीरन्तु यवैरामैःपक्वैर्वा निस्तुषैः कृतम्। गोधूमैरपि सौवीरमाचार्य्याः केचिदूचिरे ॥ सौवीरन्तु ग्रहण्यर्शःकफघ्नं भेदि दीपनम् । उदावर्त्ताङ्गमर्दास्थिशूलानाहेषु शस्यते॥(भा० प्र०)

अर्थ-कच्चे वा पक्के जौओके तूर अलग करदेवे,फिर उसकी कांजी बनावे उस कांजीको सौवीर कहते है।कोई वैद्य कहते है कि, कच्चे अथवा पक्के गेहूँसे सौवीर बनाई जाती है।सौवीर-संग्रहणी,बवासीर और कफनाशक है, दस्तावर, दीपन तथा उदावर्त्त, अंगका टूटना, अस्थियोमे पीडा और अफारेमे हितकारी है।

अन्यच्च ।

सौवीरकं चाम्लरसं केश्यं मस्तकदोषजित् ।
जराशैथिल्यहरणं बल्यं सन्तर्पणं परम् ॥ (रा० नि०)

अर्थ-सौवीर-खट्टी,केशोको हितकारी, मस्तकरोगनाशक, जरा और शिथिलताको हरनेवाली, बलकारी और तृप्तिकारकहै ।

आरनाललक्षणगुणाश्च ।

आरनाल तु गोधूमैरामैः स्यान्निस्तुषीकृतैः ।
पक्वैर्वा सधितैस्तत्तु सौवीरसदृशं गुणैः ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-विना तूरके कच्चे गेहूँको भिजोकर आरनाल नामवाली कांजी बनाई जाती है। वा पक्के गेहूँसे बनाईहुईकोभी आरनाल कहते है। आरनालके गुण सौवीरकी समान जानने ।

आरनालफगुणा. ।

जातं यवाम्ल कटुक विपाके वातामयश्लेष्महरं सरक्तम् ।
पित्तप्रकोपं कुरुते सभेदि विदूषण पित्तगदासृजञ्च ॥

अर्थ-जौसे बनाईहुई कांजी-पचनेमे कटु, वातनाशक, कफनिवारक,रक्त और पित्तको कुपित करनेवाली,दस्तावर और रक्तपित्तको दूषित करे है ।

सन्दीपनं शूलहरं रुचिप्रदं गोधूमजातं कथितं कषायम् ।

सन्दीपनं स्याज्जरणं कफघ्नं समीरदोषं हरते ततोऽपि॥ (हा०स०)

अर्थ-गेहूँसे बनाईहुई कांजी-अग्निको दीपन करनेवाली, शूलको हरनेवाली, रुचिको करनेवाली, कपेली, भोजनको भस्म करनेवाली, कफनाशक और वातके विकारोंको हरे है।

धान्याम्ललक्षणं गुणाश्च।

धान्याम्लं शालिचूर्णञ्च कोद्रवादिकृतं भवेत्।
धान्याम्लं धान्ययोनित्वात्प्रीणनं लघु दीपनम्॥
अरुचौ वातरोगेषु सर्वेष्वस्थापनेषु च।

अर्थ-शालिधानोंके चूर्ण अथवा कोदोंके चूनसे जो कांजी बनाई जाती है उसको धान्याम्ल कहते हैं। धान्याम्ल-प्रीणन, हलकी, अग्निप्रदीपक तथा सर्वप्रकारके वातरोग और अरुचिरोगमें देनी चाहिये।

शिण्डाकीलक्षणं गुणाश्च।

शिण्डाकी राजिकायुक्तैः स्यान्मूलकदलद्रवैः।
सर्षपस्वरसैर्वापि शालिपिष्टकसंयुतैः॥
शिण्डाकी रोचनी गुर्वी पित्तश्लेष्मकरी स्मृता॥

अर्थ-मूलीके पत्तोंके रसमें राई डालकर जो कांजी बनती है उसको शिण्डाकी कहते हैं। अथवा सरसोंके रसमें शालिधानोंका चून डालकर जो कांजी बनाई जाती है उसकोभी शिण्डाकी कहते हैं। शिण्डाकी-रुचिकारक भारी और पित्तकफकारी है।

शुक्तलक्षणं गुणाश्च।

कन्दमूलफलादीनि सस्नेहलवणानि च। यत्र द्रव्येऽभिपूयन्ते तच्छुक्तमभिधीयते॥ शुक्तं कफघ्नं तीक्ष्णोष्णं रोचनं पाचनं लघु। पाण्डुक्रिमिहरं रूक्षं भेदकं रक्तपित्तकृत्॥

अर्थ-कंदमूल और फलादिकमें नोन और तेल डालकर जो द्रव्य बनायाजाता है उसको शुक्त अर्थात् सिर्काकहतेहैं, सिर्का-कफनाशक, तीक्ष्ण गरम, रोचन, पाचक, हलका, पाण्डु और कृमिरोगनाशक, रूखा, दस्तावर और रक्तपित्तकारक है।

सन्धानलक्षणं गुणाश्च।

कन्दमूलफलाढ्यं यत्तु विज्ञेयमासुतम्।

तद्रुच्यं पाचनं वातहरं लघु विशेषतः ॥

अर्थ-कंद, मूल फलादिकोंमे राई आदिका चूर्णडालकर जो द्रव्य बनाया जाता है उसको आचार कहते हैं । आचार-रुचिकारक, पाचक, वातनाशक और विशेषकरके हलका है ।

मद्यनामानि।

मदिरा प्रसवा हाला चपला च हलिप्रिया ।
अमृता वीरा मेधावी माधवी कापिशायनी ॥

अर्थ-मदिरा, प्रसवा, हाला, चपला, हलिप्रिया, अमृता, वीरा, मेधावी, माधवी, कापिशायनी (सुरा, मद्य, परिश्रुता, वरुणात्मजा, गन्धोत्तमा, इरा, कादम्बरी, परिस्रुता, कश्य, प्रसन्नेरा, माणिका, कपिशी, गन्धमादिनी, कत्तोय, मद, कपिशिका, वारुणी, मत्ता, सीता, कामिनीप्रिया, मदगन्धा, माध्वीक, मधु, सन्धान, आसव, मदनी, सुमतिमा, मनोज्ञा, विधाता, मादनी, इली, गुणारिष्ट, सरक, मधुलिका, मदोत्कटा, महानन्दा, सीधु, मैरेय, वनवल्लभा, कारण, तत्त्व, मदिष्ठा, परिप्लुता, कल्प, साधुरसा, शुण्डा, हारहूर, माद्वीक, मदना, देवसृष्टा, कापिश, अब्धिजा, कल्या, मधूल)।

संस्कृतभाषामे	मदिरा, मद्य ।
वंगभाषामे	मदिरा, मद् ।
गुजरातीभाषामे	दारू ।
मराठीभाषामे	मद्य, दारू ।
हिंदीभाषामे	मदिरा, (दे) दारु, सराब ।
कर्णाटकीभाषामे	शरे, साराइ ।
तैलिङ्गीभाषामे	कल्लु ।
अं०	वाइन ।
फारसीभाषामें	शराब ।

साधारणमदिरागुणाः।

मद्य साधारणं सूक्ष्मं सारकं दाहकं कटु। सुस्वादु तिक्तं च रसे पाकेम्लं च लघु स्मृतम् ॥ अग्निदीप्तिकरं रुच्य हृद्यं चोष्ण कषायकम् । तीक्ष्णं विकासि च मतं मूत्रलं तुष्टिकृन्मतम् ॥ मलोत्सर्गकरं नाडीवस्तिशुद्धिकरं मतम् । बल्य पुष्टिकरं

स्वर्य्यं प्रतिभाकारक मतम् ॥ आरोग्यकारकं वर्ण्यं रक्तदूषणकारकम् । आनाहं च कफं वातं शूलं चैव विनाशयेत् ॥ विषशोकार्त्तपुरुषे स्वल्पाग्नौ च हितावहम् । सात्त्विकैः पुरुषैः पीतं गीतहास्यादिकारकम् । राजसैर्भक्षितं चेत्स्यात्साहसादिकरं मतम् । तामसैर्भक्षित तच्च निद्रालस्यादिकारकम् ॥ बलं कालं च संज्ञात्वा पीतं तदमृतोपमम् । अन्यथा भक्षितं चेत्स्याद्विषवच्चापकारकम् ॥ अतीवमादकं तच्च दुर्गंधि विरस गुरु । कृमिजुष्टं चातितीक्ष्ण घन मृदु च दाहकम् ॥ दुष्टभाण्डस्थितं नूतमनूद्यमपि चिक्कणम् । उष्णमुष्णपदार्थैस्तु मिश्रितं मलितं तथा ॥ तीक्ष्णैर्द्रव्यैर्युत तच्च न गृह्णीयान्नरः क्वचित् । स्त्रीद्विजैर्नैव तद्ग्राह्य बुद्धिभ्रंशकरं यतः ॥ (नि० र०)

अर्थ-साधारण मदिरा-सूक्ष्म, कुछ कुछ दस्तावर, दाहजनक, चरपरी, स्वादिष्ठ, कडवी, रस और पाकमे खट्टी, हलकी, अग्निको दीपन करनेवाली, रुचिको उत्पन्न करनेवाली, हृदयको हितकारी, गरम, कषेली, तीक्ष्ण, विकासी मूत्रकारक, तुष्टिकारक, मलको निकालनेवाली, नाडी और वस्तिको शुद्ध करनेवाली, बलवर्द्धक, पुष्टिकारक, स्वरको शुद्ध करनेवाली, प्रभाको उत्पन्न करनेवाली, अरोग्यताको देनेवाली, वर्णको सुंदर करनेवाली, रुधिरको दूषित करनेवाली तथा आनाह, कफ, वात और शूलनाशक है, विषसे विह्वलहुये, शोकसे पीडित हुये और मंदाग्निवाले मनुष्योंको हितकारी है, सात्विक मनुष्य इसको पीनेसे गीत और हास्यादिको करे है रजोगुणयुक्त पुरुषोंको यह पीहुई साहसादि गुणोंको उत्पन्न करे है और तमोगुणयुक्त पुरुषोंको पीहुई निद्रा और आलस्यको करनेवाली है बल और कालका विचार करके यह पीहुई अमृतकी समान गुण करे है, अन्य प्रकारसेवन कीहुई विषकी समान सन्तापको करे है और अत्यन्त नशीली, दुर्गन्धयुक्त, विरस, भारी, कोडेपडीहुई, अत्यन्त तीक्ष्ण, गाढी, मृदु, दाहक, बुरे बरतनमें रक्खी हुई, नवीन, अप्रिय, चिकनी, गरम पदार्थोंसे मिली हुई, मलिन और तीक्ष्ण द्रव्योंसे मिली हुई ऐसी मदिरा कभी नहीं पीनी

चाहिये। और स्त्री तथा ब्राह्मण तो इसको कभी भी नही पीवे कारण यह है कि, इसके पीनेसे बुद्धि भ्रष्ट होजाती है।

अरिष्टलक्षण गुणाश्च।

पक्वौषधाम्बुसिद्धं यन्मद्यं तत्स्यादरिष्टकम्।
अरिष्टं लघुपाकेन सर्वतश्च गुणाधिकम्॥
आरिष्टस्य गुणा ज्ञेया बीजद्रव्यगुणैः समाः।

अर्थ-जो पकी औषधियोके काढेसे मदिरा बनाई जाती है उसको अरिष्ट कहते है। अरिष्टनामवाली मदिरा लघुपाकी होनेसे सर्वप्रकारकी मदिराओसे गुणोमे अधिक है। अरिष्ट जिस २ वस्तुसे बनता है उसी२वस्तुके समान उस अरिष्टके गुण जानने।

अन्यच्च।

अरिष्टं दीपनं हृद्यं तुवर पाचनं लघु। सरं च कटुकं चैव पित्तवातकफापहम्॥ कुष्ठगुल्मार्शशोषघ्न शोफसंग्रहणीहरम्। पाण्डुं प्लीहां चोदरं च ज्वरं शूलकृमीन्क्लमम्॥ आनाहं नाशयेत्प्रोक्तं सर्वमद्यैर्गुणाधिकम्॥

अर्थ-अरिष्ट-दीपन, हृदयको हितकारी, कषेली, पाचक, हलकी, सारक, चरपरी तथा पित्त, वात, कफ, कोढ, गुल्म, बवासीर, शोष, सूजन, संग्रहणी, पाण्डुरोग, प्लीहा, उदररोग, ज्वर, शूल, कृमि, क्लम और अफारेको दूर करनेवाली है तथा सर्वमद्योमें अधिक गुणवाली है।

सुरालक्षण गुणाश्च।

शालिषष्टिकपिष्टादिकृत मद्यं सुरा स्मृता।
सुरा गुर्वी बलस्तन्यपुष्टिमेदःकफप्रदा॥
ग्राहिणी शोथगुल्मार्शोग्रहणीमूत्रकृच्छ्रनुत्।

अर्थ-शालि और साठीधानोकी पीठीसे जो मदिरा बनाईजाती है उसको सुरा कहते है. सुरा-भारी, बलकारक, स्तनोमे दूधको उत्पन्नकरनेवाली, पुष्टिकारक, कफजनक, मलरोधक तथा सूजन, गुल्म, बवासीर, संग्रहणी और मूत्रकृच्छ्ररोगनाशक है।

वारुणीलक्षण गुणाश्च।

पुनर्नवा शिलापिष्टैर्वारुणी विहिता मता।

संहितैस्तालखर्जूररसैर्या सापि वारुणी ॥
सुरावद्वारुणी लघ्वी पीनसाध्मानशूलनुत् ।

अर्थ-पुनर्नवाको शिलपर पीसकर जो मदिरा बनाई जाती है उसको वारुणी कहते हैं । किसीके मतसे ताल और खजूरादिके रसमें जो मदिरा बनाई जाती है उसको वारुणी कहते हैं । वारुणी मदिराके गुण सुराकी समान हैं विशेष करकेहलकी तथा पीनस, आध्मान और शूलको निर्मूल करे है ।

अन्यच्च ।

वारुणी पौष्टिकी हृद्या तीक्ष्णा दुग्धप्रदा मता।लघ्वी च श्लेष्मला शूलकसवांतिविबन्धहा ॥आध्मानं पीनसं श्वास मूत्रकृच्छ्र च नाशयेत्।गुल्मं चार्शं नाशयतीत्येवमुक्तं चिकित्सकैः

अर्थ-वारुणीमदिरा-पुष्टिकारक,हृदयको हितकारी,तीक्ष्ण,दुग्धजनक,हलकी,कफकारी तथा शूल, खाँसी, वमन, विबन्ध, अफारा, पीनस,श्वास,मूत्रकृच्छ्र,गुल्म और बवासीरको हरेहै ।

सीधुलक्षण गुणाश्च ।

इक्षोःपक्वै रसैःसिद्धः सीधुः पक्वरसश्च सः। आमस्तैरेव यः सीधुःस च शीतरसः स्मृतः॥ सीधुःपक्वरसः श्रेष्ठःस्वराग्निबलवर्णकृत्।वातपित्तकरःसद्यः स्नेहनो रोचनो हरेत् । विबन्धमेदःशोफार्शःशोफोदरकफामयान् ॥ तस्मादल्पगुणः शीतरसः सलेखनः स्मृतः ।

अर्थ-पकेहुये ईखके रससे जो मदिरा बनाई जाती है उसको सीधु कहते हैं और जो कच्चे ईखके रससे मदिरा बनाईजातीहै उसको शीतरस कहते हैं, पके ईखके रससे बनाईहुई सीधुनामवाली मदिरा-श्रेष्ठ,स्वर,अग्नि,बल और वर्णको करनेवाली, तत्काल वातपित्तकारक,स्निग्ध,रोचन तथा विबन्ध,मेद,सूजन,बवासीर, शोफोदर और कफरोगोंको नष्ट करे है, शीतरस नामवाली मदिरा सीधुसे कुछ अल्पगुणवाली और लेखन है ।

अन्यच्च ।

सीधुः कषायाम्लकमाधुरो वा सन्दीपनो मेदमलापमर्दः ।

आमातिसारानिलपित्तशूलश्लेष्मामयार्शोग्रहणीगदघ्नः(हा. सं.

अर्थ-सीधुनामवाली मदिरा-कषेली, खट्टी, अग्निप्रदीपक, मे
और मलको हरनेवाली तथा आमातिसार, वात, पित्त, शूल
कफरोग, बवासीर और संग्रहणीको दूर करनेवाली है ।

गौडीमदिरागुणा ।

तीक्ष्णोष्णा मधुरा गौडी वातघ्नी बलपित्तकृत् ।
कान्तितृप्तिकरी पथ्या वह्निकामप्रदीपनी ॥ (आ०सं०

अर्थ-गौडी अर्थात् गुडादिसे बनाई मदिरा-तीक्ष्ण, गरम, मधुर
वातनाशक तथा बल, पित्त, कान्ति और तृप्तिकारक, पथ्य, अ
और कामको प्रदीपन करनेवाली है ।

अन्यच्च ।

गौडी कषाया मधुराम्लशीता सन्दीपनी शूलमलापहंत्री ।
हृद्या त्रिदोषं शमयत्यजीर्णं पाण्ड्वामयार्शःश्वसनान्निहन्ति ।
(हा० सं०)

अर्थ-गौडी मदिरा-कषेली, मधुर, खट्टी, शीतल, अग्निप्रदीपक
शूल और मलको हरनेवाली, हृदयको हितकारी, त्रिदोषनाशक
तथा अजीर्ण, पाण्डुरोग, बवासीर और श्वासविनाशक है ।

माध्वीकमद्यगुणा ।

माध्वी सुरा तु मधुरा किञ्चिदुष्णा कषायका ।तीक्ष्णा लघ्वी
च हृद्या च रूक्षा च च्छेदनी मता॥पित्त वातं च पाण्डुञ्च काम
लां च प्रमेहकम्।गुल्मं चार्शः प्रतिश्यायं विषं कुष्ठञ्च नाशयेत्।

अर्थ-माध्वीनामवाली मदिरा-मधुर, किञ्चित् गरम, कषेली
तीक्ष्ण, हलकी, हृदयको हितकारी, रूखी, छेदक तथा पित्त, वात
पाण्डुरोग, कामला, प्रमेह, गुल्म, बवासीर, प्रतिश्याय, विष औ
कुष्ठको नष्ट करे है ।

अन्यच्च ।

माध्वीकं शीतलाम्लं मधुरमपि तथा स्यात्कषायोष्णकं
हन्यात्पित्तामयार्शः श्वसनमपि तथा चातिसारं प्रमेहान् ॥
शूलानाहोपमर्दं जरयति सकलं दीपयत्यग्निसात्म्यं
तस्माद्धातामवातं वमनमपि तथा हन्ति सर्वांश्च रोगान् ॥

अर्थ-माध्वीक मदिरा-शीतल, खट्टी, मधुर, कषेली, गरम तथा पित्तरोग, बवासीर, श्वास, अतिसार, प्रमेह, शूल और आनाहको दूर करे है, सर्व वस्तुओंको पाचनकरनेवाली, अग्निको दीपन करने-वाली तथा वात, आमवात और वमनको हरनेवाली है तथा सात्म्य है।

पैष्टीमद्यगुणा।

पैष्टी सन्दीपनी रुच्या कफकृद्वातनाशिनी।
पित्तला पाण्डुरोगाणां कारिणी बहुधा मता॥ (हा०सं०)

अर्थ-पैष्टी मदिरा-अग्निको दीपन करनेवाली, रुचिको करने-वाली, कफकारी, वातनाशक, पित्तकारक और पाण्डुरोगको उत्पन्न करे है।

अन्यच्च।

पैष्टी सुरा तु मधुरा तीक्ष्णाम्ला कटुका गुरुः।
दीपनी स्तन्यकफदा मेहपुष्टिकरी मता॥ (नि० र०)

अर्थ-पैष्टी मदिरा-मधुर, तीक्ष्ण, खट्टी, चरपरी, भारी, दीपन, स्तनोंमें दूधको करनेवाली, कफकारी तथा प्रमेह और पुष्टिको करनेवाली है।

इक्षुभवमद्यगुणा।

मद्य तु चैक्षवं शीतं मदकृच्च समीरितम्॥
यवमद्यं स्तम्भकं च रूक्षं चैव तु दीपकम्॥
मोहकं चाग्निजनकं वृष्यं वातकफापहम्।

अर्थ-ऐक्षव मदिरा-शीतल, मदकारक और जौकी मदिरा स्तम्भक, रूखी, अग्निप्रदीपक, मोहकारक, अग्निकारक, वीर्यवर्द्धक और वातकफनाशक है।

सर्ववृक्षभवमद्यगुणा।

सर्ववृक्षभवं मद्य शीतलं गुरु मोहनम्।
बल्यं वृष्यं च हृद्यं च तृष्णासन्तापनाशकम्॥

अर्थ-सर्ववृक्षोंकी मदिरा-शीतल, भारी मोहन, बलकारक, वृष्य, हृदयको हितकारी तथा तृष्णा और सन्तापनाशक है।

द्राक्षामदिरागुणा।

द्राक्षा सुरा तु मधुरा श्रेष्ठा स्निग्धा रुचिप्रदा। विशदा दीपनी ल-

घ्वी किञ्चिदुष्णा बलप्रदा ॥ पुष्टिकृल्लेखनी वर्ण्या शुक्रला च सरा मता। किञ्चित्पित्तकरी मृद्वी वातला शोषमेदनुत् ॥ क्लेदं पाण्डुं कफं चार्शः कृमीन्मेहं च कामलाम्।रक्तपित्तं च कुष्ठं च नाशयेदिति कीर्त्तिता॥विषमं च ज्वरं चैव रक्तार्शश्चैव नाशयेत्

अर्थ-दाखोकी मदिरा-श्रेष्ठ, मधुर, स्निग्ध, रुचिकारक, विशद, अग्निप्रदीपक, हलकी, किञ्चित् गरम, बलकारक, पुष्टिकारक,लेखन, वर्णको सुदर करनेवाली, शुक्रजनक, सारक, किञ्चित् पित्तकारक, मृदु, वातकारक तथा शोष, मेद, क्लेद, पाण्डुरोग, कफ, बवासीर, कृमि, प्रमेह, कामलारोग, रक्तपित्त, कोढ, विषमज्वर और खूनी-बवासीरको हरण करे है ।

खजूरमद्यगुणा ।

खर्जूरमद्यं शीतं स्याद्रुच्यं वातकरं गुरु ।

अर्थ-खजूरकी मदिरा-शीतल,रुचिकारक,वादी और भारी है ।

तालमद्यगुणा ।

श्लेष्मदोषकरा वृष्या वातला श्लेष्मवर्द्धिनी ।
कासहल्लासविध्वंसकरणा तालमंडिका ॥ (हा० सं०)

अर्थ-ताडकी मदिरा-कफकारी, वीर्य्यवर्द्धक, वादी, श्लेष्मवर्द्धक तथा खांसी और हल्लासको हरे है ।

आसवलक्षण गुणाश्च ।

यदपक्कौषधाम्बुभ्यां सिद्धं मद्यं स आसवः ।
आसवस्य गुणा ज्ञेया बीजद्रव्यगुणैः समाः ॥

अर्थ-जो कच्ची औषधियोंके पानीसे मदिरा बनाई जातीहै उसको आसव कहते है । आसवके गुण जिन २ बीज और द्रव्योंसे वह बनाया जाता है उसी उसीके अनुसार जानने ।

सुरासवगुणा ।

सुरासवस्तीव्रमदो वातघ्नो वदनप्रियः ॥ (चरक०)

अर्थ-सुरासव-तीव्रमदकारक, वातनाशक और मुखप्रियहै ।

अपच्च ।

सुरासवः [illegible] ाद्गुरुर्बल्यश्च दीपनः ।

ग्राहकः पुष्टिकृद्दुग्धरक्तमांसकफप्रदः ॥
मेदःकृद्ग्रहणीगुल्ममूत्राघातार्शशोफहृत्। (नि॰ र॰)

अर्थ-सुरासव-स्नेहन, भारी, बलकारी, दीपन, मलरोधक, पुष्टिकारक तथा दूध, रुधिर, मांस, कफ और मेदको हरे है तथा संग्रहणी, गुल्म, मूत्राघात, बवासीर और सूजनको हरे है।

गुडासवगुणाः।

गुडासवः कटुस्तिक्तो बल्यश्चाग्निप्रदीपनः।
सुस्वादुर्मूत्रलो वर्ण्यो बृंहणस्तर्पणो मृदुः ॥
सृष्टविट्कश्च वै प्रोक्तो मुनिभिः सूक्ष्मदर्शिभिः।

अर्थ-गुडासव-चरपरी, कडवी, बलकारक, अग्निप्रदीपक, स्वादिष्ठ, मूत्रजनक, वर्णको सुंदर करनेवाली, पुष्टिकारक, तृप्तिकारी, मृदु और मलको करनेवाली है।

मध्वासवगुणाः।

मध्वासवो लघुस्तीक्ष्णो मधुरस्तुवरो मतः।
छेदी रूक्षः प्रतिश्यायकुष्ठमेहविनाशनः ॥

अर्थ-मध्वासव-हलकी, तीक्ष्ण, मधुर, कषैली, छेदक, रूखी तथा प्रतिश्याय, कोढ और प्रमेहविनाशक है।

द्राक्षासवगुणाः।

द्राक्षासवः कफकरो रक्तपित्तार्शकुष्ठहा।

अर्थ-द्राक्षासव-कफकारक तथा रक्तपित्त, बवासीर और नाशक है।

शर्करासवगुणाः।

शर्करायाश्चासवस्तु पाचकोऽग्निप्रदीपनः।
रोचनश्च लघुः स्वादुर्वृष्यो वस्तिविकारहा ॥
वात शोषं नाशयतीत्येवमाचार्य्यभाषितम्।

अर्थ-शर्करासव-पाचक, अग्निप्रदीपक, रोचन, हलकी, स्वादिष्ठ, वीर्यवर्द्धक, वस्तिविनाशक तथा वात और शोषनाशक है।

जाम्बवासवगुणाः।

जाम्बवस्यासवश्चापि तुवरो ग्राहको मतः।
वातकोपनकारी च मुनिभिः समुदाहृतः ॥

अर्थ-जाम्बवासव-कषेली, मलरोधक और वातको कुपित करेहै।

मैरेयमद्यगुणा ।

मैरेयकं तु मद्यं स्याद्वृष्यं धातुविवर्धकम्। सरं तृप्तिकरं चैव गुरु तीव्रमदप्रदम् ॥ मुखप्रियं च मधुरं कटु प्रोक्तं कफप्रदम्। बलवर्द्धनकृच्चैव मेदोवातकृमीञ्जयेत् ॥

अर्थ-मैरेयमदिरा-वीर्य्यवर्द्धक, धातुवर्धक, सारक, तृप्तिकारक, भारी, तीक्ष्णमदकारक, मुखप्रिय, मधुर, चरपरी, कफकारक, बलवर्द्धक तथा मेद,वात और कृमिको दूर करे है।

नवीनमद्यगुणा ।

नूतनं मद्यं स्मृतं शीतं वातलं पित्तलं तथा ।
त्रिदोषजनकं दाहि कफकृद्विशदं गुरु ।
अहृद्यं च सरं चैव दुर्गंधि बृंहणं मतम् ॥

अर्थ-नवीनमदिरा-शीतल,वातकारक,पित्तकारक,त्रिदोषजनक, दाहकारक, कफकारक, विशद, भारी, हृदयको अहितकारी, सारक, दुर्गंधयुक्त और पुष्टिकारक है।

प्राचीनमद्यगुणा ।

जीर्णं मद्यं भ्रामकं स्याद्दीपनं रुचिकृल्लघु । सुगंधि वृष्यं हृद्यं च तथा स्रोतसां च विशोधकम्॥लवणेन विना सर्वरसैर्युक्तं कफापहम्। वातं कृमीन्सर्वरोगान्नाशयेदिति कीर्तितम् ॥ (नि०र०)

अर्थ-पुरानीमदिरा-भ्रमकारक, अग्निमदीपक, रुचिकारक, हलके, सुगंधियुक्त वीर्य्यवर्द्धक, हृदयको हितकारी, स्रोतोंको शुद्ध करनेवाली, लवणरसको छोडकर सर्वरसोंकरके युक्त कफनाशक तथा वात, कृमी और सर्वरोगोंको हरे है।

विधियुक्तमद्यपानगुणा ।

विधिना मात्रया काले हितैरन्नैर्यथाबलम् । प्रहृष्टो यः पिबेन्मद्यं तस्य स्यादमृतं यथा ॥ किन्तु मद्यं स्वभावेन यथैवान्नं तथा स्मृतम् । अयुक्तियुक्तं रोगाय युक्तियुक्तं यथाऽमृतम् ॥

अर्थ-मद्यपानकी विधिसे मात्राके माफिक समयपर हितजनक,

अन्नोके साथ बलाबलको देखके हर्षसहित जो मनुष्य मदिराको पीता है उसके मद्य अमृतके समान गुण करे है, मद्य स्वभावसेही अन्नकी समान गुणकारक है, परन्तु अविधिसे जो पीवे है उसके रोगोंको करे है और विधिके साथ जो पीवे है उसके अमृतकी सदृश गुणों को करे है।

सुराप्रयोगविधि.।

कृशानां रक्तमूत्राणां ग्रहण्यर्शोविकारिणाम्।
सुरा प्रशस्ता वातघ्नी स्तन्यरक्तक्षयेषु च॥

अर्थ-कृशशरीरवाले, रुधिर, मूत्र, संग्रहणी और अर्शरोगवाले मनुष्योंको मदिरा विशेष हितकारी है, सुराको पीनेसे वातरोग, स्तन्य और रक्तक्षयरोग दूर होता है।

मतान्तरे।

पूर्णे कषायपित्ते च योगयुक्ता सुरा हिता। बहुदोषहरा चैव श्लेष्मरोगे विशेषतः॥ श्रमज्वरातुरे शोषे शोफपाण्ड्वामये क्षये॥ मतेः क्लमेऽपस्मारे च पक्ष्मणाश्च भ्रमेषु च॥ श्रान्ते वा विषपीते वा सर्पदष्टे जलोदरे। रक्तपित्ते तथा श्वासे वारुणी न हिता मता॥ (हा० सं०)

अर्थ-कषेलेपनसे युक्त हुवा पित्त जब पूर्ण होवे तब योगसे युक्त मदिरा हितकारक है बहुदोषोंका हरनेवाली और विशेषकरके कफके रोगोंको नष्ट करे है परिश्रम, ज्वरसे पीडित, शोष, शोफ, पाण्डुरोग, क्षय, बुद्धिका थकना, अपस्मार, पलकोंका भ्रम, श्रान्त और जिसने विष पीलिया हो उसको, सर्पके काटेमे, जलोदरमे, रक्तपित्त और श्वासरोगमे मदिरा हितकारी नहीं है।

अथ मद्यानां गन्धनाशनोपाय।

मुस्तैलवालगदजीरकधान्यकैला यश्चर्वयन्सदसि वाचमभिव्यनक्ति। स्वाभाविक मुखजमुज्झति पूतिगध गन्धं च मद्यलशुनादिभवं च नूनम्॥ (भा० प्र०)

अर्थ-नागरमोथा, एलुआ, कूठ, जीरा, धनिया और इलायचीको चवर्ण करके जो सभामे बोले है उनकी स्वाभाविक मुखकी दुर्गंध

दूर होती है और मद्य लशुनादिकी भी दुर्गंध दूर होती है यदि मद्यके विशेष गुणदोष और प्रकार देखनेकी इच्छा होय तो "भैषज्य-भास्कर" मे देखो ।

इति श्रीशालिग्रामनिघण्टुभूषणे सन्धानवर्ग समाप्त ॥ २१ ॥

अथ संख्यावर्गः ।

क्षारद्वयम् ।

एकः पर्पटकः श्रेष्ठः पित्तज्वरविनाशनः ।

अर्थ-एक पित्तपापडाही पित्तज्वरको दूर करता है ।

स्वर्जिकायायशूकश्च क्षारद्वयमुदाहृतम् ।
मिलित तूक्तगुणकृद्विशेषाद्गुल्महृत्परम् ॥

अर्थ-सज्जी और जवाखार दोनो मिलेहुएको "क्षारद्वय" कहते है यह मिलेभी अपनेरगुणोको करे है और विशेषकरके गुल्मरोगको हरे है ।

द्विकटुकम् ।

पिप्पलीमरिचद्रूपम् ।

अर्थ-पीपल और कालीमिर्च इनको "द्विकटुक" कहते है ।

क्षारत्रयम् ।

स्वर्जिका च यवक्षारष्टकणक्षार एव च । क्षारत्रय समाख्यातं त्रिक्षारः स च कथ्यते ॥ तत्तिक्त बलशुक्रामकान्तिशूलोदरापहम् । वात गुल्म कफ चैव नाशयेदिति कीर्तितम् ॥

अर्थ-सज्जी, जवाखार और सुहागा यह "क्षारत्रय" अथवा त्रिक्षार कहे जाते है, क्षारत्रय-कडवे तथा बल, शुक्र, आम, कान्ति शूल और उदर रोगको हरे है और वात, गुल्म तथा कफको नष्ट करे है ।

लवणत्रयम्

सैंधव च विड चैव रुचक चेति विश्रुतम् । लवणत्रयमाख्यातं तच्च त्रिलवणं तथा॥वीर्य्योष्ण दीपनं तीक्ष्णं कफघ्न पित्तवर्द्धनम् ॥

अर्थ-सैंधानोन, बिरियासचर, और संचरलवण यह तीनों

मिलेहुए लवणत्रय वा त्रिलवण कहलाते हैं । लवणत्रय-उष्णवीर्य्य, दीपन,तीक्ष्ण, कफनाशक और पित्तको बढानेवाले हैं ।

त्रिकटु ।

पिप्पली मरिचं शुण्ठी त्रयमेतद्विमिश्रितम् । त्रिकटुत्र्यूषणं व्योष कटुत्रिकमुदाहृतम् ॥ त्र्यूषणं दीपनं हन्ति श्वासकासगलामयान् । गुल्ममेहकफस्थौल्यमेदःश्लीपदपीनसान् ॥

अर्थ-पीपल, मिर्च और सोठ इन तीनो औषधी एकत्र मिली हुईको-त्रिकटु, त्र्यूपण व्योष और कटुत्रिक (कटुत्रय, फलत्रिक) कहते है । त्रिकुटा-अग्निप्रदीपक तथा श्वास, खाँसी, गलरोग,गुल्म, प्रमेह, कफ, स्थूलता, मेद,श्लीपद और पीनसरोगको दूर करे है ।

कटूषणा ।

पिप्पली पिप्पलीमूल विश्वमेतत्त्रिभिः समैः ।
कटूषणा च विज्ञेया बुधैस्त्र्यूषणवद्गुणैः ॥

अर्थ-पीपल, पीपलामूल और सोठ यह तीनो समान मिलीहुई कटूषण कहलाती है इसके गुण त्रिकुटाके समान जानने ।

त्रिफला ।

पथ्याबिभीतधात्रीणां फलैः स्यात्त्रिफलासमैः ।
फलत्रिकञ्च त्रिफला सा वरा च प्रकीर्त्तिता ।

अर्थ-हरड, बहेडा और आमला यह तीनों समान मिलेहुएको त्रिफला, फलत्रिक, वरा (त्रिफली, फलत्रय, फल) कहते हैं ।

मतान्तरे ।

एका हरीतकी योज्या द्वौ च योज्यौ विभीतकौ।
चत्वार्य्यामलकान्येव त्रिफलैषा प्रकीर्त्तिता ॥

अर्थ-और किसीके मतसे-एक हरड, दो बहेडे और चार आमले मिलेहुएको त्रिफला कहते हैं ।

गुणा ।

त्रिफला कफपित्तघ्नी मेहकुष्ठहरी सरा ।
चक्षुष्या दीपनी रुच्या विषमज्वरनाशिनी ॥

अर्थ-त्रिफला-कफपित्तनाशक, प्रमेहको हरनेवाली,कुष्ठनिवारक, सारक, नेत्रोको हितकारी, अग्निप्रदीपक, रुचिको करनेवाला तथा विषमज्वरनाशक है ।

अन्यच्च ।

त्रिफला मुखरोगघ्नी गलगण्डव्रणापहा । वयसः स्थापका वृष्या सरा हृद्या बलप्रदा॥हन्ति नाडीव्रणं कण्डूं मेधास्मृतिप्रसादिनी । रसायन्यस्रमेदोजिद्रोपणी क्लेदनाशिनी ॥

अर्थ-और भी त्रिफला-मुखरोगनाशक, गलगण्डरोगनिवारक, व्रणविनाशक, अवस्थास्थापक, वीर्य्यवर्धक, कुछकुछ दस्तावर, हृदयको हितकारी, बलवर्द्धक, नाडीव्रण,और कण्ठरोगनाशक है, मेधा और स्मरणशक्तिको बढानेवाली,रसायन,रुधिरविकार और मेदरोगको हरनेवाली, व्रणको भरनेवाली और क्लेदनाशक है ।

मधुरत्रिफला ।

द्राक्षाकाश्मर्य्यखर्जूरीफलानि मिलितानि तु । मधुरत्रिफला ज्ञेया मधुरादिफलत्रयम्॥ मधुरत्रिफला वृष्या विशदा मधुरा मता । धातुवृद्धिकरी प्रोक्ता कफवातविनाशिनी ॥

अर्थ-दाख, कुम्भेर और खजूर यह तीनों मिलीहुई त्रिफला कहलाती है अथवा मधुर फलत्रय मधुरत्रिफला-वीर्य्यवर्द्धक,विशद मधुर, धातुवर्द्धक और कफवातविनाशक है ।

सुगन्धत्रिफला ।

जातीफलं तथैला च लवंगफलमेव च ।
सुगन्धत्रिफला प्रोक्ता तृतीय च फलत्रिकम् ॥

अर्थ-जायफल, इलायची और लौंग इन तीनोंको सुगंधत्रिफला और सुगंधफलत्रिक कहते है ।

मतान्तरे ।

जातीफलं पूगफलं लवंगलतिकाफलम् ।
सुगन्धत्रिफला ज्ञेया सूरिभिस्त्रिफला स्मृता ॥

अर्थ-और किसीके मतसे जायफल, सुपारी और लौंग इन तीनोको सुगन्धत्रिफला कहा है ।

गुणा ।

सुगन्धित्रिफला वृष्या मुखशुद्धिकरी मता ।
हृद्या रुचिकरा चैव कफस्य च विनाशिनी ॥

अर्थ-सुगंधित्रिफला-वीर्य्यवर्द्धक, मुखको शुद्ध करनेवाली हृदयको हितकारी, रुचिकारक और कफको हरे है।

त्रिसुगन्धि।

त्वक्पत्रकैलात्रिसुगन्धिमेतत्प्रकीर्त्तितं वातकफापहारि।
वृष्यं विषघ्नं च सनागपुष्पं ज्ञेयं चतुर्जातकमेतदेव॥

अर्थ-दालचीनी, तेजपत्र और इलायची इनको त्रिसुगंधि कहते हैं-त्रिसुगंधि वात और कफनाशक, वीर्य्यवर्द्धक और विषविनाशक है। और इन तीनोमें नागकेशर मिलीहुईको चतुर्जातक कहते है।

अन्यच्च।

त्वगेलापत्रकैस्तुल्यैस्त्रिसुगन्धं त्रिजातकम्। नागकेसरसंयुक्तं चातुर्जातकमुच्यते॥ तद्द्वयं पाचनं रूक्षं तीक्ष्णोष्णं मुखगंधहृत्। लघु पित्ताग्निकृद्वर्ण्यं कफवातविषापहम्॥

अर्थ-दालचीनी, इलायची और पत्रज, यह तीनो समान २ मिलेहुएको "त्रिजातक" कहते है और इसमे नागकेशर मिला दीजाय तो "चातुर्जातक" कहते है। त्रिसुगंधि और चातुर्जातक पाचक, रूखे, तीक्ष्ण, गरम, मुखकी दुर्गंधको हरनेवाले, हलके, पित्तजनक, अग्निकारक, वर्णको सुन्दर करनेवाले तथा कफ, वात और विषविनाशक है।

अपिच।

त्रिजातं पित्तलं रूक्षं रुच्यं चाग्निप्रदीपनम्। तीक्ष्णं चोष्णं लघु वर्ण्यं कटु वृष्यं बलप्रदम्॥ रसायनं कफं वातं विषं श्वासं च पीनसम्। स्वरभेदं च कासं च मुखदोषं च नाशयेत्॥

अर्थ-त्रिजात-त्रिसुगंधि-पित्तकारक, रूखे, रुचिकारक, अग्निप्रदीपक, तीक्ष्ण, गरम, हलके, वर्णको सुन्दर करनेवाले, चरपरे, वीर्य्यवर्द्धक, बलकारक, रसायन तथा कफ, वात, विष, श्वास, पीनस, स्वरभेद, खाँसी और मुखके दोषोंको हरे है।

मधुरत्रयम्।

घृतं गुडं माक्षिकं च विज्ञेयं मधुरत्रयम्।
विद्यात्त्रिमधुरं चैव प्रोक्तं वा मधुरत्रिकम्॥

अर्थ-घी, गुड और शहत यह तीनो मिले हुएको मधुरत्रय, त्रिमधुर, मधुरत्रिक कहते है।

मतान्तरे ।

सिता घृत माक्षिक वा विज्ञेय मधुरत्रिकम् ।
मधुरत्रितयं चाग्निदीपनं कान्तिकारकम् ॥
विषदोष रक्तपित्तं तृष्णां चैव विनाशयेत् ।

अर्थ-और कोई कहतेहै कि, चीनी, घी, और शहत यह तीनो मिलेहुये मधुरत्रय कहलातेहै । मधुरत्रय-अग्निदीपक,कान्तिकारक तथा विषविकार, रक्तपित्त और तृषाको दूर करेहै ।

त्रिसमम्।

हरीतकी च शुण्ठी च गुड चैकत्र मिश्रितम् ।
त्रिसमं भाष्यते सुज्ञैरथवापि समत्रिकम् ॥

अर्थ-हरड, सोठ और गुड यह तीनो एकत्र मिले हुएको "त्रिसम" कहते है वा "समत्रिक" कहतेहै ।

मतान्तरे ।

हरीतकी च शुण्ठी च गुडूच्येकत्र योजितम् ।
समत्रय रुचिकरं चक्षुष्यं मलशोधनम् ॥
वात पित्त नाशयतीत्येवमाचार्य्यभाषितम् ।

अर्थ-और किसीके मतसे हरड, सोठ और गिलोय यह तीनो मिलीहुई "त्रिसम" कहलाती है। त्रिसम-रुचिकारक, नेत्रोको हितकारी, मलशोधक तथा वात और पित्तनाशकहै ।

त्रिकार्षिकः ।

नागरातिविषा मुस्ता त्रयमेतत्रिकार्षिकम् ।
त्रिकार्षिक ज्वर शोथ पित्तं वात भ्रमं तथा ॥
आमं शूलमतीसार ग्रहणीं च विनाशयेत् ।

अर्थ-सोंठ, अतीस और नागरमोथा यह तीनो मिले हुए "त्रिकार्षिक" कहलाते है त्रिकार्षिक-ज्वर, सूजन, पित्त, वात, भ्रम, आम, शूल, अतिसार और संग्रहणीको हरे है ।

त्रिसिता।

गुडोत्पन्ना च मधुजा हिमोत्थेति त्रिधा सिता। सिता गुडोत्था सस्नेहा वृष्या क्षीणक्षतेहिता॥ मधुजा शर्करा बल्या गुर्वी वृष्या च शीतला। हिमोत्था शर्करा किञ्चिदुष्णा तिक्ता च पिच्छला

अर्थ-ईखकी चीनी, शहतकी चीनी और ज्वारकी खांड यह तीनो "त्रिसिता" कहलाती है। तहां ईखकी चीनी-स्नेहयुक्त, वीर्य्यवर्द्धक और क्षीण तथा क्षतवाले मनुष्योंको हितकारी है। शहतकी खांड-बलकारक, भारी, वीर्य्यवर्द्धक और शीतल है। ज्वारकी खांड-किञ्चित् गरम, कडवी और पिच्छिल है।

त्रिकण्टकम्।

शुण्ठी गुडूची दुःस्पर्शा त्रिकण्टकमिति स्मृतम्।
त्रिकंटकानां क्वाथः स्यात्पित्तज्वरविनाशनः॥
नेत्ररोगं वमिं चैव मस्तकस्य रुजं तथा॥

अर्थ-सोठ, गिलोय और जवासा यह तीनों मिलेहुएको "त्रिकण्टक" कहते है. त्रिकण्टकोंका काढा-पित्तज्वर, नेत्ररोग, वमन और मस्तकरोगको दूर करे है।

कण्टकत्रितयम्।

दुस्पर्शा बृहती ह्यग्निदमनीति समांशकम्।
कण्टकत्रितयं प्रोक्तं त्रिदोषभ्रमनाशनम्॥
ज्वरं पित्तं च हिक्कां च तन्द्रालापं च नाशयेत्।

अर्थ-जवासा, बडीकटेरी और अग्निदमनी यह तीनों बराबर मिली हुई "कण्टकत्रितय" कहलाती है। कण्टकात्रितय-त्रिदोष, भ्रम, ज्वर, पित्त, हुचकी, तन्द्रा और आलापको हरे है।

कण्टकारीत्रयम्।

त्रिकण्टक्षुद्राबृहती कण्टकारीत्रयं स्मृतम्।
कण्टकारीत्रयं तन्द्राप्रलापभ्रमनाशनम्॥
पित्तज्वरं त्रिदोषं च नाशयेदिति कीर्त्तितम्।

अर्थ-गोखुरू, कटेरी और कटाई इन तीनो एकत्र मिलीहुईको "कण्टकारीत्रय" कहते है कण्टकारीत्रय-तन्द्रा, प्रलाप, भ्रम, पित्त ज्वर, त्रिदोष इनको दूर करे है।

त्रिलोहम्।

स्वर्णं रूप्य तथा ताम्रं त्रिलोहमिति कीर्त्तितम्।
त्रिलोहस्य गुणाः प्रोक्ताः पंचलोहसमा बुधैः॥

अर्थ-सोना, चांदी और तांबा यह "त्रिलोह" कहलाते है त्रिलोहके गुण पंचलोहके समान जानने।

अञ्जनत्रयम्।

पुष्पाञ्जन च कालाख्यं रसाञ्जनमिति त्रयम्।
अंजनत्रयमेतद्धि नेत्रयोः परमं हितम्॥

अर्थ-पुष्पांजन, कालाञ्जन और रसाञ्जन यह अंजनत्रय कहे जाते हैं, अंजनत्रय-नेत्रोंको परमहितकारी है।

अथोपविषात्रयम्।

निर्विषातिविषा चैव लाङ्गल्युपविषात्रयम्।
विषात्रय विषघ्न च ज्वरातीसारनाशनम्॥

अर्थ-निर्विषी, अतीस और कलिहारी यह तीनों उपविष कहलाते है। उपविषात्रय विषनाशक और ज्वरातिसारविनाशक है।

चतुरूषणम्।

त्र्यूषण सकणामूलं कथितं चतुरूषणम्।
व्योषस्य ये गुणाः प्रोक्ता ह्यधिकाश्चतुरूषणे॥

अर्थ-त्रिकुटेमें पीपलामूल मिलानेसे चतुरूपण कहा जाता है चतुरूषणके गुण त्रिकुटेसे कुछेक ज्यादे है।

चातुर्जातकम्।

त्रिगधमेलात्वक्पत्रैश्चातुर्जातं सकेसरम्।
त्रिगधं च चतुर्जात रूक्षोष्णं लघुपित्तजित्।
वर्ण्यं रुचिकरं तीक्ष्ग विषश्लेष्मामयाञ्जयेत्॥

अर्थ-इलायची, दालचीनी, पत्रज और नागकेशर यह चारों मिलेहुएको चातुर्जातक कहते है। त्रिसुगंधि तथा चातुर्जातक रूखा, गरम, हलका, पित्तनाशक, वर्णको सुंदर करनेवाला, रुचिकारक, तीक्ष्ण, विष और कफरो[illegible] है।

कटुचतुर्जातकम् ।

एलात्वक्पत्र मरिच चतुर्जात कटु स्मृतम् ।
चतुर्जात च कटुक चातुर्जातसमं गुणैः ॥

अर्थ-इलायची, दालचीनी, तेजपात और कालीमिर्च इनको कटुचतुर्जातक कहतेहैं, कटुचतुर्जातक चरपरा और गुण चातुर्जातककी समान जानने ।

चातुर्भद्रकम् ।

नागरातिविषा मुस्ता त्रयमेतत्त्रिकार्षिकम् । गुडूचीसयुत चैव चातुर्भद्रकमुच्यते ॥ चातुर्भद्रं पाचकं स्याज्ज्वरजीर्णज्वरापहम् । त्रिदोषकण्ठरुक्छोथारुचिशूलामनाशनम् ॥

अर्थ-सोंठ, अतीस, नागरमोथा और गिलोय इन चारों एकत्र मिले हुएको चातुर्भद्रक कहते हैं चातुर्भद्रक-पाचक तथा ज्वर, जीर्णज्वर, त्रिदोष, कण्ठरोग, सूजन, अरुचि, शूल और आमनाशक है ।

चतुर्बीजम् ।

मेथिका चन्द्रशूरश्च कालाजाजी यवानिका । एतच्चतुष्टयं युक्त चतुर्बीजमुदाहृतम्॥तच्चूर्णं भक्षितं नित्य निहन्ति पवनामयान् । अजीर्णशूलमाध्मान पार्श्वशूलं कटिव्यथाम् ॥

अर्थ-मेथी, हालो, कलौजी और अजवायन इन चारों एकत्र मिलेहुएको चतुर्बीज कहते हैं । इसका चूर्ण नित्य सेवन करनेसे वातरोग, अजीर्ण, शूल, आध्मान, पार्श्वशूल और कटिव्यथाको दूर करे है ।

चातुर्थिकगुणा ।

आमलक्यभया कृष्णा चित्रक च समसमम् ।
सामान्यरोगहृता च चातुर्थिकगणः स्मृतः ॥

अर्थ-आमला, हरड, पीपल और चीता इन चारों एकत्र मिलेहुएको चातुर्थिकगण कहतेहैं यह अजीर्णादिरोगनाशक है ।

बलाचतुष्टयम् ।

महाबला चातिबला बला नागबला तथा ।
बलाचतुष्टयं शीतं मधुर बलकांतिकृत् ॥
स्निग्ध ग्राहि समीरास्रपित्तास्रक्षतनाशनम् ।

अर्थ-सहदेई, कंधी, खिरेटी और गंगरेन इन चारो एकत्र मिली हुईको बलाचतुष्टय कहतेहैं, बलाचतुष्टय-शीतल, मधुर, बलवर्द्धक, कांतिजनक, स्निग्ध, मलरोधक तथा वातरक्त, रक्तपित्त और उरःक्षतरोगनाशक है।

कटुग्रन्थिचतुष्कम्।

कटुग्रन्थिचतुष्कं तु शुण्ठीलशुनमार्द्रकम्।
पिप्पलीमूलसंयुक्त वातव्याधिहरं परम्॥

अर्थ-सोंठ, लहसुन, अदरख और पीपरामूल यह चारों एकत्र मिलेहुएको कटुग्रन्थिचतुष्क कहतेहैं। कटुग्रन्थिचतुष्क-वातरोगनाशक है।

चतुस्समम्।

जातीफल त्रिदशपुष्पसमन्वितञ्च जीरञ्च टङ्कणयुतं चरकेण चोक्तम्।चूर्णानि माक्षिकसितासहितानि लीढाआमातिसारमखिल गुरु हन्ति शूलम्॥

अर्थ-जायफल,लौंग,जीरा और सुहागा इन चारोको चतुस्सम कहतेहैं। इस चतुस्समका चूर्ण बनाकर उसमें मिश्री और सहत मिलाकर सेवन करनेसे आमातिसार और शूलरोग नष्टहोताहै।

पंचकोलम्।

पिप्पली पिप्पलीमूलं चव्यं चित्रकनागरम्।
एकत्रमिश्रितैरेभिः पचकोलकमुच्यते॥

अर्थ-पीपल, पीपरामूल, चव्य, चीता और सोंठ, यह पांचो एकत्र मिलेहुए पंचकोल कहे जाते हैं।

पचकोलं रसे पाके कटुक रुचिकृन्मतम्।
तीक्ष्णोष्ण पाचनं श्रेष्ठ दीपन कफवातनुत्॥
गुल्मप्लीहोदरानाहशूलघ्नं पित्तकोपनम्।

अर्थ-पंचकोल-रस और पाकमें चरपरा,रुचिकारक,तीक्ष्ण, गरम, पाचक, दीपन,कफवातनाशक तथा गुल्म, प्लीहा, उदररोग, आनाह और शूलनाशक है और पित्तको कुपित करे है।

द्वितीयपञ्चकोलम्।

पथ्याजमोदारुचकमत्युग्र विश्वभेषजम्।
समभागानि चैतानि द्वितीयं पचकोलकम्॥

पंचकोलं द्वितीयं तु पाचक दीपनं स्मृतम् ।

अर्थ-हरड, अजमोदा, संचलनोन, हींग और सोंठ यह सब औषधी बराबर मिलीहुई द्वितीय पचकोल कहलाती है । द्वितीय पंचकोल पाचक और अग्निदीपक है ।

पञ्चत्वक् ।

वटीवटोदुम्बरवेतसानामश्वत्थवृक्षेण समन्वितानाम् ।
त्वक्पंचक पंचमहीरुहाणामिति व्रणघ्न श्वयथुघ्नमेतत् ॥

अर्थ-वड, नदीवड, गूलर, वेत और पीपल इन पांचोंकी छाल एकत्र मिली हुईको पंचत्वक् कहते हैं-यह व्रणविनाशक और सूजनको दूर करेहै ।

मतान्तरे ।

न्यग्रोधोदुम्बराश्वत्थपारीपप्लक्षपादपाः ।
पचते क्षीरिणो वृक्षास्तेषां त्वक्पंचवल्कलम् ॥
त्वक्पंचकं हिमं ग्राहि व्रणशोफविसर्पजित् ।

अर्थ-किसीके मतसे-वड, गूलर, पीपल, पारिसपीपल और पाखर इन पांचो क्षीरीवृक्षोंकी एकत्र मिलीहुई छालको पंचत्वक् वा पंचवल्कल कहते हैं त्वक्पंचक-शीतल, मलरोधक तथा व्रण, सूजन और विसर्परोगको नष्ट करे है ।

पञ्चपल्लवाः ।

पल्लवाः क्षीरिवृक्षाणां हिताः पित्तातिसारिणाम् ।
कषायास्तम्भना रूक्षाः फलं तेषान्तु वातकृत् ॥

अर्थ-पचक्षीरीवृक्षोंके पत्तोंको पंचवल्लव कहते हैं, यह पंचवल्लव पित्तातिसारवाले रोगियोंको हितकारी है कषाय, स्तम्भक, रूक्ष और उन वृक्षोंके फल वातकारक हैं ।

अन्यच्च ।

पचक्षीरिद्रुपत्रं तु शीत स्वादु च तिक्तकम् तुवर स्तम्भकं ग्राहि लेखनं कफवातनुत् ॥ वातरक्त मलस्तम्भमाध्मानं चातिसारकम् । नाशयेत्पित्तरोगं च लघु प्रोक्त मनीषिभिः ॥ तेषां फलं तु विष्टम्भिग्राहकं गुरु तूवरम् । अम्ल च मधुर वृष्य रक्त-

पित्तविनाशनम्॥कफवातं च हृल्लासं शोषं वातं च गुल्मकम् अरुचिं श्वासकासौ च नाशयेदिति कीर्त्तितम्॥पक्वं गुणाधिकं ज्ञेयमिति पूर्वैर्निरूपितम् ॥

अर्थ-पंचक्षीरी वृक्षोंके पत्ते-शीतल, स्वादिष्ठ, कडवे, कषेले, स्तम्भक, ग्राही, लेखन, कफवातनाशक तथा वातरक्त, मलस्तम्भ, आध्मान, अतिसार और पित्तरोगको नष्ट करे है और हलके हैं, इनके फल-विष्टम्भकारक, मलरोधक, भारी, कषले, खट्टे, मधुर, वीर्य्यवर्द्धक तथा रक्त, पित्त, कफ, वात, हल्लास, शोष, वातगुल्म, अरुचि, श्वास और खाँसीको नष्ट करेहै, इनके पके फल-अधिक गुणवाले है ।

पञ्चांगम् ।

त्वक्पत्रफलमूलानि पुष्पाण्येकस्य शाखिनः ।
पञ्चांगमिति बोद्धव्य प्राज्ञैरेकत्र मिश्रितम् ॥

अर्थ-एकवृक्षके पत्र, फल, मूल, छाल और फूल इन सब एकत्र मिलेहुएको पंचांग कहते हैं ।

निम्बपञ्चांगम् ।

निम्बस्य पुष्पफलत्वक्पत्रमुलं च पञ्चकम् ।
पंचनिम्बमिति ख्यातं सर्वकुष्ठहरं परम् ॥

अर्थ-नीमके-फूल,फल,छाल, पत्ते और मूल इन सब एकत्र मिलेहुओंको पंचनिम्बक कहते हैं, पंचनिम्ब-सर्वकुष्ठरोगनाशक है ।

अस्य गुणाः ।

पंचनिम्बन्तु तुवरं तिक्तं शीतं मधु स्मृतम् । लघु ज्वरहरं कुष्ठपित्तनाशकरं मतम्॥ वातरक्तं च कण्डूतिं दाहं मेहं विषं ज्वरम् ।वातं च नाशयेदेतदिति पूर्वैर्निरूपितम् ॥

अर्थ-पंचनिम्ब-कषेले, कडवे, शीतल, मधुर,हलके तथा ज्वर, कोढपित्त वातरक्त, कण्डू, दाह, प्रमेह, विष, ज्वर, और वातको दूर करेहै ।

अपिच ।

निम्बवृक्षस्य पञ्चांगं रक्तदोषहरं परम् ।
पित्तं कण्डूं व्रणं कुष्ठं दाहं चैव विनाशयेत् ॥

अर्थ-पंचनिम्ब अर्थात् निम्बपंचांग-रुधिरके दोषोंको हरनवाला तथा पित्त, कण्डू, व्रण, कोढ और दाहको दूर करे है ।

क्षारपञ्चकम् ।

पलाशमूलकक्षारौ यवक्षारः सुवर्च्चिका ।
तिलनालोद्भवक्षारः क्षारसंयुक्तपञ्चकम् ॥
क्षारपञ्चकगुल्मार्शोग्रहणीकृमिनाशनः ।

अर्थ-ढाकका खार, मूलीकी खार, जवाखार, सज्जी और तिलोंकी नालका खार यह पांचों मिलेहुए क्षारपंचक कहलाते हैं क्षारपंचक-गुल्म, बवासीर, संग्रहणी और कृमिरोगनाशक है ।

लवणपञ्चकम् ।

सैन्धवं रुचकं चैव विडमौद्भिदमेव च । सामुद्रेण समायुक्त ज्ञेय लवणपंचकम् ॥ लवणानां पचक तु शोषण च रुचिप्रदम् । मलानुलो[illegible] दाहि नेत्र्य वात कफं हरेत् ॥ शूलं च नाशयत्येवमुक्तं पूर्वैर्मनीषिभिः ।

अर्थ-सेंधानोन, सश्चल अर्थात् कालानोन, विरियासञ्चरनोन, औद्भिद और समुद्रनोन यह पांचो मिलेहुए लवणपञ्चक कहलाते है। लवणपञ्चक-शोषण, रुचिकारक, मलको अनुलोमन करनेवाले, दाहजनक, नेत्रोको अहितकारी तथा वात, कफ और शूलको नष्ट करेहैं ।

लघुपञ्चमूलम् ।

शालिपर्णीपृश्निपर्णी वार्त्ताकी कण्टकारिका । गोक्षुरः पञ्चभिश्चैतै· कनिष्ठं पञ्चमूलकम् ॥ पञ्चमूलमिदं ह्रस्वं वृंहण वलवर्द्धनम् । कषायतिक्त नातिशीतोष्ण सर्वदोषजित् ॥

अर्थ-शालिपर्णी (सालवन), पृश्निपर्णी (पिठवन),कटाई, कटेरी और गोखुरू यह पांचो मिलेहुए लघुपञ्चमूल कहलातेहै। लघुपञ्चमूल-पुष्टिकारक, बलवर्द्धक, कषेला, कडवा, न अत्यन्त शीतल और न अत्यन्त गरम और सर्व प्रकारके दोषोंको दूर करे है ।

महत्पञ्चमूलम् ।

बिल्वश्योनाकगम्भारीपाटलागणिकारिका. । एतन्महत्प-

ञ्चमूलसञ्ज्ञकं समुदाहृतम् ॥ पंचमूल महत्तिक्तं कषायं कफ-वातनुत् । मधुरं श्वासकासघ्नमुष्ण लघ्वग्निदीपनम् ॥

अर्थ-बेल, स्योनापाठा, कुम्भेर, पाढल और अरणी यह पांचो एकत्र मिलेहुए महत्पञ्चमूल कहे जातेहैं ।महत्पंचमूल कडवा,कषेला, कफवातनाशक, मधुर, श्वास और खाँसीको हरनेवाला, गरम, हलका और अग्निदीपक है ।

मध्यमपञ्चमूलम् ।

बला पुनर्नवा शूर्पपर्णी चैरण्डमेव च।एकत्र योजितेनैव स्यान्मध्यपंचमूलकम् ॥ मध्यमं पञ्चमूलन्तु वृष्य वातकफापहम् । किञ्चित्पित्तकरं प्रोक्तं पूर्वाचार्यैश्च सूरिभिः ॥

अर्थ-खिरैंटी,पुनर्नवा(साँठ)मुगवन, मषवन और अंड इन पांचों एकत्रमिले हुओको मध्यमपंचमूल-कहतेहैं । मध्यमपचमूल-वीर्य्य-वर्द्धक, वातकफनाशक और किञ्चित् पित्तकारक है ।

बलाख्यपञ्चमूलम् ।

निशामृता मेषशृङ्गी गोपवल्ली विदारिका ।एतासां चैव मूलन्तु बलाख्यं दोषनाशकम् ॥ बलाख्य पञ्चमूलन्तु भेदक च प्रकीर्त्तितम् । शोफज्वराणां शमन पूर्वाचार्यैरिहोदितम् ॥

अर्थ-हलदी,गिलोय, मेढाशिंगी,सारिवा और विदारीकद इन पांचोंके मूलको बलाख्यपंचमूल कहतेहैं । बलाख्यपंचमूल-भेदक, तथा सूजन और ज्वरको शांति करेहै ।

जीवनपञ्चमूलम् ।

जीवकर्षभको वीरा जीवन्ती च शतावरी।जीवनीयमिदं प्रोक्त चतुर्थं पंचमूलकम् ॥ जीवन पचक वृष्य चक्षुष्यं धातुवर्द्धकम् ॥ बल्यं दाहं कफ पित्त ज्वरं तृष्णाञ्च नाशयेत् ॥

अर्थ-जीवक,ऋषभक, बडीशतावर, जीवन्ती और शतावर इन सब एकत्र मिलीहुईको जीवनीयपचमूल कहतेहैं।जीवनीयपंचमूल-वीर्य्यवर्द्धक, नेत्रोंको हितकारी,धातुवर्द्धक, बलकारक, तथा दाह, कफ, पित्त ज्वर और तृषाको दूर करे है ।

तृणपञ्चमूलम्।

शरेक्षुदर्भकाशानां नलस्य मूलमेव च।
सौश्रुतश्चरकं चैव तृणाख्यं पञ्चमूलकम्॥ (सु०)

अर्थ-शर, ईख, दाभ, काँस और नल इन पांचोंके मूलको तृणपंचमूल कहते हैं, इसीप्रकार सुश्रुत और चरकमें भी कहा है।

अन्यच्च।

कुशः काशः शरो दर्भ इक्षुश्चेति तृणोद्भवम्।
पञ्चतृणमिदं ख्यात तृणज पंचमूलकम्॥ (च०)

अर्थ-कुशा, काँस, सरपता, दाभ और ईख इन पाचोंके मूलको तृणपंचमूल कहते हैं ऐसा चक्रदत्तमे लिखा है।

अन्यच्च।

शालीक्षुकुशकाशैः स्याच्छरेण तृणपञ्चकम्।
एषां मूलं तृषादाहपित्तासृङ्मूत्रसङ्गहृत्॥

अर्थ-शालि, ईख, कुश, काँस और सरपता इन पाचोंके मूलको तृणपचमूल कहते हैं ऐसा वैद्यकनिघण्टुमे लिखा है। तृणपंचमूल-तृषा, दाह, रक्तपित्त और मूत्रके रुकनेको दूर करे है।

अस्य गुणाः।

तृणानां पंचमूलन्तु पित्तज्वरतृषापहम्।
रक्तदोषाम्लपित्तञ्च स्त्रीरोगं रक्तपित्तकम्॥
प्रमेहं नाशयेदेतदिति सुज्ञैर्निरूपितम्।

अर्थ-तृणपंचमूल-पित्तज्वर, तृषा, रक्तविकार, अम्लपित्त, स्त्रीरोग, रक्तपित्त और प्रमेहरोगको हरे है।

गोक्षुरादिपञ्चमूलम्।

गोक्षुरो वदरी चंद्रवारुणी कासमर्दिका। गोक्षुराद्य पञ्चमूलं शिरीषेण समन्वितम्॥ गोक्षुरादिकपञ्चाना मूल कुष्ठार्शनाशनम्। वृष्यं वात कफं गुल्म व्रणं चामञ्च नाशयेत्॥

अर्थ-गोखुरू, बेरी, इन्द्रायण, कसोंदी और शिरस इन पांचोके मूलको गोक्षुरादिपचमूल कहते हैं। गोक्षुरादिपञ्चमूल-कुष्ठ, बवासीर,

वात, कफ, गुल्म, व्रण और आमको दूर करे है तथा वीर्य्यवर्द्धक है।

पञ्चमहाविषाणि ।

गौरपाषाणकश्चैव तालकश्च मनःशिला । वत्सनाभस्य सर्पस्य महापञ्चविषाणि च ॥ महाविषाणि पञ्चैव मादकानि तथा पुनः । सद्यःप्राणहराण्येव शुद्धानि ह्यमृतं जगुः ॥

अर्थ-शंखिया, हरिताल, मनाशिल, वत्सनाभ और सर्पका विष यह पांच महाविषहै। पंचमहाविष-मदकारक और तत्काल प्राणोको हरनेवाले हैं यही शुद्ध किये हुए और युक्तिके साथ सेवन किये हुए अमृतके समान गुणकारक है ।

पञ्चोपविषाणि ।

अर्कक्षीरं स्नुहीक्षीरं तथा लाङ्गलिकापि च । धत्तूरको हयारिश्च पञ्चैवोपविषाणि च ॥ उपपूर्वं पञ्चविष मादकं प्राणहारकम् । शोधित तत्तु बलदं वीर्य्यवृद्धिकरं परम् ॥

अर्थ-आकका दूध, थूहरका दूध, कलिहारी, धतूरा और कनेर यह पांच उपविष कहे जाते है । पंचउपविष-मदकारक, प्राणहारक यही शुद्ध किये हुवे-बलकारक और वीर्य्यवर्द्धक है ।

पञ्चगव्यम् ।

गोमूत्रं गोमयं क्षीरं दधि सर्पिस्तथैव च । समं योजितमेकत्र पचगव्यमिति स्मृतम् ॥ पञ्चगव्यं देहशुद्धिकरं कफविनाशनम् । अजीर्णापस्मृतिज्वरं भूतबाधाश्च नाशयेत् ॥

अर्थ-गायका मूत्र, गोबर, दूध, दही और घी यह पांचों बराबर एकत्र मिलेहुएको पञ्चगव्य कहलाते है । पञ्चगव्य-देहशोधक, कफनाशक तथा अजीर्ण, अपस्मार, ज्वर, और भूतबाधाको दूर करे हैं।

पञ्चमाहिषम् ।

माहिषाम्बु दधिक्षीरं साभिघार च तद्रसः ।
तत्पञ्चमाहिषं ज्ञेय तद्वच्छागलपञ्चकम् ॥

अर्थ-भैसका मूत्र, गोबर, दही, दूध और घी इनको पंचमाहिष कहते है इसी प्रकार छागलपचक जानना ।

सुगन्धपञ्चकम् ।

कुंकुमागरुकर्पूरकस्तूरीचन्दनानि च ।
महासुगन्धमित्युक्तो नामतो यक्षकर्दमः ॥

अर्थ-केशर, अगर, कपूर, कस्तूरी और चंदन यह पांचो बराबर एकत्र मिलेहुएको यक्षकर्दम और सुगन्धपंचक कहलाते है ।

स्याद्यक्षकर्दमः शीतः सुगन्धिः कान्तिदायकः ।
त्वग्दोषं च शिरोरोगं विषं चैव विनाशयेत् ॥

अर्थ-यक्षकर्दम-शीतल,सुगन्धिजनक,कान्तिकारक तथा त्वचाके रोग, शिरोरोग और विषके विकारोंको हरे है ।

सुगंधपञ्चकं शीत रक्तपित्तकफाञ्जयेत् ।
पीनस मुखदौर्गन्ध्यहर रक्तरुजञ्जयेत् ॥

अर्थ-सुगंधपचक-शीतल, रक्तपित्तनाशक, कफहारक, तथा पीनस, मुखकी दुर्गन्धता और रुधिरके विकारोको हरे है ।

अम्लपञ्चकम् ।

कोलदाडिमवृक्षाम्लचुक्रिकाचाम्लवेतसः । पञ्चाम्लकः समुद्दिष्टः स चोक्तश्चाम्लपञ्चकः ॥ फलाम्लपञ्चकं रुच्य कफकृत्कासकारकम् । तिक्तं जाड्यकर चैव विष्टम्भशूलवातनुत् । शुक्रगुल्मार्शसां नाशं करोतीति बुधा जगुः ॥

अर्थ-बेर, अनार, विषांबिल, चूका और अमलवेत यह अम्लपंचक हैं । अम्लपंचक-खट्टे, रुचिकारी, कफ और खाँसीको उत्पन्न करनेवाले, कडवे, जडताकारक तथा विष्टम्भ, शूल, वात, शुक्र, गुल्म और बवासीरको दूर करे हैं ।

द्वितीयफलाम्लपञ्चकम् ।

बीजपूरकजम्बीरनारगं चाम्लवेतसम् । फलैः पञ्चाम्लकः ख्यातस्तिंतिडीसहितः परः ॥ फलाम्लपंचकं चान्यच्छोफकृन्मदकारकम् । विष्टम्भशूलगुल्मार्शःशुक्रवातविनाशनम् ॥

अर्थ-बिजोरानीम्बु,जम्मीरीनींबु,नारगी,अमलवेंत और इमली यह दूसरा फलाम्लपंचक है । दूसरा फलाम्लपंचक-शोफकारक, मदजनक, तथा विष्टम्भ, शूल, गुल्म, बवासीर, शुक्र और वातविनाशक है ।

पञ्चगण ।

पृश्निपर्णीबृहत्यौ च विदारी गोक्षुरस्तथा ।
गणानां पंचकं प्रोक्तं प्लीहानाहप्रमेहजित् ॥
भगन्दरं पाण्डुरोग कुष्ठशूलोदर जयेत् ।

अर्थ-पिठवन,कटेरी,कटाई, विदारीकंद और गोखरू यह पांचों एकत्र मिलेहुये पंचगण कहलाते है । पंचगण-प्लीहा, आनाह, प्रमेह, भगन्दर, पाण्डुरोग, कुष्ठ, शूल और उदररोगको दूर करे है ।

पञ्चसमम् ।

शुण्ठी हरीतकी कृष्णा त्रिवृत्सौवर्चल तथा ।
इति पंचसमं नाम चूर्णं ज्वरहरं परम् ॥

अर्थ-सोठ,हरड,पीपल, निसोथ और कालानोन इन पांचोंको समभाग मिलेहुये पंचसम कहे जाते है,पंचसमका चूर्ण-ज्वरनाशक है।

द्वितीयपञ्चसमम् ।

आमलसैन्धवचित्रकपथ्यापिप्पलिचूर्णमिदं ज्वरहारि ।

अर्थ-आमला,सैधानोन,चीता, हरड और पीपल यहभी पंचसम कहेजाते है इनका चूर्णभी ज्वरनाशक है ।

पञ्चाङ्गलेप ।

पुनर्नवादारुशुण्ठीसिद्धार्थाञ्छिग्रुमेव च ।
पिष्ट्वा चैवारनालेन प्रलेपः सर्वशोथहा ॥

अर्थ-पुनर्नवा,दारुहलदी,सोठ,सरसो,सहिंजना इन पांचोको कांजीमे पीसकर लेप करनेसे सर्वप्रकारकी सूजन दूर होती है ।

पञ्चभृङ्ग ।

देवदाली शमी भृङ्गी निर्गुण्डी सतमालकः ।
पञ्चभृङ्गभवः क्वाथो रोगिस्नाने प्रशस्यते ॥

अर्थ-देवदाली,शमी(छोकर),अतीस, निर्गुण्डी और तमाल इन पांचोके पत्तोके काढेसे रोगीके लिये स्नानकराना उत्तम है ।

पञ्चमूत्रम् ।

गोजाविकामहिषीणां मूत्रं गर्दभकस्य च ।
पंचमूत्रं कटूष्णञ्च शोधनं वृष्यमीरितम् ॥

अर्थ-गाय, बकरी, भेड, भेंस और गधा इन पांचोके मूत्रको पंचमूत्र कहते है । पचमूत्र-चरपरा, गरम, शोधन और वृष्य है ।

पञ्चबीजम् ।

राजिका चाजमोदा च जीरकं खसबीजकम् । कुबेराक्षयुतं चैव पचबीजमुदाहृतम् ॥ मेथी ज्योतिष्मतीबीजं यवानीस्थूलजीरकम् । इक्षुरेण सुसंयुक्तं द्वितीयं पंचबीजकम् ॥ पञ्चबीजं ग्रहणिकां कण्डूतिं चाग्निमान्द्यकम् । वातं शोफं कफं चैव विषूचीं श्वासकासकम् ॥ शीतरोगं चामशूलं नाशयेदिति कीर्तितम् ॥

अर्थ-राई, अजमोद, जीरा, खसखसके दानें और अजवायन यह सब एकत्र मिलेहुये पचबीज कहेजाते हैं । मेथी, मालकांगनी, अजवायन, कलौजी और तालमखाना यह सब एकत्र मिलेहुये द्वितीयपंचबीज कहलाते है। पंचबीज-संग्रहणी, कण्डू, मंदाग्नि, वात, सूजन, कफ, विषूचिका, श्वास, खाँसी, शीतरोग, और आमशूल इन सब रोगोको हरे हैं ।

पञ्चसिद्धौषधय ।

तैलकन्दः सुधाकन्दः क्रोडकन्दो रुदन्तिका । मत्स्याक्षीसहिताः पच सिद्धौषध्यः प्रकीर्तिताः ॥ सिद्धानां चौषधीनां तु पंचकं रोगनाशनम् । रसस्य भस्मकरणे प्रोक्तं पूर्वभिषग्वरैः ॥

अर्थ-तैलकंद, सुधाकंद, क्रोडकंद, रुदन्ती और मत्स्याक्षी यह पांचो ओषधी एकत्र मिलीहुई पंचसिद्धौषधी कहलाती हैं । सिद्धौषधीपंचक पारेकी भस्म करनेवाला और अनेक प्रकारके रोगोंको नाश करनेवाला है।

पञ्चरत्नानि ।

कनकं हीरकं नीलं पद्मरागश्च मौक्तिकम् ।
पञ्चरत्नमिदं प्रोक्तमृषिभिः पूर्वदर्शिभिः ॥

अर्थ-सोना, हीरा, नीलम, पद्मराग और मोती इन पांचोको पञ्चरत्न कहते हैं ।

पञ्चसूरणा ।

श्वेतश्च वनजश्चैव चित्रदण्डस्तृतीयकः ।
अत्यम्लपर्णो मालाख्यः सूरणः पञ्चधा स्मृतः ॥

अर्शोघ्नपंचकं सर्वार्शोनाश्चैव विनाशनम् ॥

अर्थ-जमीकंद, जंगलीजमीकंद, चित्रदंडकंद, अत्यम्लपर्णी और मालाकंद यह पंचसूरण कहलाते है । पंचसूरण-सर्वप्रकारके अर्शरोगनाशक है ।

पञ्चपित्तानि ।

वाराहछागमहिषमत्स्यमायूरपित्तकम्।
पञ्चपित्तमिति ख्यातं सर्वेष्वेव हि कर्म्मसु ॥

अर्थ-सुअर, बकरा, भेस, मछली और मोर इनके पित्तोको पञ्चपित्त कहते है इनको सर्व कर्म्मोमे प्रयोग करना चाहिये ।

औषधीपञ्चामृतम् ।

गुडूची मुशली शुण्ठी त्रिकण्टकशतावरी । तत्पंचकं त्वौषधीजं पञ्चामृतमुदीरितम् ॥ पञ्चामृतं त्वौषधीजं तुष्टिपुष्टिबलप्रदम् । वीर्यवृद्धिकरं चैव प्रोक्तं पूर्वमनीषिभिः ॥

अर्थ-गिलोय, मुशली, सोंठ, गोखरू और शतावर इनपांचों औषधी एकत्र मिलीहुईको औषधीपंचामृत कहते है । औषधी पंचामृत-तुष्टिकारक, पुष्टिकारक, बलवर्द्धक और वीर्यवर्द्धक है ।

पञ्चामृतम् ।

दुग्धं सशर्करं चैव घृतं दधि तथा मधु ।
पञ्चामृतमिदं प्रोक्तं विधेयं सर्वकर्मसु ॥

अर्थ-दूध, मिश्री, घी, दही और शहत इन पांचो मिलेहुये पदार्थोको पञ्चामृत कहते है । यह पञ्चामृत सर्व कर्मोमे प्रयोग करना चाहिये ।

षड्रसाः ।

रसाः स्वाद्वम्ललवणतिक्तोषणकषायकाः । षड्द्रव्यमाश्रितार्श्चैव तद्रसषट्कमुच्यते ॥ मधुरादिरसाः षड्वै चाग्निदीप्तिकरा मताः । पौष्टिका लघवश्चैव वातनाशकरा मताः ॥

अर्थ-मधुर, अम्ल, लवण, तिक्त, कटु और कषाय इन छहो रसोंको षड्रस कहते है । यह मधुरादि षड्रस-अग्निप्रदीपक, पुष्टिकारक, लघु और वातविनाशक है ।

क्षारषट्कम् ।

क्षाराणि तिलनाङ्गल्यो माषापामार्गयोस्तथा ।

मोष्ककं कौटजं चैव क्षारपट्क विनिर्दिशेत् ॥
क्षारपट्कं वातगर्भगुल्मरक्तरुजापहम् ।

अर्थ-तिलोंकी नालका खार, कलिहारीका खार, टङ्कका खार चिरचिटेका खार, मोखेका खार और कुडेका खार इन सबको क्षार पट्क कहते हैं । क्षारपट्क-वात, गर्भ, गुल्म और रुधिरके विकारोको हरे है ।

षड्रूषणम् ।

पञ्चकोल समरिचं षडूषणमिति स्मृतम् ।
पचकोलगुणं तत्तु रूक्षमुष्णं विपापहम् ॥

अर्थ-पचकोलमें काली मिर्च मिलानेसे षडूषण कहा जाता है । षडूषणके गुण पचकोलके समान जानने । पंचकोल-रूखा, गरम और विषविनाशक है ।

सुगन्धपट्कम् ।

जातीफलं लवङ्गञ्च कर्पूर पूगवालकम् ।
सुगधपट्कमेतद्धि सककोलमुदाहृतम् ॥
सुगन्धपट्कं रुचिकृद्धृद्यं दाहविनाशकृत् ।

अर्थ-जायफल, लौंग, कपूर, सुपारी, सुगन्धवाला और कंकोल यह सब एकत्र मिलीहुई औषधियोको सुगन्धपट्क कहलाता है । सुगन्धपट्क-रुचिकारक हृदयको हितकारक और दाहविनाशक है।

महासुगन्धपट्कम् ।

कालागरु च कस्तूरी कर्पूरः श्वेतचंदनम्।कक्कोलं चाद्विगन्धा च महादिपट्सुगंधकम् ॥ महासुगंधिपट्क तु वृष्य चैव सुगन्धिकृत् । भूतबाधा कफ दाहं नाशयेदिति कीर्त्तितम् ॥

अर्थ-काली अगर,कस्तूरी,कपूर,सफेदचदन, शीतलचीनी और नकुलकंद यह सब एकत्र मिलेहुये महासुगन्धपट्क कहलाता है। महासुगन्धपट्क-वीर्य्यवर्द्धक, सुगंधिकारक तथा भूतबाधा, कफ और दाहको दूर करे है ।

प्राणहरपट्कम् ।

पूतिमांस स्त्रियो वृद्धा बालार्कस्तरुणं दधि ।

प्रभाते मैथुन निद्रा सद्यः प्राणहराणि षट् ॥

अर्थ-सडाहुवा मांस, वृद्धा स्त्री, मादोकी धूप, तरुण दही, प्रभातकालमे मैथुन और निद्रा यह छ वस्तु तत्काल प्राणोंको हरनेवालीहै।

प्राणकरषट्कम्।

सद्यो मांसं वरं चान्नं बाला स्त्री क्षीरभोजनम् ।
घृतमुष्णोदके स्नान सद्यः प्राणकराणि षट् ॥

अर्थ-ताजा, मांस, नवनि अन्न, बाला स्त्री, क्षीरका भोजन, घृतयुक्त भोजन और गरमजलसे स्नान करना यह छै वस्तु तत्काल प्राणोंको करनेवाली है ।

सप्तोपविषाणि ।

अर्कक्षीरं स्नुहीक्षीरं लांगली करवीरकः । गुञ्जाहिफेनो धत्तूरः सप्तोपविषजातयः ॥ सप्तोपविषवर्गोयं स वरः परिकीर्त्तितः। अयुक्तया सेवितश्चाय मारयत्येव निश्चितम् ॥

अर्थ-आकका दूध, थूहरका दूध, कलिहारी कनेर, चोटली, अफीम और धतूरा यह सात उपविषकी जाति है सतउपविष वर्ग-अत्यन्त श्रेष्ठ है और अनेक काय्योंमे लिया जाताहै । यह अयुक्तिके साथ सेवन कियाहुआ मनुष्यको मार देवे है ।

शरीरस्य सप्तधातव ।

रसासृङ्मांसमेदोऽस्थिमज्जाशुक्राणि धातवः ।

अर्थ-रस, रुधिर, मांस, मेदा, अस्थि, मज्जा और शुक्र यह शरीरमे रहनेवाली सात धातु है ।

सुवर्णादिसप्तधातव ।

स्वर्णं रूप्यश्च ताम्रञ्च रंगं यशदमेव च सीसं लोहश्च सप्तैते धातवो गिरिसम्भवाः ॥ वलीपलितखालित्यकार्श्यावल्यंज्वरामयान् । निवार्य्य देहं दधति नृणां तद्धातवो मताः ॥

अर्थ-सोना, रूपा, तांबा, रांग, जस्त, सीसा और लोहा यह पर्वतसे उत्पन्न होनेवाली सात धातु है । यह सातधातु-देहमे वलिका पडना, बिनासमय बालोका धवल होजाना, मस्तकमेसे बालोका गिरजाना, कृशता, निर्बलता, वृद्धावस्था और रोगोंका दूर करके देहको धारण करती हैं इसीकारण इनको धातु कहते हैं ।

मोष्ककं कौटजं चैव क्षारषट्कं विनिर्दिशेत् ॥

क्षारषट्कं वातगर्भगुल्मरक्तरुजापहम् ।

अर्थ-तिलोकी नालका खार, कलिहारीका खार, उडदका खार चिराचिटेका खार, मोखेका खार और कुडेका खार इन सबको क्षार षट्क कहते हैं । क्षारषट्क-वात, गर्भ, गुल्म और रुधिरके विकारोंको हरे है ।

षडूषणम् ।

पञ्चकोलं समरिचं षडूषणमिति स्मृतम् ।

पञ्चकोलगुणं तत्तु रूक्षमुष्णं विषापहम् ॥

अर्थ-पंचकोलमे काली मिर्च मिलानेसे षडूषण कहा जाता है । षडूषणके गुण पंचकोलके समान जानने । पंचकोल-रूखा, गरम और विषविनाशक है ।

सुगन्धषट्कम् ।

जातीफलं लवङ्गञ्च कर्पूरं पूगवालकम् ।

सुगंधषट्कमेतद्धि सकक्कोलमुदाहृतम् ॥

सुगन्धषट्कं रुचिकृद्धृद्यं दाहविनाशकृत् ।

अर्थ-जायफल, लौंग, कपूर, सुपारी, सुगन्धवाला और कंकोल यह सब एकत्र मिलीहुई औषधियोंको सुगन्धषट्क कहलाता है । सुगन्धषट्क-रुचिकारक हृदयको हितकारक और दाहविनाशक है।

महासुगन्धषट्कम् ।

कालागरु च कस्तूरी कर्पूरः श्वेतचंदनम् । कंकोलं चाहिगन्धा च महादिषट्सुगंधकम् ॥ महासुगंधिषट्कं तु वृष्यं चैव सुगन्धिकृत् । भूतबाधा कफं दाहं नाशयेदिति कीर्त्तितम् ॥

अर्थ-काली अगर, कस्तूरी, कपूर, सफेदचदन, शीतलचीनी और नकुलकंद यह सब एकत्र मिलेहुये महासुगन्धषट्क कहलाता है । महासुगन्धषट्क-वीर्य्यवर्द्धक, सुगंधिकारक तथा भूतबाधा, कफ और दाहको दूर करे है ।

प्राणहरषट्कम् ।

पूतिमांसं स्त्रियो वृद्धा बालार्कस्तरुणं दधि ।

प्रभाते मैथुनं निद्रा सद्यः प्राणहराणि षट् ॥

अर्थ-सडाहुवा मांस, वृद्धा स्त्री,भादोंकी धूप,तरुण दही,प्रभातकालमे मैथुन और निद्रा यह छ वस्तु तत्काल प्राणोंको हरनेवालीहै।

प्राणकरषट्कम्।

सद्यो मांसं वरं चान्नं बाला स्त्री क्षीरभोजनम् ।
घृतमुष्णोदके स्नानं सद्यः प्राणकराणि षट् ॥

अर्थ-ताजा, मांस, नवीन अन्न,बाला स्त्री, क्षीरका भोजन, घृतयुक्त भोजन और गरमजलसे स्नान करना यह छे वस्तु तत्काल प्राणोंको करनेवाली है।

सप्तोपविषाणि ।

अर्कक्षीर स्नुहीक्षीरं लांगली करवीरकः । गुञ्जाहिफेनो धत्तूरः सप्तोपविषजातयः ॥ सप्तोपविषवर्गोयं स वरः परिकीर्त्तितः। अयुक्त्या सेवितश्चाय मारयत्येव निश्चितम् ॥

अर्थ-आकका दूध, थूहरका दूध, कलिहारी कनेर, चोटली, अफीम और धतूरा यह सात उपविषकी जाति है सप्तउपविष वर्ग-अत्यन्त श्रेष्ठ है,और अनेक काय्योंमे लिया जाताहै। यह अयुक्तिके साथ सेवन कियाहुआ मनुष्यको मार देवे है।

शरीरस्थ सप्तधातव ।

रसासृङ्मांसमेदोऽस्थिमज्जाशुक्राणि धातवः ।

अर्थ-रस, रुधिर, मांस, मेदा, अस्थि, मज्जा और शुक्र यह शरीरमे रहनेवाली सात धातु है।

सुवर्णादिसप्तधातव ।

स्वर्ण रूप्यञ्च ताम्रञ्च रंगं यशदमेव च सीसं लोहञ्च सप्तैते धातवो गिरिसम्भवाः ॥ वलीपलितखालित्यकार्श्यावल्यजरामयान् । निवार्य्य देहं दधति नृणां तद्धातवो मताः ॥

अर्थ-सोना,रूपा,तांबा,रांग,जस्त,सीसा और लोहा यह पर्वतसे उत्पन्न होनेवाली सात धातु है। यह सातधातु-देहमे वलिका पडना, विनासमय बालोका धवल होजाना, मस्तकमेसे बालोका गिरजाना, कृशता,निर्बलता, वृद्धावस्था और रोगोंको दूर करके देहको धारण करती है इसीकारण इनको धातु कहते हैं।

शरीरस्थधातूद्भवधातवः।

स्तन्यं रजो वसा स्वेदो दन्ताः केशास्तथैव च।
ओजश्च सप्तधातूनां क्रमात्सप्तोपधातवः॥

अर्थ-दूध, रज,वसा(चर्वी), स्वेद (पसीना), दांत, केश और ओज यह क्रमसे सातधातुओंकी उपधातु हैं अर्थात् रससे दूध, रक्तसे स्त्रीका रज, मांससे चर्वी, मेदासे पसीना, अस्थिसे दांत, मज्जासे केश और शुक्रसे ओज उत्पन्न होता है।

सप्तोपधातवः।

स्वर्णजं स्वर्णमाक्षीकं तारजं तारमाक्षिकम्।तुत्थं ताम्रभवं ज्ञेयं कंकुष्ठं वङ्गसम्भवम्॥ रसको जसदाज्जातो नागात्सिन्दूरसम्भवः। लोहाज्जात लोहकिट्टमेते सप्तोपधातवः॥

अर्थ-स्वर्णसे सुवर्णमाखी, रूपेसे रूपामाखी, तॉबेसे नीलाथोथा, रांगसे कंकुष्ठ, जस्तसे खपरिया, शीसेसे सिंदूर और लोहेसे लोहकिट्ट उत्पन्न होतीहैं इसप्रकार यह सातधातुओंकी सात उपधातु हैं।

सप्तसन्तर्पणम्।

द्राक्षादाडिमखर्जूरैर्मर्दिताम्बु सशर्करम्।
लाजाचूर्णं समध्वाज्यं सप्त सन्तर्पण स्मृतम्।

अर्थ-दाख, अनार, खजूर यह तीनो चीनीके सरबतमें मिले हुए और इनमें खीलोंका चूर्ण मिलाहुवा तथा घी और शहद सहित यह सप्तसन्तर्पण कहाजाता है।

मतान्तरे।

द्राक्षादाडिमखर्जूरकदलीशर्करान्विता।
समध्वाज्यं च पित्तघ्नं सन्तर्पणमुदाहृतम्।

अर्थ-किसीके मतसे दाख,अनार खजूर,केला,शर्करा,मधु और घी यह पित्तनाशक और सन्तर्पण है।

सप्तविधक्काथः।

क्काथः सप्तविधश्चोक्तः पाचनः शोधनो मतः। क्लेदनः शमनश्चैव दीपनस्तर्पणस्तथा॥ शोषकश्चैकभेदस्तु गुणास्तस्य

ब्रवीमि ते । अर्द्धांशः पाचनश्चोक्तो रव्यंशः कोष्ठशुद्धिकृत् ॥ चतुर्थांशो घर्म्मकारी त्वष्टांशो रोगनाशनः । षष्ठांशश्चाग्निजनकः षोडशांशस्तु शोषणः ॥ पञ्चमांशस्तृप्तिकारी मुनिभिः परिकीर्त्तितः ॥

अर्थ-क्काथ सात प्रकारका होता है, जैसे-पाचन १शोधन २ क्लेदन ३ शमन ४ दीपन ५ तर्पण ६ शोषक ७ तहां जो काढेका जल जलकर आधा रहगयाहो उसको अर्द्धांश कहते हैं । अर्द्धांश क्काथ पाचन है । जिसका पानी जलकर बारहवॉ भाग शेष रहजाय उसको रव्यंश कहते हैं।रव्यंश क्काथ कोठेको शुद्धि करे है जिस काढेका जल जलकर चौथा भाग बाकी रहजाय उसको चतुर्थांश कहते है । चतुर्थांशकाढा पसीनेको लानेवाला है जिस काढेका जल जलकर-आठवाँ भाग शेष रहजाय उसको अष्टांश कहते है । अष्टांश क्काथ रोगनाशक है । जिसका जल जलकर छठा भाग बाकी रहाहो उसको षष्ठांश कहते हैं । षष्ठांश क्काथ अग्निजनक है । जिसका पानी जलकर सोलहवॉ भाग बाकी रहजाय उसको षोडशांश कहते है । षोडशांश क्काथ शोषक और जिस काढेका जल जलकर पाँचवॉ भाग बाकी रहजाय उसको पंचमांश कहते हैं पंचमांश काढा तृप्तिकारक है ।

सप्तोपरत्नानि ।

वैक्रांतः सूर्य्यकान्तश्च चन्द्रकान्तस्तथैव च ।
कर्पूरकः स्फाटिकश्च पेरोजाख्यश्च काचकः ॥
सप्तोपरत्नगणिता मणयो लोकविश्रुताः ॥

अर्थ-वैक्रांत, सूर्य्यकांत, चन्द्रकांत, कपूर, स्फटिक, पिरोजा और कांच यह सात उपरत्न हैं ।

अष्टधातव ।

हिरण्य रजत कांस्यं ताम्रं सीसकमेव च ।
रङ्गमायससैत्यञ्च धातवोष्टौ प्रकीर्तिताः ॥

अर्थ-सोना, चादी, कांसा, तांबा, सीसा, रांग, लोहा और पीतल यह आठ धातु हैं ।

मतान्तरे ।

सुवर्ण रजत ताम्र लोह कुप्यञ्च पारदम् ।
वगञ्च सीसकञ्चैव अष्टौ देवसुसम्भवाः ॥

अर्थ-और किसीके मतसे सोना, चांदी, तांबा, लोहा, जस्त, पारा, रांग और सीसा यह आठ धातु देवोसे उत्पन्न है ।

अष्टविधचिकित्सा ।

शल्य शालाक्यकायञ्च तथा बालचिकित्सितम् ।
अगद विषतन्त्रञ्च भूतविद्यारसायनम् ॥
वाजीकरणमेवेति चिकित्साष्टविधा स्मृता ।

अर्थ-शल्य,शालाक्य,काय,बालचिकित्सा,अगद विषतंत्र, भूतविद्या,रसायन और वाजीकरण ऐसे चिकित्सा आठ प्रकारकी है ।

अष्टगधा ।

कर्पूर चदनं मुस्ता कुङ्कुम देवदारु च ।
रोचना केसरोशीरं गंधाष्टकमुदाहृतम् ॥

अर्थ-कपूर,चंदन,नागरमोथा,केसर, देवदारू, गोरोचन, नागकेसर और खस यह गंधाष्टक अर्थात् अष्टगंध है ।

अष्टवर्गः ।

जीवकर्षभकौ मेदे काकोल्यौ वृद्धिऋद्धिके।अष्टवर्गोऽष्टभिर्द्रव्यैः कथितश्चरकादिभिः॥अष्टवर्गो हिमः स्वादुर्बृंहणः शुक्रलो गुरुः । भग्नसन्धानकृद्बल्यः शरीरबलवर्द्धनः ॥ वातपित्तास्रतृड्दाहज्वरमेहक्षयप्रणुत् ॥

अर्थ-जीवक, ऋषभक,मेदा,महामेदा,वृद्धि ऋद्धि,काकोली और क्षीरकाकोली यह आठ औषधी एकत्र मिली हुई अष्टवर्ग कही जाती है । अष्टवर्ग-शीतल,स्वादिष्ठ,पुष्टिकारक, शुक्रजनक,भारी, भग्नसन्धानकारक,बलकारक, शरीरवर्द्धक बलको बढानेवाला तथा वात, पित्त, रुधिरविकार, तृषा, दाह,ज्वर, प्रमेह और क्षयरोगको दूर करे है ।

अष्टवर्गप्रतिनिधय ।

मेदाभावे अश्वगन्धा महामेदे च शारिवा ।
जीवकर्षभकाभावे गुडूची वंशलोचना ॥
ऋद्धयभावे बला देया वृद्धयभावे महाबला ।

अर्थ-मेदाके अभावमे असगन्ध, महामेदाके अभावमें शारिवा, जीवकके अभावमे गिलोय, ऋषभकके अभावमे वंशलोचन, ऋद्धिके अभावमे खिरटी और वृद्धिके अभावमे सहदेवी देनी चाहिये ।

अष्टमङ्गलघृतम् ।

वचा कुष्ठं तथा ब्राह्मी सिद्धार्थकमतापि च । सारिवा सैन्धवश्चैव पिप्पली घृतमष्टमम् ॥ सिद्धं घृतमिदं मेध्यं पिबेत्प्रतिदिनेदिने । दृढस्मृतिः कुमाराणां पिबतामष्टमङ्गलम् ॥

अर्थ-वच, कूठ, ब्राह्मी, सरसो, सारिवा, सैंधव, पीपल और घी इन सबके द्वारा सिद्ध कियेहुये घृतको अष्टमङ्गलघृत कहते है इस घीको जो बालक प्रतिदिन पीतेहै उनकी मेधाकी वृद्धि [illegible] और स्मरणशक्ति दृढ होजाती हे ।

नवधातव ।

हेमताराऽरनागश्च ताम्रवङ्गे च तीक्ष्णकम् ।
कांस्यकं कान्तलोहश्च धातवो नव कीर्त्तिता ॥

अर्थ-सोना, चांदी, पीतल, सीसा, ताँवा, रांग, लोह और कान्तलोह यह नवधातु है ।

नवरत्नानि ।

माणिक्यमुक्ताफलविद्रुमाणि ताक्ष्यं च पुष्पं [illegible]
गोमेदजं चाथ विदूरक च क्रमेण रत्नानि [illegible]

अर्थ-माणिक, मोती, मूँगा, पन्ना, [illegible] और वैदूर्य्य यह क्रमसे नवरत्न [illegible]

[illegible]

शिग्रुमूलकपलाण्डु [illegible]
इक्षुशेखरिकमो [illegible] प्रकीर्तितम् ॥

अर्थ-सहिजना, मूली, ढाक, इमली, चीता, अदरख, नीम, ईख, चिरचिटा और केला इन दश वृक्षोंके क्षारको क्षारदशक कहतेहैं ।

दशांगधूप ।

मधुमुस्तं घृत गधो गुग्गुलागरुशैलजम् ।
सरलः सिह्लसिद्धार्थं दशांगो धूप उच्यते ॥

अर्थ-शहत, नागरमोथा, घी, गन्धक, गूगल, अगर, भूरिछरीला, धूपसरल, शिलारस और सरसों इन सबको एकत्र कर दशांगधूप बनाई जाती है ।

दशमूलम् ।

उभाभ्यां पंचमूलाभ्यां दशमूलमुदाहृतम् ।
दशमूलं त्रिदोषघ्नं श्वासकासशिरोरुजः ॥
तन्द्राशोथज्वरानाहपार्श्वपीडारुचीर्हरेत् ॥

अर्थ-लघु और बृहत्पंचमूल दोनोको मिलाकर दशमूल होताहै. दशमूलत्रिदोषनाशक तथा श्वास, खाँसी, शिरोरोग, तन्द्रा, सूजन, ज्वर, आनाह, पसलियोंकी पीडा और अरुचिको दूर करे है ।

दशमूत्रम् ।

हस्तिमहिषोष्ट्रगवाजमेषाश्वगर्दभमानुषमानुषी-
णां दशानां मूत्रम् ।

अर्थ-हाथी, भैंस, ऊँट, गाय, बकरी, भेड, घोडा, गर्दभ, मनुष्य और स्त्री इन दश प्राणियोंके मूत्रको दशमूत्र कहतेहैं ।

इति श्रीशालिग्रामवैश्यविरचिते निघण्टुभूषणे सप्तमवर्गः समाप्त ॥ २२ ॥

॥ इति पूर्वार्ध समाप्तम् ॥



॥ श्रीः ॥

शालिग्रामनिघण्टुभूषणे ।

उत्तरार्द्धम् ।

मङ्गलाचरणम् ।

स्वात्मस्थितः सर्वगतः समस्तव्यापारवेदी विनिवृत्तसंगः ।
प्रवृद्धकालोऽप्यजरो वरेण्यः पायादपायात्पुरुषः पुराणः ॥

अनूपादिवर्गः ।

देशस्तु त्रिविधो ज्ञेयो ह्यनूपो जांगलस्तथा ।
साधारणो विशेषेण ज्ञातव्यास्ते मनीषिभिः ।

अर्थ-अनूप, जांगल और साधारण इन भेदोसे देश तीन प्रकारके है सो वह देश बुद्धिमानो करके जानना चाहिये ।

अनूपदेशका लक्षण ।

नदीपल्वलशैलाढ्यः फुल्लोत्पलकुलैर्युतः । हंससारसकारण्डचक्रवाकादिसेवितः ॥ शशवराहमहिषरुरुरोहिकुलाकुलः । प्रभूतद्रुमपुष्पाढ्यो नीलसस्यफलान्वितः ॥ अनेकशालिकेदारकदलीक्षुविभूषितः । अनूपदेशो ज्ञातव्यो वातश्लेष्मभयार्त्तिमान् ॥

अर्थ-जिसमे नदी, तलैया और पर्वत अधिकहो तथा जो फूले कमल और कुमुदोके समूहसे संयुक्त होय,हंस, सारस,जलमुर्गी और चकवादि पक्षियो करके सेवितहो, खरगोस, सूअर, भैसा,रुरू और रोहि इनके समूहसे आकुल होय,बहुतसे वृक्ष और पुष्पोसे युक्तहोय, हरी दूब और फलोसे परिपूर्ण होय और जो अनेक प्रकारके शालिधानोके खेतोसे केला और इख्वादिवृक्षोंसे सुशोभित होय, अर्थात् यह सब जिसमें होय उसको अनूपदेश कहते है अनूपदेश-वात और कफके रोगोंको उत्पन्न करता है ।

अर्थ-सहिजना, मूली, ढाक, इमली, चीता, अदरख, नीम, ईख, चिरचिटा और केला इन दश वृक्षोंके क्षारको क्षारदशक कहतेहैं ।

दशांगधूप ।

मधुमुस्त घृत गंधो गुग्गुलागरुशैलजम् ।
सरलः सिह्लसिद्धार्थं दशांगो धूप उच्यते ॥

अर्थ-शहत, नागरमोथा, घी, गन्धक, गूगल, अगर, भूरिछरीला, धूपसरल, शिलारस और सरसो इन सबको एकत्र कर दशांगधूप बनाई जाती है ।

दशमूलम् ।

उभाभ्यां पचमूलाभ्यां दशमूलमुदाहृतम् ।
दशमूलं त्रिदोषघ्नं श्वासकासशिरोरुजः ॥
तन्द्राशोथज्वरानाहपार्श्वपीडारुचीर्हरेत् ॥

अर्थ-लघु और बृहत्पंचमूल दोनोको मिलाकर दशमूल होताहै दशमूलत्रिदोषनाशक तथा श्वास, खाँसी, शिरोरोग, तन्द्रा, सूजन, ज्वर, आनाह, पसलियोंकी पीडा और अरुचिको दूर करे है ।

दशमूत्रम् ।

हस्तिमहिषोष्ट्रगवाजमेषाश्वगर्दभमानुषमानुषी-
णां दशानां मूत्रम् ।

अर्थ-हाथी, भैंस, ऊँट, गाय, बकरी, भेड, घोडा, गर्दभ, मनुष्य और स्त्री इन दश प्राणियोके मूत्रको दशमूत्र कहतेहैं ।

इति श्रीशालिग्रामवैश्यविरचिते निघण्टुभूषणे सख्यावर्गः समाप्त ॥ २१ ॥

॥ इति पूर्वार्धं समाप्तम् ॥



म्यक् ॥ पुनरपि हिमवाहं शालिसस्यं न चेक्षुर्भवति रुधिरपित्तं कोपमाशु ह्युपैति ॥

अर्थ-जिसमे तीक्ष्ण और कठोर पहाड स्थित है तथा कंटकोसे व्याप्त होरही है दिशा जिसकी, जिसमे विनाही जलके मृगोको जल प्रतीत होवे, जहां फटेहुये पत्तोवाले वृक्ष अधिकतर होते है, जहां सूर्यकी धूपसे अत्यन्त गरम हुए रेतेसे पृथ्वी परिपूर्ण होरहीहै, जहां सरोवर और कुओका पानी नीरस होकर सूखता जाताहै, जहां नीरसधान खानेसे हाथी, गाय, भैस, इत्यादि पशु अधिक प्रसन्न नहीं होते, जहां रस और मांसमें रूक्षता उत्पन्न होतीहै, जहाँ शीतल पवन, शालिधानोंके खेत और ईख नही होतीहै. और जहां रक्त और पित्त कुपित होताहै उसको जांगलदेश कहते है । हिन्दी-कटेर खुस्कदेश ।

साधारणदेशका लक्षण ।

उभयगुणयुतं वा नातिरूक्षं न स्निग्धं न च खरबहुलं चेच्चाभितः कण्टकाढ्यम् ॥ भवति जलकीर्णं नातिशीतं न चोष्णं समप्रकृतिसमेतं विद्धि साधारणञ्च ॥

अर्थ-जहाँ अनूप और जांगल इन दोनो देशोके लक्षण मिलतेहों जहां न तो अत्यन्त रूक्षता होवे और न अधिक स्निग्धता होवे, जहां तेज और कांटे अधिक न होवे, जो चारो ओर पानीसे भर रहाहो जिसमें न अत्यन्त शीत होवे और न अत्यन्त गरमी होवे समान प्रकृतिवाला हो उसको साधारण देश कहते है ।

अन्यच्च ।

यत्र द्वयोरपि च लक्षणयोर्निवेशो गोधूममाषचणकाभिधयावनालैः ॥ यो राजितः सममलो जनसौख्यदायी साधारणः स गदितोऽखिलवैद्यराजैः ॥

अर्थ-जिसमे अनूप और जांगल दोनो देशोके लक्षण मिलते होंय, जहां गेहूँ, उडद, चनें और ज्वार उत्पन्न होतेहोंय और जिसमें सरदी, गरमी समान हो उसको साधारण देश कहतेहैं ।

अथ क्षेत्रभेदाः ।

क्षेत्रभेदं प्रवक्ष्यामि शिवेनाख्यातमंजसा ।

अन्यच्च ।

बहुतरशुभनद्यश्चारुपानीयपुष्टास्सरससरउपेता शाद्वलासारभूमिः । हरितकुशजलानां शालिकेदाररम्या दिनकरकरदीप्तिं वाञ्छते यत्र लोकः॥गुरुमधुररसाढ्या भाति चक्षुःसदार्द्रा विविधजनितवर्णाः शालिगोधूमयूपाः । मधुररसविभुत्त्या मानवानां प्रकोपी भवति कफसमीरः स्यात्तदानूपदेशः॥

अर्थ-जिसमे निर्मल और मनोहर जलवाली बहुतसी नदी होय तथा जिस देशकी पृथ्वी हरीदूब और रसवाले वृक्षोसे अच्छादित होरही हो, हरी कुशा और जलसे भरेहुएहे शालिधानोके खेत, उन खेतोसे विभूषित होरहीहे भूमि जिसकी और जिस देशके लोक सूर्यकी किरणोकी अभिलाषा करते है,जहां भारी मधुर रसान्वित और निरंतर हरी ईखहोती है,जहां नानाप्रकारके रगके शालिधान और गोधूमादि होते है और जहां मधुर रसको भक्षण करनेसे कफ और वातकुपित होतेहै,उस देशकोअनूपदेश कहतेहै।हिन्दी-खादर,तराई।

जांगलदेशलक्षणम् ।

आकाशशुभ्र उच्चश्च स्वल्पपानीयपादपः । शमीकरीरबिल्वार्कपीलुकर्कन्धुसंकुलः॥ हरिणैणर्क्षपृषतगोकर्णखुरसंकुलः। सुस्वादुफलवान्देशो वातलो जांगलः स्मृतः ॥

अर्थ-जो देश आकाशके समान स्वच्छ और ऊंचाहो जिसमे अल्पजलहो, बहुत थोडे वृक्ष होय और शमी, करील, बेल, आंक, पीलु और बेरी जिसमे अधिकतासे होय तथा हरिण, एण, रीछ, चीता, रोझ और गर्दभादि, पशुओसे जो देश भराहुआहो,जिसमे स्वादिष्ठ फल उत्पन्नहो उस देशको जांगलदेश कहते है, जांगलदेश वातकारक है ।

अन्यच्च ।

खरपरुषविशालाः पर्वताः कण्टकीर्णा दिशिदिशि मृगतृष्णाभूरुहाः शीर्णपर्णाः ॥ अतिखररविरश्मीपांशुसम्पूर्णभूमिः सरसि रसविहीनः कूपकारम्भकर्षः ॥ तदनुविरससस्याहारिणो गोमहिष्यः प्रभवति रसमांसे रूक्षभावश्च स-

म्यक् ॥ पुनरपि हिमवाहं शालिसस्यं न चेक्षुर्भवति रुधिरपित्तं कोपमाशु ह्युपैति ॥

अर्थ–जिसमे तीक्ष्ण और कठोर पहाड स्थित है तथा कंटकोसे व्याप्त होरही है दिशा जिसकी, जिसमे विनाही जलके मृगोको जल प्रतीत होवे, जहां फटेहुये पत्तोवाले वृक्ष अधिकतर होते है, जहां सूर्यकी धूपसे अत्यन्त गरम हुए रेतेसे पृथ्वी परिपूर्ण होरहीहै, जहां सरोवर और कुओका पानी नीरस होकर सूखता जाताहै, जहां नीरसधान खानेसे हाथी, गाय, भैस, इत्यादि पशु अधिक प्रसन्न नहीं होते, जहां रस और मांसमें रूक्षता उत्पन्न होतीहै, जहाँ शीतल पवन, शालिधानोंके खेत और ईख नहीं होतीहै. और जहां रक्त और पित्त कुपित होताहै उसको जांगलदेश कहते है। हिन्दी–कटैर खुस्कदेश ।

साधारणदेशका लक्षण ।

उभयगुणयुतं वा नातिरूक्षं न स्निग्धं न च खरबहुलं चेच्चाभितः कण्टकाढ्यम् ॥ भवति जलकीर्णं नातिशीतं न चोष्णं समप्रकृतिसमेतं विद्धि साधारणञ्च ॥

अर्थ–जहाँ अनूप और जांगल इन दोनो देशोके लक्षण मिलतेहों जहां न तो अत्यन्त रूक्षता होवे और न अधिक स्निग्धता होवे, जहां तेज और कांटे अधिक न होवे, जो चारो ओर पानीसे भर रहाहो जिसमें न अत्यन्त शीत होवे और न अत्यन्त गरमी होवे समान प्रकृतिवाला हो उसको साधारण देश कहते है।

अन्यच्च ।

यत्र द्वयोरपि च लक्षणयोर्निवेशो गोधूममाषचणकाभिधयावनालैः ॥ यो राजितः सममलो जनसौख्यदायी साधारणः स गदितोऽखिलवैद्यराजैः ॥

अर्थ–जिसमे अनूप और जांगल दोनो देशोके लक्षण मिलते होंय, जहां गेहूँ, उडद, चने और ज्वार उत्पन्न होतेहोय और जिसमे सरदी, गरमी समान हो उसको साधारण देश कहतेहै ।

अथ क्षेत्रभेदाः ।

क्षेत्रभेदं प्रवक्ष्यामि शिवेनाख्यातमंजसा ।

अन्यच्च।

बहुतरशुभनद्यश्चारुपानीयपुष्पास्सरससरउपेता शाद्वलासारभूमिः। हरितकुशजलानां शालिकेदाररम्या दिनकरकरदीप्तिं वाञ्छते यत्र लोकः॥ गुरुमधुररसाढ्या भाति चक्षु-सदार्द्रा विविधजनितवर्णाः शालिगोधूमयूपाः। मधुररसविभुत्तया मानवानां प्रकोपी भवति कफसमीरः स्यात्तदानूपदेशः॥

अर्थ-जिसमे निर्मल और मनोहर जलवाली बहुतसी नदी होय तथा जिस देशकी पृथ्वी हरीदूब और रसवाले वृक्षोसे अच्छादित होरही हो, हरी कुशा और जलसे भरेहुएहै शालिधानोके खेत, उन खेतोंसे विभूषित होरहीहै भूमि जिसकी और जिस देशके लोक सूर्यकी किरणोकी अभिलाषा करते है, जहां भारी मधुर रसान्वित और निरंतर हरी ईख होती है, जहां नानाप्रकारके रगके शालिधान और गोधूमादि होते है और जहां मधुर रसको भक्षण करनेसे कफ और वातकुपित होतेहै, उस देशको अनूपदेश कहतेहै। हिन्दी-खादर, तराई।

जांगलदेशलक्षणम्।

आकाशशुभ्र उच्चश्च स्वल्पपानीयपादपः। शमीकरीरविल्वार्कपीलुकर्कन्धुसंकुलः॥ हरिणैणर्क्षपृषतगोकर्णखुरसंकुलः। सुस्वादुफलवान्देशो वातलो जांगलः स्मृतः॥

अर्थ-जो देश आकाशके समान स्वच्छ और ऊँचाहो जिसमे अल्पजलहो, बहुत थोडे वृक्ष होंय और शमी, करील, बेल, आक, पीलु और बेरी जिसमे अधिकतासे होय तथा हरिण, मृग, रीछ, चीता, रोझ और गर्दभादि, पशुओसे जो देश भराहुआहो, जिसमे स्वादिष्ठ फल उत्पन्नहो उस देशको जांगलदेश कहते है, जांगलदेश वातकारक है।

अन्यच्च।

खरपरुषविशालाः पर्वताः कण्टकीर्णा दिशिदिशि मृगतृष्णाभूरुहाः शीर्णपर्णाः॥ अतिखररविरश्मीपांशुसम्पूर्णभूमिः सरसि रसविहीनः कूपकारम्भकर्षः॥ तदनुविरसस-स्याहारिणो गोमहिष्यः प्रभवति रसमांसे रूक्षभावश्च स-

म्यक् ॥ पुनरपि हिमवाहं शालिसस्यं न चेक्षुर्भवति रुधिरपित्तं कोपमाशु ह्युपैति ॥

अर्थ-जिसमे तीक्ष्ण और कठोर पहाड स्थित है तथा कंटकोंसे व्याप्त होरही है दिशा जिसकी, जिसमे विनाही जलके मृगोंको जल प्रतीत होवे, जहां फटेहुये पत्तोवाले वृक्ष अधिकतर होते है, जहां सूर्यकी धूपसे अत्यन्त गरम हुए रेतेसे पृथ्वी परिपूर्ण होरहीहै, जहा सरोवर और कुओका पानी नीरस होकर सूखता जाताहै, जहां नीरसघान खानेसे हाथी, गाय, भैस, इत्यादि पशु अधिक प्रसन्न नहीं होते, जहां रस और मांसमें रूक्षता उत्पन्न होतीहै, जहाँ शीतल पवन, शालिधानोके खेत और ईख नहीं होतीहै, और जहां रक्त और पित्त कुपित होताहै उसको जांगलदेश कहते है। हिन्दी-कटेर खुस्कदेश ।

साधारणदेशका लक्षण ।

उभयगुणयुत वा नातिरूक्षं न स्निग्ध न च खरबहुलं चेञ्चाभितः कण्टकाढ्यम् ॥ भवति जलकीर्णं नातिशीत न चोष्णं समप्रकृतिसमेतं विद्धि साधारणञ्च ॥

अर्थ-जहाँ अनूप और जांगल इन दोनो देशोके लक्षण मिलतेहों जहां न तो अत्यन्त रूक्षता होवे और न अधिक स्निग्धता होवे, जहां तेज और कांटे अधिक न होवे, जो चारो ओर पानीसे भर रहाहो जिसमें न अत्यन्त शीत होवे और न अत्यन्त गरमी होवे समान प्रकृतिवाला हो उसको साधारण देश कहते है ।

अन्यच्च ।

यत्र द्वयोरपि च लक्षणयोर्निवेशो गोधूममाषचणकाभिधयावनालैः ॥ यो राजितः सममलो जनसौख्यदायी साधारणः स गदितोऽखिलवैद्यराजैः ॥

अर्थ-जिसमें अनूप और जांगल दोनो देशोके लक्षण मिलते होय, जहां गेहूँ, उडद, चनें और ज्वार उत्पन्न होतेहोय और जिसमे सरदी, गरमी समान हो उसको साधारण देश कहतेहै ।

अथ क्षेत्रभेदा ।

क्षेत्रभेदं प्रवक्ष्यामि शिवेनाख्यातमंजसा ।

अन्यच्च ।

बहुतरशुभनद्यश्चारुपानीयपुष्पास्सरससरउपेता शाद्वलासारभूमिः । हरितकुशजलानां शालिकेदाररम्या दिनकरकरदीप्तिं वाञ्छते यत्र लोकः॥गुरुमधुररसाढ्या भाति चक्षुःसदार्द्रा विविधजनितवर्णाः शालिगोधूमयूपाः । मधुररसविभुक्त्या मानवानां प्रकोपी भवति कफसमीरः स्यात्तदानूपदेशः॥

अर्थ-जिसमे निर्मल और मनोहर जलवाली बहुतसी नदी होय तथा जिस देशकी पृथ्वी हरीदूब और रसवाले वृक्षोसे अच्छादित होरही हो, हरी कुशा और जलसे भरेहुएहे शालिधानोके खेत, उन खेतोंसे विभूषित होरहीहे भूमि जिसकी और जिस देशके लोक सूर्यकी किरणोकी अभिलाषा करते हे,जहा भारी मधुर रसान्वित और निरंतर हरी ईखहोती हे,जहां नानाप्रकारके रगके शालिधान और गोधूमादि होते हे और जहां मधुर रसको भक्षण करनेसे कफ और वातकुपित होतेहे,उस देशको अनूपदेश कहतेहे।हिन्दी–खादर,तराई।

जांगलदेशलक्षणम् ।

आकाशशुभ्र उच्चश्च स्वल्पपानीयपादपः । शमीकरीरबिल्वार्कपीलुकर्कन्धुसंकुलः॥ हरिणैणर्क्षपृषतगोकर्णखुरसंकुलः। सुस्वादुफलवान्देशो वातलो जांगलः स्मृतः ॥

अर्थ-जो देश आकाशके समान स्वच्छ और ऊंचाहो जिसमें अल्पजलहो, बहुत थोडे वृक्ष होंय और शमी, करील, बेल, आक, पीलु और बेरी जिसमे अधिकतासे होय तथा हरिण, एण, रीछ, चीता, रोझ और गर्दभादि, पशुओसे जो देश भराहुआहो,जिसमे स्वादिष्ठ फल उत्पन्नहो उस देशको जांगलदेश कहते हे, जांगलदेश वातकारक हे ।

अन्यच्च ।

खरपरुषविशालाः पर्वताः कण्टकीर्णा दिशिदिशि मृगतृष्णाभूरुहाः शीर्णपर्णाः ॥ अतिखररविरश्मीपांशुसम्पूर्णभूमिः मरसि रसविहीनः कूपकारम्भकर्षः ॥ तदनुविरसस्याहारिणो गोमहिष्यः प्रभवति रसमांसे रूक्षभावश्च स-

म्यक् ॥ पुनरपि हिमवाहं शालिसस्यं न चेक्षुर्भवति रुधिरपित्तं कोपमाशु ह्युपैति ॥

अर्थ-जिसमे तीक्ष्ण और कठोर पहाड स्थित है तथा कंटकोंसे व्याप्त होरही है दिशा जिसकी, जिसमे विनाही जलके मृगोंको जल प्रतीत होवे, जहां फटेहुये पत्तोवाले वृक्ष अधिकतर होते है, जहां सूर्यकी धूपसे अत्यन्त गरम हुए रेतेसे पृथ्वी परिपूर्ण होरहीहै, जहां सरोवर और कुओका पानी नीरस होकर सूखता जाताहै, जहां नीरसधान खानेसे हाथी, गाय, भैस, इत्यादि पशु अधिक प्रसन्न नहीं होते, जहां रस और मांसमें रूक्षता उत्पन्न होतीहै, जहाँ शीतल पवन, शालिधानोके खेत और ईख नहीं होतीहै. और जहां रक्त और पित्त कुपित होताहै उसको जांगलदेश कहते है। हिन्दी-कटेर खुस्कदेश ।

साधारणदेशका लक्षण ।

उभयगुणयुतं वा नातिरूक्षं न स्निग्धं न च खरबहुलं चेच्चाभितः कण्टकाढ्यम् ॥ भवति जलकीर्णं नातिशीतं न चोष्णं समप्रकृतिसमेतं विद्धि साधारणञ्च ॥

अर्थ-जहाँ अनूप और जांगल इन दोनो देशोके लक्षण मिलतेहों जहां न तो अत्यन्त रूक्षता होवे और न अधिक स्निग्धता होवे, जहां तेज और कांटे अधिक न होवे, जो चारो ओर पानीसे भर रहाहो जिसमें न अत्यन्त शीत होवे और न अत्यन्त गरमी होवे समान प्रकृतिवाला हो उसको साधारण देश कहते है।

अन्यच्च ।

यत्र द्वयोरपि च लक्षणयोर्निवेशो गोधूममाषचणकाभिधयावनालैः ॥ यो राजितः सममलो जनसौख्यदायी साधारणः स गदितोऽखिलवैद्यराजैः ॥

अर्थ-जिसमे अनूप और जांगल दोनो देशोंके लक्षण मिलते होंय, जहां गेंहूं, उडद, चने और ज्वार उत्पन्न होतेहोंय और जिसमें सरदी, गरमी समान हो उसको साधारण देश कहते [illegible]

अथ क्षेत्रभेदाः ।

क्षेत्रभेदं प्रवक्ष्यामि शिवेनाख्यातमंजसा ।

- ब्राह्मं क्षात्रं च वैश्यीयं शौद्रं चेति यथाक्रमात् ॥

अर्थ-अब महादेवके कहेहुए क्षेत्रभेदको कहताहूँ-ब्राह्मक्षेत्र क्षात्रक्षेत्र, वैश्यक्षेत्र और शौद्रक्षेत्र इन भेदोंसे क्षेत्र चार प्रकारका है सो यथाक्रमसे जानना।

ब्राह्मक्षेत्रका लक्षण।

प्रायो दर्भपलाशवारिबहुलं यत्रार्जुना मृत्तिका।
ज्ञेयं तत्प्रथमं द्विजातिसुखदं द्रव्यं तदुत्थं भवेत् ॥

अर्थ-जिसमें कुशा और पलाशके वृक्ष अधिक हों, जो क्षेत्र जलसे परिपूर्ण हो, जहांकी मृत्तिका सफेद हो उस क्षेत्रको ब्राह्मक्षेत्र कहते हैं। ब्राह्मक्षेत्रके उत्पन्न हुए द्रव्य ब्राह्मणोंको सुखदेनेवाले हैं।

क्षात्रक्षेत्र।

ताम्रभूमिवलयं विभूधरं यन्मृगेन्द्रमुखसंकुलं कुलम्।
घोरघोषिखदिरादिदुर्गमं क्षात्रमेतदुदितं पिनाकिना ॥

अर्थ-जिसका रंग ताम्रवर्ण हो, और जो पर्वत, सिंह और मृगादिकोंके समूहसे संयुक्तहो तथा भयंकर शब्द करनेवाले पशु पक्षी और खैर आदिके वृक्षोंसे परिपूर्ण हो उसको 'शंकर' ने क्षत्रियक्षेत्र कहाहै।

वैश्यक्षेत्र।

शातकुम्भनिभभूमिभास्वरं स्वर्णरेणुनिचितं निधानवत्।
सिद्धकिन्नरसुपर्वसेवितं वैश्यमाख्यदिदमिन्दुशेखरः ॥

अर्थ-जिसका रंग सोनेकी समान पीतवर्ण हो। जिसकी मृत्तिकामें सुवर्णके कणसे मिलेहो, एवं सिद्ध, किन्नर और देवादिकों करके जो सेवित हो उसको 'शंकर' ने वैश्यक्षेत्र कहाहै।

शूद्रक्षेत्र।

श्यामस्थलाढ्यं बहुसस्यभूतिदं लसत्तृणैर्बब्बुलवृक्षवृद्धिदम्।
धान्योद्भवैः कर्षकलोकदर्पदं जगाद शौद्रं जगतो वृषध्वजः ॥

अर्थ-जिस पृथ्वीका रंग श्यामवर्ण हो, जिसमें नाना प्रकारकी घासें उत्पन्न होतीहो, जहां तृण और बबूरके पेड बहुत होवे, तथा जो नाना [illegible] धान्योंके उत्पन्न होनेसे किसानोंको आनंद देनेवाली हो उस [illegible] वृषध्वज (शंकर) ने शूद्रक्षेत्र कहा है।

चतुर्विधक्षेत्रोद्भवद्रव्यगुणाः ।

द्रव्यं क्षेत्रादुदितमनघं ब्राह्मत· सिद्धिदायि क्षत्रादुत्थं वलिपलितजिद्विश्वरोगापहारि ॥ वैश्याज्जातं प्रभवतितरां धातुलोहादिसिद्धौ शौद्रादेतज्जनितमखिलव्याधिविद्रावकं द्राक् ॥

अर्थ-ब्राह्मणक्षेत्रसे उत्पन्न हुए द्रव्य सिद्धिदायकहैं। क्षत्रियक्षेत्रसे उत्पन्नहुए द्रव्य वलि और पलित तथा संसारके रोगोंको हरनेवाले होते हैं।वैश्यक्षेत्रसे उत्पन्न हुए द्रव्य धातु और लोहादिकी सिद्धिमें लियेजाते हैं और शूद्रक्षेत्रसे उत्पन्न हुए द्रव्य सर्वप्रकारके रोगोंको हरनेवाले हैं। इन उपरोक्त ब्राह्मण,क्षत्रिय,वैश्य और शूद्र इन चारों क्षेत्रोंसे उत्पन्न हुये द्रव्य क्रमसे ब्राह्मण,क्षत्रिय, वैश्य और शूद्रोंको हितकारीहै।

अन्यच्च क्षेत्रभेदा ।

ब्रह्मा शक्रः किन्नरेशस्तथा भूरित्येतेषां देवताः स्युः क्रमेण। प्रोक्तास्तत्र प्राशुमावल्लभेन प्रत्येकं ते पंचभूतानि वक्ष्ये ॥

अर्थ-ब्रह्मा,इन्द्र, कुबेर और पृथ्वी यह ऊपर कहेहुए ब्राह्मादि क्षेत्रोंके क्रमसे देवता है ऐसा शिवने कहा है यह प्रत्येक क्षेत्र पंचभूतोंसे पांच प्रकारका है उसको कहताहूं।

पार्थिवक्षेत्र।

पीतस्फुरद्वलयशर्करिलाश्मरम्यं पीतं यदुत्तममृगं चतुरस्रभूतम्। प्रायश्च पीतकुसुमान्वितवीरुदादि तत्पार्थिवं कठिनमुद्यदशेषतस्तु ॥

अर्थ-जो क्षेत्र पीलेरंगके गोल कण और पाषाणोंसे शोभित हो तथा जिस क्षेत्रकी पृथ्वीका रंगभी पीतवर्णहो और जिस क्षेत्रमें वृक्ष लताभी पीले फुलवाले हों तथा जिसकी भूमि कठिन हो उसको पार्थिवक्षेत्र कहते है।

आप्यक्षेत्र।

अर्द्धचन्द्राकृति श्वेतं कमलाभं दृषच्चितम्।
नदीनदजलाकीर्णमाप्यं तत्क्षेत्रमुच्यते ॥

अर्थ-जो क्षेत्र अर्धचन्द्राकार हो, जिसका वर्ण सफेदकमलके समान हो और जो पाषाणोंसे संयुक्त हो,नदी नदादि जलाशयोंसे व्याप्त हो उसको आप्यक्षेत्र जानना।

ब्राह्मं क्षात्रं च वैश्यीय शौद्रं चेति यथाक्रमात् ॥

अर्थ-अब महादेवके कहेहुए क्षेत्रभेदको कहताहूँ-ब्राह्मक्षेत्र क्षात्रक्षेत्र, वैश्यक्षेत्र और शौद्रक्षेत्र इन भेदोसे क्षेत्र चार प्रकारका है सो यथाक्रमसे जानना ।

ब्राह्मक्षेत्रका लक्षण ।

प्रायो दर्भपलाशवारिबहुल यत्रार्जुना मृत्तिका ।
ज्ञेयं तत्प्रथम द्विजातिसुखदं द्रव्यं तदुत्थं भवेत् ॥

अर्थ-जिसम कुशा और पलाशके वृक्ष अधिक हो,जो क्षेत्र जलसे परिपूर्ण हो, जहांकी मृत्तिका सफेद हो उस क्षेत्रको ब्राह्मक्षेत्र कहते है । ब्राह्मक्षेत्रके उत्पन्न हुए द्रव्य ब्राह्मणोको सुखदेनेवाले है ।

क्षात्रक्षेत्र ।

ताम्रभूमिवलयं विभूधरं यन्मृगेन्द्रमुखसकुलं कुलम् ।
घोरघोपिखदिरादिदुर्गम क्षात्रमेतदुदितं पिनाकिना ॥

अर्थ-जिसका रंग ताम्रवर्ण हो, और जो पर्वत, सिह और मृगादिकोके समूहसे संयुक्तहो तथा भयंकर शब्द करनेवाले पशु पक्षी और खैर आदिके वृक्षोंसे परिपूर्ण हो उसको 'शंकर' ने क्षत्रियक्षेत्र कहाहै ।

वैश्यक्षेत्र ।

शातकुम्भनिभभूमिभास्वर स्वर्णरेणुनिचित निधानवत् ।
सिद्धकिन्नरसुपर्वसेवित वैश्यमाख्यदिदमिन्दुशेखरः ॥

अर्थ-जिसका रंग सोनेकी समान पीतवर्ण हो । जिसकी मृत्तिकामे सुवर्णके कणसे मिलेहो, एवं सिद्ध, किन्नर और देवादिको करके जो सेवित हो उसको 'शंकर' ने वैश्यक्षेत्र कहाहे ।

शूद्रक्षेत्र ।

श्यामस्थलाढ्य बहुसस्यभूतिदं लसत्तृणैर्व्बुलवृक्षवृद्धिदम् ।
धान्योद्भवैः कर्षकलोकहर्षद जगाद शौद्र जगतो वृषध्वजः ॥

अर्थ-जिस पृथ्वीका रग श्यामवर्ण हो, जिसमे नाना प्रकारकी घासे उत्पन्न होतीहो, जहा तृण और बबूरके पेड बहुत होवे, तथा जो नाना प्रकार [illegible] उत्पन्न होनेसे किसानोको आनंद देनेवाली हो उस [illegible] वृषध्वज (शकर) ने शूद्रक्षेत्र कहा है ।

चतुर्विधक्षेत्रोद्भवद्रव्यगुणा ।

द्रव्यं क्षेत्रादुदितमनघं ब्राह्मत-सिद्धिदायि क्षत्रादुत्थं वलिपलितजिद्विश्वरोगापहारि ॥ वैश्याज्जातं प्रभवतितरां धातुलोहादिसिद्धौ शौद्रादेतज्जनितमखिलव्याधिविद्रावकं द्राक् ॥

अर्थ-ब्राह्मणक्षेत्रसे उत्पन्न हुए द्रव्य सिद्धिदायकहै। क्षत्रियक्षेत्रसे उत्पन्नहुए द्रव्य वलि और पलित तथा संसारके रोगोंको हरनेवाले होते हैं।वैश्यक्षेत्रसे उत्पन्न हुए द्रव्य धातु और लोहादिकी सिद्धिमें लियेजाते हैं और शूद्रक्षेत्रसे उत्पन्न हुए द्रव्य सर्वप्रकारके रोगोको हरनेवाले है। इन उपरोक्त ब्राह्मण,क्षत्रिय,वैश्य और शूद्र इन चारों क्षेत्रोसे उत्पन्न हुये द्रव्य क्रमसे ब्राह्मण,क्षत्रिय, वैश्य और शूद्रोको हितकारीहै।

अन्यच्च क्षेत्रभेदा ।

ब्रह्मा शक्रः किन्नरेशस्तथा भूरित्येतेषां देवताः स्युः क्रमेण ।
प्रोक्तास्तत्र प्रागुमावल्लभेन प्रत्येकं ते पंचभूतानि वक्ष्ये ॥

अर्थ-ब्रह्मा,इद्र, कुबेर और पृथ्वी यह ऊपर कहेहुए ब्राह्मादि क्षेत्रोंके क्रमसे देवता है ऐसा शिवने कहा है यह प्रत्येक क्षेत्र पंचभूतोसे पांच प्रकारका है उसको कहताहू।

पार्थिवक्षेत्र।

पीतस्फुरद्वलयशर्करिलाश्मरम्यं पीतं यदुत्तममृगं चतुरस्रभूतम्। प्रायश्च पीतकुसुमान्वितवीरुदादि तत्पार्थिवं कठिनमुद्यदशेषतस्तु ॥

अर्थ-जो क्षेत्र पीलेरंगके गोल कण और पाषाणोंसे शोभित हो तथा जिस क्षेत्रकी पृथ्वीका रंगभी पीतवर्णहो और जिस क्षेत्रमें वृक्ष लताभी पीले फुलवाले हों तथा जिसकी भूमि कठिन हो उसको पार्थिवक्षेत्र कहते हैं।

आप्यक्षेत्र।

अर्द्धचन्द्राकृति श्वेतं कमलाभं दृषच्चितम्।
नदीनदजलाकीर्णमाप्यं तत्क्षेत्रमुच्यते ॥

अर्थ-जो क्षेत्र अर्धचन्द्राकार हो, जिसका वर्ण सफेदकमलके समान हो और जो पाषाणोंसे संयुक्त हो,नदी नदादि जलाशयोंसे व्याप्त हो उसको आप्यक्षेत्र जानना।

तैजसक्षेत्र ।

खदिरादिद्रुमाकीर्णं भूरिचित्रकवेणुकम् ।
त्रिकोणं रक्तपाषाणं क्षेत्रं तैजसमुत्तमम् ॥

अर्थ-जो क्षेत्र खादिरादिकके वृक्षोंसे परिपूर्ण हो, जिसमें अनेक चीतेके और बाँसके वृक्षहो, जिसका आकार तिकोना हो और जिसमे लाल पाषाण हो उसको तैजसक्षेत्र कहते हैं ।

वायवीयक्षेत्र ।

धूम्रस्थलं धूम्रदृषत्परीत षट्कोणकं तूर्णमृगावकीर्णम् ।
शाकैस्तृणैरंचितरूक्षवृक्षकं प्रकारयेत्तत्खलु वायवीयम् ।

अर्थ-जिस क्षेत्रका रंग धूसर हो तथा जो धूँएके रंगके पाषाणोंसे संयुक्त हो और जिसके छःकोने हों जिसमें मृगादिपशु, शाक और तृण अधिकतासे हों, और जिसमें रूखे वृक्ष हों उस क्षेत्रको वायवीय क्षेत्र कहते हैं ।

आन्तरिक्षक्षेत्र ।

नानावर्णं वर्त्तुलं तत्प्रशस्तं प्रायःशुभ्र पर्वताकीर्णमुच्चैः ।
यच्च स्थानं पावनं देवतानां प्राह क्षेत्र त्र्यक्षशस्त्वांतरिक्षम् ॥

अर्थ-जिस क्षेत्रका रंग नानाप्रकारका हो, जो क्षेत्र गोलहो, तथा जो श्वेतपर्वतोंसे आकीर्ण और ऊँचा होवे और जिसमें देवतादि वास करते हों उसको महादेवने आंतरिक्षक्षेत्र कहा है ।

पंचविधक्षेत्रोद्भवद्रव्यगुणा ।

द्रव्यं व्याधिहरं बलातिशयकृत्स्वादु स्थिरं पार्थिवं
स्यादाप्यं कटुकं कषायमखिलं शीतं च पित्तापहम् ।
यत्तिक्तं लवणं च दीप्यमरुचिं चोष्णं च तत्तैजसं
वायव्यं तु हिमोष्णमम्लमबलं स्यान्नाभसं नीरसम् ॥

अर्थ-पार्थिवक्षेत्रमें उत्पन्न होनेवाले द्रव्य-रोगनाशक, अत्यंत बलकारक, स्वादिष्ठ और स्थिर होते हैं । आप्यक्षेत्रमें उत्पन्न होनेवाले द्रव्य-चर्परे, कषेले, शीतल और पित्तनाशक होते हैं । तैजस क्षेत्रके उत्पन्न होनेवाले द्रव्य-कडवे, नमकीन, अग्निको दीपन करनेवाले, वातनाशक और गरम होते हैं । और

वायवीय क्षेत्रमें उत्पन्न होनेवाले द्रव्य-शीतल, गरम, खट्टे और अबलकारक होते है। और आंतरिक्ष क्षेत्रमे उत्पन्न होनेवाले सब द्रव्य नीरस होते है।

पांच क्षेत्रोंके देवता।

ब्रह्मा विष्णुश्च रुद्रोस्मादीश्वरोथ सदाशिवः।
इत्येताः क्रमतः पंच क्षेत्रभूतादिदेवताः॥

अर्थ-ब्रह्मा, विष्णु, रुद्र, ईश्वर और सदाशिव ये क्रमसे पाँच क्षेत्रोके पाँच देवता है।

वृक्षोत्पत्ति।

जित्वा जवादरिसुसैन्यमिहाजहार वीरः पुरा युधि सुधाकलशं गरुत्मान्॥ कीर्णस्तदा भुवि सुधाशकलैः किलासीद्वृक्षादिकं सकलमस्य सुधांशुरीशः॥

अर्थ-पूर्वकालमे जिससमय बलवान् गरुडजीने सर्वदेवसेनाको संग्राममे जीतकर अमृतके कलशको शीघ्रतासे छीनाथा उससमय जो अमृतकी बूँद कलशमेंसे पृथ्वीके भागोमे गिरीं उन्ही बूँदोसे यह। सब वृक्षादिक उत्पन्न हुए, और इन सबका स्वामी चन्द्रमा हुआ।

वृक्षोंके ब्राह्मणादिभेद।

तत्रोत्पन्नास्तूत्तमे क्षेत्रभागे विप्रीयाद्यौ विप्रुशो यत्रयत्र। शोगीजादि द्रव्यभूयं प्रपन्नास्तास्ताः संज्ञा बिभ्रते तत्र भूयः॥ एवं क्षेत्रानुगुण्येन तज्ज्ञा विप्रादिवर्णिनः। यदि वा लक्षणं वक्ष्याम्यमोहाय मनीषिणाम्॥

अर्थ-ब्राह्मणादिक्षेत्रोमे उत्पन्न हुए द्रव्य-ब्राह्मण, क्षत्रियक्षेत्रोंमे उत्पन्न हुए द्रव्य-क्षत्रिय, वैश्यक्षेत्रमे उत्पन्न हुए द्रव्य-वैश्य और शूद्रक्षेत्रमे उत्पन्न हुए द्रव्य-शूद्र कहलाते है। एवं प्रत्येक क्षेत्रके अनुसार वृक्षोंके ब्राह्मणादि भेद है उनमे वैद्यको कदाचित् भ्रम न होजावे इसकारण उनके लक्षण कहता हूँ।

तल्लक्षणानि।

किसलयकुसुमप्रकाण्डशाखादिषु विशदेषु वदंति विप्रमेतान्। नरपतिमतिलोहितेषु वैश्यं कनकनिभेषु सितेतरेषु शूद्रम्॥

अर्थ-जिसके पत्र, पुष्प, दण्डी और शाखादि बडे होंय, उसको ब्राह्मणजातिका वृक्ष कहते हैं। जिसके पत्र पुष्प प्रकाण्ड और

शाखादि लाल होवें उसको क्षत्रियजातिका वृक्ष जानना । और जिसके पत्र पुष्पादि पीले होवें उसको वैश्य तथा जिसके काले होवें उसको शूद्रजातिका जानना ।

ब्राह्मणादिवृक्षोंको योजनेकी विधि।

विप्रादिजातिसंभूतान्विप्रादिष्वेव योजयेत् ।
गुणाढ्यानपि वृक्षादीन्प्रातिलोम्यं न चाचरेत् ॥

अर्थ-ब्राह्मणजातिके वृक्ष ब्राह्मणोंको देवे, क्षत्रियजातिके क्षत्रियोंको, वैश्यजातिके वैश्योंको और शूद्रजातिके शूद्रोंको देवे । अधिक गुणवाले वृक्षोंकोभी प्रतिलोम (उलटा) न करे, अर्थात् ब्राह्मणजातिके वृक्षोंको क्षत्रियादिकको, और क्षत्रियादिके वृक्षोंको ब्राह्मणवैश्यादिकोंको शूद्र-ब्राह्मण- और क्षत्रियको और शूद्रजातिके वृक्षोंको ब्राह्मणादिको न देवे ।

अथौषधिनिर्णयश्चतुर्विध ।

किंचिद्दोषप्रशमनं किंचिद्धातुप्रदूषणम् ।
स्वस्थवृत्तौ मतं किंचित्त्रिविधं द्रव्यमुच्यते ॥

अर्थ-कोई औषधि वातादिक दोषोंको शान्त करनेवाली कोई रक्तादिक धातुओंको दूषित करनेवाली और कोई औषधि नीरोग प्राणियोंको हितकारक है, ऐसे इस संसारमें जितने द्रव्य हैं वह सब तीन प्रकारके जानने ।

तत्त्रिविधं यथा ।

द्रव्यं तु त्रिविधं प्रोक्तं जाङ्गमौद्भिदपार्थिवम् ।

अर्थ-फिर वही द्रव्य जंगम औद्भिद और पार्थिव इन भेदोंसे तीनप्रकारके हैं ।

जंगमद्रव्य ।

मधूनि गोरसाः पित्तं वसा मज्जासृगामिषम् ।
विण्मूत्रचर्म रेतोऽस्थि स्नायुः शृंगखुरा नखाः ॥
जंगमेभ्यः प्रयुज्यन्ते केशा लोमानि रोचनाः ।

अर्थ-शहत, गोरस, पित्त, चरबी, मज्जा, रुधिर, मांस, विष्ठा, मूत्र, त्वचा, वीर्य्य, हड्डी, नसें, सींग, खुर, नख, केश, रोम और गोरोचन (गोलोचन) ये पशु मनुष्य और पक्ष्यादि चलते हुए जीवोंसे उत्पन्न द्रव्य व्यवहारमें आते हैं इनको जंगमद्रव्य कहते हैं ।

पार्थिवद्रव्यम्।

सुवर्णं समलाः पंचलोहाः ससिकतासुधामनःशिलाले।
मणयो लवणं गैरिकांजने भौममौषधमुद्दिष्टम् ॥

अर्थ-सोना, चाँदी, तांबा, जस्त, राग, सीसा, लोहा, शिलाजीत, बालू, सोनामाखी, खपरिया, मुर्दासिंग, मनशिल, हारिताल, हीरादि नवरत्न, उपरत्न, सैंधवादिलवण, गेरू, खरियामट्टी, कसीस, सुर्मा इत्यादि पार्थिव अर्थात् ये औषधी पृथ्वीकी खानोमेसे निकलतीहैं इसकारण इनको भौम औषध कहते हैं।

औद्भिदद्रव्यम्।

वनस्पतिर्वीरुधश्च वानस्पत्यस्तथौषधिः।
फलैर्वनस्पतिः पुष्पैर्वानस्पत्यः फलैरपि ॥
ओषध्यः फलपाकांताः प्रतानैर्वीरुधः स्मृताः।

अर्थ-धरतीको फोडकर जो द्रव्य निकले उसको औद्भिदद्रव्य कहतेहैं और उस औद्भिदकी चार जाति हैं, वनस्पति १ वीरुध २ वानस्पत्य ३ और औषधि ४ जिनपे विना फूलकेही फळ लगें उनको वनस्पति तथा पादप कहते हैं, जैसे-वड, पीपल इत्यादि। और जिनपे फूल लगकर फल आतेंह उनको वानस्पत्य तथा शाखी कहतेहैं। जैसे-आम, जामुन इत्यादि। और जो फल आनेके पश्चात् सूखजातेहैं उनको औषधि कहतेहैं। जैसे-गेहूं, जौ आदि। और जिनकी बेल चलती है उनको वीरुध कहते हैं।

अन्यच्च।

ओषध्यः पञ्चधा ख्याता लता गुल्माश्च शाखिनः।पादपाः प्रसराश्चेति तेषां वक्ष्यामि लक्षणम् ॥ गुडूच्याद्या लताः प्रोक्ता गुल्माः पर्पटकादयः।आम्राद्याः शाखिनो ज्ञेया वटाश्वत्थादिपादपाः ॥ कंटकार्यादिकाः सर्वाः प्रसरा इति कीर्तिताः।

अर्थ-लता, गुल्म, शाखि, पादप और प्रसर, इन भेदोसे औषधि पांचप्रकारकी हैं उनके लक्षण कहताहूँ गिलोय, पान, सोमवल्ली, अपराजिता, स्वर्णवल्ली इत्यादि वीरुध अर्थात् लताहैं।पित्तपापडा आदि गुल्म जानने, आम आदि शाखी जानने, वडपीपल इत्यादि पादप जानने, कटेरी आदि प्रसर जानने।

अथ वृक्षादीनां पुस्त्वादिकथनम् ।

स्त्रीता पुंस्ता क्लीबता च द्रुमादौ ज्ञेया युक्त्या लक्षणं तद्वदामि ।

अर्थ-वृक्षादिकोमे स्त्री, पुरुष और नपुंसक, ये तीन भेद हैं, उनके लक्षण आगे कहता हूँ ।

स्निग्ध दीर्घं पेलवं चित्तहारि पुष्पाद्यं चेत्स्त्री मता सा भिषग्भिः।

अर्थ-जिनके पुष्प फलादिक स्निग्ध, दीर्घ, कोमल और मनोहर होवै, वह स्त्रीजातिके वृक्ष जानने ।

नो दीर्घा नातिह्रस्वाः किसलयसुमनःस्कंधकाण्डादयश्चेत्
स्थूलाः पारुष्यभाजस्त इह निगदिताः पूरुषा वैद्यवर्य्यैः ॥

अर्थ-जिनके पल्लव, पुष्प, स्कन्द, काण्ड आदि न तो अत्यन्त दीर्घ होय और न अत्यन्त ह्रस्व होय तथा स्थूल और दृढ होवै उनको पुरुषजातिके वृक्ष जानने ।

पुंसो वध्वाश्च लिंगं मिलति च यदि वा क्लीबता साभिधेया
स्वंस्वं स्वेस्वे नियुक्तं गदिजनफलदं भेषज तत्कृतं च ॥

अर्थ-जिनमे पुरुष और स्त्री दोनोंके लक्षण मिलते होय उनको नपुंसकजातिके वृक्ष जानना स्त्रीजातिके वृक्ष स्त्रियोको,पुरुषजातिके पुरुषोको और नपुसकजातिके नपुसकोको देने चाहिये, इसप्रकार करनेसे रोगियोको फलकी प्राप्ति होती है ।

द्रव्यं पुमान्स्यादखिलस्य जतोरारोग्यदं तद्बलवर्द्धनञ्च ।
स्त्री दुर्बला स्वल्पगुणा गुणाढ्याः स्त्रीष्वेव क्वापि नपुंसक स्यात्।

अर्थ-सर्व पुरुषजातिकी औषधि-आरोग्यताजनक और बलको बढानेवाली है, स्त्रीजातिकी औषधि दुर्बल और अल्पगुणवाली तथा स्त्रियोको अधिक गुण करनेवालीहै और नपुंसकजातिकी औषधि किसीकोभी हितकारी नही है ऐसा निघण्टुचूडामणिमें लिखा है ।

क्षुत्पिपासा च निद्रा च वृक्षादिष्वपि लक्ष्यते ।
मृज्जलादानतस्त्वाद्ये पर्णसकोचतोतिमा ॥

अर्थ-भूँख,पियास और निद्रा यह वृक्षादिकोंमेभी पाई जातीहै,

क्योंकि वृक्ष मिट्टी खाते, और पानी पीते हैं जो उनको मिट्टी और पानी न मिले तो वह नष्ट हो जाते हैं अर्थात् सूखजातेहैं रातको वृक्षोंके पत्ते सकुचजाते और फिर सवेरेको खिलजाते हैं, इसकारण वृक्षादिकोंमे निद्रा पाई जाती है।

वृक्षादीनां पञ्चभूतात्मकत्वकथनम्।

यत्काठिन्यं सा क्षितिर्योद्भवांभस्तेजस्तूष्मा वर्द्धते यत्स वातः।
यद्यच्छिद्रं तन्नभः स्थावराणामित्येतेषां पंचभूतात्मकत्वम् ॥

अर्थ-वृक्षोंमेभी मनुष्योंकी तरह पंचभूत रहते हैं वृक्षोंमें कठिनता पृथ्वीका भाग है, गीलापन जलका भाग है, उष्णता अग्निका अंश है, वृक्षोंकी वृद्धि वायुका विभाग है, और वृक्षोंमे जो छिद्र होते हैं वह आकाशका अंश है।

वृक्षादीनां परोपकारः।

मूलत्वक्सारनिर्य्यासनाडिस्वरसपल्लवाः।
क्षाराः क्षीरफलं पुष्पं भस्म तैलानि कंटकाः ॥
पत्राणि शुंगाः कंदाश्च प्ररोहाश्चोपकारकाः।

अर्थ-मूल, त्वक्, सार, निर्य्यास, नाड, स्वरस, पल्लव, क्षार, क्षीर, फल, पुष्प, भस्म, तैल, कंटक, पत्र, अंकुर और कंद यह सब वृक्षोंके अंग उपकार करनेवाले हैं इसकारण वृक्ष परोपकारी हैं मनुष्य तो कोई परोपकारी होते हैं परन्तु वृक्ष तो प्रायः सबही परोपकारी होते हैं अतएव जो मनुष्य परोपकारी नहीं होते वह वृक्षादिकोंसे भी जड हैं। (इ० मो० रा०) अब अंग्रेजी मतसे वृक्षोंका विशेष विवरण लिखते हैं। सब वृक्ष स्त्री और पुरुष इन भेदोंसे दोप्रकारके हैं, वृक्षोंके पुष्प ऋतु हैं, फल संतान हैं वृक्षोंके सन्तान भी स्त्रीवृक्ष और पुरुषवृक्षके संयोगसे होती हैं ऐसा इंग्रेजी ग्रन्थोंमें लिखा है किन्तु संस्कृतके ग्रन्थोंमे नहीं। एकदल और द्विदल इन भेदोंसे वृक्षकी दो जातिहैं, एकदल जातीके वृक्षमें उत्पन्न होतेही एक पत्ता निकलता है उसमे खडी हुई एक शिरा होतीहै और तिर्छी शिरायें अधिक नहीं होतीं, एकदल अंतर्वर्द्धक है। इसकी उत्पत्ति फलफूलादिके भीतरसे होती है, और इसमें शाखा नहीं होती। द्विदलवृक्षमें उत्पन्न होनेके समय प्रथम दो पत्र निकलते हैं इन पत्तोंमे तिर्छी नसें अर्थात् शिरायें अधिकतासे होती हैं, इसमें उत्पत्तिक्रिया डालियोंमेंसे अंकुरोंके फूटनेसे होती है और कलमभी बहुधा बांधी जाती है। एकदलको इंग्रेजीमें

"मोनिकोटीलीडोनस" और द्विदलको "डाईकोट लेडोनस" कहते है। अंतर्वर्द्धकको "एंडोजीनस" और बाह्यवर्द्धकको "एक्‌ओजीनस" कहते है। एकदल वृक्ष, केला, नारियल,ज्वार,बाजरा इत्यादि धान्य जानने। द्विदल वृक्षोके बीजोकी दो दाले होती है। एकदल जातीके वृक्षकी दो दालें नही होती।येही वृक्ष स्त्री पुरुषकी भाँति संगमसे फलरूपी संतानको उत्पन्न करते है, जैसी संतान वृक्षोसे उत्पन्न होती है, तैसी पशु पक्षी अथवा मनुष्योसे नही होती जैसे एकवृक्षसे करोड बीज उत्पन्न होतेहै, तैसेही पत्ते, कंद, मूल, डंठलादिसेभी वृक्ष उत्पन्न होतेहै। वृक्ष जिसप्रकार नरनारीसे संतानको उत्पन्न करते हैं सो कहते है। जब वृक्ष अपनी उमरमे आता है तब उसकी डंडीके अग्रभागमे कोपलपर पुष्पोका वेष्टन दिखाई देता है उसको इंग्रेजीमे "केलीफ" कहते है। उस केलीफकी कली नीले रंगकी होती है,ढाकके फूलकी काली होती है जब वह कली उमरमे आवे तो वेष्टनको उखाडकर मुकुलित हो बाहर फूल रूप दिखाई देतीहै। उसमे कोषभी होता है और पखडी अलगरदिखाई देती है। पुष्पकोशको इंग्रेजीमें "कोरोला" कहते है, कमलादि पुष्पोंमे वेष्टन नही होता, उन फूलोमें ऊपरकी पंखडिये खोरी और नीले रंगकी होती है इसको रोलाके भीतर नरनारी रूपसे तंतु होते है उसमे नरतंतुको इंग्रेजीमे"ष्टेमन"कहते है और नारी तंतुको "पिष्टल" कहते है नर तंतुओके ऊपर रजसी लगी रहती है-जिसे संस्कृतमे पराग अथवा पुष्परज कहते है। अंग्रेजीमे"पोलन"कहते है। नारीतन्तु छुकल होता है, उसका मुख खुला हुवा होता है जिसको योनि कहते है, अंग्रेजीमे "ष्टिग्मा" कहते है, नारीतन्तु जिस स्थानसे उत्पन्न होते है उनको गर्भाशय कहते है अंग्रेजीमे "ओवरी" और लेटिनमे "डिस्क" कहते है। ष्टिग्मा व ओवरीके मध्य जो मार्ग होता है उसको इंग्रेजीमें"स्टाइल"कहते है स्टाइलमे छोटे २ वीर्य्यकण होते है जिनको इंग्रेजीमें "फोह्विला" कहते है। नरकेशरमे जो पुष्परज होतीहै वह पवनके द्वारा उडकर ष्टिग्माके भीतर जाय वहासे ओवरीके भीतर जाकर गर्भबाँधनी है, यह नरकेशर वह नारीकेशर एक २ पुष्पमेभी होती है और पृथक् पुष्पमेंभी होती है उसका संयोग पवनसे अथवा पतंगादि जीवोंसेभी होताहै, पतङ्गादि नरकेशरवाले पुष्पोंमे जाकर नारीकेशरवाले फूलोमे आतेहै व उनके शरीरमे लगाहुवा रज नारीकेशरके मुखमे जाकर गर्भबन्धनका कारण होता है।

इसप्रकार बहुत दूरसेभी संयोग होजाता है एकवर्गके वृक्ष समीप होनेसे दूसरे नरपुष्पका रज नारीतन्तुओमे जानेसे संकर जातक वृक्ष उत्पन्न होतेहैं । इसप्रकार एक जातिके नरनारी आदि मिश्रित-वर्गकी प्रथम संज्ञा इंग्रेजीमे "रेनंक्युलेसी" लिखी है । इसप्रकार सर्व वर्ग बांधे हैं । तैसेही वृक्षोंके पत्तोंके द्वारा वृक्षोंके गुण शोधक नामोंसे वृक्षोंके नाम लैटिनभाषामें लिखेगये हैं । उदाहरण टीफोलिया अर्थात् तीन पत्तोंका "राश्क बुर्धिआई" अर्थात् "राश्कबुर्धका" "गोतेलग्राण्डि फ्लोरा" बडे फूलका "मलटीफ्लोरा" छोटे फलका, "यूनी फ्लोरा" छोटे फूलका, "थिसिलिफ्लोरा" डंठल आदिका नाम कल्पित किया है । वृक्षवृक्षमे स्त्री पुरुष जातिके पृथक्२फूल हों तो उन्हे अंग्रेजीमें "मोनीष्यस" कहते हैं अलग २वृक्षोंमे नरनारी जाति के पुष्प होय तो उन्हे इंग्रेजीमे "डारष्यस" कहते हैं । एकवृक्षमे हो अथवा अलग २ वृक्षोंम नरनारी जातिके पुष्प होय तो उन्हे इंग्रेजीमे "डारष्यस" कहते हैं । एकवृक्षमे हो अथवा अलग २ वृक्षमे हो तो इन दोनोको "पोलीगोम्मा" कहते हैं । अपुष्प क्षुपको "क्रिपटोगेम्या" कहते हैं ।

अथ नक्षत्रवृक्षाः ।

अथ वक्ष्यामि नक्षत्रवृक्षानागमलक्षितान् ।
पूज्यानायुष्यदांश्चैव वर्द्धनात्पालनादपि ॥
विषद्रुधात्रीतरुहेमदुग्धाजम्बूस्तथाखादिरकृष्णवंशाः ।
अश्वत्थनागौ च वटः पलाशाःप्लक्षस्तथाम्बष्ठतरुः क्रमेण ॥
बिल्वार्जुनौ चैव विकंकतोथ सकेसराः शम्बरसर्जवञ्जुलाः ।
सपानसार्कांश्च शमीकदम्बास्तथाम्रनिम्बौ मधुकद्रुमःक्रमात्॥
अमी नक्षत्रदेवत्या वृक्षाः स्युः सप्तविंशतिः ।
अश्विन्यादिक्रमादेषामेषा नक्षत्रपद्धतिः ॥
यस्त्वेतेषाममजन्मर्क्षभाजां मर्त्यःकुर्य्याद्द्वेषजादीन्मदांधः
तस्यायुष्यं श्रीकलत्रं च पुत्रं नश्यत्येषां वर्द्धते वर्द्धनाद्यैः ॥

अर्थ-अब नक्षत्रोंके वृक्षोंके नाम और लक्षण कहताहूँ जो अपने जन्मके नक्षत्रके वृक्षको पूजताहै, सींचता है और पालता है उसके आयुकी वृद्धि होती है । नक्षत्रवृक्षनाम-१अश्विनी-कुचला२ भरणी-आमला ३ कृत्तिका-गूलर, स्वर्णक्षीरी-सत्यानासी ४ रोहिणी-जा.

"मोनिकोटीलीडोनस" और द्विदलको "काईकोट लेडोनस" कहते है । अंतर्वर्द्धकको "एडोजीनस" और बाह्यवर्द्धकको "एक-जोजीनस" कहते है । एकदल वृक्ष, केला, नारियल,ज्वार,बाजरा इत्यादि धान्य जानने । द्विदल वृक्षोके बीजोकी दो दाले होती है । एकदल जातीके वृक्षकी दो दालें नही होती।येही वृक्ष स्त्री पुरुषकी भाँति संगमसे फलरूपी संतानको उत्पन्न करते है, जैसी संतान वृक्षोंसे उत्पन्न होती है, तैसी पशु पक्षी अथवा मनुष्योसे नही होती जैसे एकवृक्षसे करोड बीज उत्पन्न होतेहै, तैसेही पत्ते, कंद, मूल, डंठलादिसेभी वृक्ष उत्पन्न होतेहै । वृक्ष जिसप्रकार नरनारीसे संता-नको उत्पन्न करते हैं सो कहते है । जब वृक्ष अपनी उमरमे आता है तब उसकी डंडीके अग्रभागमे कोपलपर पुष्पोका वेष्टन दिखाई देता है उसको इंग्रेजीमे "केलीफ" कहते है । उस केलीफकी कली नीले रंगकी होती है,ढाकके फूलकी काली होती है जब वह कली उमरमे आवे तो वेष्टनको उघाडकर प्रफुल्लित हो बाहर फूल रूप दिखाई देतीहै । उसमे कोषभी होता है और पखडी अलगश्दिखाई देती है । पुष्पकोशको इंग्रेजीमें "कोरोला" कहते है, कमलादि पुष्पोमे वेष्टन नही होता, उन फूलोमें ऊपरकी पंखडिये खोरी और नीले रंगकी होती है इसको रोलाके भीतर नरनारी रूपसे तंतु होते है उसमे नरतंतुको इंग्रेजीमे"ष्टेमन"कहते है और नारी तंतुको "पिष्टल" कहते है नर तंतुओके ऊपर रजसी लगी रहती है-जिसे संस्कृतमें पराग अथवा पुष्परज कहते है । अंग्रेजीमे"पोलन"कहते है । नारीतन्तु खुकल होता है, उसका मुख खुला हुवा होता है जिसको योनि कहते है, अंग्रेजीमे "ष्टिग्मा" कहते है, नारीतन्तु जिस स्थानसे उत्पन्न होते है उनको गर्भाशय कहते है अंग्रेजीमे "ओवरी" और लैटिनमें "डिस्क" कहते है । ष्टिग्मा व ओवरीके मध्य जो मार्ग होता है उसको इंग्रेजीमें"स्टाइल"कहते है स्टाइलमे छोटे २ वीर्य्यकण होते है जिनको इंग्रेजीमें "फोह्लिा" कहते है । नरकेशरमे जो पुष्परज होतीहै वह पवनके द्वारा उडकर ष्टिग्माके भीतर जाय वहासे ओवरीके भीतर जाकर गर्भबाँधती है, यह नरकेशर वह नारीकेशर एक २ पुष्पमेभी होती है और पृथक् पुष्पमेंभी होती है उसका सयोग पवनसे अथवा पतंगादि जीवोसेभी होताहै, पतङ्गादि नरकेशरवाले पुष्पोंमे जाकर नारीकेशरवाले फूलोमे जातेहै व उनके शरीरमे लगाहुवा पुष्परज नारीकेशरके मुखमे जाकर गर्भबन्धनका कारण होता है ।

इसप्रकार बहुत दूरसेभी सयोग होजाता है एकवर्गके वृक्ष समीप होनेसे दूसरे नरपुष्पका रज नारीतन्तुओमे जानेसे संकर जातक वृक्ष त्पन्न होतेहै । इसप्रकार एक जातिके नरनारी आदि मिश्रित-वर्गकी प्रथम संज्ञा इंग्रेजीमे "रेनंक्युलेसी" लिखी है । इसप्रकार सर्व वर्ग बॉधे है । तैसही वृक्षोंके पत्तोके द्वारा वृक्षोके गुण शोधक नामोसे वृक्षोके नाम लैटिनभाषामे लिखेगये है । उदाहरण टीफोलिया अर्थात् तीन पत्तोका "राश्क बुर्धिआई" अर्थात् "राश्कब्रुर्धका" "गोतेलमाफ्डि फलोरा" बडे फूलका "मलटीफ्लोरा" छोटे फलका, "यूनी फ्लोरा" छोटे फूलका, "थिसिलिफलोरा" डेठल आदिका नाम कल्पित किया है । वृक्षवृक्षमे स्त्री पुरुष जातिके पृथक्२फूल हो तो उन्हे अंग्रेजीमें "मोनीष्यस" कहते है अलग २वृक्षोंमे नरनारी जाति के पुष्प होय तो उन्हे इंग्रेजीमे "डारष्यस" कहते है । एकवृक्षमे हो अथवा अलग २ वृक्षोम नरनारी जातिके पुष्प होय तो उन्हे इंग्रेजीमे "डारष्यस" कहते है । एकवृक्षमे हो अथवा अलग २ वृक्षेमे हो तो इन दोनोको "पोलीगोम्मा" कहते हैं । अपुष्प क्षुपको "क्रिपटोगेम्या" कहते है ।

अथ नक्षत्रवृक्षा ।

अथ वक्ष्यामि नक्षत्रवृक्षानागमलक्षितान् ।
पूज्यानायुष्यदांश्चैव वर्द्धनात्पालनादपि ॥
विषद्रुधात्रीतरुहेमदुग्धाजम्बूस्तथाखादिरकृष्णवंशाः ।
अश्वत्थनागौ च वटः पलाशाःप्लक्षस्तथाम्बष्ठतरुः क्रमेण ॥
बिल्वार्जुनौ चैव विकंकतोथ सकेसराः शम्बरसर्जवञ्जुलाः ।
सपानसार्काश्च शमीकदम्बास्तथाम्रनिम्बौ मधुकद्रुमःक्रमात् ॥
अमी नक्षत्रदेवत्या वृक्षाः स्युः सप्तविंशतिः ।
अश्विन्यादिक्रमादेषामेषा नक्षत्रपद्धतिः ॥
यस्त्वेतेषामात्मजन्मर्क्षभाजां मर्त्यःकुर्यां द्वेषजादीन्मदांधः
तस्यायुष्यं श्रीकलत्रं च पुत्रं नश्यत्येषां वर्द्धते वर्द्धनाद्यैः ॥

अर्थ-अब नक्षत्रोके वृक्षोके नाम और लक्षण कहताहूँ जो अपने जन्मके नक्षत्रके वृक्षको पजताहै, सीचता है और पालता है उसके आयुकी वृद्धि होती है ।नक्षत्रवृक्षनाम-१अश्विनी-कुचला२ भरणी-आमला ३ कृत्तिका-गूलर, स्वर्णक्षीरी-सत्यानासी ४ रोहिणी-जा.

"मोनिकोटीलीडोनस" और द्विदलको "डाईकोट लेडोनस" कहते है। अंतर्वर्द्धकको "एडोजीनस" और बाह्यवर्द्धकको "एक्‌ओजीनस" कहते है। एकदल वृक्ष, केला, नारियल, ज्वार, बाजरा इत्यादि धान्य जानने। द्विदल वृक्षोके बीजोकी दो दाले होती है। एकदल जातीके वृक्षकी दो दालें नही होती। येही वृक्ष स्त्री पुरुषकी भाँति संगमसे फलरूपी संतानको उत्पन्न करते है, जैसी संतान वृक्षोंसे उत्पन्न होती है, तैसी पशु पक्षी अथवा मनुष्योसे नही होती जैसे एकवृक्षसे करोड बीज उत्पन्न होतेहै, तैसेही पत्ते, कंद, मूल, डंठलादिसेभी वृक्ष उत्पन्न होतेहै। वृक्ष जिसप्रकार नरनारीसे संतानको उत्पन्न करते है सो कहते है। जब वृक्ष अपनी उमरमे आता है तब उसकी डंडीके अग्रभागमे कोपलपर पुष्पोका वेष्टन दिखाई देता है उसको इंग्रेजीमे "केलीफ" कहते है। उस केलीफकी कली नीले रंगकी होती है, ढाकके फूलकी काली होती है जब वह कली उमरमे आवे तो वेष्टनको उघाडकर मकुलित हो बाहर फूल रूप दिखाई देतीहै। उसमे कोषभी होता है और पखडी अलगश दिखाई देती है। पुष्पकोशको इंग्रेजीमें "कोरोला" कहते है, कमलादि पुष्पोमे वेष्टन नही होता, उन फूलोमें ऊपरकी पंखडिये खोरी और नीले रंगकी होती है इसको रोलाके भीतर नरनारी रूपसे तंतु होते है उसमे नरतंतुको इंग्रेजीमे "ष्टेमन" कहते है और नारी तंतुको "पिष्टल" कहते है नर ततुओके ऊपर रजसी लगी रहती है-जिसे संस्कृतमें पराग अथवा पुष्परज कहते है। अंग्रेजीमे "पोलन" कहते है। नारीतन्तु खुक्कल होता है, उसका मुख खुला हुवा होता है जिसको योनि कहते है, अंग्रेजीमे "ष्टिग्मा" कहते है, नारीतन्तु जिस स्थानसे उत्पन्न होते है उनको गर्भाशय कहते है अंग्रेजीमे "ओवरी" और लेटिनमे "डिस्क" कहते है। ष्टिग्मा व ओवरीके मध्य जो भाग होता है उसको इंग्रेजीमें "स्टाइल" कहते है स्टाइलमे छोटे २ वीर्य्यकण होते है जिनको इंग्रेजीमें "फोल्लिला" कहते है। नरकेशरमे जो पुष्परज होतीहै वह पवनके द्वारा उडकर ष्टिग्माके भीतर जाय वहासे ओवरीके भीतर जाकर गर्भबाँधती है, यह नरकेशर वह नारीकेशर एक २ पुष्पमेभी होती है और पृथक् पुष्पमेंभी होती है उसका संयोग पवनसे अथवा पतगादि जीवोंसेभी होताहै, पतङ्गादि नरकेशरवाले पुष्पोंमें जाकर नारीकेशरवाले फूलोमे आतेहै व उनके शरीरमे लगाहुवा पुष्परज नारीकेशरके मुखमे जाकर गर्भबन्धनका कारण होता है।

इसप्रकार बहुत दूरसेभी सयोग होजाता है एकवर्गके वृक्ष समीप होनेसे दूसरे नरपुष्पका रज नारीतन्तुओमे जानेसे संकर जातक वृक्ष त्पन्न होतेहै। इसप्रकार एक जातिके नरनारी आदि मिश्रित- वर्गकी प्रथम संज्ञा इंग्रेजीमे "रेनंक्युलेसी" लिखी है। इसप्रकार सर्व वर्ग बाँधे है। तैसेही वृक्षोके पत्तोके द्वारा वृक्षोकेगुण शोधक नामोसे वृक्षोके नाम लैटिनभाषामे लिखेगये है। उदाहरण टीफोलिया अ- र्थात् तीन पत्तोका "राश्क वुधिआई" अर्थात् "राश्कबुर्धका" "गोते- लग्राण्डि फ्लोरा" बडे फूलका "मलटीफ्लोरा" छोटे फलका, "यूनी फ्लोरा" छोटे फूलका, " थिसिलिफ्लोरा" डंठल आदिका नाम कल्पित किया है। वृक्षवृक्षमे स्त्री पुरुष जातिके पृथक्२फूल हों तो उन्हे अंग्रेजीमें "मोनीष्यस" कहते है अलग २वृक्षोमे नरनारी जाति के पुष्प होय तो उन्हे इंग्रेजीमे 'डारष्यस" कहते हैं। एकवृक्षमे हो अथवा अलग २ वृक्षोम नरनारी जातिके पुष्प होय तो उन्हे इंग्रेजीमे "डारष्यस" कहते है। एकवृक्षमे हो अथवा अलग२ वृक्षमे हो तो इन दोनोको "पोलीगोम्मा" कहते हैं। अपुष्प क्षुपको "क्रिप- टोगेम्या" कहते है।

अथ नक्षत्रवृक्षाः।

अथ वक्ष्यामि नक्षत्रवृक्षानागमलक्षितान्।
पूज्यानायुष्यदांश्चैव वर्द्धनात्पालनादपि॥
विषद्रुधात्रीतरुहेमदुग्धाजम्बूस्तथाखादिरकृष्णवंशाः।
अश्वत्थनागौ च वटः पलाशाःप्लक्षस्तथाम्बष्ठतरुः क्रमेण॥
बिल्वार्जुनौ चैव विकंकतोथ सकेसराः शम्बरसर्जवञ्जुलाः।
सपानसार्काश्च शमीकदम्बास्तथाम्रनिम्बौ मधुकद्रुमःक्रमात्॥
अमी नक्षत्रदेवत्या वृक्षाः स्युः सप्तविंशतिः।
अश्विन्यादिक्रमादेषामेषा नक्षत्रपद्धतिः॥
यस्त्वेतेषामात्मजन्मर्क्षभाजां मर्त्यःकुर्य्याद्वेषजादीन्मदांधः
तस्यायुष्यं श्रीकलत्र च पुत्रं नश्यत्येषां वर्द्धते वर्द्धनाद्यैः॥

अर्थ-अथ नक्षत्रोके वृक्षोके नाम और लक्षण कहताहूँ जो अपने जन्मके नक्षत्रके वृक्षको पजताहै, सींचता है और पालता है उसके आयुकी वृद्धि होती है। नक्षत्रवृक्षनाम-१अश्विनी-कुचला२ भरणी- आमला ३ कृत्तिका-गूलर, स्वर्णक्षीरी-सत्यानासी ४ रोहिणी-जा.

मून ५ मृगशिर-खेर ६ आर्द्रा-कृष्णागरु ७ पुनर्वसु-बाँस ८ पुष्य-पीपल ९ आश्लेषा-नागकेशर १० मघा-वड ११ पूर्वा-ढाक १२ उत्तरा-पाखर १३ हस्त-पाढ १४ चित्रा-बेल १५ स्वाती-अर्जुन १६ विशाखा-विकक्त (रामबबूर)१७ अनुराधा-पुन्नागवृक्ष १८ ज्येष्ठा-लोध१९मूल-साल २० पूर्वाषाढ-जलवेंत२१ उत्तराषाढ-पनस २२ श्रवण-आक २३धनिष्ठा-शमी २४ शततारका-कदम्ब२५ पूर्वाभाद्रपदा-आम२६ उत्तराभाद्रपदा-नीम२७रेवती-महुवेका वृक्ष। जो मनुष्य मदान्ध होके अपने जन्मनक्षत्रके वृक्षको औषधादिके काममें लाता है,उसकी आयु,लक्ष्मी,स्त्री और पुत्रादिक नष्ट हो जाते हैं और जन्मनक्षत्रके वृक्षको जल आदिके द्वारा बढानेसे आयुआदिकी वृद्धि होती है।

आग्नेया विंध्यशैलाद्याःसौम्यो हिमगिरिःस्मृतः।अतस्तदोषधानि स्युरनुरूपाणि हेतुभिः॥अन्येष्वपि प्ररोहंति वनेषूपवनेषु च।

अर्थ-विंध्यादिक पर्वत उष्णहै और हिमालय पर्वत शीतल है। इसकारण विंध्यादिककी औषधी उष्णवीर्य्य और हिमालयपर्वतकी औषधि शीतवीर्य्य होती है।पर्वतोके अतिरिक्त वन उपवनादिक भी उत्पन्नहोनेवाली औषधि अपने क्षेत्रोके अनुसार वीर्यवान् होतीहै

औषधीके छेनेमें मुहूर्तविचार ।

भैषज्य सल्लघुमृदुचरे मूलभे द्व्यंगलग्ने शुक्रेन्द्वीज्ये विदि च दिवसे चापि तेषां रवेश्च॥शुद्धे रिष्फे द्युनमृतिगृहे सत्तिथौ नोजनेभे।

अर्थ-लघु चर और मूलनक्षत्रोंमे,शुक्रवार,चंद्रवार, गुरुवार,बुधवार और सूर्य्य यह द्विस्वभालग्न[मिथुन,कर्क,धन,मीन] मे हो और शुभादि वारोमे लग्नसे १२-७-८गृह पापोसे हीन होय तो ऐसे शुभ कालमे औषधिको ग्रहणकरना देना और बनाना श्रेष्ठ है।

ओषधिछेनेकी विधि।

यतध्वमुत्खातशुचिप्रदेशजा द्विजेन कालादिकतत्त्ववेदिना। यथायथं चौषधयो गुणोत्तराः प्रत्याहरते यमगोचरानपि॥

अर्थ-प्रथम पृथ्वीको झाड बुहारकर साफकरके कालादितत्त्वको जाननेवाला ब्राह्मण,औषधिका कौनसा अंग लिया जायगा इसको विचार कर पर्वतादिकामे भी छिपीहुई औषधियोंको ग्रहण करे,

औषधिग्रहणमन्त्रा ।

स्वमारण्ये च एकान्ते प्रभाते मंत्रयुक्तितः । संग्राह्यमौषधं सिद्धं नो चेद्भवति काष्ठवत् । ॐनमस्तेऽमृतसम्भवे रसवीर्य्यविवर्द्धिनि । बलमायुश्च मे देहि पापान्मे जहि दूरतः॥ येनत्वां खनते ब्रह्मा येन त्वां खनते भृगुः । येन वेन्द्रोऽथ वरुणस्तेन त्वामुपचक्रमे ॥ तेनाहं खनयिष्यामि मन्त्रपूतेन पाणिना । ॐ आतप्तेतेमात्रियते तेजो वीर्य्योऽन्यथा भवेत्॥ अत्रैव तिष्ठ कल्याणि ममकार्यकरी भव॥मम कार्य्ये भूते सिद्धे ततः स्वर्गं गमिष्यसि । ॐह्रींचण्डेन्द्र फट्स्वाहा ॥ अनेन मन्त्रेणानुसयुतमातपे त्रिदिन शुष्कनिहितं वीर्य्यधृग्भवेत् । अर्कपुष्यायां सर्वा औषध्य उत्पाट्यन्ते ॥

अर्थ–स्वभावसे वनके एकान्त स्थानमे प्रभातके समय जाकर मन्त्रयुक्तिसे औषधिको ग्रहण करे तो कार्य्यकी सिद्धिहोतीहै,नहीं तो औषधि काठके समान जाननी । "ॐनमस्तेऽमृतसम्भवे" इत्यादि । इस मन्त्रको पढकर औषधिको उखाड लेवे और जो पत्र पुष्पादिक लेने होय तो वहभी इसी मन्त्रको पढकर लेवे, फिर उस औषधिको लेकर तीन दिन धूपमे सुखादेवे इसप्रकार करनेसे औषधि अत्यन्त वीर्य्यको धारण करनेवाली होजातीहै प्रायः पुष्यार्कयोगमे सब प्रकारकी औषधि उखाडी जातीहै ।

औषधिउखाडनेकी विधि ।

गृह्णीयात्तानि सुमनाः शुचिः प्रातः सुवासरे । आदित्यसम्मुखो मौनी नमस्कृत्य शिव हृदि ॥ साधारणधराद्रव्यं गृह्णीयादुत्तराश्रितम् ।

अर्थ–औषधि लानेके लिये प्रातःकाल उठकर स्नानआदिसे शुद्धहो शुभदिन वनमे जाकर सूर्य्यके सन्मुख उपस्थित हो मौनको धारणकर शंकरको हृदयमे नमस्कारकर साधारण भूमिमे उत्पन्न हुई, ऐसी औषधिको उत्तर दिशाकी ओरको मुखकरके उखाडे ।

दुष्टऔषधि ।

वल्मीककुत्सिताऽनूपश्मशानोपरमार्गजाः ।

मृन ५ मृगशिर-खैर ६ आर्द्रा-कृष्णागरु ७ पुनर्वसु-बाँस ८ पुष्य-पीपल ९ आश्लेषा-नागकेशर १० मघा-वड ११ पूर्वा-ढाक १२ उत्तरा-पाखर १३ हस्त-पाढ १४ चित्रा-बेल १५ स्वाती-अर्जुन १६ विशाखा-विकंकत (रामबबूर) १७ अनुराधा-पुन्नागवृक्ष १८ ज्येष्ठा-लोध १९ मूल-साल २० पूर्वाषाढ-जलवेत २१ उत्तराषाढ-पनस २२ श्रवण-आक २३ धनिष्ठा-शमी २४ शततारका-कदम्ब २५ पूर्वाभाद्रपदा-आम २६ उत्तराभाद्रपदा-नीम २७ रेवती-महुवेका वृक्ष। जो मनुष्य मदान्ध होके अपने जन्मनक्षत्रके वृक्षको औषधादिके काममें लाता है,उसकी आयु,लक्ष्मी,स्त्री और पुत्रादिक नष्ट हो जाते हैं और जन्मनक्षत्रके वृक्षको जल आदिके द्वारा बढानेसे आयुआदिकी वृद्धि होती है।

आग्नेया विंध्यशैलाद्याःसौम्यो हिमगिरिःस्मृतः।अतस्तदोषधानि स्युरनुरूपाणि हेतुभिः॥अन्येष्वपि प्ररोहंति वनेषूपवनेषु च।

अर्थ-विंध्यादिक पर्वत उष्ण है और हिमालय पर्वत शीतल है। इसकारण विंध्यादिककी औषधी उष्णवीर्य और हिमालयपर्वतकी औषधि शीतवीर्य होती है।पर्वतोंके अतिरिक्त वन उपवनादिक भी उत्पन्नहोनेवाली औषधि अपने क्षेत्रोंके अनुसार वीर्यवान् होतीहैं

औषधीके छेनेमें मुहूर्तविचार।

भेषज्य सल्लघुमृदुचरे मूलभे द्व्यगलग्ने शुक्रेन्द्वीज्ये विदि च दिवसे चापि तेषां रवेश्च॥शुद्धे रिष्फे द्युनमृतिगृहे सत्तिथौ नोजनेभे।

अर्थ-लघु चर और मूलनक्षत्रोंमे,शुक्रवार,चंद्रवार, गुरुवार,बुधवार और सूर्य यह द्विस्वभावलग्न[मिथुन,कर्क,धन,मीन] मे हो और शुभादि वारोंमे लग्नसे १२-७-८गृह पापोंसे हीन होय तो ऐसे शुभ कालमें औषधिको ग्रहणकरना देना और बनाना श्रेष्ठ है।

औषधिलेनेकी विधि।

यतध्वमुत्खातशुचिप्रदेशजा द्विजेन कालादिकतत्त्ववेदिना। यथायथं चौषधयो गुणोत्तराः प्रत्याहरंते यमगोचरानपि॥

अर्थ-प्रथम पृथ्वीको झाड बुहारकर साफकरके कालादितत्त्वको जाननेवाला ब्राह्मण,औषधिका कौनसा अंग लिया जायगा इसको विचार कर पर्वतादिकामें भी छिपीहुई औषधियोंको ग्रहण करे,

औषधिग्रहणमन्त्रा ।

स्वभारण्ये च एकान्ते प्रभाते मंत्रयुक्तितः । संग्राह्यमौषधं सिद्धं नो चेद्भवति काष्ठवत् । ॐनमस्तेऽमृतसम्भवे रसवीर्य्यविवर्द्धिनि । बलमायुश्च मे देहि पापान्मे जहि दूरतः॥ येनत्वां खनते ब्रह्मा येन त्वां खनते भृगुः । येन वेन्द्रोऽथ वरुणस्तेन त्वामुपचक्रमे ॥ तेनाहं खनयिष्यामि मन्त्रपूतेन पाणिना । ॐ आतप्तेतेमात्रियते तेजो वीर्य्योऽन्यथा भवेत्॥ अत्रैव तिष्ठ कल्याणि ममकार्यकरी भव॥मम कार्य्ये भूते सिद्धे ततः स्वर्गं गमिष्यसि । ॐह्रींचण्डेन्द्र फट्स्वाहा ॥ अनेन मन्त्रेणानुसंयुतमातपे त्रिदिनं शुष्कनिहित वीर्य्यधृग्भवेत् । अर्कपुष्यायां सर्वा औषध्य उत्पाट्यन्ते ॥

अर्थ–स्वभावसे वनके एकान्त स्थानमे प्रभातके समय जाकर मन्त्रयुक्तिसे औषधिको ग्रहण करे तो कार्य्यकी सिद्धिहोतीहै,नहीं तो औषधि काठके समान जाननी । "ॐनमस्तेऽमृतसम्भवे" इत्यादि । इस मन्त्रको पढकर औषधिको उखाड लेवे और जो पत्र पुष्पादिक लेने होय तो वहभी इसी मन्त्रको पढकर लेवे, फिर उस औषधिको लेकर तीन दिन धूपमे सुखादेवे इसप्रकार करनेसे औषधि अत्यन्त वीर्य्यको धारण करनेवाली होजातीहै प्रायः पुष्यार्कयोगमें सब प्रकारकी औषधि उखाडी जातीहै ।

औषधिउखाडनेकी विधि ।

गृह्णीयात्तानि सुमनाः शुचिः प्रातः सुवासरे । आदित्यसम्मुखो मौनी नमस्कृत्य शिवं हृदि ॥ साधारणधराद्रव्यं गृह्णीयादुत्तराश्रितम् ।

अर्थ–औषधि लानेके लिये प्रातःकाल उठकर स्नानआदिसे शुद्धहो शुभदिन वनमे जाकर सूर्य्यके सन्मुख उपस्थित हो मौनको धारणकर शंकरको हृदयमे नमस्कारकर साधारण भूमिमें उत्पन्न हुई, ऐसी औषधिको उत्तर दिशाकी ओरको मुखकरके उखाडे ।

दुष्टऔषधि ।

वल्मीककुत्सिताऽनूपश्मशानोपरमार्गजा ।

जन्तुवह्निहिमव्याप्ता नौषध्यः कार्य्यसाधिकाः ॥

अर्थ-बाँबी, बुरीजमीन, अनूपदेश (खादर) श्मशानभूमि, ऊषर जमीनमे और मार्गमे उत्पन्न होनेवाली औषधि और जो कीडोंकी खाई हुईहो, अग्निसे दग्ध हुईहो, जिसको सरदी लगीहो, लूकी, मारी, ऐसी औषधि कार्य्यको सिद्ध करनेवाली नहीं होती, इस-कारण इनको नहीं लेवे।

औषधसंग्रह अथवा रखनेकी विधि।

धूमवर्षानिलक्लेदैः सर्वर्त्तुष्वनभिद्रुते ।
ग्राहयित्वा गृहे न्यस्येद्विधिनौषधसंग्रहम् ॥

अर्थ-धुँआ, वर्षा, पवन और सरदी इनसे रहित तथा जिसमे किसी प्रकारसे किसी तरहका विकार उत्पन्न न हो ऐसे उत्तम स्थानमे औषधियोंको भलेप्रकारसे रक्खे।

प्लोतमृद्भाण्डफलकशंकुविन्यस्तभेषजम् ।
प्रशस्तायां दिशि शुचौ भेषजागारमिष्यते ॥

अर्थ-कपडेकी थैलियोंमें, वा टुकडोमें मिट्टीकी हांडियोमे इमरत-बानोमे, मटकियोमें, मलसोंमे, मलसियोंमें, सकोरोमे, कटोरोंमें, प्यालोमे, शीशियोमें, बोतलोमें, शीसोमे, डिब्बोमे, डिब्बियोंमे तख्तोंपे, अलमारियोमे, कीलोंपे खुंटीपे और मेखोपे औषधी रखनी चाहिये और जिसमें सब औषधि रक्खीहों वह औषधी मंदिर अर्थात् औषधालय पूर्व अथवा उत्तरदिशा तथा उत्तम स्थानमे बनना चाहिये ।

अतिस्थूलजटायाः स्युस्तासां ग्राह्यास्त्वचो ध्रुवम्। गृह्णीयात्सू-क्ष्ममूलानि सकलान्यपि बुद्धिमान् ॥ महान्ति येषां मूलानि काष्ठगर्भाणि सर्वतः।तेषां तु वल्कलं ग्राह्यं ह्रस्वमूलानिसर्वशः॥ न्यग्रोधादेस्त्वचो ग्राह्याः सारः स्याद्बीजकादितः । तालीसा-देस्तु पत्राणि फलं स्यात्त्रिफलादितः ॥क्वचिन्मूलं क्वचित्कंदः क्वचित्पत्रं क्वचित्फलम् । क्वचित्पुष्पं क्वचित्सर्वं क्वचित्सारः क्वचित्त्वचः ॥चित्रकं सुरणं निम्बो वासा च त्रिफलाक्रमात् । [illegible] कटकारी च खदिरः [illegible]पः ॥

अर्थ-लम्बी और स्थूल जडवाले वृक्षकी छाल लेवे,छोटीजडवाले वृक्षका सर्वांग लेवे,जिनकी जड बडी और चारो ओर छाल लिपट रहीहै उनका वक्कल लेवे, छोटी जडवाले वृक्षोका पंचाग लेवे, वड इत्यादि वृक्षोकी छाल लेनी चाहिये, विजयसारादिका सार नालिशादिके पत्र और त्रिफलादिके फल लेने चाहिये । किसीका मूल, किसीका कन्द, किसीके पत्ते, किसीका फल, किसीका फूल, किसीका पंचांग, किसीका सार और किसी वृक्षकी छाल लेनी चाहिये । चीतेकी छाल, सूरणका कन्द,नीम और अडूसे आदिके पत्र, त्रिफलेके फल, धायके फूल, कटेरी इत्यादिका पंचांग खदिरादिकका सार और दूधवाले वृक्षोंकी छाल लेनीयोग्य है ।

क्वचिन्निंबस्य गृह्णीयात्पत्राभावे त्वचामपि ।
बालं फलं तु बिल्वस्य पक्वमारग्वधस्य च ॥

अर्थ-कहीं नीमके पत्ते न मिले तो वहां छालभी लेलेवे, बेलका कच्चा फल और अमलतासादिका पक्का फल लेना चाहिये ।

अंगेऽनुक्ते जटा ग्राह्या भागेऽनुक्तेऽखिलं समम् ।
पात्रेऽनुक्ते मृदः पात्रं कालेऽनुक्ते त्वहर्मुखम् ॥

अर्थ-जहां औषधिका कोई अङ्ग नही कहा होय वहा औषधिकी जड लेनीचाहिये, जहां तोल नही कहीहुई होय वहां सब औषधि समानभाग लेवे, जहां बासन नही कहा होय वहां मट्टीका बासन लेवे, जहां काल नही कहा होय वहां प्रातःकाल समझना ।

नवान्येव हि योज्यानि द्रव्याण्यखिलकर्मसु।विना विडंगकृष्णाभ्यां गुडधान्याज्यमाक्षिकैः॥ पुराणं तु प्रशस्तं स्यात्तांबूलं कांजिकं तथा । शुष्कं नवीनद्रव्यं तु योज्यं सकलकर्मसु॥ आर्द्रं तु द्विगुणं युज्यादेष सर्वत्र निश्चयः। गुडूची कुटजो वासा कूष्माडश्च शतावरी॥अश्वगंधा सहचरः शतपुष्पा प्रसारिणी। प्रयोक्तव्याः सदैवार्द्रा द्विगुणा नैव कारयेत्॥वासानिंबपटोलकेतकबलाकूष्माडकेंदीवरी वर्षाभूकुटजाश्च कन्दसहिताः सा पूतिगन्धामृताः ॥ऐन्द्री नागबला कुरंटकपुरा क्षत्रामृता स-

वंदा सार्द्रा एव तु न क्वचिद्द्विगुणिताः कार्येषु योज्या बुधैः॥ घृतं तैल च पानीयं कषायं व्यंजनादिकम् ।पक्त्वा शीतीकृतं चोष्ण तत्सर्वं स्याद्विषोपमम् ॥

अर्थ-सब कर्मोंमे सम्पूर्ण औषधि नवीन लेनी चाहिये, किन्तु वायविडङ्ग, पीपल, गुड,धान्य, घी और मधु, ये सब पुराने लेवे, अर्थात् नवीन न लेवे। पान और काँजी पुरानी लेनी चाहिये सूखा और नवीनद्रव्य सब कार्योंमे लेवे, गीली औषधी मात्रासे द्विगुनी लेवे, ये सर्वत्र निश्चय है । असगन्ध, पियावाँसा, सौंफ और पसर ये औषधी नित्य गीली लेवे, किन्तु द्विगुणी कदाचित् न लेवे। वांसा, नीम, पटोलपत्र, केतकी, खिरेटी, पेठा, नीलेकमल, शतावरी. सोठ, इन्द्रजौ, कन्द, पसरन, गिलोय, इन्द्रायण, गङ्हेरन, पियावासा, सौंफ और आमले ये सब द्रव्य गीले होनेपरभी वैद्य द्विगुणे न डाले घी, तेल, जल, क्काथ और भोजनकी वस्तु इनसबको एकवार पकाकर ठण्डे होनेपर फिर गरम न करे यदि गरम करे तो विषकी समान अपकारी होजाते है।

द्रव्यलक्षण ।

सूक्ष्मास्थिमांसला पथ्या सर्वकर्म्मणि पूजिता । क्षिताम्भसि निमज्जेद्या भल्लातक्यस्तथोत्तमाः ॥ वराहमूर्द्धवत्कदो वाराहीकदसञ्ज्ञकः । सौवर्चलं तु काचाभं सैन्धवं स्फटिकप्रभम्॥ सुवर्णच्छविक ज्ञेयं स्वर्णमाक्षिकमुत्तमम् । इन्द्रपुष्पप्रतीकाशा मनोह्वा चोत्तमा मता॥श्रेष्ठ शिलाजतु ज्ञेय प्राक्षतं न विशीर्य्यते।तोयपूर्णे कांस्यपात्रे प्रतानेन विवर्द्धते ॥ कर्पूरस्तुवरः स्निग्ध एला सूक्ष्मफला वरा ।श्वेतचन्दनमत्यन्तं सुगन्धि गुरुपूजितम् ॥ रक्तचन्दनमत्यंतं लोहितं प्रवर मतम् । काकतुण्डनिभः स्निग्धो गुरुः श्रेष्ठोऽगुरुर्मतः ॥ सुगंधि लघु रूक्षञ्च सुरदारु वर मतम् । सरलं स्निग्धमत्यर्थं सुगंधि च गुणावहम्॥ अतिपीता प्रशस्ता तु ज्ञेया दारुनिशा बुधैः । जातीफल गुरु स्निग्ध मम शुभ्रांतर वरम्॥ मृद्वीका सोत्तमा ज्ञेया या स्याद्द्रो-

स्तनसन्निभा। करमर्दफलाकारा मध्यमा सा प्रकीर्तिता। खंड तु विमलं श्रेष्ठं चंद्रकांतसमप्रभम् ॥ गव्याज्यसदृशं रुच्यं गंधं मधुतरं मतम्

अर्थ-हरड छोटी और बहुत गूदेवाली श्रेष्ठ होतीहै। जलमें डालनेसे डूबजावे वह भिलावा श्रेष्ठ होताहै। वाराहके मस्तककी समान वाराहीकंद उत्तम होताहै। काँचकी समान कालानोन उत्तम होताहै। स्फटिकमणिकी समान निर्मल और प्रभावाला सैंधानोन उत्तम होताहै। सोनामाखी सोनेकी समान पीली उत्तम होतीहै। मैनशिल इंद्रपुष्पकी सदृश श्रेष्ठ होतीहै। जो गिरनेसे नहीं फटे तथा जलसे भरेहुये कॉसीके बासनमें गेरनेसे तारसे छोडे वह शिलाजीत उत्तम होताहै। कपूर चिकना और कषेला उत्तम होताहै। इलायची छोटे फलवाली उत्तम होतीहै। सफेद चंदन अत्यंत सुगंधिवाला और भारी उत्तम होताहै। लाल चंदन अत्यन्त लाल श्रेष्ठ होताहै। अगर कौवेके मुखकी समान स्निग्ध और भारी उत्तम होतीहै। देवदारु सुगंधिवाली, हलकी और रूखी अच्छी होती है। सरल अत्यन्त चिकनी और सुगंधित उत्तम होतीहै। दारुहलदी अत्यंत पीली उत्तम होतीहै। जायफल भारी, चिकना, गोल और जो तोडनेसे भीतरसे सफेद निकले वह उत्तम होताहै। दाख गौके स्तनोंकी आकृतिवाली श्रेष्ठ होती है और करोंदेकी फलकी समान आकारवाली दाख मध्यम जाननी। खांड-चंद्रकांतकी समान धवल और निर्मल उत्तम होती है। शहत गायके घीके समान रुचिकारक और सुगंधिवाला उत्तम होताहै।

स्वभावसे श्रेष्ठ।

शालीनां लोहितः शालिः षष्टिकेषु च षष्टिकाः। शूकधान्येष्वपि यवो गोधूमः प्रवरो मतः॥ शिम्बीधान्ये वरो मुद्गो मसूरश्चाढकी तथा। रसेषु मधुरः श्रेष्ठो लवणेषु च सैंधवः। दाडिमामलकं द्राक्षा खर्जूरं च परूषकम्। राजादनं मातुलुंगं फलवर्गेषु शस्यते॥ पत्रशाकेषु वास्तूकं जीवन्ती पोतिका वरा। पटोलं फलशाकेषु कंदशाकेषु सूरणम्॥ एणः कुरंगहरिणौ जांगलेषु प्रशस्यते। पक्षिणां तित्तिरिर्लावो वरो मत्स्येषु रोहितः॥ह

रिणस्ताम्रवर्णः स्यादेणः कृष्णतया मतः । कुरंगस्ताम्र उ दिष्टो हारिणः कृत्तिको महान् ॥ जलेषु दिव्यं दुग्धेषु गव्यमा ज्येषु गोभवम् । तैलेषु तिलजं तैलमैक्षवेषु सिता हिता ॥

अर्थ-शालिधानोंमें लालशालिधान, षष्टिकधानोंमे साँठीधान, शूकधानोमे जौ और गेहू, शिम्बीधानोंमे मूंग,मसूर और अरहर, रसोमें मधुर रस, लवणोमे सेंधानोंन,फलोंमें अनार, आमला,दाख, खजूर, फालसा,खिरनी और बिजोरा,पत्रशाकोंमे-बथुआ,जीवन्ती पोईका साग,फलशाकोंमें परवल, कंदशाकोमे जमीकंद, जंगली जीवोमें काला,लाल और चितकबरा हिरन,पक्षियोंमें तीतर और लवा,मछलियोंमे रोहू,जलोंमे दिव्यजल,दूधोंमें गायका दूध,घृतों-मे गायका घी,तिलोमे तिलका तेल और इक्षुविकारोंमे मिश्री उत्त-म है । तामेके रंगके हिरनको हिरन कहते हैं,काले रंगके हिरनको एण और कुछेक लाल हिरनको कुरंग कहते हैं ।

स्वभावसे अश्रेष्ठ (बुरे)।

शिम्बीषु माषान्ग्रीष्मतौ लवणेष्वोपरं त्यजेत् । फलेषु लकुचं शाके सार्षपाणां हितं मतम्॥गोमांसं ग्राम्यमांसेषु न हितं महिषीवसा॥मेषीपयः कुसुम्भस्य तैलं त्याज्यं च फाणितम् ॥

अर्थ-शिम्बीधानोमे उडद,ऋतुओमे ग्रीष्मऋतु, निमकोमे खारी नोन,फलोमे बडहर,सागोमे सरसोका साग, ग्राम्यमांसोंमे गायका मांस,चर्बियोंमे भैसकी चर्बी, दूधोमें भेडका दूध,तेलोमें कसूमका तेल और इक्षुविकारोंमे राब त्यागने योग्य है।

उपयोगविरुद्ध ।

शाकाम्लफलपिण्याककुलत्थलवणामिषैः ।
करीरदधिमांसैश्च प्रायः क्षीरं विरुध्यते ॥

अर्थ-शाक,खट्टेफल, तिलोकी खल,कुलथी,निमक,मछली,बाँस-के कल्ले,दही और मांसके साथ दूध भक्षण करना निषेध है ।

प्राणहारी च हारीतो हारिद्रालवणैः कृतः ।

अर्थ-हलदी और निमकके साथ हारीत-पक्षीका मांस खाना विषकी समान है ।

रुवोस्तैलेन संभृष्टं विषंमायूरमाहिषम् ॥

अर्थ-अंडेके तेलमे भुनाहुआ मोरका मांस और भैंसका मांस विषकी समान अपकारी है ।

वराहवसया भृष्टा बलाका तु हरत्यसून् ।

अर्थ- सूअरकी चरबीसे भुनाहुआ बलाका पक्षीका मांस भक्षण करनेसे शीघ्रही प्राण नष्ट होते है ।

संयुक्ता सैव वारुण्या कुल्माषैश्च विरुध्यते ।

अर्थ-बलाका पक्षीका मांस मदिराके साथ अथवा कुल्माषके साथ भक्षण करना संयोगविरुद्ध है ।

अविं कुसुम्भशाकेन मत्स्यतैलैः कणां त्यजेत् ।

अर्थ-मेढका मांस कसूमके सागके साथ तथा मछलीके तेलके साथ पीपल नहीं खानी चाहिये ।

माषैरिक्षुविकारांश्च कांजिकैस्तिलशष्कुली ।

अर्थ- उडदोंके साथ इक्षुविकार (गुड,खांड,बूरा, मिश्री इत्यादि) और कांजीके साथ तिलशष्कुली खानी निषेध है ।

कपोतः सार्षपे भृष्टो घृतं कांस्ये दशाहगम् ।

अर्थ-सरसोंके तेलमे भुनाहुआ कबूतरका मांस नहीं खाना चाहिये और कांसीके पात्रमे दशदिनका रक्खा हुआ घी खाना निषेध है ।

विषं घृतसमं क्षौद्रं मधुना गगनाम्बु च ।

अर्थ-बराबर भाग शहत और घी मिलाकर पीनेसे तथा सहतके साथ मेघके जलको पीनेसे विषकी समान अपकार करे है ।

मूलकं माषयूषेण मधुना न च भक्षयेत् ।

अर्थ-उडदोंके यूषके साथ अथवामधुकेसाथमूली नही खानीचाहिये।

नारिकेलजलेनापि कर्पूरं नैव भक्षयेत् ॥

अर्थ-नारियलके जल(दूध)के साथ कपूर भक्षण करना अनुचितहै।

एकत्र सर्वमांसानि विरुध्यन्ते परस्परम् ॥

अर्थ-सर्वप्रकारके मांस एकत्र मिलाकर खाने नहीं चाहिये अर्थात् एक प्राणीके मांसके साथ दूसरे प्राणीका मांस मिलाकर नही खावे।

औषधी लेनेमे संकेत ।

लवणं सैन्धवं प्रोक्तं चंदनं रक्तचन्दनम् । चूर्णलेहासवस्नेहाः साध्या धवलचन्दनैः। कषायलेपयोः प्रायो युज्यते रक्तचन्दनम्।अन्तःसंमार्जने ज्ञेया ह्यजमोदा यवानिका ॥ बहिःसंमार्जने सैव विज्ञातव्याजमोदिका । पयःसर्पिःप्रयोगेषु गव्यमेव हि गृह्यते ॥ शकृद्रसो गोमयको गोत्र गोमूत्रमुच्यते ।

अर्थ-जहां लवण लिखा है वहां सैन्धवलवण लेना चाहिये और चन्दनके स्थानमे लालचन्दन लेवै, परंतु चूरण अवलेह-आसव और तेल, इनमे सफेद चन्दन डाले, काढा और लेपादिकमे लाल चन्दन लेवै, अंतःसंमार्जन (जो भक्षण करनेसे उदरको शुद्ध करै) औषधियो मे अजमोदके जगह अजवायन लेनी चाहिये और बहिःसम्मार्जन (जो शरीरके ऊपर लगानेसे शरीरको शुद्ध करै)औषधियोमें अजमोद की जगह अजमोदही डाले, जहां केवल दुग्ध और घृत लिखा है वहां गायका दूध घी लेवै, जहां शकृद्रस (गोबरका रस) लिखा है वहां गायके गोबरका रस लेवै,जहां केवल मूत्र लिखा है वहां गोमूत्र लेना चाहिये।

प्रतिनिधि ।

चित्रकाऽभावतो दन्ती क्षारः शिखरिजोऽथवा। अभावे धन्वयासस्य प्रक्षेप्या तु दुरालभा॥ तगरस्याप्यभावे तु कुष्ठन्दद्याद्विपग्वरः । मूर्वाभावे त्वचा ग्राह्या जिगिनीप्रभवा बुधैः॥ अहिंस्राया अभावे तु मानकन्दः प्रकीर्तितः ।लक्ष्मणाया अभावे तु नीलकंठशिखा मता॥बकुलाऽभावतो देय कह्लारोत्पलपंकजम् ।नीलोत्पलस्याभावे तु कुमुदं देयमिष्यते ॥ जातीपुष्पं न यत्रास्ति लवंगं तत्र दीयते। अर्कपर्णादिपयसो ह्यभावे तद्रसो मतः । पौष्कराभावतः कुष्ठन्तथा लांगल्यभावतः । स्थौणेयकस्याभावे तु भिषग्भिर्दीयते गदः ॥ चविकागजपिप्पल्यौ पिप्पलीमूलवत्स्मृते । अभावे सोमराज्यास्तु प्रपु-

न्नाटफलं मतम्॥यदि न स्याद्दारुनिशा तदा देया निशा बुधैः। रसांजनस्याभावे तु सम्यग्दार्वी प्रयुज्यते ॥ सौराष्ट्र्यभावतो देया स्फटिका तद्गुणा जनैः । तालीसपत्रिकाभावे स्वर्णताली प्रशस्यते ॥ भार्ङ्ग्यभावे तु तालीसं कंटकारी जटाऽथवा । रुचकाभावतो दद्याल्लवणं पांशुपूर्वकम् ॥ अभावे मधुयष्ट्यास्तु धातकीं च प्रयोजयेत् । अम्लवेतसकाभावे चुक्र दातव्यमिष्यते ॥ द्राक्षा यदि न लभ्येत प्रदेयं काश्मरीफलम् । तयोरभावे कुसुमं बंधकस्य मतं बुधः॥ लवंगकुसुम देय नखस्याभावतः पुनः । कस्तूर्य्यभावे कंकोलं क्षेपणीयं विदुर्बुधाः ॥ कंकोलस्याप्यभावे तु जातीपुष्पं प्रदीयते । सुगंधिमुस्तकं देयं कर्पूराभावतो बुधैः ॥ कर्पूराभावतो देयं ग्रन्थिपर्णं विशेषतः । कुंकुमाभावतो दद्यात्कुसुम्भकुसुम नवम् ॥ श्रीखण्डचन्दनाभावे कर्पूरं देयमिष्यते । अभावे त्वेतयोर्वैद्यः प्रक्षिपेद्रक्तचन्दनम् ॥ रक्तचन्दनकाभावे नवोशीरं विदुर्बुधाः । मुस्ता चातिविषाभावे शिवाभावे शिवा मता॥ अभावे नागपुष्पस्य पद्मकेशरमिष्यते । मेदाजीवककाकोलीऋद्धिद्वंद्वेऽपि वाऽसति॥वरी विदार्य्यश्वगन्धा वाराहीश्च क्रमात्क्षिपेत्। वाराह्याश्च तथाभावे चर्म्मकारालुको मतः ॥ वराहीकंदसंज्ञस्तु पश्चिमे गृष्टिसंज्ञकः । वाराहीकद एवान्यश्चर्मकारालुको मतः ॥ अनूपसंभवे देशे वराह इव लोमवान् ॥ भल्लातकासहत्वे तु रक्तचन्दनमिष्यते ॥ भल्लाताभावतश्चित्रं नलश्चेक्षोरभावतः ॥ सुवर्णाभावनः स्वर्णमाक्षिक प्रक्षिपेद्बुधः । श्वेतं तु माक्षिकं ज्ञेयं बुधै रजतवद्ध्रुवम् । माक्षिकस्याप्यभावे तु प्रदद्यात्स्वर्णगैरिकम् । सुवर्णमथवा रौप्यं मृतं यत्र न लभ्यते ॥ तत्र कान्तेन कर्माणि भिषक्कुर्य्याद्विचक्षणः।कान्ताभावे तीक्ष्णलोह योजयेद्वैद्यसत्तमः॥ अभावे मौक्तिकस्यापि मुक्ताशुक्तिं प्रयोजयेत्। मधु यत्र न लभ्येत तत्र जीर्णगुडो मतः ॥ मत्स्यण्डयभावतो

दद्यार्भिषजः सितशर्कराम् । असंभवे सितायास्तु बुधैः खंड प्रयुज्यते ॥ क्षीराभावे रसो मौद्गो मासूरो वा प्रदीयते । अत्र प्रोक्तानि वस्तूनि यानि तेषु च तेषु च ॥ योज्यमेकतराभावे परं वैद्येन जानता ।

अर्थ-चीतेके अभावमे दन्ती अथवा चिरचिटेका खार, धमासेके अभावमे जवासा,तगरके अभावमे कूठ,मूर्वाके अभावमे जिंगनीकी छाल, अहिंस्राके अभावमे मानकन्द, लक्ष्मणाकंदके अभावमे मयूर- शिखा, मौलसिरीके अभावमे कुमुद,लालकुमुद और कमल, नीले कमलके अभावमे कुमुद (नीलोफर), जायफलके अभावमे लौंग, आक इत्यादिके दूधके अभावमे आकआदिके पत्तोका रस, पुष्कर- मूल और कलिहारीके अभावमे कूठ और थूनेरके अभावमे कूठ, जिस स्थानमे पीपरामूल न होय वहां चव्य और गजपीपल, बाव- चीके अभावमे चकवडके बीज, दारुहलदीके अभावमें हलदी, रसौतके अभावमे दारुहलदी, गोपीचंदनके अभावमे फिटकरी, तालीशपत्रके अभावमे स्वर्णतालीश,भारगीके अभावमे तालीसपत्र वा कटेरीकी जड, कालेनोनके अभावमे पांशु लवण लेवै, सुरैठीके अभावमे धायके फूल, अमलवेतके अभावमे चूका,दाखके अभावमे कुम्भेरका फल, दाख और कुम्भेरके अभावमे दुपेरियाका फूल. नखद्रव्यके अभावमे लौंग, कस्तूरीके अभावमे शीतलचीनी,शीतल चीनीके अभावमे जायफल और कपूरके अभावमे सुगन्धमोथा वा गठिवन, केसरके अभावमे कसूमके नवीन फूल, श्रीखडचन्दनके अभावमे कपूर, केसर और चन्दनके अभावमे लालचन्दन, लालच- न्दनके अभावमे नवीन खस, अतीसके अभावमे नागरमोथा,हरडके अभावमे आंवला, नागकेसरके अभावमे कमलकेसर, मेदा और महामेदाके अभावमे शतावर, जीवक और ऋषभकके अभावमे विलाईकन्द,काकोली और क्षीरकाकोलीके अभावमे असगन्ध,ऋद्धि और वृद्धिके अभावमे वाराहीकन्द,और वाराहीकन्दके अभावमे चर्म कारआलू लेवै वाराही कन्दको पश्चिममे गृष्टि कहते है।चर्मकारआलू भी वाराहीकाही भेदहै ये सजल स्थानोमे उत्पन्न होते है इसके ऊपर सूअरके रोम समान रोम होते हे,भिलावेके अभावमे लालचन्दन या

चीता, ईखके अभावमे नल, सोनेके अभावमे सोनामाखी, चांदीके अभावमे रूपामाखी, सोनामाखी और रूपामाखीके अभावमे स्वर्णमेरु, सोने और रूपेकी भस्मके अभावमें कान्तलोहकी भस्म, कान्तलोहके अभावमे तीक्ष्णलोह, मोतीके अभावमे मोतीकी सीप, सहतके अभावमे पुराना गुड, मिश्रीके अभावमें सफेद चीनी, सफेद चीनीके अभावमें सफेद खाँड और दूधके अभावमे मूँगका अथवा मसूरका रस लेवे । यहां कहीहुई प्रतिनिधि एकके अभावमे उसकी दूसरी वस्तु मिलानी चाहिये ।

रसवीर्य्यविपाकाद्यैः समं द्रव्यं विचिन्त्य चायुंज्याद्विविधमन्यच्च द्रव्याणां तु रसादिवत्॥योगे यदप्रधानं स्यात्तस्य प्रतिनिधिर्मतः । यत्तु प्रधानं तस्यापि सदृशं नैव गृह्यते॥ व्याधेरयुक्तं यद्द्रव्यं गणोक्तमपि तत्त्यजेत् । अनुक्तमपि युक्तं यद्योजयेत्तद्रसादिवित् ॥

अर्थ-किसी योगका कोई द्रव्य न मिले तथा जिसकी प्रतिनिधि नहीं कही है तो उस औषधिके वीर्य्य और विपाकादिके तुल्य वैद्य अन्य औषधिको समझकर प्रयोगमें डाले ।इस प्रतिनिधिकेही ऊपर न रहे । जो औषधि प्रयोगमे अप्रधान है उसकी प्रतिनिधि दूसरी औषधि डाले, और जो प्रधान है अर्थात् मुख्य औषधि है उसकी प्रतिनिधि दूसरी औषधि न लेवे,जैसे कि,मरिचादिगुटिकामे पीपल जवाखारादि अप्रधान औषधि है इनके बदलेमे दूसरी प्रतिनिधि गेरे किन्तु प्रधान मरिचके अभावमे प्रतिनिधि न लेवे, जो प्रयोगमें कहीहुई औषधि रोगमें अपकारीहै उसको उस योगमेसे निकालदेवे और जो औषधि रोगको दूर करनेवाली है, किन्तु वह उस योगमे नहीं है तोभी रसादिवित् वैद्य उस योगमें मिलादेवे

द्रव्यान्तर्गतपदार्था ।

रसो वीर्य्यं विपाकश्च ज्ञातव्यास्तेतियत्नतः ।
रसस्तु मधुरादिः स्याद्वीर्यं कार्ये समर्थता ॥
परिणामे गुणाढ्यत्वं विपाक इति संज्ञितम् ।

अर्थ-द्रव्योमे रस, वीर्य्य और विपाक इनको यत्नपूर्वक जानना चाहिये,मधुरादिकको रस कहतेहैं, जो कार्यमे समर्थता करै उसको वीर्य और जो अन्तमे गुणोको करै उसको विपाक कहते है ॥

द्रव्ये रसो गुणो वीर्यं विपाकः शक्तिरेव च।पदार्थाः पंच तिष्ठति स्वंस्व कुर्वन्ति कर्म च॥रसाः स्वाद्वम्ललवणतिक्तोषणकपायकाः ॥ षड्द्रव्यमाश्रितास्ते च यथापूर्वबलावहाः।तत्राद्या मारुतं घ्नति त्रयस्तिक्तादयः कफम्।कपायतिक्तमधुराः पित्तमन्ये तु कुर्वते॥ये रसा वातशमना भवंति यदि तेषु वै।रौक्ष्यलाघवशैत्यानि न ते हन्युः समीरणम्॥ ये रसाः पित्तशमना भवंति यदि तेषु वै।तीक्ष्णोष्णलघुता चैव न ते तत्कर्मकारिणः ॥ ये रसाः श्लेष्मशमना भवति यदि तेषु वै । स्नेहगौरवशैत्यानि न ते हन्युः कफ तदा ॥

। अर्थ-रस, गुण, वीर्य, विपाक और शक्ति ये पांच पदार्थ द्रव्यमे रहतेहै और ये अपने २ कार्योंको करते है,स्वादु,अम्ल,लवण,तिक्त, कटु और कषेला ये छ रस द्रव्योमे रहते है, और इनमे एकसे दूसरा बलहीन है अर्थात् स्वादुरससे अम्लरस,अम्लरससे लवणरस, लवणरससे तिक्तरस,तिक्तरससे चरपरारसऔरचरपरेसे कषेलारस निर्बलहै। स्वादु,अम्ल और लवण ये तीनो रस वातनाशक है और तिक्त,कटु, कषेला ये तीनो रस कफको हरतेहै तथा कषेला,तिक्त और मधुररस पित्तको शमन करते है, शेषके अम्ल, कटु और कषाय ये तीनो रस पित्तकारकहै जो रस वातको दूर करनेवालेहै, किन्तु उनमे रूक्षता, लघुता और शीतलता ये तीनो गुण होवे तो वह कदापि वातको दूर नही करसक्ते।जोरस पित्तको शान्त करनेवाले है जो उनमे तीक्ष्णता, उष्णता और लघुता ये तीनो गुण होवे तो वह पित्तको नष्ट नहीं करसक्ते ऐसेही जो रस कफको शमन करनेवाले है, यदि उनमे स्निग्धता,गुरुता और शीतलता ये तीनों गुण होवे तो कदापि कफको दूर नही करसक्ते ।

क्षारः कपायः पवनप्रकोपी मधुरोऽथ तिक्तः कफकोपनश्च ।
कट्म्लकौ पित्तविकारकारिणौ कट्म्लकौ वातशमौ प्रदिष्टौ॥
पित्तस्य नाशी मधुरः सतिक्तः कटूकपायौ शमनौ कफस्य ।
अन्योन्यमेतच्छमनं वदन्ति परस्परं दोषविवृद्धिमन्तः ॥

अर्थ-लवण और कषेला रस वातको कुपित करेहै, मधुर और कडवा रस कफको कुपित करनेवाला है, चरपरा और खट्टारस पित्तको कुपित करताहै और वातको शमन करताहै, मधुर और कडुवा रस पित्तको दूर करे है, चरपरा और कषेलारस कफको शमन करेहै और परस्पर दोषोको बढानेवाले परस्परमें मिलेहुए दोष शमन करते ह।

मधुरः श्लेष्मलः प्रायो जीर्णाच्छालियवादृते। प्रायोम्लं पित्तजनकं दाडिमामलकादृते ॥ अपथ्य लवणं प्रायश्चक्षुषोन्यत्र सैंधवात्। तिक्त कटुकभूयिष्ठमवृष्यं वातकोपनम् ॥ ऋतेमृतापटोलीभ्यां शुण्ठी शुष्काद्रसोनतः। कषायः प्रायशः शीतः स्तंभनश्चाभयां विना ॥

अर्थ-पुराने चांवल, जौ, गेहूं, मूंग, सहत, मिश्री और जंगली जीवोके मांसको छोडकर जितने मधुर रसवाले पदार्थ है सब पित्तको करतेहै, सैंधव लवणको छोडकरके सम्पूर्ण लवण अपथ्य और नेत्रोको अहितकारीहै गिलोय और परवलके सिवाय जितने कडवे पदार्थ है सब अवृष्य,वातको कुपित करनेवालेहै,सोंठ,अदरख और लशुनको छोडकर जितने चर्परे पदार्थ है अवृष्य और वातको कुपित करनेवाले है, हरडको छोडकर जितने कषेले पदार्थ है प्रायः सबही शीतल और स्तम्भक है।

मधुररसवर्णनम् ।

मधुर गौल्यमित्याहुरिक्ष्वादौ च स लक्ष्यते॥स्वादुः स्तन्यरसौजसां च बलकृद्वीर्यप्रदस्तृप्तिदः प्राह्द्यां रसनां करोति तदनुश्लेष्मप्रकोपप्रदः। पित्तानां दमनः श्रमोपशमनो वृष्यो नराणां हितः क्षीणानां क्षतपाण्डुनेत्रविरुजां हृता भवेन्माधुरः॥

अर्थ-मधुर, गौल्य (गोल, रसज्येष्ठ, गुल्म, स्वादु, मधूलक) ये सब मधुररसके पर्याय है, मधुररस इक्ष्वादिकमे रहताहै, मधुररस स्तनोमे दूधको बढानेवाला, बल पुष्टिको करनेवाला, वीर्यजनक, हृदयको और जिह्वामे तृप्तिको करनेवाला, किंचित कफको कुपित करनेवाला,पित्तको दमन करनेवाला, श्रमको शमन करनेवाला तथा,क्षीण,क्षत,पाण्डु,और नेत्ररोगवाले मनुष्योको हितकारीहै।

मधुरः पिच्छिलः शीतो धातुस्तन्यबलप्रदः ।
चक्षुष्यो वातपित्तघ्नः कुर्यात्स्थौल्यमलक्रमीन् ॥

अर्थ-मधुररस-पिच्छिल, शीतल, धातु, स्तनोंमे दूध और बलको बढानेवाला, नेत्रोंको हितकारी, वातपित्तनाशक तथा स्थूलता, मल और कृमिको करनेवाला है ।

मधुरस्तु रसश्चिनोति केशान्वपुषः स्थौल्यबलौजवीर्यदायी ।
अतिसेवनतः प्रमेहशैत्यं जडतामांद्यमुखान्करोति दोषान् ॥

मधुररस-केशोंको सुन्दर करनेवाला,शरीरको स्थिरता देनेवाला तथा बल, ओज, वीर्यको देनेवाला है, यदि इसको अधिक सेवन किया जाय तो शीतलता, जडता, मन्दाग्नि, मुखरोग और प्रमेहादि रोगोंको उत्पन्न करे है ।

अन्यच्च ।

सोऽतियुक्तो ज्वरश्वासगलगंडादिरोगकृत् । (रा० व०)

अर्थ-यदि इसको अधिक सेवन किया जाय तो ज्वर, श्वास, गलगण्डादि रोगोंको उत्पन्न करता है ।

अम्लरसवर्णनम् ।

अम्लस्तु चिंचाजवीरमातुलुंगफलादिषु ।
अम्लोष्णोतर्बहिः शीतो रुच्यः पित्तकफास्रदः ॥
विबन्धानाहदृष्टिघ्नो दंताक्षिभ्रूनिकोचकः ।

अर्थ-अम्लरस-इमली,जम्भीर और मातुलुंगादि फलोंमे होताहै, अम्लरस-गरम,बाहर अर्थात् स्पर्श करनेसे शीतल,रुचिकारक,पित्त, कफ और रुधिरको कुपित करनेवाला तथा विबन्ध, आनाह और दृष्टिको नष्ट करनेवाला और दांत,नेत्र,भौंहको सकुचानेवाला है ।

अन्यच्च ।

अम्लाभिधःप्रीतिकरो रुचिप्रदःप्रपाचनोयं मृदुतां च यच्छति।
भ्रांतिं च कुष्ठं कफपांडुतां च कार्श्यं च कासं कुरुतेतिसेवितः॥

अर्थ-अम्लरस-प्रीतिकारक,रुचिजनक, पाचक और मृदुताको करनेवाला है,इसको अधिक सेवन किया जाय तो भ्रान्ति, कुष्ठ, कफ, पाण्डुता और कृशताको करैहै ।

अन्यच्च ।

सोऽतियुक्तो भ्रमं कुर्य्यात्तृड्दाहतिमिरज्वरान् ।
कण्डूपाण्डुत्ववीसर्पशोथविस्फोटकुष्ठकृत् ॥ (भा० प्र०)

अर्थ-इसका अधिक सेवन किया जाय तो भ्रम, तृषा, दाह, तिमिर, ज्वर, कण्डू, पाण्डुता, वीसर्प, शोथ, विस्फोट और कुष्ठरोगको उत्पन्न करै है ।

लवणरसवर्णनम् ।

लवणस्तुवरः प्रोक्तः सैंधवादिषु दृश्यते ।
लवणः शोधनो रुच्यः पाचनः कफपित्तहा ॥
पुंस्त्ववातहरः कायशैथिल्यमृदुकारकः ।

अर्थ-लवणरस सैंधवादिक पदार्थोमे देखा जाता है, लवणरस-शोधन, रुचिकारक, पाचक, कफपित्तनाशक, पुरुषतानाशक, वातहारक तथा शरीरमे शिथिलता और मृदुताको करनेवाला है ।

अन्यच्च ।

लवणो रुचिकृद्रसो नितांतं पचनः स्वादुकरश्च सारकश्च ।
अतिसेवनतो जरां च पित्तं शितिमानं च ददाति कुष्ठकारी ॥

अर्थ-लवणरस-रुचिकारक, पाचक, स्वादिष्ठ, सारक है इसको अधिक सेवन करे तो जरा, पित्त और कोढको करैहै ।

अपिच ।

सोतियुक्तोक्षिपाकास्रपित्तकोष्ठक्षतादिकृत् ।
वलीपलितखालित्यकुष्ठवीसर्पतृट्प्रदः ॥

अर्थ-इसको अधिक सेवन करनेसे नेत्रपाक, रक्तपित्त, कोढ और क्षतादिरोग उत्पन्न होतेहै, शरीरमे वलीका पडना, कोढ, विसर्प और तृषा यह सब उत्पन्न होतेह ।

तिक्तरसवर्णनम् ।

तिक्तन्तु पिचुमन्दादौ व्यक्तमास्वाद्यते रसः ।

अर्थ-कडवारस-नीम चिरायतादिमे रहता है तथा यह रस प्रायः शुत और बेस्वाद होता है ।

तिक्तः पित्तकफापहो ज्वरहरः कुष्ठादिदोषापहः शीतो रक्तगदापहः श्रमहरो रुच्यो न सक्लेदनः । जिह्वाकंठविशोधनो भवति तद्दाहापहो रोचनो वक्त्रोल्लासकरः प्रकुष्ठकथितो निम्बादिके स्वादधृक् ॥

अर्थ-कडवारस-पित्त और कफको हरनेवाला,ज्वरको दूर करनेवाला,कुष्ठादि रोगोको नष्ट करनेवाला,शीतल,रुधिरके विकारोंको दूर करनेवाला, श्रमनाशक, रुचिकारक, क्लेदकारक, जिह्वा और कंठको शुद्ध करनेवाला, दाहनाशक, रोचन आर मुखको प्रसन्न करनेवाला है ।

अन्यच्च ।

तिक्तः शीतस्तृषामूर्च्छाज्वरपित्तकफाञ्जयेत् । कृमिकुष्ठविषोत्क्लेददाहरक्तगदापहः ॥ रुच्यः स्वयमरोचिष्णुः कठस्तन्यविशोधनः । वातलोऽग्निकरो नासाशोषणो रक्षणो लघुः ॥ सोऽतियुक्तः शिरःशूलमन्यास्तम्भश्रमार्तिकृत् । कम्पमूर्च्छातृषाकारी बलशुक्रक्षयप्रदः ॥

अर्थ-कडवारस-शीतल, तृषा, मूर्च्छा, ज्वर, पित्त, कफ, कृमि, कोढ, विष, उत्क्लेद, दाह, रुधिरविकार इनको दूर करे है, स्वयं अरुचिकारक होनेपरभी अरुचिवाले मनुष्योंको रुचिको उत्पन्न करे हैं, कंठ और स्त्रीके दूधको शोधे है, वातकारक, अग्निप्रदीपक, नासाको सुखानेवाला, रूखा और हलका है । कडवेरसको अधिक सेवन करनेसे-शिरःशूल, मन्यास्तंभ, श्रम, कम्प, मूर्च्छा और तृषारोग उत्पन्न होताहै तथा बल और शुक्रका नाश होताहै ।

कटुरसवर्णनम् ।

कटुस्तु पिप्पलीमूले मरिचादौ स लक्ष्यते॥नेत्रस्राववहो मुखं विदहते कर्णाक्षिज्वालोद्वहन् वीभत्सं कुरुते श्रमं विदधते रूक्ष-

श्च तीक्ष्णो भृशम् । अग्निश्चोत्पथते क्षतं विदहते क्षीणस्य श-स्तो न च वातं वर्द्धयते कफं प्रहरते रौद्रः कटुर्यो रसः ॥

अर्थ-चरपरारस-पीपलामूल और मिरचादिमे रहता है।चरपरा-रस-नेत्रोमेसे पानी टपकावे,मुखको जलावे, कानोमे झलझलाहट करे, नेत्रोमें ज्वाला उत्पन्न करे,भयंकरपनेको प्रगट करे,रूखा,तीक्ष्ण अग्निको उत्पन्न करे,क्षतको दहन करनेवाला,क्षीण मनुष्योको अहि-तकारी,वातको बढानेवाला,कफको हरनेवाला और रौद्रस्वरूप है।

अन्यच्च ।

कटुरुष्णश्च तीक्ष्णश्च विशदो वातपित्तकृत् । श्लेष्महृल्लघुराग्ने-यः कृमिकण्डूविषापहः ॥रूक्षः स्तन्यहरश्चापि मेदःस्थौल्या-पकर्षणः।अश्रुदो नासिकास्याक्षिजिह्वायोद्वेगको मतः ॥ दी-पनः पाचनो रुच्यो नासिकाशोषणो भृशम् । क्लेदमेदोवसा-मज्जाशकृन्मूत्रोपशोषणः ॥ स्रोतःप्रकाशको रूक्षो मेध्यो व-र्चोविबन्धकृत् । सोतियुक्तो भ्रान्तिदाहमुखताल्वोष्ठशोष-कृत्॥कंठादिपीडामूर्च्छांतर्दाहदो बलकान्तिहृत् ।

अर्थ-चरपरारस-गरम, तीक्ष्ण,विशद, वातपित्तकारक, कफना-शक, हलका, आग्नेय,कृमिनाशक, खुजलीको हरनेवाला, विषके विकारोको दूर करनेवाला,रूखा, स्तनोमे दूधको सुखानेवाला,मेदा और स्थूलताको हरनेवाला,ऑसुओको उत्पन्न करनेवाला,नासिका मुख,नेत्र और जिह्वाको उद्वेग करनेवाला,दीपन, पाचन, रुचिकार-क,नासिकाको सुखानेवाला,क्लेद,मेद वसा,मज्जा,विष्ठा और मूत्रको सुखानेवाला,स्रोतोको प्रकाशित करनेवाला,रूखा मेधाजनक और मलरोधक है।इसको अधिक सेवन करनेसे भ्रान्ति और दाह उत्पन्न होताहै।तथा मुख,तालु, ओष्ठ यह सूखजाते हैं, कंठमे पीडा उत्पन्न होवे, अतर्दाह होवे, तथा बल और कान्ति नष्ट होवेहै ।

कषायरसवर्णनम् ।

कषायस्तुवरः प्रोक्तः स तु पूगीफलादिषु ।

अर्थ-कषाय,तुवर (तूवर,कुवर)यह कषायरसके पर्य्याय हैं।कषायरस सुपारी आदि पदार्थोंमें होता है।

कषायो रोपणो ग्राही स्तम्भनः शोधनो हिमः।
कफशोणितपित्तघ्नो जिह्वाजाड्यकरो लघुः॥

अर्थ-कषेलारस-व्रणको भरनेवाला, मलको रोकनेवाला,स्तम्भन, शीतल तथा कफ, रक्तपित्तको दूर करनेवाला, जिह्वामें जडताको करनेवाला और हलका है।

मतान्तरम्।

कषायः शोषणः स्तम्भी व्रणपाकार्त्तिनाशनः।
कफशोणितपित्तघ्नो रूक्षः शीतो गुरुस्तथा॥

अर्थ-कषेला रस-शोषण, स्तम्भक,व्रणपाककी पीडाको दूर करनेवाला,कफनाशक, रुधिरके विकारोंको हरनेवाला,पित्तनिवारक, रूखा, शीतल और भारी है।

अन्यच्च।

कषायनामानि रुणद्धि शोफं वर्णं तनोर्दीपनपाचनश्च।
सत्त्वापहोऽसौ शिथिलत्वकारी निषेवितः पांडुकरोतिगात्रम्॥

अर्थ-कषेलारस-सूजनको करे, वर्णको बिगाडदेवे,दीपन,पाचन, सामर्थ्यको नष्ट करे,शिथिलताको उत्पन्न करे और इसको अधिक सेवन कियाजाय तो शरीरमें पाडुता उत्पन्न होती है।

अथ द्वन्द्वरस।

कटुः कषायश्च कफापहारिणौ माधुर्य्यतिक्तावपि पित्तनाशनौ।
कट्म्लसञ्ज्ञौ च रसौ मरुद्धराविर्त्थं च द्वन्द्वौ सकलामयापहौ॥

अर्थ-चरपरा और कषेलारस-कफको,मधुर और कडवारस पित्तको,चरपरा और खट्टारस वातको दूर करे है,इसप्रकार दो दो रस मिलेहुये सर्वप्रकारके रोगोंको हरे है।इन छः रसोंमे एकमे एक मिलनेसे अनेक भेद होजातेहैं सो कहते हैं।

मिश्रितरसके ६३ भेद ।

मधुरोम्लं कटुस्तिक्तः कटुस्तुवर इत्यपि ।
क्रमादन्योन्यसंकीर्णा नानात्वं यांति षड्रसाः ॥

अर्थ-मधुर, अम्ल, चरपरा, कडवा, नमकीन और कषेला यह छः रस एक दूसरेके साथ मिलनेसे नानाप्रकारके भेदोंको प्राप्त होतेहैं और इनके गुणभी पृथक् २ होजाते हैं, वह सब नीचे लिखते हैं ।

सामान्येनात्र निर्दिष्टा गुणाः षड्रससम्भवाः । रसानां योगतस्तु स्यादन्य एव गुणोदयः॥संयोगाद्विषतां याति सममाज्येन माक्षिकम् । अमृतं तु विषं याति सर्पदष्टस्य वै यथा ॥

अर्थ-ये सामान्यतासे छः रसोंके गुण कहे हैं, किन्तु रसोंके मिलनेसे उनमें और औरही गुण उत्पन्न होजातेहैं, जैसे-घृतमें बराबर भाग सहत मिलानेसे विष होजाता है जिसप्रकार अमृतरूप जो दुग्धादि पदार्थ हैं वे साँपके डसनेसे विषरूप होजाते हैं ।

रसानां संयोगाः सप्तपंचाशद्भवन्ति ।
कल्पनात्तु त्रिषष्टिधा भवन्ति ॥

अर्थ-रसोंके संयोग सत्तावन ५७ हैं और कल्पना करके त्रेसठ ६३ जानने ।

तद्यथा ।

षट्पंचकाः षट्पृथग्रसाः स्युश्चतुर्द्विकौ पंचदशप्रकारौ ।
भेदास्त्रिका विंशतिरेकमेव द्रव्यं षडास्वादमिति त्रिषष्टिः ॥

अर्थ-पाँच पाँच रसके मिलनेसे छः भेद होतेहैं, और छः अलग अलग रस हैं और चार रसोंके मिलनेसे पन्द्रह भेद होते हैं और दोदोंके मिलनेसेभी पन्द्रहभेद होतेहैं और तीनतीन रसोंके संयोगसे भी बीस भेद होते हैं और छेहोंरसोंका स्वादवाला एक ऐसे त्रेसठ ६३ भेद कहे हैं ।

दोदोंके संयोगसे १५	पांचपांचके संयोगसे ६
चारचारके संयोगसे १५	पृथक् २ रस ६
तीनतीनके संयोगसे २०	एकमें छहों मिलेहुये १

इस प्रकार सब मिलकर ६३ भेद होवेहैं।

अब इनको समझनेके लिये नीचे कोष्टक लिखा है।

रसोंके ६३ भेद जाननेके लिये नीचे यंत्र लिखते है।

१ मधुराम्लौ	२ मधुरलवणौ	३ मधुरतिक्तौ
४ मधुरकटुकौ	५ मधुरकषायौ	६ अम्ललवणौ
७ अम्लतिक्तौ	८ अम्लकटुकौ	९ अम्लकषायौ
१० लवणतिक्तौ	११ लवणकटुकौ	१२ लवणकषयौ
१३ तिक्तकटुकौ	१४ तिक्तकषायौ	१५ कटुकषायौ
१६ मधुराम्ललवणा	१७ मधुराम्लतिक्ता	१८ मधुराम्लकटुका
१९ मधुराम्लकषाया	२० मधुरलवणतिक्ता	२१ मधुरलवणकटुका
२२ मधुरलवणकषाया	२३ मधुरतिक्तकटुका	२४ मधुरतिक्तकषाया
२५ मधुरकटुकषाया	२६ अम्ललवणतिक्ता	२७ अम्ललवणकटुका
२८ अम्ललवणकषाया	२९ अम्लतिक्तकटुका	३० अम्लतिक्तकषाया
३१ अम्लकटुकषाया	३२ लवणतिक्तकटुका	३३ लवणतिक्तकषाया
३४ लवणकटुकषाया.	३५ तिक्तकटुकषाया	३६ मधुराम्ललवणतिक्ता
३७ मधुराम्ललवणकटुका	३८ मधुराम्ललवणकषाया	३९ मधुरलवणतिक्तकटुका
४० मधुरलवणतिक्तकषाया	४१ मधुरलवणकटुकषाया	४२ मधुरतिक्तकटुकषाया
४३ मधुराम्लतिक्तकटुका	४४ मधुराम्लतिक्तकषाया	४५ मधुराम्लकटुकषाया
४६ अम्ललवणतिक्तकटुका	४७ अम्ललवणकटुकषाया	४८ अम्लतिक्तकटुकषाया
४९ अम्ललवणतिक्तकषाया	५० लवणतिक्तकटुकषाया	५१ मधुराम्ललवणतिक्तकटु०
५२ मधुराम्ललवणतिक्तकषा०	५३ मधुराम्ललवणकटुकषा०	५४ मधुराम्लतिक्तकटुकषाया
५५ मधुरलवणतिक्तकटुकषा	५६ अम्ललवणतिक्तकटुकषा	५७ मधुराम्ललवणतिक्तकटु.
५८ मधुर	५९ अम्ल	६० लवण
६१ तिक्त	६२ कटु	६३ कषाय

मित्ररसौ ।

अन्योन्यं मधुराम्लौ लवणाम्लौ कटुतिक्तकौ च रसौ ।
कटुलवणौ च स्यातां मित्ररसे तिक्तलवणौ च ॥

अर्थ-मधुर और अम्लरस आपसमें मित्रहै लवण और अम्लरस मित्र है, कटु और तिक्तरस मित्र है, कटु और लवणरस मित्र है, तिक्त और लवणरस मित्र हैं ।

परस्परविरुद्धरसौ ।

लवणमधुरौ विरुद्धावथ कटुमधुरौ च तिक्तमधुरौ च ।
साधारणः कषायः सर्वत्र समानतां धत्ते ॥

अर्थ-लवण और मधुररस परस्पर शत्रु अर्थात् विरुद्ध हैं, कटु और मधुर रस विरुद्ध है,तिक्त और मधुररसभी विरुद्ध है, और कषेला रस साधारण है ये सबके साथ साधारणपनेसे वर्त्ताव करे है।

अथ गुणा ।

गुरुर्लघुस्तथा स्निग्धो रूक्षस्तीक्ष्ण इति क्रमात् । भूनभो-वारिवातानां वह्नेरेते गुणाः स्मृताः ॥ गुरु वातहरं पुष्टिश्लेष्मकृच्चिरपाकि च । लघु पथ्यं परं प्रोक्तं कफघ्नं शीघ्रपाकि च॥ स्निग्धं वातहरं श्लेष्मकारि वृष्यं बलावहम् । रूक्षं समीरणकरं परं कफहरं मतम्।तीक्ष्णं पित्तकरं प्रायो लेखनं कफवातनुत्॥

अर्थ-गुरु, लघु,स्निग्ध,रूक्ष और तीक्ष्ण,ये क्रमसे भूमि,आकाश , जल, वायु और अग्निके गुणहै । तहां गुरुपदार्थ वातनाशक कफ और पुष्टिकारक और देरमे पचैहै । लघुपदार्थ अत्यन्त पथ्य, कफनाशक और शीघ्र पचैहै । स्निग्धपदार्थ वातहारक,कफहारक,वीर्य और बलको बढावैहै । रूक्षपदार्थ वातकारक और कफहारक है । तीक्ष्णपदार्थ लेखन और कफवातनाशक है । ।

सुश्रुते तु गुणा एते विंशतिर्नात्र दर्शिताः [१]

अर्थ-इसीप्रकार सुश्रुतमेभी वीस गुण कहेहैं, वह यहां ग्रन्थ बढनेके भयसे नहीं दिखाये ।

---

१ शीतोष्णस्निग्धरूक्षमदतीक्ष्णगुरुलघुपिच्छिलविशदश्लक्ष्णपरुषकठिनमृदुद्रवसान्द्रस्थिरसरस्थूलसूक्ष्मा विंशति ।

॥ अथ गुणप्रस्तावाद्दीपनादयो गुणा ॥

पचेन्नामं वह्निकृद्यद्दीपन तद्यथा मिसिः।पचत्यामं न वह्निं च कुर्याद्यत्तद्धि पाचनम्॥नागकेशरवद्विद्याच्चित्रो दीपनपाचनः। न शोधयति यद्दोषान्न समान्नोदीरयत्यपि ॥ समीकरोति विषमान् शमनं तद्यथाऽमृता । कृत्वा पाकं मलानां च भित्त्वा बंधमधो नयेत् ॥ तच्चानुलोमन ज्ञेय यथा प्रोक्ता हरीतकी । पक्तव्यं यदपक्त्वैव शिलष्टं कोष्ठे मलादिकम् ॥ नयत्यधः स्रंसनं तद्यथा स्यात्कृतमालकम् । मलादिकमबद्धं यद्बद्धं वा पिंडितं मलैः ॥ भित्त्वाऽधः पातयति यद्भेदन कटुकी यथा । विपक्व यदपक्वं वा मलादिद्रवतां नयेत्॥रेचयत्यपि तज्ज्ञेय रेचनं त्रिवृता यथा । अपक्व पित्तश्लेष्माण बलादूर्ध्वं नयेत्तु यत्॥वमनं तद्धि विज्ञेयं मदनस्य फलं यथा।स्थानाद्बहिर्नयेदूर्ध्वमधो वा मलसंचयम् ॥ देहसंशोधनं तत्स्याद्देवदालीफलं यथा । दीपनं पाचन यत्स्यादुष्णत्वाद्द्रवशोषकृत् ॥ग्राही तच्च यथा शुंठी जीरक गजपिप्पली । रौक्ष्याच्छैत्यात्कषायत्वाल्लघुपाकाच्च यद्भवेत् ॥ वातकृत्स्तंभन तत्स्याद्यथा वत्सकटुंटुकौ । श्लिष्टान्कफादिकान्दोषानुन्मूलयति यद्बलात्॥छेदनं तद्यथा क्षारा मरिचानि शिलाजतु । धातून्मलान् वा देहस्य विशोष्योल्लेखयेच्च यत्॥लेखनं तद्यथा क्षौद्रं नीरमुष्ण वचा यवाः।यस्माद्द्रव्याद्भवेत्स्त्रीषु हर्षो वाजिकरं हि तत्॥यथाश्वगन्धा मुसली शर्करा च शतावरी। यस्माच्छुक्रस्य वृद्धिः स्याच्छुक्रलं हि तदुच्यते॥ यथा नागबलाद्याः स्युर्बीजं च कपिकच्छुजम्। दुग्धं माषाश्च भल्लातफलमज्जामलानि च॥एतानि जनकानि स्यू रेचकानि च रेतसः। प्रवर्तिनी स्त्री शुक्रस्य रेचन बृहतीफलम् ॥ जातीफलं

स्तंभकं स्यात्कालिंगं क्षयकारि च। रसायनं तु तज्ज्ञेयं यज्जराव्याधिनाशनम् ॥ यथा हरीतकी दंती गुग्गुलुश्च शिलाजतु ॥पूर्वं व्याप्याखिलं कायं ततः पाकं च गच्छति ॥ व्यवायि तद्यथा भंगा फेनं चाहिसमुद्भवम्। संधिबंधांस्तु शिथिलान्यः करोतिविकाशि तत् ॥ विशोष्यौजश्च धातुभ्यो यथाक्रमुककोद्रवौ। बुद्धिं लुंपति यद्द्रव्यं मदकारि तदुच्यते ॥ तमोगुणप्रधान च यथा मद्य सुरादिकम्। व्यवायि च विकाशि स्याच्छ्लेष्मच्छेदि मदावहम् ॥ आग्नेयं जीवितहरं योगवाहि स्मृतं विषम् ॥ निजवीर्येण यद्द्रव्यं स्रोतोभ्यो दोषसंचयम्। निरस्यति प्रमाथि स्यात्तद्यथा मरिचं वचा ॥ पैच्छिल्याद्गौरवाद्द्रव्यं रुद्ध्वा रसवहाः शिराः। धत्ते यद्गौरवं तत्स्यादभिष्यंदि यथा दधि॥ विदाहि द्रव्यमुद्गारमम्लं कुर्यात्तथा तृषाम्। हृदि दाहं च जनयेत्पाकं गच्छति तच्चिरात् ॥ गृह्णाति योगवाहि द्रव्यं संसर्गिवस्तुगुणान्। पच्यमानं यथैतन्मधुजलतैलाज्य-सूतलोहादिः ॥

अर्थ—अब प्रसंगवश दीपनपाचनादि गुणोके लक्षण कहतेहैं। जो पदार्थ आम (कच्चे) को पकावे नही परंतु अग्निको प्रदीप्त करै वह दीपन कहाताहै जैसे कि—सौंफ। जो पदार्थ कच्चेको पकावे परन्तु अग्निको दीपन नहीं करे उसको पाचन कहतेहैं। जैसे कि—नागकेशर। जो अग्निको दीपन करताहै और कच्चेको पकाताहै उसको दीपन पाचन कहतेहैं। जैसे कि—चीता। जो पदार्थ तीनो दोषोको शुद्ध नहीं करता अर्थात् ऊंचे तथा नीचे भागमें नहीं लेजासक्ता समान दोषोको बढाता नहीं और विषम हुए दोषोको सम करताहै वह पदार्थ शमन कहाताहै। जैसे कि, गिलोय। जो पदार्थ कच्चे वातपित्त और कफको पकाकर वायुके बन्धनको भेदन करके नीचे लेजाताहै अर्थात् मलोको गिरा देना है वह पदार्थ अनुलोमन कहाताहै जैसे कि—हरड। जो पदार्थ कोठेमे चिपटे हुए पकानेयोग्य मल, कफ और पित्तहै उनको विना पकायेही नीचे लेजाय वह स्रंसन कहाताहै जैसे कि—अमलतास। जो वातादि दोषोसे बँधेहुये मल मूत्रको अलग अलग करके गुदद्वारसे बाहर निकाले उसको

भेदन कहतेहैं। जैसे कि, कुटकी। जो पदार्थ अधपके अथवा कच्चे मलको द्रवरूप (पतला) करे और नीचेको गेरे वह पदार्थ रेचन कहाताहै जैसे कि-निसोथ। जो पदार्थ कच्चे पित्त, कफ तथा अन्नके समूहको मुखके मार्गसे बाहर निकाले वह पदार्थ वमन कहाताहै जैसे कि-मैनफल। जो पदार्थ मलके समूहको अपने स्थानसे बाहर निकाले अथवा नीचे या ऊपर लेजाय वह पदार्थ संशोधन कहाताहै जैसे कि-देवदाली। जो पदार्थ अग्निको दीपन करनेवाला, कच्चेको पकानेवाला और गरम होनेसे द्रवनारूप (गीलेपन) को सुखाने-वालाहै वह द्रव्य ग्राही कहाताहै जैसे कि-सोंठ, जीरा और गजपी-पल जो पदार्थ रूक्ष, शीतल, कषैला और लघुपाकी होनेसे वायुको उलटा करनेवाला होय वह पदार्थ स्तम्भन कहाताहै जैसे कि-कुडा और सोनापाठा। यह नीचे जाने वाले मलादिकको रोकता रखताहै इसलिये स्तम्भक कहाताहै। जो पदार्थ शरीरमें चिपटे हुए कफा-दिकदोषोंको बलात्कारसे उपाडडाले वह पदार्थ छेदन कहाताहै जैसे कि-जवाखार आदिखार, कालीमिरच और शिलाजीत। जो पदार्थ देहके धातुओंको अथवा मलको सुखाकर दुर्बल करे वह पदार्थ-लेखन है जैसे कि, मधु, उष्णजल, वच और इन्द्रजो। जिस द्रव्यके प्रयोग करनेसे स्त्रीके साथ रमनेका उत्साह होय वह द्रव्य वाजीकरण कहाता है जैसे कि-असगन्ध, मुसली, मिश्री (चीनी) और शतावर। जिस द्रव्यसे वीर्य्यकी वृद्धि होय वह द्रव्य शुक्रल कहाताहै जैसे कि-नागबला आदि और कौंछके बीज। दूध, उडद, भिलावेकी मीग और आमले ये अपने प्रभावसे, शीघ्रही रसादिकको उत्पन्न करके वीर्य्यको प्रकट करतेहैं और वीर्य्यकी अधिकता होने-पर उसकी प्रवृत्ति करतेहैं। स्त्रीवीर्य्यको प्रवर्त्तानेवाली, कटेरीका फल वीर्य्यका रेचक, जायफल वीर्य्यका स्तम्भन करनेवाला और तर-बूज (इन्द्रजो) वीर्य्यका क्षय करतेहैं। स्त्रीका स्मरण, कीर्तन, दर्शन, सम्भाषण, स्पर्श, चुम्बन, आलिंगन और मैथुन यह सम्पूर्ण क्रियाएँ वा एकही क्रिया वीर्य्यको प्रवर्त्ताने (निकालने) वालीहै। जो पदार्थ जरा और व्याधिका नाश करनेवाला होय वह पदार्थ रसा-यन कहाता है जैसे कि, दन्ती गूगल और शिलाजीत। जो पदार्थ प्रथम सम्पूर्ण शरीरमे व्याप्त होकर पश्चात् पाक अवस्थाको प्राप्त होय वह पदार्थ व्यवायी कहाताहै जैसे कि, भाग, और अफीम। अन्यद्रव्य परिपाकको प्राप्त होकर अपना

गुण करतेहै और व्यवायी द्रव्य वो कहते अपने गुणोंसे सम्पूर्ण शरीरमें व्याप्त होकर पीछे पकतेहैं। जो द्रव्य सम्पूर्ण शरीरमें रहनेवाले वीर्यमेंसे ओजको सुखाकर शरीरकी सन्धियोंके बंधनोंको शिथिल करतेहैं उनको विकाशी जानना, जैसे सुपारी और कोदों। जो द्रव्य अधिक तमोगुणवाला और बुद्धिका नाश करनेवाला होय वह मदकारी अर्थात् मादक द्रव्य कहाताहै जैसे कि, मदिरा आदिका जो पदार्थ व्यवायी, विकाशी, बुद्धि नष्ट करनेवाला, मद करनेवाला, अग्निका अधिक अंशयुक्त, प्राणनाशक और योगवाही होय वह पदार्थ विष कहाताहै, जैसे कि, वत्सनाभ और संखिया आदि। वत्सनाभ आदि द्रव्य सम्पूर्ण शरीरमें व्याप्त होकर पकते हैं इसलिये व्यवायी है। ओजको सुखाकर सन्धियोंके बंधनोंको शिथिल करनेवाले हैं इसलिये विकाशी हैं, तमोगुणका भाग अधिक होनेसे बुद्धिका नाश करके मद करनेवाला है, अग्निका अधिक अंशयुक्त है और जिस पदार्थके साथ मिलकर उसके गुणोंको ग्रहण करनेवाला होनेसे योगवाहीभीहै। जो द्रव्य अपनी शक्तिसे स्रोतोंसे दोषोंके समूहको निकाले वह द्रव्य प्रमाथी कहाताहै जैसे कि, मिरच और वच। जो पदार्थ रसको बहानेवाली शिराओंको पिच्छिल और भारीपनसे रोककर शरीरमें भारीपन करताहै वह पदार्थ अभिष्यन्दी कहाताहै जैसे कि-दही। जिस द्रव्यके खानेसे खट्टी डकार आवे, प्यास लगे, हृदयमें दाह होय वह पदार्थ विदाही कहाताहै, इस द्रव्यका पाक बहुत देरसे होताहै। जो अपने साथ मिली हुई वस्तुओंके गुणोंको ग्रहण करे वह पदार्थ योगवाही कहाताहै जैसे कि, सहत, तेल, घी, पारा और लोहा आदि।

अथ वीर्यम्।

मृदुतीक्ष्णगुरुस्निग्धलघुरूक्षोष्णशीतलम्।
वीर्यमष्टविधं प्राहुः शीतोष्णं द्विविधं परे॥

अर्थ-मृदु, तीक्ष्ण, गुरु, स्निग्ध, लघु, रूक्ष, उष्ण और शीतल इनभेदोंसे वीर्य आठ प्रकारका है और कितने ऋषियोंके मतसे उष्ण और शीत इन भेदोंसे वीर्य दो प्रकारका है।

उष्णशीतवीर्यद्रव्ययोर्गुणानाह।

उष्णः पित्तकरो बल्यो वातश्लेष्महरो लघुः।
शीतलः पित्तहा बल्यः कफवातकरो गुरुः॥

अर्थ-उष्णवीर्य्य-पित्तकारक,बलवर्द्धक,वातकफनाशक और हलका है।शीतवीर्य्य-पित्तनाशक,बलकारक,कफकारक और भारीहै।

अन्यच्च ।

यच्छीतवीर्य्यं गुरु पित्तहारि द्रव्यं नृणां वातकरं तदुक्तम् ।
यदुष्णवीर्य्यं लघु वातहारि श्लेष्मापहं पित्तकरं च तत्स्यात्॥

अर्थ-जो द्रव्य शीतवीर्य्य है वह सब भारी,पित्तहारी और वातको करनेवाले है,जो द्रव्य उष्णवीर्य्य है वह सब हलके,वातविनाशक,कफनाशक और पित्तको उत्पन्न करे है ।

रसानां वीर्य्यभेदमाह ।

रसाः कट्वम्ललवणा उष्णवीर्या यथोत्तरम् ।
तिक्तकषायमधुराः शीतवीर्य्या यथोत्तरम् ॥

अर्थ-कटु,अम्ल और लवण यह तीनों रस यथाक्रमसे उष्णवीर्य है अर्थात् चरपरे रससे खट्टा रस और खट्टे रससे लवण रस अधिक उष्ण वीर्य्य है,तिक्त,कषाय और मधुर यह तीनो रस यथाक्रमसे शीतवीर्य्य है अर्थात् तिक्तरससे कषेला रस और कषेले रससे मधुररस अधिक शीतवीर्य्य है।

अथ विपाक ।

जाठरेणाग्निना योगाद्यदुदेति रसांतरम् । रसानां परिणामान्ते स विपाक इति स्मृतः॥ विपाकस्तु त्रिधा प्रोक्तःस्वाद्वम्लकटुकात्मकः । मिष्टः पटुश्च मधुरो ह्यम्लोऽम्ल पच्यते रसः ॥ कषायकटुतिक्तानां पाकः स्यात्प्रायशः कटुः । श्लेष्मकृन्मधुरःपाकोवातपित्तहरोमतः ॥ अम्लस्तु कुरुते पित्तं वातश्लेष्मगदापहः।कटुः करोति पवनं कफं पित्तं च नाशयेत् ॥ विशेष एष रसतो विपाकानां निदर्शितः ।

अर्थ-जठराग्निकरके जो रस उत्पन्न हो और फिर उस रसके पकने पर जो परिणाम होताहै उसको 'विपाक' कहतेहै।विपाक तीन प्रकारका है, मधुर, नमकीन और अम्ल, मधुर और अम्ल रसवाले पदार्थोंका विपाक मधुरही होताहै, अम्लपदार्थोंका अम्ल होताहै तथा कटु, तिक्त और कषेले रसोका विपाक चर्पराही होता है, मधुर विपाकवाले द्रव्य कफको उत्पन्न

करे है और वातपित्तको दूर करे है । अम्लविपाकवाले द्रव्य पित्तको उत्पन्न करे है और वातकफको हरे है । और कटुविपाकवाले द्रव्य वातको उत्पन्न करेहै और कफपित्तको दूर करेहै । विशेषकरके यह विपाक रसोसे दर्शाया है ।

प्रभाव ।

रसादिसाम्ये यत्कर्म विशिष्टं तत्प्रभावजम्।दन्तीरसाद्यैस्तुल्यापि चित्रकस्य विरेचनी॥मधूकस्य च मृद्वीका घृत क्षीरस्य दीपनम् । प्रभावस्तु यथा धात्री लकुचस्य रसादिभिः ॥ समापि कुरुते दोषत्रितयस्य विनाशनम्।क्वचित्तु केवलं द्रव्यं कर्म कुर्यात्प्रभावतः।ज्वरं हन्ति शिरोबद्धा सहदेवीजटा यथा॥

अर्थ–औषधीके रस,गुण,वीर्य और विपाकमे जो गुण होवे उनसे अलग अपने प्रभावसे जिस गुणको करे उसका नाम प्रभाव है,जैसे दन्ती और चीता दोनो रस वीर्यविपाकादिमे समानभी है, किन्तु दन्ती रेचक है और चीता नही,इसको प्रभाव कहतेहै । जैसे महुआ और दाख रसादिकमे समान है,पर दाख दस्तावर है । दूध और घी रसादिकमे समान है,परन्तु घी अग्निको दीपन करेहै । आमला और बडहर गुणोमे तुल्य है,किन्तु आमला त्रिदोषनाशक है कही कही कवल द्रव्य प्रभावसेही कार्य करता है,जैसे सहदेवीकी जडको मस्तकमे बांधनेसे ज्वर दूर होताहै, ये प्रभावज गुण जानने ।

इति श्रीशालिग्रामनिघण्टुभूषणे ऽनूपादिवर्ग समाप्त ॥ २१ ॥

अथ मिश्रवर्गः ।

ब्राह्मे मुहूर्त उत्तिष्ठेत्सुस्थो रक्षार्क्षमायुषः ।
शरीरचिन्तां निर्वर्त्य मैत्रं कर्म्म समाचरेत् ॥

अर्थ–सुस्थ मनुष्य आयुकी रक्षाके लिये ब्राह्ममुहूर्त्तमे उठे, फिर शरीरसम्बन्धीय चिन्ता(मलमूत्रादित्याग)से निर्वर्त्य अर्थात् निपटकर हितको करनेवाले कार्य्योको विचारे ।

स्वभावतः प्रवृत्ताना मलादीनां जिजीविषुः ।
न वेगान्धारयेद्धीरः कामादीनान्तु धारयेत् ॥

अर्थ-जीवनकी इच्छा करनेवाले धीर मनुष्यको चाहिये कि, स्वभावसे आयेहुये मलमूत्रादिक वेगको धारण नहीं करे. क्योंकि इनको धारण करनेसे अनेक प्रकारके विकार उत्पन्न होकर नानाप्रकारके रोगोको उत्पन्न करलेहैं और जो धारण करे तो कामादिके वेगोको धारण करे, क्योंकि कामादिके वेगोको धारण करनेसे ससारके रोगोसे छूटकर उत्तम सुख(मोक्ष) को प्राप्त होताहै ।

पादमलमार्गाणा शौचगुणा ।

मेध्य पवित्रमायुष्यमलक्ष्मीकविनाशनम् ।
पादयोर्मलमार्गाणां शौचाधानमभीक्ष्णशः ॥

अर्थ-दोनो पाव और मलके मार्ग सदैव साफ रखने चाहिये, क्योंकि इनको साफ रखनेसे मेधाकी वृद्धि होती है, पवित्रता उत्पन्न होतीहै, आयु बढतीहै और अलक्ष्मीका नाश होता है ।

उष पानगुणा ।

कासश्वासातिसारज्वरवमथुकटीकोष्ठकुष्ठप्रकारान् मूत्राघातोदरार्शःश्वयथुगलशिरःकर्णनासाक्षिरोगान् । ये चान्ये वातपित्तक्षयजकफकृता व्याधयः सन्ति जन्तोस्तांस्तानभ्यासयोगादपनयति पयः पीतमन्ते निशाया· ॥

अर्थ-जो मनुष्य प्रतिदिन प्रभातके समय उठकर जलपान करते हैं उनके खासी, श्वास, अतिसार, ज्वर,वमन,कटिरोग, कोष्ठरोग, अनेक प्रकारके कुष्ठरोग,मूत्राघात, उदररोग, बवासीर,सूजन, गल, मस्तक, कर्ण,नासिका और नेत्ररोगादि तथा वात,पित्त, क्षय और कफसे उत्पन्न हुए सर्वप्रकारके रोग दूर होजाते है ।

नासिकया जलपानगुणा ।

विगतघननिशीथे प्रातरुत्थाय नित्य पिबति खलु नरो यो घ्राणरन्ध्रेण वारि। स भवति मतिपूर्णश्चक्षुषा तार्क्ष्यतुल्यो वलिपलितविहीन सर्वरोगैर्विमुक्तः ॥

अर्थ-जो मनुष्य मेघरहित रात्रिके अन्तमे नित्य नासिकाके द्वारा जल पीते है,वे मनुष्य पूर्ण बुद्धिमान्, गरुडके समान नेत्रोवाले और वलीपलित-रहित होजाते है तथा सब रोगोसे छूटजाते है ।

दन्तधावनविधि।

प्रातर्भुक्त्वा च मृद्वग्रं कषायकटुतिक्तकम् ।
भक्षयेद्दन्तधवनं दन्तमांसान्यबाधयन् ॥

अर्थ-प्रातःकालमे कषाय, कटु और तिक्तरसवाले वृक्षोके कोमल अग्रभागको लेकर उसके द्वारा इसप्रकार दतौन करे कि, जिससे मसूढे न छिलजायँ ।

मतान्तरम् ।

केप्यत्र करवीरार्ककरञ्जबकुलासनान् ।
दन्तकाष्ठार्थमन्ये तु सर्वान्कंटकिनो विदुः ॥

अर्थ-कोई कोई वैद्य कनेर,आक,करंज, मौलसिरी और सालकी लकडीके द्वारा दतौन करना चाहिये ऐसा कहते है । और कोई कोई सर्व प्रकारके कॉटोवाले वृक्षोकी दतौन करनी चाहिये ऐसा कहते०।

निषिद्ध यथा।

गुवाकतालहिन्तालखर्जूरैः केतकीमतैः ।
नारिकेलेन ताड्या च न कुर्य्याद्दन्तधावनम् ॥

अर्थ-सुपारी,ताल,हिन्ताल,खजूर, केतकी,नारियल और ताडी (पत्रवृक्ष) इन सब वृक्षोकी दतौन नही करनी चाहिये ।

दन्तधावने दिङ्निर्णय ।

मृत्युः स्याद्दक्षिणास्येन पश्चिमास्येन चामयः ।
पूर्वास्येनोत्तरास्येन सम्पदो दन्तधावनात् ॥

अर्थ-दक्षिणकी ओर मुख करके दतौन करनेसे मृत्यु, पश्चिमकी ओर मुखकरके दतौन करनेसे रोग और पूर्व तथा उत्तरकी ओर मुख करके दतौन करनेसे सम्पदाकी वृद्धि होती है ।

दन्तकाष्ठव्यवहारनिषिद्धजना ।

अर्दिती कर्णशूली च दन्तरोगी नवज्वरी ।
शोषी कासी च मूर्च्छार्तो दन्तकाष्ठं विवर्जयेत् ॥

अर्थ-अर्दितरोगी, जिसके कानमें शूलहो, दन्तरोगी, नवीन ज्वरवाला, शोषरोगवाला, कासरोगी और मूर्च्छारोगवाले मनुष्योंको दतौन नहीं करनी चाहिये।

जिह्वाल्लेखनगुणाः।

जिह्वानिर्लेखनं रौप्यं सौवर्णं ताम्रमायसम्। तन्मलापहरं शस्तं मृदु श्लक्ष्णं दशांगुलम्॥ निहन्ति वक्रवैरस्यं जिह्वादन्ताश्रितामयम्। आरोग्यं रुचिमाधत्ते सद्यो दन्तविशोधनम्॥

अर्थ-चांदी, सोना, तांबा अथवा लोहा इनकी नरम और निर्मल दशअंगुल लंबी जीभी बनाकर उसके द्वारा जिह्वाको घिसै इसप्रकार करनेसे मुखकी विरसता, सर्वप्रकारके जिह्वा और दन्तरोग नाश होते हैं। आरोग्य और रुचिकी वृद्धि होतीहै दन्त शुद्ध होजाते हैं।

चक्षुर्धावनविधि।

दन्तमूर्ध्वमधो घृष्ट्वा प्रातः सिञ्चेच्च लोचने।
तोयपूर्णमुखस्तेन दृष्टिराशु प्रसीदति।

अर्थ-प्रथम दांतोंके ऊर्ध्व और अधोभाग घिसकर फिर मुखमें जल भरकर उस जलसे नेत्रोंको सींचै इससे नेत्रोंमें प्रसन्नता उत्पन्न होतीहै।

गण्डूषगुणाः।

गण्डूषमपि कुर्वीत शीतेन पयसा मुहुः। कफतृष्णामलहरं मुखांतःशुद्धिकारकम्॥ सुखोष्णोदकगंडूषः कफारुचिमलापहः। दंतजाड्यहरश्चापि मुखलाघवकारकः॥ विषमूर्च्छामदार्त्तानां शोषिणा रक्तपित्तिनाम्। कुपिताक्षिमलक्षीणरूक्षाणां स न शस्यते॥

अर्थ-तदनन्तर ठंढे पानीसे कुल्ले करे, इससे कफ, तृषा और मुखके मल दूर होजाता है एवं भीतरसे मुख शुद्ध होजाता है उष्णजलके द्वारा कुल्ले करनेसे कफ, अरुचि, मल और दांतोंकी जडता दूर होती है। विष, मूर्च्छा और मदसे व्याकुल हुए, शोष रोगवाले, रक्तपित्तरोगी, नेत्ररोगी, जिनका मल क्षीण होगयाहो और रूखेशरीरवाले मनुष्योंको कदापि गरमपानीके द्वारा कुल्ले नहीं करने चाहिये।

मुखप्रक्षालनगुणा. ।

मुखप्रक्षालनं शीतपयसा रक्तपित्तजित् । मुखस्य पिडिका-शोषनीलिकाव्यंगनाशनम् ॥ कुर्य्याद्वापि कदुष्णेन पयसा-स्यविशोधनम्। कफवातहरं स्निग्धं मुखशोषविनाशनम् ॥

अर्थ-शीतलजलके द्वारा मुखको धोनेसे रक्तपित्त,मुखकी पिडिका,मुखशोष,नीलिका और व्यंग(झांई)दूर होती है।कुछ कुछ गरम जलसे मुखको शुद्ध करे इससे कफ वात दूर होकर स्निग्धता उत्पन्न होतीहै और मुखशोष दूर होताहै ।

अंजनधारणगुणानाह ।

नेत्रमंजनसंयोगाद्भवत्यमलतारकम् ।
दृष्टिर्निराकुला भाति निर्मलश्चन्द्रमा यथा ॥

अर्थ-नेत्रोमे अंजन लगानेसे नेत्र निर्मल तारेयुक्त होजाते है अर्थात् ऑखोके तारे साफ होजाते है, दृष्टि स्थिर और चन्द्रमाके समान निर्मल होजाती है ।

रात्रौ जागरितःश्रान्तश्छर्दितो भुक्तवांस्तथा ।
ज्वरातुरः शिरःस्नातः कदाचिन्न तदाचरेत् ॥

अर्थ-रातमे जागाहो, थकाहुआहो, जिसको वमन हुईहो,ज्वरसे व्याकुल और जिसने शिरसे स्नान कियाहो,इतने मनुष्योको कदापि अंजन नही लगाना चाहिये।

कंकतीगुणा ।

कंकती कान्तिजननी कण्डूघ्नी मूर्द्धरोगजित् ।
केशप्रसादनी केश्या रजोजन्तुमलापहा ॥

अर्थ-कंकती-कंघी,कंघा आदिसे बालोको काढना कान्तिजनक, कण्डूरोगको हरनेवाला, शिरोरोगको दूर करनेवाला तथा रज, जुयें और केशोके मलको दूर करेहै, केशोको बढानेवाली और केशोको हितकारी है ।

उष्णीषधारणगुणा ।

उष्णीषं शिरसा धार्य्यं प्रभाते लघु नित्यशः ।
केश्यं चक्षुष्यमायुष्यं रजःशीतोष्णवारणम् ॥

अर्थ-प्रतिदिन प्रभातके समय बारीक वस्त्रकी हलकी पगडी धारण करे पगडी-वालोको हितकारी, नेत्रोंको हितकारी तथा धूल, शीत और गरमीको दूर करतीहै ।

श्मश्रुनखादिच्छेदनगुणा ।

पञ्चरात्राल्लखश्मश्रुकेशरोमाणि कर्त्तयेत् ।
पौष्टिक बल्यमायुष्य शौच रूपविराजनम् ॥
केशश्मश्रुनखादीनां कृन्तन सम्प्रसादनम् ।

अर्थ- पाच पाच दिनके पश्चात् नख, डाढी, केश और रोमोंको कटवातारहे अर्थात् हजामत बनवातारहे । बाल, दाढी, मूँछ और नखादिको कतरनेसे शरीर कांतिवान् होता है, पुष्टि, धन और आयुकी वृद्धि होती है तथा इससे पवित्रता और सुन्दरता उत्पन्न होतीहै ।

उत्पाटयेत्तु लोमानि नासायां न कदाचन ।
तदुत्पाटनतो दृष्टेर्दौर्बल्य त्वरया भवेत् ।

अर्थ-नाकके बालोंको कदापि न उखाडे, क्योंकि नाकके बाल उखाडनेसे दृष्टि कम होजाती है ।

प्रभातद्रष्टव्या. ।

वैद्यः पुरोहितो मन्त्री दैवज्ञोऽत्र चतुर्थक ।
प्रभातकाले द्रष्टव्या नित्यं स्वश्रियमिच्छता ॥

अर्थ-ऐश्वर्यकी इच्छा करनेवाले मनुष्योको प्रतिदिन प्रभातके समय वैद्य, पुरोहित, मन्त्री और दैवज्ञ (सिद्धान्तवेत्ताज्योतिषी) का दर्शन करना चाहिये ।

अग्निसेवनगुणा ।

अग्निर्वातकफस्तम्भशीतवेपथुनाशनः ।
आमाभिष्यन्दशमनो रक्तपित्तप्रकोपनः ॥

अर्थ-अग्निको सेवन करनेसे वात, कफ, स्तम्भ, शीत और कम्प तथा आम और अभिष्यन्द नाशको प्राप्त होते है तथा रक्तपित्त कुपित होते है ।

धूमादिगुणा ।

धूमः पित्तानिलौ कुर्यादवश्याय· कफानिलौ ।

अर्थ-धूमको सेवन करनेसे पित्त और वायुकी वृद्धि होती है और हिमको सेवन करनेसे कफ और वात बढती है।

शिशिरगुणाः।

शिशिरं शीतलं रूक्षं वृष्यं वातप्रकोपनम्।

अर्थ-शिशिर अर्थात् ओस-शीतल, रूखी, धातुवर्द्धक और वातको कुपित करनेवाली है।

कुज्झटिगुणाः।

रूक्षा तमोगुणप्राया कुज्झटिः कफपित्तला॥

अर्थ-कुज्झटिका (धौल, कुहर, कुहासा) रूखा, तमोगुणयुक्त और कफपित्तकारक है।

छत्रगुणानाह।

छत्रं वर्षातपरजोवातावश्यायनाशनम्।
वर्ण्यं दृष्टिकरं बल्यं गुप्त्यावरणशंकरम्॥

अर्थ छत्र-छाता व छत्री-वर्षा,धूप,धूल,वायु और ओसको दूर करे है तथा वर्ण और दृष्टिको बढानेवाली, बलकारक, मंगलजनक, पिशाचादि बाधाको दूर करनेवाली और मनुष्योंका आवरण है।

वृष्टिगुणानाह।

वृष्टिर्निष्यंदिनी शीता निद्राश्लेष्मबलप्रदा॥
मलापहारिणी वायुदायिनी वह्निवारिणी॥

अर्थ-वर्षा-कफादिकको टपकानेवाली,शीतल,निद्रा,श्लेष्म और बलको बढानेवाली है,मलनाशक,वायुवर्द्धक और मंदाग्निकारक है।

आतपगुणानाह।

आतपः कटुको रूक्षः स्वेदमूर्च्छातृषावहः।
दाहवैवर्ण्यजननो नेत्ररोगप्रकोपनः॥

अर्थ-सूर्यकी धूप-चरपरी, रूखी तथा पसीना, मूर्च्छा, दाह, विवर्णता और नेत्ररोगोंको उत्पन्न करे है।

छायागुणानाह।

छायादाहश्रमस्वेदहरा मधुरशीतला॥

अर्थ-छाया-दाह, श्रम और पसीनेको दूर करनेवाली है तथा मधुर और शीतल है।

अन्यच्च ।

छाया तमोऽस्रपित्तार्त्ति निहन्यात्स्निग्धशीतला ।
विशेषतो वटच्छाया बलवर्णप्रसादनी ॥

अर्थ-छाया-तम, रुधिरविकार और पित्तकी पीडाको शान्त करे है, स्निग्ध और शीतल है, विशेषकरके बडकी छाया बलकारक तथा वर्णको प्रसन्न करनेवाली है ।

यष्टिधारणगुणानाह ।

स्खलतः सम्प्रतिष्ठानं शत्रूणाञ्च निरोधनम् ।
अवष्टम्भनमायुष्यं भयघ्नं दण्डधारणम् ॥

अर्थ-लाठीका धारण करना-स्खलितपद प्रतिष्ठापक और शत्रु-विरोधक है तथा बलवर्द्धक और भयनाशक है ।

अन्यच्च ।

यष्टिधारणमुत्साहस्थैर्यविष्टम्भवीर्य्यकृत् ।
रक्षः सर्पादिभयजिद्विशेषात्स्थाविरे मतम् ॥ ॥

अर्थ-लाठीका धारण-उत्साह, स्थिरता, विष्टम्भ और वीर्यको उत्पन्न करे है और राक्षस तथा सर्पादिकके भयको दूर करेहै, एवं बुढापेमे हितकारी है ।

अथ व्यायामगुणाः ।

व्यायामो हि सदा पथ्यो बलिनां स्निग्धभोजिनाम् ।स च शीते वसन्ते च तेषां पथ्यतमो मतः॥सर्वेष्वृतुषु सर्वैर्हि मर्त्यैरात्महितार्थिभिः।शक्त्यर्द्धेन च कर्त्तव्यो व्यायामो हन्त्यतोऽन्यथा ॥ कुक्षौ ललाटे ग्रीवायां यदा घर्मःप्रवर्त्तते।शक्त्यर्द्धं त विजानीयाद्यावदुच्छ्वासमेव च॥लाघवं कर्मसामर्थ्यं स्थैर्यक्लेशसहिष्णुता । दोषक्षयोऽग्निवृद्धिश्च व्यायामादुपजायते ॥ व्यायामं कुर्वतो नित्यं विरुद्धमपि भोजनम् । विदग्धमपि दग्धं वा निर्दोषं परिपच्यते ॥ न च व्यायामसदृशमन्यत्स्थौल्यापकर्षणम् । न च व्यायामिन मर्त्यमर्दयन्त्यरयो बलात् ॥ न चैनं सहसाक्रम्य जरा समधिगच्छति । व्यायामक्षुण्णगात्रस्य प-

ऱ्यामुद्वर्तितस्य च॥ व्याधयो नोपसर्पन्ति वैनतेयमिवोरगाः । वयो बलं शरीरं च देशं कालमथापि च ॥ समीक्ष्य कुर्याद्व्यायामं युक्त्या शक्त्या च बुद्धिमान् । रक्तपित्ती क्षयी शोषी कासी श्वासी क्षतातुरः ॥ भुक्तवान्स्त्रीषु च क्षीणो व्यायामं परिवर्जयेत् । वातपित्तामयी बालो वृद्धो जीर्णी च तंत्यजेत्॥ अतिव्यायामतः कासो रक्तपित्तप्रतानकः । श्रमः क्लमः क्षयस्तृष्णाज्वरश्छर्दिश्च जायते ॥

अर्थ–स्निग्धपदार्थ भक्षण करनेवाले और बलवान् मनुष्योके लिये व्यायाम (कसरत) करना शीत और वसन्तऋतुमें ही हितकारी है परन्तु अपना हित चाहनेवाले सब मनुष्य ऋतुओमे आधी शक्तिके अनुसार कसरत करे इससे अधिक कसरतका करना मनुष्योको नष्ट करदेताहै । आधी शक्ति उसको कहतेहै जिसमें कोख, माथा और गर्दनसे पसीना निकलने लगे और श्वास शीघ्र आने जाने लगे । कसरत करनेसे शरीरमें लघुता, कार्य्यमे सामर्थ्य, स्थिरता और क्लेशसहिष्णुता (क्लेशका सहलेना) उत्पन्न होतीहै । दोष (वातपित्तादि) क्षय होतेहै, अग्नि बढतीहै, नित्य कसरत करनेवाले मनुष्य विरुद्ध वस्तु, विदग्धाजीर्णकारक पदार्थ, अथवा उत्तम पदार्थ, जो कुछभी खाले: वह सब दोषरहित होकर पक जातीहै, स्थूलताका नाश करनेके लिये कसरतकी समान दूसरी कोई वस्तु नही है । शत्रुलोग कसरत करनेवाले मनुष्यपर एकाएकी चढाई नही करसक्ते तथा उस मनुष्यको अचानक बुढापा नही आसक्ता । जिस प्रकार सर्पोंका समूह गरुडपर चढाई नही करसक्ता उसी प्रकार रोगोका समूहभी उस पुरुषपर जिसने कसरत करके अपना शरीर सुखायाहै आक्रमण नही करसक्ता, बुद्धिमान् मनुष्योको चाहिय कि, आयु, बल, शरीर, देश, काल इन युक्ति और शक्तियोका भलीभाँतिसे विचारकर कसरत करें । रक्तपित्त, क्षय, शोष, खाँसी, श्वास और व्रणरोगी और भुक्तवान् तथा मैथुन करनेसे क्षीण होगये अंग जिनके यह सब कसरत न करें । वातपित्तरोगी, बालक (सोलह वर्षपर्यन्त) बूढा (सत्तर वर्षसे पीछे), अजीर्णरोगी इन सब मनुष्योको कसरत नही करनी चाहिये । अत्यन्त कसरत करनेसे रक्तपित्त, खाँसी, श्रम, थकावट, क्षय, प्यास, ज्वर, वमनादिरोग उत्पन्न होतेहै ।

अन्यच्च ।

छाया तमोऽस्रपित्तार्त्ति निहन्यात्स्निग्धशीतला ।
विशेषतो वटच्छाया बलवर्णप्रसादनी ॥

अर्थ-छाया-तम,रुधिरविकार और पित्तकी पीडाको शान्त करे है, स्निग्ध और शीतल है, विशेषकरके बडकी छाया बलकारक तथा वर्णको प्रसन्न करनेवाली है ।

यष्टिधारणगुणानाह ।

स्खलतः संप्रतिष्ठानं शत्रूणाञ्च विरोधनम् ।
अवष्टम्भनमायुष्यं भयघ्नं दण्डधारणम् ॥

अर्थ-लाठीका धारण करना-स्खलितपद प्रतिष्ठापक और शत्रु-विरोधक है तथा बलवर्द्धक और भयनाशक है ।

अन्यच्च ।

यष्टिधारणमुत्साहस्थैर्यविष्टम्भवीर्य्यकृत् ।
रक्षः सर्पादिभयजिद्विशेषात्स्थाविरे मतम् ॥ ॥

अर्थ-लाठीका धारण-उत्साह, स्थिरता,विष्टम्भ और वीर्यको उत्पन्न करे है और राक्षस तथा सर्पादिकके भयको दूर करेहै, एवं बुढापेमे हितकारी है ।

अथ व्यायामगुणाः ।

व्यायामो हि सदा पथ्यो बलिनां स्निग्धभोजिनाम्।स च शीते वसन्ते च तेषां पथ्यतमो मतः॥सर्वेष्वृतुषु सर्वैर्हि मर्त्यैरात्महितार्थिभिः।शक्त्यर्द्धेन च कर्त्तव्यो व्यायामो हन्त्यतोऽन्यथा ॥ कुक्षौ ललाटे ग्रीवायां यदा घर्मःप्रवर्त्तते।शक्त्यर्द्धं त विजानीयाद्यावदुच्छ्वासमेव च॥लाघव कर्मसामर्थ्यं स्थैर्यक्लेशसहिष्णुता । दोषक्षयोग्निवृद्धिश्च व्यायामादुपजायते ॥ व्यायामं कुर्वतो नित्य विरुद्धमपि भोजनम्। विदग्धमपि दग्धं वा निर्दोषं परिपच्यते ॥ न च व्यायामसदृशमन्यत्स्थौल्यापकर्षणम् । न च व्यायामिनं मर्त्यमर्दयन्त्यरयो बलात् ॥ न चैनं सहसाक्रम्य जरा समधिगच्छति । व्यायामक्षुण्णगात्रस्य प-

व्यामुद्वर्तितस्य च॥ व्याधयो नोपसर्पन्ति वैनतेयमिवोरगाः । वयो बलं शरीरं च देशं कालमथापि च ॥ समीक्ष्य कुर्याद्व्यायामं युक्त्या शक्त्या च बुद्धिमान् । रक्तपित्ती क्षयी शोषी कासी श्वासी क्षतातुरः ॥ भुक्तवान्स्त्रीषु च क्षीणो व्यायाम परिवर्जयेत् । वातपित्तामयी बालो वृद्धो जीर्णी च तंत्यजेत्॥ अतिव्यायामतः कासो रक्तपित्तप्रतानकः । श्रमः क्लमः क्षयस्तृष्णाज्वरश्छर्दिश्च जायते ॥

अर्थ-स्निग्धपदार्थ भक्षण करनेवाले और बलवान् मनुष्योंके लिये व्यायाम (कसरत) करना शीत और वसन्तऋतुमे ही हितकारी है परन्तु अपना हित चाहनेवाले सब मनुष्य ऋतुओंमे आधी शक्तिके अनुसार कसरत करे इससे अधिक कसरतका करना मनुष्योंको नष्ट करदेताहै । आधी शक्ति उसको कहतेहै जिसमें कोख, माथा और गर्दनसे पसीना निकलने लगे और श्वास शीघ्र आने जाने लगे । कसरत करनेसे शरीरमें लघुता, कार्य्यमे सामर्थ्य, स्थिरता और क्लेशसहिष्णुता (क्लेशका सहलेना) उत्पन्न होतीहै । दोष (वातपित्तादि) क्षय होतेहैं, अग्नि बढतीहै, नित्य कसरत करनेवाले मनुष्य विरुद्ध वस्तु, विदग्धाजीर्णकारक पदार्थ, अथवा उत्तम पदार्थ, जो कुछभी खाले: वह सब दोषरहित होकर पक जातीहै, स्थूलताका नाश करनेके लिये कसरतकी समान दूसरी कोई वस्तु नही है । शत्रुलोग कसरत करनेवाले मनुष्यपर एकाएकी चढाई नहीं करसक्ते तथा उस मनुष्यको अचानक बुढापा नही आसक्ता । जिस प्रकार सर्पोंका समूह गरुडपर चढाई नहीं करसक्ता उसी प्रकार रोगोंका समूहभी उस पुरुषपर जिसने कसरत करके अपना शरीर सुखायाहै आक्रमण नही करसक्ता, बुद्धिमान् मनुष्योंको चाहिय कि, आयु, बल, शरीर, देश, काल इन युक्ति और शक्तियोंका भलीभाँतिसे विचारकर कसरत करें । रक्तपित्त, क्षय, शोष, खाँसी, श्वास और व्रणरोगी और भुक्तवान् तथा मैथुन करनेसे क्षीण होगये अंग जिनके यह सब कसरत न करें । वातपित्तरोगी, बालक (सोलह वर्षपर्यन्त) बूढा (सत्तर वर्षसे पीछे), अजीर्णरोगी इन सब मनुष्योंको कसरत नही करनी चाहिये । अत्यन्त कसरत करनेसे रक्तपित्त, खाँसी, श्रम, थकावट, क्षय, प्यास, ज्वर, वमनादिरोग उत्पन्न होतेहैं ।

अपिच ।

सामर्थ्यं सकलक्रियासु लघुतानङ्गेषु दीप्तिः परामग्नेः पाटवमिन्द्रियेषु लघुता छेद परं मेदसः । उत्साहं मनसः शरीरदृढतां शान्तिं बलाद्व्यापदां व्यायामः शिशिरे वसन्तसमये कुर्याद्दिने सेवनम् ॥ वातामयः पित्तरुजान्वितश्च बालोऽतिवृद्धोऽतिकृशो-ऽतिजीर्णः । मन्दानलः स्निग्धपानवर्ज्या व्यायामकालेषु विवर्जनीयाः ॥ स्थाल्यां यथानावरणाननायां न घट्टितायां नच साधुपाकः । अनात्तनिद्रस्य तथा नरेन्द्र व्यायामहीनस्य न चान्नपाकः ॥

अर्थ-व्यायाम (कसरत) का करना सब कार्योंमें सामर्थ्य, शरीरमें हलकापन, देहमें प्रकाश, अग्निको दीपन, इन्द्रियोंमें लघुता, मेदाका नाश, मनमें उत्साह, शरीरमें दृढता, दुःखोंका शान्ति और बलको करे है। व्यायाम-शिशिर और वसन्त ऋतुमें करनी चाहिये। वात और पित्तरोगी, बालक, अत्यन्त वृद्ध, अत्यंत कृश और अधिक जीर्ण हुई मन्दाग्निवाला और स्निग्ध भोजन न करने वाला, इन सबको व्यायाम नहीं करनी चाहिये। जिस प्रकार बटलोईके मुखपर पात्र नहीं ढकनेसे तथा उसको करछीसे नहीं चलानेसे अन्न अच्छेप्रकारसे नहीं पकता है उसी प्रकार हे राजन्! निद्रा और व्यायाम रहितका अन्न अच्छे प्रकार नहीं पकता है।

अथ मर्दनगुणानाह ।

संवाहनं श्रमहरं वृष्यं निद्रासुखप्रदम् ।
मांसासृक्त्वक्प्रसन्नत्वं कुर्याद्वातकफापहम् ॥

अर्थ-शरीरको मर्दन करना-श्रमनाशक, धातुओंको पुष्ट करने वाला, निद्रा और सुखको देनेवाला, मांस, रुधिर और त्वचाको निर्मल करनेवाला तथा वातकफनाशक है ।

शरीरघर्षणगुणनाह ।

उद्घर्षणं रुचिकरं कण्डूकोठविनाशनम् ।
तेजनं त्वग्गतस्याग्नेः शिरामुखविरेचनम् ॥

अर्थ-शरीरको घिसनेसे दृष्टि बढती है तथा कण्डू और कोढरोग दूर होता है, त्वचामें स्थित जो अग्नि उसके तेजकी वृद्धि होती है और शिराओंमें सुखकी वृद्धि होती है।

पथभ्रमणगुणमाह।

अध्वा मेदःकफस्थौल्यसौकुमार्यविनाशनः।

अर्थ-पथभ्रमण करनेसे मेद, कफ, स्थूलता और सुकुमारता नष्ट होती है।

अतिभ्रमणगुणः।

यत्तु चंक्रमणं नातिदेहपीडाकरं भवेत्।
तदायुर्बलमेधाग्निप्रदमिन्द्रियबोधनम्॥

अर्थ-जिस भ्रमण करनेसे शरीरमें क्लान्ति उत्पन्न न होवै उस भ्रमणसे आयु, बल, मेधा और अग्निकी वृद्धि होती है और इन्द्रियोंमें प्रफुल्लता उत्पन्न होती है।

पादुकाधारणगुणाः।

पादत्रधारणं वृष्यमोजस्यं चक्षुषोर्हितम्।
सुखप्रचारमायुष्यं बल्यं पादरुजापहम्॥

अर्थ-पादुकाधारण अर्थात् जूतेके पहिरनेसे वीर्य्य और ओजकी वृद्धि होती है, नेत्रोंको हितकारी, गमनके समय सुखकारी, आयु और बलवर्द्धक तथा पाँवोंकी पीडाको दूर करे है।

अधारणे दोषा यथा।

पादाभ्यामनुपानद्भ्यां नृणां चंक्रमणं सदा।
अनारोग्यमनायुष्यमिन्द्रियघ्नमदृष्टिकृत्॥

अर्थ-सर्वदा विनाजूतेके भ्रमणसे अर्थात् नंगे पाँवों फिरनेसे आरोग्यता, आयु, इन्द्रिय और दृष्टिशक्ति नाश होती है।

हस्त्यादिगमनगुणाः।

हस्त्यश्वरथदोलाद्यैर्भ्रमणं वातकोपनम्।
स्थिरीकरणमंगानां बल्यं वह्निविवर्द्धनम्॥

अर्थ-हस्ती, अश्व, रथ और डोलाआदिमें चढकर भ्रमण करनेसे वात कुपित होती है, सम्पूर्ण अंग स्थिर होते हैं, बल बढता है और जठराग्नि बढती है।

विश्रामगुणा ।

विश्रामो बलकृत्स्वेदश्रमनुत्सौस्थ्यदः शुभः ॥

अर्थ-विश्राम अर्थात आराम करना-बलकारक तथा स्वेद, श्रम इनको दूर करनेवाला और सुस्थता तथा मंगलजनक है ।

पादप्रक्षालनगुणा ।

पादप्रक्षालनं पादमलरोगश्रमापहम् ।
दृष्टिप्रसादनं वृष्य रौक्ष्यघ्न प्रीतिवर्द्धनम् ॥

अर्थ-पाँवोको धोनेसे पैरोका मैल, पैरोका रोग और श्रम दूर होता है, दृष्टिशक्तिको प्रसन्न करे है,वीर्य्यवर्द्धक,रूक्षतानाशक और प्रीतिवर्द्धक है ।

प्राग्वातगुणानाह ।

प्राग्वातो मधुरः क्षारो वह्निमांद्यकरो गुरुः । वैरस्यगौरवोष्णाशाम्भिकरोप्स्वौषधीषु च ॥ भग्नेऽपीष्टः क्षताद्येषु स्रावश्वयथुरोगकृत् । सन्निपातज्वरश्वासत्वग्दोषार्शोविषक्रिमीन् ॥ कोपयेदामवातश्च घनसंघातकारकः ॥

अर्थ-पूर्वदिशाकी पवन अर्थात पुरवाई हवा-मधुर,खारी,मन्दाग्निकारक, भारी औषधि और जलमे विरसता, गुरुता और उष्णता करनेवाली,भग्न और क्षतादि रोगोमे हितकारी, नासास्राव,सुजन, सन्निपातज्वर, श्वास, त्वचाके विकार, बवासीर,विष, कृमि और आमवातादि रोगोको बढानेवाली और मेघको संचय करे है ।

तथा च ।

शीतोऽतिमाधुर्य्यगुणः प्रयुक्तो वातप्रकोपी बलकृद्विशेषात् ।
वाताधिकानां व्रणशोफिना च प्राचीप्रवृत्तः पवनो न शस्तः ॥

अर्थ-पूर्वदिशाकी पवन-शीतल, अत्यन्त मधुरतायुक्त, वातको कुपित करनेवाली,बलकारक यह वायु जिनके शरीरमे वात अधिकतर होवे तथा व्रण शोफरोगवालोको अहितकारी है ।

आग्नेयपवनगुणा ।

किञ्चित्सतिक्तो मधुरान्वितः स्यात्कफः समीरोद्भवरोगकारी ।
सुशीतलः शोफवता व्रणानां शस्तो न चाग्नेयसमीरणश्च ।

अर्थ-अग्निकोणकी पवन- कुछ २ कडवी, मधुररसान्वित, कफ और वातसे उत्पन्न हुये रोगोंको करनेवाली, शीतल और सूजन युक्त व्रणोंको अहितकारी है ।

दक्षिणमारुतगुणा ।

दाक्षिणो मारुतो बल्यश्चक्षुष्यः सस्यघातकः । मधुरश्च वि-
दाही च कषायान्तरसो लघुः ॥ रक्तपित्तप्रशमनो न च मा-
रुतकोपनः । गण्डूपदादिकीटानां जनकः प्राणकारकः ॥

अर्थ-दक्षिणदिशाकी पवन-बलकारक, नेत्रोंको हितकारी, खेतीका नाश करनेवाली, मधुर, दाहजनक, अन्न और पानीमें कषेले रसको उत्पन्न करनेवाली, हलकी, रक्तपित्तनाशक, परंतु वातको कुपित करनेवाली नहीं है, गण्डूपदादि कीडोंको उत्पन्न करनेवाली और आयुवर्द्धक है ।

ग्रन्थान्तरे ।

तिक्तः कषायो मधुरोऽतिमन्दः सुगंधसंशीतगुणैः प्रकृष्टः ।
वदन्ति संज्ञां मलयानिलेति प्रकृष्टरामाजनचित्तहारी ॥
मनोभवस्य प्रकरो मरुत्स्यात्कफोद्भवः सम्भवति प्रचारः ।
न चातिशीतो न तथोष्णको वा शुभश्च याम्यां प्रभवः समीरः ।

अर्थ-दक्षिण दिशाकी पवन-कडवी, कषेली, मधु, अत्यन्त मंद, सुगंध, शीतल, मलयानिलसंज्ञक अर्थात् मलयाचलकी पवन स्त्रियोंके चित्तको हरनेवाली, कामदेवको दीपन करनेवाली, कफसे उत्पन्नहुये रोगोंको करनेवाली, न अत्यन्त शीतल, न अत्यन्त उष्ण और शुभ है ।

नैर्ऋत्यमारुतगुणा ।

रूक्षोष्णवातप्रशमः समीरः कट्वम्लपित्तासृजिदोपकारी ॥
प्रशोषणो देहबलस्य वायुः कफान्वितो नैर्ऋतिकः समीरः ॥

अर्थ-नैर्ऋत्यकोणकी पवन-रूखी, गरम, वातको शात करनेवाली, चरपरी, खट्टी, पित्त और रुधिरको कुपित करनेवाली, मनुष्योंके देहके बलको शोषणकर्त्ता और कफसंयुक्त है ।

पश्चिमपवनगुणा ।

पश्चिमोऽग्निवपुर्वर्णबलारोग्यविवर्द्धनः । कषायः शोषणः स्व-
र्य्यो रोचनो विशदो लघुः ॥ अपां लघुत्ववैशद्यशैत्यवैम-

अर्थ-ईशान दिशाकी पवन-शीतल, अत्यन्त गौल्य, कफवातको कुपित करनेवाली तथा व्रण, सूजन, खाँसी, क्षय और श्वासरोगवालोको हितकारक नहीं है।

नीहारादिसंयुक्तवायुगुणा।

शीताधिकः सनीहारः सविद्युत्स्तनयित्नुवान्॥

अर्थ-तुषार अथवा बर्फ-बिजली और मेघसंयुक्त पवन-अत्यन्त शीतल है।

विष्वग्वायुगुणा।

विष्वग्वायुरनायुष्यः प्राणिनां नैकदोषकृत्।
सर्वर्तुलिंगको हन्ता हृद्योत्पातपुरःसरः॥

अर्थ-विष्वग्वायु अर्थात् घूमताहुआ बबूला प्राणियोकी आयुनाशक, त्रिदोषकोपक, सबऋतुओंका लक्षणकारक, प्राणनाशक और हृदयमें उद्वेग उत्पन्न करे है।

व्यजनानिलगुणा।

मूर्च्छास्वेदतृषादाहश्रमघ्नो व्यजनानिलः॥

अर्थ-पखेकी पवन-मूर्च्छा, पसीना, तृषा, दाह और श्रमनाशक है।

तालपत्रवायुगुणा।

तालपत्रकरम्भाया दलस्य व्यजनो हिमः। मधुरोऽतिश्रमघ्नः स्यादार्द्रत्वात्कफकोपनः॥ निद्राकरः प्रीतिकरः शोकरोगविकारहा। दाहपित्तश्रमग्लानिनाशनो भ्रमशान्तिकृत्॥

अर्थ-ताडके पत्ते और केलेके पत्तोंके पखेकी पवन-शीतल, मधुर, अत्यन्त श्रमनाशक, आर्द्रपनसे कफको कुपित करनेवाली, निद्राजनक, प्रीतिकारक, रोगशोकादिको दूर करनेवाली तथा दाह, पित्त, परिश्रम, ग्लानि और भ्रमको दूर करनेवाली है।

अन्यच्च।

तालवृन्तभवो वातस्त्रिदोषशमनो लघुः॥

अर्थ-ताडके पखेकी पवन-त्रिदोषनाशक और हलकी है।

वंशव्यजनवायुगुणा।

वंशव्यजनजो वातो रूक्षोष्णो वातपित्तदः॥

अर्थ-बाँसके पंखेकी पवन-रूखी, गरम और वातपित्तकारक है।

ल्यकारकः। सर्वद्रव्येष्वभिव्यक्तप्रभावरसवीर्य्यकृत् ॥ व्रणसं-
रोपणस्त्वच्यो दाहशोथतृषापहः ॥

अर्थ-पश्चिमदिशाकी पवन-अग्नि, शरीर, वर्ण, बल और आरोग्यताको बढानेवाली है, कषेली, शोषण, स्वरको सुधारनेवाली, रुचिकारक, विशद, हलकी, निर्मल, जलमें लघुता, श्वेतवर्णता, शीतलता और निर्मलताकारक है, सर्वद्रव्योमे व्यक्तप्रभाव रस और वीर्यजनक है व्रणको सुखानेवाली, त्वचाको सुंदर करनेवाली तथा दाह, सूजन और तृषाको हरनेवाली है ।

वायव्यपवनगुणाः ।

वायव्यजातो मरुतः प्रशस्तः कषायसंशुष्कगुणप्रसन्नः ।
करोति वातस्य वशं नराणां शस्तो न निंद्यो व्रणशोफिनाञ्च॥

अर्थ-वायव्यकोणकी पवन-श्रेष्ठहै, कषेली और शुष्कगुणवाली है, मनुष्योको पवनके वश करती है, व्रणशोफवालोंको हितकारी है, निंदित नहीं है ।

उत्तरवायुगुणा ।

औत्तरो मारुतः स्निग्धो मृदुर्मधुर एव च।कषायान्नरसः शीतः
सर्वदोषप्रकोपनः ॥क्षीणक्षतविषार्त्तानां हितो दाहतृषापहः ।

अर्थ-उत्तरदिशाकी पवन-स्निग्ध, मृदु, मधुर, अन्न और जलमें कषायरसको उत्पन्न करनेवाली, शीतल, सर्वदोषोंको कुपित करनेवाली तथा क्षीण, क्षत और विषसे पीडित मनुष्योंको हितकारी, दाह और तृषाको हरनेवाली है ।

मतान्तरम् ।

स्वादुः कषायश्च कफप्रकोपी वायुः कुबेरस्य दिशः प्रवृत्तः ।
करोति मेघागमनं जलस्य शीतो न चोष्णो न च निन्द्य एषः॥

अर्थ-उत्तर दिशाकी पवन-स्वादिष्ठ, कषेली, कफको कुपित करनेवाली, सजलमेघोंको लानेवाली, शीतल, न निन्द्य और न गरम है ।

ऐशानवायुगुणा ।

शीतोतिगौल्यः कफवातकोपं करोति चैशानदिशः प्रवृत्तः ।
शस्तश्च नासौ व्रणशोफकासक्षये तथा श्वासविकारिणाञ्च ॥

अर्थ-ईशान दिशाकी पवन-शीतल, अत्यन्त शैत्य, कफवातको कुपित करनेवाली तथा व्रण, सूजन, खाँसी, क्षय और श्वासरोगवालोको हितकारक नहीं है।

नीहारादिसंयुक्तवायुगुणाः।

शीताधिकः सनीहारः सविद्युत्स्तनयित्नुवान् ॥

अर्थ-तुषार अथवा वर्फ-बिजली और मेघसंयुक्त पवन-अत्यन्त शीतल है।

विष्वग्वायुगुणाः।

विष्वग्वायुरनायुष्यः प्राणिनां नैकदोषकृत्।
सर्वर्तुलिंगको हन्ता हृद्योत्पातपुरःसरः ॥

अर्थ-विष्वग्वायु अर्थात् घूमताहुआ बबूला प्राणियोंकी आयुनाशक, त्रिदोषकोपक, सबऋतुओंका लक्षणकारक, प्राणनाशक और हृदयमें उद्वेग उत्पन्न करे है।

व्यजनानिलगुणाः।

मूर्च्छास्वेदतृषादाहश्रमघ्नो व्यजनानिलः ॥

अर्थ-पंखेकी पवन-मूर्च्छा, पसीना, तृषा, दाह और श्रमनाशक है।

तालपत्रवायुगुणाः।

तालपत्रकरम्भाया दलस्य व्यजनो हिमः। मधुरोऽतिश्रमघ्नः स्यादार्द्रत्वात्कफकोपनः ॥ निद्राकरः प्रीतिकरः शोकरोगविकारहा। दाहपित्तश्रमग्लानिनाशनो भ्रमशान्तिकृत् ॥

अर्थ-ताडके पत्ते और केलेके पत्तोके पंखेकी पवन-शीतल, मधुर, अत्यन्त श्रमनाशक, आर्द्रपनसे कफको कुपित करनेवाली, निद्राजनक, प्रीतिकारक, रोगशोकादिको दूर करनेवाली तथा दाह, पित्त, परिश्रम, ग्लानि और भ्रमको दूर करनेवाली है।

अन्यच्च।

तालवृन्तभवो वातस्त्रिदोषशमनो लघुः ॥

अर्थ-ताडके पंखेकी पवन-त्रिदोषनाशक और हलकी है।

वंशव्यजनवायुगुणाः।

वंशव्यजनजो वातो रूक्षोष्णो वातपित्तदः ॥

अर्थ-बाँसके पंखेकी पवन-रूखी, गरम और वातपित्तकारक है।

अन्यच्च ।

वैणव व्यजनं तन्द्रानिद्राकरणमेव च ।
रूक्षोऽतिकषायरसो न च वातप्रकोपनः ॥

अर्थ-बाँसके पंखेके पवन-तन्द्रा और निद्राको उत्पन्न करेहै, रूखी, अत्यंत कषेली और वातको कुपित करनेवाली नहीं है ।

उशीरमूलादिव्यजनगुणाः ।

उशीरमूलरचितं व्यजनं शिखिपिच्छकैः ।
व्यजनेन सुगधः स्यान्मन्दशीतगुणात्मकः ॥
ग्लानिमूर्च्छाभ्रमशोषविसर्पविषदर्पहा ।

अर्थ-खस और मोरके परोंसे बनायेहुए पंखेकी पवन-सुगंधिकारक, मंद, शीतल तथा ग्लानि, मूर्च्छा, भ्रम, शोष, विसर्प, विष इनको दूर करे है ।

वालव्यजनवायुगुणाः ।

वालव्यजनमोजस्यं मक्षिकादीन्व्यपोहति ॥

अर्थ-चमरचमरी आदिकी वायु ओजवर्द्धक और मक्खीआदिको दूर करे है ।

मयूरपक्षादिनिर्मितव्यजनवायुगुणाः ।

मायूरा वस्त्रजा वैत्रा वाता दोषत्रयापहाः ॥

अर्थ-मोरके पक्ष, वस्त्र और वेतके पंखेकी पवन, त्रिदोषनाशक है ।

ऋतुविशेषवायुगुणाः ।

शिशिरे पूर्वकृद्वायुराग्नेयो हेमन्ते मरुत् । वसन्ते दक्षिणो वायुर्ग्रीष्मे नैर्ऋत्यकस्तथा ॥ वर्षासु पश्चिमो वायुर्वायव्यः शरदि स्मृतः । शिशिरे च हेमन्ते च कथितश्चोत्तरोऽनिलः ॥ अपराह्णे वर्षा वदन्ति निपुणास्तस्मिन्निशीथे शरत्प्रोक्तः शैशिरिकस्ततो हिमऋतुः सूर्योदयादग्रतः । मध्याह्ने च तथा वदन्ति निपुणा ग्रीष्मो ऋतु स्यात्ततो वासन्तः कथितो ऋतुस्तु मुनिभिः पूर्वापराह्णे सदा ॥

अर्थ-शिशिरऋतुमे पूर्वकी पवन उत्तम है, वसंतऋतुमें दक्षिणकी पवन, ग्रीष्मऋतुमें नैर्ऋत्यकोणकी पवन, वर्षाऋतुमे पश्चिमकी पवन और शरदृऋतुमे वायव्यकोणकी पवन उत्तम है। शिशिर और वसंतऋतुमे उत्तरकी पवन भी श्रेष्ठ है। दिनके तीसरे पहरको वर्षाऋतु, अर्धरात्रि शरदृऋतु, आधीरातके पश्चातको शिशिरऋतु, सूर्योदयके समयको हेमंतऋतु, दुपहरके समयको ग्रीष्मऋतु और दिनके पूर्वभागको वसन्तऋतु कहते हैं।

अभ्यंगगुणा।

वातव्याधिं हरति कुरुते सर्वगात्रेषु पुष्टिं दृष्टिं मन्दामपि वितनुते वैनतेयोपमां च। निद्रां सौख्यं जनयति जरां हंति शक्तिं विधत्ते धत्ते कांतिं कनकसदृशीं नित्यमभ्यंगयोगात् ॥

अर्थ-सदैव शरीरमे तेलको मलनेसे वातरोग दूर होता है, सम्पूर्ण अंग पुष्ट होता है, गरुडके समान दृष्टि होजाती है, निद्रा और सुख उत्पन्न होता है, बुढापा दूर होता है, शरीरमे शक्ति उत्पन्न होती है और सुवर्णके समान वर्ण होजाता है।

पादाभ्यंगगुणाः।

पादाभ्यंगोऽथ निद्राकृच्चक्षुष्यः पादरोगहा। चक्षुषि प्रतिरंध्रे द्वे शिरे पादगते नृणाम्॥ अतश्चक्षुःप्रसादार्थी पादाभ्यगं समाचरेत्।

अर्थ-पावोमे तेलको मलना-निद्राजनक, नेत्रोको हितकारी, पांवोके रोगोको हरनेवाला है। नेत्रोके दोनो छिद्रोमे जो दो शिरा है वह दोनो शिरा पावोमे लगीहुई है इसकारण पावोमें तेलको मलना नेत्रोको हितकारी है अतएव नेत्रोंका हित चाहनेवाले मनुष्य सदैव पावोमे तेलका मर्दन करे।

अभ्यंगवर्जितजना।

वर्ज्योऽभ्यंगः कफग्रस्तस्नानसंशुद्धाजीर्णिभिः॥

अर्थ-कफग्रस्त, स्नानादिसे शुद्ध हुवा और अजीर्णरोगवाले मनुष्यको तैलादिका मर्दन करना निषेध है।

अवगाहनयुक्ततैलगुणा।

स्नेहोऽवगाहने युक्तः शरीरे बलमाहरेत् ॥

अर्थ-शरीरमें तेलको मलकर जलमे डूबकर स्नान करनेसे शरीरमे बल उत्पन्न होता है ।

तैलमर्दनविधि ।

शिखामुखै रोमकूपैर्धमनीभिश्च तर्पयेत् ॥

अर्थ-शरीरमे इस प्रकारसे तेलको मले जिससे बालोकी जडमे रोमकूपोमे और शिराओमे तेल प्रवेश होजाय ।

शिरस्तितैलमर्दनगुणा ।

नित्यं स्नेहार्द्रशिरसः शिरःशूलं न जायते। न खालित्यं न पालित्यं न केशाः प्रपतन्ति च ॥ दृढमूलाश्च कृष्णाश्च भवन्ति च घनायताः । इन्द्रियाणि प्रसीदन्ति सुदृग्भवति लोचनम्॥

अर्थ-जो मनुष्य रोजरोज तेलसे शिरको मलतेहै, उनके शिरमें शूलरोग कदापि उत्पन्न नही होता है, यथा केशोकी अल्पता पकता और केश पतित नही होते हे और केश दृढमूलयुक्त, कृष्ण और अत्यन्त सघन होजाते है इन्द्रियोमे प्रसन्नता और नेत्रोंमे सुदृश्यता उत्पन्न होती है ।

कर्णतैलपूरणगुणा ।

कर्णप्रपूरणान्नित्यं न मन्या न हनुग्रहाः ॥

नोच्चैः श्रुतिर्न बाधिर्य्यं न कर्णे वातजा रुजः ॥

अर्थ-जो मनुष्य-प्रतिदिन कानोमे तेल डालते हैं उनके मन्यास्तम्भ, हनुग्रह, ऊंचा सुनना, बधिरता और वातसे उत्पन्न हुए कर्णरोग नही होतेहै ।

उद्वर्त्तनगुणा ।

उद्वर्त्तनं वातहर कफमेदोनिलापहम् । स्थिरीकरणमङ्गानां त्वक्प्रसादकरं परम् ॥ उद्वर्त्तनं हरिद्राद्यैः कण्डूवैवर्ण्यरौक्ष्यजित् । तिलेनोद्वर्त्तनं कण्डूरौक्ष्यत्वग्दोषनाशनम् ॥

अर्थ-तेल लगानेके पश्चात् उबटन करना, वातरोग, कफ, मेद और वायुको दूर करेहै, शरीरमे स्थिरता और त्वचामे निर्मलता करेहै, हरिद्रादिकके द्वारा उबटन करनेसे-कण्डू, विवर्णता और रूक्षता नाश होती है और तिलोके द्वारा उबटन करनेसे-खुजली, रूखापन और त्वचाके विकार नष्ट होते है ।

अन्यच्च ।

स्यादुद्वर्त्तनमङ्गकान्तिजननं मेदःकफालस्यजित् ।

अर्थ-उबटन-शरीरमे कान्तिजनक तथा मेद, कफ और आलस्यको दूर करे है।

मुखप्रलेपगुणा।

मुखलेपाद्दृढं चक्षुः पीनो गंडस्तथाननम्।
कान्तमव्यंगपिडकं भवेत्कमलसन्निभम्॥

अर्थ-मुखपर लेप करनेसे नेत्र पुष्ट होतेहैं, कपोल दृढ होतेहै और मुख कान्तिसंयुक्त झाँई और मुहासे रहित तथा कमलके समान निर्मल होजाता है।

अथ स्नानगुणमाह।

स्नानं पवित्रमायुष्यं श्रमस्वेदमलापहम्।
शरीरबलसन्धानं केश्यमोजस्करं परम्॥

अर्थ-स्नान करनेसे शरीरमे पवित्रता उत्पन्न होतीहै, आयुकी वृद्धि होतीहै तथा परिश्रम, पसीना और मैल दूर होता है, बल बढताहै, केशोकी और तेजकी वृद्धि होती है।

उष्णाम्बुना स्नानगुणमाह।

उष्णाम्बुनाधःकायस्य परिषेकः सुखावहः। तेनैव तूत्तमाङ्गस्य बलघ्नं केशचक्षुषोः॥ विनिहन्ति शिरःस्नानं तृष्णाताल्वास्यशोषणम्। मलोष्णपिडिकाकण्डूशिरोरोगांश्च पित्तजान्॥

अर्थ-उष्णजलसे आधे शरीरको धोनेसे सुखकी वृद्धि होतीहै और गरम पानीके द्वारा शिरसे स्नान करनेसे केशोका और नेत्रोका बल कम होताहै तथा तृष्णा, तालुशोष, मुखशोष कुपितमल (वातपित्त और कफका कुपित होना) शरीरकी गरमी, पिडका, कण्डू, मस्तकरोग और पित्तसे उत्पन्न हुए रोग दूर होतेहै।

तथाच।

नैर्मल्य वपुषः करोति कुरुते निष्पापमूर्त्तिपरां पुण्य वर्द्धयति त्वचं रचयते वर्णप्रभां कोमलाम्। कंडूं हन्ति रतिश्रमं विघटयत्यगेषु सौख्यप्रदं शुक्रौजोवलवर्द्धनं रतिकरं स्नानं सुखोष्णांभसा॥

अर्थ-सुखसहित उष्णजलसे स्नान करनेसे-शरीर निर्मल होता

अर्थ-शरीरमें तेलको मलकर जलमे डूबकर स्नान करनेसे शरीरमे बल उत्पन्न होता है ।

तैलमर्दनविधि ।

शिखामुखै रोमकूपैर्धमनीभिश्च तर्पयेत् ॥

अर्थ-शरीरमे इस प्रकारसे तेलको मले जिससे बालोंकी जडमे रोमकूपोमे और शिराओमे तेल प्रवेश होजाय ।

शिरस्थितैलमर्दनगुणा ।

नित्यं स्नेहार्द्रशिरसः शिरःशूलं न जायते । न खालित्यं न पालित्यं न केशाः प्रपतन्ति च ॥ दृढमूलाश्च कृष्णाश्च भवन्ति च घनायताः । इन्द्रियाणि प्रसीदन्ति सुदृग्भवति लोचनम् ॥

अर्थ-जो मनुष्य रोजरोज तेलसे शिरको मलतेहैं, उनके शिरमें शूलरोग कदापि उत्पन्न नही होता है, यथा केशोंकी अल्पता पकता और केश पतित नही होते है और केश दृढमूलयुक्त, कृष्ण और अत्यन्त सघन होजाते है इन्द्रियोमे प्रसन्नता और नेत्रोंमे सुदृश्यता उत्पन्न होती है ।

कर्णतैलपूरणगुणा ।

कर्णप्रपूरणान्नित्यं न मन्या न हनुग्रहाः ॥
नोच्चैः श्रुतिर्न बाधिर्य्यं न कर्णे वातजा रुजः ॥

अर्थ-जो मनुष्य-प्रतिदिन कानोमे तेल डालते है उनके मन्यास्तम्भ, हनुग्रह, ऊंचा सुनना, बधिरता और वातसे उत्पन्न हुए कर्णरोग नही होतेहै ।

उद्वर्त्तनगुणा ।

उद्वर्त्तनं वातहरं कफमेदोनिलापहम् । स्थिरीकरणमंगानां त्वक्प्रसादकरं परम् ॥ उद्वर्त्तनं हरिद्राद्यैः कण्डूवैवर्ण्यरौक्ष्यजित् । तिलेनोद्वर्त्तनं कण्डूरौक्ष्यत्वग्दोपनाशनम् ॥

अर्थ-तेल लगानेके पश्चात् उबटन करना, वातरोग, कफ, मेद और वायुको दूर करेहै, शरीरमे स्थिरता और त्वचामे निर्मलता करेहै, हरिद्रादिकके द्वारा उबटन करनेसे-कण्डू, विवर्णता और रूक्षता नाश होती है और तिलोके द्वारा उबटन करनेसे-खुजली, रूखापन और त्वचाके विकार नष्ट होते है ।

अन्यच्च ।

स्यादुद्वर्त्तनमंगकांतिजनकं मेदःकफालस्यजित् ।

अर्थ-उबटन-शरीरमें कान्तिजनक तथा मेद, कफ और आलस्यको दूर करे है ।

मुखमलेपगुणा ।

मुखलेपाद्दृढं चक्षुः पीनो गंडस्तथाननम् ।
कान्तमव्यंगपिडकं भवेत्कमलसन्निभम् ॥

अर्थ-मुखपर लेप करनेसे नेत्र पुष्ट होतेहैं, कपोल दृढ होतेहैं और मुख कान्तिसंयुक्त झांई और मुहासे रहित तथा कमलके समान निर्मल होजाता है ।

अथ स्नानगुणमाह ।

स्नानं पवित्रमायुष्यं श्रमस्वेदमलापहम् ।
शरीरबलसन्धानं केश्यमोजस्करं परम् ॥

अर्थ-स्नान करनेसे शरीरमें पवित्रता उत्पन्न होतीहै, आयुकी वृद्धि होतीहै तथा परिश्रम, पसीना और मैल दूर होता है, बल बढताहै, केशोंकी और तेजकी वृद्धि होती है ।

उष्णाम्बुना स्नानगुणमाह ।

उष्णाम्बुनाधःकायस्य परिषेकः सुखावहः । तेनैव तूत्तमाङ्गस्य बलघ्नं केशचक्षुषोः॥ विनिहन्ति शिरःस्नानं तृष्णाताल्वास्यशोषणम् ।मलोष्णपिडिकाकण्डूशिरोरोगांश्च पित्तजान् ॥

अर्थ-उष्णजलसे आधे शरीरको धोनेसे सुखकी वृद्धि होतीहै और गरम पानीके द्वारा शिरसे स्नान करनेसे केशोंका और नेत्रोंका बल कम होताहै तथा तृष्णा, तालुशोष, मुखशोष कुपितमल (वातपित्त और कफका कुपित होना) शरीरकी गरमी, पिडका, कण्डू, मस्तकरोग और पित्तसे उत्पन्न हुए रोग दूर होतेहैं ।

तथाच ।

नैर्मल्यं वपुषः करोति कुरुते निष्पापमूर्त्तिपरां पुण्यं वर्द्धयति त्वचं रचयते वर्णप्रभां कोमलाम् । कंडूं हन्ति रतिश्रमं विघटयत्यगेषु सौख्यप्रदं शुक्रौजोबलवर्द्धन रतिकरं स्नानं सुखोष्णांभसा ॥

अर्थ-सुखसहित [illegible] स्नान करनेसे-शरीर निर्मल होता

है, पाप दूर होताहै, पुण्यकी वृद्धि होतीहै, त्वचाका रंग उत्तम होता है, वर्ण, कान्ति और कोमलता उत्पन्न होतीहै, खुजली दूर होतीहै, रतिका श्रमनाश होताहै, अंगोमे सुख उत्पन्न होताहै, वीर्य, ओज और बलकी वृद्धि होतीहै और शक्ति उत्पन्न होतीहै ।

द्रव्यविशेषेण स्नानगुणमाह ।

मधुकामलकैः स्नानं पित्तघ्नं तिमिरापहम् ।
स्नानं वचाघनैरिष्टं श्लेष्मघ्नं तिमिरापहम् ॥
स्नानं कृष्णतिलैश्चापि चक्षुष्यमनिलापहम् ।

अर्थ-मुलैठी और आमलेको मलकर स्नान करनेसे पित्त और तिमिररोग दूर होताहै, वचा और नागरमोथेको मलकर स्नान करनेसे कफ और तिमिररोग नाश होताहै, काले तिलोको मलके स्नान करनेसे नेत्रोंकी दृष्टि बढती है और वायु नष्ट होताहै ।

स्नानस्यविशेषगुणमाह ।

अस्नातस्य शरीरस्य उष्मा सर्वांगगोचरम् ।
स्नानेनैकत्वमायाति तेन दीप्यति पावकः ॥

अर्थ-नही स्नान करनेसे-अग्न्याशयमे स्थित अग्नि सर्वागमे फैल जातीहै, वही अग्नि स्नानके द्वारा एकत्रित होकर मनुष्योकी अग्नि दीपन होतीहै ।

स्नाननिषिद्धमना ।

स्नानमर्दितनेत्रास्यकर्णरोगातिसारिषु ।
आध्मानपीनसाजीर्णभुक्तवत्सु च गर्हितम् ॥

अर्थ-अर्दित, नेत्र, मुख और कर्णरोगमे, अतीसार, आध्मान, पीनस, अजीर्णादि रोगोमे तथा भोजनके अंतमे स्नान करना निषेध है ।

शरीरमार्जनगुणा ।

दौर्गन्ध्य गौरवं कण्डू कच्छू मलमरोचकम् ।
स्वेदबीभत्सतां हन्ति शरीरपरिमार्ज्जनम् ।

अर्थ-वस्त्रादिकसे शरीरको मार्ज्जन करनेसे-दुर्गधता, भारीपन, खुजली, कच्छू, मल, अरुचि, पसीना और घृणा दूर होतीहै ।

वस्त्रधारणगुणा ।

कौशेयौर्णिकवस्त्र च रक्तवस्त्रं तथैव चावातश्लेष्महर तत्तु शी-

तकाले विधारयेत् ॥मेध्यं सुशीतं पित्तघ्न कषाय वस्त्रमुच्यते। तद्धारयेदुष्णकाले तत्रापि लघु शस्यते॥शुक्लं तु शुभदं वस्त्रं शीतातपनिवारणम्।न चोष्णं न च वा शीतं तत्तु वर्षासु धारयेत्। यशस्यं काम्यमायुष्यं श्रीमदानन्दवर्द्धनम्। त्वच्य वशीकरं रुच्यं नवनिर्मलमम्बरम् ॥ कदापि न जनैः सद्भिर्धार्य्यं मलिनमम्बरम् । तत्तु कण्डूकृमिकरं ग्लान्यलक्ष्मीकरं परम् ॥

अर्थ-रेशमी,ऊनी और लाल रगके वस्त्र-वात और कफको दूर करे है इस कारण इनको शीतकालमे पहिरना चाहिये। लाल,पीले आदि मिश्रित रंगके बारीक वस्त्र पवित्र, शीतल और पित्तको दूर करे है इनको ग्रीष्मकालमे पहिरे इनमे जहांतक होसके बहुत महीने पहिरे। सफेद वस्त्र-मंगलकारक, शीत और धूपको दूर करनेवाले है। न यह गरमहै और न यह शीतलहै इस कारण वर्षाऋतुमे धारण करना चाहिये। नवीन और निर्मल वस्त्र-यशको देनेवाले, कामदेवको बढानेवाले, आयुको बढानेवाले, लक्ष्मीको देनेवाले, आनन्दवर्द्धक, त्वचाको उत्तम करनेवाले,वशीकरण और रुचिकारक है। श्रेष्ठ पुरुष कभीभी मलिन अर्थात् मैले वस्त्रोको नही पहिने, क्योकि इनको पहिननेसे-खुजली, कृमिरोग, ग्लानि और अलक्ष्मी अर्थात् दरिद्रता आती है।

रत्नाभरणधारणगुणा ।

धन्यं माङ्गल्यमायुष्यं श्रीमद्व्यसनसूदनम् ।
हर्षणं काम्यमौजस्यं रत्नाभरणधारणम् ॥

अर्थ-रत्नाभरणका धारण-धन,मंगल, आयु और लक्ष्मीवर्द्धक है। व्यसननाशक तथा हर्ष, काम और ओजवर्द्धक है।

गुर्वादर्च्चनगुणा ।

स्वर्ग्यं यशस्यमायुष्यमलक्ष्मीकविनाशनम् ।
धनधान्यकरं नित्यं गुरुदेवद्विजार्चनम् ॥

अर्थ-गुरु और देवादिका पूजन-स्वर्ग, यश और आयुको देनेवाला है। अलक्ष्मीनाशक तथा धन और धान्यवर्द्धक है।

दर्पणगुणा ।

दर्पणं श्रीमदायुष्यं पापोपशमनं परम् ।

अर्थ-दर्पणमे मुख देखनेसे-लक्ष्मी और आयुकी वृद्धि होती है तथा पापका नाश होता है ।

अनुलेपनगुणाः ।

प्रीत्योजोवर्द्धनं वृष्यं स्वेददौर्गंध्यनाशनम् ।
तन्द्रातापोपशमन श्रमघ्नमनुलेपनम् ॥

अर्थ-शरीरमे सुगंधादि वस्तुओका लेप करनेसे-हर्ष, ओज और वीर्य्यकी वृद्धि होती है तथा पसीना, दुर्गंध, तन्द्रा, ताप और श्रम दूर होता है ।

अन्यच्च ।

अनुलेपस्तृषामूर्च्छादुर्गंधस्वेददाहजित् ।
सौभाग्यतेजस्त्वग्वर्णप्रीत्योजोबलवर्धनः ॥
स्नानानर्हलोकानामनुलेपोऽपि नो हितः ॥

अर्थ-चंदनादिका लगाना-तृषा, मूर्च्छा, दुर्गंध, पसीना और दाहको दूर करे है, सौभाग्य, तेज, त्वचाका वर्ण, प्रीति, ओज और बलवर्द्धक है जिनको स्नान करना निषेध है उनको चंदनादिकाभी लगाना निषेध है ।

पुष्पादिधारणगुणाः ।

सुगंधिपुष्पपत्राणां धारणं कांतिकारणम् ।
पापरक्षोग्रहहरं कामदं श्रीविवर्धनम् ॥

अर्थ-सुगंधित पुष्पपत्रादिका धारण-कांतिजनक, पाप, राक्षस और ग्रहबाधाको दूरकरनेवाला, कामोद्दीपन और लक्ष्मीको बढानेवाला है ।

भोजनादौ लवणार्द्रकादिभक्षणगुणाः ।

भोजनाग्रे सदा पथ्य जिह्वाकंठविशोधनम्।अग्निसंदीपन हृद्यं लवणार्द्रकभक्षणम्॥आयुर्घृते गुडे रोगो मृत्युर्लीनो विदाहिषु । आरोग्य कटुतिक्तेषु बलं मांसे पयःसु च ॥

अर्थ-भोजनसे पहिले सेंधवानिमकके साथ अद्रखका खाना सदैव पथ्यहै, जिह्वा और कंठको शुद्ध करेहै, हृदयको हितकारी और अग्निप्रदीपक है । भोजनसे पहिले घृतभक्षण करनेसे आयुकी वृद्धि होतीहै, गुड खानेसे रोग उत्पन्न होतेहै, दाहजनक पदार्थ खानेसे मृत्यु होतीहै, कटु और तिक्तरसके पदार्थ खानेसे आरोग्यता उत्पन्न होतीहै, मास और दूध खानेसे बलकी वृद्धि होतीहै ।

क्रमादन्नादीनां गुणाधिक्यमाह ।

अन्नादष्टगुणं पिष्टं पिष्टादष्टगुणं पयः ।
पयसोऽष्टगुणं मांसं मांसादष्टगुणं घृतम् ॥
घृतादष्टगुण तैल मर्दनान्न तु भक्षणात् ।

अर्थ-अन्न, पिष्टक, दुग्ध, मांस, घृत इनके उत्तरोत्तर आठगुण अधिक है अर्थात् अन्नसे आठगुण अधिक पिट्ठीमे है, पिट्ठीसे आठगुण अधिक दुग्धमे है, दुग्धसे आठ गुण अधिक मांसमे है, और मांससे आठगुण अधिक घृत खानेमे है और घीकी अपेक्षा आठगुण अधिक तेलमें है, परन्तु तेलमे आठ गुण अधिक मर्दन करनेमे है खानेमे नही ।

आहारगुणा ।

आहारः प्रीणनः सद्यो बलकृद्देहधारकः ।

अर्थ-आहार-तृप्तिकारक, तत्काल बलजनक और देहकी रक्षा करनेवाला है ।

आहारे दिङ्निर्णय ।

आयुष्यं प्राङ्मुखो भुंक्ते यशस्यं दक्षिणामुखः ।
श्रिय प्रत्यङ्मुखो भुंक्ते ऋत भुंक्ते ह्युदङ्मुखः ॥

अर्थ-पूर्वकी ओर मुखकरके आहार करनेसे आयुकी वृद्धि दाक्षिणकी ओर मुखकरके आहार करनेसे यशकी प्राप्ति और पश्चिमकी ओर मुखकरके आहार करनेसे संपदाकी प्राप्ति होतीहै । उत्तरकी ओर मुख करके आहार करनेसे सत्यकी प्राप्ति होतीहै , इसकारण उत्तरकी ओर मुख करके आहार करे ।

भक्षणविषयेऽन्नादीनांपरिमाणमाह ।

कुक्षावन्नेन भागौ द्वावेक पानेन पूरयेत् ।
वायोः सचरणार्थञ्च चतुर्थमवशेषयेत् ॥

अर्थ-आहारके समय-उदरके दो भाग अन्नसे भरे, एकभाग पीनेकी वस्तुओंसे भरे और बाकीका एकभाग वायुके विचरनेके लिये रहने देवे ।

आचमनगुणा ।

दन्तान्तरगतञ्चान्न शौचेनैवाहरेच्छनैः ।
कुर्य्यादनिर्गतं तद्धि मुखस्यानिष्टगधताम् ॥

अर्थ-भोजन करनेके समय जो अन्न दाँतोमे घुसजाता है, वह अन्न आचमनके द्वारा धीरे धीरे निकालदेवे, जो आचमनके द्वारा दाँतोसे अन्न बाहिर नही निकालते उनके मुखमे दुर्गंध आने लगतीहै ।

भोजनान्ते कर्त्तव्यता।

भुक्त्वा पाणितलं घृष्ट्वा चक्षुषोर्यदि दीयते ।
अचिरेणैव तद्वारि तिमिराणि व्यपोहति ॥

अर्थ-भोजनके अंतमे हाथमे हाथ घिसकर नेत्रोमे लगानेसे वह जल नेत्रोके तिमिररोगको दूर करेहै ।

भुक्त्वाचम्य कर वामं दत्त्वा कुक्षौ ततः पठेत् । भुक्त माहेन्द्रहस्तेन वैश्वानरमुखेन च ॥ गडूरस्य च कठेन समुद्रस्य च वह्निना । वातापिर्भक्षितो येन पीतो येन महोदधिः ॥ यन्मया खादितं पीतं तदगस्त्यो जरिष्यति ।

अर्थ-भोजन करनेके पश्चात् आचमन करके कोखमे वामहात धरके "भुक्तं माहेन्द्र, इत्यादि" इस मन्त्रको पढे तो भोजन शीघ्र जीर्ण होजाता है ।

सुखासीनः क्षण तिष्ठेद्यावन्न लभते सुखम् ।

अर्थ-फिर थोडी देरतक आराम करे जब तक सुख न हो ।

भुक्त्वा पादशतं गत्वा वामपार्श्वेण सविशेत् ।
एवञ्चाधोगत चान्नं सुख तिष्ठति जीर्य्यति ॥

अर्थ- भोजन करनेके पश्चात् सौ कदम धीरे धीरे चले, फिर बाई करवटसे सोरहे तो अन्न पाकस्थानमे जाकर जीर्ण होजाता है ।

भोजनान्ते उपवेशनादिगुणा ।

भुक्तोपविशतस्तुन्दं शयानस्य वपुर्भवेत् ।
आयुश्चंक्रममाणस्य मृत्युर्धावति धावतः ॥

अर्थ-भोजनके अंतमे उपवेशन अथवा शयन करनेसे स्थूलताकी वृद्धि, धीरे धीरे चलनेसे आयुकी वृद्धि और दौडनेसे मृत्यु होतीहै ।

ताम्बूलगुणा ।

ताम्बूलं कटुतिक्तमुष्णमधुरं क्षारं कषायान्वित

वातघ्नं कृमिनाशनं कफहरं दुःखस्य विच्छेदनम् ।
स्त्रीसम्भाषणभूषणं धृतिकरं कामाग्निसंदीपनं
ताम्बूले निहितास्त्रयोदश गुणाः स्वर्गेपि ते दुर्लभाः ॥

अर्थ-पान-चरपरा, कडवा, गरम, क्षारगुणयुक्त, मधुर, कपेला, वातविनाशक, कृमिनाशक कफहारक, दुःखोको दूर करनेवाला, स्त्रीसंभाषणक विषय आभूषण, धारणशक्ती और कामको बढाने-वाला है, यह १३ गुण पानमे विद्यमान है सो स्वर्गमेभी दुर्लभ है

पूगफलगुणाः ।

शुष्कं मग्निकरं पूगं कषायं मधुरं परम् ।
पक्वन्तु वातलं रूक्षं भेदनं कफनाशनम् ॥
गुर्वभिष्यदि मधुरं तोयधृग्वह्निनाशनम् ।

अर्थ-सूखी सुपारी-अग्निवर्द्धक, कपेली और मधुरयुक्त है । पकी सुपारी-वातवर्द्धक, रूखी, भेदक और कफनाशक है। कच्चीसुपारी-भारी, छर्दजनक, मधुर और मंदाग्निकारक है ।

ताम्बूलपत्रगुणाः ।

ताम्बूलपत्रं तीक्ष्णोष्णं कटुवातकफापहम् ।
पित्तकृत्स्रसनं वृष्यं वह्निकृद्वस्तिशोधनम् ॥

अर्थ-ताम्बूलपत्र-तीक्ष्ण, गरम, चरपरा, वात-कफनाशक, पित्त-कारक, स्रंसन, वीर्य्यवर्द्धक, अग्निजनक और वस्तिशोधक है ।

पर्णमूलादिगुणाः ।

पर्णमूले भवेद्व्याधिः पर्णाग्रे पापसम्भवः ।
जीर्णपर्णं हरेदायुः शिरावह्निं विनाशयेत् ॥

अर्थ-पानकी जडका खानेसे-नानाप्रकारके रोग उत्पन्न होतेहै, पानके अग्रभागको भक्षण करनेसें पाप उत्पन्न होता है और जीर्ण-पानको भक्षण करनेसे आयु क्षीण होती है और शिरा अग्निकी विनाश करती है ।

चूर्णगुणाः ।

चूर्णं समीरणश्लेष्ममेदोहरमुदाहृतम् ।

अर्थ-चूना-वात, कफ और मेदनाशक है ।

शंखचूर्णगुणाः ।

शंखचूर्णं कटुक्षारमुष्णं कृमिहरं परम् ।

अर्थ-शंखका चूना-चरपरा, क्षार, गरम और कृमिनाशक है ।

खदिरगुणाः ।

खदिरः कुष्ठसवीर्पमेहपित्तकफापहः।

अर्थ-कत्था-कोढ, वीसर्प, प्रमेह, पित्त और कफनाशक है ।

एलागुणाः ।

एला मूत्रविबन्धघ्नी तृट्छर्दिकफवातजित् ।

अर्थ-इलायची-मूत्रविबन्धनाशक तथा तृषा, वमन, कफ और वातनाशक है ।

लवंगगुणाः ।

आध्मानानाहशूलघ्न लवंग पाचन लघु ।

अर्थ-लौंग-अफारा, आनाह और शूलनाशक है, पाचक और हलकी है ।

जातीफलगुणाः ।

जातीफलं तृषाछर्दिशूलघ्न वातपित्तजित ।

अर्थ-जायफल-तृषा, वमन, शूल और वातपित्तनाशक है ।

जातीकोषगुणाः ।

जातीकोषो लघुस्तृष्णातोददौर्गन्ध्यजिन्मतः ।

अर्थ-जावित्री-हलकी-तृषा, वेदना और दुर्गंधको दूर करे है ।

कर्पूरगुणाः ।

कर्पूरं शीतल पाके चक्षुष्यं कफनाशनम् ।

पक्वकर्पूरतः प्राहुरपक्वं गुणवत्तरम् ।

अर्थ-कपूर-पचनेमे शीतल, नेत्रोंको हितकारी और कफनाशक है । पके कपूरसे कच्चा कपूर अधिकगुणवाला है ।

पूगस्य बाल्यमध्यादिभेदेन गुणमाह ।

आदौ पूगं विषं घोरं द्वितीये भेदि दुर्जरम् ।

तृतीयादिषु पातव्यं सुधातुल्यं रसायनम् ।

अर्थ-कच्चीसुपारी-विषकेसमान अहितकारीहै,मध्यम अवस्थाकी सुपारी-भेदक और दुर्जरहै और सूखी सुपारी-अमृतकीसमान हित-

कारी और रसायन है,इसकारण प्रथम और द्वितीय अवस्थाकी सुपारीकोत्यागकर तृतीय अर्थात् शुष्कसुपारी भक्षण करनी चाहिये।

ताम्बूलभक्षणनिषेध ।

ताम्बूलमहितं प्रोक्तं शरीरे रूक्षदुर्बले ।
ज्वरास्यशोषे पित्तास्रमदमूर्च्छाक्षिरोगिषु ॥

अर्थ-रूक्ष,दुर्बल, ज्वर,मुखशोष,रक्तपित्त,मद, मूर्च्छा और नेत्ररोगवाले मनुष्योंको ताम्बूल भक्षण करना नहीं चाहिये।

ताम्बूलस्यानुपयोगगुणाः ।

ताम्बूलानुपयोगात्स्याच्छ्लेष्मपित्तानिलान्वितः ।
देहदृक्केशदन्ताग्निश्रोत्रवर्णबलक्षयः ॥

अर्थ-ताम्बूल नही खानेसे-मनुष्योंके कफ-पित्त और वातका कोप होता है तथा देह, नेत्र, केश, दन्त, अग्नि, कर्ण, वर्ण और बलआदिका नाश होता है ।

अध्ययनादिगुणा ।

सतताध्ययनं वादः परतन्त्रविलोकनम् ।
सद्विद्याचार्यसेवा च बुद्धिमेधाकरो गणः ॥

अर्थ-निरंतर शास्त्रका अध्ययन-शास्त्रार्थ, उत्तमशास्त्रोंका दर्शन सद्विद्याका ग्रहण और गुरुकी सेवा यह सब मनुष्योंकी बुद्धि और मेधाको बढाते हैं ।

बुद्धिगुणमाह ।

शुश्रूषा श्रवणं चैव ग्रहणं धारणं तथा ।
ऊहापोहोऽर्थविज्ञानं तत्त्वज्ञानं च धीगुणाः ॥

अर्थ-गुरुजनोंकी शुश्रूषा, गुरुके वाक्योंको श्रवण करना, गुरुके वचनोंको ग्रहण और धारण करना तथा तर्कका मीमांसाजनक ज्ञान और ईश्वरविषयका ज्ञान यह छः बुद्धिके गुण हैं ।

सद्योमांसादिगुणा ।

सद्योमांसं नवान्नं च बालास्त्री क्षीरभोजनम् ।
घृतमुष्णोदकं चैव सद्यः प्राणकराणि षट् ॥

अर्थ-तत्कालका मांस, नवीन अन्न, बालास्त्री, क्षीरभोजन, घृत और उष्णजल, ये छः तत्काल प्राणजनक है ।

पूतिमांसादिगुणा ।

पूतिमांसं स्त्रियो वृद्धा बालार्कस्तरुणं दधि ।
प्रभाते मैथुनं निद्रा सद्यः प्राणहराणि षट् ॥

अर्थ-दुर्गंधितमांस, वृद्धास्त्री, भादो औरक्वारकी धूप, पांच दिनका दही, प्रभातके समय मैथुन और निद्रा ये छः तत्काल प्राणनाशक हैं।

वयोभेदे नारीणां बालादिकथनम् ।

बालेतिगीयते नारी यावत्पोडशवत्सरम् । तस्मात्परं तु तरुणी यावत्स्यात्रिंशत भवेत्॥ तत ऊर्ध्वं भवेत्प्रौढा यावत्पंचाशतं पुनः । वृद्धा ततः परं ज्ञेया सुरतोत्सववर्जिता ॥

अर्थ-सोलहवर्षकी स्त्रीको बाला, सोलह वर्षके बाद तीस वर्षतककी तरुणी, तीस वर्षसे पचास वर्षतककीको प्रौढा और पचास वर्षसे अधिक उमरवालीको वृद्धा कहते हैं । वृद्धनारी रतिक्रियामें वर्जित है ।

बालादिस्त्रीसंसर्गगुणाः ।

बाला तु प्राणदा प्रोक्ता तरुणी प्राणधारिणी ।
प्रौढा करोति वृद्धत्वं वृद्धाभरणमादिशेत् ॥

अर्थ-बालास्त्रीके साथ मैथुन करनेसे बलकी वृद्धि होती है, तरुणी स्त्रीके साथ मैथुन करनेसे बलकी रक्षा होती है, प्रौढा स्त्रीके साथ मैथुन करनेसे वृद्धता आती है और वृद्धास्त्रीके साथ मैथुन करनेसे मृत्यु होती है ।

बालादिभेदे मैथुनकालनिर्णय ।

निदाघशरदोर्बाला प्रौढा वर्षावसतयोः ।
हेमन्ते शिशिरे योग्या न वृद्धा कापि शस्यते ॥

अर्थ-ग्रीष्म और शरद्ऋतुमें बालास्त्रीके साथ, वर्षा और वसंतऋतुमें प्रौढास्त्रीके साथ, हेमन्त और शिशिरऋतुमें तरुणीके साथ मैथुन करे, किन्तु वृद्धास्त्रीके साथ किसी ऋतुमें मैथुन न करे ।

मैथुननिषेधः ।

नर्ते च पोडशाद्वर्षात्सप्तत्याः परतो न च ।
आयुष्कामो नरः स्त्रीभिः संयोगं कर्तुमर्हति ॥

अर्थ-आयुकी अभिलाषा करनेवाले मनुष्य सोलहवर्षसे कम सत्तर वर्षसे अधिक आयुवाले स्त्रीसे मैथुन नहीं करे ।

मैथुनकालनिर्णय.।

त्रिभिस्त्रिभिरहोभिश्च सेवेत प्रमदां नरः ।
सर्वेष्वृतुषु ग्रीष्मे तु पक्षान्मासाद्व्रजेद्बुधः ॥

अर्थ-बुद्धिमान् मनुष्य वर्षा, शरद्, हेमन्त, वसन्त और शीत ऋतुमें तीन दिनके बाद मैथुन करे और ग्रीष्मऋतुमे पंद्रह दिन अथवा एक महीनेके अंतरसे मैथुन करे।

अतिमैथुनगुणा ।

ग्लानिकम्पोरुदौर्बल्यं धात्विन्द्रियबलक्षयः ।
क्षयवृद्ध्युपदंशाद्या जायन्तेऽतिव्यवायतः ॥

अर्थ-अत्यन्त मैथुन करनेवाले मनुष्योंके शरीरमे ग्लानि, कम्प, घुटनोंमे दुर्बलता होती है। धातु, इन्द्रियबल इनका क्षय होता है और राजयक्ष्मा वृद्धि तथा उपदंशादिरोग उत्पन्न होते हैं ।

सन्तानोत्पत्तिकालनिर्दिशन्नाह।

पंचपञ्चाशतो नारी सप्तसप्ततितः पुमान् ।
द्वावेतौ न प्रसूयेते प्रसूयेते व्यतिक्रमात् ॥

अर्थ-पचपन वर्षकी स्त्री और सतत्तर वर्षका पुरुष, ये दोनों सन्तानको उत्पन्न नहीं करसक्ते, कारण यह है कि, पचपन वर्षकी स्त्रिके रजमे और सतत्तर वर्ष आयुवाले पुरुषके वीर्य्यमे सन्तानको उत्पन्न करनेवाली शक्ति नष्ट होजातीहै, परन्तु पचपन वर्षसे कमकी स्त्री और सतत्तर वर्षसे कमका पुरुष सन्तान उत्पत्ति करसक्ते हैं ।

सुखशय्याशनगुणा ।

सुखशय्याशनं सेव्य निद्रापुष्टिधृतिप्रदम् ।
श्रमानिलहर वृष्यं विपरीतमतोन्यथा ॥

अर्थ-सुखशय्या और उत्तमद्रव्यका भोजन-निद्रा, पुष्टि और धीरजको बढाते है, श्रम और वातनाशक तथा वीर्यजनक है और इससे विपरीत शय्या और विपरीत भोजन विपरीतगुणकारक है ।

भूमिशय्यागुणा ।

भूशय्याऽनिलपित्तघ्नी बृंहणी शुक्रवार्द्धनी ।

अर्थ-पृथ्वीमे सोना-वात और पित्तनाशक, पुष्टिकारक और शुक्रवर्द्धक है ।

पूतिमांसादिगुणा ।

पूतिमांसं स्त्रियो वृद्धा बालार्कस्तरुणं दधि ।
प्रभाते मैथुनं निद्रा सद्यः प्राणहराणि षट् ॥

अर्थ-दुर्गंधितमास, वृद्धास्त्री, भादो और कारकी धूप, पांच दिनका दही, प्रभातके समय मैथुन और निद्रा ये छः तत्काल प्राणनाशक हैं।

वयोभेदे नारीणां बालादिकथनम् ।

बालेतिगीयते नारी यावत्षोडशवत्सरम् । तस्मात्परं तु तरुणी यावत्स्यात्त्रिंशतं भवेत् ॥ तत ऊर्ध्वं भवेत्प्रौढा यावत्पचाशतं पुनः । वृद्धा ततः परं ज्ञेया सुरतोत्सववर्जिता ॥

अर्थ-सोलहवर्षकी स्त्रीको बाला, सोलह वर्षके बाद तीस वर्षतककी तरुणी, तीस वर्षसे पचास वर्षतककीको प्रौढा और पचास वर्षसे अधिक उमरवालीको वृद्धा कहते हैं । वृद्धनारी रतिक्रियामे वर्जित है ।

बालादिस्त्रीसंसर्गगुणा ।

बाला तु प्राणदा प्रोक्ता तरुणी प्राणधारिणी ।
प्रौढा करोति वृद्धत्वं वृद्धाभरणमादिशेत् ॥

अर्थ-बालास्त्रीके साथ मैथुन करनेसे बलकी वृद्धि होती है, तरुणी स्त्रीके साथ मैथुन करनेसे बलकी रक्षा होती है, प्रौढा स्त्रीके साथ मैथुन करनेसे वृद्धता आती है और वृद्धास्त्रीके साथ मैथुन करनेसे मृत्यु होती है ।

बालादिभेदे मैथुनकालनिर्णय ।

निदाघशरदोर्बाला प्रौढा वर्षावसतयोः ।
हेमन्ते शिशिरे योग्या न वृद्धा क्वापि शस्यते ॥

अर्थ-ग्रीष्म और शरदृऋतुमे बालास्त्रीके साथ, वर्षा और वसंतऋतुमे प्रौढास्त्रीके साथ, हेमन्त और शिशिरऋतुमे तरुणीके साथ मैथुन करे, किन्तु वृद्धास्त्रीके साथ किसी ऋतुमे मैथुन न करे ।

मैथुननिषेध ।

नर्ते च षोडशाद्वर्षात्सप्तत्याः परतो न च ।
आयुष्कामो नरः स्त्रीभिः संयोगं कर्तुमर्हति ॥

अर्थ-आयुकी अभिलाषा करनेवाले मनुष्य सोलहवर्षसे कम सत्तर वर्षसे अधिक आयुवाले स्त्रीसे मैथुन नही करे ।

मैथुनकालनिर्णय. ।

त्रिभिस्त्रिभिरहोभिश्च सेवेत प्रमदां नरः ।
सर्वेष्वृतुषु ग्रीष्मे तु पक्षान्मासाद्व्रजेद्बुधः ॥

अर्थ–बुद्धिमान् मनुष्य वर्षा, शरद्, हेमन्त, वसन्त और शीत ऋतुमे तीन दिनके बाद मैथुन करै और ग्रीष्मऋतुमे पंद्रह दिन अथवा एक महीनेके अंतरसे मैथुन करै ।

अतिमैथुनगुणा ।

ग्लानिकम्पोरुदौर्बल्यं धात्विन्द्रियबलक्षयः ।
क्षयवृद्ध्युपदशाद्या जायन्तेऽतिव्यवायतः ॥

अर्थ–अत्यन्त मैथुन करनेवाले मनुष्योके शरीरमे ग्लानि, कम्प, घुटनोमे दुर्बलता होती है । धातु, इन्द्रियबल इनका क्षय होता है और राजयक्ष्मा वृद्धि तथा उपदशादिरोग उत्पन्न होते है ।

सन्तानोत्पत्तिकालनिर्दिशन्नाह ।

पचपञ्चाशतो नारी सप्तसप्ततितः पुमान् ।
द्वावेतौ न प्रसूयेते प्रसूयेते व्यतिक्रमात् ॥

अर्थ–पचपन वर्षकी स्त्री और सतत्तर वर्षका पुरुष, ये दोनों सन्तानको उत्पन्न नहीं करसक्ते, कारण यह है कि, पचपन वर्षकी स्त्रीके रजमे और सतत्तर वर्ष आयुवाले पुरुषके वीर्य्यमे सन्तानको उत्पन्न करनेवाली शक्ति नष्ट होजातीहै, परन्तु पचपन वर्षसे कमकी स्त्री और सतत्तर वर्षसे कमका पुरुष सन्तान उत्पत्ति करसक्ते है ।

सुखशय्याशनगुणा ।

सुखशय्याशनं सेव्य निद्रापुष्टिधृतिप्रदम् ।
श्रमानिलहरं वृष्यं विपरीतमतोऽन्यथा ॥

अर्थ–सुखशय्या और उत्तमद्रव्यका भोजन–निद्रा, पुष्टि और धीरजको वढाते है, श्रम और वातनाशक तथा वीर्यजनक है और इससे विपरीत शय्या और विपरीत भोजन विपरीतगुणकारक है ।

भूमिशय्यागुणा ।

भूशय्याऽनिलपित्तघ्नी बृंहणी शुक्रवर्द्धिनी ।

अर्थ–पृथ्वीमे सोना–वात और पित्तनाशक, पुष्टिकारक और शुक्रवर्द्धक है ।

खट्वापटशय्ययोर्गुणा ।

खट्वा तु वातला प्रोक्ता पटो रूक्षोऽतिवातलः ।

अर्थ-खाटपर सोनेसे वात बढती है और पटशय्यापै सोनेसे रूक्षता और वात बढती है ।

ज्योत्स्नागुणा ।

ज्योत्स्ना कषायमधुरा दाहासृक्पित्तनाशिनी ।

अर्थ-ज्योत्स्ना (चांदनी) कषेली और मधुर, तथा दाह और रक्तपित्तनाशक है ।

अन्धकारगुणा ।

तमो भयावहं तिक्तं दृष्टितेजोवरोधनम् ।

अर्थ-अन्धकार-भयकारक, कडुवा, दृष्टिशक्ति और तेजको रोकनेवाला है ।

मैथुनगुणा ।

व्यवायो धात्वपचयं कुरुते रत्यपत्यदः ।

अर्थ-मैथुन-धातुनाशक, रति और सन्तान देनेवाला है ।

अतिमैथुनगुणा ।

अतिव्यवायाज्जायन्ते श्वासकासज्वरादयः ।

अर्थ-अत्यत मैथुन करनेसे-श्वास, कास और ज्वरादि रोग उत्पन्न होतेहै ।

मैथुनाकरणगुणा ।

असेवनान्मेहमेदोग्रन्थिरग्नेश्च मार्दवम् ।

अर्थ-मैथुन नहीं करनेसे- प्रमेह, मेद, ग्रन्थि और मंदाग्नि उत्पन्न होती है ।

परिमितमैथुनगुणा ।

स्मृतिमेधायुरारोग्यपुष्टीन्द्रिययशोबलैः ।
अधिका नाशु जरसो भवन्ति स्त्रीषु संयताः ॥

अर्थ-नियमानुसार मैथुन करनेसे-स्मरणशक्ति, अभ्यासशक्ति, आयु,आरोग्य, पुष्टि, इन्द्रियशक्ति, यश और बल इनकी वृद्धि होतीहै और नियमानुसार मैथुन करनेवाला मनुष्य शीघ्र वृद्धताको नहीं प्राप्त होताहै ।

निद्रागुणा ।

निद्रा तु सेविता काले धातुसाम्यमतन्द्रिताम् ॥

पुष्टिवर्णबलोत्साहानग्निदीप्तिं करोति च ॥

अर्थ-नियमानुसार निद्रा लेनेसे-धातुकी समता, तन्द्रानाश, पुष्टि, वर्ण, बल, उत्साह और अग्नि दीपन होतीहै।

रात्रिजागरदिवास्वप्नयोर्गुणा ।

रात्रौ जागरणं रूक्षं स्निग्ध प्रस्वपन दिवा ।
कफमेदोविषार्त्तानां रात्रौ जागरणं हितम् ॥
दिवास्वप्नं च तृट्छूलहिक्काजीर्णातिसारिणाम् ।

अर्थ-रात्रिमे जागनेसे शरीरमे रूक्षताकी वृद्धि और दिनमे सोनेसे शरीरमे स्निग्धताकी वृद्धि होतीहै इस कारण दिनमे सोना और रात्रिमे जागना अनुचित है। किन्तु कफ, मेद और विषग्रस्त-रोगियोंको रात्रिमे जागना हितकारक है, तथा तृष्णा,शूल, हिका, अजीर्ण और अतिसाररोगवालोंको दिनमें सोना हितकारक है।

दिवा वा यदि वा रात्रौ निद्रा सात्मीकृता तु यैः ।
न तेषां स्वपतां दोषो जाग्रतां वा विधीयते ॥

अर्थ-जिनको दिनमे निद्रा लेनेका और रात्रिमे जागनेका अभ्यासहै उनको दिनमे निद्रा और रात्रिमे जागनाही उचितहै।

हेमन्तशिशिरकृत्यम् ।

शीते शीतानिलस्पर्शसरुद्धो बलिना बली । पक्ता भवति हेमन्ते मात्राद्रव्यगुरुक्षमः॥स यदा नेन्धन युक्तं लभते देहजं तदा॥ रसं निहत्यतो वायुः शीतः शीते प्रकुप्यति॥ तस्मात्तुषारसमये स्निग्धाम्ललवणान्रसान् । उदकानूपमांसानां मेध्यानामुपयोजयेत्॥बिलेशयानां मांसानि प्रसहानां भृतानि च। भक्षयेन्मदिरां सीधु मधु चानुपिबेन्नरः ॥ गोरसानिक्षुविकृतीर्वसां तैलं नवौदनम्। हेमन्तेऽभ्यस्यतस्तोयमुष्णञ्चायुर्न हीयते॥अभ्यगोत्सादनं मूर्ध्नि तैल जेन्ताकमातपम् । भूमिगृहञ्चोष्णमुष्णं गर्भगृह तथा॥शीते सुसंछन्न सेव्यं यानं शयनमासनम् । प्रावाराजिनकौशेयप्रवेणीकुथकास्तृतम् ॥ गुरु-

ष्णवासा दिग्धांगो गुरुणाऽगुरुणा सदा । शयने प्रमदां पीनां विशालोपचितस्तनीम् ॥ आलिंग्यागुरुदिग्धाङ्गीं सुप्यात्समदमन्मथः । प्रकामञ्च निषेवेत मैथुनं शिशिरागमे ॥ वर्ज्जयेदन्नपानानि लघूनि वातलानि च । प्रवातं प्रमिताहारमुदमन्थं हिमागमे॥हेमन्ते शिशिरे तुल्ये शिशिरेऽल्पं विशेषणम् । रौक्ष्यमादानजं शीतं मेघमारुतवर्षजम्॥तस्माद्धैमन्तिकः सर्वः शिशिरे विधिरिष्यते॥निवातमुष्णन्त्वधिकं शिशिरे गृहमाश्रयेत् ॥ कटुतिक्तकषायाणि वातलानि लघूनि च । वर्ज्जयेदन्नपानानि शिशिरे शीतलानि च ॥

अर्थ-हेमन्तऋतुमे शीतल पवनके चलनेसे मनुष्यके शरीरकी उष्णता बाहर नहीं निकलती इसकारण इस ऋतुमे बलवान् मनुष्योंकी पाचकाग्नि अत्यन्त प्रबल होकर बहुत भोजन और भारी पदार्थोंको पचानेको समर्थ हो जातीहै,ऐसेही जो प्रबल अग्नि उचित नियमसे पकानेकी वस्तु न पावे तो वह शरीरकी रस धातुका क्षय करना आरम्भ करती है,रसक्षयके हेतुसे शीतल वायु कुपित होनेके कारण, इस ऋतुमे स्निग्ध द्रव्य,अम्ल और नमकीन पदार्थ, पवित्र जल,अनूप देशके जीवोंका मांस और प्रसहजातिके जीवोंका मांस भक्षण करे तथा सीधुनामक मदिराको पीकर फिर सहत पीवे हेमन्त ऋतुमे दूध,इक्षुविकार,वसा,तेल और नवीन चावलोंका भात भक्षण करना चाहिये । हेमन्त ऋतुमे गरम करके जल पीवे,इससे मनुष्योंकी आयु नष्ट नहीं होती है । इस ऋतुमे अभ्यंग,उत्सादन, (हलदी आदिका मलना) जेन्ताक (एक प्रकारका स्वेद) आदिका व्यवहार है । ईटोंके अथवा मृत्तिकाके बनेहुए उष्ण गृहमें अथवा उष्ण गर्भगृहमे वासकरना चाहिये । इस ऋतुमे कम्बल, चर्म (पोस्तीन आदि) रेशमीन प्रवेणी और विचित्र कम्बलआदिसे भलीभाँति ढकीहुई सवारी (अश्वादि) सेज और आसनको व्यवहार करे। सदैव मोटा और गरम कपडा पहिने, अगरको घिसकर गाढा लेप करे। शयन करनेके समय मद पीकर कामयुक्त चित्तसे मोटी ताजी,उठेहुवे स्तनवाली, अगर आदि सुगन्धिये जिसके शरीरमे लगरही है, ऐसी तरुणी स्त्रीके साथ लेटकर आलिंगन करे और

इच्छानुसार मैथुन करके फिर सोरहै। इस ऋतुमें हलके, वातवर्द्धक भोजन और पानीय अर्थात् पीनेके द्रव्य, प्रबल वायु, अल्प आहार और उदमन्थ (जलमें घोले हुवे सत्तू) त्यागदेवे। हेमन्त और शिशिर ऋतु दोनो समान है, अंतर केवल इतनाहीहै कि, शिशिर ऋतुमे आदान जात (इस ऋतुमे सूर्य्यके द्वारा शरीरके चिकने पदार्थ ग्रहण किये जातेहै) रूखापन, मेघवायु और वर्षासे उत्पन्न हुवा शीत अधिक होताहै,इसकारणहेमन्त कालके आचार व्यवहार शिशिर कालमे आचरण करे। इस ऋतुमे वायुरहित उष्ण गृहमे रहना चाहिये और चरपरे कडवे, कसेले रसवाले द्रव्य,वातको बढानेवाले द्रव्य, हलके द्रव्य और ठंडे खानेके पदार्थ और पीनेके द्रव्य त्यागदेवे ।

वसन्तकृत्यम्।

हेमन्ते निचितः श्लेष्मा दिनकृद्भाभिरीरितः। कायाग्निं बाधते रोगांस्ततः प्रकुरुते बहून् ॥ तस्माद्वसन्ते कर्म्माणि वमनादीनि कारयेत् । गुर्वम्लस्निग्धमधुरं दिवास्वप्नञ्च वर्जयेत् ॥ व्यायामोद्वर्त्तनं धूमं कवलग्रहमंजनम् । सुखाम्बुना शौचविधिंशीलयेत्कुसुमागमे ॥ चन्दनागुरुदिग्धाङ्गो यवगोधूमभोजनः। शारभ शाशमैणेयं मांस लावकपिजलम् ॥ भक्षयन्निगदं सीधुं पिबेन्माध्वीकमेव वा । वसन्तेऽनुभवेत्स्त्रीणां काननानां च यौवनम् ॥

अर्थ-हेमन्तऋतुमे सचित हुवा कफ सूर्य्यकी तीक्ष्ण किरणोंसे चलायमान होकर देहकी अग्निको मंद करता है इसकारण वसन्त ऋतुमे बहुतप्रकारके रोग उत्पन्न होतेहै,अतएव वसन्तऋतुमे कफके दूर करनेको वमनादि क्रियाकरे। इसऋतुमे भारी, खट्टी, तथा मधुर रसवाली वस्तु और दिनमे सोना छोडदेवे। व्यायाम, उबटन, धूम्रपान, कवलग्रहण (अदरख आदिके रसके कुल्ले करना) आँखोंमें अंजन लगाना,कुछेक गरम जलसे शौचादि क्रियाकरना,यव गोधूम, शरभका मांस खरगोशका मांस हिरनका मांस लवेका मांस और चातकका मास भक्षण करना, और सीधु तथा माध्वीक नामक मदको पीना ठीक है इसऋतुमे वनोकी और स्त्रियोंके यौवनकी सुन्दरता बढती है।

ग्रीष्मऋतुचर्या ।

मयूखैर्जगतः सारं ग्रीष्मे पेपीयते रविः।स्वादु शीतं द्रव्यस्निग्धमन्नपानं तदा हितम् ॥ शीतं सशर्करं मन्थं जाङ्गलान्मृगपक्षिणः । घृतं पयः सशाल्यन्नं भजन्ग्रीष्मे न सीदति ॥ मद्यमल्पं न वा पेयमथवा सुबहूदकम् । लवणाम्लकटूष्णानि व्यायामञ्चात्र वर्जयेत् । दिवाशीतगृहे निद्रां निशि चन्द्रांशुशीतले॥ भजेच्चन्दनदिग्धाङ्गः प्रवाते हर्म्यमस्तके ॥ व्यजनैः पाणिसस्पर्शैश्चन्दनोदकशीतलैः ॥ सेव्यमानो भजेतास्यां मुक्तामणिविभूषितः । काननानि च शीतानि जलानि कुसुमानि च ॥ ग्रीष्मकाले निषेवेत मैथुनाद्विरतो नरः ।

अर्थ-ग्रीष्मऋतुमे सूर्य्यकी किरणोसे पृथ्वीके सर्व स्निग्ध पदार्थ सूख जातेहैं इसकारण इस ऋतुमे स्वादिष्ठ, शीतलद्रव्य और स्निग्धगुणवाले भोजन और पीनेके द्रव्योका व्यवहार करना चाहिये । इसऋतुमे बूरा मिलाहुवा तक्र, जंगली पशु और जंगली पक्षियोका मांस, सांठीके चावलोका भात खावे, दूध पीवे, जिनको मदिरा पीनेका अभ्यासहै वह थोडीसी या बहुतसा जल मिली हुई मदिरा पीवे परन्तु जिनको मदिरा पीनेका अभ्यास नहीं है, उनको इस ऋतुमे मदिरापान अयोग्यहै ग्रीष्मऋतुमे लवण,खट्टे और चरपरे रसके पदार्थ, उष्णवस्तु और व्यायाम (कसरत) करनी छोडदे । शरीरमे चन्दन लगाकर दिनके समय हवादार शीतल घरमे और रात्रिके समय पवन और चंद्रमाकी किरणोसे संयुक्त छतपर शयन करे जब दुपहरको प्रचंडसूर्य्यकी गरमीसे शरीर तप्तहोजाय तो चन्दनके जलको पंखेपर छिडककर शीतल बयारसे और दासदासियोका हाथ छूनेसे, सावधान होनेके पीछे मणिमुक्ता धारणकर आराम करना चाहिये। फिर मैथुनसे निवटकर शीतल पुष्पवाटिका, शीतलजल और शीतल सुगन्धियुक्त पुष्पोका व्यवहार करे ।

वर्षाऋतुचर्या।

आदानदुर्बले देहे पक्ता भवति दुर्बलः । सवर्षास्त्वनिलादीनां दूषणैर्बाध्यते पुनः ॥ भूवाष्पान्मेघनिस्पन्दात्पाकादम्ला-

ज्जलस्य च। वर्षास्वग्निबले क्षीणे कुप्यन्ति पवनादयः॥तस्मात्साधारणः सर्वो विधिर्वर्षासु चेष्यते। उदमन्थं दिवास्वप्नमवश्यायं नदीजलम् ॥ व्यायाममातपञ्चैव व्यवायश्चात्र वर्जयेत्। पानभोजनसंस्कारान्प्रायः क्षौद्रान्वितान्भजेत् । व्यक्ताम्ललवणस्नेहं वातवर्षाकुलेऽहनि ॥ विशेषशीते भोक्तव्य व र्षास्वनिलशान्तये । अग्निसंरक्षणवता यवगोधूमशालयः ॥ पुराणा जांगलमांसैर्भोज्या यूषैश्च सस्कृतैः । पिबेत्क्षौद्रान्वित चाल्प माध्वीकारिष्टमम्बु वा ॥ माहेन्द्र तप्तशीतं वा कौपं सारसमेव वा ।प्रघर्षोद्वर्त्तनस्नानगन्धमाल्यपरो भवेत्॥ लघुशुद्धाम्बरं स्थानं भजेदक्लेदिवार्षिकम् ।

अर्थ–आदान कालमे देहकी दुर्बलताके हेतुसे अग्निभी दुबल हो जाती है, यह दुर्बलाग्नि वर्षाकालमे वातादि दोषोंकरके अधिक दुर्बल होजाती है इसऋतुमे पृथ्वीमेसे बाफ उठतीहै, मेघ गरजतेहै जलका अम्ल पकजाताहै और अग्निका बल न्यूनहोनेसे त्रिदोप कुपित होतेहै इस कारण इसऋतुमे साधारण विधिका आचरण करना चाहिये,वर्षाकालमे मट्ठेमे जल मिलाकर पीना,दिनमे सोना हिम और नदीके जलको सेवनकरना, कसरत करना, धूपमे बैठना और मैथुन करना, यह सब छोडना चाहिये,इसऋतुमे पानी और भोजनमे सहत मिलाकर सेवन करना चाहिये और वर्षायुक्त दिनमे अत्यंत शीत होय तो वायुको शान्त करनेके लिये अम्ल और लवण रस तथा स्नेहयुक्त द्रव्य भक्षण करे। अग्निकी रक्षा करनेको पुराने जौ, गेहू, सांठीके चावल और जंगली पशुओके मांसका भक्षण,शोधित यूष मधुयुक्त थोडीसी माध्वीक मदिरा अथवा अरिष्ट पान करे मेघजल वा तप्तशीतल जल (जो जल गरम होकर शीतल किया होय) या कूपजल या सरोवरका जल पान करे, इस ऋतुमे शरीरका घर्षण,उबटन, स्नान,चदनादि सुगंधित द्रव्य और पुष्पोंकी मालाका धारण, हलके और शुद्धवस्त्रका पहरना और क्लेदरहित स्थानमे वास करना चाहिये ।

शरत्कृत्यम् ।

वर्षाशीतोचितांगानां सहसैवार्करश्मिभिः । तप्तानामाचितं

पित्त प्रायः शरदि कुप्यति॥तत्रान्नपानं मधुरं लघु शातं सतिक्त-कम् । पित्तप्रशमनं सेव्यं मात्रया सुप्रकांक्षितैः ॥ लावान्क-पिञ्जलानेणानुरभ्रान्छरभान्छशान् । शालीन्यवांश्च गोधू-मान्सेव्यानाहुर्घनात्यये॥तिक्तस्य सार्पिषः पानं विरेको रक्त-मोक्षणम् । धराधरात्यये कार्यमातपस्य च वर्ज्जनम् ॥ वसा तैलमवश्यायमौदकानूपमामिषम् । क्षारं दधि दिवा स्वप्नं प्राग्वातश्चात्र वर्जयेत्॥ दिवा सूर्यांशुसंतप्तं निशि चंद्रांशुशी-तलम् । कालेन पक्वं निर्दोषमगस्त्येनाविषीकृतम् ॥ हंसो-दकमिति ख्यात शारदं विमलं जलम् । स्नानपानावगाहेषु शस्यते तद्यथामृतम् ॥शारदानि च माल्यानि वासांसि विम-लानि च । शरत्काले प्रशस्यंते प्रदोषे चेन्दुरश्मयः ॥

अर्थ-वर्षाकालमें उस कालका शीतसे संचित हुआ पित्त शरद् ऋतुमे सूर्यकी किरणोसे संतापितहो (अनुबंधरूपसे वात और पित्तभी कुपित होते हैं) कुपित होताहै इसकारण पित्तको शमन करनेके लिये क्षुधातुर मनुष्य मधुर,शीतल,हलका और कडवा अन्न तथा पीनेके द्रव्य यथोचित मात्राके अनुसार सेवन करै और लवा, कपिञ्जल (सफेद तीतर), एण (कालाहरिण), मेढा, शरभ और खरगोसआदि जीवोका मांस,सोंठके चावलोका भात और जौ,गेहूं खावे। पित्तकी शान्त करनेके लिये तिक्तरसयुक्त घृत (पंचतिक्त, घृतादि)पीना चाहिये जो तिक्त घृतके पीनेसे पित्त शान्त न होवे तो जु-लाबकी औषधियोको सेवनकर पित्तको शान्त न करे इससेभी शान्त होवे तो रक्तमोक्षण(फस्त)कराना चाहिये। इस ऋतुमे शरीरको धूप न लगने दे, तथा वसा (चरबी) तेल, हिम, जल और अनूपदेशके जीवोंका मांस, खार,दही, दिनका सोना और प्रबल पूर्वदिशाकी वायुका सेवन छोडदेना चाहिये । वर्षाके समय मेघ वर्षनेसे जल नवीन होजाते है । वह इस जलके साथ विषैले पदार्थ मिलजाते हैं और जलका अम्ल पकजाता है जब शरद् ऋतुमे यह जल स्वभावसे पकजावे और अगस्त्यके उदयसे विषरहित होजाय तब उसको लेकर

सारेदिन सूर्यकी धूपमे और रातभर चंद्रमाकी किरणोमें रखकर शीतल करे इसजलको 'हंसोदक' कहते हैं। शरद् ऋतुमे स्नान, पान और कुल्ला करनेको हंसोदकही श्रेष्ठ है। तथा अमृतके समान है, इस ऋतुमें पुष्पोकी माला तथा निर्मल वस्त्रोको धारण करना चाहिये और प्रदोष (रात्रि) कालमें चंद्रमाकी किरणोको सेवन करना चाहिये।

अथ ग्रंथकर्तुर्वंशवर्णनम्।

चन्द्रान्वये माथुरवैश्यवर्य्य आह्लादगोत्रो द्विजवृन्दसेवी। दान्तः सुशील· शिवभक्तियुक्तो विद्यानिधिःसर्वकलाप्रवीणः॥ आसीत्पुरा धर्म्मविदां वरिष्ठः श्रीबालमुकुंदः करुणाकरश्च। यस्य प्रतापी बहुपुण्यकारी बभूव गोवर्द्धनदासपुत्रः॥ हरियशराजो हरिजनभक्तः सुजनसुधर्म्मा विदितसुपुत्रः। गोपालदासस्तनयो बभूव योगेश्वरस्तस्य कुले महात्मा॥ विज्ञानयुक्तः प्रथितप्रबोधो महाजनः सर्वगुणैकसिन्धुः। तस्य सुतः पुरुषोत्तमदासोबुद्धियुतः कथितो गुणशीलः॥ कोविदरत्नमहाजनसेवी सज्जनसंगरतो विनयी च। मोतीराम इति ख्यातस्तनयस्तस्य धार्म्मिकः॥ तत्सुतः पद्मनेत्रोभूत्समृद्धो धार्म्मिको वशी। घनश्यामदासनामा तस्य पुत्रो गुणाग्रणीः। सीतारामश्च विख्यातस्तस्य पुत्रः प्रतापवान्। विनिर्मितो यस्य विशालकूपः प्रवर्तते पट्टरगंजमध्ये। अशीतिहस्तस्य मुखं विलोक्य मतिर्भवत्येव नु दीर्घिकायाः॥ न तत्समोन्यः कूपोस्ति मुरादाबादपत्तने। अद्भुतो दर्शनीयश्च कीर्तिर्जागर्त्ति भूतले॥ तस्य पुत्रास्त्रयः श्रेष्ठा दिल्सुखरायमहर्द्धिमान्। मध्यमो रामजीरामो हरिभक्तो महाशयः॥ कनीयान्सत्यवान्वाग्म्यानंदरूपश्च विश्रुतः। तस्य पुत्रो महानम्रः शालिग्रामो व्यजायत॥ तेनासौ निर्म्मितो ग्रन्थो भिषजानां सुखावहः। सर्वलोकोपकाराय ज्ञानाय च शुभाशुभम्॥ शाके वसुक्षितिवसुक्षितिसम्मितेब्दे आषाढशुक्लविमला-

पित्त प्रायः शरदि कुप्यति॥तत्रान्नपानं मधुर लघु शांत सतिक्तकम् । पित्तप्रशमन सेव्यं मात्रया सुप्रकांक्षितैः ॥ लावान्कपिञ्जलानेणानुरभ्रान्छरभान्छशान् । शालीन्यवांश्च गोधूमान्सेव्यानाहुर्घनात्यये॥तिक्तस्य सर्पिपः पानं विरेको रक्तमोक्षणम् । धराधरात्यये कार्यमातपस्य च वर्ज्जनम् ॥ वसां तैलमवश्यायमौदकानूपमामिषम् । क्षार दधि दिवा स्वप्नं प्राग्वातश्चात्र वर्जयेत्॥ दिवा सूर्यांशुसतप्तं निशि चंद्रांशुशीतलम् । कालेन पक्वं निर्दोषमगस्त्येनाविषीकृतम् ॥ हंसोदकमिति ख्यातं शारदं विमलं जलम् । स्नानपानावगाहेषु शस्यते तद्यथामृतम् ॥शारदानि च माल्यानि वासांसि विमलानि च । शरत्काले प्रशस्यंते प्रदोषे चेन्दुरश्मय. ॥

अर्थ-वर्षाकालमे उस कालका शीतसे संचित हुआ पित्त शरद् ऋतुमें सूर्यकी किरणोसे संतापितहो (अनुबंधरूपसे वात और पित्तभी कुपित होते हैं) कुपित होताहै इसकारण पित्तको शमन करनेके लिये क्षुधातुर मनुष्य मधुर,शीतल,हलका और कडवा अन्न तथा पीनेके द्रव्य यथोचित मात्राके अनुसार सेवन करै और लवा, कपिञ्जल (सफेद तीतर), एण (कालाहरिण), मेढा, शरभ और खरगोसआदि जीवोका मांस,सॉठीके चावलोका भात और जौ,गेहूं खावै। पित्तको शान्त करनेके लिये तिक्तरसयुक्त घृत (पंचतिक्त, घृतादि)पीना चाहिये जो तिक्त घृतके पीनेसे पित्त शान्त न होवे तो जुलाबकी औषधियोको सेवनकर पित्तको शान्त न करे इससेभी शान्त होवैतो रक्तमोक्षण(फस्त)कराना चाहिये। इस ऋतुमे शरीरको धूप न लगने दे, तथा वसा (चरबी) तेल, हिम, जल और अनूपदेशके जीवोंका मांस, खार,दही, दिनका सोना और प्रबल पूर्वदिशाकी वायुका सेवन छोडदेना चाहिये । वर्षाके समय मेघ वर्षनेसे जल नवीन होजाते है । वह इस जलके साथ विषैले पदार्थ मिलजाते हैं और जलका अम्ल पकजाता है जब शरद् ऋतुमे यह जल स्वभावसे पकजावे और अगस्त्यके उदयसे विषरहित होजाय तब उसको लेकर

सारेदिन सूर्यकी धूपमे और रातभर चंद्रमाकी किरणोमे रखकर शीतल करे इसजलको 'हंसोदक' कहते हैं। शरद् ऋतुमे स्नान, पान और कुल्ला करनेको हंसोदकही श्रेष्ठ है। तथा अमृतके समान है, इस ऋतुमें पुष्पोकी माला तथा निर्मल वस्त्रोको धारण करना चाहिये और प्रदोष (रात्रि) कालमे चंद्रमाकी किरणोको सेवन करना चाहिये ।

अथ ग्रंथकर्तुर्वंशवर्णनम् ।

चन्द्रान्वये माथुरवैश्यवर्य्ये आह्लादगोत्रो द्विजवृन्दसेवी । दान्तः सुशीलः शिवभक्तियुक्तो विद्यानिधिः सर्वकलाप्रवीणः॥ आसीत्पुरा धर्म्मविदां वरिष्ठः श्रीबालमुकुंदः करुणाकरश्च । यस्य प्रतापी बहुपुण्यकारी बभूव गोवर्द्धनदासपुत्रः॥ हरियशराजो हरिजनभक्तः सुजनसुधर्म्मी विदितसुपुत्रः। गोपालदासस्तनयो बभूव योगेश्वरस्तस्य कुले महात्मा ॥ विज्ञानयुक्तः प्रथितप्रबोधो महाजनः सर्वगुणैकसिन्धुः । तस्य सुतः पुरुषोत्तमदासोबुद्धियुतः कथितो गुणशीलः ॥ कोविदरतमहाजनसेवी सज्जनसंगरतो विनयी च। मोतीराम इति ख्यातस्तनयस्तस्य धार्म्मिकः॥ तत्सुतः पद्मनेत्रोभूत्समृद्धो धार्म्मिको वशी । घनश्यामदासनामा तस्य पुत्रो गुणाग्रणीः । सीतारामश्च विख्यातस्तस्य पुत्रः प्रतापवान् । विनिर्मितो यस्य विशालकूपः प्रवर्तते पट्टरगंजमध्ये । अशीतिहस्तस्य मुखं विलोक्य मतिर्भवत्येव नु दीर्घिकायाः ॥ न तत्समोन्यः कूपोस्ति मुरादाबादपत्तने । अद्भुतो दर्शनीयश्च कीर्तिर्जागर्त्ति भूतले ॥ तस्य पुत्रास्त्रयः श्रेष्ठा दिल्सुखरायमर्हद्धिमान् । मध्यमो रामजीरामो हरिभक्तो महाशयः ॥ कनीयान्स्तत्यवान्वागम्यानंदरूपश्च विश्रुतः । तस्य पुत्रो महानम्रः शालिग्रामो व्यजायत ॥ तेनासौ निर्म्मितो ग्रन्थो भिषजानां सुखावहः । सर्वलोकोपकाराय ज्ञानाय च शुभाशुभम् ॥ शाके वसुक्षितिवसुक्षितिसम्मितेब्दे आषाढशुक्लविमला-

तिथिपञ्चदश्याम् । वारे भृगौ समगमत्परिपूर्णतां वै ग्रन्थो निघण्टुशिरभूषणनामधेयः ॥

अर्थ-चन्द्रवंशीय माथुरवैश्य महाश्रेष्ठ आह्लादगोत्रमे अनेक सज्जन हुए, उनमे ब्राह्मणोके सेवक, परमचतुर, सुशील, शिवभक्तियुक्त, विद्यानिधान, सर्वगुणोमे प्रवीण, धर्म्मज्ञजनोंमे श्रेष्ठ, करुणासिन्धु श्रीबालमुकुन्दजी पाहिले हुए, जिनके वडे प्रतापी और पुण्यकारी गोवर्धनदासजी हुए, उनके हरिभक्तोके भक्त हरियशराय हुए, जो वडे महात्मा और मनुष्योंमे धर्म्मात्मा विख्यात हुए उनके महायोगेश्वर गोपालदासजी पुत्र हुए जो बडे विज्ञानी सब बातोंके जाननेवाले, महापुरुष, सम्पूर्ण गुणोके सागर थे उनके सुत महाबुद्धिमान्, गुणज्ञ और शीलवान्, पंडितोमे रत्न, महात्माओके सेवक, सज्जनोंकी संगतिमें रहनेवाले, नीतिवान् पुरुषोत्तमदास हुए उनके महाधर्म्मात्मा मोतीरामजी हुए उनके पुत्र धर्म्मपरायण और जितेन्द्रिय कमलनयन हुये, उनके पुत्र गुणियोमे अग्रगण्य श्रीघनश्यामदास हुए उनके पुत्र संसारमे विख्यात और महाप्रतापी सीतारामजी हुए, जिन्हान पट्टपरगंजमे बहुत बडा कुआ बनाया, जिसके ८० हाथके मुखका विस्तार देखकर यह जान पडता है कि, यह कोई बडा सरोवर है मुरादाबादमें इस कुएकी समान दूसरा कुवा नही है, यह एक अद्भुत और देखने योग्य वस्तु है, जिसकी आज प्रशंसा हो रही (यह चौडे कुवेके नामसे प्रसिद्ध) है इन सीतारामजीके महाबुद्धिमान् तीन पुत्र हुए, जिनमे ज्येष्ठ दिलेराम, मध्यम रामजीदास, जो वडे हरिभक्त और महायशस्वी थे और छोटे सत्यवान् आनन्दरूप खुसालराय विख्यात हुए उनका पुत्र महानम्र मे शालिग्राम

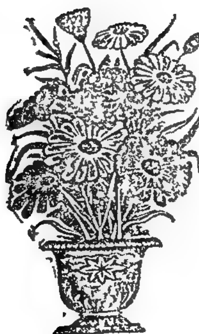
१ आनन्दरूप जो खुशालरायनामसे विख्यातहुए उनका वृत्तान्त यह है, संवत् २८६० में एक मीरखा नामक म्लेच्छ अपनी चतुरंगिनी सेनासहित मुरादाबादपर चढ आया, उस समय चौधरी खुसालराय (जो कि, बडे तेजस्वी और प्रतापवान् मुरादाबादमें मुख्य थे) उन्होंने अनेक प्रकारके भोजन, सम्पूर्ण सेनाके वास्ते और अश्वादिकके लिये दाना, घास इत्यादि सामग्री पहुँचाई और नगरको लूटसे बचाया, उस समय मेरे पिता आनन्दरूपजीकी १९ वर्षकी अवस्था थी, उन्होंने भी बहुत कुछ मिष्टान्नआदि सामग्री मीरखाको भेट की उस समय मेरे पिताजीसे लोक कहने लगे कि, आपने भी खुसालकी समता करी तुम भी दूसरे खुसालरावहो उस दिनसे सब नगरनिवासी खुसालराय कहने लगे, इस कारण वह खुसालरायनामसे विख्यात हुए ।

हुआ मैंने वैद्योंको २ सुख देनेवाला सर्व संसारके उपकारके लिये और शुभाशुभके जाननेके लिये यह ग्रंथ बनाया है शके १८१८ आषाढ सुदी पूर्णमासी शुक्रवारको यह "निघण्टुभूषण" समाप्त हुआ ॥

इति श्रीमाथुरवैश्यवंशोद्भवकविकुलकुमुदकलानिधिशालिग्रामवैश्यकृते शालिग्रामनिघण्टुभूषणे उत्तरार्द्धे मिश्रवर्ग समाप्त ॥ २ ॥

शुभमस्तु ।

समाप्तोऽयं ग्रन्थः ।



श्रीहरिः ।

अथ परिशिष्टभागः ।

मायाफलनामानि ।

मायाफलं माइफलं च माइका छिद्राफलं मायि च पंचनामकम्।

अर्थ-मायाफल, माइफल, माइका, छिद्राफल और मायि (मायुक, केशरञ्जन, शिशुभेषज)

संस्कृतभाषामे	मायाफल ।
हिन्दीभाषामे	माजूफल ।
वंगभाषामे	माइफल ।
गुजरातीभाषामें	मायां ।
मराठीभाषामे	मायफळ ।
इंग्रजीभाषामे	गाल्लनट् । Gallant
लेटिन्भाषामे	करकस् इन्फेक्टोरिया। Quarcus infectoria
फारसीभाषामें	माज़ुम् ।
अरबीभाषामे	आप्स समरतुल तुरफा ।

मायाफलगुणाः ।

मायुकं शीतलं रूक्षं कषायं लघु दीपनम् ।
विपाके कटुकं ग्राहि कफपित्तहरं परम् ॥ (शो० नि०)

अर्थ-माजूफल-शीतल, रूखा, कषेला, हलका, अग्निप्रदीपक पचनेमे चरपरा, मलरोधक और कफपित्तनाशक है ।

अन्यच्च ।

उष्णं मायफलं प्रोक्तं तीक्ष्णं शैथिल्यनाशकम् ।
प्रशस्तं वातहृत्प्रोक्तं पूर्वैर्नैघण्टकारकैः ॥ (नि० र०)

अर्थ-माजूफल-गरम, तीक्ष्ण, शिथिलतानाशक, प्रशस्त और वातविनाशक है ।

अन्यच्च ।

मायाफलं वातहरं कटूष्णकं शैथिल्यसंकोचककेशकार्ण्यदम् ।
(रा० नि०)

अर्थ-माजूफल-वातनाशक, चरपरा, गरम, शिथिलताको संकुचित करनेवाला और केशोंको काला करनेवालाहै ।

विवरण। माजूके वृक्ष वनोंमें होते हैं,आकृति सरूकी समा होती है, इसके फलोमे मक्खीकी समान नीले रंगके कीडे घुसजा है और उन फलोका रस निकालकर फलोको खुकल कर देते उसमे अपने बच्चे रखते हैं, जिसप्रकार अण्डेमे जीव बढताहै उसी प्रकार इसमें जीव बढता है,पूर्ण होनेपर निकल जाताहै, इसकार सब फल काणे होते हैं जो फल काणे नहीं होते उनमे मराहुअ जीव निकलता है। यह वास्तवमें फल नहीं होता किन्तु वृक्षमेह फलसे दीखतेहै इसकारण इनकी छाल और बीज नहीं होते।

समुद्रफलनामानि।

समुद्रनामप्रथमं पश्चात्फलमुदाहरेत्।
समुद्रफलमित्यादि नाम वाच्यं भिषग्वरैः॥

अर्थ-समुद्रफल, (अब्धिफल, उदधिफल, सिन्धुफल, अम्बुधि फल) इत्यादि।

संस्कृतभाषामे	समुद्रफल।
हिन्दीभाषामे	समुद्रफल।
मराठीभाषामे	समुद्रफळ।
गुजरातीभाषामे	समदरफल।
कर्णाटकीभाषामे	समुद्रक्रकाया।
तैलिंगीभाषामे	व्यारंगचेट्टु।
लेटिन्भाषामे	व्यारंगटोनिया एक्युटेंगुला। Barringtonia Acutangula व्या० रेसिमोसा। B racemosa

समुद्रफलगुणा।

फलं समुद्रस्य कटूष्णकारि वातापहं भूतनिरोधकारि।त्रिदो-षदावानलदोषहारि कफामयभ्रान्तिविरोधकारि। (रा०)

अर्थ-समुद्रफल-चरपरा, गरम, वातविनाशक, भूतबाधाको दूर करनेवाला, त्रिदोष, दावानलदोष, कफरोग, और भ्रान्तिको हर-नेवालाहै।

अन्यच्च।

समुद्रस्य फलं चोष्णं तिक्तं चैव त्रिदोषजित्।वातं च भूतबाधां च कफ भ्रान्ति शिरोरुजम्॥दोषं दावानलाख्य च नाशयेदि-ति कीर्त्तितम्।जलेन घृष्ट्वा पीत चेत्कृमिनाशकरं परम्॥नि०र०)

अर्थ-समुद्रफल-गरम, कडवा, त्रिदोषनाशक तथा वात, भूतबाधा, कफ, भ्रान्ति, शिरोरोग और दावानलाख्य दोषोंको दूर करे है। इसको जलमें घिसकर पीनेसे कृमिरोग दूर होता है।

विवरण। इसके वृक्ष कोकणदेशकी ओर अधिकतासे होतेहैं, इस वृक्षपर डोरे आते हैं उन डोरोमेंसे तीन धारवाले बड़ी इलायचीके समान फल निकलते हैं। उनको समुद्रफल कहते हैं।

ब्रह्मदण्डीनामानि।



ब्रह्मदण्डयजदण्डी च कण्टपत्रफला च सा॥

अर्थ-ब्रह्मदण्डी, अजदण्डी, कण्टपत्रफला।

संस्कृतभाषामें	ब्रह्मदण्डी।
हिन्दीभाषामें	ब्रह्मदंडी, (उटकटारा)।
बंगभाषामें	छागलदाँडी, वामनदाँडी।
मराठीभाषामें	ब्रह्मदंडी।
गुजरातीभाषामें	ब्रह्मदंडी, तलकंटो।
कर्णाटकीभाषामें	ब्रह्मदंडी।
इंग्रेजीभाषामें	थिस्टल। Thistle

लैटिन्‌भाषामें ट्रिकोलीपीसग्लेबरारिना। Tricholapsis glaberrina

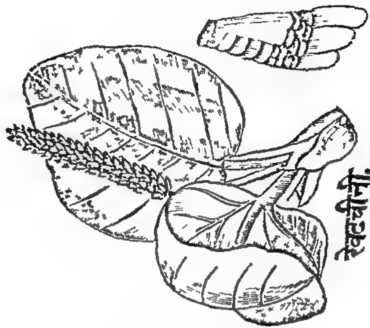
ब्रह्मदण्डीगुणाः।

ब्रह्मदंडी भवेदुष्णा तिक्ता कफविनाशनी।
वातरोगश्च शोफं च नाशयेदिति कीर्त्तिता॥ (नि० र०)

अर्थ-ब्रह्मदंडी-गरम, कडवी, कफनाशक तथा वातरोग और सूजनको दूर करेहै।

विवरण । इसका क्षुप होता है,इसके पत्ते और फलोंपर काटे होते हे यह प्राय जंगलमे अधिकतासे होती है ।

रेवट्चीनीनामानि ।



रेवट्चीनी च पीता च गंधिनी पीतमूलिका ।

अर्थ-रेवट्चीनी, पीता, गंधिनी, पीतिमूलिका (पीतमूली) ।

संस्कृतभाषामे	पीतमूली ।
हिन्दीभाषामें	रेवत (ट्) चीनी ।
वङ्गभाषामे	रडचीनी ।
मराठीभाषामे	रेवाचीनी ।
इंग्रजीभाषामे	रुबर्ब ।
लैटिन्भाषामे	रेडरेविक्स ।
फारसीभाषामे	रेवन ।
अरबीभाषामें	रावन ।

रेवट्चीनीगुणा ।

रेवट्चीनी कटुस्तिक्ता वल्या सा मृदुरेचनी ॥
दन्त्यजीर्णमतीसारं वह्निमांद्यमरोचकम् ॥
विट्संगं शीतपित्तञ्च दुष्टव्रणविरोहिणी ।

अर्थ-रेवट्चीनी-चरपरी,कडवी,बलकारक,मृदुरेची तथा अजीर्ण अतिसार, मंदाग्नि, अरुचि, विड्बंध, शीतपित्त और दुष्टव्रणको दूर करे है ।

विवरण । रेवट्चीनीका क्षुप होताहै,जड अर्थात् कंद पीले रंगका होताहै इसीको रेवट्चीनी कहते है । इसके सत्तको उझारे देवन कहते है ।

चाहनामानि ।



चाहं तु चविका चाहा द्वितीया तृष्णपत्रिका । जायते दक्षिणे देशे सा चाहेति प्रकीर्त्तिता ॥ निर्गुण्डीपत्रवत्पत्रा परद्वीपादिहागता । अपरा तृणचाहेति तृणरूपा सुराष्ट्रजा ॥

अर्थ-चाह, चविका, चाहा । यह नाम चाहके है । दूसरे प्रकारकी चाहके नाम उष्णपत्रिकादि है ।चाह दक्षिणदेशमे उत्पन्न होती है, चाह इसनामसे सर्वत्र प्रसिद्ध है । इसके पत्ते निर्गुण्डीके पत्तोकी समान होते है और यह दूसरे द्वीपसे आई है अर्थात् पहिले हिन्दुस्तानमे नही होतीथी । और एक तृणचाह होती है जिसको संस्कृतमे तृणचाह, तृणरूपा और सुराष्ट्रजा कहते है

संस्कृतभाषामे	चाह ।
हिन्दीभाषामे	चा ।
वंगभाषामे	चाह ।
मराठीभाषामे	चहा ।
गुजरातीभाषामे	चा ।
इंग्रेजीभाषामे	टी । Tea
लॅटिन्भाषामे	थियाचीनेनसीस् । Theachinensis
फारसीभाषामे	चायताई ।

चाहगुणाः ।

तीक्ष्णोष्णा तुवरा चाहा दीपनी पाचनी लघुः । कफपित्तहरी चैव किंचिद्वातप्रकोपिनी ॥ द्वितीया तृणरूपा या सुसुगंधा सुराष्ट्रजा । ज्वरघ्नी पाचनी हृद्या कफकासनिबर्हणी ॥

अर्थ-चाह-तीक्ष्ण, गरम, कपैली अग्निको दीपन करनेवाली पाचक, हलकी, कफपित्तनाशक और कुछेक वातको कुपित करनेवाली है । दूसरी तृणरूप,सुगंधित और सुराष्ट्रदेशमे जो उत्पन्न होती है वह तृणचाह ज्वरनाशक, पाचक, हृदयको हितकारी तथा कफ और खाँसी दूर करे है ।

विवरण । चाहा पहिले चीन आदि देशोसे आतीथी किन्तु अब भारतके अनेक भागोमे चाहकी खेती अधिकतासे होनेलगी है । हमारे भारतवासियोको भी देखादेखी चाहका अधिक शौक बढने लगाहै ।

तमाखुनामानि ।



तमाखुः क्षारपत्रा च कृमिघ्नी धूम्रपत्रिका ।

अर्थ-तमाखु,क्षारपत्रा,कृमिघ्नी,धूम्रपत्रिका(वज्रभृङ्गी,ताम्रकुट्टिक)

संस्कृतभाषामे	क्षारपत्रा ।
हिन्दीभाषामे	तमाखु ।
वंगभाषामे	तमाकू ।
मराठीभाषामे	तम्बाखु ।
गुजरातीभाषामे	तमाकु ।

अर्थ-रेवट्चीनी-चरपरी,कडवी,बलकारक,मृदुरेची तथा अजीर्ण अतिसार, मंदाग्नि, अरुचि, विड्बंध, शीतपित्त और दुष्टव्रणको दूर करे है ।

विवरण । रेवट्चीनीका क्षुप होताहै,जड अर्थात् कंद पीले रंगका होताहै इसीको रेवट्चीनी कहते है । इसके सत्तको उझारे देवन कहते है ।

चाहनामानि ।



चाह तु चविका चाहा द्वितीया तृष्णपत्रिका । जायते दक्षिणे देशे सा चाहेति प्रकीर्त्तिता ॥ निर्गुण्डीपत्रवत्पत्रा परद्वीपादिहागता । अपरा तृणचाहेति तृणरूपा सुराग्रजा ॥

अर्थ-चाह, चविका, चाहा । यह नाम चाहके है । दूसरे प्रकारकी चाहके नाम उष्णपत्रिकादि है ।चाह दक्षिणदेशमे उत्पन्न होती है, चाह इसनामसे सर्वत्र प्रसिद्ध है । इसके पत्ते निर्गुण्डीके पत्तोकी समान होते है और यह दूसरे द्वीपसे आई है अर्थात् पहिले हिन्दुस्तानमे नही होतीथी । और एक तृणचाह होती है जिसको संस्कृतमे तृणचाह, तृणरूपा और सुराग्रजा कहते है

सस्कृतभाषामे	चाह ।
हिन्दीभाषामे	चा ।
वंगभाषामे	चाह ।
मराठीभाषामे	चहा ।
गुजरातीभाषामे	चा ।
इंग्रेजीभाषामे	टी । Tea
लॅटिन्भाषामे	थियाचीनेनसीस् । Theachinensis
फारसीभाषामे	चाखताई ।

पिच्छिलं तुवरं किंचिद्वातकृत्कफपित्तहृत् ॥
रक्तातीसारास्रपित्त नाशयेदिति कीर्त्तितम् ।

अर्थ–ईसबगोल–अत्यन्तपुष्टिकारक, मधुर, मलरोधक, शीतल, पिच्छिल, कषेला, किंचित् वातकारक, कफपित्तविनाशक, रक्तातिसार और रक्तपित्तनाशक है।

विवरण। ईसबगोल खेतोमे बोयाजाताहै इसके क्षुप होतेहैं, ईसबगोल किसीप्राचीन ग्रंथमे नहीं लिखा केवल मोरेश्वरकृत वैद्यामृत और निघंटुसंग्रहमे लिखाहै मालुम होताहै कि, यह प्रथम यूनानी चिकित्साकी पुस्तकोंमेंसे अनुभव करके लिखागयाहै।

सुधामूलीनामानि।

अमृता जीवनी जीवा सुधामूल्यमृतोद्भवा ।
प्राणदा प्राणभृत्प्रोक्ता वीरकंदा मता बुधैः ॥

अर्थ–अमृता,जीवनी, जीवा, सुधामूली, अमृतोद्भवा, प्राणदा, प्राणभृत् और वीरकन्दा।

संस्कृतभाषाम	सुधामूली।
हिन्दीभाषामे	सालममिश्री।
मराठीभाषाम	सालंमिश्री।

सुधामूलीगुणा।

दीपनी तु सुधामूली शुक्रकृद्बलवर्द्धनी। रक्तदोषहरी हृद्या कामसंजननी परा॥ रसायनी परं वृष्या वयःस्था पुष्टिदा मता।
(आ० सं०)

अर्थ–सालममिश्री–अग्निप्रदीपक, शुक्रजनक, बलकारक, रक्तदोषनिवारक, हृदयको हितकारी, कामदेवको उत्पन्न करनेवाली, रसायन, अत्यन्त वीर्य्यवर्द्धक, अवस्थास्थापक और पुष्टिकारकहै।

विवरण। सालममिश्री हिमालय और तिब्बत आदि पर्वतोपर उत्पन्न होती है, कन्द सफेदरङ्गका होता है। दूसरी सालममिश्री काबुल–बलख बुखारा आदि देशोसे आती है। और अनेक धूर्त्त आलू, प्याज, लहसुन, अरबी आदि कन्दोके द्वारा कृत्रिम सालममिश्री बनाकर बेचते है।

रक्तमरिचनामानि।

कटुवीरोज्ज्वला तीक्ष्णा तीव्रशक्त्यजडे तथा ॥

इंग्रेजीभाषामें इंडियनटोबाको । Indian Tabacco
लेटिन्‌भाषामें नेकोटिनाटोबाकं । Nicotiana tbbacum
फारसीभाषामें तम्बाकु ।
अरबीभाषामें तम्बाक ।

तमाखुगुणा ।

तमाखुः पित्तलस्तीक्ष्णश्चोष्णो वस्तिविशोधनः । मदकृद्भ्रामकस्तिक्तो दृष्टिमांद्यकरः सरः ॥ वामकः कटुको रुच्यो वातस्यानुविलोमकः । कफकासश्वासवातकोष्ठवातकृमीञ्जयेत् ॥ दंतशुक्रदृष्टिरुजो लिक्षायूकादिकान्गदान् । वृश्चिकादिविषं शोथं नाशयेदिति कीर्त्तितः ॥

अर्थ-तमाखु-पित्तकारक, तीक्ष्ण, गरम, वस्तिशोधक, मदकारक, भ्रमकारक, कडवा. दृष्टिको मन्द अर्थात कम करनेवाला, सारक, वमनकारक, चरपरा, रुचिकारक, वातानुलोमक तथा कफ, खाँसी, श्वास, वात, कोष्ठवात, कृमिरोग, दंतरोग, शुक्रदोष, दृष्टिरोग, लीख, जूँ, वृश्चिकआदिका विष और सूजनको दूर करैहै ।

विवरण । तमाखुके क्षुप सर्व देशोमे होते है ।

ईषद्गोलनामानि ।

ईषद्गोलं स्निग्धबीजं श्लक्ष्णजीरश्च कीर्त्तितः ।

अर्थ-ईषद्गोल, स्निग्धबीज, श्लक्ष्णजीर (स्निग्धजीरक, श्लक्ष्णजीरक)

संस्कृतभाषामें ईषद्गोल ।
हिन्दीभाषामें ईसबगोल ।
मराठीभाषामें इसबगोल ।
गुजरातीभाषामें उथमुजरु ।
तैलङ्गीभाषामें इस्पगुल ।
इंग्रेजीभाषामें ईस्पगुलसीड । Isphagl Seed
लेटिनभाषामें प्लेन्टेंगोईस्पगुल । Plantango isphagula
फारसीभाषामें ईस्पगुल ।
अरबीभाषामें बजरकतूना ।

ईषद्गोलगुणा ।

ईषद्गोल परं वृष्य मधुरं ग्राहि शीतलम् ।

पिच्छिलं तुवरं किंचिद्वातकृत्कफपित्तहृत् ॥
रक्तातीसारास्रपित्त नाशयेदिति कीर्त्तितम् ।

अर्थ-ईसबगोल-अत्यन्तपुष्टिकारक, मधुर, मलरोधक, शीतल, पिच्छिल, कषेला, किंचित् वातकारक, कफपित्तविनाशक, रक्तातिसार और रक्तपित्तनाशक है।

विवरण। ईसबगोल खेतोमे बोयाजाताहै इसके क्षुप होतेहै, ईसबगोल किसीप्राचीन ग्रंथमे नहीं लिखा केवल मोरेश्वरकृत वैद्यामृत और निघटुसंग्रहमे लिखाहै मालुम होताहै कि, यह प्रथम यूनानी चिकित्साकी पुस्तकोमेंसे अनुभव करके लिखागयाहै ।

सुधामूलीनामानि।

अमृता जीवनी जीवा सुधामूल्यमृतोद्भवा ।
प्राणदा प्राणभृत्प्रोक्ता वीरकंदा मता बुधैः ॥

अर्थ-अमृता, जीवनी, जीवा, सुधामूली, अमृतोद्भवा, प्राणदा, प्राणभृत् और वीरकन्दा।

संस्कृतभाषाम	सुधामूली।
हिन्दीभाषामे	सालममिश्री।
मराठीभाषाम	सालमिश्री।

सुधामूलीगुणा ।

दीपनी तु सुधामूली शुक्रकृद्बलवर्द्धनी।रक्तदोषहरी हृद्या कामसंजननी परा॥रसायनी परं वृष्या वयःस्था पुष्टिदा मता।
(आ० सं०)

अर्थ-सालममिश्री-अग्निप्रदीपक, शुक्रजनक, बलकारक, रक्तदोषनिवारक, हृदयको हितकारी, कामदेवको उत्पन्न करनेवाली, रसायन, अत्यन्त वीर्य्यवर्द्धक, अवस्थास्थापक और पुष्टिकारकहै ।

विवरण। सालममिश्री हिमालय और तिब्बत आदि पर्वतोपर उत्पन्न होती है, कन्द सपेदरङ्गका होता है । दूसरी सालममिश्री काबुल-बलख बुखारा आदि देशोसे आती है। और अनेक धूर्त आलू, प्याज, लहुन, अरबी आदि कन्दोके द्वारा कृत्रिम सालममिश्री बनाकर बेचते है।

रक्तमरिचनामानि ।

कटुवीरोज्ज्वला तीक्ष्णा तीव्रशक्त्यजडे तथा ॥

इंग्रेजीभाषामें इडियनटोबाको । Indian Tabacco
लैटिन्भाषामें नैकोटिनाटोबाकं । Nicotiana tbbacum
फारसीभाषामे तम्बाकु ।
अरबीभाषामे तम्बाक ।

तमाखुगुणा ।

तमाखुः पित्तलस्तीक्ष्णश्चोष्णो वस्तिविशोधनः । मदकृद्भ्रामकस्तिक्तो दृष्टिमांद्यकरः सरः ॥ वामकः कटुको रुच्यो वातस्यानुविलोमकः । कफकासश्वासवातकोष्ठवातक्रमीञ्जयेत् ॥ दंतशुक्रदृष्टिरुजो लिक्षायूकादिकान्गदान् । वृश्चिकादिविषशोथं नाशयेदिति कीर्त्तितः ॥

अर्थ-तमाखु-पित्तकारक,तीक्ष्ण, गरम,वस्तिशोधक, मदकारक, भ्रमकारक, कडवा. दृष्टिको मन्द अर्थात् कम करनेवाला, सारक, वमनकारक, चरपरा, रुचिकारक,वातानुलोमक तथा कफ, खाँसी, श्वास, वात, कोष्ठवात, कृमिरोग, दंतरोग, शुक्रदोष, दृष्टिरोग, लीख, जूँ, वृश्चिकआदिका विष और सूजनको दूर करेहै ।

विवरण । तमाखुके क्षुप सर्व देशोमे होते है ।

ईषद्गोलनामानि ।

ईषद्गोलं स्निग्धबीजं श्लक्ष्णजीरश्च कीर्त्तितः ।

अर्थ-ईषद्गोल,स्निग्धबीज,श्लक्ष्णजीर(स्निग्धजीरक,श्लक्ष्णजीरक)

संस्कृतभाषामे ईषद्गोल ।
हिन्दीभाषामे ईसबगोल ।
मराठीभाषामे इसबगोल ।
गुजरातीभाषामे उथमुजरू ।
तैलङ्गीभाषामे इस्पगुल ।
इंग्रेजीभाषामे ईस्पगुलसीड । Isphagl Seed
लैटिनभाषामे प्लेन्टेंगोईस्पगुल । Plantango isphagula
फारसीभाषामे ईस्पगुल ।
अरबीभाषामे बजरकतूना ।

ईषद्गोलगुणा ।

ईषद्गोलं परं वृष्यं मधुरं ग्राहि शीतलम् ।

कटुवीरागुणा ।

कटुवीराग्निजननी बलासघ्नी च दाहिनी। हन्त्यजीर्णं विषूची-व्रणं क्लिन्नं सुदारुणम् । तन्द्रां मोहं प्रलापञ्च स्वरभेदम-रोचकम् ॥

अर्थ-लालमिरच-अग्निप्रदीपक, बलासनाशक, दाहजनक, तथा अजीर्ण, विषूचिका, दारुण और क्लिन्न व्रण, तन्द्रा, मोह, प्रलाप, स्वरभेद और अरुचिको दूर करेहै ।

विवरण । लालमरिचके क्षुप मकोयके क्षुपके समान होते है, फूल सुफेद रंगके आते हैं फल अपक्व अवस्थामे हरे और पकनेपर पीले होकर लाल होजाते है । मिरच छोटी बडी देशी, देशान्तरीय अनेक प्रकारकी होती है ।

वनकुलत्थनामानि ।

कुलत्था दृक्प्रसादा च प्रोक्तारण्यकुलत्थिका ।
कुलाली लोचनहिता चक्षुष्या कुम्भकारिका ॥

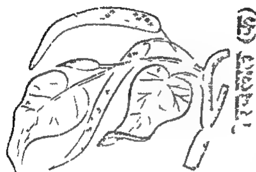
अर्थ-कुलत्था, दृक्प्रसादा, अरण्यकुलत्थिका, कुलाली, लोचन· हिता, चक्षुष्या, कुम्भकारिणी (कुलत्थिका, कुलमाप, कुरुबिल्वक काननोत्था, चिपिटा)

संस्कृतभाषामे	कुलत्था ।
हिन्दीभाषामे	वनकुलथी, चाक्षु ।
वंगभाषामे	वनकुलथी ।
मराठीभाषामे	रानकुळीथ, रानहुलगे ।
गुजरातीभाषामे	चमेडच, आरण्यतुभरण ।
कर्णाटकीभाषामे	कडणकुटकीनबीज ।
इंग्रेजीभाषामे	फोरलीव्डकेशिया । Four leved cassia
लैटिन्भाषामे	केशियाएब्सस् । Cassiaasbus
फारसीभाषामे	चश्मक् ।
अरबीभाषामे	चाश्मिझज तश्मीज ।

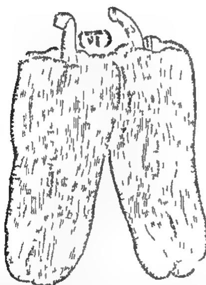
अस्य गुणा ।

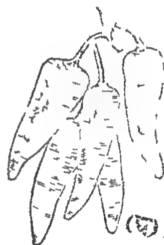
वन्योद्भवः कुलित्थस्तु कटुस्तिक्तश्च शीतलः । व्रणरोप-णकारी च चक्षुष्योऽर्शविनाशकः ॥ कफशूलविषस्फोट-कंडूहिक्काविनाशकः । नेत्ररोगमलस्तम्भमाध्मानं च विनाशयेत् ॥ (नि० र०)

अर्थ-कटुवीरा, उज्ज्वला, तीक्ष्णा, तीव्रशक्ति,अजडा (कुमरिच, रक्तमरिच)









संस्कृतभाषामे	कटुवीरा ।
हिन्दीभाषामे	लालमिरच ।
वंगभाषामे	लंकामरिच, झाल ।
मराठीभाषामे	लालमिरची ।
औत्कलीभाषामे	नोकोमरिच ।
इंग्रेजीभाषामे	कायन्नपेपर।
लैटिन्‌भाषामे	काप्सिवाक्से ।
फारसीभाषामे	फिल्फिलेसुर्ख ।

कटुवीरागुणा ।

कटुवीराग्निजननी बलासघ्नी च दाहिनी। हन्त्यजीर्ण विपूचीश्च व्रणं क्लिन्नं सुदारुणम् । तन्द्रां मोह प्रलापञ्च स्वरभेदमरोचकम् ॥

अर्थ-लालमिरच-अग्निप्रदीपक, बलासनाशक, दाहजनक, तथा अजीर्ण, विपूचिका, दारुण और क्लिन्न व्रण, तन्द्रा, मोह, प्रलाप, स्वरभेद और अरुचिको दूर करेहै ।

विवरण। लालमरिचके क्षुप मकोयके क्षुपके समान होते है, फूल सुफेद रंगके आते है फल अपक्व अवस्थामे हरे और पकनेपर पीले होकर लाल होजाते है। मिरच छोटी बडी देशी, देशान्तरीय अनेक प्रकारकी होती है।

वनकुलत्थनामानि ।

कुलत्था दृक्प्रसादा च प्रोक्तारण्यकुलत्थिका ।
कुलाली लोचनहिता चक्षुष्या कुम्भकारिका ॥

अर्थ-कुलत्था, दृक्प्रसादा, अरण्यकुलत्थिका, कुलाली, लोचनहिता, चक्षुष्या, कुम्भकारिणी (कुलत्थिका, कुल्माप, कुरुबिल्वक काननोत्था, चिपिटा)

संस्कृतभापामे	कुलत्था ।
हिन्दीभापामे	वनकुलथी, चाक्षु ।
बंगभापामे	वनकुलथी ।
मराठीभापामे	रानकुळीथ, रानहुलगे ।
गुजरातीभापामे	चमेढ्य, आंख्यतुभरण ।
कर्णाटकीभापामे	कल्लणकुरुकीनबीज ।
इङ्गेजीभापामे	फोरलॉव्डकेशिया। Four loved cassia
लैटिन्भापामे	केशियाएब्सस् । Cassiaasbus
फारसीभापामे	चश्मक् ।
अरबीभापामे	चाशिमज्ज तश्मीज ।

अस्य गुणा ।

वन्योद्भवः कुलित्थस्तु कटुस्तिक्तश्च शीतलः । व्रणरोपणकारी च चक्षुष्योऽर्शविनाशकः ॥ कफशूलविपस्फोटकंडूहिक्काविनाशकः । नेत्ररोगमलस्तम्भमाध्मानं च विनाशयेत् ॥ (नि० र०)

अर्थ–चाक्षु (कुलित्थ)–चरपरी, कडवी, शीतल, व्रणको भरने वाली, नेत्रोंको हितकारी, बवासीरको दूर करनेवाली तथा कफ, शूल, विष, स्फोट, कण्डू, हिक्का, नेत्ररोग, मलस्तम्भ और आध्मान रोगको हरनेवालीहै ।

विवरण । वनकुल्थीके क्षुप वनमे होतेहै । फूल कोयलके समान लगतेहै इसके ऊपर फली आती है दूसरे प्रकारकी वनकुल्थीका क्षुप छत्तासा होताहै ।

माहाराष्ट्रीनामानि ।



महाराष्ट्र्यां च राष्ट्री च तीक्ष्णा मरहट्टिका मता ॥

अर्थ–महाराष्ट्री, राष्ट्री, तीक्ष्णा, मरहट्टिका ।

संस्कृतभाषामे	महाराष्ट्री ।
हिन्दीभाषामें	मरेठी ।
मराठीभाषामे	मराठी ।
गुजराथीभाषामे	मरेठी ।
इंग्रेजीभाषामे	पेनिरोयल Pennyroyal
लेटिनभाषामे	मेन्थाप्युलेजियं MenthaPulegium
फारसीभाषामे	बाबुनेगाउ ।
अरबीभाषामे	उकहोवान ।

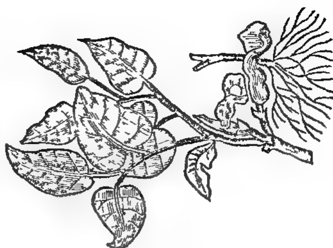
महाराष्ट्रीगुणाः ।

महाराष्ट्री कटुस्तीक्ष्णासोष्णा वातकफार्त्तिहृत् ॥ (शो० नि०)

अर्थ–मरेठी–चरपरी, तीक्ष्ण, गरम तथा वात और कफकी पीडाको दूर करेहै ।

विवरण । मरेठीके बडे २ क्षुप होतेहै, पत्ते तुलसीके समान और इसमे पीले तथा लाल रंगके डोरे लगतेहै यह अकरकरेके समान होतीहै ।

कीटमारीनामानि ।



कीटारिः कीटमारी च भृंगी कीटकहा तथा ॥

अर्थ-कीटारि, कीटमारी, भृंगी, कीटकहा ।

संस्कृतभाषामे कीटमारी ।
हिन्दीभाषामे कीडामारी ।
मराठीभाषामे किडामार ।
गुजरातीभाषामे कीडामारी ।
तैलिङ्गीभाषामे गीरीदागुटापा ।
इंग्रेजीभाषामे ब्रेक्टीएटेडबर्थवर्ट Bracteab Birthwort
लैटिन्भाषामे एरिष्टोलोचियाब्रेकटीका Aristolochia bracteata

अस्या गुणा ।

वातश्लेष्मज्वरहरा सन्ध्यस्थीनि प्रसारिणी ॥

अर्थ-कीडामारी-वातकफज्वरनाशक, तथा संधि और अस्थियोको फैलानेवालीहै ।

विवरण। कीटमारीके क्षुप होतेहै विशेष करके खेतोंमे उत्पन्न होजातीहैं, इसपर डोरे आते है वह डोरे कच्ची अवस्थामे हरे रंग और रेखायुक्त होते है । पकनेपर उनमेसे अपने आप फटकर काले रंगके बीज निकलतेहैं ।

सर्पदंष्ट्रानामानि ।

सर्पदंष्ट्रा पीतपुष्पा गुच्छपत्रा विषापहा ॥

अर्थ-सर्पदंष्ट्रा, पीतपुष्पा, गुच्छपत्रा, विषापहा ।



संस्कृतभाषामें	सर्पदंष्ट्रा ।
हिन्दीभाषामें	सिताव ।
मराठीभाषामें	सताप ।
गुजरातीभाषामें	सताव ।
अंग्रेजीभाषामें	कोमनरु Commonrue
लेटिन्भाषामें	रुटाग्रेवियोलेन्स Ruta Graveolans
फारसीभाषामें	इस्पंद ।
अरबीभाषामें	हरमल ।

सर्पदंष्ट्रागुणाः ।

सर्पदंष्ट्रा सरा चोष्णा तिक्ता कफविनाशिनी ।
वातनाशकरी प्रोक्ता विचारज्ञैश्चिकित्सकैः ॥ (नि०र०)

अर्थ-सिताव-सारक, गरम, कडवी, कफनाशक और वातको हरनेवाली है ।

विवरण । सितावके क्षुप बाग, पुष्पवाटिका और घरगमलोंमे मनुष्य लगालेते है । सिवाय निघण्टुरत्नाकरके और किसी प्राचीन ग्रन्थमे सिताव नहीं है ।

उष्ट्रकटनामानि ।

उष्ट्रकटोथ कण्टालुः करमादन एव सः ॥

अर्थ-उष्ट्रकण्ट, कण्टालु, करमादन (उत्कंटक, कंटफल, शृगाल, शुनकाशन, तीक्ष्णाग्र, वृत्तगुच्छ, सुखदंतरुजापह, उत्कटोत्कट)

संस्कृतभाषामें उष्ट्रकट ।

हिन्दीभाषामें	ऊटकटीरा ।
मराठीभाषामें	उटकटारा, उतांटी ।
गुजरातीभाषामें	उत्कटो, ऊलियो ।
इंग्रेजीभाषामें	थिस्टल ।Thistle
लैटिन्भाषामें	एकिनोप्स एकीनटस ।Echinops echinatus

अस्या गुणाः ।

उत्कण्टकः कटुस्तिक्तः कफवातहरो लघुः ।
तन्मूलपानतः स्त्रीणां शीघ्रप्रसवकारकः ॥ (शो०नि०)

अर्थ–ऊंटकटीरा–चरपरा, कडवा, कफवातनाशक, हलका, इसकी जडको जलमें पीसकर पीनेसे स्त्रियोंके शीघ्रप्रसव होजाता है ।

अन्यच्च ।

उत्कटा रुचिदा चोष्णा तिक्ता वृष्याप्युदाहृता । मूत्रकृच्छ्रं पित्तवातं मेहं तृष्णां च हृद्रुजम् ॥ विस्फोटकं नाशयति बीजमस्यास्तुशीतलम् ।वृष्यं तृप्तिपरं चैव मधुरं च प्रकीर्तितम् ॥ (नि० र०)

अर्थ–ऊंटकटीरा–रुचिकारक, गरम, कडवा, वीर्यवर्द्धक तथा मूत्रकृच्छ्र, पित्तवात, प्रमेह, तृषा, हृदयरोग और विस्फोटकको दूर करे है । इसके बीज–शीतल, वीर्यवर्द्धक, तृप्तिकारक और मधुर है ।

विवरण । ऊटकटेरीके क्षुप होते है, उसके पत्ते और फलोंमें कांटे होते है । इसकी डालियोंमें तीक्ष्ण अणिवाले कांटेयुक्त डोरे लगते है । हमारे देशमें कोई कोई अजान वैद्य सत्यानाशी कटेरीकोही ऊंटकटीरा मानते है ।

नखरञ्जकनामानि ।

तिमिरः कोकदंता च द्विवृन्तो नखरञ्जकः ।

अर्थ–तिमिर, कोकदंता, द्विवृन्त, नखरंजक (मेंदिका, रागगर्भा, रंजका, नखरंजिनी, सुगन्धपुष्पा, रागांगी, यवनेष्टा) ।

संस्कृतभाषामें	नखरञ्जक ।
हिंदीभाषामें	मेंहदी ।
बंगभाषामें	मेदी ।
मराठीभाषामें	मेंदी ।
गुजरातीभाषामें	मेंदी ।

तैलिङ्गीभाषामें	गोरंटम् ।
इंग्रजीभाषामे	हेना । Henna
लैटिन्भाषामें	लॉझोनिया आल्बा । Lansonia alba
फारसीभाषामे	हिना ।
अरबीभाषामे	हिन्नाअकान् काफलयुन ।

अस्या गुणा ।

रक्तरंगा दाहहंत्री वान्तिकृच्छ्लेष्मकुष्ठहा ॥
बीजमस्या ग्राहकं तु शोषक च प्रकीर्त्तितम् ॥
भूतग्रहाणां दोषं च ज्वरं चैव विनाशयेत् ।

अर्थ-मेदी-दाहनाशक, वमनकारक, कफ और कोढको दूर करे है । इसके बीज-मलरोधक, शोषक तथा भूतबाधा, ग्रहदोष और ज्वरको दूर करे है ।

विवरण । मेहदीके वृक्ष बागोंमे बोएजाते हैं, पत्ते छोटे छोटे होते हैं, मेहदीके फूल मौरकी समान, छोटे सफेदरंगके और सुगन्धियुक्त होतेहैं इसके पत्तोंकोपीसकर हाथपांवपर लगानेसे लाल होजाते हैं तथा गरमी और हाथपांवादिकी दाह दूर होजाती है । कितनेक देशी वैद्य इसके बीजोंको रेणुका कहते हैं ।

अन्धपुष्पीनामानि ।

अन्धपुष्पी च रोमालुर्गोलोमी दार्विकापि च ।
अधोमुखा धेनुजिह्वा अधःपुष्पी च सप्तधा ॥

अर्थ-अन्धपुष्पी, रोमालु, गोलोमी, दार्विका, अधोमुखा, धेनुजिह्वा, अधःपुष्पी (अवाक्पुष्पी, सुरसा, गन्धपुष्पिका)

संस्कृतभाषामे	अन्धपुष्पी ।
हिन्दीभाषामे	अन्धाहुली, औंधाहुली ।
बंगभाषामे	चोरहुली ।
मराठीभाषामे	पाथरी ।
गुजरातीभाषामे	उन्धाफुली ।
लैटिन्भाषामे	ट्राईकोडेस्मइंडिकं । Trichodesma indicum

अस्या गुणाः।

अन्धपुष्पी च चक्षुष्या गूढगर्भापकर्षिणी ॥

अर्थ–अंधाहुली–नेत्रोंको हितकारी और गूढगर्भको अपकर्षण करनेवाली है।

विवरण–अंधाहुलीका क्षुप होता है उसकी डंडी कुछ लालीलिये होती है, पत्ते लम्बे गोल और रोमयुक्त होते हैं, फल असमानी रंगका और नीचेको रहता है।

दण्डोत्पलनामानि।

दण्डोत्पला सहदेवा विषमज्वरनाशिनी। दण्डोत्पला त्रिधा प्रोक्ता पुष्पवर्णप्रभेदतः। गोवन्दनी देवसहा पीतदंडोत्पलं स्मृतम्। रक्तदण्डोत्पला प्राहुर्विश्वदेवा तथापरा ॥ श्वेतदंडोत्पल प्रोक्तं दंडोत्पला च देविका।

अर्थ–दण्डोत्पला, सहदेवा और विषमज्वरनाशिनी यह साधारण दण्डोत्पलके नाम हैं। दण्डोत्पल पुष्पोंके भेदसे तीनप्रकारका है। पीत, रक्त और श्वेत, गोवन्दनी, देवसहा, (गंधवल्ली, सहदेवी, सहा) यह पीलेदण्डोत्पलके नाम हैं। विश्वदेवा, (सहदेवा) यह लालदण्डोत्पलके नाम हैं। दण्डोत्पला, देविका यह सफेद दंडोत्पलके नाम हैं।

संस्कृतभाषामें	सहदेवा, दण्डोत्पला।
हिन्दीभाषामें	दण्डोत्पल तीनप्रकारका।
बंगभाषामें	डानिपोलाडानकुनी, दंडकलस।
मराठीभाषामें	ओसारी।
गुजरातीभाषामें	शेदरडी। (Ageratum (Conyzoides)
लैटिन्भाषामें	वरनोनियासाई निरिया। Vernonia Cineria

त्रिविधदण्डोत्पलगुणाः।

दण्डोत्पलं क्षयश्वासकासजिद्वह्निदीपनम् ॥

अर्थ–तीनो प्रकारके दंडोत्पल–क्षय, श्वास और खाँसीको दूर करे हैं तथा अग्निको दीपन करे है।

विवरण। दण्डोत्पलके क्षुप प्रायः अनूप देशमें होते हैं, फूल सफेद,पीला, लाल और किसी किसीपे कालेरंगकाभी आताहै,

तैलिङ्गीभाषामें	गोरंटम् ।
इंग्रेजीभाषामे	हेना । Henna
लैटिन्भाषामे	लॉझोनिया आल्बा । Lansonia alba
फारसीभाषामे	हिना ।
अरबीभाषामे	हिन्नाअकान् काफलयुन ।

अस्या गुणा ।

रक्तरंगा दाहहंत्री वान्तिकृच्छ्लेष्मकुष्ठहा ॥
बीजमस्या ग्राहकं तु शोषकं च प्रकीर्त्तितम् ॥
भूतग्रहाणां दोषं च ज्वरं चैव विनाशयेत् ।

अर्थ-मेंदी-दाहनाशक, वमनकारक, कफ और कोढको दूर करे है । इसके बीज-मलरोधक, शोषक तथा भूतबाधा, ग्रहदोष और ज्वरको दूर करे हैं ।

विवरण । मेहदीके वृक्ष बागोंमे बोएजाते है, पत्ते छोटे छोटे होते है, मेहदीके फूल मौरकी समान, छोटे सफेदरंगके और सुगन्धियुक्त होतेहै इसके पत्तोकोपीसकर हाथपांवपर लगानेसे लाल होजाते है तथा गरमी और हाथपांवादिकी दाह दूर होजाती है । कितनेक देशी वैद्य इसके बीजोंको रेणुका कहते है ।

अन्धपुष्पीनामानि ।

अन्धपुष्पी च रोमालुर्गोलोमी दार्विकापि च ।
अधोमुखा धेनुजिह्वा अधःपुष्पी च सप्तधा ॥

अर्थ-अन्धपुष्पी, रोमालु, गोलोमी, दार्विका, अधोमुखा, धेनुजिह्वा, अधःपुष्पी (अवाक्पुष्पी, सुरसा, गन्धपुष्पिका)

संस्कृतभाषामे	अन्धपुष्पी ।
हिन्दीभाषामे	अन्धाहुली, औधाहुली ।
बंगभाषामे	चोरहुली ।
मराठीभाषामे	पाथरी ।
गुजरातीभाषामे	उन्धाफुली ।
लैटिन्भाषामे	ट्राईकोडेस्मइंडिकं । Trichodesma indicum

अस्या गुणाः।

अन्धपुष्पी च चक्षुष्या गूढगर्भापकर्षिणी ॥

अर्थ-अंधाहुली-नेत्रोंको हितकारी और गूढगर्भको अपक करनेवाली है।

विवरण-अंधाहुलीका क्षुप होता है उसकी डंडी कुछ लाली ये होती है, पत्ते लम्बे गोल और रोमयुक्त होते हैं, फल असम रंगका और नीचेको रहता है।

दण्डोत्पलनामानि।

दण्डोत्पला सहदेवा विषमज्वरनाशिनी। दण्डोत्पला त्रि प्रोक्ता पुष्पवर्णप्रभेदतः। गोवन्दनी देवसहा पीतदंडोत्प स्मृतम्। रक्तदण्डोत्पला प्राहुर्विश्वदेवा तथापरा ॥ श्वेतद त्पल प्रोक्तं दंडोत्पला च देविका।

अर्थ-दण्डोत्पला, सहदेवा और विषमज्वरनाशिनी यह साध रण दण्डोत्पलके नाम हैं। दण्डोत्पल पुष्पोंके भेदसे तीनप्रकार है। पीत, रक्त और श्वेत, गोवन्दनी, देवसहा, (गंधवल्ली, सह वी, सहा) यह पीलेदण्डोत्पलके नाम हैं। विश्वदेवा, (सहदेवा यह लालदण्डोत्पलके नाम हैं। दण्डोत्पला, देविका यह सफेद डोत्पलके नाम हैं।

संस्कृतभाषामें	सहदेवा, दण्डोत्पला।
हिन्दीभाषामें	दण्डोत्पल तीनप्रकारका।
वंगभाषामें	डानिपोलाडानकुनी, दंडकलस।
मराठीभाषामें	ओसारी।
गुजरातीभाषामें	शेदरडी। (Ageratum (Conyzoides)
लैटिनभाषामें	वरनोनियासाई निरिया। Vernonia Ciner

त्रिधदण्डोत्पलगुणा।

दण्डोत्पलं क्षयश्वासकासजिद्वह्निदीपनम् ॥

अर्थ-तीनों प्रकारके दंडोत्पल-क्षय, श्वास और खाँसीको दू करे हैं तथा अग्निको दीपन करे हैं।

विवरण। दण्डोत्पलके क्षुप प्रायः अनूप देशमें होते हैं, फूल सफेद,पीला, लाल और किसी किसीमें कालेरंगकाभी आताहै

पत्ते रानतुलसीकी समान होते हैं, रुण्डोत्पलकी टोपी बनाकर शि-रपै धारण करनेसे ज्वर दूर होताहै ।

रुदन्तीनामानि ।

स्याद्रुदंती स्रवत्तोया सजीवन्यमृतस्रवा ।
रोमांचिका महामांसी चणपत्री मधुस्रवा ॥

अर्थ-रुदती, स्रवत्तोया, संजीवनी, अमृतस्रवा, रोमाञ्चिका महामांसी चणपत्री, मधुस्रवा (सुधास्रवा)

संस्कृतम	रुदन्ती ।
हिन्दीभाषामे	लाणा (पु) रुदन्ती, रुद्रवन्ती ।
मराठीभाषामे	रुदन्ती ।
गुजरातीभाषामे	पलियो ।
कर्णाटकीभाषामे	अलुगुणे ।
लेटिन्भाषामें	क्रेसाक्रोटिका । Cressa Cretica

रुदन्तीगुणाः ।

रुदन्ती कटुतिक्तोष्णा क्षयक्रिमिविनाशिनी ।
रक्तपित्तकफश्वासमेहहारी रसायनी ॥ (रा० नि०)

अर्थ-रुदन्ती-चरपरी, कडवी, गरम, रसायन तथा क्षय, क्रिमि, रक्तपित्त, कफ, श्वास और प्रमेहनाशक है ।

अन्यच्च ।

रुदन्ती वह्निकृद्वृष्या पित्तघ्नी च रसायनी॥ (रा० व०)

अर्थ-रुदन्ती-अग्निजनक, वीर्यवर्द्धक, पित्तनाशक और रसायन है ।

विवरण । रुदन्तीके बहुत छोटे २ क्षुप होते हैं, यह क्षुप प्रायः खारी भूमि और जलके समीप उत्पन्न होते हैं, पृथ्वीपर फैल जाते हैं, पत्ते चनोके पत्तोकी समान होते हैं इसपै ओस पडनेसे जलके बिन्दु टपकते हैं उन जलके बिन्दुओंसे नीचेकी पृथ्वी भीगी रहती है इसकारण इसको रुदन्ती कहते हैं ।

चिरपोटानामानि ।

चिरपोटा दीर्घपत्रा कुंतली तिक्तका मता ॥

अर्थ-चिरपोटा, दीर्घपत्रा, कुंतली, तिक्तका (पपोटी, रक्तहन्त्री फलाम्ला, ज्वरकारिणी)

संस्कृतभाषामे	चिरपोटा।
हिंदीभाषामे	पनसोखा, पटकोना, चिरपोटन (प०)
मराठीभाषामे	चिरपोटाणी।
गुजराथीभाषामे	पर्पोटी।
लेटिन्भाषामे	फाईसेलिस् मिनामा Physalis Minima P Indica
अरबीभाषामे	काकनुज।
अरबीभाषामे	हबुलबुहल्याहुदहबअलकाकन्।

अस्या गुणा।

चिरपोटा हिमा रूक्षा भेदिनी श्वासकासजित्।

अर्थ-पनसोखा-शीतल, रूखा, भेदक तथा श्वास और खाँसीको दूर करे है।

अन्यच्च।

पर्पोटी पानलेपाभ्यां रक्तविद्राविणी ध्रुवम्।
तस्याः पक्कफल पित्तश्लेष्मलं ज्वरकारि च॥

अर्थ-चिरपोटेके पत्तोको पीसकर लेप करनेसे रक्तद्रावण होता है इसके पके फल पित्त, कफ और ज्वरको उत्पन्न करनेवाले है।

विवरण। इसके क्षुप होते है, इसमे बडे २ बोदने लगते है उनके भीतर सफेद रंगके फल होतेहै वह फल कच्ची अवस्थामे कडवे और पकनेपर खट्टे तथा मीठे होजाते है।

कुरण्टकनामानि।

कुरण्डिका क्षेत्रभूपा कुरण्टी क्षेत्रनाशिनी॥

अर्थ-कुरण्डिका, क्षेत्रभूपा, कुरटी, क्षेत्रनाशिनी (विकट, सकुरण्ड)

संस्कृतभाषामे	कुरण्डिका।
हिन्दीभाषामे	कुरडवृक्ष (दादमारि० दे०)
मराठीभाषामे	लघुकुराडिका, थोरकुराण्डिका।
गुजरातीभाषामे	नानोआगियो, मोटोआगियो।
लैटिन्भाषामे	एमानियावेसिकेटोरिया। Ammania Vesicatoria

कुरण्डिकागुणा।

कुरण्डिका सरा रुच्या गुर्वी चाग्निप्रदीपनी। नाशिनी कफवातानां वैद्यैस्तु परिकीर्त्तिता॥ बृहत्कुरंडिका शीता पाके मा-

घ्वी कटुः स्मृता । तिक्ता क्षारा च रूक्षा च सरा वृष्या जडा मता ॥ वातला पित्तला वस्तौ वातकारिकफापहा । रक्तदोषं मूत्रकृच्छ्रं नाशयेदिति कीर्त्तिता ॥ (नि० र०)

अर्थ-कुरंड-सारक, रुचिकारक, भारी, अग्निप्रदीपक तथा कफ और वातको दूर करे है । बडा कुरड-शीतल, पचनेमे मधुर, चरपरा, कडवा, क्षार, रुखा, सारक, वीर्य्यवर्द्धक, जड, वातकारक, पित्तजनक, वस्तिमे वातकरनेवाला तथा कफ, रुधिरविकार और मूत्रकृच्छ्रको दूर करे है ।

विवरण । कुरण्ड प्राय घरबाहर खेतबागोंमे अधिकतासे होताहै फूल सुफेदरंगका आता है ।

कुम्भिकानामानि ।

कुम्भिका वारिपर्णी च वारिमूली खमूलिका ।
आकाशमूली कुतृणं कुमुदा जलवल्कलम् ।

अर्थ-कुम्भिका, वारिपर्णी, वारिमूली, खमूलिका, आकाशमूली, कुतृण, कुमुदा, जलवल्कल (श्वेतपर्णा, अशाकुम्भी, पानीयपृष्ठज, कुम्भी, वारिमूली, खली, पर्णी, पृश्नी, वारिकर्णिका, दलाढक, वारिकर्णि

संस्कृतभाषामे	कुम्भिका, वारिपर्णी ।
हिन्दीभाषामे	जलकुम्भी, कुम्भी (काई) ।
वंगभाषामे	पाना, टोकापाना ।
मराठीभाषामे	जलमंडवी ।
गुजरातीभाषामे	जलकुम्भी ।
कर्णाटकीभाषामे	हावलं ।
तैलिङ्गीभाषामे	तुंटिकूर ।

कुम्भिकागुणा ।

वारिपर्णी हिमा तिक्ता लघ्वी स्वाद्वी सरा कटुः ।
दोषत्रयहरी रूक्षा शोणितज्वरशोषकृत् ॥

अर्थ-जलकुम्भी-शीतल, कडवी, हलकी, स्वादिष्ठ, सारक, चरपरी, त्रिदोषनाशक रूखी तथा रुधिरविकार और ज्वरको दूर करे है ।

विवरण। जलकुम्भी अर्थात् काई प्राय बडे छोटे सब तालावोंमें जलके ऊपर हरे पीले रंगकी पडी होती है ।

शैवालनामानि।

शैवालं जलनीली स्याच्छैवलं जलजं च तत्

अर्थ-शैवाल, जलनीली, शैवल, जलज, (शेषान, शेवाल, शिवल, शेपाल, जलनीलिका, जलनील, अम्बुचामर, जलकुन्तल, मंजुल, सेवाल, शेवाल, वारिचामर, सलिलकुण्डल, हठपर्णी, अम्बुताल, जलशूक, जलाश्चन, अरक, जलकेश, कावार, जलपृष्ठजा)

संस्कृतभाषामे	शैवाल।
हिन्दीभाषामे	सिवार।
बंगभाषामे	शेओयाला
मराठीभाषामे	शेवाळ।
गुजरातीभाषामें	शेवाल, लील।
तैलिङ्गीभाषामें	नाचु।
कर्णाटकीभाषामे	हावळ।
लैटिन्भाषामे	सिरेटोफिल्लमसबमर्सम। Serratophyllum Submeısum
फारसीभाषामे	पशमेदरा, जामेगूक, जवाल।
अरबीभाषामे	तुहलब।

शैवालगुणा।

शैवालं शीतलं स्निग्ध सन्तापव्रणनाशनम्॥

अर्थ-सिवार-शीतल, स्निग्ध तथा सन्ताप और व्रणको दूर करेहै।

अन्यच्च।

शैवालः शीतलः स्निग्धस्तिक्तः स्वादुर्लघुः कटुः।
सरः सन्तापव्रणजिज्ज्वरपित्तत्रिदोषहा।
रक्तदोषस्य शमनो विज्ञेयश्च चिकित्सकैः॥

अर्थ-सिवार-शीतल, स्निग्ध, कडवी, स्वादिष्ट, हलकी, नमकीन, सारक, तथा सन्ताप, व्रण, ज्वर, पित्त, त्रिदोष और रुधिरके विकारोंको दूर करे है।

विवरण। सिवारभी जलके ऊपर वालोंसी आच्छादित रहतीहै। यह कई प्रकारकी होतीहै सिवार इस देशमें, चीनी साफकरनेमे विशेष करके काममे लीजातीहै।

अत्यम्लपर्णीनामानि।

अत्यम्लपर्णी तीक्ष्णा च कण्डूरा वल्लिसूरणा

वल्ली करवडादिश्च वनस्थारण्यवासिनी ॥

अर्थ-अत्यम्लपर्णी, तीक्ष्णा, कण्डूरा, वल्लिसूरणा, करवडवल्ली, वनस्था, अरण्यवासिनी।

संस्कृतभाषामे	अत्यम्लपर्णी ।
हिन्दीभाषामे	रामचना (खट्टआ)
मराठीभाषामे	कडमडवल्ली, आवटवेल ।
गुजरातीभाषामें	खाट खट्टुवपल्त्र ।
कर्णाटकीभाषामे	हेग्गोली ।
लैटिन्भाषामे	वाईटीस पेंडाफाईला Vitis pentaphylla

अस्या गुणा ।

अत्यम्लपर्णी तीक्ष्णाम्ला प्लीहशूलविनाशिनी
वातहृद्दीपनी रुच्या गुल्मश्लेष्मामयापहा ॥ (रा०नि०)

अर्थ-अत्यम्लपर्णी-तीक्ष्ण, अम्ल, अग्निको दीपन करनेवाली, रुचिकारक, तथा प्लीहा, शूल, वात, गुल्म और कफ इन रोगोंको दूर करै है।

विवरण-बडी बेल होतीहै, पत्ते जिमीकंदकी समान एक डंडीमे पाँच पाँच होते है, फल करोंदेकी समान झुमकोंमे लगते हैं इस बेलके पत्ते,डंडी सब खट्टी होतीहै।

मखान्ननामानि ।

मखान्नं पद्मबीजाभं पानीयफलमित्यपि ॥

अर्थ-मखान्न, पद्मबीजाभ, पानीयफल ।

संस्कृतभाषामे	मखान्न ।
हिंदीभाषामें	मखाना ।
बंगभाषामे	मखाना ।
मराठीभाषामे	मखाणे ।
गुजरातीभाषामे	मखाना ।
दे०	गीलागिच ।
लैटिनभाषामे	युर्यलोफेरोक्स । Euryeli ferox

मखान्नगुणा ।

मखान्नं पद्मबीजस्य गुणैस्तुल्यं विनिर्दिशेत्॥(भा०प्र०)

अर्थ-मखानेके गुण कमलगट्टेकी समान है ।

विवरण-मखाने कमलगट्टोको भूनकर बनाये जातेहैं इस कारण इसके गुण कमलगट्टेकी समान जानने ।

मर्यादवल्लीनामानि ।



मर्य्यादा मारवल्ली च सागरा मन्मथापि च ।
युग्मपत्रा रक्तपुष्पा तथा सागरमेखला ॥

अर्थ-मर्य्यादा, मारवल्ली, सागरा, मन्मथा, युग्मपत्रा, रक्तपुष्पा, सागरमेखला ।

संस्कृतभाषामे	मर्य्यादालता ।
हिन्दीभाषामे	मरजादवेल ।
दक्षिणीभाषामे	दोपाचीलता ।
वंगभाषामे -	छगलंकुरी (ढा०) ।
कोकणीभाषामे	मर्य्यादावेल ।
गुजरातीभाषामे	मरजादवेल्य ।
लैटिन्भाषामें	आईपोमिया बिलोब । Ipomoea biloba

अस्य गुणाः ।

मर्य्यादवल्लिका शीता ग्राहिणी सारका गुरुः ।
पाककाले चोषणा स्याद्वातला गर्भकर्षिणी ॥
विषूचिकां च शूलं च वान्ति चामं च नाशयेत् ।(नि०र०)

वल्ली करवडादिश्च वनस्थारण्यवासिनी ॥

-अत्यम्लपर्णी, तीक्ष्णा, कण्डुरा, वल्लिस्रणा, करवडवल्ली, अरण्यवासिनी ।

तभाषामें	अत्यम्लपर्णी ।
भाषामें	रामचना (खट्टुआ)
ठीभाषामें	कडमडवल्ली, आवटवेल ।
ातीभाषामें	खाट खट्टूवयल्य ।
टकीभाषामें	हेग्गोली ।
ग्भाषामें	वाईटीस पेंडाफाईला Vitis pentaphylla

अस्या गुणा ।

अत्यम्लपर्णी तीक्ष्णाम्ला प्लीहशूलविनाशिनी
वातहृद्दीपनी रुच्या गुल्मश्लेष्मामयापहा ॥ (रा०नि०)

-अत्यम्लपर्णी-तीक्ष्ण, अम्ल, अग्निको दीपन करनेवाली, रक, तथा प्लीहा, शूल, वात, गुल्म और कफ इन रोगोको है ।

रण-बडी बेल होतीहै, पत्ते जिमीकंदकी समान एक डंडीमें च होते है, फल करोंदेकी समान झुमकोमें लगते है इस ात्ते,डंडी सब खट्टी होतीहै ।

मखान्ननामानि ।

मखान्नं पद्मबीजाभं पानीयफलमित्यपि ॥

-मखान्न, पद्मबीजाभ, पानीयफल ।

कृतभाषामें	मखान्न ।
भाषामें	मखाना ।
भाषामें	मखाना ।
ाठीभाषामें	मखाणे ।
रातीभाषामें	मखाना ।
	गीलागिच ।
टेनभाषामें	युर्यलोफेरोक्स । Euryeli ferox

मखान्नगुणा ।

मखान्न पद्मबीजस्य गुणैस्तुल्य विनिर्दिशेत् ॥ (भा०प्र०)

अर्थ-मखानेके गुण कमलगट्टेकी समान है।

विवरण-मखाने कमलगट्टोको भूनकर बनाये जातेहै इस कारण इसक गुण कमलगट्टेकी समान जानने।

मर्यादवल्लीनामानि।



मर्य्यादा मारवल्ली च सागरा मन्मथापि च।
युग्मपत्रा रक्तपुष्पा तथा सागरमेखला ॥

अर्थ-मर्य्यादा, मारवल्ली, सागरा, मन्मथा, युग्मपत्रा, रक्तपुष्पा, सागरमेखला।

संस्कृतभाषामें	मर्य्यादालता।
हिन्दीभाषामे	मरजादवेल।
दक्षिणीभाषामें	दोपार्चालता।
वंगभाषामे	छगलंकुरी (ढा०)।
कोकणीभाषामे	मर्य्यादावेल।
गुजरातीभाषामे	मरजादवेल्य।
लैटिनभाषामें	आईपोमिया विलोच। Ipomoea biloba

अस्य गुणाः।

मर्य्यादवल्लिका शीता ग्राहिणी सारका गुरुः।
पाककाले चोषणा स्याद्वातला गर्भकार्पिणी ॥
विषूचिकां च शूलं च वान्तिं चामं च नाशयेत्।(नि०र०)

अर्थ-मरजादवेल-शीतल, मलरोधक, सारक, भारी, पचनेमे चरपरी, वातकारक, गर्भको अपकर्षण करनेवाली तथा विषूचिका, शूल, वमन, और आमको दूर करे है।

विवरण। मर्यादवेल प्रायः अनूपदेशमे अर्थात् नदीके निकट अधिकतासे होतीहै, इसके पत्ते अश्मन्तकवृक्षकी समान दो दो एकत्र होते है, फूल लाल होता है।

झिल्लनामानि।

झिल्लो रक्तापहो नीलः सुझिल्लो मृदुपत्रकः॥

अर्थ-झिल्ल, रक्तापह, नील, सुझिल्ल, मृदुपत्रक।

संस्कृतभाषामें	झिल्ल।
हिन्दीभाषामें	झिल।
मराठीभाषामें	सुरकुट।
गुजरातीभाषामें	झिल्य।
लैटिन्भाषामें	इंडिगोफोरा पोसिफ्लोरा। Indigofora pansiflora

अस्य गुणाः।

झिल्लो वातास्रकं हन्ति शीतवीर्य्योग्निदीपनः।

अर्थ-झिल्ल वातरक्तको दूर करनेवाला, शीतल और अग्निको दीपन करनेवाला है।

विवरण-झिलका क्षुप होता है, इसकी छाल लाल रंगकी होती है, पत्ते बहुत छोटे होते है, फूल लाल होता है,फली छोटी होतीहै।

एकवीरनामानि।

एकवीरो महावीरः सकृद्वीरः सुवीरकः।
एकादिवीर्य्यपर्य्यायो वीरश्च षड्विधाह्वयः॥

अर्थ-एकवीर,महावीर,सकृद्वीर,सुवीरक,एकादिवीर्यपर्याय,वीर।

संस्कृतभाषामें	एकवीर।
हिन्दीभाषामे	एकवीर।
मराठीभाषामे	असाणा।
गुजरातीभाषामें	एकलकंटो।
कर्णाटकीभाषामें	गडुविक्क।
लैटिन्भाषामे	ब्रायोडेलियामोण्टेना। Briodelia montana

एकवीरगुणाः।

एकवीरा स्मृता तिक्ता चात्युष्णा वातहा मता।
पक्षाघातं पृष्ठकटीशूलं चैव विनाशयेत् ॥ (नि० र०)

अर्थ-एकवीर वृक्ष- कडवा, अत्यन्त गरम, वातनाशक तथा पक्षाघात, पृष्ठ और कटिशूलको दूर करेहै।

विवरण-एकवीरके जंगलमें बडे बडे वृक्ष होते है, इसमें बडा, मोटा और अलग २ एक एक काँटा होताहै, पत्ते पाखरकी समान होते है, फल छोटे छोटे और झुमखोंमें लगते है।

कंथारीनामानि।

कंथारी कंथरी कथा दुर्धर्षा तीक्ष्णकण्टका।
तीक्ष्णगंधा क्रूरगंधा दुःप्रवेशाष्टधाभिधा ॥

अर्थ-कंथारी, कंथरी, कंथा, दुर्धर्षा, तीक्ष्णकण्टका, तीक्ष्णगंधा, क्रूरगंधा, दुःप्रवेशा (अर्हिस्रा, जालि, गृध्रनखी, कंथारिका, क्रूरकर्मा, वक्रकंटकी, वल्या, कपालकुलिका, अम्लफला, गुच्छगुल्मिका।

संस्कृतभाषामें	कंथारी।
हिन्दीभाषामें	कंथारी, कंतार।
मराठीभाषामें	कथार।
गुजरातीभाषामें	कथार।
कर्णाटकीभाषामें	कांतरु।
लैटिनभाषामें	केपेरिस सिपिएरिया।

अस्या गुणाः।

कथारी दीपनी रुच्या कटूष्णा तिक्तका मता।
रक्तदोषं कफं वातं ग्रन्थिरोगं च नाशयेत् ॥
स्नायुरोगं च शोफं च नाशयेदिति कीर्तिता।(नि०र०)

अर्थ-कंथारी-अग्निदीपक, रुचिकारक, चरपरी, गरम, कडवी तथा रुधिरविकार, कफ, वात, ग्रन्थिरोग, स्नायुरोग और सूजनको दूर करे है।

विवरण। कंथारी तीन चार जातिकी होतीहै एक हरी डंडीकी होतीहै इसके पत्ते गोल होतेहैं, फूल सुफेद रंगके और सुफेद केशर युक्त होतेहै, फल छोटे छोटे चनेके बराबर होते है।

आरिनामानि।

आरिः सदानिकोद्दाला ज्ञेया खदिरपत्रिका ॥

अर्थ-आरि, सदानिका, उद्दाला, और खदिरपत्रिका (वल्लिखदिर, स्वादिवल्लरी)।

संस्कृतभाषामे	आरि।
हिन्दीभाषामे	आरी खैरबेल।
मराठीभाषामे	आरई खेल्याखेर आराटी।
कर्णाटकीभाषामें	सीगुरी।
गुजरातीभाषामे	खेरवेल्य।
लैटिन्भाषामे	एकेश्यापिनेटा। Acacia pennta

अस्या गुणाः।

आरिः कषायकटुका तिक्ता रक्तार्तिपित्तजित्।

त्रिदोषघ्नी रसे पाके चाम्लोष्णानिलकासहा॥(रा०नि०)

अर्थ-आरि-कषैली, चरपरी, कडवी, रस और पाकमे अम्ल,गरम तथा रुधिरविकार, पित्त,त्रिदोषवात और खांसीको दूर करे है।

विवरण। आरीकी वेल होती है, इसपै, काटे होते है, पत्ते छोटे छोटे खैरकी समान होते है, फली चपटी नीली रंगकी होती है, फूल तन्तुयुक्त कीकरके फूलकी समान होते है।

भ्रमरच्छल्लीनामानि।

भृगाह्वा भ्रमराह्वा च क्षीरद्रुर्भृंगमूलिका।

उग्रगंधा च भृगत्वक्छल्ली भ्रमरछल्लिका॥

अर्थ-भृगाह्वा, भ्रमराह्वा, क्षीरद्रु, भृगमूलिका, उग्रगंधा, भृगत्वक्, छल्ली, भ्रमरछल्लिका।

सस्कृतभाषामे	भ्रमरछल्ली।
हिन्दीभाषामे	भमरछली।
मराठीभाषामे	भ्रमरसाली।
गुजरातीभाषामे	भमरछाल्य।
कर्णाटकीभाषामे	उप्पुशके।
लैटिन्भाषामे	हाईमोनोडिक्टिय एक्सेलसं Hyruonodictyom Axoel (Sum)

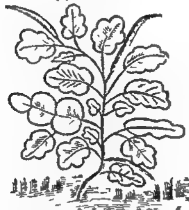
अस्या गुणाः ।

भृगाह्वा कटुका चोष्णा तिक्ता रुच्याग्निदीपनी ।
कण्ठ्या च सर्वदोषघ्नी प्रोक्ता पूर्वैर्भिषग्वरैः (नि०र०)

अर्थ-भमरछल्ली-चरपरी, गरम, कडवी, रुचिकारक, अग्निको दीपन करनेवाली, कण्ठको हितकारी और सर्वदोषनाशक है ।

विवरण। भ्रमर, शालीक वृक्ष बडे २ जंगलमे होतेहैं, पत्ते बादामके समान होतेहैं, फली अत्यन्त पतली आतीहै इसकी लकडी सफेद् रंगकी और अत्यन्त श्रेष्ठ होतीहै प्रायः इसकी लकडीके तलवारके म्यान बनाये जातेहै ।

अजगधानामानि ।



अजगधा बस्तगंधा खरपुष्पा सुगधिका ।
कृाबरी बर्बरागधा तुंगी पूतिमयूरिका ॥

अर्थ-अजगंधा, बस्तगंधा खरपुष्पा, सुगंधिका, काबरी, बर्बरागंधा, तुंगी, पूतिमयूरिका,(अविगंधा,आविगंधिका,ब्रह्मगर्भा,ब्राह्मी)

संस्कृतभाषामें	अजगंधा ।
हिंदीभाषामे	तिलवन ।
मराठीभाषामे	कानफोडी ।
गुजराथीभाषामे	तलवणी ।
कर्णाटकीभाषामें	नीलवणी ।
तैलङ्गीभाषामें	वामिंटा, अजगंधि ।
मला०	कावेला, पावक्का ।

लैटिनभाषामे जिनेन्ड्रोप्सीसपेंटाफिला Gynandropsis pentaphylla

अजगंधागुणाः ।

अजगंधा कटूष्णा स्याद्वातगुल्मोदरापहा ।
कर्णव्रणार्तिशूलघ्नी पीता चेदजने हिता ॥ (रा० नि०)

अर्थ-तिलवन- चरपरी, गरम, तथा वात, गुल्म, उदररोग, कर्णरोग, व्रण और शूलको दूर करे है । इसमे पीली तिलवन अंजनमें हितकारी है ।

विवरण । तिलवन वनबाग जंगल आदिमे होतीहै यह दो प्रकारकी है, एकपर सफेद फूल और दूसरीपर नीलपीत मिश्रित रंगके फूल आतेहै दोनोंमे फली आतीहै बीज काले रंगके निकलते है ।

वृद्धदारुकनामानि ।

वृद्धदारुक आवेगी जन्तुको दीर्घवल्लरी ।
वृद्धा कोटरपुष्पी स्यादजांत्री छगलांत्रिका ॥

अर्थ-वृद्धदारुक, आवेगी, जन्तुक, दीर्घवल्लरी, वृद्धा, कोटरपुष्पी, अजांत्री, छगलांत्रिका (ऋक्षगंधा, छगलांत्री, जुंग, ऋष्यछगलाघ्री, छगला, अंत्री, जुगा, छगली, जुंगक, श्याम, वृष्यगंधा, दीर्घबालुका, छागलांत्रिका, वृद्धकोटरपुष्पी)

जीर्णदारुनामानि ।

जीर्णदारुर्द्वितीया स्याज्जीर्णा फञ्जी सुपुष्पिका ।
अजरा सूक्ष्मपत्रा च विज्ञेया च षडाह्वया ॥

अर्थ-जीर्णदारु, जीर्णा, फंजी, सुपुष्पिका, अजरा और सूक्ष्मपत्रा ।

संस्कृतभाषामें	वृद्धदारु, जीर्णदारु ।
हिन्दीभाषामें	विधारा, कालाविधारा ।
बंगभाषामे	बितारक, बीजतारक, चिद्धडक ।
मराठीभाषामे	श्वेतवरधारा ।
गुजरातीभाषामे	वरधारो ।
लॅटिन्भाषामे	रोरियासेटॅलोइ डझि । Rourcasantaloi (Des)
कर्णाटकीभाषामे	परडुमुडे ।
तेलिङ्गीभाषामे	चद्रपुडी ।

द्विविधवृद्धदारुगुणाः।

वृद्धदारुद्वयं गौल्यं पिच्छिलं कफवातहृत्।
बल्यं कासामदोषघ्नं द्वितीयं स्वल्पवीर्य्यदम्(रा० नि०)

अर्थ-दोनो विधारे-गौल्य,पिच्छिल, कफवातनाशक, बलकारक, तथा खाँसी और आमदोषको दूर करे है। इनमे दूसरा विधारा अल्पवीर्य्यवाला है।

अन्यच्च।

साधारणो वृद्धदारुः कटुस्तिक्तः कषायकः। रसायनोष्णो मधुरो मेध्यः स्वर्य्यः सरोऽग्निदः॥ कान्तिधातुकरो बल्यो रुच्यः पुष्टिकरो लघुः। उपदंशं पांडुरोगं क्षयं कासं प्रमेहकम्॥ वातरक्तं चामवातं वातं शोफं कफं जयेत्। (नि०र०)

अर्थ-विधारा-चरपरा, कडवा, कषैला, रसायन, गरम, मधुर, मेधाजनक, स्वरको शुद्ध करनेवाला, सारक, अग्निदीपक,कान्तिजनक, धातुजनक, बलकारक, रुचिकारक, पुष्टिको करनेवाला, हलका तथा उपदंश, पांडुरोग, क्षय, खाँसी, प्रमेह, वातरक्त,आमवात, वात, सूजन और कफको दूर करनेवाला है।

विवरण-विधारा समुद्र शोषकी समान जानपडता है क्योंकि, समुद्रशोष और विधारेके फूल, पत्ते, बेल, काण्ड आदिमे कुछभी अन्तर नही दीखता। इसीकारण कितनेक वैद्य विधारा और समुद्रशोषको एकही मानतेहै। विधारा दो प्रकारका होताहै एक वृद्धदारु, दूसरा जीर्णदारु, जीर्णदारुको फंजी कहतेहै फंजीके गुणदोष आगे लिखेहै।

समुद्रशोषगुणाः।

समुद्रशोषः सम्प्रोक्तो वातलो ग्राहको मतः।
अतिपित्तकरश्चैव कफकृच्च मतो बुधैः॥ (नि० र०)

अर्थ-समुद्रशोष-वातकारक, ग्राही, अत्यन्त पित्तकारक, और कफको उत्पन्नकरनेवाला है।

समुद्रपुष्पगुणाः।

समुद्रपुष्पं तुवरं मधुरं शीतलं मतम्।
रक्तदोषं कफं पित्तं कामलां च विनाशयेत्॥
गर्भिणीकष्टशमनं मुनिभिः परिकीर्त्तितम्।

अर्थ-समुद्रफूल-कषेला, मधुर, शीतल तथा रुधिरविकार, कफ, पित्त, कामला और गर्भिणीके कष्टको दूर करे है, समुद्रशोष और समुद्रफूल यह दोनो विधारेका ही भेद है ।

फञ्जिकानाम गुणाश्च ।

फञ्ज्यां तु फञ्जिका पद्मा ह्यजांत्री चापराजिता । फंजी तु शीतला वृष्या ग्राहका तुवरा कटुः॥ऊषणा मधुरा वल्या स्निग्धा कफकरा गुरुः । विष्टम्भकारिणी वातपित्तहृद्रोगकासहा ॥ क्लेशामदोषशमनी इति पूर्वेभिषग्वराः । (नि० र०)

अर्थ-फंजी-शीतल, वीर्य्यवर्द्धक, मलरोधक, कषेली, चरपरी, गरम,मधुर,वलकारक, स्निग्ध,कफकारक,भारी, विष्टम्भकारक तथा वात,पित्त, हृदयरोग,खाँसी, क्लेश और आमदोषको दूर करे है ।

विवरण । फंजीकी बेल खेतकी बागपर लगादेते हैं, फल समुद्र-शोषकी समान होते है, । पत्तेभी समुद्र शोषकी समान किन्तु कुछ छोटे होतेहै इसके पत्तोंके पतोडे बनाते हे ।

संस्कृतभाषामे	फंजी, फाजिका,पद्मा, अजांत्री,अपराजिता
हिन्दीभाषामे	फंजी।
मराठीभाषामें	फांजी ।
गुजरातीभाषामें	फांग्य ।
लेटिन्भाषामें	क्लिविया ओर्नेटा ।

वेल्लतरुनामानि ।

वेल्लतरुर्दीर्घमूलो वीरद्रुर्बहुवारकः ॥

अर्थ-वल्लतरु, दीर्घमूल, वीरद्रु, बहुवारक । (क्षुधाकुशलसंज्ञक, वीरवृक्ष, कृच्छ्रारि)

संस्कृतभाषामे	वेल्लतरु ।
हिन्दीभाषामे	वरबेल, विल्वान्तर ।
मराठीभाषामे	वेल्लतूर ।
तैलिङ्गीभाषामे	वेणुतुरुचेट्टु ।
कर्णाटकीभाषामें	ओढंडू ।
तामिलीभाषामे	विडात्तर ।
लैटिन्भाषामे	डेस्मान्थस् सिनेरियस् ।

अस्य गुणा।

वेल्लतरुस्तु कटुकः पथ्यश्चोष्णोऽग्निदीपनः। रसे पाके च तिक्तः स्याद्ग्राहको वातरोगहा॥ मूत्रकृच्छ्राश्मरीसंधिशूलघ्नो योनिरोगहा। मूत्राघातस्य शमन ऋषिभिः परिकीर्तितः॥ (नि० र०)

अर्थ–वेलंतर–चरपरा, पथ्य, गरम, अग्निप्रदीपक, रस और पाकमे कडवा, मलरोधक, वातरोगनाशक तथा मूत्रकृच्छ्र, पथरी, संधिशूल, योनिरोग और मूत्राघातरोगको दूर करे है।

विवरण। वेलन्तरके वृक्ष मारवाडदेशमे तथा नर्मदानदी और चर्म्मण्वती आदि नदियोंके तटपर होते है, इसपर कांटे होतेहै, पत्ते छोकरके समान छोटे २ होते हैं, फूल पांचों रंगके आते है।

कर्कटनामानि।

कर्कटः कार्कटः कर्कः क्षुद्रधात्रीसमः स्मृतः।
क्षुद्रामलकसंज्ञश्च प्रोक्तः कर्कफलश्च षट्॥

अर्थ–कर्कट, कार्कट, कर्क, क्षुद्रधात्री, क्षुद्रामलकसंज्ञ, कर्कफल, (गांगेरुक, कर्कटक, मृगलेंडक, तोदन, क्रन्दन, मृगविट्सदृश)

संस्कृतभाषामे	कर्कटफल।
हिन्दीभाषामे	गंगेरुवा, काठआमला।
वंगभाषामे	काट आमला।
मराठीभाषामे	कुवकां काकणा।
गुजरातीभाषामे	करपटां।
कर्णाटकीभाषामें	वालिगे।
लैटिन्भाषामे	गेरुगा पिनेटा। Garugapindatta

अस्या गुणा।

तोदनं ग्राहकं चाम्लं लघूष्णं चाग्निदीपकम्। पित्तलं च फलं चास्याः पक्वन्तु मधुरं मतम्॥ स्निग्धं च तुवरं प्रोक्तं कफवातहरं स्मृतम्। गांगेरुकं तु तुवरमम्लं चोष्णं गुरुस्मृतम्॥ रक्तपित्तकफकरं सारकं वातहारकम्। पक्वं गांगेरुकफलं रुचिरं च गुरु स्मृतम्॥ वातरक्तहरं पित्तनाशकं मुनयो जगुः॥ (नि०र०)

अर्थ-काठआमला-मलरोधक, खट्टा, हलका, गरम, अग्निदीपक और पित्तकारक है। इसके पक्केफल-मधुर, स्निग्ध, कपेले और कफवातनाशक है दूसरे प्रकारका काठआमला-कपेला, खट्टा, गरम, भारी, रक्तपित्तकारक, कफकारक, सारक, वातविनाशक है। इसके पक्के फल-रुचिकारी, भारी, वातरक्तहारी और पित्तको नष्ट करनेवाले हैं।

विवरण। काठआमलेके वृक्ष प्रायः पर्वतोपर अधिकतासे होते हैं पत्ते पंक्तिदार होते हैं, फल आमलेकी समान बहुत छोटे २ होते हैं।

किंकिणीनामानि।

किंकिणी व्याघ्रघंटी च गोविंदी कटुकन्दरी ॥

अर्थ-किंकिणी, व्याघ्रघंटी, गोविंदी, कटूकंदरी, (ग्रन्थिल, व्याघ्रपाद, वर्त्तल, व्याघ्रनखी, कृशांगी, कंटकलता, कारंभा, तापसप्रिया)

संस्कृतभाषामें	किंकिणी।
हिन्दीभाषामें	किंकिणी।
मराठीभाषामें	वाघटी।
गुजरातीभाषामें	वागाटी।
इंग्रेजीभाषामें	थोर्नीकेपरब्रश। Thorny caperdrush
लैटिन्भाषामें	केपेरिस होरिडा। Gappsris Aorrida

अस्या गुणाः।

किंकिणी तुवरा तिक्ता पित्तश्लेष्महरा हिमा।
तत्फलं वातलं त्वामं पक्वं स्वादु त्रिदोषजित् ॥ (म.नि)

अर्थ-किंकिणी-कपेली, कडवी, पित्तकफनाशक और शीतल है। इसके कच्चे फल-वादी और पक्के फल त्रिदोषनाशक हैं।

अन्यच्च।

व्याघ्रघंटा पित्तलोष्णा रुच्या विषकफापहा।
फलं चास्यास्तु तिक्तोष्णं विषूचीकफवातजित्।
त्रिदोषहारिणी प्रोक्ता वैद्यशास्त्रविशारदैः ॥ (नि० र०)

अर्थ-किंकिणी-पित्तकारक, गरम, रुचिकारक तथा विष और कफनाशक है। इसके फल- कडवे, गरम तथा विषूचिका, कफ, वात और त्रिदोषनाशक हैं।

विवरण । किंकिणिके वृक्ष वन और पर्वतोंपर होते हैं । इस वृक्षपर बेरकि समान बांके कांटे होते है, फल लम्बे, गोल और बीचमे गांठदार होते है फलका मध्यमभाग हिंगोटकी समान होता है ।

गोरक्षीनामानि ।

गोरक्षी सर्पदडी च दीर्घदंडी सुदंडिका ।
चित्रला गंधबहुला गोपाली पंचपर्णिका ॥

अर्थ-गोरक्षी, सर्पदंडी, दीर्घदंडी, सुदंडिका, चित्रला, गन्धबहुला, गोपाली, पंचपर्णिका ।

संस्कृतभाषामें	गोरक्षी ।
हिन्दीभाषाम	गोरखइमली ।
मराठीभाषामे	गोरखचिंच ।
गुजरातीभाषामे	रुखडो ।
लेटिनभाषामे	एडन्सोनिया डिजिटेट ।
अरबीभाषामें	हुवहबु ।

अस्या गुणा ।

गोरक्षी मधुरा तिक्ता शिशिरा दाहपित्तनुत् ।
विस्फोटवान्त्यतीसारज्वरदोषविनाशिनी ॥ (रा० नि०)

अर्थ-गोरखइमली-मधुर, कडवी, शीतल तथा दाह, पित्त, विस्फोट, वमन, अतीसार और ज्वरको दूर करे है ।

विवरण। इसका बडा वृक्ष होता है एक डण्डीमे सेमलकी समान पांच २ पत्ते होते है, फूल बडा और सफेद कमलकी समान होता है, फल तोंबी अथवा तोरईकी समान आते हैं ।

पातालतुम्बीनामानि ।

गर्त्तालाबु च भूतुम्बी देवी वल्मीकसम्भवा ।
दिव्यतुम्बी नागतुम्बी शक्रचापसमुद्भवा ॥

अर्थ-गर्त्तालाबु, भूतुम्बी, देवी, वल्मीकसम्भवा, दिव्यतुम्बी, नागतुम्बी, शक्रचापसमुद्भवा ।

संस्कृतभाषामे	पातालतुम्बी ।
हिन्दभिाषामे	पातालतोम्बी ।

गुजरातीभाषामे पातालतुम्बडी ।
मराठीभाषामे नागतुम्बी ।
लैटिन्भाषामे बोविस्टास्पिसिस् । Bovista sp eicces

भूतुम्बीगुणा ।

भूतुम्बी कटुका तिक्ता विषदोषविनाशिनी । प्रसूतिकादोषसम्भूतातिसारहरा परा ॥ दंतबंध ज्वर शोथं सस्वेदं सप्रलापकम् । जयेदात्मप्रभावेण ह्यचिंत्या वस्तुशक्तयः ॥

अर्थ-भूतुम्बी-चरपरी, कडवी, विषदोषविनाशक तथा प्रसूतके समयका अतिसार, दाँतोकी जडता और सूजन, स्वेद तथा प्रलापयुक्त ज्वरको दूर करे है ।

विवरण । पातालतुम्बी खेतोमे और करोमे होतीहै इसपर बहुत बारीक और पीले रंगके छीटेवाले विच्छूके डंकके समान कांटे होते है, कांटेके बीचमे तोम्बीकी समान पातालतुम्बी होती है।इसमे अनेक चमत्कारिक गुण है जो कि,अन्य औषधियोमे नही देखे जाते ।

हेरम्बनामानि ।

हेरम्बः खरपत्रः स्यात्कटकी दंतधावनः ।

अर्थ-हेरम्ब, खरपत्र, कंटकी- दंतधावन ।
संस्कृतभाषामे हेरम्ब ।
हिंदीभाषामे हेरम्ब-वज्रदंती ।
मराठीभाषामे दातूणी, हेरम्बवृक्ष ।
गुजरातीभाषामें वज्रदन्ती ।
लैटिन्भाषामें एपिकार्पस ओरीएण्टेलीस । Epiearpus Orientalis

अस्य गुणा ।

हेरम्बवृक्षः कफहा वातनाशकरो मतः ।
हेरम्बवृक्षमुलं तु प्रोक्तं वांतिकरं बुधैः ॥

अर्थ-हेरम्बवृक्ष-कफनाशक और वातको दूर करे है । हेरंबवृक्षकी जड वमनकारक है ।

विवरण । इसका बडा वृक्ष होताहै, पत्ते बेरोकी समान होतेहैं, इसकी दतौन करते है ।

वृश्चिकानामानि।

वृश्चिका नखपर्णी च पिच्छिलाप्यलिपत्रिका।

अर्थ-वृश्चिका, नखपर्णी, पिच्छिला, अलिपत्रिका (दुस्पर्शा, धूम्रपुष्पा, दहना, नक्रदंष्ट्रिका, सर्पदंष्ट्री, विषघ्नी, सूतवल्लभा)

संस्कृतभाषामें	वृश्चिका।
हिन्दीभाषामें	विछवावास।
बङ्गभाषामें	विछुटी।
मराठीभाषामे	आग्या, विचवा।
कर्णाटकीभाषामे	इंगुले, मासमा, होत्रगोत्रे।
तामिलीभाषामे	कायचोरी।
तालगाभाषामे	दुलगाद।
तु०	पच्चीरंगी।
मल०	कोसादुवा।
गुजरातीभाषामे	खाजवणी।
लेटिन्भाषामे	जिरार्डिनिया हिटरोफाइला Gyrard inia heterophylla

अस्या गुणा।

वृश्चिका पिच्छिलाम्ला स्यादन्त्रवृद्ध्यादिदोषनुत्॥ (रा नि.)

अर्थ-विछवा-पिच्छिल, खट्टी और अंत्रवृद्ध्यादि दोषनाशक है।

अन्यच्च।

वृश्चिकाली तु बल्या स्यात्तिक्ता कट्वी विबन्धनुत्।
हृद्या चोष्णा वस्तिशुद्धिकारिणी रक्तपित्तहा।
अरोचकं नाशयतीत्येवमाहुर्मनीषिणः।

अर्थ-विछवा-बलकारक, कडवी, चरपरी, विबन्धनाशक, हृदयको हितकारी, गरम, वास्तिशोधक, रक्तपित्त और अरुचिको दूर करेहै।

विवरण। विछवा कईप्रकारका होताहै, इसके बेल क्षुप और वृक्ष होतेहै। इसपर कौंछकी समान रुआ होताहै।

तुवरनामानि।

तुवरः सागरोद्भूतः कुष्ठहाऽलसकापहः॥

अर्थ-तुवर, सागरोद्भूत, कुष्ठहा, अलसकापहा।

संस्कृतभाषामें	तुवर ।
हिन्दीभाषामें	तवरक ।
मराठीभाषामें	तीमर ।
गुजरातीभाषामें	तवरियां चेरियां ।
लैटिन्भाषामें	एविसिनीया टामेंटासा Avicenia tomentosa

तुवरगुणाः ।

तुवरस्तुवरश्चोष्णो रसे पाके च तिक्तकः ।
कफव्रणकृमीमेहकुष्ठज्वरविनाशनः ॥
आनाहमर्शशोफं च नाशयेदिति ते जगुः । (नि० र०)

अर्थ-तुवर-कषेला, गरम, रसमें और पचनेमें कडवा, तथा कफ व्रण, कृमि, प्रमेह, ज्वर, आनाह, बवासीर और सूजनको दूर करे है।

विवरण । इसके वृक्ष समुद्र और नदियोंके तट पर होते हैं, फल इमलीके समान होते हैं इसके फलको पशुओंको देनेसे दूध अधिक बढ जाताहै ।

एरण्डचिर्भिटनामानि ।



एरण्डचिर्भिटो वृक्षश्चिर्भिटा नलिकादलः ।
वातकुम्भफलः प्रोक्तः स चैव मधुकर्कटी ॥

अर्थ-एरण्डचिर्भिटवृक्षको चिर्भिटा और नालिकादल कहते हैं। इसके फलोंको वातकुम्भफल और मधुकर्कटी कहते हैं।

संस्कृतभाषामें	वातकुम्भ।
हिन्दीभाषामें	अंडखरबूजा पोपैया।
मराठीभाषामें	पोपेया।
गुजरातीभाषामें	पोपयो, एरंडकाकडी, झाडचीभडी।
तैलिङ्गीभाषामें	पोपडचेट्टु।
इंग्रेजीभाषामें	पेपो Papaw
लैटिन्भाषामें	केरिकापापैया। Caricapapaya
कर्णाटकीभाषामें	पप्पलडु।
तुर्कीमें	वप्पागाई।
तैलिङ्गभाषामें	वोप्पई।
मला०	पप्पायम्।
तामिलीभाषामें	पप्पाई।

अस्य गुणाः।

वातकुम्भफलं ग्राहि कफवातप्रकोपनम्।
तत्पक्कं मधुरं रुच्यं पित्तनाशकरं गुरु॥

अर्थ-अंडखर्बूजा-मलरोधक, कफ और वातको कुपित करे है, पका अण्डखर्बूजा- मधुर, रुचिकारक, पित्तनाशक और भारी है।

अन्यच्च।

मध्वेरण्डफलं पक्कं किंचित्तिक्तञ्च माधुरम्।
वृष्यं कफकरं हृद्यमुन्मादस्य विनाशकम्॥
वर्ध्मरोगहरं चैव स्निग्धं वातविनाशनम्।

अर्थ-पका अंडखर्बूजा-किंचित् कडवा, मधुर, वीर्यवर्द्धक, कफकारी, हृदयको हितकारी, उन्मादरोगको हरनेवाला, वध्मरोगको विनष्ट करनेवाला, स्निग्ध और वातविनाशक है।

विवरण। अंडखर्बूजेके वृक्ष प्रायः अंडके समान होते हैं। बल्कि यह अंडकाही भेद है। पत्तेभी अडकेसे होते हैं किन्तु यह वृक्ष बहुत लम्बे और सीधे होते हैं। फल बडे २ लम्बे और गोल तीन चार एका लगते हैं।

क्षुद्रबादामनामगुणाश्च।

बदामः क्षुद्रसञ्ज्ञस्तु क्षुद्रबीजोम्लमाधुरः।
तुवरो ग्राहि पित्तघ्नः शिशिरः कफशुक्रकृत् ॥

अर्थ-क्षुद्रबादाम और क्षुद्रबीज यह दो नाम देशीबादामके है। देशीबादाम-खट्टा, मधुर, कषेला, मलरोधक, पित्तनाशक, शीतल, कफ तथा शुक्रको करे है।

विवरण। देशीबादामके वृक्ष प्रायः बाग और वन सर्वत्र होते है, पत्ते बराबर शाखाओमे दोनो ओर होते है, फल अपक्व अवस्थामे हरे और खानेमे कषेले तथा खट्टे होते है और पकजानेपर लाल तथा मधुर होजाते है।

संस्कृतभाषामें	क्षुद्रबादाम।
वंगभाषामे	क्षुद्रबादाम।
हिन्दीभाषामे	देशीबादाम।
मराठीभाषामे	हिरवा बदाम।
गुजरातीभाषामे	बदाम लीली।
कर्णाटकीभाषामे	नतवद्द।
तैलिङ्गीभाषामे	बदम।
इंग्रेजीभाषामे	आमण्ड। Almond
लेटिन्भाषामे	टरमिनेलियाकेटापा। Termmanalia catappa

काम्बोजीनामगुणाश्च।

कांबोजिन्यां च काम्बोजी बहुपुष्पा बहुप्रजा।
काम्बोजी ग्राहिणी वातशो फरक्तविभेदकृत् ॥

अर्थ-काम्बोजिनी, काम्बोजी, बहुपुष्पा और बहुप्रजा यह काम्बोजीके संस्कृत नाम है।

काम्बोजी-मलरोधक तथा वात, सूजन और रुधिरके विकारोंको दूर करे है।

विवरण। इसका बडा वृक्ष होता है, पत्ते आमलेके पत्तोंकी समान होते है, इसकी शाखा लम्बी लम्बी होतीहै, फल गोल और अपक्व अवस्थामें हरे होते है और पकनेपर काले होजातेहै।

संस्कृतभाषामें	काम्बोजी।
हिन्दीभाषामे	कम्बोई।
वंगभाषामे	काम्बोजी।
मराठीभाषामें	चिफली।
गुजरातीभाषामे	खेडा कम्बोई।
लेटिन्भाषामें	फाईलेन्थस् मलटीफ्लो रस् ।Phylanthus Multi Florus
	फाइलेन्थस् रेक्टिक्युलेटम्।Phylanthus Recticuletus

अथ निर्विषीनामानि।

निर्विषापविषा चैव विविषा विषहा परा।
विषहन्त्री विषाभावा ह्यविषा विषवैरिणी॥ (रा० नि०)

अर्थ-निर्विषा, अपविषा, विविषा, विषहा, विषहंत्री, विषाभावा, अविषा और विषवैरिणी यह निर्विषीके नाम हैं।

संस्कृतभाषामे	निर्विषी।
हिन्दीभाषामें	निर्विषीघास।
वंगभाषामें	निर्विषीघास।
मराठीभाषामें	निर्विषी कचन्यासारखे झाड असतें।
गुजरातीभाषामें	निर्विषी।
कर्णाटकीभाषामें	निर्विषी।
फारसीभाषामे	जद्वार।
लेटिन्भाषामे	डेल्फिनियं डिनुडेटं ।Delphineum Denudatum

अस्या गुणाः।

निर्विषी कटुका शीता व्रणरोपणकारिणी।
कफवातं रक्तदोषं विषं चैव विनाशयेत्॥

अर्थ-निर्विषी-कटु,शीतल, व्रणको भरनेवाली तथा कफ, वात, रुधिरविकार और विषको नष्ट करे है।

विवरण। निर्विषीघास मोथेकी समान होती है यह प्राय हिमालय, मलयाचल, काश्मीर और केदार आदि पर्वतोपर अधिकतासे

उत्पन्न होती है, इसका कंद अतीसकी समान होता है, यह सां
विच्छू आदि अनेक प्रकारके विषोको दूर करे है ।

अथ नागजिह्वानामगुणाश्च ।

नाहौ च नागजिह्वाख्या तिक्तपत्रा क्षितौक्षुपः ।
कृमिहृत्क्षारकर्म्मा च तथामभिजकः स्मृतः ॥

अर्थ-नाहु, नागजिह्वा, तिक्तपत्रा, क्षितौक्षुप, कृमिहृत्, क्षारकर्म्मा, मभिजक यह नागजिह्वाके नाम है ।

संस्कृतभाषामे	नागजिह्वा ।
हिन्दीभाषामे	छोटा किरायता ।
बंगभाषामे	नागजिह्वा ।
मराठीभाषामे	तानवडीचे झाड ।
गुजरातीभाषामें	मामेजवो ।
लेटिन्भाषामे	हिपियन् ओरिएण्टल् । Hipian orientale

गुण-नागजिह्वा (छोटा किरायता)-कटु, अत्यन्त तिक्त तथा कृमिदोष, वातरोग और ज्वरको दूर करे है ।

विवरण । छोटे किरायतेके प्रायः चौमासेमे अनेक क्षुप उत्पन्न होजाते है, पत्ते अंगुलीकी समान लम्बे और पतले २ होते है फल, छोटे छोटे गोल आते है ।

अथ माकन्दीनामानि ।

माकन्दी बहुमूला च मादिनी गंधमूलिका । एकविंशतिमूली च श्यामला गिरिकंदका॥ मायिनी गिरिवर्य्या च गिरिमध्या गिरिप्रिया । वराहेष्टा गिरिमती वर्त्ती चतुर्दशाभिधा ॥

(स० नि०)

अर्थ-माकन्दी, बहुमूला, मादिनी, गंधमूलिका, एकविंशतिमूली, श्यामला, गिरिकन्दका, मायिनी, गिरिवर्य्या, गिरिमध्या, गिरिप्रिया, वराहेष्टा, गिरिमती और वर्त्ती यह नाम है ।

संस्कृतभाषामे	माकन्दी ।
हिन्दीभाषामे	माईमूल ।
बंगभाषामें	माद्राणी ।
मराठीभाषामें	मायमूले माईनी-मोगिनी-मायिणी ।

गुजरातीभाषामें	गरमर ।
कर्णाटकीभाषामे	मागिणी ।
लैटिन्भाषाम	कोलेन्सवोर्वटस् । Colens Bor Brutus

अस्या गुणा ।

माकन्दी मधुरा तिक्ता कटुका दीपनी परा ।
रुच्याल्पवातकृत्पथ्या जठरामयनाशिनी ॥

अर्थ-माकन्दी-मधुर, तिक्त, कटु, अग्निदीपक, रुचिकारक, अल्पवातकारक, पथ्य और उदररोगको दूर करे है ।

अन्यच्च ।

मायिनी तिक्तका तीक्ष्णा मधुराग्निप्रदीपनी। रुच्या बलकरी चैव प्लीहवातकफाञ्जयेत् ॥ गुल्मोदरानाहशीतज्वरनाशकरी मता । कन्दस्तु पाके मधुरो निकाशी पाण्डुशोफजित् ॥ कृमिप्लीहापाण्डुगुल्मसंग्रहण्युदरार्शजित् ॥ (नि० र०).

अर्थ-माई-तिक्त,तीक्ष्ण, मधुर, अग्निदीपक, रुचिकारक, बलकारक तथा प्लीहा, वात, कफ, गुल्म, उदररोग, आनाह और शीतज्वरको नष्ट करेहै । इसका कन्द-पाकमे मधुर, विकाशी तथा पांडुरोग और सूजनको दूर करेहै तथा कृमि, प्लीहा, पांडु, गुल्म, संग्रहणी उदररोग और बवासीरको दूर करेहै ।

विवरण । माकंदी-खेत और बागोंमे बोई जाती है, इसके क्षुप होतेहैं, नीचे अंगुलीकी समान जड होती है, इसकी डंडी और कन्दी दोनोका शाक बनातेहै ।

झुल्लपुष्पनामगुणाश्च ।

झुल्लपुष्पे ज्वलत्पुष्पः कृच्छ्रहा लघुवृक्षकः ।
पीतपुष्पः पंक्तिपत्रस्तथा लज्जालुकः स्मृतः ॥
झुल्लपुष्पः स्पृष्टमूत्रो मूत्रकृच्छ्रहरः परः ।

अर्थ-झुल्लपुष्प, ज्वलत्पुष्प, कृच्छ्रहा, लघुवृक्षक, पीतपुष्प, पंक्तिपत्र और लज्जालुक वह सस्कृत नाम हैं ।

संस्कृतभाषामे	जलपुष्प ।
वंगभाषामे	झलई ।

उत्पन्न होती है, इसका कंद अतीसकी समान होता है. यह सां बिच्छू आदि अनेक प्रकारके विषोको दूर करे है ।

अथ नागजिह्वानामगुणाश्च ।

नाहो च नागजिह्वाख्या तिक्तपत्रा क्षितौक्षुपः ।
कृमिहृत्क्षारकर्म्मा च तथामभिजकः स्मृतः ॥

अर्थ-नाहु, नागजिह्वा, तिक्तपत्रा, क्षितौक्षुप, कृमिहृत, क्षारकर्म्मा, मभिजक यह नागजिह्वाके नाम है ।

संस्कृतभाषामे नागजिह्वा ।
हिन्दीभाषामे छोटा किरायता ।
बंगभाषामे नागजिह्वा ।
मराठीभाषामे तानवडीचे झाड ।
गुजरातीभाषामें मामेजवो ।
लैटिन्भाषामे हिपियन् ओरिएण्टल् । Hipian orientale

गुण-नागजिह्वा (छोटा किरायता)-कटु, अत्यन्त तिक्त तथा कृमिदोष, वातरोग और ज्वरको दूर करे है ।

विवरण । छोटे किरायतेके प्रायः चौमासेमे अनेक क्षुप उत्पन्न होजाते है, पत्ते अंगुलीकी समान लम्बे और पतले २ होते है फल, छोटे छोटे गोल आते है ।

अथ माकन्दीनामानि ।

माकन्दी बहुमूला च मादिनी गधमूलिका । एकविंशतिमूली च श्यामला गिरिकंदका॥ माथिनी गिरिवर्य्या च गिरिमध्या गिरिप्रिया । वराहेष्टा गिरिमती वर्त्ती चतुर्दशाभिधा ॥
(रा० नि०)

अर्थ-माकन्दी,बहुमूला,मादिनी, गंधमूलिका, एकविंशतिमूली, श्यामला, गिरिकन्दका, माथिनी, गिरिवर्य्या, गिरिमध्या, गिरिप्रिया, वराहेष्टा, गिरिमती और वर्त्ती यह नाम है ।

संस्कृतभाषामे माकन्दी ।
हिन्दीभाषामे माईमूल ।
बंगभाषामें माद्राणी ।
मराठीभाषामें मायमूले माईनी-मोगिनी-माथिणी ।

गुजरातीभाषामें	गरमर।
कर्णाटकीभाषामें	मागिणी।
लैटिन्भाषामें	कोलेन्सबोर्वेटस्। Colens Bor Brutus

अस्या गुणाः।

माकन्दी मधुरा तिक्ता कटुका दीपनी परा।
रुच्याल्पवातकृत्पथ्या जठरामयनाशिनी॥

अर्थ-माकन्दी-मधुर, तिक्त, कटु, अग्निप्रदीपक, रुचिकारक, अल्पवातकारक, पथ्य और उदररोगको दूर करे है।

अन्यच्च।

मायिनी तिक्तका तीक्ष्णा मधुराग्निप्रदीपनी। रुच्या बलकरी चैव प्लीहवातकफाञ्जयेत्॥ गुल्मोदरानाहशीतज्वरनाशकरी मता। कन्दस्तु पाके मधुरो निकाशी पाण्डुशोफजित्॥ कृमिप्लीहापाण्डुगुल्मसंग्रहण्युदरार्शजित्॥ (नि० र०)

अर्थ-माई-तिक्त, तीक्ष्ण, मधुर, अग्निप्रदीपक, रुचिकारक, बलकारक तथा प्लीहा, वात, कफ, गुल्म, उदररोग, आनाह और शीतज्वरको नष्ट करेहै। इसका कन्द-पाकमें मधुर, विकाशी तथा पांडुरोग और सूजनको दूर करेहै तथा कृमि, प्लीहा, पांडु, गुल्म, संग्रहणी उदररोग और बवासीरको दूर करेहै।

विवरण। माकंदी-खेत और बागोंमे बोई जाती है, इसके क्षुप होतेहै, नीचे अंगुलीकी समान जड होती है, इसकी डंडी और कन्दी दोनोंका शाक बनातेहै।

झुल्लपुष्पनामगुणाश्च।

झुल्लपुष्पे ज्वलत्पुष्पः कृच्छ्रहा लघुवृक्षकः।
पीतपुष्पः पक्तिपत्रस्तथा लज्जालुकः स्मृतः॥
झुल्लपुष्पः स्पृष्टमूत्रो मूत्रकृच्छ्रहरः परः।

अर्थ-झुल्लपुष्प, ज्वलत्पुष्प, कृच्छ्रहा, लघुवृक्षक, पीतपुष्प, पंक्तिपत्र और लज्जालुक यह संस्कृत नाम है।

संस्कृतभाषामें	जलपुष्प।
बंगभाषामें	झलर्ड।

मराठीभाषामें झरेर ।
गुजरातीभाषामें झरेर ।
लैटिन्भाषामें बाईओफिटंसंन्सेटिवम् । Byophytnm Sensatioum

गुण-ज्वलत्पुष्प-मूत्रजनक और मूत्रकृच्छ्ररोगको दूर करैहै ।

विवरण । इसका छोटा क्षुप होताहै, फूल पीला आताहै, लज्जावंतीकी समान इसके पत्तेभी मनुष्यके स्पर्शसे तत्काळ सिकुड जातेहै ।

अथ ओखराडीनामगुणाश्च ।

ओखराड्यां भिस्सटा च तडागमृत्तिकोद्भवा ।
भिस्सटा भस्मतैलेन संयुता मरिचैर्युता ॥
मस्तके परितो लेपाद्व्रणान्हन्ति चिरोत्थितान् ।

अर्थ-ओखराडी भिस्सटा और तडागमृत्तिकोद्भवा यह नामहै ।

संस्कृतभाषामें ओखराडी ।
बंगभाषामें ओषड ।
मराठीभाषामें ओखराडच ।
गुजरातीभाषामें आखराडच ।
लैटिन्भाषामें मोल्युगोहिटी । Mollu Gohirta

गुण-इसकी भस्म बनाकर तेल और कालीमिरचोंके चूर्णके साथ मिलाकर शिरपर लेप करनेसे बहुत दिनोंके व्रण दूर होजाते हैं ।

विवरण । इसके छत्ते होतेहैं, विशेषकरके जिस नदी या तालाबका जल सूख जाताहै उसमें यह अधिकतासे होताहै, इसमें बीज अधिक होतेहैं, यह अनेक प्रकारके रोगोंमें अनुपान विशेषके साथ प्रयोग किया जाताहै, मूत्रके रुकनेपर अथवा मूत्रकृच्छ्रमें यह अत्यन्त हितकारीहै, इसको पीसकर शिरपर लगानेसे शिरकी खुजली, दाद शोष और व्रण दूर होजातेहै ।

झावुकनामगुणाश्च ।

झावुकः पिचुलो झावुरफलो बहुग्रन्थिकः ।
झावुकः कटुकस्तिक्तः मूत्रकृच्छ्रविनाशकः ॥

अर्थ-झावुक, पिचुल, झावु, अफल और बहुग्रन्थिक यह झाऊके संस्कृत नाम हैं ।

संस्कृतभाषामें	झावुक।
हिन्दीभाषामे	झाऊका वृक्ष।
वंगभाषामें	झाऊगाछ।
मराठीभाषामे	झावु, तिलव्यावृक्षभेद।
गुजरातीभाषामें	झावू।

विवरण-झाऊके वृक्ष-प्रायः नदियोंकी रेतीमे होतेहै,पत्ते सरूकी समान होतेहैं, किन्तु सरूकी माफिक लम्बे और सीधे नहीं होते, पेड झांदिदार होतेहैं, इसकी लकडी बहुत गांठदार और दृढ होती है, इसमें छोटे २ अनेक फल होतेहैं।

राजाद्रिनामगुणाश्च।

राजाद्रिः स्याद्राजगिरिर्ज्ञातव्या राजशाकिनी ॥

संस्कृतभाषामें राजाद्रि,राजगिरि और राजशाकिनी यह नाम हैं

हिन्दीभाषामे	कलगाघास।
बंगभाषामें	राजशाक, कलईशाक।
मराठीभाषामें	राजगिरा।
गुजरातीभाषामें	राजगरो।
कर्णाटकीभाषामे	डोलगेदो निएरडु।
फारसीभाषामें	अंगोझा।
अरबीभाषामें	हमाहम।

गुणा।

लघुराजगिरः प्रोक्तः कफकृत्सारको गुरुः। निद्रालस्यकरः पथ्यः सारकश्चेति शीतलः ॥ मलावष्टम्भकरणो रुचिदोतिगुरुः स्मृतः। पित्तनाशकरश्चैव ऋषिभिः परिकीर्तितः ॥

अर्थ-छोटा राजगिर-कफकारक, सारक, भारी, निद्रा और आलस्यको उत्पन्न करनेवाला, पथ्य, सारक, अत्यन्त शीतल, मलावष्टम्भकारक,रुचिकारी, भारी और पित्तनाशक है।

विवरण। इसके वडे २ क्षुप होतेहैं, इसकी डंडी मोटी होतीहै, इसके कच्चे पत्तोका शाक बनातेहै इसके बीजोंका फलाहार करतेहैं।

सतपुत्री (कोशातकी) नामानि।

लघुकोशातकी ग्राम्या सतपुत्री स्मृता बुधैः ॥

अर्थ-लघुकोशातकी, ग्राम्या और सतपुत्री यह नाम है।

संस्कृतभाषामें सप्तपुत्री।
हिन्दीभाषामें सतपुतीतोरई।
बंगभाषामे सातपुती।
मराठीभाषामें सातपुती।
गुजरातीभाषामे झुमखडी।

अस्या गुणा।

सप्तपुत्री शीतला स्याद्धृद्या पाके कटुः स्मृता।
स्निग्धा पित्तविषं कासं ज्वरं वातञ्च नाशयेत्॥

अर्थ-सतपुतीतोरई-शीतल, हृदयको हितकारी, पचनेमे कटु, स्निग्ध तथा पित्त,विष,खाँसी, ज्वर और वातको नष्ट करे है।

विवरण। सतपुती तोरईकी बेलभी तोरईकी समान होतीहै, पत्तेभी तोरईकी समान होतेहै, फल कन्दूरीसे कुछ मोटे और परवलकी समान गुच्छोमे सात सात लगतेहै।

वनप्सानामानि।

वनप्सा सूक्ष्मपत्रा च नीलपुष्पा ज्वरापहा॥

अर्थ-वनप्सा, सूक्ष्मपत्रा, नीलपुष्पा और ज्वरापहा यह गुलवनप्साके नाम है।

संस्कृतभाषामे वनप्सा, पुष्पवनप्सा।
हिन्दीभाषामे गुलवनप्सा।
बंगभाषामे वानप्सा।
मराठीभाषामे वनप्सा।
गुजरातीभाषामे वनप्सा।

अस्या गुणा।

वनप्सा कटुतिक्तोष्णा शीतज्वरनिवारणी।
कासश्वासहरा बल्या वातपित्तकफापहा॥

अर्थ-वनप्सा-कटु, तिक्त, गरम शीतज्वरनाशक, खाँसी और श्वासको हरनेवाली और त्रिदोषको दूर करेहै।

विवरण। वनप्सा प्रायः पर्वतोपर होतीहै, इसके क्षुप छोटे २ कालापन लिये कुछ हरे अथवा धूसर रंगके होतेहैं फूल सपेद और नीलरङ्गके आतेहैं कितनेक वैद्य त्रायमानको वनप्सा कहते हैं सो त्रायमानलता और वनप्साकी कुछभी आकृति नहीं मिलती।

आलुकनामगुणाश्च ।

आलुकं स्वादुकन्दश्च म्लेच्छकन्दं सुकन्दकम् ।

अर्थ-आलुक, स्वादुकन्द,म्लेच्छकन्द और सुकन्दक यह आलूके संस्कृत नामहैं ।

संस्कृतभाषामें	आलुक ।
हिंदीभाषामे	आलू ।
बं०-गु०-म०	सर्वभाषाओंमें प्रायः " आलू " इसी नामसे प्रसिद्ध है ।
इंग्रेजीभाषामें	पुटेटो । Potato

अस्य गुणाः ।

आलुकं स्निग्धमुष्णञ्च वृष्यं वातकफापहम् ।
दीपनं रुचिदं हृद्यं मधुरं ग्राहि शोथनुत् ॥

अर्थ-आलू-स्निग्ध, गरम, वृष्य, वातकफनाशक, अग्निप्रदीपक, रुचिकारक, हृदयको हितकारी, मधुर, मलरोधक और सूजनको दूर करेहै ।

विवरण-आलू अर्वाचीन कन्दहै, इसको हिन्दोस्तानमें आये हुए अनुमान एकसो वीस १२० वर्षसे अधिक नहीं हुए, पहले अमेरिकामें होताथा पश्चात् यह यूरोप आदि देशोंमे आया अब सम्पूर्ण भारतवर्षमें आलूकी खेती अधिकतासे होतीहै, यह सफेद और लाल इन भेदोंसे दो प्रकारका है । पर्वतोपर आलू बहुत बडा और अधिक स्वादिष्ठ होताहै ।

अथ पुष्पगोभीनामानि ।

पुष्पगोभी स्वादुशाका मध्यपुष्पा बृहद्दला ॥

अर्थ-पुष्पगोभी, स्वादुशाका, मध्यपुष्पा, बृहद्दला (पीतपुष्पा और पुष्पशाका) यह नाम पुष्पगोभीके है ।

संस्कृतभाषामें	पुष्पगोभी ।
हिन्दीभाषामें	फूलगोभी, गोभीका फूल, गोभी ।
बंगभाषामे	गोभी ।
मराठीभाषामे	गोभी ।
इंग्रेजीभाषामे	कालीफ्लावर । Cauli flawoer

अस्या गुणाः ।

पुष्पगोभी गुरु स्वाद्वी वातशोफप्रकोपनी ।
मधुरा ग्राहिणी वल्या वह्निमान्द्यकरी मता ॥

संस्कृतभाषामें सप्तपुत्री ।
हिन्दीभाषामें सतपुतीतोरई ।
वंगभाषामें सातपुती ।
मराठीभाषामें सातपुती ।
गुजरातीभाषामें झुमखडां ।

अस्या गुणा ।

सप्तपुत्री शीतला स्याद्धृद्या पाके कटुः स्मृता ।
स्निग्धा पित्तविषं कासं ज्वरं वातञ्च नाशयेत् ॥

अर्थ–सतपुतीतोरई–शीतल, हृदयको हितकारी, पचनेमे कटु, स्निग्ध तथा पित्त, विष, खाँसी, ज्वर और वातको नष्ट करे है ।

विवरण । सतपुती तोरईकी वेलभी तोरईकी समान होतीहै, पत्तेभी तोरईकी समान होतेहैं, फल कन्दूरीसे कुछ मोटे और परवलकी समान गुच्छोमें सात सात लगतेहैं ।

वनप्सानामानि ।

वनप्सा सूक्ष्मपत्रा च नीलपुष्पा ज्वरापहा ॥

अर्थ–वनप्सा, सूक्ष्मपत्रा, नीलपुष्पा और ज्वरापहा यह गुलवनप्साके नाम हैं ।

संस्कृतभाषामे वनप्सा, पुष्पवनप्सा ।
हिन्दीभाषामे गुलवनप्सा ।
वंगभाषामे वानप्सा ।
मराठीभाषामें वनप्सा ।
गुजरातीभाषामे वनप्सा ।

अस्या गुणा ।

वनप्सा कटुतिक्तोष्णा शीतज्वरनिवारणी ।
कासश्वासहरा बल्या वातपित्तकफापहा ॥

अर्थ–वनप्सा–कटु, तिक्त, गरम शीतज्वरनाशक, खाँसी और श्वासको हरनेवाली और त्रिदोषको दूर करेहै ।

विवरण । वनप्सा प्रायः पर्वतोपर होतीहै, इसके क्षुप छोटे २ कालापन लिये कुछ हरे अथवा धूसर रंगके होतेहैं फूल सपेद और नीलरङ्गके आतेहैं कितनेक वैद्य त्रायमानको वनप्सा कहते हैं सो त्रायमानलता और वनप्साकी कुछभी आकृति नहीं मिलती ।

आलुकनामगुणाश्च ।

आलुकं स्वादुकन्दश्च म्लेच्छकन्दं सुकन्दकम्।

अर्थ-आलुक, स्वादुकन्द, म्लेच्छकन्द और सुकन्दक यह आलूके संस्कृत नामहैं ।

संस्कृतभाषामे	आलुक ।
हिंदीभाषामे	आलू ।
वं०-गु०-म०	सर्वभाषाओंमें प्रायः "आलू" इसी नामसे प्रसिद्ध है ।
इंग्रेजीभाषामें	पुटेटो । Potato

अस्य गुणा. ।

आलुकं स्निग्धमुष्णञ्च वृष्यं वातकफापहम् ।
दीपनं रुचिदं हृद्य मधुरं ग्राहि शोथनुत् ॥

अर्थ-आलू-स्निग्ध, गरम, वृष्य, वातकफनाशक, अग्निप्रदीपक, रुचिकारक, हृदयको हितकारी, मधुर, मलरोधक और सूजनको दूर करेहै ।

विवरण-आलू अर्वाचीन कन्दहै, इसको हिन्दोस्तानमे आये हुए अनुमान एकसो वीस १२० वर्षसे अधिक नहीं हुए, पहले अमेरिकामे होताथा पश्चात् यह यूरोप आदि देशोंमें आया अब सम्पूर्ण भारतवर्षमें आलूकी खेती अधिकतासे होतीहै, यह सफेद और लाल इन भेदोंसे दो प्रकारका है । पर्वतोपर आलू बहुत बडा और अधिक स्वादिष्ठ होताहै ।

अथ पुष्पगोभीनामानि ।

पुष्पगोभी स्वादुशाका मध्यपुष्पा बृहद्दला ॥

अर्थ-पुष्पगोभी, स्वादुशाका, मध्यपुष्पा, बृहद्दला (पीतपुष्पा और पुष्पशाका) यह नाम पुष्पगोभीके है ।

संस्कृतभाषामे	पुष्पगोभी ।
हिन्दीभाषामें	फूलगोभी, गोभीका फूल, गोभी ।
वंगभाषामे	गोभी ।
मराठीभाषामे	गोभी ।
इंग्रेजीभाषामे	कालीफ्लावर । Cauli flaweer

अस्या गुणा. ।

पुष्पगोभी गुरु स्वाद्वी वातशोफप्रकोपनी ।
मधुरा ग्राहिणी बल्या वह्निमांद्यकरी मता ॥

अर्थ-फूलगोभी-भारी, स्वादिष्ठ, वात और शोथको प्रकुपित करनेवाली मधुर, मलरोधक, बलकारक और अग्निको मन्दकरेहै।

पत्रगोभीगुणा ।

पत्रगोभी सरा रुच्या वातला मधुरा गुरुः ।

अर्थ-पत्रगोभी-सारक, रुचिकारक, वातकारक, मधुर और भारी है।

ग्रन्थिगोभीगुणा ।

ग्रन्थिगोभी महाबल्या दुर्जरा ग्राहि शीतला ।

अर्थ-गांठगोभी-अत्यन्त बलकारक, बहुत देरमें पचनेवाली, मलरोधक और शीतल है।

विवरण। गोभी पहले यूरोप आदि अन्य देशोंमें होतीथी किन्तु अब समस्त हिन्दोस्तानमे होनेलगी हैं । अनुमान गोभीको हिन्दोस्तानमे आये साठ ६० वर्षसे अधिक नहीं हुए । पहले जब गोभी भारतमे आई थी तब इसको बहुत कम मनुष्य खाते थे, बहुतसे मनुष्य इसको प्रथम प्याज, सलजमकी माफिक घृणाकी दृष्टिसे देखते थे किन्तु अब गोभी उत्तम शाकोंमें, गिनीजाती है।

फूलगोभी, मूत्रगोभी (बंदगोभी, करम कल्ला) और गांठगोभी इन भेदोसे यह तीन प्रकारकी होतीहै।

इति शालिग्रामनिघण्टुभूषणे परिशिष्टभागः समाप्तः ।

श्रीशंकरः । शुभमस्तु । कल्याणमस्तु ।



पुस्तक मिलनेका ठिकाना-
खेमराज श्रीकृष्णदास,
"श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-प्रेस-बंबई.

अर्थ-फूलगोभी-भारी, स्वादिष्ठ, वात और शोथको प्रकुपित करनेवाली मधुर, मलरोधक, बलकारक और अग्निको मन्दकरेहै।

पत्रगोभीगुणा ।

पत्रगोभी सरा रुच्या वातला मधुरा गुरुः ।

अर्थ-पत्रगोभी-सारक, रुचिकारक, वातकारक, मधुर और भारी है।

ग्रन्थिगोभीगुणा ।

ग्रन्थिगोभी महाबल्या दुर्जरा ग्राहि शीतला ।

अर्थ-गांठगोभी-अत्यन्त बलकारक, बहुत देरमें पचनेवाली, मलरोधक और शीतल है।

विवरण। गोभी पहले यूरोप आदि अन्य देशोमें होतीथी किन्तु अब समस्त हिन्दोस्तानमें होनेलगी है। अनुमान गोभीको हिन्दोस्तानमे आये साठ ६० वर्षसे अधिक नहीं हुए। पहले जब गोभी भारतमे आई थी तब इसको बहुत कम मनुष्य खाते थे, बहुतसे मनुष्य इसको प्रथम प्याज, सलजमकी माफिक घृणाकी दृष्टिसे देखते थे किन्तु अब गोभी उत्तम शाकोंमे गिनीजाती है। फूलगोभी, पत्रगोभी (बंदगोभी, करम कल्ला) और गांठगोभी इन भेदोसे यह तीन प्रकारकी होतीहै।

इति शालिग्रामनिघण्टुभूषणे परिशिष्टभागः समाप्तः ।

श्रीशंकरः । शुभमस्तु । कल्याणमस्तु ।



पुस्तक मिलनेका ठिकाना-

खेमराज श्रीकृष्णदास,

"श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम्-प्रेस-बंबई.